आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्व विद्यालय
(A. I. V. V.)

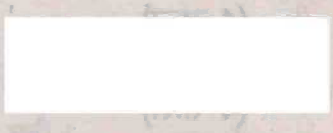

मुरली खंड - 1
(झेरॉक्स प्रमाण सहित)

मूल्य :- रु. 55/- (पचपन रुपया मात्र)

5/26 A सिकत्तरबाग, जि. फर्रुखाबाद– 209 625
फोन नं. (05692) 228930

A–1, 351–352, विजयविहार, पो. रिठाला, दिल्ली– 110 085
फोन नं. (011) 27044227

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सृष्टि-चक्र

(स्वदर्शन चक्र सन् 2000 में फिर से घूमा...)

1. **सतयुगी शूटिंग** की चार अवस्थायें :

सतोप्रधान	(4 साल)	1960-61	से	1964 तक
सतोसामान्य	(4 साल)	1965	से	1968 तक
रजोप्रधान	(4 साल)	1969	से	1972 तक
तमोप्रधान	(4 साल)	1973	से	1976 तक

(+1 साल रूंग = 1977)

2. **त्रेतायुगी शूटिंग** की चार अवस्थायें :

सतोप्रधान	(3 साल)	1978	से	1980 तक
सतोसामान्य	(3 साल)	1981	से	1983 तक
रजोप्रधान	(3 साल)	1984	से	1986 तक
तमोप्रधान	(3 साल)	1987	से	1989 तक

(+1 साल रूंग = 1990)

3. **द्वापरयुगी शूटिंग** की चार अवस्थायें :

सतोप्रधान	(2 साल)	1991	से	1992 तक
सतोसामान्य	(2 साल)	1993	से	1994 तक
रजोप्रधान	(2 साल)	1995	से	1996 तक
तमोप्रधान	(2 साल)	1997	से	1998 तक

(+1 साल रूंग = 1999)

4. **कलियुगी शूटिंग** की चार अवस्थायें :

सतोप्रधान	(1 साल)	2000
सतोसामान्य	(1 साल)	2001
रजोप्रधान	(1 साल)	2002
तमोप्रधान	(1 साल)	2003

(+1 साल रूंग = 2004)

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

। ओम शान्ति ।

परमपिता परमात्मा शिवबाबा याद है ।

बाप के वर्तमान साकार पार्ट के प्रति साकार मुरलियों के आधार से

प्रूफ एवं प्रमाण

1) मुरली नं. -1 (दिनांक 4-4-01 / 30-6-68)

a) इनको बेहद का बाप भी कहा जाए तो बेहद का दादा भी कहा जाए और फिर बेहद के बच्चे बैठे हैं और बाप बेहद का ज्ञान दे रहे हैं । हद की बातें अब छूटी ।

b) बाप आते भी हैं भारत में । बाप कहते हैं मुझे आना पड़ता है, कल्प2, कल्प के संगम पर ।

c) वह है हेवनली गॉड फादर तो जरुर हेविन के गेट खोलने आयेगा । आयेंगे भी तब, जब हेल होगा । फिर हम हेल में क्यों पड़े हैं ?

d) बाप का भी जन्म होता है तो रावण का भी जन्म होता है । यह किसको भी पता नहीं ।

मु. दि. 30-6-68

e) यह रथ जो है बहुत जन्मों के अन्त में वर्थ नॉट अ पेनी बन गया है । फिर इनको पहले नम्बर में जाना है, इसलिए इसमें ही प्रवेश करना है ।

f) मैं चला जाऊँ, फिर घड़ी2 आऊँ ? इसलिए जाता ही नहीं हुँ । तुम्हारे बिगर जाऊँगा ही नहीं, बच्चों के साथ तो लव है ना ।

g) यहाँ तो देखो ठंढी हो या गर्मी हो, चाय जरुर पीते हैं । बाप ने समझाया है रावण राज्य में ही तुम्हारा यह हाल हुआ है ।

2) मुरली नं. - 2 (दि. 25-2-00)

a) अल्फ और बे-इन्हीं दो शब्दों में तुम्हारी सारी पढ़ाई आ जाती है ।

b) माया दुश्मन सामने खड़ी है, तो वह अपनी तरफ खींच लेती है ।

c) बेहद का बाप बेहद की बात समझाते हैं ।

d) तुम्हारी एम ऑब्जेक्ट ही है नर से नारायण (नर से प्रिन्स नहीं) बनने की । यह गीता पाठशाला है ही जीवन मुक्ति प्राप्त करने के लिए ।

e) उन्होंने फिर शिव और शंकर को इकट्ठा कर दिया है । अब बाप कहते हैं हमने इनमें प्रवेश किया है । तुम बच्चे कहते हो बाप-दादा । वह कहते हैं शिव-शंकर।

f) बाकी चित्र इतने ढेर बनाये हैं, वह कोई यथार्थ हैं नहीं । वह हैं सब भक्तिमार्ग के ।

g) बिन्दी का साक्षात्कार हो तो कुछ समझ न सकें । जो जिस भावना से जिसकी पूजा करते हैं, उनको वही सा० होगा ।

h) बाप है निराकार । मनुष्य तो उसे नाम-रुप से न्यारा कह देते हैं; लेकिन नाम-रुप से न्यारी कोई चीज़ थोड़ेही होती है ।

i) अल्फ को याद करो तो बे-बादशाही तुम्हारी है ।

j) यह महाभारत लड़ाई है जो इस रुद्र ज्ञान यज्ञ से प्रज्वलित हुई है ।

k) कुम्भ के मेले पर कितने लाखों जाते हैं । अरे, गंगा अपना रास्ता लेकर समुद्र में जायेगी कि यहाँ तुम्हारे पास पहाड़ पर आयेगी । भक्तिमार्ग में कितने धक्के हैं ।

3) मु. नं. - 3 (दि. 17-7-98)

a) बाप कहते हैं मुझे भी पतित दुनियाँ, पतित शरीर में आना पड़ता है । परमधाम से एक ही बार आता हूँ भारत को पावन दैवी राज्य बनाने ।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

b) इस समय कोई भी पावन नहीं है। जब तक पावन बनाने वाला बाप न आये तब तक पावन बन न सकें।
c) वह बाप भी है, शिक्षक भी है, ज्ञान का सागर भी है। बाप की महिमा बडी उँच है - मनुष्य सृष्टि का बीजरुप भी है।
d) मनुष्य तो समझते हैं स्वर्ग-नर्क यहाँ ही है। परन्तु ऐसे हो नहीं सकता। तो जरुर पुनर्जन्म नर्क में ही लेना पड़े (सूक्ष्मवतन में नहीं)।
e) तुम हो ब्राह्मण, प्रजापिता ब्रह्मा (साकार बाप) की सन्तान। ब्रह्मा (बड़ी-माँ) को भी वर्सा शिवबाबा से मिलता है। यह भी भाई हो गया।
f) तुम ही पहले2 आये थे। अभी लास्ट में भी तुम हो।
g) तुम हो बेहद के सन्यासी। उन्हों का है हद का वैराग्य।
h) बाबा ने समझांया है जब कोई 4-5 इकट्ठे आते हैं तो फार्म अलग2 भराओ। तो मालूम पड़े कि वह किस धर्म का है। फार्म भराने का कायदा भी जरुरी है।
i) 7 रोज भट्ठी में पड़ना पड़े क्योंकि महारोगी बन पड़े हैं। 7 रोज जब समझो तब मुलाकात हो सकेगी और तुम पर रंग भी तब लगेगा।

4) मु. नं. - 4 (दि. 2-9-02)

a) बाप कहते हैं मुझे गुप्त ही रहने दो, इसमें ही मज़ा है।
b) बाप गरीब निवाज़ है ना। गरीबों से ही मिलने आते हैं। सबसे मिलते जुलते रहते हैं।
c) इसलिए यह सब महीन बातें बाबा ने देर से समझाई हैं। शुरु में बहुत सहज तोतली बातें सुनाते थे।
d) बहुत बच्चे साधारण रुप देख मूँझते हैं, उल्टा बोलने लग पड़ते हैं।
e) परन्तु निराकार को तो रथ जरुर चाहिए ना। रथ बिगर क्या करेंगे? शिवबाबा क्या करेंगे? रथ में आये तब तो तुम उनसे मिलेंगे। तुम्ही से सुनूँ, तुम्ही से बैठूँ.... तो रथ जरुर चाहिए ना।
f) आगे चलकर समझते जायेंगे। दिन-प्रतिदिन तुम नई2 प्वाइन्ट्स सुनते रहेंगे।
g) बेहद का बाप पतित दुनियाँ, पतित शरीर में आकर बच्चों के लिए कितनी मेहनत करते हैं।

5) मु. नं. - 5 (दि. 10-9-01)

a) मैं खुद कहता हूँ कि मैं बहुत जन्मों के अन्त में साधारण तन में प्रवेश करता हूँ, जिसने पूरे 84 जन्म लिए हैं। वह तो जरुर पतित होगा। तो बाप बैठ समझाते हैं। मैं कल्प2 उसी ही तन में आता हूँ जिसका आदि से लेकर अन्त तक पार्ट है।
b) बाप खुद कहते हैं पहले नम्बर में है श्रीकृष्ण - फर्स्ट प्रिन्स। श्री नारायण तो बाद में बनता है, जब बड़ा होता है। वह भी 20-25 वर्ष कम हो जाते हैं। उनके भी पूरे 84 जन्म नहीं कहेंगे। नम्बरवन है (संगमयुगी) श्री कृष्ण।
c) तुमसे बहुत लोग पूछते हैं - सिर्फ एक ही ब्रह्मा में क्यों आते हैं! परन्तु यह हिसाब है ना।
d) बाप तो कभी पूजारी नहीं बनते। अच्छा, फिर सेकण्ड नम्बर में कहेंगे शंकर भी एवर पूज्य है।
e) वैल्यु तो उनकी है जो हीरो-हिरोइन का पार्ट बजाते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे बाबा ही हीरो-हिरोइन का पार्ट बजाते हैं।
f) भारत ही अविनाशी खण्ड है। जैसे बाप की महिमा अपरम अपार है, वैसे भारत की महिमा भी अपरम अपार है।
g) भगवान तो है ही एक, उनको ही सतगुरु कहा जाता है। बाकी गुरु तो ढेर हैं।
h) बाप के मर जाने के बाद, कोई2 तो ऐसे गन्दे बच्चे होते हैं 12 मास में सारी मिलकियत उड़ा देते हैं। वह हैं हद की बातें, यह है बेहद की बात।

6) मु. नं. - 6 (दि. 10-4-86 / 15-8-92)

a) अब जो त्रिमूर्ति-गोला, झाड, सीढ़ी, ल० ना० का चित्र और कृष्ण का चित्र- यह 6 चित्र हैं मुख्य। इन सब में सार आ जाता है।
b) चित्र आदि जो भी बनाये हैं सब बेसमझी के।... उनको कहाँ ही जाता है अंधश्रद्धा से गुडियों की पूजा करने वाले।
c) यह हैं गुप्त पाण्डव। कोई को भी पहचान में नहीं आ सकते। बाप भी गुप्त, ज्ञान भी गुप्त।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मु. दि. 15-8-92

d) परमधाम से पतित दुनियाँ में, पतित शरीर में आये हैं। बाप कहते हैं अब मैं आया हूँ।
e) जब विनाश शुरु हो जायेगा फिर समझेंगे जरुर कहीं भगवान गुप्त वेश में है।
f) अन्त तक बाप को ज्ञान सुनाना है। आते ही गुप्त रुप में।

7) मु. नं. - 7 (दि. 11-2-99)

a) जयन्ती कब मनाई जाती है ? जब गर्भ से बाहर आते हैं।... वह तो है निराकार, उनकी जयन्ती कैसे हो सकती है ?
b) अब शिवजयन्ती तुम मनाते हो तो जरुर उनकी महिमा, उनकी बायोग्राफी वा जीवन चरित्र भी होगा।
c) वह लोग शिव-शंकर कह देते हैं। शंकर को भोलानाथ समझ लेते हैं। वास्तव में भोलानाथ शंकर तो नहीं लगता।
d) शिवबाबा भी प्रभात के समय आते हैं, आधी रात नहीं कहेंगे।
e) सो तो जरुर यहाँ से जो जायेंगे, अच्छे घर में ही जन्म लेंगे। जन्म जरुर अज्ञानी के घर में लेंगे।
f) परमात्मा की प्रवेशता है परन्तु कैसे, कब हुई - कुछ भी समझते थोड़ेही थे। आगे (सन् 76 के पहले) थोड़ेही दो बाप का राज़ समझाते थे। आगे तो जैसे बेबियाँ थी।
g) कहते हैं गाँवड़े का छोरा। बाबा फील करता है हम भी गाँवड़े के थे- न टोपी, न जुत्ती। अब स्मृति आती है हम क्या थे, फिर बाबा ने आकर प्रवेश किया है।
h) तुम रामचन्द्र की भी जीवन कहानी बता सकते हो।

8) मु. नं. - 8 (दि. 26-10-99)

a) देवताओं की कैपिटल देहली (दिल्ली) ही रही है, तो सभी को कशिश होती है।
b) बाप कहते हैं मैं यह टैम्प्रेरी लोन लेता हूँ, सो भी कितना थोड़ा समय लेता हूँ 60 वर्ष में वानप्रस्थ अवस्था होती है।
c) बाप भी ड्रामा अनुसार बिल्कुल एक्यूरेट टाइम पर आते हैं। मालूम कैसे पड़ता है कि इनमें बाप भगवान है? जब नालेज देते हैं। बच्चों को बैठ समझाते हैं।
d) कोई2 लव से भी बच्चे को बाबा कह देते हैं। तो उन्होंने (तथाकथित ब्र० कु०-कुमारियों ने) कृष्ण (उर्फ दादा लेखराज ब्रह्मा) को लव से कह दिया है। कृष्ण खुद ही प्रिन्स है, उनको बच्चे कहाँ से आये ?
e) ब्रह्मा की आयु माना प्र० ब्रह्मा की आयु कहेंगे। वह तो जरुर इस समय होगा। ब्रह्मा की आयु मृत्युलोक में खत्म होगी।
f) अब बाप ने समझाया है यह है रुद्र ज्ञान यज्ञ। रुद्र शिव को कहा जाता है।
g) बाप ही बैठ अर्थ समझाते हैं। दूसरा कोई अर्थ नहीं समझाते।

9) मु. नं. - 9 (दि. 15-5-00)

a) अब फादर कहते हैं मैं इस साधारण तन में तुमको पढ़ाने आता हूँ। तुम जानते हो बाबा इनमें आये हैं, हम उनके बने हैं।
b) ऐसे तो बहुत मनुष्य फालतू चित्र बैठ बनाते हैं। भक्तिमार्ग में अनेक प्रकार के चित्र बनाये हैं। यहाँ तो मनुष्य लूले लंगडे निकल पड़ते हैं।
c) अभी बाप तुम बच्चों को समझा रहे हैं, यह भी सुनते हैं।
d) जैसे तुम गृहस्थ व्यवहार में रहते थे, वैसे यह भी। ड्रेस आदि सब वही है। जैसे घर में माँ-बाप, बच्चे होते हैं, फर्क कुछ नहीं है।
e) (सन्यासी) बाप को जानते ही नहीं। ब्रह्म (वा ब्रह्मा) को ही भगवान समझते रहते, वह तो है नहीं।
f) यहाँ देखो बाबा पुरानी झोपड़ी में रहते हैं। तुम बच्चे आकर महलों में रहते हो।
g) जो ज्ञानी बच्चे हैं वह कभी सा० आदि की बातों में खुश नहीं होंगे। सिवाए योग के और कुछ भी नहीं।

10) मु. नं. - 10 (दि. 2-11-99)

a) बाप ने समझाया है कि ध्यान (ट्रान्स) और योग बिल्कुल अलग है। योग अर्थात् याद।... ध्यान आदि की कभी कोई इच्छा नहीं रखनी है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

b) भोग भी ले ज़ाते हैं तो डायरेक्शन अनुसार ही जाना है।... बहुतों को ज्ञान देनेवाले, भोग लगाने वाले आज हैं कहाँ, क्योंकि बेकायदे चलन के कारण पूरे मायावी बन जाते हैं।

c) यहाँ इस समय कोई शरीर छोड़ते हैं तो इसी दुनियाँ में आकर जन्म लेते हैं। तुम शरीर छोड़ेंगे तो बाबा के साथ बेहद घर में जायेंगे - वहाँ बाबा, मम्मा, बच्चे सब हैं ना।

d) इसमें भी 60 वर्ष के बाद बाप ने प्रवेश किया तो बाप, टीचर, गुरु बन गया।

e) बाबा ने समझाया है सूक्ष्मवतन आदि में जो कुछ देखते हो - यह तो सब हैं सा० की बातें।

11) **मु. नं. - 11 (दि. 23-6-99)**

a) अब बाप बैठ याद की यात्रा सिखलाते हैं, इसमें हठयोग आदि की कोई बात नहीं। वह लोग (तथाकथित ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ) हठयोग से ट्रांस आदि में जाते हैं। याद से विकर्म विनाश होंगे, ट्रांस में विकर्म विनाश नहीं होंगे।

b) यह भोग आदि की ड्रामा में सब नूँध है। सर्वेन्ट बन भोग लगाकर आते हो।

c) बहुत जगह ऐसे ध्यान में चले जाते हैं फिर कहते - मम्मा आई, बाबा आया। बाप कहते हैं यह कुछ भी नहीं है।

d) इसको याद की यात्रा कहा जाता है। योग कहने से यात्रा नहीं सिद्ध होती।

e) हम आत्माओं को बाप इस शरीर द्वारा पढ़ाते हैं। घड़ी2 याद रखो यह एक ही समय है जब आत्माओं का बाप परमपिता पढ़ाते हैं।

f) तुम हो गुप्त वारियर्स। आगे भल याद करते थे, परन्तु विकर्म विनाश थोड़ेही होते थे।

12) **मु. नं. - 12 (दि. 20-11-88)**

a) बाबा कहते हैं 7-8 की पार्टी आती है तो हर एक से फार्म भराना है। बाप का अक्यूपेशन अलग, हरेक आत्मा का अलग2 है।

b) अगर प्रेरणा से काम हो तो फिर बाप के आने की दरकार ही नहीं। शिवबाबा तो यहाँ है तो उनको प्रेरणा करने की क्या दरकार है ?

c) कोई2 सन्देशियाँ सन्देश ले आती हैं, उसमें भी बहुत मिक्स हो जाता है। ऐसे नहीं सन्देशी ने जो सन्देश लाया है वह सत्य है।

d) मैं तो खुद मालिक हूँ। फर्रुखाबाद में मालिक को मानते हैं ना। वह है मालिक, हम उनके बच्चे हैं। तो जरुर वर्सा मिलना चाहिए।

e) शिवजयन्ती है बड़े ते बड़ी जयन्ती। फिर है ब्रह्मा, विष्णु, शंकर। अब प्रजापिता ब्रह्मा तो मनुष्य सृष्टि में है।

13) **मु. नं. - 13 (दि. 17-8-99)**

a) ब्रह्मा की रात सो ब्राह्मणों की रात है। ब्रह्मा का दिन सो ब्राह्मणों का दिन है।

b) ऊपर जाना माना मरना, शरीर छोड़ना। मरना कौन चाहते हैं ? यहाँ तो बाप ने कहा है तुम इस शरीर को भूलते जाओ। जीते जी मरना तुमको सिखलाते हैं।

c) तुम कहेंगे हमारे मम्मा-बाबा की पाठशाला है। दोनों ही पढ़ाते हैं। दोनों ने यह रुहानी कॉलेज वा युनिवर्सिटी खोली है।

d) यह म्युज़ियम आदि किसके डायरेक्शन से खोलते हैं ? यहाँ हैं ही माँ, बाप और बच्चे।

e) इतनी छोटी-सी बिन्दु का सा0 तुम क्या कर सकेंगे ? जरुरत ही नहीं है।

f) अभी बाप आये हैं, उनको जानते नहीं। बाप कहते हैं मैं जिस तन में आया हूँ, उनको भी नहीं जानते।

14) **मु. नं. - 14 (दि. 31-8-98 / 26-6-68)**

a) वह अब ब्रह्मा मुख कमल द्वारा तुम बच्चों को समझा रहे हैं। तुम बच्चों को सम्मुख समझाया जाता है।

b) गाया भी हुआ है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। तो जरुर वह स्थूलवतन में होगा। ब्राह्मणी हैं ब्रह्मा की सन्तान। उनको ही प्रजापिता ब्रह्मा कहा जाता है।

c) ऊँच ते ऊँच भगवान शिव फिर ब्रह्मा, विष्णु, शंकर। इन द्वारा बाप कार्य करवाते हैं। करनकरावनहार है ना।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

d) निराकार को क्यों याद करते हैं, उससे क्या मिलेगा? क्या निराकारी दुनियाँ में जायेंगे ? इस प्रकार याद करने से तो कोई पावन नहीं बनेंगे । यहाँ तो निराकार खुद साकार में आते हैं ।

मु. दि. 26-6-68

e) नाम-रुप से न्यारा है फिर उस पर दुध आदि चढ़ाना शोभता नहीं है । आकार है तब तो उस पर चढ़ाते हैं ना ।

f) फादर को देखो कैसे सभी कुछ दे दिया । भल साधारण थे - न बहुत गरीब, ना बहुत साहुकार ।

g) मैं कैसे और किस रथ में आता हुँ - बच्चे जानते नहीं बाप का रथ कौनसा है ।... ऐसे भी नहीं है कि पवित्र रथ में आना है ।

h) सब से जास्ती पतित कौन है - यह बाप बतलाते हैं । मैं उस रथ में ही प्रवेश करता हुँ ।

i) करनकरावनहार है ना - जो भी करते हैं और कराते भी हैं । कुछ खुद करते हैं, कुछ कराते भी हैं । प्रैक्टिकल में अभी तुम समझ रहे हो ।

j) (मनुष्य) ब्र० कुमारियों से डरते हैं - तुम मौत सिखाते हो ।

15) मु. नं. - 15 (दि. 22-3-99)

a) शरीर बिगर आत्मा को नहीं याद किया जा सकता ।.... पूछते हैं - हम कैसे याद करें, शिवबाबा को ब्रह्मा तन में याद करें या परमधाम में याद करें ? बाबा कहते हैं याद तो आत्मा को ही करना है । परन्तु शरीर भी जरुर याद आता है।

b) शिवबाबा परमधाम में याद आता होगा या मधुबन में याद आता होगा ? इसमें (ब्रह्मा के तन में) शिवबाबा है क्योंकि बाप तो अभी नीचे आ गया । इनका अपने घर में तो कोई काम नहीं होगा । वहाँ जाकर क्या करेंगे ?

c) आत्मा तो है छोटी बिन्दी । सा० करें तो भी कोई समझ न सकें, फिर भी शरीर ही याद आता है ।

d) यह बाप भी है, टीचर भी है । टीचर को तो रोज़ पढ़ाना है ।

e) वह कलियुगी सीढ़ी नीचे उतरते जाते हैं और तुम पुरुषोत्तम संगमयुगी, सीढ़ी ऊपर चढ़ते जाते हो । तुम्हारे लिए अब पु० संगमयुग है ।

f) सन्देशियों को, भक्तों को सा० कराना पड़ता है । है तो यहाँ ही । वहाँ तो कोई सर्विस नहीं ।

g) बहुत लोग गुरु करते हैं । बाप कहते हैं शान्ति का सागर तो एक बाप ही है, वह साथ ले जाते हैं ।

h) मुक्तिधाम में जाने वालों के लिए बृंहस्पति की दशा नहीं कहेंगे ।

16) मु. नं. - 16 (दि. 19-4-78)

a) मैं यहाँ इस शरीर में आकर कहता हूँ कि तुमको याद वहाँ करना है जहाँ अब आना है । ऐसे नहीं यहाँ याद करना है ।

मु. दि. 18-5 (साल प्राप्त नहीं है)

b) वह ही मनुष्य सृष्टि का बीजरुप है । बाप बीज है ना । स्त्री को एडाप्ट कर फिर रचना रचते हैं । वह है कुख वंशावली और यह है मुख वंशावली ।

c) कहते हो - तुम मात-पिता...। वह तो निराकार है, माता कैसे हो सकती ? जगत अम्बा सरस्वती जिसको कहते हैं वह तो ब्रह्मा की बेटी मुखवंशावली गाई जाती है । असुल रियल्टी में यह (ब्रह्मा) माता है ।

d) इस समय जो एक्ट चली शूट हुआ ।

e) यह चित्र आदि सब ड्रामा अनुसार बच्चों द्वारा बनवाये गये हैं । एक बार बनाया फिर प्वाइन्ट निकलती है तो करेक्ट करना पड़ता है ।

f) ब्रह्मा के आगे प्रजापिता अक्षर जरुर लिखना पड़े । नहीं तो मनुष्य समझते नहीं।

17) मु. नं. - 17 (दि. 19-9-89)

a) तुम जानते हो कि श्री राम की आत्मा तो जरुर पुनर्जन्म लेती रहती होगी । यहाँ ही पुरुषार्थ करते रहते हैं। इतना नाम बाला है राम का, तो जरुर आयेंगे, उनको नालेज लेनी पड़ेगी ।

b) यह नर से नारायण बनने की हाइएस्ट युक्ति है । एक नारायण तो नहीं बनेंगे ना । यह है ही राजयोग की नालेज, सो भी पूरे विश्व का मालिक बनना है ।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

c) यहाँ बाप कहते हैं मैं भी इस ब्रह्मा के तन में आता हूँ, टेम्प्रेरी इनकी आत्मा को भी समझाते हैं।
d) ऐसे नहीं कि मन्त्र देकर चला जाता हूँ। नहीं, बच्चों को देखना भी पड़ता है कि कहाँ तक सुधार हुआ है। सेकण्ड का ज्ञान देकर चले जाएं तो फिर ज्ञान का सागर भी न कहा जाए।
e) पुराने2 बच्चे कितने अच्छे थे, उनको माया ने हप कर लिया।... उनसे कुछ फिर आयेंगे जरुर पढ़ने। ब्राह्मा आने देंगे, फिर भी भल आकर पुरुषार्थ करें। कुछ न कुछ अच्छा पद मिल जायेगा।
f) अब कैसे याद करते हो, क्या यह समझते हो कि बाबा परमधाम में है ? नहीं, बाबा तो यहाँ रथ में बैठे हैं। भक्तिमार्ग में थे तो उनको परमधाम में याद करते थे।.... तुम बच्चे समझते हो बाबा यहाँ इस मृत्युलोक में पुरुषोत्तम संगमयुग पर हैं।
g) तुम जानते हो हमको ब्रह्मा को याद नहीं करना है।
h) तुम तो जानते हो यह दुनियाँ कभी खाली नहीं हो सकती है। राम सम्प्रदाय तो बहुत थोड़ी है। राम की सम्प्रदाय है ही सतयुग, त्रेता में।
i) ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश, विष्णू द्वारा पालना - यह भी लिखते हैं। यहाँ के लिए ही है, परन्तु समझते कुछ भी नहीं।
j) महिमा सारी यहाँ की है। बाकी सूक्ष्मवतन में क्या है ? कुछ भी नहीं। यह सिर्फ सा० होता है।

18) मु. नं. - 18 (दि. 29-6-01)

a) तुम शिवबाबा के बनते हो इन द्वारा, क्योंकि शिवबाबा इनके द्वारा ही मिलते हैं। यह (ब्रह्मा) तो सिर्फ बीच में मारफत है। यह भी उस बाप को कहते हैं - बाबा मेरा सब कुछ आपका है।
b) भक्ति में भी महिमा एक राम अथवा परमपिता परमात्मा की ही करते हैं, उनको ही याद करते हैं।
c) बाबा कहते हैं कोशिश कर तुम निरन्तर याद में रहो। ऐसे नहीं कि सेन्टर में जाकर एक जगह बैठना है।
d) गाते भी हैं - राम राजा, राम प्रजा.... धर्म का उपकार है। अब कितना समझ में आता है। कितनी वन्डरफुल बातें लिखी हैं।
e) विष्णु के यह दो रुप लक्ष्मी-नारायण हैं।
f) प्र० ब्रह्मा सबका बाप हुआ। एक है लौकिक बाप (प्र० ब्रह्मा), दूसरा है पारलौकिक बाप (शिव बाप)। अब यह तुमको अलौकिक बाप मिला है।
g) वो लोग फिर डमरु दिखाते हैं। अब सू० वासी शंकर डमरु कैसे बजाएगा? तुम्हारे आगे बाबा (शंकर/राम के तन में प्रवेश करके) ज्ञान का डमरु बजा रहे हैं।

19) मु. नं. - 19 (दि. 27-6-86 / 8-2-89)

a) इनका (ब्रह्मा का) फोटो भी तुम मत रखो। कोई भी देहधारी का फोटो नहीं रखना है।
b) कोई भी आये तो उनको पहले2 यह बोलो कि अल्फ को याद करो।
c) प्रदर्शनी पर कितना खर्च करते हैं। लिखते भी हैं अच्छा प्रभावित हुआ। परन्तु बाबा कहते हैं एक भी ऐसे नहीं लिखता कि बरोबर इस समय बेहद का बाप इस ब्रह्मा तन में आया हुआ है।... प्रजा ढेर बनेगी।
d) ऐसे नहीं हमारे सेन्टर पर आये। इनके पास क्यों जाते हैं ? नहीं, जिसको जहाँ चाहिए..., बात तो एक ही है।

मु. दि. 8-2-89

e) बाप कहते हैं बाबा का फोटो आदि भी नहीं निकालो। चित्रों में तो समझाने के लिए फोटो देना पड़ता है, वही काफी है।
f) अगर इनको (ब्रह्मा को) याद करेंगे तो कुछ भी नहीं मिलेगा। शिवबाबा को छोड़ फोटो को याद किया तो मर पड़ेंगे। आजकल तो भक्तिमार्ग बहुत है।
g) वर्सा बाप से मिलना है या माँ से, माँ को भी पैसा कहाँ से मिलेगा ? सिर्फ माँ2 कहने से जरा भी पाप नहीं कटेंगे।

20) मु. नं. - 20 (दि. 20-2-83)

a) घर गृहस्थ में रहते, स्त्री-पुरुष साथ रहते पवित्र रहना- यह कमाल का कर्तव्य संगम पर बाप ही सिखलाते हैं। (संगमयुगी) सन्यासी कभी भी यह सिखला नहीं सकते।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

b) इस रथ में साधारण बुढ़े तन में प्रवेश करते हैं।
c) इस समय तुम आत्मायें राम शिवबाबा श्री श्री की मत पर चलते हो।
d) बाप कहते हैं जो भी आकारी वा साकारी या निराकारी चित्र हो, उनको तुम्हें याद नहीं करना है। बाबा कहते हैं चित्रों को देखना बन्द करो, यह है भक्तिमार्ग।
e) यह शिव का भी जो चित्र है, उनका भी ध्यान नहीं करना है क्योंकि शिव ऐसा तो है नहीं ना।
f) ब्राह्मण रचने के लिए ब्रह्मा जरुर चहिए, जो ब्रह्मा फिर नारायण बनेगा।
g) सन्यासी एक तरफ पवित्र रह भारत को मदद करते हैं, दूसरी तरफ बाप से बेमुख कर देते हैं।

21) मु. नं. - 21 (दि. 21-11-80)
a) तुम किसी से पैसा भी नहीं माँग सकते - माँगने से मरना भला। भक्ति में माँगना होता, ज्ञान में नहीं।
b) बाहुबल से कब कोई विश्व के मालिक बन नहीं सकते। तुम योगबल से विश्व की बादशाही पाते हो।
c) भक्ति में भक्त लोग महिमा गाते हैं, तुम नहीं कहेंगे। इसलिए दिन प्रतिदिन गीत आदि भी बन्द होते जाते हैं। स्कूलों में कब गीत होते हैं क्या ?
d) बाप कहते हैं तुमको गुह्य2 बातें सुनाता हूँ। तो अगर मुरली मिस... तो वह प्वाइन्ट्स मिस हो जायेंगी।
e) बाप तो है गरीब निवाज़। गरीबों के ही बच्चे मिलेंगे। साहूकार लोग तो बच्चों को काम कटारी पर चढ़ा देंगे।

22) मु. नं. - 22 (दि. 21-7-04)
a) बाप को भी यहाँ आना पड़ता है समझाने के लिए। मूलवतन में तो नहीं समझाया जाता।
b) तुम जानते हो यह पु० संगमयुग है, जबकि बाप आते हैं सबको वापिस ले जाते हैं।
c) मनुष्य जरुर मूँझेगे- निराकार तो ऊपर में रहते हैं, वह कैसे पढ़ायेंगे !... निराकार बाप को भी जरुर रथ चाहिए मनुष्य का, क्योंकि बाप है ज्ञान का सागर, ज्ञानेश्वर।
d) तुम जानते हो हमको बाबा निर्वाणधाम् ले जाने के लिए आया हुआ है। सब आत्माओं को ले जायेंगे, एक को भी नहीं छोडेंगे।
e) शास्त्र (कागज़ की मुरली) पढ़ते ही हैं भगवान को पाने के लिए और भगवान कहते हैं मैं किसको भी शास्त्र पढ़ने से नहीं मिलता हूँ।
f) पहले2 बाप का परिचय देना है, बेहद् का बाप बेहद का वर्सा देते हैं। उनका एक ही नाम है शिव।
g) इतने बच्चे आयेंगे क्योंकि बाप तो अब कहाँ जायेगा नहीं। आगे तो बिगर कोई के कहे भी बाबा आपेही चले जाते थे।

23) मु. नं. - 23 (दि. 14-1-00)
a) (आत्मा) उड़कर दूसरे शरीर में जाती है। यहाँ इस आकाश तत्व में ही उनको पार्ट बजाना है, मूलवतन में नहीं जाना है।
b) परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा नई दुनियाँ की स्थापना, शंकर द्वारा विनाश कराते हैं। त्रिमुर्ति का अर्थ ही यह है - स्थापना, विनाश, पालना।
c) प्र० ब्रह्मा तो यहाँ है ना। ब्रह्मा द्वारा स्थापना सूक्ष्मवतन में तो नहीं होगी ना, यहाँ ही होती है।
d) बाप ने बच्चों को ज्ञान का तीसरा नेत्र दिया है जिससे तुम अपने को आत्मा समझ बाप जो है, जैसा है उसको उसी रुप में याद करते हो।
e) इसमें सब्जेक्ट एक ही है - अल्फ और बे। बस, दो अक्षर भी याद नहीं कर सकते हैं।
f) प्र० ब्रह्मा है साकारी बाप। अब तुम साकार द्वारा निराकार बाप से वर्सा ले रहे हो।
g) त्रिमुर्ति दिखाते हैं परन्तु समझते नहीं। शिव को उड़ा दिया है।

24) मु. नं. - 24 (दि. 30-12-98 / 4-3-88)
a) अभी तुम सम्मुख बैठे हो। बाबा कहते हैं आगे कभी मिले थे ?
b) यह भी नहीं समझते हैं कि ब्रह्मा जरुर साकार में होना चाहिए, जिस द्वारा परमपिता सृष्टि रचते हैं।
c) वास्तव में 7 रोज़ का अर्थ क्या है सो तुम अभी जानते हो। सिवाए बाप के और कोई को याद नहीं करना है। बाबा को याद करने से तुम बाबा के पास चले जायेंगे।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

d) शिव जयन्ती भी मनाते हैं ना, परन्तु वह भारत में कैसे आते हैं - यह किसको पता नहीं हैं। कृष्ण (उर्फ दादा लेखराज ब्रह्मा) के तन में तो नहीं आते।

मु. दि. 4-3-88

e) कृष्ण को कभी प्रजापिता नहीं कहा जाता। प्र० ब्रह्मा जो होकर गये हैं, वह इस समय प्रेजेन्ट है।

f) 84 जन्म सिर्फ वही लेते हैं जिनका आदि से अन्त तक पार्ट है, जो पहले इस सृष्टि पर थे।

g) वही बेहद का बाप अभी प्रैक्टिकल में है। अमरनाथ भी शिवबाबा हैं ना।

25) मु. नं. - 25 (दि. 6-11-97)

a) परमात्मा के लिए ही गायन है - हे पतित पावन। आते भी हैं पतित दुनियाँ और पतित शरीर में।

b) पतित शरीर का नाम है प्र० ब्रह्मा। इसमें प्रवेश कर कहते हैं मैं बहुत जन्मों के अन्त वाले साधारण मनुष्य तन में प्रवेश करता हूँ। सू० वासी सम्पूर्ण ब्रह्मा में नहीं आते हैं।

c) उन्होंने त्रिमूर्ति ब्रह्मा नाम रख दिया है क्योंकि शिवबाबा प्र० ब्रह्मा द्वारा (दादा लेखराज ब्रह्मा द्वारा नहीं) नई दुनियाँ की रचना रचते हैं।

d) यह प्र० ब्रह्मा है, सू० वासी ब्रह्मा को प्रजापिता नहीं कहेंगे। वहाँ थोडेही प्रजा रचेंगे। हम ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ साकार में हैं तो प्र० ब्रह्मा भी साकार में है।

e) तो यह व्यक्त ब्रह्मा, वह अव्यक्त ब्रह्मा। सूक्ष्मवतन में सृष्टि नहीं रची जाती है। अक्सर करके लोग इस बात पर मूँझते हैं।

f) अब है ही नर्क तो जरुर पुनर्जन्म नर्क में लेंगे (सू० वतन में नहीं)।

g) तुम ब्राह्मण संगम पर बाप से वर्सा ले रहे हो। संगम पर आत्मा परमात्मा मिल रहे हैं।

26) मु. नं. - 26 (दि. 8-9-63)

a) बाप कहते हैं योग अक्षर काम में न लाओ, बाप को याद करो। उस पतित पावन को ही याद करना है।

b) उनका असली नाम एक ही शिव है। इनमें प्रवेश करते हैं तो भी नाम शिव ही है।

c) तुमको इन ब्रह्मा को याद नहीं करना है।

d) बाप ने समझाया है जो अपन को परमात्मा कहलाये अपन को पूजा कराते हैं, वह हिरण्यकश्यिपु जैसे दैत्य हैं।

e) तुम हो ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियाँ। नहीं तो ब्रह्मा कहाँ से आया ?

f) राधे-कृष्ण का किसको भी पता नहीं है। वह फिर कहाँ चले जाते हैं ? रा० कृ० ही स्वयंवर के बाद फिर ल० ना० बनते हैं। दोनों अलग2 महाराजाओं के बच्चे हैं।

g) तुम ही इस ज्ञान से नर से नारायण (डायरेक्ट) बनते हो।

h) प्रवृत्ति मार्ग है ना, तो जोड़ियों की माला है। सिंगल की माला नहीं होती। सन्यासियों की माला होती नहीं।

i) बाप कहते हैं मैं हर कल्प के पुरुषोत्तम संगम युग पर आता हूँ। 50-60 वर्ष में बाप आकर तुमको पढ़ाते हैं।

j) अभी तो सभी यहाँ है (सूक्ष्मवतन में नहीं)।

27) मु. नं. - 27 (दि. 9-12-87)

a) यहाँ धर्म स्थापक दूसरे के शरीर में आ सकते हैं। फिर उनका नाम होता है।

b) धर्मराज भी शरीर धारण कराकर सजा देंगे।

c) हमेशा पहले स्थापना, फिर विनाश, पालना- ऐसे कहना चाहिए।

d) यह बाबा का शरीर मुकरर है।

e) बाबा दूर थोड़ेही हैं। हर एक को सर्जन से राय मिल सकती है। यह है सबसे बड़ा सर्जन।

f) ब्रह्मा से विष्णु निकलने में एक सेकन्ड, और कोई यह बातें समझ न सकें। ब्रह्मा से सेकन्ड में श्री नारायण बन जाते हैं (ब्रह्मा से प्रिन्स बनने वाला दादा लेखराज ब्रह्मा की बात नहीं)।

मु. दि. 1-1-87

g) ईश्वर तो है निराकार। उनके साथ लव तो साकार में चाहिए ना। जीव आत्मा और परमात्मा जब साकार में मिले तो लव हो।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

h) पूछो - भगवान से तुम्हारा क्या संबंध है ? भगवान तो है स्वर्ग का रचयिता, मात-पिता है ।

28) मु. नं. - 28 (दि. 1-9-99)

a) ऐसे नहीं कहेंगे कि मेरे में तो शिवबाबा बैठा है, मैं शिव हूँ । बाप कहते हैं मैं कोई में जाता नहीं हूँ ।

b) बाप जिस भाषा में समझाते हैं, उसमें ही कल्प2 समझायेंगे । जो भाषा इनकी होगी, उसमें ही समझायेंगे ना। हिन्दी ही होनी चाहिए ।

c) यह पक्का याद रखो - हमारा बाबा बाप भी है, टीचर भी है, प्रीसेप्टर भी है ।

d) सतयुग की स्थापना बाप ने की है फिर तुम आयेंगे तो स्वर्ग की राजधानी मिल जायेगी । बाकी ऑपनिंग सेरीमनी कौन करेगा ? बाप तो स्वर्ग में आते नहीं ।

e) भक्तिमार्ग में भी ट्रान्सफर करते हैं दूसरे जन्म के लिए । परन्तु वह है इनडायरेक्ट, यह है डायरेक्ट ।

f) बाप कहते हैं मैं हूँ गरीब निवाज़ । मैं आता भी भारत में हूँ, उसमें से भी यह आबू सबसे बड़ा तीर्थ है जहाँ बाप आकर सारे विश्व की सद्गति करते हैं ।

g) वह (तथाकथित ब्र० कुमार-कुमारियाँ) है मैजारिटी, तुम्हारी है मैनारिटी । जब तुम्हारी मैजारिटी हो जायेगी, तब उन्हों को भी कशिश होगी ।

29) मु. नं. - 29 (दि. 27-1-99)

a) मनुष्य अपने को भगवान, परमात्मा कहलाये-यह तो बिल्कुल ही रांग है ।

b) ऐसे गृहस्थ व्यवहार में रहकर ज्ञान-योग में अन्दर वालों से भी तीखे जा सकते हैं।

c) बाबा तो प्रदर्शनी में जा न सके क्योंकि बापदादा दोनों इकट्ठे हैं । बाबा की आत्मा और इनकी आत्मा इकट्ठी हैं ।

d) जानता हूँ हमारे लिए बहुत सहज है, क्योंकि बाबा की प्रवेशता है । बाबा का नम्बरवन सिकिलधा बच्चा हूँ (ब्रह्मा बाबा - शिवोऽहम) ।

e) रुद्र ज्ञान यज्ञ वा शिव ज्ञान यज्ञ - बात एक ही है । रुद्र यज्ञ से विनाश ज्वाला निकली और श्री कृष्णपुरी अथवा आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्था० हुई।

f) यह बापदादा दोनों इकट्ठे हैं ।

g) प्रदर्शनी द्वारा प्रजा तो बहुत बनती है ।

30) मु. नं. - 30 (दि. 20-1-98)

a) जो जीते जी मरते नहीं, उनका मरजीवा जन्म नहीं कहेंगे । जब तक मरजीवा नहीं बने हैं अर्थात् बाप को अपना नहीं बनाया है, तब तक पूरा वर्सा भी मिल नहीं सकता ।

b) ...जिसके लिए भक्त लोग भक्तिमार्ग में धक्का खाते रहते हैं । बाप से मिलने के लिए अनेकानेक उपाय करते हैं । कितने वेद, शास्त्र, मैगज़ीन आदि अथाह पढ़ते रहते हैं ।

c) माँ-बाप को बहुत दुःखी करते हैं । सबसे जास्ती दुःख देने वाला कौन है ? बाप कहते हैं इन गुरुओं ने परमात्मा की महिमा गुम कर दी है ।

d) जबकि गीता पढ़ने से भी कुछ नहीं समझते तो बाकी शास्त्र पढ़ने से फायदा ही क्या ? वर्सा तो फिर भी गीता (माता) से मिलना है ।

e) हम जीवनमुक्ति में जाते हैं, और सब मुक्तिधाम में चले जाते हैं । इसको जयजयकार कहा जाता है । हाहाकार के बाद जयजयकार होना है ।

f) यह है ईश्वरीय कुटुम्ब । ईश्वर के साथ हम रहते हैं कल्प में एक बार । ब्राह्मण कुल सबसे ऊँची चोटी है ।

g) यहाँ यह बाप कहते हैं मैं तुमको साथ ले जाऊँगा । मैं आया ही हूँ तुमको साथ ले जाने के लिए ।

31) मु. नं. - 31 (दि. 16-9-98)

a) तुम्हारे दर पर कोई भी आये उसे कुछ न कुछ ज्ञान धन देना है । पहले फॉर्म भराओ फिर दो बाप का परिचय दो ।

b) ज्ञान सागर कोई महल में तो नहीं रहते हैं, झोपड़ी में रहते हैं । झोपड़ी में रहना पसन्द करते हैं ।

c) जब कोई कहे हम फॉर्म नहीं भरेंगे तो बोलो-अच्छा, अपना नाम तो लिखेंगे । दो बाप तो हैं । जब पिता कहते हो तो उनका नाम तो लिखो ।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

d) यह त्रिमूर्ति सहित ल० ना० का चित्र बहुत अच्छा है। हर एक के पास होना चाहिए।
e) दो बाप हैं (शिव बाप + प्रजापिता), दोनों से वर्सा मिलता है।
f) यह प्र० ब्रह्मा भी बैठा है, यह वर्सा ल० ना० सामने खड़े हैं।
g) शंकर का तो फिर भी आकार रुप है ना। दोनों एक तो हो नहीं सकते। कितनी गुप्त बातें हैं।
h) तुम बच्चे अनुभवी हो बाबा ने सा० किया। मम्मा ने कोई सा० नहीं किया, फिर भी मम्मा सबसे तीखी गई।
i) अभी तुम सब सीतायें रावण की जेल में, शोक वाटिका में दुःख उठा रही हो। रामराज्य में कभी शोक होता ही नहीं। तो जिससे वर्सा मिलता है उनको याद करना है ना।
j) बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। अब वह (बेहद का वर्सा) रावण ने छीना हुआ है।
k) पारलौकिक बाप की पहचान देनी है। पारलौकिक फादर एक ही बार आते हैं।

32) मु. नं. - 32 (दि. 1-11-00)

a) कृष्ण को निराकार तो नहीं कहेंगे। साकार में ही उनको पहचाना जाता है।
b) अब प्र० ब्रह्मा के मुख वंशावली बन ब्राह्मण बने हो। ब्राह्मण कुल की डिनायस्टी नहीं होती। ब्राह्मण कुल कोई राजाई नहीं करते हैं।
c) उनकी जीवन कहानी को भी नहीं जानते। बच्चे बाप का जीवन न जानें तो वर्सा कैसे मिलें ?
d) हाहाकार के बाद जयजयकार होनी है।
e) बाबा ने यह भी समझाया है - संगम के साथ पुरुषोत्तम अक्षर जरुर लिखो। त्रिमुर्ति अक्षर भी जरुर लिखना है और प्रजापिता अक्षर भी जरुरी है क्योंकि ब्रह्मा नाम भी बहुतों के हैं।
f) ऐसे भी नहीं, कोई घरबार छोड़ना है। बाबा तो कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र रहो।
g) यहाँ तुम जानते हो चित्र तो बदलते जाते हैं। चित्र देने से क्या फायदा ? नाम, रुप, देश, काल सब बदल जाता है।
h) ऐसे नहीं, कृष्ण ने गोप-गोपियों को सुनाया। वह तो है सतयुग का प्रिन्स। वहाँ कैसे राजयोग सिखायेंगे वा पतित को पावन बनायेंगे ?
i) बाप फिर टीचर भी है। गाते भी हैं सतगुरु बिगर गति नहीं।
j) बाबा कहते हैं- बच्चे, तुम्हें कोई देहधारी गुरु आदि करने की दरकार नहीं है। तुम्हें किसी से कुछ माँगना नहीं है। कहा भी जाता है - माँगने से मरना भला।
k) प्रभु को कोई जानते ही नहीं तो गुरु को पकड़ लेते हैं। धन आदि गुरु के आगे अर्पण कर देते हैं।
l) बाप समझाते हैं मैं गरीब निवाज़ हूँ इसलिए मैं आता ही भारत में हूँ। डायरेक्ट और इनडायरेक्ट में कितना फर्क है!
m) जरुर बेहद के बाप से बेहद का वर्सा ही मिलना चाहिए। बाप से तुम वर्सा लेते हो सिर्फ दादा द्वारा। दादा भी उनसे वर्सा ले रहे हैं।

33) मु. नं. - 33 (दि. 10-6-87)

a) शिव भगवानुवाच - यह कहना पड़ता है, समझाने के लिए। मैं जो हूँ, मेरा नाम कभी नहीं बदलता।
b) बाप भी गुप्त है, दादा भी गुप्त है। बच्चे भी गुप्त हैं। बच्चे भी पूरा समझ नहीं सकते।
c) उनके सम्मुख बैठे हैं। प्र० ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हैं। प्रजापिता अक्षर न डालने से मनुष्य मुँझते हैं।
d) पुकारते भी हैं - हे पतित पावन आओ, तो समझाना चाहिए ना। वही सुप्रिम गुरु है। सर्व का सद्गति दाता राम गाया जाता है।
e) बाप और वर्से को याद करना है।
f) फिर तुम्हारी 7 रोज की भट्ठी भी मशहूर है। 7 रोज अच्छी रीति समझ कर बुद्धि में धारण कर फिर भल कहाँ भी चले जाओ।
g) यह भी तो तुम्हारा अविनाशी ज्ञान सर्जन है।
h) फार्म भराते समय नब्ज देखकर पूछना होता - परमपिता से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है ? पहले तो इस बात पर समझाना होता है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

34) मु. नं. - 34 (दि. 30-6-86)

a) अमरबाबा जिसको अमरनाथ भी कहा जाता है। इस यज्ञ को पाठशाला कहा जाता है।

b) तुम जानते हो इस ज्ञान यज्ञ से विनाश ज्वाला प्रज्वलित हुई है।

c) परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा मनुष्य सृष्टि रचते हैं। इसलिए ब्रह्मा को प्रजापिता कहते हैं।

d) ब्रह्मा से वर्सा मिल न सके। तुम सब बच्चे वर्सा उनसे पाते हो, इनसे नहीं। जिससे वर्सा नहीं पाना है उनको याद नहीं करना है।

e) बाबा का चित्र आदि माँगते हैं। बाबा कहते हैं चित्र की तो कोई दरकार ही नहीं।

35) मु. नं. - 35 (दि. 20-8-85)

a) अभी देह ली हैं तुम बच्चों को नालेज देने के लिए। तो भी उनका नाम शिव ही है। उनका नाम कब बदल नहीं सकता।

b) प्र० ब्रह्मा के बच्चे ब्राह्मण ही ठहरे। ब्राह्मण तब होंगे जब प्रजापिता सम्मुख होगा। अभी तुम सम्मुख हो।

c) अभी बाप वृद्धि को बन्द करते हैं। एक धर्म की स्थापना कर अनेक धर्मों का विनाश करा देते हैं।

d) झूठ खण्ड स्थापन करने वाला है रावण। भक्ति सिखलाने वाले हैं अनेक गुरु लोग। वो कोई सतगुरु नहीं है। सन्यासी उदासी बहुत प्रकार के गुरु लोग होते हैं।

e) अब अमरनाथ की यात्रा होती है, बोलो - जिसको सूक्ष्मवतन में दिखाते हो वह फिर स्थूलवतन में कहाँ से आया? (आबू) पहाड़ आदि तो यहाँ है ना। मनुष्य कितने धक्के खाते रहते हैं। समझते नहीं हैं कि शंकर के पास फिर पार्वति कहाँ से आई जो उनको पावन बनायेंगे।

f) बाबा ने कहा था कि हरेक चित्र में लिखो - पारलौकिक परमपिता परमात्मा त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच्य। त्रिमूर्ति न लिखने से कहेंगे - शिव तो निराकार है, वह कैसे ज्ञान देंगे ?

36) मु. नं. - 36 (दि. 27-4-01)

a) यह मेरा रथ है। शंकर से अगर पूछेंगे, पूछ तो नहीं सकते परन्तु सूक्ष्मवतन में जाकर कोई पूछे तो कहेंगे यह सूक्ष्म शरीर हमारा है।

b) पहली2 मुख्य बात समझानी है कि पतित-पावन, ज्ञान का सागर श्री कृष्ण (उर्फ ब्रह्मा) नहीं है। (वो) पहले प्रिन्स बनते हैं फिर महाराजा बनते हैं।

c) भारत में शुरु से ही प्रवृत्ति मार्ग चला आता है। इसलिए विष्णु को 4 भुजायें दी हैं।

d) सागर और ब्रह्मपुत्रा दोनों कम्बाइन्ड हैं। यह है चैतन्य, वह है जड़। यह है ज्ञान मार्ग, वह है भक्ति मार्ग।

e) शिवबाबा बाबा भी है, साजन भी है, सभी सीताओं का राम है। वही पतित-पावन है। उसने संगम पर ही यह प्रालब्ध पाई थी। उनको हिंसक बाण दिखाना रांग है।

f) सिर्फ वृक्षपति को याद करो, पवित्र बनो, बस।

37) मु. नं. - 37 (दि. 18-3-99)

a) जबकि तुम बाप को याद करते हो तो ब्रह्मा को भी याद करना पड़े।

b) यह वो ही गीता एपीसोड है, सिर्फ कृष्ण का नाम डाल दिया है। भक्ति मार्ग में जो भी दृष्टान्त है वह सब इस समय के हैं।

c) राम को जानते नहीं। शिव की पूजा जो की जाती है उनको राम नहीं कहेंगे, शिवबाबा कहना शोभता है।

d) समझते हैं कृष्ण (उर्फ ब्रह्मा) ने ज्ञान दिया इसलिए उनको बहुत प्यार करते हैं। मैं सभी को साथ ले जाता हूँ।

e) बाबा तो सारी आत्माओं के झुण्ड को वापस ले जाते हैं। बाकी थोडे रहते हैं। रहते भी वही हैं जिनको पिछाड़ी में आना हैं।

f) पढ़ाई भी एकरस है तो टीचर भीं एक है, बाकी सब हैं मास्टर्स।

g) तुमने सगाई शिव के साथ की है, न कि ब्रह्मा से। तो याद भी शिव को ही करना है। दलाल के चित्र की जरुरत नहीं।

h) पैसे की दरकार नहीं। मम्मा के पास भल धन नहीं था, परन्तु बहुतों का कल्याण किया।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

38) मु. नं. - 38 (दि. 15-11-87)

a) बाबा समझार्ते हैं कभी भी किसी देहधारी को याद नहीं करना है। इस बाबा के शरीर के साथ भी तुम्हारा लव नहीं होना चाहिए।

b) बाबा को डायरेक्ट पत्र लिख सकते हो। बाबा भी डायरेक्ट पत्र भेज सकते हैं।

c) कोई अज्ञान में जीवन कहानी लिखते हैं। हमको थोड़ेही जीवन कहानी आदि बनानी है।

d) कोई ब्राह्मणी भी कह देती है कि तुम इस सेन्टर पर मत आओ। अगर कोई ब्राह्मणी ऐसे कहती है तो बाबा को डायरेक्ट लिखी तो तुमको बाबा याद पड़ेगा और...।

e) बाप कहते हैं मैं बच्चों के आगे प्रत्यक्ष होता हूँ। बहुत बच्चे जो मुझे जानते ही नहीं, उनके सम्मुख कैसे हूँगा?

f) दूसरी बात- जो कभी ध्यान का पार्ट चलता है फलानी में मम्मा आई, बाबा आया-यह भी माया है। कोई2 में भूत आ जाता है फिर कहते हैं- शिवबाबा आया, मुरली चलाते हैं। यह सब माया विघ्न डालती है।

g) इस समय योगबल भी है तो बाहुबल भी है। यह क्रिश्चियन दोनों मिल जाएं तो विश्व के मालिक बन सकते हैं। इतनी ताकत इन्हों में है। परन्तु लॉ नहीं है।

h) माया ऐसी है जो माथा मूड लेती है, हार्टफेल कर देती है।

i) कृष्ण के 84 जन्मों के अन्त में मैनें प्रवेश किया है, इनका नाम ब्रह्मा रखा है। मुझे ब्रह्मा जरुर चाहिए, तो प्र० ब्रह्मा भी चाहिए। यह मेरा रथ मुकर्रर है।

j) फिर भी तुम नाम बदनाम करते हो। तब तो कहा हुआ है - सतगुरु का निंदक सूर्यवंशी घराने में ठौर न पाये।

39) मु. नं. - 39 (दि. 13-12-85)

a) अब गीत सुनने की कोई जरुरत नहीं रहती। गीत अक्सर करके भक्त ही गाते हैं और सुनते हैं। तुम तो पढ़ाई पढ़ते हो।

b) दुख में याद तो करते हैं ना - हे भगवान, हे राम। राम भी निराकार भगवान को ही कहते हैं।

c) यह है रुहानी पाठशाला। सिर्फ ईश्वरीय विश्वविद्यालय से भी मनुष्य समझ नहीं सकते। युनिवर्सिटी भी लिखना चाहिए।

d) बाबा ने कितना बार कहा है प्रजापिता अक्षर जरुर डालो, फिर भी बच्चे भूल जाते हैं।

e) राजाई तो संब खत्म हो जानी है। प्रजा का प्रजा पर राज्य सारी दुनियाँ में हो जायेगा।

f) पहले2 बाप का परिचय देना है।... परन्तु पहले2 तो बाप के चित्र पर समझाना मुख्य है।

g) टेप पर भी मुरली सुन सकते हैं।... क्यों न डायरेक्ट जाकर हम बाप से सुनें। इसलिए सम्मुख आते हैं।

h) तुम समझाते हो वास्तव में तुम भी प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हो। इस समय ही ब्रह्मा द्वारा स्थापना हो रही है।

40) मु. नं. - 40 (दि. 19-2-00)

a) बाप जो है, जैसा है, उसे यथार्थ रीति जानकर याद करना-यही मुख्य बात है।

b) सारे युनिवर्स का जो बाप है वह एक ही बार आते हैं सबको पावन बनाने।

c) कहते भी हैं - मैं जो हूँ, जैसा हूँ मुझे यथार्थ रीति कोई नहीं जानते। भल यहाँ रहते हैं परन्तु यथार्थ रीति से नहीं जानते।

d) नाम भी लिखा हुआ है - प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय। इससे भी समझते नहीं है कि यह रुहानी बेहद के बाप का ईश्वरीय विश्वविद्यालय है। तो क्यों न इसका नाम स्प्रीचुअल युनिवर्सिटी ऑफ स्प्रीचुअल इनकारोपरियल गॉड फादर (आध्यात्मिक ईश्वरिय विश्वविद्यालय) रखें।

e) यह गीता ज्ञान स्वयं बाप पढ़ा रहे हैं। किताब थोड़ेही हाथ में उठाते हैं।... ब्राह्मण धर्म में कोई किताब है क्या ?
मु. दि. 10-3-92

f) सुनने लिए मना नहीं है और न कोई जरुरी है कि सफेद ड्रेस पहननी है। बहुरुपी बनकर कोई भी कपड़े पहनकर जाओ, बोलो - ब्रह्माकुमारी तो सफेद वस्त्रधारी होती हैं, उन्हों का तो सन्यास किया हुआ है। हम तो गृहस्थ व्यवहार में रहते हैं।

g) त्रिमूर्ति की महिमा को कोई जान नहीं सकते हैं। जो अनन्य बच्चे हैं वे समझते हैं हमारी मनोकामना पूरी हो रही है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

41) मु. नं. - 41 (दि. 5-9-86 / 16-3-73)

a) यह घर का घर भी है और युनिवर्सिटी भी है, इसको ही गॉड फादरली वर्ल्ड युनिवर्सिटी (आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय) कहा जाता है। क्योंकि सारी दुनियाँ के मनुष्य मात्र की सद्गति होती है। घर का घर भी है, मात-पिता के सम्मुख बैठे हैं।

b) रचयिता और रचना के बारे में जो मनुष्य कहेंगे वह झूठ।

c) ब्रह्मा का दिन, ब्रह्मा की रात। अब एक की तो हो न सके, बहुत होंगे ना।

d) ऐसा विनाश करते हैं जो बेहद में खत्म हो जाए।

e) बाप कहते हैं इन भक्तिमार्ग के शास्त्रों से मुझे कोई प्राप्त नहीं कर सकते हैं। सिर्फ सा० में खुश नहीं हो जाना है। बाकी भगवान किसको मिल नहीं सकता।

f) तुमको हार्टफेल नहीं होना चाहिए।

g) अखबारों में भी खुद डालते हैं कि कोई प्रेरव है जो हमसे यह सब बनवाते हैं।

मु. दि. 16-3-73

h) शरीर तो अन्त में छूटेगा जब मंजिल पूरी होगी।... तब तक बाप सिखाते, पढ़ाते रहते हैं।

i) उस गुरु के बदली एक शिवबाबा को याद करना पड़े। यह समय है ही बाप द्वारा बाप से मिलने का अथवा वरसा लेने का।

j) यह तुम्हारे लिये हास्पीटल भी है तो कालेज भी है। विश्व का रचयिता ही यह विश्वविद्यालय स्थापन करते हैं। हम लिखते भी ऐसे हैं। परन्तु युनिवर्सिटी अक्षर लिखने नहीं देते।

42) मु. नं. - 42 (दि. 6-8-98)

a) जगत अम्बा की महिमा है। एक तो नहीं है। तुम इस समय जैसे कि सारे जगत की पालना करते हो, परन्तु कोई जानते नहीं।

b) गोपी वल्लभ की गोप-गोपियाँ (गुप्त पुरुषार्थी) गाई हुई हैं। वल्लभ बाप को कहा जाता है।

c) पुराने2 कितने भागन्ती हो गये ! 25-30 वर्ष वाले भी इतना नहीं याद रखते कि वह बेहद का बाप है, जिससे वर्सा पाते हैं।

d) तो अलौकिक सम्बन्ध में भी ऐसे होता है - 7 रोज़ वाला बच्चा 25 वर्ष वाले से तीखा चला जाता है।

e) लव-कुश की क्या2 बातें बैठ सुनाते हैं ! गाते हैं - राम राजा, राम प्रजा धर्म का उपकार है। यह सब बातें समझने की हैं।

f) ल० ना० कहने से मनुष्य मूँझ जाते हैं। राधे-कृष्ण फिर कहाँ गये, क्या हुआ- कुछ भी पता नहीं है। राधे-कृष्ण कोई आपस में भाई-बहन नहीं थे।

g) जगत अम्बा है तो बच्चे भी साथ में होंगे।

43) मु. नं. - 43 (दि. 19-12-01)

a) निराकार को मुख जरुर चाहिए, इसलिए इनको भगीरथ भी कहा जाता है। इसमें प्रेरणा की तो बात हो नहीं सकती।

b) प्र० ब्रह्मा को भी पिता कहते हैं। तो माता कहाँ ? यह ब्रह्मा माता बन जाती है। यह भी एडाप्टेड मदर है, वह (प्रजापिता) फादर है।

c) 30 वर्ष वाले से भी मास वाले तीखे चले जाते हैं। इसलिए ऐसे नहीं समझना चाहिए कि हम तो बहुत देरी से आये हैं।

d) तो अब समझते हैं कि यह ल० ना० विश्व के मालिक थे, कितने साहूकार थे। आधाकल्प विश्व के मालिक थे। वह है रामराज्य, यह है रावण राज्य।

e) ईश्वर को राम नहीं कहा जाता। नाम राम का राइट है क्योंकि यह तो कोई जानते नहीं कि ईश्वर का नाम रुप क्या है।

f) दैवी धर्म का फाउन्डेशन ही सड़ गया है। बाकी ऐसे नहीं कहेंगे कि फाउन्डेशन था ही नहीं। प्रायः गुम हो गया है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

g) बाप कहते हैं यह मेरा शरीर मुकर्रर है। यह बदली हो नहीं सकता।
h) ऐसे भी नहीं कि तुम्हारी आत्मा के बुलाने पर आता हूँ। जब मेरे आने का समय होता है तो एक सेकेण्ड भी नीचे-ऊपर नहीं होता है। मुझे आरगन्स ही कहाँ हैं जो तुम्हारी पुकार सुनूँगा ?
i) मैं भी ड्रामा के बंधन में बांधा हुआ हूँ।
j) राम को भी काला बनाया है, शिव का लिंग भी काला बनाया है। वह तो कभी काला बनता नहीं है।

44) मु. नं. - 44 (दि. 24-8-00)
a) भारत ही रेसपान्सिबुल है अपने को गिराने और सबको गिराने।
b) यह बेहद की बात है। रावण का राज्य सारी बेहद की दुनियाँ पर है। हद के लंका आदि की बात नहीं।
c) सुदामा का भी मिसाल गाया हुआ है - चावल मुट्ठी में ले आया। बाबा ने मम्मा का मिसाल बताया है - चावल मुट्ठी भी नहीं ले आई। फिर कितना ऊँच पद पा लिया। इसमें पैसे की बात नहीं है।
d) गायन भी है ना - राम राजा, राम प्रजा..., वह है अमरलोक।
e) शिवबाबा के बच्चे हो, प्र० ब्रह्मा के भी बच्चे हो। यह है ह्युमैनिटी का ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर।
f) यह है पुरुषोत्तम संगम युग। अब तुम सुखधाम के मालिक बनते हो।
g) भारतवासी फिर समझते हैं इतना धन है, बड़े2 महल है, बिजलियाँ है - बस, यही स्वर्ग है। यह सब हैं माया का पाम्प।

45) मु. नं. - 45 (दि. 13-9-87)
a) अन्तिम प्रत्यक्षता के समय की सीन क्या होगी ? एक ओर विनाश की आग लगेगी, दूसरी ओर अखबारों द्वारा चारों ओर बाप का सन्देश पहुँचेगा...! ...बाप भी वापस चला जायेगा।
b) वाणी से परे अर्थात् घर। वानप्रस्थ का अर्थ न गुरु लोग जानते, न फालोअर्स ही जानते हैं।
c) पावन दुनियाँ और पतित दुनियाँ का भी अर्थ नहीं समझते। कहा भी जाता है ना कुम्भकरण की नींद में सोये पड़े हैं, यह नहीं जागेंगे।
d) मुक्ति में तो सब जायेंगे, बाकी जीवनमुक्ति में जाना कोई मासी का घर थोड़ेही है।
e) कितने महल बनते रहते, कितनी ऊँची2 माड़िया बनाते रहते। समझते हैं सतयुग से भी भारत अभी ऊँच है
f) बाम्बे पहले क्या थी ! समुद्र को सुखाया है। पानी जैसे कमती होता है।
g) बाप भी विनाश के लिए आये हैं तो आधे पर थोड़ेही जायेंगे। आग लगकर जब पूरी होगी तब चले जायेंगे।

46) मु. नं. - 46 (दि. 17-8-68)
a) गुरु आदि लोग जो अपने को परमात्मा कहलाते हैं उनको हिरण्याकश्यप कहा जाता है। वो हैं सबसे बड़े दैत्य।
b) रहना भी अपने2 घर में है।... तो गृहस्थ में रहते हुए शरीर निर्वाह अर्थ धन्धा आदि भी करना है।
c) ऐसे कोई भी कह नहीं सकता है कि हमारी आँखें क्रिमिनल काम नहीं करती हैं। नम्बरवन तो काम की क्रिमिनल आईज्ड बहुत खराब है।
d) वहाँ तो रामराज्य है। वहाँ रावण कहाँ से आया ? मनुष्यों की बुद्धी तो बिलकुल ही चटखाते में है। किसने की ? इन गुरुओं ने, शास्त्रों ने।
e) सांवरा कृष्ण देखकर भी बहुत खुश होते हैं। उनको क्यों पता कि गोरा कब था, क्या था।

47) मु. नं. - 47 (दि. 21-1-00)
a) कुमार-कुमारी की भी कहाँ न कहाँ विकार की दृष्टि उठती है। अब बाप कहते हैं यह विकार की दृष्टि नहीं होनी चाहिए।
b) बेहद का बाप है निराकार। वह जब तक साकार में न आये तब तक बाप से वर्सा कैसे मिले ? तो शिवबाबा प्र० ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट कर वर्सा देते हैं।
c) इस बैज के साथ फिर एक छोटा पर्चा भी होना चाहिए। ऐसे पर्चे 2-4 लाख छपे हो, जो कोई को भी पर्चा दे सकते हैं। ऊपर में त्रिमूर्ति हो, दूसरे तरफ सेन्टर्स की एड्रेस हो।
d) बी० के० की मत मिलती है सो भी जाँच करनी होती है कि यह मत राइट है वा रांग है।
e) कहाँ भी जाओ, पॉकट में भी पर्चे और बैजेस सदैव पड़े रहें।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

48) मु. नं. - 48 (दि. 11-12-01)

a) यहाँ सम्मुख तुम मुझे माता-पिता कहते हो। ...परन्तु उस समय मैं गृहस्थी नहीं था। इस समय आकर गृहस्थी बना हूँ।

b) अब प्रजापिता और शिव दोनों ही बाप ठहरे। बाप तो माता द्वारा एडाप्ट करेंगे ना। ...तब ब्रह्मा को खुद कहते हैं तुम हमारा बच्चा भी हो, वन्नी (पत्नी) भी हो।

c) बाप कहते हैं तुमको याद मुझे करना है। ब्रह्मा को याद नहीं करना है।

d) मैं इनमें प्रवेश होकर तुमको राजयोग सिखलाता हूँ। प्रेरणा से बाबा काम नहीं करता है।

e) किसको याद करना है ? श्री कृष्ण तो संगम पर हो ना सके। हाँ, कृष्ण की आत्मा जरुर है। यह है मुख्य पहला नम्बर प्रिन्स।

f) बाप कहते हैं मुख्य एक ही बात को उठाओ - गीता कृष्ण ने नहीं गाई। कृष्ण को भगवान नहीं कह सकते। इस बात में ही सारी बात है जीतने की।

g) मुरली को कोई 5-8 बारी अच्छी रीति पढ़े तो ब्राह्मणी से भी ऊँच जा सकते हैं।

h) वास्तव में ब्राह्मणियाँ हैं मोस्ट ओबीडियन्ट सर्वेन्ट।

i) राधे-कृष्ण के माँ-बाप कोई भी इतनी मार्क्स नहीं उठा सकते हैं, जितने रा० कृ० उठाते हैं। पहले जरुर उनके माँ-बाप जन्म लेते होंगे। यह बातें बड़ी गुप्त है।

j) बाप कहते हैं मैं कितना बड़ा गृहस्थी बना हूँ। सबसे बड़े ते बड़ा गृहस्थ धर्म मैं पालन करता हूँ।

49) मु. नं. - 49 (दि. 17-11-00)

a) कृष्ण (उर्फ ब्रह्मा) किसी का बाप हो नहीं सकता। वह तो छोटा बच्चा, सतयुग का प्रिन्स है। वह टीचर भी नहीं हो सकता। खुद ही बैठकर टीचर से पढ़ते हैं।

b) एक2 बात में बहुत ही गुह्य राज़ भरा हुआ है, जो समझाना बहुत जरुरी है।

c) सूक्ष्मवतन में तो यह श्रृंगार आदि होना नहीं चाहिए। परन्तु चित्रों में दिखाया है तो बाबा उसका ही सा० कराए फिर अर्थ समझाते हैं।

d) कोई देवी-देवता धर्म का कनवर्ट होकर क्रिश्चियन धर्म में चला गया होगा तो वह फिर लौटकर अपने देवी-देवता धर्म में आ जाएगा।

e) कोई तो गीता (मुरली) के श्लोक एकदम कण्ठ कर लेते हैं। बाकी तो इनका अर्थ हर एक अपना2 बैठ निकालते हैं।

f) बैठो तो समझायें कि इनको ब्रह्मा क्यों कहते हैं।

g) प्र० ब्रह्मा और सरस्वती, 4 भुजाएं दिखाते हैं। तो 2 भुजा बेटी की हो जाती है। युगल तो है नहीं। युगल तो वास्तव में बस विष्णु ही है। ब्रह्मा की बेटी है सरस्वती।

h) शंकर भी युगल नहीं है, इस कारण शिव-शंकर कह देते हैं। अब शंकर क्या करते हैं ? बाप कैसे बैठ बच्चों का मौत करायेंगे, यह तो पाप हो जाए।

i) अल्फ नहीं समझा है तो बे को कुछ नहीं समझेंगे।

50) मु. नं. - 50 (दि. 22-5-98)

a) वास्तव में शिवबाबा है पतियों का पति। यह पति भी अमर है, अमरनाथ (बनाम शंकर) है ना। तुमको भी अमरनाथ, अमरपुरी का मालिक बनाते हैं।

b) तुम श्रीमत पर कदम2 चलते रहो। तुम जो वर्शन्स सुनते हो वह एक 2 वर्शन्स लाख रुपये का है।

c) मम्मा ने तो कुछ भी नहीं देखा, कभी भी ध्यान में नहीं गई। मम्मा देखो बिगर ध्यान के कितना आगे नम्बर लेती है।

d) क्रिश्चियन को भी इतना बल मिल जाए तो विश्व के मालिक बन सकते हैं। परन्तु लॉ नहीं कहता है।

51) मु. नं. - 51 (दि. 8-1-95)

a) शिवबाबा और प्र० ब्रह्मा - आत्माओं का बाप और सब मनुष्य मात्र का बाप। यह प्वाइन्ट बहुत अच्छी है समझाने की, परन्तु बच्चे पूरी रीति समझाते नहीं है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

b) डायरेक्ट ईश्वर मत देते हैं कि यह 2 करो, रेसपॉन्सिबल हम हैं।
c) बाबा हमेशा कहते हैं याद में रहो। कई बच्चे नेष्ठा में बैठते2 ध्यान में चले जाते है - न ज्ञान, न याद रहती।
d) इस समय तो नर्कवासी सब हैं। जरुर पुनर्जन्म भी यहाँ ही लेंगे (सू० वतन में नहीं लेंगे)।
e) तुम बच्चे समझा सकते हो कि यह रामायण की कथा आदि सारे भारत पर है। सिर्फ समझाने की अक्ल चाहिए।
f) बिना प्रूफ और प्रमाण के बुद्धिमान लोग मानने के लिये तैयार नहीं होते।
g) ब्राह्मण जीवन के जी-दान का आधार कौन-सा है ? मुरली। पढ़ाई का भी आधार है मुरली।

52) मु. नं. - 52 (दि. 3-11-99)

a) बाबा कहते - मीठे बच्चे, कभी भी मुरली मिस नहीं करना। जिन्हें माया मगरुर बना देती है वह देहअभिमान में आकर मुरली को भी डोन्ट-केयर करते हैं।
b) देहधारी नम्बरवन है कृष्ण (उर्फ दादा लेखराज ब्रह्मा)। उनको बाप, टीचर, सतगुरु कह नहीं सकते।
c) इस एक आत्मा का ही तीनों सर्विस इकट्ठी है। इसलिए उनको सुप्रिम कहा जाता है।
d) यह ल० ना० भगवान-भगवती हैं ना, इन्हों की भी वंशावली है ना।
e) परन्तु निराकार अपना परिचय कैसे दे ? जरुर रचना के आदि, मध्य, अन्त का नालेज देने के लिए मुख चाहिए ना। मनुष्य गऊमुख पर जाते हैं, कितना धक्का खाते हैं।
f) बच्चे ही बाप को शो करेंगे - सन शोज़ फादर। सन का फिर फादर शो करेंगे (फादर शोज़ सन)।
g) सबके चित्र रखते रहेंगे तो उनको क्या कहेंगे ? व्यभिचारी भक्ति ठहरी ना।

53) मु. नं. - 53 (दि. 29-3-02)

a) जैसे बैरिस्टर कहेंगे हम बैरिस्टर बनायेंगे। श्री ल० ना० अथवा उसकी डिनायस्टी का वर्सा देने आया हूँ।
b) अब प्रैक्टिकल में पार्ट चल रहा है। शिवबाबा का भण्डारा सदैव भरपूर है। यह भी एक परीक्षा थी, जिनको डर लगा वह सब चले गये।
c) बाबा हमको वाणी कट करके भेज देते हैं, हमारे रत्नों की चोरी हो जाती है।
d) पिछाड़ी का जब समय होगा उस समय तुमको पूरा पता पड़ेगा।... परन्तु टू लेट, बहुत पछतायेंगे।

54) मु. नं. - 54 (दि. 1-7-94)

a) एक2 बात समझने से तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए और ऐसी त्रिमूर्ति युनिवर्सिटी में बहुतों को ले आकर दाखिल करना चाहिए।
b) फादर सिर्फ कहे और कभी मिले ही नहीं तो वह फादर कैसे हो सकता ? सारी दुनियाँ की जो भी आत्मायें हैं, सबसे मिलते हैं।
c) बाप तुमको यह जो सौगात देते हैं वह कभी जलने वाली नहीं है। ज्ञान कोई शास्त्र नहीं जो जलाया जाए।
d) इसलिए ही तुम्हारा भागना हुआ। तुम आकर भट्ठी में पड़े जो कोई देख न सके, मिल न सके।
e) अल्फ और बे - यह याद करो, सभी को बताओ।
f) त्रिमूर्ति तो बहुत बनाते हैं परन्तु ऊपर में शिवबाबा दिखलाते नहीं। यह थोडेही समझते हैं गीता का भगवान शिव है, जिस द्वारा यह नालेज लेकर विष्णु बनते हैं।
g) इस संगमयुग का किसको भी पता नहीं। समझते हैं पुरुषोत्तम युग, परन्तु कैसे, कब, क्यों पु० युग है - यह किसको भी पता नहीं।
h) शिवजयन्ती फिर राम जयन्ती, कृष्ण जयन्ती और किसकी जयन्ती ? जगत अम्बा, जगत पिता की थोड़ेही जयन्ती मनाते हैं।

55) मु. नं. - 55 (दि. 28-3-01 / 22-8-72)

a) रावण की चमाट लगती है। जैसे कहा जाता है शंकर प्रेरक है, बॉम्बस आदि बनवाये हैं, वैसे 5 विकारों रुपी रावण प्रेरक है मनुष्य को पतित बनाने का।
b) बाबा ने समझाया था कि शिवबाबा और ब्रह्मा दादा दोनों इकट्ठे हैं। तो समझाना चाहिए कि सबसे नजदिक हैं।
c) जब मुरली चलती है तो बाबा खुद कहते हैं कि समझो कि शिवबाबा इन द्वारा सुना रहे हैं। यह ब्रह्मा भी जरुर सुनता होगा। यह न सुने और न सुनाये तो ऊँच पद कैसे पाये ?

PDF compression, OCR, web-optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

d) मुरली चलाकर फिर यात्रा पर लग जाओ क्योंकि वह वाणी से परे वानप्रस्थ अवस्था है।
e) आगे चलकर जोर से सा० होंगे। आबू तक क्यू लग जायगी। बाबा से कोई भी मिल नहीं सकेंगे।
मु. दि. 22-8-72
f) सर्वगुण सम्पन्न श्री कृष्ण गीता का भगवान है या पतित पावन ज्ञान का सागर, सुख का सागर... परमपिता परमात्मा है ? तो कह देते - दोनों एक ही है। खुद ही रुप धारण कर लीला करते हैं।
g) आते नहीं हैं तो बाबा लिख देते हैं क्या मुरली को फार्कती दी है ? मुरली को फार्कती दी तो मुरली सुनाने वाले शिवबाबा को भी दी।
h) तुम बच्चे जानते हो अभी बाकी 3-4 वर्ष है।

56) मु. नं. - 56 दि.(12-3-99)
a) ज्ञान मार्ग का गुरु मैं एक ही हूँ। ज्ञान जब मेरे से सुनें तब उनको ज्ञानी कह सकते हैं। बाकी सब हैं भक्ति।
b) भगवानुवाच - तुम कितने महान भाग्यशाली हो, इसलिए तुम्हारा हीरे जैसा जन्म अभी है।
c) बुद्ध की आत्मा ने प्रवेश किया, बुद्ध धर्म पहले तो होता नहीं। जरुर यहाँ के कोई मनुष्य में प्रवेश करेंगे।
d) बाप कहते हैं मैं ही तुमको अपना परिचय देता हूँ। मेरा परिचय कोई को है नहीं। न मैं किस तन में आता हूँ। मैं आता ही एक बार हूँ जब पतित दुनियाँ को चेन्ज करना है।
e) तुमको यह थोड़ेही पता पड़ता है कि शिवबाबा इनमें कब प्रवेश होता है। कृष्ण (उर्फ सू० वासी ब्रह्मा) की तिथि तारीख, मिनट, घडियाँ लिखते हैं। इनका कोई मिनट आदि नहीं निकाल सके।
f) (शिवबाबा इनमें कब प्रवेश होता है) यह ब्रह्मा भी नहीं जानते थे। जब नालेज सुनाई तब मालूम पड़ा।
g) क्रिश्चियन लोग खुद समझते हैं - हमको कोई प्रेर रहा है, जो हम विनाश के लिए यह सब कुछ बनाते हैं।

57) मु. नं. - 57 (दि. 26-6-01/12-4-76)
a) परमपिता परमात्मा ब्रह्मा तन द्वारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं।... शंकर द्वारा अनेक धर्मों का विनाश कराते हैं।
b) तुम हो (प्रजापिता) ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ। बी० के० तो यहाँ ही होंगे ना। प्र० ब्रह्मा के बच्चे तो जरुर ब्रह्मा के साथ ही होंगे।
c) मेरा शरीर का कोई नाम नहीं है, न मैं पुनर्जन्म में आता हूँ।
d) मैं इनमें प्रवेश करता हूँ, इनको भी मालूम नहीं पड़ता है। कोई तिथि तारीख नहीं।
e) यह भी नहीं जानते कि बाबा ने कब प्रवेश किया। बहुत ध्यान में जाते थे, वह कोई तिथि तारीख वेला नहीं निकाल सकते। कृष्ण (उर्फ सू० वासी ब्रह्मा की सोल) को भी पूजते हैं। किस समय, कितने मिनट आदि सारा निकालते हैं।
f) बाप को और वर्से को याद करना है। रहना भी है गृहस्थ व्यवहार में, यहाँ आकर थोड़ेही रहना है।
मु. दि. 12-4-76
g) ऐसे नहीं बाबा का आवाहन करते हैं। बाबा का आवाहन तो कर ही नहीं सकते। बाबा को आपेही आना है।
h) गुरु तो बहुत प्रकार के हैं, जो कुछ शिक्षा देते हैं उसको गुरु कह देते हैं। यहाँ तो बाप प्रैक्टिकल में राजयोग सिखलाते हैं।

58) मु. नं. - 58 (दि. 15-10-69)
a) शंकर के तो कैरेक्टर्स नहीं कहेंगे। तुम बच्चे जानते हो ब्रह्मा और विष्णु का आपस में क्या सम्बन्ध है। विष्णु के दो रुप हैं यह ल० ना०।
b) प्र० ब्रह्मा तो जरुर यहाँ ही चाहिए ना। बहुत करके तो इस पर ही मूँझते हैं, ब्रह्मा तो है।
c) पवित्र होते ही हैं सन्यासी। पवित्र कन्या के तन में आवें, परन्तु कायदा नहीं है। बाप सो फिर कुमारी पर कैसे सवारी करेंगे ?

59) मु. नं. - 59 (दि. 6-9-96)
a) तुम्हारा सब है गुप्त। तुम देखते हो जिसमें बाबा ने प्रवेश किया है उसमें भी कोई ठाठ की बात नहीं है। कपड़े आदि सब वही हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

b) बाप के पास जाने के लिए यज्ञ-तप बहुत करते हैं, परन्तु मिलता कुछ भी नहीं। ऐसे ही धक्के खाते रहते हैं।
c) पिता अक्षर बुद्धि में नहीं आता है। अगर परमपिता समझें तो बुद्धि एकदम चमक उठें।
d) वह हैं हेविनली गॉड फादर, फिर हम कलियुगी नर्क में क्यों पड़े हैं।
e) पूजा भी पहले अव्यभिचारी एक शिव की करते हैं। उनके मन्दिर बनाते हैं फिर ल० ना० के बनायेंगे। फिर राम-सीता के मन्दिर बनाने लग पड़ेंगे फिर कलियुग में देखो गणेश, हनुमान, चण्डिका देवी आदि2 के अनेक देवीयों के चित्र बनाते रहते हैं। भक्तिमार्ग के लिए सामग्री भी चाहिए ना।
f) भक्ति का प्रभाव भी बहुत है ना, कितनी खूबसूरत है - नाच-तमाशा, गायन-कीर्तन आदि कितना खर्चा करते हैं।
g) सन्यासी भी आत्माओं के रहने के स्थान तत्व को परमात्मा समझ लेते हैं। ब्रह्मा वा तत्व को ही याद करते हैं।
h) गृहस्थ धर्म वाले कहते भगवान किसी न किसी रुप में पतितों को पावन बनाने आयेंगे। ऐसे नहीं कि ऊपर से प्रेरणा द्वारा ही सिखलायेंगे। टीचर घर बैठे प्रेरणा करेंगे क्या ?
i) मनुष्य तो कह देते हैं कि भगवान की प्रेरणा से सब होता है या कहते हैं कि शंकर की आँख खुलने से प्रलय हो गई। यह सब कहानियाँ हैं, अर्थ कुछ नहीं समझते हैं।
j) बाप कहते हैं मैं कोई इन्हों के पुकारने पर नहीं आता हूँ। मैं अपने समय पर आपेही आता हूँ।

60) मु. नं. - 60 (दि. 10-1-93)

a) प्रजापिता अक्षर तो नामीग्रामी है। प्रजापिता नाम बाप का शोभता है। अब तुम प्रैक्टिकल में उस बाप के बने हो।
b) शिव-शंकर महादेव कहते हैं। अब कृष्ण कहाँ से आया ? उनको रुद्र वा शंकर नहीं कहेंगे।
c) यहाँ भीड़ का कायदा नहीं है। गुप्तवेश में काम चलता रहेगा।
d) काँग्रेसियों ने फिरंगियों को निकाल राजाओं से राजाई छीन ली और राजा नाम ही गुम कर दिया।
e) अब बाप समझाते हैं मैं कृष्ण नहीं हूँ, मुझे रुद्र वा सोमनाथ कह सकते हैं।
f) ल० ना० ही छोटेपन में रा० कृ० है इसालिए ल० ना० के साथ रा० कृ० का भी चित्र दिया है।
g) कहते हैं त्रिमूर्ति ब्रह्मा। त्रि० शंकर वा विष्णु नहीं कहेंगे। महादेव शंकर को कहते हैं, फिर त्रि० ब्रह्मा क्यों कहते हैं ?

61) मु. नं. - 61 (दि. 12-10-72)

a) बहुत ऐसे सेन्टर्स हैं जिनमें कई बच्चे सर्विस नहीं करते हैं।
b) बाबा चित्र शोक से बनवाता है। भूल होती है तो फिर करेक्ट की जाती है।
c) बच्चे मधुबन में आते हैं मुरली सुनने। तो मुरली सुनाने वाला जरुर चाहिए। बाबा जहाँ जावेंगे सर्विस ही करेंगे।
d) बड़े2 सभाओं में बाबा नहीं जा सकते। वह बच्चों का काम है। बच्चों से सवाल जवाब करेंगे। बाबा का पार्ट बड़ा वन्डरफुल है।

62) मु. नं. - 62 (दि. 2-10-01)

a) उस बाबा को याद करेंगे तो कहेंगे - ओ बाबा, हैं दोनों बाबा। राइट अक्षर बाप ही है। वह भी फादर, यह भी फादर।
b) सतयुग की स्थापना करने वाला है बाबा। ब्रह्मा द्वारा कराते हैं - करनकरावनहार है ना।
c) सुक्ष्मवतन की सृष्टि का चक्र नहीं गाया जाता है।
d) अब बाप आये हैं, समझाते हैं - बच्चे, तुम्हें अपने गृहस्थ व्यवहार में रहना ही है। यहाँ बाबा के पास कहाँ तक बैठेंगे।
e) नालेज पढ़ने वाले थोड़े होते हैं। लाउड स्पीकर पर कभी पढ़ाई होती है क्या? टीचर सवाल कैसे पूछेंगे, लाउड स्पीकर पर रेसपान्ड कैसे दे सकेंगे ?
f) (वह) फिर भी कृष्ण, कृष्ण करते रहते हैं। अब मोस्ट बिलवड शिव भी है तो कृष्ण भी है। परन्तु वह है निराकार, वह है साकार।
g) बाप ने समझाया है तुम सब पार्वतियाँ हो, यह शिव अमरनाथ तुमको कथा सुना रहे हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

63) मु. नं. - 63 (दि. 8-3-83)

a) ज्ञान है ही समझ, वह है भक्ति ।

b) जरूर निराकार तो शरीर में ही आयेगा, तब तो कर्म कर सके । परमात्मा आकर जरुर ऊँच बनाने का ही कर्म करेंगे ।

c) मेरा शिव नाम एक ही है । मैं पुनर्जन्म नहीं लेता हूँ ।

d) गीता में जिसका नाम डाल दिया है, वह तो पूरे 84 जन्म लेता है ।। ऐसे नहीं कि कृष्ण (उर्फ दादा लेखराज ब्रह्मा) ने गीता सुनाई - यह बड़ी समझने की बात है ।

e) सिर्फ घर को याद करेंगे तो ब्रह्म (या ब्रह्मा) के साथ योग हो गया । उनमें विकर्म विनाश हो नहीं सकते ।

f) सारा मदार गीता को करेक्ट कराने पर है । गीता खण्डन होने कारण भगवान की हस्ती गुम हो गई है ।

g) ड्रामा में जिसका पार्ट है उनमें ही प्रवेश करते हैं और उसका नाम ब्रह्मा रखते हैं । ब्रह्मा नाम कब बदल नहीं सकता । अगर वह दूसरे में आवें तो भी उनका नाम ब्रह्मा रखना पड़े ।

h) बाप सम्मुख आकर श्रीमत देते हैं । रावण तो कोई चीज़ नहीं जो आवें ।

i) यहाँ तो रुद्र शिवबाबा प्रैक्टिकल में हैं । तुम अब प्रैक्टिकल वर्सा ले रहे हो । जिसका जड़ यादगार है वह अब प्रेजेन्ट चैतन्य में हैं ।

64) मु. नं. - 64 (दि. 28-2-98)

a) वही मुख्य एक्टर, क्रियेटर और डायरेक्टर है ।

b) परमात्मा कहते हैं मैं जिस साधारण तन में आता हूँ, उसका नाम ब्रह्मा पड़ता है । वह सूक्ष्म ब्रह्मा है, तो दो ब्रह्मा हो गये ।

c) हम वर्ल्ड सर्वेन्ट हैं । हम बाबा के साथ आये हैं सारी दुनियाँ की सर्विस करने । विनाशी धन, महल आदि हम क्या करेंगे ? हमको तो सिर्फ 3 पैर पृथ्वी चाहिए ।

65) मु. नं. - 65 (दि. 22-2-97)

a) एक ओर कहते यह सोने की डिब्बी है तो दूसरी ओर कहते यह पुराने ते पुरानी लांग बूट है जिसमें बाप ने प्रवेश किया है । दोनों ही बच्चों की सेवा में हाजिर हैं ।

b) अभी तुम जानते हो कि शिवबाबा ब्रह्मा के सिवाए किसी भी हस्ती में आ नहीं सकता । गाया भी जाता है प्र० ब्रह्मा अथवा त्रिमूर्ति ब्रह्मा । देव2 महादेव (शंकर) कहते हैं ।

c) वह तो है प्र० ब्रह्मा ।.... तो जरुर ब्रह्मा मुख से ही ब्राह्मण रचेंगे । इतनी बड़ी हस्ती, इनका रहन-सहन देखो कितना साधारण है ।

d) (शिवबाबा) जब तक हस्ती में प्रवेश न करे तो निरहंकारीपना कैसे दिखावे ? कितनी महिमा है - अकालमूर्त,...।

e) बाप की बायोग्राफी बाप से ही जानी जाती है । अब निराकार की बायोग्राफी कैसे हो सकती है ? जरुर जब साकार में आये तब बायोग्राफी हो ।

f) दुनियाँ वाले न राम की, न रावण की बायोग्राफी को जानते हैं ।

g) तुम बच्चों को बाप कहते हैं - मीठे बच्चे, तुम राम को याद करो तो माला में पिरोने लायक बन जायेंगे ।

h) ब्राह्मण बनने बिगर कोई भी यहाँ आ नहीं सकते । तुम हो ब्रह्मा मुख वंशावली ।

i) कृष्ण (उर्फ दादा लेखराज ब्रह्मा की आत्मा) तो छोटा बच्चा (बच्चा बुद्धि) है । वह तो कुछ समझा न सकें । कृष्ण की आत्मा भी भिन्न नाम रुप में इनसे समझ रही है ।

66) मु. नं. - 66 (मु. 2-9-86 / अ. वा. 25-3 / मु. 31-5-74)

a) भगवान जिसको शमा कह पुकारते हैं महफिल में, परन्तु जानते नहीं । महफिल अर्थात् जहाँ बहुत इकट्ठे हों। महफिल में खाना पीना शराब आदि मिलता है ।

b) बच्चे को बाप और वर्से को पूरा याद करना चाहिए ।

c) कहते हैं ना राम ने रामराज्य स्थापन करने के लिए, रावण पर जीत पाने बन्दरों का लश्कर लिया ।

d) अब बाप इस पतित महफिल में आते हैं । बन्दरों की महफिल में आता हूँ । जहाँ माल-ठाल 36 प्रकार के भोजन मिल सकते, वहाँ मैं आता ही नहीं हूँ ।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

e) बाप यहाँ सम्मुख आकर यह सब बातें सम्मुख समझाते हैं ।
अ. वा. 25-3 (सात प्राप्त नहीं है)
f) 36 प्रकार के भोजन भी मधुबन वालों को बार2 मिलते हैं ।
मु. दि. 31-5-74
g) अब तुम बच्चों को अपनी आयु को बड़ा बनाना है, योग बल से ।
h) मेले मलाखड़े में कितने मैले हो जाते हैं । मिट्टी बैठकर ज़ोर से मलते हैं, समझते हैं पाप बहुत मिट जावेंगे ।

67) मु. नं. - 67 (दि. 13-4-86)
a) "पिताश्री" (ब्रह्मा उर्फ कृष्ण) शिवबाबा याद है ।
b) एक मुख्य भूल की है जो कृष्ण का नाम डाल दिया है । जिसने गीता सुनकर यह पद पाया उसका नाम डाल बहुत बड़ी भूल कर दी है (मु. नं. 67a देखिए) ।
c) उनके (ब्रह्मा के) तन द्वारा तुम बच्चों को बैठ समझाते हैं । यह है अनुभव की बातें ।
d) बाप कहते हैं सारे कल्प में एक ही बार मैं ऐसे आकर समझाता हूँ ।
e) कोई कपड़ा ऐसा मैला है जो साफ करने में बहुत टाइम लगता है । बाबा धोबी है ।
f) यह है पढ़ाई बेहद की, वर्सा भी बेहद का मिलता है । फिर इसमें त्याग भी बेहद का है । गृहस्थ व्यवहार में रहते सारी दुनियाँ का त्याग करना है ।
g) यह तो पढ़ाई है, पाठशाला में पढ़ना है मनुष्य से देवता बनने के लिए ।
h) कभी भी सुनी सुनाई बातों पर न लगना चाहिए । सिवाए ज्ञान के और कुछ सुनाते हैं तो समझो यह हमारा दुश्मन है । बाप समझाते रहते हैं झूठी बातें बोलने वाले तो बहुत हैं । तुमको बाप से ही सुनना है ।

68) मु. नं. - 68 (दि. 6-5-92 / 2-8-86)
a) कर्म तो करना है ना । वह (सन्यासी) समझते हैं गृहस्थ धर्म में रहना - यह कर्म नहीं करना है ।
b) वहाँ भी मैं महलों में नहीं रहता, यहाँ भी मैं महलों में नहीं रहता हूँ । गाते हैं - बम2 महादेव... भर दे मेरी झोली। झोली भरी थी तो जरुर चैतन्य में थे ।
मु. दि. 2-8-86
c) बाप कहते हैं मैं भी बिन्दी हूँ, इसमें आकर बैठा हूँ । तुमको पता भी नहीं पड़ता है ।
d) बाप तुम बच्चों को बैठ सुनाते हैं । तुमको जो सुनाते हैं वह हम भी सुनते हैं।
e) बच्चों को समझाया है - यह चित्र सब दिव्य दृष्टि से बाप ने बनवाये हैं । करेक्ट भी कराये हैं ।
f) शुरु में जब बनारस में बाबा एकान्त में रहते थे तो ऐसे चक्र दीवारों पर बैठे निकालते थे । समझते कुछ नहीं थे कि यह क्या है ।
g) अभी नये2 जो आते हैं 7 दिन में सारा नालेज समझ लेते हैं, पुरानों से भी आगे जा रहे हैं । पहले वालों ने जो देखा वे फिर अब हैं भी नहीं, खत्म हो गये ।

69) मु. नं. - 69 (दि. 12-10-02)
a) पहले2 परमपिता परमात्मा की समझानी देनी है । तो परमपिता परमात्मा से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है और फिर प्र० ब्रह्मा से क्या सम्बन्ध है ?
b) पहले2 शिव का चित्र दिखाना चाहिए फिर है लिखत ।... चित्र सहित सारी लिखते होनी चाहिए ।
c) हठयोग और राजयोग का कान्ट्रास्ट भी अच्छी तरह लिखाना चाहिए । चलते-फिरते बाप को याद करते रहो । कई तो शरीर की तन्दुरुस्ती के लिए क्रिया करते हैं । वह कोई फिर परमात्मा से नहीं मिलते ।
d) ध्यान में भी याद से ही जाते हैं । ज्ञान की तो इसमें कोई बात ही नहीं ।
e) देखो, मुहम्मद गजनवी ने मन्दिर लूटा था । अगर उनको यह मालूम होता कि यह हमारे बाबा का मन्दिर है तो लूटते थोड़ेही ।
f) सिर्फ गीता में कृष्ण का नाम डालने से यह सब कुछ हुआ है । अगर शिव का नाम होता कि वही गति सद्गति दाता है । यह एक की ही महिमा है । अगर वह नहीं आता तो पावन कैसे बनते ?

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

g) सिर्फ बाप और वर्से को याद करो । स्वर्ग को याद करो ।
h) जितनी2 स्थापना होती जा रही है तो विनाश ज्वाला भी धीरे2 बढ़ती जा रही है।
i) रशिया, अमेरिका आपस मे मिल जाएं तो सारा राज्य ले सकते है । परन्तु ऐसा होता नहीं है ।
j) बाप कहते हैं समझदार देखना हो तो यहाँ देखो... । महान मूर्ख, महान सुजान देखना हो तो यहाँ देखो ।
k) बाप की गोद यहाँ मिलती है । मूलवतन में गोद का हिसाब नहीं है । यहाँ तो तीनों कम्बाइन्ड हैं ।

70) मु. नं. - 70 (दि. 15-10-98)
a) ऐसे कोई सतसंग होता नहीं जहाँ मनुष्य जाये और कुछ न समझे । यह है बड़े ते बड़ी कॉलेज । फिर से वह दिन आया आज, जबकि बाप बैठ बच्चों को राजयोग सिखलाते हैं ।
b) सब अपने रचता को जानते हैं परन्तु उनके आक्यूपेशन को नहीं जानते । वह कब और कैसे पुरानी दुनियाँ को नया बनाते हैं - यह किसकी बुद्धि में नहीं है।
c) बच्चों को समझाया है यह परमपिता परमात्मा का नाम, रुप, देश, काल कोई भी नहीं जानते, जब तक कि बाप आकर अपना परिचय दे । जो बात जब समझानी है तब समझाते हैं ।
d) अपने मन-बुद्धि से प्रभात के समय मुझ बाप को याद करो । भक्त लोग अक्सर करके रात को जागते हैं, कुछ न कुछ याद करते हैं । यहाँ की रस्म-रिवाज फिर भक्ति मार्ग में चली आई है ।
e) यह चित्र बहुत वैल्युबुल हैं । यह 30"X 40" का झाड़, त्रिमूर्ति भी सबको अपने2 घर में रखना पड़े ।
f) पुनर्जन्म शिवबाबा तो नहीं लेते । ब्र०वि०शं० को भी पुनर्जन्म नहीं लेना है ।

71) मु. नं. - 71 (दि. 14-10-99)
a) दो-चार मुख्य चित्र घर में रखे हो । यह त्रिमूर्ति, गोला, झाड़ और सीढ़ी का चित्र भी काफी है । उनके साथ गीता का भगंवान कृष्ण नहीं - वह भी चित्र अच्छा है ।
b) वास्तव में महान आत्मा तो यह ल० ना० हैं ना, एवर प्योर हैं ।
c) बाप फिर आधाकल्प के लिए पुण्य आत्मा बनाते हैं । बनाने वाले भी दो हैं - राम और रावण । राम को परमात्मा कहते हैं ।

72) मु. नं. - 72 (दि. 20-11-96)
a) उन्होंने त्रिमूर्ति से शिव को निकाल चित्र खण्डित कर दिया है । अब तुम जानते हो इस त्रिमूर्ति के चित्र में कितना राज़ है ।
b) शिवबाबा कहते हैं - हम जब बच्चों को सुनाते थे तो यह भी सुनते थे ।
c) तुम प्रैक्टिकल देख रहे हो - बाबा कैसे पढ़ाते हैं । कितने सेन्टर्स हैं । तो पढ़ाने के लिए जरुर पाठशाला चाहिए, न कि युद्ध का मैदान ।
d) बाप कहते हैं मैं ने तुमको राजाई दे दी । तुमने सब धन-दौलत खत्म कर दिया, अब भीख माँग रहे हो । ... अब बाप तुमको देवता बनाते हैं (फुल बैगर टु फुल प्रिन्स)

73) मु. नं. - 73 (दि. 4-9-85)
a) शिव के आगे त्रिमूर्ति जरुर चाहिए ।... तो समझते हैं सिर्फ कृष्ण और शिव का चित्र डालें, परन्तु नहीं । शिव जरुर कोई के मुख से ज्ञान देंगे ना ।
b) त्रिमूर्ति के चित्र में सब आ जाता है ।... तो एक तरफ कृष्ण का चित्र फिर दूसरी तरफ त्रि० शिव जरुर देना है ।
c) त्रिमूर्ति के नीचे लिखत भी जरुर देनी है । यह भी लिखना- डीटीसावरन्टी आपका जन्मसिद्ध अधिकार है । सो भी अभी कल्प के संगमयुगे ।
d) सिर्फ ब्र० कु० नाम जो पड़ता है उसमें प्रजापिता अक्षर जरुर चाहिए, क्योंकि ब्रह्मा नाम भी बहुतों के हैं । प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय लिखना है ।
e) यह है ही नर से नारायण बनने की पढ़ाई । यह पाठशाला है । बहुत पढ़ते हैं इसलिए लिखो- गॉडफादरली वर्ल्ड युनिवर्सिटी - ईश्वरीय विश्वविद्यालय । यह तो बिल्कुल राइट अक्षर है ।
f) दिन प्रतिदिन लिखत चेन्ज होती रहेगी । ऐसे नहीं पहले क्यों नहीं ऐसा बनाया।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

g) (भगवान्) आते ही हैं ब्रह्मा तन में संगमयुग पर । नहीं तो ब्र०वि०श० किसलिए हैं? बायोग्राफी चाहिए ना ।
h) वहाँ तो शरीर ऐसे छोड़ते हैं जैसे सर्प का मिसाल है ना ।
i) इतना ऊँच पद पाना कोई मासी का घर नहीं, बहादुरी चाहिए ।

74) मु. नं. - 74 (दि. 18-9-04)

a) गीता (मुरली) सुनाने वाले सन्यासी आदि बहुत हैं । 'बाबा' अक्षर कभी उनके मुख से निकल न सके । यह अक्षर है ही गृहस्थ मार्ग वालों के लिए । वह ब्रह्म (वा ब्रह्मा) को ही याद करते हैं ।
b) अगर सब कृष्ण हों तो उनका बाप भी चाहिए । सब विलायत वाले भी उनको जानते हैं । लार्ड कृष्ण कहते हैं ना ।
c) मैं ही आकर नई दुनियाँ स्थापन करता हूँ । ज्ञान भी मैं अभी ही देता हूँ । मेरे बिगर कोई सुना न सके ।
d) शिवबाबा सबको बैठ समझाते हैं । न समझने कारण त्रिमूर्ति में शिव रखते ही नहीं । ब्रह्मा को रखते हैं जिसको प्रजापिता ब्रह्मा कहते हैं ।
e) प्रजापिता का भी जरुर पार्ट है । वह कुख वंशावली ब्राह्मण कहेंगे - हमारा सरनेम है ब्राह्मण । प्र० ब्रह्मा तो कहते ही तब हैं जब शिवबाबा इनमें प्रवेश करें ।
f) बाप कहते हैं मेरे को विरला कोई जानते हैं । मैं जो हूँ, जैसा हूँ - तुम बच्चों में भी विरले कोई एक्युरेट जानते हैं ।
g) शिवबाबा का और ब्रह्माबाबा का रथ एक ही है । ऐसे भी नहीं कहेंगे कृष्ण (उर्फ दादा लेखराज ब्रह्मा) में शिवबाबा बैठ ज्ञान देते हैं ।

75) मु. नं. - 75 (दि. 20-4-89)

a) यह त्रिमूर्ति जो दिखाया है उसमें होना चाहिए - ब्रह्मा, विष्णु और शिव, न कि शंकर । परन्तु बाजू में शिव को कैसे रखें ? तो फिर शंकर को रख दिया है ।
b) बाबा ने समझाया है सूक्ष्मवतन में भी सारी सा० की बात है । सम्पूर्ण ब्रह्मा भी है, परन्तु वह है सम्पूर्ण अव्यक्ति । अभी व्यक्त ब्रह्मा जो है, उनको अव्यक्त बनना है ।
c) पहले होती है अव्यभिचारी भक्ति, फिर देवताओं की भक्ति शुरु होती है । वह भी भूत पूजा कहेंगे ।
मु. दि. 26-5-68 (रात्रि क्लांस)
d) परन्तु आदत पड़ी हुई है तो मुरली2 कहते रहते हो । मुरली नाम कृष्ण (उर्फ ब्रह्मा) का उठा लिया है । अभी इनको क्या कहें ? फलाने दिन की वाणी आई है । वाणी अक्षर ठीक है, मुरली अक्षर निकल जाना चाहिए ।

76) मु. नं. - 76 (दि. 5-2-95)

a) तुम बच्चे जानते हो - बाप जब आते हैं तो ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी जरुर चाहिए । कहते ही हैं त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच ।
b) पुकारते भी हैं - तुम मात-पिता, परन्तु इसका अर्थ तो कोई भी नहीं समझते । निराकार बाप के लिए समझ लेते हैं ।
c) समझते हैं - यहाँ ही राम राज्य भी है, रावण राज्य भी है । जितने हैं मनुष्य, उतनी हैं मतें । तुम अभी ब्रह्मा द्वारा देवता बन रहे हो ।
d) अभी तुम बाप के सम्मुख बैठे हैं । सम्मुख मुरली सुनने में कितना फर्क है । जैसे यह टेप मशीन निकली है, सबके पास एक दिन आ जायेगी ।
मु. दि. 10-5-68 (रात्रि क्लास)
e) यह तो बताया होगा कि (दीदी) अहमदाबाद में मकान देखने गई है । जितना बड़ा शो होता है उतनी कशिश करता है ।
f) यह साधु सन्त भी मकर है जो खा पीकर खलास कर देते हैं । बाप समझाते हैं कि यह भक्तिमार्ग के अनेक गुरु हैं ।
g) बाप कहते हैं आई एम युओर ओबिडियेन्ट सर्वेन्ट । इनको सोनार धोबी आदमी कहते हैं ।
h) शरीर छूटेगा तब जब बाप का रथ आकर लेंगे ।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

77) मु. नं. - 77 (दि. 27-10-02)

a) बाप फाउन्डेशन लगाने आया है। 1937 में फाउन्डेशन लगाया। अब फिर तुम स्थापना कर रहे हो।

b) राजाई तुमको मिलनी है क्योंकि कनेक्शन है कृष्णपुरी और क्रिश्चियनपुरी का। इन्होंने भारतवासियों को आपस में लड़ाकर कृष्णपुरी को क्रिश्चियनपुरी बनाया।

c) बच्चे जानते हैं कि आदि सनातन देवी-देवता धर्म का फाउन्डेशन प्रायःलोप हो चुका है।

d) चित्र भी बनाया है - एक तरफ कृष्ण का चित्र, दूसरे तरफ शिव का। पुछना है - अब बताओ गीता का भगवान कौन ?

e) सोमनाथ का मन्दिर बनाते हो। कोई एक मन्दिर थोड़ेही होगा, अनेक होंगे फिर उन्हें लूटा भी होगा। तो सारी बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी को तुम जान गये हो।

f) कल्प में एक ही बार आकर पावन बनाकर चले जाते हैं।

g) बाप है गरीब निवाज़।... तो देखो मेरे बच्चे कितने गरीब हैं। तीन पैर पृथ्वी में हॉस्पिटल खोल देते हैं जहाँ से ही सबको हेल्थ वेल्थ मिलती है।

78) मु. नं. - 78 (दि. 30-6-01)

a) त्रिमूर्ति मार्ग नाम भी रखा है परन्तु तीन मूर्ति ब्र०वि०श० को कोई नहीं जानते। ब्रह्मा क्या करके गया, विष्णु और शंकर क्या करते हैं, कहाँ रहते हैं - कुछ भी नहीं जानते।

b) तुम बच्चे अभी यहाँ राजयोग सीख रहे हो - भगवती लक्ष्मी, भगवान नारायण बनने के लिए। जानते हैं भगवती सीता, भगवान राम भी बनने का है।

c) (ब्राह्मण सन्यासी) अब तमोप्रधान बने हैं तो जंगलों से लौटकर आए, बड़े2 महल बनाये हैं। इन सन्यासियों ने भी पवित्रता के आधार पर भारत को थमाया जरुर है।

d) बाप कभी पुनर्जन्म नहीं लेते हैं। एक ही बार आकर सारे विश्व को पवित्र बनाने के लिए हमको राजयोग सिखाते हैं।

e) अब मैं निराकार हूँ तो कैसे आकर बच्चों को राजयोग सिखलाऊँ ? प्रेरणा से तो कुछ हो न सके।

f) अभी देखो यह लौकिक बच्ची (निर्मल शान्ता) बैठी है। यह लौकिक भी है, अलौकिक भी है, पारलौकिक भी है।

g) राम का कितना छोटा परिवार होगा सतयुग में। बच्चे जानते हैं कि यह राजधानी स्था० हो रही है।

79) मु. न. - 79 (दि. 17-1-00)

a) उस योग और ज्ञान से बल मिलता है हद का। यहाँ इस योग और ज्ञान से बल मिलता है बेहद का, क्योंकि सर्वशक्तिमान अथॉरिटी है।

b) वह बाप तो अलग है, बाकी दादा माँ भी है। परन्तु यह मेल का चोला होने कारण फिर माता मुकर्रर की जाती है।

c) त्रिमूर्ति नाम तो है, त्रिमूर्ति रास्ता भी है, त्रिमूर्ति हाउस भी है। त्रिमूर्ति कहा जाता है ब्र०वि०शं० को। इन तीनों का रचयिता जो शिवबाबा है उस मूल का नाम ही गुम कर दिया है।

d) शास्त्रों में दिखाया है राम भगवान ने बन्दर सेना ली - यह भी ठीक है। तुम जानते हो हम बरोबर बन्दर मिसल थे।

e) यह राजयोग बाप ही सिखलाते हैं। कृष्ण को बाप नहीं कहेंगे, वह तो बच्चा है। शिव को बाबा कहेंगे।

f) प्र० ब्रह्मा के बच्चे-बच्चियाँ हो। ब्रह्मा से वर्सा नहीं मिलना है। बाप का बनने से ही वर्सा मिल सकता है।

g) भल तुम लिखते हो, लिट्रेचर छपाते हो फिर भी टीचर के सिवाए तो कोई समझा न सके। (बाबा) टीचर के रुप में बैठ तुमको समझाते हैं। सच्चा सतगुरु भी है - साथ में ले जाते हैं।

h) वास्तव में शिव के साथ त्रिमूर्ति भी होना चाहिए। तुम त्रिमूर्ति शिवजयन्ती मनाते हो, सिर्फ शिवजयन्ती मनाने से कोई बात सिद्ध नहीं होगी।

i) बाप को भी कहते हैं ना - आप भी रुप बदल साकार में आओ। आयेंगे तो यहाँ ना, सूक्ष्मवतन में तो नहीं आयेंगे।

j) ..इसलिए त्रिमूर्ति शिव का चित्र सबको भेज देना चाहिए। त्रिमूर्ति शिव की स्टैम्प बनानी चाहिए।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

80) मु. नं. - 80 (दि. 19-1-01)

a) विष्णु के दो रुप हैं - ल० ना०, देवी-देवता ।

b) यह कोई कॉमन सतसंग नहीं है । यहाँ बैठे हो समझते हो-सतबाबा जिसको शिव कहा जाता है, उनके संग में बैठे हैं ।

c) यहाँ बैठ हो तो यह तो याद होगा ना कि हम आये हैं रिज्युवनेट होने अर्थात् यह शरीर बदल देवता शरीर लेने ।

d) तो खुद बदलाते हैं - मैं फलाने तन में आता हूँ । किस तन में आता हूँ - वह भी बताते हैं । मनुष्य मूँझते हैं - क्या एक ही तन में आयेगा !

e) बहुत बच्चे हैं जो और 2 धर्मों में कनवर्ट हो गये हैं । जो देवी-देवता धर्म छोड़ दूसरे धर्म में गये हैं, वह सब पत्ते लौटकर आ जायेंगे अपनी जगह पर ।

f) पहले2 तो बाप का परिचय देना है । इनमें ही सब मूँझ पड़े हैं । कृष्ण तो देहधारी है । इनको (ब्रह्मा को) दादा कहेंगे ।

g) शिवबाबा का तो मिनट, सेकन्ड कुछ भी नहीं निकाल सकते हो । कृष्ण (उर्फ सू० वासी ब्रह्मा) की तिथि तारीख पूरा लिखा हुआ है ।

h) शिवबाबा के अवतरण में तो बिल्कुल फर्क नहीं पड़ सकता । पता भी नहीं पड़ता है कि कब आया । ऐसे भी नहीं सा० हुआ तब आया । नहीं, अन्दाज से कह देते हैं । बाकी ऐसे नहीं उस समय प्रवेश हुआ ।

81) मु. नं. - 81 (दि. 15-10-95)

a) यह ल० ना० कितने समझदार थे, राज्य करते थे । बाप कहते हैं तत् त्वम् ।

b) कोई भी बात सामने आती है तो कहते हैं - हाय राम, परन्तु ईश्वर वा राम कौन है ? यह किसको पता नहीं ।

c) तुमको सिद्ध करना है - ज्ञान का सागर, पतित पावन, सर्व का सद्गतिदाता - त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव है । ब्र० वि० शं० तीनों का जन्म इकट्ठा है । सिर्फ शिवजयन्ती नहीं है परन्तु त्रि० शिवजयन्ती है ।

मु. दि. 29-9-85

d) वह बाप चला जायेगा, उनका क्रियाकरम, सेरीमनी आदि कुछ नहीं करना होता । उनके तो आने का भी पता नहीं पड़ता । और सब मनुष्यों की क्रियाकरम करते हैं । ये (ज्ञान, भक्ति) अभी ही चलती हैं, और सब भक्ति ही सिखलाते हैं ।

e) ब्रह्मा आदि देव की बेटी है अम्बा - काली, दुर्गा, सरस्वती आदि2 बहुत नाम हैं ।

f) यहाँ तो बहुत हिन्दू हैं जो (आबू में) मुसलमान को जाय पूजा करते हैं, उनके पांव पड़ते हैं ।

82) मु. नं. - 82 (दि. 3-7-99)

a) कोई को पता नहीं कि (शिवबाबा की) कब प्रवेशता हुई । वह तो बुढ़े वानप्रस्थ अवस्था में आया है । कब आया - उसकी डेट है नहीं । कृष्ण (उर्फ ब्रह्मा) की तो तिथि-तारीख है ।

b) वह तो समझते हैं कृष्ण भगवान है, वह हाजिरा हजूर है । श्री ल० ना० को महाराजा-महारानी कहते हैं । स्वयंवर बाद कृष्ण फिर श्री नारायण बनते हैं ।

c) अब इस ज्ञान सागर शिव का नाम तो बदलता नहीं, एक ही नाम है ।

d) उनका वह रथ तो बड़ा है । आने से ही ज्ञान सुनाना शुरु कर दिया है । यह (ब्रह्मा) तो कुछ नहीं जानते थे ।

e) बाबा अपना अनुभव बतलाते हैं - शुरु में बनारस गये तो दीवारों पर गोले आदि निकालते रहते थे । (यह सा० का राज) समझ में कुछ भी नहीं आता था - यह क्या है ? क्योंकि यह तो जैसे बेबी (बेबी बुद्धि) बन गये । वह ज्ञान की बातें ही और थी ।

f) ल० ना० कहने से तुम चले जाते हो सतयुग में । यह है नर से नारायण बनने की कथा, कृष्ण बनने की कथा नहीं कहते । इसको सत्य नारायण की कथा कहेंगे ।

g) इस शरीर में बैठ कहते हैं मामेकम् याद करो । मैं तुमको माया रावण से लिबरेट कर साथ ले जाऊँगा । तुमको फिर राजाई देकर मैं निर्वाणधाम में बैठ जाऊँगा ।

h) विष्णु का सा० हुआ और दिल में बहुत खुशी हुई । फिर विनाश का सा० भी हुआ । अभी समझते हैं बाबा ने यह सा० कराया - तुम नर से नारायण बनेंगे ।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

i) ऐसे तो नहीं बाप जब प्रवेश करते हैं तब समझता हूँ बाबा आया है, याद रहती है, बाबा चला जाता है तो भूल जाता हूँ। प्वाइन्ड सुनाते हैं तो फील होता है - बेहद का बाप आकर सुनाते हैं (शिवोऽहम्)।

j) बाबा ने समझाया है कि गीता जयन्ती के बाद होती है कृष्ण जयन्ती। पहले है शिवजयन्ती फिर गीता जयन्ती फिर कृष्ण जयन्ती।

83) मु. नं. - 83 (दि. 5-2-97 / अ. वा. 1-2-79)

a) कहते हैं - तुम लोग शास्त्रों को नहीं मानते हो फिर शास्त्रों के अक्षर क्यों लेते हो ? तो तुमको समझाना है - शास्त्रों का सार तो बाबा ही बताते हैं।

b) बाप तो भारतवासी बच्चों को ही कहते हैं क्योंकि बच्चे ही ग्लानी करते हैं। यह मुरब्बी बच्चा (ब्रह्मा) भी ग्लानी करता था।

c) ऊँच ते ऊँच निराकार परमात्मा को ही कहा जाता है - पतित पावन, सर्व का सद्गति दाता, सबका लिबरेटर। अपने साथ सबको ले जायेंगे।

d) इन भीष्म पितामह, आदि को तो पिछाडी में ज्ञान मिलना है।

e) वही ब्रह्मा फिर विष्णु के दो रुप बनते हैं।

अ. वा. 1-2-79

f) बंगाल बिहार का जोन तो श्रृंगार करना जानता है। साकार तन को ढूँढा भी यहाँ (पूर्वी बंगाल) से ही है, तो स्थान की विशेषता रही ना।... ऐसे यह स्थान भी बाप की हिस्ट्री में विशेष स्थान है।

84) मु. नं. - 84 (दि. 27-6-93)

a) बच्चे तो बहुत हैं, उनमें से भी कोटों में कोई, कोई में भी कोई समझते हैं।.. जिसके लिए तुम गाते थे - तुम मात-पिता, उनके सम्मुख तुम बैठे हो और बेहद का वर्सा पाने का पुरुषार्थ कर रहे हो।

b) अच्छे2 बच्चे 5-10 वर्ष रहकर अच्छे 2 पार्ट बजाते हैं, फिर हार खा लेते हैं। अच्छे2 फर्स्ट क्लास ध्यान में जाने वाले जिनके डायरेक्शन पर माँ-बाप भी पार्ट बजाते थे, आज वह हैं नहीं।

c) भगवानुवाच - मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ। गीता में सिर्फ नाम बदल दिया है। संगम होने कारण यह भूल कर दी है।

d) जगत अम्बा आदि देवी कौन है ? कोई भी नहीं जानते। मालूम तो होना चाहिए ना।

e) दूश्मन भी तुम्हारे बहुत हैं, क्योंकि तुम खुद कहते हो कि इस रुद्र ज्ञान यज्ञ से विनाश ज्वाला प्रज्वलित हुई है।

f) बाप कहते हैं मैं पहले छोटा ब्राह्मण धर्म स्थापन करता हूँ, फिर साथ2 ब्राह्मणों को देवी-देवता बनाता हूँ।

g) आगे चलकर तुम समझते जायेंगे। यह अगर इस समय शरीर छोड़े तो क्या पद पायेंगे ?

85) मु. नं. - 85 (दि. 27-9-97)

a) रावण का राज्य सारे बेहद के आइलैण्ड पर है। यह बेहद की लंका है, सिर्फ सिलान नहीं है। वह समय तो अब है ना।

b) बरोबर भारत अविनाशी खण्ड है। यह विनाश ज्वाला इस यज्ञ से प्रज्वलित हुई है। लड़ाई शुरु यहाँ से हुई है।

c) अब तुम बच्चे समझते हो कि ज्ञान का सागर अथाह ज्ञान देते हैं और अन्त तक देते ही रहेंगे। हम जो लिखते हैं वह (कागज़ की मुरली) फिर क्या काम में आयेंगे ! बाप समझाते हैं यह ज्ञान जो तुमको मिलता है यह बिल्कुल ही नया है। इसका पुस्तक तो है नहीं।

d) बाप कहते हैं कि महामूर्ख देखना हो तो यहाँ देखो।

e) अच्छी2 बच्चियाँ थी आज वह हैं नहीं, तो वन्डर है ना। माया ऐसा डसती है जो बड़े2 महारथी जिनको हनुमान कहते थे परन्तु वह आज हैं नहीं।

f) तुम बच्चों को मालूम है कि बाबा एक दो बजे उठकर मुरली लिखते थे, जो तुम पढ़कर और चलाते थे। फिर बाबा बैठ सुनते थे कि देखें कैसे चलाते हैं। कितने अच्छे 2 बच्चे थे, चले गये।

g) हम तो यहाँ बैठे हैं, चित्र वहाँ बन रहे हैं। त्रिमूर्ति भी बहुत बड़ा होना चाहिए जो कोई भी दूर से पढ़ सके। लिखत भी इनमें क्लीयर हो।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

86) मु. नं. - 86 (दि. 11-8-91)

a) ऐसे भी मत समझना कि कोई बच्चे कर्मातीत अवस्था को पहुँच गये हैं।... तब तक यह रिहर्सल होती रहेगी जब तक कर्मातीत अवस्था आ जाए।

b) सन्यासी घरबार छोड़ जाए जंगल में रहते थे, कभी पैसा हाथ में नहीं रखते थे। अभी तो कितने धनवान हो गये हैं, सबको पैसे की चिंता बहुत है।

c) रामायण की कथा भी तुम्हारे पर है। तुम ही महावीर बनते हो।

d) शरीर को निरोगी तन्दुरुस्त रखो।... यह अमूल्य तन है। इसमें पुरुषार्थ कर देवी-देवता बनते हो तो बलिहारी इस समय की है।

e) तुम जानते हो पहले2 अव्यभिचारी भक्ति शुरु हुई। अभी कितनी व्यभिचारी भक्ति है। शरीरों की भी पूजा करते हैं - उनको भूत पूजा कहा जाता है।

f) वो लोग भक्ति मार्ग में बहुत श्रृंगार आदि करते हैं। यहाँ श्रृंगार पसन्द नहीं करते।

g) पहले2 शिवजयन्ती फिर है कृष्ण जयन्ती फिर राम की...। शिव के साथ गीता (माता) का भी जन्म होता है॥

h) बाबा ने 2-3 प्रकार के सा० किये थे - यह बनूँगा, ताज वाला बनूँगा, पगड़ी वाला बनूँगा।

मु. दि. 8-3-90

i) बाप ने आकर के यह फैमिली बनाई है। बाप पहले स्त्री को एडाप्ट करते हैं फिर उन द्वारा बच्चों को रचते हैं।

87) मु. नं. - 87 (दि. 4-11-99)

a) बाप ने समझाया है भक्ति का भी पार्ट है, ज्ञान का भी पार्ट है।

b) सा० हुआ फिर तो गुम हो जायेगा। अल्पकाल क्षण भंगुर सुख की आश पूरी होगी।

c) रावण जब से आता है तो भक्ति भी उनके साथ है और जब (राम) बाप आते हैं तो उनके साथ ज्ञान है।

d) तुम अज्ञान में थे तो परमात्मा को ऊपर में समझते थे। अभी तुम बाप को कहाँ याद करते हो? तुम जानते हो ब्रह्मा के तन में है तो जरुर यहाँ याद करना पड़ेगा। ऊपर में तो है नहीं। यहाँ आया हुआ है पुरुषोत्तम संगमयुग पर।

e) कई बुद्धिहीन ब्रह्मा को नहीं मानते हैं। ब्रह्मा बिगर शिवबाबा कैसे याद पड़ेगा? इसमें मुझे याद करो॥

88) मु. नं. - 88 (दि. 14-5-86)

a) बाप भी ओबीडियन्ट सर्वेन्ट है। टीचर व सतगुरु भी ओबीडियन्ट सर्वेन्ट है। तीनों ही इकट्ठे हैं॥

b) सबको ले जाऊँगा साथ में। अभी तुम मात-पिता के डायरेक्ट बच्चे बने हो।

c) आजकल तो बहुत है जो गीता (कागज की मुरली) सारी कण्ठ कर लेते हैं, बहुत शास्त्र भी कण्ठ कर लेते हैं।

d) कृष्ण (उर्फ ब्रह्मा) गाली खा न सके। जरुर दूसरा है जिसको गालियाँ मिली थी॥

e) इन ल० ना० को भी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान नहीं है।

89) मु. नं. - 89 (दि. 13-6-01)

a) प्र० ब्रह्मा की मत मशहूर है, श्रीमत भी मशहूर है। परन्तु उनमें भूल कर देते हैं जो बाप के बदले कृष्ण (ब्रह्मा - पिताश्री) का नाम डाल दिया है।

b) कराची से लेकर मुरली निकलती आई है। पहले बाबा मुरली चलाते नहीं थे। रात को 2 बजे उठकर 10-15 पेज लिखते थे, बाबा लिखवाते थे।

c) (भक्तिमार्ग में) दिन-प्रतिदिन बड़ी2 किताबें बनाते आते हैं। कितनी बायोग्राफी बनाते जाते हैं।

d) तुम तो मुरली पढ़कर फेंक देते हो। नहीं तो यह वर्शन्स रखने चाहिए हमेशा के लिए।

e) मैं हूँ ही गरीब निवाज़। गरीब का एक रुपया तो साहूकार का 10 हज़ार-दोनों को एक ही मर्तबा मिल जाता है।

f) नम्बरवन देखो मम्मा गई। उनके पास तो कुछ भी नहीं था।

g) ब्राह्मण हैं उत्तम। तुम ब्राह्मण हो ईश्वरीय सन्तान। सतयुग में ईश्वरीय सन्तान नहीं कहेंगे।

h) भगवान ने जरुर भगवान-भगवती पैदा किये। परन्तु भगवान-भगवती कह नहीं सकते। गॉड इज वन।

i) ऐसा बाबा कल्प2, कल्प के संगमयुगे एक ही बार आते हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

90) मु. नं. - 90 (दि. 16-4-99)

a) मनष्यों को देवता बनाया इस संगमयुग पर ।

b) मैं खुद डायरेक्ट आया हूँ ।

c) मुख्य प्रिंसीपल वह है । तुम आते भी उनके पास हो ।

d) तुम बच्चे जानते हो बाबा की प्रवेशता कैसे हुई । ब्र०वि०शं० का नाम तो लेते हैं परन्तु इन तीनों में से भगवान किसमें प्रवेश करते हैं - अर्थ नहीं जानते । बाबा खुद बतलाते हैं मैं इनमें प्रवेश करता हूँ ।
मु. दि. 30-4-68 (रात्रि क्लास)

e) बाप आकर के हमको विश्व का मालिक बनावेंगे । इस जन्म की बात है ना ।

f) इसलिए कहा जाता है एरोप्लेन से पर्चा गिराओ । तुम बच्चों को बहुत भारी जिम्मेवारी है ।

g) आत्मा भी और काया भी कन्चन बने, इसलिए सवेरे ड्रील होती है ।

h) पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही बाप आकर रुहों से बात करते हैं ।

i) आत्मा और परमात्मा का मेला भी एक ही बार होता है । हर एक बात बेहद की है ।

91) मु. नं. - 91 (दि. 2-6-87)

a) अच्छा, बाबा तो एक है और एक बार आते हैं । वह तो पुनर्जन्म नहीं लेते ।

b) शिव तो निराकार हुआ, ब्रह्मा द्वारा कैसे (स्थापना) करते हैं, क्या ऊपर से प्रेरणा देते हैं ? शिवबाबा प्र० ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट करते हैं ।

c) बिच्छुणी भी 100 बच्चे पैदा करती है तो उसका पेट फट जाता, बच्चे निकल आते माँ मर जाती है ।

d) जो जिसकी पूजा करते हैं, उनका सा० कराता हूँ । परन्तु उनसे फायदा क्या? कुछ भी नहीं ।

e) बाप एक है फिर उनका बच्चा भी एक है - प्र० ब्रह्मा ।

f) अब रामचन्द्र तो यहाँ से प्रालब्ध ले जाते हैं, त्रेता में जाकर राजा बनते ।

g) बाकी सू० वासी ब्रह्मा वह कैसे प्रजापिता बन सकते ? पहले यह निश्चय चाहिए - वह बाप भी है, टीचर भी है, सतगुरु भी है ।

92) मु. नं. - 92 (दि. 14-10-02 / 17-12-68 रात्रि क्लास)

a) बाकी तुमको तो समझाया हुआ है - तुमको स्लोगन की क्या दरकार है ।

b) गृहस्थियों का कर्म तो बहुत हैं - यज्ञ, तप, तीर्थ आदि करते हैं । वह सन्यासी भी करते हैं । बाकी फर्क सिर्फ यह है कि वह कमाई कर खाना घर में पकाते हैं । सन्यासी यह नहीं करते हैं, वह माँगकर खाते हैं क्योंकि उनका हठयोग है ।

c) तुम कहो - विचार करो, इतने ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हैं, तो ब्रह्मा बाप भी होगा ।

d) फिर भला ख्याल करो - प्र० ब्रह्मा किसका बच्चा? गाया हुआ है तुम मात-पिता.....। तो बाप (प्र०) ब्रह्मा हो गया ना ।

e) कहते हैं ना - तुम मात-पिता । तो यह ब्रह्मा माता हो गई तो उनके साथ सम्बन्ध रखना चाहिए ।
मु. दि. 17-12-68 (रात्रि क्लास)

f) बाप समझाते हैं - बच्चे, हार्ट फेल का मौत बहुत मीठा मौत है । (ब्रह्मा बाबा शरीर छोड़ने के पूरा एक मास पहले चलाया हुआ मुरली)

g) आपेही शरीर छोड़ना, इसलिए सर्प का मिसाल भी देते हैं ।

93) मु. नं. - 93 (दि. 13-2-86)

a) प्र० ब्रह्मा जिसको एडम कहा जाता है, उनको ग्रेट2 ग्रैन्डफादर कहा जाता है । मनुष्य सृष्टि में प्रजापिता हुआ ।

b) सतयुग में रामराज्य स्थापन होना है । कैपिटल देहली ही रहती है जहाँ ल० ना० का राज्य होता है ।

c) समझना बहुत थोड़ा है - अल्फ बाबा, बे बादशाही ।

d) कहते हैं - ब्रह्मा की आयु शास्त्रों में 100 वर्ष है । यह जो ब्रह्मा है जिसमें बाप बैठ वर्सा दिलाते हैं, इनका भी शरीर छूट जायेगा ।

e) अभी तुम आत्मायें जानती हो - हमारा बाबा हमको इस शरीर द्वारा सब राज समझाते हैं ।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDF Compressor

94) मु. नं. - 94 (दि. 17-9-68 / जुनी मुरली)

a) जबकि गाया हुआ है प्र० ब्रह्मा भी 100 वर्ष के बाद चले जाते हैं। बाप आते ही है 60 वर्ष के बाद। ब्रह्मा चला जायेगा तो बाप भी चला जावेगा, तो 40 वर्ष बैठ समझाते हैं।

b) बाप आते ही है पु० संगम पर।

c) पहले तो सिर्फ एक शिव की पूजा करते थे, और कोई तरफ जाते नहीं थे। अभी तो देखो देवताओं के चित्र कितने जगह रख दियें हैं। ढेर के ढेर चित्र, मंदिर आदि बनाते हैं। भक्तिमार्ग में तुमको कितना मेहनत करनी पड़ती है।

d) मनुष्यों की बुद्धि में भक्तिमार्ग के शास्त्रों की बातें ही भर गई है। शास्त्र ही बैठ पढ़कर सुनाते हैं।

e) तुम भक्तिमार्ग में कितने दुःख उठाते आये हो। पहले जब शिव की भक्ति करते थे तो इतना धक्के खाते नहीं थे जितना अभी धक्का खाते हो।

जुनी मुरली (दि. प्राप्त नहीं है)

f) रावण द्वारा ही विकारी दुनियाँ होती है। राम बाप आकर पावन बनाते हैं।

g) तुम समझ सकते हो भक्तिमार्ग में वह लोग क्या2 सिखाते हैं। कितने इन गुरुओं के जंजीरों में फँसे पडे हैं। उनसे छुड़ाना है।

95) मु. नं. - 95 (दि. 13-8-66 / 13-9-68)

a) अब बाप गुप्त भी है, पढ़ाई भी गुप्त है, सेन्टर्स तो बहुत हैं।.... और बच्चे भी बहुत हैं।

b) और लिखना भी है जब कोई लिट्रेचर बनाना है तो उसमें तारीख लिखनी है - आज से यानी 1966 से 10 वर्ष के अन्दर हम अपनी इस भारतभूमी को स्वर्ग बनाकर छोडेंगे।

c) लव कुश के लिए भी कहानी है ना। राम के बच्चे कोई दो नहीं है, यहाँ तो ढेर बच्चे हैं।

d) प्रेरणा से कोई आवाज नहीं होता। समझते हैं कि शंकर की भी प्रेरणा होती है ... जो यादव मूसल आदि बनाते हैं। परन्तु इसमें प्रेरणा की बात ही नहीं।

e) शिव-शंकर कह देते हैं, क्योंकि शंकर तो कोई काम नहीं करते हैं ना। तो शिव से मिला दिया है।

f) विष्णु के दो रुप ल० ना० हैं।

g) बाप कहते हैं मैं एक ही बार आकर तुम बच्चों को यह सारा नालेज समझाता हूँ, फिर आता ही नहीं हूँ।

मु. दि. 13-9-68

h) 8 वर्ष कोई बड़ी बात थोड़ेही है। सारी दुनियाँ खत्म हो जानी है। यह सिवाय तुम ब्राह्मण के और कोई की बुद्धि में नहीं होगा।

i) पुराने ते पुराने सिक्के रामचन्द्र के मिलेंगे। ल० ना० के राज्य में भी सिक्का मिल नहीं सकता।

96) मु. नं. - 96 (दि. 22-1-87)

a) बच्चे जानते हैं हम उस मालिक से वर्सा ले रहे हैं। बाप को मालिक कहा जाता हैं। जैसे फर्रुखाबाद के रहवासी मालिक को मानते हैं। मालिक तो सृष्टि का मालिक ठहरा ना।

b) बाप रचते हैं वारीसों अर्थात् बच्चों को, फिर उनको अपना मालिक बना देते हैं।
बच्चे फिर बाप के मालिक बन जाते हैं।

c) इसलिए हम प्रश्न पूछते हैं - ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा से आपका क्या सम्बन्ध है ?

d) हम तो सिर्फ ब्रह्माण्ड का मालिक है। तुम ब्रह्माण्ड, विश्व दोनों के मालिक बनते हो।

e) मनुष्यों को तमोप्रधान बनना ही है, जो कर्तव्य करेंगे सो उल्टा ही करेंगे क्योंकि उल्टी मत मिल रही है।

f) साधु लोग भी गाते हैं पतित पावन सीताराम। उनको भी समझाना है - देखो तुम गंगा पर जाते हो, वह गंगा तो चलती ही आई है।

g) भक्ति के बाद भगवान को आना है जरूर। हैं सब मेरे बच्चे, परन्तु अभी भक्ति मार्ग का पार्ट बजा रहे हैं।

h) शंकर को विनाश के निमित्त दिखाया है। तुम सब पार्वतियाँ हो, मैं अमरनाथ (बनाम शंकर) हूँ।

i) फर्रुखाबाद में बच्चियाँ तो हैं, वहाँ जो मालिक को मानने वाले हैं उनको समझाना है। तुम कहते हो वह मालिक है, बाप कहते बच्चे, तुम मालिक हो। हम विश्व का मालिक नहीं बनते।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

j) बाबा कहते हैं मैं अब आया हूँ तुमको सुखधाम में ले चलने।
k) पार करने वाला एक बाप है। तो जरूर कोई डुबोने वाले भी होंगे। गुरु ही परमपिता परमात्मा से बेमुख करते हैं। फालोअर्स को ऐसे नहीं कहते हैं कि तुम भी सन्यास करो।

97) मु. नं. - 97 (दि. 14-11-74 / 27-2-72)
a) बेहद के बाप की याद में रहो और बेहद सुखधाम की याद में रहो (याद की यात्रा) - यह है प्रैक्टिकल में आत्माओं और परमात्मा का मेला।
b) जब तुम अपने सेन्टर्स पर रहते हो तो यह मेला नहीं हैं - दूर बैठे हो ना। यहाँ तो तुम बाप के सम्मुख हो। वहाँ आत्मायें आत्माओं को पढ़ाती हैं, यहाँ बाप बैठ पढ़ाते हैं।
c) सब कंचन ही कंचन होंगे - आत्मा भी कंचन और शरीर भी कंचन रहते हैं। वह है ही कंचन दुनियाँ जिसको पारस दुनियाँ (संगमयुगी स्वर्ग) भी कहते हैं।
d) वह शिवबाबा बाबा भी है, नालेजफुल है इसलिए पढ़ाते भी हैं, सद्गति भी सबकी कर देते हैं प्रैक्टिकल में। ऐसे नहीं (ब्रह्मा बाबा का शरीर छोड़ने बाद) शिवबाबा चला जावेगा और हम यहाँ ही बैठे रहेंगे फिर दूसरा गुरु करना पड़ेगा, नहीं।
e) बाबा यहाँ बैठता है तो कौन2 याद आते हैं ? जो सर्विसएबुल बच्चे हैं। कब अहमदाबाद, कब बाम्बे, कब कलकत्ता चला जाता हूँ। यह बच्चे बहुत अच्छी सर्विस करते हैं।
f) कोई ब्राह्मणियाँ यहाँ ही बड़ा आराम से रहती हैं। दास-दासियाँ रखती हैं - बिस्तरा बनाओ, चाय ले आओ, यह करो।
g) बाप तो कहते हैं हम तुम्हारा मोस्ट ओबीडियन्ट सर्वेन्ट हैं।
मु. दि. 27-2-72
h) तुम अब जानते हो जगदम्बा होकर गई है। काली की भी महिमा गाते हैं असुरों के संधार करने वाली है। ऐसे नहीं कहेंगे जगदम्बा कोई असुरों का संधार करती हैं।

98) मु. नं. - 98 (दि. 16-3-90)
a) आत्मा पवित्र बन गई तो फिर यह पुराना शरीर आपेही छूट जायेगा, जैसे सर्प की खल आटोमेटिकली छूट जाती है। अभी तुम बच्चे समझते हो हम जीते जी इस पुरानी दुनियाँ से, पुराने शरीर से मर चुके हैं।
b) प्र० ब्रह्मा द्वारा अभी स्थापना हो रही है। यह है प्र० ब्रह्मा मुखवंशावली।... सू० वासी को भी भगवान नहीं कहा जाता।
c) फिर जब पुजारी बनते हैं तो कितना खर्चा करते हैं, उनके मन्दिर बनाने पर क्योंकि सोमरस दिया है ना। सोमनाथ के साथ सोमनाथिनी भी होगी।
d) विष्णु के दो रुप ल० ना० अलग2 बनेंगे ना।
e) बापदादा की भी आपस में कभी रुहरिहान चलती है।
f) बाबा तो बात ही एक बताते हैं। मुझे बुलाया ही इसलिए है कि हमको आकर नर्क से स्वर्ग में ले जाओ। गाते भी हैं - पतित पावन सीताराम, परन्तु अर्थ उल्टा निकाल दिया हैं।
g) अच्छा, कोई जास्ती नहीं याद कर सकते हैं तो बाप कहते हैं सिर्फ अल्फ बे- बादशाही को याद करो।

99) मु. नं. - 99 (दि. 16-2-80)
a) बाप का कार्य प्रेरणा से नहीं चल सकता, उनको यहाँ आना ही पड़े, क्यों? क्योंकि मनुष्यों की बुद्धि बिल्कुल तमोप्रधान है। तमोप्रधान बुद्धि प्रेरणा को कैच नहीं कर सकते।
b) गायन भी है - एक हैं अन्धे की औलाद अन्धे और दूसरे हैं सज्जे की औलाद सज़े। धृतराष्ट्र और युधिष्ठिर नाम दिखाते हैं।
c) कोई मर जाते हैं तो उनकी आत्मा को माँगते हैं। अब वह शरीर तो खत्म हो गया, आत्मा भोजन कैसे खायेंगी? भोजन तो फिर भी ब्राह्मण खायेंगे परन्तु यह सब हैं भक्तिमार्ग की रसम।
d) बाप आत्मा को बुलाते हैं, उनको समझाने लिए कि तुम आते थे, तुमको कितना समझाते थे कि बाप को याद करो, पवित्र बनो फिर भी न माना। अब तुम पद भ्रष्ट हो गये।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

e) आगे जो मरे हैं फिर भी बड़े होकर 20-25 वर्ष के हुए होंगे, तो कोई 2 आकर फिर से ज्ञान ले सकते हैं।
f) शास्त्रों में ज्ञान नहीं कहेंगे। वह सब शास्त्र हैं भक्तिमार्ग के। बाप खुद कहते हैं मैं इनसे नहीं मिलता हूँ।

100) मु. नं. - 100 (दि. 25-7-81)
a) बाप कहते मैं कल्प2 कल्प के संगमयुगे ही आता हूँ। उन्होंने फिर कल्प अक्षर निकाल सिर्फ संगमयुगे2 लिख दिया है।
b) भल गीता है, परन्तु नाम बदल दिया है। कृष्ण को द्वापर युग में ठोक दिया है। यह भी अभी (संगमयुग पर) तुम समझते हो।
[यह मुरली के भी हेडिंग में 'पिताश्री (ब्रह्मा) शिवबाबा याद है' लिखा है]
c) इस समय का ही गायन है गोप-गोपियों के अतिन्द्रिय सुख का।
d) रुद्र (शंकर) यह ज्ञान यज्ञ रचते हैं, हैं तो शिव का। यह वही गीता ज्ञान यज्ञ है जिससे विनाश ज्वाला प्रज्वलित हुई है।
e) एक दक्ष प्रजापति का भी यज्ञ रचते हैं अब दक्ष प्रजापति तो है नहीं। यह नाम कहाँ से आया। शायद लस्करराज के बदले दक्ष लिख दिया है (सन् 65 की मुरली)।
f) वहाँ तीर्थ यात्राओं पर जाते हैं तो कितने पैसा खर्च करते हैं। अब यहाँ तो दान करने की बात नहीं। .. हरिद्वार गंगाजी पर जरूर जाते हैं।
g) तुम ही जो पहले अलग हुए हो फिर तुम ही आकर पहले मिलते हो।
h) कृष्ण का बाप भी तो होगा ना। कृष्ण के माँ-बाप का इतना कुछ दिखाते नहीं है। अभी तुम जानते हो इस समय कृष्ण (उर्फ ब्रह्मा) की आत्मा ने अच्छी रीति पढ़ाई पढ़ी है जिस कारण माँ-बाप से भी ऊँच पद पाया है।
i) अगर हम इस समय शरीर छोड दें तो किस गति को पायेंगे।

101) मु. नं. - 101 (दि. 4-9-99)
a) शिव के कितने पूजारी हैं। पूजा करते हैं फिर मुख से कह देते वह तो पत्थर-भित्तर में है, कण2 में है। क्या यह जीवन कहानी ठहरी ?
b) वह है निराकार आत्माओं का बाप और फिर साकार में सभी का बाप प्र० ब्रह्मा है जो फिर वृद्धि को पाते रहते हैं।
c) जब तक तुम ब्रह्मा के बच्चे नहीं बने हो तब तक यहाँ आ नहीं सकते।
d) बहुत कॉलेज, युनिवर्सिटीज़ चाहिए ना, जहाँ बहुत आकर पढ़ेंगे फिर जब पढ़ाई पूरी होगी तो देवी-देवता धर्म में सब ट्रांस्फर हो जायेंगे अर्थात् मनुष्य से देवता बन जायेंगे।
e) बाप ने समझाया है एक ही सोमनाथ मन्दिर को मुसलमानों ने कितना लूटा।
f) बाप आते भी हैं मगध देश में, जो कि बहुत गिरा हुआ देश है, खान-पान भी गंदा है।
g) यही 84 जन्म लेते हैं। लास्ट सो फिर फर्स्ट, फर्स्ट सो लास्ट। मिसाल तो एक का बतायेंगे ना।
h) तुम हो महावीर-महावीरनी। आदि देव को भी महावीर कहते हैं, जिससे ही यह महावीर पैदा होते हैं जो विश्व पर राज्य करते हैं।
i) मौत के पहले ही पास होना है।

102) मु. नं. - 102 (दि. 9-4-01)
a) शिव जयन्ती के बाद फिर चाहिए गीता जयन्ती। फिर साथ2 होनी चाहिए कृष्ण जयन्ती।
b) बाप के सिवाए बाकी सब रचता और रचना के लिए झूठ ही बोलते हैं क्योंकि यह है ही माया का राज्य।
c) गॉड इज वन। उनकी रचना भी एक है।
d) मनुष्य सृष्टि का चैतन्य बीजरुप होने के कारण उनमें सारा ज्ञान है।
e) अभी तुम बाप द्वारा बेगर टू प्रिन्स बन रहे हो अथवा नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनते हो।
f) तुम हो गुप्त, तुमको पहचानते ही नहीं है।

103) मु. नं. - 103 (दि. 4-5-00)
a) भक्ति का कनेक्शन रावण के साथ है, ज्ञान का कनेक्शन राम के साथ है। यह तुम अभी समझ रहे हो।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompresso

b) शंकर तो जन्म-मरण से न्यारा है, इसलिए शिव और शंकर को फिर मिला दिया है। वास्तव में शिव का तो बहुत पार्ट है, पढाते हैं।

c) बाप समझाते हैं बच्चे, प्रेरणा की तो कोई बात ही नहीं। बाप को तो आना पड़ता है।

d) यहाँ डायरेक्ट भासना आती है। बाबा हमको पढ़ाते हैं। इनको मेला कहा जाता है। सेन्टर्स पर तुम जाते हो वहाँ कोई आत्माओं परमात्मा का मेला नहीं कहेंगे।

e) उन मेलों पर तो मनुष्य मैले हो जाते हैं, पैसे बरबाद करते रहते हैं। मिलता कुछ भी नहीं।

f) इसलिए हमेशा किसको भी समझाओ तो पहले स्थापना, विनाश फिर पालना कहना है। जब स्थापना पूरी होती है तब फिर विनाश शुरु होता है, फिर पालना होगी।

g) यहाँ तो तुम जगत अम्बा से पा रहे हो परमपिता परमात्मा शिव द्वारा। देने वाला वह है।

h) (यहाँ) 3 से 5 बजे तक आकर बैठो। बाबा भी आ जायेंगे, बच्चे खुश होंगे। बाबा है योग सिखलाने वाला। यह (ब्रह्मा बनाम कृष्ण) भी सीखने वाला है। दोनों बाप और दादा आ जायेंगे, फिर यहाँ और वहाँ योग में बैठने के फर्क का भी पता पड़ेगा।

104) **मु. नं. - 104 (दि. 8-10-85)**

a) तुम हो अभी पुरुषोत्तम संगमयुगी, संगमयुग पर। पुरुषोत्तम युग जरुर लिखना चाहिए। यह मुख्य अक्षर हैं - पु० संगमयुग, यह सब चित्रों में लिखना चाहिए (सन् 65 की मुरली)।

b) देखो, अहमदाबाद वाला साधु है, कहते हैं वह कुछ खाता पीता नहीं है। फिर क्या हुआ ? प्राप्ति तो कुछ नहीं है।

c) वानप्रस्थी बनना अर्थात् गुरु द्वारा वाणी से परे जाने का पुरुषार्थ करना। परन्तु वापिस तो कोई जा नहीं सकते।

d) शंकर के लिए भी समझाया है कि उनका कोई पार्ट नहीं है। इसका मतलब यह नहीं कि उनको उड़ा देना चाहिए। एक तरफ गाते भी हैं - देव2 महादेव...। फिर कह देते त्रि० ब्रह्मा। त्रि० महादेव शंकर का नाम क्यों नहीं रखा है ?

e) शिवबाबा कहते हैं शंकर के भी बहुत पूजा होते हैं। बाप कहते हैं अब जज करो, विचार करो इनका भी पार्ट हो सकता है ?

f) इसमें हार्टफेल न होना है।

105) **मु. नं. - 105 (दि. 26-2-73 / 9-5-92)**

a) क्रियेटर, डायरेक्टर, मुख्य एक्टर सभी हैं ना। शिवबाबा भी है, ब्र०वि०शं० भी हैं।

b) तुम जानते हो ल० ना० की आत्मायें भी इस समय हाजिर-नाजिर हैं। कृष्ण भी यहाँ ही है।

c) शंकर द्वारा विनाश होना है। वह भी अपना कर्तव्य कर रहे हैं। जरुर शंकर भी है तब तो सा० होता है।

मु. दि. 9-5-92

d) जैसे यह बाबा जवाहरात का धन्धा करते थे फिर बड़े बाबा ने कहा यह अविनाशी ज्ञान रतनों का धंधा करना है।

e) कुमारका, बताओ बाबा को कितने बच्चे हैं ?.... त्रिमूर्ति कहलाया जाता है परन्तु राइटियस बच्चे दो हुए, यह सब ज्ञान की बातें हैं - ब्रह्मा और शंकर।

f) एक तरफ है रावण की सेना, दूसरे तरफ है राम की सेना। बहादूर बन राम की तरफ जाना चाहिए।

106) **मु. नं. - 106 (दि. 16-7-89 / 11-10-87)**

a) बाप समझाते हैं ऐसा नहीं कहेंगे रामचन्द्र फेल हुआ, नहीं। राम-सीता त्रेता में थोड़ेही पढ़ते हैं जो कहें फेल हुआ।

मु. दि. 11-10-87

b) बाप की भी सर्विस का पार्ट बजाते तो टीचर का भी पार्ट बजाते तो सद्गुरु का भी पार्ट बजाते हैं।

c) सन्यासी पवित्र प्रवृत्ति मार्ग नहीं बना सकते हैं। घरबार छोड़कर चले जाते हैं। बाप के पास बच्चे आये हैं, कहते हैं - बाबा हमारे में ताकत है, इकट्ठे रहकर पवित्र रह सकते हैं।

d) आफतें तो आती है। यहाँ भी शिवबाबा पर नहीं आती है, परन्तु जिसमें प्रवेश किया है, लांग बूट में, उस पर आती हैं। वाट वेन्दे... पुरानी जूत्ती हैं ना।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

e) राम फेल हुआ तो 33 से कम मार्क्स मिली, तो चन्द्रवंशी में चले गये।
f) उनको मति-पिता कहते हैं। यह ब्रह्मा-सरस्वती को नहीं कह सकते। बाप तो बाप है और यह (ब्रह्मा) तुम्हारी मम्मा है।

107) मु. नं. - 107 (दि. 29-5-83)
a) सतयुग में गोप-गोपियाँ नहीं होते हैं। गोप-गोपियाँ संगमयुग पर हैं जबकि गोपी वल्लभ भी आते हैं।
b) सबको पता है कि बाबा इस.., मुरली बजाता होगा। वह मुरली टेप में भरती होगी। यह सब समझते होंगे कि मधुबन में तो गोप-गोपियाँ गोपी बल्लभ से सम्मुख सुनते होंगे।
c) वह (सन्यासी) है सिर्फ कफनी वाले। वर्सा मिल न सके क्योंकि अपवित्र रहते हैं।
d) बाप एक ही बार मिलते हैं। अभी तुम 21 जन्मों के लिए प्रालब्ध पा रहे हो। प्रालब्ध मिलेगी फिर तो बाबा भी परमधाम में जाकर बैठ जाते हैं।
e) प्रश्न उठता है राम-सीता सतयुग में आते हैं? आते हैं, परन्तु नापास होते हैं इसलिए जो पास हुए उनके आगे भरी ढ़ोते हैं।

108) मु. नं. - 108 (दि. 2-10-98)
a) मुझे रथ तो जरूर चाहिए। ब्र०वि०श० को भी सूक्ष्म शरीर है ना।
b) पहले तो मुझे प्रजापिता चाहिए। सू० वासी को यहाँ कैसे ले आ सकता? उनको पतित दुनियाँ में ले आऊँ - यह तो दोष हो जाए।
c) मुझे तो चाहिए ब्रह्मा का रथ, उनको ही प्रजापिता कहेंगे। कृष्ण को तो प्रजापिता नहीं कहेंगे।
d) वह (तथाकथित ब्र० कुमार-कुमारियाँ) मुक्ति के लिए हठयोग की तपस्या करते हैं, तुम (जो अब सम्मुख बैठे हैं) जीवनमुक्ति, राजाई के लिए राजयोग की तपस्या कर रहे हो।
e) कहते हैं - हर2 महादेव, सभी के दुःख काटने वाला। वह भी मैं ही हूँ, शंकर नहीं है। ब्रह्मा भी सर्विस पर हाजिर है।
f) मुझे प्र० ब्रह्मा जरूर चाहिए। आदि देव किसका बच्चा है? जरूर यह शिवबाबा का बच्चा होगा। ब्र०वि०श० तीनों हैं शिव के बच्चे। ब्रह्मा के बाप कौन हैं?
g) सरस्वती है ब्रह्मा मुखवंशावली। वह कोई ब्रह्मा की यूगल नहीं है, ब्रह्मा की बेटी है। उनको फिर जगत अम्बा क्यों कहते हैं?
h) सू० वतन में शंकर के पास बैल कहाँ से आया?
i) हम तुमको इन सहित बताता हूँ, ब्रह्मा को भी बतलाता हूँ। सदैव भी तो सवारी नहीं कर सकता हूँ।

109) मु. नं. - 109 (दि. 17-2-74)
a) अब भक्ति नहीं करनी है, पढ़ना है। बेहद का बाप ज्ञान सुनाते ही है तुम ब्राह्मणों को। और कोई को पता भी नहीं कि ज्ञान सागर बाप जो टीचर भी है वह कैसे पढ़ाते हैं।
b) जैसे वह इम्तिहान 12 मास का होता है ना, यह भी ऐसे हैं - 9 मास पढ़े हैं बाकी 3 मास स्थापना में है।
c) ऐरोप्लेन से पत्रे गिराते हो। उसमें भी यही समझाते हैं - तुम जन्म जन्मान्तर भक्ति करते आये हो, गीता (कागज की मुरली) पढ़ना भी भक्ति है ना।
d) पुनर्जन्म का भी समझाया है तुम कितने जन्म लेते हो। कुछ हिसाब किताब है तो दो तीन जन्म भी ले सकते हैं। ब्राह्मण कुल में भी जन्म ले सकते हैं।
e) भक्तिमार्ग में तो ज्ञान पाई का भी नहीं हैं। ड्रामा अनुसार भक्ति और ज्ञान का पार्ट चलता है।
f) मूल एक गीता (मुरली) झूठी होने से सब शास्त्र झूठे हो गये। सतगुरु के निन्दक ठौर न पा सकें।

110) मु. नं. - 110 (दि. 8-8-93)
a) बाप को जानने लिए कितने धक्के खाते हैं, परन्तु जान नहीं सकते। अभी तुम बाप के बने हो, बाप से वर्सा ले रहे हो।
b) बाप कहते हैं मैं कल्प2, कल्प के संगमयुगे आता हूँ, पुरानी दुनियाँ का विनाश कराता हूँ। जब तक नई दुनियाँ स्थापन हो जाए तब तक इस पुरानी दुनियाँ में रहना पड़े।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

c) निराकार कैसे सिखालायें? इसलिए आरगन्स द्वारा पढ़ाते हैं।
d) ब्र०वि०शं० हैं सू० वासी। बस, और कोई चीज ही नहीं है, फिर 8-10 भुजा वाले कहाँ से आये ? यह सब भक्तिमार्ग के अलंकार बनाते हैं। पैसा कमाने के लिए कुछ तो चाहिए ना। फिर किस्म2 के चित्र बैठ बना देते हैं।
e) अभी झोपड़ियों में बैठे हैं फिर महलों में बैठेंगे। ब्रह्मा द्वारा नई दुनियाँ स्थापन हो जायेगी तो (शंकर द्वारा) पुरानी दुनियाँ का विनाश हो जायेगा। अभी की बात है ना।
f) वह तो घरबार छोड़ देते हैं। तुम घर में रहते सारी दुनियाँ का त्याग करते हो।
g) यह रुहानी कॉलेज अथवा हॉस्पीटल भी बहुत बड़ा है। घर2 में तुम यह हॉस्पीटल अथवा कॉलेज खोल सकते हो। इसमें खर्चा कुछ भी नहीं, सिर्फ तीन पैर पृथ्वी चाहिए।

111) मु. नं. - 111 (दि. 18-9-68 / 28-2-98)
a) बच्चे जानते हैं पु० संगमयुग की आयु बहुत थोड़ी है। 40 वर्ष से अभी बाकी 8 वर्ष रही है। यह पु० संगमयुग सबसे हीरे जैसा है।
b) बाबा कोई जास्ती मेहनत नहीं देते हैं। न कोई खर्चा है, न कोई मंदिर-मस्जिद वा धर्मशाला आदि बनानी है। ...और तो सभी हैं देहधारी मनुष्य पैसे इकट्ठे करने वाले। यह (बाबा) कहाँ इकट्ठे करेंगे।
c) यहाँ तो शिवबाबा डायरेक्ट है।
d) अभी कृष्ण (उर्फ ब्रह्मा) कैसे नई दुनियाँ की स्थापना करेंगे, जबकि खुद ही नई दुनियाँ का प्रिन्स है ?
e) बाप तो कहते हैं म्युजियम अथवा रुहानी युनिवर्सिटी का प्रबन्ध करना है। मकान आदि का भी नहीं करना है।
f) बेहद का बाप बैठ पढ़ाते हैं। उनको अपना कोई लोभ नहीं है। जैसे सन्यासियों को होता है - महल बनावें, यह करें।
g) यह ईश्वर बाप बैठ पढ़ाते हैं। कृष्ण (उर्फ ब्रह्मा) को ईश्वर थोड़ेही कहेंगे - यह भी भूल है। भक्तिमार्ग में मनुष्य कितने भूलें करते हैं। ऐसे नहीं तोबा भरनी है।
मु. दि. 4-11-73
h) शंकर भी मेरी प्रेरणा से सर्विस पर हाजिर है, ब्रह्मा भी सर्विस पर हाजिर है।
मु. दि. 23-12-58 (रात्रि क्लास)
i) सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पन्न यहाँ बनना है। रिहर्सल यहाँ होगी फिर वहाँ प्रैक्टिकल पार्ट बजाना है।

112) मु. नं. - 112 (दि. 25-9-98)
a) परमपिता परमात्मा के सिवाए ज्ञान का तीसरा नेत्र कोई दे नहीं सकता।
b) असुल नाम है रुद्र ज्ञान यज्ञ। रुद्र तो है निराकार। वह कैसे यज्ञ रचेगा ? जरुर शरीर धारण करना पड़े। दक्ष प्रजापति का यज्ञ भी मनाते आते हैं।
c) तुम बच्चे जानते हो इस रुद्र ज्ञान यज्ञ से ही विनाश ज्वाला प्रज्वलित हुई है।
d) यह है संच्चा 2 यज्ञ। उन ब्राह्मणों के तो अनेक सेठ होते हैं। यह तुम ब्राह्मणों का एक ही सेठ है। बाप है रुद्र - रुद्र बाप कहो, शिव कहो, सोमनाथ कहो।... तो गोया वो लोग (तथाकथित ब्र० कुमार-कुमारियाँ) शान्ति के लिए यज्ञ रचते हैं अर्थात् विनाश नहीं चाहते।
e) जरुर और धर्म वालों से देवता धर्म की आदमशुमारी जास्ती होगी; लेकिन वह कनवर्ट हो गये हैं तो कैसे निकलें।
f) जब तक बुद्धि में ज्ञान नहीं बैठा है तो सिर्फ अर्पणमय होने से क्या फायदा ?
g) प्र० ब्रह्मा भी तो जरुर यहाँ होगा ना। सू० वासी ब्रह्मा का थोडेही दिन और रात बनायेंगे। दिन और रात का प्रश्न यहाँ का है।
h) सत बाबा, सत टीचर, सतगुरु तीनों इकट्ठे हैं। पहले जरुर बाप के बच्चे होंगे, फिर पद टीचर से पायेंगे।
i) तुम उन्हें समझाओ कि रुद्र यज्ञ और रुद्र ज्ञान यज्ञ में रात-दिन का फर्क है। रुद्र ज्ञान यज्ञ रचा तो उससे विनाश ज्वाला निकली, भारत स्वर्ग बना और यह फिर यज्ञ रचते हैं विनाश न हो अर्थात् स्वर्ग स्थापन न हो।
j) बिगर आरगन्स क्या आकर करेंगे ? तो अब ब्रह्मा में आया हुआ हूँ।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

k) जैसे गणेश को अथवा नानक आदि को याद करते हैं तो सा० हो जाता है, ऐसे बहुतों को हो सकता है। परन्तु वह चाबी एक ही बाप के हाथ में है। सा० कराया, ड्रामा चला, ठहरता नहीं है।

l) कहते हैं - यह तो उनका रथ है, इनको हम क्या करेंगे ? हम तो निराकार को ही याद करेंगे। अच्छा, निराकार की गोद में जाकर दिखाओ ! निराकार साथ खाओ, पियो ! तुम इनके पास क्यों आते हो ?

113) मु. नं. - 113 (दि. 24-8-02)

a) सच्चा ज्ञान सिर्फ बाप ही सुनाते हैं।... तो यह सच्चा2 बाबा, सच्चा2 टीचर है। सतयुग में भी सच्चा बाप कहेंगे क्योंकि वहाँ झूठ होता ही नहीं।

b) यह बाबा भी कहते हैं कि हम उस बाबा के सम्मुख बैठे हैं, उनको याद करता हुँ।

c) बाप और वर्से को याद करो।

d) बाप आये ही हैं गरीबों को साहुकार बनाने। मैं तो हूँ ही गरीब निवाज़।

e) ल० ना० का चित्र बहुत अच्छा है। इसमें सारा सेट है - त्रिमूर्ति, ल० ना०, रा० कृ० भी हैं।

114) मु. नं. - 114 (दि. 25-1-98)

a) भक्ति भी पहले अव्यभिचारी थी, एक की पूजा करते थे। उसके बदले अब (कलियुगी शुटिंग पिरियड में) अनेकों की पूजा करते आये हैं।

b) ब्रह्मा के साथ बच्चे भी बहुत हैं। ल० ना० के बच्चे तो बहुत नहीं होंगे। प्रजापिता भी उनको नहीं कहेंगे।

c) अब बाप समझाते हैं तुम हो गुप्त सेना। बाबा भी गुप्त है। बाहुबल से हद की राजाई मिलती है, योगबल से बेहद की राजाई मिलती है।

d) कदम2 श्रीमत पर न चले तो रोला पड़ जायेगा। बाबा कोई दूर थोड़ेही हैं। सम्मुख आकर पूछना चाहिए। ऐसे बापदादा के पास घड़ी2 आना चाहिए।

e) बच्चे लिखते हैं - फलाना बहुत अच्छा निश्चयबुद्धि है। मैं लिखता हूँ कुछ भी नहीं समझा है। अगर निश्चयबुद्धि है कि स्वर्ग का मालिक बनाने वाला बाप आ गया है तो एक सेकेण्ड भी मिलने बिगर रह न सके।

f) ल० ना० के चित्र साथ रा० कृ० का भी हो तो समझाने में सहज होगा। यह है करेक्ट चित्र। लिखत भी उनकी अच्छी हो।

115) मु. नं. - 115 (दि. 12-12-00)

a) तुम आये हो विश्व का मालिक बनने। बाबा ने कहा था जब प्रभात फेरी निकालते हो तो साथ में ल० ना० का चित्र जरुर उठाओ।

b) यहाँ है डायरेक्ट, भक्तिमार्ग में इनडायरेक्ट। एक2 रत्न लाखों रुपयों के हैं।

c) गुरुओं को भी ज्ञान इन्जेक्शन सतगुरु ही देंगे। तुम अविनाशी सर्जन के बच्चे हो तो तुम्हारा धन्धा ही है ज्ञान इन्जेक्शन लगाना।

d) बाबा कह देते हैं - मकान भी भल उनके नाम पर हो। बी० के० को यह मकान आदि चाहिए नहीं

116) मु. नं. - 116 (दि. 16-5-86 / जुनी मुरली)

a) वह शिवबाबा है रुहानी बाप और प्र० ब्रह्मा है जिस्मानी बाप। तो बाप-दादा दोनों कहते हैं बच्चे बाप को याद करो।

b) राधे-कृष्ण साथ फिर ल० ना० का क्या सम्बन्ध है ? यह बाप ही आकर समझाते हैं।

c) श्रीमत भगवान बाप की मिलती है। श्री कृष्ण तो राजकुमार है, वह क्या किसको मत देंगे ?

d) और धर्म वाले कब सत्य नारायण की कथा नहीं सुनेंगे। यह सुनेंगे वह जो नर से नारायण (नर से राजकुमार नहीं) बनने वाले आदि सनातन देवी-देवता धर्म वाले होंगे।

e) सब सीतायें एक राम को याद करती हैं अथवा सभी भक्तियाँ, सजनियाँ एक भगवान साजन को याद करती हैं।

f) यहाँ (ब्राह्मण दुनियाँ में) भी सच छिपा हुआ है झूठ ही झूठ चलता रहता है।

जुनी मुरली (दि. प्राप्त नहीं है)

g) मनुष्य तो कितना झूठ बोलते हैं। यह झूठ कहाँ से आई ? भक्तिमार्ग के शास्त्रों से।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

h) ल० ना० की महिमा अलग है । इनको सर्व गुण सम्पन्न... कहा जाता है । इनमें कोई ज्ञान नहीं है ।
i) गीता को भी झूठ कर दी । अब मैं बाप, वह बच्चा । मेरे बायोग्राफी (एक अद्भुत जीवन कहानी) में बच्चे का नाम डाल दिया है ।
j) बाप आया हुआ है संगम पर और वह लोग समझते हैं कलियुग अजुन 40 हजार वर्ष पड़े हैं । तब बाप कहते हैं कौरव काँग्रेस कुम्भकरण के नींद में सोये पड़े है ।

117) मु. नं. - 117 (दि. 3-7-04)

a) जिसने आलरउण्ड पार्ट बजाया है, जिसने सबसे जास्ती भक्ति की है, वही ज्ञान को धारण करने में बहुत तीखे जायेंगे ।
b) बाप समझते हैं - बच्चे, एक अल्फ को ही याद करना है । अल्फ माना बाबा, उनको अल्लाह भी कहते हैं ।
c) बाप ब्रह्मा तन में आते हैं, यह तो कोई जानता नहीं ।
d) 'योग' अक्षर से बच्चे बहुत मूँझते हैं । वास्तव में योग अक्षर उन हठयोगियों का है । सन्यासी कहते हैं ब्रह्म (या ब्रह्मा) से योग लगाना है ।
e) बाप है मनुष्य सृष्टि रुपी झाड़ का बीजरुप । सत्य है, वह कभी विनाश नहीं होता ।
f) यह भी बताया कि इन ल० ना० में यह ज्ञान नहीं है । वहाँ (सतयुग में) तो आस्तिक-नास्तिक का पता ही नहीं रहता है ।
g) पहले2 एक शिवबाबा की भक्ति होती है फिर देवताओं की । फिर 5 तत्वों की भी भक्ति करते, व्यभिचारी बन जाते हैं ।

118) मु. नं. - 118 (दि. 20-7-04)

a) भल डिटेल में समझाते हैं फिर पिछाड़ी में कहते हैं अल्फ को याद करो, दूसरा न कोई । तुम जन्म-जन्मान्तर के आशिक हो एक माशूक के ।
b) नंबरवन सो नंबर लास्ट में है । नम्बरवन में फिर जरुर जायेंगे ।
c) तुम हो पाण्डव सम्प्रदाय । पाण्डवों का राज्य नहीं था, कौरवों का राज्य था ।
d) बाप जो स्वर्ग स्थापन करते हैं वह तो यहाँ ही होता है । सूक्ष्मवतन में कुछ भी है नहीं । यह तो सा० की बातें हैं । ऐसा फरिस्ता बनना है ।
e) यह ल० ना० समझदार हैं, तब तो विश्व के मालिक हैं ।
f) बाबा सब बातों का अनुभवी है । ड्रामा अनुसार यह एक ही रथ है । यह कभी बदल नहीं सकता ।
g) यह बहुत भारी खजाना है, उनसे झोली भरते हैं । अविनाशी ज्ञान रत्न एक2 लाख रुपये के हैं ।

119) मु. नं. - 119 (दि. 17-10-00)

a) 5 हजार वर्ष में संगमयुग पर एक ही बार बाप आते हैं ।
b) बाकी देवताओं आदि के जो इतने चित्र बनाये हैं वह सब हैं भक्तिमार्ग की सामग्री ।
c) अभी अपनी घर को और नई दुनियाँ को याद करो ।
d) कहा जाता है ना - माँगने से मरना भला । बाप तुमको ऐसा साहूकार बना देते हैं जो देवताओं को भगवान से कोई चीज़ माँगने की दरकार नहीं रहती ।
e) कृष्ण को रिसीव करने वाले माँ-बाप भी पहले से चाहिए ना । तुम कृष्ण को रिसीव करने वाले होंगे ।... तो सिद्ध होता है उनके (कृष्ण के) माँ-बाप ने इतना पुरुषार्थ नहीं किया है जितना कृष्ण ने किया है ।
f) बाप ने समझाया है भक्ति वास्तव में प्रवृत्ति मार्ग वालों को ही करनी है । सन्यासियों में भी पहले ताकत थी, जंगलों में रहते थे । अभी तो कितने बड़े2 फ्लैट बनाकर रहते हैं । अभी तो अपने को भगवान शिवोऽहम कह बैठते हैं ।

120) मु. नं. - 120 (दि. 22-10-96)

a) भल यह ल० ना० आदि देवतायें हैं । उन्हों को भी यह नालेज नहीं है । यह ड्रामा का ज्ञान तुमको मिला है ।
b) तुम्हारी भी जब कर्मातीत अवस्था होगी तो इस मृत्युलोक से ट्रान्सफर हो अमरपुरी में चले जायेंगे ।

c) बाप ही बागवान है, उनको खिवैया भी कहते हैं। नईया आत्मा और शरीर दो चीज़ की बनी हुई है।
d) बाप कहते हैं तुम्हारे पास जो कुछ है, मरने से पहले दे दो।
e) इस शिवबाबा क यज्ञ में हम ब्राह्मण सर्वेन्ट हैं। तुम बच्चों को बाप जो मुख से कहे वह मानना चाहिए।

121) मु. नं. -121 (दि. 5-9-02)
a) जैसे दक्ष प्रजापति कहते हैं। अब दक्ष प्रजापति तो है नहीं। ब्रह्मा है प्रजापिता, दक्ष प्रजापति अक्षरू नाम कहाँ से आया ?
b) वहाँ राम को तो 4 भाई होते नहीं। वहाँ बच्चा भी तो एक होता है, 4 बच्चे कहाँ से आये ?
c) तुम बच्चे यहाँ योग वा याद सीखने के लिए नहीं आये हो। यहाँ तुम आते हो सम्मुख मुरली सुनने।
d) बाप इस मुख का आधार लेकर कहते हैं - बच्चे, मामेकम् याद करो। कृष्ण की आत्मा किसमें प्रवेश हो कहे, वह भी नहीं हो सकता।
e) राधे तो कुमारी है, कृष्ण तो कुमार है। फिर कृष्ण को स्वामी कैसे कहेंगे ?
f) राधे और कृष्ण दोनों के माँ-बाप अलग2 हैं। राधे और जगह की थी, कृष्ण फिर और जगह का था।
g) ज्ञान में तो सिर्फ बीज को जानना होता है।
h) ब्रह्मा और विष्णु तो पुनर्जन्म में आते हैं, बाकी शंकर नहीं आता। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा पालना, फिर शंकर द्वारा विनाश कराते हैं।
i) आगे माला बनती थी, फिर 3-4 नम्बर में आने वाले आज हैं नहीं।
j) उनको क्रियेटर, डायरेक्टर, मुख्य एक्टर कहा जाता है। वह है रचयिता - करनकरावनहार, फिर पार्टधारी भी है।

122) मु. नं. 122 (दि. 27-10-96)
a) कह देते- उनका नाम, रुप, देश, काल है नहीं। परन्तु नाम रुप से न्यारी कोई वस्तु हो ही नहीं सकती।
b) वहाँ (सतयुग में) एक2 को एक बच्चा, एक बच्ची हो तो त्रेता तक कितने हो जायेंगे ? ऐसे नहीं कि उस समय कोई 5-6 बच्चे पैदा करते हैं। सतयुग में इतने बच्चे होते नहीं।
c) हिन्दू भी बहुत कम हैं, और2 धर्मों में मिक्स हो गये हैं। नहीं तो सबसे जास्ती आदि सनातन देवी-देवता होने चाहिए।
d) बाप है ज्ञान का सागर। तुम हो नदियाँ। मम्मा का भी नाम है। ज्ञान की नदियाँ भी हैं। कोई फिर नाले भी हैं, टुबके भी है।
e) बाबा हैं गरीब निवाज़।
f) बाप कहते हैं जितना मैं शक्तिवान हूँ, उतनी माया भी शक्तिवान है।

123) मु. नं. - 123 (दि. 1-11-96)
a) भक्ति में बहुतों की महिमा गाते हैं। वहाँ आवाज भी बहुत होता है। घण्टा-घड़ियाल, गीत-भजन, रोना-पीटना कितना भक्तिमार्ग में चलता है।
b) भक्तिमार्ग में बहुत शास्त्र आदि पढ़ते हैं, ढेर लेक्चर आदि होते हैं।
c) यह है गीता पाठशाला। इस पाठशाला में बाप आकर राजयोग सिखलाते हैं, नर से नारायण बनाते हैं।
d) सिर्फ घर को याद करेंगे तो जैसे सन्यासी हो जायेंगे। ब्रह्म (ब्रह्मा) तो भगवान है नहीं।
e) मधुमक्खियाँ भी ऐसी होती हैं - रानी ने घर छोड़ा तो सब भागेंगी उनके पिछाड़ी। उनमें फिर रानी ही राज्य करती है हमजिन्स पर।
f) मम्मा बिगर कौड़ी आई क्योंकि महारानी बनना है। यह साधारण था। एकदम गरीब घर के बिगर कौड़ी खर्चा देखो क्या बनते हैं।
g) यह त्योहार आदि सब इस समय के हैं, परन्तु इनके महत्व को कोई जानता नहीं।
h) मैं सबको इकट्ठा ले जाऊँगा।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

124) मु. नं. - 124 (दि. 8-6-99)

a) बाप कहते हैं मैं तुमको गुल2 दुनियाँ में, सुखधाम में ले जाने आया हूँ। ... अगर देहधारी से बुद्धियोग लगाया तो पद भ्रष्ट हो पड़ेगा।

b) जैसे वेदान्ती बच्ची है, उसने इम्तहान दिया। उसमें एक प्वाइंट थी - गीता का भगवान कौन ? उसने परमपिता परमात्मा शिव लिख दिया तो उनको नापास कर दिया, और जिन्होंने कृष्ण का नाम लिखा था उनको पास कर दिया।

c) यहाँ तो तुमको बाप मिला है। तुमको चित्र रखने की दरकार नहीं है। यहाँ कोई शास्त्र आदि पढ़ने की बात नहीं।

d) उनको याद करने से विकर्म विनाश होंगे। बीच में यह भी है।

125) मु. नं. - 125 (दि. 27-7-91)

a) बाप भी कहते हैं मैं साधारण तन में प्रवेश करता हूँ।

b) बाप सम्मुख बैठ सब कुछ तुमको समझाते हैं। यह भूल नहीं जाना है।

c) बाप कहते हैं मैं तो पुनर्जन्म में आता नहीं हुँ।

d) कलकत्ते वाले बड़ कईयों ने देखा नहीं होगा। बहुत बड़ा झाड है। अब उनका फाउन्डेशन सारा सड़ गया है। बाकी झाड खड़ा है।

e) बाप समझाते भी तुम ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मणों को हैं। ब्राह्मण बनने बिगर, प्र० ब्रह्मा का बच्चा बनने बिगर शिवबाबा से वर्सा कैसे लेंगे ?

126) मु. नं. - 126 (दि. 25-12-01)

a) तुम जानते हो सारा झाड़ जड़जडीभूत अवस्था को पाया हुआ है।... इसलिए कहा जाता है देवी-देवता धर्म है नहीं, प्रायः लोप है।

b) शिवबाबा खुद इन द्वारा देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं क्योंकि उनको ही सारी पुरानी दुनियाँ का विनाश भी कराना है। वह विनाश का कार्य और कोई करते नहीं।

c) इस समय ऐसे नहीं कि धन से तुमको साहूकार बनना है। नहीं, बाबा ने समझाया है गरीब की एक पाई, साहूकार का एक रुपया समान। बाप है ही गरीब निवाज़।

d) दिन-प्रतिदिन प्रदर्शनी, मेले आदि की धूम मचती जाती है।

e) आबू थोड़ेही सतयुग में होगा, दरकार ही नहीं। यह मन्दिर आदि सब बाद में भक्तिमार्ग में बनेंगे। कितनी ऊँची पहाड़ी पर मन्दिर बनाते हैं।

f) यहाँ बैठे सा० हो सकता है कि कैसे आग लगती है। टी० वी० में भी तुम देख सकते हो। रेडियो में कहाँ2 का आवाज सुनाई पड़ता है। यह सब है माया का पाम्प। तब मनुष्य समझते हैं यह तो स्वर्ग है। स्वर्ग तो तब हो सकता है जब विनाश हो।

g) तुम्हारा यह ज्ञान है गुप्त।... हम उन्हों को (वेदों शास्त्रों को) अच्छी रीति जानते हैं कि इनसे भगवान की प्राप्ति नहीं हो सकती है। यह सब भक्तिमार्ग की सामग्री है।

h) प्रदर्शनी में आते बहुत हैं। ढेर प्रजा बनेगी।

27) मु. नं. - 127 (दि. 5-1-77)

a) अमरनाथ है वो शिवबाबा।... अमरनाथ अथवा शंकर-पार्वती वहाँ कहाँ से आये?

b) परमपिता परमात्मा के सम्मुख बैठे हैं। हाजिर-नाजुर तो अभी है ना।

c) व्यास भगवान ने तो वहाँ भी भ्रष्टाचार लिख दिया है। अपने बड़ों को गालियाँ देना - यह भारत में ही होता है।

d) मनुष्य तो बहुत कर्ज उठाते हैं। शादियों पर खर्चा, तीर्थों पर खर्चा बहुत करते हैं।... बाकी 10-15 बारी चाय पिया, सिग्रेट आदि पिया - यह खराब आदतें सब छोड़ देनी है।

e) फालतु तो कौड़ी से (पैसा) लेना न है। महल थोड़ेही बनाने हैं। सन्यासियों को वास्तव में इतने पैसे इकट्ठे करने का लॉ नहीं। सब कुछ छोड़ा फिर इतने पैसे क्यों रखते ?

f) बाबा के वर्तमान साकार रथ के प्रति दीदी-दादियों द्वारा आवश्यक सूचना...।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

128) मु. नं. - 128 (दि. 26-3-01)

a) यह बाबा भी अपना अनुभव तुम बच्चों को बताते हैं कि थोड़ा समय याद में रहता हूँ, फिर भूल जाता हूँ क्योंकि इसके ऊपर तो बहुत बोझ है ।

b) बाबा की बुद्धि में तो यह सीढ़ी का चित्र बहुत रहता है, इसको बड़ा महत्व देते हैं। बच्चे जो विचार सागर मंथन कर ऐसे2 चित्र बनाते हैं, तो बाबा भी उनकी शुक्रिया करते हैं या तो ऐसे कहेंगे कि बाबा ने उस बच्चे को टच किया है।

c) बच्चों के लिए मैगजीन निकलती है; लेकिन बी० के० इतना पढ़ते नहीं है । समझते हैं कि हमको थोड़ेही पढ़ना है, यह बाहर वालों के लिए है ।

129) मु. नं. - 129 (दि. 2-10-99)

a) अब तुम शिवबाबा को याद करो और घर को याद करो । याद की यात्रा पर जरुर रहना है । बाप का काम ही है पावन बनाकर पावन दुनियाँ में ले जाना । योग अक्षर में यात्रा सिद्ध नहीं होती है ।

b) बाप को भी याद करना है, शान्तिधाम, सुखधाम को भी याद करना है । सिर्फ एक को याद करना तो सन्यासियों का काम है क्योंकि वह इनको जानते नहीं है, ब्रह्म (या ब्रह्मा) को ही याद करते हैं ।

c) सीढ़ी का चित्र तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है समझाने का ।... सब तुम्हारे ऊपर ही बने हुए हैं ।

d) यह भी जानते हो सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी राजधानी यहाँ (संगमयुग में) स्थापन हो रही है । सतयुग-त्रेता में कोई भी धर्म स्थापन होते नहीं ।

e) बाप कहते हैं कल्प2 कल्प के संगमयुगे आता हूँ ।

130) मु. नं. - 130 (दि. 23-7-94)

a) मनुष्य समझते हैं विमान हैं, बड़े2 महल, बिजलियाँ हैं - यही स्वर्ग है । यह तो रावण का पाम्प है । बेहद का बाप स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं । इस समय है चटाबेटी माया और ईश्वर की...।

b) ऐसे नही शंकर कोई विनाश करता है । नहीं, इन्होंने अपने विनाश के लिए सब बनाया है ।

c) गीता को ही खण्डन कर दिया है । जीवन कहानी में नाम बदल दिया है । बाप के बदले बच्चे का नाम डाल दिया है।

d) ल० ना० के दो रुप को ही विष्णु कहा जाता है ।

e) बाप कहते हैं मैं हूँ ही गरीब निवाज़ । मैं आता भी तब हूँ जब भारत गरीब बन जाता है ।

f) कल्याणकारी बाप को ही कहा जाता है । वह आते ही हैं पु० संगमयुग पर ।

131) प्रूफ नं. - 131 (एक में तीन)

a) दादा लेखराज को एक बड़ी बहन थी, उसे कोई बच्चा नहीं था । बुआ के पति (सेवकराम) का तथा दादा लेखराज का जवाहरों का बिजनैस कलकत्ता में था ।

b) बाबा तब कराची में गये थे, बाबा में शिवबाबा की प्रवेशता हुई थी ।

132) प्रूफ नं. - 132 (प्र० ब्र० कु० ई० वि० वि० - 1936-86)

a) उन्हें सन् 1936 में जबकी उनकी 50 वर्ष की आयु थी, उनको दिव्य साक्षात्कार हुए ।

133) प्रूफ नं. - 133 (एक अनोखा अनुभव)

a) मैंने देखा कि बाबा अपना एक हाथ हार्ट पर रखकर कभी लेट जाता था और कभी बैठ जाता था ।... ऐसा दृश्य देखकर डाक्टर ने तुरन्त मेरे से कोरामिन इन्जेक्शन लेकर बाबा को इन्जेक्शन लगाई (यह इन्जेक्शन हार्ट सम्बन्धित बिमारी के लिए यूज करते है) ।

134) प्रूफ नं. - 134 (मुझे सच्चा साथी मिल गया)

a) ब्र० कु० वेदान्ती बहन का जन्म सन् 1945 में गुजरात् के एक सम्पन्न ब्राह्मण परिवार में हुआ ।

ॐ शांति

ॐ क्रांति

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मेन प्वाइन्ट्स - पार्ट I

a) बिना प्रूफ और प्रमाण के बुद्धिमान लोग मानने के लिए तैयार नहीं होते । -मु.नं. 51f

b) बेहद का बाप बेहद के बच्चों से बेहद की बातें करते हैं । -मु.नं. 1a, 2c, 79a, 90i

c) उस योग और ज्ञान से बल मिलता है हद का । यहाँ इस योग और ज्ञान से बल मिलता है बेहद का, क्योंकि सर्वशक्तिमान अथॉरिटी है ।

d) यह है पढ़ाई बेहद की, वर्सा भी बेहद का मिलता है । फिर इसमें त्याग भी बेहद का है । -मु.नं. 67f, 32m

1. **साकार पार्ट :** परन्तु निराकार को तो रथ जरुर चाहिए ना । रथ बिगर क्या करेंगे ? शिवबाबा क्या करेंगे ? रथ में आये तब तो तुम उनसे मिलेंगे । तुम्ही से सुनूँ, तुम्ही से बैठूँ .... तो रथ जरुर चाहिए ना । -मु.नं. 4e, 22c, 112l+j, 63b, 52e

b) बेहद का बाप है निराकार । वह जब तक साकार में न आये तब तक वर्सा कैसे मिले ? -मु.नं. 47b, 63i, 41i, 110c

c) (शिवबाबा) जब तक हस्ती में प्रवेश न करे तो निरहंकारीपना कैसे दिखावें ? "कितनी महिमा है - अकालमूर्त ...। -मु.नं. 65d

d) मैं चला जाऊँ, फिर घड़ी2 आऊँ, इसलिए जाता ही नहीं हुँ । तुम्हारे बिगर जाऊँगा ही नहीं, बच्चों साथ तो लव है ना । -मु.नं. 1f, 22g

e) शिवबाबा परमधाम में याद आता होगा यां मधुबन में याद आता होगा ? इसमें शिवबाबा है क्योंकि बाप तो अभी नीचे आ गया । -मु.नं. 15b

f) बाप भी विनाश के लिए आये हैं तो आधे पर थोड़ेही जायेंगे । आग लगकर जब पूरी होगी तब चले जाएंगे । -मु.नं. 45g, 110b, 82g

g) अन्तिम प्रत्यक्षता के समय की सीन क्या होगी ? एक और विनाश की आग लगेगी, दूसरी ओर अखबारों द्वारा चारों ओर बाप का सन्देश पहुँचेगा..., बाप भी वापस चला जायेगा । -मु.नं. 45a

h) फादर सिर्फ कहें और कभी मिले ही नहीं तो वह फादर कैसे हो सकता ? -मु.नं. 54b

i) ईश्वर तो है निराकार । उनके साथ लव तो साकार में चाहिए ना । -मु.नं. 27g

j) (बाबा) सद्गति भी सबकी कर देते हैं प्रैक्टिकल में । ऐसे नहीं (ब्रह्मा बाबा का शरीर छोडने बाद) शिवबाबा चला जायेगा और हम यहाँ ही बैठे रहेंगे फिर दूसरा गुरु करना पड़ेगा, नहीं । -मु.नं. 97d, 17d

k) ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश, विष्णु द्वारा पालना - यह भी लिखते हैं । यहाँ (साकार सृष्टि) के लिए ही है, परन्तु समझते कुछ भी नहीं । -मु.नं. 17i

l) धर्मराज भी शरीर धारण कराकर सजा देंगे । -मु.नं. 27b

m) बाप कहते हैं मैं बच्चों के आगे प्रत्यक्ष होता हुँ । बहुत बच्चे मुझे जानते ही नहीं, उनके सम्मुख कैसे हुँगा ? -मु.नं. 38e

n) मैं जो हूँ, जैसा हूँ - तुम बच्चों में भी विरले कोई एक्युरेट जानते हैं । -मु.नं. 74f, 13f, 40c

p) शरीर तो अन्त में छूटेगा जब मंजिल पूरी होगी ।... तब तक बाप सिखाते, पढ़ाते रहते हैं । -मु.नं. 41h, 6f, 85c, 53d

q) करनकरावनहार है ना - जो भी करते हैं और कराते भी हैं । -मु.नं. 14i, 14c, 62b

r) शरीर छुटेगा तब जब बाप का रथ आकर लेंगे । -मु.नं. 76h

s) मैं भी ड्रामा के बंधन में बांधा हुआ हूँ । -मु.नं. 43i

2. **गरीब निवाज़ :** बाप गरीब निवाज़ है ना । गरीबों से ही मिलने आते हैं । -मु.नं. 4b, 21e, 113d

b) मैं हुँ ही गरीब निवाज । गरीब का एक रुपया तो साहूकार का 10 हज़ार - दोनों को एक ही मर्तबा मिल जाता

PDF compression, OCR, Web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

c) सुदामा का भी मिसाल गाया हुआ है - चावल मुट्ठी में ले आया। बाबा ने मम्मा का मिसाल बताया है - चावल मुट्ठी भी नहीं ले आई, फिर भी कितना ऊँच पद पा लिया। -मु.नं. 44c, 123f, 37h, 89f

d) यहाँ देखो - बाबा पुरानी झोपड़ी में रहते हैं। -मु.नं. 9f, 31b

e) बन्दरों की महफिल में आता हुँ। जहाँ माल-ठाल 36 प्रकार के भोजन मिल सकते, वहाँ मैं आता ही नहीं हुँ। - मु.नं. 66d, 68b

f) तो देखो, मेरे बच्चे कितने गरीब हैं। तीन पैर पृथ्वी में हॉस्पिटल खोल देते हैं जहाँ से ही सबको हेल्थ-वेल्थ मिलती है। -मु.नं. 77g

3. पतित दुनियाँ, पतित/साधारण तन

a) बाप आते भी हैं मगध देश में, जो कि बहुत गिरा हुआ देश है। खान-पान भी गंदा है। -मु.नं. 101f

b) बाप कहते हैं मुझे भी पतित दुनियाँ, पतित शरीर में आना पड़ता है। -मु.नं. 3a, 4g, 6d, 25a

c) सबसे जास्ती पतित कौन है - यह बाप बतलाते हैं। मैं उस रथ में ही प्रवेश करता हुँ। -मु.नं. 14h

d) पतित शरीर का नाम है प्र० ब्रह्मा। इसमें प्रवेश कर कहते हैं मैं बहुत जन्मों के अन्त वाले साधारण मनुष्य तन में प्रवेश करता हूँ। सू० वासी सम्पूर्ण ब्रह्मा में नहीं आते हैं। -मु.नं. 25b

e) इस रथ में साधारण बुढ़े तन में प्रवेश करते हैं। -मु.नं. 20b

f) यह साधारण था। एकदम गरीब घर के बिगर कौड़ी खर्चा देखो क्या बनते हैं। -मु.नं. 123f, 59a

g) बहुत बच्चे साधारण रुप देख मूँझते हैं, उल्टा बोलने लग पडते हैं। -मु.नं. 4d, 9a

4. गुप्त : बाप कहते हैं मुझे गुप्त ही रहने दो, इसमें ही मज़ा है। -मु.नं. 4a

b) बाप भी गुप्त है, दादा भी गुप्त है, बच्चे भी गुप्त हैं। -मु.नं. 33b

c) अभी बाप गुप्त भी है, पढ़ाई भी गुप्त है। सेन्टर्स तो बहुत हैं।... और बच्चे भी बहुत हैं। -मु.नं. 95a

d) जब विनाश शुरु हो जायेगा फिर समझेंगे जरूर कहीं भगवान गुप्त वेश में है। -मु.नं. 6e

e) यह हैं गुप्त पाण्डव, कोई को भी पहचान में नहीं आ सकते। -मु.नं. 6c, 102f

f) सतयुग में गोप-गोपियाँ (गुप्त पुरुषार्थी) नहीं होते हैं। गोप-गोपियाँ संगमयुग पर हैं जबकि गोपी वल्लभ भी आते हैं। -मु.नं. 107a, 100c, 42b

5. एक ही बार : परमधाम से एक ही बार आता हुँ, भारत को पावन दैवी राज्य बनाने। -मु.नं. 3a, 77f, 40b

b) बाबा एक ही बार मिलते हैं। प्रालब्ध मिलेगी फिर तो बाबा भी परमधाम में जाकर बैठ जाते हैं। -मु.नं. 107d, 90f

c) बाप कहते हैं मैं एक ही बार आकर तुम बच्चों को यह सारा नालेज समझाता हुँ, फिर आता ही नहीं हुँ। -मु.नं. 95g, 67d, 31k

d) बाप कभी पुनर्जन्म नहीं लेते हैं। एक ही बार आकर सारे विश्व को पवित्र बनाने के लिए हमको राजयोग सिखाते हैं। -मु.नं. 78d

6. साथ ले जाते हैं : तुम जानते हो हमको बाबा निर्वाणधाम ले जाने कैं लिए आया हुआ है। सब आत्माओं को ले जायेंगे, एक को भी नहीं छोड़ेंगे। -मु.नं. 22d, 30g, 123h, 83c

7. प्रेरणा : अगर प्रेरणा से काम हो तो फिर बाप के आने की दरकार ही नहीं। शिवबाबा तो यहाँ है, तो प्रेरणा करने की क्या दरकार है ? -मु.नं. 12b, 43a, 48d, 103c

b) ऐसे नहीं कि ऊपर से प्रेरणा द्वारा ही सिखलायेंगे। टीचर घर बैठे प्रेरणा करेंगे क्या ? -मु.नं. 59h+i, 22a, 99a, 78e

c) शिव तो निराकार हुआ, ब्रह्मा द्वारा कैसे (स्थापना) करते हैं, क्या ऊपर से प्रेरणा देते हैं ? शिवबाबा प्र० ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट करते हैं। -मु.नं. 91b, 95d

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

8. डायरेक्ट-सम्मुख : बाबा को डायरेक्ट पत्र लिख सकते हो। बाबा भी डायरेक्ट पत्र भेज सकते हैं। -मु.नं. 38b, 115b, 32l

b) अभी तुम मात-पिता के डायरेक्ट बच्चे बने हो। -मु.नं. 88b, 48a

c) बाप कहते हैं मैं बच्चों के आगे प्रत्यक्ष होता हुँ। बहुत बच्चे मुझे जानते ही नहीं, उनके सम्मुख कैसे हुँगा ? -मु.नं. 38e

d) वह अब ब्रह्मा मुख कमल द्वारा तुम बच्चों को समझा रहे हैं। तुम बच्चों को सम्मुख समझाया जाता है। -मु.नं. 14a, 66e, 107b

e) यह बाबा भी कहते हैं कि हम उस बाबा के सम्मुख बैठे हैं, उनको याद करता हुँ। -मु.नं. 113b

f) परमपिता परमात्मा के सम्मुख बैठे हैं। हाजिर नाजिर तो अभी है ना। -मु.नं. 127b, 125b, 24a

g) बाबा कोई दूर थोड़ेही हैं। सम्मुख आकर पूछना चाहिए। ऐसे बापदादा के पास घडी2 आना चाहिए। -मु.नं. 114d+e

9. सम्बन्ध : पूछो - भगवान से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है ? भगवान तो है स्वर्ग का रचयिता, माता-पिता है। -मु.नं. 27h, 33h, 96c

b) परमपिता परमात्मा से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है और फिर प्रजापिता ब्रह्मा से क्या सम्बन्ध है ? -मु.नं. 69a

c) वह है हेविनली गॉड फादर। फिर हम कलियुगी नर्क में क्यों पड़े हैं ? -मु.नं. 1c, 59d

10. मुक्ति-जीवनमुक्ति : ऊपर जाना माना मरना, शरीर छोड़ना। मरना कौन चाहते हैं ? यहाँ तो बाप ने कहा है तुम इस शरीर को भूलते जाओ। जीतेजी मरना तुमको सिखलाते हैं। -मु.नं. 13b, 98a, 30a

b) (मनुष्य) ब्रह्माकुमारियों से डरते हैं - तुम मौत सिखाते हो। -मु.नं. 14j

c) तुम्हारी एम ऑब्जेक्ट ही है नर से नारायण (नर से प्रिन्स नहीं) बनने की। यह गीता पाठशाला है ही जीवन मुक्ति प्राप्त करने के लिए। -मु.नं. 2d

d) आगे चलकर तुम समझते जायेंगे। यह अगर इस समय शरीर छोड़े तो क्या पद पायेंगे ? -मु.नं. 84g, 100f

e) अभी तुम बच्चों को आयु बड़ा बनाना है - योग बल से। -मु.नं. 66g

f) मौत के पहले ही पास होना है। -मु.नं. 101l, 120d

g) मूलवतन में नहीं जाना है। -मु.नं. 23a, 15h

h) मुक्ति में तो सब जायेंगे, बाकी जीवनमुक्ति में जाना कोई मासी का घर थोड़ेही है। -मु.नं. 45d

i) वह मुक्ति के लिए हठयोग की तपस्या करते हैं, तुम जीवनमुक्ति, राजाई के लिए राजयोग की तपस्या कर रहे हो। -मु.नं. 108d

j) यहाँ इस समय कोई शरीर छोड़ते हैं तो इसी दुनियाँ में आकर जन्म लेते हैं (सूक्ष्मवतन में नहीं)। तुम शरीर छोड़ेंगे तो बाबा के साथ बेहद घर में जायेंगे। -मु.नं. 10c, 3d, 25f, 51d

11. बेसिक - एड्वान्स : आगे थोड़ही दो बाप का राज़ समझाते थे। आगे तो जैसे बेबियाँ थीं। -मु.नं. 7l

b) आगे भल यद करते थे, परन्तु विकर्म विनाश थोड़ेही होते थे। -मु.नं. 11f

c) इसलिए यह सब महीन बातें बाबा ने देर से समझाई हैं। शुरु में बहुत सहज तोतली बातें सुनाते थे। -मु.नं. 4c

d) आगे चलकर समझते जायेंगे। दिन-प्रतिदिन तुम नई2 प्वाइन्ट्स सुनते रहेंगे। -मु.नं. 4f, 70c

e) बच्चे तो बहुत हैं, उनमें से भी कोटों में कोई, कोई में भी कोई समझते हैं। -मु.नं. 84a

f) इतना ऊँच पद पाना कोई मासी का घर नहीं, बहादुरी चाहिए। -मु.नं. 73i

g) यह है बड़े ते बड़ी कॉलेज। फिर से वह दिन आया आज, जबकि बाप बैठ बच्चों को राजयोग सिखलाते हैं। -मु.नं. 70a, 101d, 54a

h) प्र० ब्र०कु०-कुमारियाँ (PBK) हैं। प्रजापिता अक्षर न डालने से मनुष्य मूँझते हैं। -मु.नं. 33c, 31c, 59c, 39h

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

12. **लास्ट सो फास्ट :** 7 रोज़ वाला बच्चा 25 वर्ष वाले से तीखा चला जाता है। -**मु.नं.** 42d+c, 43c, 68g
b) तुम ही पहले2 आये थे, अभी लास्ट में भी तुम हो। -**मु.नं.** 3f, 100g

13. **ईश्वरीय कायदा :** फार्म भराने का कायदा भी जरुरी है। -**मु.नं.** 3h, 12a
b) तुम्हारे दर पर कोई भी आये उसे कुछ न कुछ ज्ञान धन देना है, पहले फार्म भराओ फिर दो बाप का परिचय दो। -**मु.नं.** 31a, 31c
c) फार्म भराते समय नब्ज देखकर पूछना होता - परमपिता परमात्मा से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है ? -**मु.नं.** 33h
d) 7 रोज भट्ठी में पड़ना पड़े क्योंकि महारोगी बन पड़े हैं। -**मु.नं.** 3i, 24c, 33f, 68g
e) इस बैज के साथ एक छोटा सा पर्चा भी होना चाहिए - ऊपर में त्रिमुर्ति हो, दूसरे तरफ सेन्टर्स की एड्रेस हो। -**मु.नं.** 47c
f) एरोप्लेन से पत्रे गिराते हो। उसमें भी यही समझाते हैं - तुम जन्म-जन्मान्तर भक्ति करते आये हो। गीता (कागज़ की मुरली) पढ़ना भी भक्ति है ना। -**मु.नं.** -**मु.नं.** 109c, 90f,

याद

1) इसको याद की यात्रा कहा जाता है। 'योग' कहने से यात्रा सिद्ध नहीं होती। -**मु.नं.** 11d, 26a, 117d, 129a
2) निराकार को क्यों याद करते हैं, उससे क्या मिलेगा ? क्या निराकारी दुनियाँ में जायेंगे ? -**मु.नं.** 14d, 112l
3) बाप जो है, जैसा है, उसे यथार्थ रीति जानकर याद करना - यही मुख्य बात है। -**मु.नं.** 40a, 23d
4) ब्रह्मा बिगर शिवबाबा कैसे याद पड़ेगा ? इसमें मुझे याद करो। -**मु.नं.** 87e, 37a
5) पूछते हैं - हम कैसे याद करें ? शिवबाबा को ब्रह्मा तन में याद करें या परमधाम में याद करें ? बाबा कहते हैं याद तो आत्मा को ही करना है, परन्तु शरीर भी जरुर याद आता है। -**मु.नं.** 15a+b, 17f, 87d
6) जो भी आकारी वा साकारी या निराकारी चित्र हो - उनको तुम्हें याद नहीं करना है। -**मु.नं.** 20d
7) अगर इनको (ब्रह्मा को) याद करेंगे तो कुछ भी नहीं मिलेगा। शिवबाबा को छोड़ फोटो को याद किया तो मर पड़ेंगे। -**मु.नं.** 19f, 37g, 17g, 26c, 48c
8) सिर्फ घर को याद करेंगे तो ब्रह्म (वा ब्रह्मा) के साथ योग हो गया। उनमें विकर्म विनाश हो नहीं सकते। -**मु.नं.** 63e
9) ब्रह्मा से वर्सा मिल न सके। तुम सब बच्चे वर्सा उनसे पाते हो, इनसे नहीं। जिससे वर्सा नहीं पाना है उनको याद नहीं करना है। -**मु.नं.** 34d, 38a
10) बाबा कहते हैं कोशिश कर तुम निरन्तर याद में रहो। ऐसे नहीं कि सेन्टर में जाकर एक जगह बैठना है। -**मु.नं.** 18c, 69c
11) इस शरीर में बैठ कहते हैं मामेकम याद करो। -**मु.नं.** 82g, 121d
12) मैं यहाँ इस शरीर में आकर कहता हुँ कि तुमको याद वहाँ करना है, जहाँ अब आना है। -**मु.नं.** 16a, 124d
13) अल्फ को याद करो। -**मु.नं.** 2i, 19b, 117b, 118a
14) अल्फ और बें - यह याद करो। -**मु.नं.** 54e, 98g
15) बच्चों को बाप और वर्से को पूरा याद करना चाहिए। -**मु.नं.** 66b, 57f, 69g, 113c
16) बाप को भी याद करना है, शांतिधाम, सुखधाम को भी याद करना है। -**मु.नं.** 129b, 129a, 119c, 69g
17) बेहद के बाप की याद में रहो और बेहद सुखधाम की याद में रहो (याद की यात्रा)। -**मु.नं.** 97a
18) तुम राम को याद करो तो माला में पिरोने लायक बन जायेंगे। -**मु.नं.** 65g
19) सिर्फ वृक्षपति को याद करो। -**मु.नं.** 36f

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

4-4-01 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - बाप की यह वण्डरफुल हट्टी (दुकान) है, जिस पर सब वैराइटी सामान मिलता है, उस हट्टी के तुम मालिक हो"

प्रश्नः- इस वण्डरफुल दुकानदार की कॉपी कोई भी नहीं कर सकता है - क्यों?
उत्तरः- क्योंकि यह स्वयं ही सर्व खजानों का भण्डार है। ज्ञान का, सुख का, शान्ति का, पवित्रता का, सर्व चीजों का सागर है, जिसको जो चाहिए वह मिल सकता है। निवृत्ति मार्ग वालों के पास यह सामान मिल नहीं सकता। कोई भी अपने को बाप समान सागर कह नहीं सकते।

गीतः- तुम्हें पाके हमने....

a ओम् शान्ति। अब बच्चे बैठे हैं बेहद के बाप के सामने। इनको बेहद का बाप भी कहा जाए तो बेहद का दादा भी कहा जाए और फिर बेहद के बच्चे बैठे हैं और बाप बेहद का ज्ञान दे रहे हैं। हद की बातें अब छूटी। अब बाप से बेहद का वर्सा लेना है। यह एक ही हट्टी ठहरी। मनुष्यों को पता नहीं है कि हम क्या चाहते हैं। बेहद के बाप की हट्टी तो बहुत बड़ी है। उनको कहा जाता है सुख का सागर, पवित्रता का सागर, आनंद का सागर, ज्ञान का सागर। कोई दुकानदार होता है तो उनके पास बहुत वैराइटी होती है। तो यह है बेहद का बाप। इनके पास भी वैराइटी सामान है। क्या-क्या है? बाबा ज्ञान का सागर है, सुख का, शान्ति का सागर है। उनके पास यह वण्डरफुल, अलौकिक सामान है। फिर गाया भी जाता है - सुख-कर्ता। एक ही दुकान ठहरी और तो कोई का ऐसा दुकान है नहीं। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर के पास क्या सामान है? कुछ भी नहीं। सबसे ऊंचा सामान है बाप के पास, इसलिए उनकी महिमा गाई जाती है। त्वमेव माताश्च पिता.... ऐसी महिमा कभी किसकी गाई नहीं जाती। मनुष्य शान्ति के लिए भटकते रहते हैं। कोई को दवाई चाहिए, कोई को कुछ चाहिए। वह सब हद की दुकान हैं। सारी दुनिया में सबके पास हद की चीजें हैं। यह एक ही बाप है जिसके पास बेहद की चीज़ें हैं। इसलिए उनकी महिमा भी गाते हैं कि पतित-पावन है, लिबरेटर है, ज्ञान का सागर, आनन्द का सागर है। यह सब वैराइटी वक्खर है। लिस्ट लिखेंगे तो बहुत हो जायेगी। जिस बाप के पास यह चीजें हैं तो बच्चों का भी हक है उन पर। परन्तु यह किसकी बुद्धि में नहीं आता कि जब ऐसे बाप के हम बच्चे हैं तो बाप की

b चीज़ों के हम मालिक होने चाहिए। बाप आते भी हैं भारत में। बाप के पास जो सब चीजें हैं - वे जरूर ले आयेंगे। उनके पास लेने लिए तो जा नहीं सकते। बाप कहते हैं, मुझे आना पड़ता है। कल्प-कल्प, कल्प के संगम पर। मैं आकर तुमको सब चीजें दे जाता हूँ। हम जो तुमको वक्खर देता हूँ। वह फिर कभी नहीं मिल सकता। आधाकल्प के लिए तुम्हारी भण्डारी भर जाती है। ऐसी कोई अप्राप्त वस्तु नहीं रहती जिसके लिए पुकारना पड़े। ड्रामा प्लैन अनुसार तुम सब वर्सा लेकर और धीरे-धीरे सीढ़ी उतरते हो। पुनर्जन्म भी जरूर लेना पड़े। 84 जन्म भी लेना है। 84 का चक्र कहते हैं परन्तु अर्थ नहीं समझते। 84 के बदले 84 लाख जन्म कह देते हैं। माया भूल करा देती है। यह अभी तुम समझते हो फिर तो यह सब

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

भूल जायेंगे। इस समय वक्खर लेते हैं, सतयुग में राजाई करते हैं। परन्तु उन्हों को यह पता नहीं रहता कि यह राजाई हमको किसने दी? लक्ष्मी-नारायण का राज्य कब था? स्वर्ग के सुख गाये भी जाते हैं। सब किसम के सुख देते हैं। इससे जास्ती कोई सुख होता नहीं। फिर वह सुख भी प्राय:लोप हो जाता है। आधाकल्प के बाद रावण आकर सब सुख छीन लेते हैं। किसको गुस्सा करते हैं तो कहते हैं, तेरी कला काया ही खत्म हो गई है। तुम भी जो सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण थे। वह कलायें सब खत्म हो गई हैं। एक बाप के सिवाए और कोई की इतनी महिमा नहीं है। कहते हैं ना - पैसा हो तो लाड़काना घूमकर आओ।

तुम विचार करो कि स्वर्ग में कितना अकीचार धन-माल था। अभी वह थोड़ेही है। सब गुम हो जाता है। धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट बन जाते हैं। तो धन-माल भी गुम हो जाता है फिर नीचे गिरने लग पड़ते हैं। बाप समझाते हैं - तुमको इतना धन दिया, तुमको हीरे जैसा बनाया। फिर तुमने धन माल कहाँ गँवा दिया? अब फिर बाप कहते हैं कि अपना वर्सा, पुरुषार्थ कर ले लो। तुम जानते हो कि बाबा हमको फिर से स्वर्ग की बादशाही दे रहे हैं और कहते हैं, हे बच्चे मुझे याद करो तो तुम्हारे ऊपर जो कट है, वह निकल जाये। बच्चे कहते, बाबा हम भूल जाते हैं। यह क्या? कन्या जब शादी करती है तो पति को कभी भूलती है क्या! बच्चे कभी बाप को भूलते हैं क्या? बाप तो दाता है। वर्सा बच्चों को लेना है तो जरूर याद करना पड़े। बाप समझाते हैं - मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चे, याद की यात्रा में रहेंगे तो विकर्म विनाश होंगे और कोई उपाय नहीं है। भक्ति मार्ग में तीर्थ यात्रा, गंगा स्नान आदि जो करते आये हो तो सीढ़ी नीचे उतरते ही आये हो। ऊपर तो चढ़ ही नहीं सकते। लॉ नहीं कहता। सबकी उतरती कला ही है। यह जो कहते हैं कि फलाना मुक्ति में गया, यह झूठ बोलते हैं। वापिस कोई जा नहीं सकते। बाबा आया है तुमको 16 कला सम्पूर्ण बनाने। तुम ही गाते थे कि मुझ निर्गुण हारे में... अभी तुम जानते हो कि बाप गुणवान बनाते हैं। हम ही गुणवान, पूज्य थे। हमने वर्सा लिया था। 5 हजार वर्ष हुए। बाप भी कहते हैं कि तुमको वर्सा देकर गये थे। शिवजयन्ती, रक्षाबन्धन, दशहरा आदि मनाते भी हैं फिर भी कुछ समझते नहीं हैं। सब कुछ भूल जाते हैं। फिर बाप आकर याद दिलाते हैं। तुम ही थे फिर तुमने राज्य भाग्य गँवाया है। बाप समझाते हैं - अब यह सारी दुनिया पुरानी जड़जड़ीभूत है। दुनिया तो यही है। यही भारत नया था, अब पुराना हुआ है। स्वर्ग में सदा सुख होता है। फिर द्वापर से जब दु:ख शुरू होता है तब यह वेद-शास्त्र आदि बनते हैं। भक्ति करते-करते जब तुम भक्ति पूरी करो तब भगवान आये ना। ब्रह्मा का दिन, ब्रह्मा की रात। आधा-आधा होगा ना। ज्ञान दिन, भक्ति रात। उन्होंने तो कल्प की आयु उल्टी-सुल्टी कर दी है।

तो पहले-पहले तुम सबको बाप की महिमा बैठ सुनाओ। बाप ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर है। कृष्ण को थोड़ेही कहेंगे - निराकार पतित-पावन, सुख का सागर...नहीं, उनकी महिमा ही अलग है। रात-दिन का फ़र्क है। शिव को कहते ही हैं बाबा। कृष्ण बाबा अक्षर ही नहीं शोभता। कितनी बड़ी भूल है। फिर छोटी-छोटी भूलें करते 100 प्रतिशत भूल गये हैं। बाप कहते हैं - सन्यासियों से कभी यह सौदा मिल न सके। वह हैं ही निवृत्ति मार्ग के।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

तुम हो प्रवृत्ति मार्ग वाले। तुम सम्पूर्ण निर्विकारी थे, वाइसलेस वर्ल्ड थी। यह है विशश वर्ल्ड। फिर कहते - क्या सतयुग में बच्चे पैदा नहीं होते? वहाँ भी तो विकार था। अरे; वह है ही सम्पूर्ण निर्विकारी दुनिया। सम्पूर्ण निर्विकारी फिर विकारी हो कैसे सकते? फिर कहते - सतयुग में सब इतने मनुष्य हों, यह कैसे हो सकता। वहाँ इतने मनुष्य थोड़ेही होते हैं। भारत के सिवाए और कोई खण्ड नहीं होंगे। वह कहते भी हैं हम मान नहीं सकते। दुनिया तो सदैव भरी हुई रहती है, कुछ भी समझते नहीं। बाप समझाते हैं कि भारत गोल्डन एज़ था। अब तो आइरन एज़ पत्थरबुद्धि हैं। अब तुम बच्चों ने ड्रामा को समझ लिया है। गांधी आदि सब रामराज्य चाहते थे। परन्तु दिखाते हैं कि महाभारत लड़ाई लगी। बस, फिर खेल खत्म। फिर क्या हुआ? कुछ भी दिखाया नहीं है। बाप बैठ यह समझाते हैं। यह तो बिल्कुल
c सहज है। शिव जयन्ती मनाते हैं - तो जरूर शिवबाबा आते हैं। वह है हेविनली गॉड फादर तो जरूर हेविन के गेट खोलने आयेगा। आयेंगे भी तब, जब हेल होगा। हेविन के द्वार खोल हेल के बन्द कर देंगे। हेविन के द्वार खुलें तो जरूर सब हेविन में ही आयेंगे। यह बातें कोई डिफीकल्ट नहीं हैं। महिमा सिर्फ एक बाप की है। शिवबाबा की एक ही हट्टी है। वह है बेहद का बाप। बेहद के बाप द्वारा भारत को स्वर्ग का सुख मिलता है। बेहद का बाप स्वर्ग स्थापन करता है। बराबर बेहद का सुख था। फिर हम हेल में क्यों पड़े हैं? यह कोई भी नहीं जानते। बाप समझाते हैं कि तुम ही थे फिर तुम ही गिरे हो। देवताओं को ही 84 जन्म
d लेने पड़ते हैं। अभी आकर पतित बने हैं। उनको ही फिर पावन बनना है। बाप का भी जन्म है तो रावण का भी जन्म होता है। यह किसको भी पता नहीं। कोई से भी पूछो तो रावण को कब से जलाते हो? कहेंगे वह तो अनादि चलता आता है। यह सब राज़ बाप समझाते हैं। उस बाप की एक ही हट्टी की महिमा है। सुख-शान्ति-पवित्रता मनुष्य से मनुष्य को नहीं मिल सकती। सिर्फ एक को थोड़ेही शान्ति मिली थी। यह झूठ बोलते हैं कि फलाने से शान्ति मिली। अरे शान्ति तो मिलनी है - शान्तिधाम में। यहाँ तो एक को शान्ति होगी फिर दूसरा अशान्त करेंगे तो शान्ति में रह न सकें। सुख-शान्ति-पवित्रता सब चीजों का व्यापारी एक ही शिवबाबा है। उनसे कोई आकर व्यापार करे। उनको कहा ही जाता है सौदागर, पवित्रता, सुख-शान्ति-सम्पत्ति सब कुछ उनके पास है। अप्राप्त कोई वस्तु नहीं। स्वर्ग का तुम राज्य पाते हो। बाप तो देने आये हैं, लेने वाले लेते-लेते थक जाते हैं। मैं आता ही हूँ देने लिए और तुम ठण्डे पड़ जाते हो लेने में। बच्चे कहते हैं, बाबा माया के तूफान आते हैं। हाँ, पद भी बहुत ऊंचा पाना है। स्वर्ग के मालिक बनते हो। यह कम बात है क्या! तो मेहनत करनी है। श्रीमत पर चलते रहो। वक्खर जो मिलता है वह फिर औरों को भी देना पड़े। दान करना पड़े। पवित्र बनना है तो 5 विकारों का दान जरूर देना है। मेहनत करनी है। बाप को याद करना है, तब ही कट उतरेगी। मुख्य है याद। प्रतिज्ञा भल करो कि बाबा हम विकार में कभी नहीं जायेंगे, किसी पर क्रोध नहीं करेंगे। परन्तु याद में जरूर रहना है। नहीं तो इतने पाप कैसे विनाश होंगे। बाकी नॉलेज तो बड़ी सहज है। 84 जन्म का चक्र कैसे लगाया है, यह किसको भी तुम समझा सकते हो। बाकी याद की यात्रा में मेहनत है। भारत का प्राचीन योग मशहूर है। क्या ज्ञान देते हैं? मनमनाभव अर्थात् मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

होंगे। तुम गाते भी थे कि आप जब आयेंगे तो और संग तोड़ एक संग जोड़ेंगे। तुम पर बलिहार जायेंगे। तेरे सिवाए और कोई को याद नहीं करेंगे। प्रतिज्ञा की है फिर भूल क्यों जाते हो? कहते भी हैं हथ कार डे दिल यार डे...कर्मयोगी तो तुम हो। धन्धा आदि करते बुद्धियोग बाप से लगाना है। माशूक बाप खुद कहते हैं, तुम आशिकों ने आधाकल्प याद किया है। अब मैं आया हूँ, मुझे याद करो। यह याद ही घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं, इसमें ही मेहनत है। कर्मातीत अवस्था हो जाए तो फिर यह शरीर ही छोड़ना पड़े। जब राजधानी स्थापन हो जायेगी तब तुम कर्मातीत अवस्था को पायेंगे। अभी तो सभी पुरूषार्थी हैं। सबसे ज़ास्ती मम्मा-बाबा याद करते हैं। सूक्ष्मवतन में भी वे देखने में आते हैं।

बाप समझाते हैं - मैं जिसमें प्रवेश करता हूँ, वह बहुत जन्म के अन्त वाला जन्म है। वह भी पुरूषार्थ कर रहे हैं। कर्मातीत अवस्था में अभी कोई पहुँच नहीं सकते। कर्मातीत अवस्था आ जाए तो फिर यह शरीर रह नहीं सकता। बाबा तो बहुत अच्छी रीति समझाते हैं। अब समझने वालों की बुद्धि पर है। हिविनली गॉड फादर एक ही है। उनके पास ही ज्ञान का सारा वक्खर है। वही जादूगर है। और कोई से सुख-शान्ति-पवित्रता का वर्सा मिल न सके। बाप बहुत अच्छी रीति समझाते हैं। बच्चों को धारण कर और धारण कराना है। जितना धारणा करते हैं, उतना वर्सा लेते हैं। दिन-प्रतिदिन बहुत तरावटी माल मिलता है। लक्ष्मी-नारायण देखो कितने मीठे हैं। उन जैसा मीठा बनना चाहिए। अच्छा-

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते। और कोई भी सतसंग में ऐसे कहते हैं क्या? यह हमारी बिल्कुल ही नई भाषा है, जिसको स्प्रीचुअल नॉलेज कहा जाता है। अच्छा।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- बाप द्वारा जो सुख-शान्ति-पवित्रता का वक्खर मिला है, वह सबको देना है। पहले विकारों का दान दे पवित्र बनना है फिर अविनाशी ज्ञान धन का दान करना है।

२- देवताओं जैसा मीठा बनना है। जो बापदादा से प्रतिज्ञा की है, उसे सदा याद रखना है और बाप की याद में रहकर विकर्म भी विनाश करने हैं।

वरदान:- कनफ्यूज़ होने के बजाए लूज़ कनेक्शन को ठीक करने वाले समस्या मुक्त भव

सभी समस्याओं का मूल कारण कनेक्शन लूज़ होना है। सिर्फ कनेक्शन को ठीक कर दो तो सर्व शक्तियां आपके आगे घूमेंगी। यदि कनेक्शन जोड़ने में एक दो मिनट लग भी जाते हैं तो हिम्मत हारकर कनफ्यूज़ न हो जाओ। निश्चय के फाउन्डेशन को हिलाओ नहीं। मैं बाबा का, बाबा मेरा—इस आधार से फाउण्डेशन को पक्का करो तो समस्या मुक्त बन जायेंगे।

स्लोगन:-

बीजरूप अवस्था में स्थित रहना - यही पुराने संस्कारों को परिवर्तन करने की विधि है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ओमशान्ति। जब बच्चे और बाप एक दो में मिलते हैं, एक दो में नजर मिलाते हैं, मिलेंगे तो जरूर नजर मिलेंगी ना। यह जीवात्माएं परमात्मा के साथ नजर मिलाती हैं। वह भी हीरो में बैठे हैं तब निहाल हो जाते हैं। उनके पहले तो बेहाल थे। बच्चे समझते भी हैं बाप जब आते हैं तो हम सारे विश्व के मालिक बनते हैं। ड्रामा के प्लैन अनुसार 5000 वर्ष पहले मिलन तुमको यह बाप मिला है और तुम अन्दर में समझते हो कि हम अभी विश्व के मालिक बनते हैं। अब इसको कहा जाता है निहाल। तुम हर 5000 वर्ष बाद निहाल होते हो बाप से नजर मिला कर के। फिर आधा कल्प बाद जब रावण राज्य होता है तो बेहाल बनना शुरू होता है। यह खेल है। यह अच्छी बुद्धि में बैठ जानी चाहिए। कोई नई बात नहीं। एक अक्षर से सब कुछ की बात है। यह खेल सुनाने में तो कितना समय लगता है। यह तो एक अक्षर की बात है। बाप मिला तो जरूर बेहद की बादशाही मिलेगी। निश्चय बुद्धि सारे विश्व पर विजय पहनते हैं। संशय बुद्धि तो विजय पा न सके। बाप जानते हैं भक्ति मार्ग में तुम ने बहुत टाईम वेस्ट किया है, पैसा खर्च कर वेस्ट गंवाया है। तुम विश्व के मालिक थे फिर कैसे बन गये। यह भी बुद्धि में याद करना पड़ता है। हमने 84 का चक्र लगाया। हमारा यह पार्ट हुआ है। फिर अभी बेहद का बाप मिला है। जो नजर से निहाल कर देते हैं और हमें विश्व का मालिक बनाते हैं। तो बाप को याद करना है और चक्र को फिराना है। इसमें मुंझने की बात ही नहीं। बाप मिला निश्चय हुआ तो जरूर बनने का भी निश्चय हुआ। बाप में ही संशय हुआ तो वर्सा मिलेगा ही कैसे। यह तो, बिल्कुल सहज समझने की है। और कोई भी शास्त्र आदि में सहज राजयोग की बात है नहीं। ऐसा कोई भी वेद-शास्त्र, ग्रन्थ आदि नहीं है। एक ही गीता सर्व शास्त्रमई .... गाई हुई है। उंच ते उंच श्रीभगवद्गीता कहा जाता है। बाकी सभी हैं रचना। बाप रचयिता तुमको जो सुनाते हैं उससे तुम प्रारब्ध पाते हो। फिर वहां तो कोई शास्त्र आदि होते ही नहीं। यह सभी शास्त्र हैं भक्ति मार्ग के। इन से फायदा कुछ भी नहीं। यह शास्त्र भी मनुष्य ही बनाते हैं। कोई भगवान नहीं बनाते। भगवान कब हाथ में शास्त्र आदि लेते हैं क्या। उनका गुरु टीचर कोई है क्या। यह है सुप्रीम बात का सागर। यह भी तुम अभी ही समझते हो। और कोई भी विद्वान आचार्य पंडित आदि कुछ नहीं जानते (यह भी वर्थ नाट अपेनी था। यह रथ जो है बहुत जन्मों के अन्त में अन्त वर्ष नाट अपेनी बन गया है। फिर इनको×××पहले नम्बर में जाना है। इसलिए इसमें ही प्रवेश करना है) यह ड्रामा चेंज नहीं हो सकता। (जैसे तैत्तिरीय बाप का वर्सा पाने में निश्चय है ना। बच्चा पैदा हुआ वैसे वर्से का हकदार हुआ। यह भी ऐसे ही है। यहां कुल-कुमारी दोनों ही वर्सा पा सकते हैं। एक अक्षर ने बाप को पक्का बनाया और वर्से का हकदार हुआ। इकट्ठे सभी भाई हो जाते हैं। बाप समझाते हैं बच्चे अपने को भाई2 समझो। नहीं तो बेहद के बाप से वर्सा कैसे लेंगे। सभी का कल्याण अर्थात सद्गति भी ही होती है) इसमें मुंझने अथवा कुछ भी पूछने की दरकार ही नहीं। डियर नो ईयोर, हीयर नो ईयोर .... (सब कुछ भी पढ़ें-लिखें को परन्तु यह बाप के आगे बोलो नहीं। बाप तो एक एक अक्षर में ही निहाल कर देते हैं। हे बच्चों ओमपंथ याद करो) बच्चे जानते हैं बाप तो सृष्टि को बदलने वाला है। नई सृष्टि रचने वाला है। (पुरानी दुनिया खत्म होती है। समझते होते भी फिर भी बाप को भूल जाते हैं। इसलिए बाप को भी यहां ठहरना पड़ता है। नहीं तो है बिल्कुल सहज। बाप का परिचय भी मिला, 84 का चक्र समझाया। यह बहुत है। मुझे तो चले जाना चाहिए। परन्तु जानता हूं तुम्हारे साथ माया का युद्ध है। इसलिए घड़ी2 भूल जाते हो। मैं चला जाऊं फिर घड़ी2 आऊं इसलिए जाता ही नहीं हूं। तुम्हारे बिगर जाऊंगा ही नहीं। बच्चों सच्ची तो सब से ना। बाप कहते हैं मीठे बच्चे मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। यह मैं निश्चय करता हूं। क्योंकि इसको योगाग्नि कहा जाता है। यह हठयोग आदि बिल्कुल ही अलग है। यह है शरीर के तन्दुरुस्ती के लिए। बाप ऐसे नहीं कहते कि धंधा धोरी आदि छोड़ दो। नहीं। यह भी मत करो। सिर्फ एक याद करो और सभी की याद भुलाये दो। मत अब पढ़ में हो जाओ-दीओ

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सभी कुछ करो। एक तो पवित्र रहो और देवी गुण धारण करो। [illegible] को देखा करो। देवताओं के आगे कब प्याज लहसुन आदि खाते हैं? बाप भी नहीं खाते हैं। यहां तो देखो अंडा हो या मांस हो। बाप जब पीते हैं 50 कप चाय के पीने वाले 50 सिगरेट पीने वाले भी होते हैं। एक आदत पड़ जाती है। बाप ने समझाया है रावण राज्य में ही तुम्हारा यह हाल हुआ है। पहले2 हम देवतायें सर्व गुण सम्पन्न .... थे। फिर नीचे गिरे हैं। यह तो समझना बहुत ही सहज है। कोई बहाना बताते हैं सिगरेट दिया पेट ऐसा होता है। यह तकलीफ होती है। कुछ भी नहीं होता। किसको भी कोई बिमारी आदि है तो वैद्य लोग भी दवाई देते हैं। बाप कहते हैं बच्चे यह अन्तिम जन्म है। थोड़ा-थोड़ा सभी यहां चक्कर लगा फिर निरोगी बन जायेंगे। यह भारत जब स्वर्ग था तो कितना हेल्दी वेल्दी पवित्र था। आयु तो ओ! आज से 5000 वर्ष पहले तुम्हारी कितना ऊंचा पद था। तुम ही विश्व के मालिक थे। कितने साहूकार थे। निश्चयबुद्धि हुआ, पुरुषार्थ भी करते हैं लेकिन हम अभी तमोप्रधान बने हैं। आधा कल्प अभी पास हो हम सतोप्रधान कैसे बने। बाप तो बहुत ही सहज उपाय बताते हैं। तुमको देवता भी जरूर बनना है। पुरुषार्थ भी जरूर करेंगे श्रीमत पर। अगर पुरुषार्थ नहीं करेंगे तो कम पद हो जायेगा। यह बाप बैठ समझाते हैं। तुम समझा भी सकते हो। पहले तुम अक्षर लिखते थे फिर यहां पार्ट बजाने आये। कल्प आयु कितना 84 जन्म लेकर तुम पार्ट बजाते हो। बुद्धि में आए जाए-जड़ी- मूल हो गया है। यह सारी विश्व की हिस्ट्री है। पहले2 नई विश्व अर्थात नई दुनिया थी। वह स्वर्ग राज्य चलते थे। बाप स्मृति दिलाते हैं। बच्चे तुम ही पहले2 तुम ने ही 84 जन्म लिये हैं। अभी फिर तुम से ही फिर हैं। कल्प2 मिलेंगे। अभी तुम बच्चों को अपना गंवाया हुआ राज्य मिलता है। भाया रावण ने तुम्हारा राज्य आधा के लिए छीन लिया है। अभी तुम उस पर जीत पहनो। उसमें कोई चर्चा आदि कुछ नहीं। रावण ने जब तुम से ही राज्य छीना तो भी कोई चर्चा या लड़ाई आदि थोड़े ही हुआ। कुछ भी नहीं। सिर्फ देवी गुणों वाले बदले आसुरी गुण वाले बन पड़े हो। वह है आसुरी सम्प्रदाय। तुम हो दैवी सम्प्रदाय। शास्त्रों में फिर देवताओं और असुरों की लड़ाई दिखा दी है। यह बात तो है नहीं। तुम्हारा लड़ाई से तो आधा आधा। बाप कहते हैं मैं इतना सहज बताता हूं फिर भी तुम भूल जाते हो। इस पढ़ाई से तुम मनुष्य से देवता डबल सिरताज बन जाते हो। याद से तुम्हारे पास लाईट आ जाती है और दृष्टि चक्र को जानने से तुम डबल सिरताज बन जाते हो। बाकी बाप कोई आशीर्वाद आदि नहीं देते। पढ़ाई से पद पाना है। ऐसा नहीं कल्प बाद आयुष्यवान भव। यह पढ़ाई है। इसमें कुछ भी चर्चा नहीं। बहुत गरीब आते हैं। वह क्या चर्चा करते हैं। बहुत गरीब साहूकारों से भी ऊंच चले जाते हैं। उनके पास कुछ भी नहीं है तो सर्विस में सभी कुछ मिल जाता है। कोई यह बाप बैठ समझाते हैं। बाप कहते हैं बच्चे बात तो एक ही है अल्फ की। भिखारी से ले अर्थात दरिद्र का दुःख मिटकर आधा ही है। यह तो कोई भी समझ जाते हैं कि विश्व की बादशाही का सुख मिलना बहुत है। फिर भी तुम भूल जाते हो। तो क्या हालत हो जाती है। कोई न कोई विकारों की प्रवेश हो जाते हैं। सब से आसुरी तोहफा है काम महाशत्रु। बाबा को लिखते हैं हमने हार खा ली। बाबा कहते हैं मैं आया हूं तुमको गोरा सुन्दर बनाने तुम फिर श्याम बन काला मुंह करते हो। काला मुंह करने से तुम्हारी पाई पैसे की कुई कमाई चट हो जाती है। फिर से पुरुषार्थ करना पड़ेगा। मैं आया हूं पतित से पावन बनाने। बच्चे बादशाह पैसे फकीर की कहानी है ना। नम्बरवन हुए होते हैं। भाया भी बड़ा हुआ है। नम्बरवन बच्चे बादशाह के काम क्रोध के दो दुश्मन क्रोध से खुद भी जलते हैं। दूसरों को भी जलाते हैं। काम विकार बड़ा कड़ा है। सुदामा की कहानी है। सर्प को डोरी समझ कर ऊपर गया। चिकार में गिरा। फिर उनको समझ में आया हम कितना पापकर्म कर पड़ा। फिर उसने अपनी आंखें ही निकाल दी। बाप कहते हैं आंखें बड़ी धोखा देने वाली है। इसलिए तुम्हें दो आंखें निकाल आत्मा तीसरा नेत्र दे कि त्रिनेत्री कहावा हो। कहने को आत्मा सब हैं। हम सभी भाई2 हैं। फिर शरीर का भान रहेगा नहीं। यह है बहुत बड़ी भूल। ऐसे पुरुषार्थ बहुत अच्छा चाहिए।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कोई दूर दुनिया नहीं में रहते तो भी फूल में तो आ सकते हैं ना। फूल में कोई2 को स्कालरशिप भी मिलती है। जो अच्छे-अच्छे होते हैं उनको इनाम मिलेगा। यह तो0नाए है। इनको स्कालरशिप मिली है ना। बाबा ने समझाया है बच्चे हैं। चार जोड़ा, बाकी बीच में है हीरा। उनको गिना जाता नहीं। आठ युगल हैं निकले फिर बहुते हैं, बाद में पछतो। कोई भी साधु संत इस बात का राज नहीं जानते कि यह कौन से प्रवृत्ति मार्ग के जो तो युगल बनते हैं। जो अच्छा पढ़ते हैं उनको स्कालरशिप मिलती है। बाबा के प्रजा। सभी को यही लेना देना है बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो। तुम पेगम्बर पैगम्बर हो ना। सभी को यही पैगाम देना है कोई न पैगम्बर है न मैसेन्जर है न गुरु ही है। यह लोग नानक को, क्राइस्ट आदि को गुरु समझ लेते हैं। वास्तव में उनको बाप नहीं कहा जाता। बाप टीचर तो एक ही है। बाप ही पुरानी दुनिया में आते हैं नई दुनिया स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश कराने। यह तो बिल्कुल ही क्लीयर है। आते ही तप के नई दुनिया बनती है। तो त्रिमूर्ति का चित्र बनाया है परन्तु उसमें बाप को दिखाया नहीं है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर दिखाने को दिखाए हैं। टीचर है नहीं। ब्रह्मा विष्णु शंकर भी रचयिता तो जरूर2 ना। अभी तुम बच्चों ने समझा है बाप है रचयिता। ब्रह्मा द्वारा स्थापना। उनको भगवान नहीं कहा जाता। ब्रह्मा का अव्यक्त देशान्त होता है। बाप कहते हैं मैं इनके बहुत जन्मों के अन्त के जन्म वानप्रस्थ अवस्था में, तो क्या वह भगवान हुआ? देवता हुआ? कुछ भी नहीं। यह तो पतित है। तुम कुलटी भी हो पतित दुनिया में। तो बाप इस शरीर में ही आकर पतित से तुमको पावन बनाता है। तो जरूर पतित शरीर में ही आयेंगे ना। बाबा भी ट्रस्टी बन करके। तभी तो कहते हैं यह कोई भी इनमें घोड़े ही हैं। जैसे शिव का चित्र है रावण का भी चित्र है। जरूर रावण दुःख देने वाला है। शिव तो सुख देने वाला है उनको तो कोई भी नहीं देंगे। यह है सुखधाम, रावण है दुःखधाम। रावण राज्य में सभी सिविल वेलफेयर में हैं। बाप कहते हैं अभी पवित्र बनो। मुझे याद करते रहो तो तुम मेरे पास पहुंच जायेंगे। काया याद में ही बहुत विघ्न पड़ते हैं। गुप्तकोतो का खेल भी इस पर है। तुम हर एक आत्मा का रूप भी है। बहुत सूक्ष्म है। परन्तु है जरूर। यह भी समझते हो परन्तु समय में नहीं आयेगा। अभ्यास पक्का भी बहुत मुश्किल है। उनको जाना जरूर है। मैं देखता हूं। इन आंखों से देखा नहीं जाता है। बहुतों को देखा है। कैसे उनको जाना है। अन्त मति सो गति। मैं भी जाना चाहता हूं। मन दिव्य दृष्टि से देखा जा सकता है परन्तु उससे कुछ भी कर नहीं सकेंगे। छोटी सी इन्डोगजब पिसतोल प्रिंट करके स्टार्स तो बहुत ही दूर होते हैं। दूर से छोटी दिखाई देते हैं परन्तु उसका ऊपर है बहुत बड़ा है तब तो वह पलट सकते हैं। परन्तु कुछ भी हो नहीं सकता। इसको कहा जाता है भोलेनाथ समझ आया कि तो फिर विनाश हो जाता है। यह है झूठ एम्पायर। है कुछ भी नहीं। उसमें मेहनत करते रहते हैं बाप ने बताया है साइंस के हथियार बन्दूकों, एरोप्लेन या टैंक आदि के भी काम नहीं। यह कहते हैं हम बैठे हम ऐसे बाम छोड़ेंगे तो झट खत्म हो जायेंगे। इसमें भी मेहनत चाहिए ना। मेहनत करते हैं। चाहते हैं विश्व में शान्ति हो। तो उसके लिए मनुष्य भी थोड़े चाहिए ना। नई दुनिया में होते ही थोड़े हैं। पुरानी दुनिया बदलनी ही है। बाप भी बाबा में सुनाते हैं। इसमें हर्षित होना है। गुरु के तुम बच्चे हो। फिर तुम योग में अपने को बाप समझते होए नहीं। जब नजदीक समय आयेगा तो फिर तुम पुरुषार्थ करने लग पड़ोगे। स्कूल में जब इम्तहान के दिन होते हैं तो बच्चे प्रदोर्ड में कहीं ही जोर से लग जाते हैं। सारा दिन मेहनत करते हैं। यह भी एक ही इम्तहान है। योगा बैलेंस तोड़ा आप आयेगा तो फिर नम्बर वाइज पुरुषार्थ करने लग पड़ेंगे। वैराग्य आयेगा। सबको यह निश्चय होगा कि बाप बैठ थोड़े ही जायेंगे। फिर तुम जोर से पुरुषार्थ करने लगेंगे। परन्तु फिर ऐसे समय बैठ थोड़े ही जाना है। पुरुषार्थ तो अभीसे ही करना है। तो भी दिव्यदृष्टि से देखा है तो पुरानी दुनिया को विनाश नई दुनिया की स्थापना वह भी फिर कैसे होती है। बाप समझाते हैं बच्चे यह दुनिया कभी बदलती है। इसीलिए ही यह बम्ब आदि बन रहे हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

रसोड़ा ही यह सब आँख बन रहे हैं। यह कोई नई बात नहीं। हर 5000 वर्ष बाद यह चक्र चलता है। स्क्रिप्ट में जरा भी फर्क नहीं। न एक बढ़ेगा न कम होगा। इसको कहा जाता है बना बनाया ड्रामा। कब बना, यह नहीं कह सकते। अनादि बना बनाया ड्रामा है जो चलता ही रहता है। इसका न आदि है न अन्त है। यह तो अनादि है ही है। तो मनुष्य विमुक्ति को कैसे पा सकते। कोई किसका भी हो नहीं सकता। यह है आसुरी-राज्य। मूर्खों का राजधानी। अभी तुम बच्चे समझने से हम सभी आत्मायें नंगे आये थे। यहां आकर हम शरीर धारण कर पार्ट बजाती हैं। सतोप्रधान, सतो, रजो, तमोप्रधान में आते हैं ना। फिर यह दुनिया तमोप्रधान से सतोप्रधान बननी है। फिर वही चक्र रिपीट होना है। इसमें कोई गफलत की बात ही नहीं। दुनिया बोलती है इनका बुध नहीं चलता है। ओ सिंफ शिव बाबा को याद करो, वह हम आत्माओं का बाप है। मुझ से कुछ भी बोलो नहीं। चुप रहो। बाप खुद कहते हैं चुप हो जाओ। एकदम गूंगा बना देते हैं। उनको गूंगे की बिठाई कहा जाता है। विश्व का राज तुमको मिलता है। कम बात है क्या। तुम्हारे अन्दर में सारा चक्र फिरता है। 84 जन्म कैसे लेते हैं। गूंगे की बिठाई क्या है यह भी कोई समझते थोड़े ही हैं। बाप कहते हैं विश्व की बादशाही है गूंगे की बिठाई। यहां तो आत्मायें हैं। गूंगे रहते हैं। बाप कितना अच्छी रीत बैठ समझाते हैं। फिर भी बच्चे गफलत करते रहते हैं। गृहस्थ व्यवहार में रहते भी तुम याद कर सकते हो। उस पर को भी जैसे सिंधी बुलाता है। जो भी आये उनको पैगाम दो। ऐसे भी बहुत हैं खुद बान्धेली हैं दूसरों को ज्ञान दे आप समान बनाती हैं। ऐसे मत समझो बान्धेली सर्विस नहीं करता है। वह भी सर्विस करती है। सिंफ एक्टली हैं। विश्व की बादशाही देने वाले बाप से मिलें। अबलाओं पर अत्याचार और कहां भी कोई सतसंग आदि नहीं होगी। ढेर के ढेर सतसंगी में जाते हैं। कोई भी कहां आने की मना नहीं करते हैं। गांधी के पास कितने जाते होंगे। समझते थे बापू जी रामराज्य स्थापन कर रहे हैं। पिक्चर भी दिखाया। कब यह रामराज्य हुआ था। कहते हैं राम राज्य तो क्या और हो जाती है रावण राज्य हुआ है। कितने भूख हड़ताल आदि करते जेल में जाते रहते हैं। कहते हैं गऊ हत्या न करो। अभी गवर्मेन्ट को इन से कमाई कोई कम थोड़े ही है। कितने जूते आदि बनते हैं। गवर्मेन्ट समझेगी इतनी कमाई आमदनी इकमी बन्द हो जायेंगी। और फिर शहर2 में गऊशाला खोलनी पड़े। खिलाना पड़े। उन्हों को तुम समझा सकते हो। तुम लिख भी सकते हो बाप कहते हैं पहले तो सभी को इस कोख से बचाना है। काम कटारी चलाना यह कोख फाड़ना बन्द करो। काम कटारी चलाकर बन्द दो को खत्म करते हैं। सतयुग में यह कोख होता नहीं। पहले तो यह बन्द करो। सन्यासी कहते हैं स्त्री सर्पनी है। तो पुरुष भी सर्प है ना। अपना नाम न ले स्त्री का नाम लेते हैं। कितनी इनसल्ट करते हैं। ऐसे2 को फिर गुरु करना कितनी मूर्खता है। पाईयां जैसे कि पांव को सेवा करती है। वैसे सन्यासियों के भी पांव को उसको चरणामृत समझ कर पीती हैं। कितना अधर्म हो गया है। इसलिए भगवान कहते हैं मैं इन सबका भी उद्धार करता हूं। तुम फिर किसको अपना गुरु बनाते हो। क्या भगवान झूठ बोलते हैं। ऐसे2 तुम फिलॉसफर जाकर समझाओ। बात करने की हिम्मत चाहिए। इसलिए रोणी शक्ति कहा जाता है। निर्भय होना चाहिए। बाप निर्भय है ना। तुमको भी बनाते हैं। डरो मत। क्या होगे, कुछ तो तुमको बतानी ही है ना। इतहास बहुत अच्छा है। रूहानी बनना है।

कम बात है क्या। सिंफ याद में ही माया विघ्न डालती है। इस पर ही लड़ाई चलती है। कोई सेन्टर भी खोलते हैं तो कितने आत्माओं का कल्याण होता है। तो इसका भी स्थान बहुत मिल जाता है। पैसा तो सभी सेन्टरों में मिल जायेगा। हिम्मते बच्चे मदते तो बाप है ही है। कितने ढेर ऐसे2 आगे मददगार भी हैं। मत बान्धेलियां हैं, पर मैं चित्र रख दो सर्विस करते रहो। ऐसे हैं तो सफल करना चाहिए। नहीं तो सभी सेन्टरों में मिल जायेगा। तुम न कर सको तो बाप बैठा है। हुन्डी बाप भरने वाला है। अच्छा मीठे2 लकीलपे बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार गुड मार्निंग और नमस्ते।

:: *:: **

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

25-2-2000 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – माया दुश्मन तुम्हारे सामने है इसलिए अपनी बहुत-बहुत सम्भाल करनी है, अगर चलते-चलते माया में फँस गये तो अपनी तकदीर को लकीर लगा देंगे"

प्रश्नः तुम राजयोगी बच्चों का मुख्य कर्तव्य क्या है?

उत्तरः पढ़ना और पढ़ाना, यही तुम्हारा मुख्य कर्तव्य है। तुम हो ईश्वरीय मत पर। तुम्हें कोई जंगल में नहीं जाना है। घर गृहस्थ में रहते शान्ति में बैठ बाप को याद करना है। अल्फ और बे, इन्हीं दो शब्दों में तुम्हारी सारी पढ़ाई आ जाती है।

a

ओम् शान्ति। बाप भी ब्रह्मा द्वारा कह सकते हैं कि बच्चों गुडमॉर्निंग। परन्तु फिर बच्चों को भी रेसपान्ड देना पड़े। यहाँ है ही बाप और बच्चों का कनेक्शन। नये जो हैं जब तक पक्के हो जाएं, कुछ न कुछ पूछते रहेंगे। यह तो पढ़ाई है, भगवानुवाच भी लिखा है। भगवान है निराकार। यह बाबा अच्छी रीति पक्का कराते हैं, किसको भी समझाने के लिए क्योंकि इस तरफ है माया का जोर। यहाँ तो वह बात नहीं है। बाप तो समझते हैं जिन्होंने कल्प पहले वर्सा लिया है वह आपेही आ जायेंगे। ऐसे नहीं कि फलाना चला न जाए, इनको पकड़ें। चला जाए तो चला जाए। यहाँ तो जीते जी मरने की बात है। बाप एडाप्ट करते हैं। एडाप्ट किया ही जाता है कुछ वर्सा देने के लिए। बच्चे माँ-बाप के पास आते ही हैं वर्से की लालच पर। साहूकार का बच्चा कभी गरीब के पास एडाप्ट होगा क्या! इतना धन दौलत आदि सब छोड़ कैसे जायेंगे। एडाप्ट करते हैं साहूकार। अभी तुम जानते हो बाबा हमको स्वर्ग की बादशाही देते हैं। क्यों न उनका बनेंगे। हर एक बात में लालच तो रहती है। जितना बहुत पढ़ेंगे उतनी बड़ी लालच होगी। तुम भी जानते हो बाप ने हमको एडाप्ट किया है बेहद का वर्सा देने। बाप भी कहते हैं तुम सबको हम फिर से 5 हज़ार वर्ष पहले मुआफ़िक एडाप्ट करते हैं। तुम भी कहते हो बाबा हम आपके हैं। 5 हज़ार वर्ष पहले भी आपके बने थे। तुम प्रैक्टिकल में कितने ब्रह्माकुमार-कुमारियां हो। प्रजापिता भी तो नामीग्रामी है। जब तक शूद्र से ब्राह्मण न बनें तो देवता बन न सकें। तुम बच्चों की बुद्धि में अब यह चक्र फिरता रहता है—हम शूद्र थे, अभी ब्राह्मण बने हैं फिर देवता बनना है। सतयुग में हम राज्य करेंगे। तो इस पुरानी दुनिया का विनाश जरूर होना है। पूरा निश्चय नहीं बैठता है तो फिर चले जाते हैं। कई कच्चे हैं जो गिर जाते हैं, यह भी ड्रामा में नूँध है। माया दुश्मन सामने खड़ी है, तो वह अपनी तरफ खींच लेती है। बाप घड़ी-घड़ी पक्का कराते हैं, माया में फँस नहीं पड़ना, नहीं तो अपनी तकदीर को लकीर लगा देंगे। बाप ही पूछ सकते हैं कि आगे कब मिले हो? और कोई को पूछने का अक्ल आयेगा ही नहीं। बाप कहते हैं मुझे भी फिर से गीता सुनाने आना पड़े। आकर रावण की जेल से छुड़ाना पड़े। बेहद का बाप बेहद की बात समझाते हैं। अभी रावण का राज्य है, पतित राज्य है जो आधाकल्प से शुरू हुआ है। रावण को 10 शीश दिखाते हैं, विष्णु को 4 भुजा दिखाते हैं। ऐसे कोई मनुष्य होता नहीं। यह तो प्रवृत्ति मार्ग दिखाया जाता है। यह है एम आब्जेक्ट,

b

c

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

विष्णु द्वारा पालना। विष्णुपुरी को कृष्णपुरी भी कहते हैं। कृष्ण को तो २ बाहें ही दिखायेंगे ना। मनुष्य तो कुछ भी समझते नहीं हैं। बाप हर एक बात समझाते हैं। वह सब है
d भक्ति मार्ग। अभी तुमको ज्ञान है, तुम्हारी एम ऑब्जेक्ट ही है नर से नारायण बनने की। यह गीता पाठशाला है ही जीवनमुक्ति प्राप्त करने के लिए। ब्राह्मण तो जरूर चाहिए।
e यह है रूद्र ज्ञान यज्ञ। शिव को रूद्र भी कहते हैं। अब बाप पूछते हैं ज्ञान यज्ञ कृष्ण का है या शिव का है? शिव परमात्मा ही कहते हैं, शंकर को देवता कहते हैं। उन्होंने फिर शिव और शंकर को इकट्ठा कर दिया है। अब बाप कहते हैं हमने इनमें प्रवेश किया है। तुम बच्चे कहते हो बापदादा। वह कहते हैं शिवशंकर। ज्ञान सागर तो है ही एक।

अभी तुम जानते हो ब्रह्मा सो विष्णु बनते हैं ज्ञान से। चित्र भी बरोबर बनाते हैं। विष्णु की नाभी से ब्रह्मा निकला। इसका अर्थ भी कोई समझ नहीं सकते। ब्रह्मा को शास्त्र हाथ में दिये हैं। अभी शास्त्रों का सार बाप बैठ सुनाते हैं या ब्रह्मा? यह भी मास्टर
f ज्ञान सागर बनते हैं। बाकी चित्र इतने ढेर बनाये हैं, वह कोई यथार्थ हैं नहीं। वह है सब भक्ति मार्ग के। मनुष्य कोई 8-10 भुजा वाले होते नहीं। यह तो सिर्फ प्रवृत्ति मार्ग दिखाया है। रावण का भी अर्थ बताया है—आधाकल्प है रावण राज्य, रात। आधाकल्प है रामराज्य, दिन। बाप हर एक बात समझाते हैं। तुम सब एक बाप के बच्चे हो। बाप ब्रह्मा द्वारा विष्णुपुरी की स्थापना करते हैं और तुमको राजयोग सिखाते हैं। जरूर संगम पर ही राजयोग सिखायेंगे। द्वापर में गीता सुनाई, यह तो रॉंग हो जाता है। बाप सच
g बतलाते हैं। बहुतों को ब्रह्मा का, कृष्ण का साक्षात्कार होता है। ब्रह्मा का सफेद पोश ही देखते हैं। शिवबाबा तो है बिन्दी। बिन्दी का साक्षात्कार हो तो कुछ समझ न सकें। तुम कहते हो हम आत्मा हैं, अब आत्मा को किसने देखा है, कोई ने नहीं। वह तो बिन्दी है। समझ सकते हैं ना। जो जिस भावना से जिसकी पूजा करते हैं, उनको वही साक्षात्कार होगा। दूसरा अगर रूप देखें तो मूँझ पड़ें। हनूमान की पूजा करेगा तो उनको वही दिखाई पड़ेगा। गणेश के पुजारी को वही दिखाई पड़ेगा। बाप कहते हैं हमने तुमको इतना धनवान बनाया, हीरे जवाहरों के महल थे, तुमको अनगिनत धन था, तुमने अभी वह सब कहाँ गँवाया? अभी तुम कंगाल बन गये हो, भीख माँग रहे हो। बाप तो कह सकते हैं ना। अभी तुम बच्चे समझते हो बाप आये हैं, हम फिर से विश्व के मालिक बनते हैं। यह ड्रामा अनादि बना हुआ है। हरेक ड्रामा में अपना पार्ट बजा रहे हैं। कोई एक शरीर छोड़ जाकर दूसरा लेते हैं, इसमें रोने की क्या बात है। सतयुग में कभी रोते नहीं। अभी तुम मोहजीत बन रहे हो। मोहजीत राजायें यह लक्ष्मी-नारायण आदि हैं।
h वहाँ मोह होता नहीं। बाप अनेक प्रकार की बातें समझाते रहते हैं। बाप है निराकार। मनुष्य तो उसे नाम-रूप से न्यारा कह देते हैं। लेकिन नाम-रूप से न्यारी कोई चीज थोडेही होती है। हे भगवान, ओ गॉड फादर कहते हैं ना। तो नाम-रूप है ना। लिंग को शिव परमात्मा, शिवबाबा भी कहते हैं। बाबा तो है ना बरोबर। बाबा के जरूर बच्चे भी होंगे। निराकार को निराकार आत्मा ही बाबा कहती है। मन्दिर में जायेंगे तो उनको कहेंगे

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

शिवबाबा फिर घर में आकर बाप को भी कहते हैं बाबा। अर्थ तो समझते नहीं, हम उनको शिवबाबा क्यों कहते हैं! बाप बड़े ते बड़ी पढ़ाई दो अक्षर में पढ़ाते हैं—अलफ और बे। अलफ को याद करो तो बे-बादशाही तुम्हारी है। यह बड़ा भारी इम्तहान है। मनुष्य बड़ा इम्तहान पास करते हैं तो पहले वाली पढ़ाई कोई याद थोड़ेही रहती है। पढ़ते-पढ़ते आखरीन तन्त (सार) बुद्धि में आ जाता है। यह भी ऐसे है। तुम पढ़ते आये हो। अन्त में फिर बाप कहते हैं मन्मनाभव, तो देह का अभिमान टूट जायेगा। यह मन्मनाभव की आदत पड़ी होगी तो पिछाड़ी में भी बाप और वर्सा याद रहेगा। मुख्य है ही यह, कितना सहज है। उस पढ़ाई में भी अभी तो पता नहीं क्या-क्या पढ़ते हैं। जैसे राजा वैसा वह अपनी रसम चलाते हैं। आगे मन, सेर, पाव का हिसाब चलता था। अभी तो किलो आदि क्या-क्या निकल पड़ा है। कितने अलग-अलग प्रान्त हो गये हैं। देहली में जो चीज एक रूपया सेर, बाम्बे में मिलेगी दो रूपया, क्योंकि प्रान्त अलग-अलग हैं। हरेक समझते हैं हम अपने प्रान्त को भूख थोड़ेही मारेंगे। कितने झगड़े आदि होते हैं, कितना रोला है।

भारत कितना सालवेन्ट था फिर 84 का चक्र लगाते इन्सालवेन्ट बन पड़े हैं। कहा जाता है हीरे जैसा जन्म अमोलक कौड़ी बदले खोया रे.....बाप कहते हैं तुम कौड़ियों के पिछाड़ी क्यों मरते हो। अब तो बाप से वर्सा लो, पावन बनो। बुलाते भी हो—हे पतित-पावन आओ, पावन बनाओ। तो इससे सिद्ध है पावन थे, अब नहीं हैं। अभी है ही कलियुग। बाप कहते हैं मैं पावन दुनिया बनाऊंगा तो पतित दुनिया का जरूर विनाश होगा। इसलिए ही यह महाभारत लड़ाई है जो इस रूद्र ज्ञान यज्ञ से प्रज्वलित हुई है। ड्रामा में तो यह विनाश होने की भी नूँध है। पहले-पहले तो बाबा को साक्षात्कार हुआ। देखो इतनी बड़ी राजाई मिलती है तो बहुत खुशी होने लगी, फिर विनाश का साक्षात्कार भी कराया। मन्मनाभव, मध्याजीभव। यह गीता के अक्षर हैं। कोई-कोई अक्षर गीता के ठीक हैं। बाप भी कहते हैं तुमको यह ज्ञान सुनाता हूँ, यह फिर प्रायः लोप हो जाता है। कोई को भी पता नहीं है कि लक्ष्मी-नारायण का राज्य था तो और कोई धर्म नहीं था। उस समय जनसंख्या कितनी थोड़ी होगी, अब कितनी है। तो यह चेन्ज होनी चाहिए। जरूर विनाश भी चाहिए। महाभारत लड़ाई भी है। और कोई शास्त्र में इनका वर्णन नहीं है, जरूर भगवान भी होगा। कृष्ण तो हो न सके। तब किसने बनाया? शिव जयन्ती मनाते हैं। शिवबाबा ने क्या आकर किया? वह भी नहीं जानते हैं। अब बाप समझाते हैं, गीता से कृष्ण की आत्मा को राजाई मिली। मात-पिता कहेंगे गीता को, जिससे तुम फिर देवता बनते हो। इसलिए चित्र में भी दिखाया है—कृष्ण ने गीता नहीं सुनाई। कृष्ण गीता के ज्ञान से राजयोग सीख यह बना, कल फिर कृष्ण होगा। उन्होंने फिर शिवबाबा के बदले कृष्ण का नाम डाल दिया है। तो बाप समझाते हैं, यह तो अपने अन्दर पक्का निश्चय कर लो, कोई उल्टी-सुल्टी बात सुनाकर तुम्हें गिरा न दे। बहुत बातें पूछते हैं—विकार बिगर सृष्टि कैसे चलेगी? यह कैसे होगा? अरे, तुम खुद कहते हो—वह वाइसलेस दुनिया थी। सम्पूर्ण निर्विकारी कहते हो ना फिर विकार की बात कैसे हो सकती है? अब तुम

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जानते हो बेहद के बाप से बेहद की बादशाही मिलती है, तो ऐसे बाप को क्यों नहीं याद करेंगे? यह है ही पतित दुनिया। कुम्भ के मेले पर कितने लाखों जाते हैं। अब कहते हैं वहाँ एक नदी गुप्त है। अब नदी गुप्त हो सकती है क्या? यहाँ भी गऊमुख बनाया है। कहते हैं गंगा यहाँ आती है। अरे, गंगा अपना रास्ता लेकर समुद्र में जायेगी कि यहाँ तुम्हारे पास पहाड़ पर आयेगी। भक्ति मार्ग में कितने धक्के हैं। ज्ञान, भक्ति फिर है वैराग्य। एक है हद का वैराग्य, दूसरा है बेहद का। सन्यासी घरबार छोड़ जंगल में रहते हैं, यहाँ तो वह बात नहीं। तुम बुद्धि से सारी पुरानी दुनिया का सन्यास करते हो। तुम राजयोगी बच्चों का मुख्य कर्तव्य है पढ़ना और पढ़ाना। अब राजयोग कोई जंगल में थोड़ेही सिखाया जाता है। यह स्कूल है। ब्रांचेज निकलती जाती हैं। तुम बच्चे राजयोग सीख रहे हो। शिवबाबा से पढ़े हुए ब्राह्मण-ब्राह्मणियां सिखाते हैं। एक शिवबाबा थोड़ेही सबको बैठ सिखायेगा। तो यह हुई पाण्डव गवर्मेन्ट। तुम हो ईश्वरीय मत पर। यहाँ तुम कितना शान्ति में बैठे हो, बाहर तो अनेक हंगामें हैं। बाप कहते हैं 5 विकारों का दान दो तो ग्रहण छूट जायेगा। मेरे बनो तो मैं तुम्हारी सब कामनायें पूरी कर दूँगा। तुम बच्चे जानते हो अभी हम सुखधाम में जाते हैं, दु:खधाम को आग लगनी है। बच्चों ने विनाश का साक्षात्कार भी किया है। अब टाइम बहुत थोड़ा है इसलिए याद की यात्रा में लग जायेंगे तो विकर्म विनाश होंगे और ऊंच पद पायेंगे। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. बाप के वर्से का पूरा अधिकार लेने के लिए जीते जी मरना है। एडाप्ट हो जाना है। कभी भी अपनी ऊंची तकदीर को लकीर नहीं लगानी है।

२. कोई भी उल्टी-सुल्टी बात सुनकर संशय में नहीं आना है। ज़रा भी निश्चय न हिले। इस दु:खधाम को आग लगने वाली है इसलिए इससे अपना बुद्धियोग निकाल लेना है।

वरदान:- सम्पूर्णता की रोशनी द्वारा अज्ञान का पर्दा हटाने वाली पुरुषोत्तम आत्मा भव

आप पुरूषोत्तम आत्मायें विश्व को सुख-शान्ति की सांस देने के निमित्त हो, आप धरती के सितारे इस विश्व को हलचल से बचाए सुखी संसार, स्वर्णिम संसार बनाने वाले हो। इसलिए ऐसे सर्च लाइट बनो जो आपके सम्पूर्णता की रोशनी से अज्ञान का पर्दा हट जाए। अभी प्रत्यक्षता का समय समीप आ रहा है इसलिए अन्तर्मुखी बन गुह्य अनुभवों के रत्नों से स्वयं को भरपूर बनाओ।

स्लोगन:-

जब गुणों वा विशेषताओं का अभिमान न हो तब कहेंगे ज्ञानी तू आत्मा।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

17-7-98 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – पावन बनने के लिए अपने स्वधर्म में रहो और अशरीरी बन एक बाप को याद करो"

प्रश्नः- किस विधि से नये स्टूडेन्ट्स पर ज्ञान का रंग लग सकता है?

उत्तरः- उन्हें पहले-पहले सात रोज़ की भट्ठी में बिठाओ। कायदा है--जब कोई भी आता है तो उनसे फार्म भराओ। पहले सात रोज़ भट्ठी में पड़े तब पूरा रंग लगे। तुम भ्रमरियां ज्ञान की भूँ-भूँ कर आप समान बनाती हो। तुम जानती हो--अभी देवता धर्म की सैपलिंग लग रही है। जो इस घराने की आत्मायें होंगी वह महा-रोगी से निरोगी बनने के पुरुषार्थ में लग जायेंगी।

गीतः- महफिल में जल उठी शमा.....

ओम् शान्ति। बच्चों को ओम् शान्ति का अर्थ तो समझाया हुआ है। ओम् अर्थात् अहम्। अहम् कौन? आत्मा और मेरा शरीर कर्मइन्द्रियाँ। आत्मा का स्वधर्म है ही साइलेन्स। आत्मा किसकी सन्तान है? कहेंगे परमपिता परमात्मा की। वह भी साइलेन्स है। आत्मायें साइलेन्स वर्ल्ड शान्तिधाम में रहती हैं। फिर पार्ट बजाने टॉकी वर्ल्ड में आती हैं। अब बेहद का बाप कहते हैं--हे बच्चे, अपने स्वधर्म में रहो। अशरीरी होकर बैठो। बाप को याद करो। उस बाप को शमा भी कहते हैं। अब यह है महफिल पतित मनुष्यों की। इस समय यह पतित दुनिया है। मनुष्य मात्र पतित हैं। समझाया गया है--सतयुग में भारत पावन था। गृहस्थ धर्म कहा जाता है, जिसको सुखधाम कहते हैं। भारत पावन था, अभी पतित है। दुःखधाम है। यह चक्र फिरता रहता है। अभी यह है कल्याणकारी संगमयुग, जबकि पतित मनुष्य-सृष्टि पर बाप को आना पड़ता है -- पतित मनुष्य सृष्टि को पावन बनाने। पुरानी दुनिया से नई दुनिया बाप रचता ही बनाते हैं, जिसको परमपिता परमात्मा कहा जाता
a है। सब भक्तों का भगवान् एक है। तो बाप कहते हैं -- मुझे भी पतित दुनिया, पतित शरीर में आना पड़ता है। परमधाम से एक ही बार आता हूँ - भारत को पावन देवी राज्य बनाने। इस वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी को कोई नहीं जानते क्योंकि सब नास्तिक हैं। एक भी आस्तिक मनुष्य नहीं। बाप को न जानने के कारण निधन के बन पड़े हैं। आपस में लड़ते-झगड़ते रहते हैं। घर-घर में कितनी अशान्ति है! सतयुग आदि में वन ऑलमाइटी अथॉर्टी देवी-देवता राज्य था, सुखधाम था फिर दुःखधाम कैसे बना -- यह कोई नहीं जानते।

ज्ञान है ब्रह्मा का दिन। भक्ति है ब्रह्मा की रात। सन्यासी लोग कहते हैं -- ज्ञान, भक्ति और वैराग्य। अब वह तो घरबार छोड़ जंगलों में चले जाते हैं। वैराग्य आ जाता है। वह है रजोगुणी सन्यास, यह है सतोप्रधान सन्यास। इस पाप आत्माओं की दुनिया में एक भी पुण्य आत्मा नहीं। तो यह खेल सारा भारत पर है। भारत सोने की चिड़िया था। भारत में सोना और हीरे बहुत अथाह थे। सोने के महल बनते थे और हीरे-जवाहरों की जड़त होती थी। अभी तो भारत कौड़ी जैसा बना हुआ है। फिर उनको हीरे जैसा बाप ही बनाते हैं। तुम जानते हो -- हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं। अभी वह बाप पतितों की महफिल में आये हैं। मनुष्य समझते हैं -- पतित-पावनी गंगा है, स्नान करने जाते हैं। फिर भी कोई पाप आत्मा से पुण्य आत्मा नहीं बनते। फिर साल
b बाई साल जाकर गंगा स्नान करते हैं। इस समय कोई भी पावन नहीं है। जब तक पावन बनाने वाला बाप न आये तब तक पावन बन न सकें। पावन बनाते हैं गीता का भगवान्। वह भगवान्

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

तो सभी आत्माओं का बाप एक ही है। ऐसे नहीं कि सब भक्त भगवान् हैं वा सर्वव्यापी भगवान् है। यह तो भगवान् की ग्लानी करते हैं इसलिए यदा यदाहि..... यह भारत के लिए ही गाया हुआ है। जो बाप आकर भारत को हीरे जैसा बनाते हैं उनकी कितनी निंदा करते हैं। ऋषि-मुनि फिर कहते आये – रचता और रचना बेअन्त है अथवा नेती-नेती है, हम नहीं जानते। और आजकल के मनुष्य फिर कह देते सर्वव्यापी है। बाप कहते हैं – ऐसे जब बन जाते हैं तब मैं आकर पाप आत्मा से पुण्य आत्मा, देवता बनाता हूँ। सबका सद्गति दाता है ही एक। वही आकर पतित से पावन बनाए लायक बनाते हैं। बच्चों को वर्सा देते हैं। लौकिक बाप से मिला है अल्पकाल का वर्सा। बेहद का बाप कहते हैं – मैं तुमको 21 जन्मों लिए वर्सा देता हूँ पवित्रता, शान्ति
c और सुख का, जो लौकिक बाप दे न सके। वह बाप भी है, शिक्षक भी है, ज्ञान का सागर भी है। बाप की महिमा बड़ी ऊंच है, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप भी है। यह मनुष्य सृष्टि का वैरायटी धर्मों का झाड़ है। आदि सनातन देवी-देवता धर्म है सतयुग का। उनसे फिर और धर्म इमर्ज होते हैं। अभी तुम ब्राह्मण धर्म के बने हो। इनसे पहले शूद्र धर्म के थे। अभी ब्राह्मण से फिर सो देवता फिर सो क्षत्रिय बनेंगे। यह 84 का चक्र लगाना पड़ता है। सतयुग में भी पहले-पहले तुम आयेंगे। गाया भी जाता है – आत्मा परमात्मा अलग रहे.....। गीत में भी सुना – चारों तरफ लगाये फेरे फिर भी हरदम दूर रहे अर्थात् बाप से मिल न सके।

d (अभी है रावण राज्य। राम राज्य है डीटी राज्य। मनुष्य तो समझते हैं – स्वर्ग-नर्क यहां ही है। परन्तु ऐसे हो नहीं सकता। मनुष्य मरता है तो कहते हैं स्वर्गवासी हुआ तो जरूर नर्क में था। तो जरूर पुनर्जन्म नर्क में ही लेना पड़े। मनुष्यों की तो अनेक मतें हैं। एक न मिले दूसरे से। अनेक प्रकार की द्वैत मतें हैं। आधाकल्प भारत में होती है दैवी मत। अब है आसुरी मत। भारतवासी जिस भगवान् को याद करते हैं, उस पारलौकिक बाप को तो जानना चाहिए ना। अभी भारत कौड़ी मिसल है। उनको हीरे जैसा बनाना है। गांधी अथवा नेहरु भी चाहते थे – भारत में वर्ल्ड आलमाइटी अथॉर्टी रामराज्य हो। समझते हैं – कोई समय भारत में था, अभी नहीं है इसलिए रामराज्य की
e कोशिश करते हैं। परन्तु यह कोई मनुष्य के हाथ में नहीं है। तुम हो ब्राह्मण, प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान। निराकार आत्मायें हैं परमपिता परमात्मा की सन्तान। वर्सा है ब्रह्माकुमार कुमारियों को। ब्रह्मा को भी वर्सा शिवबाबा से मिलता है। यह भी भाई हो गया। बच्चे सब हैं भाई-भाई तो जरूर एक बाप है सब आत्माओं का। अभी तुम ब्रह्मा की मुख वंशावली ब्राह्मण आपस में भाई-बहन ठहरे। तुमको वर्सा मिलता है दादे से। दादे के वर्से पर सभी आत्माओं का हक है। चाहे स्त्री, चाहे पुरुष के चोले में हो। लौकिक दादे का वर्सा सिर्फ बच्चों को मिलता है। यह तो बेहद का बाप है ना। भारतवासियों को सतयुग-त्रेता में बेहद के बाप से 21 पीढ़ी का बहुत सुख मिला हुआ है। तुम 84 के चक्र को अभी समझ गये हो। बाप कहते हैं – मैं गाइड बनकर आया हूँ
f तुम सबको ले जाने। तुम ही पहले-पहले आये थे। अभी लास्ट में भी तुम हो। फिर पहले-पहले तुम ही मनुष्य से देवता बनने वाले हो। देवी-देवता धर्म वाले ही 84 जन्म लेते हैं। फिर नम्बर-
ff वार सबके कम जन्म होते जाते हैं। और धर्म वालों के जरूर कम जन्म होंगे। अभी वह आदि सनातन देवी-देवता धर्म नहीं है। फिर से स्थापन हो रहा है। तुम जानते हो इब्राहम फिर कब आयेगा? क्राइस्ट कितने समय बाद आयेगा? यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी मनुष्य ही तो जानेंगे ना। बाप समझाते हैं – जब सभी पाप आत्मा बन जाते हैं तब मैं आकर पुण्य आत्मा बनाता हूँ। जो कल्प

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

पहले बने थे उनका सैपलिंग लगा रहा हूँ। सतयुग में था ही एक धर्म। अभी तो कलियुग में अनेक धर्म हैं। पतित आत्माओं की महफिल है। बाप आते हैं सबको पावन बनाने। सद्गति देने वाला वही एक है। माया रावण दुर्गति करती है। इसलिए देवताओं के आगे जाकर गाते हैं — मैं निर्गुण हारे में कोई गुण नाहीं। बाप आकर पतित से पावन बनाए दैवी गुणों वाला बनाते हैं। अभी तुम दैवी गुण धारण करते जाते हो। फिर भारत में दैवी राज्य बन जायेगा। अभी यह दुनिया बदल रही है।

(तुम हो बेहद के सन्यासी। उन्हों का है हद का वैराग्य। यह है बेहद का वैराग्य। तुम सारी पुरानी सृष्टि को भूल अपने बाप को याद कर वर्सा लेते हो। बाप कहते हैं — मुझे याद करेंगे तो उस याद अथवा योग अग्नि से विकर्म विनाश होंगे, फिर तुम विकर्माजीत बनेंगे। बाबा ने समझाया है — जब कोई 4-5 इकट्ठे आते हैं तो फार्म अलग अलग भराओ। तो मालूम पड़े कि वह किस धर्म का है? अनेक धर्म, अनेक मतें हैं ना। देवी-देवता धर्म वालों को ही तीर लगेगा। कराची में हमेशा अलग-अलग समझाते थे। फार्म भराने का कायदा भी जरूरी है। 7 रोज़ भट्ठी में पड़ना पड़े क्योंकि महारोगी बन पड़े हैं। (भ्रमरी का मिसाल) तुम बच्चे भ्रमरियाँ हो। भूँ-भूँ कर आप समान बनाना पड़ता है। देवता धर्म वालों की ही सैपलिंग लगेगी। बच्चों को युक्तियाँ भी सीखनी है। बोलो — सात रोज़ जब समझो तब मुलाकात हो सकेगी और तुम पर रंग भी तब लगेगा। तुम सभी ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हो। मनुष्य इतना भी नहीं पूछते इतने ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ क्या हैं? कौन हैं? अरे, प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान तो जरूर ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ कहेंगे ना। क्रिमिनल एसाल्ट हो न सके। यह है राजयोग, गॉड फादरली युनिवर्सिटी। भगवानुवाच — मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। अच्छा —

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद, प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

अव्यक्त मुरली से :-

अपनी स्थिति को सदा त्याग और सदा भाग्यशाली बनाने के लिए चेकिंग तो करनी है लेकिन चेकिंग में भी मुख्य चेकिंग कौनसी करनी है, जिस चेकिंग करने से आटोमेटिकली चेंज आ जाए? क्या चेकिंग करनी है उसके लिए एक स्लोगन है जो बहुत बार सुनाया है — कम खर्च बाला नशीन। अब कम खर्च बाला नशीन कैसे-बनना है?

वो लोग तो स्थूल धन में कम खर्च बाला नशीन बनने का प्रयत्न करते हैं। लेकिन आप लोगों के लिए संगमयुग में कितने प्रकार के खजाने हैं, मालूम है? समय, संकल्प, श्वाँस तो है ही खजाना लेकिन उसके साथ अविनाशी ज्ञान रत्नों का खजाना भी है और पांचवा स्थूल खजाने से भी इसका सम्बन्ध है। तो यह चेक करो — संकल्प के खजाने में भी कम खर्च बाला नशीन बने हैं? ज्यादा खर्च नहीं करो। अपने संकल्प के खजाने को व्यर्थ नहीं गंवाओ तो समर्थ और श्रेष्ठ संकल्प होगा। श्रेष्ठ संकल्प से प्राप्ति भी श्रेष्ठ होगी ना। ऐसे ही जो समय का खजाना है संगमयुग का, इस संगमयुग के समय को अगर व्यर्थ न खर्च करो तो क्या होगा? एक-एक सेकेण्ड में अनेक जन्मों की कमाई का साधन कर सकेंगे। इसलिए यह समय व्यर्थ नहीं गंवाना है। ऐसे ही हर श्वाँस में बाप की स्मृति रहे, अगर एक भी श्वाँस में बाप की याद नहीं तो समझो व्यर्थ गया। तो श्वाँस को भी व्यर्थ नहीं गंवाना। ऐसे ही ज्ञान का खजाना जो है उसमें भी अगर खजाने को सम्भालने नहीं

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

आता, मिला और खत्म कर दिया तो व्यर्थ चला गया। मनन नहीं किया ना। मनन के बाद उस खजाने से जो खुशी प्राप्त होती है उस खुशी में स्थित रहने का अभ्यास नहीं किया तो व्यर्थ चला गया। जैसे भोजन किया, हज़म करने की शक्ति नहीं तो व्यर्थ जाता है ना। इसी प्रकार यह ज्ञान के खजाने अपने प्रति वा दूसरी आत्माओं को दान देने के प्रति न लगाया तो व्यर्थ गया ना। ऐसे ही यह स्थूल धन भी अगर ईश्वरीय कार्य में, हर आत्मा के कल्याण के कार्य में वा अपनी उन्नति के कार्य में न लगाकर अन्य कोई स्थूल कार्य में लगाया तो व्यर्थ लगाया ना क्योंकि अगर ईश्वरीय कार्य में लगाते हो तो यह स्थूल धन एक का लाख गुणा बनकर प्राप्त होता है और अगर एक व्यर्थ गंवा दिया तो एक व्यर्थ नहीं गंवाया लेकिन लाख व्यर्थ गंवाया। इसी प्रकार जो संगमयुग का सर्व खजाना है उस सर्व खजाने को चेक करो कि कोई भी खजाना व्यर्थ तो नहीं जाता है? तो ऐसे कम खर्च बाला नशीन बने हो या अब तक अलबेले होने के कारण व्यर्थ गंवा देते हो? जो अलबेले होते हैं वह व्यर्थ गंवाते हैं और जो समझदार होते हैं, नॉलेजफुल होते हैं, सेन्सीबुल होते हैं वह एक छोटी चीज भी व्यर्थ नहीं गंवाते। ऐसे के लिए ही कहा जाता है — कम खर्च बाला नशीन। ऐसे हो? जैसे साकार बाप ने कम खर्च बाला नशीन बन करके दिखाया ना। तो क्या फालो फादर नहीं करना है? कोई भी स्थूल धन, अगर स्थूल धन नहीं है तो जो यज्ञ-निवासी हैं उनके लिए यह स्थूल यज्ञ की हर वस्तु ही स्थूल धन के समान है। अगर यज्ञ की कोई भी वस्तु व्यर्थ गंवाते हैं तो भी कम खर्च बाला-नशीन नहीं कहेंगे। जो प्रवृत्ति में रहने वाले हैं, स्थूल धन से अपना पद ऊंच बना सकते हैं, वैसे ही यज्ञ निवासी भी अगर यज्ञ की स्थूल-वस्तु कम-खर्च बाला-नशीन बनकर यूज़ करते हैं, अपने प्रति वा दूसरों के प्रति, उनका भी इस हिसाब से भविष्य बहुत ऊंच बनता है। ऐसे नहीं कि स्थूल धन तो प्रवृत्ति वालों के लिए साधन है लेकिन यज्ञ निवासियों के यज्ञ की सेवा भी, यज्ञ के वस्तु की इकॉनामी रूपी धन स्थूल धन से भी ज्यादा कमाई का साधन है। अच्छा!

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- विकर्माजीत बनने के लिए सारी पुरानी दुनिया से बेहद का वैराग्य कर, इसे भूल एक बाप की याद में रहना है।

२- भ्रमरी मिसल ज्ञान रंग लगाने की सेवा करनी है। युक्ति से महारोगियों को निरोगी, नास्तिक को आस्तिक बनाना है।

वरदान:- अपने आदि अनादि स्वरूप की स्मृति द्वारा सर्व बन्धनों को समाप्त करने वाले बन्धनमुक्त स्वतन्त्र भव

आत्मा का आदि अनादि स्वरूप स्वतन्त्र है। मालिक है। यह तो पीछे परतन्त्र बनी है। इसलिए अपने आदि और अनादि स्वरूप को स्मृति में रख बन्धनमुक्त बनो। मन का भी बंधन न हो। अगर मन का भी बंधन होगा तो वह बंधन और बन्धनों को ले आयेगा। बंधनमुक्त अर्थात् राजा, स्वराज्य अधिकारी। ऐसे बन्धनमुक्त स्वतन्त्र आत्मायें ही पास विद आनर बनेंगी अर्थात् फर्स्ट डिवीज़न में आयेंगी।

स्लोगन:-

अवगुण धारण करने वाली बुद्धि का नाश कर सतोप्रधान दिव्य बुद्धि धारण करो।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

2-9-02 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - बाप है गरीब-निवाज़, तुम गरीब बच्चे ही बाप से ज्ञान की मुट्ठी ले साहूकार बनते हो, बाप तुम्हें अपने समान बनाते हैं"

प्रश्नः- असुरों के विघ्न जो गाये हुए हैं वह इस रूद्र यज्ञ में कैसे पड़ते रहते हैं?

उत्तरः- मनुष्य तो समझते हैं असुरों ने शायद यज्ञ में गोबर आदि का किचड़ा डाला होगा—परन्तु ऐसा नहीं है। यहाँ जब किसी बच्चे को अहंकार आता है, कोई अहंकारी बैठती है तो जैसे किचड़ा बरसने लगता है, क्रोध में आकर मुख से जो फालतू बोल बोलते हैं, यही इस रूद्र यज्ञ में बहुत बड़ा विघ्न डालते हैं। कई बच्चे संगदोष में आकर अपना खाता खराब कर देते हैं। माया थप्पड़ मार इनसालवेन्ट बना देती है।

ओम् शान्ति याद में बैठे हो तो जैसे योग में बैठे हो। हर एक जानते हैं कि हमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। यह है गुप्त मेहनत। इसमें कोई बड़ाई की बात नहीं। बाप कितना निरहंकारी रहते हैं, जिसमें प्रवेश करते हैं वह भी कितना निरहंकारी है। प्रजापिता ब्रह्मा के कितने ढेर बच्चे हैं। चलन कितनी साधारण है, जैसे घर में बडा बाबा चलते हैं। निराकार के लिए भी कहा जाता है—निरहंकारी है। गुप्त है ना। इनको यह नहीं रहता कि हमारा शो हो। भभके से सबको पता पड़े। भभके से नाम तो होता है ना। बाप कहते हैं यह सब रसम-रिवाज कलियुगी देह-अभिमानियों की है। यहाँ तो शान्त में आते, जाते हैं। बाबा तो हमेशा कहते हैं स्टेशन पर भी कोई ना आवे। कोई हंगामा नहीं। बाप कहते हैं मुझे गुप्त ही रहने दो, इसमें ही मज़ा है। बडे भभके वालों को, बड़े आदमी को मारने में भी देरी नहीं करते। बाबा तो है ऊंच ते ऊंचा। चलन गरीब से गरीब चलते हैं। बाप गरीब-निवाज़ है ना। गरीबों से ही मिलने आते हैं। साहूकार लोग तो नामीग्रामी मनुष्यों से ही मिलते हैं। इनको तो गरीब ही प्यारे लगते हैं। गरीबों पर ही तरस पड़ता है। तो बाप गरीबों पर तरस खाते हैं। ज्ञान की मुट्ठी भर देते हैं तो तुम साहूकार बनो। साहूकारों का ठहरना मुश्किल है। दरकार ही नहीं है इस ज्ञान मार्ग में। गवर्मेन्ट को तो धनवान लोग बहुत मदद करते हैं ना। नामीग्रामी हैं ना। वहाँ तो बहुत दान करने वालों का नाम अखबार में निकाला जाता है। यहाँ गरीब दान करते हैं तो अखबार में डालना चाहिए। चावल की मुट्ठी देकर फिर महल ले लेते हैं। बाप गरीब-निवाज़ गाया हुआ है। सबसे मिलते जुलते रहते हैं। बड़ा आदमी मसाला बेचने वाले से मिलेगा नहीं। यहाँ तो हैं ही गरीब। उन्हों को ही साहूकार बनाना है। बाप तो है गुप्त। गरीब ही बाप से अपना वर्सा कल्प पहले मुआफ़िक ले लेंगे। ड्रामा में नूँध ही है। साहूकार तो बलि चढ न सकें। हाँ इनको (शिवबाबा को) कोई वारिस बनाये तो कमाल कर दिखावे। बाप कहते हैं मैं आता ही हूँ साधारण तन में। गाया हुआ है निराकार, निरहंकारी। गाते भी हैं ना—गोदरी में करतार... देखो बाबा ठण्डी में गोदरी ले आकर बैठते हैं ना। पतित-पावन बाप को कोई जानते नहीं है। बाबा बैठकर समझाते हैं कि हे भारतवासी बच्चों—तुमको स्वर्ग का मालिक किसने बनाया? लक्ष्मी-नारायण के चित्र भी यहाँ रखे हैं। यहाँ तुम अविनाशी ज्ञान

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

रत्न प्राप्त कर और दान करते हो। तन-मन-धन सब समर्पण करते हो तो इसका एवज़ा मिलना चाहिए। अज्ञान काल में भी बहुत दान करने वाले बड़े आदमियों पास जन्म लेते हैं। यहाँ तुम बाप के आगे सरेन्डर करते हो तो पिछाड़ी में जो साहूकार बनते हैं, उनके पास जाकर जन्म लेते हैं। फिर तुम वहाँ महल माडियाँ बनायेंगे। दुनिया तो यही होगी। वैकुण्ठ कोई छत में थोड़ेही रखा है। पूछो—तुम्हारा बाप कहाँ गया? कहेंगे काशीवास किया और मुक्ति को पाया अर्थात् स्वर्ग पधारा। परन्तु अब तुम समझते हो मुक्ति जीवनमुक्ति किसको मिली नहीं है। सब यहाँ ही आते जाते हैं। कर्मों अनुसार एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। बाप कर्म-अकर्म-विकर्म की गति समझाते हैं। रावण राज्य में जो भी कर्म मनुष्य करते हैं वह विकर्म बन जाते हैं। बालिग अवस्था में ही हिसाब-किताब बनता है। छोटे बच्चे का कुछ जमा नहीं होता है। बच्चा बड़ा होता है तो उनके मॉ बाप काम कटारी पर चढ़ा देते हैं। यह भी कर्म विकर्म हुआ। वहाँ माया का राज्य ही नहीं। यह एक भी मनुष्य जानते नहीं।

तुम बच्चों को बाप देही-अभिमानी बनना सिखलाते हैं। और कोई सतसंग में ऐसे नहीं कहेंगे कि तुम्हारी आत्मा में सारा पार्ट बजाने की नूँध है। आत्मा शरीर छोड़ दूसरा ले पार्ट बजाती है। आत्मा ही कानों से सुनती है। अब तुमको सेल्फ रियलाइजेशन कराया है। हम आत्मा ही 84 जन्म लेते हैं। आत्मा को अब निश्चय हुआ है देह-अभिमान खत्मा पहला अवगुण ही यह है। देह-अभिमान आने से ही और विकार चटकते हैं। तो अब देही-अभिमानी बनना है। बाबा हम आत्मायें बस आई कि आई। 84 जन्म पूरे किये हैं। ड्रामा अब पूरा हुआ। अब हमको नया जन्म मिलेगा। खुशी होनी चाहिए ना। सर्प खल छोड़ता है फिर नई लेता है। सन्यासी यह मिसाल दे नहीं सकते। यहाँ तुम भी नई खाल लेने के पहले पुरानी छोड़ते हो। फिर वहाँ हर जन्म में आपेही पुरानी खाल छोड़ नई ले लेते हो। बच्चे समझते हैं कि अब हम यह पुरानी खाल छोड़ घर जायेंगे। फिर स्वर्ग में समय पर पुराना शरीर छोड़ दूसरा लेते रहेंगे। सर्प तो बहुत बार खाल उतारता है। तुमको तो यहाँ प्रैक्टिस कराई जाती है। यह 84 जन्मों की सड़ी हुई खाल है, इनको श्याम कहा जाता है। चमड़ी (शरीर) काली तो आत्मा भी काली है। सोना 24 कैरेट होता है तो जेवर भी ऐसे बनते हैं। आगे खाद डालने का कायदा नहीं था। सच्चा सोना चलता था। यह गिन्नी आदि विलायत से निकली है। विलायत में सच्ची मुहरें बनती नहीं, यहाँ ही सच्चे सोने की मुहरे थी। अब तो सब मंहगा हो गया है। सोने में खाद डालनी ही है। तुम्हारे दिल में गुप्त खुशी है कि हम तो जाकर सोने के महल बनायेंगे। जैसे यहाँ पत्थरों की दीवार है, वहाँ सोने की दीवार होगी। हम पारसबुद्धि बनते हैं तो महल भी सोने के बनाते हैं। पुराना सब खलास हो जायेगा। इस ड्रामा को बड़ा युक्ति से समझना होता है। नई दुनिया में सब कुछ नया होता है। यह कितनी सहज बातें हैं। अच्छा यह भी समझ में न आये तो बाप को बड़े प्यार से याद करो। इसलिए यह सब महीन बातें बाबा ने देर से समझाई हैं। शुरू में बहुत सहज तोतली बातें सुनाते थे। ऐसे थोड़ेही कहेंगे कि बाबा ने यह सब पहले क्यों नहीं सुनाया कि आत्मा इतनी छोटी है। ड्रामा अनुसार जो कुछ पास हुआ, कल्प पहले मुआफ़िक जैसे समझाया था—ऐसे समझा रहे हैं। मनुष्य इस ड्रामा के बन्धन में बांधा हुआ है। कल्प बाद ही फिर ऐसे समझा रहे हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

d फिर भी ऐसे हां समझायेंगे। बहुत बच्चे साधारण रूप देख मूँझते हैं, उल्टा बोलने लग पड़ते
e हैं। अच्छे-अच्छे बच्चे उनको भी माया चमाट मार देती है। समझते हैं - बस जो कुछ है निराकार ही है। सो तो ठीक है ना। निराकार नहीं होता तो हम तुम कैसे होते। परन्तु निराकार को तो रथ जरूर चाहिए ना। रथ बिगर क्या करेंगे, शिवबाबा क्या करेगा? रथ में आये तब तो तुम उनसे मिलेंगे। तुम्हीं से सुनूँ, तुम्ही से बैठूँ। तो रथ जरूर चाहिए ना। अच्छा साकार बिगर निराकार को याद कर दिखाओ। क्या तुमको ज्ञान प्रेरणा से मिलेगा? फिर मेरे पास आये ही क्यों हो? यह बाबा भी कहता है कि वर्सा तो शिवबाबा से लेना है। शिवबाबा कहते हैं मैं इस साधारण तन में बैठ पढ़ाता हूँ। पढ़ाई तो जरूर चाहिए ना। बहुत अच्छे-अच्छे बच्चों का माथा ही फिर जाता है। दो चार सेन्टर खोलते तो बस अहंकार आ जाता है। फिर उल्टा बोलते रहते हैं। फिर कभी बुद्धि में आ भी जाता है कि यह हमने ठीक नहीं कहा, फिर पश्चाताप करते हैं। बाबा कहते हैं मैं साकार बिगर कैसे समझाऊंगा। इसमें प्रेरणा की तो बात ही नहीं। मैं टीचर के रूप में बैठता हूँ। गरीबों पर माथा मारते हैं। गरीबों को ही दान करना चाहिए। कोई भी बात समझ में न आये तो बोलो अच्छा बाबा से पूछकर बतायेंगे
f क्योंकि ज्ञान की अभी बहुत मार्जिन है। आगे चलकर समझते जायेंगे। दिन-प्रतिदिन तुम नई-नई प्वाइंटस सुनते रहेंगे। तुम बच्चों को तो बिल्कुल ही निरहंकारी बनकर रहना है। अहंकार आने से ही फिर सारा किचड़ा बाहर निकल आता है। किचड़े की जैसे वर्षा होती है। कहते भी हैं रूद्र यज्ञ में असुरों का किचड़ा पड़ा—वह समझते हैं शायद गोबर आदि डालते होंगे। सचमुच यह गोबर है। फालतू बोलने लग पड़ते हैं। क्रोध आदि करते यह जैसे गोबर डालते हैं। चलते-चलते किसको ग्रहचारी बैठती है तो छटेले बन जाते हैं। माया थप्पड़ मार एकदम इनसालवेंट बना देती है। कमाई में ग्रहचारी होती है ना। तब तो कहते हैं आश्चर्यवत सुनन्ती, संगदोष में आकर अपना खाना खराब कर देते हैं। बाप कहते हैं बहुत खबरदार रहना है। संग तारे, कुसंग बोरे... बाबा बिल्कुल मना कर देते हैं। बड़े आदमी के दुश्मन बहुत बन पड़ते हैं। यहाँ फिर विष का खाना न मिलने से कामेशु, क्रोधेशु बन पड़ते हैं। बस हम इनको मारेंगे। बाप तो कहते हैं - काम तो तुम्हारा दुश्मन है। तुम पावन देवी-देवता थे। अभी कहते हो कि हम पतित दुःखी हैं। बाबा कहते हैं—इस ज्ञान यज्ञ में असुरों के विघ्न बहुत पड़ेंगे। शुरू से ही पड़ते आये हैं। मुख्य है ही पवित्रता की बात। तुम पुकारते भी हो कि हे पतित-पावन आओ। तो अब आये हैं—पावन बनाते हैं। फिर क्यों पतित बनने चाहते हो? विकारों पर ही शुरू से झगड़ा चलता है। बच्चियाँ भी कहती हैं—हमको तो बाप से वर्सा जरूर लेना है—कुछ भी हो जाए। बाप क्या करेगा? मारेगा ना। लड़ाई में कितने मरते हैं। तुमको बाप कोई मार नहीं डालेगा। हाँ सहन जरूर करना पड़ता है, इसमें महावीरता चाहिए। शिव शक्ति का गायन तुम्हारा ही है। आदि देव को महावीर कहते हैं। परन्तु अर्थ थोड़ेही समझते हैं। अब तुम समझते हो कि माया पर जीत पाते हैं और दूसरों को मायाजीत बनाते हैं। देलवाड़ा मन्दिर में जगत अम्बा भी बैठी है। कोठरियों में बच्चियाँ भी बैठी हैं। महावीर बच्चे सब ब्राह्मण ब्राह्मणियाँ ठहरे। तुम्हारी बुद्धि में कितना राज़ है। हूबहू तुम्हारा ही यादगार है। लक्ष्मी-नारायण का मन्दिर भी यादगार है। गांधी की बरषी मनाते हैं। यह-यह

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

किया, टैगोर ऐसा था, अच्छा काम करते थे कितनी बड़ी-बड़ी जीवन कहानियाँ लिखीं हुई हैं। कितने वाल्युम्स हैं। यहाँ तुम्हारी बुद्धि ही बड़ा वाल्यूम है। सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ तुम्हारी बुद्धि में है। बुद्धि में ही ज्ञान की धारणा होती है। किनकी बुद्धि विशाल है–किनकी कम है। नम्बर हैं ना। यह है नई नॉलेज, जो बाप के सिवाए कोई सुना नहीं सकते। इस बाप पर बलि चढ़ने से तुमको स्वर्ग का मालिक बना देते हैं। बेहद का बाप पतित दुनिया, पतित शरीर में आकर बच्चों के लिए कितनी मेहनत करते हैं। तो जरूर बच्चों को बलि चढ़ना पड़े। वह शिवबाबा तो है ही निराकार, दाता है ना। कहते हैं शिवबाबा हम आपको पैसे भेज देते हैं, मकान बनाने के लिए। मैं तो निराकार हूँ तो जरूर ब्रह्मा द्वारा ही बनाऊंगा। डायरेक्शन देता हूँ–तुम्हारे लिए बनावें। हम तो आये हैं थोड़े समय के लिए, फिर निर्वाणधाम चले जायेंगे। कितना प्यार से बैठ समझाते हैं–कितनी सहज बात है, देह सहित देह के सब सम्बन्ध त्याग एक बाप को याद करो। चाहे तो स्वराज्य पाओ, चाहे प्रजा पद पाओ। तुम्हारे पुरूषार्थ पर है। एक-एक राजा रानी के पास प्रजा कितनी लाखों के अन्दाज में आती है। यह ज्ञान तो ढेर सुनेंगे। आप समान बनाने की मेहनत करनी है। पावन यहाँ बनना है। तुम जानते हो पतित-पावन बाप आया हुआ है। कल्प पहले मुआफ़िक हमको समझा रहे हैं। बाबा ने राज्य दिलाया था–रावण ने छीन लिया है। हार कैसे हुई है फिर जीतना कैसे है–यह भी बुद्धि में हैं। बहुत बच्चे यह भी भूल जाते है। माया नाक से पकड़ लेती है। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति पाते हैं फिर झट जीवनबंध भी हो जाते हैं। देरी नहीं करते। बाप कहते हैं बच्चे खबरदार रहो। तुम रूप-बसन्त बन सदा मुख से रत्न ही निकालो। किचड़ा सुनना भी नहीं चाहिए। समझो हमारा यह दुश्मन है। ज्ञान के सिवाए और सब बातें सुनना ईविल है। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रुहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- पहला अवगुण जो देह-अभिमान का है, उसे निकालकर पूरा-पूरा देही-अभिमानी बनना है।

२- अविनाशी ज्ञान धन जो बाप से मिल रहा है, उसका दान करना है। बाप समान निरहंकारी बनना है। मुख से रत्न निकालने हैं। ईविल बातें नहीं सुननी है।

वरदान:- मास्टर स्नेह के सागर बन घृणा भाव को समाप्त करने वाले नॉलेजफुल भव

नॉलेजफुल अर्थात् ज्ञानी तू आत्मा बच्चे हर एक के प्रति मास्टर स्नेह के सागर होते हैं। उनके पास स्नेह के बिना और कुछ है ही नहीं। आजकल सम्पत्ति से भी ज्यादा स्नेह की आवश्यकता है। तो मास्टर स्नेह के सागर बन अपकारी पर भी उपकार करो। जैसे बाप सभी बच्चों के प्रति रहम और कल्याण की भावना रखते हैं, ऐसे बाप समान क्षमा के सागर और रहमदिल बच्चों में भी किसी के प्रति घृणा भाव नहीं हो सकता।

स्लोगन:-

हदों को समाप्त कर बेहद की दृष्टि और वृत्ति को अपनाना ही युनिटी का आधार है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

10-9-01 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - इस बेहद के ड्रामा में हीरो हीरोइन का पार्ट तुम्हारा है, बाप का नहीं, बाप के पास सिर्फ पतितों को पावन बनाने का हुनर है"

प्रश्न:- ब्रह्मा के चित्र को देख जो प्रश्न उठाते हैं, उन्हें कौन सा राज़ समझाना है?

उत्तर:- उन्हें समझाओ कि यह आदि सो अन्त वाली आत्मा है। जो फर्स्ट प्रिन्स श्रीकृष्ण है, उनके ही लास्ट जन्म में बाप आते हैं। यह पतित तन है, इन्हें ही पावन बनना है। यह कोई भगवान नहीं। भगवान तो एवर-प्योर है। उसने इनके तन का आधार लिया है।

गीत:- मुखड़ा देख ले प्राणी...

ओम् शान्ति। बाप ने बच्चों को समझाया है कि शान्ति के लिए कोई बाहर दर-दर धक्का नहीं खाना है। जैसे हठयोगी सन्यासी समझते हैं — गृहस्थ व्यवहार में रहते शान्ति मिल नहीं सकती। शान्ति जंगल में मिलती है। परन्तु बाप समझाते हैं शान्ति वहाँ भी नहीं मिल सकती। इस पर एक कहानी वा दृष्टान्त सुनाते हैं कि रानी के गले में हार पड़ा था और ढूढती थी बाहर.... ऐसे शान्ति तो तुम्हारे गले में पड़ी है। बाहर कहाँ ढूँढते हो। बाप आकर समझाते हैं बच्चे, तुम आत्मा का स्वधर्म है ही शान्त। यह शरीर तो तुम्हारी कर्मेन्द्रियां हैं, जिससे तुमको पार्ट बजाना पड़ता है। आत्मा तो अविनाशी है। आत्मा कोई छोटी-बड़ी नहीं होती है, न विनाश होती है। हाँ आत्मा पतित बनती है, इनको ही पावन बनना होता है। आत्मा को पहले किशोर शरीर मिलता है फिर युवा..... वृद्धि होता है। आत्मा तो है ही एकरस। पहले-पहले तो आत्मा को जानना होता है। मैं आत्मा ही बैरिस्टर आदि बनता हूँ। इसको कहा जाता है - आत्म-अभिमानी भव। बाप समझाते हैं बच्चे तुम देह-अभिमानी बन पड़े हो। इसलिए अपने को शरीर समझ लेते हो, यह भूल जाते हो कि मैं आत्मा हूँ, यह मेरा शरीर है। तो अपने को रियलाइज करना है। 84 जन्म भी आत्मा लेती है। अभी बाप ने समझाया है जो ब्राह्मण बने हैं वही फिर देवता बनने वाले हैं। ऐसे भी नहीं कि सब 84 जन्म लेते हैं। कोई पहले आयेगा, कोई 50-100 वर्ष बाद भी आते रहेंगे। कोई के 80-82, कोई के कितने जन्म होंगे। मनुष्य तो 84 लाख जन्म कह देते हैं। इनसे भी सैटिस्फाई नहीं होते हैं फिर कह देते कण-कण में भगवान है। अब भगवान कहते हैं कि मैं किसी मनुष्य तन में भी नहीं हूँ। तो जानवर, पत्थर ठिक्कर कण-कण में कैसे होगा। बाप ने समझाया है नम्बरवन ही लास्ट नम्बर में तमोप्रधान बनते हैं। मैं खुद कहता हूँ कि मैं बहुत जन्मों के अन्त में साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। जिसने पूरे 84 जन्म लिए हैं वह तो जरूर पतित होगा। पावन तो हो नहीं सकता। बाप खुद कहते हैं पहले नम्बर में है श्रीकृष्ण, फर्स्ट प्रिन्स। श्री नारायण तो बाद में बनता है, जब बड़ा होता है। वह भी 20-25 वर्ष कम हो जाते हैं। उनके भी पूरे 84 जन्म नहीं कहेंगे। नम्बरवन है श्रीकृष्ण। भल वही फिर स्वयंवर बाद नारायण बनते हैं। परन्तु हिसाब तो बच्चों को करना है ना। पूरे 84 जन्म, 5 हजार वर्ष श्रीकृष्ण के ही कहेंगे। तो बाप बैठ समझाते हैं मैं कल्प-कल्प उसी ही तन में आता हूँ, जिसका आदि से लेकर अन्त तक पार्ट है। दूसरे कोई में आ नहीं सकता हूँ। हिसाब है ना। ब्रह्मा ही पहला नम्बर

a

b

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

c ठहरा। मैं और कोई में आ कैसे सकता। तुमसे बहुत लोग पूछते हैं सिर्फ एक ही ब्रह्मा में क्यों आते हैं। परन्तु यह हिसाब है ना। यह समझने की बातें हैं। गाया भी हुआ है ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं। विष्णु वा शंकर द्वारा स्थापना नहीं करते। यह और कोई का काम नहीं है। मनुष्य रचता और रचना को नहीं जानते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। बनी बनाई बन रही.. चिंता ताकी कीजिये.. यह अभी की बात है, जो होनी है वही होती है। वह बदल नहीं सकती। आज जो कुछ होता है फिर 5 हजार वर्ष बाद होगा। बाबा ने समझाया भी था - कोई भी बात ऐसी देखो तो बोलो यह कोई नई बात नहीं। 5 हजार वर्ष पहले भी हुआ था। एकदम ऐसा लिख दो। फिर भल वह आकर पूछे, लिखने में कोई हर्जा नहीं है। यह लड़ाई पहले लगी थी, नथिंग न्यु। महाभारत की लड़ाई 5 हजार वर्ष पहले भी हुई थी। क्रिश्चियन ने भारत में आकर राज्य छीना, नथिंग न्यु। फिर कल्प बाद भी ऐसे ही होगा। यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती रहती है। अब फिर से आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना हो रही है। जिनके 84 जन्म पूरे हुए हैं वही पहले नम्बर में लक्ष्मी-नारायण बनेंगे। यह सब राज़ बाप ही बैठ समझाते हैं। बाप कहते हैं--मैं मनुष्य सृष्टि का बीजरूप हूँ, इनको उल्टा झाड़ कहा जाता है। इस कल्प वृक्ष की आयु 5 हजार वर्ष है। स्वास्तिका में 4 भाग एक जैसे देखेंगे। युग भी इक्वल हैं, उसमें फ़र्क नहीं पड़ता।

बाप समझाते हैं कि देखो दुनिया में तो क्या-क्या हो रहा है। कोई मून में जाते, कोई आग पर, कोई पानी पर चलना सीखते हैं। यह सब है फालतू, इससे कोई भी फायदा नहीं। मनुष्य पावन बन मुक्ति-जीवनमुक्ति में तो जा नहीं सकते। कुछ भी करें परन्तु वापिस घर जा नहीं सकते। आत्मा को अपना घर और बाप का घर भूल गया है। आत्मा अपने को ही भूल देह-अभिमानी बन पड़ी है। फिर मन्दिरों में जाकर महिमा गाते हैं। आप सर्वगुण सम्पन्न, हम नींच

d पापी हैं। अपनी ग्लानी करते हैं। बाप तो कभी पुजारी नहीं बनते। अच्छा फिर सेकेण्ड नम्बर में कहेंगे शंकर भी एवर पूज्य है। वह भी पुजारी नहीं बनते, उनका पार्ट ही यहाँ नहीं है। इस स्टेज पर पार्ट है ब्रह्मा और विष्णु का। ब्रह्मा और विष्णु का क्या-क्या पार्ट है, यह दुनिया में किसको भी पता नहीं है। त्रिमूर्ति ब्रह्मा कह देते हैं, अर्थ कुछ भी नहीं समझते। यह भी गाते हैं ब्रह्मा द्वारा स्थापना, कौन करते हैं, उनका चित्र ही नहीं। मुख से कहते हैं परन्तु वह कहाँ है। शिव क्या चीज़ है, वह भी नहीं जानते। आत्मा के लिए कहते हैं भ्रकुटी के बीच चमकता है अजब सितारा..... मैं आत्मा अविनाशी हूँ, शरीर विनाशी है। कितने शरीर लेते हैं, कुछ भी पता नहीं। मनुष्य कितने दु:खी हैं, रड़ियां मारते रहते हैं। ओ गॉड फादर। जबसे दु:ख शुरू हुआ है, पुकारते आये हैं। यह भी समझाया गया है भारत में जब रावण राज्य शुरू होता है तो ऐसे नहीं और धर्मों में भी रावणराज्य हो गया। नहीं, उनको तो अपने समय पर सतो रजो तमो में आना ही है। यह कहानी सारी भारत पर है। वह तो बाईप्लाट हैं। बाप बीच में ही आते हैं। भारत जब तमोप्रधान बन जाता है तो फिर सारा झाड़ तमोप्रधान बन जाता है। उनको भी सुख दु:ख भोगना है। झाड़ में नये-नये पत्ते निकलते हैं। वह बड़े शोभनिक होते हैं। नयों को फिर सतो रजो तमो में जरूर आना है। पिछाड़ी में जो आते हैं उनका कुछ मान रहता है। एक जन्म

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

e में भी सतो रजो तमो से पास कर सकते हैं, परन्तु उनकी कोई वैल्यु नहीं रहती। वैल्यु तो उनकी है जो हीरो-हीरोइन का पार्ट बजाते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे बाबा ही हीरो-हीरोइन का पार्ट बजाते हैं। बाबा के लिए नहीं कह सकते हैं। वह तो आकर पतितों को पावन बनाते हैं। खुद पतित नहीं बनते हैं। तुम पतित से पावन बनने की मेहनत करते हो। श्रीमत पर राजयोग से ही राज्य लिया था। अभी तुम फिर ले रहे हो। बाबा कहते हैं-- मैं तो राज्य नहीं करता हूँ, तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। अब दुनिया में मनुष्य कहते तो बहुत हैं। भगवानुवाच -- मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। परन्तु उनका अर्थ न खुद समझते हैं, न किसको समझा सकते हैं। भगवानुवाच,

f तो जरूर भगवान आया था तब तो कहा होगा ना हे बच्चों, भारत में ही शिव जयन्ती, शिव रात्रि मनाते हैं। बाप आते भी हैं भारत खण्ड में। भारत ही अविनाशी खण्ड है। उनकी महिमा बहुत भारी है। जैसे बाप की महिमा अपरमअपार है। वैसे भारत की महिमा भी अपरमअपार है। भारत में ही परमपिता परमात्मा आकर सब मनुष्य मात्र की सद्गति करते हैं। सबको सुख देते हैं। उनका बर्थ प्लेस भारत है। भारत ही प्राचीन देश है। भगवान राजयोग सिखलाने भारत

g में ही आया था। परन्तु कृष्ण को भगवान कह देने से इनकी महिमा नहीं रही है। भगवान तो है ही एक, उनको ही सतगुरू कहा जाता है। बाकी गुरू तो ढेर हैं। कोई धन्धा सिखलाने वाले को भी गुरू कह देते हैं। आजकल तो सबको अवतार मान लेते हैं। कुछ भी समझते नहीं। जब बिल्कुल पतित बन जाते हैं तब पुकारते हैं - बाबा आकर हमको पावन बनाओ।

बाप ही आकर सच्ची-सच्ची अमरकथा सुनाते हैं। अब तुम्हारी बुद्धि में है कि हम 84 जन्मों में कैसे आते हैं। पहले अच्छा जन्म फिर उतरते आयेंगे। दुनिया की भी उतरती कला होती है। मनुष्यों की बुद्धि सतो, रजो, तमोप्रधान बनती है। सतयुग से फिर थोड़ी-थोड़ी उतरती कला शुरू हो जाती है। चढ़ती कला, उतरती कला, तेरे भाने सर्व का भला। सर्व का सद्गति दाता तो एक बाप है ना। वो गुरु लोग तो सिर्फ शास्त्र सुनाते हैं। सुनते-सुनते गिरते ही आये हैं। बेहद का बाप आकर बच्चों से पूछते हैं, मैं तुमको इतना साहूकार बनाकर गया, इतने हीरे-जवाहरों के महल देकर गया, वह सब कहाँ गये? लौकिक बाप बच्चों को पैसे देते हैं लेकिन बच्चे पैसा बरबाद कर देते हैं तो बाप बुलाकर पूछते हैं तुमने इतना पैसा कहाँ बरबाद किया? बच्चों के

h पास पैसे होने से उड़ाते बहुत हैं। बाप धर्मात्मा है, बच्चे विलायत में जाकर लाखों रुपये उड़ा आते हैं। बाप कुछ कर नहीं सकता। बाप फारकती भी नहीं दे सकते क्योंकि दादे की मिलकियत है। परन्तु अन्दर जलते रहते हैं। बाप के मर जाने के बाद, कोई-कोई तो ऐसे गन्दे बच्चे होते हैं, 12 मास में सारी मिलकियत उड़ा देते हैं। वह हैं हद की बातें। यह है फिर बेहद की बात। बेहद का बाप कहते हैं तुम कितने धनवान थे, विश्व के मालिक थे। फिर कंगाल क्यों बने हो? इतना धन कहाँ किया? बच्चों से ही बाप पूछते हैं - भारत को इतना साहूकार बनाया, सब पैसे कहाँ गये? फिर बाप ही बैठ समझाते हैं। भक्ति मार्ग में कितना खर्चा करते हैं। शास्त्रों आदि के पिछाड़ी कितना खर्चा करते हैं। माथा भी टेकते गये, टिप्पड़ भी घिस गई। पैसे आदि सब कुछ गँवा बैठे, यह है ड्रामा। हम तुमको साहूकार बनाते हैं। रावण तुमको कंगाल बनाते हैं। भारतवासियों को ही बाप समझायेंगे ना। भारत ही सोने की चिड़िया थी, इतना धन था जो दूसरे धर्म वाले लूटकर ले गये। ख्याल तो करो - भारत क्या था! यह भी ड्रामा बना हुआ है। भारत ही हेविन,

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

भारत ही हेला अभी है नर्क, इसलिए बाबा ने सीढ़ी भी ऐसी बनवाई है जो कोई भी समझे हम पतित हैं। छोटे-छोटे बच्चों को भी चित्र पर समझाया जाता है ना। नक्शे बिगर बच्चे क्या समझें। बाप ही आकर पतित से पावन बनने की सहज युक्ति बताते हैं। सहज ते सहज भी है, डिफीकल्ट से डिफीकल्ट भी है। सतयुग में देही-अभिमानी रहते हैं। आत्मा समझती है अब शरीर बड़ा हुआ है, यह पुराना चोला छोड़ दूसरा लेना है। जैसे साक्षात्कार हो जाता है - अब जाकर बच्चा बनना है, पुरानी खल छोड़ देते हैं। यहाँ कोई मरता है तो रोते भी हैं। बैण्ड बाजा भी ले जाते। सतयुग में तो खुशी से एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं, तो शादमाना मनाते हैं। यहाँ कितना अफसोस करते हैं। कोई मरता है तो कहते हैं स्वर्ग पधारा। तो इसका मतलब नर्क में था ना! अभी तुम पुरुषार्थ कर रहे हो - स्वर्गवासी बनने के लिए। बाप तुमको स्वर्गवासी बनाते हैं। बाप आते ही हैं जीवनमुक्ति देने। रावण के बन्धन से छुड़ाए जीवनमुक्त करते हैं। बाप कहते हैं– मैं कल्प पहले मुआफ़िक आकर राजयोग सिखलाता हूँ। कल्प-कल्प ब्रह्मा के ही तन में आता हूँ। तुमको ब्राह्मण जरूर बनना है। यज्ञ में ब्राह्मण तो जरूर चाहिए ना। यह है राजस्व अश्वमेध अविनाशी ज्ञान यज्ञ। इस रथ को स्वाहा करना है। अश्व इस रथ को कहा जाता है। राजस्व, स्वराज्य के लिए यह सब अश्व (शरीर) इसमें स्वाहा होने हैं। आत्मा तो स्वाहा नहीं होगी। आत्मायें हिसाब-किताब चुक्तू कर चली जायेंगी। फिर नयेसिर सबका पार्ट शुरू होगा। इनको कहा जाता है हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट। बाप आते ही है नई दुनिया स्थापन कर पुरानी दुनिया खलास करने। यह एक ही महाभारत लड़ाई है, जो शास्त्रों में गाई हुई है। तो समझाना चाहिए – इस लड़ाई से यह स्वर्ग के द्वार खुलते हैं, इसलिए इनका गायन शास्त्रों में है। अच्छा-

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों का नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- बीती बातों का कभी भी चिन्तन नहीं करना है। जो बात बीत गई, नथिंग न्यु समझ भूल जाना है।

२- इस राजस्व अश्वमेध यज्ञ में अपना तन-मन-धन सब स्वाहा कर सफल करना है। इस अन्तिम जन्म में सम्पूर्ण पावन बनने की मेहनत करनी है।

वरदान:- स्वयं को सेवाधारी समझकर झुकने और सर्व को झुकाने वाले निमित्त और नम्रचित भव

निमित्त उसे कहा जाता–जो अपने हर संकल्प वा हर कर्म को बाप के आगे अर्पण कर देता है। निमित्त बनना अर्थात् अर्पण होना और नम्रचित वह है जो झुकता है, जितना संस्कारों में, संकल्पों में झुकेंगे उतना विश्व आपके आगे झुकेगी। झुकना अर्थात् झुकाना। यह संकल्प भी न हो कि दूसरे भी हमारे आगे कुछ तो झुकें। जो सच्चे सेवाधारी होते हैं–वह सदैव झुकते हैं। कभी अपना रोब नहीं दिखाते।

स्लोगन:-

अब समस्या स्वरूप नहीं, समाधान स्वरूप बनो।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

10.4.86 प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे-सबको सुख का रास्ता बताना है,श्रीमत पर चल बाप को प्रत्यक्ष करने की सर्विस में लग जाना है"

प्रश्न:-किसी भी प्रकार की गलत होने का मुख्य कारण क्या है?उत्तर:-देह अभिमान। देह अभिमान के कारण ही बच्चों से बहुत भूलें होती हैं। वह सर्विस भी नहीं कर सकते हैं।उनसे ऐसा कर्म होता है जो सब नफरत करते हैं।बाबा कहते बच्चे आत्म अभिमानी बनो।कोई भी अकर्तव्य नहीं करो।क्षीरखण्ड हो सर्विस के अच्छे प्लैन बनाओ। मुरली सुनकर धारण करो। इसमें लापरवाह नहीं बनो।

गीत:-छोड़ भी दे आकाश सिंहासन ।ओमशान्ति।रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप की श्रीमत है,अभी हम सब सेन्टर्स के बच्चों से बात कर रहे हैं।अब जो त्रिमूर्ति गोला,झाड, सीढ़ी,लक्ष्मी का चित्र और कृष्ण का चित्र,यह 6 चित्र हैं मुख्य।यह जैसे परिदर्शनी है। इन सबमें सारा खा जाता है।जैसे नाटक के पर्दे बनाये जाते हैं एक्जरटाइज के लिए।वह कब बरसात आदि में खराब नहीं होते हैं।बच्चों को श्रीमत मिलती है,रूहानी सर्विस बढ़ाने लिए।भारतवासी मनुष्यों का कल्याण कैसे हो।गाते भी हैं कल्याणकारी बेहद का बाप होता जरूर कोई अकल्याणकारी भी होगे।जिस कारण बाप को आकर फिर कल्याण करना पड़ता है।रूहानी बच्चे जिनका कल्याण हो रहा है।वह इन बातों को समझ सकते हैं।जैसे हमारा कल्याण हुआ है तो हम फिर औरों का भी कल्याण करें।जैसे बाप को मालूम है कैसे कल्याण करें।युक्तियां बता रहे हैं।6×9साइज सेट पर यह चित्र बनाने चाहिए।दिल्ली जैसे शहर में अक्सर करके बहुत मनुष्य आते हैं।जहां गवर्मेन्ट की मीटिंग आदि होती है। सेक्रेटेरियट तरफ बहुत लोग आते हैं।वहां यह चित्र रखने चाहिए।बहुतों का कल्याण करने की बाप युक्ति देते हैं।ऐसे टेंट पर बहुत चित्र बन सकते हैं।देहीअभिमानी बन बाप की सर्विस में लगना है।बाप राय देते हैं यह चित्र हिन्दी और अंग्रेजी में बनाने चाहिए।यह 5 चित्र मुख्य जगह पर लग जावें।अगर ऐसे मुख्य स्थानों पर लग जावें तो तुम्हारे पास सकेंड समझने के लिए आयेंगे।परन्तु देहअभिमान होने के कारण बच्चों से बहुत भूल होती है।ऐसे कोई मत समझे कि मैं बड़ा देहीअभिमानी हूं।गलती तो बहुत होती है।सेंटर नहीं बतलाते।समझाया जाता है ऐसा कोई कर्तव्य न करो जो कोई खराब नफरत लावे।कि इनमें देहअभिमान है।तुम सदैव युद्ध के मैदान में हो।और जगह तो 10-15 वर्ष तक युद्ध चलेगी।तुम्हारी युद्ध तो माया से अन्त तक चलती है।परन्तु है गुप्त।जिसको कोई जान नहीं सकते।गीता में जो महाभारत लड़ाई दिखाई है वह जिस्मानी दिखा दी है।परन्तु है यह रूहानी।रूहानी युद्ध पाण्डवों की है।वह जिस्मानी युद्ध है जो परमपिता परमात्मा से विपरीत बुद्धि है।तुम ब्राह्मणों की है प्रीत बुद्धि।तुमने और सब तोड़ एक संग जोड़ी है।बहुत बार देहअभिमान में आने कारण भूल जाते हैं।फिर अपना ही पद भ्रष्ट कर लेते हैं।फिर अन्त में बहुत पछताना पड़ेगा।कुछ कर नहीं सकेंगे।यह कल्प कल्प की बाजी है। इस समय कोई अकर्तव्य करते हैं तो कल्प कल्पान्तर के लिए पद भ्रष्ट हो जाता है।बड़ा घाटा पड़ जाता है।बाप कहते हैं आगे तुम 100%घाटे में थे।अभी बाप 100%फायदे में ले जाते हैं।तो श्रीमत पर चलना चाहिए।हरेक बच्चे को कल्याणकारी बनना है।सबको सुख का रास्ता बताना है।सुख है ही स्वर्ग में।नर्क में है दुख।क्योंकि यह है विश दुनिया।वह वाइसलेस थी।अब विशश बनी है अब बाप वाइसलेस बनाते हैं।इन बातों को दुनिया में कोई नहीं जानते।तो मुख्य यह चित्र प्रसिद्ध स्थानों पर लगाने चाहिए।पहला नम्बर देहली मुख्य,सेकेण्ड बाम्बे और फिर कलकत्ता।कोई को बार्डर देने से सेंटर बना सकते हैं।आगरे में भी घूमने के लिए बहुत जाते हैं।बाम्बे को क्वीन आफ इण्डिया कहते हैं।बाप तो श्रीमत देते हैं।बाबा तो नहीं जाकर कारीगरों से बात करेंगे। इनका तो मान रखना चाहिए ना।हाइएस्ट अथार्टी है।बच्चे सर्विस बहुत अच्छी कर रहे हैं।और कुछ कलेक्ट करके दिखाते।यह चित्र बनाने में कोई तकलीफ नहीं है।सिर्फ बनवा

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

वाले बच्चे बड़े चित्र हों जो कोई दूर से भी पढ़ सके। गोला भी बड़ा बन सकता है। सेन्टर्स में रखना पड़े जो कोई खराब न करे। यज्ञ में असुरों के विघ्न भी पड़ते हैं। क्योंकि यह है नई बात। आगे चल सब समझ जायेंगे कि हम उतरते आये हैं जरूर कुछ खामी है। ड्रामा में ऐसा पार्ट नथा था। बाप है ही कल्याणकारी। वही बता सकते हैं कि भारत का कल्याण कैसे हुआ और क्यों हुआ। यह बातें शास्त्रों में नहीं हैं। मुख्य शास्त्र है गीता उनको भी झूठा बना दिया है। झूठी माया झूठी काया सब झूठ ही झूठ है। सचखण्ड था। फिर झूठ खण्ड कैसे बना। यह कोई समझ नहीं सकते। भारत को तमोप्रधान कौन बनाते हैं, सतोप्रधान कौन बनाते हैं। यह सृष्टि चक्र कैसे फिरता है कोई नहीं जानते। सतयुग को भी नहीं जानते। समझते हैं भगवान युगे युगे आता है। कब कहते हैं भगवान तो नामरूप से न्यारा है। भारत भगवान स्वर्ग था। यह भी कहते हैं क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले देवताओं का राज्य था। फिर कल्प की आयु लम्बी दे दी है। तो बच्चों को देहीअभिमानी बनने की बड़ी मेहनत करनी है। आधाकल्प सतयुग और त्रेता में तुम आत्मअभिमानी थे। परन्तु परमात्मा अभिमानी नहीं थे। यहाँ तो फिर तुम देहीअभिमानी बने पड़े हो। फिर देहीअभिमानी बनना है। इसमें मेहनत है। रूहानी यात्रा अक्षर भी है परन्तु अर्थ नहीं समझते हैं। मनमनाभव का अर्थ है रूहानी यात्रा पर रहो। हे आत्मायें, सब बाप को याद करो। कृष्ण तो ऐसे कह न सके। वह गीता का भगवान कैसे हो सकता है। उन पर कोई कलंक लगा न सके। यह भी बाप ने समझाया है। सीढ़ी जब उतरी है तो आधाकल्प काम चिता पर बैठ काला हो जाते हैं। अब है ही अन्दरून एज। उनकी सम्प्रदाय भी काली होगी। परन्तु सबका सांवरा b रंग फिर कैसे बनावें। चित्र आदि जो भी बनाये हैं सब बेसमझी के। उसको ही श्याम सुन्दर कहना यह कैसे हो सकता है। उनको कहा ही जाता है अधकल्प से गड़ियों की पूजा करने वाले। गड़ियों के नाम से आक्यूपेशन हो नहीं सकता। तुम भी पहले गड़ियों की पूजा करते थे ना। कुछ भी नहीं समझते थे। तो बाबा ने समझाया है प्रदर्शनी के चित्र मुख्य बन जावें। कमेटी बने जो प्रदर्शनी पिछाड़ी प्रदर्शनी करते रहें। बन्धनमुक्त तो बहुत हैं। कन्यायें बन्धनमुक्त हैं। वानप्रस्थी भी बन्धनमुक्त हैं। तो बच्चों को डायरेक्शन अमल में लाना चाहिए यह है गुप्त पाण्डव। कोई को भी पहचान में नहीं आ सकते। बाप भी गुप्त, ज्ञान भी गुप्त यहाँ तो मनुष्य मनुष्य को ज्ञान देते हैं। यहाँ परमात्मा बाप ज्ञान देते हैं आत्माओं को। परन्तु यह नहीं समझते कि आत्मा ज्ञान देती है। क्योंकि वह आत्मा निर्लेप कह देते हैं। वास्तव में आत्मा ही सब कुछ करती है। सन्यासियों ने घरबार छोड़ा है, उनका धर्म ही है निवृत्ति मार्ग, हठयोगी का। करती सब आत्मा है। पुनर्जन्म आत्मा लेती है, कर्मों के अनुसार। बाप भी सब पार्ट अच्छी रीति बुद्धि में डालते हैं। सब सेन्टर्स में नम्बरवार देहीअभिमानी हैं। जो अच्छी रीति समझते और फिर समझाते हैं। देह अभिमानी न कुछ समझते न समझा सकते हैं। मैं कुछ समझती नहीं हूँ यह कहना भी देहअभिमान है। अरे तुम तो आत्मा हो। बाप आत्माओं को बैठ समझाते हैं। दिमाग ही खुल जाना चाहिए। तकदीर में नहीं है। तो खुलता ही नहीं। तो तदबीर बाप बताते हैं परन्तु तकदीर में नहीं है तो पुरुषार्थ भी नहीं करते हैं। बहुत सहज अलफ और बे समझना है। बेहद के बाप से वर्सा मिलता है। चित्र बड़ा अच्छा है। त्रिमूर्ति का चित्र अच्छा शोभनिक बनाकर पीठ पर लटकाकर घूमता रहे। कोई पूछे तो समझाता रहे। कोई नुकसान की बात नहीं। जहाँ भी आदमी देखे वहाँ खड़ा हो जाए। और कहाँ सत्संग होता है बाहर खड़ा हो जाए। जो सब देखे। परन्तु देह अभिमानी यह काम कर न सकें। यह चित्र है बहुत अच्छा। ल0ना0 का चित्र भी लगा सकते हैं। कोई को गोला लगा हुआ हो। मुख्य है त्रिमूर्ति। झाड भी हो तो हर्जा नहीं। ऐसे 5 की पार्टी हो पीठ पर चित्र लगाकर फिरते रहें। उसमें कोई कुछ कह न सके। सर्विस करते हो ना। कोई करके गाली देंगे। आत्म अभिमानी को गाली लगेगी नहीं। कृष्ण को भी गाली मिली थी। वास्तव में गाली ब्रह्मा ने खाई है। शिवबाबा को तो कोई जानते नहीं। भारतवासी जब गाड गाडेज थे। पूजा भी ऐसी थी। इस समय पतित बन पड़े हैं। कितना समझाया जाता है, डाग से गाड

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बच्चो, पुरुषार्थ बुद्धि में नहीं बैठता है बहुत सहज डायमंड से गाड बनने में सेकण्ड लगता है। आने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। आत्मा कितना पतित बन गई है, माड खाते रहते हैं, बाप कहते हैं विष कोई खाने की चीज नहीं है। तुम अमृत छोड़कर विष क्यों खाते हो। हम तुमको देवता बनाते अमृत पिलाते हैं फिर तुम विष क्यों खाते हो। तो भी छोड़ते नहीं। हमने तुमको गाड गाडेज बनाया। तुम अब क्या बन गये हो। यह है कलियुग की वैतरणी नदी में मनुष्य जानवर पुरुष आदि सब एक समान दिखाते हैं। यहां तो मनुष्य और ही खराब हो पड़े हैं। मनुष्य को क्रोध कितना है। लड़ते हैं, मार देते हैं। भारत जो शिवालय था वह वेश्यालय बना है। फिर उनको शिवालय शिवबाबा ही बनाते हैं। बाप कितना अच्छी रीति समझाते हैं। डायरेक्शन देते हैं। पैसे2 करो। टिन बनाओ। फिर जो बड़े2 मनुष्य हैं उन्हों को समझाओ। यह प्रदर्शनी नालेज सबको सुननी चाहिए। हाल लेकर प्रदर्शनी लगानी है। उन्हों को तो पैसे आदि कुछ नहीं लेने चाहिए। फिर भी जो वाजिब समझो तो किराया लो। फिर तो आप देखो फिर झट पैसे वापिस कर देंगे। सिर्फ युक्ति से समझाना है। अथॉरटी तो हाथ में रहती है ना। चाहे तो सब कुछ कर सकते हैं। वह थोड़े ही समझते हैं विनाश काले विपरीत बुद्धि तो विनाश को प्राप्त होंगे। पाण्डवों ने तो भविष्य में पद पाया। सो भी राज्य पीछे भविष्य में होगा। अब थोड़े ही होगा। यह मकान आदि सब टूट जायेगी। तो बाप ने समझाया है प्रदर्शनी भी करनी चाहिए। खूब अच्छी तरह से काठ पर निमन्त्रण देना है। तुम बड़ों को समझाओ तो मदद भी करेंगे। बाकी सोये नहीं रहना है। कई बच्चे देहअभिमान में सोते रहते हैं। कमेटी बनाकर सीरियस हो प्लैन बनाना चाहिए। बाकी मुरली नहीं पढ़ेंगे तो धारणा कैसे होगी। ऐसे बहुत लायक है। अच्छा-मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

उन्नति के लिए दो कल्प:- (1) देहीअभिमानी हो सर्विस में लग जाना है। जैसे बाप कल्याणकारी है, ऐसे कल्याणकारी बन सर्विस की युक्तियां निकालनी हैं। (2) पतित बुद्धि बन और संग तोड़ एक संग जोड़नी है। कोई ऐसा कर्तव्य नहीं करना है जिससे कल्प कल्पान्तर के लिए नुकसान हो जाए।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

है बहुत सहज।समझाना है भारत जो हीरे जैसा था,लक्ष्मी नारायण का राज्य था।अभी इतना गिरा क्यों है।हम आपको बेहद की हिस्ट्री जाग्राफी बतायें।फिर स्वर्ग कैसे होगा।मनुष्यों के तो ख्याल में भी नहीं है।यह किसको पता नहीं कि लक्ष्मी नारायण पूज्य थे वही पुजारी बने हैं।पूज्य..यह परमात्मा के लिए नहीं हैं।यह किसको पता नहीं कि जो पूज्य थे वही पुजारी तमोप्रधान बने हैं।पूज्य थे,जरूर पुनर्जन्म लिया होगा।सतोप्रधान पूज्य थे अब तमोप्रधान पुजारी बने हैं।बाप बैठ समझाते हैं सतयुग में जो आते हैं उनको पुनर्जन्म लेना है। हम सूर्यवंशी फिर चन्द्रवंशी बनें अब ब्राह्मण वंशी बनते हैं।फिर देवता वंशी बनेंगे।जैसे प्रजापिता ब्रह्मा को बाप ने एडाप्ट किया।ब्रह्मा बनाया है।कोई पूछे तुम कैसे बने?बोलो ब्रह्मा के मुख से परमपिता परमात्मा ने हमको अपना बनाया है।बाप ही पतितों को पावन बनाते हैं।अभी हम प्रतिज्ञा करते हैं पवित्रता की।बाप को याद करने से ही हम
d पावन बनते हैं।बाप कृपा करेंगे?कृपा तो की है ना।परमधाम से पतित दुनिया में,पतित शरीर में आये हैं।बाप कहते हैं अब मैं आया हूँ जो सिखलाता हूँ वह सीखो,मुझे याद करो तो तुम्हें ताकत मिलेगी।विकर्म विनाश होंगे।इसमें आशीर्वाद की तो बात ही नहीं।टीचर को कहेंगे कि आप कृपा करो तो हम 100 मार्क्स से पास हो जायें।यह भी बेहद का टीचर है- पढ़ाते हैं।कोई को नालेज धारण नहीं होती है तो क्या करेंगे। टीचर सब पर कृपा कर तो सब पास हो जायें।फिर तो राजधानी कैसे बनेगी।तुम बच्चों को तो पुरूषार्थ करना है।फालो करो
e मॉ बाप को।बाप को याद करो और कोई उपाय है नहीं।नहीं तो बाप को पुकारते क्यों हो।साधू सन्त आदि सब कहते हैं हमको दुखों से आकर छुड़ाओ।भारी संकट आने हैं।जब विनाश शुरू हो जायेगा फिर समझेंगे जरूर कहीं भगवान गुप्त वेश में है।कृष्ण अगर होता तो सारी दुनिया में ढिंढोरा पिट जाता।कृष्ण तो आ न सके।यह तो बाप को आना पड़ता है।
f अन्त तक बाप को ज्ञान सुनाना है।आते ही गुप्त रूप में हैं।कृष्ण तो हो न सके।निराकार बाप सभी का एक है।वह आये हैं पतितों को पावन बनाने का वर्सा देने।तुम्हारा भी फर्ज है- सबको बतलाना।पढ़ना है परमपिता परमात्मा से तुम्हारा क्या संबंध है।बाप को कितने टेर बच्चे हैं।तुम समझते हो परमपिता परमात्मा का डायरेक्शन है कि एक तो मुझे याद करो- और अच्छी रीति पढ़ो। बाबा को अच्छी रीति याद कर ऊँचे वर्सा पाना है।बेहद की हिस्ट्री जाग्राफी तुमको समझाते रहते हैं। चित्रों पर भी तुम समझा सकते हो।भारत सतयुग में तिरताज था।सूर्यवंशी देवी देवतायें राज्य करते थे फिर चन्द्रवंशी राज्य हुआ,कला गिरती गई। यह भी तो देखना पड़े ना। पढ़ेंगे अच्छी रीति तो सीखेंगे भी।पढ़ेंगे नहीं तो नापास हो जायेंगे। सावधानी कौन दे। आजकल माया असावधान करने वाली बहुत है।यहाँ झूठ छिप नहीं सकता।कोई विकर्म करेंगे तो वह जमा होता जायेगा।पाप अथवा पुण्य जमा तो जरूर होता है।उस अनुसार ही दूसरा जन्म मिलता है। कोई भी पाप करेंगे तो जन्म भी ऐसे ही मिलेगा। इसलिए बाप कहते हैं कोई पाप करते हो तो झट बतलाओ।ऐसे नहीं कि ईश्वर तो सब जानते हैं।बाप को बतलाना पड़े। इस जन्म में जो पाप कर्म किये हैं वह आत्मा जानती है।सब कुछ याद रहता है कि हमने क्या2काम किये हैं।बापदादा को बतलाओ कि हमने क्या2किया।मुख्य बात है विकार की। चोरी करना, ठगी करना वह तो छोटी2बातें हैं।मुख्य है विकार की बात।काम महाशत्रु है।विकार में जाने वाले को ही पतित कहा जाता है।इन विकारों पर पहले जीत पानी है।तुम्हारा दुश्मन ही रावण है जो पतित बनाते हैं।अब पावन बनने के लिए बाप को याद करो।बाप का बनकर और फिर विकार में गिरे तो चोट बहुत लगेगी।पहले तो देह अभिमान छोड़ना है फिर काम महाशत्रु है।भारी युद्ध है इस पर।तो यह सब बातें समझकर फिर औरों को समझानी है।बाबा पूछेंगे तुम कितने को सच्ची गीता का सत्य नारायण की कथा,अमरकथा सुनाई।पाप आत्मायें तो ढेर की ढेर हैं।तो यह भी पोतामेल बताओ।तब समझेंगे तुम ब्राह्मण बने हो।कितने को आपसमान बनाया है। यह है सहज राजयोग की बातें।बाप का परिचय देना है।दुनिया में यह तो कोई जानते नहीं हैं।बाप के पास बहुतों के सर्टीफिकेट भी आते हैं।लिखते हैं फलाने ने ऐसा समझाया-वही गुरू निमित्त बना स्वर्ग का मालिक बनाने।बीऐकेअखुत देते हैं।परन्तु जो बनते हैं,वह किसको समझाते हैं?किसको ले जायेंगे? ले तो आना है ना।जिनको निश्चय होगा फट से कहेंगे।पहले बाप की गोद तो ले लेवें।

PDF created with pdfFactory trial version www.pdffactory.com

11-2-99 प्रातः मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – अभी शिव जयन्ती समीप आ रही है, तुम खूब धूमधाम से निराकार बाप की बायोग्राफी सबको सुनाओ, शिव जयन्ती ही हीरे तुल्य है"

प्रश्न:- तुम ब्राह्मणों की सच्ची दीवाली कब है और कैसे?

उत्तर:- वास्तव में शिव जयन्ती ही तुम्हारे लिए सच्ची-सच्ची दीवाली है क्योंकि शिवबाबा आकर तुम आत्मा रूपी दीपक को जगाते हैं। हरेक के घर का दीप जलता है अर्थात् आत्मा की ज्योति जगती है। वह स्थूल दीपक जगाते लेकिन तुम्हारा सच्चा दीपक शिव बाप के आने से जगता है। इसलिए तुम खूब धूमधाम से शिव जयन्ती मनाओ।

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रुहानी बच्चे शिव की जयन्ती मनाते हैं और भारत में तो शिव जयन्ती मनाते ही हैं। जयन्ती एक की मनाई जाती है। उसको फिर सर्वव्यापी कह देते हैं। अब सर्व की जयन्ती तो हो न सके। जयन्ती कब मनाई जाती है? जब गर्भ से बाहर आते हैं। शिवजयन्ती मनाते तो जरूर हैं। आर्य समाजी भी मनाते हैं। अब तुम मनाते हो 63वीं जयन्ती, गोया 63 वर्ष हुआ जयन्ती को। जन्म दिन तो सबको याद रहता है, फलाने दिन यह गर्भ से बाहर आया। अब शिवबाबा की तुम 63वीं जयन्ती मनाते हो। वह तो है निराकार। उनकी जयन्ती कैसे हो सकती है? इतने बड़े-बड़े मनुष्यों को निमन्त्रण कार्ड जाते हैं। कोई को पूछना तो चाहिए—जयन्ती कैसे मनाते हो? उसने जन्म कब और कैसे लिया? फिर उसके शरीर का नाम क्या रखा? परन्तु ऐसे पत्थरबुद्धि हैं जो कभी पूछते नहीं हैं। तुम उनको बता सकते हो। वह है निराकार, उनका नाम है शिव। तुम सालिग्राम बच्चे हो। जानते हो इस शरीर में सालिग्राम हैं। नाम शरीर का पड़ता है। वह है परम आत्मा शिव। अब तुम कितना धूमधाम से प्रोग्राम रखते हो। दिन-प्रतिदिन तुम धूमधाम से समझाते रहते हो कि जब शिवबाबा की ब्रह्मा के तन में प्रवेशता होती है, वही उनकी जयन्ती गाई जाती है। उनकी तिथि तारीख कोई होती नहीं। कहते हैं मैं साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। परन्तु कब, किस घड़ी वह नहीं बताते। तिथि-तारीख, दिन आदि बतायें तो कहें कि फलानी तारीख। जन्म पत्री आदि तो इनकी होती नहीं। वास्तव में जन्म पत्री तो सबसे ऊंची इनकी है। कर्तव्य भी इनका सबसे ऊंचा है। कहते हैं प्रभु तेरी महिमा अपरमअपार है। तो जरूर कुछ करते होंगे। महिमा तो बहुतों की गाई जाती है। नेहरु, गांधी आदि सबकी महिमा गाते हैं। इनकी महिमा कोई बता न सके। तुम समझाते हो वह ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर है। वह तो एक ठहरा ना। फिर उनको सर्वव्यापी कैसे कह सकते। परन्तु कुछ भी समझते नहीं हैं। और तुम मनाते हो तो कोई पूछने का साहस भी नहीं करते हैं। नहीं तो पूछना चाहिए शिव जयन्ती मनाई जाती है, महिमा गाई जाती है तो जरूर कोई होकर गये हैं। बहुत भक्त लोग हैं। अगर गवर्मेन्ट न माने तो भक्तों, साधुओं, गुरुओं की स्टैम्प भी न बनाये। जैसी है गवर्मेन्ट, ऐसी है रैयत (प्रजा)। अभी तुम बच्चों को बाप की बायोग्राफी का भी अच्छी तरह मालूम पड़ा है। तुमको जितना फ़खुर रहता है उतना और कोई को नहीं रह सकता। तुम ही कहते हो शिव जयन्ती हीरे तुल्य है, बाकी सब जयन्तियाँ कौड़ी मिसल हैं। बाप ही आकर कौड़ी को हीरे तुल्य बनाते हैं। श्रीकृष्ण भी बाप द्वारा इतना ऊंच बना। इसलिए उनका जन्म हीरे तुल्य गाया जाता है। पहले कौड़ी तुल्य होगा

PDF Compressed, OCR, Web Optimized using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

फिर हीरे तुल्य बाबा ने बनाया। यह बातें मनुष्य नहीं जानते। उनको ऐसा वर्ल्ड का प्रिन्स किसने बनाया? तो यह भी समझाना चाहिए - कृष्ण जन्माष्टमी मनाते हैं। बच्चा तो माता के गर्भ से ही बाहर निकला। उनको टोकरी में ले गये। अब कृष्ण तो वर्ल्ड प्रिन्स था फिर उनको डर काहे का? वहाँ कंस आदि कहाँ से आया? यह सब बातें शास्त्रों में लिख दी हैं। अब तुमको अच्छी रीति समझाना चाहिए। समझाने की युक्तियाँ बहुत अच्छी चाहिए। सब एक जैसा नहीं पढ़ा सकते। युक्तियुक्त न समझाने से और ही डिससर्विस होती है।

अब शिव जयन्ती मनाई जाती है तो जरूर शिव की ही महिमा करेंगे। गांधी जयन्ती पर
b गांधी की ही महिमा करेंगे। और कुछ सुझेगा नहीं। अब शिवजयन्ती तुम मनाते हो तो जरूर उनकी महिमा, उनकी बायोग्राफी वा जीवन चरित्र भी होगा। तुम उस दिन उनका ही जीवन चरित्र बैठ सुनाओ। जैसे बाप कहते हैं मनुष्य कोई पूछते भी नहीं है कि शिव जयन्ती कैसे शुरु हुई। उसका कुछ भी वर्णन है नहीं। उनकी महिमा तो अपरम्पार गाई जाती है। शिवबाबा
c को भोलानाथ कह बहुत महिमा करते हैं। वह तो भोला भण्डारी है। वह लोग शिव-शंकर कह देते हैं। शंकर को भोलानाथ समझ लेते हैं। वास्तव में भोलानाथ शंकर तो नहीं लगता। उनके लिए तो कहते हैं आंख खोली तो विनाश हुआ, धतूरा खाते उनको फिर भोलानाथ कैसे कह सकते हैं। महिमा तो एक की ही होती है। तुमको शिव के मन्दिर में जाकर समझाना चाहिए। वहाँ बहुत लोग आते हैं तो शिव का जीवन चरित्र सुनाना है। कहते हैं भोला भण्डारी शिवबाबा। अब शिव और शंकर का भेद भी तुमने ही बताया है। शिव की पूजा होती है शिव के मन्दिर में। तो वहाँ जाकर तुमको शिव की जीवन कहानी बतानी है। जीवन कहानी अक्षर सुनकर कोई का माथा ही चक्रित हो जायेगा कि शिव की जीवन कहानी कैसे सुनायेंगे? तो मनुष्य वन्डरफुल बात समझ बहुत आयेंगे। बोलो, निमन्त्रण पर जो आयेंगे उनको हम निराकार परमपिता परमात्मा की जीवन कहानी बतायेंगे। गांधी आदि की भी बायोग्राफी सुनते हैं ना। अभी तुम महिमा करेंगे शिव की तो मनुष्यों की बुद्धि से सर्वव्यापी की बात उड़ जायेगी। एक की महिमा फिर दूसरे से मिल न सके। यह तो मण्डप बनाते हैं वा प्रदर्शनी करते हैं। वह कोई शिव का मन्दिर तो है नहीं। तुम जानते हो सच्चा-सच्चा शिव का मन्दिर वास्तव में यह है, जहाँ रचता खुद रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं। तुम लिख सकते हो रचता की जीवन कहानी और रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ अथवा हिस्ट्री सुनायेंगे। हिन्दी-अंग्रेजी में लिखत हो। बड़े-बड़े के पास जायेंगे तो वन्डर खायेंगे कि यह कौन हैं जो परमपिता परमात्मा की बायोग्राफी बताते हैं। सिर्फ रचना के लिए तुम कहेंगे तो समझेंगे प्रलय हुई फिर नई रचना रची। परन्तु नहीं, तुमको तो समझाना है बाप पतितों को आकर पावन बनाते हैं तो मनुष्य वन्डर खायेंगे। शिव के मन्दिर में भी बहुत आयेंगे। हाल वा मण्डप बड़ा होना चाहिए। भल तुम प्रभात फेरी निकालते हो, उसमें भी यह लक्ष्मी-नारायण का राज्य किसने स्थापन किया, उन्हों को यह समझाना है। निराकार शिवबाबा जो सभी आत्माओं का बाप है वो ही आकर राजयोग सिखाते हैं। ऐसे-ऐसे विचार सागर
d मंथन करना चाहिए कि कैसे शिव के मन्दिर में जाकर सर्विस करनी चाहिए। शिव के मन्दिर में सवेरे पूजा करते हैं, घण्टे आदि भी सवेरे बजते हैं। शिवबाबा भी प्रभात के समय आते हैं। आधी रात नहीं कहेंगे। उस समय तुम ज्ञान भी नहीं सुना सकते हो क्योंकि मनुष्य सोये रहते

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of DVISION PDFCompressor

हैं। रात को फिर भी मनुष्यों को फुर्सत होती है। बत्तियाँ आदि भी जलती हैं। रोशनी भी अच्छी करनी चाहिए। शिवबाबा आकर तुम आत्माओं को जगाते हैं। सच्ची दीपावली तो यह है, हरेक के घर का दीप जलता है यानी आत्मा की ज्योति जगती है। वह तो घर में स्थूल दीपक जलाते हैं। परन्तु दीपावली का वास्तव में अर्थ यह है। कोई-कोई का दीपक तो बिल्कुल जगता नहीं। तुम जानते हो हमारा दीपक कैसे जगता है? कोई मरता है तो दीवा जलाते हैं कि अन्धियारा न हो। परन्तु पहले तो आत्मा का दीपक जगे तब अन्धियारा न हो। नहीं तो मनुष्य घोर अन्धियारे में हैं। आत्मा तो सेकण्ड में एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। अन्धियारे आदि की इसमें बात ही नहीं। यह भक्ति मार्ग की रस्म है। घृत ख़लास होने से दीवा बुझ जाता है। अन्धियारे का भी अर्थ कुछ समझते नहीं हैं। पित्र आदि खिलाने का भी अर्थ नहीं समझते हैं। आगे आत्माओं को बुलाते थे, कुछ पूछते थे। अभी इतना नहीं चलता है। यहाँ भी आते हैं।

e कोई-कोई समय कुछ बोल देते हैं। बोलो तुम सुखी हो? तो कहेंगे हाँ जी। सो तो जरूर यहाँ से जो जायेंगे अच्छे घर में ही जन्म लेंगे। जन्म जरूर अज्ञानी के घर में लेंगे। ज्ञानी के घर में तो जन्म ले नहीं सकते क्योंकि ज्ञानी ब्राह्मण तो विकार में जा नहीं सकता। वह तो पवित्र है। बाकी हाँ, अच्छे सुखी घर में जाकर जन्म लेंगे। विवेक भी कहता है—जैसी अवस्था, वैसा जन्म। फिर वहाँ अपना जलवा दिखाते हैं। भल शरीर छोटा है इसलिए बोल न सकें। थोड़ा बड़ा होने से ज्ञान का जलवा दिखायेंगे जरूर। जैसे कोई-कोई शास्त्रों के संस्कार ले जाते हैं तो छोटेपन में ही उसमें लग जाते हैं, यहाँ से भी नॉलेज ले जाते हैं तो जरूर महिमा निकलेगी।

f तुम शिव जयन्ती मनाते हो। वह लोग कुछ अर्थ नहीं समझ सकते हैं। पूछना चाहिए—अगर वह सर्वव्यापी है तो जयन्ती कैसे मनायेंगे? अब तुम बच्चे पढ़ रहे हो। तुम जानते हो वह बाप भी है, टीचर भी है, सतगुरु भी है। बाबा ने समझाया है सिक्ख लोग भी कहते हैं सत श्री अकाल है। अब वास्तव में अकाल मूर्त तो सब आत्मायें हैं परन्तु एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं इसलिए जन्म-मरण कहा जाता है। आत्मा तो वही है। आत्मा 84 जन्म लेती है। कल्प जब पूरा होता है तो खुद ही आकर बताते हैं कि मैं कौन हूँ? मै कैसे इनमें प्रवेश करता हूँ? जिससे तुम आपेही समझ जाते हो। पहले नहीं समझते थे। हाँ, परमात्मा की प्रवेशता है परन्तु कैसे, कब हुई, कुछ भी समझते थोडेही थे। दिन-प्रतिदिन तुम्हारी बुद्धि में बातें आती रहती हैं। नई-नई बातें तुम सुनते रहते हो। आगे थोड़ेही दो बाप का राज़ समझाते थे। आगे तो जैसे बेबियां थी। अभी भी बहुत बेबी कहते हैं—बाबा, हम दो दिन का आपका बच्चा हूँ। इतने दिन का बच्चा हूँ। समझते हैं जो कुछ होता है कल्प पहले मिसल। इसमें बड़ी नॉलेज है। समझने में भी समय लगता है। जन्म ले फिर मर भी पडते हैं। दो मास, 8 मास का हो मर भी पड़ते हैं। तुम्हारे पास आते हैं कहते हैं यह राइट है। वह हमारा बाप है, हम उनकी सन्तान हैं। हाँ-हाँ कहते हैं। बच्चे लिखते भी हैं—बहुत प्रभावित हो जाते हैं। फिर बाहर गया ख़लास, मर पड़ा। फिर आते ही नहीं हैं तो क्या होगा? या तो पिछाड़ी में आकर रिफ्रेश होगा या तो प्रजा में आ जायेगा। यह सब बातें समझानी हैं। हम शिव जयन्ती कैसे मनाते हैं? शिवबाबा कैसे सद्गति करते है? शिवबाबा स्वर्ग की सौगात ले आते हैं। खुद कहते हैं मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ। विश्व का मालिक बनाता हूँ। बाप तो है ही हेविन का रचयिता तो जरूर हेविन का

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ही मालिक बनायेंगे। हम उनकी बायोग्राफी बताते हैं। कैसे स्वर्ग की स्थापना करते हैं, कैसे राजयोग सिखाते हैं, आकर सीखो। जैसे बाप समझाते हैं, वैसे बच्चे नहीं समझा सकते हैं क्या? इसमें बहुत अच्छा समझाने वाला चाहिए। शिव के मन्दिर में बहुत अच्छा मनाते होंगे, वहाँ जाकर समझाना चाहिए। लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में अगर शिव की जीवन कहानी सुनायेंगे तो किसको जंचेगी नहीं। ख्याल में नहीं आयेगा। फिर उन्हों को अच्छी रीति बुद्धि में बिठाना पड़े। लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में बहुत आते हैं। उन्हों को लक्ष्मी-नारायण, राधे कृष्ण का राज़ समझा सकते हो। उनका अलग-अलग मन्दिर होना नहीं चाहिए। कृष्ण जयन्ती पर तुम कृष्ण के मन्दिर में जाकर समझायेंगे कि हम उनके 84 जन्मों की कहानी सुनाते हैं। कृष्ण g ही गोरा, कृष्ण ही सांवरा क्यों गाया जाता है? कहते हैं गांवड़े का छोरा। गांवड़े में तो गायें-बकरियां चराते होंगे ना। बाबा फील करता है हम भी गांवड़े के थे। न टोपी, न जुत्ती। अब स्मृति आती है हम क्या थे फिर बाबा ने आकर प्रवेश किया है। तो यह बाप का लक्ष्य सबको h मिले कि शिवबाबा को याद करो वो ही सद्गति दाता है। तुम रामचन्द्र की भी जीवन कहानी बता सकते हो। कब से उनका राज्य शुरू हुआ, कितना वर्ष हुआ। ऐसे-ऐसे ख्यालात आने चाहिए। शिव के मन्दिर में शिव की बायोग्राफी सुनानी पड़े। लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में लक्ष्मी-नारायण की महिमा करनी पड़े। राम के मन्दिर में जायेंगे तो राम की जीवन कहानी सुनायेंगे। अब तुम पुरूषार्थ कर रहे हो देवी-देवता धर्म स्थापन करने का। हिन्दू धर्म तो कोई ने स्थापन नहीं किया है। बाकी हिन्दू कोई धर्म नहीं है—यह सीधा कहने से बिगड़ेंगे। समझते हैं यह कोई ईसाई है। तुम बोलो हम आदि सनातन देवी-देवता धर्म के हैं जिसको आजकल हिन्दू कह दिया है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. शिवजयन्ती धूमधाम से मनाओ। शिवबाबा के मन्दिर में शिव की और लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में लक्ष्मी-नारायण वा राधे-कृष्ण की बायोग्राफी सुनाओ। सबको युक्तियुक्त समझानी दो।

(२) अज्ञान अन्धियारे से बचने के लिए आत्मा रूपी दीपक को ज्ञान घृत से सदा प्रज्वलित रखना है। दूसरों को भी अज्ञान अन्धियारे से निकालना है।

वरदान:- अटल निश्चय द्वारा सहज विजय का अनुभव करने वाले सदा हर्षित, निश्चिंत भव

निश्चय की निशानी है सहज विजय। लेकिन निश्चय सब बातों में चाहिए। सिर्फ बाप में निश्चय नहीं, अपने आप में, ब्राह्मण परिवार में और ड्रामा के हर दृश्य में सम्पूर्ण निश्चय हो, थोड़ी सी बात में निश्चय टलने वाला न हो। सदा यह स्मृति रहे कि विजय की भावी टल नहीं सकती, ऐसे निश्चयबुद्धि बच्चे, क्या हुआ, क्यों हुआ... इन सब प्रश्नों से भी पार सदा निश्चिंत, सदा हर्षित रहते हैं।

स्लोगन:-

सम्पूर्ण पवित्रता को धारण करने वाले ही परमानन्द का अनुभव कर सकते हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

26-10-99 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - तुम सबकी आपस में एक मत है, तुम अपने को आत्मा समझ एक बाप को याद करते हो तो सब भूत भाग जाते हैं"

प्रश्न :- पद्मापद्म भाग्यशाली बनने का मुख्य आधार क्या है?

उत्तर:- जो बाबा सुनाते हैं, उस एक-एक बात को धारण करने वाले ही पद्मापद्म भाग्यशाली बनते हैं। जज करो बाबा क्या कहते हैं और रावण सम्प्रदाय वाले क्या कहते हैं! बाप जो नॉलेज देते हैं उसे बुद्धि में रखना, स्वदर्शन चक्रधारी बनना ही पद्मापद्म भाग्यशाली बनना है। इस नॉलेज से ही तुम गुणवान बन जाते हो।

ओम् शान्ति। रूहानी बाप, अंग्रेजी में कहा जाता है स्प्रीचुअल फादर। सतयुग में जब तुम चलेंगे तो वहाँ इंग्लिश आदि दूसरी कोई भाषा तो होगी नहीं। तुम जानते हो सतयुग में हमारा राज्य होता है। उसमें हमारी जो भाषा होगी वही चलेगी। फिर बाद में वह भाषा बदलती जाती है। अनेकानेक भाषायें हैं। जैसा-जैसा राजा वैसी-वैसी उनकी भाषा चलती है। अब यह तो सब बच्चे जानते हैं, सब सेन्टर्स पर भी जो बच्चे हैं उनकी है एक मत। अपने को आत्मा समझना है और एक बाप को याद करना है ताकि भूत सब भाग जाएं। बाप है पतित-पावन। 5 भूतों की तो सबमें प्रवेशता है। आत्मा में ही भूतों की प्रवेशता होती है फिर इन भूतों अथवा विकारों का नाम भी लगाया जाता है देह-अभिमान, काम, क्रोध आदि। ऐसे नहीं कि सर्वव्यापी कोई ईश्वर है। कभी भी कोई कहे कि ईश्वर सर्वव्यापी है तो कहो सर्वव्यापी आत्मायें हैं और इन आत्माओं में 5 विकार सर्वव्यापी हैं। बाकी ऐसे नहीं कि परमात्मा सर्व में विराजमान है। परमात्मा में फिर 5 भूतों की प्रवेशता कैसे होगी! एक-एक बात को अच्छी रीति धारण करने से तुम पद्मापद्म भाग्यशाली बनते हो। दुनिया वाले रावण सम्प्रदाय क्या कहते हैं और बाप क्या कहते है, अब जज करो। हरेक के शरीर में आत्मा है। उस आत्मा में 5 विकार प्रवेश हैं। शरीर में नहीं, आत्मा में 5 विकार अथवा भूत प्रवेश होते हैं। सतयुग में यह 5 भूत नहीं हैं। नाम ही है डीटी वर्ल्ड। यह है डेविल वर्ल्ड। डेविल कहा जाता है असुर को। कितना दिन और रात का फ़र्क है। अभी तुम चेन्ज होते हो। वहाँ तुम्हारे में कोई भी विकार, कोई अवगुण नहीं रहता। तुम्हारे में सम्पूर्ण गुण होते हैं। तुम 16 कला सम्पूर्ण बनते हो। पहले थे फिर नीचे उतरते हो। इस चक्र का अभी मालूम पड़ा है। 84 का चक्र कैसे फिरता है। हम आत्मा को स्व का दर्शन हुआ है अर्थात् इस चक्र का नॉलेज हुआ है। उठते, बैठते, चलते तुमको यह नॉलेज बुद्धि में रखना है। बाप नॉलेज पढ़ाते हैं। यह रूहानी नॉलेज बाप भारत में ही आकर देते हैं। कहते हैं ना--हमारा भारत। वास्तव में हिन्दुस्तान कहना तो रांग है। तुम जानते हो भारत जब स्वर्ग था तो सिर्फ हमारा ही राज्य था और कोई धर्म नहीं था। न्यू वर्ल्ड थी। नई देहली कहते हैं ना। देहली का नाम असल देहली नहीं था, परिस्थान कहते थे। अभी तो नई देहली और पुरानी देहली कहते हैं फिर न पुरानी, न नई देहली होगी। परिस्तान कहा जायेगा। दिल्ली को कैपीटल कहते हैं। इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य होगा, और कुछ भी नहीं होगा, हमारा ही राज्य होगा। अभी तो राज्य नहीं है इसलिए सिर्फ कहते है हमारा भारत देश है। राजायें तो हैं नहीं। तुम बच्चों की बुद्धि में सारा ज्ञान चक्र लगाता है। बरोबर पहले-पहले इस विश्व में देवी-देवताओं का राज्य था और कोई राज्य नहीं था। जमुना का किनारा था

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

उसको परिस्थान कहा जाता था। देवताओं की कैपीटल देहली ही रही है, तो सभी को कशिश होती है। सबसे बड़ी भी है। एकदम सेन्टर (बीच) है।

मीठे-मीठे बच्ची जानते हैं पाप तो जरूर हुए हैं, पाप आत्मा बन गये हैं। सतयुग में होते हैं पुण्य आत्मायें। बाप ही आकर पावन बनाते हैं। जिसकी तुम शिव जयन्ती भी मनाते हो। अब जयन्ती अक्षर तो सबसे लगता है। इसलिए इनको फिर शिव रात्रि कहते हैं। रात्रि का अर्थ तो तुम्हारे सिवाए और कोई समझ न सकें। अच्छे अच्छे विद्वान आदि कोई भी नहीं जानते कि शिवरात्रि क्या है तो मनाते क्या! बाप ने समझाया है रात्रि का अर्थ क्या है? यह जो 5 हज़ार वर्ष का चक्र है उसमें सुख और दु:ख का खेल है, सुख को कहा जाता है दिन, दु:ख को कहा जाता है रात। तो दिन और रात के बीच में आता है संगम। आधाकल्प है सोझरा, आधाकल्प है अन्धियारा। भक्ति में तो बहुत तीक-तीक चलती है। यहाँ है सेकण्ड की बात। बिल्कुल इज़ी है, सहज योग। तुमको पहले जाना है मुक्तिधाम। फिर तुम जीवनमुक्ति और जीवनबन्ध में कितना समय रहे हो, यह तो तुम बच्चों को याद है फिर भी घड़ी-घड़ी भूल जाते हो। बाप समझाते हैं योग अक्षर है ठीक परन्तु उन्हों का है जिस्मानी योग। यह है आत्माओं का। सन्यासी लोग अनेक प्रकार के हठयोग आदि सिखाते हैं तो मनुष्य मूँझते हैं। तुम बच्चों का बाप भी है तो टीचर भी है, तो उनसे योग लगाना पड़े ना। टीचर से पढ़ना होता है। बच्चा जन्म लेता है तो पहले बाप से योग होता है फिर ५ वर्ष के बाद टीचर से योग लगाना पड़ता है फिर वानप्रस्थ अवस्था में गुरु से योग लगाना पड़ता है। तीन मुख्य याद रहते हैं। वह तो अलग-अलग होते है। यहाँ यह एक ही बार बाप आकर बाप भी बनते हैं, टीचर भी बनते हैं। वन्डरफुल है ना। ऐसे बाप को तो जरूर याद करना चाहिए। जन्म-जन्मान्तर तीन को अलग-अलग याद करते आये हो। सतयुग में भी बाप से योग होता है फिर टीचर से होता है। पढ़ने तो जाते हैं ना। बाकी गुरु की वहाँ दरकार नहीं रहती क्योंकि सब सद्गति में हैं। यह सब बातें याद करने में क्या तकलीफ़ है! बिल्कुल सहज है। इनको कहा जाता है सहज योग। परन्तु यह है अनकॉमन। बाप कहते हैं मैं यह टैम्पेरी लोन लेता हूँ, सो भी कितना थोड़ा समय लेता हूँ। 60 वर्ष में वानप्रस्थ अवस्था होती है। कहते हैं साठ लगी लाठ। इस समय सबको लाठी लगी हुई है। सब वानप्रस्थ, निर्वाणधाम में जायेंगे। वह है स्वीट होम, स्वीटेस्ट होम। उनके लिए ही कितनी अथाह भक्ति की है। अभी चक्र फिरकर आये हो। मनुष्यों को यह कुछ भी पता नहीं, ऐसे ही गपोड़ा लगा दिया है कि लाखों वर्ष का चक्र है। लाखों वर्ष की बात हो तो फिर रेस्ट मिल न सके। रेस्ट मिलना ही मुश्किल हो जाए। तुमको रेस्ट मिलती है, उसको कहा जाता है साइलेन्स होम, इनकारपोरियल वर्ल्ड। यह है स्थूल स्वीट होम। वह है मूल स्वीट होम। आत्मा बिल्कुल छोटा रॉकेट है, इनसे तीखा भागने वाला कोई होता नहीं। यह तो सबसे तीखा है। एक सेकण्ड में शरीर छूटा और यह भागा, दूसरा शरीर तो तैयार रहता है। ड्रामा अनुसार पूरे टाइम पर उनको जाना ही है। ड्रामा कितना एक्यूरेट है। इनमें कोई इनएक्यूरेसी है नहीं। यह तुम जानते हो। बाप भी ड्रामा अनुसार बिल्कुल एक्यूरेट टाइम पर आते हैं। एक सेकण्ड का भी फर्क नहीं पड सकता है। मालूम कैसे पडता है कि इनमें बाप भगवान् है। जब नॉलेज देते हैं, बच्चों को बैठ समझाते हैं। शिवरात्रि भी मनाते हैं ना। मैं शिव कब कैसे आता हूँ, वह तुमको तो पता नहीं है। शिवरात्रि, कृष्णरात्रि मनाते हैं। राम की नहीं मनाते क्योंकि फर्क पड़ गया ना। शिवरात्रि के साथ कृष्ण की भी रात्रि मना लेते हैं। परन्तु जानते कुछ भी नहीं। यहाँ है ही

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

आसुरी रावण राज्य। यह समझने की बातें हैं। यह तो है बाबा, बुढ़े को बाबा कहेंगे। छोटे बच्चे
d को बाबा थोड़ेही कहेंगे। कोई-कोई लव से भी बच्चे को बाबा कह देते हैं। तो उन्हों ने भी कृष्ण
को लव से कह दिया है। बाबा तो तब कहा जाता है जब बड़े हो और फिर बच्चे पैदा करते हो।
कृष्ण खुद ही प्रिन्स है, उनको बच्चे कहाँ से आये। बाप कहते ही हैं मै बुजुर्ग के तन में आता हूँ।
e शास्त्रों में भी है परन्तु शास्त्रों की सब बातें एक्यूरेट नहीं होती, कोई-कोई बात ठीक है। ब्रह्मा की
आयु माना प्रजापिता ब्रह्मा की आयु कहेंगे। वह तो जरूर इस समय होगा। ब्रह्मा की आयु मृत्युलोक
में खत्म होगी। यह कोई अमरलोक नहीं है। इनको कहा जाता है पुरूषोत्तम संगमयुग। यह सिवाए
तुम बच्चों के और कोई की बुद्धि में नहीं हो सकता।

बाप बैठ बताते हैं—मीठे-मीठे बच्चों, तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो हम बतलाते हैं कि तुम 84 जन्म लेते हो। कैसे? तो भी तुमको पता पड़ गया है। हरेक युग की आयु 1250 वर्ष है और इतने-इतने जन्म लिए हैं। 84 जन्मों का हिसाब है ना। 84 लाख का तो हिसाब हो न सके। इनको कहा जाता है 84 का चक्र, 84 लाख की तो बात ही याद न आये। यहाँ कितने अपरमअपार दु:ख हैं। कैसे दु:ख देने वाले बच्चे पैदा होते रहते हैं। इसको कहा जाता है घोर नर्क, बिल्कुल छी-छी दुनिया है। तुम बच्चे जानते हो अभी हम नई दुनिया में जाने के लिए तैयारी कर रहे हैं। पाप कट जाएं तो हम पुण्यात्मा बन जायें। अभी कोई पाप नहीं करना है। एक-दो पर काम कटारी चलाना—यह आदि-मध्य-अन्त दु:ख देना है। अभी यह रावण राज्य पूरा होता है। अभी है कलियुग का अन्त। यह महाभारी लड़ाई है अन्तिम। फिर कोई लड़ाई आदि होगी ही
f नहीं। वहाँ कोई भी यज्ञ रचे नहीं जाते। जब यज्ञ रचते हैं तो उसमें हवन करते हैं। बच्चे अपनी पुरानी सामग्री सब स्वाहा कर देते हैं। अब बाप ने समझाया है यह है रूद्र ज्ञान यज्ञ। रूद्र शिव को कहा जाता है। रूद्र माला कहते हैं ना। निवृत्तिमार्ग वालों को प्रवृति मार्ग की रस्म-रिवाज का कुछ भी पता नहीं है। वह तो घरबार छोड़ जंगल में चले जाते हैं। नाम ही पडा है सन्यास। किसका सन्यास? घरबार का। खाली हाथ निकलते है। पहले तो गुरु लोग बहुत परीक्षा लेते हैं, काम कराते हैं। पहले भिक्षा में सिर्फ आटा लेते थे, रसोई नहीं लेते थे। उन्हों को जंगल में ही रहना है, वहाँ कंद-मूल-फल मिलते हैं। यह भी गायन है, जब सतोप्रधान सन्यासी होते हैं तब यह खाते हैं। अभी तो बात मत पूछो, क्या-क्या करते रहते हैं। इसका नाम ही है विशश वर्ल्ड। वह है वाइसलेस वर्ल्ड। तो अपने को विशश समझना चाहिए ना। बाप कहते हैं सतयुग को कहा जाता है शिवालय, वाइसलेस वर्ल्ड। यहाँ तो सब हैं पतित मनुष्य इसलिए देवी-देवता के बदले नाम ही हिन्दू रख दिया है। बाप तो सब बातें समझाते रहते हैं। तुम असुल में हो ही बेहद बाप के बच्चे। वह तो तुम्हें 21 जन्मों का वर्सा देते हैं। तो बाप मीठे-मीठे बच्चों को समझाते हैं—जन्म-जन्मान्तर के पाप तुम्हारे सिर पर हैं। पापों से मुक्त होने के लिए ही तुम बुलाते हो। साधू-सन्त आदि सब पुकारते हैं—हे पतित-पावन..... अर्थ कुछ नहीं समझते, ऐसे ही गाते रहते हैं, ताली बजाते रहते हैं। घड़ी-घड़ी स्नान करते हैं तो जरूर पतित हैं। शिवबाबा को सर्वव्यापी कह देते। कोई इनसे पूछे—परमात्मा से योग कैसे लगावें, उनसे कैसे मिलें तो कह देते वह तो सर्वव्यापी है। क्या यही रास्ता बताते हैं। कह देते वेद-शास्त्र पढ़ने से भगवान मिलेगा। परन्तु बाप कहते हैं मैं हर 5 हजार वर्ष के बाद ड्रामा के प्लैन अनुसार आता हूँ। यह ड्रामा का राज़ सिवाए बाप के और कोई नहीं जानते। लाखों वर्ष का ड्रामा तो हो ही नहीं सकता। अब बाप समझाते हैं यह 5 हज़ार वर्ष की

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बात है। कल्प पहले भी बाबा ने कहा था कि मनमनाभव। यह है महामन्त्र। माया पर जीत पाने का मन्त्र है। बाप ही बेस्ट अर्थ समझाते हैं। दूसरा कोई अर्थ नहीं समझाते। गाया भी जाता है ना सर्व का सद्गति दाता एक। कोई मनुष्य तो हो नहीं सकता। देवताओं की भी बात नहीं है। वहाँ तो सुख ही सुख है, वहाँ कोई भक्ति नहीं करते। भक्ति की जाती है भगवान से मिलने के लिए। सतयुग में भक्ति होती नहीं क्योंकि 21 जन्मों का वर्सा मिला हुआ है। तब गाया भी जाता है दु:ख में सिमरण ..... यहाँ तो अथाह दु:ख हैं। घड़ी-घड़ी कहते हैं भगवान रहम करो। यह कलियुगी दु:खी दुनिया सदैव नहीं रहती। सतयुग-त्रेता पास्ट हो गये हैं, फिर होंगे। लाखों वर्ष की तो बात भी याद नहीं रह सकती है। अब बाप तो सारी नॉलेज देते हैं, अपना परिचय भी देते हैं और रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ भी समझाते हैं। 5 हज़ार वर्ष की बात है। तुम बच्चों को ध्यान में आ गया है। अभी तो पराये राज्य में हो। तुमको अपना राज्य था। यहाँ तो लड़ाई से अपना राज्य लेते हैं, हथियारों से, मारामारी से अपना राज्य लेते हैं। तुम बच्चे तो योगबल से अपना राज्य स्थापन कर रहे हो। तुम्हें सतोप्रधान दुनिया चाहिए। पुरानी दुनिया खत्म हो नई दुनिया बनती है, इसको कहा जाता है कलियुग पुरानी दुनिया। सतयुग है नई दुनिया। यह भी किसको पता नहीं है। सन्यासी कह देते यह आपकी कल्पना है। यहाँ ही सतयुग है, यहाँ ही कलियुग है। अब बाप बैठ समझाते हैं एक भी ऐसा नहीं है जो बाप को जानते हो। अगर कोई जानता होता तो परिचय देता। सतयुग-त्रेता क्या चीज है, किसको समझ में थोड़ेही आता है। तुम बच्चों को बाप अच्छी रीति समझाते रहते हैं। बाप ही सब कुछ जानते हैं, जानी जाननहार अर्थात् नॉलेजफुल है। मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है। ज्ञान का सागर, सुख का सागर है। उनसे ही हमको वर्सा मिलना है। बाप नॉलेज में आप समान बनाते हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रुहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. यह पापों से मुक्त होने का समय है इसलिए अभी कोई पाप नहीं करना है। पुरानी सब सामग्री इस रूद्र यज्ञ में स्वाहा करनी है।

२. अभी वानप्रस्थ अवस्था है इसलिए बाप, टीचर के साथ-साथ सतगुरु को भी याद करना है। स्वीट होम में जाने के लिए आत्मा को सतोप्रधान (पावन) बनाना है।

वरदान:- चलन और चेहरे से पवित्रता के श्रृंगार की झलक दिखाने वाले श्रृंगारी मूर्त भव

पवित्रता ब्राह्मण जीवन का श्रृंगार है। हर समय पवित्रता के श्रृंगार की अनुभूति चेहरे वा चलन से औरों को हो। दृष्टि में, मुख में, हाथों में, पांवों में सदा पवित्रता का श्रृंगार प्रत्यक्ष हो। हर एक वर्णन करे कि इनके फीचर्स से पवित्रता दिखाई देती है। नयनों में पवित्रता की झलक है, मुख पर पवित्रता की मुस्कराहट है। और कोई बात उन्हें नज़र न आये - इसको ही कहते हैं - पवित्रता के श्रृंगार से श्रृंगारी हुई मूर्त।

स्लोगन:-

व्यर्थ सम्बन्ध-सम्पर्क भी एकाउन्ट को खाली कर देता है इसलिए
व्यर्थ को समाप्त करो।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

15-5-2000 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – सदा नशा रहे कि हम संगमयुगी ब्राह्मण हैं, हम ब्राह्मण ही नशे से कहते हैं – बाबा आया हुआ है, जिसे सब पुकार रहे हैं, वह हमारे सम्मुख है"

प्रश्नः- जिन बच्चों का बुद्धियोग ठीक होगा, उन्हें कौन-सा साक्षात्कार होता रहेगा?

उत्तरः- सतयुगी नई राजधानी में क्या-क्या होगा, कैसे हम स्कूल में पढ़ेंगे फिर राज्य चलायेंगे। यह सब साक्षात्कार जैसे-जैसे नज़दीक आते जायेंगे, होता रहेगा। परन्तु जिनका बुद्धियोग ठीक है, जो अपने शान्तिधाम और सुखधाम को याद करते हैं, धंधा धोरी करते भी एक बाप की याद में रहते हैं, उन्हें ही यह सब साक्षात्कार होंगे।

गीतः- ओम नमो शिवाए .....

ओम् शान्ति। भक्ति मार्ग में और जो भी सतसंग होते हैं, उनमें तो सब गये होंगे। वहाँ या तो कहेंगे बोलो सब वाह गुरु या राम का नाम बतायेंगे। यहाँ बच्चों को कुछ कहने की भी जरूरत नहीं रहती। एक ही बार कह दिया है, घड़ी-घड़ी कहने की दरकार नहीं। बाप भी एक है, उनका कहना भी एक ही है। क्या कहते हैं? बच्चों मामेकम् याद करो। पहले सीखकर फिर आकर यहाँ बैठते हैं। हम जिस बाप के बच्चे हैं उनको याद करना है। यह भी तुमने अभी ब्रह्मा द्वारा जाना है कि हम सभी आत्माओं का बाप वह एक है। दुनिया यह नहीं जानती। तुम जानते
a हो हम सब उस बाप के बच्चे हैं, उनको सभी गॉड फादर कहते हैं। अब फादर कहते हैं मैं इस साधारण तन में तुमको पढ़ाने आता हूँ। तुम जानते हो बाबा इनमें आये हैं, हम उनके बने हैं। बाबा ही आकर पतित से पावन होने का रास्ता बताते हैं। यह सारा दिन बुद्धि में रहता है। यूँ शिवबाबा की सन्तान तो सब हैं परन्तु तुम जानते हो और कोई नहीं जानते हैं। तुम बच्चे समझते हो हम आत्मा हैं, हमको बाप ने फरमान किया है कि मुझे याद करो। मैं तुम्हारा बेहद का बाप हूँ। सब चिल्लाते रहते हैं कि पतित-पावन आओ, हम पतित बने हैं। यह देह नहीं कहती। आत्मा इस शरीर द्वारा कहती है। 84 जन्म भी आत्मा लेती है ना। यह बुद्धि में रहना चाहिए कि हम एक्टर्स हैं। बाबा ने हमको अब त्रिकालदर्शी बनाया है। आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान दिया है। बाप को ही सब बुलाते हैं ना। अभी भी वह कहेंगे, कहते रहते हैं कि आओ और तुम संगमयुगी ब्राह्मण कहते हो बाबा आया हुआ है। इस संगमयुग को भी तुम जानते हो, यह पुरूषोत्तम युग गाया जाता है। पुरूषोत्तम युग होता ही है कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के बीच में। सतयुग में सत पुरूष, कलियुग में झूठे पुरूष रहते हैं। सतयुग
b में जो होकर गये हैं, उन्हों के चित्र हैं। सबसे पुराने ते पुराने यह चित्र हैं, इनसे पुराने चित्र कोई होते नहीं। ऐसे तो बहुत मनुष्य फालतू चित्र बैठ बनाते हैं। यह तुम जानते हो कौन-कौन होकर गये हैं। जैसे नीचे अम्बा का चित्र बनाया है अथवा काली का चित्र है, तो ऐसी भुजाओं वाली हो थोड़ेही सकती है। अम्बा को भी दो भुजायें होंगी ना। मनुष्य तो जाकर हाथ जोडते पूजा करते हैं। भक्ति मार्ग में अनेक प्रकार के चित्र बनाये हैं। मनुष्य के ऊपर ही भिन्न-भिन्न प्रकार की सजावट करते हैं तो रूप बदल जाता है। यह चित्र आदि वास्तव में कोई है नहीं। यह सब

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

है भक्ति मार्ग। यहाँ तो मनुष्य लूले लंगड़े निकल पड़ते हैं। सतयुग में ऐसे नहीं होते। सतयुग को भी तुम जानते हो आदि सनातन देवी-देवता धर्म था। यहाँ तो ड्रेस देखो हर एक की अपनी-अपनी कितनी वैराइटी है। वहाँ तो यथा राजा रानी तथा प्रजा होते हैं। जितना नज़दीक होते जायेंगे तो तुमको अपनी राजधानी की ड्रेस आदि का भी साक्षात्कार होता रहेगा। देखते रहेंगे हम ऐसे स्कूल में पढ़ते हैं, यह करते हैं। देखेंगे भी वह जिनका बुद्धियोग अच्छा है। अपने शान्तिधाम-सुखधाम को याद करते हैं। धंधाधोरी तो करना ही है। भक्ति मार्ग में भी धंधा आदि तो करते हैं ना। ज्ञान कुछ भी नहीं था। यह सब है भक्ति। उसको कहेंगे भक्ति का ज्ञान। वह यह ज्ञान दे न सकें कि तुम विश्व के मालिक कैसे बनेंगे। अभी तुम यहाँ पढ़कर भविष्य विश्व के मालिक बनते हो। तुम जानते हो यह पढ़ाई है ही नई दुनिया, अमरलोक के लिए। बाकी कोई अमरनाथ पर शंकर ने पार्वती को अमरकथा नहीं सुनाई है। वह तो शिव-शंकर को मिला देते हैं।

c
d

अभी बाप तुम बच्चों को समझा रहे हैं, यह भी सुनते हैं। बाप बिगर सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज कोन समझा सकेंगे। यह कोई साधू-सन्त आदि नहीं है। जैसे तुम गृहस्थ व्यवहार में रहते थे, वैसे यह भी। ड्रेस आदि सब वही है। जैसे घर में माँ बाप बच्चे होते हैं, फ़र्क कुछ नहीं है। बाप इस रथ पर सवार हो आते हैं बच्चों के पास। यह भाग्यशाली रथ गाया जाता है। कभी बैल पर सवारी भी दिखाते हैं। मनुष्यों ने उल्टा समझ लिया है। मन्दिर में कभी बैल हो सकता है क्या? कृष्ण तो है प्रिन्स, वह थोड़ेही बैल पर बैठेंगे। भक्ति मार्ग में मनुष्य बहत मूंझे हुए हैं। मनुष्यों को है भक्ति मार्ग का नशा। तुमको है ज्ञान मार्ग का नशा। तुम कहते हो इस संगम पर बाबा हमको पढ़ा रहे हैं। तुम हो इस दुनिया में परन्तु बुद्धि से जानते हो हम ब्राह्मण संगमयुग पर हैं। बाकी सब मनुष्य कलियुग में हैं। यह अनुभव की बातें हैं। बुद्धि कहती है हम कलियुग से अब निकल आये हैं। बाबा आया हुआ है। यह पुरानी दुनिया ही बदलने वाली है। यह तुम्हारी बुद्धि में है, और कोई नहीं जानते। भल एक ही घर में रहने वाले हैं, एक ही परिवार के हैं, उसमें भी बाप कहेगा हम संगमयुगी हैं, बच्चा कहेगा नहीं, हम कलियुग में हैं। वन्डर है ना। बच्चे जानते हैं – हमारी पढ़ाई पूरी होगी तो विनाश होगा। विनाश होना जरूरी है। तुम्हारे में भी कोई जानते हैं, अगर यह समझें दुनिया विनाश होनी है तो नई दुनिया के लिए तैयारी में लग जाएं। बैग-बैगेज तैयार कर लें। बाकी थोड़ा समय है, बाबा के तो बन जायें। भूख मरेंगे तो भी पहले बाबा फिर बच्चे। यह तो बाबा का भण्डारा है। तुम शिवबाबा के भण्डारे से खाते हो। ब्राह्मण भोजन बनाते हैं इसलिए ब्रह्मा भोजन कहा जाता है। जो पवित्र ब्राह्मण हैं, याद में रहकर बनाते हैं, सिवाए ब्राह्मणों के शिवबाबा की याद में कोई रह नहीं सकते। वह ब्राह्मण थोड़ेही शिवबाबा की याद में रहते हैं। शिवबाबा का भण्डारा यह है, जहाँ ब्राह्मण भोजन बनाते हैं। ब्राह्मण योग में रहते हैं। पवित्र तो हैं ही। बाकी है योग की बात। इसमें ही मेहनत लगती है। गपोड़ा चल न सके। ऐसे कोई कह न सके कि मैं सम्पूर्ण योग में हूँ वा 80 परसेन्ट योग में हूँ। कोई भी कह न सके। ज्ञान भी चाहिए। तुम बच्चों में योगी वह है जो अपनी दृष्टि से ही किसी को शान्त कर दें। यह भी ताकत है। एकदम

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

20.11.98 प्रात: क्लास ओम शान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे - इस अन्तिम जन्म में तुम्हें जो कुछ सुनना होने वाला है, इसलिए तुम्हें पुरानी दुनिया के समाचार सुनने की दरकार नहीं, तुम बाप और वर्से को याद करो"

प्रश्नः- श्रीमत के लिए गायन कौन सा है? श्रीमत पर चलने वालों की निशानी बताओ?

उत्तरः- श्रीमत के लिए गायन है, जो सिखायेंगे, जो पढ़ायेंगे, वही सिखायेंगे... कर्म करेंगे। श्रीमत पर चलने वाले बच्चे बाप की हर आज्ञा का पालन करते हैं। उनसे सदा श्रेष्ठ कर्म होते हैं। वे कभी श्रीमत में अपनी मनमत मिक्स नहीं करते। उनमें राइट और रांग की समझ होती है।

गीत:- बनवारी रे... ओमशान्ति। यह गीत किसका है? बच्चों का। कोई गाते होता है - जिसमें बाप समझाते हैं, इसमें बच्चे कहते हैं कि बाबा अब तो हम समझ गये, दुनिया को तो पता नहीं कि कैसी यह झूठी दुनिया है। झूठे बंधन हैं यहाँ सब दुखी हैं, सब ईश्वर को याद करते हैं। सतयुग में तो ऊपर से मिलने की बात ही नहीं है। वहाँ सुख है तब आत्माओं को याद पड़ता है - परन्तु हमारा अनुभवी बाप मिलते ही तब हैं जब स्वर्ग जाते हैं। बाबा भी जो भी पुरुषार्थ करते हैं सब स्वर्ग के लिए। क्योंकि ईश्वर को सर्वव्यापी मानते हैं। ईश्वर का पता गलत बताते हैं। अगर कहें कि ईश्वर और उनकी रचना के आदि मध्य अन्त को हम यहीं जानते हैं तो यह कहना सच है। आदि मिडिल एण्ड एन्ड कहते थे, उसी समय है रजोगुणी। उस समय झूठी दुनिया नहीं कहेंगे। झूठी दुनिया नर्क कलियुग अन्त को कहते हैं। संगम पर कहेंगे यह नर्क है, वह स्वर्ग है। ऐसे नहीं द्वापर को नर्क कहेंगे। उस समय फिर भी रजोप्रधान बुद्धि है। अभी है तमोप्रधान। तो हेल और हेविन संगम पर लिखेंगे। आज हेल है, कल हेविन होगा। यह भी बाप आकर समझाते हैं, दुनिया नहीं जानती कि इस समय कलियुग का अन्त है। सब अपना2 हिसाब किताब चुक्तू कर अन्त में तमोप्रधान बनते हैं फिर सतो रजो तमो में आना ही है, जिनका एक दो जन्म का पार्ट है वह भी सतो रजो तमो में आते हैं। उन्हों का पार्ट ही थोड़ा है। इसमें बड़ी समझ चाहिए दुनिया में तो अनेक मत वाले मनुष्य हैं, सबकी एक मत तो नहीं होगी। हरेक का अपना2 धर्म है

a तब बाबा कहते हैं - 7-8 की पार्टी आती है तो हर एक से फार्म भराना है। हर एक की गत: मत अपनी2 है। बाप का आक्यूपेशन अलग, हरेक आत्मा का अलग2 है। पति भी अलग2 है। तो उनके लिए समझानी भी अलग2 चाहिए। नाम रूप देश काल सब अलग है। देखने में आता है यह फलाने धर्म का है। हिन्दू धर्म तो सब कहते हैं परन्तु उनमें भी सब भिन्न2 हैं। कोई आर्य-समाजी, कोई सनातनी, कोई गॉड फादर वाले भी हैं परन्तु सनातनी आदि वो भी हैं पक्के हिन्दू धर्म में मानते हैं। हम लिखें कि हम ब्राह्मण धर्म के हैं अथवा देवता धर्म के हैं तो भी वह हिन्दू में लगा देते हैं। क्योंकि और कोई नेचर तो उन्हों के पास है नहीं। तो हरेक का, रास्ता अलग होने से मालूम होगा और कोई धर्म वाला होगा तो इन बातों को मानेगा नहीं। फिर उनको इकट्ठा इकट्ठा समझाना मुश्किल है। और धर्म वाला होगा तो समझेगा कि यह तो अपने धर्म की महिमा करते हैं। इनमें देवत है। समझाने वाले बच्चे भी समझदार हैं। सब एक समान तो हैं नहीं। इसलिए

b अलग2 धर्मों को मंगाते हैं। (बाबा ने समझाया मुझे याद करो। मेरी श्रीमत पर चलो इसमें प्रेरणा आदि की बात नहीं। अगर प्रेरणा में कमी हो तो फिर बाप के आने की दरकार ही नहीं। शिवबाबा तो यहाँ हैं तो उनको प्रेरणा करने की क्या दरकार है। यह तो बाप की मत पर चलना होता है। प्रेरणा की बात नहीं।) कोई2 सन्देशी सन्देश से आती है, उसमें भी बहुत मिक्स हो जाता है। सन्देशी तो सब एक जैसी हैं नहीं। माया का बहुत इन्टरफेयर होता है।

c इसलिए देखना होगा है ईमान डोल माया है। यह बात ऐसी हो सकती है वा नहीं। फिर दूसरी सन्देशी से वेरीफाय कराना होता है। बाबा के पास समाचार आता है - फलानी सन्देशी ने यह सन्देश लाया है तो बाबा फट से लिख देते वेरीफाय कराओ। विचार किया जाता है - हम किसको मंगाते हैं, अगर आपे और बोले आप बैठ लिंदरा करे तो एकदम खराब आत्मा हो जाए ऐसे नहीं सन्देशी ने जो सन्देश लाया वह सच है। आजकल तो गांवड़ों में भी ध्यान में जाते हैं। फिर उल्टा सुल्टा सन्देश ले आते हैं। अपना अलग सेन्टर खोल बैठते हैं। माया का प्रवेश हो जाता है। यह बड़ी समझने की बात है। जो निश्चयबुद्धि बच्चे हैं, वही इन बातों को समझ सकते हैं। जो

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

यह पाई पैसे क्या करेंगे। तो अब बाप बच्चों को पुरूषार्थ कराते हैं, राजधानी स्थापन हो रही है, कहते भी हैं हम लक्ष्मी-नारायण से कम नहीं बनेंगे। तो श्रीमत पर चलकर दिखाओ। चूँ चां मत करो। बाबा ने थोड़ेही कहा – बाल बच्चों का क्या हाल होगा। एक्सीडेंट में अचानक कोई मर जाते हैं तो कोई भूखा रहता है क्या। कोई न कोई मित्र-सम्बन्धी आदि देते हैं खाने के लिए। यहाँ देखो बाबा पुरानी झोपड़ी में रहते हैं। तुम बच्चे आकर महलों में रहते हो। बाप कहेंगे बच्चे अच्छी रीति रहें, खायें, पियें। जो कुछ भी नहीं ले आये हैं उनको भी सब कुछ अच्छी रीति मिलता है। इस बाबा से भी अच्छी रीति रहते हैं। शिवबाबा कहते हैं हम तो हैं ही रमता योगी। कोई का भी कल्याण करने जा सकता हूँ। जो ज्ञानी बच्चे हैं वह कभी साक्षात्कार आदि की बातों में खुश नहीं होंगे। सिवाए योग के और कुछ भी नहीं। इन साक्षात्कार की बातों में खुश नहीं होना। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. योग की ऐसी स्थिति बनानी है जो दृष्टि से ही किसी को शान्त कर दें। एकदम सन्नाटा हो जाए। इसके लिए अशरीरी बनने का अभ्यास करना है।

२. ज्ञान के सच्चे नशे में रहने के लिए याद रहे कि हम संगमयुगी हैं, अब यह पुरानी दुनिया बदलने वाली है, हम अपने घर जा रहे हैं। श्रीमत पर सदा चलते रहना है, चूँ चाँ नहीं करनी है।

वरदान:- श्रेष्ठ पुरूषार्थ द्वारा फाइनल रिजल्ट में फर्स्ट नम्बर लेने वाले उड़ता पंछी भव

फाइनल रिजल्ट में फर्स्ट नम्बर लेने के लिए :-1- दिल के अविनाशी वैराग्य द्वारा बीती हुई बातों को, संस्कार रूपी बीज को जला दो। 2-अमृतवेले से रात तक ईश्वरीय नियमों और मर्यादाओं का सदा पालन करने का व्रत लो और 3-मन्सा द्वारा, वाणी द्वारा या सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा निरन्तर महादानी बन, पुण्य आत्मा बन दान पुण्य करते रहो। जब ऐसा श्रेष्ठ हाई जम्प देने वाला पुरूषार्थ हो तब उड़ता पंछी बन फाइनल रिजल्ट में नम्बर वन बन सकेंगे।

स्लोगन:-

कर्मयोगी वह है जो साधनों को कमल पुष्प बनकर यूज़ करते हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

2-11-99 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – अपने ऊपर पूरा-पूरा नज़र रखो, कोई भी बेकायदे चलन नहीं चलना, श्रीमत का उल्लंघन करने से गिर जायेंगे"

प्रश्न :- पद्मापद्मपति बनने के लिए कौन-सी खबरदारी चाहिए?

उत्तर:- सदैव ध्यान रहे – जैसा कर्म हम करेंगे हमें देख और भी करने लगेंगे। किसी भी बात का मिथ्या अहंकार न आये। मुरली कभी भी मिस न हो। मन्सा-वाचा-कर्मणा अपनी सम्भाल रखो। यह आंखें धोखा न दें तो पद्मों की कमाई जमा कर सकेंगे। इसके लिए अन्तर्मुखी होकर बाप को याद करो और विकर्मों से बचे रहो।

ओम् शान्ति। रुहानी बच्चों को बाप ने समझाया है, यहाँ तुम बच्चों को इस ख्याल से जरूर बैठना होता है, यह बाबा भी है, टीचर और सतगुरू भी है। और यह भी महसूस करते हो–बाबा को याद करते-करते पवित्र बन, पवित्रधाम में जाकर पहुँचेंगे। बाप ने समझाया है कि पवित्रधाम से ही तुम नीचे उतरते हो। उसका नाम ही है पवित्रधाम। सतोप्रधान से फिर सतो, रजो, तमो..... अभी तुम समझते हो कि हम नीचे गिरे हुए हैं अर्थात् वेश्यालय में हैं। भल तुम संगमयुग पर हो, परन्तु ज्ञान से तुम जानते हो कि हमने किनारा किया हुआ है फिर भी अगर हम शिवबाबा की याद में रहते हैं तो शिवालय दूर नहीं। शिवबाबा को याद नहीं करते तो शिवालय बहुत दूर है। सजायें खानी पड़ती हैं तो बहुत दूर हो जाता है। तो बाप बच्चों को कोई जास्ती तकलीफ नहीं देते हैं। एक तो बार-बार कहते हैं मन्सा-वाचा-कर्मणा पवित्र बनना है। यह आंखें भी बड़ा धोखा देती हैं, इनसे बहुत सम्भालकर चलना होता है। बाप ने समझाया है कि ध्यान और योग बिल्कुल अलग है। योग अर्थात् याद। आंखें खुली होते भी तुम याद कर सकते हो। ध्यान को कोई योग नहीं कहा जाता। भोग भी ले जाते हैं तो डायरेक्शन अनुसार ही जाना है। इसमें माया भी बहुत आती है। माया ऐसी है जो एकदम नाक में दम कर देती है। जैसे बाप बलवान है, वैसे माया भी बड़ी बलवान है। इतनी बलवान है जो सारी दुनिया को वेश्यालय में ढकेल दिया है इसलिए इसमें बहुत खबरदारी रखनी होती है। बाप की कायदे अनुसार याद चाहिए। बेकायदे कोई काम किया तो एकदम गिरा देती है। ध्यान आदि की कभी कोई इच्छा नहीं रखनी है। इच्छा मात्रम् अविद्या..... बाप तुम्हारी सब मनोकामनायें बिगर मांगे पूरी कर देते हैं, अगर बाप की आज्ञा पर चले तो। अगर बाप की आज्ञा न मान उल्टा रास्ता लिया तो हो सकता है स्वर्ग के बदले नर्क में ही गिर जाएं। गायन भी है गज को ग्राह ने खाया। बहुतों को ज्ञान देने वाले, भोग लगाने वाले आज हैं कहाँ, क्योंकि बेकायदे चलन के कारण पूरे मायावी बन जाते हैं। डीटी बनते-बनते डेविल बन जाते हैं। बाप जानते हैं कि बहुत अच्छे पुरुषार्थी जो देवता बनने वाले थे वह असुर बन असुरों के साथ रहते हैं। ट्रेटर हो जाते हैं। बाप का बनकर फिर माया के बन जाते, उन्हें ट्रेटर कहा जाता है। अपने ऊपर नज़र रखनी होती है। श्रीमत का उल्लंघन किया तो यह गिरे। पता भी नहीं

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

आदि होने का कायदा ही नही। लूट मार आदि वहाँ होती नहीं। नाम ही है स्वर्ग। अभी तुम बच्चों को स्मृति आई है हम स्वर्ग में थे फिर पुनर्जन्म लेते-लेते नीचे उतरते हैं। बाप कहानी भी उन्हों को ही बताते हैं। 84 जन्म नहीं लिये होंगे तो माया हरा देगी। यह भी बाप समझाते रहते हैं। माया का कितना बड़ा तूफान है। बहुतों को माया हराने की कोशिश करती है, आगे चल तुम बहुत देखेंगे, सुनेंगे। बाप के पास सबके चित्र होते तो तुमको वन्डर दिखाते—यह फलाना इतना दिन आया, बाप का बना फिर माया खा गई। मर गया, माया के साथ जा
c मिला। यहाँ इस समय कोई शरीर छोड़ते हैं तो इसी दुनिया में आकर जन्म लेते हैं। तुम शरीर छोड़ोगे तो बाबा के साथ बेहद घर में जायेंगे। वहाँ बाबा, मम्मा, बच्चे सब हैं ना। परिवार ऐसा ही होता है। मूलवतन में बाप और भाई-भाई हैं, और कोई सम्बन्ध नहीं। यहां बाप और भाई-बहन हैं फिर वृद्धि को पाते हैं। चाचा, मामा आदि बहुत संबंध हो जाते हैं। इस संगम पर तुम प्रजापिता ब्रह्मा के बनते हो तो भाई-बहिन हो। शिवबाबा को याद करते हो तो भाई-भाई हो। यह सब बातें अच्छी रीति याद करनी हैं। बहुत बच्चे भूल जाते हैं। बाप तो समझाते रहते हैं। बाप का फ़र्ज है बच्चों को सिर पर उठाना, तब तो नमस्ते-नमस्ते करते रहते हैं। अर्थ भी समझाते हैं। भक्ति करने वाले साधू-सन्त आदि कोई तुमको जीवनमुक्ति का रास्ता नहीं बताते, वह मुक्ति के लिए ही पुरूषार्थ करते रहते हैं। वह हैं ही निर्वृत्ति मार्ग वाले। वह राजयोग कैसे सिखलायेंगे। राजयोग है ही प्रवृत्ति मार्ग का। प्रजापिता ब्रह्मा को 4 भुजायें देते हैं तो प्रवृत्ति मार्ग हुआ ना। यहाँ बाप ने इनको एडाप्ट किया तो नाम रखा है ब्रह्मा और
d सरस्वती। ड्रामा में नूँध देखो कैसी है। वानप्रस्थ अवस्था में ही मनुष्य गुरु करते हैं, 60 वर्ष के बाद। इसमें भी 60 वर्ष के बाद बाप ने प्रवेश किया तो बाप, टीचर, गुरु बन गये। अभी तो कायदे भी बिगड़ गये हैं। छोटे बच्चे को भी गुरु करा देते हैं। यह तो है ही निराकार। तुम्हारी आत्मा का यह बाप भी बनते, टीचर, सतगुरु भी बनते हैं। निराकारी दुनिया को कहा जाता है आत्माओं की दुनिया। ऐसे तो नहीं कहेंगे दुनिया ही नहीं है। शान्तिधाम कहा जाता है वहाँ आत्मायें रहती हैं। अगर कहें परमात्मा का नाम, रूप, देश, काल नहीं तो बच्चे फिर कहाँ से आयेंगे।

तुम बच्चे अब समझते हो यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है। हिस्ट्री चैतन्य में होती है, जॉग्राफी तो जड़ वस्तु की है। तुम्हारी आत्मा जानती है हम कहाँ तक राज्य करते हैं। हिस्ट्री गाई जाती है जिसकी कहानी कहा जाता है। जॉग्राफी देश की होती है। चैतन्य ने राज्य किया, जड़ तो राज्य नहीं करेंगे। कितने समय से फलाने का राज्य था, क्रिश्चियन ने भारत पर कब से कब तक राज्य किया। तो इस वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी को कोई जानते ही नहीं। कहते है सतयुग को तो लाखों वर्ष हुआ। उसमें कौन राज्य करके गये, कितना समय राज्य किया—यह कोई नहीं जानता। इसको कहा जाता है हिस्ट्री। आत्मा चैतन्य, शरीर जड़ है। सारा खेल ही जड़ और चैतन्य का है। मनुष्य जीवन ही उत्तम गाया जाता है। आदमशुमारी भी मनुष्यों की गिनी जाती है। जानवरों की तो कोई गिनती कर भी न सके। सारा खेल तुम्हारे पर है। हिस्ट्री-जॉग्राफी भी तुम सुनते हो। बाप आपे आकर तुमको सब बातें समझाते हैं, इसको कहा जाता है बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी। यह नालेज न होने कारण तुम कितने बेसमझ

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बन पड़े हो। मनुष्य होकर दुनिया की हिस्ट्री-जॉग्राफी को न जानें तो वह मनुष्य ही क्या काम का। अभी बाप द्वारा तुम वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी सुन रहे हो। यह पढ़ाई कितनी अच्छी है, कौन पढ़ाते हैं? बाप। बाप ही ऊंच ते ऊंच पद दिलाने वाला है। इन लक्ष्मी-नारायण का और जो उन्हों के साथ स्वर्ग में रहते हैं उन्हों का ऊंच ते ऊंच पद है ना। वहाँ बैरिस्टरी आदि तो करते नहीं। वहाँ तो सिर्फ सीखना है। हुनर न सीखें तो मकान आदि कैसे बनें। एक-दो को हुनर सिखलाते हैं। नहीं तो इतने मकान आदि कौन बनायेंगे। आपेही तो नहीं बन जायेंगे। यह सब राज़ अभी तुम बच्चों की बुद्धि में भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार रहते हैं। तुम जानते हो यह चक्र फिरता रहता है, इतना समय हम राज्य करते थे फिर रावण के राज्य में आते हैं। दुनिया को इन बातों का पता नहीं है कि हम रावण राज्य में हैं। कहते हैं हमको बाबा रावण के राज्य से लिबरेट करो। कांग्रेसी लोगों ने क्रिश्चियन राज्य से अपने को लिबरेट किया। अब फिर कहते हैं गॉड फादर हमको लिबरेट करो। स्मृति आती है ना कोई भी यह नहीं जानते कि ऐसे क्यों कहते हैं। अभी तुमने समझा है सारे सृष्टि पर ही रावण राज्य है, सब कहते हैं रामराज्य चाहिए तो लिबरेट कौन करेगा? समझते हैं गॉड फादर लिबरेट कर गाइड बन ले जायेंगे। भारतवासियों को इतना अक्ल नहीं है। यह तो बिल्कुल तमोप्रधान हैं। वह न इतना दुःख उठाते हैं, न इतना सुख ही पाते हैं। भारतवासी सबसे सुखी बनते हैं तो दुःखी भी बने हैं। हिसाब है ना। अभी कितना दुःख है। जो रिलीजस माइन्डेड हैं वह याद करते हैं—ओ गॉड फादर, लिबरेटर। तुम्हारी भी दिल में है बाबा आकर हमारे दुःख हरो और सुखधाम ले चलो। वह कहते हैं शान्तिधाम ले चलो। तुम कहेंगे शान्तिधाम और सुखधाम ले चलो। अब बाप आया हुआ है तो बहुत खुशी होनी चाहिए। भक्ति मार्ग में कनरस कितना है। उनमें रीयल बात कुछ भी है नहीं। एकदम आटे में नमक है। चण्डिका देवी का भी मेला लगता है। अब चण्डियों का फिर मेला क्यों लगता है? चण्डी किसको कहा जाता है? बाबा ने बताया है चण्डाल का जन्म भी यहाँ के ही लेते हैं। यहाँ रहकर, खा पीकर कुछ देकर फिर कहते हैं—हमने जो दिया वह हमको दो। हम नहीं मानते। संशय पड़ जाता है तो वह क्या जाकर बनेंगे। ऐसी चण्डिका का भी मेला लगता है। फिर भी सतयुगी तो बनते हैं ना। कुछ समय भी मददगार बने तो स्वर्ग में आ गये। वह भक्त लोग तो जानते नहीं, ज्ञान तो कोई के पास है नहीं। वह चित्रों वाली गीता है, कितना पैसा कमाते हैं। आजकल चित्रों पर तो सब आशिक होते हैं। उसको आर्ट समझते हैं। मनुष्यों को क्या पता देवताओं के चित्र कैसे होते हैं। तुम असुल में कितने फर्स्टक्लास थे। फिर क्या बन गये हो। वहाँ कोई अंधा, काना आदि होता नहीं। देवताओं की नैचुरल शोभा होती है। वहाँ नैचुरल ब्युटी होती है। तो बाप भी सब समझाकर फिर भी कहते हैं—बच्चे, बाप को याद करो। बाप, बाप भी है, टीचर, सतगुरु भी है। तीनों रूप में याद करो तो तीनों वर्से मिलेंगे। पिछाड़ी वाले तीनों रूप में याद कर नहीं सकेंगे। फिर मुक्ति में चले जायेंगे।

e बाबा ने समझाया है सूक्ष्मवतन आदि में जो कुछ देखते हो वह तो सब है साक्षात्कार की बात। बाकी हिस्ट्री-जॉग्राफी सारी यहाँ की है। इनकी आयु का किसको पता नहीं है। अभी तुम बच्चों को बाप ने समझाया है तुम फिर कोई को भी समझा सकते हो। पहले-पहले तो बाप का

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

वाले हैं। सारा दिन यही झरमुई झगमुई की बातें करते रहते हैं। यह बहुत खराब है। कोई भी बात हो तो बाप को रिपोर्ट करनी चाहिए। सुधारने वाला तो एक ही बाप है। तुम अपने हाथ में लॉ नहीं उठाओ। तुम बाप की याद में रहो। सभी को बाप का परिचय देते रहो तब ऐसा बन सकेंगे। माया बहुत कड़ी है। किसको नहीं छोड़ती। सदैव बाप को समाचार लिखना चाहिए। डायरेक्शन लेते रहना चाहिए। यूँ तो डायरेक्शन सदैव मिलते रहते हैं। ऐसे तो बच्चे समझते हैं बाबा ने तो आपेही इस बात पर समझा दिया, बाबा तो अन्तर्यामी है। बाबा कहते नहीं, मैं तो नॉलेज पढ़ाता हूँ। इसमें अन्तर्यामी की बात ही नहीं। हाँ, यह जानता हूँ कि यह सब मेरे बच्चे हैं। हर एक शरीर के अन्दर मेरे बच्चे हैं। बाकी ऐसे नहीं कि बाप सभी के अन्दर विराजमान है। मनुष्य तो उल्टा ही समझ लेते हैं। बाप कहते हैं मैं जानता हूँ कि सभी तख्त पर आत्मा विराजमान हैं। यह तो कितनी सहज बात है। सभी चैतन्य आत्मायें अपने-अपने तख्त पर बैठी हैं फिर भी परमात्मा को सर्वव्यापी कह देते हैं, यह है एकज भूल। इस कारण ही भारत इतना गिरा हुआ है। बाप कहते हैं तुमने मेरी बहुत ग्लानि की है। विश्व के मालिक बनाने वाले को तुमने गाली दी है। इसलिए बाप कहते हैं यदा यदाहि.....। बाहर वाले यह सर्वव्यापी का ज्ञान भारतवासियों से सीखते हैं। जैसे भारतवासी उनसे हुनर सीखते हैं वह फिर उल्टा सीखते हैं। तुम्हें तो एक बाप को याद करना है और बाप का परिचय भी सबको देना है। तुम हो अन्धों की लाठी। लाठी से राह बतलाते हैं ना। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. बाप की आज्ञा अनुसार हर कार्य करना है। कभी भी श्रीमत का उल्लंघन न हो। तब ही सर्व मनोकामनायें बिना मांगे पूरी होंगी। ध्यान दीदार की इच्छा नहीं रखनी है, इच्छा मात्रम् अविद्या बनना है।

२. आपस में मिलकर झरमुई झगमुई (एक दूसरे का परचिंतन) नहीं करना है। अन्तर्मुख हो अपनी जांच करनी है कि हम बाबा की याद में कितना समय रहते हैं, ज्ञान का मंथन अन्दर चलता है?

वरदान:- सर्व पदार्थों की आसक्तियों से न्यारे अनासक्त, प्रकृतिजीत भव

अगर कोई भी पदार्थ कर्मेन्द्रियों को विचलित करता है अर्थात् आसक्ति का भाव उत्पन्न होता है तो भी न्यारे नहीं बन सकेंगे। इच्छायें ही आसक्तियों का रूप हैं। कई कहते हैं इच्छा नहीं है लेकिन अच्छा लगता है। तो यह भी सूक्ष्म आसक्ति है - इसकी महीन रूप से चेकिंग करो कि यह पदार्थ अर्थात् अल्पकाल सुख के साधन आकर्षित तो नहीं करते हैं? यह पदार्थ प्रकृति के साधन हैं, जब इनसे अनासक्त अर्थात् न्यारे बनेंगे तब प्रकृतिजीत बनेंगे।

स्लोगन:-

मेरे-मेरे के झमेलों को छोड़ बेहद में रहो तब कहेंगे विश्व कल्याणकारी।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

23-6-99 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – याद से विकर्म विनाश होते हैं, ट्रांस से नहीं। ट्रांस तो पाई पैसे का खेल है, इसलिए ट्रांस में जाने की आश नहीं रखो"

प्रश्नः- माया के भिन्न-भिन्न रूपों से बचने के लिए बाप सब बच्चों को कौन-सी एक सावधानी देते हैं?

उत्तरः- मीठे बच्चे, ट्रांस की आश मत रखो। ज्ञान-योग में ट्रांस का कोई कनेक्शन नहीं। मुख्य है पढ़ाई। कोई ट्रांस में जाकर कहते हैं हमारे में ममा आई, बाबा आया। यह सब सूक्ष्म माया के संकल्प हैं। इनसे बहुत सावधान रहना है। माया कई बच्चों में प्रवेश कर उल्टा कार्य करा देती है इसलिए ट्रांस की आश नहीं रखनी है।

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चे यह तो समझ गये हैं कि एक तरफ है भक्ति, दूसरे तरफ है ज्ञान। भक्ति तो अथाह है और सिखाने वाले अनेक हैं। शास्त्र भी सिखाते हैं, मनुष्य भी सिखाते हैं। यहाँ न कोई शास्त्र है, न मनुष्य हैं। यहाँ सिखाने वाला एक ही रूहानी बाप है जो आत्माओं को समझाते हैं। आत्मा ही धारण करती है। परमपिता परमात्मा में यह सारा ज्ञान है, 84 के चक्र का उनमें नॉलेज है, इसलिए उनको भी स्वदर्शन चक्रधारी कह सकते हैं। हम बच्चों को भी वह स्वदर्शन चक्रधारी बना रहे हैं। बाबा भी ब्रह्मा के तन में है, इसलिए उनको ब्राह्मण भी कहा जा सकता है। हम भी उनके बच्चे ब्राह्मण सो देवता बनते हैं। अब बाप बैठ याद की यात्रा सिखलाते हैं, इसमें हठयोग आदि की कोई बात नहीं। वह लोग हठयोग से ट्रांस आदि में जाते हैं। यह कोई बड़ाई नहीं है। ट्रांस की बड़ाई कुछ भी नहीं है। ट्रांस तो एक पाई पैसे का खेल है। तुम्हें ऐसे कभी किसी को नहीं कहना है कि हम ट्रांस में जाते हैं क्योंकि आजकल विलायत आदि में जहाँ-तहाँ ढेर के ढेर ट्रांस में जाते हैं। ट्रांस में जाने से न उनको कोई फ़ायदा है, न तुमको कोई फ़ायदा है। बाबा ने समझ दी है। ट्रांस में न तो याद की यात्रा है, न ज्ञान है। ध्यान अथवा ट्रांस वाला कभी कुछ भी ज्ञान नहीं सुनेगा, न कोई पाप भस्म होंगे। ट्रांस का महत्व कुछ भी नहीं है। बच्चे योग लगाते हैं, उनको कोई ट्रांस नहीं कहा जाता है। याद से विकर्म विनाश होंगे। ट्रांस में विकर्म विनाश नहीं होंगे। बाबा सावधान करते हैं कि बच्चे ट्रांस का शौक मत रखो। तुम जानते हो इन सन्यासियों आदि को ज्ञान तब मिलता है जबकि विनाश का समय होता है। भल तुम उन्हें ऐसे निमन्त्रण देते रहो लेकिन यह ज्ञान उनके कलष में जल्दी नहीं आयेगा। जब विनाश सामने देखेंगे तब आयेंगे। समझेंगे अब तो मौत आया कि आया। जब नज़दीक देखेंगे तब मानेंगे। उन्हों का पार्ट ही अन्त में है। तुम कहते हो अब विनाश आया कि आया, मौत आना है। वह समझते हैं इन्हों के यह गपोड़े हैं। जैसे तुम भक्ति को गपोड़ा समझते हो, वैसे वह फिर तुम्हारे ज्ञान को गपोड़ा समझते हैं। तुम्हारा झाड़ धीरे-धीरे बढ़ता है। सन्यासियों को सिर्फ कहना है कि बाप को याद करो। यह भी बाप ने समझाया है कि तुमको ऑखें बन्द नहीं करनी है। आंखे बन्द होंगी तो बाप को कैसे देखेंगे। हम आत्मा है,

a

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

परमपिता परमात्मा के सामने बैठे हैं। वह देखने में नहीं आता है, लेकिन यह ज्ञान बुद्धि में है। तुम बच्चे समझते हो परमपिता परमात्मा हमको पढ़ा रहे हैं - इस शरीर के आधार से। ध्यान आदि की कोई बात ही नहीं। ध्यान में जाना कोई बड़ी बात नहीं है। यह भोग आदि की ड्रामा में सब नूँध है। सर्वेन्ट बन भोग लगाकर आते हो। जैसे सर्वेन्ट लोग बड़े आदमी को खिलाते हैं। तुम भी सर्वेन्ट हो, देवताओं को भोग लगाने जाते हो। वह हैं फ़रिश्ते। वहाँ मम्मा-बाबा को देखते हैं। वह सम्पूर्ण मूर्ति भी एम आब्जेक्ट है। उनको ऐसा फ़रिश्ता किसने बनाया? बाकी ध्यान में जाना तो कोई बड़ी बात नहीं है। जैसे यहाँ शिवबाबा तुमको पढ़ाते हैं, वैसे वहाँ भी शिवबाबा इन द्वारा कुछ समझायेंगे। सूक्ष्मवतन में क्या होता है? यह सिर्फ जानना होता है। बाकी ट्रांस आदि को कुछ भी महत्व नहीं देना है। कोई को ट्रांस दिखलाना - यह भी बचपन है। बाबा सबको सावधान करते हैं – ट्रांस में मत जाओ।

यह पढ़ाई है, कल्प-कल्प बाप आकर तुमको पढ़ाते हैं। अभी है संगमयुग। तुमको ट्रांसफर होना है। ड्रामा के प्लैन अनुसार तुम पार्ट बजा रहे हो, पार्ट की महिमा है। बाप आकर पढ़ाते हैं ड्रामा अनुसार। तुमको बाप से एक बार पढ़कर मनुष्य से देवता जरूर बनना है। इसमें बच्चों को तो खुशी होती है। हम बाप को भी और रचना के आदि मध्य अन्त को भी जान गये हैं। बाप की शिक्षा पाकर बहुत हर्षित होना चाहिए। तुम पढ़ते ही हो नई दुनिया के लिए। वहाँ है ही देवताओं का राज्य तो जरूर पुरूषोत्तम संगमयुग पर पढ़ना होता है। तुम इस दुःख से छूटकर सुख मे जाते हो। यहाँ तमोप्रधान होने कारण तुम बीमार आदि होते हो। यह सब रोग मिट जाने हैं। मुख्य है ही पढ़ाई, इनसे ट्रांस आदि का कनेक्शन नहीं है। यह बड़ी बात नहीं। बहुत जगह ऐसे ध्यान में चले जाते हैं फिर कहते मम्मा आई, बाबा आया। बाप कहते हैं यह कुछ भी नहीं है। बाप तो एक ही बात समझाते हैं—तुम जो आधाकल्प देह-अभिमानी बन पड़े हो, अब देही-अभिमानी बन बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हों, इसको याद की यात्रा कहा जाता है। योग कहने से यात्रा नहीं सिद्ध होती। तुम आत्माओं को यहाँ से जाना है, तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। तुम अभी यात्रा कर रहे हो। उन्हों का जो योग है, उसमें यात्रा की बात नहीं। हठयोगी तो ढेर हैं। वह है हठयोग, यह है बाप को याद करना। बाप कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों अपने को आत्मा समझो। ऐसे और कोई कभी नहीं समझायेंगे। यह तो है पढ़ाई। बाप का बच्चा बना फिर बाप से पढ़ना और पढ़ाना है। कोई को बुलाना नहीं है। बाबा कहते हैं तुम म्युज़ियम खोलो, आपेही तुम्हारे पास आयेंगे। बुलाने की तकलीफ़ नहीं होगी। कहेंगे यह ज्ञान तो बड़ा अच्छा है, कभी सुना नहीं है। इसमें तो कैरेक्टर सुधरते हैं। मुख्य है ही पवित्रता, जिस पर ही हंगामें आदि होते हैं। बहुत फेल भी होते हैं। तुम्हारी अवस्था ऐसी हो जाती है जो इस दुनिया में होते हुए उनको देखते नहीं हैं। खाते पीते भी तुम्हारी बुद्धि उस तरफ हो। जैसे बाप नया मकान बनाते हैं तो सबकी बुद्धि नये मकान तरफ चली जाती है ना। अभी नई दुनिया बन रही है। बेहद का बाप बेहद का घर बना रहे हैं। तुम जानते हो हम स्वर्गवासी बनने के लिए पुरूषार्थ कर रहे हैं। अब चक्र पूरा हुआ है। अब हमको घर और स्वर्ग में जाना है तो उसके लिए

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

पावन भी जरूर बनना है। याद की यात्रा से पावन बनना है। याद में ही विघ्न पड़ते हैं। इसमें ही तुम्हारी लड़ाई है। पढ़ाई में लड़ाई की बात नहीं होती। पढ़ाई तो बिल्कुल सिम्पल है। 84 के चक्र की नॉलेज तो बहुत सहज है। बाकी अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो, इसमें है मेहनत। बाप कहते हैं याद की यात्रा भूलो मत। कम से कम 8 घण्टा तो जरूर याद करो। शरीर निर्वाह के लिए कर्म भी करना है। नींद भी करनी है। सहज मार्ग है ना। अगर कहें नींद न करो, तो यह हठयोग हो गया। हठयोगी तो बहुत हैं। बाप कहते हैं उस तरफ कुछ भी नहीं देखो, उससे कुछ फ़ायदा नहीं। कितने हठयोग आदि सिखलाते हैं। यह सब है मनुष्य मत। तुम आत्मायें हो, आत्मा ही शरीर ले पार्ट बजाती है, डॉक्टर आदि बनती है। परन्तु मनुष्य देह-अभिमानी बन पड़े हैं—मैं फलाना हूँ....।

अभी तुम्हारी बुद्धि में है—हम आत्मा हैं। बाप भी आत्मा है। इस समय तुम आत्माओं को परमपिता पढ़ाते हैं। इसलिए गायन है—आत्मायें परमात्मा अलग रहे बहुकाल.. कल्प-कल्प मिलते हैं। बाकी जो भी सारी दुनिया है, वह सब देह-अभिमान में आकर देह समझकर ही पढ़ते पढ़ाते हैं। बाप कहते हैं मैं आत्माओं को पढ़ाता हूँ। जज, बैरिस्टर आदि भी आत्मा बनती है। तुम आत्मा सतोप्रधान पवित्र थी फिर तुम पार्ट बजाते-बजाते सब पतित बने हो तब पुकारते हो बाबा आकर हमको पावन आत्मा बनाओ। बाप तो है ही पावन। यह बात जब सुनें तब धारणा हो। तुम बच्चों को धारणा होती है तो तुम देवता बनते हो। और कोई की बुद्धि में बैठेगा नहीं क्योंकि यह है नई बात। यह है ज्ञान। वह है भक्ति। तुम भी भक्ति करते-करते देह-अभिमानी बन जाते हो। अब बाप कहते हैं—बच्चे, आत्म-अभिमानी बनो। हम आत्माओं को बाप इस शरीर द्वारा पढ़ाते हैं। घड़ी-घड़ी याद रखो यह एक ही समय है जब आत्माओं का बाप परमपिता पढ़ाते हैं। बाकी तो सारे ड्रामा में कभी पार्ट ही नहीं है, सिवाए इस संगमयुग के। इसलिए बाप फिर भी कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों अपने को आत्मा निश्चय करो, बाप को याद करो। यह बड़ी ऊंची यात्रा है — चढ़े तो चाखे वैकुण्ठ रस। विकार में गिरने से एकदम चकनाचूर हो जाते हैं। फिर भी स्वर्ग में तो आयेंगे, लेकिन पद बहुत कम होगा। यह राजाई स्थापन हो रही है। इसमें कम पद वाले भी चाहिए, सब थोड़ेही ज्ञान में चलते हैं। फिर तो बाबा को बहुत बच्चे मिलने चाहिए। अगर मिलते हैं तो भी थोड़े टाइम के लिए। तुम माताओं की बहुत महिमा है, वन्दे मातरम् भी गाया जाता है। जगत अम्बा का कितना बड़ा भारी मेला लगता है क्योंकि बहुत सर्विस की है। जो बहुत सर्विस करते हैं वह बड़ा राजा बनते हैं। देलवाड़ा मन्दिर में तुम्हारा ही यादगार है। तुम बच्चियों को तो बहुत टाइम निकालना चाहिए। तुम भोजन आदि बनाती हो तो बहुत शुद्ध भोजन याद में बैठ बनाना चाहिए, जो किसको खिलायें तो उनका भी हृदय शुद्ध हो जाये। ऐसे बहुत थोड़े हैं, जिनको ऐसा भोजन मिलता होगा। अपने से पूछो—हम शिवबाबा की याद में रहकर भोजन बनाते हैं, जो खाने से ही उनके हृदय पिघल जायें। घड़ी-घड़ी याद भूल जाती है। बाबा कहते हैं भूलेंगे... क्योंकि तुम 16 कला तो अभी बने नहीं हो। सम्पूर्ण बनना जरूर है। पूर्णिमा के चन्द्रमा में कितना तेज होता है, फिर कम होते-होते लकीर जाकर रहती

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

है। घोर अन्धियारा हो जाता है फिर घोर सोझरा। यह विकार आदि छोड़ बाप को याद करते रहेंगे तो तुम्हारी आत्मा सम्पूर्ण बन जायेगी। तुम चाहते हो महाराजा बनें परन्तु सब तो बन न सकें। पुरूषार्थ सबको करना है। कोई तो कुछ पुरूषार्थ नहीं करते इसलिए महारथी, घोड़ेसवार, प्यादे कहा जाता है। महारथी थोड़े होते हैं। प्रजा वा लश्कर जितना होता है, उतने कमान्डर्स वा मेजर्स नहीं होते हैं। तुम्हारे में भी कमान्डर्स, मेजर्स, कैप्टन हैं। प्यादे भी हैं। तुम्हारी भी यह रूहानी सेना है ना। सारा मदार है याद की यात्रा पर। उनसे ही बल मिलेगा। तुम हो गुप्त वारियर्स। बाप को याद करने से विकर्मों का जो किचड़ा है वह भस्म हो जाता है। बाप कहते हैं धन्धाधोरी भल करो। बाप को याद करो। तुम जन्म-जन्मान्तर के आशिक हो, एक माशूक के। अब वह माशूक मिला है तो उनको याद करना है। आगे भल याद करते थे परन्तु विकर्म विनाश थोड़ेही होते थे। बाप ने बताया है तुमको यहाँ तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। आत्मा को ही बनना है। आत्मा ही मेहनत कर रही है। इसी जन्म में तुम्हें जन्म-जन्मान्तर की मैल को उतारना है। यह है मृत्युलोक का अन्तिम जन्म फिर जाना है अमरलोक। आत्मा पावन बनने बिगर तो जा नहीं सकती। हिसाब-किताब सबका चुक्तू हो जाना है। फिर अगर सजायें खायेंगे तो पद कम हो जायेगा। जो सज़ा नहीं खाते हैं वह सिर्फ माला के 8 दाने कहे जाते हैं। 9 रत्नों की ही अंगूठी आदि बनती है। ऐसा बनना है तो बाप को याद करने की बहुत मेहनत करनी है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. संगमयुग पर स्वयं को ट्रांसफर करना है। पढ़ाई और पवित्रता की धारणा से अपने कैरेक्टर सुधारने हैं, ट्रांस आदि का शौक नहीं रखना है।

२. शरीर निर्वाह अर्थ कर्म भी करना है, नींद भी करनी है, हठयोग नहीं है, लेकिन याद की यात्रा को कभी भूलना नहीं है। योगयुक्त होकर ऐसा शुद्ध भोजन बनाओ और खिलाओ जो खाने वाले का हृदय शुद्ध हो जाये।

वरदान:- अलबेलेपन की लहर को-विदाई दे सदा उमंग-उत्साह में रहने वाली समझदार आत्मा भव

कई बच्चे दूसरों को देखकर स्वयं अलबेले हो जाते हैं। सोचते हैं ये तो होता ही है....चलता ही है..क्या एक ने ठोकर खाई तो उसे देखकर अलबेलेपन में आकर खुद भी ठोकर खाना - यह समझदारी है? बापदादा को रहम आता है कि ऐसे अलबेले रहने वालों के लिए पश्चाताप की घड़ियाँ कितनी कठिन होंगी, इसलिए समझदार बन अलबेलेपन की लहर को, दूसरों को देखने की लहर को मन से विदाई दो। औरों को नहीं देखो, बाप को देखो।

स्लोगन:-

अचल बनना है तो व्यर्थ और अशुभ को समाप्त करो।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

20.11.88 प्रात: क्लास ओम शान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे - ते लहित यह सब कुछ खत्म होने वाला है, इसलिए तुम्हें पुरानी दुनिया के समाचार सुनने की दरकार नहीं, तुम बाप और वर्से को याद करो"

प्रश्न:- श्रीमत के लिए गायन कौन सा है? श्रीमत पर चलने वालों की निशानी सुनाओ?

उत्तर:- श्रीमत के लिए गायन है, जो खिलायेंगे, जो पहनायेंगे, जहाँ बिठायेंगे... वही करेंगे। श्रीमत पर चलने वाले बच्चे बाप की हर आज्ञा का पालन करते हैं। उनसे सदा श्रेष्ठ कर्म होते हैं। वे कभी भी अपनी मनमत चलाना बस नहीं करते। उनमें राइट और रांग की समझ होती है

गीत:- बनवारी रे... ओम शान्ति। यह गीत किसका है? बच्चों का। कोई गीत होता है - जिसमें बाप समझाते हैं, इसमें बच्चे कहते हैं कि बाबा अब तो हम समझ गये, दुनिया को तो पता नहीं कि कैसी यह झूठी दुनिया है। झूठे बंधन हैं यहाँ तब दुखी हैं, तब ईश्वर को याद करते हैं। सतयुग में तो ईश्वर से मिलने की बात ही नहीं है। वहाँ सुख है तब आत्माओं को याद पड़ता है - परन्तु द्वापर अनुसार बाप मिलते ही तब हैं जब स्वर्ग आते हैं। बाबा कहते हैं जो भी पुरुषार्थ करते हैं सब व्यर्थ। क्योंकि ईश्वर को सर्वव्यापी मानते हैं। ईश्वर का रास्ता गलत बताते हैं। अगर कहें कि ईश्वर और उनकी रचना के आदि मध्य अन्त को हम नहीं जानते हैं तो यह कहना सच है। आप पिता मुनि आदि सब बनते थे, उसी समय है रजोगुणी। उस समय झूठी दुनिया नहीं कहेंगे। झूठी दुनिया नर्क कलियुग अन्त को कहते हैं। संगम पर कहेंगे यह नर्क है, वह स्वर्ग है। सतो नहीं द्वापर को नर्क कहेंगे। उस समय फिर भी रजोप्रधान बुद्धि है। अभी है तमोप्रधान। तो हेल और हैविन संगम पर लिखेंगे। आज हेल है, कल हेविन होगा। यह भी बाप आकर समझाते हैं, दुनिया नहीं जानती कि इस समय कलियुग का अन्त है। सब अपना2 हिसाब किताब चुक्तू कर अन्त में तमोप्रधान बनते हैं फिर सतो रजो तमो में आना ही है, जिनका एक दो जन्म का पार्ट है, वह भी सतो रजो तमो में आते हैं। उन्हों का पार्ट ही थोड़ा है। इसमें बड़ी समझ चाहिए दुनिया में तो अनेक मत वाले मनुष्य हैं, सबकी एक मत तो नहीं होगी। हरेक का अपना2 धर्म है

a तब बाबा कहते हैं - 7-8 को पार्टी आती है तो हर एक से फार्म भराना है। हर एक की गति-मत अपनी2 है। बाप का आक्यूपेशन अलग, हरेक आत्मा का अलग2 है। धर्म भी अलग2 है। तो उनके लिए समझानी भी अलग2 चाहिए। नाम रूप देश काल सब अलग है। देखने में आता है यह फलाने धर्म का है। हिन्दू धर्म तो सब कहते हैं परन्तु उनमें भी सब भिन्न2 हैं। कोई आर्य-समाजी, कोई सन्यासी, कोई गद्दी नशीन। सन्यासी आदि जो भी हैं सबको हिन्दू धर्म में मानते हैं। हम लिखें कि हम ब्राह्मण धर्म के हैं अथवा देवता धर्म के हैं तो भी वह हिन्दू में लिख देते हैं। क्योंकि और कोई सेक्शन तो उन्हों के पास है नहीं। तो हरेक का, रूप अलग होने से मालूम पड़ जाता है और कोई धर्म वाला होगा तो इन बातों को मानेगा नहीं। फिर उनको इकट्ठा समझाना मुश्किल है। और धर्म वाला होगा तो समझेगा कि यह तो अपने धर्म की महिमा करते हैं। इनमें हेत है। समझाने वाले बच्चे भी समझदार हैं। सब एक समान तो हैं नहीं। इसलिए

b अलग धर्म को मंगाते हैं। बाबा ने समझाया मुझे याद करो। मेरी श्रीमत पर चलो इसमें प्रेरणा आदि की बात नहीं। अगर प्रेरणा से काम हो तो फिर बाप के आने की दरकार ही नहीं। शिवबाबा तो यहाँ हैं तो उनको प्रेरणा करने की क्या दरकार है। यह तो बाप की मत पर

c चलना होता है। प्रेरणा की बात नहीं। कोई2 सन्देशियों सन्देश ले आती है, उसमें भी बहुत मिक्स हो जाता है। सन्देशी तो सब एक जैसी हैं नहीं। माया का बहुत इन्टरफेयर होता है। इसलिए देखना होता है पैगाम ठीक लाया है। यह बात ऐसी हो सकती है वा नहीं। फिर दूसरे सन्देशी से वेरीफाय कराना होता है। बाबा के पास समाचार आता है - फलानी सन्देशी ने यह सन्देश लाया है तो बाबा पट से लिख देते वेरीफाय कराओ। तियार किया जाता है। हम किसको मंगाते हैं, अगर आपे और बोले की मैं नहीं मिटा दूँ तो एकदम खराब असर हो जाए ऐसे नहीं सन्देशी ने जो सन्देश लाया वह सच है। आजकल तो गांवड़ों में भी ध्यान में जाते हैं। फिर उल्टा टल्टा सन्देश ले आते हैं। अपना अलग सेन्टर खोल बैठते हैं। माया का प्रवेश हो जाता है। यह बड़ी सावधानी की बात है। जो तकदीरवान बच्चे हैं, वही इन बातों को समझ सकते हैं। जो श्रीमत पर हो वही सच्चे सब सन्देशों को [illegible]

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बिठायेंगे, जो पहनायेंगे, जहाँ बिठायेंगे, वह करेंगे। ऐसे कोई तो बाप को मदद पर पहले हैं कोई कोई कोई वस्तु नहीं मिलती तो झट मिल पड़ते। तब थोड़ेही एक जैसे सपूत बच्चे हो सकते हैं। दुनिया में तो देर की देर मत वाले हैं। अजामिल जैसी पापात्मायें लाखों बहुत हैं। यह तो है ही रावणराज्य। यह भी समझाना पड़ता है। ईश्वर सर्वव्यापी कहना रांग है। सर्वव्यापी तो 5 विकार हैं। इसलिए बाप कहते हैं यह आसुरी दुनिया है। सतयुग में 5 विकार होते नहीं। कहते हैं शास्त्रों में यह बात है। परन्तु शास्त्र तो सब मनुष्यों ने बनाये हैं। तो उन मनुष्य द्वारा मनुष्य को सुनाने वाले भी मनुष्य ही हैं। सिखाने वाले भी मनुष्य। व्यास ने लिखा वह भी मनुष्य था ना। यह तो निराकारी बाप बैठ समझाते हैं। धर्म स्थापकों ने जो आकर के सुनाया उसका फिर बाद में शास्त्र बनता है। जैसे गुरुनानक ने सुनाया, बाद में फिर ग्रंथ बनता है। तो जिसने सुनाया उसका नाम हो गया। गुरु नानक ने भी उसकी महिमा गाई है। सबका बाप वह एक है। वह है पैगाम ले आने वाला। बाप कहते हैं जरूर पतित स्थापन करो। यह बेहद का बाप कहते हैं-मुझे तो कोई भेजने वाला नहीं। शिवबाबा झुट बैठ समझाते हैं। यह है मैसेज ले आने वाले, मुझे कोई भेजने वाला नहीं। मुझे मैसेन्जर वा पैगम्बर नहीं कहेंगे। मैं तो आता हूँ बच्चों को सुख शान्ति देने। मुझे कोई ने कहा नहीं। मैं तो झुट
d मालिक हूँ। फल्याबाद में मालिक को मानते हैं ना। तुमने मालिक का अर्थ भी समझा है। वह है मालिक, हम उनके बच्चे हैं। तो जरूर वर्सा मिलना चाहिए बच्चे कहते हैं-हमारा बाबा। तो बाप के धन के तुम मालिक हो। 'मेरा बाबा' बच्चे ही कहेंगे। मेरा बाबा तो फिर बाबा का धन भी मेरा है। अभी हम क्या कहते हैं-हमारा शिवबाबा। बाप भी कहेंगे यह हमारे बच्चे हैं। बाप से बच्चों को वर्सा मिलता है। बाप की प्रापर्टी जरूर होती है। बेहद का बाप है ही स्वर्ग की रचयिता। भालावालियों को भी प्रापर्टी किससे मिलती है? शिवबाबा से। शिव जयन्ती भी मनाते हैं। शिव जयन्ती के बाद फिर होगी कृष्ण जयन्ती। फिर राम जयन्ती। अब गम्मा भाभा की जयन्ती वा जगदम्बा की जयन्ती तो कोई गाते नहीं। शिव जयन्ती फिर राधे कृष्ण जयन्ती फिर राम सीता जयन्ती। जब शिवबाबा आये तब झुट राज्य विनाश हो। यह राज़ भी कोई समझते नहीं। बाप बैठ समझाते हैं वह आते हैं जरूर। बाप को क्यों बुलाते हैं। श्रीकृष्ण-पुरी स्थापन करने। तुम जानते हो शिव जयन्ती बरोबर होती है। शिवबाबा नालेज दे रहे हैं।
e आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना हो रही है। शिव जयन्ती है बड़े ते बड़ी जयन्ती। फिर है ब्रह्मा-विष्णु-शंकर। अब प्रजापिता ब्रह्मा तो मनुष्य सृष्टि में है। फिर रचना में गुप्त है लक्ष्मी नारायण। तो शिव है मात पिता, फिर मात पिता ब्रह्मा और जगदम्बा भी आ जाते हैं। यह समझने और धारण करने की बातें हैं। पहले2 समझाना पड़ता है-बाप परमपिता परमात्मा आये हैं पतितों को पावन करने वह नाम रूप से न्यारा हो तो उसकी जयन्ती कैसे हो सकती। गाँड को फादर कहा। फादर को तो सब जगह मानते हैं। निराकार है ही आत्मा और परमात्मा। आत्माओं को साकार शरीर मिलता है, यह बड़ी समझने की बातें हैं। जो कुछ भी शास्त्र आदि नहीं पढ़ा हुआ हो उनके लिए और ही सहज है। आत्माओं का बाप वह परमपिता परमात्मा स्वर्ग की स्थापना करने वाला है। स्वर्ग में होती है राजाई, तो जरूर उनको आना पड़े। सतयुग में तो आ न सकें। वह है प्रारब्ध, 21जन्मों का वर्सा संगम पर ही मिलता है। यह संगमयुग है ब्राह्मणों का। ब्राह्मण चोटी हैं फिर हैं देवताओं का युग। हरेक युग कई1250वर्ष है। अभी 5 धर्म स्थापन होते हैं। ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय। क्योंकि फिर आधाकल्प कोई धर्म स्थापन नहीं होता। सूर्यवंशी चन्द्रवंशी पूज्य थे फिर तुम पुजारी बन जाते हो। वह ब्राह्मण तो किसमत के होते हैं। अभी तुम अच्छे कर्म बना रहे हो जो फिर सतयुग में भोगेंगे। बाप अच्छे कर्म सिखलाते हैं। तुम जानते हो हम श्रीमत पर ऐसे कर्म करेंगे औरों को आपसमान बनायेंगे। तो उसका प्रारब्ध मिलेगी। अभी साहूरी राजधानी स्थापन होती है। आदि सनातन देवी देवताओं की राजधानी होती है। वहाँ है प्रजा का प्रजा पर राज्य। अनेक पंथ हैं। नहीं तो 5 पंथ होते हैं। यहाँ तो सब पंथ ही पंथ है। तो अभी आज हैं, कल नहीं। आज मिनिस्टर हैं-कल उनको उतार देते हैं एग्रीमेंट कर फिर कैन्सिल कर देते हैं। यह है अल्पकाल का क्षणभंगुर राज्य किसको भी उतारने में देरी नहीं करते। कितनी सहज व्यवस्था है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

17-8-99 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम पवित्र बनने के बिगर वापिस जा नहीं सकते इसलिए बाप की याद से आत्मा की बैटरी को चार्ज करो और नैचुरल पवित्र बनो।"

प्रश्न :- बाबा तुम बच्चों को घर चलने के पहले कौन-सी बात सिखलाते है?

उत्तर:- बच्चे, घर चलने के पहले जीते जी मरना है, इसलिए बाबा तुम्हें पहले से ही देह के भान से परे ले जाने का अभ्यास कराते हैं अर्थात् मरना सिखलाते हैं। ऊपर जाना माना मरना। जाने और आने का ज्ञान अभी तुम्हें मिला है। तुम जानते हो हम आत्मा ऊपर से आई हैं, इस शरीर द्वारा पार्ट बजाते है। हम असुल वहाँ के रहने वाले हैं, अभी वहाँ ही वापिस जाना है।

ओम् शान्ति। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने में कोई तकलीफ नहीं है, घुटका नहीं खाना है। इसको कहा जाता है सहज याद। पहले-पहले अपने को आत्मा ही समझना है। आत्मा ही शरीर धारण कर पार्ट बजाती है। संस्कार भी सब आत्मा में ही रहते हैं। आत्मा तो इन्डिपेन्डेन्ट है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। यह नॉलेज अभी ही तुमको मिलती है, फिर नहीं मिलेगी। तुम्हारा यह शान्त में बैठना दुनिया नहीं जानती। इसको कहा जाता है नैचुरल शान्त। हम आत्मा ऊपर से आई हैं, इस शरीर द्वारा पार्ट बजाते रहते हैं। हम आत्मा असुल वहाँ के रहने वाले हैं। यह बुद्धि में ज्ञान है। बाकी इसमें हठयोग की कोई बात नहीं। बिल्कुल सहज है। अभी हम आत्माओं को घर जाना है। परन्तु पवित्र बनने बिगर जा नहीं सकते। पवित्र होने के लिए परमात्मा बाप को याद करना है। याद करते-करते पाप मिट जायेंगे। तकलीफ की तो कोई बात ही नहीं। तुम पैदल करने जाते हो तो बाप की याद में रहो। अभी ही याद से पवित्र बन सकते हो। वहाँ वह तो है पवित्र दुनिया। वहाँ उस पावन दुनिया में इस ज्ञान की कोई दरकार नहीं रहती क्योंकि वहाँ कोई विकर्म होता नहीं। यहाँ याद से विकर्म विनाश करने हैं। वहाँतो तुम नैचुरल चलते हो, जैसे यहाँ चलते हो। फिर थोड़ा-थोड़ा नीचे उतरते हो। ऐसे नहीं कि वहाँ भी तुमको यह प्रैक्टिस करना है। प्रैक्टिस अभी ही करना है। बैटरी अब चार्ज करना है फिर आहिस्ते-आहिस्ते बैटरी डिस-चार्ज होना ही है। बैटरी चार्ज होने का ज्ञान अभी एक ही बार तुमको मिलता है। सतोप्रधान से तमोप्रधान बनने में तुमको कितना समय लग जाता है! शुरू से लेकर कुछ न कुछ बैटरी कम होती जाती है। मूलवतन में तो हैं ही आत्मायें। शरीर तो है नहीं। तो नैचुरल उतरने अर्थात् बैटरी कम होने की बात ही नही। मोटर जब चलेगी तब तो बैटरी कम होती जायेगी। मोटर खड़ी होगी तो बैटरी थोड़ेही चालू होगी। मोटर जब चले तब बैटरी चालू होगी। भल मोटर में बैटरी चार्ज होती रहती है लेकिन तुम्हारी बैटरी एक ही बार इस समय चार्ज होती है। तुम फिर जब यहाँ शरीर से कर्म करते हो फिर थोड़ी बैटरी कम होती जाती है। पहले तो समझाना है कि वह है सुप्रीम फादर, जिसको सब आत्मायें याद करती हैं, हे भगवान कहते हैं, वह बाप है, हम बच्चे हैं। यहाँ तुम बच्चों को समझाया जाता है, बैटरी कैसे चार्ज करनी है। भल घूमो फिरो, बाप को याद करो तो सतोप्रधान बन जायेंगे। कोई भी बात न समझो तो पूछ सकते हो। है बिल्कुल सहज। 5 हजार वर्ष बाद हमारी बैटरी डिस्चार्ज हो जाती है। बाप आकर सबकी बैटरी चार्ज कर देते हैं। विनाश के समय सब ईश्वर को याद करते हैं। समझो

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बाढ़ हुई तो भी जो भक्त होंगे वह भगवान को ही याद करेंगे परन्तु उस समय भगवान की याद आ नहीं सकती। मित्र-सम्बन्धी, धन-दौलत ही याद आ जाता है। भल 'हे भगवान' कहते हैं परन्तु वह भी कहने मात्र। भगवान बाप है, हम उनके बच्चे हैं। यह तो जानते ही नहीं। उनको सर्वव्यापी का उल्टा ज्ञान मिलता है। बाप आकर सुल्टा ज्ञान देते हैं। भक्ति की
a डिपार्टमेंट ही अलग है। भक्ति में ठोकरें खानी होती हैं। ब्रह्मा की रात सो ब्राह्मणों की रात है। ब्रह्मा का दिन सो ब्राह्मणों का दिन है। ऐसा तो नहीं कहेंगे शूद्रों का दिन, शूद्रों की रात। यह राज़ बाप बैठ समझाते हैं। यह है बेहद की रात वा दिन। अभी तुम दिन में जाते हो, रात पूरी होती है। यह अक्षर शास्त्रों में हैं। ब्रह्मा का दिन, ब्रह्मा की रात कहते हैं परन्तु जानते नहीं हैं। तुम्हारी बुद्धि अब बेहद में चली गई है। यूं तो देवताओं को भी कह सकते हैं—विष्णु का दिन, विष्णु की रात क्योंकि विष्णु और ब्रह्मा का सम्बन्ध भी समझाया जाता है। त्रिमूर्ति का आक्यूपेशन क्या है—और तो कोई समझ न सके। वह तो भगवान को ही कच्छ-मच्छ में वा जन्म-मरण के चक्र में ले गये हैं। राधे-कृष्ण आदि भी मनुष्य हैं, परन्तु दैवी गुणों वाले। अभी तमको ऐसा बनना है। दूसरे जन्म में देवता बन जायेंगे। 84 जन्मों का जो हिसाब-किताब था वह अब पूरा हुआ, फिर रिपीट होगा। अब तुमको यह शिक्षा मिल रही है।

बाप कहते हैं — मीठे-मीठे बच्चों अपने को आत्मा निश्चय करो। कहते भी हैं हम पार्टधारी हैं। परन्तु हम आत्मायें ऊपर से आती हैं—यह नहीं समझते हैं। अपने को
b देहधारी ही समझ लेते हैं। हम आत्मा ऊपर से आती हैं फिर कब जायेंगी? ऊपर जाना माना मरना, शरीर छोड़ना। मरना कौन चाहते हैं? यहाँ तो बाप ने कहा है—तुम इस शरीर को भूलते जाओ। जीते जी मरना तुमको सिखलाते हैं, जो और कोई सिखला न सके। तुम आये हो अपने घर जाने के लिए। घर कैसे जाना है—यह ज्ञान अभी ही मिलता है। तुम्हारा यह मृत्युलोक का यह अन्तिम जन्म है। अमरलोक सतयुग को कहा जाता है। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है—हम जल्दी-जल्दी जावें। पहले-पहले तो घर मुक्तिधाम में जाना पड़ेगा। यह शरीर रूपी कपड़ा यहाँ ही छोड़ना है फिर आत्मा चली जायेगी घर। जैसे हद के नाटक के एक्टर्स होते हैं, नाटक पूरा हुआ तो कपड़े वहाँ ही छोड़कर घर के कपड़े पहन घर में जाते हैं। तुम्हें भी अब यह चोला छोड़ जाना है। सतयुग में तो थोड़े देवतायें होते हैं। यहाँ तो कितने मनुष्य हैं अनगिनत। वहाँ तो होगा ही एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म। अभी तो अपने को हिन्दू कह देते हैं। अपने श्रेष्ठ धर्म-कर्म को भूल गये हैं तब तो दुःखी हुए हैं। सतयुग में तुम्हारा श्रेष्ठ कर्म, धर्म था। अभी कलियुग में धर्म भ्रष्ट हैं। बुद्धि में आता है कि हम कैसे गिरे हैं? तमोप्रधान बुद्धि होने कारण 84 जन्मों के बदले 84 लाख कह देते हैं। ठिक्कर-भित्तर में परमात्मा को कह देते हैं, कि तुम कितने ठिक्कर बुद्धि बन गये हो। स्कूल में कोई ठीक रीति नहीं पढ़ते हैं तो कहते हैं तुम कितने ठिक्कर बुद्धि बन गये हो। यह फिर बेहद के बाप का परिचय देते हो। बेहद का बाप ही आकर नई दुनिया स्वर्ग रचते हैं। कहते हैं मनमनाभव। यह
c गीता के ही अक्षर हैं। सहज राजयोग के ज्ञान का नाम रख दिया जाता है गीता। यह तुम्हारी पाठशाला है। बच्चे आकर पढ़ते हैं तो कहेंगे हमारे बाबा की पाठशाला है। जैसे कोई बच्चे का बाप प्रिन्सीपल होगा तो कहेंगे हम अपने बाबा के कॉलेज में पढ़ते हैं। उनकी माँ भी प्रिन्सीपल है तो कहेंगे हमारे माँ-बाप दोनों प्रिन्सीपल हैं। दोनों पढ़ाते हैं। हमारे मम्मा-बाबा का

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कॉलेज है। तुम कहेंगे हमारे मम्मा-बाबा की पाठशाला है। दोनों ही पढ़ाते हैं। दोनों ने यह रूहानी कॉलेज वा युनिवर्सिटी खोली है। दोनों इकट्ठे पढ़ाते हैं। ब्रह्मा ने एडाप्ट किया है ना यह बहुत गुह्य ज्ञान की बातें हैं। बाप कोई नई बात नहीं समझाते हैं। यह तो कल्प पहले भी समझानी दी है। हाँ, इतनी नॉलेज है जो दिन-प्रतिदिन गुह्य होती जाती है। आत्मा की समझानी देखो अभी तुमको कैसे मिलती है। इतनी छोटी सी आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। वह कभी विनाश नहीं होता। आत्मा अविनाशी तो उनमें पार्ट भी अविनाशी है। आत्मा ने कानों द्वारा सुना। शरीर है तो पार्ट है। शरीर से आत्मा अलग हो जाती है तो जवाब नहीं मिलता। अभी बाप कहते हैं—बच्चे, तुमको वापिस घर चलना है। यह पुरूषोत्तम युग जब आता है तब ही वापिस जाना होता है, इसमें पवित्रता ही मुख्य चाहिए। शान्तिधाम में तो पवित्र आत्मायें ही रहती हैं। शान्तिधाम और सुखधाम दोनों ही पवित्र धाम हैं। वहाँ शरीर है नहीं। आत्मा पवित्र है, वहाँ बैटरी डिस्चार्ज नहीं होती। यहाँ शरीर धारण करने से मोटर चलती है। मोटर खड़ी होगी तो पेट्रोल कम थोड़ेही होगा। अभी तुम्हारी आत्मा की ज्योत बहुत कम हो गई है। एकदम बुझ नहीं जाती है। जब कोई मरता है तो दीवा जलाते हैं। फिर उसकी बहुत सम्भाल रखते हैं कि बुझ न जाए। आत्मा की ज्योत कभी बुझती नहीं है, वह तो अविनाशी है। यह सब बातें बाप बैठ समझाते हैं। बाबा जानते हैं कि यह बहुत स्वीट चिल्ड्रेन है, यह सब काम चिता पर बैठ जलकर भस्म हो गये हैं। फिर इन्हें को जगाता हूँ। बिल्कुल ही तमोप्रधान मुर्दे बन पड़े हैं। बाप को जानते ही नहीं। मनुष्य कोई काम के नहीं रहे हैं। मनुष्य की मिट्टी कोई काम की नहीं रहती है। ऐसे नहीं कि बड़े आदमी की मिट्टी कोई काम की है, गरीबों की नहीं। मिट्टी तो मिट्टी में मिल जाती है फिर भल कोई भी हो। कोई जलाते हैं, कोई कब्र में बंद कर देते हैं। पारसी लोग कुएं पर रख देते हैं। फिर पंछी मास खा लेते हैं। फिर हड्डियाँ जाकर नीचे पड़ती हैं। वह फिर भी काम आती हैं। दुनिया में तो ढेर मनुष्य मरते हैं। अभी तुमको तो आपेही शरीर छोड़ना है। तुम यहाँ आये ही हो शरीर छोड़कर वापिस घर जाने अर्थात् मरने। तुम खुशी से जाते हो कि हम जीवनमुक्ति में जायेंगे। जिन्होंने जो पार्ट बजाया है, अन्त तक वही बजायेंगे। बाप पुरूषार्थ कराते रहेंगे, साक्षी हो देखते रहेंगे। यह तो समझ की बात है, इसमें डरने की कोई बात नहीं है। हम स्वर्ग में जाने के लिए खुद ही पुरूषार्थ कर शरीर छोड देते हैं। बाप को ही याद करते रहना है तो अन्त मती सो गति हो जाए, इसमें मेहनत है। हर एक पढ़ाई में मेहनत है। भगवान को आकर पढ़ाना पड़ता है। जरूर पढ़ाई बड़ी होगी। इसमें दैवीगुण भी चाहिए। यह लक्ष्मी-नारायण बनना है ना। यह सतयुग में थे। अब फिर तुम सतयुगी देवता बनने आये हो। एम ऑबजेक्ट कितनी सहज है। त्रिमूर्ति में क्लीयर है। यह ब्रह्मा, विष्णु, शंकर आदि के चित्र न हों तो हम समझा कैसे सकते। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा। ब्रह्मा की 8 भुजा, 100 भुजा दिखाते हैं क्योंकि ब्रह्मा के कितने ढेर बच्चे होते हैं। तो उन्होंने फिर वह चित्र बना दिया है। बाकी मनुष्य कोई इतनी भुजाओं वाला होता थोड़ेही है। रावण 10 शीश का भी अर्थ है, ऐसा मनुष्य होता नहीं। यह बाप ही बैठ समझाते हैं, मनुष्य तो कुछ भी जानते नहीं। यह भी खेल है, यह कोई को पता नहीं है कि यह कब से शुरू हुआ है। परम्परा कह देते हैं। अरे, वह भी कब से? तो मीठे-मीठे बच्चों को बाप पढ़ाते हैं, वह टीचर भी है तो गुरू भी है। तो बच्चों को कितनी खुशी होनी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

चाहिए।

d (यह म्युज़ियम आदि किसके डायरेक्शन से खोलते हैं? यहाँ हैं ही माँ, बाप और बच्चे। ढेर बच्चे हैं। डायरेक्शन पर खोलते रहते हैं। लोग कहते हैं तुम कहते हो भगवानुवाच तो रथ द्वारा हमको भगवान का साक्षात्कार कराओ। अरे, तुमने आत्मा का साक्षात्कार किया है?

e इतनी छोटी-सी बिन्दु का साक्षात्कार तुम क्या कर सकेंगे! जरूरत ही नहीं है। यह तो आत्मा को जानना होता है।) आत्मा भ्रकुटी के बीच रहती है, जिसके आधार पर ही इतना बड़ा शरीर चलता है। अभी तुम्हारे पास न लाइट का, न रत्न जड़ित ताज है। दोनों ताज लेने लिए फिर से तुम पुरूषार्थ कर रहे हो। कल्प-कल्प तुम बाप से वर्सा लेते हो। बाबा पूछते हैं आगे कभी मिले हो? तो कहते हैं – हाँ बाबा, कल्प-कल्प मिलते आये हैं क्यों? यह लक्ष्मी-नारायण बनने के लिए। यह सभी एक ही बात बोलेंगे। बाप कहते हैं–अच्छा, शुभ बोलते हो, अब पुरूषार्थ करो। सब तो नर से नारायण नहीं बनेंगे, प्रजा भी तो चाहिए। कथा भी होती है सत्य नारायण की। वो लोग कथा सुनाते हैं, परन्तु बुद्धि में कुछ भी नहीं आता। तुम बच्चे समझते हो वह है शान्तिधाम, निराकारी दुनिया। फिर वहाँ से जायेंगे सुखधाम। सुखधाम में ले जाने वाला एक ही बाप है। तुम कोई को समझाओ, बोलो अभी वापिस घर जायेंगे। (आत्मा को

f अपने घर तो अशरीरी बाप ही ले जायेंगे। अभी बाप आये हैं, उनको जानते नहीं। बाप कहते हैं मैं जिस तन में आया हूँ, उनको भी नहीं जानते। रथ भी तो है ना। हर एक रथ में आत्मा प्रवेश करती है। सबकी आत्मा भ्रकुटी के बीच रहती है। बाप आकर भ्रकुटी के बीच में बैठेगा: समझाते तो बहत सहज है। पतित-पावन तो एक ही बाप है, बाप के सब बच्चे एक समान हैं। उनमें हर एक का अपना-अपना पार्ट है। इसमें कोई इन्टरफियर नहीं कर सकता। अच्छा!)

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. इस शरीर रूपी कपड़े से ममत्व निकाल जीते जी मरना है अर्थात् अपने सब पुराने हिसाब-किताब चुक्तू करने हैं।

२. डबल ताजधारी बनने के लिए पढ़ाई की मेहनत करनी है। दैवी गुण धारण करने हैं। जैसा लक्ष्य है, शुभ बोल है, ऐसा पुरूषार्थ करना है।

वरदान:- मधुरता द्वारा बाप की समीपता का साक्षात्कार कराने वाले महान आत्मा भव

जिन बच्चों के संकल्प में भी मधुरता, बोल में भी मधुरता और कर्म में भी मधुस्ता है वही बाप के समीप हैं। इसलिए बाप भी उन्हें रोज़ कहते है मीठे-मीठे बच्चे और बच्चे भी रेसपान्ड देते हैं - मीठे-मीठे बाबा। तो यह रोज़ का मधुर बोल मधुरता सम्पन्न बना देता है। ऐसे मधुरता को प्रत्यक्ष करने वाली श्रेष्ठ आत्मायें ही महान हैं। मधुरता ही महानता है। मधुरता नहीं तो महानता का अनुभव नहीं होता।

स्लोगन:-

कोई भी कार्य डबल लाइट बनकर करो तो मनोरंजन का अनुभव करेंगे।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

31-8-98 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – यह संगमयुग है ब्राह्मणों की पुरी, इसमें तुम ब्रह्मा के बच्चे बने हो, तुम्हें बेहद के बाप का वर्सा लेना है और सभी को दिलाना है"

प्रश्नः- इस ज्ञान को अच्छी रीति समझने के लिए किस प्रकार की बुद्धि चाहिए?

उत्तरः- व्यापारी बुद्धि वाले ही इस ज्ञान को अच्छी रीति समझेंगे। यह है बेहद का व्यापार। बाप बच्चों को भिन-भिन कमाई की युक्तियां बताते रहते हैं। बच्चों का काम है मेहनत करना। ऐसी युक्ति निकालनी चाहिए जिससे स्वयं की भी कमाई जमा होती रहे और सर्व का भी कल्याण हो। बाप की याद और सेवा ही कमाई का साधन है।

गीतः- रात के राही थक मत जाना.....

ओम् शान्ति। पारलौकिक बाप बच्चों के प्रति समझा रहे हैं, कहते हैं कि बच्चे मुझ अपने पारलौकिक परमपिता परमात्मा को भूलना नहीं है। गाया भी जाता है गीता का भगवान्। बाइबिल का भगवान् वा कुरान का भगवान् कभी कोई नहीं कहेंगे। कोई भी धर्म स्थापन करने वाले ऐसे नहीं कहेंगे कि हे बच्चे अब मुझ पारलौकिक बाप को याद करो। ऐसे कोई किसको कह नहीं सकते। बच्चा पैदा होता है, बाप को जानते हैं। बाप को ही याद करते रहेंगे क्योंकि वारिस है। अब पारलौकिक बाप कहते हैं–हे मेरे सिकीलधे बच्चे, अब तुमको मेरे पास आना है। मैं तुम बच्चों को परमधाम निर्वाणधाम ले चलने लिए आया हूँ। तुम भक्त मुझ भगवान् को याद करते थे। अब मैं कहता हूँ तुम मुझे निरन्तर याद करो। मैं तुमको सुखधाम ले चलता हूँ। अपने दिल अन्दर देखो, तुमने आधाकल्प कितना दुःख उठाया है! पहले से ही इतना दुःख नहीं मिलता है। पीछे दुःख वृद्धि को पाता है। अब पारलौकिक बाप कहते हैं मुझे याद करो। सभी धर्म वालों को कहते हैं – हे मेरे बच्चे, तुम अपने को भाई-भाई समझते आये हो। अब तुम आत्माओं का जो पारलौकिक बाप है, जिसको सब जीव आत्मायें दुःख में याद करती आई हैं – वह अब ब्रह्मा मुख कमल द्वारा तुम बच्चों को समझा रहे हैं। समझानी दी जाती है – ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मणों की। प्रजापिता ब्रह्मा को सिर्फ कुमारियां ही नहीं थी। कुमार-कुमारियां दोनों थे। भाई-बहिन थे – ब्रह्माकुमार-कुमारियां। एक ही बाप के बच्चे एक ही दादे के पोत्रे पोत्रियां ठहरे। तुम बच्चों को सम्मुख समझाया जाता है। तुम सम्मुख सुनते हो, समझते हो कि हम निराकार शिवबाबा के सब बच्चे हैं। बरोबर हम ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा से स्वर्ग की बादशाही पाने के लिए राजयोग सीख रहे हैं। परमपिता परमात्मा ब्रह्मा मुख द्वारा जो तुमको समझाते हैं वह फिर औरों को समझाना है। जो लौकिक भाई-बहन हैं, उन्हों को समझाना है। तुम हो गये पारलौकिक। पारलौकिक बाप से तुम वर्सा लेते हो। तुम कहलायेंगे पारलौकिक भाई-बहन। वह हुए लौकिक भाई-बहन।

तो बाप समझाते हैं – बच्चे, हूबहू 5 हजार वर्ष पहले मुआफ़िक तुम बुद्धि का योग लगाओ तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे। पाप भस्म हो जायेंगे। बाप की याद को ही योग-अग्नि कहा जाता है। इस सर्वशक्तिमान बाप की याद में रहने से तुमको

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

शक्ति मिलेगी। वह एक ही निराकार बाप है, इस ब्रह्मा मुख से सुनाते हैं। जरूर रथ तो चाहिए ना, जिस रथ के ऊपर उनकी सवारी हो। यह रथ है, इसमें परमपिता परमात्मा सवार हो बच्चों को यह सिखलाते हैं। इस सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की समझानी देते हैं, जिससे तुम भविष्य में चक्रवर्ती राजा-रानी बन जायेंगे और निरन्तर याद करने से विकर्माजीत बन जायेंगे, पावन पुण्य आत्मायें बन जायेंगे। बाबा जो स्वर्ग स्थापन करते हैं उस स्वर्ग के तुम चक्रवर्ती महाराजा-महारानी बनेंगे। सो भी 21 जन्मों के लिए और भारत में जो भी उत्सव होते हैं – शिव जयन्ती, होली, राखी, जन्माष्टमी, दीवाली आदि इन सब उत्सवों का महत्व और हरेक की बायोग्राफी हम आपको सुनाते हैं। आओ बहनों-भाइयों, हम आपको पारलौकिक बाप का परिचय देवें। परिचय ले सहज राजयोग सीख तुम विश्व के मालिक बनेंगे। वर्ल्ड ऑलमाइटी, पवित्रता-सुख-शान्तिमय अटल-अखण्ड राज्य करेंगे। यह किसको भी समझाना बहुत सहज है। इस रीति लिखना भी है। बाप के समझाये हुए यह राज़ हम तुमको समझायेंगे। बाप के बच्चे बनेंगे तब तो वर्सा मिलेगा ना। तुम भी बेहद के बाप से बेहद का वर्सा आकर लो। जन्म-जन्म तो हद का वर्सा लेते आये हो। वह है दुःख का वर्सा क्योंकि यह है ही रावण राज्य। राम के राज्य में सदा सुख था। फिर माया रावण के राज्य में तुम दुःखी हुए हो। यह तो तुम कोई को भी समझा सकते हो। पब्लिक भाषण में भी तुम समझा सकते हो। ऊंच ते ऊंच है भगवान्। फिर
b हैं ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, फिर उन्हों की महिमा। गाया भी हुआ है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। तो जरूर वह स्थूलवतन में होगा। ब्राह्मण हैं ब्रह्मा की सन्तान। उनको ही प्रजापिता ब्रह्मा कहा जाता है। पहले-पहले ब्राह्मण वर्ण चाहिए। ऊंच ते ऊंच है ब्राह्मण वर्ण। कौन स्थापन करते हैं? परमपिता परमात्मा। पिता के सब बच्चे ठहरे। ब्रह्मा द्वारा इन ब्रह्माकुमार-कुमारियों को बैठ पढ़ाते हैं। यह संगमयुग है ब्राह्मणों की पुरी। फिर रुद्र पुरी में जाकर विष्णुपुरी में आते हैं। पहले-पहले रुद्र माला में वह आयेंगे जो निरन्तर याद करेंगे। सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी राजायें बनते हैं ना। तो इस समय परमपिता परमात्मा द्वारा राजयोग सीखने से राजाई पद पाते हैं। बाप कहते हैं कि निरन्तर मुझ बाप को याद करो, बुद्धि का योग मुझ साथ लगाओ। यह है रूहानी यात्रा। जन्म-जन्म से तो जिस्मानी यात्रायें करते आये, अब बाप आकर रूहानी यात्रा सिखलाते हैं। कहते हैं मुझ बाप को और स्वीट होम को याद करो, जहाँ से तुम आये हो पार्ट बजाने। तुम गोरे थे, विश्व पर राज्य करते थे फिर तुम काम चिता पर बैठ काले हो गये हो, सुन्दर से श्याम बन गये हो। भारत बड़ा सुन्दर था।
c नाम ही था स्वर्ग, अब तो नर्क है ना। तुम ही पूज्य से फिर पुजारी बनते हो। तो ऊंच ते ऊंच भगवान् शिव फिर ब्रह्मा विष्णु, शंकर, इन द्वारा बाप कार्य करवाते हैं। इन्हों को निमित्त बनाया है। करनकरावनहार है ना। ब्रह्मा द्वारा भारत को स्वर्ग बनाने के लिए राजयोग सिखलाते हैं। बाप कहते हैं कि यह राजयोग सिखलाकर पूरा करुँगा तो फिर विनाश होगा। फिर जो नई दुनिया स्थापन करते हैं उनमें जाकर राज्य करेंगे फिर जितना जो पुरुषार्थ करे। सारा पुरुषार्थ पर मदार है। कहते हैं गंगा पतित-पावनी फिर परमात्मा को पुकारते क्यों हो – हे पतित पावन आओ? तो पुजारी भक्तों को भक्ति का फल

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मिलना चाहिए ना। स्वर्ग में जीवन्मुक्ति का फल मिलता है। और सबको शान्ति का फल मिल जाता है। स्वर्ग में सुख-शान्ति दोनों ही थे, सब सुखी थे – जिन्होंने राजयोग सीखा। विकर्म विनाश तो करना ही है। हिसाब-किताब चुक्तू तो होना ही है। फिर नयेसिर पार्ट बजाना है। सबका हिसाब-किताब चुक्तू कराए पावन बनाए बाप साथ में ले जाते हैं। यह सब राज़ समझने के हैं।

मनुष्य भगवान् को याद करते हैं तो जरूर भगवान् को सृष्टि पर आना पड़े। कहते हैं कि सृष्टि पर आकर भक्तों को भक्ति का फल देता हूँ। मुक्ति वा जीवनमुक्ति, शान्ति वा सुख देता हूँ। दुनिया में सुख, शान्ति वा सम्पत्ति ही मांगते हैं। मनुष्य तो सम्पत्ति के लिए ही पुरुषार्थ करते हैं कि धनवान बनें। समझते हैं सम्पत्ति में ही सुख होगा। परन्तु भल किसको कितनी भी सम्पत्ति है, राज्य तो फिर भी माया का है ना। पतित दुनिया है ना, तो पाप जरूर होंगे। सम्पत्ति के लिए बहुत पाप करते हैं। यह है ही पाप आत्माओं की दुनिया। इसमें कोई भी पुण्य आत्मा होती नहीं। पुण्य आत्माओं की दुनिया में फिर कोई पाप आत्मा नहीं होती। यथा राजा रानी तथा प्रजा पुण्य आत्मा होते हैं। इन पावन देवी-देवताओं को पतित दुनिया में राजा लोग भी पूजते हैं क्योंकि समझते हैं–यह सर्वगुण सम्पन्न हैं। हमारे में कोई गुण नाहीं, आपेही तरस परोई..... फिर यह कहते हम ही भगवान् हैं। पतितों को पावन बनाने वाला तो एक ही बाप है। पतित-पावन कहने से बुद्धि चली जानी चाहिए निराकार भगवान् की तरफ। निराकार उपासी भी होते हैं ना। तो वह निराकार बाप है ऊंच ते ऊंच, जब तक उनको पूरा परिचय नहीं तो उपासना क्या करेंगे? भल कहते हैं परमपिता परमात्मा शिव है। निराकार उपासी है ना। निराकार को याद करने वाले। परन्तु वह है कौन? पूरा परिचय चाहिए ना। निराकार को क्यों याद करते हैं, उससे क्या मिलेगा? क्या निराकारी दुनिया में जायेंगे? आत्माओं को तो निराकारी दुनिया में जाने के रास्ते का पता नहीं है। भल सब याद करते हैं परन्तु बिगर परिचय। इस प्रकार याद करने से तो कोई पावन नहीं बनेंगे। यहाँ तो निराकार खुद साकार में आते हैं। मनुष्य तो निराकारी दुनिया में जाने के लिए कितने शास्त्र आदि पढ़ते हैं! परन्तु कोई जा नहीं सकते। रास्ते का भी पता नहीं है। जिस्मानी यात्रा के पण्डे लोग रास्ता जानते हैं तब तो ले जाते हैं ना। यहाँ इस रास्ते को कोई जानता नहीं, जो समझाये। इसके लिए कहते – बेअन्त है, तो फिर याद कैसे करें? कुछ भी समझते नहीं। कोई ने कहा बेअन्त है, फिर कोई ने कहा निराकार है, तो फिर निराकार उपासी बने। आजकल तो फिर कह देते कि हम वही हैं। दिन-प्रतिदिन तमोप्रधान सब होती जाती है। जो आता वह कहते रहते हैं। बाप समझाते हैं ऊंच से ऊंच बाप गाया जाता है। सर्वव्यापी कहने से तो सब ऊंच ते ऊंच हो जाते हैं। इतने पतित-दुःखी वह फिर ऊंच ते ऊंच कैसे होंगे। एक तरफ कहते नाम रूप से न्यारा है फिर उनको पत्थर भित्तर में लगाना इसको ही धर्म ग्लानी कहा जाता है। अभी फिर कहते हम ही परमात्मा हैं। अभी जो कुछ पास्ट हुआ, सब ड्रामा है। वह फिर भी होगा। भूल पिछाड़ी भूल, ग्लानी पिछाड़ी ग्लानि करते-करते भारत ऐसा पतित हो गया है। बाप का परिचय तो सबको मिलना है। तुम्हारा प्रभाव निकलेगा

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

इतने ढेर ब्रह्माकुमार कुमारियों द्वारा ज्ञान मिलता है। यह तो बरोबर परमपिता परमात्मा की ही बात है। सबसे ऊंच ते ऊंच है परमपिता परमात्मा, उनकी महिमा बहुत है, पारावार नहीं। अब बाप बैठ अपना परिचय देते हैं — मैं क्या करता हूँ? मैं आकर सभी पाप आत्माओं को पुण्य आत्मा बनाता हूँ, राजयोग सिखलाता हूँ। गाया भी जाता है ईश्वर की गत-मत न्यारी। सो तो जरूर जब यहाँ आयेंगे तब तो मत देंगे ना। क्राइस्ट की सोल आई, क्रिश्चियन धर्म स्थापन करने। बाप की मत तो सबसे न्यारी है। यह बाप तो है सबसे ऊंच। भारत में मनुष्य मात्र में श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ देवी-देवतायें ही डबल सिरताज बने हैं। बाप की है श्रीमत। भगवानुवाच — मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ जो और कोई सिखला न सके। लिखा हुआ है भगवानुवाच। वह है ही हेविनली गॉड फादर जो स्वर्ग की स्थापना करते हैं, स्वर्ग के लिए तुम ब्राह्मणों को राजयोग सिखलाते हैं। ब्राह्मण वर्ण सबसे ऊंच हो गया। बाप सर्विस की युक्तियां बहुत बतलाते है। भल कोई गालियां भी दे, तुम चित्र रख दो, उनमें लिखा होगा कि इन वर्णों में भारत ही आता है। अब है कलियुग, शूद्र वर्ण। फिर तुम बाप द्वारा ब्राह्मण बने हो। तुम्हारा नाम है — ब्रह्माकुमार-कुमारी। तुम्हारे चित्र ऐसे होने चाहिए जो मनुष्यों को वन्डर लगे कि ऐसे चित्र तो कहीं नहीं देखे। यह ज्ञान व्यापारी बुद्धि वाले अच्छी रीति समझ सकते हैं। यह व्यापार भी अच्छा है। तो श्रीमत देने वाला भी सर्वोत्तम है। परन्तु बहुत बच्चे मेहनत नहीं करते। घर में सोये पड़े रहते तो बाबा खड़ा करते हैं। तुम एक चित्र बनायेंगे, इससे हजारों का कल्याण होगा, सब तुम्हारी वाह-वाह करेंगे। वन्दे मातरम् कहेंगे। अच्छा!

मात-पिता सिकीलधे बच्चों प्रति याद-प्यार और गुडमॉर्निंग।

रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- रुद्र माला में पहला नम्बर आने के लिए निरन्तर बाप की याद में रहना है। बाप और स्वीट होम की याद से स्वयं को पावन बनाना है।

२- रूहानी पण्डा बन सबको सच्ची यात्रा करानी है। एक बाप की श्रीमत से स्वयं को डबल सिरताज बनाना है।

वरदान:- अपनी विल पावर द्वारा हर एक को विल कराने वाले श्रेष्ठ सेवाधारी भव

वर्तमान समय कई आत्मायें आपके सहयोग के लिए चात्रक हैं लेकिन अपनी शक्ति नहीं है। उन्हें आपको अपने शक्तियों की मदद विशेष देनी पड़ेगी इसलिए निमित्त बने हुए सेवाधारियों में सर्व शक्तियों की पावर चाहिए। जैसे ब्रह्मा बाप ने लास्ट में बच्चों को शक्तियों की विल की, उस विल से यह कार्य चल रहा है, ऐसे फालो फादर। अपने शक्तियों की विल आत्माओं के प्रति करो तो समय के प्रमाण सेवा सम्पन्न हो जायेगी।

स्लोगन:-

सत्यता की शक्ति पास हो तो खुशी और शक्ति प्राप्त होती रहेगी।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ओमशान्ति। शिवभगवानुवाच। अभी शिवभगवान निराकार को तो सभी मानते हैं। सब तो निराकार शिव जिसकी सभी पूजा करते हैं। बाकी जो भी देवतायें हैं उन सभी को साकार है। पहले2 निराकार आत्मा थी। फिर साकार बनी है। साकार बनते हैं शरीर में प्रवेश करते हैं तब उनका पार्ट बनता है। मूलवतन में तो कोई भी पार्ट है नहीं। जैसे एक्टर्स घर में हैं तो नाटक का पार्ट नहीं है। स्टेज पर आने से पार्ट बनते हैं। आत्मायें भी यहां आकर पार्ट बनाती हैं। पार्ट पर ही सारा मदार रहता है। आत्मा में तो कोई फर्क है नहीं। जैसे तुम बच्चों की आत्मा है वैसे उनकी आत्मा भी है। बाप परम पिता परमात्मा क्या करते हैं, उनका आगमन क्या है, यह जानना है। कोई कहते हैं, सत्य है, यह आत्मा का आत्मापन है ना। परन्तु वह देवतायें हैं इसलिए उन्हों की पूजा होती है। अभी तुम बच्चे समझते हो यह पढ़ाई पढ़ का यह बनना। शिव के महावाक्य क्या है। किसने बनाया परम आत्मा ने। और कोई बड़ी बात नहीं। तुम आत्मायें भी पढ़ते हो। पढ़ाई यह है जो बाप आकर तुम बच्चों को पढ़ाते हैं और राजयोग भी सिखलाते हैं। सिंहासनाधिकारी है। उनको कहा जाता है राजयोग। बाप को याद करने से हम सतोप्रधान बन जाते हैं। बाप तो है ही सतचित्त आनन्द स्वरूप। उनकी सिर्फ महिमा गाते रहते हैं। भक्ति मार्ग में कितना फूल दूध आदि चढ़ाते थे, समझ तो कुछ भी नहीं थी। देवताओं को पूजा, पवित्र कुछ भी नहीं। उन्होंने क्या किया जो फूल-दूध आदि चढ़ाते हैं। उसने क्या कर्तव्य किया है जो इतना चढ़ते हो। देवताओं का तो फिर भी मालूम है। वह हैं स्वर्ग के मालिक। उन्हों को किसने बनाया यह भी पता नहीं है। पूजा भी करते हैं शिव की। परन्तु इन्हें यह ख्यात में नहीं कि यह भगवान है। भगवान ने उन्हों को ऐसा बनाया है। फूल चढ़ाते-दूध चढ़ाते हैं कितनी नीच करते हैं, है सभी अनजान। तुम से भी बहुतों ने आज की पूजा की होगी। कहते तुम समझते हैं आगे कुछ नहीं जानते थे। उनका आत्मापन क्या है, क्या सुख देते हैं कुछ भी पता नहीं है। क्या यह देवतायें सब देते हैं। ऐसा नहीं प्रजा को सुख देते हैं परन्तु उन्हों को तो शिव बाबा ने ऐसा बनाया ना। बलिहारी उनकी है। यदि तो फिर आई करते हैं। प्रजा भी बन जाते हैं। बच्चे यह कोई का कल्याण नहीं करते हैं। अगर करते भी हैं तो अल्पकाल के लिए। अभी तुम बच्चों को बाप बैठ पढ़ाते हैं। उनको कहा जाता है कल्पवृक्ष की। बाप अपना परिचय दे देते हैं। मैं तुम पूजा करते थे नारियल की। उनको परमात्मा कहते थे। परम आत्मा तो परमात्मा हो जाता। परन्तु यह नहीं जानते कि यह क्या करते हैं। यह सिर्फ कह देंगे कि यह सर्वव्यापी है। नाम रूप से न्यारा है। नाम-रूप से न्यारा है फिर उस पर फूल आदि चढ़ाना शोभता नहीं है। आकार है तब तो उस पर चढ़ाते हैं ना। उनको निराकार तो कर नहीं सकते। तुम से मनुष्य आत्मा बहुत करते हैं। बाप के पास भी आकर आत्मा ही कहेंगे। परन्तु गाया उपायेंगे। समझा कुछ भी नहीं। यह समझाना तो तुम बच्चों का काम है। तुम्हारा बैठ गाया उपावे। हमारा तो न आपदे ना। बाप के ध्यान में तो यह सभी छि-छकीयां हैं। उन्हों की एक्टिविटी ही ऐसी है। कुछ नहीं जानते। अभी तुम बच्चे जानते हो बाबा ने हमको छि छकीयों से कि से ऊंच बनाया है। यह पढ़ाई है ना। बाप टीचर बन पढ़ाते हैं। तुम सम्मुख मनुष्य से देवता बनते लिबरेट होते। देवी-देवता देवतायें सतयुग में ही होते हैं। कलियुग में तो होते ही नहीं। सामान्य ही नहीं जो पवित्र ढ़ नहीं। देवी देवतायें जो ये थे वे पवित्र सतयुग में चले गये हैं। हैं तो वह भी तुम्हारे जैसे मनुष्य। बाकी जैसे चित्र दिखाई देते हैं नहीं। जगतनाथ है ऊपर में तुम देखेंगे बने हुए हैं। बाप कहते हैं बाबा जीते जगत जीत बने तो उन्हों ने फिर जगतनाथ नाम रख दिया है। उन्हों ने सभी कपड़े वेष चित्र दिखाये हैं। देवतायें स्वर्ग में गये तो काले पत्थर पड़े। उनकी भी पूजा चली है। मनुष्यों को तो कुछ भी पता नहीं है कि कब हम पूज्य थे। 84 जन्म लेते-लेते पुजारी बन पड़े हैं। सतोप्रधान है पूज्य। सतोप्रधान से तमोप्रधान में आने से काले बन जाते हैं। इसलिए मंदिर में भी काले चित्र दिखाते हैं। अब तो उनका

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ड़ी नजाते नहीं। अभी तुम बच्चों को बाप बैठ समझाते हैं। ज्ञान-चिता पर बैठ गोरे बनते हो। काम-चि
र बैठ काले बन जाते हो। देवतायें ज्ञान-मार्ग में जाकर विकारी बन पड़ते। फिर उनका नाम तो देवता रख
ही जाते। ज्ञान-मार्ग में जाने से काले बन पड़े हैं। यह निशानी दिखाई है। कृष्ण काला तथा भी काला। बाप भी
ये कहते बच्चा देते हैं। सभी काले शिव का लिंग भी काला बना देते हैं। अभी तुम समझते हो शिवबाबा
। ज्ञान सुनता ही नहीं है। यह तो होता है जो तुमको भी वैसा बनाते हैं। यह तो कोई काला बनता
नहीं। उनको फिर काला क्यों बना दिया है। कोई काला होगा उसने बैठ काला बना दिया है। शिव बाबा कहते
हैं हमने क्या रोप दिया है जो मुझे भी काला बना दिया है। मैं तो आता ही हूं सभी को गोरा बनाने।
कृष्ण तो अति ही गोरा हूं। फिर काला कौन मनुष्य की तरह बच्चा रूप बन पड़ी है तो कुछ भी समझ
नहीं। शिव बाबा तो है कृष्णन। सभी को ब ब ब्रह्मण बनाने आते हैं। मैं तो स्वर्ग गोरा सुसज्जित हूं। मैंने क्या
किया जो मुझे काला बनाया है। अभी तुमको भी गोरा बनना है। ऊंच पद कैसे पाना देखा तो बाप ने समझाया
है पढ़ो पढ़ाओ। अभी कुछ बाप के हवाले कर दिया। यह कर्म भूल कोई भी कर सकते हैं। बच्चा को देखो कैसे
अभी कुछ है दिमाग मत खराब हो। न बहुत गर्व न बहुत शान्ति। बाबा अभी भी कहते हैं तुम्हारा ज्ञान-पान
शीतल सा साधारण होना चाहिए। न बहुत ऊंच न बहुत नीच। बाप भी सभी शिक्षा देते हैं ना। यह भी देखने
में तो साधारण ही आते हैं। तुमको कहते हैं कहां है भगवान। दिखाओ। और ब्रह्मा फिरती है, उनको देखेंगे क्या।
यह तो जानते ही ब्रह्मा का तन इन आंखों से होता ही नहीं। तुम कहते हो इनको भगवान पढ़ाते हैं।
तो जब कोई साक्षात्कार होगा ना। निराकार कैसे पढ़ायेंगे। मनुष्यों को तो कुछ भी पता नहीं है। जैसे तुम ब्रह्मा
को शरीर द्वारा पार्ट बजाते हो। ब्रह्मा को योगी के शरीर द्वारा। तो ब्रह्मा बाबा। परन्तु ब्रह्मा बाबा अवतार
कोई नहीं है। ब्रह्मा तो है ब्रह्मपुत्र। आत्मा से परे। बाप तो शरीर में ही करेंगे ना। आत्मा से परे आत्मा
सिर्फ ब्रह्मा रचता हो। आत्मा में आना है तो शरीर तो चाहिए ना। बाप भी आत्म रूप में है तो जब कोई का
शरीर धरेंगे ना। उसको रथ कहा जाता है। नहीं तो यह सुनायें कैसे। यह रथ भी कैसे बना यह तुम समझ न
सकते हो। बाप पतित से पावन बनाने की कैसे शिक्षा देते हैं। प्रेरणा की बात ही नहीं। यह तो आत्मा के
g आते हैं। वह आवे कैसे। किसके शरीर में आवे। कोई को भी पता नहीं है सिवाय तुम्हारे। रचयिता ही
बैठ सृष्टि रचना का परिचय देते हैं। मैं कैसे और किस रथ में आता हूं। तुम्हें जानते नहीं बाप का रथ कौन
सा है। बहुत ही भूले हुये हैं। फिर फिर का रथ बना देते हैं। जनमपत्री आदि में तो आ न सके। आवेंगे तो
मनुष्य में ही। बाप कहते हैं मैं किस मनुष्य में आऊं। यह तो समझ नहीं सकते हैं। बाबा भी भारत में ही देखा
है। भारतवासियों में भी किसके तन में आऊं। क्या प्रेसीडेन्ट या साधु महात्मा के रथ में आऊंगा। ऐसे भी नहीं
है कि अविनाशी रथ में आता है। यह तो है ही रावण राज्य। भारत भी है दो देव का रहने वाला आया देवता
धर्म। यह भी बच्चों को पता है माल अविनाशी खण्ड है। उनका कब विनाश होता नहीं। अविनाशी है। यह
ज्ञान भी भारत खण्ड में आते हैं। किस तन में आते हैं यह खुद ही बतलाते हैं। और तो कोई ज्ञान न दे
मनुष्य तो है ही हैं। तुम जानते हो कोई साधु महात्मा में भेजा न सके। यह है ही ठठयोगी निवृत्ति मार्ग
वाले। बाकी रहे भारतवासी भक्त। अभी महीनों में भी किस भक्त में आवे। भक्त भी यहां चाहिए जिसने बहुत भक्ति
की हो। भक्ति का फल देने वाले भगवान को आना पड़ता है। भारत में ब्रह्मा भक्त तो ढेर हैं। कौनसे यह वा
भक्त हैं। इसमें आना चाहिए। ऐसे तो बहुत ही भक्त बन पड़ते हैं। कल को वैराग्य आ जाये भक्त जाये।
यह तो इस जन्म का भक्त होगा ना। उसमें तो आवेंगे नहीं। बाप समझाते हैं इस जन्म के जो भी भक्त हैं
उनमें नहीं आता हूं। मैं उस में आता हूं जिसने पहले2 भक्ति यह की है। उन्हों को भी भक्ति का फल मिलता
है। तुम भी समझते हो यह तो बड़ा भक्त कौन है। पहले यहां2 भक्ति यह की है। ब्रह्मा को देख भक्ति भी
यह करते हैं। यह शिव शिवाय तो कोई जानता नहीं। कितनी गुप्त बातें हैं। मैं आता उन में हूं जो पार्ट

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मीत करते हैं। नम्बरवन जो पुण्य था वही फिर नम्बरवन पुजारी भी बनेगा। बुद कहते हैं यह ड्रामा सबसे बना हुआ है। फिर 84 जन्म भी यही लेते हैं। मैं इसके ही बहुत जन्मों के अन्त में के भी अन्त में प्रवेश करता हूँ। उनको ही फिर नम्बरवन राजा बनना है। यही बहुत मिक्स पार्ट है। भक्ति का पार्ट भी इनको मिलना चाहिए। बाप विद्यार्थी हैं बच्चों को कि देखो ऊपर वाली कैसे गया। सभी कुछ दे दिया। इतने सभी बच्चों को खिलाने लिए तो फिर धन भी चाहिए ना। बाबा मैं तुम बच्चियों पर तो दौड़ भागो। सदा मैं तो कुछ भी लेकर नहीं आई। तुमको क्या हुआ। दिन में कोई प्रोग्राम बनाया नहीं। बैठे2 रात को क्या हो गया जो निकल पड़ी। यह तो कहीं भागा नहीं। यह सैफ्टी में था। तो क्या कोई मूर्ख मानते हैं क्या। उनके साथ जो भी आये वे मूर्ख थोड़े ही हैं? कुछ भी नहीं। ईश्वरीय प्रसाद मिलता रहता है। ईश्वर का यह रचा हुआ ... पुर आकर रथ में बैठ ज्ञान यज्ञ रचते हैं। इसको पढ़ाई भी कहा जाता है। ज्ञान शिव बाबा जो ज्ञान का सागर है उसने ही यह रचा है ज्ञान देने लिए। आत्मा बिल्कुल ठीक है। रावण राज्य के लिए यज्ञ ... राज्य पाने लिए यज्ञ। इनको यज्ञ क्यों कहते हैं, यज्ञ में तो बड़ा लोग आहुति आदि बहुत कुछ डालते हैं विध्वंस होती। तुम तो पढ़ते हो आहुति क्यों डालते हो। तुम जानते हो हम पढ़कर होशियार हो जायेंगे फिर सारी दुनिया इसमें स्वाहा हो जायेगी। यह मैं पिछाड़ी के टाईम जो भी साधुओं के होली है सभी डाल देते हैं। अभी तुम अच्छे जानते हो इसको बाप पढ़ा रहे हैं। बाप है तो बहुत ही साधारण। मनुष्य क्या जाने। उन यज्ञों आदि में तो बहुत ही महिमा होती है। बाप कितना साधारण बैठा है। मनुष्य को कैसे पता लगे। यह तो दादा जवाहरी था। शक्ल तो कोई देखने में नहीं आती। सिर्फ इतना ही कह देते हैं इनमें कुछ शक्ति है। बस। यह नहीं समझते हैं कि इन में सर्वशक्तिवान बाप है। इन में शक्ति है परन्तु यह तो आई कहां से। बाप ने प्रवेश किया ना। जो उनका अनादि डेरेदार ऐसे थोड़े ही दे देते हैं। तुम योगबल से लेते हो। यह तो सर्वशक्तिवान है ही। उनमें शक्ति कहां भरी नहीं जाती है। परमात्मा को सर्वशक्तिवान क्यों गाया जाता है यह भी कोई नहीं जानते हैं। कृष्ण को सुदर्शनचक्र दे दिया है जिससे कृष्ण सभी को गला काटते रहते। सिक्ख लोग भी सुदर्शनचक्र का काफी प्रयोग करते हैं। कहते हैं तो चक्र से गला काट देते हैं। सुदर्शनचक्र क्रियात्मक में समझा जाता है। बाप कहते हैं काम कटारी। तो यह कटारी क्रियात्मक समझी जाती है। यह सभी डिफेक्ट निशानियां सब की हैं। बाप आकर सभी बातें समझाते हैं। पढ़ाते हैं। बाप कहते हैं मैं जिसमें प्रवेश करता हूँ इनमें तो भी कट चढ़ी हुई है। इनमें ही मैं प्रवेश करता हूँ। पराया देश, पराये शरीर में इनके ही बहुत जन्मों के अन्त में आता हूँ। कट जो चढ़ी हुई है वह तो कोई उतार न सके सिवाय एक सतगुरु के। कट उतारनेवाला एक ही है। वह एक्सट्रीटली पावरफुल है। यह भी तुम समझते हो। यह भी पुस्तक में बिठाने लिए टाईम चाहिए। तुम बच्चों को बाप सभी कुछ समझा देते हैं। बाप भी लिख देते हैं कि बाप ज्ञान का सागर है, शान्ति का सागर है। बाप लिख देते हैं बच्चों को। सभी कुछ समझाते हैं। इन पर पूरी कट चढ़ी हुई है। आते भी पुरानी दुनिया में हैं। सभी पतित हैं। सब से अति पतित कौन है। यह बाप बतलाते हैं। मैं उस रथ में ही प्रवेश करता हूँ। जो ड्रामा जैसा था वही कौड़ी जैसा बना है। वह मत इस समय कलेक्टपति हैं परन्तु अचकाल लिए। सभी का खाता हो जायेगा। वर्ल्ड फाइनल तो तुम बनते हो। अभी तुम भी स्टूडन्ट हो। यह भी स्टूडन्ट है। यह भी बहुत जन्मों के अन्त में है। कट चढ़ी हुई है। जो बहुत अच्छा पढ़ते हैं उनमें ही बहुत कट चढ़ती है। बड़ी फिर सबसे पतित बनते हैं। उनको फिर पावन बनना है। यह ड्रामा बना हुआ है। यह कहते हैं मैं जो सबसे पावन बनता हूँ फिर 84 जन्मों बाद सब से पतित भी बनता हूँ। बाप तो दिव्य बात बताते हैं ना। बाप है अन्य। यह कैन जानी नहीं बतलाते। यह सभी बातें मनुष्य को समझ न सके। तुम बच्चों को बिगर मनुष्यों को कैसे पता पड़े कि इनमें ब्रह्मा कैसे कहते हैं, परमात्मा ब्रह्म ने इनमें प्रवेश क्यों किया। यह अभी तुम समझते हो।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ब्राह्मण कुल है सबसे ऊंचा। क्योंकि बाप पढ़ाते हैं। ब्राह्मण से देवता बनते हैं। बाप के बच्चे तो गये ना। दादा बाप के बच्चे। जिनको बाप बच्चे2 बड़ बैठ पढ़ाते हैं। दीपत पर चलते रहते हैं। बाप बाबा दादे भेंट बनाते रहते हैं। फल-पराफलदाता है ना। जो भी करते हैं और कराते भी हैं। कुछ खुद करते हैं कुछ कराते भी हैं। वैकुण्ठ में अभी तुम समझते हो। दुनिया तो कोई चीज है नहीं। शरीर तो पुराना ही लेना है। ये पैरिक बनवासी है। तुम भी बनवासी हो। वानप्रस्थ में जाने वाले हो। वानप्रस्थ कहो वा बनवासी कहो बात एक ही है। वहां है अति न पैसा पर बात करना है। गाड़ी में बनवा में बैठते हैं ना। जाना तो वहाँ स्वर्ग में। परन्तु वह तो जैसे हर कर्म में जाते हैं। मत पड़े घर के होते हैं उनको भी पुराने कपड़े आदि पहनाकर बनवास में बिठाते हैं। जंगल में जाने वाले को भी बनवासी कहते हैं। तो बाप बतीया कर समझाते हैंबड़ कहां जाते हैं, तुम कहां जाते हो।

समझाते बड़ी फैरेक्ट है। यह ही समझने की मुश्किलात है। आत्मा मौत नहीं है। आत्मा फिर मैं बोलेगा। जनावर आदि में तो बोल न गये। अब मनुष्य चोला। बाप खुद ही कहते हैं मैं तो एक्सपीरियंसी कर्मी हूं। कि मैं कोई आत नहीं हूं। मैं सदैव पवित्र ही हूं तब तो मुझे बुलाते हो। मैं सारे विश्व का तोलाम हूं। सभी आत्मा पवित्र हो गये हैं। अभी मैं आत्मा को गया पिफैक्ट पवित्र बना देता हूं। पोथी भी हूं। अभी तुम आत्मा भी समझ गये हो। आत्मा ही सभी प्रारब्ध करती है। सतयुग से लेकर कलियुग तक आत्मा ही पार्ट बजाती है। 84 जन्मों का पार्ट है। आत्मा पवित्र है तो शरीर भी पवित्र मिलता है। यह सभी बातें बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। गायन है, सिर्फ तो टीचिंग वाईफ ना। प्रजापति में कोई थोड़ा संशय आयेंगे क्या समझेंगे। इसमें तो पूर्ण वाईफ आफ हसबैंड मनुष्य से देवता विश्व का मालिक कैसे बन सकते हैं। बाप कहते हैं हे आत्मायें तुम स्वयं पवित्र नहीं हो। सब तो पवित्र बनने लिए बुलाते हो। अभी फिर पावन बनना है। बाप ही बच्चे2 कह समझाते रहते हैं। तुम तो बच्चे2 नहीं कहेंगे ना। तुम आपस में भाई2 हो। बाप बच्चे2 कह कहते हैं तो बाप को कहेंगे तन्वा नहीं आती। तुम बाप को याद नहीं कर सकते हो। योग अक्षर कहते हो तो बाबा समझते हैं कच्चे हैं बहुत। योग अक्षर सन्यासियों आदि का सुना हुआ है। वह तो हठयोगी योग आदि लगाते हैं। यहां तो बाप को याद करना है। जैसा टीचर हमको पढ़ाते हैं। वह सकता है ना। कैसे कहेंगे क्या हमारा टीचर साथ योग है। भारत में योग के लिए मनुष्य कितना बाबा बाबा करते हैं तुम से भी पूछते हैं कुछ आईडिया बताओ अथवा युक्ति बतलाओ। आत्मा कुमारियों से डरते हैं। तुम मौत सिखाने हो। जानते हो हम बाबा के पास जन्म लेने जाते हैं। आत्माओं को अपने असली शरीर छोड़ फरिश्ता बनना है। बाप आते ही हैं मौत देने लिए। सन्यासी लोग तो ऐसी शिक्षा दे न सकें। मौत किसको पसन्द आवे बड़ा मुश्किल है। तुम कोशिश करते हो अभी जल्दी2 जायें परन्तु जा नहीं सकते हो सिवाय कर्मातीत अवस्था के। सृष्टि में कर्मातीत अवस्था को पाकर हम घर जायें। 84 जन्म भटके हैं। अभी जल्दी जायें। सिर पर बोझा बहुत जितना याद करेंगे उतना ही कट उतरेंगे। शान्ति में आने बाद पाप किया तो उसका फिर सौगा 10 वर्ष हो जाता है। बाप की निन्दक ठौर न पाये। कैसे? पाप भी कहते हैं। मुख्य बात तो है विकर्म का। औरों को भी दिशा देकवाते हैं। तो पाप बहुत ही पड़ जाता है। तुम कहते हो हमको पढ़ाई से पद बनना है तो यह है एक तुच्छ कल्पना है। और डाक्टर, इंजीनियर, बैरिस्टर आदि बनते हैं वह कल्पना है। सृष्टि का भी कुछ पता देखें कल्पना है। यूनिवर्सिटी में पढ़ते हैं क्या यह कल्पना है? अक्षर कैसे होते हैं जो बुद्धि भी समझ सके। कल्पना का अर्थ क्या जो बुद्धि में आया वह बना दिया। तो कैसे2 भी आते हैं उनसे हमारी क्या बात है। पाप गाया तो नहीं कर सकते ना। कोई गाली करते हैं तो बाप की निन्दा कराते हैं उनको भी डर रहता है जैसे कर्म में कंगाल। तुमको भी समझना है। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग और नमस्ते।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

22-3-99 प्रातः मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – बाप की सकाश लेने के लिए खुशबूदार फूल बनो, सवेरे-सवेरे उठकर याद में बैठ प्यार से बाबा से मीठी-मीठी बातें करो"

प्रश्नः- बाप को सब बच्चे नम्बरवार याद करते है लेकिन बाप किन बच्चों को याद करते है?

उत्तरः- जो बच्चे बहुत मीठे है। जिन्हें सर्विस के बिना और कुछ सूझता ही नहीं। जो अति प्रेम से बाप को याद करते, खुशी में प्रेम के आंसू बहाते। (ऐसे बच्चों को बाप भी याद करते है। बाप की नज़र फूलों तरफ जाती है, कहेंगे फलानी आत्मा बड़ी अच्छी है, यह आत्मा जहाँ सर्विस देखती, भागती रहती है, अनेकों का कल्याण करती है। तो बाप उसे याद करते है।)

ओम् शान्ति। (बाप बैठकर सब आत्माओं को समझाते हैं। शरीर भी याद पड़ता तो आत्मा भी याद पड़ती है। शरीर बिगर आत्मा को नहीं याद किया जा सकता। समझा जाता है यह आत्मा अच्छी है, यह बाह्यमुखी है, यह इस दुनिया का सैर आदि करना चाहती है। यह उस दुनिया को भूली हुई है। पहले उनका नाम-रूप सामने आता है। फलाने की आत्मा को याद किया जाता है। फलाने की आत्मा अच्छी सर्विस करती है, इनका बुद्धियोग बाबा के साथ है। इनमें यह यह गुण हैं। पहले शरीर को याद करने से फिर आत्मा याद आती है। पहले शरीर याद आयेगा क्योंकि शरीर बड़ी चीज है ना। फिर आत्मा जो सूक्ष्म बहुत छोटी है, वह याद आयेगी।) इन बड़े शरीर की कोई महिमा नहीं की जाती है। महिमा आत्मा की ही की जाती है। इनकी आत्मा अच्छी सर्विस करती है। फलाने की आत्मा इनसे अच्छी है। पहले तो शरीर याद आता है। बाप को तो अनेक आत्माओं को याद करना पड़ता है। शरीर का नाम याद नहीं आता, सिर्फ रूप सामने आता है। (फलाने की आत्मा कहने से शरीर जरूर याद पड़ता है। जैसे समझते हो इस दादा के शरीर में शिवबाबा आते हैं। जानते हैं इनके तन में बाबा है। शरीर जरूर याद पड़ेगा। पूछते हैं–हम कैसे याद करें? शिवबाबा को ब्रह्मा तन में याद करें या परमधाम में याद करें? बहुतों का प्रश्न उठता है। बाबा कहते हैं–याद तो आत्मा को ही करना है। परन्तु शरीर भी जरूर याद आता है। पहले शरीर फिर आत्मा। बाबा इनके शरीर में बैठा है तो जरूर शरीर याद आयेगा। फलाने शरीर वाली आत्मा में यह गुण हैं। बाबा भी देखते रहते हैं–कौन मुझे याद करते है, किसमें बहुत गुण है, किस-किस फूल में खुशबू है? फूलों से सबका प्यार होता है। गुलदस्ता बनाते है। उसमें राजा, रानी, प्रजा भिन्न-भिन्न फूल-पत्ते आदि सब बनाते हैं। बाप की नज़र फूलों की तरफ जायेगी। कहेंगे, फलाने की आत्मा बड़ी अच्छी है। बड़ी सर्विस करती है। आत्म-अभिमान में रह बाप को याद करते रहते हैं। जहाँ सर्विस देखते हैं वहाँ भागते हैं। फिर भी सवेरे में उठकर याद में बैठते होंगे तो किसको याद करते होंगे? (शिवबाबा परमधाम में याद आता होगा या मधुबन में याद आता होगा? बाबा याद आता

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

होगा ना। इसमें शिवबाबा है क्योंकि बाप तो अभी नीचे आ गया। मुरली चलाने नीचे आये हैं। इनका अपने घर में तो कोई काम नहीं होगा। वहाँ जाकर क्या करेंगे? इस तन में ही प्रवेश करते हैं। तो पहले जरूर शरीर याद आयेगा फिर आत्मा। फलाने शरीर में जो आत्मा है यह अनन्य अच्छी है। इनको सर्विस बिगर कुछ सूझता नहीं है। बहुत मीठी है। बाबा बैठे रहते हैं, सबको देखते रहते हैं। फलानी बच्ची बहुत अच्छी है, बहुत याद करती है। बांधेली बच्चियों को विकार के लिए कितनी मार मिलती है! कितना प्रेम से याद करती होंगी! जब बहुत याद करती है तो खुशी के मारे प्रेम के आंसू भी आ जाते हैं। कभी-कभी वह आंसू गिर भी पड़ते हैं। बाबा को और धन्धा क्या है। सबको याद करते हैं। बहुत बच्चियां याद आती हैं। फलाने की आत्मा में दम नहीं है। बाप को याद नहीं करती। किसको सुख नहीं देती। यह अपना ही कल्याण नहीं करती। बाप तो यही जांच करते रहेंगे। याद करना माना सकाश देना। आत्मा का कनेक्शन परमात्मा के साथ रहता है ना। एक दिन आयेगा जबकि बच्चे योग में बहुत रहेंगे। यह भी किसको याद करेंगे तो झट साक्षा-

c त्कार होगा। आत्मा तो है छोटी बिन्दी। साक्षात्कार करें तो भी कोई समझ न सकें फिर भी शरीर ही याद आता है। आत्मा है छोटी परन्तु याद करती है तो उनकी आत्मा पावन बनती जाती है। बगीचे में वैराइटी फूल होते हैं। बाबा भी देखते हैं यह बहुत अच्छा खुशबूदार फूल है, यह इतना नहीं। तो पद भी कम होगा। बाबा के जो मददगार बनते हैं, वही ऊंच पद पाते हैं। वह भी जो बाप को याद करते रहते हैं। ब्राह्मण से ट्रॉन्सफर हो देवता बनते हैं। यह वर्णन भी संगम पर ही कर सकते हैं कि यह दैवी फूल है या आसुरी फूल है? फूल तो सब हैं परन्तु वैराइटी बहुत है। बाबा भी याद करते रहते हैं। टीचर अपने स्टूडेन्ट

d को याद करेंगे ना। यह कम पढ़ते हैं। दिल में तो समझेंगे ना। यह बाप भी है, टीचर भी है। बाप तो है ही। टीचरपने का जास्ती चलता है। टीचर को तो रोज़ पढ़ाना है। इस पढ़ाई की ताकत से वह पद पाते हैं। सुबह को तुम सब भाई बाप की याद में बैठते हो, वह सब्जेक्ट है याद की। फिर मुरली चलती है, वह है पढ़ाई की सब्जेक्ट। मुख्य है ही योग और पढ़ाई। उनको ज्ञान और विज्ञान भी कहा जाता है। यह ज्ञान-विज्ञान भवन है, जहाँ बाप आकर सिखलाते हैं। ज्ञान से सारे सृष्टि की नॉलेज मिल जाती है। विज्ञान माना तुम योग में रहते हो जिससे तुम पावन बन जाते हो। तुमको अर्थ का पता है। बाप बच्चों को देखते रहते हैं। देही-अभिमानी बनने से ही भूत निकलेंगे। ऐसे नहीं, सबके भूत फट से निकल जायेंगे। हिसाब-किताब जब चुक्तू हो फिर चलन अनुसार ही पद पायेंगे। क्लास ट्रांसफर होते हैं। इस दुनिया का ट्रांसफर नीचे हो रहा है और तुम्हारा ऊपर हो रहा है। कितना फ़र्क

e है। वह कलियुगी सीढ़ी नीचे उतरते जाते हैं और तुम पुरुषोत्तम संगमयुगी, सीढ़ी ऊपर चढ़ते जाते हो। दुनिया तो यही है, सिर्फ बुद्धि का काम है। तुम कहते हो हम संगमयुगी हैं। पुरुषोत्तम बनाने लिए बाप को आना पड़ता है। तुम्हारे लिए अब पुरुषोत्तम संगमयुग है। बाकी सब घोर अन्धियारे में हैं। भक्ति को वह बहुत अच्छा समझते है क्योंकि ज्ञान का उन्हों को मालूम ही नहीं है। तुमको अभी ज्ञान मिला है, तब तुम समझते हो। ज्ञान की एक

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

चुटकी से आधाकल्प के लिए हम चढ़ जाते हैं। फिर वहाँ ज्ञान की बात भी नहीं होगी। यह सब बातें महारथी बच्चे ही सुनकर धारण कर और सुनाते रहेंगे। बाकी तो यहाँ से निकले और खलास। कर्म, अकर्म, विकर्म का राज़ भी भगवान् ही समझाते हैं। यह है कल्प का संगमयुग। जबकि पुरानी दुनिया ख़त्म हो नई दुनिया स्थापन होनी है। विनाश सामने खड़ा है। तुम संगमयुग पर खड़े हो और मनुष्यों के लिए कलियुग चल रहा है। कितना घोर अन्धियारा है। गिरते ही रहते हैं। कोई तो निमित्त भी होगा। वह है रावण।

इस सभा में वास्तव में कोई पतित बैठ नहीं सकता। पतित वायुमण्डल को खराब करेंगे। अगर कोई छिपकर आकर बैठते हैं तो उनको चोट भी लगती है। एकदम गिर पड़ेंगे। ईश्वरीय सभा में कोई दैत्य आकर बैठते हैं तो झट पता पड़ेगा। पत्थरबुद्धि तो है ही, बाकी भी पत्थरबुद्धि हो जायेगा। सौगुणा दण्ड पड़ जायेगा। अपने को नुकसान पहुँचायेंगे। कहते हैं हम देखेंगे इनको पता पड़ता है? हमको क्या पड़ी--जो करेगा, सो पायेगा। हमको जानने की जरूरत नहीं। बाप से सदैव सच्चा रहना है। कहते हैं सच तो बिठो नच। सच्चे रहेंगे तो अपनी राजधानी में भी डांस करेंगे। बाप है ही ट्रुथ। तो बच्चों को भी ट्रुथ बनना चाहिए। बाबा पूछते हैं--शिवबाबा कहाँ है? कहते हैं--इसमें है। परमधाम छोड़कर, दूर देश के रहने वाले आये देश पराये। उनको तो अब बहुत सर्विस करनी है। बाप कहते हैं--मुझे रात-दिन यहाँ सर्विस करनी पड़ती है। सन्देशियों को, भक्तों को साक्षात्कार कराना पड़ता है। है तो यहाँ ही। वहाँ तो कोई सर्विस नहीं। सर्विस बिगर बाबा को सुख न आये। सारी दुनिया की सर्विस करनी है। सब पुकारते हैं बाबा आओ। कहते हैं मैं इस रथ में आता हूँ। उन्होंने फिर घोड़े गाड़ी बना दी है। अब घोड़े गाड़ी में कृष्ण कैसे बैठेंगे! ऐसे भी नहीं कोई शौक होता है घोड़े-गाड़ी पर बैठने का।

देही-अभिमानी और देह-अभिमानी बनने की बातें संगमयुग पर ही होती हैं और सिवाए बाप के यह बातें और कोई समझा भी नहीं सकते हैं। तुम भी अभी जानते हो। पहले नहीं जानते थे। क्या कोई गुरु ने सिखाया? गुरु तो बहुत किये। कोई ने भी नहीं सिखाया। बहुत लोग गुरु करते हैं। समझते हैं कोई से शान्ति का रास्ता मिल जाए। बाप कहते हैं शान्ति का सागर तो एक बाप ही है, वह साथ ले जाते हैं। सुखधाम-शान्तिधाम का किसको पता ही नहीं है। कलियुग में है शूद्र वर्ण। पुरुषोत्तम संगमयुग पर है ब्राह्मण वर्ण। इन वर्णों का भी तुम्हारे सिवाए कोई को पता नहीं है। यहाँ तो सुनते हैं, बाहर निकलने से सब कुछ भूल जाते हैं। धारणा होती नहीं। बाप कहते हैं कहाँ भी जाते हो, बैज पड़ा हो। इसमें लज्जा की बात नहीं है। यह तो बाबा ने बहुत कल्याण के लिए बनाया है। किसको भी समझा कर दो। कोई सेन्सीबुल होगा तो कहेगा इस पर आपका खर्चा हुआ होगा। बोलो--खर्चा तो होता ही है। गरीबों के लिए फ्री है। वह धारणा कर लें तो ऊंच पद पा सकते हैं। गरीब के पास पैसे ही नहीं तो क्या करेंगे। कोई के पास पैसे हैं परन्तु मनहूस हैं। इसने प्रैक्टिकल करके दिखाया। सब कुछ माताओं के हवाले कर दिया। तुम बैठ सब कुछ सम्भालो क्योंकि अब तो यह ज्ञान मिला है कि पिछाड़ी में कुछ भी याद न आये। अन्तकाल जो स्त्री सिमरे....।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बड़ी बिल्डिंग्स आदि होंगी तो अवश्य याद पड़ेगी। परन्तु थोड़ा भी ज्ञान सुना तो प्रजा में जरूर आयेंगे। बाप तो है ही गरीब निवाज़। कोई-कोई के पास पैसे होते हैं तो भी मनहूस होते हैं। ऐसे नहीं समझते कि पहला वारिस तो शिवबाबा है। भगवान वारिस तो भक्ति मार्ग में भी है ईश्वर अर्थ देते हैं। क्या वह कंगाल है जो उनको देते हैं! समझते हैं ईश्वर के नाम पर गरीबों को देंगे तो ईश्वर एवज में देंगे। दूसरे जन्म में मिलता तो है। कहते हैं दे दान तो छूटे ग्रहण। बाप को सब कुछ दे दिया, शरीर, मित्र-सम्बन्धी आदि सब कुछ बाबा को समर्पण कर दिया। यह सब कुछ आपका है। इस समय सारी दुनिया पर ग्रहण लगा हुआ है। वह कैसे एक सेकण्ड में छूटता है, काले से गोरे कैसे बनते हैं, यह अब तुम ही जानते हो फिर औरों को समझाते हो। जो कहते हैं—हम अन्दर में समझते हैं परन्तु किसको समझा नहीं सकते हैं, वह भी कोई काम के नहीं। बाप कहते हैं—दे दान तो छूटे ग्रहण। हम तुमको अविनाशी रत्न देते हैं, वह सबको देते जाओ तो भारत पर वा सारी दुनिया पर जो राहू का ग्रहण बैठा हुआ है, वह उतर जाये और बृहस्पति की दशा हो जाये। सबसे अच्छी होती है बृहस्पति की दशा। अब तुम जानते हो भारत ख़ास और आम दुनिया पर राहू का ग्रहण लगा हुआ है। वह कैसे छूटे? यह तो बाप है ना। बाप तुम्हारे से पुराना लेकर नया देते हैं। इसको कहा जाता है बृहस्पति की दशा। मुक्तिधाम में जाने वालों के लिए बृहस्पति की दशा नहीं कहेंगे। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. सदा खुशी में डांस करने के लिए सच्चे बाप से सदा सच्चा रहना है। कुछ भी छिपाना नहीं है।

२. बाप जो अविनाशी रत्न देते हैं, वह सबको बांटने हैं। साथ-साथ शिवबाबा को अपना वारिस बनाकर सब कुछ सफल करना है। इसमें मनहूस नहीं बनना है।

वरदान:- परमपूज्य बन परमात्म प्यार का अधिकार प्राप्त करने वाले सम्पूर्ण स्वच्छ आत्मा भव

सदा ये स्मृति जीवन में लाओ कि मैं पूज्य आत्मा इस शरीर रूपी मन्दिर में विराजमान हूँ। ऐसी पूज्य आत्मा ही सर्व की प्यारी है। उनकी जड़ मूर्ति भी सबको प्यारी लगती है। कोई आपस में भल झगड़ते हों लेकिन मूर्ति को प्यार करेंगे क्योंकि उनमें पवित्रता है। तो अपने आपसे पूछो मन-बुद्धि सम्पूर्ण स्वच्छ बनी है, जरा भी अस्वच्छता मिक्स तो नहीं है? जो ऐसे सम्पूर्ण स्वच्छ हैं वही परमात्म प्यार के अधिकारी हैं।

स्लोगन:-

अपनी सेवा को भी बाप के आगे अर्पित कर दो तब कहेंगे समर्पित आत्मा।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मु० नं० 16

19-4-78 प्रातः क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" मधुबन

"सपूत बच्चे वह जो श्रीमत पर चल बाप का नाम बाला करे"

गीतः- किसी ने अपना बनाके मुझको ... ओमशान्ति। भगवानुवाच- यह बच्चों को समझाया गया है कि मनुष्य को अथवा देवता को कब भी भगवान नहीं कहा जा सकता। परमात्मा है ही एक। जिसके मन्दिर भी बनते रहते हैं। जिसके शिव, सोमनाथ कहते हैं वह आकर बच्चों को कहते हैं मीठे2 बच्चे मुझे अपने उस घर में याद करो मैं परमधाम का निवासी हूँ। मैं यहाँ इस शरीर में आकर कहता हूँ कि तुमको याद वहाँ करना है- जहाँ अब आना है। इसे नहीं यहाँ याद करना है। मैं यहाँ आया हूँ तुम बच्चों का दुरुपयोग बन्द लगाने के लिए। हे बच्चे मुझे अपने परमधाम में याद करो यह तो समझते हो कि हम इस तमोगुणी दुनिया में अनगिनत जैसे पापी हैं। यह सब पाप-आत्मायें हैं, तुम सबसे तमोप्रधान हो, भल करके यह जन्म किसी अच्छे के घर में भी लिया हो फिर भी बहुत हैं जो बिल्कुल तमोप्रधान हैं इस जन्म में भी कोई अच्छे के घर कोई गरीब के घर हैं। कोई के संस्कार कैसे हैं कोई के कैसे हैं। जो अच्छी रीति धारणा करते हैं उनको जरूर अच्छा कहेंगे कोई तो ऐसे हैं जो कितना भी माथा मारते हैं सुधरते नहीं। श्रीमत पर चलते नहीं उनके लिए समझा जाता है कि यह बहुत अनगिनत में न पड़ते हैं तो जाकर अधमगति या कनिष्ट पद पावेंगे। उत्तम, मध्यम, कनिष्ट तीन प्रकार के पद होते हैं, तो जो श्रीमत पर नहीं चलते उनके लिए समझना चाहिए यह तो अनगिनत से भी अनगिनत हैं। जन्म जन्मान्तर कुछ ऐसे पाप करते आये हैं। भल किसी का यह जन्म अच्छा है किसी का अच्छा न भी हो तो भी पढ़ाई से ऊँच चढ़ सकता है। अब तुम बच्चे जानते हो हमने 84जन्म ऐसे पास किये हैं हम भविष्य ऊँच पद पाने पढ़ रहे हैं। बाप कहते हैं अपने दिल दर्पण में अपनी चलन को भी देखो। बाबा बार2 बच्चों को समझाते हैं अपनी चाल को सुधारो तुम बन्दर से भी बदतर हो। अब मन्दिर बनते हैं। जो समझते नहीं धारणा नहीं करते वह बन्दर मिसल वैसे के वैसे हैं। जो समझते हैं हम स्वर्ग के लायक बन रहे हैं वह फिर औरों को भी बनाते हैं। उनकी चलन में बहुत फर्क है। यही देवतापना दिखाना है असुरपना दिखाने से पद भ्रष्ट हो जावेगा। असल में हम सब कब्रदाखिल थे। रावण ने कब्रदाखिल बना दिया है। बाप आकर कब्रदाखिल से निकालते हैं। दुनिया इस समय कब्रिस्तान है उसमें भी नम्बरवन है भारत। पहले2 नम्बरवन परिस्तान था। अब कब्रिस्तान है। अमेरिका को अब परिस्तान समझते हैं। खास क्रिश्चियन उन जैसे परिस्तान है क्योंकि वहाँ धन है बहुत। धन और सबके पास है सिर्फ भारत को न है। भारत जितना कर्मा कोई नहीं उठाते। जो साधू हैं उनको बाहर से मंगाते हैं यह मशीनरी आदि आकर बनाये। अक्ल यहाँ से लेते हैं। फिर भी अपना नहीं कितना है तो बाप समझाते हैं कि अपनी अक्ल तो देवो तुम दैवी चलन चलने के लायक हो। समझते हो हम श्रीमत पर चल रहे हैं। गॉड्ली फादर का अनन्य बच्चे मिसल गुल आते जाते हैं। काम के तो जैसे अक्ल ही नहीं है। यह दोनों भूत बहुत खराब हैं। क्रोध से तो रुक दो को जलायेंगे। यह बड़ा भारी दुश्मन है। इनको भगाना पड़ेगा। देखना है मेरे में तो कोई अवगुण नहीं है। अगर मैं श्रीमत पर न चलता हूँ तो बिल्कुल पछतायेंगे। श्रीमत मिलती ही इसलिए है कि आत्मा अच्छी हो जाए। अविनाशी धन कमाने में कोई कसर नहीं करनी चाहिए। जितना पाप को याद करेंगे उतनी ताकत आवेगी और ज्ञान धारण करेंगे नहीं तो माया थप्पड़2 पर थप्पड़ मारेगी। प्रतिज्ञा करेंगे हम क्रोध नहीं करेंगे फिर 5मिनट बाद क्रोध करेंगे। अनादि आपसे जन्म जन्मान्तर की पड़ी हुई है तो उनको मिटाने में टाइम लगता है। इन भूतों को पूरा वश करना है। तीसरा नेत्र यह फिर है इनके छोटे2 बच्चे। विकारों के भूत भी नम्बरवार हैं। पहले है अशुद्ध अहंकार फिर काम क्रोध यह मिला और कोई दे न सके तो बच्चे देहीअभिमानी बनो। देही को याद करो। सन्यासी लोग तो अपने को परमात्मा समझते हैं बड़े ते बड़ी गलती। कहते हैं आत्मा सो परमात्मा। बाप कहते हैं तुम देही आत्मा [illegible]

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

16

माता पिता कहते दुनिया में रहते हैं परमात्मा सर्वव्यापी है फिर उनको याद करने से क्या मिलेगा। भक्त
लोग याद करते हैं। परन्तु उनको मिलता क्या है यह कोई नहीं जानते। सर्वव्यापी कहने से मिलने की बात ही
नहीं रहती। आपके मत पर चलने से मनुष्य नीचे ही गिरते जाये हैं। बीज तो एक ही बाप है। वाणी द्वारा
आसुरी मत देने वाले। आसुरी मत देने वाला राजा है। एक को जो दुःख देने वाले हो पड़ते। यह तुम हो
जानते सकदाय। तुम हो एक को जो सुख देने वाले। बाप है ही सर्व का सुख दाता। कोई मनुष्य को नहीं
कहेंगे। सर्वोत्तम तीर्थ कहते हैं परन्तु सर्व को प्राप्ति रचता है। रचना ही करेगा। कई आता वाले सृष्टि।
सारी सृष्टि का सद्गति दाता कोई मनुष्य को नहीं कहेंगे। तो मुख्य बात है कहते सर्वव्यापी का ज्ञान निकलना
बड़ा पाप हो जाता है। सबको याद करते हैं। सबको चाहते हैं-भगवान आकर हमको कुछ देवे। बाप कहते कुछ देता है। रचता
कहते। रचेगा तो देगा ही ना। बाबा देते हैं स्वर्ग की बादशाही। उन्हें बाप को भूलना न है। यही है मेहनत।
अभी तुम समझे तो समझ जाने हो। पहले तुम बहुत बेसमझ थे। बाप को सर्वव्यापी कहने से कुछ भी नहीं मिलता।
पहले2 नाम सिद्ध कर बताते हैं वह है परमपिता। परम आत्मा लौकिक बाप को नहीं दिया जाता। परमपिता है
b परमधाम में रहने वाला। परे से परे वह है सुप्रीम। वह ही मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है। बाप बीज है ना।
उन को एडाप्ट कर फिर रचना रचते हैं। शिवबाबा कहते हैं मैं भी इनको एडाप्ट करता हूँ। वह है कुछ बंधावली
और यह है मुख वंशावली। यह ब्रह्मा वैरी इन्हों है। परन्तु चैतन्य तो पुरुष का है। मैं उनको एडाप्ट करता हूँ।
इनके मुख से तुमको जन्म देता हूँ। शिवबाबा के बच्चे तो हो। परन्तु शिवबाबा ने ब्रह्मा द्वारा नया जन्म दिया है।
c कहते हो तुम मात पिता। वह तो निराकार है माता कैसे हो सकती। इनमें बहुत सूक्ष्म बुद्धि चाहिए
समझने की। बाप को कहा है रचता तो वह क्रियेट जैसे करेंगे जगत अम्बा सरस्वती निकली कहते हैं वह तो ब्रह्मा
सरस्वती मुख वंशावली गाई जाती है। अब माता उनको कहें वा इनको। असुल रीयल्टी में यह (शंकर ब्रह्मा) माता
है परन्तु पुरुष तन है, तो मातायें भी चाहिए तब इनको देवी कहा जाए। इसलिए फिर जगत अम्बा निमित्त बनी
हुई है। बाप कहते हैं मैं इनमें प्रवेश कर इनको एडाप्ट करता हूँ फिर तुम कहते हो यह ब्रह्मा-द्वारा ईश्वर
बोलते हैं। ईश्वर शरीर नहीं है। यह बातें शास्त्रों में कुछ भी है नहीं। यह सब है भक्ति मार्ग के खिलौने।
खिलौने से मनुष्य का कुछ नीचा नहीं होता। यहाँ तो टेम्पटेशन है बाप से क्या मिलेगा। सर्वव्यापी कहने से
पूर्णविराम का गुरु नीचा नहीं होता है। सारी दुनिया में यह सर्वव्यापी का ही ज्ञान है। एक समय वह सबके
अन्दर में ही पुरुष में इकट्ठा आ जाते हैं तो उन्हों ने फिर लिख दिया है मैं सर्व में व्यापक हूँ। सभी मनुष्य मुझे
बाप कहते हैं परन्तु जानते नहीं हैं वे सर्वव्यापी कितना पक्का कर दिया है। रस्सी को सर्प बना दिया है। कुछ
ही वर्ष और सर्पमयी बन गये हैं। अब बाप कहते हैं मेरे को याद करो और कोई को नहीं। सिर्फ एक बाप
नहीं कि मैं सर्वव्यापी हूँ। तुम जानते हो अनादि मातायें कोई को याद करते हैं। तो सर्वव्यापी अक्षर में कहाँ
d एक भी माता में माता है फिर वो कैसे क्या होगा। होता ही है। इस समय तो एक्टर्स ही एक्ट कर रहे हैं। सबसे
e बड़ा कहेंगे अनादि बना बनाया ड्रामा है। इसमें कोई कर नहीं सकता। यह चित्र आदि सब किसी मनुष्य
द्वारा बनवाये गये हैं। यह कुछ कहते हैं मैं कुछ नहीं जानता था। अब बाप ने दिव्य दृष्टि दी है।
दिव्य दृष्टि माना तो अक्ल है ना। नये2 चित्र बनवाते रहते हैं। एक बार बनाया फिर ख्यालात निकलते हैं तो
f चित्रकार बुलाते हैं ब्रह्मा के आगे प्रजापिता अक्षर जरूर लिखना पड़े। नहीं तो मनुष्य समझते नहीं। कहते हैं
शिवबाबा तुम ब्रह्मा को क्यों आगे रखते हो। ब्रह्मा की औलाद तो ब्राह्मण हुए ना। तुम बच्चे जानते हो डायरेक्ट
में इन ब्रह्मा को औलाद शिव के बच्चे हैं। पहले2 बात है ही बाप और वर्से की। तो तुम कैसे कहेंगे कि शिव

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

19.9.89 प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?
"मीठे बच्चे- अपनी बैटरी चार्ज करने का ख्याल करो, अपना टाइम परचिंतन में वेस्ट मत करो, अपनी पोट तो नशा चढ़े"

प्रश्न:-ज्ञान एक सेकेण्ड का होते हुए भी बाप को इतना डिटेल से समझाने वा इतना समय देने की आवश्यकता क्यों? उत्तर:-क्योंकि ज्ञान देने के बाद बच्चों में तूफान हुआ है या नहीं, यह भी बाप देखते हैं। और फिर तूफानने के लिए ज्ञान देते ही रहते हैं। तारे बीज और झाड़ का ज्ञान देते- जिस कारण उन्हें ज्ञान सागर कहा जाता। अगर एक सेकेण्ड का मंत्र देकर चले जायें तो ज्ञान सागर का टाइटिल भी न मिले।

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। भक्ति मार्ग में परमपिता परमात्मा शिव को यहाँ ही पूजते हैं। भल बुद्धि में है कि यह होकर गये हैं। जहाँ पर लिंग देखते हैं तो उनकी पूजा करते हैं। यह तो समझते हैं शिव परमधाम में रहने वाला है। होकर गये हैं, इसलिए उनका प्रादुर्भाव बनाकर पूजते हैं। जिस समय याद किया जाता है तो बुद्धि में जरूर आता है कि निराकार है, जो परमधाम में रहने वाला है। उनको शिव कह पूजते हैं क्योंकि परमात्मा है। अभी तुम्हारे आगे तो परमात्मा है नहीं। भक्ति मार्ग वालों के आगे परमात्मा है, मन्दिर में जाकर माथा टेकते हैं, शिव कहकर पूजा करते हैं और उन पर दूध फल, जल आदि चढ़ाते हैं। परन्तु वह तो जड़ है। जड़ की भक्ति ही करते हैं। अभी तुम जानते हो-यह है चैतन्य। उनका निवास स्थान परमधाम है। वह लोग जब पूजा करते हैं तो बुद्धि में रहता है कि परमधाम निवासी है- होकर गये हैं तब यह चित्र बनाये गये हैं, जिसकी पूजा की जाती है, वह चित्र कोई शिव नहीं है, उनकी प्रतिमा है। वैसे ही देवताओं को भी पूजते हैं, जड़ चित्र हैं, चैतन्य नहीं हैं। परन्तु वह चैतन्य जो थे वह कहाँ गये, यह नहीं समझते। जरूर पुनर्जन्म ले नीचे आये होंगे। अभी तुम बच्चों को ज्ञान मिल रहा है। समझते हो जो भी पूज्य देवता थे वह पुनर्जन्म लेते आये हैं। आत्मा वही है, आत्मा का नाम नहीं बदलता। बाकी शरीर का नाम बदलता है। वह आत्मा कोई न कोई शरीर में है। पुनर्जन्म तो लेना ही है। तुम पूजते हो जो पहले2 शरीर वाले थे। सतयुगी लक्ष्मी [illegible] समझते हो जिस चित्र की पूजा करते हैं वह पहले नम्बर वाला है। यह लक्ष्मी नारायण चैतन्य थे। यहाँ ही भारत में थे, अभी नहीं हैं। मनुष्य यह नहीं समझते कि वह पुनर्जन्म लेते2 भिन्न नाम रूप लेते 84जन्मों का पार्ट बजाते रहते हैं। यह किसके ख्याल में भी नहीं आता। सतयुग में थे तो जरूर परन्तु अब नहीं हैं। यह भी किसको समझ नहीं आती। अभी तुम जानते हो-ड्रामा के प्लैन अनुसार फिर चैतन्य में आयेंगे जरूर। मनुष्यों की बुद्धि में यह ख्याल ही नहीं आता। a बाकी इतना जरूर समझते हैं कि यह थे (अब इनका जड़ चित्र है, परन्तु वह चैतन्य चित्र कहाँ गये गये। यह किसकी बुद्धि में नहीं आता है। मनुष्य जो 84लाख पुनर्जन्म कह देते हैं, यह भी तुम बच्चों को मालूम पड़ा है कि 84जन्म ही लेते हैं न कि 84 लाख। अब रामचन्द्र की पूजा करते हैं, उनको यह भी पता नहीं है कि राम कहाँ गया। तुम जानते हो कि राम की आत्मा तो जरूर पुनर्जन्म लेती रहती होगी। यहाँ इम्तहान में नापास होती है। परन्तु कोई न कोई रूप में होगी तो जरूर ना। यहाँ ही पुरुषार्थ करते रहते हैं। इतना नाम बाला है राम का, तो जरूर आयेंगे, उनको नालेज लेनी पड़ेगी। अभी कुछ मालूम नहीं पड़ता है तो उस बात को छोड़ देना पड़ता है। इन बातों में जाने से भी टाइम वेस्ट होता है। इससे तो क्यों न अपना टाइम सफल करें। अपनी उन्नति के लिए बैटरी चार्ज करें। वह फिर हो गया परचिंतन। अभी तो अपना चिंतन करना है। हम बाप को याद करें। वह तो जरूर पढ़ते होंगे। अपनी बैटरी चार्ज करते होंगे। परन्तु तुमको अपनी करनी है। कहा जाता-अपनी पोट तो नशा चढ़े। बाप ने कहा है- जब तुम ततोप्रधान थे तो तुम्हारा बहुत ऊँच पद था। अब फिर पुरुषार्थ करो, मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हों, मंजिल है ना। यह चिंतन करते2 ततोग्रधान बनेंगे। नारायण का ही तिमत्व करने से हम नारायण बनेंगे। अन्तकाल में जो नारायण तिमत्व... तुमको बाप को याद करना है, b जिससे पाप कटें। फिर नारायण बनें। यह नर से नारायण बनने की हाइएस्ट युक्ति है। एक नारायण तो नहीं बनेंगे ना। यह तो सारी डिनायस्टी बनती है। बाप हाइएस्ट पुरुषार्थ करायेंगे। यह है ही राजयोग की नालेज, तो भी पूरे विश्व का मालिक बनना है। जितना पुरुषार्थ

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

करेंगे, उतना जरूर फायदा है। एक तो अपने को आत्मा जरूर निश्चय करो। कोई2 लिखते भी ऐसे हैं, फलानी आत्मा आपको याद करती है। आत्मा शरीर के द्वारा लिखती है। आत्मा का कनेक्शन है शिवबाबा साथ। मैं आत्मा फलाने शरीर के नाम रूप वाली हूँ। यह तो जरूर बताना पड़े ना। क्योंकि आत्मा के शरीर पर ही भिन्न2 नाम पड़ते हैं। मैं आत्मा आपका बच्चा हूँ। मुझ आत्मा के शरीर का नाम फलाना है। आत्मा का नाम तो कभी बदलता नहीं। मैं आत्मा
c फलाने शरीर वाली। शरीर का नाम तो जरूर चाहिए। नहीं तो कारोबार चल न सके। (यहाँ बाप कहते हैं मैं भी इस ब्रह्मा के तन में आता हूँ। टैम्पेरी इनकी आत्मा को भी समझाते हैं। मैं इस शरीर से तुमको पढ़ाने आया हूँ। यह मेरा शरीर नहीं है। मैंने इनमें प्रवेश किया है।
d फिर चले जायेंगे अपने धाम। मैं आया ही हूँ तुम बच्चों को यह मन्त्र देने। ऐसे नहीं कि मन्त्र देकर चला जाता हूँ। नहीं। बच्चों को देखना भी पड़ता है कि कहाँ तक सुधार हुआ है। फिर सुधारने की शिक्षा देते रहते हैं। सेकेण्ड का ज्ञान देकर चले जायें तो फिर ज्ञान का सागर भी न कहा जाए। कितना समय हुआ है, तुमको समझाते ही रहते हैं। झाड़ की, भक्ति मार्ग की सब बातें समझने की डिटेल है। डिटेल में समझाते हैं। होलसेल माना मनमनाभव। परन्तु ऐसे कह, चलें तो नहीं जायेंगे। ताइना (देख-रेख) भी करनी पड़े। कई बच्चे बाप को याद करते2 फिर गुम हो जाते हैं। फलानी आत्मा जिसका नाम फलाना था, बहुत अच्छा पढ़ता था। स्मृति तो आयेगी
e ना। पुराने2 बच्चे कितने अच्छे थे, उनको माया ने हप कर लिया। शुरू में कितने आये। फट से आकर बाप की गोद ली। भट्ठी बनी। इसमें सबने अपना लक अजमाया फिर लक अजमाते2 माया ने एकदम उड़ा दिया। ठहर न सके। फिर 5 हजार वर्ष के बाद भी ऐसे ही होगा। कितने चले गये- आधा झाड़ तो जरूर गया। भल झाड़ बुद्धि को पाया है परन्तु पुराने चले गये, समझ सकते हैं- इनसे कुछ फिर आयेंगे जरूर पढ़ने। स्मृति आयेगी कि हम बाप से पढ़ते थे। और सब अभी तक पढ़ते रहते हैं। हमने हार खा ली। फिर मैदान में आयेंगे। बाबा आने देंगे फिर भी भल आकर पुरुषार्थ करें। कुछ न कुछ अच्छा पद मिल जायेगा।

f (बाप स्मृति दिलाते हैं- मीठे2 बच्चे मामेकम् याद करो तो पाप कट जायेंगे। अब कैसे याद करने हो, क्या यह समझते हो कि बाबा परमधाम में है? नहीं। बाबा तो यहाँ रथ में बैठे हैं। इस रथ का सबको मालूम पड़ता जाता है। यह है भाग्यशाली रथ। इनमें आया हुआ है। भक्ति मार्ग में थे तो उनको परमधाम में याद करते थे परन्तु यह नहीं जानते थे कि याद से क्या होगा। अभी तुम बच्चों को बाप खुद इस रथ में बैठ श्रीमत देते हैं, इसलिए तुम बच्चे समझते हो
g बाबा यहाँ इस मृत्युलोक में पुरुषोत्तम संगमयुग पर है। तुम जानते हो हमको ब्रह्मा को याद नहीं करना है। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। मैं इस रथ में रहकर तुमको यह नालेज दे रहा हूँ। अपनी भी पहचान देता हूँ, मैं यहाँ हूँ। आगे तो तुम समझते थे परमधाम में रहने वाला है। होकर गया है परन्तु कब, यह पता नहीं था। होकर तो सब गये हैं ना। जिनके भी चित्र हैं, अभी वह कहाँ हैं, यह किसको पता नहीं है। जो जाते हैं वह फिर अपने समय पर आते हैं। भिन्न2 पार्ट बजाते रहते हैं। स्वर्ग में तो कोई जाते नहीं। बाप ने समझाया है स्वर्ग में जाने के लिए तो पुरुषार्थ करना होता है और पुरानी दुनिया का अन्त, नई दुनिया की आदि चाहिए। जिनको पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है। यह ज्ञान अभी तुमको है। मनुष्य कुछ नहीं जानते। समझते भी हैं शरीर जल जाता है। बाकी आत्मा चली जाती है। अब कलियुग है तो जरूर जन्म कलियुग में ही लेंगे। सतयुग में थे तो जन्म भी सतयुग में लेते थे। यह भी जानते हो आत्माओं का सारा स्टॉक निराकारी दुनिया में होता है। यह तो बुद्धि में बैठा है ना। फिर वहाँ से आते हैं यहाँ शरीर धारण कर जीव आत्मा बन जाते हैं। सबको यहाँ आकर जीव आत्मा बनना है। फिर नम्बरवार वापिस जाना है। सबको तो नहीं ले जायेंगे फिर तो प्रलय हो जाए।
h दिखाते हैं कि प्रलय हो गई, रिजल्ट कुछ नहीं दिखाते। (तुम तो जानते हो यह दुनिया कभी खाली नहीं हो सकती है। गायन है राम गयो रावण गयो, जिनके बहुत परिवार है। तारी दुनिया में रावण सम्प्रदाय हैं ना। राम सम्प्रदाय तो बहुत थोड़ी है। राम की सम्प्रदाय है ही सतयुग त्रेता में। बहुत फर्क रहता है। बाद में फिर और डाल डालियां निकलती है। अभी तुमने बीज और झाड़ को भी जाना है। बाप सब कुछ जानते हैं, तब तो सुनाते रहते हैं इसलिए उनको ज्ञान

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सागर कहा जाता है, एक ही बात अगर होती तो फिर कुछ शास्त्र आदि भी बन न सके। झाड़ की डिटेल भी समझाते रहते हैं। मूल बात नम्बरवन सब्जेक्ट है बाप को याद करना। इसमें ही मेहनत है। इस पर ही सारा मदार है। बाकी झाड़ को तो तुम जान गये हो। दुनिया में इन बातों को कोई भी नहीं जानते हैं। तुम सब धर्म वालों की तिथि तारीख आदि सब बताते हो। आधाकल्प में यह सब आ जाते हैं। बाकी हैं सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी। इनके लिए बहुत युग तो नहीं होंगे ना। हैं ही दो युग। वहाँ मनुष्य भी थोड़े होते हैं। 84 लाख जन्म तो हो भी न सकें। मनुष्य समझ से बाहर हो जाते हैं इसलिए फिर बाप आकर समझ देते हैं। समझ से जो बाहर जाता है उनको बेसमझ कहा जाता है। नम्बरवन गपोड़ा लगाया है-ईश्वर सर्वव्यापी का और 84 लाख जन्मों का। बाप कहते हैं यह सब हैं अज्ञान। अज्ञान की एक्टिविटी को भक्ति कहा जाता है। ज्ञान की एक्टिविटी को ज्ञान कहा जाता है। वह दिन, वह रात। बाप जो रचता है, वही रचता और रचना के आदि मध्य अन्त की नालेज बैठ देते हैं। भारतवासी तो बिल्कुल कुछ नहीं जानते। सबको पूजते रहते हैं, मुसलमानों को, पारसी आदि को जो आया उनको पूजने लग पड़ेंगे। क्योंकि अपने धर्म और धर्म स्थापक को भूल गये हैं और तो सब अपने2 धर्म को जानते हैं और सबको मालूम है फलाना धर्म कब, किसने स्थापन किया। बाकी सतयुग त्रेता की हिस्ट्री जाग्राफी का किसको भी पता नहीं है। चित्र भी देखते हैं शिवबाबा का यह रूप है। वही ऊँच ते ऊँच बाप है। तो याद भी उनको करना है। यहाँ फिर सबसे जास्ती पूजा करते हैं कृष्ण की। क्योंकि नेक्स्ट में है ना। प्यार भी उनको करते हैं, तो गीता का भगवान भी उनको समझ लिया है। सुनाने वाला चाहिए तब तो उनसे वर्सा मिले। बाप ही सुनाते हैं, नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश कराने वाला और कोई हो न सके सिवाए एक बाप के। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश, विष्णु द्वारा पालना यह भी लिखते हैं। यहाँ के लिए ही है। परन्तु समझ कुछ भी नहीं। तुम जानते हो वह है निराकारी सृष्टि। यह है साकारी सृष्टि। सृष्टि तो यही है, यहाँ ही रामराज्य और रावणराज्य होता है। महिमा सारी यहाँ की है। बाकी सूक्ष्मवतन क्या है, कुछ भी नहीं। यह लिपं सा0 होता। सूक्ष्मवतन में तो आत्मायें रहती हैं फिर यहाँ आकर पार्ट बजाते हैं। बाकी सूक्ष्मवतन में क्या है, यह चित्र बना दिया है। जिस पर बाप बैठ समझाते हैं। यह है फर्स्ट। तुम बच्चों को यह फरिश्ता बनना है। फरिश्ते हड्डी मास बिगर होते हैं। कहते हैं ना- दधीचि ऋषि ने हड्डियां भी दे दी। बाकी शंकर का गायन तो कहाँ है नहीं। ब्रह्मा विष्णु शंकर का मन्दिर है। शंकर का कुछ है नहीं। तो उनको लगा दिया है विनाश के लिए। बाकी ऐसे कोई आंख खोलने से विनाश करता नहीं है। देवतायें फिर हिंसा का काम कैसे करेंगे। न वह करते हैं न शिवबाबा ऐसा डायरेक्शन देते हैं। डायरेक्शन देने वाले पर भी आ जाता है ना। कहने वाला ही फँस जाता है। वह तो शिव शंकर को ही इकट्ठा कह देते हैं। अब बाप भी कहते हैं मुझे याद करो। मामेकम् याद करो। ऐसा तो नहीं कहते शिव शंकर को याद करो। पतित पावन एक ही कहते हैं। भगवान अर्थ सहित बैठ समझाते हैं, यह कोई जानते नहीं हैं, तो यह चित्र देख मूँझ पड़ते हैं। अर्थ तो जरूर दिखाना पड़े ना।

ना! समझने में टाइम लगता है। कोटो में कोई विरला निकलता है। मैं जो हूँ, जैसा हूँ, कोटो में कोई ही मुझे पहचान सकते हैं। अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का बादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:- 1। किसी भी बात के चिंतन में अपना समय नहीं गँवाना है। अपनी मस्ती में रहना है। स्वयं के प्रति चिंतन कर आत्मा को सतोप्रधान बनाना है।

2। नर से नारायण बनने के लिए अन्तकाल में एक बाप की ही याद रहे। इस हाइएस्ट युक्ति को सामने रखते हुए पुरुषार्थ करना है- मैं आत्मा हूँ..। इस शरीर को भूल जाना है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

29-6-01 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम्हारे पास अविनाशी ज्ञान रत्नों का अथाह खजाना है, तुम उसका दान करो, तुम्हारे दर से कोई भी वापिस नहीं जाना चाहिए"

प्रश्नः- सर्व सम्बन्धों की सैक्रीन बाप अपने बच्चों को कौन सी श्रीमत देते हैं?

उत्तरः- मीठे बच्चे – अपना बुद्धियोग सब तरफ से हटाए एक मुझे याद करते रहो। दुनिया की कोई भी वस्तु, मित्र सम्बन्धी आदि याद न आयें क्योंकि इस समय सब दुःख देने वाले हैं। विश्व का मालिक बनना है तो जरूर 63 जन्मों का हिसाब-किताब चुक्तू करने की मेहनत करनी पड़े। सब-कुछ भूल अशरीरी बनो तब हिसाब-किताब चुक्तू हो। मैं सर्व संबंधों की सैक्रीन हूँ।

---

a

ओम् शान्ति बापदादा बच्चों से पूछते हैं कि किसकी याद में बैठे हो? (शिवबाबा की) बुलन्द आवाज में कहना चाहिए – शिवबाबा की याद में बैठे हैं। (तुम बच्चे अर्थात् आत्माओं का कनेक्शन है शिवबाबा से। तुम शिवबाबा के बनते हो इन द्वारा, क्योंकि शिवबाबा इनके द्वारा ही मिलते हैं। यह बीच में दलाल भी कहा जाता है। तुम्हारा दलाल से कोई कनेक्शन नहीं है। यह तो सिर्फ बीच में मारफत है। लेन-देन का सबका हिसाब-किताब बाप से होना है, इनसे नहीं। इनका भी लेन-देन बाप से है। यह भी उस बाप को कहते हैं – बाबा मेरा सब कुछ आपका है। तुम्हें भी एक तो निश्चय यह है कि हम आत्मा हैं और दूसरा यह भी निश्चय है कि हम आत्मायें अभी परमपिता परमात्मा से वर्सा ले रहे हैं। मन्सा-वाचा-कर्मणा, तन-मन-धन से हम शिवबाबा के मददगार बनते हैं। यह सब कुछ शिवबाबा को अर्पण किया हुआ है। फिर शिवबाबा डायरेक्शन देते हैं – ऐसे-ऐसे यह करो। इनको कहा जाता है श्रीमत। बाप खुद कहते हैं मैं इस पुराने तन में प्रवेश करता हूँ। यह भी पतित से पावन बन रहे हैं। यह किसने कहा? शिवबाबा ने। यह भी पावन बन रहे हैं। इनका भी मेरे साथ हिसाब-किताब है। इनके साथ कोई का हिसाब-किताब नहीं। तुम चिट्ठी लिखते हो – शिवबाबा C/o ब्रह्मा। परन्तु माया ऐसी है जो निरन्तर याद करने नहीं देती है। बुद्धियोग घड़ी-घड़ी तोड़ देती है। अगर यही पक्का पुरूषार्थ करेंगे तो फिर दूसरा सब कुछ भूल जायेगा। शरीर भी भूल जायेगा। यह शरीर होगा परन्तु आत्मा को इन सब चीज़ों से नफरत होगी। यह अवस्था जमाने की प्रैक्टिस करनी होती है। अन्त में हमको अपना शरीर भी याद न पड़े। बाप कहते हैं–अपने को अशरीरी समझ मुझ बाप को याद करो। मैं सदैव अशरीरी हूँ, तुम भी अशरीरी थे। फिर तुमने पार्ट बजाया। अभी फिर तुमको पार्ट बजाना है, यह मेहनत है। विश्व का मालिक बनना कोई कम बात है क्या। मनुष्य ही विश्व का मालिक बन सकता है। यह देवतायें भी मनुष्य हैं। परन्तु इनको दैवीगुण वाले देवता कहा जाता है। लक्ष्मी-नारायण विश्व के मालिक थे, इन्हों को अपने बच्चे होंगे। वही उनको माँ-बाप मानेंगे। परन्तु आजकल मनुष्य अन्धश्रद्धा से इन लक्ष्मी-नारायण को त्वमेव माताश्च पिता...कहते हैं। वास्तव में यह महिमा है शिवबाबा की। देवताओं की महिमा गाते हैं आप सर्वगुण सम्पन्न...परन्तु उन्हों की पूजा

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

क्यों करते हैं, यह किसको पता नहीं है। अभी तुम ऐसी महिमा नहीं गायेंगे कि तुम मात-पिता... हाँ तुम जानते हो शिवबाबा वह निराकार परमपिता परमात्मा है। उनसे ही सुख घनेरे मिलते हैं। बाकी जो भी सम्बन्धी आदि हैं उनसे दुःख ही मिलता है। यह तो एक सैक्रीन है, जिससे सर्व सम्बन्ध की रसना मिलती है। इसलिए बाप कहते हैं, बाबा, काका, चाचा आदि सबसे बुद्धियोग हटाए मामेकम् याद करो। तुम गाते भी हो दुःख हर्ता सुख कर्ता... सर्व का सद्गति दाता एक ही है, वही हमारा सब कुछ है। लौकिक बाप से भी दुःख मिलता है। बाकी टीचर है जो किसको दुःख नहीं देते। टीचर पास जाकर पढ़ने से तुम शरीर निर्वाह करते हो। हुनर सिखाने वाले भी होते हैं। वह सब अल्पकाल के
b लिए टीचिंग करते हैं। भक्ति में भी महिमा एक राम अथवा परमपिता परमात्मा की ही करते हैं, उनको ही याद करते हैं। वास्तव में भक्ति भी एक की ही करनी है। वह एक ही तुमको पूज्य बनाते हैं। तुम पहले-पहले एक शिवबाबा की पूजा करते हो। उनको सतोप्रधान भक्ति कहा जाता है। फिर आत्मा भी सतोप्रधान से सतो रजो तमो बनती है। तुम समझते हो हम पुजारी बनते हैं। तुम पहले एक शिव की ही पूजा करते हो फिर कलायें कमती होती जाती हैं। भक्ति भी सतोप्रधान से, सतो रजो तमो बन जाती है। सारा ड्रामा तुम्हारे ऊपर ही बना हुआ है। आपेही पूज्य आपेही पुजारी, जो 84 जन्म पूरे लेते हैं, उनकी ही कहानी है। उनको ही बाप बैठ बताते हैं – तुमने 84 जन्म कैसे लिये हैं। हिसाब ही उनका है। जो पहले-पहले पूज्य देवी-देवता बनते हैं, वही पुजारी बनते हैं। बाप कहते हैं– मैं कल्प-कल्प आकर तुमको पढ़ाता हूँ और देवी-देवता धर्म की स्थापना करता हूँ, राजयोग सिखाता हूँ। गीता में भूल से कृष्ण भगवानुवाच लिख दिया है। भगवान तो एक ही होता है। वह तो कहते ठिक्कर भित्तर, कण-कण में परमात्मा हैं। परन्तु ऐसे तो हो नहीं सकता। भगवान की तो महिमा अपरमअपार है। कहते हैं – हे बाबा तुम्हारी गति मत न्यारी अर्थात् तुम्हारी जो श्रीमत मिलती है, वह सबसे न्यारी है। बाप को कहते ही हैं गति-सद्गति दाता परमपिता परमात्मा, तो बुद्धि ऊपर में जाती है। दुःख के टाइम उनकी ही याद आती है। अगर राम-सीता बुद्धि में हो फिर तो सारा रामायण बुद्धि में आ जाए। तुम तो पुकारते ही हो, उस एक बाप को। सिवाए एक बाप के कोई भी साकारी मनुष्य वा आकारी देवता से बुद्धि नहीं लगानी है। पतित-पावन है ही एक बाप। कोई भी सतसंग में जाकर यही गाते हैं – पतित-पावन सीताराम, अर्थ कुछ नहीं। यह सब है – भक्ति मार्ग का गायना सब रावण की जेल में है। भक्ति मार्ग में बहुत भटकते हैं। यहाँ भटकने की कोई बात नहीं। बाप समझाते हैं, बच्चों को प्वाइंट्स बुद्धि में अच्छी रीति धारण करनी हैं, पढ़ाई रेगुलर करनी है। अगर कोई कारण से सवेरे नहीं आ सकते तो दोपहर को आ जाना चाहिए। किसको तंग भी नहीं करना है। सारा दिन पड़ा है। कोई भी समय जाकर पढ़ना है। यह बच्चियाँ सुबह से लेकर शाम तक सर्विस पर हैं। सारा दिन सर्विस स्टेशन खुले हुए हैं। कोई भी आये, उनको रास्ता बताना है। पहले-पहले तो बताना है – विचार करो तुमको दो बाप हैं। दुःख में पारलौकिक बाप को याद करते हैं ना। अभी शिवबाबा कहते हैं, मामेकम् याद करो। मौत तो सामने खड़ा है। यह

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

वही महाभारत लड़ाई है। भल बड़े पदमपति, करोड़पति हैं, बड़े-बड़े मकान आदि बनाते हैं। परन्तु वह रहने थोड़ेही हैं, यह सब टूट जाने हैं। वह समझते हैं – कलियुग की आयु लाखों वर्ष है। इनको कहा जाता है घोर अन्धियारा। कोई के पास पैसे हैं, पूछते हैं मकान बनायें। बाबा कहेंगे पैसे हैं तो भल बना लो। पैसे भी तो मिट्टी में मिल जाने हैं। यह तो टैम्प्रेरी हैं। नहीं तो यह सब पैसे भी चले जायेंगे। कुछ भी रहेगा नहीं, भल बनाओ। फिर उसमें गीता पाठशाला का प्रबन्ध रखो। जो तुम्हारे दर पर कोई भी आये उनको भिक्षा ऐसी दो जो उनको एकदम विश्व का मालिक बना दो। तुम्हारे पास अथाह ज्ञान धन है। इतना कोई के पास नहीं है। तुम्हारे पास सबसे साहूकार वह है, जिनके पास बहुत ज्ञान रत्न बुद्धि में भरे हुए हैं। कोई भी आये तो तुम उनकी झोली भर दो। तुम्हारे पास इतना खजाना है। सिर्फ यह बोर्ड लगा दो – आओ तो हम आपको सदा सुखी स्वर्ग का वर्सा पाने का रास्ता बतायें। परन्तु बच्चों में वह नशा नहीं रहता। यहाँ नशा चढ़ता है, बाहर जाने से भूल जाता है। शौक होना चाहिए। कोई भी आये उनको रास्ता बतायें जो बेड़ा पार हो जाए। तुम्हारे पास बहुत भारी धन है। कोई भी भिखारी आये वा लखपति आये तो तुम उनको भी बहुत रत्न दे सकते हो। बाबा यहाँ नशा चढ़ाता है फिर सोडावाटर हो जाता है। बाबा तुम्हारी अविनाशी ज्ञान रत्नों से झोली भर देते हैं। परन्तु नम्बरवार हैं। किसकी तकदीर में है तो पूरी रीति धारण कर लेते हैं। बाबा कहते है–कोशिश कर तुम निरन्तर याद में रहो। ऐसे नहीं कि सेन्टर में जाकर एक जगह बैठना है। नहीं, चलते-फिरते जो भी समय मिले बाप को याद करते रहना है। हथ कार डे, दिल अर्थात् बुद्धि का योग बाप के साथ हो। बाप की याद से तुम्हारा बहुत कल्याण होगा। 21 जन्म के लिए तुम साहूकार बन जाते हो। बेहद का बाप बेहद का वर्सा देते हैं। भारत स्वर्ग था अब नर्क है।

बाप कहते हैं– अब मुझे याद करो तो तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान बन जायेगी। बाप को याद करेंगे तो नशा चढ़ेगा। हमारे जैसा धनवान सृष्टि में कोई नहीं है। बाप ही याद नहीं होगा तो धन कहाँ से आयेगा। स्वर्ग में तो तुम बच्चों को अपार सुख मिलता है। शास्त्रों में तो कितनी दन्त कथायें लिख दी हैं। गाते भी हैं – राम राजा, राम प्रजा...धर्म का उपकार है। फिर कहते राम की सीता चुराई गई, बन्दरों की सेना ली... आगे खुद भी पढ़ते थे, कुछ भी समझते नहीं थे। अब कितना समझ में आता है। कितनी वन्डरफुल बातें लिखी हैं। बाप कहते हैं– मुझे प्रकृति का आधार लेना पड़ता है। त्रिमूर्ति में भी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर दिखाते हैं। परन्तु यह भी समझते नहीं कि विष्णु कौन है। कहाँ के रहने वाले हैं। विष्णु के मन्दिर को नर-नारायण का मन्दिर कहते हैं। परन्तु अर्थ कुछ भी नहीं समझते हैं। विष्णु के यह दो रूप लक्ष्मी-नारायण हैं। जो सतयुग में राज्य करते थे। अभी तुम मनुष्य से देवता बन रहे हो। कोई भी आये तो बोलो यह ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ हैं। तो प्रजापिता ब्रह्मा सबका बाप हुआ। बहुत ढेर की ढेर प्रजा है। नाम तो सुना है ना। भगवान ने ब्रहमा द्वारा ब्राह्मण रचे। बाप ने जरूर बच्चों को वर्सा तो दिया होगा ना। तुम बच्चों को विश्व का मालिक बनाते हैं। तुम शिवबाबा से वर्सा पाते हो। एक है लौकिक

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बाप, दूसरा है पारलौकिक बाप। अब यह तुमको अलौकिक बाप मिला है, यह तो जौहरी था। यह थोड़ेही कुछ जानता था। इनके लिए कहते हैं कि इनके बहुत जन्मों के अन्त के जैन्म के भी अन्त में इनमें प्रवेश करता हूँ। वानप्रस्थी बनने का रिवाज भी भारत में है। 60 वर्ष के बाद गुरु के पास चले जाते हैं। बाप इनमें प्रवेश कर कहते हैं अब तुमको घर चलना है। मुक्ति सब चाहते हैं परन्तु मुक्ति को जानते कोई भी नहीं। ब्रह्म में लीन तो कोई हो नहीं सकते। यह तो सृष्टि का चक्र फिरता ही रहता है, सबको पार्ट बजाना ही है। कहते हैं वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट। यह अनादि ड्रामा बना हुआ है। 84 जन्मों का पार्ट तुमको बजाना ही है। यह ज्ञान डांस होती है। वो लोग फिर डमरू दिखाते हैं। अब सूक्ष्मवतन वासी शंकर डमरू कैसे बजायेगा।

बाप ने समझाया है - तुम बन्दर मिसल थे। तो तुम बन्दरों की सेना ली। तुम्हारे आगे बाबा ज्ञान का डमरू बजा रहे हैं। तुमको ज्ञान देते हैं। अभी तुम्हारी सूरत और सीरत दोनों पलटा रहे हैं। काम-चिता पर बैठ तुम काले हो गये हो। बाबा फिर तुमको ज्ञान-चिता पर बिठाए सूरत और सीरत दोनों पलटाए सांवरे से गोरा बना देते हैं। यहाँ बाबा कितना नशा चढ़ाते हैं। फिर गुम क्यों होना चाहिए। अच्छा –

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- बाप ने जो अथाह ज्ञान का धन दिया है, उसे धारण कर स्वयं भी साहूकार बनना है और सबको दान भी करना है। जो भी आये उसकी झोली भर देनी है।

२- बाप की याद से ही कल्याण होना है, इसलिए जितना हो सके चलते-फिरते बाप की याद में रहना है। सर्व सम्बन्धों की रसना एक बाप से जोड़नी है।

वरदान:- सूक्ष्म संकल्पों के बंधन से भी मुक्त बन ऊंची स्टेज का अनुभव करने वाले निर्बन्धन भव

जो बच्चे जितना निर्बन्धन हैं उतना ऊंची स्टेज पर स्थित रह सकते हैं, इसलिए चेक करो कि मन्सा-वाचा व कर्मणा में कोई सूक्ष्म में भी धागा जुटा हुआ तो नहीं है! एक बाप के सिवाए और कोई याद न आये। अपनी देह भी याद आई तो देह के साथ देह के सम्बन्ध, पदार्थ, दुनिया सब एक के पीछे आ जायेंगे। मैं निर्बन्धन हूँ–इस वरदान को स्मृति में रख सारी दुनिया को माया की जाल से मुक्त करने की सेवा करो।

स्लोगन:-

देही-अभिमानी स्थिति द्वारा तन और मन की हलचल को समाप्त करने वाले ही अचल रहते हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मु० नं० 19

27·6·86 प्रात:क्लास ओमशान्ति "पितश्री" शिवबाबा याद है?
"पावन बनने का एकमात्र उपाय है- बाप की याद, यही मेहनत अंत में भी काम आयेगी"

प्रश्न:-संगम पर अपने को कौन-सा तिलक देनेवाले स्वर्ग की राजाई का तिलक प्राप्त करते हैं? उत्तर:-संगम पर यही तिलक देना है-कि हम आत्मा बिंदी हैं, हम शरीर नहीं। अंदर में यही घोटना है कि हम आत्मा हैं, हमें बाप से वर्सा लेना है। बाबा भी बिंदी है, हम भी बिंदी हैं, इसी तिलक से स्वर्ग की राजाई का तिलक प्राप्त होगा। बाबा कहते हैं मैं गैरन्टी करता हूं, तुम मुझे याद करो तो आधाकल्प के लिए रोने से छूट जायेंगे। राजाई का तिलक मिल जायेगा।

गीत:- मीठे2 बच्चों को यह फुरना फिरती रहना चाहिए कि मूल आत्मा को, बाप की याद में जरूर रहना है। तब पावन बन सकते हैं। मेहनत जो कुछ है वो यह है, जो मेहनत बच्चों से पहुँचती नहीं है। माया बहुत हैरान करती है। एक बाप की याद भुला देती है। दूसरे की याद आ जाती है। बाप अथवा साजन को याद नहीं करते हैं। ऐसे साजन को तो कम से कम 8 घंटा याद करने की सर्विस देनी है। अर्थात् साजन को मदद देनी है याद करने की। अथवा बच्चों को बाप को याद करना चाहिए। यह है बहुत बड़ी मेहनत। गीता में भी है। मनमनाभव। बाप को याद करते रहो। उठते बैठते चलते एक बाप को ही याद करते रहो और कुछ नहीं। पिछाड़ी को यह याद ही काम आयेगी। अपने को आत्मा नंगा समझो। अब हमको वापस जाना है। यह मेहनत बहुत करनी है। सवेरे स्नान कर फिर एकान्त में ऊपर छत पर वा यहाँ हाल में आकर बैठ जाए, जितना एकान्त हो उतना अच्छा है। हमेशा यह ख्याल करो कि हमको बाप को याद करना है। बाप से वर्सा पूरा पूरा लेना है। यह मेहनत 5 हजार वर्ष बाद तुमको करनी पड़ती है। सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग में कहीं भी तुमको यह मेहनत नहीं करनी पड़ती, इस संगम पर ही तुमको बाप कहते हैं कि मुझे याद करो। बस। यह खेला है कि बाप कहते हैं मुझे याद करो। बाप आते भी संगम पर हैं। और कब बाप आते ही नहीं। तुम भी जानते हो नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार। बहुत बच्चे बाप को भूल जाते हैं इसलिए बहुत धोखा खाते हैं। रावण बहुत धीखे बाज़ है। आधाकल्प का यह दुश्मन है। इसलिए बाप कहते हैं रोज़ सवेरे उठकर यह विचार सागर मंथन करो और यह चार्ट देखो कितना समय हमने बाप को याद किया। कितनी कटौती उतरी होगी। सारा मदार याद के ऊपर है। बच्चों को पूरी-कोशिश करनी है अपना पूरा वर्सा पाने। नर से नारायण बनना है। यह है सच्ची सत्यनारायण की कथा। भक्त लोग पूर्णमासी के दिन सत्यनारायण की कथा सुनते हैं। अभी तुम जानते हो 16 कला संपूर्ण बनना है। सो बनेंगे सत्य बाप को याद करने से। माया तुमको बहुत2 सतायेगी। बैठे2 मित्र-संबंधी आदि बहुत याद आते रहेंगे। मेहनत सारी इसमें है। बाप है श्रीमत देनेवाला। बाप कहते घर गृहस्थ में रहो। धंधा-धोरी आदि भी करो। बाप को जरूर याद करना है और पावन बनना है। बस। याद न करेंगे तो रावण से कहाँ न कहाँ धोखा खाते रहेंगे। इसलिए मूल बात समझाते हैं याद की। शिवबाबा को याद करना है। इनका, ब्रह्मा का, फोटो भी तुम मत रखो। कोई भी देहधारी का फोटो नहीं रखना है। देह सहित देह के जो भी संबंध हैं उनको भूल और अपने को आत्मा निश्चय करो। बाप बार2 समझाते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। नहीं तो फिर अंत में बहुत2 पछतायेंगे। बहुत धोखा खायेंगे। कोई ऐसा जोर से थप्पड़ लगेगा जो माया एकदम मुँह काला करा देगी। बाप आये हैं गोरा बनाने। इस समय सब एक-दो का काला मुँह करते रहते हैं। गोरा बनानेवाला एक ही बाप है जिसकी याद से तुम गोरे स्वर्ग के मालिक बनेंगे। यह है ही पतित दुनिया। बाप आते ही हैं पतितों को पावन बनाने। बाकी तुम्हारे धंधे धोरी आदि से बाबा का कोई संबंध नहीं है। शरीर निर्वाह अर्थ तुमको जो करना है सो करो। बाबा तो सिर्फ कहते हैं मनमनाभव। तुम कहते भी हो हम कैसे पावन बन पावन दुनिया

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

का मालिक बनेंगे। बाप कहते हैं सिर्फ मुझे याद करो। बस। और कोई उपाय पावन बनने का है नहीं। कितना भी दान पुण्य आदि करें, कितनी भी मेहनत करें। चाहे आग से आते जाते रहें, कुछ भी काम नहीं आ सकता। सिवाए एक बाप की याद के। बहुत सिम्पल बात है। इसको कहा जाता है सहज। अपने से पूछो हम मीठे2 बाप को कितना याद करते हैं। सारे दिन में। नींद में तो कोई पाप नहीं होते हैं। अशरीरी हो जाते हैं। बाकी दिन में तो बहुत पाप होते रहते हैं। और पुराने पाप भी बहुत हैं। मेहनत करनी है याद की। यहाँ आते हो तो यह मेहनत करनी है। बाहर के व्यर्थ संकल्पों को एकदम उड़ा दो। नहीं तो वायुमंडल को खराब कर देते हैं। विकार में जाने वाले भी आकर बैठ जाते हैं तो वायुमंडल को खराब कर देते हैं। घर के, खेती-बारी के ख्यालात चलते रहते हैं। कब बच्चे याद पड़ेंगे, कब गुरु की याद आयेगी। संकल्प चलते रहेंगे तो वायुमंडल को खराब कर देंगे। मेहनत न करनेवाले विघ्न डालते हैं। यह इतनी महीन बातें हैं। तुम भी अभी जानते हो फिर कभी नहीं जानेंगे। बाप अभी ही वर्सा देते हैं फिर निश्चिंत हो जाते हैं आधाकल्प। लौकिक बाप के फुरने, फिकरात, और पारलौकिक बाप की फिकरात में कितना अंतर है। बाप कहते हैं भक्तिमार्ग में मुझे कितना फुरना रहता है, भक्त कितना छुट्टी-2 याद करते हैं। सतयुग में कोई भी याद नहीं करते। बाप कहते हैं तुमको इतना सुख देता हूँ जो तुमको मुझे वहाँ याद करने की दरकार ही नहीं रहेगी। हम जानते हैं हमारे बच्चे सुखधाम, शान्तिधाम में बैठे हैं। दूसरा कोई मनुष्य समझ न सके। ऐसे बाप में निश्चय बुद्धि होने में भी माया विघ्न डालती है। बाप कहते हैं सिर्फ मुझे याद करो तो तुम्हारे में जो अलाव पड़ गई है, चांदी, ताँबा, लोहा, वह निकल जायेगी। गोल्डन एज से सिल्वर में आने से भी 2कला कम होती है। यह सब बातें तुम सुनते हो और समझते हो। जो सच्चा ब्राह्मण होगा उनको अच्छी रीति बुद्धि में बैठेगा। नहीं तो बैठेगा नहीं। याद बैठेगी नहीं। सारा मदार बाप को याद करने पर है। बार2 कहते हैं बच्चे बाप को याद करो। यह बाबा भी कहेंगे बच्चे शिवबाबा को याद करो। शिवबाबा खुद भी कहेंगे मुझ बाप को याद करो। आत्माओं को कहते हैं हे बच्चों, वह निराकार में आत्माओं को कहेंगे, यह भी साकार में तुम आत्माओं को ही कहते हैं, हे आत्मायें बाप को याद करो। बाप कहते हैं मुझे याद करो। मूल बात ही यह है। कोई भी आये तो उनको पहले2 यह बोलो कि अल्फ को याद करो। और कोई तिक2 नहीं करनी है। सिर्फ बोलो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। यही अंदर घोटना है। हम आत्मा हैं। गाते हैं तुलसी दास चंदन घिसे, तिलक दे रघुबीर... तिलक कोई स्थूल थोड़ेही है। तुम समझते हो तिलक वास्तव में इस समय का यादगार है। तुम याद करते रहते हो। गोया राजाई का तिलक देते हो। तुमको राजाई का तिलक मिलेगा। डबल सिरताज बनेंगे। राजाई का तिलक अर्थात् स्वर्ग के महाराजा महारानी बनेंगे। बाप कितना सहज बताते हैं। बस, सिर्फ यह याद करो, हम आत्मा हैं शरीर नहीं। हमको बाप से वर्सा लेना है। आत्मायें उनको बाबा2 कहती आई हैं। अभी तुम जानते हो हम आत्मा भी बिंदी है, बाबा भी बिंदी है। बाबा ज्ञान का सागर, सुख का सागर है। वह हमको वरदान देते हैं, इनके बाजू में आकर बैठते हैं। गुरु अपने शिष्य को बाजू में बिठाकर सिखाते हैं। यह भी बाजू में ही बैठे हुए हैं। बच्चों को सिर्फ कहते हैं अपने को आत्मा समझो। मामेकम याद करो। सतयुग में भी तुम अपने को आत्मा समझते हो। परंतु बाप को नहीं जानते हो। अपने को आत्मा जरूर समझते हो। हम आत्मा शरीर छोड़ती हैं। फिर दूसरा जन्म लेना है। ड्रामा अनुसार पार्ट ही ऐसा है। इसलिए तुम्हारी आयु वहाँ बड़ी रहती है। पवित्र रहते हो। भारत की सतयुग में आयु बड़ी रहती है। कलियुग में छोटी हो जाती है। वे हैं योगी। योगी पवित्र होते हैं। इसको कर्मभोग कहा जाता है। वहाँ अकाले मृत्यु कब होती नहीं। तो बाप कहते हैं- बाप को पहचानना है तो श्रीमत पर चलो। एक बाप को याद करो अपने को आत्मा समझो। हमको अब जाना है। यह शरीर छोड़ना है। बाकी टाइम सर्विस में लगाना है। तुम

b

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बहुत गरीब हैं, इसलिए बाप को तरस पड़ता है। तुम बुढ़ियों, कुब्जाओं आदि को कोई तकलीफ नहीं देते हैं। बुढ़ी को कुब्जा कहा जाता है। बुढ़ियों को समझाया जाता है बाप को याद करो। तुमसे कोई पूछे कहाँ जाते हो, बोलो, गीता पाठशाला में जाते हैं। यहाँ वह श्रीकृष्ण की आत्मा 84 जन्म ले अभी बाप से ज्ञान ले रही है। उस गीता में बाप के बदले बच्चे का नाम डाल दिया है। इस बात पर अभी कोई ने पूरा समझाया नहीं है।

c एक भी निकला नहीं है। प्रदर्शनी पर कितना खर्च करते हैं। लिखते भी हैं अच्छा प्रभावित हुआ। परंतु बाबा कहते हैं एक भी ऐसे नहीं लिखता कि वरोवर इस समय बेहद का बाप इस ब्रह्मा तन में आया हुआ है। उससे स्वर्ग का वर्सा मिल सकता है। बाबा समझ जाते हैं, एक को भी निश्चय नहीं हुआ है। सिर्फ प्रभावित होते हैं कि यह ज्ञान बहुत अच्छा है। सीढ़ी ठीक रीति से दिखाई है। परंतु खुद योग में रह तमोप्रधान से सतोप्रधान बनें यह नहीं करते। सिर्फ कहते हैं समझानी बहुत अच्छी है। परमात्मा से वर्सा पाने की। परंतु खुद पावें वह नहीं। कुछ भी पुरुषार्थ नहीं करते। प्रजा ढेर बनेगी। बाकी राजा बनें तो मेहनत है। हरेक अपने दिल से पूछे कि हम कहाँ तक बाप की याद में हर्षित रहते हैं। हम फिर से सो देवी-देवता बनते हैं। ऐसे2 अपने साथ एकांत में बैठ बात करो। ट्राई करके देखो, बाप को याद करते रहो तो बाप गैरन्टी देते हैं तुम आधाकल्प कब रोयेंगे नहीं। अभी तुम कहते हो बाबा आकर हमको रावण माया पर जीत प्राप्त कराते हैं। जो जितनी मेहनत करते हैं, अपने लिए ही करते हैं। फिर तुम आयेंगे नई दुनिया में। पुरानी दुनिया का हिसाब किताब भी चुक्तू करना है। जब कि तुमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है, पावन बनने की युक्ति भी बताते हैं। यह है कयामत का समय। सबका विनाश होना है। नई दुनिया की स्थापना होनी है। कितना साफ लिखा हुआ है ब्रह्मा यानी ब्रह्माकुमार कुमारियों द्वारा स्थापना होती है। तुम जानते हो हम इस मृत्युलोक में यह शरीर छोड़ फिर नई दुनिया अमरलोक में जायेंगे। हम पढ़ते ही हैं नई दुनिया के लिए और कोई ऐसी पाठशाला नहीं जहाँ भविष्य के लिए पढ़ाते हो। हाँ, जो बहुत दान-पुण्य करते हैं, तो राजा पास जन्म लेते हैं। गोल्डन स्पून इन माउथ कहा जाता है। वह सत्युग में तुमको मिलता है, कलियुग में भी जो राजाओं के पास जन्म लेते हैं उनको भी मिलता है। फिर बीमार नहीं पड़ेंगे। गोल्डन स्पून इन स्वर्ग, यहाँ है गोल्डन स्पून इन नर्क। वो राजाई है अल्पकाल की। तुम्हारी तो 2। जन्म के लिए है। बुद्धि से अच्छी रीति काम लेना है। फिर समझाना है। ऐसे नहीं कि भक्तिमार्ग में राजा नहीं बन सकते। वहाँ कोई कालेज अथवा हास्पिटल बनाते हैं तो उनको भी एवजा मिलता है। हास्पिटल बनाते हैं तो दूसरे जन्म में अच्छे तंदुरुस्त रहेंगे। कहते हैं ना इनको सारी आयु में बुखार भी नहीं हुआ। बड़ी आयु होती है। बहुत दान आदि किया है, हास्पिटल आदि बनाते हैं तब आयु बढ़ती है। यहाँ तो योग से तुम एवर हेल्दी, वेल्दी बनते हो। योग से तुम 2। जन्म लिए सुख पाते हो। यह तो बहुत बड़ी हास्पिटल, बहुत बड़ी कालेज है। बाप हर बात अच्छी रीति

d समझाते हैं। बाप कहते हैं जहाँ मजा आवे, जहाँ दिल लगे, वहाँ जाकर पढ़ाई पढ़ सकते हो। ऐसे नहीं हमारे सेन्टर पर आये। इनके पास क्यों जाते हैं। नहीं। जिसको जहाँ चाहिए .. बात तो एक ही है। मुरली तो पढ़कर सुनाते हैं, वह मुरली यहाँ से जाती है। फिर कोई विस्तार से अच्छा समझाते हैं, कोई सिर्फ पढ़कर सुनाते हैं। भाषण करनेवाले अच्छी ललकार करते होंगे। कहाँ भी भाषण हो, पहले2 बताओ, शिवबाबा कहते हैं, अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और पावन बन पावन दुनिया का मालिक बनेंगे। कितना सहज समझाते हैं। अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मातपिता बापदादा का यादप्यार और गुड मार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

स्वउन्नति के लिए दृढ़ संकल्प:- सदा हर्षित रहने के लिए एकान्त में बैठ बाप से मीठे2 बातें करनी है। मेहनत कर अच्छे ख्यालातों को उड़ा देना है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

नहीं फँसना। मैं आत्मा हूँ और एक बाप जो विदेही है, उनसे ही प्यार रखना है। यहाँ रहना है। कोई भी देह में ममत्व न हो। ऐसे नहीं घर में बैठे भी वह ज्ञान देने वाली याद आती रहे। बड़ी मीठी है, बहुत अच्छा समझाती है। अरे मीठा तो ज्ञान है। मीठी आत्मा है। शरीर थोड़ेही मीठा है। बात करने वाली भी आत्मा है। (कभी भी शरीर पर आशिक नहीं होना है। इसलिए
e बाप कहते हैं बाबा का फोटो आदि भी नहीं निकालो। बाबा को तो बहुत ख्याल होता है- फोटो न रखें। चित्रों में तो समझाने लिए फोटो देना पड़ता है, वही काफी है। बाकी किसको
f नहीं रखना चाहिए। अगर इनको। ब्रह्मा को। याद करेंगे तो कुछ भी नहीं मिलेगा। भल समझते हो- यह रथ है। परन्तु शिवबाबा को छोड़ रथ को ही याद करते रहेंगे तो कुछ नहीं मिलेगा। और ही पाप आत्मा बन पड़ेंगे। शिवबाबा को छोड़ फोटो को याद किया तो मर पड़ेंगे। कोई भी
g चित्र नहीं रखना चाहिए। नहीं तो उसमें फँस पड़ेंगे। (आजकल तो भक्ति मार्ग बहुत है) आनन्दमई माँ को भी माँ माँ करते याद करते रहते हैं। अच्छा बाप कहाँ है? माँ बाप बिगर बच्चा कहाँ से आये। वर्सा बाप से मिलना है या माँ से? माँ को भी पैसा कहाँ से मिलेगा? सिर्फ माँ2कहने से जरा भी पाप नहीं कटेंगे। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। नाम रूप में नहीं फँसना है और ही पाप हो जायेगा। क्योंकि बाप का नाफरमानबरदार बनते हो। बहुत बच्चे भूले हुए हैं। बाप समझाते हैं मैं तुम बच्चों को लेने आया हूँ तो जरूर ले जाऊँगा। इसलिए मेरे को याद करो। तुम्हारे पाप कटेंगे। भक्ति मार्ग में बहुतों को याद करते आये हो। परन्तु बाप बिगर कोई काम कैसे होगा। बाप थोड़ेही कहते हैं माँ को याद करो। बाप तो कहते हैं मुझे याद करो। पतित पावन मैं हूँ। बाप के डायरेक्शन पर चलो। तुम भी बाप के डायरेक्शन पर औरों को समझाते रहो। तुम थोड़ेही पतित पावन ठहरे। याद एक को ही करना है। हमारा तो एक बाप दूसरा न कोई। बाप आप पर ही वारी जायेंगे। वारी जाना तो शिवबाबा पर ही है। और सबकी याद छूट जानी चाहिए। भक्ति मार्ग में तो बहुतों को याद करते रहते हैं। यहाँ तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई। फिर भी कोई अपने चलाते हैं तो क्या गति सद्गति होगी। मूँझ पड़ते हैं। बिन्दी को कैसे याद करें। अरे तुमको अपनी आत्मा याद है ना कि मैं आत्मा हूँ। वह भी बिन्दी रूप ही है। तो तुम्हारा बाप भी बिन्दी है। बाप से वर्सा मिलता है। माँ तो फिर भी देहधारी हो जाती है। तुमको विदेही से ही वर्सा मिलना है इसलिए और सब बातें छोड़ एक से बुद्धियोग लगाना है। (इनको ब्रह्मा को। याद से एक भी पाप नहीं कटेगा।) अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। स्वदानी बाप की स्वदानी बच्चों को नमस्ते।

प्रीमत:- 1। शरीर का भान खत्म करने के लिए चलते फिरते अभ्यास करो-जैसे कि इस शरीर से मरे हुए हैं, न्यारे हैं। शरीर में है ही नहीं। बिगर शरीर आत्मा को देखो।
2। कभी भी किसी के शरीर पर तुम्हें आशिक नहीं होना है। एक विदेही बाप से ही प्यार रखना है। एक से ही बुद्धियोग लगाना है।

फरिश्ता :- 74. अन्तिम विकराल दृश्य के समय उस घड़ी के पेपर में पास होने के लिए फरिश्ता बनो, उड़ता पंछी बनो। अभ्यास करो-साकार शरीर में रहते आकारी रूप फरिश्ता हूँ। स्थूल शरीर का भान बिल्कुल निकाल दो।
75. बापदादा से स्नेह है तो स्नेह का सबूत है समान बनो। बाप से स्नेह रखना माना आत्मा स्वरूप में लाइट रूप में स्थित होना और दादा से स्नेह रखना माना फरिश्ता बनना।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

20·2·83 प्रात: क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे- अब घर चलना है, इसलिए सिर पर जो पापों का बोझा है उसे योगबल से खत्म करो, सम्पूर्ण पावन बनो"

प्रश्न:-बाप संगम पर तुम बच्चों से कमाल का कर्तव्य कौन सा कराते हैं?

a उत्तर:-घर गृहस्थ में रहते, स्त्री-पुरुष साथ रहते पवित्र रहना, यह कमाल का कर्तव्य संगम पर बाप ही सिखलाते हैं। सन्यासी कभी भी यह सिखला नहीं सकते। तुम्हारा है सतोप्रधान सन्यास। तुम पुरानी दुनिया में रहते हुए भी इसको बुद्धि से भूलते हो। तुम्हारी बुद्धि में है- यह सब खत्म हुआ पड़ा है।

गीत:-तुम्हीं हो माता पिता···ओमशान्ति। बच्चों को ओमशान्ति का अर्थ बिल्कुल सहज समझाया जाता है। छोटी बात सहज है। सहज राजाई प्राप्त करते हैं। कहां के लिए? सतयुग के लिए। उनको जीवनमुक्त कहा जाता है। वहां रावण के यह भूत होते नहीं। कोई को क्रोध आता है तो कहा जाता है तुम्हारे में यह भूत है। अच्छा बच्चों को समझाया है ओम का अर्थ है - मैं आत्मा। फिर मेरा शरीर। छोटे के शरीर रूपी रथ में आत्मा रथी बैठी हुई है। आत्मा की ताकत से यह रथ चलता है। आत्मा को यह शरीर घड़ी2 लेना और छोड़ना पड़ता है। यह तो बच्चे जानते हैं भारत अभी दुखधाम है। आधाकल्प आगे सुखधाम था। आलमाइटी गवर्मेन्ट थी क्योंकि आलमाइटी अथॉरिटी ने भारत में देवताओं के राज्य की स्थापना की। वहां एक धर्म था। आज से 5हजार वर्ष पहले बराबर ल०ना० का राज्य था। वह राज्य स्थापन करने वाला जरूर बाप होगा। बाप से उनको वर्सा मिला हुआ है। उन्हों की आत्मायें 84जन्मों का चक्र लगाती हैं। भारतवासी ही इन वर्णों में आते हैं। अभी हैं शूद्र वर्ण में। शूद्र वर्ण के बाद सर्वोत्तम ब्राह्मण वर्ण आता है। ब्राह्मण माना ब्रह्मा के मुख वंशावली हैं। प्रजापिता ब्रह्मा के जरूर एडाप्टेड चिल्ड्रेन होंगे। बच्चे जानते हैं कि भारत पूज्य था। अब पुजारी है। बाप तो सदैव पूज्य है। यह आते जरूर हैं पतितों को पावन बनाने। सतयुग है पावन दुनिया। सतयुग में पतित पावनी गंगा, यह नाम ही नहीं होगा। क्योंकि वह है ही पावन दुनिया। सभी पुण्य आत्मायें हैं। नो पापात्मा। कलियुग में फिर नो पुण्यात्मा। सब पापात्मायें हैं। पुण्यात्मा पवित्र को कहा जाता है। भारत में ही बहुत दान पुण्य करते हैं। इस समय जब बाप आते हैं तो उनके ऊपर बलि चढ़ते हैं। सन्यासी तो घरबार छोड़ जाते हैं। यहां तो कहते हैं बाबा यह सब कुछ आपका है। आप से सतयुग में हमें अथाह धन दिया था। फिर माया ने कौड़ी जैसा बना दिया है। अब यह आत्मा पतित हो गई है। तन-मन-धन सब पतित है। आत्मा पहले2 पवित्र रहती है। फिर पार्ट बजाते2 पतित बन जाती है। गोल्डन, सिल्वर···इन स्टेजेज में मनुष्य को आना है जरूर। सारा चक्र लगाए पिछाड़ी में तमोप्रधान झूठा जेवर बनना है। सबकी आत्मायें ईश्वर के लिए झूठ बोलती हैं क्योंकि उनको सिखाया जाता है ईश्वर सर्वव्यापी है। गाते भी हैं तुम मात पिता···ल०ना० के आगे भी जाकर यह महिमा करते हैं। परन्तु उनको तो अपना एक बच्चा एक बच्ची होती है। जैसा सुख राजा रानी को वैसे बच्चों को रहता है। सबको सुख घनेरे हैं। अभी तो वह 84वें अन्तिम जन्म में हैं। दुख घनेरे है। बाप कहते हैं अब फिर से तुमको राजयोग सिखलाता हूं। बच्चों को समझाया कि इस रथ में रथी आत्मा बैठा हुआ है। यह रथी पहले 16 कला सम्पूर्ण था। अब नो कला कहते भी हैं मैं निर्गुणहारे में अब कोई गुण नाही। आप तरस करो अर्थात् रहम करो। कोई में भी गुण नहीं है। बिल्कुल बन्दर सम्प्रदाय दुखी हैं। पतित हैं तब तो गंगा में पावन होने जाते हैं। सतयुग में नहीं जाते। नदी तो वही है ना। बाकी हां ऐसे कहेंगे इस समय हर चीज तमोप्रधान है। सतयुग में यह नदियां भी बड़ी साफ स्वच्छ होंगी। नदियों में कचड़ा कुछ भी नहीं पड़ता। यहां तो देखो कितना कचड़ा पड़ता है। सागर में सारा गन्द जाता है। सतयुग में ऐसा हो नहीं सकता। ला नहीं है। सब चीजें पवित्र रहती हैं। तो बाप समझाते हैं अभी सबका यह अन्तिम जन्म है। खेल पूरा होता है। 5 खेल की लिमिट ही है 5 हजार वर्ष। यह निराकार शिवबाबा समझाते हैं। वह है निराकार सबसे ऊंच परमधाम में रहने वाला। परमधाम से तो हम सब आये हैं। अभी कलियुग अन्त में ड्रामा पूरा हो फिर से हिस्ट्री रिपीट होती है। मनुष्य जो भी गीता आदि शास्त्र पढ़ते आये हैं-

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

वह बनते हैं द्वापर से। यह ज्ञान तो प्राय:लोप हो जाता है। कोई राजयोग सिखला न सके। उन्हों के यादगार के लिए पुस्तक बनाते हैं। वह खुद तो पुनर्जन्म में आने लगे। उनका यादगार पुस्तक रहने लगा। अब देवी देवता धर्म की स्थापना होती है संगम पर। बाप आकर इस रथ में
b विराजमान होता है। घोड़ेगाड़ी की बात नहीं है। इस रथ में साधारण तन में प्रवेश करते हैं। वह है रथी। इनकी आत्मा रथी जो है वह अब पतित है। फिर इनको पावन बनना है। गाया भी जाता है ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण रचे। यह है मुख वंशावली ब्राह्मणों। सब बच्चे कहते हैं हम ब्रह्मा के मुख वंशावली ब्र०कु० हैं। यह ब्रह्मा भी एडाप्टेड किया हुआ है। बाप खुद कहते हैं मैं इस रथ का रथी बनता हूं। इनको ज्ञान देता हूं। शुरू इनसे करता हूं। कलप देता हूं मातायें को। माता तो यह भी ठहरी ना। पहले2यह बनते हैं फिर तुम। इनमें तो यह विराजमान है। परन्तु सामने किसको सुनावें। फिर आत्माओं से बैठ बात करते हैं। और कोई भी विद्वान आदि नहीं होगा। जो ऐसे आत्माओं से बैठ बात करे कि मैं तुम्हारा बाप हूं। तुम आत्मायें निराकार हो। मैं भी निराकार हूं। मैं ज्ञान सागर स्वर्ग का रचयिता हूं। मैं नर्क नहीं रचता हूं। यह तो रावण माया नर्क बनाती है। बाप कहते हैं मैं तो हूं ही रचयिता। तो जरूर स्वर्ग ही बनाऊंगा। तुम भारतवासी स्वर्गवासी थे। अब नर्कवासी हो। नर्कवासी बनाया रावण ने।
c क्योंकि आत्मा इस रावण की मत पर चलती है। इस समय तुम आत्मायें राम शिवबाबा की श्री की मत पर चलते हो। बाप समझाते हैं अब सबका पार्ट पूरा हुआ है। सब आत्मायें इकट्ठी होंगी। जब सब आ जायेंगी तब फिर जाना शुरू होगा। फिर विनाश शुरू हो जायेगा। भारत में अब अनेक धर्म है। सिर्फ एक आदि सनातन देवी देवता धर्म है नहीं। कोई भी अपने को देवता नहीं कहो। देवताओं की महिमा भी गाते हैं सर्वगुण सम्पन्न···फिर अपने को कहेंगे हम नींच पापी···जो सतोप्रधान पूज्य थे वह तमोप्रधान पुजारी बन पड़े हैं। द्वापर से रावण राज्य शुरू होता है। रामराज्य है ब्रह्मा का दिन। रावण राज्य है ब्रह्मा की रात। अब बाप कब आवे? जब ब्रह्मा की रात पूरी हो तब तो आवे ना। और इसी ब्रह्मा के तन में
d आवे तब तो ब्रह्मा मुख से ब्राह्मण पैदा हों। उन ब्राह्मणों को राजयोग सिखलाते हैं। बाप कहते हैं जो भी आकारी या साकारी या निराकारी चित्र हो उनको तुम्हें याद नहीं करना है। तुमको तो लक्ष्य दिया जाता है। मनुष्य तो चित्र देख याद करते हैं। बाबा कहते हैं चित्रों को देखना बन्द करो। यह है भक्तिमार्ग। अभी तो तुम आत्माओं को वापिस मेरे पास जाना है। पापों का बोझा सिर पर बहुत है। पापात्मा बनना है। ऐसे नहीं गर्भ में हर जन्म के पाप खत्म हो जाते हैं। कुछ खत्म हो जाते हैं कुछ रहते हैं। अब मैं पण्डा बन आया हूं। इस समय सब आत्मायें माया की मत पर चलती है। परमात्मा सर्वव्यापी कहना यह माया की मत है। कब कहते सर्वव्यापी हैं। कब कहते 24अवतार लेते हैं। बाप कहते हैं मैं सर्वव्यापी कहां हूं। मैं तो हूं ही पतित पावन, स्वर्ग का रचता। मेरा धन्धा ही है नर्क को स्वर्ग बनाना। गाडी ऐसे थोड़ेही कहता था पतित पावनी गंगा नदी। पतित पावन सीताराम कहते थे ना। चाहते थे रामराज्य हो। अभी भी कहते हैं ना आलमाइटी राज्य हो। वन रिलीजन हो। स्वर्ग में तो है ही एक धर्म, एक राज्य; वहां कोई पार्टीशन नहीं था। बाप कहते हैं मैं युनिवर्स का मालिक नहीं बनता हूं। तुमको बनाता हूं। फिर रावण आकर तुम से राज्य छीनता है। अभी है सब तमोप्रधान पत्थरबुद्धि। सतयुग में है पारसबुद्धि। यह बाप बैठ समझाते हैं। रथी बैठे हैं। आत्मा से बात करते हैं तो इनकी आत्मा भी सुनती है। कहते हैं बच्चे कोई भी चित्र को नहीं देखो। मामेकम् याद करो। बुद्धियोग ऊपर लटकाओ। जहां जाना है उनको ही याद करना
e है। एक बाप, अब दूसरा न कोई। वही सच्चा पातशाह है। सच सुनाने वाला। तो कोई भी चित्रों का सिमरण नहीं करना है। यह शिव का भी जो चित्र है, उनका भी ध्यान नहीं करना है। क्योंकि शिव ऐसा तो है नहीं ना। जैसे हम आत्मा हैं वैसे वह परम आत्मा है। जैसे आत्मा भ्रकुटी के बीच में रहती है वैसे बाबा भी कहते हैं थोड़ी जगह आत्मा के बाजू में ले बैठ जाता हूं। रथी बन इनको बैठ ज्ञान देता हूं। इनकी आत्मा में ज्ञान नहीं था, पतित थी। जैसे इनकी आत्मा रथी बोलती है, शरीर से। वैसे मैं भी इन आर्गन्स से बोलता हूं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

नही तो कैसे समझाऊं। ब्राह्मण रचने लिए ब्रह्मा जरूर चाहिए। जो ब्रह्मा फिर नारायण बनेगा। अभी तुम ब्रह्मा की औलाद हो। फिर सूर्यवंशी श्री नारायण के घराने में आ जायेंगे। बाबा ने समझाया है यह शास्त्र आदि सब भक्ति मार्ग के हैं। जो द्वापर से शुरू होते हैं। फिर भी यही बनेंगे। जो पदते2तमोप्रधान बन जाते हैं। सतयुग से त्रेता हुआ। त्रेता से द्वापर कलियुग हुआ। पतित बने तब तो पतित पावन आकर पावन बनायेंगे ना। शास्त्र किसको पावन बना न सकें। अभी तो बिल्कुल ही कंगाल बन पड़े हैं। लड़ते झगड़ते रहते हैं। बन्दर से भी बदतर हैं। बन्दर में ही 5 विकार बहुत कड़े होते हैं। देह अहंकार भी बन्दर जैसा और कोई में नहीं होता। काम, क्रोध, लोभ, मोह सब विकार बन्दर में ऐसे होते हैं, बात मत पूछो। बच्चा मरेगा तो उनकी हड्डियों को भी छोड़ेंगी नहीं। मनुष्य भी आज कल ऐसे हैं। बच्चा मरा तो 6-8 मास तक रोते रहेंगे। सतयुग में तो अकाले मृत्यु होता नहीं। न कोई रोते पीटते हैं। वहां कोई हैरान होते नहीं। बाप इस रूहानी बच्चों से बात कर रहे हैं। भल घरबार भी सम्भालो। उनमें रहते हुए ऐसी कमाल कर दिखाओ जो सन्यासी भी कर न सकें। यह सतोप्रधान सन्यास परमात्मा ही सिखलाते हैं। कहते हैं यह पुरानी दुनिया अब खत्म होनी है इसलिए इनसे ममत्व मिटाओ। सबको वापस जाना है। देह सहित जो भी पुरानी चीज है उनको भूल जाओ। 5विकार मुझे दे दो। अगर अपवित्र बनोगे तो पवित्र दुनिया में आ नहीं सकते। बाप से प्रतिज्ञा करो इस अन्तिम जन्म लिए। फिर तो पवित्रता कायम हो ही जायेगी। 6जन्म तुम विष में गोते खाते एकदम गन्दे बन पड़े हो। अपने धर्म, कर्म को भूल गये हो। हिन्दू धर्म कहते रहते हो। बाप कहते हैं तुम तो देसमत बन गये हो। क्यों नहीं समझते हो भारत स्वर्ग था। हम ही देवता थे। मैंने तुमको राजयोग सिखाया तुम फिर कहते हो कृष्ण ने सिखाया। क्या कृष्ण सभी का बाप स्वर्ग का रचयिता है? बाप तो है निराकार। सब आत्माओं का बाप। फिर उनके लिए कहते हो कि सर्वव्यापी है। तुम अपने बाप को गाली देते हो। शिव शंकर को मिला दिया है। कितनी ग्लानी कर दी है। शिव तो है परमात्मा कहते हैं मैं आता ही हूं देवी देवता धर्म की स्थापना करने। जो स्थापना करते हैं फिर विष्णु के दो रूप राज्य करेंगे। सबखण्ड स्थापन करने वाला एक ही बाप है। सन्यासी एक तरफ पवित्र रह भारत को मदद करते हैं दूसरी तरफ बाप से बेमुख कर देते हैं। अपने को ईश्वर कहलाते हैं। संगम और स्वर्ग एक दो के नजदीक होने कारण नर्क की बात स्वर्ग में ले गये हैं। वास्तव में कंस रावण आदि सब अभी हैं। वहां यह हो न सकें।

तो रथ में रथी जो दिखाते हैं, वास्तव में रथ यह है जिसको नंदीगण, भागीरथ भी कहा जाता है। तुम अर्जुनों को कहते हैं मैं इस रथ में आया हूं। युद्ध के मैदान में तुमको माया पर जीत प्राप्त कराने। सतयुग में न रावण होता, न उसको जलाते हैं। अभी तो रावण को जलाते ही रहेंगे। अच्छा-

मीठे2 सकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मु० नं० 21

21-11-80 प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है

"मीठे बच्चे तुम ड्रामा के खेल को जानते हो इसलिए इसमें किसी को भी शुक्रिया मानने की बात नहीं"

a प्रश्न:-सर्विसएबुल बच्चों में कौन सी आदत बिल्कुल न होना चाहिए?उत्तर:-मांगने की। तुम्हें बाप से आशीर्वाद या कृपा आदि मांगने की जरूरत नहीं। तुम किसी से पैसा भी नहीं मांग सकते। मांगने से मरना भला। तुम जानते हो ड्रामा अनुसार कल्प पहले जिन्होंने बीज बोया होगा वही बोयेंगे। जिनको अपना भविष्य पद बनाना होगा वह जरूर बनायेंगे। तुम्हारा काम है सर्विस करना। तुम किसी से भी कुछ मांग नहीं सकते। भक्ति में मांगना होता ज्ञान में नहीं।

गीत- मुझको सहारा देने वाले.. .ओमशान्ति। यह बच्चों के अन्दर से शुक्रिया अक्षर बाप टीचर वा गुरू के लिए नहीं निकल सकते। क्योंकि बच्चे जानते है यह एक खेल बना हुआ है। शुक्रिया आदि की बात नहीं है। यह भी बच्चे जानते हैं ड्रामा अनुसार, ड्रामा अक्षर भी तुम बच्चों की बुद्धि में आता है। खेल अक्षर कहने से ही सारा खेल तुम्हारी बुद्धि में आ जाता है। स्वदर्शन चक्रधारी तुम आपेही बन जाते हो। तीनों लोक भी तुम्हारी बुद्धि में आ जाते। वतन सूक्ष्मवतन स्थूलवतन। यह भी जानते हो अब खेल पूरा होता है। बाप आकर त्रिकाल- तुमको बनाते हैं। तीनों कालों तीनों लोकों आदि मध्य अन्त का राज समझाते है। समय को कहा जाता है। यह सब बातें नोट करने बिगर याद नहीं रह सकती। तुम बच्चे बहुत पाइंट्स भूल जाते हो। ड्रामा के क्रियेशन को भी तुम जानते हो। तुम ही त्रिनेत्री त्रिकालदर्शी बनते हो। ज्ञान का तीसरा नेत्र मिल जाता है। सबसे बड़ी बात कि तुम आस्तिक बन जाते हो। नहीं तो निश्चय थे। यह ज्ञान तुम बच्चों को मिल रहा है। स्टूडेन्ट की बुद्धि में सदैव नालेज मक्खन होती है। यह भी नालेज है ना। ऊंच ते ऊंच बाप ही नालेज देते हैं ड्रामा अनुसार। "ड्रामा" अक्षर भी तुम्हारे मुख से निकल सकता है। सो भी जो बच्चे सर्विस में तत्पर रहते होंगे। तुम जानते हो हम आत्मा अब बेहद का बाप धनी मिला है। तो हद के बने हुए वह होते है हद के आरफन्स तुम बेहद के आरफन थे। बेहद का बाप बेहद का सुख देने वाला है। और कोई बाप नहीं जो ऐसा सुख देता हो। पहले2तो बच्चे को विकारी दिखक बना देते हैं। जिससे आदि मध्य अन्त दुख पाते रहते। पाप आत्मा बन जाते हैं। पुण्य आत्मा कब काम कटारी नहीं चलाती है। नई दुनिया और पुरानी दुनिया यह सब तुम बच्चों की बुद्धि में है परन्तु औरों को भी यथार्थ रीति समझावें। इसी ईश्वरीय धन्धे में लग जाएं। हरेक की सरकमस्टेन्स अपनी2होती है। समझा भी वह सकेंगे जो याद की यात्रा में होंगे। याद से बल मिलता है ना। बाप है ही जौहरदार तलवार। तुम बच्चों को जौहर भरना है। योगबल कहा b जाता है ना। उस याद में ही बल है। बाहुबल से कब कोई विश्व के मालिक बन नहीं सकते। तुम योगबल से विश्व की बादशाही पाते हो। योग से बल मिलता है ज्ञान से नहीं। बच्चों को समझाया है नालेज सोर्स आफ इन्कम है। योग को बल कहा जाता है। दोनों में रात दिन का फर्क है। अब योग अच्छा या ज्ञान अच्छा? राजयोग ही नामीग्रामी है। योग अर्थात्-बाप की याद। बाप कहते हैं इस याद से ही तुम्हारे पाप कट जायेंगे। इस पर ही बाप जोर देते हैं। ज्ञान तो सहज है। भावानुवाद में तुमको सहज ज्ञान सुनाता हूं। 84के चक्र का ज्ञान सुनाता हूं। उसमें सब आ जाता है। हिस्ट्री जोग्राफी है ना। ज्ञान और योग दोनों है सेकेण्ड का काम। बाप को याद करना है बस। उल्टे से सुल्टा बन बाप को याद करना है। हम आत्मा हैं हमको बाप को याद करना है। इसमें ही मेहनत है। याद की यात्रा में रहने से शरीर की जैसे विस्मृति होती जायेगी। घण्टा भर भी अशरीरी हो बैठें तो कितने पावन हो जाएं। मनुष्य रात को कोई 6 कोई 8 घण्टा नींद करते हैं, तो अशरीरी हो जाते है ना। उस समय में कोई विकर्म नहीं होता है। आत्मा सब कर सो जाती है। ऐसे भी नहीं कोई पाप विनाश होते हैं। नहीं। वह है नींद। विकर्म कोई होता नहीं है। नींद न करे तो पाप ही करते रहेंगे। तो नींद भी एक बचाव है। सारा दिन सर्विस कर आत्मा कहती है मैं अब सोता हूं। अशरीरी बन जाता हूं। तुमको भी शरीर होते अशरीरी बनना है। मैं आत्मा इस शरीर से न्यारी शान्त स्वरूप हूं। आत्मा की यह महिमा कब नहीं सुनी होगी। आत्मा सच, चित-आनंद स्वरूप है। यह परमात्मा की महिमा भी गाते हैं कि वह सत है, चैतन्य है, सुख शान्ति का सागर है। अब तक

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

फिर कहेंगे मास्टर। बच्चे को मास्टर भी कहते हैं। तो बाबा युक्तियां भी बतलाते रहते हैं। ऐसे भी नहीं सारा दिन नींद करनी है। नहीं। तुमको तो याद में रह पापों का विनाश करना है। जितना हो सके बाप को याद करना है। ऐसे भी नहीं बाप हमारे ऊपर रहम वा कृपा करते हैं। नहीं। यह उनका गायन है रहमदिल बादशाह। यह भी उनका पार्ट है। तमोप्रधान से

c सतोप्रधान बनाना ही है। भक्ति में भक्त लोग महिमा गाते हैं तुम नहीं कहेंगे। इसलिए दिन-प्रतिदिन गीत आदि भी बन्द होते जाते हैं। स्कूलों में कब गीत होते हैं क्या। बच्चे शान्त में बैठ पढ़ते रहते हैं। टीचर आता है तो उठकर खड़े होते हैं फिर बैठते हैं। यह बाप कहते हैं मुझे तो पार्ट मिला हुआ है पढ़ाने का। सो तो पढ़ाना ही है। तुम बच्चों को उठने की दरकार नहीं। आत्मा को बैठकर सुनना है। तुम्हारी बात ही सारी दुनिया से न्यारी है। बच्चों को कहेंगे क्या तुम उठो। नहीं। वह तो भक्ति मार्ग में करते, यहां नहीं। बाप तो खुद उठकर नमस्ते करते हैं। बाप कहते हैं भक्ति भी है, भक्ति का कर्तव्य बाप को नहीं करना है अनुसार भक्ति से तुम गिरते आये हो। वह काम फिर बाप नहीं करने देंगे। स्कूल में देरी से आते हैं तो या तो टीचर स्लैप्स लगायेंगे या बाहर में खड़ा कर देंगे।

d रहता है टाइम पर पहुंचने का। यहां तो डर की बात नहीं। बाप समझाते रहते हैं। मिलती रहती है वह रेगुलर पढ़नी है। मुरली पढ़ी तो तुम्हारी प्रेजेन्ट पड़ी। नहीं पढ़ जायेगी। क्योंकि बाप कहते हैं तुमको गुह्य2 बातें सुनाता हूं। तो अगर मुरली मिस तो वह पाइंट्स मिस हो जायेंगी। कोई2 पाइंट्स बहुत अच्छी होती हैं। बच्चे भी कहते हैं बाबा ने मुरली बहुत अच्छी चलाई है। वह पढ़ाई तो उस गवर्मेन्ट की है यह है नई पढ़ाई। जो दुनिया में कोई नहीं जानते। तुम्हारे चित्र देखकर ही चकित हो जाते हैं। कोई शास्त्रों में भी नहीं है भगवान ने चित्र बनाये थे। तुम्हारी यह चित्रशाला है नई। ब्राह्मण कुल के जो देवता बनने वाले होंगे उनकी ही बुद्धि में बैठेगी। कहेंगे यह तो ठीक है। कल्प पहले भी इसने पढ़ा था। जरूर भगवान पढ़ाते हैं। गीता में तो भूल कर दी है नाम बदलकर। इसलिए तुम लिखते हो मनुष्यों की गाई हुई गीता से भारत नर्क बना है। और परमपिता परमात्मा के समझाने से भारत स्वर्ग का मालिक बनता है। फर्क तो है ना। भक्ति मार्ग के शास्त्रों में पहले नम्बर में गीता ही है। क्योंकि पहला धर्म ही है एक आदि सनातन देवी देवता धर्म। फिर आधाकल्प के बाद उसके भी बहुत पीछे इब्राहिम आया, पहले तो अकेला था। फिर एक से दो, दो से चार हुए। जब धर्म की वृद्धि होते 2 लाख हो तो शास्त्र आदि बनें। उनके भी आधा समय बाद से बनते होंगे। हिसाब किया जाता है ना। बच्चों को तो बहुत खुशी रहनी चाहिए। बाप से हमको वर्सा मिलता है। तुम जानते हो बाप हमको सारा ज्ञान सृष्टि के आदि मध्य अन्त का समझाते हैं। यह है बेहद की हिस्ट्री जोग्राफी। सबको बोलो यही वर्ल्ड की हिस्ट्री जोग्राफी समझाई जाती है। जो और कोई सिखा न सके। भल वर्ल्ड का नक्शा निकालते हैं परन्तु उसमें यही कहां दिखलाते कि ल0ना0 कब राज्य कब था? कितना समय चला? वर्ल्ड तो एक ही है भारत में ही राज्य करके गये हैं। अब नहीं है। यह बातें किसकी भी बुद्धि में नहीं है। वह तो कल्प की आयु ही लाखों वर्ष कह देते हैं। तुम मीठे2 बच्चों को कोई जास्ती तकलीफ नहीं देता है। बाप कहते हैं बस पावन बनना है। पावन बनने लिए तुम भक्ति मार्ग में कितने धक्के खाते हो। अब समझते हो धक्का खाते2 आधाकल्प बीत गया। अब फिर बाबा आया है फिर से राज भाग देने। तुमको यही याद है। पुराने से नया, नये से पुरानी दुनिया जरूर होती है। अभी तुम पुरानी भारत के मालिक हो ना। फिर नये के मालिक बनेंगे। एक तरफ भारत की बहुत महिमा गाते रहते हैं दूसरी तरफ फिर बहुत ग्लानी करते रहते हैं। वह भी तुम्हारे पास गीत हैं। तुम लोग समझाते हो अब क्या2 हो रहा है। यह दोनों गीत भी सुनाने चाहिए। तुम बता सकते हो कहां रामराज्य और कहां यह। सीढ़ी तो बड़ी अच्छी है। बच्चों को

e कोचिंग ट्रेनिंग देने लिए भी प्रबन्ध कर रहे हैं। बाप तो है गरीबनिवाज। गरीबों के ही बच्चे मिलेंगे, साहूकार लोग तो बच्चों को काम कटारी पर चढ़ा देंगे। कल्प पहले जो आये होंगे वही आयेंगे। फिकरात की कोई बात नहीं। विश्ववाद को कब कोई फिकरात नहीं होती। दादा को होगी। इनको अपना भी फिकर है हमको नम्बर [illegible] लेना है। इसमें है गुप्त पुरुषार्थ।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

21-7-04 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – यह अनादि ड्रामा फिरता ही रहता है, टिक-टिक होती रहती है, इसमें एक का पार्ट न मिले दूसरे से, इसे यथार्थ समझकर सदा हर्षित रहना है"

प्रश्नः- किस युक्ति से तुम सिद्ध कर बता सकते हो कि भगवान् आ चुका है?
उत्तरः- किसी को सीधा नहीं कहना है कि भगवान् आया हुआ है, ऐसा कहेंगे तो लोग हँसी उड़ायेंगे, टीका करेंगे क्योंकि आजकल अपने को भगवान् कहलाने वाले बहुत हैं। इसलिए तुम युक्ति से पहले दो बाप का परिचय दो। एक हद का, दूसरा बेहद का बाप। हद के बाप से हद का वर्सा मिलता है, अब बेहद का बाप बेहद का वर्सा देते हैं, तो समझ जायेंगे।

a *ओम् शान्ति।* रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं, सृष्टि तो यही है। बाप को भी यहाँ आना पड़ता है समझाने के लिए। मूलवतन में तो नहीं समझाया जाता। स्थूल वतन में ही समझाया जाता है। बाप जानते हैं बच्चे सब पतित हैं। कोई काम के नहीं रहे हैं। इस दुनिया में दुःख ही दुःख है। बाप ने समझाया है अभी तुम विषय सागर में पड़े हो। असुल में तुम क्षीरसागर में थे। विष्णुपुरी को क्षीरसागर कहा जाता है। अब क्षीर का सागर तो यहाँ मिल न सके। तो तलाव बना दिया है। वहाँ तो कहते हैं दूध की नदियाँ बहती थी, गायें भी वहाँ की फर्स्ट क्लास नामीग्रामी हैं। यहाँ तो मनुष्य भी बीमार हो पड़ते हैं, वहाँ तो गायें भी कभी बीमार नहीं पड़ती। फर्स्टक्लास होती हैं। जानवर आदि कोई बीमार नहीं होते। यहाँ और वहाँ में बहुत फ़र्क है। यह बाप ही आकर बताते हैं। दुनिया में
b दूसरा कोई जानता नहीं। (तुम जानते हो यह पुरूषोत्तम संगमयुग है, जबकि बाप आते हैं सबको वापिस ले जाते हैं।) बाप कहते हैं जो भी बच्चे हैं कोई अल्लाह को, कोई गॉड को, कोई भगवान् को पुकारते हैं। मेरे नाम तो बहुत रख दिये हैं। अच्छा-बुरा जो आया सो नाम रख देते हैं। अब तुम बच्चे जानते हो बाबा आया हुआ है। दुनिया तो यह समझ न सके। समझेंगे वही जिन्होंने 5 हज़ार वर्ष पहले समझा है। (इसलिए गायन है कोटों में कोई, कोई में भी कोई।) मैं जो हूँ जैसा हूँ, बच्चों को क्या सिखाता हूँ, वह तो तुम बच्चे ही जानते हो और कोई समझ न सके। यह भी तुम जानते हो हम कोई साकार से नहीं
c पढ़ते हैं। निराकार पढ़ाते हैं। मनुष्य जरूर मूँझेंगे, निराकार तो ऊपर में रहते हैं, वह कैसे पढ़ायेंगे! तुम निराकार आत्मा भी ऊपर में रहती हो। फिर इस तख्त पर आती हो। यह तख्त विनाशी है, आत्मा तो अकाल है। वह कभी मृत्यु को नहीं पाती। शरीर मृत्यु को पाता है। यह है चैतन्य तख्त। अमृतसर में भी अकालतख्त है ना। वह तख्त है लकड़ी का। उन बिचारों को पता नहीं है अकाल तो आत्मा है, जिसको कभी काल नहीं खाता। अकाल-मूर्त आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। उनको भी रथ तो चाहिए ना। निराकार बाप को भी जरूर रथ चाहिए मनुष्य का क्योंकि बाप है ज्ञान का सागर, ज्ञानेश्वर। अब ज्ञानेश्वर नाम तो बहुतों के हैं। अपने को ईश्वर समझते हैं ना। सुनाते हैं भक्ति के शास्त्रों की बातें। नाम रखाते हैं ज्ञानेश्वर अर्थात् ज्ञान देने वाला ईश्वर। वह तो ज्ञान सागर चाहिए।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

उनको ही गॉड फादर कहा जाता है। यहाँ तो ढेर भगवान् हो गये हैं। जब बहुत ग्लानि हो जाती, बहुत गरीब हो जाते, दु:खी हो जाते हैं तब ही बाप आते हैं। बाप को कहा जाता है गरीब-निवाज़। आखरीन वह दिन आता है, जो गरीब-निवाज़ बाप आते हैं। बच्चे भी जानते हैं बाप आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं। वहाँ तो अथाह धन होता है। पैसे कभी गिने नहीं जाते। यहाँ हिसाब निकालते हैं, इतने अरब खरब खर्चा हुआ। वहाँ यह नाम ही नहीं, अथाह धन रहता है।

अभी तुम बच्चों को मालूम पड़ा है, बाबा आया हुआ है, हमको अपने घर ले जाने लिए। बच्चों को अपना घर भूल गया है। भक्ति मार्ग के धक्के खाते रहते हैं, इसको कहा जाता है रात। भगवान् को ढूँढते ही रहते हैं, परन्तु भगवान् कोई को मिलता नहीं। अभी भगवान् आया हुआ है, यह भी तुम बच्चे जानते हो, निश्चय भी है। ऐसे नहीं सबको पक्का निश्चय है। कोई न कोई समय माया भुला देती है, तब बाप कहते हैं आश्चर्यवत् मेरे को देखन्ती, मेरा बनन्ती, औरों को सुनावन्ती, अहो माया तुम कितनी जबरदस्त हो जो फिर भी भागन्ती करा देती हो। भागन्ती तो ढेर होते हैं। फारकती देवन्ती हो जाते हैं। फिर वह कहाँ जाकर जन्म लेंगे! बहुत हल्का जन्म पायेंगे। इम्तहान में नापास हो पड़ते हैं। यह है मनुष्य से देवता बनने का इम्तहान। बाप ऐसे तो नहीं कहेंगे कि सब नारायण बनेंगे। नहीं, जो अच्छा पुरूषार्थ करेंगे, वे पद भी अच्छा पायेंगे। बाप समझ जाते हैं कौन अच्छे पुरूषार्थी हैं—जो औरों को भी मनुष्य से देवता बनाने का पुरूषार्थ कराते हैं अर्थात् बाप की पहचान देते हैं। आजकल आपोजीशन में कितने मनुष्य अपने को ही भगवान् कहते रहते हैं। तुमको अबलायें समझते हैं। अब उन्हों को कैसे समझायें कि भगवान् आया हुआ है, सीधा किसको कहेंगे भगवान् आया है, तो ऐसे कभी मानेंगे नहीं। इसलिए समझाने की भी युक्ति चाहिए। ऐसे कभी किसी को कहना नहीं चाहिए कि भगवान् आया हुआ है। उनको समझाना है तुम्हारे दो बाप हैं। एक है पारलौकिक बेहद का बाप, दूसरा लौकिक हद का बाप। अच्छी रीति परिचय देना चाहिए, जो समझें कि यह ठीक कहते हैं। बेहद के बाप से वर्सा कैसे मिलता है—यह कोई नहीं जानते। वर्सा मिलता ही है बाप से। और कोई भी ऐसे कभी नहीं कहेंगे कि मनुष्य को दो बाप होते हैं। तुम सिद्ध कर बतलाते हो, हद के लौकिक बाप से हद का वर्सा और पारलौकिक बेहद बाप से बेहद अर्थात् नई दुनिया का वर्सा मिलता है। नई दुनिया है स्वर्ग, सो तो जब बाप आये तब ही आकर देवे। वह बाप है ही नई सृष्टि का रचने वाला। बाकी तुम सिर्फ कहेंगे भगवान् आया हुआ है—तो कभी मानेंगे नहीं, और ही टीका करेंगे। सुनेंगे ही नहीं। सतयुग में तो समझाना नहीं होता। समझाना तब पड़ता है, जब बाप आकर शिक्षा देते हैं। सुख में सिमरण कोई नहीं करते हैं, दु:ख में सब करते हैं। तो उस पारलौकिक बाप को ही कहा जाता है दु:खहर्ता सुख कर्ता। दु:ख से लिबरेट कर गाइड बन फिर ले जाते हैं अपने घर स्वीट होम। उनको कहेंगे स्वीट साइलेन्स होम। वहाँ हम कैसे जायेंगे—यह कोई भी नहीं जानते। न रचता, न रचना के आदि-मध्य-
d अन्त को जानते हैं। तुम जानते हो हमको बाबा निर्वाणधाम ले जाने के लिए आया हुआ

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

है। सब आत्माओं को ले जायेंगे। एक को भी छोड़ेंगे नहीं। वह है आत्माओं का घर, यह है शरीर का घर। तो पहले-पहले बाप का परिचय देना चाहिए। वह निराकार बाप है, उनको परमपिता भी कहा जाता है। परमपिता अक्षर राइट है और मीठा है। सिर्फ भगवान्, ईश्वर कहने से वर्से की खुशबू नहीं आती है। तुम परमपिता को याद करते हो तो वर्सा मिलता है। बाप है ना। यह भी बच्चों को समझाया है सतयुग है सुखधाम। स्वर्ग को शान्तिधाम नहीं कहेंगे। शान्तिधाम जहाँ आत्मायें रहती हैं। यह बिल्कुल पक्का करा लो।

e बाप कहते हैं – बच्चे, तुमको यह वेद-शास्त्र आदि पढ़ने से कुछ भी प्राप्ति नहीं होती है। शास्त्र पढ़ते ही हैं भगवान् को पाने के लिए और भगवान् कहते हैं मैं किसको भी शास्त्र पढ़ने से नहीं मिलता हूँ। मुझे यहाँ बुलाते ही हैं कि आकर इस पतित दुनिया को पावन बनाओ। यह बातें कोई समझते नहीं हैं, पत्थरबुद्धि हैं ना। स्कूल में बच्चे नहीं पढ़ते हैं तो कहते हैं ना कि तुम तो पत्थरबुद्धि हो। सतयुग में ऐसे नहीं कहेंगे। पारसबुद्धि बनाने वाला है ही परमपिता बेहद का बाप। इस समय तुम्हारी बुद्धि है पारस क्योंकि तुम बाप के साथ हो। फिर सतयुग में एक जन्म में भी इतना ज़रा फ़र्क जरूर पड़ता है। 1250 वर्ष में 2 कला कम होती हैं। सेकण्ड बाई सेकण्ड 1250 वर्ष में कला कम होती जाती हैं। तुम्हारा जीवन इस समय एकदम परफेक्ट बनता है जबकि तुम बाप मिसल ज्ञान का सागर, सुख-शान्ति का सागर बनते हो। सब वर्सा ले लेते हो। बाप आते ही हैं वर्सा देने। पहले-पहले तुम शान्तिधाम में जाते हो, फिर सुखधाम में जाते हो। शान्तिधाम में तो है ही शान्ति। फिर सुखधाम में जाते हो, वहाँ अशान्ति की ज़रा भी बात नहीं। फिर नीचे उतरना होता है। मिनट बाई मिनट तुम्हारी उतराई होती है। नई दुनिया से पुरानी होती जाती है। तब बाबा ने कहा था हिसाब निकालो, 5 हज़ार वर्ष में इतने मास, इतने घण्टे..... तो मनुष्य वण्डर खायेंगे। यह हिसाब तो पूरा बताया है। एक्यूरेट हिसाब लिखना चाहिए, इसमें ज़रा भी फ़र्क नहीं पड़ सकता। मिनट बाई मिनट टिक-टिक होती रहती है। सारा रील रिपीट होता, फिरता-फिरता फिर रोल होता जाता है फिर वही रिपीट होगा। यह ह्यूज़ रोल बड़ा वण्डरफुल है। इनका माप आदि नहीं कर सकते। सारी दुनिया का जो पार्ट चलता है, टिक-टिक होती रहती है। एक सेकण्ड न मिले दूसरे से। यह चक्र फिरता ही रहता है। वह होता है हद का ड्रामा, यह है बेहद का ड्रामा। आगे तुम कुछ भी नहीं जानते थे कि यह अविनाशी ड्रामा है। बनी बनाई बन रही..... जो होना है वही होता है। नई बात नहीं है। अनेक बार सेकण्ड बाई सेकण्ड यह ड्रामा रिपीट होता आया है। और कोई यह बातें समझा न सके।

f पहले-पहले तो बाप का परिचय देना है, बेहद का बाप बेहद का वर्सा देते हैं। उनका एक ही नाम है शिव। बाप कहते हैं मैं आता ही तब हूँ जब अति धर्म ग्लानि होती है, इसको कहा जाता है घोर कलियुग। यहाँ बहुत दुःख है। कई हैं, जो कहते हैं ऐसे घोर कलियुग में पवित्र कैसे रह सकते हैं! परन्तु उन्हों को यह पता ही नहीं है कि पावन बनाने वाला कौन है? बाप ही संगम पर आकर पवित्र दुनिया स्थापन करते हैं। वहाँ स्त्री-पुरूष दोनों पवित्र रहते हैं। यहाँ दोनों अपवित्र हैं। यह है ही अपवित्र दुनिया। वह है पवित्र दुनिया—स्वर्ग,

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

g हेविन। यह है दोज़क, नर्क, हेल। तुम बच्चे समझ गये हो नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। समझाने में भी मेहनत है। गरीब झट समझ जाते हैं। दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती जाती है, फिर मकान भी इतना बड़ा चाहिए। इतने बच्चे आयेंगे क्योंकि बाप तो अब कहाँ जायेगा नहीं। आगे तो बिगर कोई के कहे भी बाबा आपेही चले जाते थे। अभी तो बच्चे यहाँ आते रहेंगे। ठण्डी में भी आना पड़े। प्रोग्राम बनाना पड़ेगा। फलाने-फलाने समय पर आओ, फिर भीड़ नहीं होगी। सभी इकट्ठे एक ही समय तो आ न सकें। बच्चे वृद्धि को पाते रहेंगे। यहाँ छोटे-छोटे मकान बच्चे बनाते हैं, वहाँ तो ढेर महल मिलेंगे। यह तो तुम बच्चे जानते हो—पैसे सब मिट्टी में मिल जायेंगे। बहुत ऐसे करते हैं जो खड्डे खोदकर भी अन्दर रख देते हैं। फिर या तो चोर ले जाते, या फिर खड्डों में ही अन्दर रह जाते हैं, फिर खेती खोदने समय धन निकल आता है। अब विनाश होगा, सब दब जायेगा। फिर वहाँ सब कुछ नया मिलेगा। बहुत ऐसे राजाओं के किले हैं जहाँ बहुत सामान दबा हुआ है। बड़े-बड़े हीरे भी निकल आते हैं तो हज़ारों-लाखों की आमदनी हो जाती है। ऐसे नहीं कि तुम स्वर्ग में खोदकर ऐसे कोई हीरे आदि निकालेंगे। नहीं, वहाँ तो हर चीज़ की खानियाँ आदि सब नई भरपूर हो जायेंगी। यहाँ कलराठी जमीन है तो ताकत ही नहीं है। बीज जो बोते हैं उनमें दम नहीं रहा है। किचड़पट्टी अशुद्ध चीजें डाल देते हैं। वहाँ तो अशुद्ध चीज का कोई नाम नहीं होता है। एवरीथिंग इज़ न्यू। स्वर्ग का साक्षात्कार भी बच्चियाँ करके आती हैं। वहाँ की ब्यूटी ही नेचुरल है। अभी तुम बच्चे उस दुनिया में जाने का पुरूषार्थ कर रहे हो। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. इस समय ही बाप समान परफेक्ट बन पूरा वर्सा लेना है। बाप की सब शिक्षाओं को स्वयं में धारण कर उनके समान ज्ञान का सागर, शान्ति-सुख का सागर बनना है।

२. बुद्धि को पारस बनाने के लिए पढ़ाई पर पूरा-पूरा ध्यान देना है। निश्चयबुद्धि बन मनुष्य से देवता बनने का इम्तहान पास करना है।

वरदान:- मन-बुद्धि द्वारा श्रेष्ठ स्थितियों रूपी आसन पर स्थित रहने वाले तपस्वीमूर्त भव

तपस्वी सदा कोई न कोई आसन पर बैठकर तपस्या करते हैं। आप तपस्वी आत्माओं का आसन है - एकरस स्थिति, फरिश्ता स्थिति.. इन्हीं श्रेष्ठ स्थितियों में स्थित होना अर्थात् आसन पर बैठना। स्थूल आसन पर तो स्थूल शरीर बैठता है लेकिन आप इस श्रेष्ठ आसन पर मन बुद्धि को बिठाते हो। वे तपस्वी एक टांग पर खड़े हो जाते और आप एकरस स्थिति में एकाग्र हो जाते हो। उन्हों का है हठयोग और आपका है सहजयोग।

स्लोगन:-

प्यार के सागर बाप के बच्चे प्रेम की भरपूर गंगा बनकर रहो।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मेन प्वाइन्ट्स - पार्ट II

प्रजापिता ब्रह्मा

a) प्र० ब्रह्मा सबका बाप हुआ। एक है लौकिक बाप, दूसरा है पारलौकिक बाप (शिव बाप)। अब यह तुमको अलौकिक बाप मिला है। -मु.नं. 18f, 23f

b) हम ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ साकार में हैं तो प्र० ब्रह्मा भी साकार में है। -मु.नं. 25d, 12e, 57b, 114b

c) प्र० ब्रह्मा तो जरूर यहाँ ही होगा ना। बहुत करके इस पर ही मूँझते हैं। ब्रह्मा तो है। -मु.नं. 58b, 24e, 92c

d) प्र० ब्रह्मा जिसको एडम कहा जाता है, उनका ग्रेटे2 ग्रैन्ड फादर कहा जाता है। -मु.नं. 93a, 44e

e) सतयुग की स्थापना बाप ने की है फिर तुम आयेंगे तो स्वर्ग की राजधानी मिल जायेगी। बाकी ओपनिंग सेरिमनी कौन करेगा ? बाप तो स्वर्ग में आते नहीं। - मु.नं. 28d, 96j, 98f

f) उनको क्रियेटर, डायरेक्टर, मुख्य एक्टर कहा जाता है। वह है रचयिता करनकरावनहार, फिर पार्टधारी भी है। - मु.नं. 121j, 105a

g) प्रजापिता अक्षर तो नामिग्रामी है। प्रजापिता नाम बाप का शोभता है। - मु.नं. 60a

h) परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा मनुष्य सृष्टि रचते हैं। इसलिए ब्रह्मा को प्रजापिता कहते हैं। -मु.नं. 34c, 25c

i) यह भी नहीं समझते हैं कि ब्रह्मा जरुर साकार में होना चाहिए, जिस द्वारा परमात्मा सृष्टि रचते हैं। -मु.नं. 24b, 14b, 23c

1. **प्र० ब्रह्मा और ब्रह्मा - अलग2 व्यक्तित्व :** यह प्र० ब्रह्मा है। सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा को प्रजापिता नहीं कहेंगे। वहाँ थोड़ेही प्रजा रचेंगे। -मु.नं. 25d, 91g, 108b

b) प्र० ब्रह्मा द्वारा अभी स्थापना हो रही है। यह है प्र० ब्रह्मा मुखवंशावली।... सू० वासी को भी भगवान नहीं कहा जाता। -मु.नं. 98b

c) मुझे ब्रह्मा जरुर चाहिए, तो प्र० ब्रह्मा भी चाहिए। -मु.नं. 38i, 3e

d) ब्राह्मण रचने के लिए ब्रह्मा जरुर चहिए, जो ब्रह्मा फिर नारायण बनेगा। -मु.नं. 20f, 111d

e) मुझे तो चाहिए ब्रह्मा का रथ, उनको ही प्रजापिता कहेंगे। कृष्ण (उर्फ दादा लेखराज ब्रह्मा) को तो प्रजापिता नहीं कहेंगे। - मु.नं. 108c, 24e, 80f

f) वह सूक्ष्म ब्रह्मा है, तो दो ब्रह्मा हो गये। -मु.नं. 64b, 25e, 75b

g) बापदादा की भी आपस में कभी रुहरिहान चलती है। -मु.नं. 98e

2. **प्र० ब्रह्मा (साकार बाप), ब्रह्मा (बड़ी-माँ)**

a) प्र० ब्रह्मा को भी पिता कहते हैं, तो माता कहाँ ? यह ब्रह्मा माता बन जाती है। -मु.नं. 43b, 48b

b) वह बाप तो अलग है, बाकी दादा माँ भी है। परन्तु यह मेल का चोला होने कारण फिर माता मुकर्रर की जाती है। -मु.नं. 79b, 92d+e

c) असुल रियल्टी में यह (ब्रह्मा) माता (जगदम्बा) है। -मु.नं. 16c, 106f

3. **ब्रह्मा एक नहीं है :** ब्रह्मा नाम भी बहुतों को हैं। -मु.नं. 73d

b) अगर वह दूसरे में आवें तो भी उनका नाम ब्रह्मा रखना पड़े। -मु.नं. 63g

c) हम तुमको इन सहित बताता हुँ, ब्रह्मा को भी बतलाता हुँ। -मु.नं. 108i, 74e, 18a, 9a

4. **बापदादा इकट्ठे :** बाबा तो प्रदर्शनी में जा न सके क्योंकि बापदादा दोनों इकट्ठे हैं। बाबा की आत्मा और इनकी आत्मा इकट्ठी हैं। - मु.नं. 29c, 55b, 29f

b) सागर और ब्रह्मपुत्रा दोनों कम्बाइन्ड हैं। यह है चैतन्य, वह है जड़। - मु.नं. 36d

5. **ब्रह्मा-सरस्वती :** उनको मात-पिता कहते हैं। यह ब्रह्मा-सरस्वती को नहीं कह सकते। -मु.नं. 106f

b) सरस्वती है ब्रह्मा मुखवंशावली। वह कोई ब्रह्मा की युगल नहीं है, ब्रह्मा की बेटी है। उनको फिर जगत अम्बा क्यों कहते हैं ? - मु.नं. 108g, 16c, 49g

c) ब्रह्मा आदि देवी की बेटी है अम्बा - काली, दुर्गा, सरस्वती आदि2 बहुत नाम हैं। -मु.नं. 81e

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

6. **ब्राह्मण- मुखवंशावली, कुखवंशावली :** ब्राह्मण तब होंगे जब प्रजापिता सम्मुख होगा। अभी तुम सम्मुख हो। -मु.नं. 35b, 32b

b) वह तो है प्र० ब्रह्मा।.... तो जरुर ब्रह्मा मुख से ही ब्राह्मण रचेंगे। -मु.नं. 65c, 98b

c) जब तक तुम ब्रह्मा के बच्चे नहीं बने हो, तब तक यहाँ नहीं आ सकते। -मु.नं. 101c, 125e, 26e

d) ईश्वर के साथ हम रहते हैं कल्प में एक बार। ब्राह्मण कुल सबसे ऊँची चोटी है। -मु.नं. 30f

e) वह कुखवंशावली ब्राह्मण कहेंगे - हमारा सरनेम है ब्राह्मण। -मु.नं. 74e

गृहस्थ व्यवहार

1) बाबा तो कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र रहो। -मु.नं. 20a, 32f, 57f, 46b

2) गृहस्थ व्यवहार में रहकर ज्ञान-योग में अन्दर वालों से भी तीखे जा सकते हैं। -मु.नं. 29b

3) इसमें त्याग भी बेहद का है। गृहस्थ व्यवहार में रहते सारी दुनियाँ को त्याग करना है। -मु.नं. 67f, 40f, 62d, 110f

4) बाप कहते हैं मैं कितना बड़ा गृहस्थी बना हुँ। सबसे बड़े ते बड़े गृहस्थ धर्म मैं पालन करता हुँ। -मु.नं. 48j, 9d, 48a

5) बाप के पास बच्चे आये हैं, कहते हैं- बाबा हमारे में ताकत है, इकट्ठे रहकर पवित्र रह सकते हैं। -मु.नं. 106c

6) बाप ने समझाया है भक्ति वास्तव में प्रवृत्ति मार्ग वालों को ही करनी है। -मु.नं. 119f

7) प्रवृत्ति मार्ग है ना, तो जोडियों की माला है। सिंगल की माला नहीं होती। -मु.नं. 26h

गीता पाठशाला

1) यह है गीता पाठशाला। इस पाठशाला में बाप आकर राजयोग सिखलाते हैं, नर से नारायण बनाते हैं। -मु.नं. 123c, 67g, 72c

2) तुम्हारी एम ऑब्जेक्ट ही है नर से नारायण (नर से प्रिन्स नहीं) बनने की। यह गीता पाठशाला है ही जीवन मुक्ति प्राप्त करने के लिए। -मु.नं. 2d

3) वहाँ (सेन्टर्स पर) आत्मायें आत्माओं को पढ़ाती हैं। यहाँ बाप बैठ पढ़ाते हैं। -मु.नं. 97b, 80b

4) तुम कहेंगे हमारे मम्मा-बाबा की पाठशाला है - दोनों ही पढ़ाते हैं। -मु.नं. 13c, 34a

आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय (A.I.V.V.)

1) नाम भी लिखा हुआ है - प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय। इससे भी समझते नहीं है कि यह रुहानी बेहद के बाप का ईश्वरीय विश्वविद्यालय है। तो क्यों न इसका नाम स्प्रिचुअल युनिवर्सिटी ऑफ स्प्रिचुअल इनकारोपरियल गॉड फादर (A.I.V.V.) रखें। -मु.नं. 40d, 73e

2) यह घर का घर भी है और युनिवर्सिटी भी है। इसको ही गॉड फादरली वर्ल्ड युनिवर्सिटी (A.I.V.V.) कहा जाता है। -मु.नं. 41a, 101d

3) विश्व का रचयिता ही यह विश्वविद्यालय स्थापन करते हैं। हम लिखते भी ऐसे हैं, परन्तु युनिवर्सिटी अक्षर लिखने नहीं देंगे। -मु.नं. 41j, 39c

4) (यहाँ) 3 से 5 बजे आकर बैठो। दोनों बाप और दादा आ जायेंगे। फिर यहाँ और वहाँ योग में बैठने के फर्क का भी पता पड़ेगा। -मु.नं. 103h

संगमयुग में तथाकथित ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ श्रीमत का उल्लंघन कर रावण राज्य (भक्तिमार्ग) की शूटिंग कर रहे हैं

a) बाप कहते हैं समझदार देखना है तो यहाँ देखो...। महान मूर्ख, महान सुजान देखना है तो यहाँ देखो। -मु.नं. 69j, 85d

b) बाप तो भारतवासी बच्चों को ही कहते हैं क्योंकि बच्चे ही ग्लानी करते हैं। यह मुरब्बी बच्चा (ब्रह्मा) भी ग्लानी करता था। -मु.नं. 83b

c) रावण का राज्य सारी बेहद की दुनियाँ पर है। -मु.नं. 44b, 85a, 55a

d) दुनियाँ वाले न राम की, न रावण की बायोग्राफी को जानते हैं। -मु.नं. 65f

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

e) बाप का भी जन्म होता है तो रावण का भी जन्म होता है। यह किसको भी पता नहीं। -मु.नं. 1d, 105f
f) बाप कहते हैं जितना मैं शक्तिवान हुँ, उतनी माया भी शक्तिवान है। -मु.नं. 122f, 2b
g) पार करने वाला एक (राम) बाप है। तो जरुर कोई डुबोने वाले (दस सिर वाला रावण) भी होंगे। गुरु ही परमपिता परमात्मा से बेमुख करते हैं। -मु.नं. 96k, 30c, 46d
h) झूठ खंड स्थापन करने वाला है रावण। भक्ति सिखलाने वाले हैं अनेक गुरु लोग। -मु.नं. 35d, 103a, 87c

1. **ढेर गुरु** : ज्ञानमार्ग का गुरु मैं एक ही हुँ। ज्ञान जब मेरे से सुनें तब उनको ज्ञानी कह सकते हैं। बाकी सब हैं भक्ति। -मु.नं. 56a, 3b, 15g
b) प्रभु को कोई जानते नहीं, तो गुरु को पकड़ लेते हैं। धन आदि गुरु के आगे अर्पण कर देते हैं। -मु.नं. 32k, 5g
c) गुरु तो बहुत प्रकार के हैं, जो कुछ शिक्षा देते हैं उसको गुरु कह देते हैं। यहाँ तो बाप प्रैक्टिकल में राजयोग सिखलाते हैं। -मु.नं. 57h
d) कितने इन गुरुओं के जंजीरों में फँसे पड़े हैं, उनसे छुड़ाना है। - मु.नं. 94g, 112d, 32j
e) बाप है ज्ञान का सागर। तुम हो नदियाँ। मम्मा का भी नाम है। ज्ञान की नदियाँ भी हैं। कोई फिर नाले भी हैं, टुबके भी हैं। -मु.नं. 122d, 124a

2. **ब्राह्मण-राजाई नहीं**: ब्राह्मण कुल की डिनायस्टी नहीं होती, ब्राह्मण कुल कोई राजाई नहीं करते हैं। -मु.नं. 32b
b) वास्तव में ब्राह्मणियाँ हैं मोस्ट ओबीडियन्ट सर्वेन्ट। -मु.नं. 48h, 120e
c) बाहुबल से कब कोई विश्व के मालिक बन नहीं सकते। तुम योगबल से विश्व की बादशाही पाते हो। -मु.नं. 21b, 114c, 38g
d) कोई ब्राह्मणियाँ यहाँ ही बड़ा आराम से रहती हैं, दास-दासियाँ रखती हैं - बिस्तरा बनाओ, चाय ले आओ, यह करो... । -मु.नं. 97f
e) कोई ब्राह्मणी कह देती हैं कि तुम इस सेन्टर पर मत आओ। अगर कोई ब्राह्मणी ऐसे कहती है तो बाबा को डायरेक्ट लिखी तो तुमको बाबा याद पड़ेगा। -मु.नं. 38d
f) ऐसे नहीं हमारे सेन्टर पर आये, इनके पास क्यों जाते हैं ? नहीं, जिसको जहाँ चाहिए...। -मु.नं. 19d

3. **भक्ति** : हैं सब मेरे बच्चे, परन्तु अभी (संगमयुग में) भक्तिमार्ग का पार्ट बजा रहे हैं। - मु.नं. 96g, 109e
b) भक्त लोग अक्सर करके रात को जागते हैं, कुछ न कुछ याद करते हैं। यहाँ की (संगमयुग की) रस्म-रिवाज़ फिर भक्तिमार्ग में चली आई है। -मु.नं. 70d
c) पहले2 एक शिवबाबा की भक्ति होता है, फिर देवताओं का। फिर 5 तत्त्वों की भी भक्ति (भूत पूजा) करते व्यभिचारी बन जाते हैं। -मु.नं. 117g, 86e, 114a
d) पहले जब शिव की भक्ति करते थे तो इतना धक्के खाते नहीं थे, जितना अभी धक्का खाते हो। -मु.नं. 94e, 110a
e) भक्तिमार्ग में थे तो उनको परमधाम में याद करते थे। -मु.नं. 17f, 87d
f) भक्ति का प्रभाव भी बहुत है ना। कितनी खूब सूरत है- नाच-तमाशा, गायन-कीर्तन आदि कितना खर्चा करते हैं। -मु.नं. 59f, 123a
g) वहाँ तीर्थ-यात्राओं पर जाते हैं तो कितने पैसा खर्चा करते हैं अब यहाँ तो दान करने की बात नहीं। -मु.नं. 100f
h) गीता (कागज की मुरली) पढ़ना भी भक्ति है ना। -मु.नं. 109c
i) वो लोग भक्तिमार्ग में बहुत श्रृंगार आदि करते हैं। यहाँ श्रृंगार पसन्द नहीं करते। -मु.नं. 86f, 111g
j) वह बाप चला जायेगा। उनका क्रियाकरम, सेरिमनी आदि कुछ नहीं करना होता। ये (ज्ञान और भक्ति) अभी ही चलती है, और सब भक्ति ही सिखलाते हैं। -मु.नं. 81d
k) यहाँ (ब्राह्मण कुल में) तो बहुत हिन्दु हैं जो (आबू में) मुसलमान को जाय पूजा करते हैं, उनके पांव पड़ते हैं। -मु.नं. 81f
l) तुमको तो समझाया हुआ है - तुमको स्लोगन की क्या दरकार है। -मु.नं. 92a
m) आबू थोड़ेही सतयुग में होगा, दरकार ही नहीं। यह मन्दिर आदि सब बाद में भक्तिमार्ग में बनेंगे। कितनी ऊँची पहाड़ी पर मन्दिर बनाते हैं। -मु.नं. 126e, 35e, 2k
n) कहाँ भी जाओ, (बुद्धिरूपी) पॉकेट में (पॉकट के बाहर नहीं) भी पर्चे और बैजेस सदैव पड़े रहें। -मु.नं. 47e
p) जब तक बुद्धि में ज्ञान नहीं बैठा है तो सिर्फ अर्पणमय होने से क्या फायदा ? -मु.नं. 112f

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

q) यहाँ तो देखो - ठंडी हो या गर्मी हो, चाय जरुर पीते हैं। बाप ने समझाया है रावण राज्य में ही तुम्हारा यह हाल हुआ है। -मु.नं. 1g, 127d

4. **कृष्ण (उर्फ ब्रह्मा) भगवान** : समझते हैं कृष्ण ने ज्ञान दिया इसलिए उनको बहुत प्यार करते हैं। -मु.नं. 37d, 82b

b) कृष्ण को ईश्वर नहीं कहेंगे - यह भी भूल है। भक्तिमार्ग में मनुष्य कितने भूलें करते हैं। -मु.नं. 111g, 62f

c) यह (ब्रह्मा) तो सिर्फ बीच में मारफत है, लेन-देन का सबका हिसाब किताब बाप से होना है, इनसे नहीं -मु.नं. 18a

d) वर्सा बाप से मिलना है या माँ से? सिर्फ माँ2 (ब्रह्मा-बड़ी माँ) कहने से जरा भी पाप नहीं कटेंगे। -मु.नं. 19g, 18a

5. **साक्षात्कार**: आत्मा तो है छोटी बिन्दी। सा० करें तो भी कोई समझ न सकें, फिर भी शरीर ही याद आता है। -मु.नं. 15c

b) बिन्दी का सा० हो तो कुछ समझ न सकें। जो जिस भावना से जिसकी पूजा करते हैं उनको वही सा० होगा। -मु.नं. 2g, 13e, 91d

c) जो ज्ञानी बच्चे हैं वह कभी सा० आदि की बातों में खुश नहीं होंगे। -मु.नं. 9g

d) सन्देशियों को, भक्तों को सा० कराना पड़ता है, है तो यहाँ ही। वहाँ तो कोई सर्विस नहीं। -मु.नं. 15f, 87b

e) मम्मा ने कोई सा० नहीं किया, फिर भी मम्मा सबसे तीखी गई। -मु.नं. 31h

f) आगे चलकर जोर से सा० होंगे, आबू तक क्यू लग जायगी। बाबा से कोई भी मिल नहीं सकेंगे। -मु.नं. 55e

g) वह (बंद आँखों का सा० की) चाबी एक ही बाप के हाथ में है। -मु.नं. 112k

6. **ध्यान - भोग** : वो लोग हठयोग से ट्रांस आदि में जाते हैं। याद से विकर्म विनाश होंगे, ट्रांस से विकर्म विनाश नहीं होंगे। -मु.नं. 11a, 10a, 51c, 69d

b) जो कभी ध्यान का पार्ट चलता है फलानी में मम्मा आई, बाबा आया - यह भी माया है। -मु.नं. 38f, 11c

c) मम्मा ने तो कुछ भी नहीं देखा, कभी भी ध्यान में नहीं गई। मम्मा देखो बिगर ध्यान के कितना आगे नम्बर लेती है। -मु.नं. 50c

d) भोग भी ले जाते हैं तो डायरेक्शन अनुसार ही जाना है। -मु.नं. 10b, 11b

e) यह सब (भोग आदि खिलाना) हैं भक्तिमार्ग की रस्म। -मु.नं. 99c

7. **सूक्ष्मवतन** : महिमा सारी यहाँ की है। बाकी सूक्ष्मवतन में क्या है ? कुछ भी नहीं। यह सिर्फ साक्षात्कार होता है। -मु.नं. 17j, 10e, 118d, 75b

b) ब्रह्मा द्वारा स्थापना सूक्ष्मवतन में तो नहीं होगी ना, यहाँ ही होती है। -मु.नं. 23c, 25e, 118d, 62c

c) बाप को भी कहते हैं ना - आप भी रुप बदल साकार में आओ। आयेंगे तो यहाँ ना, सूक्ष्मवतन में तो नहीं आयेंगे। -मु.नं. 79i

d) सू० वतन में तो यह श्रृंगार आदि होना नहीं चाहिए। -मु.नं. 49c

8. **नाम** : सिर्फ ब्र० कु० नाम जो पड़ता है उसमें प्रजापिता अक्षर जरूर चाहिए, क्योंकि ब्रह्मा नाम भी बहुतों को हैं। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय लिखना है। -मु.नं. 73d, 32e, 39d, 16f

b) अच्छा, अपना नाम तो लिखेंगे। दो बाप तो हैं - जब पिता कहते हैं तो उनका नाम तो लिखो। -मु.नं. 31c

c) प्र० ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ (PBK) हैं। प्रजापिता अक्षर न डालने से मनुष्य मूँझते हैं। -मु.नं. 33c, 31c, 59c, 39h

9. **दृष्टि** : कुमार-कुमारी की भी कहाँ न कहाँ विकार की दृष्टि उठती है। अब बाप कहते हैं यह विकार की दृष्टि नहीं होनी चाहिए। -मु.नं. 47a

b) ऐसे कोई भी कह नहीं सकता है कि हमारी आँखें क्रिमिनल काम नहीं करती हैं। -मु.नं. 46c

10. **चित्र - फोटो** : चित्र आदि जो भी बनाये हैं सब बेसमझी के। -मु.नं. 6b, 2f

b) सबके चित्र रखते रहेंगे तो उनको क्या कहेंगे ? व्यभिचारी भक्ति ठहरी ना। -मु.नं. 52g, 94c, 119b

c) चित्र देने से क्या फायदा ? नाम, रुप, देश, काल सब बदल जाता है। -मु.नं. 32g

d) पैसा कमाने के लिए कुछ तो चाहिए ना। फिर किस्म2 के चित्र बैठ बना देते हैं। -मु.नं. 110d, 9b

e) बाबा का चित्र आदि माँगते हैं। बाबा कहते हैं चित्र की तो कोई दरकार ही नहीं। - मु.नं. 34e, 124c, 20d

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

f) यह शिव का भी जो चित्र है, उनका भी ध्यान नहीं करना है क्योंकि शिव ऐसा तो है नहीं ना। - मु.नं. 20e
g) इनका (ब्रह्मा का) फोटो भी तुम मत रखो। कोई भी देहधारी का फोटो नहीं रखना है। - मु.नं. 19a, 19e, 37g

11. **वेद-शास्त्र** : (भक्तिमार्ग में) दिन प्रतिदिन बड़ी2 किताबें बनाते आते हैं, कितनी बायोग्राफी बनाते जाते हैं। -मु.नं. 89c
b) शास्त्र पढ़ते ही है भगवान को पाने के लिए और भगवान कहते हैं मैं किसको भी शास्त्र (कागज़ की मुरली वगैरा) पढ़ने से नहीं मिलता हूँ। -मु.नं. 22e, 126g, 30b, 109c, 41e, 124c
c) मनुष्य तो कितना झूठ बोलते हैं। यह झूठ कहाँ से आई ? भक्तिमार्ग के शास्त्रों से। -मु.नं. 116g, 99f
d) बच्चों के लिए मैगजीन निकलती है; लेकिन बी० के० इतना पढ़ते नहीं है। समझते हैं कि हमको थोड़ेही पढ़ना है, यह बाहर वालों के लिए है। -मु.नं. 128c
e) कहते हैं - तुम लोग शास्त्रों को नहीं मानते हो फिर शास्त्रों के अक्षर क्यों लेते हो ? तो तुमको समझाना है - शास्त्रों का सार तो बाबा ही बताते हैं। -मु.नं. 83a

12. **गीत, यज्ञ-तप** : अभी गीत सुनने की कोई जरुरत नहीं रहती। तुम तो पढ़ाई पढ़ते हो। -मु.नं. 39a, 21c
b) बाप के पास जाने के लिए यज्ञ-तप बहुत करते हैं, परन्तु मिलता कुछ भी नहीं। -मु.नं. 59b
c) गोया वो लोग शान्ति के लिए यज्ञ रचते हैं अर्थात् विनाश नहीं चाहते। -मु.नं. 112d, 112i

13. **मेला** : उन मेलों पर तो मनुष्य मैले हो जाते हैं, पैसे बरबाद करते रहते हैं। - मु.नं. 103e, 66h, 126d
b) यहाँ डायरेक्ट भासना आती है - बाबा हमको पढ़ाते हैं। इनको मेला कहा जाता है। सेन्टर्स पर तुम जाते हो वहाँ कोई आत्माओं परमात्मा का मेला नहीं कहेंगे। - मु.नं. 103d, 97a, 25g

14. **प्रदर्शनी - म्यूज़ियम** : प्रदर्शनी द्वारा प्रजा तो बहुत बनती है। -मु.नं. 29g, 126h
b) प्रदर्शनी पर कितना खर्च करते हैं। लिखते भी हैं - अच्छा प्रभावित हुआ। -मु.नं. 19c, 126d
c) बाबा तो कहते हैं म्यूज़ियम अथवा रुहानी युनिवर्सिटी का प्रबन्ध करना है। -मु.नं. 111e
d) यह म्यूज़ियम आदि किसके डायरेक्शन से खोलते हैं ? यहाँ हैं ही माँ, बाप और बच्चे। -मु.नं. 13d

15. **माँगना नहीं** : तुम किसी से पैसा भी नहीं माँग सकते-'माँगने से मरना भला'। -मु.नं. 21a, 119d, 127e, 32j
b) मनुष्य तो बहुत कर्ज उठाते हैं। शादियों पर खर्चा, तीर्थों पर खर्चा बहुत करते हैं। -मु.नं. 127d
c) और तो सभी हैं देहधारी मनुष्य पैसे इकट्ठे करने वाले। यह (बाबा) कहाँ इकट्ठा करेंगे। -मु.नं. 111b

16. **महल-माडियाँ** : बाबा कह देते हैं मकान भी भल उनके नाम पर हो। बी० के० को यह मकान आदि चाहिए नहीं। -मु.नं. 115d, 111e
b) कितने महल बनते रहते, कितनी ऊँची2 माडियाँ बनाते रहते। समझते हैं सतयुग से भी भारत अभी ऊँच है। -मु.नं. 45e, 44g, 126f
c) न कोई खर्चा है, न कोई मंदिर-मस्जिद वा धर्मशाला आदि बनानी है। -मु.नं. 111b
d) विनाशी धन, महल आदि हम क्या करेंगे ? हमको तो सिर्फ 3 पैर पृथ्वी चाहिए। -मु.नं. 64c

(संगमयुगी) सन्यासी कौन ?

a) बहुरुपी बनकर कोई भी कपड़े पहनकर जाओ, बोलो - ब्र० कुमारियाँ तो सफेद वस्त्रधारी होती हैं, उन्हों का तो सन्यास किया हुआ है। हम तो गृहस्थ व्यवहार में रहते हैं। -मु.नं. 40f
b) सन्यासी एक तरफ पवित्र रह भारत को मदद करते हैं, दूसरी तरफ बाप से बेमुख कर देते हैं। -मु.नं. 20g
c) फर्क सिर्फ यह है कि वह (गृहस्थी) कमाई कर खाना घर में पकाते हैं। सन्यासी यह नहीं करते हैं, वह माँगकर खाते हैं क्योंकि उनका हठयोग है। -मु.नं. 92b, 68a, 76f
d) सन्यासियों को वास्तव में इतने पैसे इकट्ठे करने का लॉ नहीं। -मु.नं. 127e, 86b
e) सन्यासियों में भी पहले ताकत थी, जंगलों में रहते थे। अभी तो कितने बड़े2 फ्लैट बनाकर रहते हैं। -मु.नं. 119f, 86b
f) बेहद का बाप बैठ पढ़ाते हैं। उनको अपना कोई लोभ नहीं है। जैसे सन्यासियों को होता है - महल बनावें, यह करें। -मु.नं. 111f
g) वह (सन्यासी) है सिर्फ कफनी वाले। वर्सा मिल न सके क्योंकि अपवित्र रहते हैं। -मु.नं. 107c

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

h) गीता (मुरली) सुनाने वाले सन्यासी आदि बहुत हैं। 'बाबा' अक्षर कभी उनके मुख से निकल न सके। -मु.नं. 74a
i) इन भीष्म-पितामह आदि को तो पिछाड़ी में ज्ञान मिलना है। -मु.नं. 83d
j) कहा भी जाता है ना कुम्भकरण की नींद में सोये पड़े हैं, यह नहीं जागेंगे। -मु.नं. 45c
k) तुम हो बेहद के सन्यासी, उन्हों का है हद का वैराग्य। -मु.नं. 3g, 100f
l) 'योग' अक्षर से बच्चे मूँझते हैं। वास्तव में योग अक्षर उन हठयोगियों का है। -मु.नं. 117d
m) सिंगल की माला नहीं होती। सन्यासियों की माला होती नहीं। -मु.नं. 26h
n) सिर्फ एक को याद करना तो सन्यासियों का काम है क्योंकि वह इनको जानते नहीं है, सिर्फ ब्रह्म (वा ब्रह्मा) को ही याद करते हैं। -मु.नं. 129b, 9e, 123d, 59g
p) कई तो शरीर की तन्दुरुस्ती के लिए क्रिया करते हैं। वह कोई परमात्मा से नहीं मिलते। -मु.नं. 69c

1. **शिवोऽहम** : अभी तो (सन्यासी) अपने को भगवान शिवोऽहम कह बैठते हैं। -मु.नं. 119f
b) गुरु आदि लोग जो अपने को परमात्मा कहलाते हैं, उनको हिरण्यकश्यप कहा जाता है। -मु.नं. 46a, 26d
c) मनुष्य अपने को भगवान परमात्मा कहलाये - यह तो बिल्कुल ही रांग है। -मु.नं. 29a+d
d) जानता हुँ हमारे लिए बहुत सहज है, क्योंकि बाबा की प्रवेशता है (ब्रह्माबाबा - शिवोऽहम)। -मु.नं. 29d, 82i
e) कोई2 में भूत आ जाता हैं, फिर कहते हैं - शिवबाबा आया, मुरली चलाते हैं। -मु.नं. 38f, 28a, 11c
f) पूजा करते, फिर मुख से कह देते - वह तो पत्थर-भित्तर में है, कण2 में है। - मु.नं. 101a

गीता का भगवान साकार स्टेज वाला दादा लेखराज ब्रह्मा (उर्फ कृष्ण) नहीं, शिव-शंकर भोलेनाथ है

1) यह वो ही गीता एपिसोड है, सिर्फ कृष्ण (ब्रह्मा - **पिताश्री**) का नाम डाल दिया है। भक्तिमार्ग में जो भी दृष्टान्त है वह सब इस समय के हैं। -मु.नं. 37b
2) गीता (मुरली) में सिर्फ नाम बदल दिया है। संगम होने के कारण यह भूल कर दी है (मुरली में 'पिताश्री' नाम डाल दिया गया है - मु. नं. 67a देखिए)। -मु.नं. 84c, 100b, 67b
3) सर्वगुण सम्पन्न श्री कृष्ण गीता का भगवान है या पतित पावन ज्ञान का सागर, सुख का सागर... परमपिता परमात्मा है ? तो कह देते - दोनों एक ही है। खुद ही रुप धारण कर लीला करते हैं। - मु.नं. 55f, 89a
4) बाप कहते हैं मुख्य एक ही बात को उठाओ - गीता कृष्ण ने नहीं गाई। इस बात में ही सारी बात है जीतने की। -मु.नं. 48f, 69f, 32h
5) चित्र भी बनाया है - एक तरफ कृष्ण (उर्फ ब्रह्मा) का चित्र, दूसरे तरफ शिव (शिव-शंकर) का। अब बताओ गीता का भगवान कौन ? -मु.नं. 77d, 54f
6) कोई2 लव से भी बच्चे को बाबा कह देते हैं। तो उन्होंने भी कृष्ण को लव से (गीता पति) कह दिया है। -मु.नं. 8d, 37d
7) कृष्ण को निराकार तो नहीं कहेंगे, साकार में ही उनको पहचाना जाता है। -मु.नं. 32a, 62f
8) शंकर का तो फिर भी आकार (साकार नहीं) रुप है ना। -मु.नं. 31g, 36a
9) गीता में जिसका नाम डाल दिया है, वह तो पूरे 84 जन्म लेता है। -मु.नं. 63d
10) शंकर तो जन्म-मरण से न्यारा है। -मु.नं. 103b, 121h
11) सारा मदार गीता को करेक्ट कराने पर है। गीता (माता) खण्डन होने कारण भगवान की हस्ती गुम हो गई है। -मु.नं. 63f, 109f
12) शिव के साथ गीता (माता) का भी जन्म होता है। -मु.नं. 86g
13) बाबा ने समझाया है कि गीता जयन्ती के बाद होती है कृष्ण जयन्ती। -मु.नं. 82j
14) वर्सा तो फिर भी गीता (माता) से मिलना है। -मु.नं. 30d, 103g
15) जैसे वेदान्ती बच्ची है, उसने इन्तहान दिया। उसमें एक प्वाइन्ट थी - गीता का भगवान कौन ? उसने परमपिता परमात्मा शिव लिख दिया तो उनको नापास कर दिया और जिन्होंने कृष्ण का नाम लिखा था, उनको पास कर दिया। -मु.नं. 124b
16) कोई अज्ञान में जीवन कहानी (**एक अद्भुत जीवन कहानी - भागवत**) लिखते हैं। हमको थोड़ेही जीवन कहानी आदि बनानी है। -मु.नं. 38c, 116i

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

14-1-2000 प्रात:, मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम अशरीरी बन जब बाप को याद करते हो तो तुम्हारे लिए यह दुनिया ही खत्म हो जाती है, देह और दुनिया भूली हुई है"

प्रश्न:- बाप द्वारा सभी बच्चों को ज्ञान का तीसरा नेत्र क्यों मिला है?

उत्तर:- अपने को आत्मा समझ, बाप जो है जैसा है, उसी रूप में याद करने के लिए तीसरा नेत्र मिला है। परन्तु यह तीसरा नेत्र काम तब करता है जब पूरा योगयुक्त रहें अर्थात् एक बाप से सच्ची प्रीत हो। किसी के नाम-रूप में लटके हुए न हों। माया प्रीत रखने में ही विघ्न डालती है। इसी में बच्चे धोखा खाते हैं।

गीत:- मरना तेरी गली में .....

ओम् शान्ति। सिवाए तुम ब्राह्मण बच्चों के इस गीत का अर्थ कोई समझ न सकें। जैसे वेद-शास्त्र आदि बनाये हैं परन्तु जो कुछ पढ़ते हैं उसका अर्थ नहीं समझ सकते, इसलिए बाप कहते हैं मैं ब्रह्मा मुख द्वारा सब वेदों-शास्त्रों का सार समझाता हूँ, वैसे ही इन गीतों का अर्थ भी कोई समझ नहीं सकते, बाप ही इनका अर्थ बताते हैं। आत्मा जब शरीर से न्यारी हो जाती है तो दुनिया से सारा संबंध टूट जाता है। गीत भी कहता है अपने को आत्मा समझ अशरीरी बन बाप को याद करो तो यह दुनिया खत्म हो जाती है। यह शरीर इस पृथ्वी पर है, आत्मा इनसे निकल जाती है तो फिर उस समय उनके लिए मनुष्य सृष्टि है नहीं। आत्मा नंगी बन जाती है। फिर जब शरीर में आती है तो पार्ट शुरू होता है। फिर एक शरीर छोड़ दूसरे में जाकर प्रवेश करती है। वापिस महतत्व में नहीं जाना है। उड़कर दूसरे शरीर में जाती है। यहां इस आकाश तत्व में ही उनको पार्ट बजाना है। मूलवतन में नहीं जाना है। जब शरीर छोड़ते हैं तो न यह कर्मबन्धन, न वह कर्मबन्धन रहता है। शरीर से ही अलग हो जाते हैं ना। फिर दूसरा शरीर लेते तो वह कर्मबन्धन शुरू होता है। यह बातें सिवाए तुम्हारे और कोई मनुष्य नहीं जानते। बाप ने समझाया है सब बिल्कुल ही बेसमझ हैं परन्तु ऐसे कोई समझते थोड़ेही हैं। अपने को कितना अक्लमंद समझते हैं, पीस प्राइज़ देते रहते हैं। यह भी तुम ब्राह्मण कुल भूषण अच्छी रीति समझा सकते हो। वह तो जानते ही नहीं कि पीस किसको कहा जाता है? कोई तो महात्माओं के पास जाते हैं कि मन की शान्ति कैसे हो? यह तो कहते हैं वर्ल्ड में शान्ति कैसे हो! ऐसे नहीं कहेंगे कि निराकारी दुनिया में शान्ति कैसे हो? वह तो है ही शान्तिधाम। हम आत्मायें शान्तिधाम में रहती हैं परन्तु यह तो मन की शान्ति कहते हैं। वह जानते नहीं कि शान्ति कैसे मिलेगी? शान्तिधाम तो अपना घर है। यहाँ शान्ति कैसे मिल सकती? हाँ, सतयुग में सुख, शान्ति, सम्पत्ति सब है, जिसकी स्थापना बाप करते हैं। यहाँ तो कितनी अशान्ति है। यह सब अब तुम बच्चे ही समझते हो। सुख, शान्ति, सम्पत्ति भारत में ही थी। वह वर्सा था बाप का और दु:ख, अशान्ति, कंगालपना, यह वर्सा है रावण का। यह सब बातें बेहद का बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। बाप परमधाम में रहने वाला नॉलेजफुल है, जो सुखधाम का हमको वर्सा देते हैं। वह हम आत्माओं को समझा रहे हैं। यह तो जानते हो नॉलेज होती है आत्मा में। उनको ही ज्ञान का सागर कहा जाता है। वह ज्ञान का सागर इस शरीर द्वारा वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाते हैं। वर्ल्ड की आयु तो होनी चाहिए ना। वर्ल्ड

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

तो है ही। सिर्फ नई दुनिया और पुरानी दुनिया कहा जाता है। यह भी मनुष्यों को पता नहीं। न्यु वर्ल्ड से ओल्ड वर्ल्ड होने में कितना समय लगता है?

तुम बच्चे जानते हो कलियुग के बाद सतयुग जरूर आना है। इसलिए कलियुग और
b सतयुग के संगम पर बाप को आना पड़ता है। यह भी तुम जानते हो परमपिता परमात्मा, ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना, शंकर द्वारा विनाश कराते हैं। त्रिमूर्ति का अर्थ ही यह है—स्थापना, विनाश, पालना। यह तो कॉमन बात है। परन्तु यह बात तुम बच्चे भूल जाते हो। नहीं तो तुमको खुशी बहुत रहे। निरन्तर याद रहनी चाहिए। बाबा हमको अब नई दुनिया के लिए लायक बना रहे हैं। तुम भारतवासी ही लायक बनते हो, और कोई नहीं। हाँ, जो और-और धर्मों में कनवर्ट हो गये हैं, वह आ सकते हैं। फिर इसमें कनवर्ट हो जायेंगे, जैसे उसमें हुए थे। यह सारी नॉलेज तुम्हारी बुद्धि में है। मनुष्यों को समझाना है यह पुरानी दुनिया अब बदलती है। महाभारत लड़ाई भी जरूर लगनी है। इस समय ही बाबा आकर राजयोग सिखलाते हैं। जो राजयोग सीखते हैं, वह नई दुनिया में चले जायेंगे। तुम सबको समझा
c सकते हो कि ऊंच ते ऊंच है भगवान, फिर ब्रह्मा-विष्णु-शंकर, फिर आओ यहाँ, मुख्य है जगत अम्बा, जगत पिता। बाप आते भी यहाँ हैं ब्रह्मा के तन में, प्रजापिता ब्रह्मा तो यहाँ है ना। ब्रह्मा द्वारा स्थापना सूक्ष्मवतन में तो नहीं होगी ना। यहाँ ही होती है। यह व्यक्त से अव्यक्त बन जाते हैं। यह राजयोग सीख फिर विष्णु के दो रूप बनते हैं। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझनी चाहिए ना। मनुष्य ही समझेंगे। वर्ल्ड का मालिक ही वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझा सकते हैं। वह नॉलेजफुल, पुनर्जन्म रहित है। यह नॉलेज किसकी बुद्धि में नहीं है। परखने की भी बुद्धि चाहिए ना। कुछ बुद्धि में बैठता है या ऐसे ही है, नब्ज देखनी चाहिए। एक अजमल खाँ नामीग्रामी वैद्य होकर गया है। कहते हैं देखने से ही उनको बीमारी का पता पड़ जाता था। अब तुम बच्चों को भी समझना चाहिए कि यह लायक है या नहीं?
d बाप ने बच्चों को ज्ञान का तीसरा नेत्र दिया है, जिससे तुम अपने को आत्मा समझ, बाप जो है, जैसा है, उसको उसी रूप में याद करते हो। परन्तु ऐसी बुद्धि उनकी होगी जो पूरा योगयुक्त होंगे, जिनकी बाप से प्रीत बुद्धि होगी। सब तो नहीं है ना। एक दो के नाम-रूप में लटक पड़ते हैं। बाप कहते हैं प्रीत तो मेरे साथ लगाओ ना। माया ऐसी है जो प्रीत रखने नहीं देती है। माया भी देखती है हमारा ग्राहक जाता है तो एकदम नाक-कान से पकड़ लेती है। फिर जब धोखा खाते हैं तब समझते हैं माया से धोखा खाया। मायाजीत, जगतजीत बन नहीं सकेंगे, ऊंच पद पा नहीं सकेंगे। इसमें ही मेहनत है। श्रीमत कहती है मामेकम् याद करो तो तुम्हारी जो पतित बुद्धि है वह पावन बन जायेगी। परन्तु कइयों को बड़ा मुश्किल लगता है।
e इसमें सब्जेक्ट एक ही है अलफ और बे। बस, दो अक्षर भी याद नहीं कर सकते हैं। बाबा कहे अलफ को याद करो फिर अपनी देह को, दूसरे की देह को याद करते रहते हैं। बाबा कहते हैं देह को देखते हुए तुम मुझे याद करो। आत्मा को अब तीसरा नेत्र मिला है मुझे देखने-समझने का, उससे काम लो। तुम बच्चे अभी त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी बनते हो। परन्तु त्रिकालदर्शी भी नम्बरवार हैं। नॉलेज धारण करना कोई मुश्किल नहीं है। बहुत ही अच्छा-अच्छा समझते हैं परन्तु योगबल कम है, देही-अभिमानी-पना बहुत कम है। थोड़ी बात में क्रोध, गुस्सा आ जाता है, गिरते रहते हैं। उठते हैं, गिरते हैं। आज उठे कल फिर गिर पड़ते

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

हैं। देह-अभिमान मुख्य है, फिर और विकार लोभ, मोह आदि में फंस पड़ते हैं। देह में भी मोह रहता है ना। माताओं में मोह जास्ती होता है। अब बाप उससे छुड़ाते हैं। तुमको बेहद का बाप मिला है फिर मोह क्यों रखते हो? उस समय शक्ल, बातचीत ही बन्दर मिसल हो जाती है। बाप कहते हैं—नष्टोमोहा बन जाओ, निरन्तर मुझे याद करो। पापों का बोझा सिर पर बहुत है, वह कैसे उतरे? परन्तु माया ऐसी है, याद करने नहीं देगी। भल कितना भी माथा मारो घड़ी-घड़ी बुद्धि को उड़ा देती है। कितनी कोशिश करते हैं हम मोस्ट बिलवेड बाबा की ही महिमा करते रहें। बाबा, बस आपके पास आये कि आये, परन्तु फिर भूल जाते हैं। बुद्धि और तरफ चली जाती है। यह मम्बरदन में जाने वाला भी पुरुषार्थी है ना।

बच्चों की बुद्धि में यह याद रहना चाहिए कि हम गॉड फादरली स्टूडेन्ट है। गीता में भी है—भगवानुवाच, मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। सिर्फ शिव के बदले कृष्ण का नाम डाल दिया है। वास्तव में शिवबाबा की जयन्ती सारी दुनिया में मनानी चाहिए। शिवबाबा सबको दुःख से लिबरेट कर गाइड बन ले जाते है। यह तो सब मानते हैं कि वह लिबरेटर, गाइड है। सबका पतित-पावन बाप है, सबको शान्तिधाम-सुखधाम में ले जाने वाला है तो उनकी जयन्ती क्यों नहीं मनाते हैं? भारतवासी ही नहीं मनाते हैं इसलिए ही भारत की यह बुरी गति हुई है। मौत भी बुरी गति से होता है। वह तो बॉम्बस ऐसे बनाते है, गैस निकला और खलास, जैसे क्लोरोफॉर्म लग जाता है। यह भी उन्हों को बनाने ही हैं। बन्द होना इम्पॉसिबुल है। जो कल्प पहले हुआ था सो अब रिपीट होगा। इन मूसलों और नैचुरल कैलेमिटीज़ से पुरानी दुनिया का विनाश हुआ था, सो अभी भी होगा। विनाश का समय जब होगा तो ड्रामा प्लैन अनुसार एक्ट में आ ही जायेंगे। ड्रामा विनाश जरूर करायेगा। रक्त की नदियाँ यहां बहेंगी। सिविलवार मे एक-दो को मार डालते हैं ना। तुम्हारे में भी थोड़े जानते हैं कि यह दुनिया बदल रही है। अब हम जाते हैं सुखधाम। तो सदैव ज्ञान के अतीन्द्रिय सुख में रहना चाहिए। जितना याद में रहेंगे उतना सुख बढ़ता जायेगा। छी-छी देह से नष्टोमोहा होते जायेंगे। बाप सिर्फ कहते है अलफ को याद करो तो बे बादशाही तुम्हारी है। सेकण्ड में बादशाही, बादशाह को बच्चा हुआ तो गोया बच्चा बादशाह बना ना। तो बाप कहते हैं मुझे याद करते रहो और चक्र को याद करो तो चक्रवर्ती महाराजा बनेंगे। इसलिए गाया जाता है सेकण्ड में जीवनमुक्ति, सेकण्ड में बेगर टू प्रिन्स। कितना अच्छा है। तो श्रीमत पर अच्छी रीति चलना चाहिए। कदम-कदम पर राय लेनी होती है।

बाप समझाते हैं मीठे बच्चे, ट्रस्टी बनकर रहो तो ममत्व मिट जाये। परन्तु ट्रस्टी बनना मासी का घर नहीं है। यह खुद ट्रस्टी बने हैं, बच्चों को भी ट्रस्टी बनाते हैं। यह कुछ भी लेते हैं क्या? कहते हैं तुम ट्रस्टी हो सम्भालो। ट्रस्टी बने तो फिर ममत्व मिट जाता है। कहते भी हैं ईश्वर का सब कुछ दिया हुआ है। फिर कुछ नुकसान पड़ता है या कोई मर जाता है तो बीमार हो पड़ते हैं। मिलता है तो खुशी होती है। जबकि कहते हो ईश्वर का दिया हुआ है तो फिर मरने पर रोने की क्या दरकार है? परन्तु माया कम नहीं है, मासी का घर थोड़ेही है। इस समय बाप कहते हैं तुमने हमको बुलाया है कि इस पतित दुनिया में हम नहीं रहना चाहते है, हमको पावन दुनिया में ले चलो, साथ ले चलो परन्तु इसका अर्थ भी समझते नहीं। पतित-पावन आयेगा तो जरूर शरीर खत्म होंगे ना तब तो आत्माओं को ले जायेंगे। तो ऐसे बाप

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

के साथ प्रीत बुद्धि होनी चाहिए। एक से ही लव रखना है, उनको ही याद करना है। माया के तूफान तो आयेंगे। कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म नहीं करना चाहिए। वह बेकायदे हो जाता है। बाप कहते है मैं आकर इस शरीर का आधार लेता हूँ। यह इनका शरीर है ना। तुमको याद बाप को करना है। तुम जानते हो ब्रह्मा भी बाबा, शिव भी बाबा है। विष्णु और शंकर को बाबा नहीं कहेंगे। शिव है निराकार बाप। प्रजापिता ब्रह्मा है साकारी बाप। अब तुम साकार द्वारा निराकार बाप से वर्सा ले रहे हो। दादा इनमें प्रवेश करते है तब कहते है दादे का वर्सा बाप द्वारा हम लेते है। दादा (ग्रेन्ड फादर) है निराकार, बाप है साकार। यह वन्डरफुल नई बातें है ना। त्रिमूर्ति दिखाते है परन्तु समझते नहीं। शिव को उड़ा दिया है। बाप कितनी अच्छी-अच्छी बात समझाते है तो खुशी रहनी चाहिए। हम स्टूडेन्ट है। बाबा हमारा बाप, टीचर, सतगुरु है। अभी तुम वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी बेहद के बाप से सुन रहे हो फिर औरों को सुनाते हो। यह 5 हज़ार वर्ष का चक्र है। कॉलेज के बच्चों को वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझानी चाहिए। 84 जन्मों की सीढ़ी क्या है, भारत की चढ़ती कला और उतरती कला कैसे होती है, यह समझाना है। सेकण्ड में भारत स्वर्ग बन जाता है फिर 84 जन्मों में भारत नर्क बनता है। यह तो बहुत ही सहज समझने की बात है। भारत गोल्डन एज से आइरन एज में कैसे आया है—यह तो भारतवासियों को समझाना चाहिए। टीचर्स को भी समझाना चाहिए। वह है जिस्मानी नॉलेज, यह है रूहानी नॉलेज। वह मनुष्य देते है, यह गॉड फादर देते है। वह है मनुष्य सृष्टि का बीजरूप, तो उनके पास मनुष्य सृष्टि का ही नॉलेज होगा। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. इस छी-छी देह से पूरा नष्टोमोहा बन ज्ञान के अतीन्द्रिय सुख में रहना है। बुद्धि में रहे अब यह दुनिया बदल रही है हम जाते हैं अपने सुखधाम।

२. ट्रस्टी बनकर सब कुछ सम्भालते हुए अपना ममत्व मिटा देना है। एक बाप से सच्ची प्रीत रखनी है। कर्मेन्द्रियों से कभी भी कोई विकर्म नहीं करना है।

वरदान:- शुभचिंतक और शुभचिंतन स्थिति के अनुभव द्वारा ब्रह्मा बाप समान मास्टर दाता भव

ईर्ष्या, घृणा और क्रिटिसाइज़—इन तीन बातों से मुक्त रहकर सर्व के प्रति शुभचिंतक बनो और शुभचिंतन स्थिति का अनुभव करो क्योंकि जिसमें ईर्ष्या की अग्नि होती है वे स्वयं जलते है, दूसरों को परेशान करते है, घृणा वाले खुद भी गिरते है, दूसरे को भी गिराते है और हंसी में भी क्रिटिसाइज करने वाले, आत्मा को हिम्मतहीन बनाकर दुःखी करते है। इसलिए इन तीनों बातों से मुक्त रह शुभचिंतक स्थिति के अनुभव द्वारा दाता के बच्चे मास्टर दाता बनो।

स्लोगन:-

ऐसे खुश रहो जो आपके खुशनुमः चेहरे को देख रोने वाले भी खुश हो जाएं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

30-12-98 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे–एक बाप के साथ सच्ची मुहब्बत हो तो बाप तुम्हें अपने साथ घर ले जायेंगे, सब पापों से मुक्त कर देंगे, स्वर्ग का मालिक बना देंगे"

प्रश्न:- अपने आपको खुशी में रखने के लिए कौन सी मुख्य धारणा चाहिए?

उत्तर:- खुशी में तभी रह सकते जब अपने आपसे रूह-रिहान करना आता हो। किसी भी चीज़ में आसक्ति न हो। दो रोटी पेट को मिले, बस–ऐसी अनासक्त वृत्ति की धारणा हो तब हर्षित रहेंगे। ज्ञान का मनन कर स्वयं को हर्षित रखो। तुम कर्मयोगी हो, कर्म करते, घर का काम करते, खाना आदि खाते भी बाप को याद करो। स्वदर्शन चक्र बुद्धि में घूमता रहे, तो बहुत खुशी रहेगी।

गीत:- न वह हमसे जुदा होंगे..... ओम् शान्ति।

मीठे-मीठे बच्चों ने गीत सुना। यह है बच्चों की वा आत्माओं की अपने परमपिता परमात्मा के साथ रूहानी मुहब्बत। यह रूहानी मुहब्बत सिर्फ तुम ब्राह्मण बच्चों की ही होती है। तुम अपने को आत्मा निश्चय करते हो। परन्तु जब कहते हैं कि आत्मा सो परमात्मा, तो आत्मा किसके साथ मुहब्बत रखे। मुहब्बत होती है बच्चों की बाप के साथ। बाप, बाप की मुहब्बत नहीं होती है। अभी तुम समझते हो हम आत्मायें अपने परमपिता परमात्मा के साथ मुहब्बत जोड़ रही हैं। यह मुहब्बत ही तुमको साथ ले जाती है। तुम रूहानी मुहब्बत बाप के साथ रखते हो तो तकलीफ भी सहन करनी पड़ती है। सारी दुनिया, घर के भाती आदि सब दुश्मन बन जाते हैं।

बच्चों को समझाया है कि पतित-पावनी गंगा नहीं है। मनुष्य पावन होने के ख्याल से गंगा वा जमुना के तट पर हरिद्वार, काशी में जाकर बैठते हैं। मुख्य स्थान यह दो हैं। कहते हैं–हे पतित-पावनी गंगा। अब वह गंगा तो सुनती ही नहीं। सुनने वाला एक पतित-पावन बाप ही है। अभी तुम उस बाप के सम्मुख बैठे हो। बाप बतला रहे हैं तुम पावन कैसे बनोगे? पानी की गंगा थोड़ेही कहती है–मामेकम् याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। बाप कहते हैं–मैं प्रतिज्ञा करता हूँ अगर तुम मुझ बाप को याद करेंगे तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। गैरन्टी देते हैं, गंगा तो गैरन्टी दे न सके। जैसे मनुष्य रावण को वर्ष-वर्ष जलाते आये हैं परन्तु रावण मरता ही नहीं है, वैसे गंगा में स्नान भी जन्म-जन्मान्तर करते आये हैं परन्तु पतित से पावन कोई बनते ही नहीं। फिर-फिर स्नान करने जाते रहते हैं। एक बार पावन बनें तो फिर क्यों जाते हैं स्नान करने? कितने मेले लगते हैं। उनको कोई आत्मा-परमात्मा का संगम नहीं कहेंगे। भक्ति मार्ग में भीड़ लगती है मेले पर। अभी तुम बाप के साथ बुद्धियोग लगाते हो। तुम जानते हो हम आत्मायें आशिक बनी है। आत्मा ही भगवान् को याद करती है शरीर द्वारा। बाप कहते हैं मैं भी इस शरीर द्वारा तुमको पढ़ा रहा हूँ। इसलिए हमेशा बाबा को याद करते रहो। बाबा कहने से स्वर्ग जरूर याद आयेगा और अपना मुक्तिधाम घर भी याद आयेगा। मुक्ति को निर्वाणधाम भी कहते हैं।

यह है साकारी दुनिया। जब तक आत्मायें यहाँ न आयें तो साकारी दुनिया कैसे बढ़े? आत्मायें निराकारी दुनिया से आती हैं। मनुष्य सृष्टि बढ़ती जाती है। कोई समझते हैं नैचुरल बढ़ती रहती है। तुम जानते हो आत्मायें यहाँ आती हैं, वृद्धि को पाती रहती हैं। बच्चों को मालूम हुआ है कि

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

स्वीट होम शान्तिधाम है। शान्ति को बहुत लोग पसन्द करते हैं। तुम जानते हो शान्तिधाम तो हमारा स्वीट गॉड फादरली होम है। भारतवासी विलायत से लौटते हैं तो कहते हैं हम अपने स्वीट होम भारत में जाते हैं। जहाँ जन्म लेते हैं वह देश प्यारा लगता है। कहते हैं हमको स्वीट होम (भारत में) ले चलो। अच्छा, समझो मर जाते हैं, आत्मा तो चली गई। फिर शरीर को यहाँ ले आकर खत्म करते हैं। समझते हैं भारत की मिट्टी भारत में ही जाये। नेहरु मरा तो उनकी राख देखो कहाँ-कहाँ ले गये! खेतों में गिराई। समझते हैं खेती अच्छी होगी। परन्तु हर चीज़ को वह कितना भी मान दें, पुरानी तो जरूर होनी है। बिचारे सन्यासी आदि कोई भी नहीं जानते। तुम्हारे लिए तो सब बिचारे ही हैं। कितनी तकलीफ सहन कर रहे हैं! बाप का पता नहीं है। तुम बाप को जानकर बाप से वर्सा ले रहे हो। तो दिल होती है मित्र सम्बन्धियों आदि को भी स्वर्गवासी बनायें। किसको तुम कहो स्वर्गवासी बनो तो कहेंगे तुम मारने चाहते हो क्या! तुम बच्चे जानते हो—श्रीमत पर हम श्रेष्ठ स्वर्गवासी बन रहे हैं। देही-अभिमानी बनने में बड़ी मेहनत लगती है।

a घड़ी-घड़ी देह-अभिमान में आकर बाप को भूल जाते हो। अभी तुम सम्मुख बैठे हो। जानते हो हम अपने परमपिता परमात्मा पास आये हैं। बाबा कहते हैं—आगे कभी मिले थे? तो झट कहते हैं—हाँ, बाबा 5 हजार वर्ष पहले। यह तुम्हारा गुप्त अक्षर है। और कोई कॉपी कर न सके। भल कृष्ण का वेष धारण कर लेते हैं, कहते हैं हम आये हैं स्वर्ग की स्थापना करने। परन्तु यह बात कि 5 हजार वर्ष पहले भी स्वर्ग स्थापन किया था—यह कह न सकें। तुम ही कहते हो—बाबा, 5 हज़ार वर्ष पहले हम आपसे वर्सा लेने आये थे। आपने राजयोग सिखाया था। यह आत्मा कहती है इस शरीर द्वारा। अपने को आत्मा निश्चय कर और बाप को याद करना है। इसमें सर्वव्यापी

b की तो बात ही नहीं। यह भी नहीं समझते हैं कि ब्रह्मा जरूर साकार में होना चाहिए, जिस द्वारा परमपिता परमात्मा सृष्टि रचते हैं।

पतित-पावन बाप आकर सो देवी-देवता पावन बनाते हैं। बाप ही स्वर्ग का रचयिता है। तो जरूर स्वर्ग में मनुष्य चाहिए। बाबा आकर तुम्हें स्वर्ग का द्वार बताते हैं। तुम कोशिश करते हो हम नर्कवासी को स्वर्गवासी बनायें। कोई बड़े आदमी को सीधा कहो तुम पतित नर्कवासी हो तो कितना बिगड़ पड़ेंगे। अभी तुम जानते हो हम नर्क से निकल स्वर्ग में जा रहे हैं। अभी हम संगमवासी हैं। हम आत्मायें अब जा रही हैं—इस शरीर को छोड़ बाबा के साथ, बाबा के घर। यह है तुम्हारी रूहानी यात्रा। बाबा की याद में रहना है। समझते हो यह शरीर जहाँ तक रहेगा वहां तक यात्रा चालू है। कर्म भी तो करना है। भल खाओ, पियो, खाना पकाओ। जितना समय मिले बाप को जरूर याद करना है। दफ्तर में बैठते हो, देखो फुर्सत है तो बाबा की याद में बैठ जाओ। बहुत कमाई है। ट्रेन में सफर करते हो, उस समय तो कोई काम नहीं रहता है। बैठे हुए बाबा को याद करते रहो। अभी हम बाबा के पास जाते हैं। बाबा परमधाम से हमको लेने लिए आया है। अच्छा, शाम को घर का खाना आदि पकाते हो तो भी एक-दो को याद दिलाओ—आओ, हम अपने बाप की याद में बैठें। प्वाइंट भी एक-दो को सुनाओ। हम स्वदर्शन चक्रधारी हैं। बाबा कहते हैं—तुम लाइट हाउस भी हो, रास्ता बतलाते हो। उठते, बैठते, चलते तुम लाइट हाउस हो। एक आंख में मुक्ति, एक आंख में जीवनमुक्ति। स्वर्ग यहाँ था। अभी नहीं है। अब तो नर्क है। बाबा फिर से स्वर्ग स्थापन कर रहे हैं। बाप कहते हैं हम तुमको बहुत गुल-गुल बनाते हैं। फिर

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

तुम जाकर महारानी, पटरानी बनेंगे। खद्दर की रानी नहीं बनना। तुम्हें 16 कला सम्पन्न बनना है, न कि 14 कला। श्रीकृष्ण 16 कला था। तुम बच्चियाँ कितने व्रत-नेम आदि रखती थी! ७रोज़ निर्जल रहती थी, कितनी मेहनत करती थी! परन्तु कृष्णपुरी में जा न सकें। अभी तुम कृष्णपुरी स्वर्ग में प्रैक्टिकल में जाने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। कृष्ण को द्वापर में ले जाने से स्वर्ग का किसको पता नहीं पड़ता है। वास्तव में 7 रोज का अर्थ क्या है सो तुम अभी जानते c हो। सिवाए बाप के और कोई को याद नहीं करना है। बाकी निर्जल आदि की कोई बात नहीं। बाबा को याद करने से तुम बाबा के पास चले जायेंगे। बाप फिर स्वर्ग में भेज देंगे। व्रत-नेम रख तुम कितने दिन भूखे मरते हो! जन्म बाई जन्म कितनी मेहनत करते हो! प्राप्ति कुछ भी नहीं हुई है। अभी तुमको उनसे छुड़ाए सद्गति मार्ग में ले जाते है। तुम कहते हो—बाबा, कल्प पहले भी आपसे मिले थे स्वर्ग का वर्सा लेने। बाप कहते हैं कदम-कदम पर राय लेते रहो। सब हिसाब-किताब पूछो। बाबा राय देते रहेंगे। भल तुम अपना धन्धाधोरी आदि करते रहो। फिर भी बाबा राय देते रहेंगे। देखेंगे—यह बहुत धन्धे में घुस पड़े हैं तो राय देंगे। क्यों इतना माथा मारते हो? कितना समय तुम जियेंगे। पेट तो एक-दो रोटी मांगता है। उनसे गरीब भी चलते तो साहूकार भी चलते हैं। साहूकार लोग अच्छी रीति खाते हैं फिर रोगी भी बनते हैं। भील लोग देखो कितने मजबूत रहते हैं! और खाते क्या हैं! कितना काम करते हैं! अपनी कुटिया में वह खुश रहते हैं। तो इस समय तुम्हें और सब आशायें छोड़ देनी चाहिए। दो रोटी मिली, पेट भरा, बस, बाप को याद करना है। तुम हो रूहानी बच्चे, परमपिता परमात्मा माशूक के आशिक़ बने हो। जितना बाबा को याद करेंगे उतना विकर्म विनाश होंगे और जिसको याद करते हो उनसे जाए मिलेंगे। कई चाहते हैं साक्षात्कार हो, यह हो। बाबा कहते हैं घर बैठे भी तुमको हो सकता है। शिवबाबा को याद करने से तुमको वैकुण्ठ का साक्षात्कार होगा, कृष्णपुरी देखेंगे। यहाँ तो बाबा तुमको वैकुण्ठ का मालिक बना देते हैं। सिर्फ साक्षात्कार की बात नहीं। मेरे को याद करो क्योंकि मैं आया हूँ तुमको ले जाने। शिवबाबा को याद करना है। वही कृष्णपुरी का मालिक बनाने वाला है। कृष्ण तो नहीं बनायेंगे। शिवबाबा को याद करने से तुमको वैकुण्ठ की बादशाही मिलती है। अब वह परमधाम से आया हुआ है। जरूर आये हैं तब तो मन्दिर यादगार बना है ना। शिव का मन्दिर है। शिवजयन्ती भी मनाते हैं ना। परन्तु वह भारत में कैसे आते हैं—यह किसको पता नहीं d है। कृष्ण के तन में तो नहीं आते। कृष्ण होता ही है सतयुग में। शिव का बड़ा भारी मन्दिर है। कृष्ण का इतना बड़ा नहीं है। सोमनाथ का मन्दिर कितना बड़ा है! कृष्ण के मन्दिर में राधे-कृष्ण को बहुत गहने दिखाते हैं। शिव के मन्दिर में कभी गहने नहीं देखेंगे। अब वह शिवबाबा तो बड़े महलों में रहता नहीं। रहता है श्रीकृष्ण। बाबा कहते हैं मैं महलों में रहता ही नहीं हूँ। परन्तु भक्ति मार्ग में कितना बड़ा आलीशान हीरे-जवाहरों का मन्दिर बनाया है! जिनको शिवबाबा द्वारा स्वर्ग का वर्सा मिला है उन्हों ने उनका मन्दिर इतना ऊंच बनाया है। यादगार के लिए कितना बड़ा मन्दिर बनाया है! तो वह खुद कितने न साहूकार होंगे! मन्दिर बहुत अच्छा बनाते हैं। बाम्बे में बाबुरीनाथ में शिव का मन्दिर है। लक्ष्मी-नारायण का माधव बाग में है। बाप कहते हैं हम तुमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। तो भक्ति मार्ग में तुम कितना भारी मन्दिर बनाते हो और अभी देखो कैसे झोपड़ी में बैठा हूँ! तुम्हारा भी नाम बाला होना है। तुम जानते हो हमारा फिर मन्दिर बनेगा।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

हमारे बाप शिव के भी बहुत मन्दिर हैं, कमाल है। जिन्होंने सोमनाथ का मन्दिर बनाया था, वो कितने धनवान होंगे! अभी तो कितना गुप्त हूँ! कोई को पता नहीं। तुम जान गये हो फिर कैसे शिवबाबा का मन्दिर बनाना पड़ेगा। भक्ति मार्ग में आयेंगे। मम्मा-बाबा जो पहले नम्बर में पूज्य बनते हैं, वैकुण्ठ के मालिक बनते हैं, फिर पहले-पहले पुजारी बन मन्दिर भी उनको ही बनाना है। तो दिल में कहेंगे ना—हम ही पुजारी बन मन्दिर बनायेंगे। ऐसी-ऐसी बातों में रमण करने से फिर यह पुरानी दुनिया भूल जायेगी। आपस में भी ऐसी-ऐसी बातें करनी चाहिए तो तुमको खुशी बहुत रहेगी। अपने से रूहरिहान करो।

सुप्रीम रूह बैठ तुम्हारी रूह को रिझाते हैं। इस ज्ञान से हर्षित बनाते हैं। तुम कहते हो हम कल्प बाद फिर से आये हैं। अनेक बार बाप से मिले हैं। वर्सा पाया है। ऐसे-ऐसे आपस में बातें करनी चाहिए। फिर तुम कर्मयोगी भी हो। भल घर में खाना आदि पकाओ, खुशी रहेगी। तुम 84 जन्मों की हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानते हो। हम अभी ब्राह्मण बने हैं फिर देवता बन राज्य करेंगे। पुजारी से पूज्य बनेंगे। फिर महल आदि बनायेंगे। अपनी ही हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनाते रहो। हमारी हिस्ट्री-जॉग्राफी चक्र कैसे लगाती है—इसको ही स्वदर्शन चक्रधारी कहा जाता है। तुम तीनों लोकों को जानने वाले हो। ज्ञान का नेत्र तुम्हारा खुला है। यह चक्र याद करने से तुमको बड़ी खुशी रहनी चाहिए। बाप को भी खुशी रहती है। अभी तुम सेवा में उपस्थित हो। तुम सेवाधारियों के मन्दिर फिर बाद में भक्ति मार्ग में बनेंगे। अभी मैं तुम बच्चों की सर्विस में आया हूँ। तुमको स्वर्ग का पूरा वर्सा देने आया हूँ। जितना जो पुरुषार्थ करेंगे, उस अनुसार स्वर्ग के मालिक बनेंगे।

अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद, प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार :-

१- चलते-फिरते लाइट हाउस बन सभी को रास्ता बताना है। सब आशायें छोड़ एक बाप की याद में रहना है। बाप से राय लेते रहना है।

२- ज्ञान की बातों में ही रमण करना है। अपने आपसे बातें करनी है। स्वदर्शन चक्र फिराते सदा हर्षित रहना है।

वरदान:- स्वयं को बाप हवाले कर बुद्धि से भी सरेन्डर होने वाले डबल लाइट भव

अपनी जिम्मेवारी बाप को देकर, स्वयं को बाप हवाले कर दो अर्थात् अपने सब बोझ बाप को दे दो तो डबल लाइट बन जायेंगे। बुद्धि से सरेन्डर हो जाओ तो और कोई भी बात बुद्धि में नहीं आयेगी, बस सब कुछ बाप का है, सब कुछ बाप में है तो और कुछ रहा ही नहीं, जब रहा ही नहीं तो बुद्धि कहाँ जायेगी, बस एक बाप, एक ही याद का रास्ता, इस रास्ते से सहज मंजिल पर पहुंच जायेंगे।

स्लोगन:-

अडोलता के तख्त पर विराजमान हो, साक्षी दृष्टा बन पार्ट बजाने वाले ही श्रेष्ठ पार्टधारी हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

4·3·88 प्रात: क्लास ओम्शान्ति (पिता) पिताजी याद है

"मीठे लाडले बच्चे-तुम्हारे हैं रूहानी याद का यात्रा, तुम्हें शरीर को कोई तकलीफ नहीं देनी है, चलते फिरते, उठते बैठते बुद्धि से बाप को याद करना है"

प्रश्न:-सदा खुशी किन बच्चों को रहती है, स्थाई खुशी न रहने का कारण क्या है?

उत्तर:-जो पुरानी दुनिया, पुराने शरीर से ममत्व तोड़ बाप और वर्से को याद करते हैं उन्हें स्थाई खुशी रहती है। जिनकी यात्रा में याद में माया के तूफान आते, अवस्था डगमगा जाती, उनको खुशी स्थाई नहीं रहती। २- जब तक भविष्य राजाई इन आँखों से नहीं देखते हैं, तब तक खुशी का पूरा नशा नहीं रह सकती।

गीत:-मैं उन राहों पर चलना है। ओम्शान्ति यह बाप कहते हैं बच्चों प्रति, यह तो समझने की बात है। पक्के बच्चे सिवाए प्रजापिता ब्रह्मा के और किसके होते नहीं। कृष्ण को कभी प्रजापिता नहीं कहा जाता। नाम गाया हुआ है ना। प्रजापिता ब्रह्मा, जो ही कर गये हैं वह इस समय पैजेन्ट है। तो प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान ब्रह्माकुमार कुमारियां ठहरे। यह है प्रजापिता ब्रह्मा की औलाद। तो जरूर प्रजापिता ब्रह्मा का भी कोई बाप होगा ना। बच्चे जानते हैं हमारा दादा परमपिता परमात्मा शिव है। वह अब नई दुनिया रच रहे हैं। अर्थात पुरानी दुनिया को नई बना रहे हैं। इस पुरानी दुनिया में यह सब भी पुरानी नई दुनिया में सतोप्रधान नये सब होते हैं वह कैसे होते हैं देवी देवता लक्ष्मी नारायण को। यह है नई दुनिया के नये सब। इन्हींकी महिमा भारतवासी जानते हैं। यह स्वर्ग नई दुनिया नये विश्व के मालिक हैं। नई दुनिया जो थी, वह अब पुरानी है, ८४जन्म कैसे पलते हैं ना। इनका भी पूरा हिसाब है। कोन पूरे ८४जन्म लेते हैं। सब तो नहीं लेते, ८४जन्म सिर्फ वही लेते हैं जिन्हों आदि से अन्त तक पार्ट है। जो पहले सो सृष्टि पर थे। हरेक बात लाडले बच्चों को समझानी है। यहां कोई मनुष्य, मनुष्य को नहीं समझाते, यह तो निराकार परमपिता परमात्म मनुष्य तन में बैठ समझाते हैं। बलिहारी उनकी है। वह नहीं समझाते तो हम कुछ भी नहीं जानते। हम तो बिल्कुल तुच्छ बुद्धि थे। अभी रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को जानते हैं। ए ब्रह्मा द्वारा इस वेद द्वारा में सब मुख्य पार्टधारी कौनसे हैं। यह है अधि०क्या बना ड्रामा। गाते भी हैं बनी बनाई बन रही। गायन भक्ति मार्ग में है। परन्तु यह अभी समझा जाता है कि यह ड्रामा का खेल कैसे बना हुआ है। बाप बैठ समझाते हैं लाडले बच्चे यह तो तुम जान गये हो कि तुमको यात्रा पर चलना है। मनुष्य यात्रा पर बहुत कष्ट सहन करके जाते हैं। अभी तो एरोप्लेन ट्रेन आदि बहुत सहज निकली हैं। आगे तो मनुष्य पैदल या पर जाते थे। चलते२ तूफान लगते थे। बहुत बेहाल हो जाते थे। फिर कोई वापिस लौट आते थे। सो बाधाकल्प चलती है जिस्मानी यात्रा, द्वापर से लेकर तो सब भक्तिमार्ग की यात्रा आधा कल्प चलती है। मनुष्य यात्रा पर क्यों जाते हैं। भगवान को ढूंढने। भगवान कहीं बैठा तो नहीं है। भगवान के जड़ चित्र पूजे जाते हैं। जो होकर जाते हैं उनके जड़ चित्र बनाते हैं। चैतन्य में तो भगवान मिल न सके। शिव लिंग आदि यह सब जड़ चित्र हैं। जड़ चित्रों को देखने के लिए यात्रा करते हैं। यह सब भक्तिमार्ग की रसम है। जानते हैं परन्तु कोई भी बायोग्राफी को नहीं जानते कि यह कौन हैं जब आये थे। शिवजयन्ती मनाई जाती है। परन्तु जानते भी जानते हैं आजकल तो इसी उत्सव को भी उड़ा दिया है। क्योंकि इनका नाम रूप आदि प्राय:लोप होना ही है। अभी तुम जानते हो ऊँच से ऊँच बाप भगवान या सागर सुख का सागर है। वह से अभी हमको ज्ञान मिल रहा है। वही वेद का बाप अभी प्रैक्टिकल में है। अमरनाथ भी शिवबाबा है ना। दिखाते हैं बर्फ का लिंग बन जाता है। मनुष्यों को ठगने लिए गपोड़े तो बहुत लगाये हैं। तो उन जिस्मानी यात्रा पर तकलीफ बहुत होती है। यह है रूहानी यात्रा इसमें शरीर की कोई तकलीफ नहीं है। तुम बच्चे समझते हो हम बाप के साथ बैठे हैं। भक्ति मार्ग में जन्म-जन्मान्तर याद करते आये हैं। अब स्मृति आई है। बाप कहते हैं तुम ८४जन्म कैसे उतरते आये। वेद शास्त्र भक्तिमार्ग के पढ़ते गिरते आये हो। परन्तु एकदम बड़ी नीचा भी पतित बनते हैं। फिर भी दुनिया को तमोप्रधान तो होना है जरूर। बाप बुद्धि को पाता है जरूर एक भी मनुष्य वापिस मेरे पास आ नहीं सकते। नाटक में सबको अपना पार्ट बजाना है। सतो, रजो, तमो में आना है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

6-11-97 प्रात:मुरली – ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मीठे बच्चे - तुम्हें मनुष्य से देवता बनना है, इसलिए दैवी फ़ज़ीलत (मैनर्स) धारण करो, आसुरी अवगुणों को छोड़ते जाओ, पावन बनो

प्रश्नः- दैवी मैनर्स धारण करने वालों की परख किस एक बात से हो सकती है?

उत्तरः- सर्विस से। कहाँ तक पतित से पावन बने हैं और कितनों को पावन बनाने की सेवा करते हैं! अच्छे पुरुषार्थी हैं या अभी तक आसुरी अवगुण है? यह सब सर्विस से पता चलता है। तुम्हारी यह ईश्वरीय मिशन है ही दैवी फजीलत सिखलाने की। तुम श्रीमत पर पतित मनुष्य को पावन बनाने की सेवा करते हो।

गीतः- ओम नमो शिवाए...ओम् शान्ति।

भक्ति मार्ग में महिमा करते हैं–शिवाए नमः ... ऊंच ते ऊंच शिव, उनको ही शिव परमात्माए नमः कहा जाता है। ब्रह्मा देवताए नमः, विष्णु देवताए नमः कहा जाता है और शिव परमात्माए नमः ...फ़र्क हुआ ना। परमात्मा एक है, वह ऊंच ते ऊंच है। उनकी महिमा भी ऊंच है। इस समय ऊंचे ते ऊंचा कर्तव्य करते हैं। उनका धाम भी ऊंचे ते ऊंचा है। नाम भी ऊंच है और किसको परमात्मा नहीं कहते। परमात्मा के लिए ही जायन है–हे पतित-पावन, आते भी हैं पतित a दुनिया और पतित शरीर में। पतित शरीर का नाम है प्रजापिता ब्रह्मा। इसमें प्रवेश b कर कहते हैं मैं बहुत जन्मों के अन्त वाले साधारण मनुष्य तन में प्रवेश करता हूँ। सूक्ष्मवतन वासी सम्पूर्ण ब्रह्मा में नहीं आते हैं। खुद कहते हैं इनके बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में आता हूँ। बहुत जन्म लेते ही हैं राधे-कृष्ण। उनके बहुत जन्मों के अन्त का जन्म साधारण है। ऐसे तो कहते नहीं हैं कि मैं पावन शरीर में प्रवेश करता हूँ। भगवानुवाच मैं साधारण तन में आता हूँ। अब भगवान जरूर आकरके इस साधारण तन द्वारा आत्माओं को बैठ समझाते हैं कि मैं पर-मपिता परमात्मा हूँ। मैं कृष्ण की आत्मा नहीं हूँ, न ब्रह्मा, विष्ण, शंकर की आत्मा हूँ। मैं परमपिता परमात्मा हूँ, जिसको शिव परमात्माए नमः कहा जाता है। मैं इसमें आया हूँ। मैं सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा में प्रवेश नहीं करता हूँ। मुझे तो यहां पतितों को पावन बनाना है। मेरे द्वारा ही वह सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा पावन बना है, इसलिए उनको सूक्ष्म में दिखाया है। कितना अच्छी रीति समझाते हैं। परन्तु मनुष्य सुनी अनसुनी कर उल्टी बातों पर चलते रहते हैं। आसुरी बुद्धि से सुनते c हैं। ईश्वरीय बुद्धि से सुनें तो संशय सब मिट जायें। त्रिमूर्ति का चित्र दिखाने दिगर समझाना मुश्किल है। उन्होंने त्रिमूर्ति ब्रह्मा नाम रख दिया है क्योंकि शिवबाबा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की रचना रचते हैं। तुम बच्चे अभी सम्मुख बैठे हो। सब पतित से पावन बन रहे हैं। जितना जो बनेगा वह सर्विस से दिखाई

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

पड़ेगा। यह अच्छा पुरुषार्थी है, इनमें अजुन अवगुण हैं। देवताओं में दैवीगुण थे। हर एक अपने आसुरी गुण और उन्हों के दैवीगुण वर्णन करते हैं। अभी आसुरी अवगुणों को छोड़ना है। नहीं तो ऊंच पद नहीं पा सकेंगे।

बाप समझाते हैं — बच्चे दैवीगुण धारण करो। खान-पान, चलन में फ़ज़ीलत चाहिए। पतित मनुष्यों को बदफज़ीलत कहेंगे। देवतायें फ़ज़ीलत (मैनर्स) वाले हैं, तब तो उन्हों का गायन है। हर एक को पुरुषार्थ करना है — जो करेगा, सो पायेगा। अब भगवान तुमको सहज राजयोग और ज्ञान सिखला रहे हैं। ज्ञान सागर एक बाप है, जो तुम्हें ज्ञान देकर सद्गति में ले जाते हैं। उन्हें ही सुखदेव भी कहा जाता है। तो यहां की सब बातें न्यारी है। जो ब्राह्मण बनने वाले होंगे उन्हों की ही बुद्धि में यह ज्ञान बैठेगा। बहुत करके पुछते हैं — दादा को ब्रह्मा क्यों बनाया है? बोलो, इन बातों को बैठकर समझो। हम तुमको इनके 84 जन्मों की कहानी सुनायें। सब ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारियाँ पावन बन देवता बन जायेंगे। पावन बनने बिगर वर्सा मिल नहीं सकता। भगवान ऊंच ते ऊंच निराकार शिवबाबा है।
d वर्सा देने के लिए जरूर ब्रह्मा तन में आयेगा। यह प्रजापिता ब्रह्मा है, सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा को प्रजापिता नहीं कहेंगे। वहाँ थोड़ेही प्रजा रचेंगे। हम ब्रह्माकुमार कुमारियाँ साकार में है तो प्रजापिता ब्रह्मा भी साकार में है। यह राज़ आकर समझो। हम इस दादा को भगवान नहीं कहते। यह प्रजापिता है, इनके तन में शिवबाबा आते हैं, पावन बनाने। यहां कोई पावन है नहीं। त्रिमूर्ति शिव के बदले त्रिमूर्ति ब्रह्मा कह दिया है। परन्तु त्रिमूर्ति ब्रह्मा का कोई अर्थ नहीं है। ब्रह्मा को मनुष्यों का रचयिता भी कहते हैं इसलिए प्रजापिता कहा जाता है। इसमें वह निराकार प्रवेश कर वर्सा देते हैं। सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा पावन है। वह पतित से पावन बनते हैं। हम ब्राह्मण भी पतित से पावन देवता बनते हैं। शिव परमात्माए नमः कहा जाता है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को देवता कहा जाता है। भगवान ही भक्तों का रक्षक है। वही सबको सद्गति देंगे। पतित-पावन हैं तो जरूर आकर पतितों को पावन बनायेंगे। पहले-पहले पावन हैं लक्ष्मी-नारायण। वे जरूर पुनर्जन्म लेते होंगे। 84 जन्म पूरे होने से फिर साधारण मनुष्य बन जाते हैं। उनमें फिर बाप प्रवेश
e करते हैं। तो यह व्यक्त ब्रह्मा, वह अव्यक्त ब्रह्मा। सूक्ष्मवतन में सृष्टि नहीं रची जाती है। अक्सर करके लोग इस बात पर मूँझते हैं तो तुमको समझाना है, बाप कहते हैं मैं बहुत जन्मों अर्थात् 84 जन्मों के अन्त के जन्म में प्रवेश करता हूँ। भारत में पहले देवी-देवता आये, वह फिर पिछाड़ी में हो जायेंगे। फिर पहले वहीं जाकर देवी-देवता बनेंगे। विराट रूप का चित्र भी जरूर होना चाहिए। बच्चों ने अर्थ सहित बनाया है। ब्राह्मण चोटी, देवता सिर, क्षत्रिय भुजायें, वैश्य पेट, शूद्र पैर। शूद्र के बाद फिर ब्राह्मण। वर्णों का भी चक्र हुआ ना। यह भी समझना और समझाना है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बाबा ने बहुत बार समझाया है कि अखबार में पड़ता है फलाना स्वर्गवासी हुआ, तो उनको चिट्ठी लिखनी चाहिए कि स्वर्गवासी हुआ तो जरूर नर्क में था। और अब है ही नर्क तो जरूर पुनर्जन्म नर्क में लेंगे। अगर स्वर्ग में गया फिर तुम उनको बुलाकर नर्क का भोजन क्यों खिलाते हो? तुम रोते क्यों हो? परन्तु इतनी बुद्धि नहीं है जो समझें कि स्वर्ग की स्थापना तो बाप ही आकर करते हैं। राजयोग सिखलाते हैं। तुम ब्राह्मण संगम पर बाप से वर्सा ले रहे हो, बाकी सब हैं कलियुग में। संगम पर आत्मा परमात्मा मिल रहे हैं, इनको कुम्भ का मेला कहा जाता है। तुम ज्ञान गंगायें ज्ञान सागर से निकली हो। भक्ति में समझते हैं — गंगा में स्नान करने से पावन बन जायेंगे। पावन बनाना तो तुम्हारी मिशन का कर्तव्य है। यह है ईश्वरीय मिशन। तुम ही पतित मनुष्य को पावन देवता बनाते हो श्रीमत पर। श्रीकृष्ण पतित-पावन नहीं है। वह पूरे 84 जन्म लेते हैं। पहले हैं लक्ष्मी-नारायण फिर अन्त में ब्रह्मा सरस्वती। आदि देव, आदि देवी बनते हैं, अभी यह बातें किसने समझाई? शिव परमात्माए नमः गाते भी हैं — हे परमपिता परमात्मा आपकी गत मत सबसे न्यारी है। वह श्रीमत देते हैं गति के लिए। गति और सद्गति। दुर्गति वालों की सद्गति करने वाला। उनकी श्रीमत सब मनुष्यों से न्यारी है। बाकी भक्ति मार्ग है घोर रात्रि, आधाकल्प है ज्ञान दिन। शिवबाबा कहते हैं मैं अन्धियारी रात को आता हूँ, रात को दिन बनाने। यह ज्ञान एक ही ज्ञान सागर शिवबाबा के पास है। ऋषि मुनि आदि सब कहते आये हैं कि परमात्मा बेअन्त है। बाप को नहीं जानते तो गोया नास्तिक ठहरे। आधाकल्प है नास्तिक, आधाकल्प है आस्तिक। तुम अब बाप को, बाप की रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो और कोई नहीं जानते। इसलिए कहा जाता है - निधन के। अनेक धर्म अनेक मतें हो गई हैं। अब बाप कहते हैं इस पुरानी दुनिया का सन्यास करना है। याद करना है शान्तिधाम और सुखधाम को। जितना याद करेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। गृहस्थ व्यवहार में भल रहो सिर्फ पवित्र बनो। धन्धे बिगर गृहस्थ कैसे चलेगा। सिर्फ पवित्र बनना है और बाप को याद करना है। बाप कहते हैं मैं सोनार भी हूँ। तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों ही पतित हैं। इसलिए तुम्हारी आत्मा जब पावन बनें तब फिर शरीर भी पावन मिले। सच्चे सोने का जेवर भी ऐसा बनेगा ना। अब तो आत्मा और शरीर दोनों ही आइरन एजड हैं। फिर पावन बनाने की युक्ति बाप बताते हैं। इसलिए कहते हैं तुम्हारी गत मत, श्रीमत सबसे न्यारी है। अभी तुम जानते हो यह सद्गति का रास्ता कोई बतला नहीं सकते हैं। गायन होता है तो जरूर कुछ करके गये हैं। अभी कलियुग है फिर सतयुग होना है। संगम पर तुम बैठे हो। तुम ब्रह्मा वंशी ब्राह्मण हो। कमल फूल सम पवित्र रहते हो। तुम्हारी माया के साथ युद्ध है। माया से ही कई फेल हो जाते हैं। काम का घूँसा जोर से लगता है। बाबा कहते हैं

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

खबरदार रहो। अगर गिरा तो फिर किसी को कह नहीं सकेंगे कि काम महाशत्रु है। बाप कहते हैं फिर भी पुरुषार्थ करो, एक बार हराया, दूसरी बार हराया फिर अगर तीसरी बार हराया तो खत्म। पद भ्रष्ट हो जायेगा। प्रतिज्ञा की है तो उस पर पूरा रहना है। प्रतिज्ञा कर फिर पतित नहीं बनना चाहिए। परन्तु सब तो प्रतिज्ञा पर कायम नहीं रहते हैं। गिरते भी रहते हैं। कोई फिर बाप को छोड़ भी देते हैं। बहुत भागने वाले भी हैं। अन्त में तुमको पूरा साक्षात्कार होगा कि कौन क्या बनेंगे! पुरुषार्थ पूरा करना चाहिए। जो दुःख देते हैं वह दुःखी होकर मरते हैं। बाप तो सबको सुख देने वाला है। तुम्हारा भी काम है सबको सुख देना। कर्मणा में भी किसको दुःख दिया तो दुःखी होकर मरेंगे। पद भी भ्रष्ट हो जायेगा। बेहद के बाप के साथ पूरा फरमानबरदार, वफ़ादार होकर रहना है । अच्छा-

मीठे-मीठे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- बाप के साथ वफ़ादार, फरमानबरदार होकर रहना है। कभी किसी को दुःख नहीं देना है।

२॰ बाप से पूरा वर्सा लेने के लिए पवित्र बनने का पुरुषार्थ करना है। काम की चोट कभी नहीं खानी है। इससे बहुत सावधान रहना है।

वरदान:- सदा खुशी की खुराक खाने वाले और खुशी बांटने वाले, खुशनसीब बेफिक्र भव

ब्राह्मण जीवन की खुराक खुशी है। जो सदा खुशी की खुराक खाने वाले और खुशी बांटने वाले हैं वही खुशनसीब हैं। उनके दिल से यही निकलता कि मेरे जैसा खुशनसीब और कोई नहीं। भले सागर की लहरें भी डुबोने आ जाएं तो भी फिक्र नहीं क्योंकि जो योगयुक्त हैं वह सदा ही सेफ हैं। इसलिए सारे कल्प में इस समय ही आप बेफिक्र जीवन का अनुभव करते हो। सतयुग में भी बेफिक्र होंगे लेकिन ज्ञान नहीं होगा।

स्लोगन:-

सहज पुरुषार्थी बनना है तो सर्व की दुआओं से स्वयं को भरपूर करो।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

प्रातः क्लास 18-9-68 ओमशान्ति मुरलीधर शिव बाबा याद हप्पी

a ओमशान्ति। बच्चे बैठे हुये हैं। इसको कहा जाता है याद की यात्रा। बाप कहते हैं योग अक्षर काम में लाओ नहीं। बाप को याद करो। यह है आत्माओं का बाप, पतित पावन परमपिता। उस पतित पावन बाप को ही याद करना है। बाप कहते हैं देह के सभी धर्म छोड़ एक बाप को याद करो। कहते हैं ना आप मुये तो मर गई दुनिया। देह सहित देह के जो भी सम्बन्ध हैं, जो भी देखने में आते हैं इनको याद न करो। एक बाप को ही याद करो तो तुम्हारे पाप जल जायेंगे। तुम जन्म-जन्मान्तर के पापात्मायें हो ना। यह है ही पापात्माओं की दुनिया। सतयुग है पुण्यात्माओं की दुनिया। अभी पाप सभी कट कर सब के जमा हो। बाप की याद से ही जमा होगा। आत्मा में मन बुद्धि है ना तो आत्मा को बुद्धि से याद करना है। बाप कहते हैं तुम्हें जो भी सिर सम्बन्धी आदि हैं, उन सब को भूलो। वह सब एक दो को दुःख देने वाले हैं। एक तो विकारी, कांटा बनते हैं जो काम कटारी चलाते हैं। दूसरा फिर पाप क्या करते हैं, बाप को कुत्ते बिल्ले ठिक्कर भित्तर में कह देते। जो बाप सर्व को सदगति दाता है, बच्चों को बेहद का सुख देते हैं अर्थात स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। यह पाठशाला है ना। तुम आते ही हो पढ़ने। यह है तुम्हारी एमआबजेक्ट। और कोई ऐसे कह न सके। तुम जानते हो अभी हमको पवित्र बन पवित्र दुनिया का मालिक बनना है। हम ही विश्व के मालिक थे। पूरे 5000 वर्ष हुये। देवी-देवतायें विश्व के मालिक थे ना। कितना ऊंच पद है। जरूर यह बाप ही बनावेंगे। बाप को ही परमात्मा भी कहते हैं। उनका असली नाम है शिव। फिर बहुत नाम रख दिये हैं जैसे बम्बई में बबुल नाथ कहते हैं। अर्थात
b कांटों के जंगल को फूलों का बगीचा बनाने वाला। नहीं तो असली नाम उनका है ही शिव। इनमें प्रवेश
c करते हैं तब भी नाम शिव ही है। तुमको इनको याद नहीं करना है। यह तो देहधारी है। तुमको याद करना है विदेही को। तुम्हारी आत्मा जो पतित बनी है उनको पावन बनाना है। कहते भी हैं महानआत्मा, पापआत्मा। महान परमात्मा नहीं कहते हैं। अपने को परमात्मा वा ईश्वर कोई कह न सके। कहते ही हैं महात्मा अर्थात पवित्र आत्मा। सन्यासी सन्यास करते हैं इसलिए पवित्र आत्मा हैं। बाप ने समझाया है वह भी पुनर्जन्म सब लेते हैं। देहधारियों को पुनर्जन्म जरूर लेना ही है। विष से जन्म ले फिर जब बड़े वैरागी बन जाते हैं तो सन्यास कर लेते हैं। देवतायें तो ऐसे नहीं करते हैं। वह तो स्वर्ग पवित्र हैं। उनको तो गृहस्थ घर में जन्म लेना पड़े। उनको
d कहा जाता है हद के सन्यासी। महान आत्मा। न कि महान परमात्मा। बाप ने समझाया है जो अपने को परमात्मा कहलाते अपने को पूजा कराते हैं वह हिरण्यकशिपु जैसे दैत्य हैं। यह है आसुरी सम्प्रदाय। अभी तुमको आसुरी से दैवी सम्प्रदाय बनाते हैं। दैवीगुण धारण करने से ही दैवी सम्प्रदाय बनेंगे। आसुरी गुणों वाला है आसुरी सम्प्रदाय। दैवी सम्प्रदाय कहते हैं सतयुग में। आसुरी सम्प्रदाय कहते हैं कलियुग में। अभी है संगम युग। अभी तुमको बाप मिला है, कहते हैं अब फिर तुमको दैवी सम्प्रदाय बनना है जरूर। तुम यहां आये ही हो दैवी सम्प्रदाय बनने लिये। दैवी सम्प्रदाय में अथाह सुख है। वह है सुख की दुनिया, कलियुग है दुःख की दुनिया। काला नम्बर दुःख है एक दो को काम कटारी चलाना। काम कटारी से कोस कलना। इस आसुरी दुनिया को कहा ही जाता है कोस-घर। हिंसा करते हैं ना। देवतायें तो हैं अहिंसक। हिंसक बनते हैं तो बाप को भूल जाते हैं। बाप कहते हैं मीठे2 रूहानी बच्चों बाप को याद करो। तुम्हारे जो भी गुनाह हैं वह सभी देहधारी हैं। अभी तुम आत्माओं को बाप परमात्मा को याद करना है। वह बाप है परम सुख देने वाला, दुःख हर्ता सुखकर्ता। सुख तुम फिर जब तुम पुण्यात्मा बनेंगे। 84 जन्मों के बाद ही तुम पापात्मा बन जाते हो। अभी तुम जमा करते हो बाप को याद करने की योगबल से। इस याद की यात्रा से ही तुम विश्व के मालिक बनते हो। तुम विश्व के मालिक तो थे ही ना। फिर वह कहां गये। यह भी बाप ही बताते हैं तुमने 84 जन्म लिये हैं सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी, वैश्यवंशी, शूद्रवंशी। कहते भी हैं भारत का फलां भगवान देते हैं। भगवान कोई देहधारी को नहीं कहा जाता। भगवान तो है ही निराकार शिव। उनकी शिवजयन्ति शिवरात्रि भी मनाते हैं तो जरूर आते हैं ना। परन्तु कहते हैं

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जन्म नहीं लेता हूं। मुझे शरीर का लोन लेना पड़ता है। मुझे अपना शरीर नहीं है। अगर होता तो उनका होता। ब्रह्मा नाम तो इनका अपना है ना। इसने सन्यास किया है तब इनका नाम ब्रह्मा रखा है। तुम हो ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण कुमारियां। नहीं तो ब्रह्मा कहां से आया। ब्रह्मा वत्सः वत्स? क्योंकि ब्रह्मा भी क्रियेशन है ना। क्रियेटर तो एक ही है। ब्रह्मा वत्स शिव। शिव बाबा अपने बच्चे में प्रवेश कर इन द्वारा तुमको ज्ञान देते ब्र०वि० शं० मी इनके बच्चे हैं। निराकार बाप के सभी बच्चे निराकार आत्मायें। जो फिर यहां शरीर धारण कर आते हैं। बाप कहते हैं मैं आता हूं पतितों को पावन बनाने। मैं इस शरीर का लोन लेता हूं। शिवभगवान है ना। कृष्ण को भगवान नहीं कह सकते। भगवान तो एक ही है। कृष्ण की महिमा ही अलग है। उनको जाता है सर्वगुण सम्पन्न 16कला सम्पूर्ण मर्यादा पुरुषोत्तम अहिंसा परमोधर्म वाला पहला नम्बर का देवता। राधे कृष्ण के जो स्वयंवर बाद ल०ना० बनते हैं। परन्तु यह कोई भी नहीं जानते हैं। राधे कृष्ण का किसको पता नहीं है। वह फिर कहां चले गये। राधे कृष्ण ही स्वयंवर बाद फिर ल०ना० बनते हैं। दोनों अलग महाराजाओं के हैं। वहां अपवित्रता का नाम नहीं। क्योंकि 5 विकारों रूपी रावण ही नहीं। है ही राम-राज्य। रावण कहां से आता है रावण राज्य?

अभी बाप आत्माओं को कहते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कटजायेंगे। तुम सतोप्रधान थे, अब सतोप्रधान हो। घाटा पड़ा है। फिर जमा करना है। भगवान को भी व्यापारी कहा जाता है। कोई बिल्ला भी इसे व्यापार के। जादूगर भी उनको कहते हैं, कमाल करते हैं जो सारी दुनिया की सदगति कर देते हैं। सुख-जीवनमुक्ति देते हैं। जादू का खेल है ना। मनुष्य मनुष्य को दे न सके। तुम 63 जन्म भक्ति करते आये कोई ने सदगति को पाया है? कोई है जो सदगति दे? हां नहीं सकता। एक भी वापसी जा नहीं सकता। वैकुण्ठ का बाप ही आकर सभी को वापस ले जाते हैं। कलियुग में अनेक राजाएं हैं। सभी तो नुन थोड़े ही राज्य करते हैं। बाकी सभी आत्मायें मुक्तिधाम में चली जाती हैं। तुम जाते हो जीवन मुक्ति धाम। बाकी सभी मुक्ति में। यह चक्र फिरता रहता है। अभी तुम आत्माओं को ज्ञान हुआ है इस सृष्टि चक्र का रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त का। और कोई भी इस ज्ञान को नहीं जानते हैं। तुम ही इस ज्ञान से नर से नारा बनते हो। देवताओं की राजधानी स्थापन हो गई फिर है तुमको ज्ञान की दरकार नहीं रहती। आधा कल्प ज्ञान आधा कल्प है भक्ति। भक्तों को भगवान ने दिया है आधा कल्प का सुख का फिर रावण-राज्य में दुःख शुरु होता है। आस्ते2 सीढ़ी उतरते हैं। तुम सतयुग में हो तो भी एक दिन जो बीता सीढ़ी नीचे उतरना ही होता है। तुम 16कला सम्पूर्ण बनते हो। फिर त्रेता में दो कला कम हो जाती है। सीढ़ी उतरते ही रहते सेकण्ड व सेकण्ड टिक2 होतीजाती है। सेकण्ड, मिनट, घंटे, दिन, वर्ष बीतते2 इस जगह आकर पड़ते हो। वहां तो ऐसे ही घड़ियां बीतती जावेंगी। हम सीढ़ी चढ़ते हैं फटसेतेरे भाग्ये सर्व का भला। फिर सीढ़ी उतरते हैं जो बाप कहते हैं मैं सभी को सदगति करने वाला हूं। मनुष्य मनुष्य की गति-सदगति कर न सके। क्योंकि वह विष से पैदा होते हैं। पतित हैं। वहां तो पतित कोई होता ही नहीं। वास्तव में कृष्ण को ही सच्चा महात्मा व कहते हैं। यह महात्मा लोग फिर भी विष से जन्म लेते हैं पीछे सन्यास करते हैं। वह तो है देवता। देवतायें निर्विकारी हैं। उनमें कोई विकार नहीं होता। उनको ही कहा जाता है निर्विकारी दुनिया। इनको कहा जाता है विकारी दुनिया। नो प्युरिटी। चलन कितनी खराब है। देवताओं के चलन तो बड़ी अच्छे होते हैं। सभी उन्हें गाते करते हैं। कैरेक्टर्स उन्हीं की अच्छी है तब तो अपवित्र मनुष्य उन पवित्र देवताओं के आगे माथा टेकते। अभी तो भारत में सभी कैरेक्टर्स खराब हैं। लड़ना-झगड़ना क्या2 लगा पड़ा है। बड़ा हंगामा है। अभी तो 4% जगह भी नहीं। चाहते हैं मनुष्य कम हो। परन्तु यह तो बाप ही काम है। सतयुग में बहुत ही थोड़े मनुष्य होते हैं। इतने सभी शरीरों की डेड= होलिका हो जाती। बाकी सभी आत्मायें चली जाती हैं। आत्मायें तो नम्बरवार भोगते हैं। जो पूरा पुरुषार्थ कर विजय माला का दाना बनते हैं वह सजायें खाकर

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

माता एक की तो नहीं होती है ना। जिसने उन्हों को ऐसा बनाया है वह एक है। फिर है बैल प्रवृत्ति मार्ग है ना। तो जोड़ियों की माता है। सिंगल की माता नहीं होती। सन्यासियों की माता होती नहीं। यह है ही निवृत्ति मार्ग वाले। वह प्रवृत्ति मार्ग वालों को ज्ञान दे न सकें। पावन बनने लिये। उनका है ही हद का सन्यास। वह है ही हठयोग। यह है राजयोग। राजाई प्राप्त करने लिये तुमको बाप सिखलाते हैं। हर 5000 वर्ष बाद बाप आते हैं। आधा कल्प तुम राज्य करते हो। सुख में फिर रावण राज्य होता है तो तुम अल्ते2 दुःखी होते जाते हो। इनको कहा ही जाता है सुख दुःख का खेल। बाप आकर पाण्डवों को जीत दिलाते हैं। सभी दुःख से छूटे घर जाने की यात्रा कराते हैं। यह यात्रा तो मनुष्य जन्म-जन्मान्तर करते आये हैं। अभी तुम्हारी यात्रा है घर जाने की। बाप आकर सभी को मुक्ति जीवनमुक्ति का रस्ता बताते हैं। तुम जीवनमुक्ति में जाते हो बाकी सभी मुक्ति में चले जाते हैं। हाहाकार के बाद फिर जयजयकार होगी। खून की नदियां बहकर घी की नदियां बहती हैं अभी है ही कलियुग का अन्त। आफतें तो बहुत ही आनी हैं। तुम फिर उस समय यादकी यात्रा में रह नहीं सकेंगे। क्योंकि हंगामा बहुत हो जावेगा। इसलिए बाप कहते हैं अभी याद की यात्रा को बढ़ाते रहो तो पाप भस्म हो जावे। और फिर जमा भी करो। सतोप्रधान तो बनो। सतोप्रधान बनने की युक्ति पतितपावन परमपिता परमात्मा ही आकर बताते हैं। बाप कहते हैं मैं हर कल्प के पुरुषोत्तम संगम युग पर आता हूं। यह तो बहुत छोटा युग है। ब्राह्मणों का युग है। ब्राह्मणों की निशानी चोटी होती है। ब्राह्मण देवता... यह चक्र फिरता ही रहता है। ब्राह्मणों का बहुत छोटा गुरु होता है। 58-60 वर्ष में बाप आकर तुमको पढ़ाते हैं। तुम बच्चे भी हो, टीचर्स भी हो, स्टूडेन्ट भी हो। एक के हो। ऐसा कोई मनुष्य होता नहीं जो बाप भी हो शिक्षा देने वाला टीचर भी हो। सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान देता हो फिर साथ भी ले जाये। ऐसा कोई मनुष्य हो न सके। यह बातें अभी तुम समझते हो। सतयुग में भी पहले2 तो बहुत छोटा झाड़ होता है। बाकी सभी धर्मस्थापक ये जावेंगे। बाप को ही कहा जाता है सर्व की सद्गति दाता। बाप को बुलाते भी हैं कि हे पतितपावन आओ। और दूसरे तरफ फिर कहते हैं परमात्मा सर्वव्यापी है। ठीकर भित्तर में है। देहद के बाप को अपकार करते हैं ना। उनको सर्वव्यापी कहना, कल्प अवतार-मच्छअवतार कह देते। 84 लाख जन्म तो होवे। परन्तु उन में भी जाती2 में भिन्नर2 में कह देते। उनको तो कोई हिसाब ही न हो सके। यह तो पाप करते हैं ना। बाप जो विश्व का मालिक बनाते हैं उनमें ग्लानी करते हैं। उनको पत्थर भित्तर में कह देते। तब बाप कहते हैं यदा यदा... अन्त में ही धर्म की ग्लानी होती है। बाप को भित्तर ठीकर में डाल दिया है तो तुम भी बुद्धि पत्थर हो गई है। मुझे सभी गाली देते हैं। यह है रावण का संगदोष। सत का संग तारे, कुसंग बोरे। रावण राज्य गुह्यतम है तो रंगने तंग पड़ते हैं। बाप आकर तुम्हारी चढ़ती कला करते हैं। बाप आत्म अनुभवी को देवता बनाते हैं। तो सर्व का भला हो जाता है। अभी तो सभी यहां हैं। वापसी भी जो रहे हुये हैं वह आते रहते हैं। जब तक निराकारी दुनिया से सब आत्मायें आ जावेंगी, तब तक तुम इक्कइस में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार पास हो जावेंगे। इनको कहा ही जाता है स्थानी कालेज। स्थानी बाप स्थानी पर्दों को पधारने आते हैं। आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। रावण राज्य आया तो फिर शरीर छोड़ कोई अपवित्र राजा बनें। और पवित्र देवताओं के आगे आने लगे। आत्मा ही पतित अथवा पावन बनती है। आत्मा पतित है तो शरीर भी पतित मिलता है। सच्चा सोना में खाद पड़ते हैं तो खाद का जेवर हो जाता है। अभी तुम्हारे में खाद निकले कैसे। योगाग्नि जलाओ ना। उन में ही तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावेंगे। चांदी तांबा लोहा पड़ गई है यह है खाद। गोल्डेन एज में सारा गोल्ड आगया। वह खाद निकले कैसे। यह है योगाग्नि। ज्ञान चिता पर बैठते हो। आगे थे काम चिता पर। बाप ज्ञानचिता पर बिठाते हैं। सिवाय ज्ञान सागर बाप के और कोई ज्ञानचिता पर बिठा न सके। मनुष्य मात्र में [illegible] कितनी पुरानी बात हो कल्प हो जाती है। जो रावण राज्य रहा होता है ... भक्ति शुरू होती है [illegible]

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

आ न सके। वह आते ही हैं कलियुग में। अपने समय पर आकर धर्म स्थापन करेंगे। नम्बरवार अवतार आते हैं जो आकर अपना2 धर्म स्थापन करते हैं। पहला नम्बर अवतार है भगवान का। अब निराकार कैसे अवतार ले। बताते हैं मैंने इस चोले का आधार लिया है यह अपने जन्मों को नहीं जानते। शरीर तो इनका है ना। गाया भी जाता है आये देश पराये और सब अपने देश अपने शरीर में आते हैं। यहाँ धर्म स्थापक दूसरे के शरीर में आ सकते हैं। फिर उनका नाम होता है। पवित्र आत्मा आकर प्रवेश करेगी। जो पहली आत्मा है वह धर्म स्थापन नहीं करेगी। जो आत्मा प्रवेश करेगी वही स्थापना करेगी। सिक्ख आदि पहले वाली आत्मा सहन करती है। जैसे क्राइस्ट की आत्मा आई वह तो सतोप्रधान थी उनको कुछ सहन नहीं करना है। उनको तो पहले सतो में आना है। तो जो पहले आत्मा है वह सहन करती है। दुख तो आत्मा को होता है ना। जब शरीर के साथ है धर्म राज भी शरीर धारण कराकर सजा देंगे। आत्मा को फील होता है कि हमें सजा हो रहे हैं। इसलिए कहा जाता है पाप आत्मा-पुण्य आत्मा। पाप शरीर पुण्य शरीर नहीं कहा जाता है। सन्यासी तो कह देते हैं आत्मा निर्लेप है। शरीर पर पाप लगता है

अनेक प्रकार के गुरू लोग हैं। बाबा ने बहुत गुरूओं का अनुभव किया है। बाबा हर एक से पूछते रहते थे क्यों सन्यास किया? घरबार कैसे छोड़ा। बतलाते नहीं थे। तो मैं कहता था मैं कैसे समझूँ कि मैं भी कर सकूँगा वा नहीं। ऐसी2 बातें करते थे। अभी समझते हैं, कि इस अवस्था को पाना है। यह सारा जो भी मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ है उनकी जड़जड़ीभूत अवस्था है। अभी फिर से नया शुरू होना है। प्रलय तो होती नहीं। शास्त्रों में महाप्रलय दिखाई है वह तो है नहीं। कहते हैं श्रीकृष्ण सागर के पीपल के पत्ते पर आया। यह सब हैं गपोड़े। बाप कहते हैं मैं तो आता हूँ आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करने। हमेशा पहले स्थापना फिर विनाश पालना ऐसे कहना चाहिए। ऐसे नहीं कि पहले स्थापना, पालना पीछे विनाश कहो तो कोई सेन्सीबुल आदमी सुनेगा तो कहेगा यह तोते माफिक पढ़े हुए हैं। स्थापना पालना फिर विनाश कैसे होगा। इसलिए कायदेमुजीब करेक्ट अक्षर बोलने हैं। स्थापना विनाश पालना। अभी ऊँच ते ऊँच बाप की तुमको श्रीमत मिलती है देते हैं ब्रह्मा के तन द्वारा। यह बाबा का शरीर मुकर्रर है। सेन्सीबुल जो होंगे उनको कोई भी राय पूछनी होगी तो श्रीमत लेंगे। श्रीमत पर चलने से कभी धोखा नहीं खायेंगे। शिवबाबा की ही श्रीमत है। बाबा दूर थोड़ेही है। बाबा देखते हैं बच्चे रांग चलते हैं वा राइट चलते हैं। हर एक को सर्जन से राय मिल सकती है। यह है सबसे बड़ा सर्जन। कोई भी बात में तकलीफ हो तो बाबा बैठा है। श्रीमत पर चलते रहो। समझो कोई गरीब बच्चा है, धारणा अच्छी है, सर्विसएबुल है परन्तु गरीब है इसलिए आकर मिल नहीं सकता है। ऐसे को टिकेट भी मिल सकती है। बाप तो गरीब निवाज है ना। ऐसे तो बाप को बच्चे चाहिए जो आकर गरीब ते गरीब हो वह ऊँच ते ऊँच चढ़ जावे। आजकल सब गरीब हैं। 10-20लाख कुछ भी नहीं हैं। 10-20करोड़ हो तब साहूकार कहा जाए। बाबा ने समझाया है पतमपति यह धर्मा ले नहीं सकेंगे। वह अर्पण हो न सकें। न बाबा एलाउ करेंगे। गरीबों की पाई2 सफल होती है। ऐसी क्या पड़ी है जो साहूकारों का लें, यह भी पक्का सौदागर है। इसलिए साहूकार आते ही नहीं हैं। बाबा कहते हैं तुम अपनी राजाई सम्भालते रहो। अब तुम जानते हो बाबा आकर सभी वेद शास्त्रों का सार समझाते हैं। यह भी बाबा ने समझाया है विष्णु को ब्रह्मा बनने में 5हजार वर्ष लगते हैं। और ब्रह्मा से विष्णु निकलने में एक सेकेण्ड और कोई यह बातें समझ न सकें। बाबा कितना अच्छा हिसाब समझाते हैं। विष्णु की नाभी कमल से 84 जन्मों के बाद अभी ब्रह्मा निकला है। अभी ब्रह्मा सरस्वती तो फिर लक्ष्मी नारायण सेकेण्ड हुआ ना। ब्रह्मा से सेकेण्ड में श्री नारायण बन जाते हैं। तुम सेकेण्ड में ब्राह्मण से देवता बन जाते हो। सूर्यवंशी बनेंगे फिर चन्द्रवंशी बनेंगे। यह सारा चक्र बुद्धि में है। ब्रह्मा तो विष्णु, विष्णु तो ब्रह्मा यह टापिक बहुत अच्छी है। सारे चक्र का राज़ इसमें आ जाता है। विष्णु से ब्रह्मा कैसे बनते हैं ब्रह्मा से विष्णु कैसे बनते हैं तुम यह टापिक डालो तो बड़े2 विद्वान पण्डित भाग आयेंगे। सुनने लिए। यह चित्र भी ले जाना है। आज ब्रह्मा कल विष्णु, ब्राह्मण वर्ण से देवता वर्ण में आ गया। फिर ब्राह्मण वर्ण में आ गया। यह सब बातें सेन्सीबुल बच्चे अच्छी रीति धारण करेंगे और पाइंट लिखते करेक्ट करते रहेंगे। भाषण जब

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

"मीठे बच्चे-तुम्हें अभी नया जीवन मिला है, पुराना जीवन बदल गया, क्योंकि तुम अब ईश्वरीय सन्तान बने हो, तुम्हारी प्रीत एक बाप से है"

27

प्रश्न:-ब्राह्मण जो देवता बनने वाले हैं उनको मुख्य निशानी क्या है?

उत्तर:-वह ब्रह्मा के मुख वंशावली ब्राह्मण सब एकमत वाले होंगे। उनमें कभी मतभेद नहीं हो सकता। आपस में फूट नहीं पड़ सकती। लौकिक में जो ब्राह्मण कहलाते उनमें तो अनेक मतें होती हैं। कोई अपने को पुष्कर कहलाते, कोई सारस्वत, तुम ब्राह्मण एक बाप का मत से देवता बनते हो। देवताओं में कभी भी फूट नहीं पड़ती।

गीत:- जिस दिन से मिले हम तुम ओम्शान्ति। जब जीव आत्मायें और परमात्मा, अथवा बच्चे और बाप मिलते हैं तो नई प्रीत हो जाती है। क्योंकि और संग प्रीत टूट जाती है। जैसे कन्या को पहले तो पियरघर से प्रीत होती है सगाई होने से नई प्रीत जुटती है, सारा ससुरघर नया बनता है। नई दुनिया को नई प्रीत जुटती है तो सारे नये परिवार से प्रीत जुट जाती है। अब गायन भी है आत्मायें परमात्मा अलग रहे बहुकाल। यह सुन्दर मेला है, नया यह घर नया, सब बन्धु नये। तुम जानते हो हम आत्मायें ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियां अब रूद्र कुमार कुमारियां नहीं हैं। ब्रह्मा और ब्र०कु० का आपस में कितना लव है, क्योंकि यह हैं गये ईश्वरीय सन्तान। ईश्वर तो है निराकार। उनके साथ लव तो साकार में चाहिए ना। निराकार को कैसे लव कर सकेंगे। आत्मा शरीर से अलग हो जाती है तो लव नहीं होता। जीव आत्मा और परमात्मा जब साकार में मिले तो लव हो। निराकार रूप में भल गाते रहते हैं तुम मात पिता। तुम आओ तो तुम्हारी कृपा से हमको सुख घनेरे मिले। पतित पावन आओ। गाते हैं ना बरोबर भारत पावन था तो अथाह सुख था। उसका ही नाम था सुखधाम। यह है दुखधाम और जहां आत्मायें रहती हैं वह है शान्तिधाम। वहां तो आत्मायें पवित्र हो रहती हैं। अपवित्र कोई आत्मा रह नहीं सकती। तुमको अब बाप मिला है तो नया जीवन मिला है पुराना जीवन बदला, अब नया जीवन बना देते हैं। अपने बाप से बेहद सुख का वर्सा ले रहे हैं। सुख घनेरे भारत में हैं तो ही है स्वर्ग में। जो शान्ति घनेरी वह तो है निर्वाणधाम में जिसको तुम्हारा और हमारा घर है। तो समझना चाहिए हम आत्मायें शान्तिधाम की रहने वाली हैं। बाप भी वहां का रहने वाला है। वह हमारे मापिक जन्म मरण के चक्कर में नहीं आते हैं। है वह भी आत्मा, परन्तु परम आत्मा है। परमधाम में रहने वाले हैं। हम आत्मायें भी परमधाम में रहने वाले परमपिता परमात्मा के बच्चे थे, घर तो हम सबका वही है। घर भी सबको याद है, कोई मरता है तो कहते है फलाना पारनिर्वाण गया। वह है वाणी से परे स्थान, सूर्य चांद की जहां गम नहीं। हम वहां के रहवासी हैं। अब बाबा को याद करते रहते हैं। जब बाप आते हैं तो नई बातें फिर से सुनाते हैं। मनुष्य इस ड्रामा को जान जायें तो बोलें हम जो कदम उठाते हैं, सेकेण्ड वार्ड सेकेण्ड नया है। बेहद का ड्रामा फिरता रहता है। तो बाप आकर नई2 बातें सुनाते हैं। तुम बच्चों को त्रिकालदर्शी बना रहा हूं। त्रिनेत्री बना रहा हूं। बाप ब्रह्माण्ड का मालिक है तो त्रिलोकी का भी मालिक है ना। क्योंकि तीनों ही लोकों को नालेज देते हैं। तुम त्रिलोकी के मालिक नहीं बनते हो। तुम विश्व के मालिक महाराजा महारानी बनते हो। त्रिलोकी अर्थात् तीनों लोकों को जाना जाता है। मालिक तो एक लोक स्वर्ग का बनते हैं। तो यह हैं नई बातें। आत्मा के बच्चे बनते हो हैं वर्सा लेने के लिए। कोई को भी समझाना बड़ा सहज है। पूछो भगवान से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है? भगवान तो है स्वर्ग का रचयिता, मातपिता है। भगवान को कब नर्क अथवा दुखधाम का रचयिता नहीं कहेंगे। परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा स्वर्ग की स्थापना करते हैं। जरूर नई दुनिया स्वर्ग हो रचेंगे। बाप ब्रह्मा द्वारा पहले ब्राह्मण धर्म रचते हैं, उनको राजयोग सिखलाते हैं। जो फिर ब्राह्मण से देवता बनते हैं। तो ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण धर्म फिर विष्णु द्वारा देवी धर्म होगा। इस समय तुम ब्राह्मण बनकर फिर वैष्णवधर्म में जायेंगे। अभी ईश्वरीयधर्म में अथवा ब्राह्मणधर्म में आये हो। फिर भविष्य देवीधर्म में जायेंगे। ब्राह्मण धर्म भी चाहिए ना। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा मुख वंशावली ब्राह्मण रचे। वह ठहरे बच्चे। सन्यासी भी मुख से रचते हैं परन्तु वह बच्चे नहीं रचते। [illegible]

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

1-9-99 प्रात: मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम्हारा काम है अपने आपसे बातें कर पावन बनना, दूसरी आत्माओं के चिंतन में अपना टाइम वेस्ट मत करो"

प्रश्न:- कौन-सी बात बुद्धि में आ गई तो पुरानी सब आदतें छूट जायेंगी?

उत्तर:- हम बेहद बाप की सन्तान हैं तो विश्व के मालिक ठहरे, हमें देवता बनना है—यह बात बुद्धि में आ गई तो पुरानी सब आदतें छूट जायेंगी। तुम कहो, न कहो, आपेही छोड़ देंगे। उल्टा-सुल्टा खान-पान, शराब आदि खुद ही छोड़ देंगे। (कहेंगे वाह हमको तो यह लक्ष्मी-नारायण बनना है। 21 जन्मों का राज्य-भाग्य मिलता है तो क्यों नहीं पवित्र रहेंगे।)

ओम् शान्ति। बाप घड़ी-घड़ी बच्चों का अटेन्शन खिचवाते हैं कि बाप की याद में बैठे हो? बुद्धि कोई और तरफ तो नहीं भागती है? (बाप को बुलाते ही इसलिए हैं कि बाबा आकर हमें पावन बनाओ। पावन तो जरूर बनना है और नॉलेज तो तुम किसको भी समझा सकते हो। यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, किसको भी तुम समझाओ तो झट समझ जायेंगे। भल पवित्र नहीं होगा तो भी नॉलेज तो पढ़ ही लेगा। कोई बड़ी बात नहीं है। 84 का चक्र और हरेक युग की इतनी आयु है, इतने जन्म होते हैं। कितना सहज है। इनका कनेक्शन याद से नहीं है, यह तो है पढाई। बाप तो यथार्थ बात समझाते हैं। बाकी है सतोप्रधान बनने की बात। वह होंगे याद से। अगर याद नहीं करेंगे तो बहुत छोटा पद पा लेंगे। इतना ऊंच पद पा नहीं सकेंगे इसलिए कहा जाता है अटेन्शन। (बुद्धि का योग बाप के साथ हो। इनको ही प्राचीन योग कहा जाता है। टीचर के साथ योग तो हरेक का होगा ही। मूल बात है याद की। याद की यात्रा से ही सतोप्रधान बनना है और सतोप्रधान बन वापस घर जाना है।) बाकी पढ़ाई तो बिल्कुल सहज है। कोई बच्चा भी समझ सकते हैं। (माया की युद्ध इस याद में ही चलती है। तुम बाप को याद करते हो और माया फिर अपनी तरफ खींचकर भुला देती है। ऐसे नहीं कहेंगे कि मेरे में तो शिवबाबा बैठा है, मैं शिव हूँ। नहीं, मैं आत्मा हूँ, शिवबाबा को याद करना है। ऐसे नहीं मेरे अन्दर शिव की प्रवेशता है। ऐसे हो नहीं सकता। बाप कहते हैं मैं कोई में जाता नहीं हूँ। हम इस रथ पर सवार होकर ही तुम बच्चों को समझाते हैं। हाँ, कोई डल बुद्धि बच्चे हैं और कोई अच्छा जिज्ञासु आ जाता है तो उनकी सर्विस अर्थ मैं प्रवेश कर दृष्टि दे सकता हूँ। सदैव नहीं बैठ सकता हूँ। वह रूप धारण कर किसका भी कल्याण कर सकते हैं। बाकी ऐसे कोई नहीं कह सकते कि मेरे में शिवबाबा की प्रवेशता है, मुझे शिवबाबा यह कहते हैं। नहीं, शिवबाबा तो बच्चों को ही समझाते हैं।) मूल बात है ही पावन बनने की, जो फिर पावन दुनिया में जा सके। 84 का चक्र तो बहुत सहज समझाते हैं। चित्र सामने लगे हुए हैं। बाप बिगर इतना ज्ञान तो कोई दे न सके। आत्मा को ही नॉलेज मिलती है। उनको ही ज्ञान का तीसरा नेत्र कहा जाता है। आत्मा को ही सुख-दु:ख होता है, उनको यह शरीर है ना। आत्मा ही देवता बनती है। कोई बैरिस्टर, कोई व्यापारी आत्मा ही बनती है। तो अब आत्माओं से बाप बैठ बात करते हैं, अपनी पहचान देते हैं। तुम जब देवता थे, तो थे मनुष्य, परन्तु पवित्र आत्मायें थी। अभी तुम पवित्र नहीं हो इसलिए तुम्हें देवता नहीं कह सकते। अब देवता बनने

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

के लिए पवित्र जरूर बनना है। उसके लिए बाबा को याद करना है। अक्सर करके यही कहते हैं—बाबा, मेरे से यह भूल हुई जो हम देह-अभिमान में आ गया। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं पावन जरूर बनना है। कोई विकर्म न करो। तुमको सर्वगुण सम्पन्न यहाँ बनना है। पावन बनने से मुक्तिधाम में चले जायेंगे। और कोई प्रश्न पूछने की बात ही नहीं है। तुम अपने से बात करो, दूसरी आत्माओं का चिंतन नहीं करो। कहते हैं लड़ाई में दो करोड़ मरे। इतनी आत्मायें कहाँ गई? अरे, वह कहाँ भी गये, उसमें तुम्हारा क्या जाता है। तुम क्यों टाइम वेस्ट करते हो? और कोई भी बात पूछने की दरकार नहीं। तुम्हारा काम है पावन बनकर पावन दुनिया का मालिक बनना। और बातों में जाने से मूँझ पड़ेंगे। कोई को पूरा उत्तर नहीं मिलता है तो मूँझ पड़ते हैं।

बाप कहते हैं मनमनाभव। देह सहित देह के सब सम्बन्ध छोड़ो, मेरे पास ही तुमको आना है। मनुष्य मरते हैं तो जब शमशान में ले जाते हैं उस समय मुंह इस तरफ़ और पांव शमशान तरफ रखते हैं फिर जब शमशान के पास पहुँचते हैं तो पांव इस तरफ और मुँह शमशान की तरफ कर देते हैं। तुम्हारा भी घर ऊपर में है ना। ऊपर में कोई पतित जा नहीं सकते। पावन बनने के लिए बुद्धि का योग बाप के साथ लगाना है। बाप के पास मुक्तिधाम में जाना है। पतित हैं इसलिए ही बुलाते हैं कि हम पतितों को आकर पावन बनाओ, लिबरेट
b करो। तो बाप कहते हैं अब पवित्र बनो। बाप जिस भाषा में समझाते हैं, उसमें ही कल्प-कल्प समझायेंगे। जो भाषा इनकी होगी, उसमें ही समझायेंगे ना। आजकल हिन्दी बहुत चलती है, ऐसे नहीं कि भाषा बदल सकती है। नहीं, संस्कृत भाषा आदि कोई देवताओं की तो है नहीं। हिन्दू धर्म की संस्कृत नहीं है। हिन्दी ही होनी चाहिए। फिर संस्कृत क्यों उठाते हैं? तो बाप समझाते हैं यहाँ जब बैठते हो तो बाप की याद में ही बैठना है, और कोई बातों में तुम जाओ ही नहीं। इतने मच्छर निकलते हैं, कहाँ जाते हैं? अर्थक्वेक में ढेर के ढेर फट से मरते हैं, आत्मायें कहाँ जाती हैं? इसमें तुम्हारा क्या जाता है। तुमको बाप ने श्रीमत दी है कि अपनी उन्नति के लिए पुरूषार्थ करो। औरों के चिंतन में मत जाओ। ऐसे तो अनेक बातों का चिंतन हो जायेगा। बस, तुम मुझे याद करो, जिसके लिए बुलाया है उस युक्ति में चलो। तुम्हें बाप से वर्सा लेना है, और बातों में नहीं जाना है। इसलिए बाबा घड़ी-घड़ी कहते हैं अटेन्शन! कहाँ बुद्धि तो नहीं जाती। भगवान की श्रीमत तो माननी चाहिए ना। और कोई बात में फायदा
c नहीं। मुख्य बात है पावन बनने की। यह पक्का याद रखो—हमारा बाबा, बाबा भी है, टीचर भी है, प्रीसेप्टर भी है। यह जरूर दिल में याद रखना है—बाप, बाप भी है, हमको पढ़ाते हैं, योग सिखलाते हैं। टीचर पढ़ाते हैं तो बुद्धि का योग टीचर में और पढ़ाई में भी जाता है। यही बाप भी कहते हैं तुम बाप के तो बन ही गये हो। बच्चे तो हो ही, तब तो यहाँ बैठे हो। टीचर से पढ़ रहे हो। कहाँ भी रहते बाप के तो हो ही फिर पढ़ाई में अटेन्शन देना है। शिवबाबा को याद करेंगे तो विकर्म विनाश होंगे और तुम सतोप्रधान बन जायेंगे। यह नालेज और कोई दे न सके। मनुष्य तो घोर अन्धियारे में हैं ना। ज्ञान में देखो—कितनी ताकत है। ताकत कहाँ से मिलती है? बाप से ताकत मिलती है जिससे तुम पावन बनते हो। फिर पढ़ाई भी सिम्पुल है। उस पढ़ाई में तो बहुत मास लगते हैं। यहाँ तो 7 रोज़ का कोर्स है। उससे तुम सब कुछ समझ

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जायेंगे फिर उसमें है बुद्धि पर मदार। कोई जास्ती टाइम लगाते हैं, कोई कम। कोई तो 2-3 दिन में ही अच्छी रीति समझ जाते है। मूल बात है बाप को याद करना, पवित्र बनना। वही मुश्किलात होती है। बाकी पढ़ाई तो मोस्ट सिम्पुल है। स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। एक रोज़ के कोर्स में भी सब कुछ समझ सकते हो। हम आत्मा है, बेहद के बाप की सन्तान हैं तो जरूर हम विश्व के मालिक ठहरे। यह बुद्धि में आता है ना। देवता बनना है तो दैवीगुण भी धारण करने हैं। जिसको बुद्धि में आ गया वह फट से सब आदतें छोड़ देंगे। तुम कहो, न कहो, आपेही छोड़ देंगे। उल्टा-सुल्टा खान-पान, शराब आदि खुद ही छोड़ देंगे। कहते हैं—वाह, हमको यह बनना है, 21 जन्मों के लिए राज्य मिलता है तो क्यों नहीं पवित्र रहेंगे। चटक जाना चाहिए। मुख्य बात है याद की यात्रा। बाकी 84 के चक्र की नालेज तो एक सेकेण्ड में मिल जाती है। देखने से ही समझ जाते हैं। नया झाड़ जरूर छोटा होगा। अभी तो कितना बड़ा झाड़ तमोप्रधान बन गया है। कल फिर नया छोटा बन जायेगा। तुम जानते हो—यह ज्ञान कभी कहाँ से भी मिल नहीं सकता। यह पढ़ाई है, पहली मुख्य शिक्षा भी मिलती है कि बाप को याद करो। बाप पढ़ाते हैं, यह निश्चय करो। भगवानुवाच—मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ। और कोई मनुष्य ऐसे कह न सके। टीचर पढ़ाते हैं तो जरूर टीचर को याद करेंगे ना। बेहद का बाप भी है, बाप हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। परन्तु आत्मा कैसे पवित्र बनेगी—यह कोई भी बता नहीं सकते हैं। भल अपने को भगवान कहें वा कुछ भी कहें परन्तु पावन बना नहीं सकते। आजकल भगवान तो बहुत हो गये हैं। मनुष्य मूँझ पड़े हैं। कहते हैं अनेक धर्म निकलते हैं, क्या पता कौन-सा राइट है। भल तुम्हारी प्रदर्शनी वा म्यूजियम आदि का उद्घाटन करते हैं परन्तु समझते कुछ भी नहीं। वास्तव में उद्घाटन तो हो ही गया है। पहले फाउन्डेशन पडता है, फिर जब मकान बनकर तैयार होता है तब उद्घाटन होता है। फाउन्डेशन लगाने के लिए भी बुलाया जाता है। तो यह भी बाप ने स्थापना कर दी है, बाकी नई दुनिया का उद्घाटन तो हो ही जाना है, उसमें किसके उद्घाटन करने की दरकार नहीं रहती। उद्घाटन तो स्वत: ही हो जायेगा। यहाँ पढ़कर फिर हम नई दुनिया में चले जायेंगे।

तुम समझते हो अभी हम स्थापना कर रहे हैं जिसके लिए ही मेहनत करनी होती है। विनाश होगा फिर यह दुनिया ही बदल जायेगी। फिर तुम नई दुनिया में राज्य करने आ
d जायेंगे। सतयुग की स्थापना बाप ने की है फिर तुम आयेंगे तो स्वर्ग की राजधानी मिल जायेगी। बाकी ओपनिंग सेरीमनी कौन करेगा? बाप तो स्वर्ग में आते नहीं। आगे चल देखना है स्वर्ग में क्या होता है। पिछाड़ी में क्या होता है। आगे चल समझेंगे। तुम बच्चे जानते हो पवित्रता बिगर विद् आनर तो हम स्वर्ग में जा नहीं सकते। इतना पद भी नहीं पा सकते हैं। इसलिए बाप कहते हैं खूब पुरूषार्थ करो। धन्धा आदि भी भल करो परन्तु जास्ती पैसा क्या करेंगे। खा तो सकेंगे नहीं। तुम्हारे पुत्र-पोत्रे आदि भी नहीं खायेंगे। सब मिट्टी में मिल जायेगा।
e इसलिए थोड़ा स्टॉक रखो युक्ति से। बाकी तो सब वहाँ ट्रांसफर कर दो। सब तो ट्रांसफर नहीं कर सकते हैं। गरीब जल्दी ट्रांसफर कर देते हैं। भक्ति मार्ग में भी ट्रांसफर करते है दूसरे जन्म के लिए। परन्तु वह है इनडायरेक्ट। यह है डायरेक्ट। पतित मनुष्यों की पतितों से ही लेन-देन

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

है। अभी तो बाप आये है, तुम्हारी तो पतितों से लेन-देन है नहीं। तुम हो ब्राह्मण, ब्राह्मणों को ही तुम्हें मदद करनी है। जो खुद सर्विस करते हैं, उनको तो मदद की दरकार नहीं। यहाँ गरीब साहूकार आदि सब आते हैं। बाकी करोड़पति तो मुश्किल आयेंगे। बाप कहते हैं मैं हूँ गरीब निवाज। भारत बहुत गरीब खण्ड है। बाप कहते हैं मैं आता भी भारत में हूँ, उसमें से भी यह आबू सबसे बड़ा तीर्थ है जहाँ बाप आकर सारे विश्व की सद्गति करते हैं। यह है नर्क। तुम जानते हो नर्क से फिर स्वर्ग कैसे होता है। अभी तुम्हारी बुद्धि में सारी नालेज है। बाप युक्ति ऐसी बताते हैं पावन बनने की, जो सबका कल्याण कर देते हैं। सतयुग में कोई अकल्याण की बात, रोना, पीटना आदि कुछ भी नहीं होता। अभी जो बाप की महिमा है—ज्ञान का सागर, सुख का सागर है। अभी तुम्हारी भी यह महिमा है, जो बाप की है। तुम भी आनन्द के सागर बनते हो, बहुतों को सुख देते हो फिर जब तुम्हारी आत्मा संस्कार ले नई दुनिया में जायेगी तो वहाँ फिर तुम्हारी महिमा बदल जायेगी। फिर तुमको कहेंगे सर्वगुण सम्पन्न.... अभी तुम हेल में बैठे हो, इनको कहा जाता है कांटों का जंगल। बाप को ही बागवान, खिवैया कहा जाता है। गाते भी हैं हमारी नईया पार करो क्योंकि दुःखी हैं तो आत्मा पुकारती है। महिमा भल गाते हैं परन्तु समझते कुछ भी नहीं। जो आया सो कह देते हैं। ऊंच ते ऊंच भगवान की निंदा करते रहते हैं। तुम कहेंगे हम तो आस्तिक हैं। सर्व का सद्गति दाता जो बाप है, उनको हम जान गये हैं। बाप ने खुद परिचय दिया है। तुम भक्ति नहीं करते हो तो कितना तंग करते हैं। वह है मैजारिटी, तुम्हारी है मैनारिटी। जब तुम्हारी मैजारिटी हो जायेगी, तब उन्हों को भी कशिश होगी। बुद्धि का ताला खुल जायेगा। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. अपनी उन्नति का ही चिंतन करना है। दूसरी किसी भी बात में नहीं जाना है। पढ़ाई और याद पर पूरा अटेन्शन देना है। बुद्धि भटकानी नहीं है।

२. अब बाप डायरेक्ट आये हैं इसलिए अपना सब-कुछ युक्ति से ट्रांसफर कर देना है। पतित आत्माओं से लेन-देन नहीं करना है। विद् ऑनर स्वर्ग में चलने के लिए पवित्र जरूर बनना है।

वरदान:- एक बाप को कम्पैनियन बनाने वा उसी कम्पनी में रहने वाले सम्पूर्ण पवित्र आत्मा भव

सम्पूर्ण पवित्र आत्मा वह है जिसके संकल्प और स्वप्न में भी ब्रह्मचर्य की धारणा हो, जो हर कदम में ब्रह्मा बाप के आचरण पर चलने वाला हो। पवित्रता का अर्थ है - सदा बाप को कम्पैनियन बनाना और बाप की कम्पनी में ही रहना। संगठन की कम्पनी, परिवार के स्नेह की मर्यादा अलग चीज है, लेकिन बाप के कारण ही यह संगठन के स्नेह की कम्पनी है, बाप नहीं होता तो परिवार कहाँ से आता। बाप बीज है, बीज को कभी नहीं भूलना।

स्लोगन:-

किसी के प्रभाव में प्रभावित होने वाले नहीं, ज्ञान का प्रभाव डालने वाले बनो।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

27-1-99 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - सदा याद रखो कि हम ब्राह्मण चोटी हैं, पुरूषोत्तम बन रहे हैं तो हर्षित रहेंगे, अपने आप से बातें करना सीखो तो अपार खुशी रहेगी।"

प्रश्नः- बाप की शरण में कौन आ सकते हैं? बाप शरण किसको देते है?
उत्तरः- बाप की शरण में वही आ सकते हैं जो पूरा-पूरा नष्टोमोहा हो। जिनका बुद्धियोग सब तरफ़ से टूटा हुआ हो। मित्र सम्बन्धियों आदि में बुद्धि की लागत न हो। पक्की सगाई एक बाप के साथ हो। बुद्धि में रहे मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई। ऐसे बच्चे ही सर्विस कर सकते हैं। बाप भी ऐसे बच्चों को ही शरण देते हैं।

ओम् शान्ति। यह है रूहानी बाप, टीचर, गुरू। यह तो बच्चे अच्छी रीति समझ गये दुनिया इन बातों को नहीं जानती। भल सन्यासी कहते हैं शिवोहम्। तो भी ऐसे नहीं कहेंगे कि हम बाप टीचर गुरू हैं। वह सिर्फ कहते हैं शिवोहम् तत् त्वम्। परमात्मा सर्वव्यापी है तो हरेक बाप टीचर गुरू हो जाये। ऐसे तो कोई समझते भी नहीं। मनुष्य अपने को भगवान, परमात्मा कहलायें यह तो बिल्कुल ही रांग है। बच्चों को जो बाप समझाते हैं वह तो बुद्धि में धारण होता है ना। उस पढ़ाई में कितनी सब्जेक्ट होती हैं, ऐसे नहीं सब सब्जेक्ट स्टूडेन्ट की बुद्धि में रहती हैं। यहाँ जो बाप पढ़ाते हैं वह एक सेकण्ड में बच्चों की बुद्धि में आ जाता है। तुम रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त का ज्ञान सुनाते हो। तुम ही त्रिकालदर्शी वा स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो। उस जिस्मानी पढ़ाई में सब्जेक्ट बिल्कुल अलग हैं। तुम सिद्ध कर समझाते हो, सर्व का सद्गति दाता वह एक ही बाप है। सभी आत्मायें परमात्मा को याद करती हैं। कहती हैं ओ गॉड फादर। तो ज़रूर बाप से वर्सा मिलता होगा। वह वर्सा खोने से दुःख में आ जाते हैं। यह सुख दुःख का खेल है। इस समय सभी पतित दुःखी हैं। पवित्र बनने से सुख ज़रूर मिलता है। सुख की दुनिया बाप स्थापन करते हैं। बच्चों को बुद्धि में यह रखना है कि हमको बाप समझाते हैं, नॉलेजफुल एक बाप ही है। सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान बाप ही देते हैं। और सभी धर्म जो स्थापन हुए हैं वह अपने समय पर आयेंगे। यह बातें और कोई की बुद्धि में नहीं हैं। तुम बच्चों के लिए बाप ने यह पढ़ाई बिल्कुल सहज रखी है। सिर्फ थोड़ा विस्तार से समझाते हैं। मुझ बाप को याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। योग की महिमा बहुत है। प्राचीन योग भारत का गाया हुआ है। परन्तु योग से फायदा क्या हुआ था, यह किसको पता नहीं है। वह है गीता का वही योग जो निराकार भगवान सिखलाते हैं। बाकी जो भी सिखलाते हैं वह मनुष्य हैं, देवताओं के पास तो योग की बात ही नहीं। यह हठयोग आदि सब मनुष्य सिखलाते हैं। देवतायें न सीखते हैं, न सिखलाते हैं। दैवी दुनिया में योग की बात नहीं। योग से सब पावन बन जाते हैं। वह ज़रूर यहाँ बनेंगे। बाप आते ही हैं संगम पर नई दुनिया बनाने। अभी तुम पुरानी दुनिया से नई दुनिया में बदली हो रहे हो। यह किसको समझाना भी वन्डर है। हम ब्राह्मण चोटी हैं, सतयुग और कलियुग के बीच

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

में हैं ब्राह्मण चोटी। इसको ही संगमयुग कहा जाता है, जिसमें तुम पुरूषोत्तम बन रहे हो। यह बच्चों की बुद्धि में रहे कि हम पुरूषोत्तम बनते हैं तो सदैव हर्षित रहेंगे। जितना सर्विस करेंगे उतना हर्षित रहेंगे। कमाई करनी और करानी है। जितना प्रदर्शनी में सर्विस करेंगे तो सुनने वालों को भी सुख मिलेगा। अपना और दूसरों का कल्याण होगा। छोटे सेन्टर पर भी मुख्य 5-6 चित्र ज़रूर चाहिए। उन पर समझाना सहज है। सारा दिन सर्विस ही सर्विस। मित्र सम्बन्धियों तरफ़ कोई भी लागत नहीं होनी चाहिए। जो इन आँखों से देख रहे हो उन सबका विनाश होना है। बाकी जो दिव्य दृष्टि से देखते हो उनकी स्थापना हो रही है। ऐसे अपने से बातें करो तो तुम पक्के हो जायेंगे। बेहद के बाप से मिलने की खुशी होनी चाहिए। कोई राजा के पास जन्म लेता है तो कितना फखुर में रहता है। तुम बच्चे स्वर्ग के मालिक बन रहे हो। हर एक अपने लिए मेहनत कर रहे हैं। बाप सिर्फ कहते हैं काम चिता पर बैठ तुम काले हो गये हो। अब ज्ञान चिता पर बैठो तो गोरे बन जायेंगे। बुद्धि में यही चिन्तन चलता रहे, भल ऑफिस में काम करते रहो, याद करते रहो। ऐसे नहीं फुर्सत नहीं है। जितनी फुर्सत मिले रूहानी कमाई करो। कितनी बड़ी कमाई है। हेल्थ वेल्थ दोनों एक साथ मिलती हैं। एक कहानी है अर्जुन और भील की। ऐसे गृहस्थ व्यवहार में रहकर ज्ञान-योग में अन्दर वालों से भी तीखे जा सकते हैं। सारा मदार याद पर है। यहाँ सब बैठ जायेंगे तो सर्विस कैसे करेंगे। रिफ्रेश होकर सर्विस में लग जाना है। सर्विस का ख्याल रखना चाहिए। बाबा तो प्रदर्शनी में जा न सके क्योंकि बापदादा दोनों इक्ट्ठे हैं। बाबा की आत्मा और इनकी आत्मा इक्ट्ठी है। यह वन्डरफुल युगल है। इस युगल को तुम बच्चों के सिवाए कोई जान न सके। अपने को युगल भी समझते हैं फिर भी कहते हैं मैं एक ही बाबा का सिकीलधा बच्चा हूँ। इस लक्ष्मी-नारायण के चित्र को देखकर बहुत खुशी होती है। हमारा दूसरा जन्म यह है, हम गद्दी पर जरूर बैठेंगे। तुम भी राजयोग सीख रहे हो, एम आब्जेक्ट सामने खड़ी है। इन्हें तो खुशी है कि मैं बाबा का सिकीलधा बच्चा हूँ। फिर भी सदैव याद ठहरती नहीं। और-और तरफ़ ख्यालात चले जाते हैं। ड्रामा का लॉ नहीं जो एकदम याद ठहर जाए और कोई ख्याल न आये। माया के तूफान याद नहीं करने देते। जानता हूँ हमारे लिए बहुत सहज है, क्योंकि बाबा की प्रवेशता है। बाबा का नम्बरवन सिकीलधा बच्चा हूँ। पहले नम्बर में राजकुमार बनूँगा फिर भी याद भूल जाती है। अनेक प्रकार के ख्यालात आ जाते हैं। यह है माया। जब इस बाबा का अनुभव हो तब तो तुम बच्चों को समझा सके। यह ख्यालात बन्द तब होंगे जब कर्मातीत अवस्था होगी। आत्मा सम्पूर्ण बन जाए फिर तो यह शरीर रह न सके। शिवबाबा तो सदैव प्योर ही प्योर है। पतित दुनिया और पतित शरीर में आकर पावन बनाने का पार्ट भी इनका ही है। ड्रामा में बंधायमान हैं। तुम पावन बन गये तो फिर नया शरीर चाहिए। शिवबाबा को अपना शरीर तो है नहीं। इस तन में इस आत्मा का महत्व है। उनका रखा क्या है! वह तो मुरली चलाकर चले जाते हैं। वह फ्री हैं। कभी कहाँ, कभी कहाँ चले जायेंगे। बच्चों को भी फील होता है कि यह शिवबाबा मुरली चला रहे हैं। तुम बच्चे समझते हो हम बाप को मदद

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

करने के लिए इस गॉडली सर्विस पर खड़े है। बाप कहते हैं हम भी अपना स्वीट होम छोड़कर आये है। परमधाम अर्थात् परे ते परे धाम है मूलवतन। बाकी खेल सारा सृष्टि पर चलता है। तुम जानते हो यह वन्डरफुल खेल है। बाकी दुनिया एक है।

वो लोग मून में जाने की कोशिश करते हैं, यह तो साइन्स का बल है। साइलेन्स के बल से हम जब साइन्स पर जीत पाते हैं तब साइन्स भी सुखदाई बन जाती है। यहाँ साइन्स सुख भी देती है तो दुःख भी देती है। वहाँ तो सुख ही सुख है। दुःख का नाम नहीं। ऐसी बातें सारा दिन बुद्धि में रहनी चाहिए। बाबा को कितने ख्यालात रहते हैं। बाँधेलियाँ विष पर कितनी मारें खाती हैं। कोई तो मोह वश फिर फँस पड़ते हैं। निश्चयबुद्धि वाले झट कहेंगे इनको अमृत पीना है, इसमें नष्टोमोहा चाहिए। पुरानी दुनिया से दिल उठ जानी चाहिए। ऐसे ही सर्विसएबुल दिल पर चढ़ सकते हैं। उनको शरणागति दे सकते हैं। कन्या पति की शरण में जाती है, विष बिगर नहीं रखते। फिर बाप को शरण लेना पड़ता है। परन्तु एकदम नष्टोमोहा चाहिए। पतियों का पति मिला अब उनसे हम बुद्धि योग की सगाई करते हैं। बस मेरा तो एक दूसरा न कोई। जैसे कन्या की पति से प्रीत बुद्ध जाती है, यह है आत्मा की प्रीत परमात्मा से। उनसे दुःख मिलता है, इनसे सुख मिलता है। यह है संगम, इसको कोई जानता नहीं। तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए। हमको खिवैया अथवा बागवान मिला है, जो हमको फूलों के बगीचे में ले जाते हैं। इस समय सभी मनुष्य काँटे मिसल बन पड़े हैं। सबसे बड़ा काँटा है काम का। पहले तुम निर्विकारी फूल थे, धीरे-धीरे कला कम हो गई अब तो बड़े काँटे हो गये हो। बाबा को बबुलनाथ भी कहते हैं। तुम जानते हो असली नाम शिव है। बबुलनाथ नाम रखते हैं क्योंकि काँटों से फूल बनाते हैं। भक्ति मार्ग में बहुत नाम रखते हैं। वास्तव में नाम एक ही शिव है। रुद्र ज्ञान यज्ञ वा शिव ज्ञान यज्ञ बात एक ही है। रुद्र यज्ञ से विनाश ज्वाला निकली और श्रीकृष्णपुरी अथवा आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना हुई। तुम इस यज्ञ द्वारा मनुष्य से देवता बनते हो। चित्र भी वन्डरफुल बनाते हैं। विष्णु की नाभी से ब्रह्मा निकला। यह सब बातें तुम जानते हो कि ब्रह्मा सरस्वती ही लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। यह निश्चय है। लक्ष्मी-नारायण ही 84 जन्मों के बाद ब्रह्मा सरस्वती बनते हैं। मनुष्य तो ऐसी बातें सुनकर चकित होते होंगे। खुशी में भी आते होंगे। परन्तु माया कम नहीं है। काम महाशत्रु है। माया नाम रूप में फँसाए गिरा देती है। बाप को याद करने नहीं देती। फिर वह खुशी कम हो जाती है। इसमें खुश नहीं होना चाहिए कि हम बहुतों को समझाते हैं, पहले देखना है बाबा को कितना याद करता हूँ। रात को बाबा को याद करके सोता हूँ या भूल जाता हूँ। कोई बच्चे तो पक्के नेमी भी हैं।

तुम बच्चे बहुत लक्की हो। बाप के ऊपर तो बहुत बोझ है। परन्तु फिर भी रथ को रियायत मिल जाती है। ज्ञान और योग भी है, इसके बिगर लक्ष्मी-नारायण पद कैसे पायेंगे। खुशी तो रहती है, हम अकेला बाप का बच्चा हूँ और फिर मेरे ढेर बच्चे हैं, यह नशा भी रहता है तो माया विघ्न भी डालती है। बच्चों को भी माया के छिद्र आते होंगे।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कर्मातीत अवस्था आगे चलकर आनी है। यह बापदादा दोनों इक्ट्ठे हैं। कहते हैं मीठे-मीठे बच्चे.. बाप तो प्यार का सागर है। इनकी आत्मा इक्ट्ठी है। यह भी प्यार करते हैं। समझते हैं जैसा कर्म मैं करूँगा मुझे देख और भी करेंगे। बहुत मीठा रहना है। बच्चे बड़े सयाने चाहिए। इन लक्ष्मी-नारायण में देखो कितनी सयानप है। सयानप से विश्व का राज्य लिया है। प्रदर्शनी द्वारा प्रजा तो बहुत बननी है। भारत बहुत बड़ा है, इतनी सर्विस करनी है। दूसरा याद में रहकर विकर्म भी विनाश करने हैं। यह है कड़ा फुरना (फिकर)। हम तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बनें? इसमें मेहनत है। सर्विस के चांस बहुत हैं। ट्रेन में बैज पर सर्विस कर सकते हो। यह बाबा यह वर्सा। बराबर 5 हज़ार वर्ष पहले भारत स्वर्ग था। लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। फिर ज़रूर इनका राज्य आना चाहिए। हम बाबा की याद से पावन दुनिया का मालिक बन रहे हैं। ट्रेन में बहुत सर्विस हो सकती है। एक डिब्बे में सर्विस कर फिर दूसरे में जाना चाहिए। ऐसी सर्विस करने वाला ही दिल पर चढ़ेगा। बोलो हम आपको खुशखबरी सुनाते हैं। तुम पूज्य देवता थे फिर 84 जन्म ले पुजारी बने। अब फिर पूज्य बनो। सीढ़ी अच्छी है, इनसे ही सतो रजो तमो स्टेज सिद्ध करनी है। स्कूल में पिछाड़ी में गैलप करने का शौक होता है। अब यहाँ भी समझाया जाता है जिन्हों ने टाइम वेस्ट किया है, उन्हों को गैलप कर सर्विस में लग जाना चाहिए। सर्विसएबुल बच्चियाँ बहुत निकलनी चाहिए, जिनको बाबा कहाँ भी भेज दे। मन्दिरों में सर्विस अच्छी होगी। देवता धर्म वाले झट समझेंगे। गंगा स्नान पर भी तुम समझा सकते हो। तो दिल पर लगेगा ज़रूर। अच्छा

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- सदा हर्षित रहने के लिए रूहानी सर्विस करनी है, सच्ची कमाई करनी और करानी है। अपना और दूसरों का कल्याण करना है। ट्रेन में भी बैज पर सर्विस करनी है।

२- पुरानी दुनिया से दिल हटा लेनी है। नष्टोमोहा बनना है, एक बाप से सच्ची प्रीत रखनी है।

वरदान:- हजूर को सदा साथ रख कम्बाइन्ड स्वरूप का अनुभव करने वाले विशेष पार्टधारी भव

बच्चे जब दिल से कहते हैं बाबा तो दिलाराम हाज़िर हो जाता है। इसीलिए कहते हैं हजूर हाज़िर है। और विशेष आत्मायें तो हैं ही कम्बाइन्ड। लोग कहते हैं जिधर देखते हैं उधर तू ही तू है और बच्चे कहते हैं हम जो भी करते हैं, जहाँ भी जाते हैं बाप साथ ही है। कहा जाता है करनकरावनहार, तो करनहार और करावनहार कम्बाइन्ड हो गया। इस स्मृति में रहकर पार्ट बजाने वाले विशेष पार्टधारी बन जाते हैं।

स्लोगन:-

सर्वशक्तिमान बाप को अपना साथी बना लो तो कोई भी विघ्न आपको रोक नहीं सकता।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

20-1-98 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - तुम्हारा यह मरजीवा जन्म है, तुम ईश्वर बाप से वर्सा ले रहे हो, तुम्हें बहुत बड़ी लाटरी मिली है, इसलिए अपार खुशी में रहना है"

प्रश्नः- अपने आपको कौन सी समझानी दो तो चिन्ता समाप्त हो जायेगी? गुस्सा चला जायेगा?

उत्तरः- हम ईश्वर की सन्तान हैं, हमें तो बाप समान मीठा बनना है। जैसे बाबा मीठे रुप से समझानी देते, गुस्सा नहीं करते। ऐसे हमें भी आपस में मीठा रहना है। लूनपानी नहीं होना है क्योंकि जानते हैं जो सेकेण्ड पास हुआ, वह ड्रामा में पार्ट था। चिन्ता किस बात की करें। ऐसे-ऐसे अपने आपको समझाओ तो चिन्ता खत्म हो जायेगी। गुस्सा भाग जायेगा।

गीतः- यही बहार है... ओम् शान्ति।

यह है ईश्वरीय सन्तान की खुशियों का गायन। तुम इतना खुशी का गायन सतयुग में नहीं कर सकेंगे। अभी तुमको खजाना मिल रहा है। यह है बड़े से बड़ी लाटरी। जब लाटरी मिलती है तो खुशी होती है। तुम फिर इस लाटरी से जन्म-जन्मान्तर स्वर्ग में सुख भोगते रहते हो।

a यह है तुम्हारा मरजीवा जन्म। जो जीते जी मरते नहीं, उनका मरजीवा जन्म नहीं कहेंगे। उन्हों को तो खुशी का पारा भी चढ़ नहीं सकता। जब तक मरजीवा नहीं बने हैं अर्थात् बाप को अपना नहीं बनाया है, तब तक पूरा वर्सा भी मिल नहीं सकता। जो बाप के बनते हैं, जो

b बाप को याद करते हैं उनको बाप भी याद करते हैं। तुम हो ईश्वरीय सन्तान। तुम्हें नशा है कि हम ईश्वर बाप से वर्सा अथवा वर ले रहे हैं। जिसके लिए भक्त लोग भक्ति मार्ग में धक्का खाते रहते हैं। बाप से मिलने के लिए अनेकानेक उपाय करते हैं। कितने वेद, शास्त्र, मैगज़ीन आदि अथाह पढ़ते रहते हैं। परन्तु दुनिया तो दिन प्रतिदिन दुःखी ही होती जाती है, इनको तमोप्रधान होना ही है। यह बबुल ट्री है ना। बबुलनाथ फिर आकर कॉटों से फूल बनाते हैं। कॉटे बहुत बड़े-बड़े हो गये हैं। बड़े जोर से लगते हैं। उसको अनेक प्रकार के नाम दिये हुए

c हैं। सतयुग में तो होते नहीं। बाप समझाते हैं यह है कॉटों की दुनिया। एक दो को दुःख देते रहते हैं। घर में बच्चे भी ऐसे कपूत निकल पड़ते हैं जो बात मत पूछो। माँ-बाप को बहुत दुःखी करते हैं। सभी कोई एक समान भी नहीं होते। सबसे जास्ती दुःख देने वाला कौन है? मनुष्य यह नहीं जानते। बाप कहते हैं इन गुरुओं ने परमात्मा की महिमा गुम कर दी है। हम तो उनकी बहुत महिमा करते हैं। वह परमपूज्य परमपिता परमात्मा है। शिव का चित्र भी बहुत अच्छा है। परन्तु बहुत लोग ऐसे हैं जो मानेंगे नहीं कि शिव कोई ऐसा ज्योर्तिबिन्दु है क्योंकि वह तो आत्मा सो परमात्मा कह देते हैं। आत्मा अति सूक्ष्म है जो भ्रकुटी के बीच में बैठी है, फिर परमात्मा इतना बड़ा आकार वाला कैसे हो सकता है? बहुत विद्वान, आचार्य लोग बी.के. पर हँसी उड़ाते हैं कि परमात्मा का ऐसा रुप तो हो नहीं सकता। वह तो अखण्ड ज्योतिर्मय तत्व हजारों सूर्यों से भी तेजोमय है। वास्तव में यह रॉग है। इनकी राइट महिमा तो बाप खुद ही बताते हैं। वह मनुष्य सृष्टि का बीजरुप है। यह सृष्टि एक उल्टा झाड़ है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सतयुग, त्रेता में उनको कोई याद नहीं करते। मनुष्य को जब दु:ख होता है तब उनको याद करते हैं -- हे भगवान, हे परमपिता परमात्मा रहम करो। सतयुग, त्रेता में तो कोई रहम माँगने वाला होता नहीं। वह है बाप रचयिता की नई रचना। इस बाप की महिमा ही अपरमअपार है। ज्ञान का सागर, पतित-पावन है। ज्ञान का सागर है तो जरूर ज्ञान दिया होगा। वह सत, चित्, आनन्द स्वरुप है। चैतन्य है। ज्ञान तो चैतन्य आत्मा ही धारण करती है। समझो हम शरीर छोड़ जाते हैं तो आत्मा में ज्ञान के संस्कार तो हैं ही हैं। बच्चा बनेंगे तो भी वह संस्कार होंगे, परन्तु आरगन्स छोटे हैं तो बोल नहीं सकते। आरगन्स बड़े होते हैं तो याद कराया जाता है, तो स्मृति में आ जाता है। छोटे बच्चे भी शास्त्र आदि कण्ठ कर लेते हैं। यह सभी अगले जन्म के संस्कार हैं। अब बाप हमको अपना ज्ञान का वर्सा देते हैं। सारे सृष्टि का ज्ञान इनके पास है क्योंकि बीजरुप है। हम अपने को बीजरुप नहीं कहेंगे। बीज में जरूर झाड के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान होगा ना। तो बाप खुद कहते हैं मैं हूँ सृष्टि का बीजरूप। इस झाड़ का बीज ऊपर है। वह बाप सत् चित आनन्द स्वरुप, ज्ञान का सागर है। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ही उसमें ज्ञान होगा। नहीं तो क्या होगा! क्या शास्त्रों का ज्ञान होगा? वह तो बहुतों में है। परमात्मा की तो जरूर कोई नई बात होगी ना। जो कोई भी विद्वान आदि नहीं जानते। कोई से भी पूछो - इस सृष्टि रुपी झाड़ की उत्पत्ति, पालना, संघार कैसे होता है, इनकी आयु कितनी है, यह कैसे वृद्धि को पाता है... बिल्कुल कोई नहीं समझा सकता है।

d एक गीता ही है सर्व शास्त्रमई शिरोमणी बाकी तो सब हैं उनके बाल बच्चे। जबकि गीता पढ़ने से भी कुछ नहीं समझते तो बाकी शास्त्र पढ़ने से फ़ायदा ही क्या? वर्सा तो फिर भी गीता से मिलना है। अब बाप सारे ड्रामा का राज़ समझाते हैं। बाप पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि बनाए पारसनाथ बनाते हैं। अब तो सब पत्थरबुद्धि, पत्थरनाथ हैं। परन्तु वह अपने को बड़े-बड़े टाइटिल्स देकर अपने को पारसबुद्धि समझ बैठे हैं। बाप समझाते हैं मेरी महिमा सबसे न्यारी है। मैं ज्ञान का सागर, आनंद का सागर, सुख का सागर हूँ। ऐसी महिमा तुम देवताओं की नहीं कर सकते। भक्त लोग देवताओं के आगे जाकर कहेंगे आप सर्वगुण सम्पन्न... हैं। बाप की तो एक ही महिमा है। वह भी हम जानते हैं। अभी हम मन्दिर में जायेंगे तो बुद्धि में पूरा ज्ञान है कि इन्होंने तो पूरे 84 जन्म लिये होंगे। अभी अपने को कितनी खुशी है। आगे थोड़ेही यह ख्याल आता था। अभी समझते हैं हमको ऐसा बनना है। बुद्धि में बहुत परिवर्तन आ जाता है।

बाप बच्चों को समझाते हैं आपस में बहुत मीठे बनो। लूनपानी मत बनो। बाबा कभी भी किससे गुस्सा करता है क्या? बड़े मीठे रुप से समझानी देते हैं। एक सेकण्ड पास हुआ कहेंगे यह भी ड्रामा में पार्ट था। इसकी चिंता क्या करनी है। ऐसे-ऐसे अपने को समझाना है। तुम ईश्वरीय सन्तान कम थोड़ेही हो। यह तो समझ सकते हो कि ईश्वरीय सन्तान जरूर ईश्वर के पास रहते होंगे। ईश्वर निराकार है तो उसकी सन्तान भी निराकार हैं। वही सन्तान यहां चोला लेकर पार्ट बजाती हैं। स्वर्ग में मनुष्य हैं देवी-देवता धर्म के। अगर सबका बैठ हिसाब निकालें तो कितना माथा मारना पड़े। परन्तु समझ सकते हैं कि नम्बरवार समय अनुसार थोड़े-थोड़े

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जन्म मिलते होंगे। आगे तो समझते थे मनुष्य कुत्ते बिल्ली बनते हैं। अभी तो बुद्धि में रात दिन का फ़र्क आ गया है। यह सब हैं धारणा करने की बातें। नटशेल में समझाते हैं कि अब 84 जन्म का चक्र पूरा हुआ। अभी इस छी-छी शरीर को छोड़ना है। यह सबका पुराना जड़जड़ीभूत, तमोप्रधान शरीर है, इससे ममत्व मिटा देना है। पुराने शरीर को याद क्या करें। अब तो अपने नये शरीर को याद करेंगे, जो मिलना है सतयुग में। वाया मुक्तिधाम होकर
e सतयुग में आयेंगे। हम जीवनमुक्ति में जाते हैं और सब मुक्तिधाम में चले जाते हैं। इसको जयजयकार कहा जाता है, हाहाकार के बाद जयजयकार होना है। इतने सब मरेंगे कोई तो निमित्त कारण बनेगा। नैचुरल कैलेमिटीज़ होंगी। सिर्फ सागर ही थोड़ेहों सभी खण्डों को खलास करेगा। सब कुछ खलास तो होना ही है। बाकी भारत अविनाशी खण्ड रह जाता है क्योंकि यह है शिवबाबा का बर्थ प्लेस। तो यह हो गया सबसे बड़ा तीर्थ स्थान। बाप सबकी सद्गति करते हैं, यह कोई मनुष्य नहीं जानते हैं। उन्हों को न जानना ही ड्रामा में नूँध है। तब तो बाप कहते हैं कि हे बच्चे तुम कुछ नहीं जानते थे, मैं ही तुमको रचता और रचना अथवा मनुष्य सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का सारा भेद समझाता हूँ। जिसको ऋषि मुनि भी बेअन्त, बेअन्त कहकर गये हैं। यह थोड़ेही समझते हैं कि सारी दुनिया के 5 विकार बड़े भारी दुश्मन हैं। जिस रावण को भारतवासी वर्ष-वर्ष जलाते ही आते हैं। उसको जानते कोई नहीं क्योंकि वह न जिस्मानी है, न रूहानी है। विकारों का तो कोई रुप ही नहीं है। मनुष्य एक्ट में आता है तब पता पड़ता है कि इनमें काम का, क्रोध का भूत आया है। इस विकार की स्टेज में भी उत्तम, मध्यम, कनिष्ट होते हैं। कोई में काम का नशा एकदम तमोप्रधान हो जाता है, कोई को रजो नशा, कोई को सतो नशा रहता है। कोई तो बाल ब्रह्मचारी भी रहते हैं। समझते हैं यह भी एक झंझट है सम्भालना। सबसे अच्छा उनको कहेंगे। सन्यासियों में भी बाल ब्रह्मचारी अच्छे गिने जाते हैं। गवर्मेन्ट के लिए भी अच्छा है, बच्चों की वृद्धि नहीं होगी। पवित्रता की ताकत मिलती है। यह हुई गुप्त। सन्यासी भी पवित्र रहते हैं, छोटे बच्चे भी पवित्र रहते हैं, वानप्रस्थी भी पवित्र रहते हैं। तो पवित्रता का बल मिलता ही आता है। उन्हों का भी कायदा चला आता है कि बच्चे को इतनी आयु तक पवित्र रहना है। तो वह भी बल मिलता है। तुम हो सतोप्रधान पवित्र। यह अन्तिम जन्म तुम बाप से प्रतिज्ञा करते हो। तुम सतयुग की स्थापना करने वाले हो। जो करेगा सो पवित्र दुनिया का मालिक बनेगा, नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार।
f यह है ईश्वरीय कुटुम्ब। ईश्वर के साथ हम रहते हैं कल्प में एक बार। बस फिर दैवी घराने में तो बहुत जन्म रहेंगे। यह एक जन्म ही दुर्लभ है। यह ईश्वरीय कुल है उत्तम से उत्तम। ब्राह्मण कुल सबसे ऊंची चोटी है। नीच ते नीच कुल से हम ऊंच ब्राह्मण कुल के हो गये। शिवबाबा जब ब्रह्मा को रचे तब तो ब्राह्मण रचे। कितनी खुशी रहती है, जो बाबा की सर्विस में रहते हैं। हम ईश्वर की औलाद बने हैं और ईश्वर की श्रीमत पर चलते हैं। अपनी चलन से उनका नाम बाला करते हैं। बाबा कहते हैं वह तो हैं आसुरी गुणों वाले, तुम दैवीगुणों वाले बन रहे हो। जब तुम सम्पूर्ण बन जायेंगे तो तुम्हारी चलन बहुत अच्छी हो जायेगी। बाबा कहेंगे यह हैं दैवी गुणों वाले, नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। आसुरी गुण वाले भी नम्बरवार हैं। बाल

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ब्रह्मचारी भी हैं। सन्यासी पवित्र रहते हैं सो तो बहुत अच्छा है। बाकी वह किसकी सद्गति तो कर नहीं सकते। अगर कोई गुरु लोग सद्गति करने वाले होते तो साथ ले जाते, परन्तु खुद ही छोड़कर चले जाते हैं। यहां यह बाप कहते हैं मैं तुमको साथ ले जाऊंगा। मैं आया ही हूँ तुमको साथ ले जाने के लिए। वह तो ले नहीं जाते। खुद ही गृहस्थियों के पास जन्म लेते रहते हैं। संस्कारों के कारण फिर सन्यासियों के झुण्ड में चले जाते हैं। नाम रुप तो हर जन्म में बदलता रहता है। यह अभी तुम बच्चे जानते हो कि सतयुग में यहाँ के पुरुषार्थ अनुसार पद होगा। वहाँ यह मालूम नहीं होगा कि हमने यह पद कैसे पाया। यह तो अभी पता है। जिसने जैसे कल्प पहले पुरुषार्थ किया था, वैसा ही अब करेंगे। बच्चों को साक्षात्कार भी कराया हुआ है कि वहाँ शादी आदि कैसे होती है। बड़े-बड़े मैदान, बगीचे आदि होंगे। अब तो भारत में ही 90 करोड़ से भी अधिक हैं। वहां तो कुछ लाख रहते हैं। वहां थोड़ेही 7-8 मंजिलों वाला मकान होगा। यह अभी हैं क्योंकि जगह नहीं है। वहां इतनी सर्दी नहीं होगी। वहां दु:ख की निशानी भी नहीं है। न बहुत गर्मी होती, जो पहाड़ों पर जाना पड़े। नाम ही है स्वर्ग। इस समय मनुष्य कॉटों के जंगल में पड़े हैं। जितना सुख की चाहना करते हैं उतना दु:ख बढ़ता ही जाता है। अब बहुत दु:ख होगा। लड़ाई होगी तो खून की नदियाँ बहेंगी। अच्छा।

यह मुरली सब बच्चों के आगे सुनाई। सम्मुख सुनना नम्बरवन, टेप से सुनना नम्बर टू, मुरली से पढ़ना नम्बर थ्री। सतोप्रधान, सतो और रजो। तमो तो कहेंगे नहीं। टेप में हूबहू आती है। अच्छा।

बापदादा और मीठी माँ का सिकीलधे बच्चों को यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिये मुख्य सार:-

१- अपनी चलन वा दैवीगुणों से बाप का नाम बाला करना है। आसुरी अवगुण निकाल देने हैं।

२- इस पुराने जड़जड़ीभूत शरीर में ममत्व नहीं रखना है। नये सतयुगी शरीर को याद करना है। पवित्रता की गुप्त मदद करनी है।

वरदान:- एक शमा के पीछे परवाने बन फ़िदा होने वाले कोटों में कोई श्रेष्ठ आत्मा भव

सारे विश्व के अन्दर हम कोटों में कोई, कोई में भी कोई श्रेष्ठ आत्मायें हैं, जिन्होंने स्वयं अनुभव करके यह महसूस किया है, कि हम कल्प पहले वाली वही श्रेष्ठ आत्मायें हैं, जिन्होंने स्वयं को बाप शमा के पीछे फ़िदा किया है। वे चक्र लगाने वाले नहीं, परवाने बन फ़िदा होने वाले हैं। फ़िदा होना अर्थात् मर जाना। तो ऐसे जल मरने वाले परवाने हो ना! जलना ही बाप का बनना है, जलना अर्थात् सम्पूर्ण परिवर्तन होना।

स्लोगन:-

बाबा के मिलन की और सर्व प्राप्तियों की मौज में रहना ही संगमयुग की विशेषता है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

16-9-98 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

a **("मीठे बच्चे – तुम्हारे दर पर कोई भी आये उसे कुछ न कुछ ज्ञान धन देना है, पहले फॉर्म भराओ फिर दो बाप का परिचय दो")**

प्रश्नः- जादूगर बाप की जादूगरी कौन सी है?

उत्तरः- जादूगर बाप की जादूगरी देखो – इतना ऊंचा बाप कहते हैं मैं तुम्हारी सेवा में आया हूँ, मैं तुम्हारा बच्चा भी बन जाता हूँ। तुम बच्चे जब मेरे पर बलि चढ़ो तो फिर मैं 21 जन्मों के लिए तुम्हारे पर बलि चढ़ूँ। यह भी वन्डरफुल बातें हैं। बाप कितने प्यार से तुम्हें पढ़ाई पढ़ाते हैं। तुम्हारी सब मनोकामनायें पूरी करते हैं। तुमसे कोई भी फीस आदि नहीं लेते हैं। उन्हें कहा जाता है – राजू-रमज़बाज।

गीतः- जो पिया के साथ है.....

ओम् शान्ति। पिया और वर्षा। जो पिया के साथ है उसके लिए बरसात है। किस प्रकार की? इसको ज्ञान वर्षा कहा जाता है। ज्ञान वर्षा कौन करते हैं? ज्ञान का सागर। अब यह गीत जिन्होंने गाया या बनाया वह तो कुछ नहीं जानते। तुम हो लक्की ज्ञान सितारे। तुम ज्ञान सागर के बच्चे बने हो इसलिए तुमको ज्ञान सितारे कहा जाता है। बाप से ज्ञान ले रहे हो। नॉलेज की हमेशा एम-ऑब्जेक्ट होती है। कुछ न कुछ प्राप्ति का रास्ता मिलता है। अब तुम बच्चे जानते हो बेहद के बाप द्वारा बेहद का वर्सा लेना है। वह है पारलौकिक बाप। तुम्हारे पास कभी कोई नये जिज्ञासु आते हैं तो फॉर्म भरने से डरते हैं। तो उनको समझाना चाहिए क्योंकि फिर भी तुम्हारे पास आये हैं तो कुछ न कुछ बिचारों को मिलना चाहिए। बहुत गरीब हैं। तुम्हारे पास तो अथॉरिटी है। हाँ, नम्बरवार कोई फुल पास होते हैं, कोई कम। यह तो नशा है हमारे पास ज्ञान रत्न ढेर हैं। ज्ञान सागर कोई महल में
b तो नहीं रहते हैं, झोपड़ी में रहते हैं। झोपड़ी में रहना पसन्द करते हैं। जब कोई कहे हम
c फॉर्म नहीं भरेंगे तो बोलो – अच्छा, अपना नाम तो लिखेंगे, हम बड़ी बहन जी को दिखायें कि फलाना आया है। कुछ समझने के लिए तो आये हो। अच्छा, अपना नाम लिखो। लौकिक फादर का भी नाम लिखना पड़े-फिर समझाना है – दो बाप तो हैं। एक है लौकिक बाप, दूसरा है पारलौकिक परमपिता परमात्मा। जब पिता कहते हो तो उनका नाम तो लिखो। परमपिता कहते हो तो वह सबका बाप है। हर एक को लौकिक और पारलौकिक बाप होते हैं। भक्ति मार्ग में दोनों बाप हैं। सतयुग-त्रेता में लौकिक फादर तो है, पारलौकिक का नाम भी नहीं लेंगे। यह बातें तुम बच्चों को समझकर फिर समझाना है। कितनी सहज बातें समझाई जाती हैं। जिसको गॉड फादर कहा जाता है - वह है परलोक में रहने वाला। बुद्धि में आता है – बरोबर, सतयुग-त्रेता में पारलौकिक बाप को याद नहीं करते। यहाँ तो सब याद करते हैं। तो समझाना है लौकिक फादर का नाम लिखा, अब पारलौकिक फादर का नाम लिखो। सब जीव की आत्मायें उस पारलौकिक परमपिता को याद करती हैं। वह एक ही है। जैसे आत्मा निराकार है, वैसे वह भी निराकार है। उनका तो कोई सूक्ष्म वा स्थूल

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

शरीर नहीं है। उनको सर्वव्यापी तो कह नहीं सकते। लौकिक बाप को कभी सर्वव्यापी नहीं कह सकते हैं। क्या सर्वव्यापी कहने से वर्सा मिल सकता है? फिर पारलौकिक बाप को सर्वव्यापी क्यों कहते हो? पारलौकिक बाप को सब इतना याद करते हैं तो जरूर उनसे भी वर्सा मिलना चाहिए। रचना को रचता से वर्सा तो चाहिए ना। ऐसे नई-नई बातें समझाने से झट समझ जायेंगे। तुम अनुभव से बतलाते हो उस बाप से वर्सा पाने की युक्ति बताई जाती है। वह बाप है स्वर्ग का रचयिता। तुम जानते हो भारत जीवनमुक्त था। अब जीवनबंध है। दु:ख से लिबरेट करने वाला बाप ही है।

d यह विमति सहित लक्ष्मी-नारायण का चित्र बहुत अच्छा है। हर एक के पास होना चाहिए। इस पर समझाओ कि बरोबर यह लक्ष्मी-नारायण भारत के आदि सनातन देवी-देवता थे, सतयुग के मालिक थे। स्वर्ग का वर्सा जरूर पारलौकिक बाप स्वर्ग का रचयिता

e ही दे सकते हैं। कोई फॉर्म न भी भरे लेकिन यह बात लिखाना तो सहज है। दो बाप हैं, दोनों से वर्सा मिलता है। लक्ष्मी-नारायण अथवा उनके बच्चों आदि की जीवन कहानी तो है नहीं। कृष्ण के लिए कहते हैं उनको टोकरी में ले गया, यह हुआ। अच्छा, इन लक्ष्मी-नारायण को राज्य कहाँ से मिला? बरोबर आदि सनातन देवी-देवताओं का राज्य था, इनमें

f पहला नम्बर लक्ष्मी-नारायण हैं। उन्हों को यह स्वर्ग का वर्सा किसने दिया? यह प्रजापिता ब्रह्मा भी बैठा है, यह वर्सा लक्ष्मी-नारायण सामने खड़े हैं। फिर झाड़ पर ले आओ। यहाँ तपस्या कर रहे हैं — राजयोग की। इनसे यह लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। यह समझाना कितना सहज है। लक्ष्मी-नारायण के भक्तों को समझाना बहुत सहज है। अब अन्दर कोई आते हैं तो कुछ न कुछ शिक्षा जरूर देनी पड़े। तुम्हारे द्वारा इन वेश्याओं, भीलनियों आदि का भी उद्धार होना है। परन्तु तुम्हारे में अभी वह ताकत नहीं है। बाबा ने समझाया है तुम अपने पति को भी भूं भूं करती रहो। स्त्री अपने पति से भी पूछ सकती है — तुम अपने लौकिक बाप का नाम बताओ। अच्छा, पारलौकिक बाप का नाम बताओ? जिसको तुम घड़ी-घड़ी जन्म बाई जन्म याद करते हो, जरूर उनसे कुछ जास्ती मिलता है। लक्ष्मी-नारायण को याद करने से तो कुछ मिलता नहीं है।

बाप आकर तुम्हारी कितनी सेवा करते हैं। बिगर मांगे तुमको पढ़ाते हैं। कहते हैं — आओ, तुमको स्वर्ग में ले चलें। सभी मनोकामनायें पूर्ण करते हैं। नर-नारायण का भी चित्र है ना। पूजा लक्ष्मी की होती है। समझते हैं लक्ष्मी से सम्पत्ति मिलेगी। यह सब भक्ति मार्ग की बातें हैं। लक्ष्मी (स्त्री) धन कहाँ से लायेगी? उनको जरूर पति से मिलता है। पुजारी लोग यह कुछ भी नहीं जानते। तुम बच्चों को समझाना पड़े। तुम भी अभी समझते हो — आगे हम क्या करते थे? कुछ भी नहीं समझते थे। अब अच्छी रीति जान गये हैं। कृष्ण-जन्माष्टमी होती है तो सवेरे में उनको दूध पिलाते हैं, झूला झुलाते हैं और रात को फिर पूरी-तस्मई (खीर) आदि खिलाते हैं। क्या इतने में इतना बड़ा हो गया, जो पूरी तस्मई खाने लायक हो गया! यह भी समझने की बातें हैं ना। तुम जानते हो यह राधे-कृष्ण ही फिर लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। शिवबाबा इन्हों को यह पद दिलाते हैं। शिव को कभी पूरी-

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

तस्मई आदि नहीं खिलाते। उन पर सिर्फ दूध चढ़ाते हैं। अब शिवबाबा तो है निराकार, जिसका कोई नाम-रूप नहीं, उन पर दूध आदि चढ़ाने का मतलब क्या है? उनको कुछ खिलाते नहीं हैं। निराकार है ना, श्रीकृष्ण को रोटी आदि खाने के लिये मुख है। शिव पर कुछ नहीं चढ़ाते। शंकर पर चढ़ाते हैं, शिव पर नहीं। शंकर का तो फिर भी आकार रूप है ना। दोनों एक तो हो नहीं सकते। अब बाबा कितनी नॉलेज देते हैं। कितनी गुप्त बातें हैं।

तुम गोपिकायें शिवबाबा की हो। शिव को फिर बालक भी कहते हैं। यह भी शिवबाबा पूछते हैं तुमने शिव को बालक क्यों बनाया है? वर्सा बालक को दिया जाता है। पहले जब तुम बलि चढ़ो तब ही शिवबाबा बलि चढ़े। यह भी है बाप बच्चों पर बलि चढ़ते हैं परन्तु कहते हैं पहले तुमको बलि चढ़ना है, तब मैं चढ़ूँ। बलि चढ़ना अर्थात् उनको अपना बच्चा बनाना, उनकी पालना करना। कितनी वन्डरफुल बातें हैं! मातायें हैं ना। पुरुष भी शिव बालक को अपना वारिस बनाते हैं। शिवबाबा को जादूगर कहते हैं ना। लक्ष्मी-नारायण जादूगर नहीं हैं। यह बड़ी गुप्त बातें हैं। विरला कोई समझ सकते हैं। अपरोक्ष भी बतलाते हैं। तुम बच्चे अनुभवी हो बाबा ने साक्षात्कार किया, मम्मा ने कोई साक्षात्कार नहीं किया फिर भी मम्मा सबसे तीखी गई। सबको तो साक्षात्कार नहीं होगा। ऐसे तो बहतों को साक्षात्कार हुए, आज हैं नहीं। साक्षात्कार से कोई कनेक्शन नहीं है। यह तो है धारण करने और कराने की मीठी बातें। जादूगर राजू रमज़बाज तो है ना। जादूगर लोग बहुत तीखे-तीखे होते हैं। संतरे निकाल दिखाते हैं, सिर काटकर फिर जोड़ देते हैं। आगे बहुत जादूगरी दिखाते थे।

अब बच्चे जान गये हैं बाबा की ही महिमा गाई जाती है। तुम्हारी लीला अपरम-अपार है, तुम्हारी गति मत न्यारी है। बाप कितनी श्रीमत देते हैं। श्रीमत से तुमको श्रेष्ठ देवता बना रहे हैं? श्री श्री कहा जाता है निराकार शिवबाबा को। लक्ष्मी-नारायण को ऐसा श्रेष्ठ किसने बनाया? जरूर उनसे श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ होगा। बाबा से हम यह इलम (विद्या) सीखते हैं कि मनुष्य को देवता कैसे बनाया जाए। अभी तुम सब सीतायें रावण की जेल में, शोक वाटिका में दुःख उठा रही हो। रामराज्य में कभी शोक होता ही नहीं। तो जिससे वर्सा मिलता है उनको याद करना है ना। हम आत्मा हैं यह भी मानते हैं। पूछो तुम्हारे लौकिक बाप का नाम क्या है? पारलौकिक बाप का नाम क्या है? बाप को सर्वव्यापी तो नहीं कहेंगे। बाप माना वर्सा। बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। अब वह रावण ने छीना हुआ है। इसलिए कहा जाता है माया जीते जगत जीत। माया पर जीत पानी है। मन तो तुफानी घोड़ा है। खूब पछाड़ने की कोशिश करेगा। बाबा ने अब तुम्हारी बुद्धि का ताला खोल दिया है। तुम राइट और रांग को समझ सकते हो। तुम समझा सकते हो अब यह दुनिया बदल रही है। महाभारी लड़ाई तो जरूर लगनी है, उसमें सब विनाश होंगे। यादव मूसलों से अपने ही यादव कुल का विनाश करते हैं। पाण्डव कुल की जीत होनी है। परन्तु दिखाया है 5 पाण्डव बचे, वह भी पहाडों पर गल मरे। बाकी क्या हुआ? कुछ नहीं। राजयोग

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सिखाया तो कुछ तो बचे होंगे। प्रलय थोड़ेही हो जाती है। यह सब बातें तुम अभी जानते हो। दिखाते हैं कृष्ण सागर में पत्ते पर आया। श्रीकृष्ण तो गर्भ महल में आते हैं। गर्भ जेल में दुःख होता है। सागर तो गर्भ महल है। बड़े आराम से बैठा रहता है। जन्म-जन्मान्तर से यह गीता का ज्ञान भागवत आदि सुनते आये, भक्ति मार्ग के धक्के खाते आये, अभी बाप तुमको एक सेकेण्ड में स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। इसको भावी कहते हैं, परन्तु भावी किसकी? भावी ड्रामा की कहेंगे। बना-बनाया ड्रामा है ना। मनुष्य तो सिर्फ भावी कहते रहते हैं, समझते कुछ भी नहीं। तो जब कोई आये पहले-पहले यह बताओ कि दो बाप हैं। पारलौकिक बाप स्वर्ग का रचयिता है। उसने तो स्वर्ग का वर्सा दिया था। आज से 5 हजार वर्ष पहले स्वर्ग था। अभी तो नर्क है फिर तुम वर्सा ले सकते हो। हम भी बेहद के बाप से वर्सा ले रहे हैं। यह भारत भगवान् की जन्म भूमि है। जैसे इब्राहम, बुद्ध आदि की अपनी जन्म भूमि है। तुम बच्चे जानते हो बाप आये हुए हैं, वर्सा दे रहे हैं। तुम बच्चों को रहमदिल बनना है। कोई को भी यह समझाना तो बहुत सहज है। पारलौकिक बाप की पहचान देनी है। पारलौकिक फादर एक ही बार आते हैं। उनकी याद से हम स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। बहुत सहज है। ऐसी-ऐसी बातें अच्छी रीति धारण करो और समझाओ। दान करो। पारलौकिक बाप स्वर्ग की राजाई देते हैं। लक्ष्मी-नारायण को दी है ना। इस सूर्यवंशी लक्ष्मी-नारायण का बाप कौन है? हम आपको बताते हैं स्वर्ग की स्थापना करने वाला फादर अब उन्हों को स्वर्ग की राजाई दे रहे हैं। बाकी आशीर्वाद क्या करेंगे। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे लक्की ज्ञान सितारों प्रति मात-पिता बापदादा का नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- राइट और रांग को समझ बुद्धि बल से मन रूपी तूफानी घोड़े को वश करके मायाजीत, जगतजीत बनना है। हार नहीं खानी है।

२- शिव को बालक बनाकर उनकी पालना करनी है अर्थात् पहले उन्हें अपना वारिस बनाना है। उन पर पूरा बलि चढ़ना है।

वरदान:- बुद्धि रूपी विमान द्वारा सेकण्ड में तीनों लोकों का सैर करने वाले सहजयोगी भव

बापदादा बच्चों को निमन्त्रण देते हैं कि बच्चे संकल्प का स्विच आन करो और वतन में पहुंच कर सूर्य की किरणें लो, चन्द्रमा की चांदनी भी लो, पिकनिक भी करो और खेलकूद भी करो। इसके लिए सिर्फ बुद्धि रूपी विमान में डबल रिफाइन पेट्रोल की आवश्यकता है। डबल रिफाइन अर्थात् एक निराकारी निश्चय का नशा कि मैं आत्मा हूँ, बाप का बच्चा हूँ, दूसरा साकार रूप में सर्व संबंधों का नशा। यह नशा और खुशी सहजयोगी भी बना देगी और तीनों लोकों का सैर भी करते रहेंगे।

स्लोगन:-

श्रेष्ठ कर्म का ज्ञान ही श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खींचने का कलम है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

1-11-2000 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम अभी गॉडली सर्विस पर हो, तुम्हें सबको सुख का रास्ता बताना है, स्कालरशिप लेने का पुरूषार्थ करना है"

प्रश्नः- तुम बच्चों की बुद्धि में जब ज्ञान की अच्छी धारणा हो जाती है तो कौन-सा डर निकल जाता है?

उत्तरः- भक्ति में जो डर रहता कि गुरू हमें श्राप न दे देवे, यह डर ज्ञान में आने से, ज्ञान की धारणा करने से निकल जाता है क्योंकि ज्ञान मार्ग में श्राप कोई दे न सके। रावण श्राप देता है, बाप वर्सा देते हैं। रिद्धि-सिद्धि सीखने वाले ऐसा तंग करने का, दुःख देने का काम करते है, ज्ञान में तो तुम बच्चे सबको सुख पहुँचाते हो।

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। तुम सब पहले आत्मा हो। यह पक्का निश्चय रखना है। बच्चे जानते हैं हम आत्मायें परमधाम से आती हैं, यहाँ शरीर लेकर पार्ट बजाने। आत्मा ही पार्ट बजाती है। मनुष्य फिर समझते शरीर ही पार्ट बजाते हैं। यह है बड़े ते बड़ी भूल। जिस कारण आत्मा को कोई जानते नहीं। इस आवागमन में हम आत्मायें आती-जाती हैं – इस बात को भूल जाते हैं। इसलिए बाप को ही आकर आत्म-अभिमानी बनाना पड़ता है। यह बात भी कोई नहीं जानते। बाप ही समझाते हैं, आत्मा कैसे पार्ट बजाती है। मनुष्य के मैक्सीमम 84 जन्मों से लेकर मिनीमम है एक-दो जन्म। आत्मा को पुनर्जन्म तो लेते रहना है। इससे सिद्ध होता है, बहुत जन्म लेने वाला बहुत पुनर्जन्म लेते हैं। थोड़े जन्म लेने वाला कम पुनर्जन्म लेते हैं। जैसे नाटक में कोई का शुरू से पिछाड़ी तक पार्ट होता है, कोई का थोड़ा पार्ट होता है। यह कोई मनुष्य नहीं जानते। आत्मा अपने को ही नहीं जानती तो अपने बाप
a को कैसे जाने। आत्मा की बात है ना। बाप है आत्माओं का। कृष्ण तो आत्माओं का बाप है नहीं। कृष्ण को निराकार तो नहीं कहेंगे। साकार में ही उनको पहचाना जाता है। आत्मा तो सबकी है। हर एक आत्मा में पार्ट तो नूँधा हुआ है। यह बातें तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार हैं जो समझा सकते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो हम आत्माओं ने 84 जन्म कैसे लिए हैं। ऐसे नहीं कि आत्मा सो परमात्मा। नहीं, बाप ने समझाया है – हम आत्मा पहले सो देवता बनते हैं। अभी पतित तमोप्रधान हैं फिर सतोप्रधान पावन बनना है। बाप आते ही तब हैं जब सृष्टि पुरानी हो जाती है। बाप आकर पुरानी को नया बनाते हैं। नई सृष्टि स्थापन करते हैं। नई दुनिया में है ही आदि सनातन देवी-
b देवता धर्म। उन्हों के लिए ही कहेंगे पहले कलियुगी शूद्र धर्म वाले थे। अब प्रजापिता ब्रह्मा के मुख वंशावली बन ब्राह्मण बने हो। ब्राह्मण कुल में आते हो। ब्राह्मण कुल की डिनायस्टी नहीं होती। ब्राह्मण कुल कोई राजाई नहीं करते हैं। इस समय भारत में न ब्राह्मण कुल राजाई करते हैं, न शूद्र कुल राजाई करते हैं। दोनों को राजाई नहीं है। फिर भी उनका प्रजा पर प्रजा का राज्य तो चलता है। तुम ब्राह्मणों का कोई राज्य नहीं है। तुम स्टूडेण्ट पढ़ते हो। बाप तुमको ही समझाते हैं। यह 84 का चक्र कैसे फिरता है। सतयुग, त्रेता..... फिर होता है संगमयुग। इस संगमयुग जैसी महिमा और कोई युग की है नहीं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

यह है पुरूषोत्तम संगमयुग। सतयुग से त्रेता में आते हैं, दो कला कम होती है तो उनकी महिमा क्या करेंगे! गिरने की महिमा थोड़ेही होती है। कलियुग को कहा जाता है पुरानी दुनिया। अब नई दुनिया स्थापन होनी है। जहाँ देवी-देवताओं का राज्य होता है। वह पुरूषोत्तम थे। फिर कला कम होते-होते कनिष्ट, शूद्र बुद्धि बन जाते हैं। उनको पत्थरबुद्धि
c भी कहा जाता है। ऐसे पत्थरबुद्धि बन जाते हैं जो जिनकी पूजा करते हैं, उनकी जीवन कहानी को भी नहीं जानते। बच्चे बाप का जीवन न जानें तो वर्सा कैसे मिले। अभी तुम बच्चे बाप के जीवन को जानते हो। उनसे तुमको वर्सा मिल रहा है। बेहद के बाप को याद करते हो। तुम मात-पिता..... कहते हो तो जरूर बाप आया होगा तब तो सुख घनेरे दिये होंगे ना। बाप कहते हैं – मैं आया हूँ, अथाह सुख तुम बच्चों को देता हूँ। बच्चों की बुद्धि में यह नॉलेज अच्छी रीति रहनी चाहिए, इसलिए तुम स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो। तुमको अब ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। तुम जानते हो हम सो देवता बनते हैं। अब शूद्र से ब्राह्मण बने हैं। कलियुगी ब्राह्मण भी हैं तो सही ना। वो ब्राह्मण लोग जानते नहीं कि हमारा धर्म अथवा कुल कब स्थापन हुआ क्योंकि वह हैं ही कलियुगी। तुम अभी डायरेक्ट प्रजापिता ब्रह्मा का सन्तान बने हो और सबसे ऊंच कोटि के हो। बाप बैठ तुम्हारी पढ़ाई की सर्विस, सम्भालने की सर्विस और श्रृंगारने की सर्विस करते हैं। तुम भी हो ऑन गॉडली सर्विस ओनली। गॉड फादर भी कहते हैं – हम आये हैं सब बच्चों की सर्विस में। बच्चों को सुख का रास्ता बताना है। बाप कहते हैं अब घर चलो। मुनष्य भक्ति भी करते हैं मुक्ति के लिए। जरूर जीवन में बन्धन है। बापं आकर इन दुःखों से छुड़ाते
d हैं। तुम बच्चे जानते हो त्राहि-त्राहि करेंगे। हाहाकार के बाद जयजयकार होनी है। अब तुम्हारी बुद्धि में है – कितनी हाय-हाय करेंगे। जब नैचुरल कैलेमिटीज आदि होगी। यूरोपवासी यादव भी हैं, बाप ने समझाया है – यूरोपवासियों को यादव कहा जाता है। दिखाते हैं पेट से मूसल निकले फिर श्राप दिया। अब श्राप आदि की तो बात ही नहीं। यह तो ड्रामा है। बाप वर्सा देते हैं, रावण श्राप देते हैं। यह एक खेल बना है, बाकी श्राप देने वाले तो दूसरे मनुष्य होते हैं। उस श्राप को उतारने वाले भी होते हैं। गुरू गोसाई आदि से भी मनुष्य लोग डरते हैं कि कोई श्राप न देवे। वास्तव में ज्ञान मार्ग में श्राप कोई दे न सके। ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग में श्राप की कोई बात नहीं। जो रिद्धि-सिद्धि आदि सीखते हैं, वो श्राप देते हैं, लोगों को बहुत दुःखी कर देते हैं, पैसे भी बहुत कमाते हैं। भक्त लोग यह काम नहीं करते।

e बाबा ने यह भी समझाया है – संगम के साथ पुरूषोत्तम अक्षर जरूर लिखो। त्रिमूर्ति अक्षर भी जरूर लिखना है और प्रजापिता अक्षर भी जरूरी है क्योंकि ब्रह्मा नाम भी बहुतों के हैं। प्रजापिता अक्षर लिखेंगे तो समझेंगे साकार में प्रजापिता ठहरा। सिर्फ ब्रह्मा लिखने से सूक्ष्मवतन वाला समझ लेते हैं। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को भगवान कह देते हैं। प्रजापिता कहेंगे तो समझा सकते हो – प्रजापिता तो यहाँ है। सूक्ष्मवतन में कैसे हो सकता। विष्णु को तो दिखाते हैं ब्रह्मा की नाभी से निकला। तुम बच्चों को भी ज्ञान मिला है। नाभी आदि की कोई बात ही नहीं। ब्रह्मा से विष्णु, विष्णु से ब्रह्मा कैसे बनते हैं। सारे चक्र का ज्ञान तुम इन चित्रों से समझा सकते हो। बिगर चित्र समझाने में मेहनत लगती है। ब्रह्मा से विष्णु विष्णु से ब्रह्मा बनते हैं। लक्ष्मी-नारायण 84 का चक्र लगाकर फिर

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ब्रह्मा-सरस्वती बनते हैं। बाबा ने पहले से नाम दे दिये हैं, जब भट्ठी बनी तो नाम दिये। फिर कितने चले गये। इसलिए समझाया है ब्राह्मणों की माला होती नहीं क्योंकि ब्राह्मण हैं पुरूषार्थी। कभी नीचे, कभी ऊपर होते रहते हैं। ग्रहचारी बैठती है। बाबा तो जवाहरी था। मोतियों आदि की माला कैसे बनती है, अनुभवी है। ब्राह्मणों की माला पिछाड़ी में बनती है। हम सो ब्राह्मण दैवी गुण धारण कर देवता बनते हैं। फिर सीढ़ी उतरनी है। नहीं तो 84 जन्म कैसे लेंगे। 84 जन्मों के हिसाब से यह निकल सकते हैं। तुम्हारा आधा समय पूरा होता है तब दूसरे धर्म वाले एड होते हैं। माला बनाने में बड़ी मेहनत लगती है। बड़ी सम्भाल से मोतियों को टेबुल पर रखा जाता है कि कहाँ हिले नहीं। फिर सुई से डाला जाता है। कहाँ ठीक न बनें तो फिर माला तोड़नी पड़े। यह तो बहुत बड़ी माला है। तुम बच्चे जानते हो — हम पढ़ते हैं नई दुनिया के लिए। बाबा ने समझाया है कि स्लोगन बनाओ — कैसे शूद्र सो ब्राह्मण, ब्राह्मण सो देवता कैसे बनत हैं, आकर समझो। इस चक्र को जानने से तुम चक्रवर्ती राजा बनेंगे। स्वर्ग का मालिक बन जायेंगे। ऐसे स्लोगन बनाकर बच्चों को सिखलाना चाहिए। बाबा युक्तियां तो बहुत बतलाते हैं। वास्तव में वैल्यु तुम्हारी है। तुमको हीरो-हीरोइन का पार्ट मिलता है। हीरे जैसा तुम बनते हो फिर 84 का चक्र लगाए कौड़ी मिसल बनते हो। अब जबकि हीरे जैसा जन्म मिलता है तो कौड़ियों

f पिछाड़ी क्यों पड़ते हो। (ऐसे भी नहीं, कोई घरबार छोड़ना है। बाबा तो कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र रहो और सृष्टि चक्र की नॉलेज को जानकर दैवीगुण भी धारण करो तो तुम हीरे जैसा बन जायेंगे। बरोबर भारत 5 हजार वर्ष पहले हीरे जैसा था। यह है — एम ऑब्जेक्ट। इस चित्र को (लक्ष्मी-नारायण के) बहुत महत्व देना है। तुम बच्चों को बहुत सर्विस करनी है प्रदर्शनी म्युज़ियम में। विहंग मार्ग की सर्विस बिगर तुम प्रजा कैसे बनायेंगे? भल इस ज्ञान को सुनते भी हैं परन्तु ऊंच पद कोई बिरले पाते हैं। उनके लिए ही कहा जाता है कोटों में कोई। कॉलरशिप भी कोई लेते हैं ना। 40-50 बच्चे स्कूल में होते हैं, उनसे कोई एक स्कॉलरशिप लेता है, कोई थोड़ा प्लस में आ जाता है तो उनको भी देते हैं। यह भी ऐसे है। प्लस में बहुत हैं। 8 दाने हैं सो भी नम्बरवार हैं ना। वह पहले-पहले राज गद्दी पर बैठेंगे। फिर कला कम होती जायेगी, लक्ष्मी नारायण का चित्र है नम्बरवन। उनकी भी डिनायस्टी चलती है, परन्तु चित्र लक्ष्मी-

g नारायण का ही दिया हुआ है। यहाँ तुम जानते हो चित्र तो बदलते जाते हैं। चित्र देने से क्या फायदा। नाम, रूप, देश, काल सब बदल जाता है।)

h (मीठे-मीठे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। कल्प पहले भी बाप ने समझाया था। ऐसे नहीं, कृष्ण ने गोप-गोपियों को सुनाया। कृष्ण के गोप-गोपियाँ होते नहीं। न उनको ज्ञान सिखाया जाता है। वह तो हैं सतयुग का प्रिन्स। वहाँ कैसे राजयोग सिखायेंगे

i वा पतित को पावन बनायेंगे। अब तुम अपने बाप को याद करो। बाप फिर टीचर भी है। टीचर को स्टूडेन्ट कभी भूल न सकें। बाप का बच्चे भूल न सकें, गुरू को भी भूल न सकें। बाप तो जन्म से ही होता है। टीचर 5 वर्ष बाद मिलता है। फिर गुरू वानप्रस्थ में मिलता है। जन्म से ही गुरू करने का तो कोई फायदा नहीं है। गुरू की गोद लेकर

j भी दूसरे दिन मर जाते हैं। फिर गुरू क्या करते हैं? गाते भी हैं सतगुरू बिगर गति नहीं। सतगुरू को छोड़ वह फिर गुरू कर देते। गुरू तो ढेर हैं। बाबा कहते हैं — बच्चे,

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

तुम्हें कोई देहधारी गुरू आदि करने की दरकार नहीं है, तुम्हें किसी से भी कुछ मांगना नहीं है। कहा भी जाता है –मांगने से मरना भला। सबको चिंता रहती है हम कैसे अपने पैसे ट्रांसफर करें। दूसरे जन्म के लिए वह ईश्वर अर्थ दान-पुण्य करते हैं तो उसका रिटर्न इस ही पुरानी सृष्टि में अल्पकाल के लिए मिलता है। यहाँ तुम्हारा ट्रांसफर होता है नई दुनिया में और 21 जन्मों के लिए। तन-मन-धन प्रभू के आगे अर्पण करना है। सो तो जब आए तब अर्पण करेंगे ना। प्रभू को कोई जानते ही नहीं तो गुरू को पकड़ लेते हैं। धन आदि गुरू के आगे अर्पण कर देते हैं। वारिस नहीं होता है तो सब गुरू को देते हैं। आजकल कायदे अनुसार ईश्वर अर्थ भी कोई देते नहीं हैं। बाप समझाते हैं – मैं गरीब निवाज़ हूँ इसलिए मैं आता ही भारत में हूँ। तुमको आकर विश्व का मालिक बनाता हूं। डायरेक्ट और इनडायरेक्ट में कितना फर्क है। वह जानते कुछ भी नहीं। सिर्फ कह देते हैं हम ईश्वर अर्पण करते हैं। है सब बेसमझी। तुम बच्चों को अब समझ मिलती है तो तुम बेसमझ से समझदार बने हो। बुद्धि में ज्ञान है – बाप तो कमाल करते हैं। जरूर बेहद के बाप से बेहद का वर्सा ही मिलना चाहिए। बाप से तुम वर्सा लेते हो सिर्फ दादा द्वारा। दादा भी उनसे वर्सा ले रहे हैं। वर्सा देने वाला एक ही है। उनको ही याद करना है। बाप कहते हैं – बच्चे, मैं इनके बहुत जन्मों के अन्त में आता हूँ, इनमें प्रवेश कर इनको भी पावन बनाता हूँ। जो फिर यह फरिश्ता बन जाते हैं। बैज पर तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। तुम्हारा यह सब है अर्थ सहित बैजेस। यह तो जीवन दान देने वाला चित्र है। इनकी वैल्यु का किसको भी पता नहीं है और बाबा को हमेशा बड़ी चीज़ पसन्द आती है, जो कोई भी दूर से पढ़ सके। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. बाप से बेहद का वर्सा लेने के लिए डायरेक्ट अपना तन-मन-धन ईश्वर के आगे अर्पण करने में समझदार बनना है। अपना सब कुछ 21 जन्मों के लिए ट्रांसफर कर लेना है।

२. जैसे बाप पढ़ाने की, सम्भालने की और श्रृंगारने की सर्विस करते हैं, ऐसे ब्राह्मण समान सर्विस करनी है। जीवन बन्ध से निकाल सबको जीवन मुक्ति में ले जाना है।

वरदान:- श्रेष्ठता के आधार पर समीपता द्वारा कल्प की श्रेष्ठ प्रालब्ध बनाने वाले विशेष पार्टधारी भव

इस मरजीवा जीवन में श्रेष्ठता का आधार दो बातें हैं: 1-सदा परोपकारी रहना। 2-बाल ब्रह्मचारी रहना। जो बच्चे इन दोनों बातों में आदि से अन्त तक अखण्ड रहे हैं, किसी भी प्रकार की पवित्रता अर्थात् स्वच्छता बार बार खण्डित नहीं हुई है तथा विश्व के प्रति और ब्राह्मण परिवार के प्रति जो सदा उपकारी हैं ऐसे विशेष पार्टधारी बापदादा के सदा समीप रहते हैं और उनकी प्रालब्ध सारे कल्प के लिए श्रेष्ठ बन जाती है।

स्लोगन:-

व्यर्थ सम्बन्ध-सम्पर्क भी एकाउन्ट को खाली कर देता है इसलिए व्यर्थ को समाप्त करो।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

10.6.87 प्रात: क्लास ओम्शान्ति ("पिताश्री") शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे-तुम ब्राह्मण कुल से विष्णुकुल का बनने वाले हो इसलिए तुम्हें पक्का वैष्णव बनना है, कोई भी बेकायदे चीजें प्याज आदि भी नहीं खाना है"

प्रश्न:-तुम बच्चों को किस परीक्षा से डरना वा घबराना नहीं है? उत्तर:-जरा वक्त2 इस पुरानी चप्पली (शरीर) को कोई तकलीफ होती है, बीमारी आदि आती है तो इससे डरना वा घबराना नहीं है और ही खुश होना है। क्योंकि तुम जानते हो यह कर्मभोग है, पुराना हिसाब किताब चुक्तू हो रहा है। हम योगबल से हिसाब किताब नहीं चुक्तू कर सके तो कर्मभोग से चुक्तू हो रहा है। यह जल्दी खत्म हो तो अच्छा है।

a गीत:-हमारे तीर्थ है.. ओम शान्ति। निराकार शिव भगवानुवाच। उनका तो एक ही नाम है। शिव भगवानुवाच- यह कहना पड़ता है। समझाने के लिए। पक्का निश्चय कराने के लिए। बाप को कहना पड़ता है-मैं जो हूं, मेरा नाम कभी नहीं बदलता। सतयुग के जो देवी देवतायें है वह तो पुनर्जन्म में आते ही हैं। बच्चे जानते हैं जिस मात पिता को याद करते थे वह अब सामने बैठे हैं। बाप इस तन से बच्चों को समझा रहे हैं। हम रूहानी यात्रा पर है।

b बाप भी गुप्त है। दादा भी गुप्त है। कोई भी नहीं जानते। ब्रह्मा तन में परमपिता परमात्मा आते हैं। बच्चे भी गुप्त हैं। कौन जान सकते कि यह ब्राह्मणियां है। यह लक्ष्मी है, गुप्त है। बच्चे भी पूरा समझ नहीं सकते। कहते हैं हम शिवबाबा की सन्तान हैं तो उनसे वर्सा लेना है। उनकी श्रीमत पर चलना है। यह तो निश्चय है ही कि वह हमारा सुप्रीम बाप है। टीचर सतगुरू है। कितनी मीठी2 बातें हैं। हम निराकार शिवबाबा के स्टूडेन्ट है। हमको राजयोग सिखाते हैं। भगवानुवाच है बच्चे मैं तुमको राजयोग सिखाता हूं। मेयर तो ऐसे नहीं कहेंगे,

c हे बच्चे। सन्यासी भी ऐसे कह न सकें। बच्चे कहना तो बाप का ही फर्ज है। बच्चे भी जानते है हम निराकार बाप के बच्चे हैं। उनके सम्मुख बैठे हैं। प्रजापिता बी०के० कुमारियां है। प्रजापिता अक्षर न डालने से मनुष्य समझते हैं ब्रह्मा तो सूक्ष्मवतनवासी देवता है। वह फिर यहां कहां से आया। कहते हैं ब्रह्मा देवताए नम:, शंकर देवताए नम: फिर गुरू भी कहते हैं गुरू ब्रह्मा, गुरू विष्णु, अब विष्णु वा शंकर तो गुरू है नहीं। समझते हैं पार्वती को कथा सुनाते हैं तो गुरू ठहरा। गुरू विष्णु भी नहीं है। सतयुग में ल०ना० गुरू बनते नहीं हैं। कृष्ण को भी बड़ा गुरू गीता का भगवान बना दिया है। लेकिन भगवान एक है, यह बात तुम बच्चों को सिद्ध करनी है। तुम गुप्त सेना हो। रावण पर जीत पाते हो अर्थात माया जीते जगतजीत बनते हो। माया धन को नहीं कहा जाता। धन को सम्पत्ति कहा जाता है। तो बाप बच्चों को समझाते हैं, बच्चे अब मौत सामने खड़ा है। यह वही 5हजार वर्ष पहले वाले अक्षर है। सिर्फ निराकार भगवानुवाच के बदले साकार कृष्ण का नाम लिख दिया है। बाप कहते है- यह नालेज जो तुमको अभी मिलती है। यह है भविष्य प्रालब्ध के लिए। प्रालब्ध मिल गई फिर नालेज की दरकार नहीं। यह नालेज है ही पतित से पावन बनने की। पावन दुनिया में फिर

d किसी को गुरू करने की दरकार नहीं। वास्तव में गुरू तो एक ही परमपिता परमात्मा है। पुकारते भी हैं हे पतित पावन आओ तो समझाना चाहिए ना। वही सुप्रीम गुरू है। सर्व का सद्गति दाता राम गाया जाता है। तो वह जरूर तब आयेंगे जब सभी दुर्गति में है। कहते भी हैं हम पतित भ्रष्टाचारी हैं। विष्णु वैतरणी नदी में गोता खाते रहते हैं। वहां तो है क्षीरसागर, सुख का सागर। विष्णु वैतरणी नदी वहां होती नहीं। विष्णु क्षीर सागर में रहेंगे तो जरूर उनके बच्चे भी साथ रहेंगे। अभी तुम ब्राह्मण कुल के हो फिर विष्णु कुल के बनेंगे। वह तो कम्पलीट वैष्णव है ना। देवताओं के आगे कभी बेकायदे चीज प्याज आदि नहीं रखेंगे। फिर से ऐसा देवता बनना है। तो यह सब छोड़ना पड़ेगा। यह है संगम युग। समझाया गया है तुम ब्राह्मण ही संगम पर हो। बाकी सब कलियुग में हैं। जब तक ब्राह्मण न बनें तब तक सतयुग नहीं सकेंगे। बाप कहते हैं मैं कल्प के संगम पर आता हूं। वह समझते ही नहीं। यह कोई संगम है। दुनिया बदलती है ना। गाते भी हैं परन्तु कैसे बदलती यह कोई भी नहीं जानते। ऐसे ही सिर्फ मुख से कह देते हैं। तुम अच्छी रीति समझते हो।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

से ही श्रेष्ठ बनेंगे। बाबा को याद करना है। देह सहित देह के सभी सम्बन्धों को भूल जाना है। बाबा ने नंगा शरीर बिना भोगा था। फिर नंगे जाना है। यहाँ आये हैं पार्ट बजाने।

e यहाँ गुप्त मेहनत, बाप और वर्से को याद करना है। तुम घड़ी2 यह भूल जाते हो। बाबा को भूलने से माया की चमाट लग जाती है। यह भी खेल है। अल्लाह अवलदीन का दिखाते हैं ना। अल्लाह ने अवल धर्म स्थापन किया। ठका किया और बहिश्त मिला। यह धर्म कौन स्थापन कर रहे हैं-अल्लाह ने पहला नम्बर का धर्म स्थापन किया। हातमताई का भी खेल दिखाते हैं इकतरा न डालने से माया आ जाती है। तुम्हारा भी यह हाल है। बाप को भूल कर और सभी को याद करते रहते हैं। अब तुम बच्चे जानते हो हम शान्तिधाम जा रहे हैं। फिर सुखधाम में आयेंगे। दुखधाम को भूल जाने का पुरुषार्थ करो। यह तो सब खत्म हो जाने का है। हम लखपति हैं, ऐसे हैं.. यह बुद्धि में नहीं रखना है। हम तो हैं ही नंगे। नंगे आये फिर नंगे जाना है। यह तो पुरानी चीज है। इस पुरानी जुत्ती ने बड़ा दुख दिया है। जितना बीमारी जास्ती हो खुशी होनी चाहिए। नाचना चाहिए। कर्मभोग है, हिसाब किताब तो चुक्तू करना ही है। इससे डरना नहीं है। समझना चाहिए हम योगबल से विकर्म विनाश नहीं कर सकते हैं तो कर्म भोगनो से चुक्तू करना पड़ेगा। इसमें घबराने की बात ही नहीं है। यह तो शरीर

f पुराना है। यह जल्दी खत्म हो अच्छा है। और फिर तुम्हारी 7 रोज की भट्ठी भी मशहूर है। 7 रोज अच्छी रीति समझ कर बुद्धि में धारण कर फिर भले कहाँ भी चले जाओ। मुरली तो मिलती रहेगी। वही बस है। बाप को याद करते चक्कर फिराते रहो। 7 रोज में स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। 7 रोज का पाठ भी रखते हैं। 7 रोज मशहूर है। ग्रंथ भी 7 रोज रखते हैं। भट्ठी भी 7 दिन की है। ऐसे भी नहीं जो आवे उनको 7 दिन के लिए कहना है। मनुष्य की रग भी देखनी होती है। पहले ही 7 रोज का कोर्स कहने से कोई तो डर जाते हैं। समझते हैं हम रह नहीं सकते तो क्या करेंगे। चले जाते हैं। इसलिए मनुष्य को देखना पड़ता है। हर एक की नब्ज देखनी चाहिए। पहले तो जाँच करनी चाहिए। कितने दिन के लिए आये हैं। फट से 7 दिन कहने से डर जाते हैं। 7 दिन कोई दे नहीं सकते। सर्जन कोई ऐसा होता है

g जो नब्ज देखा और झट बताया। यह2 तुम्हारी बीमारी है। यह भी तो तुम्हारा अविनाशी ज्ञान सर्जन है। तुम बच्चे भी मास्टर सर्जन हो। यह है क्षुद्र ज्ञान यज्ञ। तुम कहते हो एक सेकेण्ड में मनुष्य को जीवनमुक्ति मिल सकती है। तो कोई ऐसे भी कहते हैं जब एक सेकेण्ड में जीवन मुक्ति मिल सकती है तो 7 रोज क्यों कहते हो? सेकेण्ड की बात बताओ। डर जाते हैं। हम तो नहीं रह सकते। इसीलिए पहले नब्ज देखनी चाहिए। सबके लिए एक ही बात नहीं हो

h सकती। बहुत बच्चे डिसर्विस कर देते हैं। फार्म भराने समय नब्ज देखकर पूछना होता। कितना दिन ठहर सकेंगे। वह भी पूछना होता है। अच्छा यह तो बताओ सबका भगवान एक है ना। परमपिता से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है। पहले तो इस बात पर समझाना होता है। वह बाप है, हम बच्चे हैं। बाप तो वर्सा देते हैं। स्वर्ग का रचयिता है। स्वर्ग का वर्सा मिलना चाहिए। अभी तो नर्क है। भारत स्वर्ग था, विश्व के मालिक थे। देवी देवताओं का राज्य था। तो माया ने राज्य छीन लिया है। अब फिर माया पर जीत पाकर राज्य लेना है। पुरानी पतित कलियुगी दुनिया का विनाश सामने खड़ा है तो जरूर पावन दुनिया स्थापन करनी होगी। थोड़ा ईशारा देना चाहिए। फिर आगे चलकर उन बातों को समझते जायेंगे। आज नहीं तो कल आ जायेंगे। जायेंगे कहाँ। एक ही हट्टी है। सद्गति मिलने की। परमपिता परमात्मा शिवबाबा की एक ही हट्टी है। एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिलनी है। हट्टी देखो खेली है। जिसके तुम सेल्फ मैन हो। जो अच्छा सेल्फमैन होगा तो पद भी अच्छा पायेगा। सेल करने का भी अक्ल चाहिए। अगर अक्ल नहीं होगा तो वह क्या सर्विस करेगा। पहले तो सिद्ध किया। फिर 7 रोज की बात। अरे बाप तो वर्सा देने आये हैं। भारत सुखधाम था। अभी भारत दुखधाम है। फिर सुखधाम कैसे बनता है। कौन बनाते हैं। पहले रास्ता बताना है। हम आत्मायें शान्तिधाम की रहवासी हैं फिर आते हैं पार्ट बजाने। अभी बाप कहते हैं बच्चे वापिस जाना है। बाप को याद रखने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। तुम्हारे पंख जो टूट गये हैं वह मिलते रहेंगे। तुम चले जायेंगे मेले

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

30·6·86 प्रात: क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

" मीठे बच्चे अमर बाप आया है तुम बच्चों को ज्ञान का तीसरा नेत्र देने, अभी तुम तीनों कालों और तीनों लोकों को जानते हो"

प्रश्न:- रूहानी बाप रूहों को वर्सा किस आधार पर देते है? उत्तर:- पढ़ाई के आधार पर। जो अच्छी रीति पढ़ते है, देह अभिमान को छोड़ देहीअभिमानी रहने का पुरुषार्थ करते है, उन्हे ही बाप का वर्सा मिलता। लौकिक बाप सिर्फ बच्चों को वर्सा देते लेकिन पारलौकिक बाप का संबंध सब रूहों से है। इसलिए रूहों को वर्सा मिलता है।

गीत:-भोलेनाथ से निराला···ओमशान्ति।रूहानी बच्चे,रूहानी बाप से अमरकथा सुन रहे है।इस मृत्युलोक से जाने लिए।निर्वाणधाम को अमरलोक नहीं कहा जाता।अमरलोक जहाँ तुम अकाले मृत्यु को नहीं पाते हो।इसलिए उसको अमरलोक कहा जाता है।यहाँ मृत्यु को पाते हो इसलिए मृत्युलोक कहा जाता है।रूहानी बाप जिसको अमरनाथ कहा जाता है जरूर अमरलोक में ले जाने लिए मृत्युलोक में कथा सुनायेंगे। 3कथायें भारत में ही मशहूर है।अमरकथा,सत्य नारा०की कथा,तीजरी की कथा।भक्ति मार्ग में तो तीजरी का अर्थ कोई समझते ही नहीं है। ज्ञान का तीसरा नेत्र सिवाए ज्ञान सागर अमर बाबा के कोई दे न सके।यह भी झूठी कथायें सुनाते हैं।मीठे2रूहानी बच्चे अब जान गये है कि हमको अब ज्ञान का तीसरा नेत्र मिल रहा है।जिस तीसरे नेत्र से तीनों कालों, तीनों लोकों को तुम जान चुके हो।मूलवतन,सूक्ष्मवतन,स्थूलवतन के आदि मध्य अन्त को भी जान चुके हो।इसलिए बच्चे अपने को त्रिकालदर्शी भी समझते हैं।तुम मीठे2बच्चों बिगर सृष्टि में कोई त्रिकालदर्शी नहीं होता।तीनों कालों अर्थात् सृष्टि के आदि मध्य अन्त को नहीं जानते।मूलवतन,सूक्ष्मवतन,स्थूलवतन को बहुत जानते हैं परन्तु तीनों कालों को अर्थात् आदि मध्य अन्त को कोई नहीं जानते।इसको कहा जाता है रचना के आदि मध्य अन्त को जानना।अब मीठे2रूहानी बच्चे रूहानी बाप से सुन रहे है।हम उनके बच्चे बने है एक ही बार तुम रूहानी बच्चों को रूहानी बाप मिला है।रूहों को पढ़ाते है और सब देह अभिमानी होने कारण कहते है मैं यह पढ़ता हूँ,यह करता हूँ, देह अभिमान आ जाता है।अभी इस संगम पर रूहानी बाप आकर रूहानी बच्चों को कहते है तुम अच्छी रीति पढ़ो।बाप से हरेक बच्चा वर्सा लेने का हकदार है। क्योंकि सब रूहानी बच्चे हो ना।लौकिक संबंध में सिर्फ बच्चा वर्से का हकदार बनता है इस पारलौकिक संबंध में सभी बच्चों,रूहों को वर्सा मिलता है।अमरनाथ की भी कथा सुनाते हैं।पार्वती को पहाड़ी कन्दराओं पर जाकर अमरकथा सुनाई।यह तो राज हैं ना।अब तुम बच्चे जानते हो झूठ क्या है, सत्य क्या है।सब तो जरूर सच्चा बाबा ही सुनायेंगे। बाकी सब है झूठ।बाप एक ही बार सच सुनाकर सचखण्ड का मालिक बनाते हैं।तुम जानते हो झूठ खण्ड को आग लगनी है।यह जो कुछ देखने में आता है यह नहीं रहेगा। समय बाकी थोड़ा है।यह शिवबाबा का ज्ञान यज्ञ है। जैसे लौकिक संबंध में भी वार्ष यज्ञ रचते हैं। कोई कुछ वर्ष रचते हैं,कोई गीता यज्ञ।कोई रामायण यज्ञ रचते हैं।यह है शिवबाबा का रुद्र ज्ञान यज्ञ।यह अन्तिम यज्ञ है।तुम जानते हो हम अमरपुरी में चले जा रहे हैं।बाकी थोड़े मिनट का रास्ता है। कोई भी मनुष्य को यह पता नहीं है।वो तो कह देते हैं,मृत्युलोक से अमरलोक में जाने के लिए 40हजार वर्ष पड़े हैं।अमरलोक सतयुग को कहा जाता है। उनके लिए 40हजार वर्ष कहते हैं।तुम बच्चों को अभी बाबा सम्मुख बैठ अमरनाथ,तीजरी की कथा,सत्य नारायण की कथा सुना रहे हैं।भक्ति मार्ग में क्या2 होता है।वो तो देखा भक्ति मार्ग का कितना बड़ा प्रस्ताव है।जैसे झाड़ का बड़ा प्रस्ताव होता है वैसे ही भक्ति का भी बड़ा कर्मकाण्ड का झाड़ है।यज्ञ,तप,व्रत,नेम आदि कितना करते है। पूरा आधाकल्प तुम भक्ति करते आये हो।इस जन्म के भक्त-तो बड़े बैठे हुए है।पास्ट में भी भक्ति मार्ग चला आया है। मनुष्यों की वृद्धि होती रहती है। तुम भक्ति मार्ग में आये हो तब ही दूसरे धर्म स्थापन हुए है।उनसे हमारा कोई कनेक्शन

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

नहीं। हरेक को अपने धर्म से अटेक्शन है। हरेक की रसम रिवाज अलग है। भारत अमरपुरी था। भारत अब अमरलोक है। भारत सतयुग में था। भारत अर्ध कलियुग में है। सतयुगी मनुष्य से फिर तुम अब कलियुगी बने हो। तुम आदि सनातन देवी देवता धर्म वाले थे। परन्तु अब पतित बनने कारण अपने को देवी देवता कहला नहीं सकते। यह तुमको भूल गया है कि हम सो देवी देवता थे। जैसे क्रिश्चियन कहेंगे क्राइस्ट ने हमारा धर्म स्थापन किया तो हमारी क्रिश्चियनिटी चली आई। ऐसे नहीं कि यूरोपियन धर्म के हैं। वैसे तुम हिन्दुस्तान में रहने वाले अथवा भारत में रहने वाले देवी देवता धर्म के हो परन्तु अपने को देवता कहला नहीं सकते। समझते हो हम तो पापी नीच, कंगाल, विकारी हैं। तुम बच्चों को यह पता नहीं था कि हम सो देवी देवता थे। हमने 84 जन्म भोगे। अब हम सो असुर पतित बने हैं। यह बाते अभी बेहद का बाप समझाते हैं। भक्ति मार्ग में मनुष्य दुखी होते हैं तो बाप को पुकारते हैं ना। यह सिर्फ तुम ब्राह्मण बच्चे ही जानते हो कि जिस बाप को पुकारते आये हैं, वो हमको बेहद का वर्सा देने लिए अमरकथा सुना रहे हैं। हम अमरपुरी के मालिक बनने वाले हैं। अमरपुरी को स्वर्ग कहा जाता है। तुम कहेंगे हम स्वर्गवासी बनने लिए पुरूषार्थ कर रहे हैं। कलियुग में मनुष्य मरते हैं तो कहते हैं स्वर्गवासी हुआ। अब उसने कोई स्वर्ग में जाने का पुरूषार्थ थोड़ेही किया। तुम तो पुरूषार्थ कर रहे हो अमरपुरी वैकुण्ठ में जाने लिए। पुरूषार्थ
a कराने वाला कौन? अमर बाबा जिसको अमरनाथ भी कहा जाता है। इस यज्ञ की पाठशाला भी कहा जाता। दूसरी कोई पाठशाला को यज्ञ नहीं कहा जाता। यज्ञ अलग रचे जाते हैं। जिसमें ब्राह्मण लोग बैठ मन्त्र जन्त्र पढ़ते हैं। बाप कहते हैं यह तुम्हारा कालेज
b भी है तो यज्ञ भी है। दोनों इकट्ठे हैं। तुम जानते हो इस ज्ञान यज्ञ से विनाश ज्वाला प्रज्वलित हुई है। इसमें सारी दुनिया स्वाहा हो जाने वाली है। फिर नई दुनिया बनने वाली है। इसका नाम ही है महाभारी महाभारत लड़ाई। इस जैसी और कोई लड़ाई होती नहीं। कहते हैं युद्ध में मुसलों से लड़ाई हुई। तुम्हारे साथ लड़ाई तो है नहीं। इसको महाभारत लड़ाई क्यों कहते हैं? भारत में तो एक ही धर्म होता है ना। मौत तो बाहर है। यहाँ लड़ाई की तो बात नहीं। बाप समझाते हैं तुम्हारे लिए नई दुनिया चाहिए। तो तुम्हारे कारण यह सब अनेक धर्म विनाश कराने हैं। तुम जानते हो वह हैं शूद्र वर्ण के, हम ब्राह्मण धर्म में आये हैं। वर्ण भी भारत के लिए है। ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र वर्ण यह सिवाए भारत के और कोई धर्म में नहीं कहेंगे। वर्ण तो है ही तुम्हारे लिए। तुम्हारी बुद्धि में विराट रूप का भी सारा ज्ञान है। यह भी समझते हो जो कल्प पहले आये थे वही आयेंगे देवता बनने के लिए। बुद्धि का काम है। हम कितने ब्राह्मण बने हैं अब फिर
c देवता बनेंगे। प्रजापिता ब्रह्मा भी गाया हुआ है। परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा मनुष्य सृष्टि रचते हैं इसलिए ब्रह्मा को प्रजापिता कहते हैं। परन्तु कैसे कब रचते हैं, यह नहीं जानते। क्या शूद्र मनुष्य नहीं हैं जिनको रचते हैं? बुलाते ही हैं पतित पावन आओ। तो जब मनुष्य होते हैं तब तो बाप आते हैं। दुनिया को बदलना है। तुमको बाम नई दुनिया के लायक बनाते हैं। अभी सब तमोप्रधान पुरानी दुनिया में है फिर सतोप्रधान बनना है। बाप ने समझाया है हरेक मनुष्य मात्र को हर चीज को सतो रजो तमो में आना होता है। नई से पुरानी जरूर होती है। कपड़ा भी नया पहनते हैं फिर पुराना होता है। तो कहेंगे ना पहले सतोप्रधान फिर जरूर सतो रजो तमो बनता है। तुमको ज्ञान मिलता है। सत्य नारायण की कथा अभी तुम सुन रहे हो। पण्डित लोग तो कच्छी बगली में कथा ले जाते हैं। वही कथा सुनाते हैं। गीता है सर्वशास्त्र मई शिरोमणी। बाकी है उनके बाल बच्चे। जैसे ब्रह्मा की वंशावली, वैसे गीता है मुख्य। ऊंच ते ऊंच मां बाप। बाकी हैं बच्चे। भी मां बाप से वर्सा मिल सकता है। बाकी कितने भी शास्त्र पढ़े, कुछ भी करे वर्सा मिल न सके। करके जो बहुत शास्त्र पढ़ते हैं उनकी बहुत कमाई होती है। वह तो हो गया अल्पकाल के लिए। यहाँ तुम बच्चे सुनते हो तो कितनी कमाई करते हो। 21 जन्म के लिए। विचार करो वह एक सुनायेंगे सब उनको पैसे देंगे। यहाँ बाप तुम बच्चों को सुनाते हैं। तुम 21 जन्म के लिए कितने साहूकार बनते हो। सुनाने वाला शिवबाबा

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

थोड़े ही साहूकार बनता है।तुम सब सुनने वाले साहूकार बनते हो।वहाँ सुनाने वाले की जेब भरती है।वास्तव में भक्ति आदि करना प्रवृत्ति मार्ग वालों का काम है।तुम हो प्रवृत्ति मार्ग वाले।तुम जानते हो हम पूज्य देवी देवता थे फिर पीछे पूज्य से पुजारी बने हैं।स्वर्गलोक में तुम पूज्य थे।नहीं तो 84जन्मों का हिसाब कहाँ से आवे? यह है रूहानी ज्ञान जो सुप्रीम रूह ज्ञान सागर से मिलता है।पतित पावन बाप ही सबकी सद्गति दाता है।तुम्हारी बुद्धि में है हम आत्मायें हैं,हमारा बाप परमपिता परमात्मा है।हम बच्चों को अमरकथा सुना रहे हैं।अमरलोक में ले जाने,नर से नारायण बनाने। सच्ची सत्य नारायण की कथा सुना रहे हैं।जन्म जन्मान्तर झूठी कथा सुनते आये हो। अब सच्ची कथा सुना रहे हैं।जिससे तुम 16कला सम्पूर्ण बनते हो।चन्द्रमा को 16कला सम्पूर्ण कहा जाता है।सूर्य के लिए नहीं कहते हैं।तुम जानते हो हम आत्मायें भविष्य में सर्वगुण सम्पन्न 16कला सम्पूर्ण बनेंगे।फिर आधाकल्प बाद उन्हों में खाद पड़ जाती है। अभी तुम समझते हो हम फिर से सर्वगुण सम्पन्न सो देवी देवता फिर से बन रहे हैं।अभी हम ब्राह्मण हैं फिर सो देवता बनेंगे।हम आत्मायें पहले अपने घर जायेंगे फिर हम शरीर धारण कर सो देवता बनेंगे।फिर चन्द्रवंशी घराने में आयेंगे। 84जन्मों का हिसाब किताब चाहिए ना।किस युग में,किस वर्ण में कितने2जन्म हुए। बाप ने 84जन्मों की सच्ची2कथा अब सुनाई है।तुम बच्चों को कहेंगे तुम भारतवासी 84जन्म लेते हो।अपने को एक तो ब्राह्मण समझना पड़े।तुम्हा बाबा कहते हो ना।वर्सा शिवबाबा से लेते हो, ब्रह्मा बाबा द्वारा।ब्रह्मा भी उनका हो गया।ब्रह्मा से वर्सा मिल न सके।यह भी भाई हो गया।यह शरीर धारी है ना।तुम सब बच्चे वर्सा उनसे पाते हो,इनसे नहीं। जिससे वर्सा नहीं पाना है,उनको याद नहीं करना है।बाबा का चित्र आदि मांगते हैं।बाबा कहते हैं चित्र की तो कोई दरकार ही नहीं।एक शिवबाबा को ही याद करना है।उनको ही कहते हैं तुम मात पिता तुम उनके पास आये हो तो बुद्धि में रहता है कि हम शिवबाबा के पास जाते हैं।याद शिवबाबा को ही करना है।)

तुम बच्चे जानते हो आत्मा बिन्दी है।उसमें 84जन्मों का पार्ट नूंधा हुआ है। आत्मा भ्रकुटी के बीच में रहती है।उड़ती भी सेकेण्ड में है। मैं आत्मा भ्रकुटी के बीच बिन्दी मिसल रहता हूँ।एक शरीर छोड़ दूसरा लेता हूँ।भ्रकुटी के बीच जाकर विराजमान होता हूँ,बुद्धि में समझ है हमारी आत्मा ऐसी है।सतयुग में तो कोई ऐसी चीज देखने की आशा नहीं रहती। आत्मा को देख सकते हैं दिव्य दृष्टि से।कोई इन आंखों से देखने की बात नहीं है।भक्ति मार्ग में ही साक्षात्कार करते हैं।जैसे रामकृष्ण का शिष्य विवेकानंद था उसने बताया मैं सामने बैठा था तो उनकी आत्मा निकल मेरे में प्रवेश हुई,ऐसे कोई होता नहीं है। आत्मा कैसे एक शरीर छोड़ दूसरे में प्रवेश करती है,यह सब बातें तुम बच्चों को समझाई जाती हैं।अभी तुम समझते हो हम अमरलोक में जाने लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं।अमरलोक में हम जन्म लेंगे।वहाँ हम गर्भमहल में होंगे।यहाँ तो गर्भमहल में बहुत तकलीफ करते हैं।अब आधाकल्प लिए बाबा तुमको सभी दुखों से छुड़ाते हैं तो कितना प्यार से ऐसे बाप को याद करना चाहिए। अच्छा- मीठे2सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग।रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

स्वउन्नति के लिए दो संकल्प:-

1-स्वयं को ईश्वरीय रूहानी बाप से पढ़कर पूरा वर्सा लेना है।सचखण्ड का मालिक बनने के लिए सच्ची कथा सुननी और सुनानी है।इस झूठी दुनिया को अब आग लगनी है इसलिए इसे देखते भी नहीं देखना है।

2-जिस बाप से बेहद का वर्सा मिलता है उसे ही याद करना है,किसी देहधारी को नहीं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

20.8.85 प्रातः क्लास ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

"बाबा आये हैं इस सारी सूखी सृष्टि पर ज्ञान बरसात कर हरा भरा बनाने"

प्रश्नः- बाप के वण्डरफुल कर्तव्य सुनाओ जो आज तक किसी ने न किये हों?

उत्तरः- बाप का कर्तव्य है तुम निर्गुण मनुष्यों को गुणवान देवता बनाना, 2-नई दुनिया का उद्घाटन करना, 3-अपने संग से सबको तार देना अर्थात् सद्गति में ले जाना, 4-खोरखण्ड को स्थापना करना, 5-सूखी सृष्टि पर ज्ञान बरसात कर सब्ज बनाना। ऐसे वण्डरफुल कर्तव्य बाप के सिवाए कोई कर नहीं सकते।

रिकार्ड-जो पियां के साथ है..... ।ओमशान्ति। मीठे2 रुहानी बच्चों के प्रति रुहानी बाप समझा रहे हैं।जो रुहानी बाप के साथ हैं, क्योंकि बाप है ज्ञान का सागर, कौन सा बाप? शिवबाबा।ब्रह्मा बाबा को ज्ञान का सागर नहीं कहेंगे।शिवबाबा जिसको ही परमपिता परमात्मा कहा जाता है।एक है लौकिक हद का बाप, जिस्मानी पिता, दूसरा है परलौकिक रुहानी पिता।वह शरीर का पिता, वह आत्माओं का पिता।ये बड़ी अच्छी समझने की बातें हैं और ये ज्ञान सुनाने वाला है ज्ञानसागर।जैसे भगवान सबका एक है वैसे ज्ञान भी एक ही है सकते हैं, बाकी जो शास्त्र, गीता आदि पढ़ते हैं भक्ति करते हैं, वह कोई ज्ञान नहीं।इनसे ज्ञान की वर्षा नहीं होती है।शास्त्र गीता आदि पढ़ते हैं, भक्ति करते हैं वह कोई ज्ञान नहीं है। इसलिए भारत बिल्कुल ही सूख गया है।कंगाल बन गया है।वह बरसात भी न पड़ने से जमीन आदि सूख जाती है।वह है भक्तिमार्ग, उसको ज्ञानमार्ग नहीं कहेंगे।ज्ञान से स्वर्ग की स्थापना होती है।वहां हमेशा पृथ्वी सब्ज रहती है।कब सूखती नहीं है।यह है ज्ञान की पढ़ाई।रावण राज्य में है भक्ति।वह है आसुरी स्वभाव वाले मनुष्य व आसुरी सम्प्रदाय।फिर ईश्वर बाप आकर ज्ञान देकर दैवी सम्प्रदाय बनाते हैं।बाप ने समझाया है मैं तुम सभी आत्माओं का बाप हूँ।परन्तु मुझे और मेरे कर्तव्य को न जानने के कारण मनुष्य इतने पतित दुखी निधन के बन गये हैं।आपस में लड़ते झगड़ते रहते हैं।घर में बाप नहीं होता है तो बच्चे लड़ते हैं तो कहते हैं कि तुम्हारा बाप है कि नहीं है।इस समय भी सारी दुनिया बाप को नहीं जानती, न जानने के कारण इतनी दुर्गति हुई है।जानने से सद्गति होती है।सर्व का सद्गतिदाता एक है। उनको बाबा कहा जाता है।उनका नाम ही है शिव।वह कब देह नहीं लेते हैं।अभी देह ली है तुम बच्चों को नालेज देने के लिए।तो भी उनका नाम शिव ही है।उनका नाम कब बदल नहीं सकता।जब सन्यास करते हैं तो नाम बदली होता है।शादी में भी कुमारी का नाम बदलते हैं।ये यहां भारत में रिवाज है।बाहर में ऐसा नहीं होता है।सन्यासियों को कब बाप नहीं कहेंगे।ये शिवबाबा तो माई बाप है।गाते भी हैं तुम मात पिता.....।भारत में ही पुकारते हैं तुम्हारी कृपा.....ऐसे नहीं कि भक्तिमार्ग में भगवान कृपा करते हैं।नहीं, भक्ति में सूख घनेरे होते ही नहीं।बच्चे जानते हैं कि स्वर्ग में बहुत सुख है।वह नई दुनिया है।पुरानी दुनिया में दुख ही दुख होता है।जो जीते जी अच्छी रीति मरे हुए हैं, उनके नाम बदल सकते हैं।परन्तु माया जीत लेती है तो ब्राह्मण से बदल शूद्र बन जाते हैं इसलिए बाबा नाम नहीं रखते हैं। ब्राह्मणों को माला तो होती ही नहीं।तुम बच्चे सर्वोत्तम ऊँच कुल वाले हो।ऊँच रुहानी सेवा करते हो।यहां बैठे व चलते फिरते तुम भारत को खास और विश्व को आम सेवा करते हो। विश्व को तुम पवित्र बनाते हो।तुम ही बाप के मददगार।बाप की श्रीमत पर चलकर तुम मदद करते हो।ये भारत ही पावन बनने का है।तुम कहेंगे हम कल्प-कल्प इस भारत को पवित्र बनाये पवित्र भारत पर राज्य करते हैं।ब्राह्मण ही हम भविष्य देवी देवता बनेंगे।विराट रूप का चित्र भी है।प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे ब्राह्मण ही ठहरे।ब्राह्मण तब होंगे जब प्रजापिता सम्मुख होगा।अभी तुम सम्मुख हो।तुम हरेक प्रजापिता ब्रह्मा की औलाद अपने को समझते हो। ये युक्ति है औलाद समझने से भाई-बहन हो जाते हैं।भाई-बहन को कब क्रिमिनल आई हो न सके।बाप आडिनेन्स निकालते हैं कि तुम 63 जन्म पतित रहे हो अब पावन दुनिया स्वर्ग में चलने चाहते हो तो पवित्र बनो।वहां पतित आत्मा जा नहीं सकती, इसलिए बेहद के बाप को तुम बुलाते हो।ये आत्मा शरीर द्वारा बात करती है।शिवबाबा भी कहते हैं कि मैं इस शरीर द्वारा बात करता हूँ।नहीं तो मैं कैसे आयें।मेरा जन्म दिव्य है।सतयुग में हैं दैवी गुणों वाले देवतायें।इस समय हैं आसुरी गुणों वाले मनुष्य।यहां के मनुष्यों को देवता नहीं कहेंगे फिर भले कोई भी हो। नाम तो बड़े बड़े रख देते हैं। [illegible]

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

श्री श्री कहते है और मनुष्यों को श्री कहते है क्योंकि खुद पवित्र है इसलिए श्री श्री कहते है। तो मनुष्य भल विकार में नहीं जाते, परन्तु विकारी दुनिया में तो है ना। तुम भविष्य में निर्विकारी देवी दुनिया में राज्य करेंगे। होंगे वहाँ भी मनुष्य, परन्तु देवी गुणों वाले। इस समय मनुष्य आसुरी गुणों वाले पतित है। गुरू नानक ने भी कहा था मूत पलीती इ...। गुरू नानक भी बाप को महिमा करते है। अब बाप आये है स्थापना और विनाश करने। और जो भी धर्म स्थापक है वह सिर्फ धर्म स्थापन करते है और धर्मो का विनाश करते है, ऐसे नहीं कहेंगे। विनाश करने वाले कोई नहीं है। उन्हों को तो वृद्धि होती रहती है। अभी बाप वृद्धि को बन्द करते है। एक धर्म की स्थापना कर अनेक धर्मों का विनाश करा देते है। ड्रामा अनुसार ये होना ही है। बाप कहते है आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना मैं करता हूँ। जिसके लिए तुमको पढ़ा रहा हूँ। सतयुग में अनेक धर्म होते ही नहीं है। ड्रामा में इन सभी के वापस जाने की नूंध है। इस विनाश को कोई टाल नहीं सकते है। विश्व में शान्ति होती है तब जब विनाश होगा। इस लड़ाई द्वारा स्वर्ग के गेट खुलते है। ये भी तुम लिख सकते हो कि ये महाभारत लड़ाई कल्प पहले भी लगी थी। तुम प्रदर्शनी का उद्घाटन कराते हो तो लिखो-बाप परमधाम से आये है हेविन का उद्घाटन करने। बाप कहते है मैं हेविनली गाड फादर, हेविन का उद्घाटन करने आया हूँ। बच्चों को ही मदद लेता हूँ। स्वर्गवासी बनाने के लिए। इतनी सब आत्माओं को पावन कैसे बनाऊँगा। ढेर आत्मायें है। घर 2 में तुम ये समझा सकते हो कि भारत वासी तुम सतोप्रधान थे फिर 84 जन्म बाद तमोप्रधान बने हो। अब फिर सतोप्रधान बनो। मन्मनाभव। ऐसे मत कहो कि हम शास्त्रों को नहीं मानते है। बोलो शास्त्रों को और भक्ति को हम मानते थे, परन्तु अभी ये भक्तिमार्ग की रात पूरी होती है। ज्ञान से दिन शुरू होता है। बाप आये है सद्गति करने तो फिर भक्ति कैसे करेंगे। हम जानते है, बहुत शास्त्र भी पढ़े है। परन्तु जब कि अभी ज्ञान का सागर आया है सद्गति करने तो फिर दुर्गति की तरफ कैसे जायेंगे। बाप आकर दुर्गति का विनाश और सद्गति की स्थापना कराते है। अब बताओ किसकी तरफ लें। समझाने की बड़ी युक्ति चाहिए। कोई अच्छी रीति धारण करते है, कोई कम करते है। प्रदर्शनी में भी जो अच्छे 2 बच्चे है वह अच्छा समझाते है। जिसे बाप टीचर है तो बच्चों को भी टीचर बनना पड़े। गायन भी जाता है सतगुरू तारे। बाप को ही कहा जाता है सच्चखण्ड स्थापन करने वाला, सच्चा बाबा। झूठ खण्ड स्थापन करने वाला है रावण। अब जब कि सद्गति करने वाला मिला है तो फिर हम भक्ति कैसे करेंगे। भक्ति सिखलाने वाले है अनेक गुरू लोग। वो कोई सतगुरू नहीं है। सतगुरू तो एक ही है। कहते भी है सतगुरू अकाल। फिर भी अनेक गुरू बनते रहते है। सन्यासी उदासी बहुत प्रकार के गुरू लोग होते है। सिख लोग खुद ही कहते है सतगुरू अकाल अर्थात् जिसको काल नहीं खाता है। मनुष्य को तो काल खा जाता है। इस समय के अनेक गुरू सच बोलने वाले नहीं है। सतगुरू तो एक ही है, सच बोलने वाला। झटपटी भी है ना। बाप समझाते है मन्मनाभव। उनका फिर है जम साहब को तो सुख मिले। मुख्य दो अक्षर है। बाप समझाते है कि याद करो, जम साहब को। साहब तो एक है। गुरू नानक ने भी उनके लिए इशारा किया है कि उनको जपो। वास्तव में तुमको जपना नहीं है, याद करना है। ये है अजपा जाप। मुख से कुछ बोलो नहीं, शिव शिव भी कहना न है। तुमको तो जाना है शान्तिधाम। अब बाप को याद करो। अजपाजाप भी एक ही होता है जो बाप सिखलाते है। वह तो कितने झिण्ड बजाते है, आवाज करते है, उपमा करते है। कहते है कि अचतम् केशवम् .....। लेकिन एक भी अक्षर को समझते नहीं है। सुख देने वाला तो एक ही बाप है। व्यास भी उनको ही कहेंगे। उनमें जो नालेज है वह नालेज देते है। सुख भी वही देते है। तुम बच्चे समझते हो कि भक्ति से हम सीढ़ी उतरते रहते है फिर अब चढ़ती कला होनी है। सीढ़ी के चित्र में कलाओं को भी दिखाया है। इस समय कोई कला नहीं है। मैं निर्गुण हारे...। एक निर्गुण संस्था भी है। अब बाप समझाते है। बालक तो महात्मा मिसल होता है। उनमें कोई अवगुण नहीं होता है। उनका फिर नाम रख देते निर्गुण बालक। अगर बालक में गुण नहीं तो माँ बाप में भी नहीं। सब में अवगुण है। गुणवान सिर्फ देवतायें बनते है। नम्बरवन अवगुण है जो बाप को नहीं जानते है। दूसरा अवगुण है जो विश्व सागर में गोता खाते है। बाप कहते है आधा कल्प तुम्हें गोता खाना है। अब मैं आपका [illegible] मैं तो

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

20.8.85 प्रातः मुरली अव्यक्त बापदादा मधुबन

क्षीर सागर में जाने के लिए तुमको शिक्षा देता हूं। मैं इनके बॉडी में आकर बैठता हूं। जहां आत्मा रहती है वह स्वतन्त्र है, कहां भी जा आ सकती है, तुम पिक्चर को खिलाते हो तो आत्मा को खिलाते हैं। शरीर तो भस्म हो जाता है, उनको देख भी नहीं सकते हैं। समझते हैं कि फलाने को आत्मा का आह्वान है। आत्मा को बुलाया जाता है, यह भी ड्रामा में पार्ट है। कब जाते हैं, कब ने भी बोले हैं। कोई बताते हैं, कोई न भी बताते हैं। यहां भी आत्मा को बुलाते हैं। आकर बोलते हैं। परन्तु ऐसे नहीं बताते हैं कि फलाने जगह जन्म लिया है। सिर्फ इतना कहेंगे कि हम बहुत सुखी हैं, अच्छे घर में जन्म लिया है। अच्छे बोन वाले बच्चे अच्छे घर में जायेंगे, कम ज्ञान वाले कम पद पायेंगे। बाकी सुख तो है। राजा बनना अच्छा या दास-दासी बनना अच्छा। राजा बनना है तो इस पढ़ाई में लग जाओ। दुनिया तो बहुत गन्दी है, दुनिया का संग कुसंग है। एक सतु का संग ही पार करता है, बाकी सब डुबोते हैं। बच्चे लिखते हैं कि हम स्वर्गवासी बनेंगे, गटर में नहीं जायेंगे, तो उनको मारते हैं। हम विष बिगर रह नहीं सकते। विष तो जरूर तो मैं कूदता हूं। उनको क्या गति होगी। स्वर्ग में तो कब जा नहीं सकते। बाप तो सबको जन्म-मरण जानते हैं ना। ये पाप की दुनिया है तब तो पुकारते हैं और कहीं लिखते हैं। अब बाप कहते हैं मीठे-2 बच्चो मेरा बन कर मेरे मत पर चलो। ये बहुत गन्दी दुनिया है। करप्शन है। लाखों करोड़ों को ठगी होती है। अब बाप आये हैं बच्चों को स्वर्ग का मालिक बनाने। तो अथॉरिटी होनी चाहिए। वास्तव में ये है सच्चा गीता। फिर ये ज्ञान पुनर्जन्म में लोप हो जायेगा। अभी तुमको ये ज्ञान है। फिर दूसरा जन्म लेंगे तो ज्ञान खत्म। फिर है प्रालब्ध। पूज्य से तुम बनाने के लिए बाप पढ़ाते हैं। अभी तुमने बाप को जान लिया। अब अमरनाथ की यात्रा होती है, बोलो जिसको पत्थर में दिखाते हो वह फिर स्थूलवतन में कहां से आया। पहाड़ आदि तो यहां है ना। वहां पतित हो कैसे सकते हैं जो पार्वती को ज्ञान देते हैं। कंकड़ का लिंग बैठ हाथ से बनाते हैं। वह तो कहां भी बना सकते हैं। मनुष्य कितने धक्के खाते हैं, समझते नहीं हैं कि शंकर के पास फिर पार्वती कहां से आई जो उनको पावन बनायेंगी। शंकर कोई परमात्मा नहीं है, वह भी देवता है। मनुष्यों को कितना समझाया जाता है फिर भी समझते नहीं हैं। पक्का बुद्धि बन नहीं सकते। प्रदर्शनी में कितने आते हैं, कहेंगे नालेज तो बहुत अच्छी है, सबको लेनी चाहिए। अरे तुम तो लो, कहेंगे हम को फुरसत नहीं है। प्रदर्शनी में ये भी लिखना चाहिए कि - इस लड़ाई के पहले बाप स्वर्ग का उद्घाटन कर रहे हैं। विनाश के बाद स्वर्ग के द्वार खुल जायेंगे। बाबा ने कहा था कि हरेक चित्र में लिखो - पुरुषोत्तम परमपिता परमात्मा त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। त्रिमूर्ति न लिखने से कहेंगे शिव तो निराकार है वह कैसे ज्ञान देंगे। समझाया जाता है। यही पहले गोरा था कृष्ण था, फिर अब सांवरा। मनुष्य बना हैं। अब तुमको मनुष्य से देवता बनाते हैं। फिर हिस्ट्री रिपीट होनी है। गाते भी हैं - मनुष्य से देवता ... फिर सोढ़ो उतर मनुष्य बनते हैं फिर बाप आये देवता बनाते हैं। बाप कहते हैं मुझे आना पड़ता है। कल्प 2 के संगमयुग पर आता हूं। युगे युगे कहना रांग है। बाप कहते हैं मेरो ग्लानि कर जब बिल्कुल ही महामूरख बन जाते हैं तब मैं आता हूं। मैं सतगुरु आकर तुमको पुण्यात्मा बनाता हूं। फिर रावण तुमको पापात्मा बनाते हैं। बाप ही पुरानी दुनिया को नई दुनिया बनाते हैं। ये समझने की बातें हैं। अच्छा।

मीठे-2 सिकीलधे बच्चों को मातपिता बापदादा का याद प्यार और गुड मार्निंग रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

27-4-01 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - जब भी समय मिले तो एकान्त में बैठ सच्चे माशूक को याद करो क्योंकि याद से ही स्वर्ग की बादशाही मिलेगी"

प्रश्न:- बाप मिला है तो कौन सा अलबेलापन समाप्त हो जाना चाहिए?

उत्तर:- कई बच्चे अलबेले हो कहते हैं हम तो बाबा के हैं ही। याद की मेहनत नहीं करते। घड़ी-घड़ी याद भूल जाती है। यही है अलबेलापन। बाबा कहते बच्चे, अगर याद में रहो तो अन्दर स्थाई खुशी रहेगी। किसी भी प्रकार का घुटका नहीं आयेगा। जैसे बांधेलियाँ याद में तड़फती हैं, दिन-रात याद करती हैं, ऐसे तुम्हें भी निरन्तर याद रहनी चाहिए।

गीत:- तकदीर जगाकर आई हूँ.....

ओम् शान्ति। बाप ने बच्चों को समझाया है - तुम भी कहते हो ओम् शान्ति। बाप भी कहते हैं ओम् शान्ति अर्थात् तुम आत्मायें शान्त स्वरूप हो। बाप भी शान्त स्वरूप है, आत्मा का स्वधर्म शान्त है। परमात्मा का भी स्वधर्म शान्त है। तुम भी शान्तिधाम में रहने वाले हो। बाप भी कहते हैं - मैं भी वहाँ का रहने वाला हूँ। तुम बच्चे पुनर्जन्म में आते हो, मैं नहीं आता। मैं इस रथ में प्रवेश करता हूँ। यह मेरा रथ है। शंकर से अगर पूछेंगे, पूछ तो नहीं सकते परन्तु समझो सूक्ष्मवतन में जाकर कोई पूछे तो कहेंगे यह सूक्ष्म शरीर हमारा है। शिवबाबा कहते हैं यह हमारा शरीर नहीं है। यह हमने उधार लिया है क्योंकि मुझे भी कर्मेन्द्रियों का आधार चाहिए। पहली-पहली मुख्य बात समझानी है कि पतित-पावन, ज्ञान का सागर श्रीकृष्ण नहीं है। श्रीकृष्ण सर्व आत्माओं को पतित से पावन नहीं बनाते हैं, वो तो आकर पावन दुनिया में राज्य करते हैं। पहले प्रिन्स बनते हैं फिर महाराजा बनते हैं। उनमें भी यह ज्ञान नहीं है। रचना का ज्ञान तो रचता में ही होगा ना। श्रीकृष्ण को रचना कहा जाता है। रचता बाप ही आकर ज्ञान देते हैं। अभी बाप रच रहे हैं, कहते हैं तुम हमारे बच्चे हो। तुम भी कहते हो बाबा हम आपके हैं। कहा भी जाता है ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मणों की स्थापना। नहीं तो ब्राह्मण कहाँ से आये। सूक्ष्मवतन वाला ब्रह्मा कोई दूसरा नहीं है। ऊपर वाला सो नीचे वाला सो ऊपर वाला। एक ही है। अच्छा विष्णु और लक्ष्मी-नारायण भी एक ही बात है। वह कहाँ के हैं? ब्रह्मा सो विष्णु बनते हैं। ब्रह्मा-सरस्वती ही सो लक्ष्मी-नारायण फिर वही सारा कल्प 84 जन्मों के बाद आकर संगम पर ब्रह्मा-सरस्वती बनते हैं। लक्ष्मी-नारायण भी मनुष्य हैं, उनका देवी देवता धर्म है। विष्णु को भी 4 भुजायें दी हैं। यह प्रवृत्ति मार्ग दिखाया है। भारत में शुरू से ही प्रवृत्ति मार्ग चला आता है। इसलिए विष्णु को 4 भुजायें दी हैं। यहाँ है ब्रह्मा-सरस्वती, वह सरस्वती एडाप्टेड बच्ची है। इनका असुल नाम लखीराज था, फिर इनका नाम रखा ब्रह्मा। शिवबाबा ने इसमें प्रवेश किया और राधे को अपना बनाया, नाम रखा सरस्वती। सरस्वती का ब्रह्मा कोई लौकिक बाप नहीं ठहरा। इन दोनों के लौकिक बाप अपने-अपने थे। अभी वह नहीं हैं। यह शिवबाबा ने ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट किया है। तुम हो एडाप्टेड चिल्ड्रेन। ब्रह्मा भी शिवबाबा का बच्चा है। ब्रह्मा के मुख कमल से रचते हैं इसलिए ब्रह्मा

a

b

c

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

को भी माता कहा जाता है। तुम मात पिता हम बालक तेरे, तुम्हरी कृपा से सुख घनेरे.. गाते हैं ना। तुम ब्राह्मण आकर बालक बने हो। इसमें समझने की बुद्धि बड़ी अच्छी चाहिए। तुम बच्चे शिवबाबा से वर्सा लेते हो। ब्रह्मा कोई स्वर्ग का रचयिता वा ज्ञान सागर नहीं है। ज्ञान का सागर एक ही बाप है। आत्मा का बाप ही ज्ञान का सागर है। आत्मा भी ज्ञान सागर बनती है परन्तु इनको ज्ञान सागर नहीं कहेंगे क्योंकि सागर एक ही है। तुम सब नदियाँ हो। सागर को अपना शरीर नहीं है। नदियों को है। तुम हो ज्ञान नदियाँ। कलकत्ता में ब्रह्मपुत्रा नदी बहुत बड़ी है क्योंकि उनका सागर से कनेक्शन है। उनका मेला बहुत बड़ा लगता है। यहाँ भी मेला लगता है। सागर और ब्रह्मपुत्रा दोनों कम्बाइन्ड हैं। यह है चैतन्य। वह है जड़। यह बातें बाप समझाते हैं। शास्त्रों में नहीं हैं। शास्त्र हैं भक्ति मार्ग की डिपार्टमेन्ट। यह है ज्ञान मार्ग, वह है भक्ति मार्ग। आधाकल्प भक्ति मार्ग की डिपार्टमेन्ट चली है। उसमें ज्ञान सागर है नहीं। परमपिता परमात्मा, ज्ञान का सागर बाप संगम पर आकर ज्ञान स्नान से सबकी सद्गति करते हैं।)

तुम जानते हो कि हम बेहद के बाप से स्वर्ग के सुखों की तकदीर बना रहे हैं। बरोबर हम सतयुग, त्रेता में पूज्य देवी देवता थे। अभी हम पुजारी मनुष्य हैं। फिर मनुष्य से तुम देवता बनते हो। ब्राह्मण सो देवता धर्म में आये फिर क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बनें। 84 जन्म लेते-लेते नीचे उतरना पड़ा है। यह भी तुमको बाप ने बताया है। तुम अपने जन्मों को नहीं जानते थे। 84 जन्म भी तुम ही लेते हो। जो पहले-पहले आते हैं, वही पूरे 84 जन्म लेते हैं। योग से ही खाद निकलती है, योग में ही मेहनत है। भल कई बच्चे ज्ञान में तीखे हैं परन्तु योग में कच्चे हैं। बांधेलियाँ योग में छुटेलियों से भी अच्छी हैं। वह तो शिवबाबा से मिलने के लिए रात-दिन तड़फती हैं। तुम मिले हो। तुमको कहा जाता है याद करो तो तुम घड़ी-घड़ी भूल जाते हो। तुमको तूफान बहुत आते हैं। वह याद में तड़फती हैं। तुम तड़फते नहीं हो। उन्हों का घर बैठे भी ऊंच पद हो जाता है। तुम बच्चे जानते हो - बाबा की याद में रहने से हमको स्वर्ग की बादशाही मिलेगी। जैसे बच्चा गर्भ से निकलने के लिए तड़फता है। वैसे बांधेलियाँ तडपते-तड़पते पुकारती हैं, शिवबाबा इस बंधन से निकालो। दिन-रात याद करते हैं ना। तुमको बाप मिला है तो तुम अलबेले बन पड़े हो। हम बाबा के बच्चे हैं। हम यह शरीर छोड़ जाए प्रिन्स बनेंगे, यह अन्दर स्थाई खुशी रहनी चाहिए। परन्तु माया याद रखने नहीं देती। याद से खुशी में बहुत रहेंगे। याद नहीं करेंगे तो घुटका खाते रहेंगे। आधाकल्प तुमने रावण राज्य में दुःख देखा है। अकाले मृत्यु होता आया है। दुःख तो है ही है। भल कितना भी साहूकार हो, दुःख तो होता है। अकाले मृत्यु हो जाती है। सतयुग में ऐसे अकाले नहीं मरते, कभी बीमार नहीं होंगे। समय पर बैठे-बैठे आपेंही एक शरीर छोड़ दूसरा ले लेते हैं। उसका नाम ही है- सुखधाम। मनुष्य तो स्वर्ग की बातों को कल्पना समझते हैं। कहेंगे, स्वर्ग कहाँ से आया। तुम जानते हो हम तो स्वर्ग में रहने वाले हैं फिर 84 जन्म लेते हैं। यह सारा खेल भारत पर ही बना हुआ है। तुम जानते हो हम 21 जन्म पावन देवता थे फिर हम क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बने। अब फिर ब्राह्मण बने हैं। यह स्वदर्शन चक्र बहुत सहज है। यह शिवबाबा

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बैठ समझाते हैं।

तुम जानते हो शिवबाबा ब्रह्मा के रथ में आया है, जो ब्रह्मा है वही सतयुग आदि में श्रीकृष्ण था। 84 जन्म ले पतित बने हैं फिर इनमें बाप ने प्रवेश कर एडाप्ट किया है। खुद कहते हैं मैंने इस तन का आधार ले तुमको अपना बनाया है। फिर तुमको स्वर्ग की राजधानी का लायक बनाता हूँ, जो लायक बनेंगे वही राजाई में आयेंगे। इसमें मैनर्स अच्छे चाहिए। मुख्य है ही पवित्रता। इस पर अबलाओं पर अत्याचार होते हैं। कहाँ-कहाँ पुरूषों पर भी अत्याचार होते हैं। विकार के लिए एक दो को तंग करते हैं, यहाँ मातायें बहुत होने के कारण शक्ति सेना नाम गाया हुआ है, वन्दे मातरम्। अभी तुम ज्ञान-चिता पर बैठे हो काम-चिता से उतर गोरे बनने के लिए। द्वापर से लेकर काम-चिता पर बैठे हो। एक दो को विकार देने का हथियार विकारी ब्राह्मण बांधते हैं। तुम हो निर्विकारी ब्राह्मण। तुम वह कैंसिल कराए ज्ञान-चिता पर बिठाते हो। काम-चिता से काले बने हैं, ज्ञान-चिता से गोरे बन जायेंगे। बाप कहते हैं भल इकट्ठे रहो परन्तु प्रतिज्ञा करनी है हम विकार में नहीं जायेंगे, इसलिए बाबा अंगूठी भी पहनाते हैं। शिवबाबा, बाबा भी है, साजन भी है। सभी सीताओं का राम है। वही पतित-पावन है। बाकी रघुपति राघव राजाराम की बात नहीं है। उसने संगम पर ही यह प्रालब्ध पाई थी। उनको हिंसक बाण दिखाना रांग है। चित्र में भी नहीं देना चाहिए। सिर्फ लिखना है चन्द्रवंशी। बच्चों को समझाना चाहिए शिवबाबा इस द्वारा हमको यह चक्र का राज समझा रहे हैं। सत्य-नारायण की कथा होती है ना। वह है मनुष्यों की बनाई हुई कथा। नर से नारायण तो कोई बनते नहीं। सत्य-नारायण की कथा का अर्थ ही है नर से नारायण बनना। अमरकथा भी सुनाते हैं परन्तु अमरपुरी में तो कोई जाते नहीं। मृत्युलोक 2500 वर्ष चलता है। तीजरी की कथा मातायें सुनती हैं। वास्तव में यह है तीसरा ज्ञान का नेत्र देने की कथा। अभी ज्ञान का तीसरा नेत्र आत्मा को मिला है तो आत्म-अभिमानी बनना है। मैं इस शरीर द्वारा अब देवता बनती हूँ। मेरे में ही संस्कार हैं। मनुष्य सब देह-अभिमानी हैं। बाप आकर देही-अभिमानी बनाते हैं। लोग फिर कह देते हैं आत्मा परमात्मा एक है। परमात्मा ने यह सब रूप धारण किये हैं। बाप कहते हैं यह सब रांग है, इसको मिथ्या अभिमान, मिथ्या ज्ञान कहा जाता है। बाप बतलाते हैं मैं बिन्दी मिसल हूँ। तुम भी नहीं जानते थे, यह भी नहीं जानते थे। अभी बाप समझाते हैं - इसमें संशय नहीं आना चाहिए। निश्चय होना चाहिए। बाबा जरूर सत्य ही बोलते हैं, संशयबुद्धि विनश्यन्ती। वह पूरा वर्सा नहीं पायेंगे। आत्म-अभिमानी बनने में ही मेहनत है। खाना पकाते बुद्धि बाप की तरफ लगी रहे। हर बात में यह प्रैक्टिस करनी चाहिए। रोटी बेलते, अपने माशूक को याद करते रहना - यह अभ्यास हर बात में चाहिए। जितना समय फुर्सत मिले याद करना है। याद से ही तुम सतोप्रधान बनेंगे। 8 घण्टा कर्म के लिए छुट्टी है। बीच में भी एकान्त में जाकर बैठना चाहिए, तुम्हें सबको बाप का परिचय भी सुनाना है। आज नहीं सुनेंगे तो कल सुनेंगे। बाप स्वर्ग स्थापन करते हैं, हम स्वर्ग में थे अभी फिर नर्कवासी हुए हैं। अब फिर बाप से वर्सा मिलना चाहिए। भारतवासियों को ही समझाते हैं। बाप आते भी भारत में ही हैं। देखो, तुम्हारे पास मुसलमान लोग

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

भी आते हैं, वो भी सेन्टर सम्भालते हैं। कहते हैं शिवबाबा को याद करो। सिक्ख भी आते हैं, क्रिश्चियन भी आते हैं, आगे चलकर बहुत आयेंगे। यह ज्ञान सबके लिए है क्योंकि यह है ही सहज याद और सहज वर्सा बाप का। परन्तु पवित्र तो जरूर बनना पड़ेगा। दे दान तो छूटे ग्रहण। अभी भारत पर राहू का ग्रहण है फिर ब्रहस्पति की दशा शुरू होगी 21 जन्मों के लिए। पहले होती है ब्रहस्पति की दशा। फिर शुक्र की दशा। सूर्यवंशियों पर ब्रहस्पति की दशा, चन्द्रवंशियों पर शुक्र की दशा कहेंगे। फिर दशा कमती होती जाती है। सबसे खराब है राहू की दशा। ब्रहस्पति कोई गुरू नहीं होता है। यह दशा है वृक्षपति की। वृक्षपति बाप आते हैं तो ब्रहस्पति और शुक्र की दशा होती है। रावण आते हैं तो राहू की दशा हो जाती है। तुम बच्चों पर अभी ब्रहस्पति की दशा बैठती है। सिर्फ वृक्षपति को याद करो, पवित्र बनो, बस। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- हर कार्य करते हुए आत्म-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस करनी है। देह का अहंकार समाप्त हो जाए, इसके लिए ही मेहनत करनी है।

२- सतयुगी राजाई के लायक बनने के लिए अपने गैनर्स रॉयल बनाने हैं। पवित्रता ही सबसे ऊंची चलन है। पवित्र बनने से ही पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे।

वरदान:- ''पहले आप'' के पाठ द्वारा ताजधारी बनने वाले चतुरसुजान भव

जैसे बापदादा अपने को ओबीडियन्ट सर्वेन्ट कहते हैं, सर्वेन्ट कहने से ताजधारी स्वत: बन जाते हैं, ऐसे आप बच्चे भी स्वयं नम्रचित बन दूसरे को श्रेष्ठ शीट दे दो, उनको शीट पर बिठायेंगे तो वह उतरकर आपको स्वत: ही बिठा देगा। अगर आप बैठने की कोशिश करेंगे तो वह बैठने नहीं देगा। इसलिए बिठाना ही बैठना है। तो ''पहले आप'' का पाठ पक्का करो, फिर संस्कार भी सहज ही मिल जायेंगे, ताजधारी भी बन जायेंगे—यही चतुरसुजान बनने का तरीका है, इसमें मेहनत भी नहीं प्राप्ति भी ज्यादा है।

स्लोगन:-

अन्तर्मुखी, एकान्तवासी बनने वाली श्रेष्ठ आत्मा ही अव्यक्त स्थिति का अनुभव करती है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

18-3-99 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – अविनाशी ज्ञान-रत्न तुम्हें राव (राजा) बनाते हैं, यह बेहद का स्कूल है, तुम्हें पढ़ना और पढ़ाना है, ज्ञान-रत्नों से झोली भरनी है"

प्रश्न:- कौन-से बच्चे सभी को प्यारे लगते हैं? ऊंच पद के लिये किस पुरूषार्थ की जरूरत है?

उत्तर:- जो बच्चे अपनी झोली भरकर बहुतों को दान करते हैं वह सभी को प्यारे लगते हैं। ऊंच पद के लिये बहुतों की आशीर्वाद चाहिये। इसमें धन की बात नहीं लेकिन ज्ञान धन से अनेकों का कल्याण करते रहो। खुशमिज़ाज़ और योगी बच्चे ही बाप का नाम निकालते हैं।

ओम् शान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। बच्चे जानते हैं हमको अब वापिस जाना है। आगे बिल्कुल नहीं जानते थे। बाप बच्चों को समझाते हैं, इनका समझाना भी ड्रामानुसार अब राइट देखने में आता है। और कोई समझा न सके। अब हमको वापिस जाना है। अपवित्र कोई वापिस जा न सके। यह ज्ञान भी इस समय ही मिलता है और एक बाप ही देते हैं। पहले तो यह याद करना है कि हमको वापिस जाना है। बाबा को बुलाते हैं मालूम कुछ भी नहीं था। अचानक जब समय आया तो बाबा आ गया। अब नई-नई बातें समझाते रहते हैं। बच्चे जानते हैं अब हमको वापिस जाना है, इसलिये अब पतित से पावन होना है। नहीं तो सजा खानी पड़ेगी और पद भी भ्रष्ट हो जायेगा। इतना फ़र्क है जैसे यहाँ राव और रंक। वैसे वहाँ राव और रंक बनते हैं। सारा मदार पुरूषार्थ पर है। अब बाप कहते हैं तुम खुद ही पतित थे तब तो पुकारते हैं। यह भी अब तुमको समझाते हैं। अज्ञानकाल में यह बुद्धि में नहीं रहता। बाप कहते हैं आत्मा जो तमोप्रधान बनी है उसको सतोप्रधान बनना है। अब सतोप्रधान कैसे बने – यह भी सीढ़ी पर समझाया है। इनके साथ दैवी गुण भी धारण करने हैं। यह है बेहद का स्कूल। स्कूल में रजिस्टर रखते हैं गुड, बैटर, बेस्ट का। जो सर्विसएबुल बच्चे हैं वह बहुत मीठे हैं। उनका रजिस्टर अच्छा है। अगर रजिस्टर अच्छा नहीं है तो वह उछलते नहीं हैं। सारा मदार है पढ़ाई, योग और दैवी गुणों पर। बच्चे जानते हैं बेहद का बाप हमको पढ़ाते हैं। पहले हम शूद्र वर्ण के थे, अब ब्राह्मण वर्ण के हैं। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे हम ब्राह्मण हैं, यह तो बहुतों को भूल जाता है। जबकि तुम बाप को याद करते हो तो ब्रह्मा को भी याद करना पड़े। हम ब्राह्मण कुल के हैं—यह भी नशा चढ़े। भूल जाते तो यह नशा नहीं चढ़ता है कि हम ब्राह्मण कुल के हैं फिर देवता कुल के बनेंगे। ब्राह्मण कुल किसने बनाया? ब्रह्मा द्वारा मैं तुमको ब्राह्मण कुल में ले आता हूँ। ब्राह्मणों की यह डिनायस्टी नहीं है। छोटा-सा कुल है। अपने को अब ब्राह्मण समझेंगे तो देवता भी बनेंगे। अपने धन्धे में लग जाने से सब-कुछ भूल जाते हैं। ब्राह्मणपन भी भूल जाता है। धन्धे से फ़ारिग हुए फिर पुरूषार्थ करना चाहिये। कोई-कोई को धन्धे में जास्ती ध्यान देना पड़ता है। काम पूरा हुआ फिर अपनी बात। याद में बैठ जाओ। तुम्हारे पास बैज बहुत अच्छा है, इसमें लक्ष्मी-नारायण का चित्र भी है, त्रिमूर्ति भी है। बाबा हमें ऐसा बनाते हैं! बस, यही मन्मनाभव है। कोई को आदत पड़ जाती है, कोई को नहीं पड़ती है। भक्ति तो अब पूरी हुई। अब बाप को याद करना है। अब

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बेहद का बाप तुमको बेहद का वर्सा देते हैं, तो खुशी होती है। किसको अच्छी लगन लग जाती है, किसको बहुत कम। है बहुत सहज।

b गीता के आदि और अन्त में अक्षर है मन्मनाभव। यह वो ही गीता एपीसोड है। सिर्फ कृष्ण का नाम डाल दिया है। भक्ति मार्ग में जो भी दृष्टान्त आदि हैं वह सब इस समय के है भक्ति मार्ग में कोई ऐसे नहीं कहेंगे कि देह का भान भी छोड़ो, अपने को आत्मा समझो। यह तुमको यह शिक्षा बाप आते ही देते हैं। यह निश्चय है—देवी-देवता धर्म की स्थापना हमारे द्वारा हो रही है। राजधानी भी स्थापन हो रही है। इसमें लड़ाई आदि की बात नहीं है। बाप अब तुम्हें पवित्रता सिखाते हैं, वह भी आधाकल्प कायम रहेगी। वहाँ रावण राज्य ही नहीं। विकार पर तुम अब जीत पा रहे हो। यह तुम जानते हो—हम हूबहू कल्प पहले जैसे राजधानी स्थापन की थी, अब कर रहे हैं। हमारे लिये यह पुरानी दुनिया खत्म होने वाली है। ड्रामा का चक्र फिरता रहता है। वहाँ सोना ही सोना होगा। जो था वह फिर होगा। इसमें मूँझने की बात नहीं है। माया मच्छन्दर का खेल दिखाते हैं। ध्यान में सोने की ईंटें देखा। तुम भी बैकुण्ठ में सोने के महल देखते हो। वहाँ की चीजें तुम यहाँ नहीं ला सकते हो। यह है साक्षात्कार। भक्ति में तुम इन बातों को नहीं जानते थे। अब बाप कहते हैं—मैं आया हूँ तुमको ले जाने के लिये तुम्हारे बिगर बेआरामी होती है। जब समय आता है तो हमको बेआरामी हो जाती है—बस जाऊं, बच्चे बहुत दुःखी हैं, पुकारते हैं। तरस पड़ता है—बस, जाऊं। ड्रामा में जब समय होता है तब ख्याल होता है—बस जाऊं। नाटक दिखाते हैं विष्णु अवतरण। लेकिन विष्णु अवतरण तो होता ही नहीं। दिन-प्रतिदिन मनुष्यों की बुद्धि खत्म होती जाती है। कुछ समझ में नहीं
c आता। आत्मा पतित बन पड़ी है। अब बाप कहते हैं—बच्चे, पावन बनो तो राम राज्य हो। राम को जानते नहीं। शिव की पूजा जो की जाती है उनको राम नहीं कहेंगे। शिवबाबा कहना शोभता है। भक्ति में कोई रस नहीं। तुमको अब रस आता है। बाप खुद कहते हैं—मीठे बच्चे, मैं तुमको ले जाने आया हूँ। फिर तुम्हारी आत्मा वहाँ से आपेही सुखधाम चली जायेगी। वहाँ तुम्हारा साथी नहीं बनूँगा। अपनी अवस्था अनुसार तुम्हारी आत्मा जाकर दूसरे शरीर में, गर्भ में प्रवेश करेगी। दिखाते हैं सागर में पीपल के पत्ते पर श्रीकृष्ण आया। सागर की तो बात ही
d नहीं। गर्भ में बड़े आराम से रहते हैं। बाबा कहते—मैं गर्भ में नहीं जाता हूँ। मैं तो प्रवेश करता हूँ। मैं बच्चा नहीं बनता। मेरे बदले कृष्ण को बच्चा समझ दिल बहलाते हैं। समझते हैं कृष्ण ने ज्ञान दिया इसलिये उनको बहुत प्यार करते हैं। मैं सभी को साथ ले जाता हूँ। फिर तुमको भेज देता हूँ। फिर मेरा पार्ट पूरा। आधा कल्प कोई पार्ट नहीं। फिर भक्ति मार्ग में पार्ट शुरू होता है। यह भी ड्रामा बना हुआ है।

अब बच्चों को ज्ञान समझना और समझाना तो सहज है। दूसरे को सुनायेंगे तो खुशी होगी और पद भी ऊंच पायेंगे। यहाँ बैठ सुनते तो अच्छा लगता है। बाहर जाने से भूल जाते हैं। जैसे जेल बर्ड होते हैं। कोई न कोई शरारत (हरकत) करके जेल में जाते ही रहते हैं। तुम्हारा भी ऐसा हाल होता है। गर्भ में अन्जाम करके फिर वहाँ की वहाँ रही। यह सब बातें बनाई है तो मनुष्य कुछ पाप कर्म न करें। आत्मा संस्कार अपने साथ ले जाती है। तो कोई छोटेपन से पण्डित बन जाते हैं। लोग समझते हैं आत्मा निर्लेप है। परन्तु आत्मा निर्लेप नहीं। अच्छे वा

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बुरे संस्कार आत्मा ही ले जाती है तब ही कर्मों का भोग होता है। अभी तुम पवित्र संस्कार ले
e जाते हो। तुम पढ़कर फिर पद पाते हो। बाबा तो सारी आत्माओं के झुण्ड को वापस ले जाते हैं। बाकी थोडे रहते हैं। वह पिछाड़ी में आते रहते हैं। रहते भी वही हैं जिनको पिछाड़ी में आना है। माला है ना। नम्बरवार बनते जाते हैं। बाकी जो बनेंगे वह स्वर्ग में भी पिछाड़ी में आयेंगे। बाबा कितना अच्छा समझाते हैं, कोई को धारणा होती है, कोई को नहीं। अवस्था ऐसी है तो पद भी ऐसा ही मिल जाता है। तुम बच्चों को रहमदिल, कल्याणकारी बनना है। ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। दोष किसको नहीं दे सकते। कल्प पहले जितनी पढ़ाई की होगी उतनी ही होगी। जास्ती होगी नहीं, कितना भी पुरूषार्थ करावें, कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा। फ़र्क तब पड़े जब किसको सुनायें। नम्बरवार तो हैं ही। कहाँ राव, कहाँ रंक! यह अविनाशी ज्ञान-रत्न राव (राजा) बनाते हैं। अगर पुरूषार्थ नहीं करते तो रंक बन जाते हैं। यह बेहद का स्कूल है। इसमें फर्स्ट, सेकेण्ड, थर्ड हैं। भक्ति में पढ़ाई की बात नहीं। वहाँ है उतरने की बात। शोभनिक बहुत हैं। झांझ बजाते, स्तुति करते, यहाँ तो शान्त में रहना है। भजन आदि कुछ नहीं। तुमने आधा कल्प भक्ति की है। भक्ति का कितना शो है। सबका अपना-अपना पार्ट है। कोई गिरता, कोई चढ़ता, कोई की तकदीर अच्छी, कोई की कम। तदबीर तो बाबा एकरस
f कराते हैं। पढ़ाई भी एकरस है तो टीचर भी एक है। बाकी सब हैं मास्टर्स। कोई बड़ा आदमी कहे—फुर्सत नहीं, बोलो—घर में आकर पढ़ायें? क्योंकि उन्हों को तो अपना अहंकार रहता है। एक को हाथ करने से औरों पर भी असर पड़ता है। अगर वह भी किसको कहें कि यह ज्ञान अच्छा है, तो कहेंगे इन्हें भी ब्रह्माकुमारियों का संग लग गया, इसलिये सिर्फ अच्छा कह देते हैं। बच्चों में योग की पॉवर अच्छी चाहिये। ज्ञान तलवार में योग का जौहर चाहिये। खुशमिज़ाज़ और योगी होगा तो नाम निकालेंगे। नम्बरवार तो हैं। राजधानी बननी है। बाप कहते हैं धारणा तो बहुत सहज है। बाबा को जितना याद करेंगे उतना लव रहेगा। कशिश होगी। सुई साफ है तो चुम्बक तरफ खींचती है। कट होगी तो खींचेगी नहीं। यह भी ऐसे है। तुम साफ हो जाते हो तो पहले नम्बर में चले जाते हो। बाप की याद से कट निकलेगी।

गायन है—बलिहारी गुरु आपकी..... इसलिये कहते हैं गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु.. वह सगाई
g कराने वाले गुरु मनुष्य हैं। तुमने सगाई शिव के साथ की है, न कि ब्रह्मा से। तो याद भी शिव को ही करना है। दलाल के चित्र की जरूरत नहीं। सगाई पक्की हो गई फिर एक-दो को याद करते रहते हैं तो इनको भी दलाली मिल जाती है। सगाई का भी मिलता है ना। दूसरा फिर इनमें प्रवेश करते हैं, लोन लेते हैं तो वह भी कशिश करते हैं। तब बच्चों को भी
h समझाते हैं कि जितना तुम बहुतों का कल्याण करेंगे उतना तुमको उजूरा मिलेगा। यह हैं ज्ञान की बातें। दूसरों को ज्ञान देते रहो तो आशीर्वाद मिल जाती है। पैसे की दरकार नहीं। मम्मा के पास भल धन नहीं था, परन्तु बहुतों का कल्याण किया। ड्रामा में हरेक का पार्ट है। कोई धनवान धन देते हैं, म्यूजियम बनाते हैं तो बहुतों की आशीर्वाद मिल जाती है। अच्छा साहूकार का पद मिल जाता है। साहूकार के पास दास-दासियां बहुत होती हैं। प्रजा में साहूकारों के पास बहुत धन होता है फिर उनसे लोन लेते हैं। साहूकार बनना भी अच्छा है। वह भी गरीब ही साहूकार बनते हैं। बाकी साहूकारों में हिम्मत कहाँ! इस ब्रह्मा ने फट से सब कुछ

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

दे दिया। कहते हैं हाथ जिनका ऐसे... (देने वाला) बाबा ने प्रवेश किया तो सब-कुछ छुड़ा दिया। कराची में तुम कैसे रहे हुए थे। बड़े-बड़े मकान, मोटरें, बस आदि सब कुछ था। अब बाप कहते हैं—आत्म-अभिमानी बनो। कितना नशा चढ़ना चाहिये—भगवान् हमको पढ़ाते हैं। बाप तुमको अथाह खजाने देते हैं। तुम धारणा नहीं करते हो। लेने का दम नहीं। श्रीमत पर नहीं चलते हो। बाप कहते हैं बच्चे अपनी झोली भर लो। वह लोग शंकर के आगे जाकर कहते हैं—झोली भर दो। बाबा यहाँ बहुतों की झोली भरते हैं। बाहर जाने से खाली हो जाती है। बाप कहते हैं तुमको बहुत भारी खजाना देता हूँ। ज्ञान-रत्नों से झोली भर-भरकर देता हूँ। फिर भी नम्बरवार हैं जो अपनी झोली भरते हैं। वह फिर दान भी करते हैं, सबको प्यार भी लगते हैं। होगा नहीं तो देंगे क्या?

तुम्हें 84 के चक्र को अच्छी तरह समझना और समझाना है। बाकी मेहनत है योग की। अब तुम युद्ध के मैदान पर हो। माया पर जीत पाने के लिये लड़ते हो। नापास हुए तो चन्द्रवंशी में चले जायेंगे। यह समझ की बात है। बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिये—बाबा, आप कितना वर्सा देते हो। उठते-बैठते सारा दिन यह बुद्धि में रहे तब धारणा हो सके। योग है मुख्य। योग से ही तुम विश्व को पवित्र बनाते हो। नॉलेज अनुसार तुम राज्य करते हो। यह पैसे आदि तो मिट्टी में मिल जाने वाले हैं। बाकी यह अविनाशी कमाई तो सब साथ चलेगी। जो सेन्सीबुल होंगे वह कहेंगे हम बाबा से पूरा ही वर्सा लेंगे। तकदीर में नहीं तो पाई पैसे का पद पायेंगे। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिये मुख्य सार:-

१. अपनी पढ़ाई और दैवी गुणों का रजिस्टर ठीक रखना है। बहुत-बहुत मीठा बनना है। हम ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण हैं—इस नशे में रहना है।

२. सर्व का प्यार वा आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये ज्ञान-रत्नों से अपनी झोली भरकर दान करना है। बहुतों के कल्याण के निमित्त बनना है।

वरदान:- हर कर्म में विजय का अटल निश्चय और नशा रखने वाले अधिकारी आत्मा भव

विजय हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है — इस स्मृति से सदा उड़ते चलो। कुछ भी हो जाए - ये स्मृति में लाओ कि मैं सदा विजयी हूँ। क्या भी हो जाए - यह निश्चय अटल हो। नशे का आधार है ही निश्चय। निश्चय कम तो नशा कम, इसलिए कहते हैं निश्चयबुद्धि विजयी। निश्चय में कभी-कभी वाले नहीं बनना। अविनाशी बाप है तो अविनाशी प्राप्ति के अधिकारी बनो। हर कर्म में विजय का निश्चय और नशा हो।

स्लोगन:-

अपने श्रेष्ठ कर्म वा श्रेष्ठ चलन द्वारा दुआयें जमा कर लो तो पहाड़ जैसी बात भी रुई के समान अनुभव होगी।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

15.11.87 प्रात: क्लास ओमशान्ति पिताश्री: शिवबाबा याद है?

मीठे बच्चे- आपस में एक की पढ़ाई को मत छोड़ना, पढ़ाई छोड़ना माना ... को छोड़ देना।

प्रश्न:-सर्विस की वृद्धि न होने का कारण क्या है? उत्तर:-जहाँ मतभेद होता है वहाँ सर्विस वृद्धि को नहीं पाती। जो कि बच्चे मतभेद में आकर पढ़ाई ही छोड़ देते हैं। बाबा कहते हैं बच्चे आपस में कोई खिटखिट होती है तो बाबा को पत्र लिखो। बाबा तुमको 16 कला सम्पूर्ण बनने की मत देंगे।

प्रश्न:- पढ़ाई छोड़ने का पहला मुख्य कारण कौन सा बनता है? उत्तर:-नामरूप की बीमारी। जब देहधारी के नाम रूप में फँसते हैं तो पढ़ाई में दिल नहीं लगती। माया इसी बात से गिरा देती है, यही बहुत बड़ा विघ्न है।

a समझानी:- बच्चे बैठे हैं दिल में निश्चय है कि बेहद का बाप आया हुआ है। बेहद का वर्सा मिलता है। तुम समझ बैठे हो। जानते हो वह सब आत्माओं का बाप है। इस शरीर द्वारा समझा रहे हैं। कल्प कल्प ऐसे ही समझाते हैं और वर्सा देते हैं, और कोई यह ज्ञान दे नहीं सकते। बाबा समझाते हैं कभी भी किसी देहधारी को याद नहीं करना है। 5तत्त्वों को भूत कहा जाता है। आत्मा के शरीर को याद नहीं करना है। भल माया बहुत विघ्न डालेगी परन्तु हराना नहीं है। सिवाए एक दूसरा न कोई। इस बाबा के शरीर साथी तुम्हारा लव नहीं होना चाहिए। कोई भी शरीर के साथ लव रखा तो अटक पड़ेंगे। बाबा जानते हैं बहुत फीमेल्स की आपस में ऐसी दोस्ती हो जाती है जो एक दो के नामरूप में फँस मरती हैं। इतनी प्रीत लग जाती है जो शिवबाबा को भूल जाते हैं। दो कन्याओं का भी आपस में इतना लव हो जाता है जैसे आशिक माशूक होते हैं। उनको कितनी भी ज्ञान की समझानी दो परन्तु माया छोड़ती नहीं क्योंकि ईश्वरीय मत से विरूद्ध चलते हैं। भल ज्ञान भी उठा लेवें परन्तु अवस्था डगमग होती रहती है। योग से विकर्म विनाश हो वह होते नहीं। ऐसे2 बहुत हैं। बाबा नाम नहीं लेते

b समझते हैं बाबा समझाते हैं कभी भी पढ़ाई नहीं छोड़ना। भल ब्राह्मणी से न बने तो भी बाबा को डायरेक्ट पत्र लिख सकते हो और डायरेक्ट पत्र मँगा भी सकते हो। हर एक को डायरेक्ट पत्र भेजने का। भल कोई कारण से सेन्टर से दिल हट जाती है परन्तु पढ़ाई जरूर सुननी है। बाबा को समाचार देते रहना है, आखिर बाबा मतभेद मिटा देंगे। मतभेद के कारण बहुत बच्चे बाना खराब कर देते हैं। पढ़ाई छोड़ देते हैं। पढ़ाई कोई भी हालत में नहीं छोड़ना चाहिए। ऐसे बहुत गिर पड़ते हैं। बाबा का हमेशा कहना है कि कोई को कोई भी तकलीफ है, तो बाबा को पत्र लिखो। बाबा भी पत्र लिखेंगे। तीसरी बात-तुमको कोई से भी हरगिज डगमगे की बातें नहीं सुननी है। एक बाप की ही सुननी है। बाप फिर भी बच्चों को सावधान करते हैं कि जो देह अभिमान की बीमारी में रोगी हो पर पड़ते हैं। बच्चों को फरमान है हमेशा याद करते उन्हीं की ही महिमा करते रहो। शिवबाबा ही कलियुगी पतित दुनिया को पावन बनाते हैं। यह भी तुम ही जानते हो। कई बच्चे हैं जो 2-8 मास पत्र ... बाप को अगर बच्चा चिट्ठी न लिखे तो बाप को फिर हो जाता है ... बाप को भी चिन्ता रहता है क्योंकि बाबा जानते हैं माया कहीं ... बच्चों को मार न डाले वा बीमार न कर दे। अगर पत्र नहीं लिखते हैं तो ... कि माया ने जोर से थप्पड़ लगा है। इसलिए सुरती में समझाया जाता है- ... नहीं है तो अपने ही धन्धे में लग जाते हैं। कोई2 तो एक दो के नाम रूप में ऐसे ... आशिक माशूक बने हैं। फिर ममा बाबा को भी याद नहीं करते हैं। एक दो को ... है। यह सब विघ्न माया डालती है। कोई की तकदीर में नहीं है तो कितना

c ... बाबा बार बार बातें नहीं करो फिर भी करते रहते हैं। कोई2 अज्ञान में जीवन ... हैं उनको थोड़ी जीवन कहानी आदि बतानी है। इनको बाबा के सिवाए ... याद नहीं करना है। नेहरू मरा तो उनको कितना याद करते हैं। तुम भी ऐसे ही ... याद करो और उनमें फँसे ही क्या रहा। ज्ञान मार्ग में बड़ी समझ चाहिए- ... योग नहीं तो बुद्धि का ताला नहीं खुलता है। निर्बल नहीं कर सकते, पट ... बाबा सावधान कर देते हैं कि कोई भी गड़बड़ हो तो जरूर हो

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

लिखो। कोई भी बाबा को डायरेक्ट पत्र लिख सकते हैं। सभी 16 कला सम्पूर्ण तो नहीं बने कोई बच्चे भी हैं, भले करते होंगे। सेन्सीबुल बच्चे जो हैं वह ले समाचार लिखेंगे। फलानी ब्राह्मणी में अवगुण हैं, जिस कारण सर्विस वृद्धि को नहीं पाती तो बाधा है ऐसा देंगे कि इस बच्चे को सर्विस का शौक है। कोई देखते हैं ब्राह्मणी में क्रोध है तो दिल हट जाती है। फिर
d घर बैठ जाते हैं। कोई ब्राह्मणी भी कह देती है कि हम इस सेन्टर पर मत आओ। अगर कोई ब्राह्मणी ऐसे कहती है तो बाबा को डायरेक्ट लिखो तो तुमको बाबा याद पड़ेगा और बाबा खुश भी होगा कि बच्चा सर्विस समाचार देते रहते हैं। बाबा आप फलाने को समझाओ कि परमपिता परमात्मा से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है। बाबा स्वर्ग का वर्सा देता है। 5हजार वर्ष पहले भी दिया था। यह लक्ष्मी नारायण के चित्र खड़े हैं। बाबा समझाते रहते हैं कभी भी कोई देखे कि इस कारण डिस सर्विस होती है तो फौरन समाचार देना है। सब सम्पूर्ण तो
e बने नहीं हैं। बच्चों को सब कुछ समझाना होता है। बाप कहते हैं मैं बच्चों के आगे प्रत्यक्ष होता हूँ। बहुत बच्चे हैं जो मुझे जानते ही नहीं है। उनके सम्मुख कैसे हूँगा। बच्चों को कहता हूँ। मीठे बच्चे श्रीमत पर चलकर अपना पुरुषार्थ कर जीवन ऊँची बनाओ। तुम सारे विश्व के मालिक बनने वाले हो। जितना जास्ती मुझे याद करेंगे उतना ऊँच पद पायेंगे। इसमें खर्चे की कोई बात नहीं है। फ्री एज्युकेशन है। जिसकी तकदीर में है वह पक्के हो जाते हैं। माया ऐसी है जो 6-8 वर्ष वाले भी देखो अच्छे नहीं। बाप से नहीं रूठते हैं परन्तु ब्राह्मणियों से रूठ जाते हैं। बाबा तो यहाँ बैठा है। शिवबाबा से रूठा तो खत्म हो जायेगा। बाबा के नश्तर कैसे सह सकेंगे।
f दूसरी बात जो ध्यान का पार्ट चलता है फलाने में सम्माआई बाबा आया यह भी एक माया है। बहुत खबरदारी से चलना है। बात कैसे करते हैं, उससे समझ जाना है। कोई2 में भूत आते हैं। धरीधरी बालकी में भी कहते हैं शिवबाबा आया, मरली चलाते हैं। यह सब माया विघ्न डालती है। बहुत ट्रेटर निकल जाते हैं। बहुत धोखा देते हैं। इन सब बातों से बच सम्भाल करनी है। पढ़ाई पर पूरा ध्यान देना है। नहीं तो माया बहुत हैरान करेगी। विघ्न बहुत आयेंगे। जैसे वैद्य लोग कहते हैं कि बीमारी बाहर निकलेगी, डरना नहीं। बाबा समझाते हैं माया चलते2 ऐसी अंगूरी लगायेगी जो बाबा को भुला देगी। हराने की बहुत कोशिश करेगी। पद है ही 5 विकार रूपी रावण से। जितना बाबा को याद करेंगे तो तुम्हारे विघ्न विनाश होंगे। मायाजीत जगत जीत भी बनेंगे। बाकी स्थूल लड़ाई की कोई बात नहीं है।
g योगबल से ही विश्व की राजाई मिल सकती है। इस समय योगबल भी है तो बाहुबल भी है। यह त्रिनेत्रधन दोनों मिल जाएं तो विश्व के मालिक बन सकते हैं। इतनी ताकत इन्हों में है। परन्तु ला नहीं है। एक कहानी भी है। दो बिल्लों की। कृष्ण को भी देखो कैसे हाथ में गेंदा दिखाया है। तो तुम्हारी याद कायम रहनी चाहिए। कोई भी कारण से पढ़ाई नहीं छोड़नी चाहिए। विघ्न तो जरूर पड़ेंगे। माया ऐसी है जो माथा मूंड लेती है। इन्डाइरेक्ट कर देती है इसलिए बात कहते हैं और सब बातों को छोड़ो मामेकम याद करो। बीज को याद करने से झाड़ भी याद आ जायेगा। गृहस्थ व्यवहार में रहते भी कोर्स उठाओ। भक्त लोग घर छोड़कर भक्ति करते हैं। काशी में कोठियां बनी हुई हैं। हर एक कोठी में बैठ शिवबाबा गीता कहते हैं। जानते कुछ नहीं। ईश्वर सर्वव्यापी कह देते हैं। अपने को तत्व योगी ब्रह्म योगी कहलाते हैं। यह बाबा सब बातों का अनुभवी है। इनके रथ में बैठ कहते हैं, इन सबको छोड़ो। बाकी तो सब खिलौने बना दिये हैं। शिव का शंकर का, कृष्ण का खिलौना बनाए बैठ पूजा करते हैं। जानते किसको नहीं। पूजा में बहुत खर्चा करते हैं। पत्थर की मूर्ति बनाकर उनको शृंगारते हैं। साहूकार तो जेवर भी पहनाते हैं। जेवर तो ब्राह्मण ही लेते हैं। काम की चीज उठा कर बाकी मूर्ति को हरीबोल हरीबोल कर देते हैं। यह तो तुम जानते हो भक्ति में जो भावना से करते हैं उनको उसका फल कुछ न कुछ बाप दे ही देते हैं। दूसरे जन्म में अच्छा भक्त बन जाते हैं। कोई धन दान करते हैं तो धनवान के घर में, राजाई घर में जन्म मिल जाता है। फिर भी इस दुनिया में सदा के लिए सुख तो है नहीं। इसलिए सन्यासी इस सुख को मानते नहीं, काग विष्टा के समान समझते हैं। तो यह राजयोग कैसे सिखायेंगे। सारे विश्व का मालिक तो बेहद के बाप सिवाए कोई बना न सके। अब बाप तुम बच्चों को सम्मुख समझा

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of EVISION PDFcompressor

रहे हैं मैं फिर से आया हूँ। तुमको राजयोग सिखलाने। कृष्ण के 84 जन्म के अन्त में मैंने प्रवेश किया है। इनका नाम ब्रह्मा रखा है। मुझे ब्रह्मा जरूर चाहिए। तो प्रजापिता ब्रह्मा भी चाहिए। जिसमें प्रवेश करके आऊँ नहीं तो कैसे आऊँ? यह मेरा रथ मुकर्रर है। कल्प2 इसमें ही आता हूँ। लिखा भी हुआ है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। किसकी? विष्णुपुरी की। अभी तुम भारत को विष्णुपुरी का मालिक बना रहे हो। दूसरे कोई इस बात को समझते नहीं कि परमपिता परमात्मा का क्या पार्ट है। कृष्ण जयन्ती मनाते हैं परन्तु कृष्ण को जन्म देने वाले राजाई देने वाले शिवबाबा की मनाते नहीं। नर्क को स्वर्ग बनाने वाला बाप है ना। जो ब्राह्मण बन पूरा पुरुषार्थ करेंगे, सो ही ब्राह्मण से देवता बनेंगे। गायन है कि परमपिता परमात्मा 3 धर्म ब्राह्मण धर्म, सूर्यवंशी चन्द्रवंशी धर्म स्थापन करते हैं। वहाँ तो युगों में एक ही धर्म है और कोई धर्म है नहीं। बाकी दो युगों में देखो कितने धर्म हैं। बच्चों को पढ़ाई पर पूरा ध्यान देना चाहिए। नहीं तो बहुत रोना पड़ेगा। फिर लिख देंगे, बतायेंगे कि तुमने यह यह पाप किया। हम तुमको बहुत समझाता हूँ कि पाप नहीं करना। पुण्य आत्मा बनना। पाप करेंगे तो सौगुनी सजा के निमित्त बनेंगे। मेरे बन कर विकार में गये तो तुम्हारे पर बहुत सजा आयेगी। वह सजायें भी बहुत कड़ी होती हैं। जो बाप की अवज्ञा करते हैं। बाप कहते हैं मैं परमधाम का रहने वाला हूँ। यहाँ पुरानी दुनिया में आकर तुमको वर्सा देता हूँ फिर भी तुम नाम बदनाम करते हो। तब तो कहा हुआ है सतगुरू का निन्दक सूर्यवंशी घराने में ठौर नहीं पा सकता। वह गिर पड़ता है। बहुत कसम उठाते हैं हम आपके सपूत बच्चे हो कर रहेंगे। कलह से भी लिखते हैं परमपिता परमात्मा से प्रतिज्ञा भी करते हैं कि बच्चा बन आपसे पूरा वर्सा लेंगा। परन्तु माया ऐसी है वह आज है नहीं। प्रतिज्ञा कर फिर अपवित्र बनें तो बहुत गिरा जायेगा। ईश्वर की अवज्ञा हुई ना। भक्ति में तो अवज्ञा करते रहते हैं। गाली देते रहते हैं। परमात्मा कहते कितनी कल्प2 में हैं। माया बुद्धिहीन बना देती है। कच्छ मच्छ अवतार सबसे सस्ता परमात्मा की दिखानी की है। बाबा हजारे से सब समझाते रहते हैं। माया बहुत हैरान करेगी। नहीं तो युद्ध ही काहे की। विश्व का मालिक बनना, कम बात है। शर्मना नहीं करनी है। पढ़ाई बिल्कुल नहीं छोड़नी है। धोखा से राय ली फिर जवाबदार बाबा नहीं जायेगा। पढ़ाई में सूक्ष्म कितनी मेहनत करते हैं। इम्तहान के टाइम बहुत मेहनत करते हैं। तुम भी आगे चल तुम्हें नजदीक देखेंगे तो रात दिन पढ़ाई को लग जायेंगे। अब वह समय जल्दी आने वाला है। अच्छा

मात पिता बापदादा का मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

अवउन्नति के लिए दृढ़ संकल्प :- 1। आपस में वाहयात व्यर्थ बातें नहीं करनी है। कभी भी अटेंशन में नहीं जाना है। पढ़ाई किसी भी हालत में नहीं छोड़नी है।

2। बाप की अवज्ञा कभी नहीं करनी है। प्रतिज्ञा कर उस पर कायम [illegible]

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

13-2-85 प्रात: क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?
"मीठे बच्चे-अपनी तकदीर ऊंच बनानी है तो कोई से भी बात करते देखते हुए बुद्धि का योग एक बाप से लगाओ"

प्रश्न:-नई दुनिया की स्थापना के निमित्त बनने वाले बच्चों को बाप का कौन सा डायरेक्शन मिला हुआ है? उत्तर:-बच्चे तुम्हारा इस पुरानी दुनिया से कोई कनेक्शन नहीं। अपनी दिल इस पुरानी दुनिया से मत लगाओ। जांच करो हम श्रीमत के बरखिलाफ कर्म तो नहीं करते हैं। रूहानी सर्विस के निमित्त बनते हैं।

गीत:-भोलेनाथ से निराला... ओमशान्ति। अब गीत सुनने की कोई जरूरत नहीं रहती। गीत अवसर करके भक्त लोग गाते हैं और सुनते हैं तुम तो पढ़ाई पढ़ते हो। यह गीत भी बच्चों के लिए ही खास निकले हुए हैं। बच्चे जानते हैं बाप हमारी तकदीर ऊंच बना रहे हैं। अब हमको बाप को ही याद करना है और देवीगुण भी धारण करने हैं। अपना पोतामेल देखना है-"जमा-होता है या माइनस होता रहता है। हमारे में कोई खामी तो नहीं है। अगर खामी है जिससे हमारी तकदीर में घाटा पड़ जायेगा तो उसको निकाल देना चाहिए। इससमय हरेक को अपनी तकदीर ऊंच बनानी है। तुम समझते हो हम यह ल०ना० बन सकते हैं। अगर सिवाए एक बाप के कोई और को याद नहीं करेंगे तो। कोई से बात करते देखते हुए बुद्धि का योग वहां एक से लगा रहे। हम आत्माओं को बाप को ही याद करना है। बाप का फरमान मिला हुआ है सिवाए मेरे और कोई से दिल न लगाओ। और देवीगुण धारण करो। बाप समझाते रहते हैं तुम्हारे अभी 84 जन्म पूरे हुए अब फिर तुम जाकर पहला नम्बर लो राजाई में। ऐसा न हो राजाई से गिर कर पूजा में चले जाओ। पूजा में भी नीचे चले जाओ। नहीं। अपनी जांच करते रहो। यह समझानी बाप बिगर तो और कोई दे न सके। बाप को टीचर को याद करने से डर रहेगा ऐसान हो कोई हमको सजा मिल जाए। भक्ति में भी समझते हैं पाप कर्म करने से हम नर्क के भागी बन जायेंगे। बड़े बाबा के डायरेक्शन तो अभी हो मिलते हैं। जिसको श्रीमत कहते हैं। बच्चे जानते हैं श्रीमत से हम श्रेष्ठ बनते हैं। अपनी जांच करनी है। कहां हम श्रीमत के बरखिलाफ तो कुछ नहीं करते हैं। जो बात अच्छी न लगे वह करनी न चाहिए। अच्छे बुरे को तो अब समझते हो। आगे नहीं समझते थे। अभी तुम ऐसे कर्म सीखते हो जो फिर जन्म जन्मान्तर कर्म अकर्म बन जाते हैं। इस तो सबमें ज्ञान प्रवेश है। अब अच्छी गति पुरुषार्थ कर कमाल गति बनना है। देवीगुण भी धारण करने हैं। समय नाजुक होता जाता है। दुनिया बिगड़ती जाती है। दिन प्रतिदिन बिगड़ती ही जावेगी। इस दुनिया से तुम्हारा जैसे कि कनेक्शन ही नहीं। तुम्हारा कनेक्शन है नई दुनिया से जो नई दुनिया स्थापन हो रही है। तुम जानते हो हम निमित्त बने हैं। नई दुनिया स्थापन करने। तो जो एमबाजेक्ट सामने है उन जैसा बनना है। कोई भी आसुरी गुण अन्दर न हो। रूहानी सर्विस में लगे रहने से उन्नति बहुत होती है। प्रदर्शनी म्यूजियम आदि बनाते हैं समझते हैं बहुत लोग आयेंगे। उन्हों को बाप का परिचय देंगे फिर वह भी बाप को याद करने लग पड़ेंगे। सारा दिन यही ख्यालात चलते रहते। सेन्टर खोल सर्विस को बढ़ाओ। यह रतन सब तुम्हारे पास हैं। बाप देवीगुण भी धारण कराते हैं। और खाना देते हैं। तुम यहां बैठे तो बुद्धि में है सृष्टि के आदि मध्य अन्त को जानते हैं। पवित्र भी रहते हैं। मन्सा वाचा कर्मणा कोई बुरा कर्म न हो। उसकी पूरी जांच करनी होती है। बाप आये ही हैं पतितों को पावन बनाने। उसके लिए युक्तियां भी बतलाते रहते हैं। उसका धारण करते रहना है। सेन्टर खोल बहुतों को निमन्त्रण देना है। प्रेम से बैठ समझाना है। यह पुरानी दुनिया खत्म होनी है। पहले तो नई दुनिया की स्थापना बहुत जरूरी है। स्थापना होती ही है संगम पर। यह भी मनुष्यों को पता नहीं है कि अब संगमयुग है। यह भी समझाना है नई दुनिया की स्थापना पुरानी दुनिया का विनाश उसका अब संगम है। नई दुनिया की स्थापना श्रीमत पर हो रही है। सिवाए बाप के और कोई नई दुनिया की स्थापना कर मत देंगे नहीं। बाप ही आकर तुम बच्चों से नई दुनिया का उद्घाटन कराते हैं अकेले तो नहीं करेंगे। सब बच्चों की मदद लेते हैं वह लोग उद्घाटन करने लिए मदद नहीं लेंगे। आकर तीनों से [illegible]

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बनाना यहबाप का ही काम है।बाप ही नईदुनिया को स्थापना करते हैं,जिसके लिए रूहानी नालेज देते हैं तुम जानते हो,बाप के पास नईदुनिया के स्थापना की युक्ति है। भक्तिमार्ग में भी उनको पुकारते हैं ना हे पतित पावन आओ। भल शिव की पूजा करते b रहते हैं। परन्तु यह जानते नहीं हैं कि पतित पावन कौन है। दुख में याद तो करते हैं ना हे भगवान हे राम। राम भी निराकार भगवान को ही कहते हैं। निराकार ही ऊंच ते ऊंच भगवान है।तुम जानते हो पहले हम भी मूंझे हुए थे बाप ने आकर निकाला है। जैसे फागी में मूंझ जाते हैं ना। यह तो बेहद की बात। बहुत बड़े जंगल में जाकर पड़े हैं। जैसे जंगली जानवर बन पड़े हैं। तुमको भी बाप ने फील कराया है हम किस जंगल में पड़े थे। यह भी अब पता पड़ा है। यह पुरानी दुनिया है। यह इनका भी अन्त है।मनुष्य तो बिल्कुल रास्ता जानते हो नहीं हैं।बाप को पुकारते रहते हैं। तुम अभी पुकारते नहीं हो।तुमको बाप ने भक्ति मार्ग से छुड़ा दिया है भक्ति का जैसे जंगल है। अनेक रास्ते बतलाते रहते हैं-मनुष्यों को। परन्तु सही रास्ता किसको भी मिलता ही नहीं।अभी तुम बच्चे ड्रामा के आदिमध्य अन्त को जानते हो। सो भौनम्बवरवार । जो जानते हैं वह बहुत खुशी में रहते हैं। औरों को भी रास्ता बताने में तत्पर रहते हैं। बाप तो कहते रहते हैं बड़े2 सेन्टर खोलो।चित्र अच्छे बड़े2 होंगे तो मनुष्य सहज समझ सकेंगे। बच्चों के लिए मेप्स चित्र जरूर चाहिए।बताना चाहिए यह भी स्कूल है यहां के वन्डरफुल मेप्स हैं।उन स्कूलों के नक्शे में होतो है हद की बातें । यह है बेहद की बातें।यह भी पाठशाला है।जिसमें बाप हमको सृष्टि के आदि मध्य अन्त का राजसमझाकर लायक बनाते हैं। मनुष्य को देवता बनाने की यह ईश्वरीय पाठशाला है। लिखा हुआ भी है ईश्वरीय विश्वविद्यालय। यह है रूहानी पाठशाला। सिर्फ c ईश्वरीय विश्वविद्यालय से भी मनुष्य समझ नहीं सकते। युनिवर्सिटी भी लिखना चाहिए।ऐसे d ईश्वरीय विश्वविद्यालय कोई है नहीं। बाबा ने कार्डस देखे थे कुछ अक्षर भूले हुए थे। बाबा ने कितनाबार कहा है पूजा पता अक्षर जरूर डालो फिर भी बच्चे भूल जाते हैं। लिखत पूरी होनी चाहिए।जो मालूम पड़े कि यह ईश्वरीय बड़ा कालेज है। बच्चे जो सर्विस पर उपस्थित जो अच्छे सर्विसएबुल हैं उन्हों को दिल में रहता है। हम फलाने सेन्टर को जाकर उठावें । ठण्डा पड़ गया है।उनको जगावें। क्योंकि माया ऐसी है जो घड़ी2 सुला देती है। मैं स्वदर्शन चक्रधारी हूं यह भी भूल जाते हैं।माया बहुत आपोजीशन करती है। तुम युद्ध के मैदान में हो।माया माथा मूड़कर उल्टे तरफ ले जाए उसको बड़ी सम्भाल करनी है। माया के तूफान तो सबको लगते हैं छोटे बड़े सब मैदान में हैं। पहलवान को माया के तूफान हिला न सकेंगे। e वह अवस्था भी आनी है।बाप समझाते हैं समय बड़ा खराब है। हालत बिगड़ी हुई है। राजाई तो सब खत्म हो जानी है। सबको उतार देंगे । पूजा की पूजा पड़ी रहेगी सारी दुनिया में हा जायेगा।आगे तो सुनते थे रशिया से जहाज आता है,चढ़ाई करेंगे तो डर जाते थे। अभी तो राजाओं को उड़ाते रहते पंचायती राज्य होता जाता है।जब पूजा का राज्य हो।तब तो आपस में लड़े झगड़े।आज कल तो सब जगह हंगामा है।तुम अपने लिए ही राजाई स्थापन कर रहे हो।तुम सबको रास्ता बताते हो।बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। बाप को याद में रह औरों को भी यह समझाना है देहीअभिमानी बनो। देह अभिमान छोड़ो ऐसे नहीं कि तुम्हारे में सब देहीअभिमानी बने हैं। नहीं।बनने का है। तुम पुरूषार्थ करते हो औरों को भी जगाते हो। याद करने की कोशिश करते हो फिरभूल जाते हो । पुरूषार्थ यही करना है। मूल बात है बाप को याद करना है। बच्चों को कितना समझाते हैं। नालेज बहुत अच्छी मिलती है। मूल बात है-पवित्र रहना। बाप पावन बनाने आये हैं । तो फिर पतित न बनना है। याद से ही तुम सतोप्रधान बन जायेंगे । यह भूलना न है । इसमें ही माया विघ्न डाल भुला देती है। रात दिन यह तात रहे हम बाप को याद कर सतोप्रधान बनें। याद ऐसी पक्की होनी चाहिए जो पिछाड़ी में सिवाए एक बाप के और कोई याद न आये। प्रदर्शनी में भी पहले2 यह समझाना चाहिए। यह है सबका बाप। [illegible] भगवान।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

उनको ही मिट्टी में मिला दिया है। यह कह देते ठिक्कर भित्तर में सबमें परमात्मा है। माया ने मनुष्यों की बुद्धि ऐसी तमोप्रधान कर दी है जो पितित पावन बापको मिट्टी में मिला दिया तो पावन बनाने आयेगा कैसे। पहले2 शिवबाबा के चित्र पर समझाना चाहिए। सबका बाप पतित पावन, सदगति दाता यह है। य स्वर्ग का रचयिता है। अभी सब बच्चे जानते हो बाप आते ही हैं संगमयुग पर। बाप ही राजयोग सिखलाते हैं सन्यासी f सिखला न सकें। पतित पावन एक के सिवाए दूसरा कोई हो नहीं सकता। (पहले2 बाप का परिचय देना है। अब एक2को ऐसे एक चित्र पर समझाओ तो इतनी भीड़ को कैसे समझा सकेंगे। परन्तु पहले2 तो बाप के चित्र पर समझाना मुख्य है। यह भी समझाना पड़ता है। कि भक्ति है आधा ज्ञान तो है एक। बाप कितनी युक्तियां बच्चों को समझाते रहते हैं। पतित पावन एक बाप है। रास्ता भी वही बताते हैं। गीता कब सुनाई गई यह भी किसको पता नहीं है। द्वापर युग को कोई संगमयुग नहीं कहा जाता है। संगमयुगे2 तो बाप ही आते हैं मनुष्य तो बिल्कुल मूर्ख हुए हैं। सारा दिन यही ख्यालात g चलती है कैसे समझाया जाए। बाप को डायरेक्शन देने पड़ते हैं। टेप पर भी मुरली सुन सकते हैं। कोई2 बोलते हैं टीचर द्वारा हम सुन रहे हैं। क्यों न डायरेक्ट जाकर हम बाप से सुनें। इसलिए सम्मुख आते हैं। बच्चों को बहुत सर्विस करनी है। रास्ता बताना है। प्रदर्शनी में आते हैं। अच्छा2 भी बहुत करते हैं। फिर बाहर जाने से माया के वायुमण्डल में आने से सब भूल जाता है। सिमरण नहीं करते। उनको फिर पोछ करनी चाहिए। बाहर जाने से माया खींच लेती है। गोरख धन्धे में लग जाते हैं। इसलिए मधुबन का गायन है। तुम तो अभी सब मिलो है। तुम सबको समझायेंगे कि गीता का भगवान कौन है। आते तो तुम भी ऐसे ही जाकर माया दे देते थे। अभी तो तुम बिल्कुल बदल गये हो। h भक्ति छोड़ दी है। तुम अभी मनुष्य से देवता बनरहे हो। बुद्धि में नालेज है। और क्या जाने प्रजापिता ब्रह्माकुमार कुमारियां कौन है। (तुम समझते हो वास्तव में तुम भी प्रजापिता ब्रह्माकुमार कुमारियां हो। इस समय जो ब्रह्मा द्वारा स्थापना हो रही है) ब्राह्मण कुल भी जरूर चाहिए ना। संगम पर ही ब्राह्मण कुल होता है। आगे ब्राह्मणों को चोटी मशहूर थी। चोटी से या जनेऊ से पहचानते थे कि यह हिन्दू है। अब सो निशानियां भी चली गई हैं। अभी तुम जानते हो हम ब्राह्मण हैं। ब्राह्मण बनने बाद ही फिर देवता बन सकते हैं। ब्राह्मणों ने ही नईदुनिया को स्थापना की है। गोकुल से सतोप्रधान बन रहे हैं। अपनी जांच रखनी है। कोई भी आसुरी गुण न हो। लून पानी न बनना है। यह तो यज्ञ है ना। यज्ञ से सबकी सम्भाल होती रहती है। यज्ञ में सम्भालने वाले ट्रस्टी भी रहते हैं। यह यज्ञ का मालिक तो है शिवबाबा। यह ब्रह्मा भी ट्रस्टी है। यज्ञ को सम्भाल करनी पड़ती है। तुम बच्चों को जो चाहिए यज्ञ से लेना है। और कोई से लेकर पहनेंगे। तो वह याद आता रहेगा। इसमें बुद्धि को लाइन बड़ी क्लियर चाहिए। अब तो वापिस जाना है। समय बहुत थोड़ा है। इसलिए याद की यात्रा पक्की रहे। यही पुरुषार्थ करना है। अच्छा-

मीठे2 से मीठे बच्चों प्रति मातपिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

स्व उन्नति के लिए दृढ़ संकल्प:- 1- अपनी उन्नति के लिए रूहानी सर्विस में तत्पर रहना है। जो भी ज्ञान रत्न मिले हैं उन्हें धारण करना और कराना है।

2- अपनी जांच रखनी है कोई आसुरी गुण न हो। लून पानी नहीं बनना है। ट्रस्टी बन यज्ञ की सम्भाल करनी है। बुद्धि को लाइन क्लीयर रखनी है सुमना वेगाल्तोर तथा इस्र रखना कोई सामान बदला हुआ है नया रेडीस क्लियर रहे है।

BRAHMA KUMARIS
61/2 1st Floor, 8 F, 198
3rd Block MAIN ROAD,
JAYANAGAR-BANGALORE.

BRAHMA KUMARIS
Shanti Bhawan
opp. POST OFFICE,
HUNSUR-571105

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

19-2-2000 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

a **("मीठे बच्चे – बाप जो है, जैसा है, उसे यथार्थ रीति जानकर याद करना, यही मुख्य बात है, मनुष्यों को यह बात बहुत युक्ति से समझानी है")**

प्रश्नः – सारे युनिवर्स के लिए कौन-सी पढ़ाई है जो यहाँ ही तुम पढ़ते हो?

उत्तरः – सारे युनिवर्स के लिए यही पढ़ाई है कि तुम सब आत्मा हो। आत्मा समझकर बाप को **b** याद करो तो पावन बन जायेंगे। (सारे युनिवर्स का जो बाप है वह एक ही बार आते हैं सबको पावन बनाने। वही रचता और रचना को नॉलेज देते हैं इसलिए वास्तव में यह एक ही युनिवर्सिटी है, यह बात बच्चों को स्पष्ट कर समझानी है।)

ओम् शान्ति। भगवानुवाच – अब यह तो रूहानी बच्चे समझते हैं कि भगवान् कौन है। **c** भारत में कोई भी यथार्थ रीति जानते नहीं। (कहते भी हैं–मैं जो हूँ, जैसा हूँ मुझे यथार्थ रीति कोई नहीं जानते। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार जानते हैं। भल यहाँ रहते हैं परन्तु यथार्थ रीति से नहीं जानते।) यथार्थ रीति जानकर और बाप को याद करना, यह बड़ी मुश्किलात है। भल बच्चे कहते हैं कि बहुत सहज है परन्तु मैं जो हूँ, मुझे निरन्तर बाप को याद करना है, बुद्धि में यह युक्ति रहती है। मैं आत्मा बहुत छोटा हूँ। हमारा बाबा भी बिन्दी छोटा है। आधाकल्प तो भगवान का कोई नाम भी नहीं लेते हैं। दुःख में ही याद करते हैं–हे भगवान। अब भगवान कौन है, यह तो कोई मनुष्य समझते नहीं। (अब मनुष्यों को कैसे समझायें–इस पर विचार सागर **d** मंथन चलना चाहिए। नाम भी लिखा हुआ है–प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय। इससे भी समझते नहीं हैं कि यह रूहानी बेहद के बाप का ईश्वरीय विश्व विद्यालय है। अब क्या नाम रखें जो मनुष्य झट समझ जाएं? कैसे मनुष्यों को समझायें कि यह युनिवर्सिटी है? युनिवर्स से युनिवर्सिटी अक्षर निकला है। युनिवर्स अर्थात् सारा वर्ल्ड, उसका नाम रखा है–युनिवर्सिटी, जिसमें सब मनुष्य पढ़ सकते हैं। युनिवर्स के पढ़ने लिए युनिवर्सिटी है। (अब वास्तव में युनिवर्स के लिए तो एक ही बाप आते हैं, उनकी यह एक ही युनिवर्सिटी है। एम ऑब्जेक्ट भी एक है। बाप ही आकर सारे युनिवर्स को पावन बनाते हैं, योग सिखाते हैं।) यह तो सब धर्म वालों के लिए है। कहते हैं अपने को आत्मा समझो, सारे युनिवर्स का बाप है–इनकारपोरियल गॉड फादर, तो क्यों न इसका नाम स्प्रीचुअल युनिवर्सिटी ऑफ स्प्रीचुअल इनकारोपरियल गॉड फादर रखें। ख्याल किया जाता है ना। मनुष्य ऐसे हैं जो सारे वर्ल्ड में बाप को एक भी नहीं जानते हैं। रचता को जानें तो रचना को भी जानें। रचता द्वारा ही रचना को जाना जा सकता है। बाप बच्चों को सब कुछ समझा देंगे। और कोई भी जानते नहीं। ऋषि-मुनि भी नेती-नेती करते गये। तो बाप कहते हैं तुमको पहले यह रचता और रचना की नॉलेज नहीं थी। अभी रचता ने समझाया है। बाप कहते हैं मुझे सब पुकारते भी हैं कि आकर हमको सुख-शान्ति दो क्योंकि अभी दुःख-अशान्ति है। उनका नाम ही है दुःख हर्ता सुख कर्ता। कौन है? भगवान्। वह कैसे दुःख हर कर सुख देते हैं, यह कोई नहीं जानते हैं। तो ऐसा क्लीयर कर लिखें जो मनुष्य समझें निराकार गॉड फादर ही यह नॉलेज देते हैं। ऐसे-ऐसे विचार सागर मंथन करना चाहिए। बाप समझाते हैं मनुष्य सभी हैं पत्थरबुद्धि। अभी तुमको पारसबुद्धि बना रहे हैं। वास्तव में पारसबुद्धि उन्हें कहेंगे जो कम से कम 50 से

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अधिक मार्क्स लें। फेल होने वाले पारसबुद्धि नहीं। राम ने भी कम मार्क्स लिए तब तो क्षत्रिय दिखाया है। यह भी कोई समझते नहीं हैं कि राम को बाण क्यों दिखाये हैं? श्रीकृष्ण को स्वदर्शन चक्र दिखाया है कि उसने सबको मारा और राम को बाण दिखाये हैं। एक खास मैगजीन निकलती है, जिसमें दिखाया है—कृष्ण कैसे स्वदर्शन चक्र से अकासुर-बकासुर आदि को मारते हैं। टीचर को हिंसक बना दिया है और फिर डबल हिंसक बना दिया है। कहते हैं उन्हों को भी बच्चे पैदा हुए ना। अरे, वह हैं ही निर्विकारी देवी-देवता। वहाँ रावण राज्य है ही नहीं। इस समय रावण सम्प्रदाय कहा जाता है।

अभी तुम समझाते हो हम योगबल से विश्व की बादशाही लेते हैं तो क्या योगबल से बच्चे नहीं हो सकते। वह है ही निर्विकारी दुनिया। अभी तुम शूद्र से ब्राह्मण बने हो। ऐसा अच्छी रीति समझाना है जो मनुष्य समझें इनके पास पूरा ज्ञान है। थोड़ा भी इस बात को समझेंगे तो समझ जायेगा यह ब्राह्मण कुल का है। कोई के लिए तो झट समझ जायेंगे -(यह ब्राह्मण कुल का है नहीं। आते तो अनेक प्रकार के हैं ना। तो तुम स्प्रीचुअल युनिवर्सिटी ऑफ स्प्रीचुअल इनकारपोरियल गॉड फादर लिखकर देखो, क्या होता है? विचार सागर मंथन कर अक्षर मिलाने होते हैं, इसमें बड़ी युक्ति चाहिए लिखने की।)जो मनुष्य समझें यहाँ यह नालेज गॉड फादर समझाते हैं अथवा राजयोग सिखलाते हैं। यह अक्षर भी कॉमन है। जीवनमुक्ति डीटी सावरन्टी इन सेकण्ड। ऐसे-ऐसे अक्षर हों जो मनुष्यों की बुद्धि में बैठें। ब्रह्मा द्वारा विष्णुपुरी की स्थापना होती है। मन्मनाभव का अर्थ है—बाप और वर्से को याद करो। तुम हो ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण कुल भूषण, स्वदर्शन चक्रधारी। अब वह तो स्वदर्शन चक्र विष्णु को दिखाते हैं। कृष्ण को भी 4 भुजायें दिखाते हैं। अब उनको 4 भुजायें हो कैसे सकती? बाप कितना अच्छी रीति समझाते हैं। बच्चों को बड़ा विशाल बुद्धि, पारसबुद्धि बनना है। सतयुग में यथा राजा-रानी तथा प्रजा पारसबुद्धि कहेंगे ना। वह है पारस दुनिया, यह है पत्थरों की दुनिया। तुमको यह नॉलेज मिलती है—मनुष्य से देवता बनने की। तुम अपना राज्य श्रीमत पर फिर से स्थापन कर रहे हो। बाबा हमको युक्ति बतलाते हैं कि राजा-महाराजा कैसे बन सकते हो? तुम्हारी बुद्धि में यह ज्ञान भर जाता है औरों को समझाने के लिए। गोले पर समझाना भी बड़ा सहज है। इस समय जनसंख्या देखो कितनी है! सतयुग में कितने थोड़े होते हैं। संगम तो है ना। ब्राह्मण तो थोड़े होंगे ना। ब्राह्मणों का युग ही छोटा है। ब्राह्मणों के बाद हैं देवतायें, फिर वृद्धि को पाते हैं। बाजोली होती है ना। तो सीढ़ी के चित्र के साथ विराट रूप भी होगा। तो समझाने में क्लीयर होगा। जो तुम्हारे कुल के होंगे उनकी बुद्धि में रचता और रचना की नॉलेज सहज ही बैठ जायेगी। उनकी शक्ल से भी मालूम पड़ जाता है कि यह हमारे कुल का है या नहीं? अगर नहीं होगा तो तवाई की तरह सुनेगा। जो समझू होगा वह ध्यान से सुनेगा। एक बार किसको पूरा तीर लगा तो फिर आते रहेंगे। कोई प्रश्न पूछेंगे और कोई अच्छा फूल होगा तो रोज़ आपेही आकर पूरा समझकर चला जायेगा। चित्रों से तो कोई भी समझ सकते हैं। यह तो बरोबर देवी-देवता धर्म की स्थापना बाप कर रहे हैं। कोई न पूछते भी आपेही समझते रहेंगे। कोई तो बहुत पूछते रहेंगे, समझेंगे कुछ भी नहीं। फिर समझाना होता है, हंगामा तो करना नहीं है। फिर कहेंगे ईश्वर तुम्हारी रक्षा भी नहीं करते हैं! अब वह रक्षा क्या करते हैं सो तो तुम जानते हो। कर्मों का हिसाब-किताब तो हर एक को अपना चुक्तू करना है। ऐसे बहुत हैं, तन्दुरूस्ती खराब होती है तो कहते हैं रक्षा करो। बाप कहते हैं हम तो आते हैं पतितों को पावन बनाने। वह

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

धन्धा तुम भी सीखो। बाप 5 विकारों पर जीत पहनाते हैं। तो और ही जोर से वह सामना करेंगे। विकार का तूफान बहुत जोर से आता है। बाप तो कहते हैं बाप का बनने से यह सब बीमारियाँ उथल खायेंगी, तूफान जोर से आयेंगे। पूरी बॉक्सिंग है। अच्छे-अच्छे पहलवानों को भी हरा लेते हैं। कहते हैं - न चाहते भी कुदृष्टि हो जाती है, रजिस्टर खराब हो जायेगा। कुदृष्टि वाले से बात नहीं करनी चाहिए। बाबा सभी सेन्टर्स के बच्चों को समझा रहे हैं कि कुदृष्टि वाले बहुत ढेर हैं, नाम लेने से और ही ट्रेटर बन जायेंगे। अपनी सत्यानाश करने वाले उल्टे काम करने लग पड़ते हैं। काम विकार नाक से पकड़ लेता है। माया छोड़ती नहीं है, कुकर्म, कुदृष्टि, कुवचन निकल पड़ते हैं, कुचलन हो पड़ती है। इसलिए बहुत-बहुत सावधान रहना है।

तुम बच्चे जब प्रदर्शनी आदि करते हो तो ऐसी युक्ति रचो जो कोई भी सहज समझ सके। यह गीता ज्ञान स्वय बाप पढ़ा रहे हैं। इसमें कोई शास्त्र आदि की बात नहीं है। यह तो पढाई है। किताब गीता तो यहाँ है नहीं। बाप पढ़ाते हैं। किताब थोड़ेही हाथ में उठाते हैं। फिर यह गीता नाम कहाँ से आया? यह सब धर्मशास्त्र बनते ही बाद में हैं। कितने अनेक मठ-पंथ हैं। सबके अपने-अपने शास्त्र हैं। टाल-डाल जो भी हैं, छोटे-छोटे मठ-पंथ, उनके भी शास्त्र आदि अपने-अपने हैं। तो वह हो गये सब बाल-बच्चे। उनसे तो मुक्ति मिल न सके। सर्वशास्त्र मई शिरोमणी गीता गाई हुई है। गीता का भी ज्ञान सुनाने वाले होंगे ना। तो यह नॉलेज बाप ही आकर देते हैं। कोई भी शास्त्र आदि हाथ में थोड़ेही हैं। मैं भी शास्त्र नहीं पढ़ा हूँ, तुमको भी नहीं पढाते हैं। वह सीखते हैं, सिखलाते हैं। यहाँ शास्त्रों की बात नहीं। बाप है ही नॉलेजफुल। हम तुमको सभी वेदों-शास्त्रों का सार बतलाते हैं। मुख्य हैं ही 4 धर्मों के 4 धर्मशास्त्र। ब्राह्मण धर्म का कोई किताब है क्या? कितनी समझने की बातें हैं। यह सब बाप बैठ डिटेल में समझाते हैं। मनुष्य सब पत्थरबुद्धि हैं तब तो इतने कंगाल बने हैं। देवतायें थे गोल्डन एज में, वहाँ सोने के महल बनते थे, सोने की खानियां थी। अभी तो सच्चा सोना है नहीं। सारी कहानी भारत पर ही है। तुम देवी-देवता पारसबुद्धि थे, विश्व पर राज्य करते थे। अभी स्मृति आई है, हम स्वर्ग के मालिक थे फिर नर्क के मालिक बने हैं। अब फिर पारसबुद्धि बनते हैं। यह ज्ञान तुम बच्चों की बुद्धि में है जो फिर औरों को समझाना है। ड्रामा अनुसार पार्ट चलता रहता है, जो टाइम पास होता है सो एक्यूरेट फिर भी पुरूषार्थ तो करायेंगे ना। जिन बच्चों को नशा है कि स्वयं भगवान हमको हेविन का मालिक बनाने के लिए पुरूषार्थ कराते हैं उनकी शक्ल बड़ी फर्स्टक्लास खुशनुमः रहती है। बाप आते भी हैं बच्चों को पुरूषार्थ कराने, प्रालब्ध के लिए। यह भी तुम जानते हो, दुनिया में थोड़ेही कोई जानते हैं। हेविन का मालिक बनाने भगवान पुरूषार्थ कराते हैं तो खुशी होनी चाहिए। शक्ल बड़ी फर्स्टक्लास खुशनुमः होनी चाहिए। बाप की याद से तुम सदैव हर्षित रहेंगे। बाप को भूलने से ही मुरझाइस आती है। बाप और वर्से को याद करने से खुशनुमः हो जाते हैं। हर एक की सर्विस से समझा जाता है। बाप को बच्चों की खुशबू तो आती है ना। सपूत बच्चों से खुशबू आती है, कपूत से बदबू आती है। बगीचे में खुशबूदार फूल को ही उठाने के लिए दिल होगी। अक को कौन उठायेंगे! बाप को यथार्थ रीति याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

तो भाषण आदि करेगा- कि गृहस्थ व्यवहार में रहते कैसे ' सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिल सकती है। परमपिता परमात्मा के सिवाए तो कोई दे न सके। यह महावीर ही भाषा सकते हैं। सुनने लिए मना नहीं है और न कोई जरूरी है कि सफेद ड्रेस ही पहननी है। भले कोई भी ड्रेस पहन गुप्त रूप में बैठकर सुनो। बहुरूपी बनकर कोई भी कपड़े पहनकर आओ बोलो- ब्रह्मा कुमारी तो सफेद वस्त्रधारी होती हैं। उन्हों का तो मन्यात किया हुआ है हम तो गृहस्थ व्यवहार में रहते हैं। ऐसे भी तुम बड़ा सर्विस कर सकते हो। बोलो राज्यों सीखा हो तो बी०के० के पास जाओ। आगे चलकर तुम्हारा नाम बाला हो जायेगा। मेजारिटी हो जायेगी। अभी तो थोड़े हैं। भगाने का नाम भी बहुत है। कृष्ण ने भगाया अरे भगाने की तो कोई बात नहीं। टीचर कब पढ़ाने के लिए भगाते हैं क्या। सर्विस करने वालों को तो बहुत विचार सागर मंथन करना है और बहुत बहादुर बनना है। अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

रात्रि क्लास:- मुरली है यह ज्ञान की , सो बिचारा श्रीकृष्ण क्या जानें। तुमको बिचारा नहीं कहेंगे। परमपिता परमात्मा ही त्रिकालदर्शी है और तुम बच्चे भी हो। ज्ञान का धी तो पढ़ना है ना। पढ़ तुम बच्चों के हाथ में है। त्रिमूर्ति की महिमा को कोई जान नहीं सकते हैं। अब तुम्हारी अर्थ सहित मनोकामना पूर्ण हो रही है। जो अनन्य बच्चे हैं वे समझते हैं हमारी सब मनोकामना पूरी हो रही है यह पढ़ाई है सर्व मनोकामनाओं को पूरी करने वाली। सिवाए एक के दूसरा कोई कर न सके। और सब मनोकामनायें पूर्ण सत्यम में हो जायेंगी। सतयुग में बिना तेरा तुमको मिलते हैं आधी भारती तेरा और कोई को नहीं मिलेगा। जो सतयुग में तेरा होते हैं वह कलियुग में हो न सकें। कहां नई दुनिया के तेरा कहां पुरानी दुनिया के। तेरा भी सब धर्मों के न्यारे हैं। फिर2 के तेरा होते हैं। तुम बच्चों की बुद्धि में जो यह ज्ञान की बातें हैं वह सारी दुनिया से न्यारी है।

यह है दुनियावी बातें यह है ईश्वरीय बातें, जो सबसे न्यारी है। स्वराज्य पाना करने के लिए यह बातें ही बिल्कुल न्यारी हैं। रहते भी यहाँ ही हो। मनुष्यों के साथ रहना हो, कोई फर्क नहीं। फिर भी तुम्हारी एक्टिविटी सबसे न्यारी है। देवताओं से भी दूसरों से भी न्यारी। तुम्हारी है ईश्वरीय एक्टउनकी है आसुरी एक्ट। फिर तुम्हारी नई दैवी एक्ट होगी जो सतयुग आदि की थी वही फिर करेंगे। अच्छा- ओमशान्ति।

धारणा के लिए मुख्य सार:- §1§ सभी भक्ति रूपी रीतियों को त्याग की कैंची से छुड़ाना है। सेकेण्ड में मुक्ति जीवनमुक्ति की राह दिखानी है।

§2§ बाप और वर्सा को याद करना है। देह अभिमान को छोड़ महावीर बन सेवा करनी है। विचार सागर मंथन कर सेवा की नई2युक्तियां निकालनी है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

5·9·86· प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"सारे विश्व में तत्वों सहित सभी मनुष्यमात्र को बदलने वाली युनिवर्सिटी केवल यही एक है, यहाँ ही सबकी सदगति होती है।"

प्रश्न:-बाप में निश्चय होते ही कौन सी राय फौरन अमल में लानी चाहिए?

उत्तर:-जब निश्चय हुआ कि बाप आया है तो बाप की पहली2राय कि इन आखों से जो कुछ देखते हो उसे भूल जाओ, एक मेरी मत पर चलो, इस राय को फौरन अमल में लाना चाहिए। 2-जब तुम बेहद के बाप का बने तो पतितों के साथ तुम्हारी लेन-देन हो नहीं सकती। निश्चयबुद्धि बच्चों को कब किसी बात में संशय नहीं आ सकता।

a ओमशान्ति। यह घर का घर भी है और युनिवर्सिटी भी है इसको ही गाड फादरली वर्ल्ड युनिवर्सिटी कहा जाता है क्योंकि सारी दुनिया के मनुष्य मात्र की सदगति होती है। रीयल वर्ल्ड युनिवर्सिटी यह है। घर का घर भी है, मात पिता के सम्मुख बैठे हैं फिर युनिवर्सिटी है। स्पीचुअल फादर बैठा हुआ है। यह रूहानी नालेज है जो रूहानी बाप द्वारा मिलती है। स्पीचुअल नालेज सिवाए स्पीचुअल फादर के कोई मनुष्य दे नहीं सकता। इनको ही ज्ञान का सागर कहा जाता है और ज्ञान से ही सदगति होती है इसलिए सर्व का सदगति दाता कहा जाता है। सर्व युनिवर्स के मनुष्य तो क्या परन्तु हर चीज 5तत्व भी सतोप्रधान बन जाते हैं। सबकी सदगति होती है। यह बातें बड़ी समझने की हैं। अभी सबकी सदगति होनी है। पुरानी दुनिया और दुनिया में रहने वाली सब चीजें चेन्ज हो जायेंगी। जो भी यहाँ देखते हो वो सब बदल कर नया होने का है। गाया भी जाता है-झूठी माया झूठी काया··यह झूठ खण्ड

b बन गया है। भारत सचखण्ड था अभी झूठखण्ड है। रचयिता और रचना के बारे में जो मनुष्य कहेंगे वह झूठ, ऐसे नहीं कि यह गलानी की जाती है। मकान को मकान कहना यह कोई झूठ नहीं है। ऐसे ही रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को नहीं जानने कारण जो कुछ कहते हैं झूठ ही कहते। प्राचीन ऋषि मुनि भी रचता और रचना के बारे में नेती2कह देते थे। जो जानते उनको आस्तिक कहा जाता, जो नहीं जानते उनको नास्तिक कहा जाता। अभी तुम बाप द्वारा जानते हो, भगवानुवाच-भगवान एक बाप है ना। वह है निराकार। असल में तो सब आत्मायें निराकार हैं। फिर यह साकार रूप लेती है। वहाँ आकार नहीं है। आत्मायें मूलवतन वा ब्रह्म महतत्व में निवास करती हैं। वह है हम आत्माओं का घर, ब्रह्म महतत्व। यह आकाश तत्व है जहाँ साकार पार्ट चलता है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी रिपीट होती है इनको भी अभी मनुष्य समझते नहीं। कहते हैं रिपीट होती है, गोल्डन एज, सिलवर एज, कापर एज, आइरन एज, फिर क्या? फिर गोल्डन जरूर आयेगी। संगमयुग एक ही होता है। सतयुग और त्रेता वा त्रेता और द्वापर का संगम नहीं कहा जाता। वह राँग हो जाता है। बाप कहते हैं मैं कल्प 2कल्प के संगमयुग पर आता हूँ। मुझे बुलाते ही अब हैं, जब पतित बने हैं तब कहते हैं आप पावन बनाने आओ। पावन होते ही हैं सतयुग में। अभी है संगम। इनको कल्याणकारी संगमयुग कहा जाता है। आत्माओं और परमात्मा का संगम, इनको कुम्भ कहा जाता है। वह फिर दिखाते हैं नदियों का मेला। दो नदियां हैं, तीसरी फिर गुप्त नदी कहते हैं, यह भी है झूठ। गुप्त नदी कोई हो सकती है क्या? साइन्स वाले भी नहीं मानेंगे कि कोई गुप्तनदी हो सकती है। फिर गंगा निकल आई। कहते भी हैं हे पतितों को पावन बनाने वाले बाबा आओ, दु:ख हर्ता सुख कर्ता आओ, फिर उनको सर्वव्यापी कहना यह तो बात ही नहीं

ठीक है। बाप कहते हैं मेरी शिव जयन्ती तुम मनाते हो ना। शिव तो है निराकार। तुम आत्मायें भी निराकार दुनिया से आती हो। अब मुझे बुलाते हैं हे पतितों को पावन बनाने वाले बाबा। बाबा का नाम है शिव। परमपिता परमात्मा नम: कहते हैं ना। शिवबाबा है ना। कहते भी हैं फिर सर्वव्यापी क्यों कहते। आत्मायें तो अपना पार्ट बजाती हैं। सर्वव्यापी की

c बात ही नहीं। गाया हुआ है ज्ञान, भक्ति वैराग। यह अक्षर भल पकड़ लिया है परन्तु अर्थ समझते हैं पहले2ज्ञान दिन, फिर है भक्ति रात। ब्रह्मा का दिन ब्रह्मा की रात। अब एक को तो हो न सके। बहुत होंगे ना। दिन होता है आधाकल्प का। फिर रात भी होती है- आधाकल्प की। फिर होती है सारी पुरानी दुनिया का वैराग। बाप कहते हैं देह सहित जो

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कुछ भी तुम इन आंखों से देखते हो उनको ज्ञान से भूलना है। धंधा आदि सब करना है। बच्चों को समझाना है परन्तु बुद्धि का योग एक से लगाना है। आधाकल्प तुम रावण की मत पर चलते हो। अब बाप का बने हो तो जो कुछ करो सो बाप की राय से करो। तुम्हारा लेन-देन इतना सत्य पतितों से चली आई है। उसका नतीजा क्या हुआ है। दिनप्रतिदिन पतित ही बनते आये हो। क्योंकि भक्तिमार्ग है ही उतरती कला। सतोप्रधान सतो फिर रजो तमो में आना होता है। उतरना ही है जरूर, इससे कोई छुड़ा न सके। ल०ना०के भी 84जन्म बताये हैं ना। अंग्रेजी में अक्षर बड़े अच्छे हैं। गोल्डन एज, सिल्वर एज··खाद पड़ती है-जिससे इस समय आकर आइरन एजड बने हैं। गोल्डन एज में नई दुनिया थी। नया भारत था। इन ल०ना०का राज्य था। कल की बात है। शास्त्रों में लाखों वर्ष लिख दिया है। अब बाप कहते हैं तुम्हारे शास्त्र राइट या मैं राइट हूं। बाप को कहा जाता है वर्ल्ड आलमाइटी अथार्टी जो वेद शास्त्र बहुत पढ़ते हैं उनको अथार्टी कहा जाता है। बाप कहते हैं यह सब भक्तिमार्ग की अथार्टी हैं। ज्ञान के लिए तो मेरा ही गायन है-आप ज्ञान के सागर हो। हम नहीं हैं। मनुष्य सभी भक्ति के सागर में डूबे हुए हैं। सतयुग में कोई गोते खाते नहीं। विकार में जाते नहीं। विष पीने से ही मनुष्य आदि मध्य अन्त दुख पाते हैं। बाप ने कल्प पहले भी ऐसे समझाया था। अब फिर समझा रहे हैं। बच्चे समझते हैं कल्प पहले भी बेहद के बाप से वर्सा लिया था अब फिर पढ़कर पा रहे हैं। समय बहुत थोड़ा है। यह तो सभी विनाश हो जायेंगे। इसलिए बेहद के बाप से पूरा वर्सा लेना चाहिए। वह बाप टीचर गुरू भी है, सुप्रीम फादर सुप्रीम टीचर भी है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी कैसे रिपीट होती है, सारी नालेज देते हैं। यह और कोई समझा न सकें। अभी बच्चे ही समझते हैं 5हजार वर्ष पहले माफिक यह वही गीता का भगवान है। श्रीकृष्ण नहीं है। मनुष्य को भगवान नहीं कहा जाता है। मनुष्यों ने तो गीता का भगवान भी उनको कह दिया है जो पूरे 84जन्म लेते हैं। परन्तु भगवान तो है ही पुनर्जन्म रहित। यह कोई जन्म नहीं कहा जाता। इनको दिव्य जन्म कहा जाता है। नहीं तो मैं निराकार बोलूं कैसे। मुझे तो जरूर आकर पावन बनाना है, तो युक्ति बतानी पड़े। तुम जानते हो हम आत्मा अमर हैं। रावणराज्य में तुम सब देह अभिमानी बन पड़े हो, सतयुग में देही अभिमानी होते हैं। बाकी परमात्मा रचयिता और उनकी रचना को वहां भी कोई नहीं जानते। अगर वहां भी मालूम हो कि हमको फिर ऐसे गिरना है तो राजाई की खुशी ही न रहे। इसलिए बाप कहते हैं यह नालेज वहां प्रायःलोप हो जाती है। जबकि तुम्हारी सदगति हो जाती है फिर ज्ञान की दरकार ही नहीं। भारत ही वाइसलेस वर्ल्ड थी अब विश्व है। भारत के साथ सारी वर्ल्ड ही विश्व है। वहां वाइसलेस थी तो मनुष्य बहुत थोड़े थे। वाइसलेस वर्ल्ड में आज से 5हजार वर्ष पहले एक ही धर्म था। पवित्रता थी तो पीस प्रासपर्टी सब थी। प्योरिटी है फर्स्ट। अभी प्योरिटी नहीं है तो पीस प्रासपर्टी भी नहीं है। ज्ञान का सुख का सागर, प्यार का सागर एक ही बाप है। तुमको भी ऐसा प्यारा बनाते हैं। इन ल०ना०की राजधानी में सभी प्यारे हैं। मनुष्य मात्र जानवर आदि सभी प्यारे हैं। शेर बकरी इकट्ठे जल पीते हैं। यह एक दृष्टान्त है। वहां ऐसी चीज गन्दी करने वाली होती नहीं। यहां बीमारियां मच्छर आदि बहुत हैं। गरीबों का पैनीचर भी साधारण, भारत अब गरीब है। कितना किचड़ा लगा हुआ है। सतयुग में कितनी सफाई रहती है। सोने के महल आदि कितने फर्स्टक्लास होंगे। वैकुण्ठ की गायें भी देखो कितनी फर्स्टक्लास होती हैं। कृष्ण को कितनी अच्छी2 गायें दिखाते हैं। श्रीकृष्णपुरी में गायें तो होंगी ना। वहां की गउएं बड़ी सुन्दर होंगी। यहां की गऊ तो देखो कैसी हैं। वहां की हर चीज कितनी फर्स्टक्लास होती है तो फिर क्या। इस पुरानी छी2दुनिया में तो बहुत किचड़ा है। यह सब इस ज्ञान यज्ञ में स्वाहा हो जायेगा। कैसे2बाम्बस बनाते रहते हैं। बाम्ब फेंकें तो आग लग जाए। गैस भी है। आजकल तो बम के अन्दर जीवड़े भी डालते हैं। ऐसा विनाश करते हैं जो बेहद में अन्त हो जाए। हास्पीटल आदि तो रहेंगी नहीं, जो दवाई आदि कर सकें। बाप कहते हैं बच्चों को कोई तकलीफ नहीं होनी चाहिए। इसलिए गाया हुआ है नेचुरल कैलेमिटीज, मूसलधार बरसात··बच्चों ने विनाश का सा०भी किया है। बुद्धि भी कहती है विनाश तो

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जरूर होना है।कोई कहे विनाश सा० हो तब मानें।अच्छा न मानो तुम्हारी मर्जी।कोई कहे हम आत्मा का साक्षात्कार करें तब हम मानें।अच्छा आत्मा तो बिन्दी है,देख लिया तो क्या हुआ।क्या इससे सदगति होगी? कहते हैं परमात्मा अखण्ड ज्योति स्वरूप हजारों सूर्यों से तेजोमय हैं परन्तु ऐसे हैं नहीं।गीता में लिखा है अर्जुन ने कहा बस करो।हम सहन नहीं कर सकता हूँ।ऐसी बात है नहीं।बाप को बच्चे देखें और कहें हम सहन नहीं कर सकते, ऐसे कुछ भी है नहीं। जैसे आत्मा है वैसे परमपिता परमात्मा बाप है।सिर्फ वह ज्ञान का सागर है,तुम्हारे में भी ज्ञान है,उसमें सारे सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान है।बाप ही आकर पढ़ाते हैं।बाकी और कोई बात है नहीं।जो2जिस भावना से याद करते हैं वह भावना पूरी कर देता हूँ,वह भी ड्रामा में नूँध है।बाप कहते हैं इन भक्तिमार्ग के शास्त्रों से मुझे कोई प्राप्त नहीं कर सकते हैं।सिर्फ सा० में खुश नहीं हो जाना है।बाकी भगवान किसको मिल नहीं सकता।

मीरा सा० में कितना खुश होती थी।करके दूसरे जन्म में भक्तिन बनी होगी।वैकुण्ठ में तो जा नहीं सकती।अभी तुम बच्चे वैकुण्ठ में जाने की तैयारी कर रहे हो।जानते हो हम वैकुण्ठ कृष्णपुरी के मालिक बन रहे हैं।यहाँ तो सब नर्क के मालिक हैं।नर्कवासी हैं ना। जो स्वर्गवासी पूज्य थे सो अब पुजारी नर्क के मालिक बन पड़े हैं।हिस्ट्री जोग्राफी रिपीट होगी ना।बच्चे जानते हैं हम अपना राज्य योगबल से स्थापन कर रहे हैं,बाहुबल की लड़ाईयां आदि तो अनेक बार अनेक जन्म चली आई हैं।योगबल तुम्हारा एक ही बार चलता है।योगबल से तुम्हारी चढ़ती कला है।जानते हो बरोबर सतयुग की राजधानी स्थापन हो रही है।जिन्होंने कल्प पहले पुरुषार्थ किया होगा वही करेंगे।तुमको हार्टफेल नहीं होना चाहिए।जो पक्के निश्चयबुद्धि हैं उनको कब संशय आ नहीं सकता।संशयबुद्धि होते हैं जरूर।बाबा ने कहा है आश्चर्यवत सुनन्ती,कथन्ती,भागन्ती··अहो माया तुम उन पर जीत पा लेती हो।माया बहुत बलवान है।अच्छे2फर्स्टक्लास सर्विस करने वाले सेन्टर चलाने वाले को भी माया थप्पड़ मार देती है।लिखते हैं बाबा शादी कर काला मुँह कर दिया।काम कटारी से हमने हार खा ली।अब तो बाबा आपके सामने आने लायक न रहे हैं।फिर लिखते हैं बाबा सम्मुख आवें।बाबा लिखते हैं काला मुँह किया अब यहाँ नहीं आ सकते हो।यहाँ आकर क्या करेंगे।फिर भी वहाँ रहकर पुरुषार्थ करो।एक बार गिरा सो गिरा।ऐसे नहीं राजाई पद पा सकेंगे।कहा जाता है ना कि चढ़े सो चाखे वैकुण्ठ रस··गिरे तो एकदम चण्डाल··छक्कु ही टूट पड़ती है। 5मार से गिरते हैं फिर कोई2सच लिखते हैं कोई तो सुनाते ही नहीं सेन्टर पर आते जाते हैं,सुनाते नहीं हैं।इन्द्रप्रस्थ की परियों का भी मिसाल है ना।सारी ज्ञान की बात इस सभा में कोई पतित को बैठना,हुक्म नहीं है। परन्तु कोई हालत में बिठाना होता है,पतित ही तो आयेंगे ना।

अब बेहद का बाप कहते हैं बच्चे काम पर जीत प्राप्त कर पवित्र रहो।मुझे याद करो तो मैं गैरन्टी करता हूँ कि तुम विश्व के मालिक बनोगे।अखबारों में भी खुद डालते हैं कि कोई पेरव है जो हमसे यह सब बनवाते हैं। इससे अपने ही कुल का नाश होगा। परन्तु क्या करें ड्रामा में नूँध है।दिनप्रतिदिन बनाते ही जाते हैं।टाइम बहुत तो नहीं हैं ना।अच्छा-

मीठे2सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग।रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

स्वउन्नति के लिए दृढ़ संकल्प:-

1-इन आंखों से जो कुछ दिखाई देता है-उसे ज्ञान से भूलना है।धन्धा आदि करते योग एक बाप से रखना है।

2-पतितों से कोई भी लेन-देन नहीं करनी है।किसी भी बात में संशयबुद्धि नहीं बनना है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

रिकार्ड:- रात के राही —— ओमशान्ति। रात के राही का अर्थ तो बच्चे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते होंगे। अगर बच्चों के स्वदर्शन चक्र फिरता रहता है, स्मृति में रहते है तो वह समझ सकेंगे बरोबर हम कितना दिन अर्थात स्वर्ग के नजदीक पहुंचे है। बच्चों को समझाया गया है यह बेहद का दिन और रात है। ब्रह्मा की बेहद की रात कहा जाता है। नाम कितना अच्छा लिखा हुआ है शास्त्रों में। ऐसे नहीं कहा जावेगा ल0ना0 का दिन शुरू होता है फिर ल0ना0 की ही रात होगी। नहीं। ब्रह्मा का दिन, ब्रह्मा की रात कही जाता है। ल0ना0 तो यहाँ राज्य करते थे। फिर जरूर सृष्टि चक्र के फिरना है। ल0ना0 का राज्य फिर सतयुग में आना है। सतयुग के बाद त्रेता द्वापर कलियुग जरूर आना है। तो जरूर सतयुग में फिर इन्हीं राजा होना चाहिए। यह ज्ञान सिर्फ शिव बाबा ही ब्रह्मा द्वारा तुम बच्चों को देते हैं। इसीलिये तुम को ही यह सृष्टि चक्र का ज्ञान है। देवताओं को नहीं है। तुम ब्राह्मणों की बुद्धि में यह चक्र फिर सकता है। इसलिये नाम रखा है ब्रह्मा और ब्रह्माकुमार कुमारियों की रात है। अभी तुम सफर कर रहे हो दिन तरफ। सतयुग को दिन, कलियुग को रात कहा जाता है। तुम बच्चे जानते हो हमारी यात्रा एक ही होती है और कलियुग के अन्त में, सतयुग आदि के संगम पर यह यात्रा करते हैं। तुम बैठे कलियुग में हो, तुम्हारा बुद्धि वहाँ है। आत्मा को समझना है हमको यह शरीर छोड़ कर बाप के पास जाना है। शरीर तो अन्त में छूटेगा जब मंजिल पूरी होगी। अर्थात बाप योग सिखाना बन्द करेंगे। पढ़ाई का अन्त होगा। तब तक बाप सिखाते, पढ़ाते रहते हैं। बच्चे बाप को याद में रहते हैं। ऐसे रहते रहते रात पूरी हो जावेगी। और तुम ब्रह्माकुमार कुमारियों के लिये। अब दिन अर्थात सतयुग आ रहा है। अभी तुम कलियुगी रात में बैठे

h

14-3-73 3

i

उस गुरु के बदली एक शिव बाबा को याद करना पड़े। मेहनत है। वह बाप सभी का एक ही है। उस द्वारा ही स्वर्ग का वरसा मिल सकता है। शान्ति का, सुख का वरसा उससे मिलता है। यह समय ही बाप द्वारा बाप से मिलने का अथवा वरसा लेने का। सतयुग में था ही एक धर्म। तो अनेक धर्म विनाश और एक धर्म की स्थापना का काम परमपिता परमात्मा का ही है। दूसरा कोई कर न सके। जो बाप द्वारा पढ़ते हैं, राजयोग सीखते हैं वह स्वर्ग चले जाते हैं। तुम जानते हो अभी कलियुग का अन्त है। महा भारी लड़ाई भी सामने खड़ी है। जो पढ़ेंगे वही पढ़ पावेंगे। बाकी सभी हिसाब किताब चुक्तु कर और पुण्य का जमा करना है। जितना जितना ज्ञान और योग में रहेंगे तो पुराना खाता खत्म हो नया जमा होता जावेगा। योगबल से तुम्हारी आयु बढ़ेगी। तुम स्वर हेल्दी वेल्दी बनते जावेंगे। ज्ञान और योग से दोनों मिलते हैं। यह तुम्हारे लिये हास्पीटल भी है तो कालेज भी है। वास्तव में सच्ची सच्ची युनिवर्सिटी यह है। गवर्मेन्ट की जो युनिवर्सिटी है उनको युनिवर्सिटी नहीं कहेंगे। युनिवर्स तो सारे विश्व को कहा जाता है। विश्व की कालेज कोई है नहीं। वह सभी हैं हद के। कितनी हदें डाल दी है। युनिवर्सिटी को हिन्दी में कहा जाता है विश्व विद्यालय। सारे विश्व से कोई भी आकर पढ़े। उस युनिवर्सिटी में तो ऐसा हो न सके। यहाँ कोई भी आकर पढ़े। विश्व का रचयिता ही यह विश्व विद्यालय स्थापन करते हैं। हम लिखते भी ऐसे हैं। परन्तु युनिवर्सिटी अक्षर लिखने नहीं देते। अब विश्व विद्यालय या युनिवर्सिटी में फर्क क्या है। वह हिन्दी है, वह अंग्रेजी अक्षर है। परन्तु कुछ लोग समझते नहीं। अच्छा एक आफीसर हद: हो गया तो फिर दूसरे को पकड़ना चाहिए। यह विश्व के रचयिता ने विश्व विद्यालय रची है। जहाँ

j

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

6-8-98 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – दूरादेशी और विशालबुद्धि बनो, शिवबाबा के कार्य में कभी डिस्टर्ब नहीं करना, डिस्टर्ब करने वालों को ऊंच पद नहीं मिल सकता"

प्रश्नः- इस दुनिया में मनुष्यों को कौन से ख्यालात रहते हैं जो सतयुगी देवताओं को कभी नहीं आयेंगे?

उत्तरः- यहाँ मनुष्य समझते हैं कि हम कमायेंगे तो हमारे पुत्र और पोत्रे खायेंगे लेकिन यह ख्यालात देवताओं में नहीं होंगे क्योंकि उनके पुत्र और पोत्रे सब यहाँ से ही वर्सा लेकर जाते हैं। वह समझते हैं हमारी अविनाशी राजाई है। यहाँ ही हरेक अपना-अपना पुरुषार्थ कर रहे हैं।

गीतः- माता ओ माता.....

ओम् शान्ति। बच्चों ने माताओं की महिमा सुनी। बच्चे जान चुके हैं किस-किस माता की महिमा होती है। माताओं की इतनी महिमा करते हैं, तो जरूर होकर गयी हैं। अभी तो वह है नहीं। जो जगत अम्बा होकर गई है उनकी भक्ति मार्ग में महिमा होती है। अब वह क्या करके गयी – यह तुम भी नहीं जानते थे। जगत अम्बा के मन्दिर में जाते हैं, जाकर उनसे कुछ न कुछ मांगते हैं। कोई को बच्चे की आश होगी, कोई आशीर्वाद मांगेंगे। अब जड़ चित्र तो कुछ कर नहीं सकते, न वह समझते हैं परन्तु यह है भक्ति। तुम जानते हो वह पास्ट हो गये हैं। जगत अम्बा की महिमा है। एक तो नहीं है, तुम सब पालना ब्राह्मण कुल की पालना करते हो, फिर दैवी कुल की पालना करेंगे। तुम इस समय जैसे कि सारे जगत की पालना करते हो परन्तु कोई जानते नहीं। चण्डिका देवी का भी मेला लगता है। चण्डिका नाम देखो कितना छी-छी है! बाबा कहते हैं जो आश्चर्यवत् भागन्ती हो फ़ारकती देते हैं वह जाकर चण्डाल का जन्म पाते हैं। घर में चंचलता करते हैं तो उनको कहा जाता है ना – तुम तो चण्डी हो, चण्डाल हो। बरोबर तुम देखते हो शिवबाबा का बनकर फिर भी बहुत चंचलता करते हैं, चंचलता अर्थात् अवज्ञा करते हैं, शिवबाबा की सर्विस में डिस्टर्ब करते हैं तो अन्त में चले ही जाते हैं। कोई भी ब्रह्माकुमारी सेन्टर में होगी, कुछ चंचलता करेगी, किसको समझा नहीं सकेगी वा क्रोध करती होगी तो सब कहेंगे इनको तो क्रोध बहुत है। अब चण्डिका एक तो नहीं, बहुत होती हैं। देवियों की महिमा भी है और फिर ऐसे जो चण्डिका आदि बनते हैं उनका भी गायन है। फिर भी ईश्वर के बने हैं। भल कोई चले जाते हैं फिर भी स्वर्ग में तो आयेंगे ना। मालिक तो बनेंगे ना। भल मालिक तो राजा-रानी ही बनते हैं लेकिन प्रजा भी कहेगी हम मालिक हैं। कांग्रेसी लोग कहते हैं ना हमारा भारत महान् है। आजकल तो गीत में भी गाते रहते हैं – भारत बहुत अच्छा था। आज तो खून की नदियां बह रही हैं।

अभी तुम बेहद के बाप के बच्चे बने हो। गोपी वल्लभ की गोप-गोपियां गाई हुई हैं। वल्लभ बाप को कहा जाता है। गाया भी जाता है एक गोपी वल्लभ की अनेक गोप-गोपियां।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सतयुग में तो गोपिकाओं आदि की बात ही नहीं है। अभी तुम बच्चे विशाल दूरांदेशी बुद्धि बने हो। बुद्धि का ताला खुल गया है। इस जन्म की जीवन कहानी को तुम अच्छी रीति जानते हो। हर एक को नशा तो रहता है ना। अभी बिड़ला है, उनको अपने धन का नशा होगा। समझेंगे — मैं सबसे साहूकार हूँ। परन्तु तुम जानते हो — जो आज साहूकार हैं वह फिर गरीब बन जायेंगे। तुम्हारी और अन्य मनुष्यों की बुद्धि में रात-दिन का फ़र्क है। कोई को क्या नशा, कोई को क्या नशा रहता है — मैं फलाना हूँ, ऐसे हूँ.....। इनको (ब्रह्मा को) भी नशा था ना — मैं बड़ा जौहरी हूँ। अभी समझते हैं वह सभी नशे कौड़ी मिसल हैं। तुम बच्चों को कितना नशा चढ़ा हुआ है! वह समझते हैं हम कमायेंगे फिर हमारे पुत्र-पोत्रे खायेंगे। यहाँ तो वह बात नहीं है। तुम जानते हो हम बेहद के बाप को जानकर उनसे वर्सा पा रहे हैं। जिसकी प्रालब्ध हम ही खुद जन्म बाई जन्म पद पायेंगे। पुत्र-पोत्रे आदि सब यहाँ पुरुषार्थ कर रहे हैं। 'हमारे पौत्रे खायेंगे' — यह ख्यालात वहाँ नहीं रहती। समझते हैं अविनाशी राजाई है। यहाँ तो राजे लोग समझते हैं — पुत्र-पोत्रे खायेंगे। तुम अभी बाप से इतना वर्सा लेते हो, ऐसे कर्म करते हो जो 21 जन्म उसका फल मिलता रहता है, पुत्र-पौत्रों का ख्याल नहीं रहता। वे भी सब यहाँ ही वर्सा पाते हैं। तुमको कितना ज्ञान है, मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते। गॉड फादर, जिनको इतना याद करते हैं, जरूर उनसे इतना भारी सुख मिलता होगा। गाते हैं ना — हे परमपिता परमात्मा रहम करो। उनको परम आत्मा कहा जाता है, वह सुप्रीम है। जन्म-मरण रहित है इसलिए उनको परम आत्मा अर्थात् परमात्मा कहते हैं। सभी आत्माओं का रूप एक जैसा है। जैसा-जैसा पुरुषार्थ करते हैं वैसा पद पाते हैं। इनकी आत्मा अच्छा पढ़ती है तो नारायण बनती है। कोई फिर फेल होंगे तो राम बनेंगे। आत्मा ही बनती है ना। तुम्हारी आत्मा समझती है मैं परमपिता परमात्मा से राजयोग सीख रही हूँ। आत्मा फिर आकर नया चोला पहन पार्ट बजायेगी, नर से नारायण बनेगी। यह तुम बच्चों की बुद्धि में है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। फिर यह ज्ञान प्रायः लोप हो जायेगा। वहाँ कोई पतित होगा नहीं। ज्ञान किसको देंगे? पतित-पावन को यहाँ याद करते हैं। अच्छा समझो गंगा पतित-पावनी है तो भी वह राजयोग तो नहीं सिखला सकती है। बाप तो राजयोग सिखलाते हैं ना। यह सारा ड्रामा का राज़ आदि से अन्त तक तुम बच्चों की बुद्धि में है।

(तुम सब पढ़ते तो एक ही क्लास में हो, लेकिन नम्बरवार हो। शुरू-शुरू में 300 की भट्ठी थी। गऊशाला में हजारों की अन्दाज़ में गऊयें हों तो कोई सम्भाल भी न सके। भट्ठी भी थोड़ों की बननी थी। उनमें से भी कई तो चल रहे हैं, कई टूट पड़े। कई बच्चे समझते हैं हम पहले से होते तो अच्छा था परन्तु ऐसे भी नहीं है। पुराने-पुराने कितने भागन्ती हो गये! 25-30 वर्ष वाले भी इतना नहीं याद रखते कि वह बेहद का बाप है, जिससे वर्सा पाते हैं। बाबा स्वर्ग का मालिक बनाते हैं, सेकेण्ड की बात है। बाप कहते हैं तुम मेरा बनने से स्वर्ग के मालिक बनेंगे। जीवनमुक्ति तो राजा-रानी भी पाते हैं, प्रजा भी पाती है। गाया हुआ है सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। बच्चे जो पूरा पढ़ते नहीं हैं वह क्या करते होंगे? चंचलता। कोई-कोई बच्चे तो बड़े आज्ञाकारी होते हैं। बाप से भी अच्छा मर्तबा पा लेते हैं। बाप

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

100-200 कमाने वाला होगा, बच्चा लखपति बन जाता है। तो अलौकिक सम्बन्ध में भी ऐसे होता है – 7 रोज वाला बच्चा 25 वर्ष वाले से तीखा चला जाता है। नम्बरवार तो होते ही हैं।

तुम वास्तव में सब सजनियां हो, एक साजन को याद करते हो। तुम जानते हो बाप आकर हमको सुखधाम का वर्सा देते हैं। लौकिक पति तो सबके हैं फिर भी याद उनको करते हैं जो पतियों का पति है। पारलौकिक साज़न अमृत पिलाते हैं इसलिए उनको याद किया जाता है, फिर तुम स्वर्ग के मालिक बन जाते हो, फिर वहाँ कोई को याद नहीं करते। अभी के पुरुषार्थ से तुम २१ जन्म प्रालब्ध पाते हो। तुम्हारी बुद्धि कितनी खुली है! वह भी नम्बरवार, तो बादशाही भी नम्बरवार लेते हो। तुमको सब समझा दिया है। यहाँ अच्छी रीति पढ़ाई पढ़ने से तुम पद भी इतना ऊंच पायेंगे। नहीं तो अनपढ़े, पढ़े के आगे भरी ढोयेंगे। इसमें पुरुषार्थ बहुत अच्छी रीति करना है। अभी टाइम अच्छा है पुरुषार्थ के लिए। तुम जानते हो – जहाँ जीना है वहाँ ज्ञानामृत पीना है अथवा पढ़ते रहना है। सैपलिंग लगाते रहते हैं। कोई झट समझ जाते हैं तो समझा जाता है इनका पद तो अच्छा देखने में आता है, अच्छा नजदीक का फूल है, तन-मन-धन अर्पण कर बैठा है, सर्विस में अच्छा लग गया है। समझता है अपना समय जितना सर्विस में देंगे, उतना फायदा है। जैसे बाबा हम ज्ञान नेत्रहीन अंधों की लाठी बना है ऐसे हमें भी बनना है। तुम एक-दो की लाठी बनते जाते हो। अंधा बनाया है रावण ने। यह तुमको समझाया जाता है कि इस समय सारी दुनिया लंका है, सब शोक वाटिका में हैं। नाम रखा है अशोका होटल, वहाँ खूब मजे उड़ाते हैं। जिन्होंने कांग्रेस को मदद की है वह सुख पा रहे हैं।

अभी तुम जानते हो बाबा आया हुआ है। महाभारत लड़ाई सामने खड़ी है। यह तो लगनी है जबकि गेट्स खुलने हैं। द्वापर की तो बात ही नहीं। अभी तो घोर अन्धियारा है ना। ब्राह्मणों की रात अब पूरी हुई है, बाबा आया हुआ है। यह बातें तुम बच्चे ही जानते हो। स्कूल में पढ़ते हैं, कोई तो बहुत अच्छे मार्क्स लेते हैं, कोई फेल हो जाते हैं। फेल की निशानी है चन्द्रवंशी में चले जायेंगे। राम को क्षत्रिय की निशानी दी है। अर्थ नहीं समझते। लव-कुश की क्या-क्या बातें बैठ सुनाते हैं। कितने झूठे दोष बैठ लगाते हैं। गाते हैं – राम राजा, राम प्रजा, धर्म का उपकार है। फिर यह सब बातें कहाँ से आई? यह सब बातें समझने की हैं। तुम जानते हो यह नॉलेज नम्बरवार हमारी बुद्धि में है। स्टूडेन्ट को बहुत तीखा पुरुषार्थ करना चाहिए। हम गॉड फादरली स्टूडेन्ट हैं। टीचर को कौन नहीं याद करेंगे! हम हैं पतित-पावन गॉड फादरली स्टूडेन्ट। इसमें बाप, टीचर, सतगुरु तीनों ही आ जाते हैं। तुम सब सीतायें हो ना। रावण की शोक वाटिका में पड़े हो। इनकारपोरियल गॉड फादर इज़ ज्ञान सागर नॉलेजफुल। कृष्ण को अथवा लक्ष्मी-नारायण को ऐसे नहीं कहेंगे। उनकी महिमा ही न्यारी है। गीत में भी गाते हैं – उनकी महिमा अपरमअपार है, जो ऐसा बनाते हैं। तुम कहते हो – बाबा, हम आपसे पूरा वर्सा लेंगे। आप कितने मीठे हो, कितने प्यारे हो! लक्ष्मी-नारायण कितने मीठे, कितने प्यारे हैं! लक्ष्मी-नारायण के चित्र देखो, हमेशा

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मुस्कराहट वाले दिखाते हैं। तुम जानते हो देवतायें इस भारत में ही थे। अभी कहाँ है? तुम f सबको बतला सकते हो कि यह उनका अन्तिम जन्म है। फिर से कृष्ण बनना है। अभी कृष्णपुरी स्थापन हो रही है। कृष्ण भी राजयोग सीख रहे हैं। तुम भी कृष्णपुरी में जाना चाहो तो राजयोग सीखो। लक्ष्मी-नारायण कहने से मनुष्य मूंझ जाते हैं। कृष्ण को झूले में झुलाते हैं। पूजा लक्ष्मी-नारायण की करते हैं। उन्हों का बाल चरित्र कुछ भी है नहीं। राधे-कृष्ण फिर कहाँ गये, क्या हुआ – कुछ भी पता नहीं है। राधे-कृष्ण कोई आपस में भाई-बहन नहीं थे। अभी राधे-कृष्ण का राज्य तो है नहीं। द्वापर में भी उन्हों की राजधानी का कुछ पता थोड़ेही है। तो यह सब बातें समझने के लिए बहुत अच्छी बुद्धि चाहिए। लिटरेचर बनाने में भी मेहनत लगती है। विष्णु के अलंकार दिखाते हैं परन्तु वास्तव में विष्णु के यह अलंकार होते नहीं। विष्णु वा लक्ष्मी-नारायण को शंख थोड़ेही है। तो हम क्या लिखें? मनुष्य तो कुछ भी समझ न सकें। शंख तो है तुम्हारे पास। तो अलंकार जरूर ब्राह्मणों को देना पड़े। कहेंगे यह ब्राह्मण फिर कहाँ से आये? समझ नहीं सकेंगे। तुम समझा सकते हो – हम ब्राह्मण स्वदर्शन चक्रधारी हैं। यह सब बातें समझाने में बड़ी ही विशाल बुद्धि चाहिए। प्रजा में जाने वाले मोटी बुद्धि समझ न सकें। समझाने में बड़ी ही डिफीकल्टी लगती है। बाबा लिखते भी हैं सिकीलधे स्वदर्शन चक्रधारी ब्रह्मा मुख वंशावली। परन्तु तुम्हारे पास अलंकार कहाँ हैं। चित्रों में देवियों को तीसरा नेत्र दिया है, लेकिन उनको तो तीसरा नेत्र है नहीं। तुम्हारी अब g तीसरी आंख खुली है। तुम शक्तियों की महिमा है। जगत अम्बा है तो बच्चे भी साथ में होंगे। मैजारिटी माताओं की है। माताओं को ही ऊंच उठाते हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार :-

१. अपना समय सर्विस में सफल करना है। तन-मन-धन सब अर्पण कर जब तक जीना है पढ़ाई पढ़ते रहना है।

२. आपस में एक-दो की ज्ञान से पालना करनी है। ऐसा कोई कार्य नहीं करना है जिससे बाप की अवज्ञा हो।

वरदान :- दिव्य बुद्धि के बल द्वारा परमात्म टचिंग का अनुभव करने वाला मास्टर सर्वशक्तिमान भव

दिव्य बुद्धि को बुद्धिबल कहा जाता है इस बुद्धिबल द्वारा ही बाप से सर्वशक्तियां कैच कर मास्टर सर्वशक्तिमान बनते हो। जैसे साइंस बुद्धिबल है लेकिन वह संसारी बुद्धि है इसलिए इस संसार के प्रति, प्रकृति के प्रति ही सोच सकते हैं। आपके पास दिव्य बुद्धि का बल है जो परमात्म प्राप्ति की अनुभूति कराता है। दिव्य बुद्धि द्वारा हर कर्म में परमात्म प्योर टचिंग का अनुभव कर सफलता का अनुभव कर सकते हो। दिव्य बुद्धि के बल से माया के वार को हार खिला सकते हो।

स्लोगन:-

मास्टर ज्ञान सूर्य बन सर्व को ज्ञान की लाइट माइट देने वाले ही सच्चे सेवाधारी हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

19-12-01 प्रातः मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - ऊंच पद का आधार पढ़ाई और याद की यात्रा पर है इसलिए जितना चाहो उतना गैलप कर लो"

प्रश्नः- कौन सा गुह्य राज़ पहले-पहले नहीं समझाना है? क्यों?

उत्तरः- (ड्रामा का जो गुह्य राज़ है, वह पहले-पहले नहीं समझाना है क्योंकि कई मूँझ जाते हैं; कहते हैं ड्रामा में होगा तो आपेही राज्य मिलेगा। आपेही पुरुषार्थ कर लेंगे। ज्ञान के राज़ को पूरा न समझ मतवाले बन जाते हैं। यह नहीं समझते कि पुरुषार्थ बिगर तो पानी भी नहीं मिलेगा।)

(गीतः- भोलेनाथ से निराला...)

ओम् शान्ति मीठे-मीठे रूहानी बच्चों प्रति गुडमार्निंग। बाबा ने इतने भभके से बच्चों से गुडमार्निंग की। बच्चों ने रेसपान्ड नहीं किया। बच्चों को तो और ही जास्ती आवाज से बोलना चाहिए। रूहानी बाप रूहानी बच्चों से गुडमार्निंग करते हैं। बच्चे भी जानते हैं कि हम इस शरीर द्वारा रूहानी बाप को गुडमार्निंग करते हैं। तो बच्चों को इतना हुल्लास से कहना चाहिए ना - वाह बाबा! आखिर वह दिन आया आज, जिसको सारी दुनिया पुकारती रहती वह बाप सम्मुख हमसे गुडमार्निंग कर रहे हैं। फिर जब सतोप्रधान बन जायेंगे तो पतित-पावन को याद नहीं करेंगे। अभी तमोप्रधान हैं तभी याद करते हैं कि हे पतित-पावन आओ, आकर हमको पावन बनाओ। अब तुम जानते हो कि बरोबर पतित-पावन बाबा को ही आना पड़ता है। वही सुप्रीम फादर, गॉड फादर है। क्राइस्ट को सुप्रीम फादर तो नहीं कहेंगे। क्राइस्ट के सन आफ गॉड मानते हैं। सबसे सुप्रीम वह एक ही है। वह भी समझते हैं कि वह गॉड फादर ही इन पैगम्बरों को भेजते हैं। यह भी जरूर है कि पतितों को पावन बनाने सुप्रीम फादर को ही आना है। अब वह तो है निराकार। कहते भी हैं कि ब्रह्मा द्वारा स्थापना कराते हैं। यह भी किसको पता नहीं कि ब्रह्मा और विष्णु का आपस में क्या सम्बन्ध है।

a निराकार को मुख जरूर चाहिए इसलिए इनको भागीरथ भी कहा जाता है। मुख द्वारा ही तो समझायेंगे ना। डायरेक्शन देते हैं कि मनमनाभवा तो मुख द्वारा कहेंगे ना। इसमें प्रेरणा की तो बात हो नहीं सकती। बाप तो ब्रह्मा द्वारा बैठ सब वेदों शास्त्रों का सार समझाते हैं। हर

b चीज का सार निकालते हैं ना। गाते हैं तुम मात-पिता हम बालक तेरे...तो वही इसमें प्रवेश कर तुमको नॉलेज देते हैं। कितनी समझने की बातें हैं। प्रजापिता ब्रह्मा को भी पिता कहते हैं। तो माता कहाँ? बाप बैठ समझाते हैं कि यह प्रजापिता भी है तो माता भी है। मैं तो सभी आत्माओं का बाप हूँ। मुझे ही गॉड फादर कहते हैं। भारतवासी पुकारते भी हैं तुम मात-पिता... परन्तु अर्थ कुछ भी नहीं जानते। निराकार को माता कैसे कह सकते। वह इसमें प्रवेश कर एडाप्ट करते हैं। तो यह ब्रह्मा माता बन जाती है। इन द्वारा ही दैवी रचना रचते हैं। यह भी एडाप्टेड मदर है। वह फादर है। इसको फिर नंदीगण, बैल भी दिखाते हैं। गाय को कभी भी नहीं दिखाते। यह बहुत वन्डरफुल बातें हैं। कोई-कोई नये आते हैं तो डिटेल में

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सुनाना पड़ता है। नहीं तो इन बातों को वह समझ नहीं सकेंगे। कोई शुरूड बुद्धि होते हैं तो
c झट समझ जाते हैं। 30 वर्ष वाले से भी मास वाले तीखे चले जाते हैं। इसलिए ऐसे नहीं समझना चाहिए कि हम तो बहुत देरी से आये हैं। बाप कहते हैं बच्चे पुरुषार्थ करो। जैसे कॉलेज में आने वाले पढ़ाई कर गैलप कर लेते हैं। यहाँ भी ऐसे है। सारा मदार पढ़ाई और याद पर है। बच्चे जानते हैं कि मूलवतन में तो आत्मायें सतोप्रधान होती हैं। तमोप्रधान आत्मायें तो वहाँ जा नहीं सकती। फिर सब एक्टर अपने-अपने पार्ट अनुसार स्टेज पर आते हैं। ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। हद के ड्रामा में तो 50-60 एक्टर होंगे। यहाँ तो कितना
d बड़ा बेहद का ड्रामा है। बाबा ने हमारी बुद्धि का ताला खोल दिया है। तो अब समझते हैं कि यह लक्ष्मी-नारायण विश्व के मालिक थे, कितने साहूकार थे। आधाकल्प विश्व के मालिक थे।
e उसको कहा जाता है अद्वेत राज्य। वहाँ है ही एक धर्म। वह है रामराज्य, यह है रावण राज्य। रामराज्य में विकार होते ही नहीं। वास्तव में इसको ईश्वरीय राज्य कहेंगे। ईश्वर को राम नहीं कहा जाता। बहुत लोग राम-राम की माला जपते हैं परन्तु याद तो भगवान को करते हैं। नाम राम का राइट है क्योंकि यह तो कोई जानते नहीं कि ईश्वर का नाम रूप क्या है? मनुष्य तो बहुत मूँझे हुए हैं। रावण कौन है - यह नहीं जानते। रावण को जलाने पर कितना खर्चा करते हैं। आगे दशहरा दिखाने के लिए बाहर वालों को भी बुलाते थे। साइंस का भी देखो अभी कितना जोर है। यह साइंस सुख के लिए भी है तो दुःख के लिए भी है। सुख तो इससे अल्पकाल का ही मिलता है। इससे ही इस दुनिया का विनाश होता है। तो यह दुःख हुआ ना। तुम्हारी है साइलेन्स पावर। उन्हों की है साइंस पावर। तुम साइलेन्स से अपने स्वधर्म में रहते हो तो पवित्र बन जाते हो। याद से विकर्म विनाश होते हैं। तुम योगबल से राजाई लेते हो, इसमें लड़ाई आदि की बात नहीं। तुम बाबा से राजाई का वर्सा पाते हो। बाहुबल की तो बात ही अलग है। कल्प-कल्प तुम बच्चे ही पतित से पावन बनते हो फिर पावन से पतित बनेंगे। यह ड्रामा है हार जीत का। परन्तु यह बातें सबकी बुद्धि में नहीं बैठेंगी। सब तो सतयुग में आयेंगे नहीं। बेहद का बाप अपने बच्चों को ही समझाते हैं।
f दूसरे धर्म वाले आते ही बाद में हैं। यह पुरानी दुनिया है, दैवी धर्म का फाउन्डेशन ही सड़ गया है। बाकी ऐसे नहीं कहेंगे कि फाउन्डेशन था ही नहीं। था मगर अब नहीं है। प्रायः गुम हो गया है। अब अनेक धर्म हैं, इनको रावण राज्य कहते हैं। कहते हैं विष्णु की नाभी से ब्रह्मा निकला। कोई से भी पूछो कि इस चित्र का अर्थ बताओ क्या है? तो बता नहीं सकेंगे। आत्मा तो एक ही है। उनको कहेंगे विष्णु। विष्णुपुरी भी दिखाते हैं। यह है संगम, ब्रह्मापुरी। प्रजापिता ब्रह्मा तो जरूर चाहिए। ब्राह्मण हैं चोटी। यह विराट रूप का चित्र भी खास भारतवासियों के लिए है और भारत में फिर बहुत धर्म वाले रहते हैं, इसलिए इनको वैरायटी धर्मों का झाड़ भी कहा जाता है। यह है मनुष्य सृष्टि का झाड़, परन्तु इसमें वैरायटी धर्म हैं। पहले डिटीज्म फिर इस्लामिज्म, यह है ब्राह्मण। इस संगम का तो किसको पता नहीं है। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। पुरुषोत्तम ब्राह्मण धर्म, जबकि सोशल सर्विस करते हैं। तुम बच्चों को रूहानी सोशल वर्कर कहा जाता है। सोशल वर्कर भारत में बहुत हैं, उन्हों को भी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सिखाते हैं कि नम्रता भाव से सेवा करो। जो पक्के कांग्रेसी थे वह तो झाड़ू आदि भी लगाते थे। मेहतर आदि का काम भी किया करते थे। आगे जो पक्के थे वह चीनी के बर्तन में खाना नहीं खाते थे। जो पास्ट हुआ वह ड्रामा है। वही रिपीट होगा। इन बातों को समझते नहीं तो मूँझते हैं। इसलिए ड्रामा का राज़ शुरू में किसी को समझाना नहीं है। कहेंगे अगर ड्रामा में नूँध होगा तो हमको आपेही राज्य मिलेगा और पुरुषार्थ भी आपेही करेंगे। ऐसे मतवाले भी होते हैं। ज्ञान के राज़ों को पूरा समझते ही नहीं हैं। अरे पुरुषार्थ बिगर तो पानी भी नहीं मिलेगा। आपेही थोड़ेही पानी आकर मुँह में पड़ जायेगा।

बाप आते ही हैं पतितों को पावन बनाने। वह आकर सहज रास्ता बताते हैं कि आत्मा
g को पावन बनाने के लिए मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। बाप ही पावन बनाने के लिए श्रीमत देते हैं, मुझे याद करो। परन्तु वह निराकार है तो जरूर साकार में आकर श्रीमत देंगे। बाप कहते हैं – यह मेरा शरीर भी मुकरर है। यह बदली हो नहीं सकता। यह भी नूँध है। गाया भी जाता है परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा स्वर्ग की स्थापना कराते हैं। यह भगवानुवाच है ना। तो बोलने लिए मुख चाहिए। प्रेरणा से थोड़ेही पढ़ाई होती है। बाप आकर इन द्वारा डायरेक्शन देते हैं। यह चित्र आदि इस ब्रह्मा ने थोड़ेही बनाये हैं। यह भी तो पुरुषार्थी है ना। यह कोई नॉलेजफुल नहीं है। यह तो भक्तिमार्ग में था। भक्तों का उद्धार तो भगवान को ही करना है। भक्ति का फल आकर देते हैं। तुम बच्चों को मनुष्य से देवता
h बनाते हैं। बाप इसमें प्रवेश कर राजयोग सिखलाते हैं, इनका नाम है शिवबाबा। वह कहते हैं मेरा यह जन्म दिव्य अलौकिक है। मेरा आने का पार्ट एक ही बार संगम पर है। ऐसे भी नहीं कि तुम्हारी आत्मा के बुलाने पर आता हूँ। जब मेरे आने का समय होता है - तो एक सेकेण्ड भी नीचे-ऊपर नहीं होता है। एक्यूरेट टाइम पर आ जाता हूँ। मुझे आरगन्स ही कहा है जो तुम्हारी पुकार सुनूँगा। यह ड्रामा बना बनाया है। जब समय होता है तो आकर पतितों को पावन बनाता हूँ। ऐसे नहीं कि हमारी रड़ियाँ कोई भगवान सुनते हैं। बहुत बच्चे बाबा को बोलते हैं कि बाबा आप तो जानी-जाननहार हो, बताओ हम इम्तहान में पास होंगे। यह काम होगा? बाबा कहते हैं अरे हम तो आते ही हैं पतितों को पावन बनाने का रास्ता बताने। मेरा जो पार्ट होगा, वही बजाऊंगा। जो नहीं सुनाने का है वह तो सुनाऊंगा नहीं। मैं यह बातें
i बताने थोड़ेही आता हूँ। मैं भी ड्रामा के बन्धन में बांधा हुआ हूँ। हर एक का पार्ट ड्रामा में नूँधा हुआ है। जो निश्चयबुद्धि नहीं हैं वह स्वर्ग में चलने के लायक नहीं। और वह बातें भी ऐसी ही करेंगे। बाकी जो सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी घराने की आत्मायें हैं, उन्हों को तो बाबा से जरूर आकर सुनना है और वर्सा लेना है। बाकी जो जास्ती पुरूषार्थ नहीं करते हैं वह भी स्वर्ग में तो आयेंगे जरूर। लेकिन सज़ा खाकर कोई पद पा लेंगे। कहते तो बहुत हैं बाबा हम तो सूर्यवंशी बनेंगे, नारायण बनेंगे। परन्तु बच्चों को पुरुषार्थ भी इतना करना चाहिए। बाबा को फालो करने की भी ताकत चाहिए। फालो फादर कहते हैं तो इनको देखो यह कैसे सरेन्डर हुआ। सब कुछ ईश्वर अर्थ अर्पण कर दिया। ईश्वर अर्थ सब कुछ देकर अपना ममत्व मिटा देना चाहिए। पहले भट्ठी से बहुत निकले, अब थोड़े ही [illegible] हो सकता है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

इस कार्य में मातायें, कन्यायें आगे जाती हैं। इसमें भी कन्यायें तीखी जाती हैं। देह और देह के सम्बन्धों को भूल जाना है क्योंकि अब घर चलना है। अब बाप कहते हैं मुझे याद करो। अब नाटक पूरा होता है, बाकी समय थोड़ा है। जैसे आशिक माशूक होते हैं। यह बाबा माशूक है, आशिक नहीं है। बाप कहते हैं - तुम पतित बने हो तो याद भी तुमको करना है। मैं थोड़ेही पतित बना हूँ, जो तुमको याद करूँ। मैं तो युक्ति बताता हूँ उस पर चलो। इस दुनिया से ममत्व मिटाते जाओ। अब तो वापिस जाना है। यह बुद्धि में ज्ञान है। यह शरीर भी पुराना है। सतयुग में निरोगी शरीर मिलेगा। फिर हम गोरे बन जायेंगे। सांवरे से गोरा कैसे बनते हैं, यह भी तुम ही जानते हो। राम को भी काला बनाया है। शिव का लिंग भी काला बनाया है। वह तो कभी काला बनता नहीं है। वह एवर प्योर है, उनको तो सफेद बनाना चाहिए।

बाबा कहते हैं - चित्र ऐसे-ऐसे बनाओ जो देखने से आकर्षण करें। अखबारों में कितने चित्र पड़ते हैं। तुम्हारे नहीं पड़ते हैं। बाबा तुम बच्चों को तो बेअक्ल से अक्लमंद बनाते हैं। इस लक्ष्मी-नारायण को अक्लमंद किसने बनाया? बाप ने योग द्वारा ऐसा बनाया। तुम बच्चों को यह नॉलेज मिली है वह फैलाना है, विचार सागर मंथन करना है। गवर्मेन्ट कितना पब्लिक के लिए खर्चा करती है। यहाँ जो तुम बच्चों का सो बाप का और जो बाप का वह तुम बच्चों का। बाप कहते हैं - मैं हूँ निष्काम सेवाधारी। मैं तो दाता हूँ। यह ख्याल नहीं करना चाहिए कि हम शिवबाबा को देते हैं। शिवबाबा 21 जन्म के लिए विश्व का मालिक बनाते हैं। यह बाप लेता नहीं, देता है। बाबा तो दाता है। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- जैसे ब्रह्मा बाप सरेन्डर हुआ, ऐसे फालो फादर करना है। अपना सब कुछ ईश्वर अर्थ कर ट्रस्टी बन ममत्व मिटा देना है।

२- लास्ट आते भी फास्ट जाने के लिए याद और पढ़ाई पर पूरा-पूरा ध्यान देना है।

वरदान:- आवाज से परे की स्थिति में स्थित हो सर्व गुणों का अनुभव करने वाले मा. बीजरूप भव

जैसे बीज में सारा वृक्ष समाया हुआ होता है वैसे ही आवाज से परे की स्थिति में संगमयुग के सर्व विशेष गुण अनुभव में आते हैं। मास्टर बीजरूप बनना अर्थात् सिर्फ शान्ति नहीं लेकिन शान्ति के साथ ज्ञान, अतीन्द्रिय सुख, प्रेम, आनंद, शक्ति आदि-आदि सर्व गुख्य गुणों का अनुभव करना। यह अनुभव सिर्फ स्वयं को नहीं होता लेकिन अन्य आत्मायें भी उनके चेहरे से सर्वगुणों का अनुभव करती हैं। एक गुण में सर्वगुण समाये हुए रहते हैं।

स्लोगन:-

अच्छाई धारण करो तो दिन अच्छाई में बदलता नहीं होगा।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

24-8-2000 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – अपनी सतोप्रधान तकदीर बनाने के लिए याद में रहने का खूब पुरूषार्थ करो, सदा याद रहे मैं आत्मा हूँ, बाप से पूरा वर्सा लेना है"

प्रश्नः- बच्चों को याद का चार्ट रखना मुश्किल क्यों लगता है?

उत्तरः- क्योंकि कई बच्चे याद को यथार्थ समझते ही नहीं हैं। बैठते हैं याद में और बुद्धि बाहर भटकती है। शान्त नहीं होती। वह फिर वायुमण्डल को खराब करते हैं। याद करते ही नहीं तो चार्ट फिर कैसे लिखें। अगर कोई झूठ लिखते हैं तो बहुत दण्ड पड़ जाता है। सच्चे बाप को सच बताना पड़े।

गीतः- तकदीर जगाकर आई हूँ.....

ओम् शान्ति रूहानी बच्चों को फिर भी रूहानी बाप रोज-रोज समझाते हैं कि जितना हो सके देही-अभिमानी बनो। अपने को आत्मा निश्चय करो और बाप को याद करो क्योंकि तुम जानते हो हम उस बेहद के बाप से बेहद सुख की तकदीर बनाने आये हैं तो जरूर बाप को याद करना पड़े। पवित्र सतोप्रधान बनने बिगर सतोप्रधान तकदीर बना नहीं सकते। यह तो अच्छी रीति याद करो। मूल बात है ही एका यह तो अपने पास लिख दो। बांह पर नाम लिखते हैं ना। तुम भी लिख दो--हम आत्मा हैं, बेहद के बाप से हम वर्सा ले रहे हैं क्योंकि माया भुला देती है। इसलिए लिखा हुआ होगा तो घड़ी-घड़ी याद रहेगी। मनुष्य ओम् का वा कृष्ण आदि का चित्र भी लगाते हैं याद के लिए। यह तो है नये ते नई यादा यह सिर्फ बेहद का बाप ही समझाते हैं। इस समझने से तुम सौभाग्यशाली तो क्या पदम भाग्यशाली बनते हो। बाप को न जानने कारण, याद न करने कारण कंगाल बन गये हैं। एक ही बाप है जो सदैव के लिए जीवन को सुखी बनाने आये हैं। भल याद भी करते हैं परन्तु जानते बिल्कुल नहीं हैं। विलायत वाले भी सर्वव्यापी कहना भारतवासियों से सीखे हैं। भारत गिरा है, तो सब गिरे हैं। भारत ही रसातल है अपने को गिराने और सबको गिराना। बाप कहते हैं मैं भी यहाँ ही आकर भारत को स्वर्ग सचखण्ड बनाता हूँ ऐसा स्वर्ग बनाने वाले की कितनी ग्लानि कर दी है। भूल गये हैं। इसलिए लिखा हुआ है यदा यदाहि..... इनको भी अर्थ बाप ही आकर समझाते हैं। बलिहारी एक बाप की है। अभी तुम जानते हो बाप आते हैं जरूर, शिव-जयन्ती मनाते हैं परन्तु शिव-जयन्ती का कदर बिल्कुल नहीं है। अभी तुम बच्चे समझते हो जरूर होकर गये हैं, जिसकी जयन्ती मनाते हैं। सतयुगी आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना वही करते हैं और सब जानते हैं कि हमारा धर्म फलाने ने फलाने समय स्थापन किया। उनके पहले है ही देवी-देवता धर्म। उनको बिल्कुल ही नहीं जानते कि यह धर्म कहाँ गुम हो गया। अभी बाप आकर समझाते हैं--बाप ही सबसे ऊंच है, और किसकी महिमा है नहीं। धर्म स्थापक की महिमा क्या होगी। बाप ही पावन दुनिया की स्थापना और पतित दुनिया का विनाश कराते हैं और तुमको माया पर जीत पहनाते हैं। यह बेहद की बात है। रावण का राज्य सारी बेहद की दुनिया पर है। हद के लंका आदि की बात नहीं। यह हार-जीत की कहानी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

भी सारे भारत की ही है। बाकी तो बाईप्लाट हैं। भारत में ही डबल सिरताज और सिंगल ताज राजायें बनते हैं और जो भी बड़े-बड़े बादशाह होकर गये हैं, कोई पर भी लाइट का ताज नहीं होता है सिवाए देवी-देवताओं के। देवतायें तो फिर भी स्वर्ग के मालिक थे ना। अब शिवबाबा को कहा ही जाता है परमपिता, पतित-पावन। इनको लाइट कहाँ देंगे। लाइट तब दें जब बिगर लाइट वाला पतित भी हो। वह कभी बिगर लाइट वाला होता ही नहीं। बिन्दी पर लाइट दे कैसे सकेंगे। हो न सके। टिन-प्रतिदिन तुमको बहुत गुह्य-गुह्य बातें समझाते रहते हैं, जो जितना बुद्धि में बिठा सके। मुख्य है ही याद की यात्रा। इसमें माया के विघ्न बहुत पड़ते हैं। भल कोई याद के चार्ट में 50-60 परसेन्ट भी लिखते हैं परन्तु समझते नहीं हैं कि याद की यात्रा किसको कहा जाता है। पूछते रहते हैं—इस बात को याद करें? बड़ा मुश्किल है। तुम यहाँ 10-15 मिनट बैठते हो, उनमें भी जांच करो—याद में अच्छी रीति रहते हैं? बहुत हैं जो याद में रह नहीं सकते फिर वह वायुमण्डल को खराब कर देते हैं। बहुत हैं जो याद में न रहने से विघ्न डालते हैं। सारा दिन बुद्धि बाहर भटकती रहती है। सो यहाँ थोड़ेही शान्त होगी, इसलिए याद का चार्ट भी रखते नहीं। झूठा लिखने से तो और ही दण्ड पड़े। बहुत बच्चे भूलें करते हैं, छिपाते हैं। सच बताते नहीं। बाप कहे और सच न बताये तो कितना दोष हो जाता। कितना भी बड़ा गन्दा काम किया होगा तो भी सच बताने में लज्जा आयेगी। अक्सर करके सब झूठ बतायेंगे। झूठी माया, झूठी काया..... है ना एकदम देह-अभिमान में आ जाते हैं। सच सुनाना तो अच्छा ही है और भी सीखेंगे। वहाँ सच बताना है। नॉलेज के साथ-साथ याद की यात्रा भी जरूरी है क्योंकि याद की यात्रा से ही अपना और विश्व का कल्याण होना है। नॉलेज समझाने के लिए बहुत सहज है। याद में ही मेहनत है। बाकी बीज से झाड़ कैसे निकलता है, वह तो सबको मालूम रहता है। बुद्धि में 84 का चक्र है, बीज और झाड़ की नॉलेज तेरी ना। बाप तो सत्य है, चैतन्य है, ज्ञान का सागर है। उनमें नॉलेज है समझाने के लिए। यह है बिल्कुल अनकॉमन बाबा, यह मनुष्य सृष्टि का झाड़ है। यह भी कोई नहीं जानता। सब नेती-नेती करते गये। इतना सन्यासी को ही नहीं जानते तो बाकी क्या जानेंगे। तुम्हारे में भी बहुत थोड़े हैं जो अच्छी रीति जानते हैं, इसलिए सेमीनार भी बुलाते हैं। अपनी-अपनी राय दो। राय तो कोई भी दे सकते हैं। ऐसे नहीं कि जिनके नाम हैं उनको ही देनी है। हमारा नाम नहीं है, हम कैसे देवें। नहीं, कोई को भी सर्विस अर्थ कोई राय हो, एडवाइज हो लिख सकते हो। बाप कहते हैं कोई भी राय आये तो लिखना चाहिए। बाबा इस युक्ति से सर्विस बहुत बढ़ सकती है। कोई भी राय दे सकते हैं। देखेंगे किस-किस प्रकार की राय दी है। बाबा तो कहते रहते हैं—किस युक्ति से हम भारत का कल्याण करें, सबको पैगाम देवें। आपस में विचार निकालो, लिखकर भेजो। आया ने सबको सुला दिया है। बाप आते ही हैं जब मौत सामने होता है। अब बाप कहते हैं सबकी वानप्रस्थ अवस्था है, पढ़ो न पढ़ो, मरना जरूर है। तैयारी करे न करे वह दुनिया जरूर स्थापन होनी है। अच्छे-अच्छे बच्चे जो हैं वह अपनी तैयारी कर रहे हैं। सुदामा का भी मिसाल कहा हुआ है—चावल मुट्ठी ले आया। बाबा हमको भी महल मिलने चाहिए। है ही उनके

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

पास चावल मुट्ठी तो क्या करेंगे। बाबा ने मम्मा का मिसाल बताया है—चावल मुट्ठी भी नहीं ले आई। फिर कितना ऊंच पद पा लिया, इसमें पैसे की बात नहीं है। याद में रहना है और आप समान बनाना है। बाबा की तो कोई फी आदि नहीं। समझते हैं हमारे पास पैसे पड़े हैं तो क्यों न यज्ञ में स्वाहा कर दें। विनाश तो होना ही है। सब व्यर्थ हो जायेगा। इससे कुछ तो सफल करें। हर एक मनुष्य कुछ न कुछ दान-पुण्य आदि जरूर करते हैं। वह है पाप आत्माओं का पाप आत्माओं को दान-पुण्य। फिर भी उसका अल्पकाल के लिए फल मिल जाता है। समझो कोई युनिवर्सिटी, कॉलेज आदि बनाते हैं, पैसे जास्ती हैं, धर्मशाला आदि बना देते हैं तो उनको मकान आदि अच्छा मिल जायेगा। परन्तु फिर भी बीमारी आदि तो होगी ना। समझो किसने हॉस्पिटल आदि बनाई होगी तो करके तन्दुरूस्ती अच्छी रहेगी। परन्तु उनसे सब कामनायें तो सिद्ध नहीं होती हैं। यहाँ तो बेहद के बाप द्वारा तुम्हारी सब कामनायें पूरी हो जाती हैं।

तुम बनते हो पावन तो सब पैसे विश्व को पावन बनाने में लगाना अच्छा है ना। मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हो सो भी आधाकल्प के लिए। सब कहते हैं हमको शान्ति कैसे मिले। वह तो शान्तिधाम में मिलती है और सतयुग में एक धर्म होने कारण वहाँ अशान्ति होती नहीं। (अशान्ति होती है रावण राज्य में। गायन भी है ना—राम राजा राम प्रजा..... वह है अमरलोक। वहाँ अमरलोक में मरने का अक्षर होता नहीं। यहां तो बैठे-बैठे अचानक मर जाते हैं, इसको मृत्युलोक उसका अमरलोक कहा जाता है। वहाँ मरना होता नहीं। पुराना एक शरीर छोड़ फिर बालक बन जाते हैं। रोग होता नहीं। कितना फायदा होता है। श्री श्री की मत पर तुम एवरहेल्दी बनते हो। तो ऐसे रूहानी सेन्टर्स कितने खुलने चाहिए। थोड़े भी आते हैं वह कम है क्या। इस समय कोई भी मनुष्य ड्रामा के डयुरेशन को नहीं जानते हैं। पूछेंगे तुमको फिर यह किसने सिखलाया है। अरे, हमको बताने वाला बाप है। इतने ढेर बी.के. हैं तुम भी बी.के. हो। शिवबाबा के बच्चे हो। प्रजापिता ब्रह्मा के भी बच्चे हो। यह है ह्यूमैनिटी का ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर। इनसे हम बी.के. निकले। कितनी बहनें होती हैं ना। तुम्हारे देवी-देवताओं का कुल बहुत सुख देने वाला है। यहाँ तुम तुम बनते हो फिर वहाँ राज्य करते हो। यह किसकी बुद्धि में रह न सकी। यह भी बच्चों को समझाया है देवताओं के पैर इस तमोप्रधान दुनिया में पड़ न सकें। बड़ चित्र का चरखा पड़ सकता है, चैतन्य का नहीं पड़ सकता। तो आप समझाते हैं बच्चे, एक की याद की यात्रा में रहो, कोई भी विकर्म न करो और सर्विस की युक्ति निकालो। बच्चे कहते हैं — बाबा, हम तो लक्ष्मी-नारायण जैसा बनेंगे। बाबा कहते तुम्हारे मुख में घी-शक्कर। लेकिन इसके लिए मेहनत भी करनी है। ऊंच पद पाना है तो आप समान बनाने की सेवा करो। तुम एक दिन देखेंगे - एक-एक पण्डा अपने साथ 100-200 यात्री भी ले आयेगा। आगे चल देखते रहेंगे। पहले से थोड़ेही कुछ कह सकते हैं। जो होना होगा सो देखते रहेंगे।

यह बेहद का ड्रामा है। तुम्हारा है सबसे मुख्य पार्ट बाप के साथ। जो तुम पुरानी दुनिया को नई बनाते हो। यह है पुरूषोत्तम संगमयुग। अब तुम सतोप्रधान के मालिक बनते हो। वहाँ दुःख का नाम-निशान नहीं होगा। बाप है ही दुःख हर्ता, सुख कर्ता। दुःख से आकर

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

g लिबरेट करते हैं। भारतवासी फिर समझते हैं इतना धन है, बड़े-बड़े महल है, बिजलियाँ हैं, बस यही स्वर्ग है। यह सब है माया का पाम्पा सुख के लिए साधन बहुत करते हैं बड़े-बड़े महल मकान बनाते हैं फिर मौत कैसे अचानक हो जाता है, वहाँ मरने का डर नहीं। यहाँ तो अचानक मर जाते हैं फिर कितना शोक करते हैं। फिर समाधि पर जाकर आंसू बहाते हैं। हर एक की अपनी-अपनी रसमरिवाज है। अनेक मत हैं। सतयुग में ऐसी बात होती नहीं। वहाँ तो एक शरीर छोड़ दूसरा ले लेते हैं। तो तुम कितना सुख में जाते हो। उसके लिए कितना पुरुषार्थ करना चाहिए। कदम-कदम पर मत लेनी चाहिए। गुरु की वा पति की मत लेते हैं वा तो अपनी मत से चलना होता है। आसुरी मत क्या काम देंगी। आसुरी तरफ ही ढकेलेगी। अब तुमको मिलती है ईश्वरीय मत, ऊंच ते ऊंचा इसलिए गाया हुआ भी है—श्रीमत भगवानुवाचा। तुम बच्चे श्रीमत से सारे विश्व को हेविन बनाते हो। उस हेविन के तुम मालिक बनते हो। इसलिए तुम्हें हर कदम पर श्रीमत लेनी है परन्तु किसकी तकदीर में नहीं है तो फिर मत पर चलते नहीं हैं। बाबा ने समझाया है किसको भी अपना कुछ अक्ल हो, राय हो तो बाबा को भेज देवें। बाबा जानते हैं कौन-कौन राय देने लायक हैं। नये-नये बच्चे निकलते रहते हैं। बाबा तो जानते हैं ना कौन से अच्छे-अच्छे बच्चे हैं। दुकानदारों को भी राय निकालनी चाहिए—ऐसे यत्न करें जो बाप का परिचय मिले। दुकान में भी सबको याद कराते रहें। भारत में जब सतयुग था तो एक धर्म था। इसमें नाराज़ होने की तो बात ही नहीं। सबका एक बाप है। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जाएं। स्वर्ग के मालिक बन जायेंगे। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. श्रीमत पर चलकर सारे विश्व को स्वर्ग बनाने की सेवा करनी है, बहुतों को आप समान बनाना है। आसुरी मत से अपनी सम्भाल करनी है।

२. याद की मेहनत से आत्मा को सतोप्रधान बनाना है। सुदामा मिसल-जो भी चावल मुट्ठी है वह सब सफल कर अपनी सर्व कामनायें सिद्ध करनी हैं।

वरदान:- सेवा करते उपराम स्थिति में रहने वाले योगयुक्त, युक्तियुक्त सेवाधारी भव

जो योगयुक्त, युक्तियुक्त सेवाधारी हैं वह सेवा करते भी सदा उपराम रहते हैं। ऐसे नहीं सेवा ज्यादा है इसलिए अशरीरी नहीं बन सकते। लेकिन याद रहे कि मेरी सेवा नहीं, बाप ने दी है तो निर्बन्धन रहेंगे। ट्रस्टी हूँ, बंधनमुक्त हूँ - ऐसी प्रैक्टिस करो। अति के समय अन्त की स्टेज, कर्मातीत अवस्था का अभ्यास करो। जैसे बीच-बीच में संकल्पों की ट्रैफिक को कन्ट्रोल करते हो ऐसे अति के समय अन्त की स्टेज का अनुभव करो तब अन्त के समय पास विद आनर बन सकेंगे।

स्लोगन:-

समय पर कोई भी साधन न हो तो भी साधना में विघ्न न पड़े।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

13.9.87 प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?
"मीठे बच्चे-इस दुख के घाट पर बैठे शान्तिधाम और सुखधाम को याद करो, इस दुखधाम को भूल जाओ, यहाँ बुद्धि नहीं भटकनी चाहिए"

a प्रश्न:-अन्तिम प्रत्यक्षता के समय की सीन क्या होगी? उत्तर:-एक ओर विनाश की आग लगेगी दूसरी ओर अखबारों द्वारा चारों ओर बाप का सन्देश पहुँचेगा कि भगवानुवाच:-मामेकम् याद करो तो तुम्हारे पाप कटें। सब धर्मों में सन्देश अखबारों द्वारा जायेगा। उसके अन्दर बाप की याद होगी, मुख से निकलेगा अहो प्रभू तेरी लीला... बाप भी वापस घला आयेगा।
प्रश्न:-तुम्हारे पुरूषार्थ का आधार क्या है?उत्तर:-निश्चय। तुम्हें निश्चय है बाप नई दुनिया की सौगात लाये हैं, इस पुरानी दुनिया का विनाश होना ही है।इसी निश्चय से तुम पु०करते हो।

टावर आफ साइलेन्स और टावर आफ सुख। तुम बच्चे यहाँ बैठे हो तो तुम्हारी बुद्धि घर में जानी चाहिए। वह है शान्ति का टावर। ऊँचे ते ऊँचे का टावर कहा जाता है। तुम शान्ति के टावर हो। घर में जाने लिए तुम पुरूषार्थ कर रहे हो। कैसे जाते हो? जो टावर में रहने वाला बाप है वह शिक्षा देते हैं कि मुझे याद करो तो शान्ति के टावर में आ जायेंगे।इसको घर भी कहा जाता है, शान्तिधाम भी कहा जाता है। यह बातें समझाई जाती है। अपने शान्तिधाम, सुखधाम में रहो। न रह सको हो तो गोया जंगल के काटे हो। इसलिए दुख भासता है। अपने को शान्तिधाम का निवासी समझो। अपने घर को याद करना है ना। भूलना नहीं है। घर है ही बाप का।यह है ही दुख का घाट। यहाँ बैठे भी जिनको बाहर की बातें याद आती हैं तो वे यही कहेंगे कि इनको अपना घर याद है। इसलिए बाप रोज2 शिक्षा देते रहते हैं-बच्चे बड़ी2 शान्तिधाम को याद करो। सुखधाम को याद करो। गीता में भी बाप के महावाक्य हैं कि मुझे याद करो। भगवान क्या बनायेंगे? स्वर्ग का मालिक बनायेंगे और क्या। जब स्वर्ग का मालिक बन बैठे हो तो घर के लिए स्वर्ग के लिए जो बाप श्रीमत देते हैं वह सारी दुनिया से न्यारी है। कितने ढेर के ढेर गुरू हैं, बाप ने समझाया है कि कोई भी धर्म स्थापक को गुरू नहीं कहा जाता है। वह तो सिर्फ धर्म स्थापन के लिए आते हैं। पार्ट बजाने लिए ही आते हैं। पुनर्जन्म में
b जो वापिस निर्वाणधाम वानप्रस्थ ले जाए। परन्तु एक भी गुरू वापिस ले जाने वाला है नहीं। एक भी निर्वाणधाम में जाते नहीं।वाणी से परे अर्थात् घर। वानप्रस्थ का अर्थ न गुरू लोग जानते न फालोअर्स ही जानते हैं। तो बच्चों को कितना समझाया जाता है। यह चित्र है सतयुग के और वह चित्र है त्रेता के। उन्हों को भगवान नहीं कहा जाता। लक्ष्मी नारायण को भी भगवान भगवती नहीं कहा जाता।आदि सनातन है ही देवी देवता धर्म। सिवाए देवी देवता धर्म के कोई भी स्थाई पवित्र होते नहीं। 2।जन्म पवित्र सिर्फ एक ही धर्म रहता है। फिर जो पहले2 अवस्था कम होती जाती है। त्रेता में दो कला कम तो सुख भी कम हो जाता है। उसको कहा जाता है त्रेता युग। 14कला। अभी तुमको बाप का परिचय है और सृष्टि चक्र का ज्ञान है। इसको ही तुम्हें याद करना है। परन्तु याद नहीं करते हो। कहाँ बुद्धि जाती रहती है। अच्छा और कुछ भी न समझ सको यह तो बुद्धि में याद रखो, आस्तिक बनकर बाप और रचना के आदि मध्य अन्त को तो जानते हो ना। उस झाड का आदि मध्य अन्त नहीं कहा जाता है। इस झाड का आदि मध्य अन्त है। क्योंकि मध्य में रावण राज्य शुरू हो जाता है। काँटा बनना शुरू होता है। बगीचा जंगल बनना शुरू होता है। इस समय सारे झाड की जड़जड़ीभूत अवस्था हो गई है। सारा झाड सूखकर तमोप्रधान हो गया है। सारा सूखा हुआ झाड है फिर कलम लगाना पड़े। इसको कलम लगता है। कलम न लगे तो प्रलय हो जाए। प्रलय अर्थात् सारी जलमई नहीं होती है। भारत रह जाता है। परन्तु जलमई नाम तो है ना। मीठे2 बच्चे जानते हैं कि चारों ओर ही जलमई हो जाती है। भारत सिर्फ रह जाता है। जैसे वीर।बाढ़।चढ़ती है फिर उतरती भी तो है ना। तो अभी बहुत भारी वीर चढ़नी है। मनुष्य कहते भी हैं कि ब्रह्माकुमारियाँ तो सारा दिन मौत ही कहती रहती।मौत आने वाला है, मौत ही मौत कहती रहती है।तो समझते हैं कि यह तो अशुभ बोलती हैं।बोलो नहीं, हम कोई विनाश के लिए नहीं कहते हैं, हम तो कहते हैं पवित्रता सुख शान्ति का धर्म स्थापन हो रहा है। विनाश न हो तो शान्ति कैसे होगी। गुप्त वेष में शान्तिधाम सुखधाम की स्थापना हो रही है।यह तो हम शुभ बोलते हैं।अशुभ थोड़ेही बोलते हैं।तुम भी बाप को कहते हो ना हे पतित पावन आओ, हमको पावन बनाकर घर ले चलो। तुम

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

खुद कहते हो ना कि हमको ले चलो। हम भी शुभ बोलते हैं तुम भी शुभ बोलते हो। तुम कहते हो हमको पावन बनाकर इस दुखधाम की दुनिया से शान्तिधाम में ले चलो तो यह शुभ बोलते हो ना। कहते हो आओ माना पतितों का विनाश करो। पावन की स्थापना करो। मांगते हो ना आकर विश्व में शान्ति स्थापन करो। शान्ति तो सतयुग में ही होती है। तो तो गुप्तवेश में शान्ति स्थापन हो रही है। जब तक अर्थ न समझाओ तब तक समझ न सकें। सिवाए बाप के मौत तो कोई दे न सके। बाप को कालों का काल कहा जाता है। सबको मौत देते हैं। कितने ढेर के ढेर को मौत देते हैं। सतयुग में कितने थोड़े मनुष्य होंगे। बाकी सबको मौत मिल जाता है। बुलाते ही हो कि पावन दुनिया में ले चलो। तो पावन दुनिया जरूर नई ही होगी।
c यह थोड़ेही होगी। पुरानी दुनिया में फिर पावन कैसे रहेंगे। मनुष्य तो कुछ भी अर्थ नहीं समझते पावन दुनिया और पतित दुनिया का भी अर्थ नहीं समझते। पावन दुनिया में बहुत थोड़े मनुष्य रहते हैं। शान्ति रहती है। यह बातें समझने और समझाने में कितना सहज है। परन्तु बुद्धि में बैठता ही नहीं, क्योंकि समय ही नहीं है, बुद्धि में बैठने का। नहीं बैठने का है, कदाचित नहीं बैठने का है। कहा भी जाता है ना कुम्भकरण की नींद में सोये पड़े हैं। यह नहीं जागेंगे। नहीं जागेंगे। यह ड्रामा बड़ा विचित्र है। तो यह सारा चक्र बुद्धि में फिरना चाहिए। बाप आकर सारा ज्ञान देते हैं, उनको कहते ही हैं नालेजफुल ज्ञान का सागर। ज्ञान का सागर एक ही बाप है। तुम जानते हो पानी के सागर कितने हैं। जितने नाम हैं उतने सागर हैं। वा सागर एक ही है। यह तो अलग2 पार्टीशन कर नाम रख दिये हैं। बाकी सागर तो एक ही है ना। वास्कोडिगामा भी सारा चक्र लगाकर फिर वहाँ ही आकर खड़ा हो गया। तो सागर एक ही है। बीच2 में टुकड़ा2 कर अलग2 बना दिया है। धरनी भी सारी एक ही है। परन्तु टुकड़ा2 कर दी है। तुम्हारा
d राज्य होता है तो धरनी भी एक ही होती है, राज्य भी एक होता है, नो टुकड़ा। बाप आकर राज्य देते हैं। सारे सागर पर, सारी धरनी पर, सारे आसमान पर तुम्हारा राज्य होता है। मुक्ति में तो सब जायेंगे, बाकी जीवनमुक्ति में जाना कोई मासी का घर थोड़ेही है। तुम सब कामन हो, सब वापिस लौटेंगे। जहाँ से आये हैं फिर वहाँ जायेंगे जरूर। बाकी नई दुनिया में सब थोड़ेही आयेंगे। तुम्हारा ही राज्य है। कोई2 तो इतना देरी से आते हैं जो पुरानी दुनिया शुरू होने से थोड़े ही पहले यानी दो चार सौ वर्ष पहले आते हैं। वह क्या हुआ। जो अच्छी रीति नहीं पढ़ेंगे तो त्रेता में भी पिछाड़ी का थोड़ा समय रहेंगे। 16कला तो कब बन नहीं सकती। 14कला के भी पिछाड़ी में आयेंगे। उनको सामने दुख की दुनिया देखने में आयेगी। काँटो की दुनिया के नजदीक आ जायेंगे। वहाँ कोई यह मालूम नहीं पड़ता है, सारी नालेज अभी है जो बुद्धि में धारण करनी होती है। इस समय मनुष्यों के पास पैसे देखो कितने
e होंगे। कितने महल बनते रहते। कितनी ऊँची2 माड़िया बनाते रहते। समझते हैं सतयुग से भी भारत अभी ऊँच है। अभी ही 18-20 मंजिल बनाते रहते तो अन्त में कितनी मंजिल बनायेंगे। दिनप्रतिदिन मंजिलें चढ़ाते रहते हैं। सतयुग त्रेता में तो यह मंजिलें होती नहीं। द्वापर में भी नहीं होती यह तो कलियुग में जब आकर बहुत मनुष्य हो जाते हैं तो मंजिले बनाते हैं। क्योंकि मनुष्य बहुत हो गये हैं। तो वे जावें कहाँ, धन्धाधोरी बहुत है तो बड़े2 मकान भी बनाते रहते हैं। शोभा के लिए। जंगल से मंगल होता जाता है। कितने अच्छे2 मकान बनते रहते हैं। जमीन लेते
f रहते हैं। बाम्बे पहले क्या थी। 80-90 वर्ष में देखो क्या हो गई है। पहले तो कितने थोड़े मनुष्य थे अभी तो देखो कितने मनुष्य हो गये हैं। समुद्र को सुखाया है। पानी जैसे कमती होता जाता है मनुष्य वृद्धि को पाते जाते तो पानी कहाँ से आयेगा। पानी खर्च होता जाता है समुद्र मिटता जायेगा। आपेही नीचे होता जाता। धरती छोड़ते हैं तो मकान बना देते हैं। कराची में देखा है ना-किलिफ्टन के भी पार समुद्र का पानी चला जाता है फिर पानी चढ़ जायेगा तो कराची का तो बहुत हिस्सा, बम्बई का भी बहुत हिस्सा पानी में चला जायेगा। तो और सभी खण्ड खत्म हो जायेंगे। आफतें आने वाली हैं इसलिए बाप कहते हैं जल्दी2 तैयार
g होते रहो। जैसे शमशान में जब आग जलकर खत्म होती है तब लौटते हैं। बाप भी विनाश के लिए आये हैं तो आये पर गोडेही जायेंगे। आग लगकर जब पूरी होगी तब चले जायेंगे। फिर बैठकर क्या करेंगे। आग बुझेगी नहीं। सभी चले जायेंगे, सबको साथ ले जायेंगे। होना तो जरूर है। समझते भी सब हैं लेकिन समय का गमोड़ा बहुत बड़ा लगा दिया है। बच्चों को समझाना भी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ओम शान्तिः प्रातः क्लास

क्या सोच रहे होंगे सम्बन्धार पुरुषार्थ अनुसार अब हर एक जीव की आत्मा अपने ऊपर उतर रखा रहा है। कि हम क्या थे? किसके बच्चे थे, कैसे औरवेराक बाप से वर्सा मिला था। फिर कैसे हम भूल गये। हम तमोप्रधान दुनियां से सारे विश्व का मालिक थे। बहुत सुखी थे। फिर हम सीढ़ी उतरे रावण आया तो आधाकल्प आ गई जो कि हमारचना औररचनाको भूल गये। कलयुग मे मनुष्य सब कुछ आद भूल जाते है। नां तो हम भी भूल गये कि हमारा घर कहा है। कहां के रहने वाले थे। अब बाप देख रहे है हमारे बच्चे आज से 5000वर्ष पहले राजभाग पा चुके थे। बड़े आनन्द मौज मेंथे यही पौधे फिर क्या बन गये। कैसे रावण के राज्य मे आ गये। पुराने राज्य मे तो मे तो जरुर दुःख ही मिलना नां। कितने तुम भटके। अन्धियां मे बाप को ढूंढते रहे। परन्तु मिले वहां जिनको मिट्टर खिलाड़ मे डाल दिया तो मिलेगा वेा ही फिर कैसे। आधा कल्प तुम भटक-2 कर जैसे कि कहीं खो गये हो। अपने ही अज्ञान के कारण। रावण राज्य मे तुमने कितना दुःख उठाया है। भारत भक्ति भाग मे गरीब बनता गया। बाप बच्चो को देखते है तो स्वयाल होता है कि भक्ति मार्ग मे कितना भटके है। आधा कल्प भक्ति की है। किस लिये? भगवान को मिलने के लिये। भक्ति के बाद मे ही भगवान फल देते है। वो तो कुछ भी जानते नही है। बिलकुल ही बुद्धु बन गये है। यह सब बातें बुद्धि मे आनी चाहिये। हम क्या थे फिर कैसे राजभाग करते थे। फिर कैसे सीढ़ी उतरते रावण की दुःखधाम जंजीर मे बंधते गये। अपरमअपार दुःख है। पहले-2 तो तुम अपरमअपार सुख मे थे। फिर बाद मे अपरमअपार दुःखो मे ओय हेा। दिल मे आना चाहिये कि अपने राज्य मे कितना सुख था। फिर पुरानी दुनियां मे कितना दुःख उठाया है। ये जैसे तो लोग समझते है रावण राज्य मे तुमने कितना दुःख उठाया है। वास्तव मे है बहुत अच्छे। यह उनको पता ही नहीं है कि तमोप्रधान सृष्टि मे तो बिल्कुल देव नीचे ही उतरते आये है। पहले-2 रावण के राज्य मे तो फिर भी सुखी थे। अब तो तमोप्रधान बन गये है। अभी तुम बैठे हो अन्दर मे यह खयाल चलना चाहिये हम कौन थे। किनके बच्चे थे। व बाप ने तो हमको सारे विश्व का राज्य दिया फिर कैसे हम रावण राज्य मे जकड़े गये। कितने दुःख देखें। कितने गन्दे काम किये। सृष्टि दिन प्रति दिन और ही गिरती आती है। मनुष्यों के संस्कार दिन प्रति दिन क्रिमनल होते जाते है। तो यह बच्चो को समझना चाहिये। बाप कहते है हम पवित्र पौधे थे जिनको राजभाग दिया था फिर मैं ही आत्मपेवान को भूल गये। अभी तुम फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना चाहते हो तो मुझ बाप को याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे परन्तु पाप कर नहीं सकते है। बार-2 कहते है बाबा हम भूल जाते है। और तुम याद नही करोगे तो पाप कैसे कटेंगे। एक तो तुम विकर्मो मे गिर कर पतित बने और फिर बाप को गाली भी देने लगे। रावण राज्य मे आकर तुम हमारे ही दुश्मन बन गये हो। माया है ही ऐसी। इतना तो तुम गिर गये हो कि जिसने तुमको आसमान पर चढ़ाया उनको ही ठिक्कर गिराने मे ले गई। माया के संग मे तुमने ऐसा पाप किया है। बुद्धि मे आना चाहिये नां एकदम पत्थर बुद्धि तो नही बनना चाहिये। बाप बैठ-2 कहते है मे हम से फेरेट क्लास पुजारीपन सुनता हूं जैसे बाम्बे में संगठन हुआ तो बुला सकते है। बाप कहते है हे भारतवासियों तुमको हमने सबसे ही राजभाग दिया। तुम आदी सनातन देवी देवतायें स्वर्ग मे थे फिर तुम रावण राज्य मे कैसे गिरे। यह भी ड्रामा मे पार्ट है। तुम रचता और रचना के आदि मध्य अन्त को समझो तो ऊंच पद पा सकते हो। मेरे को याद करते रहो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे यहां पर मेल बनी बैठे है परन्तु बिनकी बुद्धि कहां पर किनकी कहां पर है। बुद्धि मे यह आना चाहिये कि हम कहां पर थे। अब हम पुराने रावण राज्य मे आकर पड़े है। तो कितने दुःखी हुये है। हम शिवालय मे तो सभी सुखी थे। अब बाप आये है शिवालय से निकालने के लिये। तो भी निकलते ही नही है। बाप कहते है तुम शिवालय चलोगे? फिर वहां पर यह ? मिले गा। यह तो विश्व का मालिक थे नां। फिर यह कहां नही मिलेगा। यहां का गन्दा खानपान कहां [illegible] यह भी तुम समझते हो [illegible] यह तो बाप समझाते है सब

सर्विसएबुल नहीं होंगे। सम्पन्नता राजधानी स्थापन होनी है। तो जरूर सारी आवश्यकतायें पहले जैसी होंगी। तो समझाना चाहिये कि हमको फिर से श्रीमत पर धनधानी स्थापन करनी है 5000वर्ष पहले की। पहले प्रधान थे फिर प्रधान बनना है। बाप कहते हैं कि यह तो है ही। पहले प्रधान पुरानी दुनिया में। स्वयंवर पुरानी जब होगी तो ही तो बाप आयेंगे ना। बाप बिना तो कोई भी समझा नहीं सकते हैं। भगवान इस रथ में हम को पढ़ा रहे हैं। यही याद रहे तो भी बहुत खुशी में रह सकते हैं। अब हम ईश्वरीय सम्प्रदाय हैं फिर देवी सम्प्रदाय बनने वाले हैं। अगर यह बुद्धि में चल रहा तो औरों को बता कर भी आप समान बनाने वाला बाप समझाते हैं कि पहले तो तुम पूरे मैड चैप्स थे। कितने की बुद्धि से तो अभी भी मैड पना निकलता ही नहीं है। क्रिमनल कैरेक्टर सुधरता ही नहीं है। आत्मा की तो क्रिमनलटी निकलती ही नहीं है। एक तो है काम विकार की क्रिमनलटी जो मां कुराकल ही छूटती है। फिर साथ में पांच विकार हैं। क्रोध की क्रिमनलटी भी कितनी है। बैठे-2 ही भूत आ जाता है। यह भी क्रिमनलटी हुई ना। सिवलाईज तो हुआ ही नहीं है। नतीजा क्या होगा। सौगुणा पाप चढ़ जावेगा। वास-2 क्रोध करते रहेंगे। बाप समझाते हैं कि तुम रावण के राज्य में तो नहीं हो ना। तुम तो ईश्वर के पास बैठे हुये हो तो फिर इन विकारों से छूटने की प्रतिज्ञा करनी चाहिये। बाप कहते हैं कि अब मुझे याद करो। क्रोध मत करो। पांच विकार तो तुमको आधा कल्प भर ही गिराते आये हैं। सबसे ऊंचे भी तुम ही थे। सबसे जास्ती गिरे हुये भी तुम ही हो। इन पांच भूतों ने तुमको गिराया है। तुम बिलकुल बन्दर से भी बदतर बन गये हो। कल तो तुम बन्दर थे पांच विकार तुम्हारे में थे। अब शिवालय में जाने के लिये पांच विकारों को निकालना है। इस वेश्यालय से अब दिल हटाते रहो। बाप-दादा को याद करो तो अन्तमते सो गते हो जावेगी। तुम घर पहुंच जावेंगे। और तो कोई भी यह रास्ता बता ही नहीं सकता। गुरु आदि लोग जो अपने को परमात्मा कहलाते हैं उनको हठयोगीपथ कहा जाता है। वो है रावण बड़े दैत्य। तुम कह सकते हो। ममी ने जब इनको एक लिफाफे में सामान देते-2 अक्षर थे। जिसमें ही उनको कुरबान चढ़ा हुआ है। बात तो ठीक ही लिखी हुई है। भगवानोवाच। मैंने तो कब भी कहा नहीं है कि मैं सर्वव्यापी हूं। मैंने ही राजयोग सिखाया, और कहा कि तुमको तुमको विश्व का मालिक बनाता हूं। कि यहां तो इस नालेज की दरकार ही नहीं रहती है। मनुष्य से देवता बन जाते हैं। ऊपर तुम जैसा पा लेते हो सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी का। सन्यासी कुछ भी जानते थोड़े ही हैं। यह तो बाप ही जानते हैं जो तुम आत्माओं को बताते हैं। इसने तो कोई भी हठ योग आदि की बात ही नहीं। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो। तुम अपने को शरीर क्यों समझते हो। शरीर समझने से फिर जान उठा नहीं सकते हैं। यह भी भारी। तुम समझते हो कि हम रावण राज्य में थे। अब फिर रामराज्य में जाने लिये पुरुषोत्तम कर रहे हैं। अब हम कलयुग वासी नहीं हैं। पुरुषोत्तम संगम के वासी हैं। भल घर में भी रहो। इतने रहते यहां पर कहां रहेंगे। ब्राह्मण बन कर भी सबब्रह्मा के पास नहीं रह सकते हैं। रहना भी अपने-2 घर में है। और बुद्धि से समझना है कि हम शूद्र नहीं हम ब्राह्मण हैं। शूद्रों से प्रीत-2 अलग होते जाते हैं। कोशिश करते हैं कि हम अलग रहें। साथी रहने से फिर रिपीटिशन चलती रहती है। क्योंकि उनकी है मैजारटी। तुम ब्राह्मण हो मैनारटी। तुम ब्राह्मणों की चोटी कितनी छोटी है। तो गृहस्थ में रहते हुये शरीर निर्वाह अर्थ धन्धा आदि भी करना है। सिर्फ अपने को आत्मा समझो बाप को याद करो। हम क्या थे। अब हम पुराने राज्य में बैठे हुये हैं। अब बाप फिर हमको ले जाते हैं। तो गृहस्थ व्यवहार में रहते हुये वो अवस्था बनानी है। फिर छांट छूटी होगी। कोई निकल जावेंगे। शुरू में कितने खड़े-2 आड़े आये फिर उनमें कोई ही रहे। बाकी सब चले गये। तुम्हारी बुद्धि में है कि हम तो अपने राज्य में थे। फिर अब कहां पर आकर पड़े हैं। फिर हम अपने राज्य में जाते हैं। 84का चक्र लगाया अब फिर वर्ल्ड की हिस्ट्री जगॉफी रिपीट होती है। तुम देखते हो कहते हो बाबा कितना बड़ा अच्छा रेग्युलर था। फिर आता नहीं। नहीं आते हैं तो गोया विकार में गिरे हैं। फिर ज्ञान की धारणा हो नहीं सकती। जितनी दे उतने धारण कर नहीं सकते। कहेंगे हमारा तो

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

पद मिल तो सकते है नां। मल युद्ध तो यहां पर है ही। परन्तु पुरुषार्थ किया जाता है ऊंच पद पाने का। बड़ा पद कौन पा सकते है यहतो कोई भी समझ सकते है। अभी सब पुरुषार्थ कर रहे है। किंग महेन्द्र (आगरा वाला महेन्द्र) भी पुरुषार्थ कर रहा है। वो तो पार्टीशन का किंग है। या तो स्वर्गवासी राजधानी में जाने वाला है। पुरुषार्थ ऐसा है जो कि विजय माला में आ सकता है। बाप बच्चों को समझाते है कि अपने ही दिल में जांचते रहना है हमारी आत्मा कहीं पर क्रिमनल काम तो नहीं करती है। कुछ नां कुछ करती ही रहती है। ऐसे कोई भी कह नहीं सकता है कि हमारी आत्मा क्रिमनल काम नहीं करती है। अगर सिवलाईज्ड हेवन जोन तो फिर क्या चाहिये। मत विकार में नहीं जावेंगे परन्तु कुछ न कुछ आत्मा धोखा देती ही रहेगी। जब तक कि कर्मातीत अवस्था हो जावे। नाम्बरवन तो काम में क्रिमनलआईज्ड बहुत खराब है। इसलिये ही नाम है क्रिमनलआईज्ड। सिवलाईज्ड। बेहद का बाप बच्चों को जानते तो है नां। यह क्या काम करते है। कितनी सर्विस करते है। कहलाने की क्रिमनलआत्मा अभी गई नहीं है। अब गुप्त समाचार आते है। आगे चलकर तो और भी रेक्यूरेट लिखेंगे। खुद भी महसूस करेंगे कि हम तो इतना समय तक झूठ बोलते रहेहै गिरते आये है। ज्ञान पूरा बुद्धि में बैठा नहीं है। यह कारण था जो कि हमारी अवस्था नहीं बनी। बाप से हम छुपाते रहे। ऐसे बहुत देर छुपाते है। सजन से गाय विकारों की बिमारी छुपानी नहीं चाहिये। सच्च-2 बताना चाहिये हमारी बुद्धि एक-2 तरफ जाती है। मित्र गाय तरफ नहीं जाती है। बताते नहीं है तो वो बुद्धि को खाते रहते है। अब बाप समझाते है कि बच्चे कहीं आसक्ती बनो। अति को छोड़ना समझो। मार-2 समझो। तुम कितने सुखी थे अविकारी पूज्य थे तो। अब तुम पुजारी दुःखी बन गये हो। मत से तो तुम नास्तिक बन गये हो। बाप कहते है यह गृहस्थ आश्रम तो परम्परा से ही चला आता है। क्या राम, सीता को बच्चे नहीं थे। वहां बच्चे नहीं है और वो तो है [illegible] पवित्र। [illegible] कहा है राम सीता नहीं। तुम बिना मेरे [illegible] कर सकते। अभी तो समझते नहीं हो कि हम रावण राज्य में है। अभी तुमको पता पड़ा है। रावण को जलाते रहते है जबसे रावण का राज्य शुरू हुआ है। जलाते है परन्तु जलता नहीं है। यह समझते नहीं है कि अभी तक भी रावण का राज्य है। यहां तो रामराज्य है वहां रावण को तो आना ही नहीं है। मनुष्यों की बुद्धि तो बिलकुल ही चटरबटरी में है। किसने की? इन गुरुओं ने। शास्त्रों ने। गीता तुम्हारा वेद पर किया सतोप्रधान बनाया। फिर तुमको तमोप्रधान किसने बनाया। रावण ने। तुम भूल जाते हो? कहते है यह तो परम्परा से ही चला आता है। अरे परम्परा भी तो कबसे? कोई भी हिसाब तो बताओ। कुछ भी समझते नहीं है। बाप समझाते है कि तुम तो राज्यभाग देकर गये। तुम भारतवासी बहुत ही सुखी थे। और कोई था ही नहीं। कृष्णन भी कहते है कि पैराडाईज था। चित्र भी देवताओं के है। इनसे कोई भी पुरानी चीज तो है ही नहीं। पुराने से पुराने यह सन्यासी होंगे या इनमें कोई वस्तु होगी। सबसे पुराने से पुराना यह है कृष्ण। नये से नया भी कृष्ण ही था। पुराने से पुराना क्यों कहते है कि पास्ट हो गया है नां। बाप ने समझाया है कि तुम ही गोरे से फिर सांवरे बने हो। बाप अंध बैठ समझाते है। सांवरा कृष्ण देखकर भी बहुत खुश होते है। भूले में भी सांवरे को ही भुलावेंगे। उनको क्या पता कि गोरा कब था क्यों था। कृष्ण को कितना प्यार करते है। राधा ने क्या किया। तो बाप कितना समझाते रहते है। यहां तो तुम असत्य के संग में बैठे हो। बाहर कुसंग में जाने से फिर सब भूल जाते हो। माया बहुत बल है। देखा भी है जो कि आगे भागे के भागे। घोड़ा भी अपना अड़ियल आने से और ही अपनी सत्यानाश कर लेते है। बेहद का बाप तो समझानी ही देंगे नां। इसमें कि पंक्ति नां होना चाहिये बाबा ने ऐसा मुझे क्यों कहा? ऐसे रज्जन गंदे है ईज्जत तो सारा राज्य में घट ही चुकीहै देखकर मुनाफा में आने से अपना ही नुकसान कर देंगे। पद भ्रष्ट हो जावेगा। क्रोध करना भी क्रिमनल ओथ है। लौभ ही, आदतों से चीज देखी है तो ही लौभ होता है। नये आकर अपना बगीचा देखते है। किस-2 किस्म के मुल है। आगे तो यहां से जाकर उस बगीचे में

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

दिखते थे। शिव बाबा को फूल भी कौवरबदाते है वो तो है निराकार। यह चेतन फूल है। तो अभीतुम पुरुषार्थ करके ऐसा फूल बनते हो। फिर वहां तो रावण राज्य ही नही। बाप तो समझाते रहते है मीठे-2 बच्चे नो कुछ भी बीते उसको ड्रामा समझो। विचार नाँ करो कि कितनी मेहनत करते है। होता तो कुछ भी नही है। ठहरते ही नही है। और प्रजा भी तो चाहिये ही नाँ। धोबी भी सुना तो वो भी प्रजा हो गई। प्रजा तो देर बननी है। ज्ञान कब भी विनाश को नही पाता है। एक बार ही सुना शिव बाबा है। तो भी बस है। प्रजा मे आ ही जायेंगे। तुम बच्चे तो आये हो नर से नारायण बनने तो पुरा पुरुषार्थ करो। अन्दर मे यह याद आनी चाहिये हम जिस राज्य मे देवी देवता फिर से अब आ रहे है। वहाँ पर अपरमअपार सुख होंगे। यहां अपरमअपार दुःख है। इसके लिये फिर पुरा पुरुषार्थ करना चाहिये। बिलकुल ही स्क्यूरेट सर्विस हेर रही है। पाई का भी फर्क नही है। अच्छा साहब के साहबजादो प्रेमसहित यादप्यार गुडमार्निंग और नमस्ते—

१८-७-६८ रात्री क्लास:—पास्ट जो हुआ उसका कुछ कर नही सकते है। समझा सकते है कि आगे के लिये कैसे होकर रहना चाहिये। इस समय तुम फिकर से फारिग बन रहे हो। 2 जन्मो के लिये यहां पर कोई भी फिकबात नही होती है। अब तुम तीरथ रहे हो। जो बीता ड्रामा। फिक्र नही करना चाहिये। कोई भी नुकसान होता है तो ड्रामा। यहां पर तो अनेक प्रकार के नुकसान आद होते रहते है। कर्मातीत अवस्था तो कोई की भी नही है। पुरुषार्थ कर रहे है कि कोई भी बात का फिर्क नही रहे। समय बाकी थोडा है। बाप चैंय देते है। तुम कितना समझाय फिर्क मे रहे हो। जब से रावण राज्य शुरुहुआ है सीढी उतरते ही आय हो। इस नालेज का भी तुमको यूज है। जितना हैशियार होते जाओगे उतना ही आड बढता जायेगा। इसमे मूंझने की बात ही नही है। राजधानी स्थापन होनी है। बच्चो का तो काम है पुरुषार्थ कर अपना जीवन ऊचा बनाना। इस समय ऊंच होगे तो जन्मजन्मान्तर कल्पकल्पान्तर ऊंच हो जाओगे। जो जितना बाबे पुरुषार्थ से वो पद पा सकता है। जितनी भी प्रजा बनाना चाहो। यह समझ की बात है। एक बात की बहुत याद करना है। मंसा मे भी याद करते हो तो आप जब आवेंगे तो हम आपके ही बनेंगे। दूसरा नाँ कोई। यह किसने कहा? आत्मा ने। जब भी किसीको समझाते हो तो पहले-2 यह बात बताओ कि हम सब आत्मायें भाई-2 है। बेहद के बाप से हम बेहद के वर्से को सदा मिलता है। कौनसा वर्सा। सुख और शान्ति। वा। हम पहले सुखधाम मे थे तो सब शान्ति धाम मे थे। नाँ अशान्ति नाँ ही दुःख था। और बराबर मालूम ही था। सूर्यवंशी बनना अच्छा है। फिर दो कला कमे हो जाती है। सतयुग मे सतोप्रधान थे। वहां जितना सुख होगा, त्रेता मे तो जरूर कुछ कम ही होगा। पुरुषार्थ कर सतोप्रधान बनना है। याद की यात्रा से। यही है मूल बात। अपनी ही तरक्की करने की। सभी को यही समझाना है। हम भाई-2 है पढते तो यही निश्चय करना है। हम आत्मायें है एक बाप के बच्चे है। बहुत सहज करके समझाना है। यहां मनुष्यों को तो बहुत ही दुःख है। बाप है ही दुःख हर्ता सुख कर्ता। अपार दुःखो और अपार सुखो का यही है संगम। बाप को याद करते-2 सतोप्रधान बनना है। वैसी गैण धारण करने है। नौत सामेन रखडा है। बस। स्थापना तो होनी ही है। १५-९-६८ रात्री क्लास (आज रामचे की टेप जिसमे कि ड्रामा का भाषण भरा हुआ था सो सुन रहे थे) तुम माताओं का तो अब बोल बाला होना ही है। आगे तो कब भी फीमेल आद को प्राईमिनस्टर आद नही बनाते थे। अब तो प्रेजडण्टस आद भी बनाते रहते है। यह सब है माया का पाप। गर्वनर भी फीमेल्स होती है। तुम बच्चे जानते हो अब अपनी राजधानी स्थापन होनी ही है। जब स्थापना पुरी हो तो तब ही लडाई भी शुरु हो। अभी देरी है। दिन प्रति दिन पुजारीटस भी निकलती रहती है। बाबा बतलाया है दुःखधाम का दुःख, सुखधाम का सुख यह भी सब एक दिन छपावेंगे। आत्मा अपार दुःख है। अपार सुख थे। अब नहा है। फिर रिपीट करेंगे। बाप कहते है मुझे याद करो तो विश्व का मालिक बन जाओगे। बड़ी-2 सभा मे भाषण करने की भी हिम्मत चाहिये। फेल भी हो जाते है नाँ। दो पार्ट है जो कि बड़ी-2 सभा मे भाषण कर सकती है। समझते तो है ना कि कलकत्ता-2 हमसे हैशियार है। हम इतना भाषण नही कर सकते है। फूल मे कोई अच्छे बतीसठाले है। तो

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मेन प्वाइन्ट्स - पार्ट III

श्रीमत से सद्गति, मनुष्य मत से दुर्गति

a) तुम बच्चों को बाप जो मुख से कहे, वह मानना चाहिए । -मु.नं. 120e
b) कदम2 श्रीमत पर न चले तो रोला पड़ जायेगा । -मु.नं. 114d, 50b
c) ज्ञानमार्ग का गुरु मैं एक ही हुँ । ज्ञान जब मेरे से सुनें तब उनको ज्ञानी कह सकते हैं । बाकी सब हैं भक्ति। -मु.नं. 56a, 63h
d) डायरेक्ट ईश्वर मत देते हैं कि यह2 करो, रेसपॉन्सिबुल हम हैं । -मु.नं. 51b, 116c+d
e) बी० के० की मत मिलती है सो भी जाँच करनी होती है कि यह मत राइट है वा रांग है । -मु.नं. 47d
f) कभी भी सुनी-सुनाई बातों पर न लगना चाहिए । बाप समझाते रहते हैं झूठी बातें बोलने वाले तो बहुत हैं । -मु.नं. 67h, 116f+g
g) बाप के सिवाए बाकी सब रचता और रचना के लिए झूठ ही बोलते हैं क्योंकि यह है ही माया का राज्य । -मु.नं. 102b, 41b
h) (मनुष्य) जो कर्तव्य करेंगे सो उल्टा ही करेंगे क्योंकि उल्टी मत मिल रही है । -मु.नं. 96e
i) मनुष्यों की तो अनेक मतें हैं - एक न मिले दूसरे से । अनेक प्रकार की द्वेत मतें हैं । -मु.नं. 3d, 76c

मुरली

a) मुरली को कोई 5-8 बारी अच्छी रीति पढ़े तो ब्राह्मणी से भी ऊँच जा सकते हैं । -मु.नं. 48g
b) एक2 बात में बहुत ही गुह्य राज़ भरा हुआ है, जो समझाना बहुत जरुरी है । -मु.नं. 49b, 21d
c) अविनाशी ज्ञान रत्न एक2 लाख रुपये के हैं । -मु.नं. 50b, 115b, 118g
d) ब्राह्मण जीवन के जी-दान का आधार कौन-सा है ? मुरली । पढ़ाई का भी आधार है मुरली । -मु.नं. 51g
e) आते नहीं हैं तो बाबा लिख देते हैं क्या मुरली को फार्कती दी हैं ? मुरली को फार्कती दी तो मुरली सुनाने वाले शिवबाबा को भी दी । -मु.नं. 55g
f) जिन्हें माया मगरुर बना देती है वह देह अभिमान में आकर मुरली को भी डोन्ट-केयर करते हैं । -मु.नं. 52a
g) बाबा, हमको वाणी कट करके भेज देते हैं, हमारे रत्नों की चोरी हो जाती है । -मु.नं. 53c
h) तुम तो मुरली पढ़कर फेंक देते हो । नहीं तो यह वर्शन्स रखने चाहिए हमेशा के लिए । -मु.नं. 89d
i) बाप तुमको यह जो सौगात देते हैं वह कभी जलने वाली नहीं है । ज्ञान कोई शास्त्र नहीं जो जलाए जाए । -मु.नं. 54c
j) कराची से लेकर मुरली निकलती आई है । पहले बाबा मुरली चलाते नहीं थे । रात को 2 बजे उठकर 10-15 पेज लिखते थे, बाबा लिखवाते थे ।)-मु.नं. 89b, 85f

1. मुरली - फर्स्ट क्लास : अभी तुम बाप के सम्मुख बैठे हैं । सम्मुख मुरली सुनने में कितना फर्क है । -मु.नं. 76d, 61c, 107b, 39g, 121c
   b) अभी बाप तुम बच्चों को समझा रहे हैं, यह (ब्रह्मा) भी सुनते हैं । - मु.नं. 9c, 68d, 55c, 63h
2. सेकन्ड क्लास ('ए'- ग्रेड):- टी० वी० में भी तुम देख सकते हो । आगे चलकर ऐसी2 चीज़ें निकलेंगी जो घर बैठे सब दिखाई पड़ेगा । -मु.नं. 126f
   ('बी'- ग्रेड):- टेप पर भी मुरली सुन सकते हैं । -मु.नं. 39g, 76d, 107b
3. थर्ड क्लास : हम जो लिखते हैं वह (कागज़ की मुरली) फिर क्या काम में आयेंगे ? इसका (ज्ञान का) पुस्तक तो है नहीं । -मु.नं. 85c

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

b) मनुष्यों की बुद्धि में भक्तिमार्ग के शास्त्रों की बातें ही भर गई है। शास्त्र (कागज़ की मुरली) ही बैठ पढ़कर सुनाते हैं। - **मु.नं.** 94d, 123b

c) कोई तो गीता (मुरली) के श्लोक एकदम कण्ठ कर लेते हैं। बाकी तो उनका अर्थ हर एक अपना2 बैठ निकालते हैं। - **मु.नं.** 49e, 88c

गुलजार दादी में सुप्रिम सोल शिव नहीं आते, सूक्ष्म शरीरधारी ब्रह्मा आता है

1) शिवबाबा कहते हैं - हम जब बच्चों को सुनाते थे, तो यह भी सुनते थे। -**मु.नं.** 72b, 55c, 68d
2) शिवबाबा के अवतरण में तो बिल्कुल फर्क नहीं पड़ सकता। पता भी नहीं पड़ता है कि कब आया। -**मु.नं.** 80h, 57d+e, 82a
3) बाप कहते हैं मैं भी बिन्दी हुँ, इसमें आकर बैठा हुँ। तुमको तो पता भी नहीं पड़ता है। -**मु.नं.** 68c, 81d, 117c
4) बहुत ध्यान में जाते थे। वह कोई तिथि तारीख, वेला नहीं निकाल सकते। कृष्ण (सू० वासी ब्रह्मा की सोल) को भी पूजते हैं - किस समय, कितने मिनट आदि सारा निकालते हैं। -**मु.नं.** 57e, 56e, 80g
5) मैं नम्बरवन पतित कामी काटे में प्रवेश करता हुँ। -**मु.नं.** 14h
6) पवित्र कन्या के तन में आवे, परन्तु कायदा नहीं है। बाप सो फिर कुमारी पर कैसे सवारी करेंगे ? -**मु.नं.** 58c, 14g
7) मालूम कैसे पड़ता है कि इनमें बाप भगवान है ? जब नालेज देते हैं। - **मु.नं.** 8c, 56f
8) परन्तु आदत पड़ी हुई है तो मुरली2 कहते रहते हो। मुरली नाम कृष्ण (उर्फ ब्रह्मा) का उठा लिया है। वाणी अक्षर ठीक है, मुरली अक्षर निकल जाना चाहिए। -**मु.नं.** 75d
9) यहाँ भीड़ का कायदा नहीं है। -**मु.नं.** 60c
10) बड़े2 सभाओं में बाबा नहीं जा सकते। वह (कृष्ण उर्फ ब्रह्मा जैसे) बच्चों का काम है। -**मु.नं.** 61d
11) लाउड स्पीकर पर कभी पढ़ाई होती है क्या ? टीचर सवाल कैसे पूछेंगे, लाउड स्पीकर पर रेस्पान्ड कैसे दे सकेंगे ? -**मु.नं.** 62e
12) ऐसे भी नहीं कि तुम्हारी आत्मा के बुलाने पर आता हूँ। जब मेरे आने का समय होता है तो एक सेकण्ड भी नीचे-ऊपर नहीं होता है। -**मु.नं.** 43h, 59j
13) ऐसे नहीं बाबा का आवाहन करते हैं। बाबा का आवाहन तो कर नहीं सकते। -**मु.नं.** 57g
14) मैं खुद डायरेक्ट आया हुँ। -**मु.नं.** 90b
15) ड्रामा में जिसका पार्ट है उनमें ही प्रवेश करते हैं और उसका नाम ब्रह्मा रखते हैं। -**मु.नं.** 63g, 64b, 74e, 49f
16) तुमसे बहुत लोग पूछते हैं - सिर्फ एक ही ब्रह्मा में क्यों आते हैं। -**मु.नं.** 5c, 80d, 73g
17) सू० वासी सम्पूर्ण ब्रह्मा में नहीं आते हैं। -**मु.नं.** 25b, 79i
18) बाप कभी पुनर्जन्म नहीं लेते हैं। एक ही बार आकर सारे विश्व को पवित्र बनाने के लिए हमको राजयोग सिखाते हैं। -**मु.नं.** 78d, 91a, 57c 63c
19) भगवान जिसको शमा कह पुकारते हैं (माउण्ट आबू जैसे) महफिल में, परन्तु जानते नहीं। महफिल अर्थात् जहाँ बहुत इकट्ठे हो। महफिल में खाना-पीना, शराब आदि मिलता है। -**मु.नं.** 66a
20) 36 प्रकार के भोजन भी मधुबन वालों को बार2 मिलते हैं। -**अ.वाणी न.** 66f
21) बन्दरों की महफिल में आता हुँ। जहाँ माल-ठाल 36 प्रकार के भोजन मिल सकते, वहाँ मैं आता ही नहीं हुँ। - **मु.नं.** 66d
22) जो कभी ध्यान का पार्ट चलता है फलानी में मम्मा आई, बाबा आया - यह भी माया है। कोई2 में भूत (सूक्ष्म शरीरधारी ब्रह्मा जैसा) आ जाता है फिर कहते हैं - शिवबाबा आया, मुरली चलाते हैं। -**मु.नं.** 38f, 11c
23) कोई2 सन्देशियाँ सन्देश ले आती हैं, उसमें भी बहुत मिक्स हो जाता है। -**मु.नं.** 12c

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

21-1-2000 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – पुण्य आत्मा बनना है तो अपना पोतामेल देखो कि कोई पाप तो नहीं होता है, सच् का खाता जमा है?"

प्रश्नः सबसे बड़ा पाप कौन-सा है?

उत्तरः किसी पर भी बुरी दृष्टि रखना—यह सबसे बड़ा पाप है। तुम पुण्य आत्मा बनने वाले बच्चे किसी पर भी बुरी दृष्टि (विकारी दृष्टि) नहीं रख सकते। जाँच करनी है हम कहाँ तक योग में रहते हैं? कोई पाप तो नहीं करते हैं? ऊंच पद पाना है तो खबरदारी रखो कि ज़रा भी कुदृष्टि न हो। बाप जो श्रीमत देते हैं उस पर पूरा चलते रहो।

गीतः- मुखड़ा देख ले प्राणी..... देपणा मे:

ओम् शान्ति। बेहद का बाप अपने बच्चों को कहते हैं बच्चे, अपने भीतर ज़रा जाँच करो। यह तो मनुष्यों को मालूम रहता है कि हमने सारे जीवन में कितने पाप, कितने पुण्य किये हैं? रोज़ाना अपना पोतामेल देखो--कितने पाप और कितने पुण्य किये हैं? किसको रंज (नाराज़) तो नहीं किया? हर एक मनुष्य समझ सकते हैं—हमने लाइफ में क्या-क्या किया है? कितना पाप किया है, कितना दान-पुण्य आदि किया है? मनुष्य यात्रा पर जाते हैं तो दान-पुण्य करते हैं। कोशिश करके पाप नहीं करते हैं। तो बाप बच्चों से ही पूछते हैं—कितने पाप, कितने पुण्य किये हैं? अभी तुम बच्चों को पुण्य आत्मा बनना है। कोई भी पाप नहीं करना है। पाप भी अनेक प्रकार के होते हैं। कोई पर बुरी दृष्टि जाती है तो यह भी पाप है। बुरी दृष्टि होती ही है विकार की। वह है सबसे खराब। कभी भी विकार की दृष्टि नहीं जानी चाहिए। अक्सर करके स्त्री-पुरूष की तो विकार की ही दृष्टि होती है। कुमार-कुमारी की भी कहाँ न कहाँ विकार की दृष्टि उठती है। अब बाप कहते हैं यह विकार की दृष्टि नहीं होनी चाहिए। नहीं तो तुमको बन्दर कहना पड़े। नारद का मिसाल है ना। बोला हम लक्ष्मी को वर सकते हैं। तुम भी कहते हो ना हम तो लक्ष्मी को वरेंगे। नारी से लक्ष्मी, नर से नारायण बनेंगे। बाप कहते हैं अपने दिल से पूछो--कितने तक हम पुण्य आत्मा बने हैं? कोई पाप तो नहीं करते हैं? कहाँ तक योग में रहते हैं?

तुम बच्चे तो बाप को पहचानते हो तब तो यहाँ बैठे हो ना। दुनिया के मनुष्य थोड़ेही बाबा को पहचानेंगे कि यह बापदादा है। तुम ब्राह्मण बच्चे तो जानते हो परमपिता परमात्मा ब्रह्मा में प्रवेश होकर हमको अविनाशी ज्ञान रत्नों का खजाना देते हैं। मनुष्यों के पास होता है विनाशी धन। वही दान करते हैं, वह तो हैं पत्थर। यह हैं ज्ञान के रत्न। ज्ञान सागर बाप के पास ही रत्न हैं। यह एक-एक रत्न लाखों रूपयों का है। रत्नागर बाप से ज्ञान रत्न धारण कर और फिर इन रत्नों का दान करना है। जितना जो लेवे और देवे, उतना ऊंच पद पाये। तो बाप समझाते हैं अपने अन्दर देखो कितने हमने पाप किये हैं? अभी कोई पाप तो नहीं होता है? ज़रा भी कुदृष्टि न हो। बाप जो श्रीमत देते हैं उस पर पूरा चलते रहें यह खबरदारी चाहिए। माया के तूफान तो भल आयें परन्तु कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म नहीं करना है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कुदृष्टि जाये तो उसके आगे खड़ा भी नहीं होना चाहिए। एकदम चला जाना चाहिए। मालूम पड़ जाता है—इनकी कुदृष्टि है। अगर ऊंच पद पाना है तो बहुत खबरदार रहना है। कुदृष्टि होगी तो फिर लूले-लंगड़े बन पड़ेंगे। बाप जो श्रीमत देते हैं, उस पर चलना है। बाप को बच्चे ही पहचान सकते हैं। समझो बाबा कहाँ जाता है, बच्चे ही समझेंगे कि बापदादा आया है। और मनुष्य देखते तो बहुत हैं परन्तु उनको थोड़ेही पता है। कोई पूछे भी यह कौन है? बोलो बापदादा हैं। बैज तो सबके पास होने ही चाहिए। बोलो शिवबाबा हमको इस दादा द्वारा अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान देते हैं। यह है स्प्रीचुअल नॉलेज। स्प्रीचुअल फादर सभी रूहों का बाप बैठ यह नॉलेज देते हैं। शिव भगवानुवाच, गीता में कृष्ण भगवानुवाच रांग है। ज्ञान सागर पतित-पावन शिव को ही कहा जाता है। ज्ञान से ही सद्गति होती है। यह है अविनाशी ज्ञान रत्न। सद्गति दाता एक ही बाप है। यह सब अक्षर पूरी रीति याद रखने चाहिए। अभी बच्चे समझते हैं कि हम बाप को जानते हैं और बाप भी समझते हैं कि हम बच्चों को जानते हैं। बाप तो कहेगा ना—यह सब हमारे बच्चे हैं, परन्तु जान नहीं सकते हैं। तकदीर में होगा तो आगे चलकर जानेंगे। समझो यह बाबा कहाँ जाता है, कोई पूछते हैं कि यह कौन है? जरूर
b शुद्ध भाव से ही पूछेंगे। अक्षर ही यह बोलो कि बापदादा हैं। बेहद का बाप है निराकार। वह जब तक साकार में न आये तब तक बाप से वर्सा कैसे मिले? तो शिवबाबा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट कर वर्सा देते हैं। यह प्रजापिता ब्रह्मा और यह बी के. हैं। पढ़ाने वाला ज्ञान का सागर है। उनसे ही वर्सा मिलता है। यह ब्रह्मा भी पढ़ता है। यह ब्राह्मण से फिर देवता बनने वाला है। कितना सहज है समझाना। कोई को भी बैज पर समझाना अच्छा है। बोलो बाबा कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे। पावन बन और पावन दुनिया में चले जायेंगे। यह पतित-पावन बाप है ना। हम पुरूषार्थ कर रहे हैं पावन बनने का। जब
c विनाश का समय होगा तो फिर हमारी पढ़ाई पूरी हो जायेगी। कितना सहज है समझाना। कोई भी कहाँ आते-जाते हैं तो भी बैज साथ में होना चाहिए। इस बैज के साथ फिर एक छोटा पर्चा भी होना चाहिए। उसमें लिखा हो कि भारत में बाप आकरके फिर से आदि सनातन देवी-देवता धर्म स्थापन करते हैं। और सभी अनेक धर्म इस महाभारत लड़ाई द्वारा कल्प पहले मिसल ड्रामा प्लैन अनुसार खलास हो जायेंगे। ऐसे पर्चे 2-4 लाख छपे हों, जो कोई को भी पर्चा दे सकते हैं। ऊपर में त्रिमूर्ति हो, दूसरे तरफ सेन्टर्स की एड्रेस हो। बच्चों को सारा दिन सर्विस का ख्याल चलना चाहिए।

बच्चों ने गीत सुना — रोज़ अपना पोतामेल बैठ निकालना चाहिए कि आज सारे दिन में हमारी अवस्था कैसी रही? बाबा ने ऐसे बहुत मनुष्य देखे हैं जो रोज़ रात को सारे दिन का पोतामेल बैठ लिखते हैं। जाँच करते हैं—कोई खराब काम तो नहीं किया? सारा लिखते हैं। समझते हैं अच्छी जीवन कहानी लिखी हुई होगी तो पिछाड़ी वाले भी पढ़कर ऐसे सीखेंगे। ऐसा लिखने वाले अच्छे आदमी ही होते हैं। विकारी तो सब होते ही हैं। यहाँ तो वह बात नहीं है। तुम अपना पोतामेल रोज़ देखो। फिर बाबा के पास भेज देना चाहिए तो उन्नति अच्छी होगी और डर भी रहेगा। सब क्लीयर लिखना चाहिए—आज हमारी बुरी दृष्टि गई, यह

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

हुआ.....। जो एक-दो को दु:ख देते हैं बाबा उन्हें गाज़ी कहते हैं। जन्म-जन्मान्तर के पाप तुम्हारे सिर पर हैं। अभी तुमको याद के बल से पापों का बोझ उतारना है। इसलिए रोज़ देखना चाहिए हम सारे दिन में कितना गाजी बने हैं? किसको दु:ख देना गोया गाज़ी बनना है। पाप बन जाता है। बाप कहते हैं गाज़ी बन किसको दु:ख मत दो। अपनी पूरी जॉच करो—हमने कितना पाप, कितना पुण्य किया है? जो भी मिले सबको यह रास्ता बताना ही है। सबको बहुत प्यार से बोलो बाप को याद करना है और पवित्र बनना है। गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र बनना है। भल तुम संगम पर हो परन्तु यह तो रावण राज्य है ना। इस मायावी विषय वैतरणी नदी में रहते कमल फूल समान पवित्र बनना है। कमल फूल बहुत बाल बच्चों वाला होता है। फिर भी पानी से ऊपर रहता है। गृहस्थी है, बहुत चीजें पैदा करता है। यह दृष्टान्त तुम्हारे लिए भी है विकारों से न्यारा होकर रहो। यह एक जन्म पवित्र रहो तो फिर यह अविनाशी हो जायेगा। तुमको बाप अविनाशी ज्ञान रत्न देते हैं। बाकी तो सब हैं पत्थर। वो लोग तो भक्ति की ही बातें सुनाते हैं। ज्ञान सागर पतित-पावन तो एक ही है तो ऐसे बाप से बच्चों का कितना लव रहना चाहिए। बाप का बच्चों से, बच्चों का बाप से लव रहता है। बाकी और कोई से कनेक्शन नहीं। सौतेले वह हैं जो बाप की मत पर पूरा नहीं चलते हैं। रावण की मत पर चलते हैं तो राम की मत थोडेही ठहरी। आधाकल्प है रावण सम्प्रदाय इसलिए इनको भ्रष्टाचारी दुनिया कहा जाता है। अब तुम्हें और सबको छोड़ एक बाप की मत पर चलना है। बी.के. की मत मिलती है सो भी जाँच करनी होती है कि यह मत राइट है वा रांग है? तुम बच्चों को राइट और रांग समझ भी अभी मिली है। जब राइटियस आये तब ही राइट और रांग बताये। बाप कहते हैं तुमने आधाकल्प यह भक्ति मार्ग के शास्त्र सुने हैं, अब मैं तुमको जो सुनाता हूँ—यह राइट है या वह राइट है? वह कहते हैं ईश्वर सर्वव्यापी है, मैं कहता हूँ मैं तो तुम्हारा बाप हूँ। अब जज करो कौन राइट है? यह भी बच्चों को ही समझाया जाता है ना, जब ब्राह्मण बनें तब समझें। रावण सम्प्रदाय तो बहुत हैं, तुम तो बहुत थोड़े हो। उनमें भी नम्बरवार हैं। अगर कोई कुदृष्टि है, तो भी उनको रावण सम्प्रदाय कहा जायेगा। राम सम्प्रदाय का तब समझा जाए जब सारी दृष्टि बदल कर दैवी बन जाए। अपनी अवस्था से हर एक समझ तो सकते है ना। पहले तो ज्ञान था नहीं, अभी बाप ने रास्ता बताया है। तो देखना है हम अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान करता रहता हूँ? भक्त लोग दान करते हैं विनाशी धन का। अभी तुमको दान करना है अविनाशी धन का, न कि विनाशी। अगर विनाशी धन है तो अलौकिक सेवा में लगाते जाओ। पतित को दान करने से पतित ही बन जाते हो। अभी तुम अपना धन दान करते हो तो इसका एवजा फिर 21 जन्मों के लिए नई दुनिया में मिलता है। यह सब बातें समझने की हैं। बाबा सर्विस की युक्तियाँ भी बतालते रहते हैं। सब पर रहम करो। गाया हुआ भी है परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं। परन्तु अर्थ नहीं समझते। परमात्मा को ही सर्वव्यापी कह दिया है। तो बच्चों को सर्विस का शौक बहुत अच्छा रखना है। औरों का कल्याण करेंगे तो अपना भी कल्याण होगा। दिन-प्रतिदिन बाबा बहुत सहज करते जाते हैं। यह त्रिमूर्ति का चित्र तो बहुत अच्छी चीज़ है। इसमें

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

शिवबाबा भी है, फिर प्रजापिता ब्रह्मा भी है। प्रजापिता ब्रह्माकुमार-कुमारियों द्वारा फिर से भारत में 100 परसेन्ट पवित्रता-सुख-शान्ति का दैवी स्वराज्य स्थापन कर रहे हैं। बाकी अनेक धर्म इस महाभारत लड़ाई से कल्प पहले मुआफ़िक विनाश हो जायेंगे। ऐसे-ऐसे पर्चे छपवाकर बांटने चाहिए। बाबा कितना सहज रास्ता बताते हैं। प्रदर्शनी में भी पर्चे दो। पर्चे द्वारा समझाना सहज है। पुरानी दुनिया का विनाश तो होना ही है। नई दुनिया की स्थापना हो रही है। एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना हो रही है। बाकी यह सब विनाश हो जायेंगे कल्प पहले मुआफ़िक। कहाँ भी जाओ, पॉकेट में भी पर्चे और बैजेस सदैव पड़े रहें। सेकण्ड में जीवनमुक्ति गाई हुई है। बोलो, यह है बाप, यह दादा। उस बाप को याद करने से यह सतयुगी देवता पद पायेंगे। पुरानी दुनिया का विनाश, नई दुनिया की स्थापना, विष्णुपुरी नई दुनिया में फिर इन्हों का राज्य होगा। कितना सहज है। तीर्थों आदि पर मनुष्य जाते हैं, कितने धक्के खाते हैं? आर्य समाजी आदि भी ट्रेन भरकर धक्के खाने जाते हैं। इसको कहा जाता है धर्म के धक्के। वास्तव में हैं अधर्म के धक्के। धर्म में तो धक्के खाने की दरकार नहीं है। तुम तो पढ़ाई पढ़ रहे हो। भक्ति मार्ग में मनुष्य क्या-क्या करते रहते हैं!

बच्चों ने गीत में भी सुना कि मुखड़ा देख..... यह मुखड़ा तुम्हारे सिवाए तो कोई देख नहीं सकते हैं। भगवान को भी तुम दिखला सकते हो। यह हैं ज्ञान की बातें। तुम मनुष्य से देवता, पाप आत्मा से पुण्य आत्मा बनते हो। दुनिया इन बातों को बिल्कुल नहीं जानती। यह लक्ष्मी-नारायण स्वर्ग के मालिक कैसे बनें--यह किसी को पता नहीं है। तुम बच्चे तो सब जानते हो। किसको बुद्धि में तीर लग जाए तो बेड़ा पार हो जाए। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. अगर विनाशी धन है तो उसको सफल करने के लिए अलौकिक सेवा में लगाना है। अविनाशी धन का दान भी जरूर करना है।

२. अपने पोतामेल में देखना है कि हमारी अवस्था कैसी है? सारे दिन में कोई खराब काम तो नहीं होते हैं? एक-दो को दुःख तो नहीं देते हैं? किसी पर कुदृष्टि तो नहीं जाती है?

वरदान:- शक्तिशाली सेवा द्वारा निर्बल में बल भरने वाले सच्चे सेवाधारी भव

सच्चे सेवाधारी की वास्तविक विशेषता है--निर्बल में बल भरने के निमित्त बनना। सेवा तो सभी करते हैं लेकिन सफलता में जो अन्तर दिखाई देता है उसका कारण है सेवा के साधनों में शक्ति की कमी। जैसे तलवार में अगर जौहर नहीं तो वह तलवार का काम नहीं करती, ऐसे सेवा के साधनों में यदि याद की शक्ति का जौहर नहीं तो सफलता नहीं। इसलिए शक्तिशाली सेवाधारी बनो, निर्बल में बल भरकर क्वालिटी वाली आत्मायें निकालो तब कहेंगे सच्चे सेवाधारी।

स्लोगन:-

भाव और भावना की पवित्रता ही सेवा का फाउण्डेशन है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

11-12-01 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - तुम्हें अथाह ईश्वरीय सुख मिला है, इसलिए तुम्हें मायावी सुखों की परवाह नहीं करनी है, वह सुख काग विष्टा समान है"

प्रश्नः- बाप की सर्व बच्चों के प्रति एक ही आश है - वह कौन सी?

उत्तरः- मेरे सब बच्चे अच्छी रीति पढ़कर तखतनशीन बनें अथवा बाप के कन्धे पर चढ़ें। बाबा देखते हैं कौन कितना अपनी खुशबू फैलाता है। बच्चे में कोई बदबू तो नहीं है। तो बच्चों को भी ऐसे पुरूषार्थ में लग जाना चाहिए। कभी भी कर्मेन्द्रियों से कोई उल्टा काम नहीं करना चाहिए।

गीतः- बदल जाए दुनिया न बदलेंगे हम....

ओम् शान्ति। इस गीत का थोड़ा तात्पर्य बाप बतलाते हैं इसमें कोई बदलने की बात ही नहीं। बच्चे बाप को कह नहीं सकते कि हम आपके बच्चे नहीं हैं, परन्तु कोई समय बदल जायेंगे। वैसे बच्चे कभी बाप से बदलते नहीं हैं। बच्चे तो हैं ही परन्तु कुटुम्ब से जुदा हो जाते हैं। अब यह तो है बेहद का बाप। कहते हैं मैं अपने परमधाम में रहता था। जैसे तुम आत्मायें यहाँ आकर पार्ट बजाती हो, गृहस्थी बनती
a हो वैसे मुझे भी आकर गृहस्थी बनना पड़ता है। यहाँ सम्मुख तुम मुझे माता पिता कहते हो। भल आगे भी तुम पुकारते थे तुम मात-पिता... परन्तु उस समय मैं गृहस्थी नहीं था। इस समय आकर गृहस्थी बना हूँ। गृहस्थी भी दो चार बच्चों का नहीं। ढेर के ढेर बच्चे आते जाते हैं। भल कहते हैं - हम बदलेंगे नहीं, परन्तु माया बदला देती है। बाप है ऊंचे ते ऊंचा। इनसे ऊंच बाप कोई हो नहीं सकता। साधारण मनुष्य तन में प्रवेश किया है। बच्चे जानते हैं भविष्य 21 जन्मों के लिए पुरुषार्थ अनुसार जायदाद मिलती है। बहुत हैं जो चलते-चलते फिर बदल जाते हैं क्योंकि यह है माया की लड़ाई। आगे तुम माया के थे। अभी बाप ने एडाप्ट किया है। उस तरफ है माया का सुख, यहाँ तो वह सुख नहीं है। तो माया के सुख अपनी तरफ खींच लेते हैं। यहाँ तुमको है गुप्त सुख। जानते हो भविष्य में अथाह सुख लेंगे। यहाँ के सुख में अगर बुद्धि गई तो वह सुख याद आते रहेंगे। अन्त में भी वही याद आयेंगे। इसलिए इन मायावी सुखों की परवाह नहीं रखनी है। गाते भी हैं यह सुख काग विष्टा के समान है। अब
b तुम बच्चे जानते हो सुख तो हमको सतयुग में मिलेगा, वह सुख प्राप्त करने के लिए हम मात-पिता के बने हैं। बाप जरूर कोई समय गृहस्थी बने हैं, जिस कारण उनको तुम मात-पिता कहा जाता है। गाते तो हैं परन्तु समझते नहीं हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो बेहद का बाप भी है तो माँ भी है। इस माँ द्वारा अर्थात् प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट किया है। अब प्रजापिता और शिव दोनों ही बाप ठहरे। बाप तो माता द्वारा एडाप्ट करेंगे ना। अब त्वमेव माताश्च पिता... इनको कहें या ब्रह्मा को कहें। गाते तो हैं हम सब ब्रदर्स हैं, वह फादर है। उसमें तो माता का प्रश्न ही नहीं। गाया जाता है - तुम

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मात-पिता। अब माता-पिता कैसे बनते हैं, यह वन्डरफुल बातें हैं समझने की। मनुष्य मूँझते भी हैं क्योंकि शरीर तो मेल का है ना, इसलिए माता एडाप्ट की गई। वह है सरस्वती बेटी। परन्तु बेटी द्वारा तो एडाप्ट नहीं किया जाता है। यह माता भी है
c तो पिता भी है। उसने इसमें प्रवेश किया है। तब ब्रह्मा को खुद कहते हैं तुम हमारा बच्चा भी हो, वन्नी (पत्नी) भी हो। बरोबर बाप इन द्वारा एडाप्ट करते हैं। तो यह माता भी हो जाती है। फिर भी बाप कहते हैं, तुमको याद मुझे करना है। ब्रह्मा को याद नहीं करना है। मनुष्य तो दुनिया में बहुत लॉकेट पहनते हैं। यह तो बाप है। बाप कहते है बच्चे तुम्हें अपना भी सब कुछ भूल जाना है, देह सहित देह के जो भी सम्बन्धी हैं, सबको भूल परमपिता परमात्मा के साथ योग लगाओ। तुम बच्चों को फरमान
d है मुझ बाप को याद करो। मैं इनमें प्रवेश होकर तुमको राजयोग सिखलाता हूँ, इसमें प्रेरणा की कोई बात नहीं है। प्रेरणा से बाबा काम नहीं करता है। यह ड्रामा अनुसार सब कुछ होना ही है। बाप की याद से विकर्म विनाश होंगे। बाकी किसी देहधारी को याद करने से टाइम वेस्ट हो जाता है। दूसरे के साथ बुद्धियोग लगाते हो तो गोया बाप से नाफरमानबरदार बनते हो। बाप को याद करने में मेहनत है, इसमें ही भूल होती है। बाप कहते हैं तुम हो आशिक। चलते-फिरते मुझ माशूक को याद करने का
e पुरुषार्थ करो। गीत में भी भगवानुवाच है - मामेकम् याद करो। देह सहित देह के सब सम्बन्ध छोड़ अपने को आत्मा समझो। यह कौन कहते हैं? शिवबाबा या श्रीकृष्ण? किसको याद करना है? श्रीकृष्ण तो संगम पर हो न सके। हाँ, कृष्ण की आत्मा जरूर है। वह भी सीखकर औरों को सिखाते हैं। यह है मुख्य पहला नम्बर प्रिन्स। इनके साथ और भी तो हैं ना, राधे भी साथ में है। परन्तु फर्स्ट प्रिन्स यह है। राधे तो
f फिर भी बाद में है। पहले इनका नाम है। यह कितनी मुख्य बातें हैं। इसलिए बाप कहते हैं मुख्य एक ही बात को उठाओ। गीता कृष्ण ने नहीं गाई। कृष्ण को भगवान नहीं कह सकते। इस बात में ही सारी बात है जीतने की। एक बाप ही ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय यह तीन धर्म स्थापन करते हैं। पहले डिटीज्म, फिर इस्लामिज्म, बुद्धिज्म, क्रिश्चियनीज्म... बस और छोटे-छोटे धर्म तो बहुत हैं। सद्गति होती है गीता के भगवान द्वारा। सर्व का सद्गति दाता बाप है। सर्व का जगत गुरू भी एक ही सतगुरू है। सतगुरू अर्थात् सद्गति करने वाला। यह सबको अच्छी तरह समझा सकते हो।

g जो बाबा की मुरली निकलती है, सब स्टूडेन्ट को हक है मुरली अच्छी तरह पढ़ने का। जिनको मुरली का शौक होगा वह तीन चार बारी मुरली जरूर पढ़ेंगे। मुरली बिगर और कुछ सूझना ही नहीं चाहिए। मुरली को कोई 5-8 बारी अच्छी रीति पढ़े तो ब्राह्मणी
h से भी ऊंच जा सकते हैं। सबको अपनी उन्नति करनी है। वास्तव में ब्राह्मणियां हैं मोस्ट ओबीडियन्ट सर्वेन्ट। कोई की अच्छे खान-पान तरफ बुद्धि गई तो मरने समय भी वह याद आ जायेगा। इस समय ही सर्विस लेते रहे तो खलास। सर्विस पर रहने वाले सदैव ओबीडियन्ट होकर रहेंगे। जैसे जनक बच्ची है, कभी कोई से काम नहीं लेगी। कोई-

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कोई को तो आदत पड़ जाती है तो फिर बात मत पूछो। कपड़े धोने वाले न मिलने से बीमार हो पड़ते हैं। कहाँ जा नहीं सकते। इसमें जास्ती नवाबी चल न सके। सर्वेन्ट बन सर्विस करनी है। बाप भी सर्वेन्ट है ना। कहते हैं मैं ऊंचे ते ऊंच, कितने साधारण तन में आया हूँ। मैं कोई घोड़ा गाड़ी आदि नहीं मांगता हूँ। यह तो फिर भी बाप है। वानप्रस्थ के बाद बच्चों का फर्ज होता है - बाप की सेवा करना। शिवबाबा का रथ है फिर भी बाबा कोई सेवा नहीं लेता है बच्चों से। बच्चों को अपनी पढ़ाई में पूरा ध्यान देना है। कायदेसिर पढ़ेंगे, पढ़ायेंगे तो सतयुग में भी कायदेसिर राज्य करेंगे। सतयुग में बेकायदे कोई बात होती नहीं। हर एक बात में एक्यूरेट बनना है। हम विश्व के राजकुमार राजकुमारी बनते हैं तो वह मैनर्स यहाँ सीखते हैं। कृष्ण की कितनी महिमा है - महाराजकुमारा बाप से भी कृष्ण का नाम जास्ती है। राधे-कृष्ण के मॉ-बाप कोई भी इतनी मार्क्स नहीं उठा सकते हैं, जितने राधे-कृष्ण उठाते हैं। ऊंची पढ़ाई यह पढ़ते हैं। सबसे जास्ती मार्क्स कृष्ण लेते हैं। परन्तु जन्म तो फिर कहाँ लेना ही पडेगा। तो जिसके पास जन्म लिया उनका इतना मान नहीं होता है। पहले जरूर उनके माँ-बाप जन्म लेते होंगे। फिर भी कृष्ण बच्चे का नाम बाला होता है। यह बातें बड़ी गुप्त है। यह है चिटचैट की बातें। मूल बात है अपने को अशरीरी आत्मा समझो। हम बेहद बाप की औलाद हैं। हमको सर्वगुण सम्पन्न यहाँ बनना है। अभी कोई भी सम्पूर्ण नहीं बने हैं। सभी पुरुषार्थी हैं। इनकी रिजल्ट भी बाबा देखते तो हैं ना - यह (ब्रह्मा) सबसे ऊंच जायेगा, इसलिए फालो फादर कहा जाता है। अन्त तक फादर को ही फालो करना पड़े। ड्रामा में जो कुछ होता है समझा जाता है - यही राइट है। कोई भी बात में संशय नहीं आ सकता है। अम्मा मरे तो भी हलुआ खाना... तुमको तो मनमनाभव होकर रहना है। दुःख की कोई बात ही नहीं। ड्रामा में जो नूँध होगी वह होता ही रहेगा। अनादि बना बनाया ड्रामा है। जो नूँध है वह होता रहेगा। बच्चों का काम है पुरुषार्थ कर अपना जीवन हीरे जैसा बनाना। कर्मेन्द्रियों से कोई उल्टा काम नहीं करना है। ऐसे नहीं जो भाग्य में होगा। पुरुषार्थ करना है। बाबा को पूरा समाचार भी देना है। कोई सेन्टर का तो बिल्कुल पता भी नहीं पड़ता है। कई सेन्टर्स चलते हैं। कोई तो बिगर ब्राह्मणी भी गीता पाठशाला खोल सर्विस करते रहते हैं। नम्बरवार तो हैं ना। जो अच्छी सर्विस करते हैं वही बाबा की दिल पर चढ़ते हैं। तख्तनशीन होते हैं। बाप तो चाहते हैं बच्चे अच्छी रीति पढ़कर बाप के कन्धे पर चढ़ जाएं। इम्तहान तो एक ही है परन्तु मर्तबे की वैरायटी कितनी है। हर एक फूल अपनी-अपनी खुशबू देते हैं। कोई तो एकदम बदबू वाले भी हैं। कई बच्चे कमाल करने वाले भी हैं ना। प्रेम है, मनोहर है, दीदी है... इनकी सब महिमा करते हैं। कोई का तो नाम भी नहीं लेते हैं। बाप को पतित से पावन बनाने में कितनी मेहनत करनी पड़ती है। बन्दरों को मन्दिर लायक बनाते हैं। सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी राजा, प्रजा, गरीब, साहूकार सब बनते हैं ना। पुरुषार्थ कर ऊंच पद पाना है। नहीं तो जन्म-जन्मान्तर के लिए वही बन जायेंगे। फिर

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बहुत पछताना पड़ेगा। बाबा से हमने पूरा वर्सा नहीं लिया। टीचर गुरू भी कहेगा फालो करो। यह तो बाप टीचर गुरू एक ही है। सुप्रीम फादर, सुप्रीम टीचर, सुप्रीम गुरू भी है। वह निराकार ही नॉलेजफुल है। उनसे ही वर्सा मिलता है। सर्व का सद्गति दाता वह है, जिसकी सब साधना करते हैं। साधू अर्थात् साधना करने वाले। फिर किसको मुक्ति दे कैसे सकते। समझाने की युक्ति बड़ी अच्छी चाहिए। प्रदर्शनी का उद्घाटन करने वाले भी कुछ समझे हुए होने चाहिए। जो कह सकें कि यह प्रदर्शनी मनुष्य को हीरे जैसा बनाने वाली है। यह प्रदर्शनी परमपिता परमात्मा के डायरेक्शन से बनाई हुई है। उद्घाटन ऐसे से कराना चाहिए जो कुछ समझा भी सके। एक दिन बड़े भी आकर तुम्हारे पास समझेंगे। सन्यासी आदि भी आयेंगे। उस ड्रेस में बैठ समझेंगे। अब बाबा डायरेक्शन देते हैं मनमनाभव, बाप को याद करो तो पावन बनेंगे। विनाश भी सामने खड़ा है। बाप कहते हैं - मैं कितना बड़ा गृहस्थी बना हूँ। सबसे बड़े ते बड़ा गृहस्थ धर्म मैं पालन करता हूँ। ड्रामा में मेरा पार्ट ही ऐसा है। बच्चों को ऊंच पद पाने में मेहनत करनी चाहिए। पुरुषार्थ कर मॉ-बाप के गद्दी-नशीन बनना चाहिए। शिवबाबा के हम बच्चे हैं। अन्दर में वह नशा रहना चाहिए। हम बाबा से कम थोडेही जायेंगे। अच्छा।

मीठे मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- बाप समान सच्चा सेवाधारी बनना है। किसी से भी सेवा नहीं लेनी है। ओबीडियन्ट (आज्ञाकारी) होकर रहना है।

२- ड्रामा में जो भी सीन चलती है, वही राइट है। उसमें संशय नहीं उठाना है। अपनी जीवन को हीरे तुल्य बनने का पुरूषार्थ करना है।

वरदान:- एक बाप से योग रख सर्व का सहयोग प्राप्त करने वाले सच्चे योगी व सहयोगी भव

जो जितना योगी हैं उतना उसे सर्व का सहयोग अवश्य प्राप्त होता है। योगी का कनेक्शन अथवा स्नेह बीज से होने के कारण स्नेह का रिटर्न सबका सहयोग प्राप्त हो जाता है। तो बीज से योग लगाने वाला, बीज को स्नेह का पानी देने वाला सर्व आत्माओं द्वारा सहयोग रूपी फल प्राप्त कर लेता है क्योंकि बीज से योग होने के कारण पूरे वृक्ष के साथ कनेक्शन हो जाता है।

स्लोगन:-

पुराने संस्कारों को गैरा कहना अर्थात् पुरूषार्थ को ढीला करना।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

17-11-2000 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – अभी तुम सत्य बाप द्वारा सत्य देवता बन रहे हो, इसलिए सतयुग में सतसंग करने की जरूरत नहीं"

प्रश्नः- सतयुग में देवताओं से कोई भी विकर्म नहीं हो सकता है, क्यों?
उत्तरः- क्योंकि उन्हें सत्य बाप का वरदान मिला हुआ है। विकर्म तब होता है जब रावण का श्राप मिलने लगता है। सतयुग-त्रेता में है ही सद्गति, उस समय दुर्गति का नाम नहीं। विकार ही नहीं जो विकर्म हो। द्वापर-कलियुग में सबकी दुर्गति हो जाती इसलिए विकर्म होते रहते हैं। यह भी समझने की बातें हैं।

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों प्रति बाप बैठ समझाते हैं - यह सुप्रीम बाप भी है, सुप्रीम टीचर भी है, सुप्रीम सतगुरू भी है। (बाप की ऐसी महिमा बताने से ऑटोमेटिकली सिद्ध हो जाता है कि कृष्ण किसी का बाप हो नहीं सकता। वह तो छोटा बच्चा, सतयुग का प्रिन्स है। वह टीचर भी नहीं हो सकता। खुद ही बैठकर टीचर से पढ़ते हैं। गुरू तो वहाँ होता नहीं क्योंकि वहाँ सब सद्गति में हैं। आधाकल्प है सद्गति, आधाकल्प है दुर्गति। तो वहाँ है सद्गति, इसलिए ज्ञान की वहाँ दरकार नहीं रहती। नाम भी नहीं है क्योंकि ज्ञान से 21 जन्मों के लिए सद्गति मिलती है फिर द्वापर से कलियुग अन्त तक है दुर्गति। तो कृष्ण फिर द्वापर में कैसे आ सकता। यह भी किसको ध्यान में नहीं आता है। एक-एक बात में बहुत ही गुह्य राज भरा हुआ है, जो समझाना बहुत जरूरी है। वह सुप्रीम बाप, सुप्रीम टीचर है। अंग्रेजी में सुप्रीम ही कहा जाता है। अंग्रेजी अक्षर कुछ अच्छे होते हैं। जैसे ड्रामा अक्षर है। ड्रामा को नाटक नहीं कहेंगे, नाटक में तो अदली-बदली होती है। यह सृष्टि का चक्र फिरता है–ऐसा कहते भी हैं, परन्तु कैसे फिरता है, हूबहू फिरता है या चेंज होती है, यह किसको भी पता नहीं है। कहते भी हैं बनी-बनाई बन रही.....जरूर कोई खेल है जो फिर से चक्र खाता रहता है। इस चक्र में मनुष्यों को ही चक्र लगाना पड़ता है। अच्छा, इस चक्र की आयु क्या है? कैसे रिपीट होता है? इसको फिरने में कितना समय लगता है? यह कोई नहीं जानते। इस्लामी-बौद्धी आदि यह सब हैं घराने, जिनका ड्रामा में पार्ट है।

तुम ब्राह्मणों की डिनायस्टी नहीं है, यह है ब्राह्मण कुल। सर्वोत्तम ब्राह्मण कुल कहा जाता है। इस्लामी-बौद्धी आदि को कुल कहेंगे। देवी-देवता का यह कुल है। यह तो समझाना बहुत सहज है। सूक्ष्मवतन में फरिश्ते रहते हैं। वहाँ हड्डी-मांस होता नहीं। देवताओं को तो हड्डी-मांस है ना। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा। विष्णु की नाभी कमल से ब्रह्मा क्यों दिखाया है? सूक्ष्मवतन में तो यह बातें होती नहीं। न जवाहरात आदि हो सकते, इसलिए ब्रह्मा को सफेद पोशधारी ब्राह्मण दिखाया है। ब्रह्मा साधारण मनुष्य बहुत जन्मों के अन्त में गरीब हुआ ना। इस समय हैं ही खादी के कपड़े। वह बिचारे समझते नहीं सूक्ष्म शरीर क्या होता है। तुमको बाप समझाते हैं – वहाँ हैं ही फरिश्ते, जिनको हड्डी-मांस होता नहीं। (सूक्ष्मवतन में तो यह श्रृंगार आदि होना नहीं चाहिए। परन्तु चित्रों में दिखाया

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

है तो बाबा उसका ही साक्षात्कार कराए फिर अर्थ समझाते हैं। जैसे हनुमान का साक्षात्कार कराते हैं। अब हनुमान जैसा कोई मनुष्य होता नहीं। भक्ति मार्ग में अनेक प्रकार के चित्र बनाये हैं, जिनका विश्वास बैठ गया है उनको ऐसा कुछ बोलो तो बिगड़ पड़ते। देवियों आदि की कितनी पूजा करते हैं फिर डुबो देते हैं। यह सब है भक्ति मार्ग। भक्ति मार्ग के दलदल में गले तक डूबे हुए हैं तो फिर निकाल कैसे सकेंगे। निकालना ही मुश्किल हो जाता है। कोई-कोई तो औरों को निकालने निमित्त बन खुद ही डूब जाते हैं। खुद गले तक दुबन में फंसते अर्थात् काम विकार में गिर पडते हैं। यह है सबसे बड़ी दुबन (दलदल)। सतयुग में यह बातें होती नहीं। अभी तुम सत्य बाप द्वारा सत्य देवता बन रहे हो। फिर वहाँ भक्ति मार्ग में सतसंग होते नहीं। सतसंग यहाँ करते रहते हैं। समझते हैं सब ईश्वर के रूप हैं। कुछ भी नहीं समझते। बाप बैठ समझाते हैं—कलियुग में हैं सब पाप आत्मायें, सतयुग में होते हैं पुण्य आत्मायें। रात-दिन का फर्क है। तुम अभी संगम पर हो। कलियुग और सतयुग दोनों को जानते हो। मूल बात है इस पार से उस पार जाने की। क्षीरसागर और विषय सागर का गायन भी है परन्तु अर्थ कुछ नहीं समझते। अभी बाप बैठ कर्म-अकर्म का राज़ समझाते हैं। कर्म तो मनुष्य करते ही हैं फिर कोई कर्म अकर्म होते हैं, कोई विकर्म होते हैं। रावण राज्य में सब कर्म विकर्म हो जाते हैं, सतयुग में विकर्म होता नहीं क्योंकि वहाँ है रामराज्य। बाप से वरदान पाये हुए हैं। रावण देते हैं श्राप। यह सुख और दुःख का खेल है ना। दुःख में सब बाप को याद करते हैं। सुख में कोई याद नहीं करते। वहाँ विकार होते नहीं। बच्चों को समझाया है—सैपलिंग लगाते हैं। यह सैपलिंग लगाने की रसम भी अभी पड़ी है। बाप ने सैपलिंग लगाना शुरू किया है। आगे जब ब्रिटिश गवर्मेन्ट थी तो कभी अखबार में नहीं पड़ता था कि झाड़ों का सैपलिंग लगाते हैं। अब बाप बैठ देवी-देवता धर्म का सैपलिंग लगाते हैं, और कोई सैपलिंग नहीं लगाते। बहुत धर्म हैं, देवी-देवता धर्म प्रायः लोप है। धर्म भ्रष्ट कर्म भ्रष्ट होने के कारण नाम ही उल्टा-सुल्टा रख दिया है। जो देवता धर्म के हैं उन्हों को फिर उसी देवी-देवता धर्म में आना है। हर एक को अपने धर्म में ही जाना है। क्रिश्चियन धर्म
d का निकलकर फिर देवी-देवता धर्म में आ नहीं सकेंगे। मुक्ति तो हो न सके। हाँ, कोई देवी-देवता धर्म का कनवर्ट होकर क्रिश्चियन धर्म में चला गया होगा तो वह फिर लौटकर अपने देवी-देवता धर्म में आ जायेगा। उनको यह ज्ञान और योग बहुत अच्छा लगेगा, इससे सिद्ध होता है कि यह अपने धर्म का है। इसमें बड़ी विशालबुद्धि चाहिए समझने
e और समझाने की। धारणा करनी है, किताब पढ़कर नहीं सुनानी है। जैसे कोई गीता सुनाते हैं, मनुष्य बैठकर सुनते हैं। कोई तो गीता के श्लोक एकदम कण्ठ कर लेते हैं। बाकी तो इनका अर्थ हर एक अपना-अपना बैठ निकालते हैं। श्लोक सारे संस्कृत में हैं। यहाँ तो गायन है कि सागर को स्याही बना दो, सारा जंगल कलम बना दो तो भी ज्ञान का अन्त नहीं होता। गीता तो बहुत छोटी है। 18 अध्याय हैं। बस इतनी छोटी गीता गले में पहने हैं। बहुत पतले अक्षर होते हैं। गले में पहनने की कोई हॉबी (आदत) होती है। कितना छोटा लॉकेट बनता है। वास्तव में है तो सेकण्ड की बात। बाप का बना जैसेकि

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

विश्व का मालिक बना। बाबा हम आपका एक दिन का बच्चा हूँ, ऐसे भी लिखने शुरू करेंगे। एक दिन में निश्चय हुआ और फट से पत्र लिखेंगे। बच्चा बना तो विश्व का मालिक हुआ। यह भी कोई की बुद्धि में मुश्किल बैठता है। तुम विश्व का मालिक बनते हो ना। वहाँ और कोई खण्ड नहीं रहता है, नाम-निशान गुम हो जाता है। कोई को मालूम भी नहीं रहता कि यह खण्ड थे। अगर थे तो जरूर उनकी हिस्ट्री-जॉग्राफी चाहिए। वहाँ यह होते ही नहीं। इसलिए कहा जाता है बुम विश्व के मालिक बनने वाले हो। बाबा ने समझाया है – मैं तुम्हारा बाप भी हूँ, ज्ञान का सागर हूँ। यह तो बहुत ऊंच ते ऊंच ज्ञान है जिससे हम विश्व के मालिक बनते हैं। हमारा बाप सुप्रीम है, सत्य बाप, सत्य टीचर है। सत्य सुनाते हैं। बेहद की शिक्षा देते हैं। बेहद का गुरू है, सबकी सद्गति करते हैं। एक की महिमा की तो वह महिमा फिर दूसरे की हो नहीं सकती। फिर वह आप समान बनाये तब हो सकते। तो तुम भी पतित-पावन ठहरे। सत नाम लिखते हैं। पतित-पावनी गंगायें यह मातायें हैं। शिव शक्ति कहो शिव वंशी कहो। शिव वंशी ब्रह्माकुमार-कुमारियां। शिव वंशी तो सब हैं। बाकी ब्रह्मा द्वारा रचना रचते हैं तो संगम पर ही ब्रह्माकुमार-कुमारियां होते हैं। ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट करते हैं। पहले-पहले होते हैं ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ। कोई भी एतराज उठाते हैं तो उसको बोलो यह प्रजापिता है, इनमें प्रवेश करते हैं। बाप कहते हैं बहुत जन्मों के अन्त में मैं प्रवेश करता हूँ। दिखाते हैं विष्णु की नाभी से ब्रह्मा निकला। अच्छा विष्णु फिर किसकी नाभी से निकला? उसमें एरो का निशान दे सकते हो कि दोनों ओत-प्रोत हैं। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा। यह उनसे, वह उनसे पैदा हुआ है। इनको लगता है एक सेकेण्ड, उनको लगता है 5 हज़ार वर्ष। यह वन्डरफुल बातें हैं ना।

f तुम बैठ समझायेंगे। बाप कहते हैं लक्ष्मी-नारायण 84 जन्म लेते हैं फिर उनके ही बहुत जन्मों के अन्त में मैं प्रवेश कर यह बनाता हूँ। समझने की बात है ना। बैठो तो समझायें कि इनको ब्रह्मा क्यों कहते हैं। सारी दुनिया को दिखाने के लिए यह चित्र बनाये हैं। हम समझा सकते हैं, समझने वाले ही समझेंगे। नहीं समझने वाले के लिए कहेंगे यह हमारे कुल का नहीं है। बिचारा भल वहाँ आयेगा परन्तु प्रजा में। हमारे लिए तो सब बिचारे हैं ना—गरीब को बिचारा कहा जाता है। कितनी प्वाइंट्स बच्चों को धारण करनी हैं। भाषण

g करना होता है टॉपिक्स पर। यह टॉपिक कोई कम है क्या। प्रजापिता ब्रह्मा और सरस्वती, 4 भुजाएं दिखाते हैं। तो 2 भुजा बेटी की हो जाती हैं। युगल तो है नहीं। युगल तो

h वास्तव में बस विष्णु ही है। ब्रह्मा की बेटी है सरस्वती। शंकर भी युगल नहीं है, इस कारण शिव-शंकर कह देते हैं। अब शंकर क्या करते हैं? विनाश तो एटॉमिक बाम्ब्स से होता है। बाप कैसे बैठ बच्चों का मौत करायेंगे, यह तो पाप हो जाए। बाप तो और ही सबको शान्तिधाम वापिस ले जाते हैं, बिगर मेहनत। हिसाब-किताब चुक्तू कर सब घर जाते हैं क्योंकि कयामत का समय है। बाप आते ही हैं सर्विस पर। सबको सद्गति दे देते हैं। तुम भी पहले गति में फिर सद्गति में आयेंगे। यह बातें समझने की हैं। इन बातों को ज़रा भी कोई नहीं जानते। तुम देखते हो कोई तो बहुत माथा खपाते, बिल्कुल समझते नहीं। जो कुछ अच्छा समझने वाले होंगे, वह आकर समझेंगे। बोलो, एक-एक बात पर

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

समझना है तो टाइम दो। यहाँ तो सिर्फ हुक्म है, सबको बाप का परिचय दो। यह है ही कांटों का जंगल क्योंकि एक-दो को दुःख देते रहते हैं, इसको दुःखधाम कहा जाता है। सतयुग है सुखधाम। दुःखधाम से सुखधाम कैसे बनता है यह तुमको समझायें। लक्ष्मी-नारायण सुखधाम में थे फिर यह 84 जन्म ले दुःखधाम में आते हैं। यह ब्रह्मा का नाम भी कैसे रखा। बाप कहते हैं मैं इसमें प्रवेश कर बेहद का सन्यास कराता हूँ। फट से सन्यास करा देते हैं क्योंकि बाप को सर्विस करानी है, वही कराते हैं। इनके पिछाड़ी बहुत निकले जिसका नाम बैठ रखा। वह लोग फिर बिल्ली के पूंगरे बैठ दिखाते हैं। यह सब हैं दन्त कथायें। बिल्ली के पूंगरे हो कैसे सकते। बिल्ली थोड़ेही बैठ ज्ञान सुनेगी। बाबा युक्तियां बहुत बतलाते रहते हैं। कोई बात किसको समझ में न आये तो उनको बोलो—जब तक अल्फ को नहीं समझा है तो और कुछ समझ नहीं सकेंगे। एक बात निश्चय करो और लिखो, नहीं तो भूल जायेंगे। माया भुला देगी। मुख्य बात है बाप के परिचय की। हमारा बाप सुप्रीम बाप, सुप्रीम टीचर है जो सारे विश्व के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं, जिसका कोई को पता नहीं है। इस समझाने में टाइम चाहिए। जब तक बाप को नहीं समझा है तब तक प्रश्न उठते ही जायेंगे। अल्फ नहीं समझा है तो बे को कुछ नहीं समझेंगे। मुफ्त संशय उठाते रहेंगे—ऐसे क्यों, शास्त्र में तो ऐसे कहते हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. कर्म, अकर्म और विकर्म की गुह्य गति को बुद्धि में रख अब कोई विकर्म नहीं करने हैं, ज्ञान और योग की धारणा करके दूसरों को सुनाना है।

२. सत्य बाप की सत्य नॉलेज देकर मनुष्यों को देवता बनाने की सेवा करनी है। विकारों के दलदल से सबको निकालना है।

वरदान:- दातापन की भावना द्वारा इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति का अनुभव करने वाले तृप्त आत्मा भव

सदा एक लक्ष्य हो कि हमें दाता का बच्चा बन सर्व आत्माओं को देना है, दातापन की भावना रखने से सम्पन्न आत्मा हो जायेंगे और जो सम्पन्न होंगे वह सदा तृप्त होंगे। मैं देने वाले दाता का बच्चा हूँ—देना ही लेना है, यही भावना सदा निर्विघ्न, इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति का अनुभव कराती है। सदा एक लक्ष्य की तरफ ही नज़र रहे, वह लक्ष्य है बिन्दू और कोई भी बातों के विस्तार को देखते हुए नहीं देखो, सुनते हुए भी नहीं सुनो।

स्लोगन-

श्रेष्ठ कर्मों का खाता बढ़ाओ तो विकर्मों का खाता समाप्त हो जायेगा।

PDF-compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

22-5-98 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम रूप बसन्त हो, तुम्हें बाप की याद में भी रहना है तो ज्ञान-रत्नों का बीज भी बोना है, ज्ञान-योग से अपना शृंगार करना है"

प्रश्नः- तुम बच्चे कलियुगी गोवर्धन पर्वत को उठाने के लिए कौन-सी अंगुली देते हो?
उत्तरः- पवित्रता की। पवित्रता की प्रतिज्ञा करना ही जैसे अंगुली देना है। पवित्रता नहीं है तो भारत का हाल देखो क्या हो चुका है। पवित्रता है तो पीस-प्रासपर्टी सब है इसलिए श्रीमत पर आग और कपूस इकट्ठे रहते भी पवित्र बनना है (प्रवृति में रहते पवित्र बनना है)। घरबार का सन्यास नहीं करना है।

गीतः- आने वाले कल की तुम तकदीर हो... ओम् शान्ति।

माताओं ने, सभी सजनियों ने यह गीत सुना। बच्चे जानते हैं इस भारत की तकदीर में लकीर लगी हुई है। किस द्वारा लकीर लगी है? 5 विकारों रूपी रावण द्वारा। अब फिर तुम बच्चे भारत की तकदीर बना रहे हो। तुम हो शिव शक्ति मातायें। जब ज्ञान सागर आते हैं तो माताओं के ऊपर कलष रखते हैं। तुम बच्चे जानते हो हम भारत की तकदीर बनाने अर्थात् भारत को स्वर्ग बनाने वाले हैं। तुम बाप की सेना हो। बाप के घर की शोभा हो। माँ-बाप के पास बच्चा नहीं होता है तो घर जैसे सूना लगता है। अब यह दुनिया सूनी-सूनी लगती है। अब तुम बच्चे इनको स्वर्ग बनाने वाले हो। बाप कहते हैं मैं तुम माताओं का गुलाम हूँ क्योंकि आगे यह मातायें पति की गुलाम थीं। उनको कहा जाता है हिन्दू नारी का पति ही गुरु-ईश्वर सब कुछ है। वास्तव में इस समय की
a बात को फिर भक्ति मार्ग में ले गये हैं। परमपिता परमात्मा को ही इस समय कहा जाता है त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव। सब कुछ एक है। हिन्दू लोगों ने फिर पति के लिए कह दिया है। वास्तव में शिवबाबा है पतियों का पति। तुम तो सदा सौभाग्यशाली बनती हो और यह पति भी अमर है, अमरनाथ है ना। तुमको भी अमरनाथ, अमरपुरी का मालिक बनाते हैं। ऐसे पति को बहत याद करना है जो तुमको पढ़ाकर स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। ऐसे पति को भूलने से रोना आ जाता है। बाप कहते हैं – क्या तुम्हारा साजन मर गया है जो तुम रोती हो! तुमको तो अभी सदैव हर्षितमुख रहना है। देवताओं का मुखड़ा सदैव हर्षित रहता है। मनुष्य देखने से ही खुश होते हैं। देवताओं ने वह खुशी कहाँ से लाई? संगम पर बाप ने ऐसा हर्षितमुख, खुशमिज़ाज़ बनाया था। अभी पुरुषार्थ करना है तब ही तो अविनाशी बनेंगे। बाप कहते हैं – रोने की बात ही नहीं है। वाह ऐसा
b सलोना साजन मिला है जिससे स्वर्ग के महाराजा-महारानी बनते हो। तुम श्रीमत पर कदम-कदम चलते रहो। तुम जो वर्शन्स सुनते हो वह एक-एक वर्शन्स लाख रूपये का है। वह विद्वान लोग गीता, वेदान्त आदि सुनाते हैं तो कहते हैं यह एक-एक वर्शन्स लाख रूपये का है। परन्तु ऐसा तो है नहीं।

तुम हरेक रूप-बसन्त हो। आत्मा रूप है ना। बाप भी है रूप। फिर उनको ज्ञान-सागर

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कहा जाता है। ज्ञान की वर्षा कराने वाला है। स्थूल पानी की बात नहीं। इसको तो ज्ञान-रत्न कहा जाता है। हरेक को यह ज्ञान-रत्नों का बीज बोना है। मनुष्यों को समझाना चाहिए कि तुम आत्मा हो, यह तुम्हारा शरीर है। तुम कहते हो पाप-आत्मा, पुण्य-आत्मा। पाप-परमात्मा, पुण्य-परमात्मा नहीं कहते हो। इससे सिद्ध है – परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है। माया पाप-आत्मा बनाती है और बाप पुण्य-आत्मा बनाते हैं। पुण्य-आत्माओं की दुनिया को स्वर्ग और पाप-आत्माओं की दुनिया को नर्क कहा जाता है। सबको पावन बनाने वाला सद्गति-दाता एक ही बाप है। तो तुम बच्चे इस बेहद के घर के श्रृंगार हो। तुम्हें भारत का श्रृंगार करना है। वैकुण्ठ को वन्डर ऑफ दी वर्ल्ड कहा जाता है। मनुष्य 7 जिस्मानी वन्डर्स दिखाते हैं। वह तो हैं मनुष्य के बनाये हुए। वास्तव में वन्डर आफ दी वर्ल्ड है वैकुण्ठ, जहाँ सब आत्मायें सदा सुखी रहती हैं। गाते भी हैं फलाना स्वर्गवासी हुआ, परन्तु जब तक बाप न आये तब तक वहां कोई जा नहीं सकता। अब तुम बच्चे जानते हो – हम वैकुण्ठ में जाते हैं। वह जिस्मानी वन्डर्स आँखों से देखने के हैं। तुमको तो वैकुण्ठ में जाकर अथाह सुख भोगना है। वहां रोने की बात नहीं। बाप कहते हैं तुम परमपिता परमात्मा की सजनी क्यों रोती हो। शायद साजन को भूल जाती हो। साजन को भूल जाना माना उनसे विदाई लेना। सदैव उनको याद करते रहो तो रोने की बात नहीं। बाकी किसका सम्बन्धी आदि मरता है तो रोते हैं। अब तुम जीते जी छुट्टी लेते हो। सबसे छुट्टी ले, रो-रोकर फिर सदा के लिए हँस पड़ते हो क्योंकि वैकुण्ठ में जाते हो। यहाँ तो रोने की दरकार नहीं। बाबा ने कहा है अम्मा मरे तो भी हलुआ खाना, कौन सा हलुआ? यह ज्ञान का। अब तो सब मरे पड़े हैं। किसका चिन्तन करें, किसका करें – इतने सब मरेंगे। कोई क्रियाकर्म करने वाला भी नहीं रहेगा। जापान में बम से इतने मरे फिर किसने क्रियाकर्म किया। क्रियाकर्म करने वाले भी मर जायेंगे। यह तो भक्ति मार्ग की रसमरिवाज है। सतयुग में ऐसी बातें होती नहीं। वहाँ तो अथाह सुख है। नोहजीत राजा की कहानी भी वहाँ की है। तुमने जन्म-जन्मान्तर यह कथा सुनी है। अब बाप कहते हैं – जो कुछ सुना है वह भूल जाओ। अब सब बाप से सुनो। हियर नो ईविल, सी नो ईविल.. उन्होंने बन्दरों की शक्ल का एक खिलौना बनाया हुआ है। टॉक नो ईविल, सी नो ईविल.... क्योंकि इस समय मनुष्य बन्दर से भी बदतर हैं, जो सुनाओ सत-सत करते रहते हैं। बाबा कहते हैं – बच्चे, ग्लानी की बातें मत सुनो। मैं कल्प के संगमयुग पर आता हूँ। बाप को तो जरूर आना ही है तब तो नॉलेज दे। मनुष्य कहते ऋषि-मुनि आदि त्रिकालदर्शी थे। बाबा कहते – बिल्कुल नहीं। लक्ष्मी-नारायण भी त्रिकालदर्शी नहीं थे। त्रिकालदर्शी सिर्फ तुम ब्राह्मण बने हो। तुम्हारा यह 84वाँ अन्तिम जन्म है। ऐसे नहीं यह ज्ञान के संस्कार दूसरे जन्म में रहेंगे। नहीं, यह प्राय:लोप हो जाते हैं। वहाँ तो राजाई स्थापन हो जाती है तो राजयोग की दरकार नहीं। तो देखो, बाबा क्या कहते, मनुष्य क्या कहते हैं। रात और दिन का अन्तर है। मनुष्य कहते परमात्मा सर्वव्यापी है, बाप कहते हैं नहीं। मनुष्य कहते हैं कलियुग की आयु अभी 40 हजार वर्ष पड़ी है, बाप कहते हैं नहीं। कितने-गपोड़े सुनाए घोर

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अन्धियारा कर दिया है।

अब मीठा बाप कहते हैं — बहुत मीठा बनो। तुम ईश्वरीय दरबार में ईश्वर के बच्चे हो। तुम्हारा फ़र्ज है योग लगाना। गोवर्धन पर्वत पर जायेंगे तो वहाँ अंगुली दिखाई है। पर्वत की कितनी पूजा होती है। भारत जब गोल्डन एज बन जाता है तो उनकी पूजा नहीं होती। तो यह अंगुली है तुम्हारी निशानी। पवित्रता की प्रतिज्ञा करना जैसे अंगुली देना है — भारत को सैलवेज करने के लिए। पवित्रता है तो पीस प्रासपर्टी भी है। पवित्रता नहीं है तो भारत का हाल देखो। क्या है। मेहनत है ना। सन्यासी कहते आये — आग और कपूस इकट्ठे रह नहीं सकते। शास्त्रों में ऐसा है। परन्तु तुम सन्यासियों को कह सकते हो कि हम कैसे आग कपूस इकट्ठे रहते पवित्र रहते हैं। सन्यासियों को श्रीमत थोड़े-ही मिलती है। हम तो अब बाप की श्रीमत पर चलते हैं। उनको मिलती है शंकराचार्य की मत, यह है शिवाचार्य की मत। तुम शिवाचार्य के बच्चे हो। यह कोई नहीं जानते। कहते हैं परमात्मा ज्ञान का सागर है तो आचार्य हुआ ना। वह शंकराचार्य है। सन्यासी बहुत शास्त्र पढ़कर टाइटिल लेते हैं। कृष्ण आचार्य कभी नहीं कहा जाता है। शिव का पता ही नहीं। वह बाप को जानते ही नहीं हैं। सिवाए बाप के और किसी को ज्ञान का सागर नहीं कह सकते हैं। कोई सन्यासी मिले तो बोलो — तुम हो निवृति मार्ग वाले हठयोग सन्यासी। हम हैं प्रवृति मार्ग वाले राजयोगी। तुम राजयोग सिखला नहीं सकते हो। तुम हो रजोगुणी क्योंकि शंकराचार्य आते ही हैं द्वापर में। तुम्हारा है हठयोग कर्म सन्यास। वास्तव में कर्म सन्यास तो होता ही नहीं है। अब तुम बच्चों को डायरेक्शन ही कुछ और मिलता है। मनुष्य चाहते हैं शान्ति में रहें। बोलो— अच्छा, अपने को इन आरगन्स से डिटैच कर दो। परन्तु सिर्फ डिटैच करने से ही फ़ायदा नहीं होगा। डिटैच हो फिर मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। शान्ति तो तुम्हारे गले का हार है। आत्मा का स्वधर्म है शान्ति। हम आत्मायें मूलवतन में साइलेन्स में रहती हैं। फिर सूक्ष्मवतन में है मूवी। यह है टाकी स्थूल वतन। तुम बच्चों ने साक्षात्कार किया है। बाबा ने जास्ती देखा है। मम्मा ने तो कुछ भी नहीं देखा। कभी भी ध्यान में नहीं गई। ज्ञान में कितनी तीखी गई। यह ध्यान की आश भी नहीं रखनी चाहिए। मम्मा देखो बिगर ध्यान के कितना आगे नम्बर लेती है। पहले श्री लक्ष्मी फिर श्री नारायण, इनके लिए लिखा हुआ है अर्जुन को विनाश स्थापना का साक्षात्कार हुआ। इस रथ में रथी शिवबाबा बैठ नालेज सुनाते हैं। इस रथ को भी नालेज उनसे मिलती है। यह खुद भी गीता पढ़ते थे। बहुत कथा करते थे। अब वन्डर लगता है — शास्त्रों में क्या-क्या है। बाप कहते हैं — यह पढ़ा हुआ सब भूल जाओ, सुनो नहीं, देखते हुए नहीं देखो। बस, हम तो जाते हैं बाबा के घर स्वीट होम। जब तक गाईड तथा लिबरेटर न आये तब तक कोई जा नहीं सकता। पण्डा और मुक्ति दाता तो एक ही बाप है। दुःखों से मुक्त कर देते हैं। इसलिए उनको गति-सद्गति दाता कह जाता है। वह है मनुष्य सृष्टि का बीज रूप, सुप्रीम सोल। निराकारी दुनिया है आत्माओं के रहने का धाम। ऐसे नहीं कि ब्रह्म परमात्मा है। उसमें आत्मायें लीन हो जायेंगी। कितनी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

वन्डरफुल बातें हैं। तुम्हारा 84 जन्म का पार्ट अविनाशी है। यह कब मिट नहीं सकता। सृष्टि अनादि रची हुई है। सतयुग को नई सृष्टि कहा जाता है। अब है पुरानी सृष्टि। बाकी सृष्टि कोई विनाश नहीं होती। बाप आते ही हैं पतित सृष्टि को पावन बनाने। सृष्टि तो है ही है। 84 जन्म तो जरूर देवताओं के ही होंगे। फिर कम होते जाते हैं। फिर क्रिश्चियन आदि का भी हिसाब निकाल सकते हैं। वास्तव में भारतवासियों की जनसंख्या बहुत होनी चाहिए। परन्तु और और धर्मों में कनवर्ट होने कारण कम हो गये हैं। नाम ही हिन्दू रख दिया है। बाप कहते हैं मैं आता ही तब हूँ जब मुझे ब्रह्मा द्वारा देवी-देवता धर्म की स्थापना करनी है। शंकर द्वारा विनाश... फिर जो स्थापना करते हैं वही पालना करेंगे। गाँधी जी को भी जिन्होंने मदद की, मेहनत की आज बहुत सुखी हैं। वहाँ सुखी तो सब बनेंगे। बाकी पद में फ़र्क पड़ जाता है। जो बाप की याद में रहते हैं और वर्से को याद करते हैं वह सूर्यवंशी बनेंगे। कम याद करेंगे तो चन्द्रवंशी, नहीं तो फिर प्रजा, दास-दासियाँ आदि तो बहुत चाहिए ना। बाप ने समझाया है योगबल से ही कोई भी विश्व का मालिक बन सकता है। तुम हो योगबल की अहिंसक सेना। क्रिश्चियन को भी इतना बल मिल जाए तो विश्व के मालिक बन सकते है। परन्तु लॉ नहीं कहता है। वह बन्दर की कहानी है ना। कृष्ण के मुख में माखन आ जाता है -- विश्व की राजाई का। तो विश्व का राज्य योगबल से ही मिल सकता है। बाप कहते हैं मैं स्वर्ग रचता हूँ। तुम बच्चों का भी यही धन्धा है। बच्चे फिर बाप के बन स्थापना में मदद करते हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद, प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- सदा हर्षित, खुशमिज़ाज रहना है। कभी भी रोना नहीं है। जीते जी सबसे छुट्टी ले लेनी है। किसी का भी चिन्तन नहीं करना है।

२- अपने शान्ति स्वधर्म में स्थित रहना है। ज्ञान और योग से तीखा जाना है। ध्यान की आश नहीं रखनी है।

वरदान:- सदा अपने को सारथी और साक्षी समझ देह-भान से न्यारे रहने वाले योगयुक्त भव

योगयुक्त रहने की सरल विधि है - सदा अपने को सारथी और साक्षी समझकर चलना। इस रथ को चलाने वाली हम आत्मा सारथी हैं, यह स्मृति स्वत: इस रथ अथवा देह से वा किसी भी प्रकार के देह-भान से न्यारा बना देती है। देह-भान नहीं तो सहज योगयुक्त बन जाते और हर कर्म भी युक्तियुक्त होता है। स्वयं को सारथी समझने से सर्व कर्मेन्द्रियां अपने कन्ट्रोल में रहती हैं। वह किसी भी कर्मेन्द्रिय के वश नहीं हो सकते।

स्लोगन:-

विजयी आत्मा बनना है तो अटेन्शन और अभ्यास - इसे निज़ी संस्कार बना लो।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

8.1.95 प्रात:मुरली ओम शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम एक बाप के डायरेक्शन पर चलते चलो तो बाप तुम्हारा रेस्पॉन्सिबुल है, बाप का डायरेक्शन है चलते-फिरते मुझे याद करो"

प्रश्नः- किन बच्चों की अवस्था सदा अडोल रहती है ?

उत्तरः- जो निश्चयबुद्धि हैं, ईश्वरीय डायरेक्शन पर चलते हैं, ज्ञान का उल्टा नशा नहीं है, देह अभिमान नहीं है, उनकी अवस्था अडोल रहती है। उनसे कभी कोई उल्टा काम नहीं होगा।

गीतः- यह वक्त जा रहा है..... ओम् शान्ति।

मीठे-मीठे सिकीलधे रुहानी बच्चों ने नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार इस गीत का अर्थ समझा। नम्बरवार इसलिए कहते हैं क्योंकि कोई तो फर्स्ट ग्रेड में समझते हैं, कोई सेकण्ड ग्रेड में, कोई-कोई थर्ड ग्रेड में। समझ भी हर एक की अपनी-अपनी है। निश्चयबुद्धि भी हर एक की अपनी है। बाप तो समझाते रहते हैं, ऐसा ही हमेशा समझो कि शिवबाबा इन द्वारा डायरेक्शन देते हैं। तुम आधाकल्प आसुरी डायरेक्शन पर चलते आये हो, अब ऐसे निश्चय करो हम ईश्वरीय डायरेक्शन पर चलते हैं तो बेड़ा पार हो सकता है। अगर ईश्वरीय डायरेक्शन न समझ मनुष्य का डायरेक्शन समझा तो मूंझ पड़ेंगे। बाप कहते हैं–मेरे डायरेक्शन पर चलने से फिर मैं रेसपॉन्सिबुल हूँ ना। इन द्वारा जो कुछ होता है, उनकी एक्टिविटी का मैं ही रेसपॉन्सिबुल हूँ, उसको हम राइट करेंगे। तुम सिर्फ हमारे डायरेक्शन पर चलो। जो अच्छी रीति याद करेंगे वही डायरेक्शन पर चलेंगे। कदम-कदम ईश्वरीय डायरेक्शन समझ चलेंगे तो कभी घाटा नहीं होगा। निश्चय में ही विजय है। बहुत बच्चे इन बातों को समझते नहीं हैं। थोड़ा ज्ञान आने से देह अभिमान आ जाता है। योग बहुत ही कम है। ज्ञान तो है हिस्ट्री-जाग्राफी को जानना, यह तो सहज है। यहाँ भी मनुष्य कितनी साइंस आदि पढ़ते हैं। यह पढ़ाई तो इज़ी है, बाकी मेहनत है योग की।

कोई कहे बाबा हम योग में बहुत मस्त रहते हैं, बाबा मानेगा नहीं। बाबा हर एक की एक्ट को देखते हैं। बाप को याद करने वाला तो मोस्ट लवली होगा। याद नहीं करते इसलिए ही उल्टा-सुल्टा काम होता है। बहुत रात-दिन का फ़र्क है। अभी तुम इस सीढ़ी के चित्र पर भी अच्छी रीति समझा सकते हो। इस समय है कांटों का जंगल। यह बगीचा नहीं है। यह तो क्लीयर समझाना चाहिए कि भारत फूलों का बगीचा था। बगीचे में कभी जंगली जानवर रहते हैं क्या ? वहाँ तो देवी-देवता रहते हैं। बाप तो है ही हाइएस्ट अथॉरिटी और फिर वह प्रजापिता ब्रह्मा भी हाइएस्ट अथॉरिटी ठहरे। यह दादा है सबसे बड़ी अथॉरिटी। शिव और प्रजापिता ब्रह्मा। आत्मायें हैं शिव बाबा के बच्चे और फिर साकार में हम भाई-बहन सब हैं प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे। यह है सबका ग्रेट ग्रेट ग्रैन्ड फादर। ऐसे हाइएस्ट अथॉरिटी के लिए हमको मकान चाहिए। ऐसे तुम लिखो फिर देखो बुद्धि में कुछ आता है।

a शिवबाबा और प्रजापिता ब्रह्मा, आत्माओं का बाप और सब मनुष्य मात्र का बाप। यह पॉइंट बहुत अच्छी है समझाने की। परन्तु बच्चे पूरी रीति समझाते नहीं है। भूल जाते हैं, ज्ञान मगरूरी चढ़ जाती है। जैसे कि बापदादा पर भी जीत पा लेते हैं। यह दादा कहते हैं, मेरी भल न सुनो। हमेशा समझो

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

b शिवबाबा समझाते हैं उनकी मत पर चलो । डायरेक्ट ईश्वर मत देते हैं कि यह-यह करो, रेसपॉन्सिबुल हम हैं । ईश्वरीय बुद्धि पर चलो । यह ईश्वर थोड़ेही है, तुमको ईश्वर से पढ़ना है ना । हमेशा समझो यह डायरेक्शन ईश्वर देते हैं । यह लक्ष्मी-नारायण भी भारत के ही मनुष्य थे । यह भी सब मनुष्य हैं । परन्तु यह शिवालय के रहने वाले हैं इसलिए सब नमस्ते करते हैं । परन्तु बच्चे पूरा समझाते नहीं हैं, अपना नशा चढ़ जाता है । डिफेक्ट तो बहुतों में है ना । जब पूरा योग हो तब विकर्म विनाश हों । विश्व का मालिक बनना कोई मासी का घर थोड़ेही है । बाबा देखते हैं, माया एकदम नाक से पकड़कर गटर में गिरा देती है । बाप की याद में तो बड़ी खुशी में प्रफुल्लित रहना चाहिए । सामने एम ऑब्जेक्ट खड़ी है, हम यह लक्ष्मी-नारायण बन रहे हैं । भूल जाने से खुशी का पारा नहीं चढ़ता है । कहते हैं हमको नेष्ठा में बिठाओ, बाहर में हम याद नहीं कर सकते हैं । याद में नहीं रहते हैं इसलिए कभी-कभी बाबा भी प्रोगाम भेज देते हैं परन्तु याद में बैठते थोड़ेही हैं, बुद्धि इधर-उधर भटकती रहती है । बाबा अपना मिसाल बताते हैं—नारायण का कितना पक्का भक्त था, जहाँ-तहाँ साथ में नारायण का चित्र रहता था । फिर भी पूजा के समय बुद्धि इधर-उधर भागती थी । इसमें भी ऐसा होता है । बाप कहते हैं चलते-फिरते बाप को याद

c करो परन्तु कई कहते हैं बहन नेष्ठा करावे । नेष्ठा का तो कोई अर्थ ही नहीं है । बाबा हमेशा कहते हैं याद में रहो, कई बच्चे नेष्ठा में बैठते-बैठते ध्यान में चले जाते हैं । न ज्ञान, न याद रहती । या तो फिर झुटके खाने लग पड़ते हैं, बहुतों को आदत पड़ गई है । यह तो अल्पकाल की शान्ति हो गई । गोया बाकी सारा दिन अशान्ति रहती है । चलते-फिरते बाप को याद नहीं करेंगे तो पापों का बोझा कैसे उतरेगा ? आधाकल्प का बोझा है । इसमें ही बड़ी मेहनत है । अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो । भल बाबा को बहुत बच्चे लिख भेजते हैं—इतना समय याद में रहा परन्तु याद रहती नहीं है । चार्ट को समझते ही नहीं हैं । बाबा बेहद का बाप है । पतित पावन है तो खुशी में रहना चाहिए । ऐसे नहीं, हम तो शिवबाबा के हैं ना । ऐसे भी बहुत हैं । समझते हैं हम तो बाबा के हैं । लेकिन याद बिल्कुल करते नहीं । अगर याद करते होते तो फिर पहले नम्बरवन में जाना चाहिए । किसको समझाने की भी बड़ी अच्छी बुद्धि चाहिए । हम तो भारत की महिमा करते हैं । नई दुनिया में आदि सनातन देवी-देवताओं का राज्य था । अभी है पुरानी दुनिया, आइरन एज । वह सुखधाम, यह दुःखधाम । भारत गोल्डन एज था तो इन देवताओं का राज्य था । कहते हैं हम कैसे समझें कि इनका राज्य था ? यह नॉलेज बड़ी वन्डरफुल है । जिसकी तकदीर में जो है, जो जितना पुरूषार्थ करते हैं वह देखने में तो आता है । तुम एक्टिविटी से जानते हो, हैं तो कलियुगी भी मनुष्य, तो सतयुगी भी मनुष्य । फिर उन्हों के आगे माथा जाकर क्यों

d टेकते हो ? इन्हों को स्वर्ग का मालिक कहते हैं ना । कोई मरता है तो कहते हैं फलाना स्वर्गवासी हुआ, यह भी नहीं समझते । इस समय तो नर्कवासी सब हैं । जरूर पुनर्जन्म भी यहाँ ही लेंगे । बड़े-बड़े विद्वान, आचार्य भी कुछ नहीं जानते । तुम्हारे में भी जो बहुत तीखे हैं, वह समझ सकते हैं । बाबा हर एक की चलन से देखते रहते हैं । बाबा को कितना साधारण रीति से किस-किस से बात करनी पड़ती है । सम्भालना पड़ता है । बाप कितना क्लीयर कर समझाते हैं । समझते भी हैं तो बात बड़ी ठीक है । फिर भी क्यों बड़े-बड़े काँटे बन जाते हैं । एक-दो को दुःख देने से काँटे बन जाते हैं । आदत छोड़ते ही नहीं । अभी बागवान बाप फूल लगाते हैं । काँटों को फूल बनाते रहते हैं । उनका धन्धा ही यह है । जो खुद ही

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

काँटा होगा तो फूल कैसे बनायेगा ? प्रदर्शनी में भी बड़ी खबरदारी से दिशा को भेजना होता है ।

अच्छे गुणवान बच्चे वह जो कांटों को फूल बनाने की अच्छी सेवा करते हैं । किसी को भी कांटा नहीं लगाते हैं अर्थात् किसी को दुःख नहीं देते हैं । कभी भी आपस में लड़ते नहीं हैं । तुम बच्चे बहुत एक्यूरेट समझाते हो । इसमें किसी की इनसल्ट की तो बात ही नहीं । अभी शिव जयन्ती भी आती है । तुम प्रदर्शनी जास्ती करते रहो । छोटी-छोटी प्रदर्शनी पर भी समझा सकते हो । एक सेकेण्ड में स्वर्गवासी बनो अथवा पतित भ्रष्टाचारी से पावन श्रेष्ठाचारी बनो । एक सेकण्ड में जीवनमुक्ति प्राप्त करो । जीवनमुक्ति का भी अर्थ समझते नहीं हैं । तुम भी अभी समझते हो । बाप द्वारा सबको जीवनमुक्ति मिलती है । परन्तु ड्रामा को भी जानना है । सब धर्म स्वर्ग में नहीं आयेंगे । वह फिर अपने-अपने सेक्शन में चले जायेंगे । फिर अपने-अपने समय पर आकर स्थापना करेंगे । झाड़ में कितना क्लीयर है । एक सद्गुरु के सिवाए सद्गति दाता और कोई हो नहीं सकता । बाकी भक्ति सिखलाने वाले तो ढेर गुरु हैं । सद्गति के लिए मनुष्य गुरु हो नहीं सकता । तुम बच्चे समझा सकते हो कि यह रामायण की कथा आदि सारे भारत पर है । सिर्फ समझाने की अक्ल चाहिए । इसमें बुद्धि से काम लेना होता है । ड्रामा का कैसा वन्डरफुल खेल है । तुम्हारे में भी बहुत थोड़े हैं जो इस नशे में रहते हैं । अच्छा !

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग । रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1. एक बाप की याद से मोस्ट लवली बनना है । याद की प्रैक्टिस चलते फिरते कर्म में करनी है । कोई भी उल्टा-सुल्टा काम नहीं करना है ।

2. हर कार्य बाप के डायरेक्शन पर करना है । अपनी मगरूरी (देह अभिमान) नहीं दिखाना है । कांटों से फूल बनाने की सेवा करनी है । सबको सुख देना है । दुःख नहीं देना है ।

वरदान:- निश्चय के आधार पर विजयी रत्न बन सर्व के प्रति मास्टर सहारे दाता भव

निश्चय बुद्धि बच्चे विजयी होने के कारण सदा खुशी में नाचते हैं । वे अपने विजय का वर्णन नहीं करते लेकिन विजयी होने के कारण वे दूसरों की भी हिम्मत बढ़ाते हैं । किसी को नीचा दिखाने की कोशिश नहीं करते । लेकिन बाप समान मास्टर सहारे दाता बनते हैं अर्थात् नीचे से ऊंचा उठाते हैं । व्यर्थ से सदा दूर रहते हैं । व्यर्थ से किनारा होना ही विजयी बनना है । ऐसे विजयी बच्चे सर्व के लिए मास्टर सहारे दाता बन जाते हैं ।

स्लोगन:-

निःस्वार्थ और निर्विकल्प स्थिति से सेवा करने वाले ही सफलता मूर्त हैं ।

अव्यक्त बापदादा की पर्सनल मुलाकात:-

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

f आगे चल कर जितने सर्विस के साधनों द्वारा सर्विस को बढ़ायेंगे व मैदान में प्रसिद्ध होते जायेंगे, वैसे हर प्रकार के लोग आपकी हर बात को मन्त्रों द्वारा व अपनी सिद्धियों द्वारा चैक करने की चैलेन्ज करेंगे। संकल्पों को व कर्मों को भी करने के लिए आपके पीछे सी.आई.डी. (गुप्तचर) होंगे। ऐसे सहज नहीं मानेंगे। बिना प्रूफ और प्रमाण के बुद्धिमान लोग मानने के लिये तैयार नहीं होते। चैलेन्ज करने के साथ-साथ व सर्विस के स्थूल साधनों के साथ-साथ क्या ऐसी तैयारी कर रहे हो? माइण्ड-कन्ट्रोल का एग्जामिनेशन लेंगे। ऐसे नहीं, योग में बैठते समय चेक करेंगे, विशेष परिस्थिति के समय माइण्ड-कन्ट्रोल व स्थिति की चेकिंग करेंगे। माया के सी.आई.डी. ऑफिसर कम नहीं होते। तो ऐसी तैयारी करने की जिम्मेदारी व स्वरूप बन सैम्पल रूप में आगे आने की जिम्मेदारी इस ग्रुप की है। तब तो पाण्डवों की यादगार ऊंची दिखाई है। ऊंची स्थिति का प्रमाण—यादगार है। दूसरी बार, जब आओ तो इस बात के पास विद् ऑनर बनकर आओ, तब कहेंगे—पाण्डव सेना। अच्छा!

कितने समय से मेहनत कर रहे हो? जन्म से? जो जन्म से ही प्रयत्न में लाने वाली बात है, क्या वह मुश्किल लगती है? औरों को कहते हो अपना जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त करना क्या मुश्किल है? ऐसे ही ब्राह्मणों का पहला धर्म और कर्म जो है वह करना क्या ब्राह्मणों के लिये मुश्किल है? मरजीवा बन
g गए हो न, या कि मर कर जिन्दा हो जाते हो? मरना शूद्रपन से है, जीना ब्राह्मणपन में है। सहज ब्राह्मणों का अलौकिक जीवन है। ब्राह्मणों को कुछ मुश्किल होता है क्या? ब्राह्मण जीवन के जी-दान का आधार कौन-सा है? मुरली। पढ़ाई का भी आधार है मुरली। तो जी-दान का आधार अच्छी तरह से स्नेह से प्रयत्न में लाते हो? नियम प्रमाण नहीं, लेकिन जी-दान का आधार समझ स्नेह रूप में स्वीकार करते हो। जितना स्नेह जी-दान से होगा उतना ही स्नेह जीवनदाता से होगा। ऐसा स्नेही, अन्य आत्माओं को भी सदा स्नेही व निर्विघ्न बना सकेंगे। अब ऐसे आधार रूप समझ सबके आगे उदाहरण रूप बनो। यह भी जिम्मेदारी है। पाण्डवों के मुख से चलते-फिरते मुरली की रुह-रुहान व चर्चा कम सुनाई पड़ती है। गोपियों के मुख से मुरली की चर्चा अधिक सुनने में आती है। क्यों? आपस में ज्ञान की चर्चा करना, यह तो ब्राह्मणों का कर्तव्य है। जिस बात में जिसकी जो लगन होती है, उसके लिए समय की कमी कभी नहीं हो सकती।

तो इन दो बातों पर ध्यान रखो एक तो है प्योरिटी, दूसरा जी-दान का महत्व। सूक्ष्म साधन के लिए अलग समय की आवश्यकता नहीं है। जैसे दुनिया के लोगों ने गृहस्थ और आश्रम को अलग कर दिया है और आप लोग दोनों को मिला कर एक करते हो, वैसे स्थूल और सूक्ष्म साधनों को अलग करते हो, इसलिये प्रत्यक्षफल नहीं मिलता। दोनों ही साथ-साथ होने से प्रत्यक्षफल देखेंगे। वाणी के साथ-साथ मन्सा चाहिए और कर्म के साथ-साथ भी मन्सा चाहिए क्योंकि अभी लास्ट टाइम है ना? लास्ट टाइम में जो भी श्रेष्ठ अस्त्र-शस्त्र होते हैं, वे सब यूज़ किये जाते हैं। अगर यह सब पीछे करेंगे तो टाइम बीत जायेगा। जब अष्ट शक्तियों को साथ-साथ सर्विस में लायेंगे, तब ही अष्ट-देवता प्रसिद्ध होंगे अर्थात् स्थापना का स्वरूप स्पष्ट दिखाई देगा। ऐसे नहीं कि पहले स्थूल करके फिर पीछे सूक्ष्म करेंगे। नहीं, साथ-साथ के सिवाय सफलता नहीं। अच्छा। ओम् शान्ति।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

3-11-99 प्रातः मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम्हारी याद बहुत वन्डरफुल है क्योंकि तुम एक साथ ही बाप, टीचर और सतगुरु तीनों को याद करते हो"

प्रश्नः- बाबा अपने बच्चों को किस बात में ताकीद करते हैं?

a उत्तरः- बाबा कहते – मीठे बच्चे, कभी भी मुरली मिस नहीं करना। जिन्हें माया मगरूर बना देती है वह देह-अभिमान में आकर मुरली को भी डोन्ट-केयर करते हैं। कहेंगे हमारा तो शिवबाबा से ही कनेक्शन है। लेकिन बच्चों को मुरली कभी मिस नहीं करनी है। इस पर बहुत अटेन्शन रहे।

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों से रुहानी बाप पूछते हैं यहाँ तुम बैठे हो, किसकी याद में बैठे हो? (बाप, शिक्षक, सतगुरु की) सभी इन तीनों की याद में बैठे हो? हर एक अपने से पूछे यह सिर्फ यहाँ बैठे याद है या चलते-फिरते याद रहती है? क्योंकि यह है वन्डरफुल बात। और कोई आत्मा को कभी ऐसे नहीं कह जाता। भल यह लक्ष्मी-नारायण विश्व के मालिक हैं परन्तु उनकी आत्मा को कभी ऐसे नहीं कहेंगे कि यह बाप भी है, टीचर भी है, सतगुरु भी है। बल्कि सारी दुनिया में जो भी जीव आत्मायें है, कोई भी आत्मा को ऐसे नहीं कहेंगे। तुम बच्चे ही ऐसे याद करते हो। अन्दर में आता है यह बाबा, बाबा भी है, टीचर भी है, सतगुरु भी है। सो भी सुप्रीम। तीनों को याद करते हो या एक को? भल वह एक है परन्तु तीनों गुणों से याद करते हो। शिवबाबा हमारा बाप भी है, टीचर और सतगुरु भी है। यह एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी कहा जाता है। जब बैठे हो अथवा चलते फिरते हो तो यह याद रहना चाहिए। बाबा पूछते हैं ऐसे याद करते हो कि यह हमारा बाप, टीचर, सतगुरु भी है। ऐसा

b कोई भी देहधारी हो नहीं सकता। देहधारी नम्बरवन है कृष्ण, उनको बाप, टीचर, सतगुरु कह नहीं सकते। यह बिल्कुल वन्डरफुल बात है। तो सच बताना चाहिए तीनों रुप में याद करते हो? भोजन पर बैठते हो तो सिर्फ शिवबाबा को याद करते हो या तीनों बुद्धि में आते हैं? और तो कोई भी आत्मा को ऐसे नहीं कह सकते। यह है वन्डरफुल बात। विचित्र महिमा है बाप की। तो बाप को याद भी ऐसे करना है। तो बुद्धि एकदम उस तरफ चली जायेगी जो ऐसा वन्डरफुल है। बाप ही बैठ अपना परिचय देते हैं फिर सारे चक्र का भी नॉलेज देते हैं। ऐसे यह युग हैं, इतने-इतने वर्ष के हैं जो फिरते रहते हैं। यह ज्ञान भी वह रचयिता बाप ही देते हैं। तो उनको याद करने में बहुत मदद मिलेगी। बाप, टीचर, गुरु वह एक ही है। इतनी ऊंच आत्मा और कोई हो नहीं सकती। परन्तु माया ऐसे बाप की याद भी भुला देती है तो टीचर और गुरु को भी भूल जाते हैं। यह हर एक को अपने-अपने दिल से लगाना चाहिए।

c बाबा हमको ऐसा विश्व का मालिक बनायेंगे। बेहद के बाप का वर्सा जरूर बेहद का ही है। साथ-साथ यह महिमा भी बुद्धि में आये। चलते-फिरते तीनों ही याद आयें। इस एक आत्मा का ही तीनों सर्विस इकट्ठी है। इसलिए उनको सुप्रीम कहा जाता है।

अब कॉन्फ्रन्स आदि बुलाते हैं, कहते हैं विश्व में शान्ति कैसे हो? वह तो अब हो रही है आकर समझो। कौन कर रहे हैं? तुमको बाप का आक्यूपेशन सिद्ध कर बताना है। बाप के आक्यूपेशन और कृष्ण के आक्यूपेशन में बहुत फर्क है। और तो सबका नाम शरीर का है

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

लिया जाता है। उनकी आत्मा का नाम गाया जाता है। वह आत्मा बाप भी है, टीचर, गुरु भी है। आत्मा में नॉलेज है परन्तु वह दे कैसे? शरीर द्वारा ही देंगे ना। जब देते हैं तब तो महिमा गाई जाती है। अब शिव जयन्ती पर बच्चे कॉन्फ्रेन्स करते हैं। सब धर्म के नेताओं को बुलाते हैं। तुमको समझाना है ईश्वर सर्वव्यापी तो है नहीं। अगर सबमें ईश्वर है तो क्या हर एक आत्मा भगवान बाप भी है, टीचर भी है, गुरु भी है! बताओ सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त का नॉलेज है? यह तो कोई भी सुना न सके।

तुम बच्चों के अन्दर में आना चाहिए ऊंच ते ऊंच बाप की कितनी महिमा है। वह सारे विश्व को पावन बनाने वाला है। प्रकृति भी पावन बन जाती है। कान्फ्रेन्स में पहले-पहले तो तुम यह पूछेंगे कि गीता का भगवान कौन है? सतयुगी देवी-देवता धर्म की स्थापना करने वाला कौन? अगर कृष्ण के लिए कहेंगे तो दाप को गुम कर देंगे या तो फिर कह देते वह नाम-रूप से न्यारा है। जैसेकि है ही नहीं। तो बाप बिगर आरफन्स ठहरे ना। बेहद के बाप को ही नहीं जानते। एक-दो पर काम कटारी चलाकर कितना तंग करते हैं। एक-दो को दुःख देते हैं।

d तो यह सब बातें तुम्हारी बुद्धि में चलनी चाहिए। कॉन्ट्रास्ट करना है—यह लक्ष्मी-नारायण भगवान-भगवती हैं ना, इन्हों की भी वंशावली है ना। तो जरूर सब ऐसे गॉड-गॉडेज होने चाहिए। तो तुम सब धर्म वालों को बुलाते हो। जो अच्छी रीति पढ़े-लिखे हैं, बाप का परिचय दे सकते हैं, उनको ही बुलाना है। तुम लिख सकते हो जो आकर रचयिता और रचना के आदि, मध्य, अन्त का परिचय देवे उनके लिए हम आने-जाने, रहने आदि का सब प्रबन्ध करेंगे—अगर रचता और रचना का परिचय दिया तो। यह तो जानते हैं कोई भी यह ज्ञान दे नहीं सकते। भल कोई विलायत से आवे, रचयिता और रचना के आदि, मध्य, अन्त का परिचय दिया तो हम खर्चा दे देंगे। ऐसी एडवरटाइज़ और कोई कर न सके। तुम तो बहादुर हो ना। महावीर-महावीरनियाँ हो। तुम जानते हो इन्हों ने (लक्ष्मी-नारायण) विश्व की बादशाही कैसे ली? कौन-सी बहादुरी की? बुद्धि में यह सब बातें आनी चाहिए। कितना तुम ऊंच कार्य कर रहे हो। सारे विश्व को पावन बना रहे हो। तो बाप को याद करना है, वर्सा भी याद करना

e है। सिर्फ यह नहीं कि शिवबाबा याद है। परन्तु उनकी महिमा भी बतानी है। यह महिमा है ही निराकार की। परन्तु निराकार अपना परिचय कैसे दे? जरूर रचना के आदि, मध्य, अन्त का नॉलेज देने लिए मुख चाहिए ना। मुख की कितनी महिमा है। मनुष्य गऊमुख पर जाते हैं, कितना धक्का खाते हैं। क्या-क्या बातें बना दी हैं। तीर मारा गंगा निकल आई। गंगा को समझते हैं पतित-पावनी। अब पानी कैसे पतित से पावन बना सकता। पतित-पावन तो बाप ही है। तो बाप तुम बच्चों को कितना सिखलाते रहते हैं। बाप तो कहते हैं ऐसे ऐसे करो। कौन आकर बाप रचयिता और रचना का परिचय देंगे। साधू-सन्यासी आदि यह भी जानते हैं कि ऋषि-मुनि आदि सब कहते थे—नेती-नेती, हम नहीं जानते हैं, गोया नास्तिक थे। अब देखो कोई आस्तिक निकलता है? अभी तुम बच्चे नास्तिक से आस्तिक बन रहे हो। तुम बेहद के बाप को जानते हो जो तुमको इतना ऊंच बनाते हैं। पुकारते भी हैं—ओ गॉड फादर, लिबरेट करो। बाप समझाते हैं, इस समय रावण का सारे विश्व पर राज्य है। सब भ्रष्टाचारी हैं फिर श्रेष्ठाचारी भी होंगे ना। तुम बच्चों की बुद्धि में है — पहले-पहले पवित्र दुनिया थी। बाप अपवित्र दुनिया थोड़ेही बनायेंगे। बाप तो आकर पावन दुनिया स्थापन करते हैं, जिसको

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

शिवालय कहा जाता है। शिवबाबा शिवालय बनायेंगे ना। वह कैसे बनाते हैं सो भी तुम जानते हो। महाप्रलय, जलमई आदि तो होती नहीं। शास्त्रों में तो क्या-क्या लिखा है। बाकी 5 पाण्डव बचे जो हिमालय पहाड पर गल गये, फिर रिजल्ट का कोई को पता नहीं। यह सब बातें बाप बैठ समझाते हैं। यह भी तुम ही जानते हो—वह बाप, बाप भी है, टीचर भी है, सतगुरु भी है। वहाँ तो यह मन्दिर होते नहीं। यह देवतायें होकर गये हैं, जिनके यादगार मन्दिर यहाँ हैं। यह सब ड्रामा में नूँध है। सेकण्ड बाई सेकण्ड नई बात होती रहती है, चक्र फिरता रहता है। अब बाप बच्चों को डायरेक्शन तो बहुत अच्छे देते हैं। बहुत देह-अभिमानी बच्चे हैं जो समझते हैं हम तो सब कुछ जान गये हैं। मुरली भी नहीं पढते हैं। कदर ही नहीं है। बाबा नाकीद करते हैं, कोई-कोई समय मुरली बहुत अच्छी चलती है। मिस नहीं करना चाहिए। 10-15 दिन की मुरली जो मिस होती है वह बैठ पढ़नी चाहिए। यह भी बाप कहते हैं ऐसा-ऐसा चैलन्ज दो—यह रचता और रचना के आदि, मध्य, अन्त का नॉलेज कोई आकर दे तो हम उनको खर्चा आदि सब देंगे। ऐसी चैलेन्ज तो जो जानते हैं वह देंगे ना। टीचर खुद जानता है तब तो पूछते हैं ना। बिगर जाने पूछेंगे कैसे।

कोई-कोई बच्चे मुरली की भी डोन्टकेयर करते हैं। बस हमारा तो शिवबाबा से ही कनेक्शन है। परन्तु शिवबाबा जो सुनाते हैं वह भी सुनना है ना कि सिर्फ उनको याद करना है। बाप कैसे अच्छी-अच्छी मीठी-मीठी बातें सुनाते हैं। परन्तु माया बिल्कुल ही मगरूर कर देती है। कहावत है ना—चूहे को हल्दी की गांठ मिली, समझा मैं पंसारी हूँ.....! बहुत हैं जो मुरली पढ़ते ही नहीं। मुरली में तो नई-नई बातें निकलती है ना। तो यह सब बातें समझने की हैं। जब बाप को याद में बैठते हो तो यह भी याद करना है कि वह बाप टीचर भी है और सतगुरु भी है। नहीं तो पढ़ेंगे कहाँ से। बाप ने तो बच्चों को सब समझा दिया है। बच्चे ही बाप को शो करेंगे। सन शोज फादर। सन का फिर फादर शो करते हैं। आत्मा का शो करते हैं। फिर बच्चों का काम है शो करना। फिर बाप थोड़ेही छोड़ेंगे। कहेंगे आज फलानी जगह जाओ। आज यहाँ जाओ। इनको थोड़ेही कोई ऑर्डर करने वाले होंगे। तो यह निमन्त्रण आदि अखबारों में पड़ेंगे। इस समय सारी दुनिया है नास्तिक। बाप ही आकर आस्तिक बनाते हैं। इस समय सारी दुनिया है वर्थ नाट ए पेनी। अमेरिका के पास भल कितना भी धन दौलत है परन्तु वर्थ नाट ए पेनी है। यह तो सब खत्म हो जाना है ना। सारी दुनिया में तुम वर्थ पाउण्ड बन रहे हो। वहाँ कोई कंगाल होगा नहीं।

तुम बच्चों को सदैव ज्ञान का सिमरण कर हर्षित रहना चाहिए। उसके लिए ही गायन है—अतीन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो। यह संगम की ही बातें हैं। संगमयुग को कोई भी जानत नहीं। विहंग मार्ग की सर्विस करने से शायद महिमा निकले। गायन भी है अहो प्रभू तेरी लीला। यह कोई भी नहीं जानते थे कि भगवान बाप, टीचर, सतगुरु भी है। अब फादर तो बच्चों को सिखलाते रहते हैं। बच्चों को यह नशा स्थाई रहना चाहिए। अन्त तक नशा रहना चाहिए। अब तो नशा झट सोडावाटर हो जाता है। सोड़ा भी ऐसे होता है ना। थोड़ा टाइम रखने से जैसे खारापानी हो जाता है। ऐसा तो नहीं होना चाहिए। किसको ऐसा समझाओ जो वह भी बन्दर खाये। अच्छा-अच्छा कहते भी हैं परन्तु वह फिर टाइम निकाल समझें, जीवन बनावें तब बड़ा मुश्किल है। बाबा कोई मना नहीं करते हैं कि धन्धा आदि नहीं करो। पवित्र

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बनो और जो पढ़ाता हूँ वह याद करो। यह तो टीचर है ना। और यह है अनकॉमन पढ़ाई। कोई मनुष्य नही पढ़ा सकते। बाप ही भाग्यशाली रथ पर आकर पढ़ाते है। बाप ने समझाया है - यह तुम्हारा तख्त है जिस पर अकाल मूर्त आत्मा आकर बैठती है। उनको यह सारा पार्ट मिला हुआ है। अभी तुम समझते हो यह तो रीयल बात है। बाकी यह सब हैं आर्टीफिशल बातें। यह अच्छी रीति धारण कर गांठ बाँध लो। तो हाथ लगने से याद आयेगा। परन्तु गाँठ क्यों बाँधी है, वह भी भूल जाते हैं। तुमको तो यह पक्का याद करना है। बाप की याद के साथ नॉलेज भी चाहिए। मुक्ति भी है तो जीवनमुक्ति भी है। बहुत मीठे-मीठे बच्चे बनो। बाबा अन्दर में समझते हैं कल्प-कल्प वह बच्चे पढ़ते रहते हैं। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही वर्सा लेंगे। फिर भी पढ़ाने का टीचर पुरुषार्थ तो करायेंगे ना। तुम घड़ी-घड़ी भूल जाते हो इसलिए याद कराया जाता है। शिवबाबा को याद करो। वह बाप, टीचर, सतगुरु भी है। छोटे बच्चे ऐसे याद नहीं करेंगे। कृष्ण के लिए थोड़ेही कहेंगे वह बाप, टीचर, सतगुरु है। सतयुग का प्रिन्स श्रीकृष्ण वह फिर गुरु कैसे बनेगा। गुरु चाहिए दुर्गति में। गायन भी है - बाप आकर सबकी सद्गति करते हैं। कृष्ण को तो सांवरा ऐसा बना देते जैसे काला कोयला। बाप कहते हैं इस समय सब काम चिता पर चढ़ काले कोयले बन पड़े हैं तब सांवरा कहा जाता है। कितनी गुह्य बातें समझने की हैं। गीता तो सब पढ़ते हैं। भारतवासी ही हैं जो सभी शास्त्रों को मानते हैं। सबके चित्र रखते रहेंगे तो उनको क्या कहेंगे? व्यभिचारी भक्ति ठहरी ना। अव्यभिचारी भक्ति एक ही शिव की है। ज्ञान भी एक ही शिवबाबा से मिलता है। यह ज्ञान ही डिफरेन्ट है। इनको कहा जाता है स्प्रीचुअल नॉलेज। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुड मॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. विनाशी नशे को छोड़ अलौकिक नशा रहे कि हम अभी वर्थ नाट पेनी से वर्थ पाउण्ड बन रहे है। स्वयं भगवान् हमें पढ़ाते हैं, हमारी पढ़ाई अनकॉमन है।

२. आस्तिक बन बाप का शो करने वाली सर्विस करनी है। कभी भी मगरूर बन मुरली मिस नहीं करनी है।

वरदान:- सहज योग की साधना द्वारा साधनों पर विजय प्राप्त करने वाले प्रयोगी आत्मा भव

साधनों के होते, साधनों को प्रयोग में लाते योग की स्थिति डगमग न हो। योगी बन प्रयोग करना इसको कहते हैं न्यारा। होते हुए निमित्त मात्र, अनासक्त रूप से प्रयोग करो। अगर इच्छा होगी तो वह इच्छा अच्छा बनने नहीं देगी। मेहनत करने में ही समय बीत जायेगा। उस समय आप साधना में रहने का प्रयत्न करेंगे और साधन अपनी तरफ आकर्षित करेंगे। इसलिए प्रयोगी आत्मा बन सहजयोग की साधना द्वारा साधनों के ऊपर अर्थात् प्रकृति पर विजयी बनो।

स्लोगन:-

मेरे पन के अनेक रिश्तों को समाप्त करना ही फरिश्ता बनना है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

29-3-02 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - तुम ब्राह्मण हो यज्ञ रक्षक, यह यज्ञ ही तुम्हें मन-इच्छित फल देने वाला है"

प्रश्न:- किन दो बातों के आधार से 21 जन्मों के लिए सब दु:खों से छूट सकते हो?

उत्तर:- प्यार से यज्ञ की सेवा करो और बाप को याद करो तो 21 जन्म कभी दु:खी नहीं होंगे। दु:ख के आंसू नहीं बहायेंगे। तुम बच्चों को बाप की श्रीमत है - बच्चे बाप के सिवाए कोई भी मित्र सम्बन्धी, दोस्त आदि को याद न करो। बन्धनमुक्त बन प्यार से यज्ञ की सम्भाल करो तो मन-इच्छित फल मिलेगा।

गीत:- बचपन के दिन भुला न देना...

ओम् शान्ति। (मीठे-मीठे बच्चों ने गीत सुना और इसका अर्थ भी समझा कि यह हमारा ईश्वरीय जन्म है, इस जन्म में हम जिसे मम्मा बाबा कहते हैं उनकी मत पर चलने से ही हम विश्व के मालिक बनेंगे क्योंकि वह है नये विश्व का रचयिता। इस निश्चय से ही तुम यहाँ बैठे हो और विश्व के मालिकपने का वर्सा ले रहे हो।) यह जो पुरानी विश्व है वह तो विनाश होने वाली है, इनमें कोई सुख नहीं। सब विषय सागर में गोते खा रहे हैं। रावण की जंजीरों में दु:खी होकर सबको मरना है। (अब बाप बच्चों को वर्सा देने आये हैं। बच्चे जानते हैं हम जिनके बने हैं उससे वर्सा पाना है। वह हमको राजयोग सिखलाते हैं। जैसे बैरिस्टर कहेंगे हम बैरिस्टर बनायेंगे। बाप कहते हैं तुमको स्वर्ग का डबल सिरताज बनाऊंगा। श्री लक्ष्मी-नारायण अथवा उसकी डिनायस्टी का वर्सा देने आया हूँ।) उसके लिए तुम राजयोग सीख रहे हो। यह बातें भूलो मत। माया भुलायेगी, परमपिता परमात्मा से बेमुख करेगी। उनका धन्धा ही यह है। जब से उसका राज्य हुआ है, तुम बेमुख बनते आये हो। अब कोई काम के नहीं रहे। शक्ल भल मनुष्य की है परन्तु सीरत बिल्कुल बन्दर की है। अब तुम्हारी सूरत मनुष्य की, सीरत देवताओं की बना रहे हैं। इसलिए बाबा कहते हैं बचपन भूल न जाओ। इसमें तकलीफ कोई भी नहीं है। जो निर्बन्धन हैं उनके तो अहो भाग्य कहेंगे। (वह लौकिक मात-पिता तो हैं विकारों में डालने वाले और यह मात-पिता है स्वर्ग में ले जाने वाले।) ज्ञान स्नान करा रहे हैं। आराम से बैठे हैं। हाँ, शरीर से काम भी लेना है। बेहद के बाप से वर्सा मिल रहा है और कोई की याद नहीं सताती। अगर कोई बन्धन है तो फिर याद सताती है। कोई सम्बन्धी याद आया, मित्र-दोस्त याद आया, बाइसकोप याद आया.. तुमको तो बाप कहते हैं और कोई को याद नहीं करो। यज्ञ की सेवा करो और बाप को याद करो तो 21 जन्म तुम कभी दु:ख नहीं पायेंगे। दु:ख के आंसू नहीं बहेंगे। (ऐसे बेहद के माँ बाप को कभी छोड़ना नहीं चाहिए। यज्ञ की सेवा करनी चाहिए। तुम हो यज्ञ के रक्षक। यज्ञ की हर प्रकार की सेवा करनी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompresso

है। यह यज्ञ मन-इच्छित फल देता है अर्थात् जीवनमुक्ति, स्वर्ग की राजाई देता है। तो ऐसे यज्ञ की कितनी सम्भाल करनी चाहिए। कितनी शान्ति रहनी चाहिए। जो कोई भी आवे तो समझे यहाँ तो सुख-शान्ति लगी हुई है। यहाँ कुछ भी आवाज करना बिल्कुल पसन्द नहीं आता। रावण के राज्य से छूटकर आये हैं। अभी हम रामराज्य में जाते हैं। जो बन्धनमुक्त हैं उनके लिए तो अहो सौभाग्य। लखपति, करोड़पति से भी वह महान सौभाग्यशाली हैं जो बेहद के बाप से वर्सा लेते हैं, जिसका बंधन टूट गया उनका भी कहेंगे अहो सौभाग्य। जो बन्धनमुक्त बन बाबा से वर्सा लेते हैं, उनकी कितनी तकदीर खुल जाती है। बाहर तो रौरव नर्क है, जिसमें दुःख के बिगर कोई सुख नहीं है। अब बाप कहते हैं और सब चिंताओं को छोड़, यज्ञ की सर्विस प्यार से करो। धारणा करो। पहले-पहले अपना जीवन हीरे जैसा बनाना है। वह बनेगा श्रीमत पर। यहाँ तो सब बच्चे बन्धन से छूटे हुए हैं। अपना स्वभाव भी बहुत अच्छा रखना है, सतोप्रधान बनना है। नहीं तो सतोप्रधान राज्य में ऊंच पद पा नहीं सकेंगे। यज्ञ से जो कुछ मिले वह स्वीकार करना है। बाबा अनुभवी है। भल कितना भी बड़ा जौहरी था, कहाँ आश्रम में जायेंगे तो आश्रम के नियमों पर पूरा चलेंगे। वहाँ ऐसे नहीं मांगा जाता कि हमको फलानी चीज़ दो। बड़ा रॉयल्टी से जो भोजन सबको मिलता है वही खाया जाता है। इस ईश्वरीय आश्रम में बड़ी शान्ति चाहिए।

जो पिया के साथ है.... सो भी दोनों बापदादा बैठे हैं। सम्मुख बैठ सुनते हैं। अगर अभी सर्विस लायक न बने तो फिर कल्प-कल्पान्तर पद भ्रष्ट हो जायेंगे। अन्धों की लाठी बन, यह महामन्त्र सबको देना है। यही संजीवनी बूटी है। कोई-कोई को माया बिल्कुल ही बेहोश कर देती है। इस युद्ध के मैदान में तो कहा जाता है बाप और वर्से को याद करो। यह है संजीवनी बूटी। हनूमान तो तुम ही हो, नम्बरवार महावीर बनते हो। बहुत हैं जो बेहोश हो पड़े हैं। उनको होश में लाना है तो कुछ जीवन बना लें। देह में भी मोह नहीं रखना है। मोह रखना चाहिए बाप और अविनाशी ज्ञान रत्नों में। जितनी धारणा होगी उतना औरों को भी करायेंगे। बाप कहते हैं हमको ज्ञानी तू आत्मा प्रिय लगते हैं। प्रदर्शनी की सर्विस के लिए बाबा ज्ञानी बच्चों को ही ढूँढते हैं। समझाना बड़ा सहज है। बड़े बड़े आदमी सुनकर खुश होते हैं। समझते हैं जीवन इस संस्था द्वारा बनती है। परन्तु यह भी कोटों में कोई समझते हैं। यह है बेहद का सन्यास। जो कुछ इस पुरानी दुनिया में देखते हैं, यह सब खत्म हो जायेगा। अभी तो बाप से वर्सा लेना है, वापिस जाना है। फिर से हम सूर्यवंशी कुल में आकर राज्य करेंगे। राज्य किया था फिर माया ने छीन लिया। कितनी सहज बात है। मीठे-मीठे बाप को याद करना है। दिल बाप के पास लगी हुई हो। बाकी कर्मेन्द्रियों से कर्म तो करना है। श्रीमत पर चलना है। लाडले मीठे-मीठे बच्चे बाप कहते हैं मुख से सदैव ज्ञान रत्न निकालो, पत्थर नहीं निकालो। कोई भी संसार समाचार की बातें नहीं निकालो। नहीं तो मुख कडुवा हो जायेगा। एक दो को रत्न देते रहो। तुम्हारे पास रत्नों की झोली

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

है, विनाशी धन दान करते हैं। भारत को महादानी कहा जाता है। इस समय बाप बच्चों को दान करते हैं। बच्चे बाप को दान करते हैं। बाबा शरीर सहित यह सब कुछ आपका है। बाप फिर कहते हैं यह विश्व की बादशाही तुम्हारी है। इस पुरानी दुनिया का सब कुछ खत्म होना है, क्यों न हम बाबा से सौदा कर लें। बाबा यह सब कुछ आपका है, भविष्य में हमको राजाई देना। हम यही चाहते हैं कोई और चीज़ की हमको दरकार नहीं। ऐसे कोई न समझे कि हम तन-मन-धन देते हैं तो हम कोई भूख मरेंगे। नहीं, यह शिवबाबा का भण्डारा है, जिससे सबका शरीर निर्वाह होता रहता है और होता
b रहेगा। द्रोपदी का मिसाला अब प्रैक्टिकल में पार्ट चल रहा है। शिवबाबा का भण्डारा सदैव भरपूर है। यह भी एक परीक्षा थी, जिनको डर लगा वह सब चले गये। बाकी साथ देने वाले चले आये। भूख मरने की बात नहीं। अब तो बच्चों के लिए महल बन रहे हैं। अच्छा रहना है तो मेहनत कर अपना ऊंच पद बनाना है। यह कल्प-कल्प की बाजी है। इस बारी इम्तहान में फेल हुए तो कल्प-कल्पान्तर होते रहेंगे। पास भी ऐसा होना है जो मम्मा बाबा के तख्त पर बैठें। 21 जन्म तख्त पिछाड़ी तख्त पर बैठेंगे।

एक बाप के सिवाए कोई को भी याद नहीं करना है। मुरली लिखना बहुत अच्छी सर्विस है, सभी खुश होंगे, आशीर्वाद करेंगे। बाबा अक्षर बहुत अच्छे हैं। नहीं तो लिखते
c हैं अक्षर अच्छे नहीं। बाबा हमको वाणी कट करके भेज देते हैं। हमारे रत्नों की चोरी हो जाती है। बाबा हम अधिकारी हैं - जो आपके मुख से रत्न निकलते हैं वह सब हमारे पास आने चाहिए। यह कहेंगे भी वही जो अनन्य होंगे। मुरली की सेवा बहुत अच्छी रीति करनी चाहिए। सभी भाषायें सीखनी चाहिए। मराठी, गुजराती आदि.. जैसे बाबा रहमदिल है बच्चों को भी रहमदिल बनना है। पुरुषार्थ कर जीवन बनाने के लिए मददगार बनना है। बाकी उस दुनिया का जीवन तो बिल्कुल ही फीका है। एक दो को काटते रहते हैं। कितने पतित हैं। अब क्यों न हम बाबा की श्रीमत पर चलें। बाबा मैं आपका हूँ, आप जिस सर्विस में चाहें लगा दें। फिर रेसपान्सिबुल बाबा होगा। एशलम में आने वाले को बाबा सब बन्धनों से मुक्त कर देगा। बाकी इस दुनिया में तो गन्द लगा पड़ा है। ईश्वर सर्वव्यापी कह बेमुख कर देते हैं। अगर सर्वव्यापी है, नजदीक बैठे हैं फिर हे प्रभू कह पुकारने की क्या दरकार है। समझाओ तो गुर्र गुर्र करते हैं। अरे भगवान खुद कहते हैं मैंने तो कभी ऐसे कहा नहीं कि मैं सर्वव्यापी हूं। यह तो भक्ति मार्ग वालों ने लिख दिया है। हम भी खुद पढ़ते थे। परन्तु उस समय ऐसे नहीं समझते थे कि यह कोई ग्लानी है। भक्तों को कुछ भी मालूम नहीं पड़ता है, जो कुछ कहो वह सत्य मान लेते हैं। बाबा कितना अच्छी रीति समझाते हैं फिर बाहर जाकर हंगामा करते हैं। तो फिर वहाँ चलकर दास दासियां नौकर चाकर बनेंगे। बाबा
d ने कह दिया है पिछाड़ी का जब समय होगा उस समय तुमको पूरा पता पड़ेगा। साक्षात्कार करते रहेंगे और बताते रहेंगे कि फलाने-फलाने यह बनेंगे। फिर उस समय

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सिर नीचे करना पड़ेगा, फिर वह खुशी नहीं रहेगी, जो राज़ाई वालो को रहेगी। दिल अन्दर जैसे काटा लगता रहेगा यह क्या हुआ! परन्तु टू लेट, बहुत पछतायेंगे। होगा तो कुछ भी नहीं। बाप कहेंगे - तुमको इतना समझाते थे फिर भी तुम यह करते थे, अब अपना हाल देखो। कल्प-कल्पान्तर पछतायेंगे। सजनियों को नम्बरवार ले जायेंगे ना। नम्बरवन से लास्ट तक समझेंगे। पढ़ाई अच्छी नहीं पढ़ी है तो लास्ट में बैठे हैं। इम्तहान के दिनों में मालूम पड़ जाता है कि हम कितनी मार्क्स से पास होंगे। तुम समझेंगे कि हम क्या पद पायेंगे। सर्विस नहीं करेंगे तो धूल मिलेगा। पढ़ाई और सर्विस पर ध्यान देना है। मीठे ते मीठे बाबा के बच्चे हो तो बहुत मीठा बनना है। शिवबाबा कितना मीठा, कितना प्यारा है। हमको फिर से ऐसा बनाते हैं। कितनी बड़ी युनिवर्सिटी है। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- देह सहित सबसे मोह निकाल, बाप और अविनाशी ज्ञान रत्नों से मोह रखना है। ज्ञान रत्न दान करते रहना हैं।

२- पढ़ाई और सर्विस पर पूरा ध्यान देना है, बाप समान मीठा बनना है। संसार समाचार न सुनना है, न दूसरों को सुनाकर मुख कड़ुवा करना है।

वरदान:- अमृतवेले तीन बिन्दियों का तिलक लगाने वाले क्यूं, क्या की हलचल से मुक्त अचल-अडोल भव

बापदादा सदा कहते हैं कि रोज़ अमृतवेले तीन बिन्दियों का तिलक लगाओ। आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और जो हो गया, जो हो रहा है नथिंगन्यु, तो फुलस्टॉप भी बिन्दी। यह तीन बिन्दी का तिलक लगाना अर्थात् स्मृति में रहना। फिर सारा दिन अचल-अडोल रहेंगे। क्यूं, क्या की हलचल समाप्त हो जायेगी। जिस समय कोई बात होती है उसी समय फुलस्टॉप लगाओ। नथिंगन्यु, होना था, हो रहा है... साक्षी बन देखो और आगे बढ़ते चलो।

स्लोगन:-

परिवर्तन शक्ति द्वारा व्यर्थ संकल्पों के बहाव का फोर्स समाप्त कर दो तो समर्थ बन जायेंगे।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

1.7.94 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – बाबा आया है तुम्हें ज्ञान रत्न देने, मुरली सुनाने, इसलिए तुम्हें कभी भी मुरली मिस नहीं करनी है, मुरली से प्यार नहीं तो बाप से प्यार नहीं"

प्रश्नः- सबसे अच्छा कैरेक्टर कौन-सा है, जो तुम इस नॉलेज से धारण करते हो ?

उत्तरः- वाइसलेस बनना यह सबसे अच्छा कैरेक्टर है । तुम्हें नॉलेज मिलती है कि यह सारी दुनिया विशश है, विशश माना ही कैरेक्टरलेस । बाप आया है वाइसलेस वर्ल्ड स्थापन करने । वाइसलेस देवतायें कैरेक्टर वाले हैं । कैरेक्टर सुधरते हैं बाप की याद से ।

ओम् शान्ति । बच्चे तुम्हें पढ़ाई कभी मिस नहीं करना है । अगर पढ़ाई मिस की तो पद से भी मिस हो जायेंगे । मीठे-मीठे रूहानी बच्चे कहाँ बैठे हैं ? गॉडली स्चीचुअल युनिवर्सिटी में । बच्चों को यह भी पता है कि हर 5 हज़ार वर्ष बाद हम इस युनिवर्सिटी में दाखिल होते हैं । यह भी तुम बच्चे जानते हो – बाप, बा॰ भी है, टीचर भी है, गुरु भी है । वैसे गुरु की मूर्ति अलग, बाप की अलग, टीचर की अलग होती है । यह मूर्ति एक ही है । परन्तु हैं तीनों ही अर्थात् बाप भी बनते हैं, टीचर भी बनते हैं, गुरु भी बनते
a हैं । मुनष्य की लाइफ में यह 3 मुख्य हैं । बाप, टीचर, गुरु वही है । तीनों पार्ट खुद बजाते हैं । एक-एक बात समझने से तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए और ऐसी त्रिमूर्ति युनिवर्सिटी में बहुतों को ले आकर दाखिल करना चाहिए । जिस-जिस युनिवर्सिटी में पढ़ाई अच्छी होती है तो वहाँ पढ़ने वाले दूसरों को कहते हैं – इस युनिवर्सिटी में पढ़ो, यहाँ नॉलेज अच्छी मिलती है और कैरेक्टर्स भी सुधरते हैं । तुम बच्चों को भी दूसरों को ले आना है । मातायें माताओं को, पुरूष पुरूषों का समझायें । देखो यह बाप भी है, टीचर भी है, गुरु भी है । ऐसे समझाते हैं वा नहीं, वह तो हर एक अपनी दिल से पूछे । कभी अपने मित्र सम्बन्धियों, सखियों को समझाते हैं कि यह सुप्रीम बाप भी है, सुप्रीम टीचर भी है, सुप्रीम गुरु भी है ? बाप सुप्रीम देवी-देवता बनाने वाला है, बाप आप समान बाप नहीं बनाते । बाकी उनकी जो महिमा है, उसमें आपसमान बनाते हैं । बाप का काम है परवरिश करना और प्यार करना । ऐसे बाप को जरूर याद करना है । उनकी भेंट और कोई से हो न सके । भल कहते हैं गुरु से शान्ति मिलती है । परन्तु यह तो विश्व का मालिक बनाते हैं । ऐसे भी कोई नहीं कहेंगे कि हम सब आत्माओं का बाप हूँ । यह किसको पता नहीं है कि सभी आत्माओं का बाप कौन हो सकता है । एक बेहद का बाप, जिसे हिन्दू, मुसलमान, क्रिश्चियन आदि सब गॉड फादर जरूर कहते है । बुद्धि जरूर निराकार तरफ जाती है । यह किसने कहा ?
b आत्मा ने कहा गॉड फादर । तो जरूर मिलना चाहिए । फादर सिर्फ कहे और कभी मिले ही नहीं तो वह फादर कैसे हो सकता ? सारी दुनिया के बच्चे की जो आश है वह पूर्ण करते हैं । सबकी कामना रहती है कि हम शान्तिधाम जायें । आत्मा को घर याद पड़ता है । आत्मा रावण राज्य में थक गई है । अंग्रेजी में भी कहते हैं ओ गॉड फादर, लिबरेट करो । तमोप्रधान बनते-बनते पार्ट बजाते-बजाते शान्तिधाम चले जायेंगे । फिर पहले सुखधाम में आते हैं । ऐसे नहीं, पहले-पहले आकर विशश बनते हैं । नहीं । बाप

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

समझाते हैं यह है वेश्यालय, रावण राज्य । इसे रौरव नर्क कहा जाता है ।

तुमने गरूड़ पुराण देखा नहीं है । बिगर शास्त्र पढ़े, बिगर देखे भी तुम समझ सकते हो । भारत में
c. वा इस दुनिया में कितने शास्त्र, कितनी पढ़ाई की पुस्तकें हैं । शास्त्र आदि सब खत्म हो जायेंगे । बाप तुमको यह जो सौगात देते हैं, वह कभी जलने वाली नहीं है । यह है धारण करने की । जो काम की चीज़ नहीं होती उसको जलाया जाता है । ज्ञान कोई शास्त्र नहीं जो जलाया जाए । तुमको नॉलेज मिलती है, जिससे तुम 21 जन्म पद पाते हो । ऐसे नहीं कि इनके शास्त्र हैं जो जला देंगे । नहीं, यह ज्ञान आपेही प्रायः लोप हो जाता है । कोई पढ़ने की किताब आदि नहीं है । ज्ञान-विज्ञान भवन नाम भी है । परन्तु उनको पता नहीं कि यह नाम क्यों पड़ा है, इसका अर्थ क्या है ? ज्ञान-विज्ञान की महिमा कितनी भारी है ! ज्ञान अर्थात् सृष्टि चक्र की नॉलेज जो अभी तुम धारण करते हो । विज्ञान माना शान्तिधाम । ज्ञान से भी तुम परे जाते हो । ज्ञान में पढ़ाई के आधार से फिर तुम राज्य करते हो । तुम समझते हो हम आत्माओं को बाप आकर पढ़ाते हैं । नहीं तो भगवानुवाच गुम हो जाए । भगवान् कोई शास्त्र थोड़ेही पढ़कर आते हैं । भगवान् में तो ज्ञान-विज्ञान दोनों हैं । जो जैसा होता है, वैसा बनाते हैं । यह हैं बहुत सूक्ष्म बातें । ज्ञान से विज्ञान बहुत सूक्ष्म है । ज्ञान से भी परे जाना है । ज्ञान स्थूल है, हम पढ़ाते हैं, आवाज़ होता है ना । विज्ञान सूक्ष्म है इसमें आवाज़ से परे शान्ति में जाना होता है । जिस शान्ति के लिए ही भटकते हैं । सन्यासियों के पास जाते हैं । परन्तु जो चीज़ बाप के पास है वह दूसरे कोई से मिल नहीं सकती है । हठयोग करते, खड्डे में बैठ जाते परन्तु इसमें शान्ति मिल न सके । इसमें तकलीफ़ की कोई बात नहीं । पढ़ाई भी बहुत सहज है । 7 रोज़ का कोर्स उठाया जाता है । 7 रोज़ का कोर्स करके फिर भल कहाँ भी बाहर चला जाए, ऐसे और कोई जिस्मानी कालेज में कर न सके । तुम्हारे लिए कोर्स ही यह 7 रोज़ का है । सब समझाया ७ ना है । परन्तु 7 रोज़ कोई दे न सके । बुद्धियोग कहाँ न कहाँ चला जाता है । तुम तो भट्ठी में पड़े, कोई को शक्ल नही देखते थे । कोई से बात नहीं करते थे । बाहर भी नहीं निकलते थे । तपस्या के लिए सागर के कण्ठे पर जाकर बैठते थे याद में । उस समय यह चक्र नहीं समझा था । यह पढ़ाई नहीं समझते थे । पहले-पहले तो बाबा से योग चाहिए । बाप का परिचय चाहिए । फिर पीछे टीचर चाहिए । पहले बाप के साथ योग सीखना पड़े । क्योंकि यह बाप तो है अशरीरी, दूसरा तो कोई मानते ही नहीं । कहते हैं गॉड फादर ओमनी प्रेजन्ट है । बस सर्वव्यापी का ज्ञान ही चला आता है । अभी तुम्हारी बुद्धि में वह बात नहीं है । तुम तो स्टूडेन्ट हो । बाप कहते हैं अपना धन्धा आदि भी भल करो परन्तु क्लास जरूर पढ़ो । गृहस्थ व्यवहार में भल रहो । अगर कहते स्कूल में नहीं जाना है तो फिर बाप भी क्या करे । अरे, भगवान् पढ़ाते हैं, भगवान् भगवती बनाने ! भगवानुवाच -- मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता
d हूँ । तो क्या भगवान् से राजयोग नहीं सीखेंगे ? ऐसे कौन ठहर सकेंगे ! इसलिए ही तुम्हारा भागना हुआ । विष से बचने के लिए भागे । तुम आकर भट्ठी में पड़े, जो कोई देख न सके, मिल न सके । कोई को देखते ही नहीं थे । तो फिर दिल किससे लगायें । यह बच्चों को निश्चय भी है कि भगवान् पढ़ाते हैं । फिर भी बहाना करते हैं, बीमारी है, यह काम है । बाप तो बहुत शिफ्ट दे सकते हैं । आजकल स्कूल

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

e में शिफ्ट बहुत देते हैं। यहाँ कोई जास्ती पढ़ाई तो है नहीं। सिर्फ अल्फ और बे को समझने लिए बुद्धि
f अच्छी चाहिए। अल्फ और बे — यह याद करो, सभी को बताओ। त्रिमूर्ति तो बहुत बनाते हैं परन्तु ऊपर में शिवबाबा दिखलाते नहीं। यह थोड़ेही समझते हैं गीता का भगवान् शिव है, जिस द्वारा यह नालेज लेकर विष्णु बनते हैं। राजयोग है ना। अभी यह है बहुत जन्मों के अन्त का जन्म, कितनी सहज समझानी है। किताब आदि तो कुछ भी हाथ में नहीं है। सिर्फ एक बैज हो, उसमें भी सिर्फ त्रिमूर्ति का चित्र हो। जिस पर समझाना है कि बाप कैसे ब्रह्मा द्वारा पढ़ाई पढ़ाकर विष्णु समान बनाते हैं।

कई समझते हैं हम राधे जैसा बनें। कलष तो माताओं को मिलता है। गोया राधे के बहुत जन्मों के अन्त में उनको कलष मिलता है। यह राज़ भी बाप ही समझा सकते हैं। और कोई मनुष्य मात्र जानते नहीं। तुम्हारे पास सेन्टर पर कितने आते हैं। कोई तो एक रोज़ आते फिर 4 रोज नहीं। तो पूछना चाहिए इतने रोज़ तुम क्या करते थे? बाप को याद करते थे? स्वदर्शन चक्र फिराते थे? जो बहुत देरी से आते हैं उनसे लिखकर भी पूछना चाहिए। कई बदली होकर जाते है फिर भी कोई सेन्टर का तो जरूर है, उनको मन्त्र मिला हुआ है — बाप को याद करना है और चक्र को फिराना है। बाप ने तो बहुत सहज बात बताई है। अक्षर तो दो हैं — मनमनाभव, मुझे याद करो और वर्से को याद करो। इसमें सारा चक्र आ जाता है। जब कोई शरीर छोड़ते हैं तो कहते हैं फलाना स्वर्ग गया। परन्तु स्वर्ग क्या है, किसको पता नहीं है। तुम अभी समझते हो वहाँ तो राजाई है। ऊंच से लेकर नींच तक, साहूकार से लेकर गरीब तक सब सुखी होते हैं। यहाँ है दुःखी दुनिया। वह है सुखी दुनिया। बाप समझाते तो बहुत अच्छा हैं। भल कोई दुकानदार हो वा क्या भी हो, पढ़ाई के लिए बहाना देना अच्छा नहीं लगता है। नहीं आते हैं तो उनसे पूछना है, तुम कितना बाप को याद करते हो? स्वदर्शन चक्र फिराते हो? खाओ पियो, घूमो फिरो — उसकी कोई मना नहीं है। इसके लिए भी टाइम निकालो। औरों का भी कल्याण करना है। समझो कोई का कपड़े साफ करने का काम है, बहुत लोग आते हैं। भल मुसलमान है वा पारसी है, हिन्दू है, बोलो तुम स्थूल कपड़े धुलाते हो परन्तु यह जो तुम्हारा शरीर है, यह तो पुराना मैला वस्त्र है, आत्मा भी तमोप्रधान हैं, उनको सतोप्रधान, स्वच्छ बनाना है। यह सारी दुनिया तमोप्रधान, पतित कलियुगी पुरानी है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने के लिए लक्ष्य है ना। अब करो न करो, समझो न समझो, तुम्हारी मर्जी। तुम आत्मा हो ना। आत्मा जरूर पवित्र होनी चाहिए। अभी तो तुम्हारी आत्मा इमप्योर हो गई है। आत्मा और शरीर दोनों मैले हैं। उनको साफ करने के लिए तुम बाप को याद करो तो गैरन्टी है तुम्हारी सोल एकदम 100% पवित्र सोना बन जायेगी। फिर जेवर भी अच्छा बनेगा। मानो न मानो, तुम्हारी मर्जी। यह भी कितनी सर्विस हुई। डॉक्टर्स पास जाओ, कालेजों में जाओ, बड़ों-बड़ों को जाकर समझाओ कि कैरेक्टर बहुत अच्छा होना चाहिए। यहाँ तो सब हैं कैरेक्टरलेस। बाप कहते हैं वाइसलेस बनना है। वाइसलेस दुनिया थी ना। अभी विशश है अर्थात् कैरेक्टरलेस है। कैरेक्टर बहुत खराब हो गये हैं। वाइसलेस बनने के बिना सुधरेंगे नहीं। यहाँ मनुष्य हैं ही कामी। अभी विशश दुनिया से वाइसलेस वर्ल्ड एक बाप ही स्थापन करते हैं। बाकी पुरानी दुनिया विनाश हो जायेगी। यह चक्र है ना।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

इस गोले में समयानी बहुत अच्छी है। यह वाइसलेस वर्ल्ड थी, जहाँ देवी-देवता राज्य करते थे। अभी वो कहाँ गया? आत्मा तो विनाश होती नहीं, एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। देवी-देवताओं ने भी 84 जन्म लिये हैं। अभी तुम सयाने बने हो। आगे तुमको कुछ भी पता नहीं था। अभी यह पुरानी दुनिया कितनी गन्दी है, तुम फील करते हो बाबा जो कहते हैं वह तो बरोबर ठीक है। वहाँ तो है ही पवित्र दुनिया। यह पवित्र दुनिया न होने कारण अपने पर देवता के बदले हिन्दू नाम रख दिया है। हिन्दूस्तान में रहने वाले हिन्दू देवता हैं स्वर्ग में। अभी तुम इस चक्र को समझ गये हो। जो जो सेन्सीबुल हैं वह अच्छी रीति समझते हैं तो जैसे बाप समझाते हैं ऐसे फिर बैठ रिपीट करना चाहिए। मुख्य-मुख्य अक्षर नोट करते जाओ। फिर सुनाओ, बाप ने यह-यह पॉइंट सुनाई है। बोलो, मैं तो गीता का ज्ञान सुनाता हूँ। यह गीता का ही युग है। 4 युग हैं, यह तो सब जानते हैं। यह है लीप युग। इस संगम युग का किसको भी पता नहीं, समझते हैं पुरूषोत्तम युग। परन्तु कैसे, कब, क्यों पुरूषोत्तम युग है, यह किसको भी पता नहीं। शिव जयन्ती भी है। उनके बाद चाहिए कृष्ण जयन्ती। वह मेले-मलाखड़े की बात अलग है, जयन्ती सिर्फ उन्हों की मनाई जाती है। शिवजयन्ती फिर राम जयन्ती, कृष्ण जयन्ती और किसकी जयन्ती? जगत अम्बा, जगत पिता की थोड़ेही जयन्ती मनाते हैं। नम्बरवार आते हैं ना। अभी तुमको यह सारी नॉलेज मिलती है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1. *हमारा बाप, सुप्रीम बाप, सुप्रीम टीचर, सुप्रीम सतगुरु है — यह बात सबको सुनानी है। अल्फ और बे की पढ़ाई पढ़ानी है।*
2. *ज्ञान अर्थात् सृष्टि चक्र की नॉलेज को धारण कर स्वदर्शन चक्रधारी बनना है और विज्ञान अर्थात् आवाज़ से परे शान्ति में जाना है। 7 रोज का कोर्स लेकर फिर कहां भी रहते पढ़ाई करनी है।*

वरदानः- सर्व सम्बन्धों का रस एक बाप से लेने वाले नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप भव

रोज़ अमृतवेले यह स्मृति में लाओ कि सर्व सम्बन्धों का सुख बापदादा से लेकर औरों को भी दान देना है। हर संबंध का सुख लो, सर्व सुखों के अधिकारी बन औरों को भी बनाओ। जो भी काम हो तो पहले साकार साथी याद न आये, बाप याद आये, ऐसे सच्चे साथी का सदा साथ लो, एक बाप दूसरा न कोई — इस स्थिति का अनुभव करो तो सहज ही नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बन जायेंगे।

स्लोगन –

स्मृति को श्रेष्ठ बनाओ तो स्थिति स्वतः श्रेष्ठ हो जायेगी।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

"मीठे बच्चे – जैसे बाप-दादा दोनों निरहंकारी हैं, देही-अभिमानी हैं, ऐसे फॉलो फादर करो, तो सदा उन्नति होती रहेगी"

प्रश्नः- ऊंच पद की प्राप्ति के लिए कौन सी खबरदारी रखना जरूरी है?
उत्तरः- ऊंच पद पाना है तो खबरदारी रखो कि मंसा से भी किसी को मेरे द्वारा दुःख न हो, 2- किसी भी परिस्थिति में क्रोध न आये, 3- बाप का बनकर बाप के कार्य में, इस रूद्र यज्ञ में विघ्न रूप न बनें। अगर कोई मुख से बाबा-बाबा कहे और चलन रॉयल न हो तो ऊंच पद नहीं मिल सकता।

ओम् शान्ति। बच्चे अच्छी तरह से जानते हैं कि बाप से वर्सा पाना है जरूर। कैसे? श्रीमत पर। बाप ने समझाया है एक ही गीता शास्त्र है जिसमें श्रीमत भगवानुवाच है। भगवान तो सबका बाप है। श्रीमत भगवानुवाच। तो जरूर भगवान ने आकर श्रेष्ठ बनाया होगा, तब तो उसकी महिमा है। श्रीमत भगवत गीता अर्थात् श्रीमत भगवानुवाच। भगवान तो जरूर ऊंच ते ऊंच ठहरा। श्रीमत भी उस ही एक शास्त्र में गाई हुई है और कोई शास्त्र में श्रीमत भगवानुवाच नहीं है। श्रीमत किसकी होनी चाहिए वह लिखने वाले भी समझ न सकें। **a** इसमें भूल क्यों हुई है? वह भी बाप आकर समझाते हैं। रावण राज्य शुरू होने से ही रावण मत पर चल पड़ते हैं। पहले कड़े ते कड़ी भूल इन रावण मत वालों ने की है। रावण की चमाट लगती है। जैसे कहा जाता है शंकर प्रेरक है, बॉम्बस आदि बनवाये हैं। वैसे 5 विकारों रूपी रावण प्रेरक है मनुष्य को पतित बनाने का, तब तो पुकारते हैं पतित-पावन आओ। तो पतित-पावन एक ही ठहरा ना। इससे सिद्ध है कि पतित बनाने वाला और है, पावन बनाने वाला और है। दोनों एक हो नहीं सकते। यह बातें तुम ही समझते हो – नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। ऐसे मत समझना कि सभी को निश्चय है। नम्बरवार हैं। जितना निश्चय है उतनी खुशी बढ़ती है। बाप की मत पर चलना होता है। श्रीमत पर हमको यह स्वराज्य पद पाना है। मनुष्य से देवता बनने में देरी नहीं लगती है। तुम पुरूषार्थ करते हो। मम्मा बाबा को फॉलो करते हो। जैसे वह आप समान बनाने की सर्विस कर रहे हैं, तुम भी समझते हो हम क्या सर्विस कर रहे हैं और मम्मा बाबा **b** क्या सर्विस कर रहे हैं। बाबा ने समझाया था कि शिवबाबा और ब्रह्मा दादा दोनों इकट्ठे हैं। तो समझना चाहिए कि सबसे नजदीक हैं। इनका ही सम्पूर्ण रूप सूक्ष्मवतन में देखते हैं तो जरूर यह तीखा होगा। परन्तु जैसे बाप निरहंकारी है, देही-अभिमानी है वैसे यह **c** दादा भी निरहंकारी है। कहते हैं कि शिवबाबा ही समझाते रहते हैं। जब मुरली चलती है तो बाबा खुद कहते हैं कि समझो कि शिवबाबा इन द्वारा सुना रहे हैं। यह ब्रह्मा भी जरूर सुनता होगा। यह न सुने और न सुनाये तो ऊंच पद कैसे पाये। परन्तु अपना देह-अभिमान छोड़ कहते हैं कि ऐसे समझो कि शिवबाबा ही सुनाते हैं। हम पुरूषार्थ करते रहते हैं। शिवबाबा ही समझाते हैं। इसने तो पतित-पना पास किया हुआ है। मम्मा तो कुमारी थी। तो मम्मा ऊंच चली गई। तुम भी कुमारियाँ मम्मा को फॉलो करो। गृहस्थियों को बाबा

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

को फॉलो करना चाहिए। हर एक को समझना है कि मैं पतित हूँ, मुझे पावन बनना है। मुख्य बात बाप ने याद के यात्रा की सिखलाई है। इसमें देह-अभिमान नहीं रहना चाहिए। अच्छा कोई मुरली नहीं सुना सकते तो याद की यात्रा पर रहो। यात्रा पर रहते मुरली चला सकते हैं। परन्तु यात्रा भूल जाते हैं तो भी हर्जा नहीं। (मुरली चलाकर फिर याद पर लग जाओ क्योंकि वह वाणी से परे वानप्रस्थ अवस्था है।) मूल बात है देही-अभिमानी हो बाप को याद करते रहें और चक्र को याद करते रहें। किसी को दु:ख न दें। यही समझाते रहें बाप को याद करो। यह है यात्रा। मनुष्य जब मरते हैं तो कहते हैं — स्वर्ग पधारा। अज्ञान काल में कोई स्वर्ग को याद नहीं करते हैं। स्वर्ग को याद करना माना यहाँ से मरना। ऐसे तो कोई याद नहीं करते। अभी तुम बच्चे जानते हो हमको वापिस जाना है। बाप कहते हैं — जितना तुम याद करेंगे उतना खुशी का पारा चढ़ेगा वर्सा याद रहेगा। जितना बाप को याद करेंगे उतना हर्षित भी रहेंगे। बाप को याद न करने से मूँझते हैं। घुटका खाते रहते हैं। तुम इतना समय याद कर नहीं सकते। (बाबा ने आशिक माशूक का मिसाल बताया है। वह भल धंधा करते हैं और वह भल चर्खा चलाते रहते तो भी उसके सामने माशूक आकर खड़ा हो जाता। आशिक माशूक को याद करते, माशूक फिर आशिक को याद करते। यहाँ तो सिर्फ तुमको एक बाप को याद करना है। बाप को तो तुमको याद नहीं करना है। बाप सबका माशूक है। तुम बच्चे लिखते हो कि बाबा आप हमको याद करते हो? अरे जो सबका माशूक है वह फिर तुम आशिकों को याद कैसे कर सकेंगे? हो नहीं सकता। वह है ही माशूक। आशिक बन नहीं सकता।) तुमको ही याद करना है। तुम हर एक को आशिक बनना है, उस एक माशूक का। अगर वह आशिक बने तो कितने को याद करे। यह तो हो नहीं सकता। कहता है कि मेरे ऊपर पापों का बोझ थोड़ेही है जो किसको याद करें। तुम्हारे ऊपर बोझा है। बाप को याद नहीं करेंगे तो पापों का बोझा नहीं उतरेगा। बाकी मुझे क्यों किसको याद करना पड़े। याद करना है तुम आत्माओं को। जितना याद करेंगे उतना पुण्य आत्मा बनेंगे, पाप कटते जायेंगे। बड़ी मंजिल है। देही-अभिमानी बनने में ही मेहनत है। यह नॉलेज सारी तुमको मिल रही है। तुम त्रिकालदर्शी बने हो, नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। सारा चक्र तुम्हारी बुद्धि में रहना चाहिए। बाप समझाते हैं तुम लाईट हाउस हो ना। हर एक को रास्ता बताने वाले हो, शान्तिधाम और सुखधाम का। यह सब नई बातें तुम सुनते हो। जानते हो कि बरोबर हम आत्मायें शान्तिधाम के रहवासी हैं। यहाँ पार्ट बजाने आते हैं। हम एक्टर हैं। यही चिंतन बुद्धि में चलता रहे तो मस्ती चढ़ जाये। बाप ने समझाया है आदि से लेकर अन्त तक तुम्हारा पार्ट है। अभी कर्मातीत अवस्था में जरूर जाना है फिर गोल्डन एज में आना है। इस धुन में रहते अपना कल्याण करना है। सिर्फ पण्डित नहीं बनना है। दूसरे को सिखाते रहेंगे, खुद उस अवस्था में नहीं रहेंगे तो असर पड़ेगा नहीं। अपना भी पुरूषार्थ करना है। बाप भी बताते हैं कि हम भी याद करने की कोशिश करता हूँ। कभी माया का तूफान ऐसा आता है जो बुद्धि का योग तोड़ देते हैं। बहुत बच्चे चार्ट भेज देते हैं। वन्डर खाता हूँ कि यह तो हमसे भी तीखे जाते हैं। शायद वेग आता है तो चार्ट लिखने

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

में लग जाते हैं परन्तु ऐसी अगर तीखी दौड़ी पहनें तो नम्बरवन में चले जायें। परन्तु नहीं वह सिर्फ चार्ट लिखने तक है। ऐसे नहीं लिखते कि बाबा इतनों को आप समान बनाया। और वह भी लिखे बाबा हमको इसने यह रास्ता बताया है। ऐसा समाचार नहीं आता है। तो बाबा क्या समझेंगे? सिर्फ चार्ट भेजने से काम नहीं चलता। आप समान भी बनाना है। रूप और बसन्त दोनों बनना है। नहीं तो बाप समान नहीं ठहरे। रूप भी बसन्त भी एक्यूरेट बनना है। इसमें ही मेहनत है। देह-अभिमान मार डालता है। रावण ने देह-अभिमानी बनाया है। अभी तुम देही-अभिमानी बनते हो। फिर आधाकल्प के बाद माया रावण देह-अभिमानी बनाती है। देही-अभिमानी तो बहुत मीठा बन जाते हैं। सम्पूर्ण तो अभी कोई भी बना नहीं है। इसलिए बाबा हमेशा कहते हैं कि किसी के भी दिल को रंज नहीं करना है, दुःख नहीं देना है। सबको बाप का परिचय दो। बोलने करने की भी बड़ी रॉयल्टी चाहिए। ईश्वरीय सन्तान के मुख से सदैव रत्न निकलने चाहिए। तुम मनुष्यों को जीयदान देते हो। रास्ता बताना है और समझाना है। तुम परमात्मा के बच्चे हो ना। उनसे तुमको स्वर्ग की राजाई मिलनी चाहिए। फिर अब वह क्यों नहीं है। याद करो बरोबर बाप से वर्सा मिला था ना। तुम भारतवासी देवी देवतायें थे, तुमने ही 84 जन्म लिए। तुम समझो कि हम ही लक्ष्मी नारायण के कुल के थे। अपने को कम क्यों समझते हो। अगर कहते कि बाबा सब थोड़ेही बनेंगे। तो बाबा समझ जाता कि यह इस कुल का नहीं। अभी से ही थिरकने लग पड़ा है। तुमने 84 जन्म लिए हैं। बाप ने 21 जन्मों की प्रालब्ध जमा कराई वह खाया फिर ना (समाप्त) होना शुरू हो गई। कट चढ़ते-चढ़ते तमोप्रधान कौड़ी मिसल बन पड़े हो। (भारत ही 100 प्रतिशत सॉलवेन्ट था। इन्हों को यह वर्सा कहाँ से मिला? एक्टर्स ही बता सकेंगे ना। मनुष्य हैं एक्टर हैं। उनको यह पता होना चाहिए कि इन लक्ष्मी-नारायण को बादशाही मिली कहाँ से? कितनी अच्छी अच्छी प्वाईंट्स हैं। जरूर आगे जन्म में ही यह राज्य भाग्य पाया होगा।

बाप ही पतित-पावन है। बाप कहते हैं कि मैं तुमको कर्म, अकर्म और विकर्म की गति समझाता हूँ। रावण राज्य में मनुष्य के कर्म विकर्म हो जाते हैं। वहाँ तुम्हारे कर्म अकर्म होते हैं। वह है दैवी सृष्टि। मैं रचता हूँ तो जरूर मुझे संगम पर आना पड़े। यह है रावण राज्य। वह है ईश्वरीय राज्य। ईश्वर अब स्थापना करा रहे हैं। तुम सब ईश्वर के बच्चे हो, तुमको वर्सा मिल रहा है। भारतवासी ही सॉलवेन्ट थे, अब इन्सॉलवेन्ट बन गये हैं। यह बना बनाया ड्रामा है, इसमें फ़र्क नहीं हो सकता।) सबका झाड़ अपना-अपना है। वैराइटी झाड़ है ना। देवता धर्म वाले ही फिर देवता धर्म में आयेंगे। क्रिश्चियन धर्म वाले अपने धर्म में खुश हैं औरों को भी अपने धर्म में खींच लिया है। भारतवासी अपने धर्म को भूलने के कारण वह धर्म अच्छा समझ चले जाते हैं। विलायत में नौकरी के लिए कितने जाते हैं क्योंकि वहाँ कमाई बहुत है। ड्रामा बड़ा वण्डरफुल बना हुआ है। इसको समझने की अच्छी बुद्धि चाहिए। विचार सागर मंथन करने से सब कुछ समझ में आ जाता है। यह बना बनाया अनादि ड्रामा है। तो तुम बच्चों को आपसमान सदा सुखी बनाना है। यह तुम्हारा धन्धा है पतितों से पावन बनाना। जैसे बाप का धंधा वैसे तुम्हारा। तुम्हारा

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मुखड़ा सदैव देवताओं जैसा हर्षित होना चाहिए खुशी में। तुम जानते हो हम विश्व के मालिक बनते हैं। तुम हो लवली चिल्ड्रेन। क्रोध पर बड़ी खबरदारी रखनी है। बाप आये हैं बच्चों को सुख का वर्सा देने। स्वर्ग का रास्ता सबको बताना है। बाप सुख कर्ता, दुःख हर्ता है। तो तुमको भी सुख कर्ता बनना है। किसको दुःख नहीं देना है। दुःख देंगे तो तुम्हारी सज़ा 100 गुणा बढ़ जायेगी। कोई भी सजा से बच नहीं सकता। (बच्चों के लिए तो खास ट्रिब्युनल बैठती है।) बाप कहते कि तुम विघ्न डालेंगे तो बहुत सजा खायेंगे। कल्प-कल्पान्तर तुम साक्षात्कार करेंगे कि फलाने यह बनेंगे। आगे जब देखते थे तो बाबा मना करते थे कि न सुनाओ। अन्त में तो एक्यूरेट मालूम पड़ता जायेगा। (आगे चलकर जोर से साक्षात्कार होंगे। वृद्धि तो होती जायेगी। आबू तक क्यू लग जायेगी। बाबा से कोई भी मिल नहीं सकेंगे। कहेंगे अहो प्रभू तेरी लीला। यह भी गाया हुआ तो है ना। विद्वान पण्डित आदि भी पीछे आयेंगे। उन्हों के सिंहासन भी हिलेंगे। तुम बच्चे तो बहुत खुशी में रहेंगे।)

अच्छा — मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार। ऐसी यादप्यार एक ही बार मिलती है। जितना तुम याद करते हो उतना तुम प्यार पाते हो। विकर्म विनाश होते हैं और धारणा भी होती है। बच्चों को खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। जो भी आये उनको रास्ता बतायें। बेहद का वर्सा बेहद के बाप से पाना है। कम बात है क्या? ऐसा पुरूषार्थ करना चाहिए।

अच्छा — रूहानी बापदादा का रूहानी बच्चों को याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार :-

१- बोलने चलने में बहुत रॉयल बनना है। मुख से सदैव रत्न निकालने हैं। आप समान बनाने की सेवा करनी है। किसी की दिल को रंज नहीं करना है।

२- क्रोध पर बड़ी खबरदारी रखनी है। मुखड़ा सदैव देवताओं जैसा हर्षित रखना है। स्वयं को ज्ञान योगबल से देवता बनाना है।

वरदान:- अपने एकाग्र स्वरूप द्वारा सूक्ष्म शक्ति की लीलाओं का अनुभव करने वाले अन्तर्मुखी भव

एकाग्रता का आधार अन्तर्मुखता है। जो अन्तर्मुखी हैं वे अन्दर ही अन्दर सूक्ष्म शक्ति की लीलाओं का अनुभव करते हैं। आत्माओं का आह्वान करना, आत्माओं से रूहरिहान करना, आत्माओं के संस्कार स्वभाव को परिवर्तन करना, बाप से कनेक्शन जुड़वाना—ऐसे रूहों की दुनिया में रूहानी सेवा करने के लिए एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाओ, इससे सर्व प्रकार के विघ्न स्वतः समाप्त हो जायेंगे।

स्लोगन:-

सर्व प्राप्तियों को स्वयं में धारण कर विश्व की स्टेज पर प्रत्यक्ष होना ही प्रत्यक्षता का आधार है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

f वही सभो का भगवान है न कि श्रीकृष्ण। इसलिये पेड़ो डालो है। सर्वगुण सम्पन्न श्रीकृष्ण गोता का भगवान है या पतित पावन ज्ञान का सागर सुख का सागर ...परमपिता परमात्मा है?कोई तो कह देते दोनों एक हो है।खुद हो स्व धारण कर लेता करते हैं। कितना भी भारी भारी फिर भी कहेंगे ईश्वर तो सर्वव्यापी है।वह बाप है उनसे वरसा मिलना है, यह बात उनको बुधि में ठहरेगी ब्रह्मा जो ब्राह्मण बनने वाला होगा।सभो सैपलिंग लग रहो है ना। मकीन्ट सैपलिंग लगाते हैं आड़ें का।और यहाँ वेहद का बाप सैपलिंग लगा रहे हैं आदि सनातन देवी देवता धर्म का। कोई कहाँ? किस धर्म में होंगे।बाप कहते हैं जो देवताओं के भक्त हो उन्हीं को समझाने का कोशिश करना है।शिव के मंदिर में चले जाओ।पुजारियों को जाकर समझाओ यह कौन है। शिव बाबा के भी बहुत नाम रख दिये हैं।बदरीनाथ भी कहते हैं।बबुर में काँटा होता है।बबुलदो होता है। तो शिव बाबा इन का नाम रखा है बबुलनाथ।काँटों को फूल बनाने वाला।दरोवर बाबा काँटों को फूल बना रहे हैं।यह है काँटों को, पापात्माओं को दुनिया। पाप ही करते रहते हैं।ईश्वर सर्वव्यापी कहना यह पाप है ना। बच्चे भी भ्रष्टाचार से पैदा होते हैं।फिर उनको विध के लिये शादी कराते हैं। बाप आकर विश का हथियाना चंपना कैंसल कराते हैं। काम चिता से उतार ज्ञान चिता पर बैठने की प्रतिज्ञा कराते हैं। तुम हो ब्रह्मनो ब्राह्मण।वह है कलियुगो ब्राह्मण। तुम हो संगमयुगो ब्राह्मण।तुम ब्राह्मण नये बनते जाते हो।कब जट पूरा बन जावेगी तब तुम्हारा यह शरीर छूट जावेगा।तुमको फिर आप समान बनाना है। जैसे बन्दरो कोड़े को आप समान बनाते हैं ना। सन्यासी भी

22-8-72

g फक्कड़ा दे देते हो। कहते हैं बाबा फलानी रूठ गया है। आते नहीं हैं तो बाबा लिख देते हैं क्या मुरली मुरली को भक्तों को है?मुरली को फाड़ती दो तो मुरली सुनाने वाले शिववाबा को भी दो। जगाना पड़ता है।कोई बात पर रूठ कर मुरली नहीं सुनते हैं तो तरस पड़ता है।पता नहीं विष सागर में डूब न पड़े।फिर पत्र आदि का भी अक्षर नहीं होता है। माया एकदम पकड़ लेती है।महारथी को भी माया अच्छी रीत पकड़ लेती है।गफलत करने से माया कच्चा खा जाती है।इसलिये बाप कहते हैं खबरदार रहना।तूफान बहुत आवेगी परन्तु खबरदार रहना।एक को भूत आये तो दूसरे को खबरदार करना है।एक दो को सावधान कर उन्नति को पाना है। इसलिये युगल हो बनते हैं। तो ठीक होता है। एक दो को उठाते हैं, काम चिता पर बैठने से तो जल मरेंगे।अब तो ज्ञान चिता पर बैठना है। यह भी शास्त्रों में है ना सागर के बच्चे ...सभी बच्चे है ना। कितने सुखी है।बाप फिर ज्ञान का वरसा कर सभी को सुखधाम करते हैं।यह है रचयिता का समय। सभी का हिसाब किताब चुक्तु होना है। तुम्हारे पाप का खाता खुल्लु हो जाना है।जब सतोप्रधान बन जावेंगे, तो जैसे कि तुम्हारा सुख जमा होता जाता है भविष्य के लिये। यहाँ जमा करना है। गोल्डेन एज में जाना है।यह गेम बहुत अच्छा है।कहते हैं पुरानी पाप की दुनिया, नर्क से पुण्य की दुनिया स्वर्ग में ले चलो। बाप ही स्वर्ग की स्थापना व नर्क का विनाश कराते हैं।हिसाब अनुसार रावण राज्य खत्म होना है। फिर सतयुग में रावण कब बनाते हो नहीं।यह भारत का आधा रूप का पुराना वह दुश्मन है।जिसको जलाते हो आते हैं तुम बच्चे जानते हो अभी थोड़े ही वर्ष

h ...[illegible]...

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

12-3-99 प्रात: मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – सत्य सुनाने वाला एक बाप है, इसलिए बाप से ही सुनो, मनुष्यों से नहीं, एक बाप से सुनने वाला ही ज्ञानी है"

प्रश्न:- जो आत्मायें अपने देवी-देवता घराने की होंगी, उनकी मुख्य निशानी क्या होगी?

उत्तर:- उन्हें यह ज्ञान बहुत अच्छा और मीठा लगेगा। वह मनुष्य मत को छोड़ ईश्वरीय मत पर चलने लग पड़ेंगी। बुद्धि में आयेगा कि श्रीमत से ही हम श्रेष्ठ बनेंगे। अभी यह पुरूषोत्तम संगमयुग चल रहा है, हमें ही उत्तम पुरूष बनना है।

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चे आत्म-अभिमानी भव। देह का अभिमान छोड़ अपने को आत्मा समझो। यह भी जानते हो परमात्मा एक है। ब्रह्मा को परमात्मा नहीं कहा जाता है। ब्रह्मा के 84 जन्मों की कहानी को तुम जानते हो। उनका यह है अन्तिम जन्म। मुझे आना भी इसमें ही होता है, जिसने पूरे 84 जन्म लिए हैं। उनको ही बताता हूँ, तुम 84 जन्मों को नहीं जानते हो, मैं ही तुमको बताता हूँ। पहले-पहले तुम यह देवी-देवता थे। अब यह बनने लिए फिर पुरूषार्थ करना है। पुनर्जन्म तो पहले जन्म से ही शुरु होता है। अब बाप कहते हैं–मैं जो तुमको सुनाता हूँ, वह है राइट। बांकी जो कुछ तुमने सुना है, वह है रांग। मुझे कहते हैं ट्रुथ, सत्य बोलने वाला। मैं सत्य धर्म की स्थापना करने आता हूँ। कहा जाता है सच तो बिठो नच अर्थात् सच्चे हो तो खुशी में डांस करो। यह है ज्ञान डांस। वो लोग कृष्ण को दिखाते हैं–मुरली बजाई, रास किया। वह हैं सच खण्ड के मालिक। लेकिन इनको भी बनाने वाला कौन? सचखण्ड की स्थापना करने वाला कौन? वह है सचखण्ड, यह है झूठ खण्ड। भारत सचखण्ड था, जब इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, उस समय और कोई खण्ड नहीं था। मनुष्य यह नहीं जानते कि स्वर्ग कहाँ है? कोई मरते हैं तो कहते हैं स्वर्गवासी हुआ। बाप समझाते हैं तुम उल्टे लटक पड़े हो। माया के अधीन हो पड़े हो। अब तुमको बाप आकर सुल्टा बनाते हैं। तुम जानते हो भक्तों को भक्ति का फल देने वाला है भगवान्। इस समय सब भक्ति में हैं। जो भी शास्त्र आदि हैं, सब हैं भक्ति मार्ग के। यह गीत गाना आदि सब है भक्ति मार्ग। ज्ञान मार्ग में भजन होता नहीं। तुम जानते हो हमको आवाज़ से परे जाना है, वापिस जाना है। बाप कहते हैं–मीठे बच्चों, मुख से 'हे भगवान्' भी कभी नहीं कहना। यह भी भक्ति मार्ग है। कलियुग के अन्त तक भक्ति मार्ग चलता है। अब यह है पुरूषोत्तम संगमयुग, जबकि बाप आकर ज्ञान से तुमको उत्तम पुरूष बनाते हैं। तुम एक ईश्वरीय मत पर चलो। जो ईश्वर कहते हैं वह राइट। बाबा मनुष्य तन में आकर सुनाते हैं–तुम कितने समझदार थे, अब कितना बेसमझ बन पड़े हो। तुम गोल्डन एज में थे, अब आइरन एज में आ गये हो। यहाँ का जो होगा उनको यह ज्ञान बहुत अच्छा लगेगा। यहाँ वालों को मीठा लगेगा। यह बाबा खुद भी गीता पढ़ते थे। बाबा मिला तो सब-कुछ छोड़ दिया। गुरु भी बहुत किये। बाप ने कहा–यह सब भक्ति मार्ग के गुरु हैं। ज्ञान मार्ग का गुरु मैं एक ही हूँ। ज्ञान जब मेरे से सुनें तब उनको ज्ञानी कह सकते हैं। बाकी सब हैं भक्त। श्रीमत ही श्रेष्ठ है, बाकी सब है मनुष्य मत, यह है ईश्वरीय मत। वह है रावण मत, यह है भगवान् का मत। भगवानुवाच–तुम कितने महान् भाग्यशाली हो, इसलिए तुम्हारा हीरे जैसा जन्म अभी है। अंगूठी में भी हीरा बीच में

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

डालते हैं। माला में ऊपर फूल होता है, फिर मेरू। नाम भी है आदम-बीबी। तुम कहेंगे मम्मा-बाबा। आदि देव और आदि देवी, यह हैं संगम के। संगमयुग ही सबसे उत्तम है, जबकि इस राज्य की स्थापना हो रही है। तुम बच्चों को 16 कला सम्पूर्ण यहाँ बनना है। पुरानी दुनिया को नया बनाने बाप आते हैं। इस दुनिया का इयुरेशन कितना है—यह भी तुम बच्चों के सिवाए कोई नहीं जानते। लाखों वर्ष कह देते हैं। यह सब हैं झूठी बातें। झूठी माया, झूठी काया... कहा जाता है। सच्ची-सच्ची है ही नई दुनिया। यह है झूठ खण्ड। फिर झूठखण्ड को सचखण्ड बनाना बाप का ही काम है। बाप कहते हैं भक्ति मार्ग में जो कुछ पढ़ा है, वह सब भूलो। यह है तुम्हारा बेहद का वैराग्य। वो तो सिर्फ घरबार छोड़ फिर इस दुनिया में, जंगल में चले जाते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। क्यों का सवाल नहीं उठता। यह तो बना-बनाया खेल है। तुम बच्चों को बाप समझाते हैं, ऐसे-ऐसे होता है। और जो भी धर्म वाले हैं वह स्वर्ग में नहीं आ सकते। बौद्ध डिनायस्टी, क्रिश्चियन डिनायस्टी कोई भी स्वर्ग में नहीं आते हैं। वह पीछे आते हैं। पहले-पहले है डीटी डिनायस्टी, फिर इब्राहम, बुद्ध, क्राइस्ट आकर अपना धर्म स्थापन करते हैं। बाबा पुरूषोत्तम संगमयुग पर आकरके यह डीटी डिनायस्टी स्थापन करते हैं।

कोई भी आत्मा आती तो गर्भ में ही है। छोटा बच्चा सो बड़ा हुआ। शिवबाबा तो छोटा-बड़ा नहीं होता। न वह गर्भ से जन्म लेता है। बुद्ध की आत्मा ने प्रवेश किया, बुद्ध धर्म पहले तो होता नहीं। जरूर यहाँ के कोई मनुष्य में प्रवेश करेंगे। फिर गर्भ में तो जरूर जायेंगे। बुद्ध धर्म एक ने ही स्थापन किया फिर उनके पीछे और आते गये। फिर वृद्धि होती गई। जब लाखों हो जाते हैं तो फिर राजाई चलती है। बौद्धियों का भी राज्य था, बाप समझाते हैं यह सब पीछे आते हैं। इनको गुरु नहीं कहा जाता है। गुरु होता है एक। वह तो अपने धर्म की स्थापना कर फिर नीचे आ जाते हैं। बाप ने सबको ऊपर भेज दिया था फिर मुक्तिधाम से एक-एक करके नीचे आते हैं। तुम भी जीवनमुक्ति से नीचे आते हो। वैसे वह फिर मुक्ति से नीचे आते हैं। उनकी महिमा काहे की। ज्ञान तो उस समय प्राय:लोप हो जाता है। बाप ज्ञान देते हैं गति-सद्गति के लिए। वह गर्भ में नहीं आते, इसमें बैठे हैं। इनका दूसरा नाम नहीं। औरों के शरीरों का नाम है। यह है ही परम आत्मा। यह ज्ञान का सागर है। यह ज्ञान पहले आदि सनातन देवी-देवता धर्म वाली आत्माओं को मिलता है क्योंकि उन्हें ही भक्ति का फल मिलना है। भक्ति तुम ही शुरू करते हो। तुमको ही फल देता हूँ। बाकी दूसरे सब हैं बाईप्लाट। वह 84 जन्म भी नहीं लेते हैं। बाप समझाते हैं—बच्चे, तुम अब देही-अभिमानी बनो। वहाँ भी समझते हैं—एक शरीर छोड़ दूसरा लेंगे, दु:ख की बात नहीं। विकारों की बात नहीं। विकार होते हैं रावण राज्य में। वह है निर्विकारी दुनिया। तुम समझायेंगे फिर भी मानते नहीं हैं। कल्प पहले मिसल जो मानते हैं, वही पद पाते हैं, जो नहीं मानते है वह नहीं पाते हैं। सतयुग में सभी पवित्र, सुख, शान्ति में रहते हैं। सब मनोकामनायें 21 जन्म के लिए पूरी हो जाती हैं। सतयुग में कोई कामना नहीं। अनाज आदि सब-कुछ अथाह मिल जाता है। यह बाम्बे पहले नहीं थी। देवतायें खारे जमीन पर नहीं रहते हैं। मीठी नदियां जहाँ थी, वहाँ देवतायें थे। मनुष्य थोड़े थे, एक-एक को बहुत जमीन होती है। दिखाते हैं—सुदामा ने दो मुट्ठी चावल दिये, महल मिल गये। मनुष्य दान पुण्य करते हैं ईश्वर अर्थ। अब वह कोई भिखारी है क्या? ईश्वर तो दाता है। समझते हैं ईश्वर दूसरे जन्म में बहुत कुछ देगा। तुम दो मुट्ठी देते हो, नई दुनिया

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

में बहुत कुछ लेते हो। तुम खर्चा करके सेन्टर आदि बनाते हो, सबको शिक्षा मिले। अपना धन खर्च करते हो फिर राजाई भी तुम ही लेते हो। बाप कहते हैं मैं ही तुमको अपना परिचय देता हूँ। मेरा परिचय कोई को है नहीं। न मैं किस तन में आता हूँ। मैं आता ही एक बार हूँ। जब पतित दुनिया को चेन्ज करना है। मैं हूँ ही पतित-पावन। मेरा पार्ट ही संगमयुग पर है। सो भी एक्यूरेट समय पर आता हूँ। तुमको यह थोड़ेही पता पड़ता है कि शिवबाबा इनमें कब प्रवेश होता है। कृष्ण की तिथि तारीख, मिनट, घड़ियां लिखते हैं। इनका कोई मिनट आदि नहीं निकाल सकते। यह ब्रह्मा भी नहीं जानते थे। जब नॉलेज सुनाई तब मालूम पड़ा। कशिश होती है। इसमें तो कट चढ़ी हुई थी। जब परमपिता परमात्मा ने प्रवेश किया तो तुमको कशिश हुई और तुम भागे। कोई भी तुमने परवाह नहीं की। बाप कहते हैं मैं तो सम्पूर्ण पवित्र हूँ। तुम आत्माओं पर कट चढ़ी हुई है, अब वह कैसे निकले? ड्रामा में सब आत्माओं को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है। यह बहुत गुह्य बात हैं। आत्मा कितनी छोटी है। दिव्य दृष्टि के बिगर उनको कोई देख न सके। बाप आकर तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र देते हैं। तुम जानते हो हम आत्माओं को ही बाप पढ़ाते हैं। भक्ति मार्ग में तो ज्ञान है आटे में नमक। जैसे भगवानुवाच अक्षर राइट है, फिर कृष्ण कहने से रांग हो जाता है। मनमनाभव अक्षर ठीक है परन्तु अर्थ नहीं समझते। मामेकम् अक्षर राइट है। यह है गीता का एपक (युग)। भगवान इस समय ही इस रथ में आते हैं, उन्होंने दिखाया है घोड़ा गाड़ी। उसमें कृष्ण बैठा है। अब कहाँ भगवान का यह रथ, कहाँ घोड़ा गाड़ी! कुछ भी समझते नहीं। यह बेहद के बाप का घर है। बाप सब आत्माओं (बच्चों) को 21 जन्मों के लिए हेल्थ, वेल्थ, हैप्पीनेस देते हैं। यह भी अनादि अविनाशी बना बनाया ड्रामा है। कब शुरू हुआ, कह नहीं सकते। चक्र फिरता ही रहता है। इस संगम का तो किसको मालूम ही नहीं। बाप बतलाते हैं यह ड्रामा 5 हजार वर्ष का है। आधा में सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी, आधा में अर्थात् 2500 वर्ष में बाकी और सब धर्म। तुम जानते हो सतयुग में है ही वाइसलेस वर्ल्ड। तुम अभी योगबल से विश्व की राजाई लेते हो। क्रिश्चियन लोग खुद समझते है – हमको कोई प्रेर रहा है, जो हम विनाश के लिए यह सब कुछ बनाते हैं। कहते हैं हम ऐसे बाम्ब्स बनाते हैं जो एक दुनिया तो क्या 10 दुनिया खत्म कर सकते है। बाप कहते हैं मैं हेविन स्थापन करने आया हूँ। बाकी विनाश तो यह करेंगे। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

अव्यक्त बापदादा की पर्सनल मुलाकात - कुमारियों से

सदा अपने इस ब्राह्मण जीवन के आदि से अब तक की सर्व प्राप्तियाँ स्मृति में रहती हैं? अगर प्राप्तियों की लिस्ट निकालो तो कितनी लम्बी है? सार रूप में यही कहेंगे कि अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मण जीवन में। तो ऐसे अनुभव करते हो? सदा काल के लिये सब प्राप्तियाँ प्राप्त हो गई हैं?

कुमारियों को नशा रहता है? सदा रहता है या कभी-कभी? कभी मूड ऑफ होता है? रोती नहीं हो लेकिन चुप हो जाती हो? कितने समय से नहीं रोया है? जब से ब्रह्माकुमारी बनी हो तब से नहीं रोया है या अभी नहीं रोती हो? मन में भी नहीं रोया है? कुमारियों को कोमल

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

होने के कारण रोना जल्दी आता है। अच्छा, पुरूषार्थ में भी उड़ती कला वाली हो या चढ़ती कला वाली हो? सभी उड़ती कला वाली हो? अच्छा है, कभी नीचे, कभी ऊपर नहीं होना, सदा उड़ते रहना क्योंकि समय कम है और मंज़िल श्रेष्ठ है। तो बिना उड़ती कला के मंज़िल पर पहुँचना मुश्किल है। इसलिये सदा उड़ते रहो और उड़ने का साधन है सदा सर्व प्राप्तियों को स्मृति में रखना। इमर्ज रूप में, मर्ज नहीं। जानते ही हैं, नहीं, मर्ज से इमर्ज करो। क्या-क्या मिला! क्या थे और क्या बने गये! कल क्या और आज क्या! तो प्राप्तियों की खुशी कभी नीचे, हलचल में नहीं लायेगी। नीचे आना तो छोड़ो लेकिन हलचल भी नहीं, अचल। जो सम्पन्न होता है वो हलचल में नहीं आता है। जो खाली होता है वह हिलता है। कोई भी चीज़ हिलने वाली होती है तो उसको चारों ओर से सम्पन्न कर देते हैं, भरपूर कर देते हैं तो हिलती नहीं है। अगर कोना भी खाली होगा तो हिलेगी और हिलते-हिलते टूटेगी। तो सम्पन्नता अचल बनाती है। हलचल से छुड़ा देती है। तो सर्व प्राप्तियों में सम्पन्न हो ना? ये भी नशा है कि हम दाता के बच्चे हैं, साधारण बाप के बच्चे नहीं। तो जो स्वयं दाता है तो वो मास्टर दाता बनायेगा ना। तो सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न आत्मा हो? जरा भी अप्राप्ति नहीं। कोई अप्राप्ति है? कोई चीज़ चाहिये, नाम चाहिये, सेवा चाहिये, थोड़ा चांस मिल जाये, मेरा नाम हो जाये, मेरे को आगे रखा जाये, यह अप्राप्ति तो नहीं है? किसी को है तो बता दो। मकान अच्छा मिल जाये, कार मिल जाये। कार हो तो सेवा अच्छी तरह से कर सकें। जितने साधन, उतनी बुद्धि भी जाती है। जैसे हैं, जहाँ हैं, सदा राज़ी। जो थोड़े में सन्तुष्ट रहता है उसको सदा सर्व प्राप्तियों की अनुभूति होती है। सन्तुष्टता सबसे बड़े से बड़ा खजाना है। जिसके पास सन्तुष्टता है, उसके पास सब-कुछ है। जिसके पास सन्तुष्टता नहीं है तो सब-कुछ होते हुए भी कुछ नहीं है क्योंकि असन्तुष्ट आत्मा सदा इच्छाओं के वश होगी। एक इच्छा पूरी होगी और 10 इच्छायें उत्पन्न होगी। इसलिए हद के इच्छा मात्रम् अविद्या। सदा यह गीत गाते रहो पाना था वो पा लिया। अच्छा, सभी सन्तुष्ट मणियाँ हो ना?

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. बेहद का वैरागी बन जो कुछ अब तक भक्ति में पढ़ा वा सुना है, वह सब भूलना है। एक बाप से सुनकर, उनकी श्रीमत से स्वयं को श्रेष्ठ बनाना है।

२. जैसे बाप सम्पूर्ण पवित्र है, उस पर कोई कट (जंक) नहीं। ऐसे पवित्र बनना है। ड्रामा के हर पार्टधारी का एक्यूरेट पार्ट है, इस गुह्य रहस्य को भी समझकर चलना है।

वरदान:- ब्राह्मण जन्म की जन्मपत्री को जान सदा खुशी में रहने वाले श्रेष्ठ भाग्यवान भव

ब्राह्मण जीवन नया जीवन है, ब्राह्मण आदि में देवी-देवता हैं और अभी बी.के. हैं। ब्राह्मणों की जन्म पत्री में तीनों ही काल अच्छे से अच्छा है। जो हुआ वह भी अच्छा और जो हो रहा है वो और अच्छा और जो होने वाला है वह बहुत-बहुत अच्छा। ब्राह्मण जीवन की जन्मपत्री सदा ही अच्छी है, गैरन्टी है। तो सदा इसी खुशी में रहो कि स्वयं भाग्य विधाता बाप ने भाग्य की श्रेष्ठ रेखा खींच दी, अपना बना लिया।

स्लोगन:-

दिलरूबा वह है जिसके दिल में सदा यही अनहद गीत बजता रहे
कि मैं बाप की, बाप मेरा।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

"मीठे बच्चे – बाप आये हैं तुम बच्चों की खिदमत (सेवा) करने, तुम भी बाप समान बन सबकी खिदमत (सेवा) करो"

प्रश्न:- ब्रह्मा बाप का कौन सा एक विचार चलता, जिस पर शिवबाबा कहते वेट एण्ड सी, फिकर मत करो?

उत्तर:- बाबा का विचार चलता, समय बड़ा नाजुक होता जाता, बच्चों को अविनाशी ज्ञान रत्न लेने बाप के पास आना ही है, इतने ढेर बच्चे कहाँ आकर रहेंगे। कितने मकान बनाने पड़ेंगे। शिवबाबा कहते वेट एण्ड सी। कल्प पहले जैसे आकर रहे थे वैसे ही रहेंगे। तुम फिकर मत करो; तुम सिर्फ पढ़ते रहो, मनमनाभव। तुम्हें कर्मातीत बनने का पुरूषार्थ करना है।

गीत:- तुम्हें पाके हमने....

ओम् शान्ति। बाप भी कहते हैं बच्चे ओम् शान्ति। और क्या कहेंगे! बच्चों को कहते हैं—बच्चे ओम् शान्ति, तत्त्वम्। हे बच्चों तुम भी शान्त स्वरूप हो। तुम भी मास्टर पतित-पावन हो। ऐसे और कोई कह नहीं सकेंगे। कहा जाता है – जैसे काग वैसे बच्चे। तुम बच्चे भी जानते हो जैसे बाबा वैसे हम। बाप कहते हैं मैं ज्ञान का सागर हूँ। तुम बच्चे भी, समझेंगे हम मास्टर ज्ञान सागर हैं, गोया नदियाँ ठहरे। सागर के बाल-बच्चे भी होंगे ना। बड़ी-बड़ी नदियाँ भी हैं। बड़े-बड़े तलाव, बड़े-बड़े सरोवर भी हैं। वह हैं जड़, तुम हो चैतन्य। सागर से ही निकले हुए हैं। कई बच्चे भी इन बातों को समझते नहीं हैं क्योंकि पढ़ी लिखी तो बच्चियाँ हैं नहीं। बाबा ने एक बार पूछा था – चीनी किससे बनती है? गुड़ किससे बनता है? तो बोला लाल गन्ने से गुड़ बनता है, सफेद गन्ने से चीनी बनती है। बिचारी पढ़ी हुई तो हैं नहीं। अब तुमको कितनी बड़ी बातें समझाते हैं। पानी के सागर से पानी की ही नदियाँ निकलती हैं। मनुष्य बहुत बढ़ते जाते हैं तो पानी भी बहुत चाहिए ना। कितने कैनाल्स आदि बनाते रहते हैं। तो तुम बच्चों को उठते-बैठते, चलते-फिरते यही ख्याल रखना है कि हम इस पतित दुनिया को पावन बनाते हैं। गीत में भी कहते हैं बाबा हम आपसे विश्व की बादशाही का वर्सा लेते हैं। यह हमसे कोई छीन नहीं सकेगा। 21 जन्म यह राजाई कायम रहेगी। बेहद का बाप आकर बेहद का राज्य भाग्य देते हैं। राज्य भाग्य चलाने के लायक बनाते हैं, पवित्र बनाते हैं। बुलाते भी हैं, हे पतित-पावन आओ। यह कोई कृष्ण को नहीं बुलाते हैं। निराकार भगवान को बुलाते हैं। जब कहते हैं, हे पतित-पावन, तो कृष्ण बुद्धि में याद नहीं आता है, परमात्मा याद आता है। बाप आकर हर एक बात समझाते हैं। अभी तुम बच्चे सम्मुख बैठे हो। यह कोई साधू-सन्त नहीं है। तुम जानते हो निराकार शिवबाबा इस ब्रह्मा तन में प्रवेश कर हमको पढ़ाते हैं। गायन भी है – परमपिता परमात्मा, ब्रह्मा तन द्वारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं। विनाश, स्थापना के बाद ही हुआ है। इससे सिद्ध है कि पुरानी दुनिया में आते हैं। ब्रह्मा द्वारा स्थापना नई दुनिया की, शंकर द्वारा अनेक धर्मों का विनाश कराते हैं। सतयुग में एक धर्म था, अभी तो अनेक धर्म हैं। एक धर्म वाले देवी-

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

देवताओं की निशानी चक्र आदि है। इन लक्ष्मी-नारायण को कहते ही हैं विश्व का मालिक। स्वर्ग का मालिक सो विश्व का मालिक हो गया। यह बातें अभी तुम बच्चों की बुद्धि में बैठी हैं। बाप कहते हैं– बच्चे, मनमनाभव। यह बच्चों को घड़ी-घड़ी सावधानी मिलती है। बाप को और वर्से को याद करो। यह भूलो मत और प्वाइंट्स भूल जाती हैं। यह तो मुख्य हैं ना। बाप ही पतित-पावन है। यह युक्ति बताते हैं पावन होने की। बाप कहते हैं, तुम सतोप्रधान थे। अब तमोप्रधान पतित बन गये हो। 84 जन्म पूरे लिए हैं। अब तुमको फिर सतोप्रधान बनना है। सतोप्रधान बनो तब ही तुम चल सकेंगे पवित्र दुनिया में। निराकारी दुनिया भी पवित्र है, साकारी दुनिया थी पवित्र है। अपवित्र पतित दुनिया यह है। आत्मा भी तमोप्रधान तो शरीर भी तमोप्रधान है। यह तो सृष्टि का नाटक है, इसमें ब्रह्माण्ड और सूक्ष्मवतन भी आ जाता है। सृष्टि का चक्र यहाँ फिरता है। सतयुग त्रेता यहाँ है। यह कोई सूक्ष्मवतन वा मूलवतन में नहीं होते। यह यहाँ ही हैं। इनको मनुष्य सृष्टि कहा जाता है। वह है आत्माओं की निराकारी दुनिया। वह है ब्रह्मा, विष्णु, शंकर की आकारी दुनिया। यह साकारी सृष्टि कितनी बड़ी है। सतयुग में कितनी छोटी सृष्टि होती है। वहाँ है ही एक धर्म। बाकी मनुष्य जो कहते हैं कि वहाँ भी दैत्य आदि थे, यह सब है झूठ।

तुम समझते हो कि नई दुनिया की स्थापना, पुरानी दुनिया का विनाश गाया हुआ है। सबका विनाश होगा और सतयुग हेवन की स्थापना होगी। तुम भी बाप के साथ खिदमत कर रहे हो। बाप भी आते ही हैं बच्चों की खिदमत करने। यह है बेहद का बाप। देखते हैं हमारे बच्चे बहुत दुःखी हैं तो जरूर तरस पड़ेगा ना। वह है ही रहमदिल बाप। अभी तो सारी दुनिया में अशान्ति है। एक बाप के सिवाए और कोई शान्ति दे न सके। हठयोगी भी अथाह हैं। आत्मा के लिए कह देते वह निर्लेप है। मनुष्यों को उल्टी बातें सुना देते हैं। वास्तव में आत्मा की सफाई चाहिए। आत्मा में ही खाद पड़ी है और किसको पता नहीं है। कहते भी हैं यह पाप आत्मा है। बहुत पाप करते हैं। यह महात्मा है, पुण्यात्मा है। ऐसे नहीं कहेंगे महान परमात्मा है। सन्यासियों के लिए कहेंगे पवित्र आत्मा है क्योंकि सन्यास किया हुआ है। अब बाप समझाते हैं– आत्मा को पवित्र बनाने वाला सिवाए एक परमात्मा बाप के और कोई हो नहीं सकता। पतित दुनिया में पावन आत्मा कोई हो न सके। अभी सैपलिंग लगता है। धीरे-धीरे वृद्धि होती जायेगी। यह तो छोटे-छोटे मठ, पंथ आदि टाल टालियाँ है। उनमें कोई मेहनत थोड़ेही लगती है। अनेक प्रकार के मन्त्र देते हैं। किसम-किसम के मन्त्र देते हैं। यह भी वशीकरण मन्त्र है, जिससे तुम 5 विकारों पर जीत पाते हो। राम-राम का मन्त्र जपते हैं, इससे फायदा तो कुछ भी नहीं है। यहाँ तो बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप नाश हो जायेंगे। तुम पवित्र आत्मा बन जायेंगे। याद को ही योग कहते हैं। भारत का प्राचीन योग बहुत मशहूर है। इस योग से ही तुम विश्व पर जीत पाते हो। भारत का राजयोग बहुत नामीग्रामी है। यह बाप के सिवाए और कोई सिखा न सके। तुम हो ब्रह्माकुमार, कुमारियाँ। बी.के. तो यहाँ ही होंगे ना। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे तो जरूर ब्रह्मा के साथ ही होंगे। ब्राह्मण कुल भी जरूर चाहिए। इसको कहा जाता है – सर्वोत्तम ऊंचे ते ऊंचा ब्राह्मण कुल। अभी तुम ब्राह्मण हो फिर उथल खायेंगे। बाजोली खेलते हैं ना। शूद्र से ब्राह्मण बने हो फिर देवता,

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

क्षत्रिय.) तो अब बाप समझाते हैं मीठे-मीठे बच्चों — बहुत थोड़ी बात है, बाप की याद में रहो। यह भी तो बुद्धि में है — बाबा हमको 84 जन्मों का राज़ बता रहे हैं। 84 लाख अथवा 84 जन्मों का हिसाब तो चाहिए ना। कोई को पता नहीं। 84 लाख का तो हिसाब कोई बता न सके। मनुष्य 84 जन्मों का चक्र लगाते हैं। आत्मायें ऊपर से आती हैं पार्ट बजाने के लिए। सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक आती ही रहती हैं। हर एक अपना-अपना पार्ट बजाते रहते हैं। इन बातों को मनुष्य मात्र नहीं जानते। एक बाप ही जान सकते हैं। मनुष्य को कभी परमपिता, गॉड फादर नहीं कहा जाता। गॉड फादर कहने से फिर निराकार शिव तरफ बुद्धि जाती है। जीव आत्मा का बाप तो होगा ना। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। निराकार बाप का नाम शिव है। तुम्हारा भी एक ही नाम है, आत्मा। फिर शरीर में भिन्न-भिन्न नाम पड़ते हैं। परमपिता परमात्मा भी शरीर में आकर ज्ञान सुनाते हैं। शरीर बिगर थोड़ेही सुनायेंगे। तो बाप समझाते हैं कि इनका तो अपना नाम है, मेरा शरीर का कोई नाम नहीं है, न मैं पुनर्जन्म में आता हूँ। मैं इनमें प्रवेश करता हूँ, इनको भी मालूम नहीं पड़ता है। कोई तिथि तारीख नहीं। हाँ मैं कल्प के अन्त अर्थात् रात में आता हूँ। अभी रात है ना। यह है ही पतितों की दुनिया। मैं आता हूँ पावन दुनिया अर्थात् दिन बनाने। यह भी नहीं जानते कि बाबा ने कब प्रवेश किया। हाँ विनाश साक्षात्कार किया। बहुत ध्यान में जाते थे, वह कोई तिथि तारीख वेला नहीं निकाल सकते। कृष्ण को भी पूजते हैं, उनका रात्रि को जन्म दिखाते हैं। किस समय, कितने मिनट आदि सारा निकालते हैं। बाप कहते हैं– मैं तो हूँ ही निराकार। जैसे और मनुष्य जन्म लेते हैं वैसे मेरा जन्म थोड़ेही होता है। मेरा तो दिव्य अलौकिक जन्म है। मैं इनमें प्रवेश करता हूँ फिर चला जाता हूँ। बैल पर सारा दिन सवारी थोड़ेही करते हैं। मुझे जिस समय बच्चे याद करते हैं, मैं हाजिर हूँ। बाप आकर बच्चों से मिलते हैं, गुडमार्निंग करते हैं। जैसे मनुष्य एक दो में मिलते हैं, राम-राम वा नमस्ते कहते हैं। यह तो रूहानी बेहद का बाप समझाते हैं। मैं तुम सब बच्चों का बाप हूँ। तो शिवबाबा की सन्तान तुम सब आत्मायें भाई-भाई हो। यह खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। बेहद का बाप आया हुआ है, हमको बेहद का वर्सा दे रहा है। बच्चों को देख बाप को भी खुशी होती है, ढेर बच्चे हैं। बच्चे जानते हैं हमको बाबा स्वर्ग का मालिक बना रहे हैं, राजाई देते हैं। प्रजा भी तो कहेगी — हमारा राज्य है। जैसे भारतवासी कहते हैं यह हमारा भारत देश है। राजा प्रजा दोनों कहते हैं हमारा देश है। तुम बच्चे नर्कवासी हो फिर स्वर्गवासी बनेंगे। बाप को और वर्से को याद करना है और कोई तकलीफ बाबा नहीं देते हैं। रहना भी है गृहस्थ व्यवहार में। यहाँ आकर थोड़ेही रहना है। सब यहाँ भागकर आयें तो इतने सबको बाबा कहाँ रख सकते हैं। इतने सब ढेर बच्चे एक ही बार कैसे इकट्ठे हो सकते हैं। सब सेन्टर्स के बच्चे एक ही बार इकट्ठे मिल कैसे सकते हैं। कहाँ ठहर सकेंगे। मुश्किल है ना। दिन-प्रतिदिन बच्चे वृद्धि को पाते रहते हैं, इसकी भी कुछ युक्ति रचनी पड़े। यह सब आस-पास वाले मकान लेने पड़ेंगे। मकान वालों से पूछेंगे, कितना मांगते हैं। समय पर तो लेना पड़ेगा ना। पैसे की तो कोई बात नहीं। समय बड़ा नाजुक होता जाता है। बाप और बच्चे दोनों अविनाशी हैं। अविनाशी खजाना बच्चों को देते हैं। बहुत ढेर बच्चों को आना होगा। बाबा विचार करते हैं

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

इतने ढेर कहाँ आकर रहेंगे। बाबा कहते हैं तुम फिकर क्यों करते हो — "वेट एण्ड सी" — तुम पढ़ते रहो, मनमनाभव।

तुम बच्चों को यह ख्याल में रखना है कि अभी हमको कर्मातीत अवस्था में जाना है, सतोप्रधान बनना है। याद से ही पावन बनेंगे। बाबा बात तो बहुत सहज बताते हैं। अति सहज है सिर्फ बाबा को याद करना है। देखो गाय के बच्चे को जब माँ याद आती है तो चिल्लाता है ना। वह तो है जानवर। तुम बच्चों ने भी रड़ियाँ मारी ना। आगे चल बहुत चिल्लायेंगे, बहुत याद करेंगे। तुम बच्चे तो अब जानते हो कि बाबा आया हुआ है, विनाश तो होना ही है। नेचुरल कैलेमिटीज आनी है। सब आपस में लड़ते-झगड़ते रहते हैं। कितना खर्चा करके बाम्ब्स बनाते हैं, बहुत पैसा जाता है। खर्चा तो होता है ना। इतना खर्चा कहाँ से लायें। डरते भी हैं — मौत से। फिर भी बाम्ब्स बनाना तो बन्द नहीं करते। बाम्ब्स की लड़ाई चलेगी। अभी बनाते ही ऐसे हैं — जो बम गिरे और मनुष्य मर जायें। चीज़ बनाने में पहले समय लगता है फिर तो मिनटमोटर। जल्दी-जल्दी बनाते जाते हैं। बाम्ब्स भी कोई थोड़े बनेंगे क्या? तुम बच्चे जानते हो इस पुरानी सृष्टि का विनाश होना है। अब बेहद के बाप से वर्सा लेना है।

गीता है तुम भारतवासियों का, देवी-देवता धर्म का शास्त्र। बाकी तो छोटे-छोटे हैं, उनका कोई गायन नहीं। ब्राह्मण धर्म है सबसे ऊंचा। ब्राह्मणों का काम है कथा सुनाना। तुम कह सकते हो हम ब्रह्माकुमार कुमारियाँ हैं ब्रह्मा के बच्चे, हमको डाडे का वर्सा मिल रहा है। अच्छा —

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- ड्रामा के हर राज़ को जानते हुए किसी भी बात की फिकर नहीं करनी है। पढ़ाई पढ़ते रहना है। मनमनाभव होकर कर्मातीत बनने का ख्याल रखना है। स्वयं को सतोप्रधान बनाना है।

२- हम आत्मायें शिवबाबा की सन्तान आपस में भाई-भाई हैं। शिवबाबा से वर्सा ले रहे हैं। इस खुशी में रहना है।

वरदान:- सदा कम्बाइण्ड स्वरूप की स्मृति-द्वारा मुश्किल कार्य को सहज बनाने वाले डबल लाइट भव

जो बच्चे निरन्तर याद में रहते हैं वे सदा साथ का अनुभव करते हैं। उनके सामने कोई भी समस्या आयेगी तो अपने को कम्बाइन्ड अनुभव करेंगे, घबरायेंगे नहीं। ये कम्बाइन्ड स्वरूप की स्मृति कोई भी मुश्किल कार्य को सहज बना देती है। कभी कोई बड़ी बात सामने आये तो अपना बोझ बाप के ऊपर रख स्वयं डबल लाइट हो जाओ। तो फरिश्ते समान दिन-रात खुशी में मन से डांस करते रहेंगे।

स्लोगन:-

किसी भी कारण का निवारण कर सन्तुष्ट रहने और करने वाले ही सन्तुष्टमणि हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ऊपर से यही एक मत आना .. ओमशान्ति। कच्चे पाव। ये यात्रा में बैठे हैं। जिसको कहते हैं लेटर में अथवा लिफाफे में बैठे हैं। फिर शान्ति में नहीं बैठते हैं, ऊपर खड़े हैं, संगम में टिके हुए हैं। परन्तु यात्रा पर तो हो, फिर यात्रा स्थितानें जाना पड़ा आप आप में से ही चले जाते हैं। वह होते हैं जिस्मानी ब्राह्मण जो साथ से आते हैं, तुम तो रूहानी ब्राह्मण, ब्रह्मा का वंश अथवा पुत्र कहेंगे, अब कच्चे पाव भी यात्रा में बैठे हैं ऐसे नहीं आया का आवाहन करते हैं नहीं, आया का आवाहन तो करते ही नहीं चलते। बाबा को आयेही आना है, बाबी तुम क्या करते हो? आया से भी याद यही है उनको बताने लिए याद की यात्रा में बैठे हो, और अवगुण में बैठे हो तो गुरु के आगे आयेंगे। गुरु आकर क्या बतावे, वे तो यही मीठे बच्चे। यह याद की यात्रा है, जिससे विघ्न विनाश होने हैं, तुमें याद में बैठते हो, बेड पार्टस् पाप निकालने के लिए। पाप से हाय रेशान है याद से पाप निकलेंगे। सीखे पतित पावन मैं ही हूँ। मैं किसी याद से नहीं आता हूँ। मेरा आना यह दादा में हुए है। जब पतित दुनिया को पावन दुनिया होना होता है, आदि सनातन देवी देवता धर्म जो प्राय: लोप है, उसकी स्थापना फिर से ब्रह्मा द्वारा करते हैं। जिस ब्रह्मा से तिर ही समझाया है ब्रह्मा से विष्णु विष्णु से बनते हैं। फिर विष्णु से ब्रह्मा बनने में 5000 वर्ष लगते हैं। यह भी बुद्धि से समझने की बातें हैं। तुम जो शूद्र थे, अब ब्राह्मण वर्ण में आये हो, तुम ब्राह्मण बने हो तो शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा तुमको याद की यात्रा सिखलाते हैं। याद निकालने लिए, यह रचना का चक्र कैसे फिरता है, जो भी समझ गये। उसमें कोई देरी नहीं लगती है। मनी है भी दशहरा कलियुग का फिर कहते हैं कलियुग के अन्त में आदि है और आप बताते हैं कलियुग का अन्त है, कोई अन्धियारा है ना। आप कहते हैं तुमको यह मिथ्या ज्ञान सुनाया कि कलियुग अभी बच्चा है। इन आप वेद शास्त्रों आदि का तुमको बार बार कहते हैं कलियुग के अन्त में ऐसा होना है नहीं तो गीता के जनम आवेंगे पुराने घोर अंधकार बुद्धियोग आवेगा। यह आप बाबा में पंचायत है ना। जैसे मम्मी किसी बात निकालती है, बाबा आप ही कह लेते हैं, वेद का कितना परपंच है। काका, चाचा, मामा, गुरु गोसाईं, कितने जाल दिखाई पड़ते हैं। बड़ बाबे आप फिरते हैं वेद सिध्द। मकड़ा देखी बनता है। मनुष्य शरीर छोड़ते हैं तो सब कुछ खो जाते हैं। आप मुये घर घर दुनिया। यह तो बुद्धि में ज्ञान है कि यह दुनिया अन्त होनी है, आप समझाते हैं किसका सुंदर नहीं सुनता है तो फिर याद करो। जैसे पत्नी आप को याद करती है, त्यों पति को याद करती है। क्योंकि पति परमेश्वर की माला के। इसलिए आप से बुद्धि निकल पति में चली जाती है। पर तो पतियों का पति है, गाडफादर है ना। तुम सब तो आहिस्ते भगवान की श्रीमत पर चलते हैं। सब बातों का निचोड़ ये वेद है। आप को बहुत तरफ पड़ेगा ना। आप रहस्यवित है। जिसको ही रहस्यवित कहा जाता है। यह जो अपने को श्री श्री 108 जगतगुरु कहलाते हैं, जगतगुरु कहलाना बिल्कुल रांग है। गुरु तो बहुत प्रकार के हैं, जो एक शिक्षा देते हैं सबको गुरु कर देते हैं, गुरु तो आप टीचर्स में राजयोग सिखलाते हैं। यह राजयोग सिखने सिखलाना आवेगा ही नहीं परमात्मा के सिवाए। परमात्मा ने ही भारत में आकर राजयोग सिखाया था, फिर उसके क्या हुआ? यह किसको पता नहीं है। गीता में प्रमाण तो बहुत देते हैं। छोटी2 कुमारियाँ भी गीता कण्ठ कर लेती है। गीता में जिसका तब है तो कुछ न कुछ महिमा होती है। गीता कोई कम नहीं है। गीता की बड़ी महिमा है। गीता ज्ञान से ही आप सारी दुनिया को रिसूनेट कर लेते हैं। तुमारा क्या कल्पांतर, कल्प कल्प आकर अथवा अवतार बनाते हैं। तो तुम याद में रहते हो, क्या आवाहन नहीं करते। तुम याद में रह अपनी उन्नति कर रहे हो। आप के हाय रेशान हल्का रहनी चाहिए। इन शिवजयन्ती में याद करही बोल जावेंगे। सोया शिवजयन्ती में जाते हैं, रास्ता में भी जंगल कुछ दिखाई पड़ता है। आप को लिखते हैं कुछ पढ़ते हैं। याद में बैठ जाते हैं। आखिर आकर देखते हैं यह डेजुएट तो बैठे हैं परन्तु आत्मा को आते हैं। स्मृति में यह सब हो जाती है स्मृति की पूंजी रहती है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

हो अगर आधी बात के निशान और ठोकरें मोहम्मद चला जाता के तो निशानियां नहीं जाता के
के तो दो भी निशान हो जाता है। अपना हो जाता है। अभी तुम समझते हो कि हम तो सब पुरुषोत्तम
है। यहां दुःख की बात नहीं। मृत्यु का नाम नहीं लीता है। विषय नाम ही नहीं पड़ा है। विषय में
दुःख होता है ना। वैसे कहते हैं। भक्त आत्मा के लिये नहीं कि उनको दुःख नहीं होता है। पास बन
पड़ते हैं। विकार रोगी भी होते हैं। यह के ही रोगी दुनिया। अनेक के निरोगी शुरुआत
के। वास्तव में फिर से दैवी पर निरोगी बनाते हैं। बाप के वरदान अर्थात अमृत स्वरूप से
अमर बनाने की भी जरूर डिपार्टमेन्ट होगी। सतो रजो तमो रजिस्टर रखा जाता है उनमें भी
रजिस्टर भी पता पड़ता है इसलिये ही बाबा ने भी रजिस्टर रखवाया है। हर एक अपना रजिस्टर देखो। मैं भी
देखता हूं। हम कोई भूल तो नहीं करते हैं? पहले-पहले बात तो बाप को याद करना है। उनसे ही सुनना और
सुनाना है। आयु बड़ी होती है। एक की ही याद में। यह तो है ज्ञान अनुभाद में कम नहीं लाया जाता
याद में तो तुमको रजिस्टर भरना है। यह 84 जन्मों का चक्र तुम्हारे सिवाय और कोई समझा नहीं सकते हैं
a बाप पर ही समझाना है। विष्णु और ब्रह्मा। शंकर का तो क्रेक्टर्स नहीं करेंगे। तुम जानते हो ब्रह्मा और विष्णु
नाभि आपस में क्या सम्बन्ध है। कोई भी नहीं जानते हैं। दिखाते हैं कि विष्णु की नाभी से ब्रह्मा निकला
अथवा ब्रह्मा तो विष्णु से निकला। फिर विष्णु कहां से निकला? यह कोई बता नहीं सकते हैं। यह तो तुम
लोग समझते हो कि दोनों एक आपस में या सम्बन्ध है? तुम जानते हो कि विष्णु के दो रूप हैं
b वो ही फिर भी 84 जन्म लेते हैं। 84 जन्मों में आखरी पुण्य आत्मा पुनः पुजारी बनते हैं। प्रजापिता ब्र.
तो जरूर यहां ही होगा ना। बहुत करके तो इस पर ही मैंबते हैं। ब्रह्मा तो है, पतित-पावन बाप का
तो जरूर रथ पतित ही होगा। कहते भी हैं ना दूर देश का रहने वाला आया देश परदेश.....। पहले
वाला पतित दुनिया में आया। यहां लिख ही जाता है कि जरूर पतित ही ठहरे। पावन दुनिया में
कभी भी पतन नहीं हो सकता है। अभी तुम बच्चों के समझा के कि 84 जन्म कब लेते हैं। कोई तो
होंगे ना। जो पहले-पहले आये होंगे तो उनके ही 83 84 जन्म होंगे। सतयुग आदि में तो कम देवी देवता
थोड़ा थोड़ी वृद्धि हो जाती है। यह भी खयाल नहीं चलता है कि 84 जन्म कौन लेंगे। यह भी बात है
पुनर्जन्म तो सभी जानते हैं। 84 पुनर्जन्म हुये। यह बड़ी युक्ति से समझाना है। 84 जन्म तो नहीं
हो। एक ही बार थोड़े ही सब आयेंगे। और शरीर छोड़ेंगे। भगवानोवाच भी है कि तुम अनेक जन्मों को
जानते नहीं। बाप ही बैठ समझाते हैं कि तुम आधा 84 जन्म लेते हो। आत्मा ही 84 जन्म लेती है। सारे
का पार्ट बजाती है। यह 84 की कहानी बाप तुम बच्चों को बैठ सुनाते हैं। एक भी जन्म कम पड़ाई है
84 का चक्र जानना तो बिलकुल ही सहज है। दूसरे धर्म वाले तो इन बातों को समझते नहीं। तुमको ही
कोई कमी थोड़े ही 84 जन्म लेते हैं। सबके 84 जन्म होते तो इण्टे का जाड़ा ही नहीं होता है।
बाबा ही तुमको पढ़ाई और याद पर चले। उसमें भी मनमनाभव तो है दादा। डिफीकल्ट सब्जेक्ट पर नम्बर
मिलते हैं। उनका प्रयास भी होता है। उत्तम-मध्यम-कनिष्ट सब्जेक्ट होते हैं ना। उन में भी बाप कहते हैं
मुझे याद करो तो तमोगुणी निर्विकारी बन जायेंगे। और फिर विजय माला के पिरोये जायेंगे। चक्र है ना।
तो खुद को देखना चाहिये कि मैं कहां तक याद करता हूं? कितना याद करता हूं? कितना सेन्टर्स को
याद दिलाने की सेवा की? तो दूसरों को खुशी मिलाने वाला बनता हूं। बाबा देते हैं तो
लेते हैं तो रखते हैं। कुछ भी हो जाये तन की, दरबार नहीं के किनारे में भी खुशी से रहना तो है।
तुम्हें अपने को आत्मा समझ बाप की याद करो। विकारी जो भी, अवश्य भी दीक्षा होती है। नम्बरवार

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

[illegible] स्वभाव (गुण) का भी दर्शन नहीं है। अब बाबा [illegible] गीता भी कोई भाग भी नहीं है। बीस मिनट में [illegible] टूटते-फूटते चले हैं। तुम भी टूटते फूटते चले हो। इस दुनिया में जो [illegible] हैं [illegible] तुम्हारे पास ले आते हैं। जहां टूट-फूट नहीं मानते हैं। कहां तो चीनी की कैसी अच्छी बनती है टूटने का नाम भी नहीं होगा। यहां सारे से कितनी चीजें बन जाती हैं। कहां भी माटी में तो ऊपर [illegible] तुम्हारे लिये बहुत सुख चाहिये। बाप कहते हैं कि तुम बच्चों को कुछ भी पता नहीं है। [illegible] शुरू हुआ तो तुमने दुःख देखा है। यह बातें अभी तुम्हारी बुद्धि में हैं कि दुःख-सुख क्या है। [illegible] जैसा जीवन सर्वगुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण। फिर दो कलायें कैसे कम हुई। अभी तो कोई [illegible] नहीं है। चन्द्रमा की भी आठ-आठ कलायें क्या होती हैं। तुम समझते हो कि एक दुनिया भी [illegible] नई तो वहां पर हर चीज फर्स्ट क्लास होती है। कलायें कम होती जाती हैं। सर्वगुण सम्पन्न यह [illegible] अभी बाप तुमको सत्य-सत्य नारायण बनने की कथा सुनाते हैं। अभी है रात फिर दिन होना है। तुम [illegible] बनते हो तो तुमको लिये सृष्टि भी तो फिर वैसी ही चाहिये। पांच तत्व भी 16 कला सम्पूर्ण बन जाते [illegible] इसलिये ही तुम्हारे शरीर जो नकली ब्यूटीफुल होते हैं। यह सारी दुनिया 16 कला सम्पूर्ण बन जाती है। [illegible] तो कोई भी कला नहीं है। उनकी कुछ भी महिमा थोड़े ही है। मनुष्य थोड़े ही यह जानते हैं। जो भी [illegible] ने यह है अथवा महात्मा आदि हैं कोई भी तकदीर में नहीं है। बहुत करके तो है ही गरीबों की
c तकदीर में इतना ऊंच बाप है तो उनको तो राजा अथवा पवित्र सिंधी के तन में आना चाहिये। पवित्र होते ही हैं पवित्र कन्या के तन में आवें परन्तु फायदा नहीं है। बाप तो कहें फिर कुमारी पर कैसे सवारी करेंगे। बाप बैठ समझाते हैं कि मैं किस में आता हूँ। मैं तो आता ही उसमें हूँ जो कि पूरे 84 जन्म लेते [illegible] दिन भी क्या नहीं। कृष्ण पैदा हुआ उसको भी 16 कला सम्पूर्ण ठहराते। फिर सतो-त्रेतो में आते [illegible] चीज पहले सतोप्रधान होती है फिर सतो-त्रेतो में आती है। सतयुग में भी ऐसे ही होता है। सत्य [illegible] प्रधान है। फिर जब बड़ा होगा तो फिर कहेगा कि मैं यह शरीर छोड़ दूं फिर सतोप्रधान बनूंगा।
यहां तो इतना नशा नहीं है। खुशी का पारा नहीं चढ़ता है। जो अच्छी गायन करते हैं खुशी का पारा [illegible] चढ़ता है। ऐसा भी खुशनुमा करती हैं। आगे चलकर तुमको तब याद आती रहेंगी। जैसे घर के पास आ [illegible] जाते हैं तो घर-बार मकान आदि याद आता है ना। यह भी ऐसे ही है। पुरुषार्थ करते-करते तुम्हारी प्रारब्ध जब [illegible] होगी तो फिर बहुत लाइट होते रहेंगे खुशी में रहेंगे। जो नापास होते हैं तो शॉक के मारे डूब मरते [illegible] तुम बच्चों को भी बाबा बता देते हैं फिर बहुत पछताना पड़ेगा। आगे भविष्य का साक्षात्कार करते रहेंगे। [illegible] बनेंगे। बाबा दिखायेंगे कि यह भी चोरी चमारी तेतानी आदि भी है। पुरुषार्थ नहीं करो। देहधारी बने रहो। [illegible] ही यह बनाये खिलाते हैं। तब पास होगा। फिर सजा भी देंगे। नोट में भी बताते हैं कि [illegible] तो यह-यह सिखाते हैं। उसकी सजा यह है। जब तक निर्मानचित अवस्था को आवे तब तक कुछ न कुछ [illegible] होगी। अहंभाव कोई भी आती है तो फिर शरीर छोड़ना पड़े। यहां रह नहीं सकती है। यही अवस्था [illegible] पास करनी है। अभी तुम वापस जाकर फिर नई दुनिया में आने के लिए तैयारी करते हो। तुम्हारा पुरुषार्थ [illegible] यह है कि हम जल्दी-2 जायें फिर जल्दी आवें। जैसे बच्चों को खेल में दौड़ाते हैं ना। निशान तक जाकर [illegible] फिर आना होता है। तुमको भी जल्दी-2 जाना है फिर जल्दी ही नई दुनिया में एकदम नम्बर वन आना [illegible] होगा यही है। जल्दी जावें फिर आवें। रुद्र माला में जल्दी पिरोयेंगे तो रुण्ड माला में जल्दी आयेंगे तब [illegible] को भी जल्दी देव बनना है। यह संगम की बात है ना। कोई समझते हैं आत्माओं को बीन-बीन बैठ समझाते [illegible] पर तो पर तो आत्मायें भी खाती हैं। परन्तु इस समय परमात्मा पिताजी भी नहीं कहेंगे। जब प्रोढ़ [illegible]

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

6-9-96 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मीठे बच्चे - बाप आये हैं तुम्हें ऐसे श्रेष्ठ कर्म सिखलाने, जिससे तुम 21 जन्म की बादशाही का वर्सा ले सको, अटल अखण्ड राज्य के मालिक बन सको"

प्रश्नः- गृहस्थियों और सन्यासियों के किस एक सिद्धान्त में बहुत बड़ा अन्तर है?

उत्तरः- गृहस्थियों का सिद्धान्त है कि भगवान जरूर किसी न किसी रूप में आयेगा और सन्यासियों का सिद्धान्त है कि ब्रह्म को याद करते-करते ब्रह्म में लीन हो जायेंगे। अब बाप समझाते हैं ब्रह्म में कोई लीन नहीं होता। आत्मा अमर है वह लीन कैसे होगी। भगवान यदि आयेगा तो जरूर टीचर बनकर शिक्षा देगा। प्रेरणा से तो ज्ञान नहीं देगा ना।

गीतः- तुम्हें पाके हमने.. ओम् शान्ति।

मीठे-मीठे रूहानी बच्चों ने यह गीत सुना। रूहानी बच्चे ही कहते हैं कि बाबा। बच्चे जानते हैं यह बेहद का बाप बेहद का सुख देने वाला है अर्थात् वह सभी का बाप है, उनको सभी बेहद के बच्चे आत्मायें याद करते हैं। किसी न किसी प्रकार से याद करते हैं परन्तु उनको पता नहीं है कि हमको उस परमपिता परमात्मा से कोई बादशाही लेनी है। तुम जानते हो हमको जो बाप सतयुगी विश्व की बादशाही देते हैं वह अटल, अखण्ड, अडोल है। वह हमारी बादशाही 21 जन्म कायम रहती है। सारे विश्व पर हमारी गजाई रहती है, जिसको कोई छीन नहीं सकता, लूट नहीं सकता है। हमारी राजाई है अडोल क्योंकि वहाँ एक ही धर्म होता है, द्वैत है नहीं। वह है अद्वैत राज्य। बच्चे जब गीत सुनते हैं तो अपनी राजाई का नशा बुद्धि में आना चाहिए। ऐसे-ऐसे गीत घर में रहने चाहिए, जिससे बाप और वर्से की झट याद आती है। बाप के याद की मस्ती के गीत होने चाहिए। तुम्हारा सब है गुप्त। बड़े आदमियों के तो बहुत ठाठ होते हैं, तुमको कोई ठाठ नहीं है। तुम देखते हो जिसमें बाबा ने प्रवेश किया है उसमें भी कोई ठाठ की बात नहीं है। कपड़े आदि सब वही हैं। तुम बुद्धि से समझते हो कि बाबा ने इसमें प्रवेश किया है — हमको यह राज्य भाग्य देने। यह भी बच्चे जानते हैं कि सारी सृष्टि में इस समय जो भी मनुष्य मात्र हैं, सब देह-अभिमान में आकर अनसाइटियस काम करते हैं, इसलिए बेसमझ कहा जाता है। सबकी बुद्धि को ताला लगा हुआ है। तुम कितने समझदार, विश्व के मालिक थे। अभी माया ने बिल्कुल बेसमझ बना दिया है, जो कोई काम के नहीं रहे हैं। बाप के पास जाने के लिए यज्ञ-तप बहुत करते हैं परन्तु मिलता कुछ नहीं। ऐसे ही धक्के खाते रहते हैं। परमात्मा को कोई भी जानते नहीं, सर्वव्यापी कह देते हैं यह भी कितना रांग हो जाता है। पिता अक्षर बुद्धि में नहीं आता है। करके कोई कहते भी हैं, वह भी कहने मात्र। अगर परमपिता समझें तो बुद्धि एकदम चमक उठे। बाप स्वर्ग का वर्सा देते हैं, वह है हेविनली गॉड फादर फिर हम कलियुगी नर्क में क्यों पड़े हैं। अब हम मुक्ति-जीवनमुक्ति कैसे पा सकते हैं, यह किसकी बुद्धि में नहीं आता है। अभी तुमको समझ मिली है। बाबा ने हमको यह स्मृति दिलाई है, जब नई दुनिया, नया भारत था तो हमारा राज्य था। एक ही गुरु, एक ही भाषा, एक ही

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

महाराजा-महारानी थे। सतयुग में महाराजा-महारानी, त्रेता में राजा रानी कहा जाता है। फिर द्वापर में वाम मार्ग शुरू होता है फिर हर एक के कर्मों पर मदार है। कर्मो अनुसार एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। अभी बाप कहते हैं मैं तुमको ऐसे कर्म सिखाता हूँ जो 21 जन्म बादशाही ही पाते रहेंगे। भल वहाँ भी हद का बाप मिलता है परन्तु वहाँ यह ज्ञान नहीं रहता कि यह राजाई का वर्सा बेहद के बाप का दिया हुआ है। फिर द्वापर से रावण राज्य शुरू होता है तो विकारी संबंध हो जाता है। फिर जैसे-जैसे कर्म वैसा फल मिलता है, देवता वाम मार्ग में चले जाते हैं। फिर सतयुग का सब खलास हो जाता है। फिर कर्मो अनुसार जन्म लेते हैं। भारत में पूज्य राजायें थे तो पुजारी राजायें भी थे। सतयुग में राजा-रानी और प्रजा सब पूज्य होते हैं। फिर जब द्वापर में भक्ति शुरू होती है तो यथा राजा-रानी तथा प्रजा पुजारी बन जातें हैं। बड़े राजा जो सूर्यवंशी थे वही पुजारी बन जाते हैं फिर वैश्य वंशी बन जाते हैं। अभी तुम वाइसलेस बनते हो। उसकी प्रालब्ध फिर 21 जन्म चलती है फिर भक्ति मार्ग शुरू होता है। जो-जो पूज्य देवी-देवता होकर गये हैं, उन्हों के मन्दिर बनाकर उनकी पूजा करते हैं। यह सिर्फ भारत में ही होता है। यह 84 जन्मों की कहानी जो बाप सुनाते है, यह भी भारतवासियों के लिए है। और धर्म वाले आते ही बाद में हैं फिर तो वृद्धि होते-होते ढेर के ढेर हो जाते है। वैराइटी भिन्न-भिन्न देवी-देवताओं की
e रसम रिवाज थी, वह भारत के गुरूओं की नहीं है। आधकल्प बाद रावणराज्य शुरू होने से सारी रसम रिवाज ही बदल जाती है, फिर पूज्य से पुजारी बन जाते हैं। पूजा भी पहले अव्यभिचारी एक शिव की करते हैं। उनके मन्दिर बनाते है फिर लक्ष्मी-नारायण के बनायेंगे। एक ने लक्ष्मी-नारायण का मन्दिर बनाया तो दूसरा भी बनायेंगे। फिर राम सीता के मन्दिर बनाने लग पड़ेंगे फिर कलियुग में देखो गणेश, हनुमान, चाण्डका देवी आदि-आदि के अनेक देवियों के चित्र बनाते रहते हैं। भक्ति मार्ग के लिए सामग्री भी चाहिए ना। जैसे बीज कितना छोटा होता है, झाड कितना बडा होता है वैसे भक्ति का विस्तार हो जाता हैं। ढेर के ढेर शास्त्र बनाये जाते हैं। अब बाप बच्चों को कहते है – यह भक्ति मार्ग की सामग्री सब
f खत्म होनी है। अब मुझ बाप को याद करो। भक्ति का प्रभाव भी बहुत है ना। कितनी खूबसूरत है। नाच-तमाशा, गायन-कीर्तन आदि कितना खर्चा करते हैं। अभी बाप कहते हैं मुझ बाप और वर्से को याद करो। आदि सनातन धर्म को याद करो। अनेक प्रकार की भक्ति तुम जन्म-जन्मान्तर करते आये हो। गृहस्थ धर्म वाले ही भक्ति शुरू करते हैं। सन्यासियों को तो भक्ति नहीं करनी है, यज्ञ-तप, दान-पुण्य, तीर्थ आदि यह सब गृहस्थियों का काम है, न कि सन्यासियों का। वह हैं ही निवृत्ति मार्ग वाले। उन्हों के लिए कायदा है - घरबार छोड़ जाए जंगल में रहना और ब्रह्म तत्व को याद करना वह है ही तत्व ज्ञानी, ब्रह्म ज्ञानी। तत्व अथवा ब्रह्म को ही ईश्वर कह देते हैं। जैसे भारतवासी असुल में हैं आदि सनातन देवी-देवता धर्म
g के। परन्तु हिन्दुस्तान में रहते है तो अपना धर्म हिन्दू समझ लिया है। वैसे सन्यासी भी आत्माओं के रहने के स्थान तत्व को परमात्मा समझ लेते हैं। ब्रह्म तत्व को ही याद करते हैं। वास्तव में सन्यासी जब मनोप्रधान हैं तो जंगल में जाकर रहते हैं, शान्त में। ऐसे नहीं

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कि उन्हों को ब्रह्म में जाकर लीन होना है। बाप कहते है – यह उन्हों का मिथ्या ज्ञान है। लीन कोई हो नहीं सकते। आत्मा तो अविनाशी है ना, वह कैसे लीन हो सकती है। भक्ति मार्ग में कितना माथा कूटते रहते हैं। फिर कहते भगवान कोई न कोई रूप में कभी आकर मिलेगा। अब कौन राइट? वह कहते ब्रह्म से योग लगाकर ब्रह्म में लीन हो जायेंगे। गृहस्थ वाले कहते कि भगवान किस न किस रूप में आयेगा। पतितों को पावन बनायेगा। ऐसे नहीं कि ऊपर से प्रेरणा द्वारा ही सिखलायेंगे। टीचर घर बैठे प्रेरणा करेगा क्या! प्रेरणा अक्षर है नहीं। प्रेरणा से कोई काम नहीं होता। भल शंकर की प्रेरणा से विनाश कहा जाता है परन्तु है यह ड्रामा की नूँध। उन्हों को यह मूसल आदि बनाने ही हैं। प्रेरणा की बात ही नहीं है। मनुष्य तो कह देते हैं कि भगवान की प्रेरणा से सब होता है। या कहते हैं कि शंकर की आँख खुलने से प्रलय हो गई। यह सब कहानियां हैं। अर्थ कुछ भी नहीं समझते हैं। किसके भी मन्दिर में जायेंगे तो कहेंगे अचतम् केशवम्... अर्थ कुछ नहीं समझते। कोई भी अपने बड़ों की महिमा नहीं जानते हैं। धर्म स्थापक को गुरू कह देते हैं। वास्तव में इनको गुरू कहना रांग है। क्राइस्ट कोई गुरू थोड़ेही है। वो तो सिर्फ धर्म स्थापन करते हैं। गुरू उनको कहा जाता है जो सद्गति करे। वह तो धर्म स्थापन करने आते हैं। उनके पिछाड़ी उनकी वंशावली आती है। सद्गति तो किसकी करते ही नहीं। तो उनको गुरू कैसे कहेंगे। गुरू तो एक ही है, जिसको सर्व का सद्गति दाता कहा जाता है। भगवान बाप ही आकर सर्व की सद्गति करते हैं। मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हैं। उनकी याद कभी किससे छूट नहीं सकती। मनुष्य हे भगवान, हे ईश्वर कह एक बाप को ही याद करते हैं क्योंकि वह है सर्व का सद्गति दाता। बाप समझाते है यह सारी रचना है। रचयिता बाप मैं ही हूँ – सबको सुख देने वाला, वर्सा देने वाला एक ही बाप ठहरा। भाई-भाई को वर्सा दे नहीं सकते। वर्सा हमेशा बाप से मिलता है। मैं सभी बेहद के बच्चों को बेहद का वर्सा देता हूँ इसलिए ही मुझे याद करते हैं हे परमात्मा क्षमा करो। समझते कुछ भी नहीं।

बाप कहते हैं– मैं कोई इन्हों के पुकारने से नहीं आता हूँ। यह तो ड्रामा में बना हुआ है। ड्रामा में मेरे आने का पार्ट भी नूँधा हुआ है। अनेक धर्म विनाश, एक धर्म की स्थापना वा कलियुग का विनाश, सतयुग की स्थापना करनी होती है। मैं अपने समय पर आपेही आता हूँ। यह भक्ति मार्ग का भी ड्रामा में पार्ट है। अब जब भक्ति मार्ग का पार्ट पूरा होता है तब आया हुआ हूँ। कल्प पहले भी बाबा आप ब्रह्मा तन में आये थे। यह ज्ञान अभी तुमको मिलता है। फिर कभी नहीं मिलेगा। यह है ज्ञान, वह है भक्ति। ज्ञान की प्रालब्ध है चढ़ती कला। कहा जाता है सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। जनक को सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिली थी ना। यह भी अक्षर हैं। राधे जाकर अनुराधे बनती है। जनक भी जाकर फिर सीता का बाप अनु जनक बनता है। इस ज्ञान से एक-एक मिसाल दे रखा है। समझते कुछ भी नहीं हैं। कहते हैं जनक ने सेकेण्ड में जीवनमुक्ति पाई। क्या फिर एक जनक ने ही जीवनमुक्ति पाई? जीवनमुक्ति तो सब पाते हैं ना। सारी विश्व पाती है। सद्गति वा जीवनमुक्ति एक ही अक्षर है। जीवनमुक्ति अर्थात् जीवन को मुक्त कहते हैं – इस रावण राज्य से। बाबा

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जानते हैं बच्चों की कितनी दुर्गति हो गई है, बिल्कुल दु:खी हो गये हैं। उन्हों की फिर सद्गति होनी है। पहले मुक्ति में जाकर फिर जीवनमुक्ति में आयेंगे। शान्तिधाम से फिर सुखधाम में आयेंगे। यह चक्र की राज़ बाप ने समझाया है। बाप कहते हैं – इस समय सारे सृष्टि का झाड़ जड़जड़ीभूत तमोप्रधान हो गया है इसलिए कोई भी अपने को आदि सनातन देवी-देवता धर्म का समझते नहीं हैं। आदि सनातन देवी-देवता धर्म के थे क्योंकि देवतायें पवित्र थे। हम अपवित्र पतित अपने को देवता कैसे कहलायें। इसलिए कहा जाता है – इन विकारों को छोड़ते जाओ। यह विकार आदि आधाकल्प से रहे हैं। अब एक जन्म में उनको छोड़ना, इसमें मेहनत लगती है। मेहनत बिगर थोड़ेही विश्व का मालिक बनेंगे। बाप को याद करेंगे तब ही अपने को तुम राजाई तिलक देते हो अर्थात् राजाई के अधिकारी बनते हो। जितनी अच्छी रीति याद करेंगे, श्रीमत पर चलेंगे तो तुम राजाओं का राजा बनेंगे। पढ़ाने वाला टीचर तो आया है पढ़ाने। यह पाठशाला है ही मनुष्य से देवता बनने की। नर से नारायण बनाने की कथा सुनाते हैं। यह कथा कितनी नामीग्रामी है। इनको अमरकथा, सत्य नारायण की कथा तीजरी की कथा भी कहते हैं। देखो गीत कितना अच्छा है। बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं, जो मालिकपना कोई लूट न सके। कोई अर्थक्वेक आदि नहीं होगी। वहाँ विघ्न की कोई बात ही नहीं। ऐसा अटल, अखण्ड, पवित्रता, सुख-शान्ति का राज्य पा रहे हो। कल्प पहले माफिक हर 5 हजार वर्ष बाद भारत स्वर्ग बनता है। तुम जानते हो हम सो देवता थे फिर 84 जन्म लेते-लेते आकर यह बनते हैं। फिर हम सो देवता बनेंगे। इसको कहा जाता है स्वदर्शन चक्रधारी। अच्छा-

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

(१) अपने आपको राजाई का तिलक देने के लिए याद की मेहनत करनी है। सब विकारों को छोड़ देना है।

(२) ब्रह्मा बाप समान साधारण और गुप्त रहना है। बाहर का ठाठ आदि नहीं करना है। अपने भविष्य राजाई के नशे में रहना है।

वरदान:- मास्टर आलमाइटी अथॉरिटी की सीट पर सेट रहने वाले सहज और सदा के कर्मयोगी भव

जैसे किसी मशीनरी को सेट किया जाता है तो एक बार सेट करने से फिर आटोमेटिकली चलती रहती है, इसी रीति से मास्टर आलमाइटी अथॉरिटी की स्टेज पर स्वयं को एक बार सेट कर दो तो कभी कमजोरी के शब्द नहीं निकलेंगे। हर संकल्प, शब्द वा कर्म उसी सेटिंग प्रमाण आटोमेटिक चलते रहेंगे। यही सेटिंग सहज और सदा के लिए कर्मयोगी, निरन्तर निर्विकल्प समाधि में रहने वाला सहजयोगी बना देगी।

स्लोगन:-

दिल से बाबा कहना अर्थात् खुशी और शक्ति का अनुभव करना।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

10.1.93 प्रातःक्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद हो

"मीठे बच्चे- भक्तों पर जब भीड़ पड़ी है, विपदा आई है तब बाप आये हैं ज्ञान से गति सद्गति करने"

प्रश्नः-विकर्माजीत कौन बनते हैं? उनकी निशानी क्या होगी?

उत्तरः-विकर्माजीत वही बनते जो कर्म अकर्म और विकर्म की गति को जान श्रेष्ठ कर्म करते हैं। विकर्माजीत बनने वाले कभी भी कर्म नहीं कूटते। उनके कर्म विकर्म नहीं बनते हैं।

प्रश्नः-इस समय बाप डबल सर्विस कौन सी करते हैं?

उत्तरः-आत्मा और शरीर दोनों को पावन भी बनाते और फिर अपने साथ वापस घर भी ले जाते हैं। चरित्र एक बाप के हैं मनुष्यों के नहीं हो सकते।

गीतः-आज अन्धेरे में है इंसान...ओमशान्ति। यह गीत बच्चों ने सुना। जो भी भक्ति मार्ग वाले हैं, वह ऐसे गीत गाते हैं। घोर अन्धियारे से उजियारा चाहते हैं। और दुख से छूटने की पुकार करते रहते हैं। तुम तो हो शिव वंशी ब्रह्माकुमार कुमारियां। यह तो समझने की बात है। इतने बच्चे कुल वंशावली तो हो नहीं सकते, जरूर मुख वंशावली होंगे। कृष्ण को इतनी रानियां अथवा बच्चे नहीं थे। गीता का भगवान तो राजयोग सिखलाते थे। तो जरूर मुख वंशावली a होंगे। प्रजापिता अधर तो नामीग्रामी है। इनके मुख से बाप आकर ब्राह्मण धर्म रचते हैं। प्रजापिता नाम बाप का शोभता है। अब तुम प्रैक्टिकल में उस बाप के बने हो। वह तो कह देते कि कृष्ण b भी भगवान था, शिव भी भगवान था। रूद्र भगवान के बदले कृष्ण का नाम डाल दिया है। कहते भी हैं शंकर पार्वती। रूद्र पार्वती नहीं कहेंगे। शिव-शंकर महादेव कहते हैं। अब कृष्ण कहाँ से आया। उनको तो रूद्र वा शंकर नहीं कहेंगे। भक्त गाते हैं परन्तु भगवान को नहीं जानते। भारत में वास्तव में सच्चे भगत वह हैं जो पूज्य थे वही अब पुजारी बने हैं। उनमें भी नम्बरवार हैं। तुम्हारी बुद्धि में भी नम्बरवार हैं। तुम हो ब्राह्मण वह हैं शूद्र। देवता धर्म वाले भी बहुत दुखी होते हैं क्योंकि उन्होंने बहुत सुख भी देखे हैं। अब तुम्हारा दर दर भटकना बन्द हो गया है आधाकल्प के लिए। यह राज़ भी तुम ब्राह्मण ही जानते हो तो भी नम्बरवार। जिन्होंने कल्प पहले जितना पुरूषार्थ किया था उतना ही अब करते हैं। ऐसे नहीं जो ड्रामा में होगा फिर भी पुरूषार्थ का नाम आता है। ड्रामा को पुरूषार्थ कराना है-बच्चों को जरूर। जैसा पुरूषार्थ वैसा पद मिलेगा। हम जानते हैं कल्प पहले भी ऐसा पुरूषार्थ किया था। ऐसे सितम हुए थे। यज्ञ में विघ्न पड़े थे। तुम बच्चे जानते हो बाबा फिर से आया हुआ है। कल्प पहले भी इसी समय आया था जबकि अंग्रेजों का राज्य था। जिन्हों से कांग्रेस ने राज्य लिया। फिरंगियों से राज्य छीना, पाकिस्तान हुआ। यह कल्प पहले भी हुआ था। गीता में यह बातें नहीं हैं। आखरीन समझ जायेंगे कि बरोबर अब यही समय है। कोई समझते हैं कि ईश्वर आ गया है। जब महाभारी लड़ाई लगी थी तो भगवान आया था। कहते ठीक हैं सिर्फ नाम बदल दिया है। रूद्र नाम लेवें तो भी समझें कि ठीक है। रूद्र ने ज्ञान यज्ञ रचा था जिससे दुनिया c की विपदा टली थी यह भी धीरे2 तुम्हारे द्वारा पता लग जायेगा। ऐसे भी कहेंगे कि कृष्ण भगवान नहीं था, उसमें अजुन समय पड़ा है। नहीं तो अभी यहाँ भीड़ मच जाए तो तुम पढ़ भी न सको। यहाँ भीड़ का कायदा नहीं है। गप्पावेश में काम चलता रहेगा। अब कोई बड़ा आदमी यहाँ आये तो कहेंगे इनका माथा खराब है। यह तो बाप तुम बच्चों को पढ़ा रहे हैं। देवता धर्म तो भगवान आकर रचेंगे ना। यह अब आये हैं नई दुनिया रचने। भक्तों की भीड़। विपदा उतारने। विनाश के बाद यहाँ भीड़ होगी नहीं। यहाँ सतयुग में भक्त होते नहीं। न कोई ऐसे कर्म करेंगे जो दुखी हों। बम्बई से रमेश का कौन आया। बापदादा चले आते हैं तो बच्चे उदास होते हैं। जैसे स्त्री का पति विलायत में जाता है तो याद में रो पड़ती है। वह है जिस्मानी संबंध। यहाँ बाबा के साथ रूहानी संबंध है। बाबा से बिछुड़ते हैं तो प्रेम के आंसू आ जाते हैं। जो तर्कीबदबुल बच्चे हैं-उनको बाबा की कदर है। सपूत बच्चों को भी कदर रहता है। शिवबाबा का तो बहुत ऊँचे से ऊँचा संबंध है। इससे ऊँच संबंध तो कोई होता नहीं। शिवबाबा तो बच्चों को आपसमान बनाने से भी ऊँच बनाते हैं। पावन तो तुम बनते हो परन्तु बाप समान एवर पावन नहीं हो सकते। हाँ पावन देवता बनते हो। बाप तो ज्ञान का सागर है। हम कितना भी सुनें तो भी ज्ञानसागर नहीं बन सकते। वह ज्ञान का सागर, आनंद का सागर है, बच्चों को

PDF compression, OCR, Web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

आनंदमय बनाते हैं।और तो सिर्फ नाम रखाते हैं।इस समय दुनिया में भक्त माला बड़ी लम्बी चौड़ी है।तुम्हारी है 16108की माला।भक्त तो करोड़ों हैं।यहाँ भक्ति की बात नहीं। ज्ञान से ही सदगति होती है।अब तुमको भक्ति की जंजीरों से छुड़ाया जाता है।बाबा कहते हैं जब भक्तों पर जब भीड़ होती है तब मुझे आना पड़ता है।सभी की गति सदगति करने।स्वर्ग के देवताओं ने जरूर ऐसे कर्म किये हैं तब इतना ऊँच पद पाया है।कर्म तो मनुष्यों के चले आते हैं। परन्तु वहाँ कर्म कूटते नहीं।यहाँ कर्म विकर्म बनते हैं क्योंकि माया है।वहाँ माया होती नहीं। तुम विकर्मजीत बनते हो।जिन बच्चों को अभी कर्म अकर्म और विकर्म की गति समझाता हूँ वही विकर्मजीत बनेंगे।कल्प पहले भी तुम बच्चों को राजयोग सिखाया था वही अब भी सिखला रहा हूँ। d | कौरवों ने पिरंगियों को निकाल राजाओं से राजाई छीन ली और राजा नाम ही गुम कर दिया। 5हजार वर्ष पहले भारत राजस्थान था-लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। देवताओं का राजस्थान तो पवित्रस्थान था। जरूर उन्हों को भगवान ने राजयोग सिखाया होगा तब उन्हों का नाम भगवती भगवान पड़ा है।परन्तु अभी अपने में आत्म है तो हम भगवती भगवान नहीं कह सकते। नहीं तो यथा राजा रानी तथा प्रजा भी भगवती भगवान होना चाहिए।परन्तु ऐसे हो नहीं सकता। लक्ष्मी नारायण का नाम कोई प्रजा में कोई अपने ऊपर रख न सके,लें नहीं है। विलायत में भी राजा का नाम कोई अपने ऊपर नहीं रखेंगे। उनकी बहुत इज्जत करते हैं।तो बच्चे समझते हैं 5हजार वर्ष पहले बाप आया था।अभी भी बाप आया है। देवी राजस्थान स्थापन करने।शिवबाबा का आना भी अब हुआ है।वह है पाण्डवों का पति न कि कृष्ण। बाप पण्डा बनकर आया है वापिस ले जाने के लिए और नई दुनिया सतयुग रचने लिए।तो जरूर ब्रह्मा द्वारा ही ब्राह्मण रचेंगे।कृष्ण तो हो न सके।मुख्य गीता e | को खण्डन कर दिया है। अब बाप समझाते हैं मैं कृष्ण नहीं हूँ,मुझे रूद्र वा सोमनाथ कह सकते हैं।तुमको ज्ञान सोमरस पिला रहा हूँ।बाकी लड़ाई आदि की कोई बात नहीं।तुमको योगबल से राजाई का माखन मिल जाता है।कृष्ण को माखन जरूर मिलता है।यह है कृष्ण के अन्तिम जन्म की आत्मा।इन ब्रह्मा तरत्सवती, भविष्य में लक्ष्मी नारायण को भी बाप ऐसे कर्म सिखला f | रहे हैं।लक्ष्मी नारायण ही छोटेपन में राधे कृष्ण हैं इसलिए लक्ष्मी नारायण के साथ राधे कृष्ण का भी चित्र दिया है।बाकी इनकी कोई लड़ाई नहीं है।चित्र हैं एक गीता के भगवान का। वह शिवबाबा बच्चों को भिन्न2 साक्षात्कार कराते हैं।बाकी मनुष्य के कोई चरित्र नहीं हैं। क्राइस्ट आदि ने भी आकर धर्म स्थापन किया तो तो सभी को अपना पार्ट बजाना ही है। इसमें चरित्र की तो कोई बात ही नहीं।वह कोई को गति दे न सके।अब बेहद का बाप कहते हैं कि मैं तुम बच्चों की डबल सर्विस करने आया हूँ जिससे तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों पवित्र हो जायेंगे।सभी को वापिस घर मुक्तिधाम में ले जाता हूँ फिर वहाँ से अपना2पार्ट बजाने आयेंगे।कितना अच्छी रीति बच्चों को समझाते हैं। इन लक्ष्मी नारायण के चित्र पर समझाना बड़ा सहज है। त्रिमूर्ति और शिवबाबा का चित्र भी है।नई2पाइंटस मिलती रहती हैं। परन्तु धारणा भी होनी चाहिए। सबसे सहज है लक्ष्मी नारायण के चित्र पर समझाना। मनुष्य थोड़ेही कोई भी चित्र का अर्थ समझते हैं। उल्टे चित्र बना देते हैं लक्ष्मी को 4भुजायें तो नारायण को दो भुजायें दे देते हैं।सतयुग में इतनी भुजायें होती नहीं। सूक्ष्मवतन में तो हैं ही ब्रह्मा विष्णु शंकर। उन्हों को भी इतनी भुजायें हो नहीं सकती।मूलवतन में हैं ही निराकारी आत्मायें फिर यह 8-10भुजा वाले कहाँ के रहने वाले हैं।मनुष्य सृष्टि में रहने वाले पहले2 हैं लक्ष्मी नारायण, दो भुजा वाले। परन्तु उनको 4भुजायें दे दी हैं।नारायण को सांवरा तो लक्ष्मी को गोरा तो उनके बच्चे जो होंगे वह कितनी भुजाओं वाले होंगे। क्या बच्चे को 4भुजा, बच्ची को दो भुजा होंगी? ऐसे2उल्टे चित्र बना दिये हैं। बच्चों को समझाया है-होशा ऐसे समझो कि हमको शिवबाबा मुरली सुनाते हैं।वही यह ब्रह्मा भी सुनाते हैं। शिवबाबा कहते हैं g | मैं गाइड बनकर आया हूँ।यह ब्रह्मा है मेरा बच्चा बड़ा। कहते हैं त्रिमूर्ति ब्रह्मा। त्रिमूर्ति शंकर वा विष्णु नहीं कहेंगे। महादेव शंकर को कहते हैं। फिर त्रिमूर्ति ब्रह्मा क्यों कहते हैं? इसने पूजा रची है तो यह उनकी वन्नी(पुगल) बनते हैं। शंकर वा विष्णु को वन्नी नहीं कहेंगे। यह बहुत वन्डरफुल समझने की बातें हैं। बेसमझ भी समझ वालों से इन बातों में तीखे

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कल्याण करो बनना है। अत जिनको पारषा नहीं होती उनके लिये स्पेशल सर्विस है। यहां वह आते हैं जिनकी सर्विस को हुई है। तो सभी सेन्टर्स में बच्चों से दिल से पूछना है हमने कितने का कल्याण किया है। आते तो बहुत हैं। थोड़े बहुत हैं जो फिर सर्विस करते हैं। बाकी तो पन्ने आगे पीछे लग जाते हैं। समझते हैं पवित्र बनना है। परन्तु धन दान भी करना है ना। दिल से पूछना है हम कोई का कल्याण न करेंगे तो पद क्या पायेंगे। बहुत बच्चियां कल्याण कर पन्द्रा दिन आती हैं। उनमें भी नम्बरवार है। कोई को एक साल में कोई को छह साल सेकण्ड साल में रहेंगे। तो अपना कल्याण करना चाहिए। जिनके अपना कल्याण कर नहीं वो क्या पद पावेंगे। बहुत ऐसे सेन्टर्स हैं जिनमें कर बच्चे सर्विस नहीं करते हैं। हलनी ताकत नहीं है जो जाकर दान करो। ८ सबसे मंदिर में बहुत जाते हैं। जाकर ढूंढना पड़े। देवता पर्ववाला कौन है। बाबा फिर शोक से पनवाता है। भूल होती है तो फिर करेक्ट को जाती है। इसमें 84 पुनर्जन्म चरण लिया है तो चरण हार नहीं दिखा सकते हैं राईट। परन्तु मेरा देश जैसा वेष को बदलना होता है। किसको अच्छा न लगे कोई कृष्ण तो भगवान है। यह को चरण में आवेंगी। कृष्ण की आत्मा तो गर्भ से पैदा हुई तो जरूर जन्म ले फिर आते होंगे। शिवबाबा तो प्रवेश करते हैं। जिस शरीर में आपेउस शरीर को भी तो छोड़ते हैं ना। बुढ़ आत्मा ही आकर प्रवेश करती है। आत्मा कह सकती है मैं इस शरीर में आया हूं। तो इस कहने से मैं आया हूं। वह तो छोटे शरीर में जाकर आत्मा प्रवेश करती है। पोस्ट छाया का रूप धारण कर लेते हैं। यह भी ड्रामा में है ना। फिर वह जन्म लेते हैं। यह कोई समझ नहीं सकते। प्रवेशता यह क्या है यह भी ड्रामा में नूंध है। कैसे बनते हैं कोन पैठ पता निकाले। वन्डरफुल है। ड्रामा में आत्मा को शरीर नू पिलते मरणपट करते हैं। छाया रूप लेते हैं। जैसे परछाया होता है ना। पोस्ट का फिर परछायानहीं पड़ता। बाबा गुप्त हो गया। इन बातों में ही अपन क्यों जायें। दरकार हो नहीं। हम खोज में जावें तो शिवबाबा को भूल जावें। बाबा का फरमान है मुझे निराकार बाप को याद करो। अपनी और दूसरों के देह सबों से भूलना है। सबसे प्यारा है एक शिव बाबा। बाप भी करते हैं और कोई बात में न जाकर शिवबाबा को याद करो। याद से यात्रा है। मन्मनाभव का अर्थ यह है। तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। मैं पतित पावन तुमको लेने आया हूं। निराकार ही आत्माओं को ले जावेंगे ना। कृष्ण तो ऐसे कह न सके। कृष्ण को गाईड नहीं कहेंगे निराकार ही गाईड है। सभी आत्माओं को ले जाते हैं। अच्छारी प्राप्तिक। आत्माओं का गाईड कृष्ण हो न सके। उनको तो पुनर्जन्म में आना है। तो बाप अपरिचय देना है। सबों का भगवान एक है। वह निराकार बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। सर्विस का बच्चों को शोक होना चाहिए। यहां भी ल० ना० का मंदिर होगा। बाबा तो कहां निकलते रहते हैं। बच्चे अपवन में आते हैं पुरानी सुनने। तो पुरानी सुनाने वाला जरूर चाहिए। बाबा जहां जावेंगे सर्विस तो करेंगे। सर्विस का तो शोक रहता है। बच्चे याद करते हैं, वह सब्जेक्ट सुनी हुआ होगी। एक पंथ 10 कार्य सिद्ध होते हैं। शोक तो बहुत अच्छा चाहिए। बच्चे 2 संभालों में बाबा नहीं ला सकते। वह बच्चों का काम है। बच्चों से सवाल जवाब करेंगी। सन्यासी आदि तो बाप के आगे आयेंगी भी नहीं। उनको तो मान चाहिए। बाबा का पार्ट बड़ा वन्डरफुल है। जो फर्स्ट हुआ है सो हुआ। कहां बहुत मिलने आवेंगी। पहले बच्चों को समझाना पड़े। गोप गोपियों ने कोर 2 घर में परिचय दिया है। कोई ने रिपोर्ट की है हमको पता नहीं पड़ा। कोई रह न जावे इसलिये सभी को परिचय देना है। वह तो बच्चों को करना है। ओर 2 आते जावेंगी। राजा रानी तो नहीं है जो इतलाह करे। नया बीज निकलते हैं तो गवर्नमेन्ट को दिखलाये खुश करते हैं। यहां तो गवर्नमेन्ट है नहीं। प्रजा का राज्य है। निमन्त्रण बहुतों को देना है। समझाने लिये लेख भी छपाते हैं। यह किस बाहर भी जावेंगी। टाईम तो पड़ा है। बच्चों को हनत भी करनी पड़े। जोर 2 आत्मा जानता देखा तब आत्मा में जाकर समझावे। अनेक आत्मा हैं। बाबा तो रा

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

2-10-01/ प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे -- आत्मा और शरीर जो पतित और काले बन गये हैं, बाप की याद से इन्हें पावन बनाओ क्योंकि अब पावन दुनिया में चलना है"

प्रश्नः- भगवान किन बच्चों को मिलता है, बाप ने कौन सा हिसाब बतलाया है?

उत्तरः- जिन्होंने शुरू से भक्ति की है उन्हें ही भगवान मिलता है। बाबा ने यह हिसाब बतलाया है कि सबसे पहले तुम भक्ति करते हो इसलिए तुम्हें ही पहले-पहले भगवान द्वारा ज्ञान मिलता है, जिससे फिर तुम नई दुनिया में राज्य करते हो। बाप कहते हैं तुमने आधाकल्प मुझे याद किया है अब मैं आया हूँ, तुम्हें भक्ति का फल देने।

गीतः- मरना तेरी गली में....

ओम् शान्ति। बच्चों ने गीत सुना। जब कोई मरते हैं तो बाप के पास जन्म लेते हैं। जानते हो हम आत्मायें हैं। वह हो गई शरीर की बात। एक शरीर छोड़ फिर दूसरे बाप के पास जाते हैं। तुमने 84 साकारी बाप किये हैं। असुल में हो निराकारी बाप के बच्चे। तुम आत्मा परमपिता परमात्मा के बच्चे हो, रहने वाले भी वहाँ के हो, जिसको निर्वाणधाम वा शान्तिधाम कहा जाता है। बाप भी वहाँ रहते हैं। यहाँ तुम आकर लौकिक बाप के बच्चे बनते हो, तो फिर उस बाप को भूल जाते हो। सतयुग में तुम सुखी बन जाते हो, तो उस पारलौकिक बाप को भूल जाते हो। सुख में उस बाप का सिमरण नहीं करते हो। दुःख में याद करते हो और आत्मा याद करती है। जब लौकिक बाप को याद करती है तो बुद्धि शरीर तरफ रहती है। उस बाबा को याद करेंगे तो कहेंगे ओ बाबा, हैं दोनों बाबा। राइट अक्षर बाप ही है। वह भी फादर, यह भी फादर। आत्मा रूहानी बाप को याद करती है। तो बुद्धि वहाँ चली जाती है। यह बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। अभी तुम जानते हो बाबा आया हुआ है, हमको अपना बनाया है। बाप कहते हैं -- पहले-पहले हमने तुमको स्वर्ग में भेजा। तुम बहुत साहूकार थे फिर 84 जन्म ले ड्रामा प्लैन अनुसार अभी तुम दुःखी हो पड़े हो। ड्रामानुसार यह पुरानी दुनिया खत्म होनी है। तुम्हारी आत्मा और यह शरीर रूपी वस्त्र सतोप्रधान थे फिर गोल्डन एज से आत्मा सिलवर एज में आई तो शरीर भी सिलवर में आया फिर कॉपर एज में आये। अभी तो तुम्हारी आत्मा बिल्कुल ही पतित हो गई है, तो शरीर भी पतित है। जैसे 14 कैरेट का सोना कोई पसन्द नहीं करते हैं, काला पड़ जाता है। तुम भी अभी काले आइरन एजेड बन गये हो। अब आत्मा और शरीर जो ऐसे काले बन गये हैं तो फिर पवित्र कैसे बनें। आत्मा पवित्र बनें तो शरीर भी पवित्र मिले। वह कैसे होगा? क्या गंगा स्नान करने से? नहीं, पुकारते ही हैं -- हे पतित-पावन आओ। यह आत्मा कहती है तो बुद्धि पारलौकिक बाप तरफ चली जाती है। हे बाबा, देखो बाबा अक्षर ही कितना मीठा है। भारत में ही बाबा-बाबा कहते हैं। अभी तुम आत्म-अभिमानी बन बाबा के बने हो। बाबा कहते हैं मैंने तुमको स्वर्ग में भेजा था, नया शरीर धारण किया था। अब तुम क्या बन गये हो। यह बातें हमेशा अन्दर रहनी चाहिए। बाबा को ही याद करना चाहिए। याद सब

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

करते हैं ना – हे बाबा, हम आत्मायें पतित बन गई हैं, अब आओ, आकर पावन बनाओ। ड्रामा में यह भी पार्ट है, तब तो बुलाते हैं। ड्रामा प्लैन अनुसार आयेंगे भी तब जब पुरानी दुनिया से नई बनती है। तो जरूर संगम पर ही आयेंगे। तुम बच्चों को निश्चय है – बिलवेड मोस्ट बाबा है। कहते भी हैं स्वीट, स्वीटेस्ट...अब स्वीट कौन है? लौकिक सम्बन्ध में पहले फादर है, जो जन्म देते हैं। फिर है टीचर। टीचर से पढ़कर तुम मर्तबा पाते हो। नॉलेज इज सोर्स आफ इनकम कहा जाता है। ज्ञान है नॉलेज, योग है याद। तो बेहद का किसको पता नहीं है। चित्रों में क्लीयर दिखाया भी है, ब्रह्मा द्वारा स्थापना शिवबाबा कराते हैं। कृष्ण कैसे राजयोग सिखायेगा। राजयोग सिखलाते ही हैं सतयुग के लिए। तो जरूर संगम पर बाप ने
b सिखाया होगा। सतयुग की स्थापना करने वाला है बाबा। ब्रह्मा द्वारा कराते हैं, करनकरावनहार है ना। वो लोग तो त्रिमूर्ति ब्रह्मा कह देते हैं। परन्तु ऊंच ते ऊंच शिव है ना। वह साकार है,
c वह निराकार है। सृष्टि भी यही है। इस सृष्टि का ही चक्र फिरता है, रिपीट होता रहता है। सूक्ष्मवतन की सृष्टि का चक्र नहीं गाया जाता है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है। गाते भी हैं सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग। बीच में जरूर संगमयुग चाहिए। नहीं तो कलियुग को सतयुग कौन बनाये! नर्कवासियों को स्वर्गवासी बनाने बाप संगम पर ही आते हैं। जितनी पुरानी दुनिया उतना दु:ख जास्ती। आत्मा जितना तमोप्रधान बनती जाती है, उतना दु:खी होती है। देवतायें हैं सतोप्रधान। यह तो हाइएस्ट अथॉरिटी गॉड फादरली गवर्मेन्ट है। साथ में धर्मराज़ भी है। बाप कहते हैं– तुम शिवालय में रहने वाले थे, अब है वेश्यालय। तुम पावन थे अब पतित बने हो तो कहते हो हम तो पापी हैं। आत्मा कहती है मुझ निर्गुण हारे में कोई गुण नाही। कोई भी देवता के मन्दिर में जायेंगे तो उनके आगे ऐसे कहेंगे। कहना चाहिए बाप के आगे। उसको छोड़ ब्रदर्स को लगते हैं, यह देवतायें ब्रदर्स ठहरे ना। ब्रदर्स से तो कुछ मिलना नहीं है। भाइयों की पूजा करते-करते नीचे गिरते आये हैं। अब तुम बच्चे जानते हो – बाप आया हुआ है, उससे हमको वर्सा मिलता है। बाकी मनुष्य तो बाप को जानते ही नहीं। सर्वव्यापी कह देते हैं। कोई फिर कहते अखण्ड ज्योति तत्व है। कोई कहते वह नामरूप से न्यारा है। अरे तुम कहते हो अखण्ड ज्योति स्वरूप है, फिर नाम रूप से न्यारा कैसे कहते हो। बाप को न जानने के कारण ही पतित बन पड़े हैं। तमोप्रधान भी बनना ही है। फिर जब बाप आये तब सबको पावन बनाये। आत्मायें निराकारी दुनिया में सब बाप के साथ रहती हैं। फिर यहाँ आकर सतो रजो तमो का पार्ट बजाती हैं। आत्मा ही बाप को याद करती है। बाप आते भी हैं, कहते हैं ब्रह्मा तन का आधार लेता हूँ, यह है भाग्यशाली रथ। बिगर आत्मा रथ थोड़ेही होता है। कहते हैं भागीरथ ने गंगा लाई। अब यह बात तो हो नहीं सकती। परन्तु कुछ भी समझते नहीं कि हम कहते क्या हैं!

अभी तुम बच्चों को समझाया है – यह है ज्ञान वर्षा। इससे क्या होता है? पतित से पावन बनते हैं। गंगा जमुना तो सतयुग में भी होनी हैं। कहते हैं कृष्ण जमुना के कण्ठे पर खेलपाल करते हैं। ऐसी कोई बातें हैं नहीं। वह तो सतयुग का प्रिन्स है, उसकी बहुत सम्भाल से पालना होती है क्योंकि फूल है ना। फूल कितने अच्छे सुन्दर होते हैं। फूल से

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सभी आकर खुशबू लेते हैं। काँटों से थोड़ेही खुशबू लेंगे। अभी तो है ही काँटों की दुनिया। जंगल को बाप आकर गॉर्डन ऑफ फ्लावर्स बनाते हैं। इसलिए उनका नाम बबुलनाथ भी रख दिया है। काँटों से फूल बनाते हैं। इसलिए महिमा गाते हैं काँटों को फूल बनाने वाला बाबा। अब तुम बच्चों का बाप के साथ कितना लव होना चाहिए। अभी तुम जानते हो हम बेहद के बाप के बने हैं। अभी तुम्हारा सम्बन्ध उनसे भी है तो लौकिक से भी है। पारलौकिक बाप को याद करने से तुम पावन बनेंगे। आत्मा जानती है, वह हमारा लौकिक बाप और यह पारलौकिक बाप है। भक्ति मार्ग में भी आत्मा जानती है, वह हमारा लौकिक बाप और यह गॉड फादर। अविनाशी बाप को याद करते हैं। वह बाप कब आकर हेविन स्थापन करते हैं, यह किसको पता नहीं है। बाप आते ही हैं पतितों को पावन बनाने। तो जरूर संगम पर आयेंगे। शास्त्रों में तो कल्प की आयु लाखों वर्ष लिखकर मनुष्यों को बिल्कुल घोर अन्धियारे में डाल दिया है। कहते हैं जो बहुत भक्ति करते हैं उन्हें भगवान मिलता है। तो सबसे जास्ती भक्ति करने वाले को जरूर पहले मिलना चाहिए। बाप ने हिसाब भी बतलाया है। सबसे पहले भक्ति तुम करते हो तुमको ही पहले-पहले भगवान द्वारा ज्ञान मिलना चाहिए, जो फिर तुम ही नई दुनिया में राज्य करो। बेहद का बाप तुम बच्चों को ज्ञान दे रहे हैं, इसमें तकलीफ की कोई बात नहीं है। बाप कहते हैं तुमने आधाकल्प याद किया है। सुख में तो कोई याद करते ही नहीं। अन्त में जब दु:खी हो जाते हैं तब हम आकर सुखी बनाते हैं। अभी तुम बहुत बड़े आदमी बनते हो। चीफ मिनिस्टर, प्राइम मिनिस्टर आदि के बंगले कितने फर्स्टक्लास होते हैं। सारा फर्नीचर ऐसा फर्स्टक्लास होगा। तुम तो कितने बड़े आदमी (देवता) बनते हो। दैवी गुण वाले देवता स्वर्ग के मालिक बनते हो। वहाँ तुम्हारे लिए महल भी हीरों जवाहरों के होते हैं। वहाँ तुम्हारा फर्नीचर सोने जड़ित का फर्स्टक्लास होगा।

यह है रूद्र ज्ञान यज्ञ। शिव को रूद भी कहते हैं। जब भक्ति पूरी होती है तो भगवान रूद यज्ञ रचते हैं। सतयुग में यज्ञ अथवा भक्ति की बात ही नहीं। इस समय ही बाप यह अविनाशी रूद्र ज्ञान यज्ञ रचते हैं, जिसका फिर बाद में गायन चलता है। भक्ति तो सदैव नहीं चलती रहेगी। भक्ति और ज्ञान, भक्ति है रात, ज्ञान है दिन। बाप आकर दिन बनाते हैं, तो बच्चों का भी बाप के साथ कितना लव होना चाहिए। बाप हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। मोस्ट बिलवेड बाबा है ना। उनसे ज्यादा प्यारी वस्तु कोई हो न सके। आधाकल्प से याद
d करते आये हैं। बाबा आकर हमारे दु:ख हरो। अब बाप आये हैं, समझाते हैं बच्चे, तुम्हें अपने गृहस्थ व्यवहार में रहना ही है। यहाँ बाबा के पास कहाँ तक बैठेंगे। स्थ में तो
e परमधाम में ही रह सकते। यहाँ तो नहीं रह सकते। यहाँ तो नॉलेज पढ़ने की है। नॉलेज पढ़ने वाले थोड़े होते हैं। लाउड स्पीकर पर कभी पढ़ाई होती है क्या? टीचर सवाल कैसे पूछेंगे? लाउड स्पीकर पर रेसपान्ड कैसे दे सकेंगे? इसलिए थोड़े-थोड़े स्टूडेन्ट को पढ़ाते हैं। कॉलेज तो बहुत होते हैं फिर सबके इम्तहान होते हैं। रिजल्ट निकलती है। यहाँ ना एक बाप ही पढ़ाते हैं। यह भी समझाना चाहिए कि दो बाप हैं — लौकिक और पारलौकिक।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

दु:ख में सिमरण उस पारलौकिक बाप का करते हैं। अब वह बाप आया हुआ है। महाभारत लड़ाई भी सामने खड़ी है। वह समझते हैं महाभारत लडाई में कृष्ण आया, यह तो हो न सके। बिचारे मूँझे हुए हैं। फिर भी कृष्ण, कृष्ण करते रहते हैं। अब मोस्ट बिलवेड शिव भी है तो कृष्ण भी है। परन्तु वह है निराकार, वह है साकार। निराकार बाप सभी आत्माओं का बाप है। हैं दोनों मोस्ट बिलवेड। कृष्ण भी विश्व का मालिक है ना। अभी तुम जज कर सकते हो कि जास्ती प्यारा कौन? शिवबाबा ही ऐसा लायक बनाते हैं ना। कृष्ण क्या करते हैं? बाप ही तो उनको ऐसा बनाते हैं ना। तो गायन भी जास्ती उस बाप का होना चाहिए ना। बाप ने समझाया है – तुम सब पार्वतियाँ हो। यह शिव अमरनाथ तुमको कथा सुना रहे हैं। तुम ही सब अर्जुन हो, तुम ही सब द्रोपदियाँ हो। इस विशश दुनिया को रावण राज्य कहा जाता है। वह है वाइसलेस वर्ल्ड। विकार की बात नहीं। निराकार बाप विकारी दुनिया रचेंगे क्या? विकार में ही दु:ख है। सन्यासियों का है ही हठयोग, निवृति मार्ग। कर्म सन्यास तो कभी होता ही नहीं। वह तब हो जब आत्मा शरीर से अलग हो जाए। गर्भ जेल में फिर कर्मों का हिसाब शुरू हो जाता है। बाकी कर्म सन्यास कहना रांग है, हठयोग आदि बहुत सीखते हैं, गुफाओं में जाकर बैठते हैं। आग से भी चले जाते हैं। रिद्धि सिद्धि भी बहुत है। जादूगरी से बहुत चीजें भी निकालते हैं। भगवान को भी जादूगर, रत्नागर, सौदागर कहते हैं। लेकिन उनसे कोई को गति सद्गति तो नहीं मिल सकती। वह तो एक ही सच्चा सतगुरू आकर सबकी गति सद्गति करते हैं। अच्छा –

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- कांटों से फूल बनाने वाला मोस्ट बिलवेड एक बाप है, उसे बहुत लव से याद करना है। खुशबूदार पावन फूल बन सबको सुख देना है।

२- यह नॉलेज (पढ़ाई) सोर्स ऑफ इनकम है, इससे 21 जन्म के लिए तुम बहुत बड़े आदमी बनते हो इसलिए इसे अच्छी रीति पढ़ना और पढ़ाना है। आत्म-अभिमानी बनना है।

वरदान:- थकी वा तड़पती हुई आत्माओं को सिद्धि देने वाले खुदाई खिदमतगार भव

आत्माओं की बहुत समय से इच्छा वा आशा है – निर्वाण वा मुक्तिधाम में जाने की। इसके लिए ही अनेक जन्मों से अनेक प्रकार की साधना करते-करते थक चुकी हैं। अभी हर एक सिद्धि चाहते हैं न कि साधना। सिद्धि अर्थात् सद्गति –तो ऐसी तड़फती हुई, थकी हुई प्यासी आत्माओं की प्यास बुझाने के लिए आप श्रेष्ठ आत्मायें अपने साइलेन्स की शक्ति वा सर्व शक्तियों से एक सेकण्ड में सिद्धि दो तब कहेंगे खुदाई खिदमतगार।

स्लोगन:-

कमजोर संस्कार ही माया के आने का चोर गेट है, अब यह गेट बन्द करो।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

8·3·83 प्रातः क्लास ओमशान्ति "पितामी" शिवबाबा याद
"मीठे बच्चे-अशरीरी भव, तुम मुझ निराकार बाप को याद करो तो तुम्हारे सब विकर्म विनाश हो जायेंगे, यह महावाक्य श्रीकृष्ण के नहीं, परमात्मा शिव के है"

बाप ने हरेक बच्चे को परफेक्ट बनाने के लिए कौन सी श्रीमत दी है?
उत्तर:- श्रीमत है-मीठे बच्चे अपने बाप से बातें करो, विचार सागर मंथन करो, अपने को देखो कि मैं मास्टर ज्ञान सागर बना हूँ। 2-मात पिता समान सबको ज्ञान देना है। 3-किसे से कोई नाराज नहीं होना है। 4-मैंने शान्ति को धारण किया है। [illegible] विकार तो नहीं है। ऐसे अपने आप से बातें करना, अपनी कमियों को निकालो। यही परफेक्ट बनने का साधन है।

मीठे-मीठे माता ओ माता-ओमशान्ति। शिव भगवानुवाच, सिर्फ भगवानुवाच कहने से मनुष्य कुछ समझ नहीं सकेंगे। नाम जरूर लेना पड़ता है। गीता सुनाने वाले जो भी है वह कहते हैं भगवानुवाच। वह पास्ट में हो गये हैं। समझते हैं श्रीकृष्ण आया था। और गीता सुनाई। वह राजयोग सिखाया। अब जो पास्ट हो गया है वह फिर प्रेजेन्ट जरूर होना होता है। जो प्रेजेन्ट है वह फिर पास्ट होना है। जो पास्ट हो जायेगा उसको कहेंगे बीती हुई, तो अब शिवबाबा आया है जरूर होकर गया है। शिव भगवान जो ऊंच ते ऊंच है उसका बाप है, जिसको सर्व शक्तिवान कहा जाता है। वह बैठ समझाते हैं। तुम उनके बच्चे शिव शक्तियाँ हो। शिव शक्ति की महिमा गीत से सुनी ना। शिव शक्ति जगदम्बा होकर गई है, जिसका [illegible] है। होके गये हैं फिर आने हैं जरूर। जैसे सतयुग पास्ट हुआ, अब कलियुग है। फिर सतयुग आने वाला है। अभी है पुरानी दुनिया और नई दुनिया का संगम। जरूर नई दुनिया [illegible] सतयुग है। अब पुरानी दुनिया है। जो सतयुग पास्ट हुआ है फिर भविष्य में [illegible] बातें हैं। ज्ञान है। ही समझ वह है मैं कौन। यह है ज्ञान। सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है वह समझना है। उनको समझे बिगर मनुष्य कुछ भी समझ नहीं सकते। ड्रामा के आदि मध्य अन्त को भी समझना है। उस एक के ड्रामा के आदि मध्य अन्त को तो जानते हैं, यह है बेहद का ड्रामा। इसको मनुष्य समझ नहीं सकते। बाप जो बेहद का मालिक है, वही आकर समझाते है, शिव भगवानुवाच है न कि श्रीकृष्ण भगवानुवाच। कृष्ण को भी श्री कहते हैं क्योंकि उनको श्रेष्ठ बनाने वाला बाप है। भारतवासी बिचारे यह नहीं जानते हैं कि कृष्ण ही नारायण बनते हैं। हम सभी कहते हैं बिचारे बेसमझ [illegible] गरीब दुखी पतित हैं। हम भी ऐसे परन्तु अभी हम पावन बन रहे हैं। पतित पावन बाप को जाकर भिन्न [illegible] को पतित पावन नहीं कहा जाता है। नई पावन दुनिया बनाने वाला [illegible] जिसको परमपिता परमात्मा सर्वशक्तिवान कहा जाता है। वह ही पतित [illegible] बनाने वाला है। यह कहना जरूर पड़ता है। पावन बनाने वाला, ऐसे नहीं [illegible]

[illegible] वाला। तो पतित सृष्टि को पावन बनाने वाला है। पतित सारी [illegible] पतित मनुष्य एक ही ईश्वर है। मनुष्य पतित से पावन बना न सके। [illegible] पलट में। [illegible] सन्यासी ब्रह्मचर्य है ना। समझो करके सन्यासी एक दो [illegible] पावन हो फिर भी [illegible] पतित है तो जरूर उनको पतित दुनिया कहेंगे ना। वास्तव में यह सन्यासी साधू महात्मा कोई पावन है नहीं। शिव भगवानुवाच पतित दुनिया में एक भी पावन हो नहीं सकता। बाप कहते है तुम बच्चों को पावन बनाने लिए सारी सृष्टि को पावन बनाता हूँ। पतित पावन का अर्थ ही है विश्व को पावन बनाने वाला। शिवबाबा मुद कहते है मैं पावन [illegible] पहले पावन बना रहा हूँ। तुमको ही पावन दुनिया का मालिक बनाता हूँ। नई दुनिया में है सतयुग सतोप्रधान देवी देवता। उसको यह कोई नहीं जानते। बिल्कुल ही मूर्ख बुद्धू बने हुए हैं। शिवबाबा को [illegible] नहीं जानते हैं। पूछो तुम निराकार परमपिता परमात्मा शिव की जयन्ती [illegible] परन्तु वह कब आया? निराकार आया कैसे? जरूर निराकार तो शरीर में ही आयेगा [illegible] कर्म कर सके। वह भी शरीर बिगर कर्म थोड़ेही कर सकेंगे। परमात्मा आकर जरूर ऊंच बनाने का ही कर्म करेंगे। सारी विश्व को पावन बनाना यह एक के ही हाथ में है मनुष्य तो

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

8-3-83 2

दुखी ही दुखी है। भक्त भगवान को बुलाते हैं तो जरूर भगवान एक कोना चाहिए। भक्त तन के हैं। शिव भगवानुवाच मैं शिव भगवान तुम बच्चों को राजयोग और सृष्टि चक्र का ज्ञान देता हूं अर्थात् अब तुम्हारी आत्मा को सृष्टि चक्र का ज्ञान है। जैसे सब बाप को सृष्टि के चक्र का ज्ञान है, मैं बाप हूं तुमको सिखलाने, सृष्टि चक्र फिरना तो जरूर है। पतित से पावन बनना कोई तो निमित्त बनते हैं ना। 5 विकारों रूपी जेल से लिबरेट करने में आता हूं। मैं शिव हूं जो अभी इस तन में बैठा हूं। तुम कहेंगे मैं आत्मा इस शरीर में बैठा हूं। मेरे शरीर का नाम c भिन्न भिन्न है। शिवबाबा कहते हैं मेरा निराकारी शरीर तो है नहीं। मुझ परमात्मा का नाम शिव है। मैं परमपिता परमात्मा ऊंचे से ऊंचा मिसल हूं। मेरा शिव नाम एक ही है। तुम ही नामधारी हो। परन्तु तुम्हारा नाम 84 जन्मों में बदलता रहता है। मेरा तो एक ही नाम है। d मैं पुनर्जन्म नहीं लेता हूं। गीता में जिसका नाम डाल दिया है वह तो पूरे 84 जन्म लेता है। ऐसे नहीं कि कृष्ण ने गीता सुनाई, यह बड़ी समझने की बात है। मनुष्य के हाथ में कुछ नहीं है, जो कुछ करते हैं सो परमपिता परमात्मा करते हैं। मनुष्य को शान्ति सुख देना, यह बाप का काम है। शान्ति धाम में तो एक बाप कोई ही करनी है। और कोई की महिमा है नहीं। जो भी सतोप्रधान राज्य करके गये हैं तो समझते हैं यह स्वर्ग के मालिक थे। वहां तो कहो वह जो शिव और यहां बैठे हैं। शिव भगवानुवाच तुम राजाओं का राजा पूज्य बनते हो, फिर पुजारी बनेंगे। पूज्य नं0 1 से फिर आपेही पुजारी बनेंगे। तो जो फास्ट हो गये हैं उनका फिर मन्दिर बनाकर पूजन करते हैं। यह सिद्ध कर बताना है। ऐसे नहीं कि ईश्वर आपेही पूज्य आपेही पुजारी बनता है। नहीं। मनुष्य यह भी नहीं जानते कि मैं परमात्मा कहां निवास करता हूं। मेरे जो बच्चे सालिग्राम हैं वह भी यह नहीं जानते कि हम कहां के रहने वाले हैं। आत्मा और परमात्मा का घर एक ही है स्वीट होम। मेरा स्वीट फादर है होम नहीं है। मैं तुम जानते थे निराकार दुनिया भी थी। [illegible] सिर्फ घर को याद करेंगे तो ब्रह्म के साथ योग हो गया। उनसे विकर्म विनाश हो नहीं सकते। भले ब्रह्म योगी तत्व योगी हैं परन्तु उनके विकर्म विनाश नहीं हो सकते। हां भावना से करके अल्पकाल के लिए सुख मिलता है। जितना याद करेंगे उतनी शान्ति मिलेगी। तो बाप कहते हैं उनका योग रांग है। तुमको याद करना है एक बाप को। बाप कहते हैं मुझे याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। कृष्ण ऐसे कह न सके वह तो वैकुण्ठ का मालिक ठहरा। वह f थोड़ेही कहेगा अशरीरी बन शिवबाबा को या मुझे याद करो। सारा मदार गीता को करेक्ट कराने पर है। गीता अशुद्ध होने कारण भगवान की हस्ती गुम हो गई है। कह देते ईश्वर का कोई नाम रूप है नहीं। अब नाम रूप काल तो आत्मा का भी है। आत्मा का नाम आत्मा है। वह भी परमपिता परमात्मा है। परम अर्थात् सुप्रीमो। ऊंच ते ऊंच वह जन्म मरण रहित। g अवतार लेते हैं ड्रामा में जिसका पार्ट है उनमें ही प्रवेश करते हैं और उसका नाम ब्रह्मा रखते हैं। ब्रह्मा नाम कब बदल नहीं सकता। ब्रह्मा द्वारा ही स्थापना करते हैं। तो वह श्रीकृष्ण के तन में थोड़ेही आयेंगे। अगर वह दूसरे में आवे तो भी उनका नाम ब्रह्मा रखना पड़े। मनुष्य कहते हैं दूसरे को मैं क्यों नहीं आता। अरे वह भी किसके तन में आयें। वह आते ही हैं दान देने लिए। दिनप्रतिदिन मनुष्य समझते जायेंगे। तुम्हारी वृद्धि होती जायेगी। अवस्था बड़ी अच्छी चाहिए। जैसे ड्रामा के एक्टर्स को मालूम होता है हम घर से स्टेज पर पार्ट बजाने आये हैं, वैसे हम आत्मा यह शरीर रूपी चोला ले आकर पार्ट बजाती हैं। फिर वापिस जाना है। शरीर छोड़ना पड़ता है। इसमें तो खुशी होनी चाहिए। डरना नहीं चाहिए। तुम बहुत कमाई कर रहे हो। शरीर छोड़ने वाला खुद भी समझ सकते हैं। हमने कितनी कमाई की है। तुम समझते हो जो शरीर छोड़कर गये हैं उनमें से किसका मरना अच्छा कहें, फलाना बहुत सर्विस करते हैं। जाकर दूसरा शरीर लिया। इनएक्टर्स गये। उनका इतना ही पार्ट था। फिर भी कुछ न कुछ ज्ञान लेने लिए आ जाएं। हो सकता है। वंडरिस तो बन गये ना। किसके साथ हिसाब किताब चुक्तू करना होगा। वह खलास करने गये। आदि में तो ज्ञान के संस्कार हैं ना। संस्कार आत्मा में ही रहते हैं। वह गुम नहीं हो सकते। कहीं अच्छी जगह सर्विस करते हैं

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

तालेज के संस्कार ले गये, तो कुछ न कुछ जाकर सर्विस करेंगे। ऐसे तो नहीं सब जैसे रहेंगे। नहीं यह जरूर है योग में रहने से काया बदली है। मेनर्स भी बड़े अच्छे चाहिए। कहते हैं बाबा कितने मीठे हैं। मैं भी उनके जैसा मीठा बनूंगा। हम भी ज्ञान सागर बनेंगे। आप कहते हैं [illegible] तुम मात पिता समान बच्चों को लायक देता हूं, [illegible] शान्त को धारण किया है। शान्त हमारा स्वधर्म [illegible] कहते होंगे बेड़े में कोई विकार तो नहीं। तो कोई विकार होगा तो निकल जायेगा। ऐसे अपने से बातें करनी पड़ती हैं। यह है विचार सागर मंथन कर अपने को परफेक्ट बनाना। श्रीमत से। बाकी सभी आसुरी मत से इनपरफेक्ट बनते जाते हैं। हम भी कितने इमपरफेक्ट थे। कोई गुण नहीं थे। मुझ निर्गुण हारे में कोई गुण नाही। अक्षर कितने अच्छे हैं। महिमा सारी परमपिता परमात्मा की ही है। गुरु नानक भी उनकी महिमा करता था। तो मनुष्यों को यह समझना है। यह भी बच्चे जानते हैं कल्प पहले जिनका नालेज लिया है वही वापिस ले और धारणा करेंगे। नहीं तो जैसे वायरे मुआफिक आया और गया। बाबा तो तुम जानते हो हमको नालेजफुल फादर ने जो नालेज दी है वह कोई प्रेजीडेन्ट वा प्राइम मिनिस्टर में भी नहीं है। हम गुप्तवेष में हैं। फिर हम भविष्य में स्वर्ग के मालिक बनेंगे। प्रेजीडेन्ट आदि तो स्वर्ग का मालिक बन न सके। कर्म तो सब कर रहे हैं। परन्तु उन्हों के कर्म विकर्म बनते हैं क्योंकि रावण की मत पर करते हैं। हम श्रीमत पर कर्म करते हैं। श्रीमत देने वाला है बाबा।

बाबा ने समझाया है कि तुम हो सैलवेशन आर्मी। सैलवेशन आर्मी कहा जाता है- जिसका बेड़ा डूबा हुआ है, दुखी हो उनको सुख देना। बेड़ा पार करना। तुम सबका बेड़ा पार करने वाले हो। श्रीमत पर। बलिहारी तो शिवबाबा की है ना। हम तो मूर्ख थे। बाप की मत मिलने [illegible] मत देने वाला कोई मनुष्य वा देवता श्रीमत देने के लायक तो कोई चीज नहीं [illegible] में प्लाट नहीं सकते। तो बाप मत देते हैं। ऐसे ड्रामा में टीचर [illegible] और नई दुनिया, नई सृष्टि बनाते। बाप तो ज्ञान सागर। रावण [illegible] नालेजफुल नहीं करेंगे। तुम अभी श्रीमत पर कर रहे हो। तुम ब्राह्मण बन यज्ञ की [illegible] तुमको राजयोग और ज्ञान सिखाया है। तुम जब यज्ञ रचते हैं तो शास्त्र भी [illegible] नाम रखते हैं रुद्र [illegible] यज्ञ। परन्तु रुद्र है कहां। यहां तो रुद्र शिवबाबा प्रैक्टिकल में है। [illegible] में रुद्र ज्ञान यज्ञ रचा हुआ है। जो पास्ट था वह अब प्रेजेन्ट है। भविष्य पास्ट [illegible] पक्का तो रहते हैं। तभी अब प्रैक्टिकल धर्म ले रहे हो। पास्ट सो अब प्रेजेन्ट है। अब [illegible] है। पास्ट जो हुआ उसका यादगार है। जिसका जड़ यादगार है वह अब प्रेजेन्ट [illegible] होकर उच्च पद पाते हैं। माला भी उन्हों की बनी है। रुद्र माला है ना। यह सभी हैं [illegible] चक्र कर कल्प के गये हैं तब सो रुद्र माला कहते हैं ना। तुम चैतन्य में शिवबाबा की [illegible] नमस्कार बन रहे हो। जितना योग लगायेंगे उतना नजदीक जाकर रुद्र के गले का हार [illegible] [illegible] में है। ऐसे2 बनने से आते करनी चाहिए। तुमको तो ज्ञान है। तुम्हारे [illegible] रखना है। तुम असल बाबा के बच्चे हैं। हम विश्व के मालिक बनेंगे। फिर कल्प में आयेंगे। सबकी खबरदारी चलनी चाहिए। कई मनुष्य कहते हैं तुम औरों की निंदा क्यों करते हो। [illegible] भाव समझाया हुआ है। अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग [illegible] सभी बच्चों को नमस्ते।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

28-2-98 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "दादादी" मधुबन

"मीठे बच्चे – बाप से सर्व संबंधों का सुख लेना है तो और सबसे बुद्धि की प्रीत निकाल मामेकम् याद करो, यही मंजिल है"

प्रश्न:- तुम बच्चे इस समय कौन सी अच्छे कर्म करते हो, जिनके रिटर्न में साहूकार बन जाते हो?

उत्तर:- सबसे अच्छे ते अच्छा कर्म है – ज्ञान रत्नों का दान करना। यह अविनाशी ज्ञान खजाना ही ट्रांसफर हो 21 जन्मों के लिए विनाशी धन बन जाता है. इससे ही मालामाल बन जाते। जो जितना ज्ञान रत्नों को धारण कर दूसरों को धारण कराते हैं उतना साहूकार बनते हैं। अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान करना – यही है सर्वोत्तम सेवा।

ओम् शान्ति। शिववाबा अपने सालिग्राम बच्चों को समझाते हैं। यह है परमात्मा को अपने बच्चों, आत्माओं प्रति ज्ञान। आत्मा, आत्मा को ज्ञान नहीं देती। परमात्मा शिव बैठ ब्रह्मा मुखवंशी और तुम लकी स्टार्स बच्चों को बैठ समझाते हैं इसलिए इनको परमात्म ज्ञान कहा जाता है। परमात्मा तो एक ही है जिसे क्रियेशन है क्रियेटर की। जैसे लौकिक बाप ऐसे नहीं कहेगा कि यह सब हमारे रूप हैं। नहीं कहेगा यह हमारी रचना है। तो यह रूहानी बाप है जिसे भी पार्ट मिला हुआ है। वही मुख्य एक्टर, क्रियेटर और डायरेक्टर है। आत्मा को क्रियेटर नहीं कहेंगे। परमात्मा के लिए कहा जाता है तुम्हारी गत मत तुम ही जानो। उन सब गुरूओं की तो अपनी-अपनी अलग मत है इसलिए परमात्मा आकर एक मत देते हैं। वह है मास्ट बिलवेड। उन एक के साथ बुद्धियोग लगाना है, और जिनके भी साथ तुम्हारी प्रीत है वह सब धोखा देने वाली है इसलिए उन सबसे बुद्धि निकालनी है। मैं तुमको सब सम्बन्धों का सुख दूंगा सिर्फ मामेकम्, यह है मंजिल। मैं सबका डियरेस्ट डैड (प्यारा पिता) भी हूँ, टीचर भी हूँ, गुरु भी हूँ। तुम समझते हो उस द्वारा हमको जीवनमुक्ति मिलती है। यही अविनाशी ज्ञान खजाना है, यह खजाना ट्रांसफर हो फिर 21 जन्म के लिए विनाशी धन बन जाता है। 21 जन्म हम बहुत मालामाल हो जाते हैं। राजाओं का राजा बनते हैं। इस अविनाशी धन का दान करना है। आगे तो विनाशी धन दान करते थे तो अल्पकाल क्षण भंगुर सुख दूसरे जन्म में मिलता था। कहा जाता है मास्ट जन्म में कुछ दान पुण्य किया है जिसका फल मिला है। वह फल एक जन्म का ही मिलता है। जन्म-जन्मान्तर की प्रालब्ध नहीं कहेंगे। हम जो अब करेंगे उसकी प्रालब्ध हमको जन्म-जन्मान्तर मिलेगी। तो अब यह है अनेक जन्मों की बाज़ी। परमात्मा से बेहद का वर्सा लेना है। सबसे अच्छा कर्म है अविनाशी ज्ञान खजाना दान करना। जितना धारण कर औरों को करायेंगे उतना खुद भी साहूकार बनेंगे, औरों को भी बनायेंगे। यह [illegible] सतयुग त्रेता में ही रहती है। देवताओं को राज-गियाद देखो कैसे सम्पूर्ण [illegible] सतयुग त्रेता में ही रहती।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

में बनते हैं वही सम्पूर्ण हैं. फिर थोड़ी खाद पड़ जाती है। अब तुम समझते हो देवतायें किस बहिश्त के निवासी हैं। वैकुण्ठ है वन्डरफुल दुनिया, वहाँ दूसरे धर्म वाले जा नहीं सकेंगे। यह सब धर्मों को रचने वाला ऊंचे ते ऊंचा भगवत है। वह देवता धर्म कोई वहां नहीं स्थापन करते हैं, वह तो कहते हैं मैं इमप्योर था, मेरे में ज्ञान कहाँ से आया। और सब चोर सोल्स ऊपर से आती हैं अपना धर्म स्थापन करने। यहाँ तो परमात्मा धर्म स्थापन करते हैं, जब इसमें आते हैं तब इनका नाम ब्रह्मा रखते हैं। कहा जाता है ब्रह्मा देवताए नमः, विष्णु देवताए नमः.... अब प्रश्न उठता है कि इन देवताओं से मनुष्य सृष्टि रची गई क्या? नहीं। परमात्मा कहते हैं मैं जिस साधारण तन में आता हूँ, उसका नाम ब्रह्मा पड़ता है। वह सूक्ष्म ब्रह्मा है, तो दो ब्रह्मा हो गये। इनका ब्रह्मा नाम रखा गया है क्योंकि कहते हैं साधारण तन में आता हूँ। ब्रह्मा के मुख कवल से ब्राह्मण रचता हूँ। आदि देव से ह्यूमानिटी रची गई, वह हुआ ह्यूमिनिटी का पहला बाबा। फिर वृद्धि होती जाती है।

b

अब तुमको राजाओं का राजा बनाते हैं। परन्तु बनेंगे तब जब देह सहित देह के सब सम्बन्धों से नाता तोड़ेंगे। बाबा मैं तुम्हारा ही हूँ, बस। यह तो निश्चय है हम सो प्रिन्स बनते हैं। चतुर्भुज का साक्षात्कार होता है ना। वह है ही युगल। चित्रों में ब्रह्मा को 10-20 भुजायें दिखाते हैं। काली को कितनी भुजायें दी हैं, इतने बाँहों वाली चीज़ तो होती नहीं। यह सब अस्त्र-शस्त्र हैं। अपना है ही प्रवृत्ति मार्ग। बाकी ब्रह्मा की जो इतनी भुजायें दिखाते हैं, समझते हैं वह जो ब्रह्मा के बच्चे हैं वह जैसे इनकी बांहे हैं। बाकी यह काली आदि कुछ नहीं है, जैसे कृष्ण को काला कर दिया है वैसे काली को भी चित्र काला कर दिया है। यह जगदम्बा भी ब्राह्मणी है। हम अपने को भगवान अथवा अवतार नहीं कहते हैं। बाबा कहते हैं सिर्फ मामेकम् याद करो। वास्तव में सब शिव कुमार हैं सालिग्राम। फिर मनुष्य तन में आने से तुम ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी कहलाते हैं। ब्रह्माकुमार कुमारियां फिर जाकर विष्णुकुमार कुमारियां बनेंगे। बाप क्रियेट करते हैं फिर पालना भी उनको करनी पड़ती है। ऐसे डियरेस्ट डैड के तुम वारिस हो, उनसे तुम सौदा करते हो। यह तो बीच में दलाल है।

बाबा है होली गवर्मेन्ट, वह आये हैं इस गवर्मेन्ट को भी पाण्डव गवर्मेन्ट बनाने। यह है हमारी ऊंच सर्विस। गवर्मेन्ट की प्रजा को हम मनुष्य से देवता बनाते हैं बाबा की मदद से। तो हम उन्हों के सर्वेन्ट हैं ना। हम वर्ल्ड सर्वेन्ट हैं, हम बाबा के साथ आये हैं सारी दुनिया की सर्विस करने। हम कुछ लेते नहीं हैं। विनाशी धन, महल आदि हम क्या करेंगे। हमको तो सिर्फ 3 पैर पृथ्वी चाहिए।

c

तुम बच्चों को अभी सच्चा-सच्चा ज्ञान मिल रहा है, शास्त्रों के ज्ञान को ज्ञान नहीं कहेंगे, वह भक्ति है। ज्ञान माना सद्गति। सद्गति माना मुक्ति-जीवनमुक्ति। जब तक जीवनमुक्त नहीं हुए हैं तब तक मुक्त भी नहीं हो सकते। हम जीवन-मुक्त होते हैं। बाकी सब मुक्त होते हैं। तब तो कहते है तुम्हरी गत मत तुम ही जानों। फिर इसमें भी सर्वव्यापी परमात्मा है, यह बात नहीं रहती। यह तो कहते हैं कल्प-कल्प मैं अपनी मत से सबकी सद्गति

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

22-2-97 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - सारे कल्प में बड़े से बड़ी हस्ती यह ब्रह्मा है, इसमें ही बाप प्रवेश करते हैं, इन्हें ही तुम्हें फालो करना है"

प्रश्न:- बाप और दादा दोनों का विशेष गुण कौन सा है, जिसे बच्चों को धारण करना है?

a **उत्तर:-** बाप निराकारी सो निरहंकारी है तो दादा भी साकार में होते सदा निरहंकारी है। इतनी बड़ी हस्ती होते हुए भी कितना साधारण रहते हैं। एक ओर कहते यह सोने की डिब्बी है तो दूसरी ओर कहते यह पुराने ते पुरानी लोंग बूट है, जिसमें बाप ने प्रवेश किया है। दोनों ही बच्चों की सेवा में हाजिर है। तो ऐसे ही बच्चों को भी फालो फादर कर निरहंकारी हो सेवा करनी है।

गीत:- ओम् नमो शिवाए...ओम् शान्ति।

बच्चों ने किसकी महिमा सुनी? सब बच्चे कहेंगे कि ऊंचे ते ऊंच भगवान उनका नाम है शिव। शिवाए नम: कहते हैं ना, यह तो भारतवासी जानते हैं शिव जयन्ती भी मनाते हैं। महिमा भी बहुत करते हैं त्वमेव माताश्च पिता... परन्तु सिर्फ इतने तक ही कहते हैं शिवाए नम:.. वह मात-पिता कैसे हैं, वर्सा कैसे देते हैं – यह दुनिया भर में कोई नहीं जानते। यह तो एक वन्डरफुल हस्ती है। शिवबाबा तो है निराकार। जब तक शिवबाबा को शरीर न मिले तो शिवबाबा क्या करेंगे! शिवबाबा तो निराकार है। निराकार की ही महिमा गाते हैं। सबसे ऊंचे ते ऊंचा उनका ठाँव (रहने का स्थान) है। कौन सा ठाँव? मूलवतन। फिर ब्रह्मा विष्णु शंकर का कौन सा ठाँव है? सूक्ष्मवतन! फिर जगत अम्बा का ठाँव है – यह स्थूलवतन। यह तो सब जानते हैं कि जगत अम्बा तो यहाँ की रहने वाली होगी। जगत माना ही मनुष्य सृष्टि। नाम तो बहुत अच्छा है – जगत अम्बा, परन्तु वह कौन है? कहाँ से आई? यह कुछ भी जानते नहीं। जान पहचान कहाँ से मिली? जरूर कोई मनुष्य हस्ती से मिलनी चाहिए, जिसमें परमपिता परमात्मा आवे। निराकार आत्मायें भी साकार हस्ती में आती हैं। भल आत्मा तो जानवर में भी है परन्तु उनका कुछ भी गायन नहीं हैं। गायन किस हस्ती का होता है? निराकार शिवबाबा का। वह जब तक हस्ती में न आये तो कुछ कर न सके। आत्मा को भी जब तक हस्ती (शरीर) न मिले तो पार्ट बजा न सके। सिर्फ हस्ती का गायन नहीं। हस्ती में जब आत्मा आती है तब ही उनका गायन होता है। बाप कहते हैं मेरी महिमा तो सब करते हैं पतित-पावन, परन्तु मुझे भी मनुष्य तन चाहिए, जिसमें मैं प्रवेश करूं। बिगर हस्ती कुछ कर न सके। तो बाप भी आकर हस्ती लेते हैं। वह गर्भ में नहीं आते हैं। शिव जयन्ती भी गाई जाती है परन्तु शिवबाबा किस हस्ती में और कब आया, यह नहीं जानते। अच्छा रात में आया परन्तु किस हस्ती में आया, यह नहीं जानते। गाते भी हैं भागीरथ अर्थात् भाग्यशाली रथ तो जरूर मनुष्य हस्ती होगी। यह जो हस्ती है, जिसमें परमपिता परमात्मा

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

b प्रवेश करते हैं यह कितनी ऊंची हस्ती है। अभी तुम जानते हो कि शिवबाबा ब्रह्मा के सिवाए किसी भी हस्ती में आ नहीं सकता। परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा ही आकर मनुष्य सृष्टि रचते हैं, जब-जब भारत बहुत दुःखी और भ्रष्टाचारी हो जाता है, परमपिता परमात्मा इसे हस्ती द्वारा ही समझा रहे हैं। इस भागीरथ बिगर शिवबाबा भी कुछ कर नहीं सकते। कोई तो चाहिए ना। यह हस्ती शिवबाबा की है। यह न हो तो तुम शिवबाबा से वर्सा पा नहीं सकते। गाया भी जाता है प्रजापिता ब्रह्मा अथवा त्रिमूर्ति ब्रह्मा। देव देव महादेव कहते हैं। इन तीनों में भी ब्रह्मा का नाम ऊंचा क्यों? ब्रह्मा तो यहाँ ही है, जिसके रथ में आते हैं। विष्णु और शंकर को तो देवता कहते हैं। अच्छा जो ब्रह्मा है उनको देवता

c कहना चाहिए? वह तो है प्रजापिता ब्रह्मा। मनुष्य तन चाहिए। गाया भी हुआ है प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सृष्टि रचते हैं। तो जरूर ब्रह्मा मुख से ही ब्राह्मण रचेंगे। तो यह कितनी बड़ी हस्ती है परन्तु है कितनी साधारण। इतनी बड़ी हस्ती, इनका रहन-सहन देखो कितना साधारण है। कितना निराकार और निरहंकारी है। अभी आकर तुम्हारी सेवा में उपस्थित हुआ है। देखो कैसे बैठ पढ़ाते हैं। तुम क्या पढ़ते हो? तुम कहेंगे हम राजयोग की पढ़ाई पढ़ते हैं, कौन पढ़ाते हैं? परमपिता परमात्मा। तो छोटे, बड़े, बूढ़े, जवान, सब पढ़ते हैं। यह ईश्वरीय कॉलेज है — मनुष्य से देवता अथवा विश्व का मालिक बनने का। यहाँ हम आये ही हैं पढ़ने अथवा विश्व की बादशाही लेने। लक्ष्मी-नारायण जब विश्व पर राज्य करते थे तो और कोई धर्म नहीं था, न कोई खण्ड था। एक ही भारत खण्ड था। अब फिर वह पद प्राप्त करने के लिए तुम यहाँ कैसे बैठे हो। इस पढ़ाई बिगर तुम विश्व के मालिक बन न सको। भारत शिवालय बन न सके। शिवबाबा ही गाया हुआ है निराकार,

d निरहंकारी। जब तक हस्ती में प्रवेश न करे तो निरहंकारीपना कैसे दिखावे। कितनी महिमा है — अकालमूर्त....परन्तु ऐसे नहीं कि वह मुर्दे को भी जिंदा कर सकते हैं। तुम बच्चों को बहुत नशा होना चाहिए कि हमको परमपिता परमात्मा पढ़ा रहे हैं। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा राजयोग सिखला रहे हैं। ब्रह्मा बिगर प्रजापिता किसको कह नहीं सकते। ऐसे नहीं कि शिव या विष्णु प्रजापिता हैं। नहीं। ब्रह्मा ही सारे मनुष्य सृष्टि का पिता है और आत्माओं का पिता है शिवबाबा, बाकी उस पिता को तो कोई जानते ही नहीं। अपनी आत्मा को ही नहीं जानते। कहते हैं पुण्य आत्मा, पाप आत्मा फिर क्यों कहते हम ही परमात्मा हैं। कितनी ठगी है। तुम बच्चे जानते हो आज से 5 हजार वर्ष पहले पीस, प्युरिटी, प्रासपर्टी थी। अब बाप कहते हैं मैं आकर सबको नॉलेज देता हूँ, पहले तुम कुछ नहीं जानते

e थे, अब सब कुछ जानते हो। बाप की बायोग्राफी बाप से ही जानी जाती है। अब निराकार की बायोग्राफी कैसे हो सकती है? जरूर जब साकार में आये तब बायोग्राफी हो। सिर्फ आत्मा की बायोग्राफी नहीं हो सकती है। जीव आत्मा बनें तब पुनर्जन्म में आवे और बायोग्राफी भी हो। वे लोग कहत हैं 84 लाख योनियां हैं। बाप कहत हैं 84 लाख जन्म थोड़ेही होते हैं। यह सब गपोड़े हैं। बाप खुद कहते हैं मैं ब्रह्मा के तन में आकर तुमको वेदों का सार समझाता हूँ। साथ-साथ राजयोग सिखलाता हूँ और रचयिता रचना के आदि

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मध्य अन्त का राज़ भी समझाता हूँ। जब पहले-पहले बड़े-बड़े ऋषि मुनि ही नहीं जानते थे, तो उन्हों की औलाद फिर कैसे जान सकती। तो देखो बड़े ते बड़ी हस्ती कितने साधारण रूप में है। ऊंचे ते ऊंचा हीरा बनाने वाला बाप है। उनकी यह डिब्बी है। रथ कहो, पुरानी जुत्ती कहो, सबसे पुरानी जुत्ती यह है। पहले-पहले जब आत्मा आती है तो बिल्कुल नम्बरवन थी, श्री नारायण को नम्बरवन रखेंगे। श्री लक्ष्मी भी प्लस में है। उन्हों ने भी पुनर्जन्म लिए। पहले सूर्यवंशी फिर चन्द्रवंशी में... ऐसे जन्म लेते 84 का भी हिसाब चाहिए ना। 84 लाख का हिसाब तो कोई बता न सके। 84 लाख जन्मों के कारण फिर कल्प की आयु भी लाखों वर्ष लिख दी है। अगर लाखों वर्ष होते तो भारतवासी हिन्दू बहुत होते। परन्तु यह तो संख्या और ही कम है। भारत का देवी देवता धर्म प्रायःलोप हो गया है। कोई भी अपने को देवता नहीं कह सकते क्योंकि देवता तो सर्वगुण सम्पन्न f थे। अब वह हैं नहीं। रावणराज्य है न कि रामराज्य। दुनिया वाले न राम की, न रावण की बायोग्राफी को जानते हैं। दिनप्रतिदिन रावण की पाग बढ़ती जाती है। दुनिया पतित होती जाती है। 16 कला से गिरते-गिरते नो कला। सब कहते मुझ निर्गुण हारे में कोई गुण नाही। आपेही तरस करो। तो हम सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण बनें। भारत पहले परिस्तान था। कहने मात्र तो कहते हैं परन्तु सृष्टि चक्र को कुछ जानते नहीं। बाप कहते हैं तुमको माया ने तुच्छ बुद्धि बना दिया है। परन्तु अपना घमण्ड कितना है।

g तुम बच्चों को बाप कहते हैं मीठे बच्चे - तुम राम को याद करो तो माला में पिरोने लायक बन जायेंगे। रूद्र माला के बाद होती है विष्णु माला। भगत माला में भक्तों की महिमा होती है। यह रूद्र माला फिर विष्णु माला में पिरोनी है यानी विष्णु के राज्य में जाते हैं। कितना ऊंचा ज्ञान है। सन्यास भी दो प्रकार का है। वह है हठयोग सन्यास। कर्म सन्यास तो कभी हो नहीं सकता। कर्म बिगर तो मनुष्य रह नहीं सकता। प्राणायाम चढ़ाकर बैठ जाएं फिर भी कर्म तो करेंगे ना। अनेक प्रकारों से प्रैक्टिस करते हैं। वह कोई राजयोग नहीं। वह है हद का सन्यास, हठयोग सन्यास। वह भी भारत का धर्म है पवित्रता का। परन्तु देवी-देवताओं जितना पवित्र और कोई धर्म हो नहीं सकता। वहाँ कोई सन्यास नहीं करना पड़ता क्योंकि आत्मा पवित्र है तो उनको शरीर भी पवित्र मिलता है। आत्मा में ही खाद पड़ती है। कला कम होते-होते पतित बनना है। अभी सभी आत्मायें आइरन एज में हैं, सब सांवरे हैं। आत्मा जब पवित्र थी तो गोरी थी। अभी आत्मा अपवित्र है तो शरीर भी अपवित्र काले हैं। गाया भी जाता है श्याम-सुन्दर। कृष्ण का चित्र भी काला और गोरा बनाते हैं। अभी तुम सभी श्याम-सुन्दर हो। पहले भारत गोल्डन एजेड था, अब आइरन एजड है। अब फिर बाबा ज्ञान चिता पर बिठाए गोरा बनाते हैं। ज्ञान चिता पर बिठाए काम चिता पर बैठना कैंसिल करा दिया। अगर मुक्ति और जीवनमुक्ति चाहिए तो वह हथियाला कैंसिल करना है। पवित्रता की राखी बाँधो। यह अभी की ही h बात है जबकि तुम ब्रह्मा के बच्चे हो। ब्राह्मण बनने बिगर कोई भी यहाँ आ नहीं सकते। तुम हो ब्रह्मा मुख वंशावली। शिवबाबा कहते हैं मुझ निराकार की महिमा तो गाते हैं,

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

परन्तु शरीर जब तक न लें तो कर ही क्या सकते। मैं बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में आता हूँ। अभी सबका विनाश होना है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, किसकी? कलियुग की स्थापना तो कभी होती नहीं। स्थापना होती है सतयुग की, संगम पर। बाप कहते हैं मैं आता हूँ संगमयुग पर। तुम ब्राह्मणों के लिए यह संगम है, बाकी सबके लिए है कलियुग। इस समय सब घोर अन्धियारे में हैं। तो घोर अन्धियारे को ही बाप आकर घोर सोझरा करते हैं। तुम बच्चे जानते हो यह तो विचित्र चीज़ है। कृष्ण तो छोटा बच्चा है, वह तो कुछ समझा न सके। कृष्ण की आत्मा भी भिन्न नाम रूप में इनसे समझ रही है, अन्तिम जन्म में, इसलिए इनको श्याम सुन्दर भी कहते हैं। अच्छा-

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- बापदादा के समान निरहंकारी और निराकारी बनना है। सबकी सेवा करनी है।

२- मुक्ति-जीवनमुक्ति के लिए पवित्रता की राखी बांधनी है। ज्ञान चिता पर बैठना है।

वरदान:- शक्तिशाली याद द्वारा परिवर्तन, खुशी और हल्के पन की अनुभूति करने वाले स्मृति सो समर्थ स्वरूप भव

शक्तिशाली याद एक समय पर डबल अनुभव कराती है। एक तरफ याद अग्नि बन भस्म करने का काम करती है, परिवर्तन करने का काम करती है और दूसरे तरफ खुशी व हल्के पन का अनुभव कराती है। ऐसे विधिपूर्वक शक्तिशाली याद को ही यथार्थ याद कहा जाता है। ऐसी यथार्थ याद में रहने वाले स्मृति स्वरूप बच्चे ही समर्थ हैं। यह स्मृति सो समर्थी ही नम्बरवन प्राइज का अधिकारी बना देती है।

स्लोगन:-

अनुभवी वह है जिसकी दिल मजबूत और बुजुर्ग है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

2-9-86, प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"इस बेहद की महफिल में बाप आये हैं, गरीब बच्चों को गोद में लेने,
तुम्हें देवताओं की महफिल में आने की जरूरत नहीं"

प्रश्न:-बच्चों को कौन सा दिन बड़े ही धूमधाम से मनाना चाहिए?

उत्तर:-जिस दिन मरजीवा जन्म हुआ, बाप में निश्चय हुआ, वह दिन बड़े ही धूमधाम से मनाना चाहिए। वही तुम्हारे लिए जन्माष्टमी है। अगर अपना मरजीवा जन्मदिन मनायेंगे तो बुद्धि में याद रहेगा कि हमने पुरानी दुनिया से किनारा कर लिया, हम बाबा के बन गये अर्थात् वर्से के अधिकारी बन गये, फिर अपार खुशी रहेगी।

गीत:-महफिल में जल उठी शमा.....ओमशान्ति। गीत, कवितायें, भजन, वेद शास्त्र, उपनिषद महिमायें देवताओं की आदि बहुत ही भारतवासी वा तुम बच्चे सुनते आये हो। अभी तुमको समझ मिली है कि यह सृष्टि चक्र कैसे फिरता है। पास्ट को भी बच्चों ने जाना है। प्रजेन्ट दुनिया का क्या है, वह भी देख रहे हो। वह प्रैक्टिकल में अनुभव किया है। बाकी जो कुछ होना है सो अभी प्रैक्टिकल में अनुभव किया है। पास्ट जो हुआ है उनका अनुभव किया है। बाप ने ही सब समझाया है। बाप बिगर कोई समझा न सके। अथाह मनुष्य हैं परन्तु वे कुछ भी जानते ही नहीं हैं। रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को कुछ नहीं जानते। अभी कलियुग का अन्त है, यह भी मनुष्य नहीं जानते। हाँ आगे चल अन्त में जानेंगे। बाकी सारी नालेज नहीं जानेंगे। पढ़ने वाले स्टूडेन्ट ही, जान सकते हैं। यह है मनुष्य से राजाओं का राजा बनना। सो भी न आसुरी राजायें, परन्तु दैवी राजायें। जिन्हों को आसुरी राजायें पूजते हैं। यह सब बातें तुम बच्चे ही जानते हो। विद्वान आचार्य आदि जरा भी नहीं जानते। भगवान जिसको शमा कह पुकारते हैं महफिल में, परन्तु जानते नहीं हैं। गीत गाने वाले भी कुछ नहीं जानते। महिमा सिर्फ गाते हैं, भगवान भी कोई समय इस दुनिया की महफिल में आया था। महफिल अर्थात् जहाँ बहुत इकट्ठे हों। महफिल में गाना, पीना, शराब आदि मिलता है। परन्तु इस महफिल में तुमको बाप से अविनाशी ज्ञान रत्नों का खजाना मिलता है, अथवा ऐसे कहें कि हमको बेकुण्ठ की बादशाही बाप से मिल रही है। इस सारी महफिल में बच्चे ही बाप को जानते हैं कि बाप हमको सौगात देते हैं। बाप महफिल में क्या देते हैं। मनुष्य महफिल में एक दो को क्या देते हैं। रातदिन का फर्क है। बाप जैसे-तैसा खिलाते हैं। और वो सस्ते में सस्ती वस्तु बना खिलाते हैं। खिलौना और बने में कितना फर्क है। अभी तुम बच्चे जानते हो कि बेहद का बाप हमको स्वर्ग की बादशाही का वरदान दे रहे हैं। शिवबाबा इस महफिल में आते हैं ना। शिव जयन्ती भी तो मनाते हैं ना। परन्तु वह क्या आकर करते हैं, यह किसको भी पता नहीं है। वह बाप है। बाप जरूर कुछ खिलाते हैं, देते हैं। मातपिता जीवन की पालना तो करते हैं ना। तुम भी जानते हो वह मात पिता आकर के बेहद के जीवन की सम्भाल करते हैं। एडाप्ट करते हैं। बच्चे खुद कहते हैं बाबा हम आपके 10 दिन के बच्चे हैं, अर्थात् 10 दिन से आपके बने हैं। तो समझना चाहिए कि हम आप से स्वर्ग की बादशाही लेने के हकदार बन गये। तो बहुत निश्चय हो जाना चाहिए। बाबा हम आपके हो चुके हैं। चिट्ठी में भी प्रेम से लिखते हैं। शिवबाबा हम आपके हो चुके हैं, गोद ली है। जीते जी किसकी गोद ली जाती है, अन्धश्रद्धा से नहीं लेते हैं। मात पिता भी गोद में देते हैं तो हमारा बच्चा उनके पास जरूर खुशी रहेगा। और ही प्यार से सम्भालेंगे। तुम भी लौकिक बाप के बच्चे बने, बेहद के बाप की गोद लेते हो। बेहद का बाप कितना अच्छे से गोद लेते हैं। बच्चे भी लिखते हैं बाबा हम आपका हो गया। किसी दूर से तो नहीं कहेंगे। प्रैक्टिकल में गोद ली जाती है तो फिर शेरमनी भी की जाती है। जैसे जन्मदिन मनाते हैं ना। जन्माष्टमी कहते हैं। फिर 6-7 दिनों के बाद छटी करते हैं। कृष्ण की भी जन्माष्टमी मनाते हैं तो यह भी बच्चे बनते हैं, कहते हैं हम आपके हैं। तो 6-7 दिन बाद नामकरण भी मनाना चाहिए ना। परन्तु कोई भी मनाते नहीं। अपनी जन्म अष्टमी तो बड़ी धूमधाम से मनानी चाहिए, परन्तु मनाते नहीं हैं। ज्ञान भी नहीं है कि हमको जयन्ती मनानी है। 12 मास बाद क्यों मनाते हैं, पहले ही मनाना चाहिए। ज्ञान ही नहीं, निश्चय नहीं होता।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जन्म दिन मनाया फिर अगर भूलती होंगे तो समझा जायेगा यह मर गया।जन्म भी तो कोई बहुत धूमधाम से मनाते हैं,कोई गरीब होगा तो छुछ भूगरा।चीनी-वनाई भी बाँट सकते हैं।जास्ती नहीं।बच्चों को पूरी रीति समझ में नहीं आता है इसलिए खुशी नहीं होती है।जन्मदिन मनायें तो याद भी पक्का पड़े।परन्तु वह बुद्धि नहीं है।बच्चों को बाप और वर्से को पूरा याद करना चाहिए।बच्चा कब यह भूलता थोड़ेही है कि मैं फलाने का बच्चा हूँ।यहाँ कहते हैं कि बाबा आप हमको याद नहीं पड़ते हैं।ऐसे अनाकाल में तो कब नहीं कहेंगे।याद न पड़ने का सवाल भी नहीं उठता।तुम बाप को याद करते हो।बाप तो सबको याद करते ही हैं।सब हमारे बच्चे काम चिता पर जलकर भस्म हो गये हैं।ऐसे और कोई गुरू वा महात्मा आदि नहीं कहेंगे।यह भगवानुवाच ही है कि मेरे सब बच्चे हैं।भगवान के तो सब बच्चे हैं ना।सभी आत्मायें,परमात्मा बाप के बच्चे हैं।बाप भी जब शरीर में आते हैं तब कहते हैं यह सब आत्मायें हमारे बच्चे हैं।काम चिता पर वह भस्मीभूत तमोप्रधान हो पड़े हैं।भारतवासी कितने आसुरी एज्यु हो गये हैं।काम चिता पर बदना सर्प पर बदना है। बैकुण्ठ में सर्प आदि थोड़ेही होते हैं।जो किसको डसें।ऐसी बात हो नहीं सकती।बाप कहते हैं 5विकारों की प्रवेशता होने से तुम तो जैसे जंगली क्रीचर बन गये हो।भगवानुवाच-मुख नाम सागर के बच्चे जिनको कल्प पहले भी आकर पावन स्वच्छ बनाया था,वह अब पतित काले बन गये हैं।बच्चे जानते हैं हम गोरे से साँवरे कैसे बनते हैं।सारे 84 जन्मों की हिस्ट्री जाग्राफी नटशेल में बुद्धि में है।इस समय ही तुम जान सकते हो।कोई 5-6वर्ष से लेकर अपनी वायोग्राफी जानते हैं।नम्बरवार बुद्धि अनुसार अपनी वायोग्राफी को जानते हैं।अभी तुम बच्चे भी अपने 84जन्मों की वायोग्राफी को जानते हो।हरेक अपने पास्ट वायोग्राफी को भी जानते हैं।हमने क्या2बुरा काम किया,मोटी2बातें बताई जाती हैं।हमने क्या2किया,यह2 वेरा जिन्होंने 84 जन्म पूरे लिए हैं,उनके स्मृति में आयेगा।अभी फिर हमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है।बनेंगे भी वही जिन्होंने 84 जन्म लिए हैं।यह दुनिया अभी है ही तमोप्रधान।जन्म लेते2तुम्हारी आत्मा तमोप्रधान बनी है।पहले आत्मा सतोप्रधान थी अभी तो है ही कलियुग का अन्त।अभी फिर सतोप्रधान बन अपने घर कैसे लौटें।यह बाप बैठ समझाते हैं।बाप कहते हैं तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने,घर जाने के लिए मैं तुम्को मत देता हूँ।इस लिए बाप कहते हैं यह नालेज सब धर्म वालों के लिए है।इस समय सारी दुनिया जड़जड़ीभूत अवस्था में है।कलियुग का अन्त है।अब इस पुरानी तमोप्रधान दुनिया का विनाश होना है। अगर मुक्तिधाम घर जाने चाहते हो,सो तो बाप ही ले जा सकते हैं।सिवाए बाप के कोई भी अपने घर जा नहीं सकते।वही सर्व का सद्गतिदाता,पतित पावन है।उनके बिगर कब कोई वापिस जा नहीं सकते।कोई पास यह युक्ति है नहीं,जो बाप को याद कर और वहाँ पहुँचें।पुनर्जन्म तो सबको लेना ही है।मोक्ष का ख्याल तो कब भी नहीं आना चाहिए।यह हो नहीं सकता।यह तो अनादि बना बनाया ड्रामा है।इससे कोई निकल नहीं सकते।सभी का एक बाप ही लिबरेटर गाइड है।वही आकर युक्ति बताते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे।नहीं तो सजायें खानी पड़ेंगी।पुरुषार्थ नहीं करते तो समझते हैं यहाँ का नहीं है।मुक्ति जीवनमुक्तिधाम का रास्ता तुम बच्चे भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हो।समझाने की हरेक की रफ्तार अपनी2 होती है।तुम यह तो कह सकते हो कि इस समय पतित तमोप्रधान दुनिया है।कितनी मारामारी होती है,सतयुग में यह नहीं होगी।अभी कलियुग है ना।यह तो सब मनुष्य मानेंगे-सतयुग,त्रेता,द्वापर,कलियुग।गोल्डन एज सिल्वर एज...कहते हैं ना राम ने रामराज्य स्थापन करने के लिए रावण पर जीत पाने बन्दरों का लश्कर लिया।अभी तुम जानते हो हम बराबर बन्दरबुद्धि थे।शक्ल मनुष्य जैसी। सीरत बन्दरों जैसी थी,क्योंकि तमोप्रधान है ना।कहाँ सतोप्रधान देवताओं की बात,कहाँ असुरों की।देवताओं के आगे जाकर गाते हैं आप सर्वगुण सम्पन्न...हम सम्पूर्ण विकारी पापी।यह तो सब मानते हैं हमारे में कोई अब गुण नहीं हैं।बाबा आप आकर रहम करो। फिर से हमको पवित्र बनाओ।हम पतित हैं।पतित को बन्दर कहा जाता है।आगे थोड़ेही समझते थे कि हम बन्दर हैं।अभी समझते हैं यह रावण सम्प्रदाय सब बन्दर हैं।बाबा ही

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

फिर से हमको पवित्र बनाओ हम पतित हैं। पतित को बन्दर कहा जाता है। आगे थोड़ेही समझते थे कि हम बन्दर हैं।अभी समझते हैं यह रावण सम्प्रदाय सब बन्दर हैं।बाबा ही आकर रावण पर जीत प्राप्त कराते हैं।रामराज्य के लिए लायक बनाते हैं।कैसी बन्दरपुन बातें हैं।कब किसकी बुद्धि में आ न सके।जब तक बाप न आकर समझावें।वेद शास्त्र ग्रंथ आदि कितने हैं।बाबा कहते हैं इन वेदो शास्त्रों से कोई भी हमारे साथ नहीं मिलसकता है।अभी तुम बच्चे समझते हो- कि वापिस एक भी जा नहीं सकेंगे।सबको तमोप्रधान,तमो रजो,तमो में आना ही है।अब बाप इस पतित महफिल में आते हैं।कितनी बड़ी महफिल है।बन्दरों की महफिल में आता हूं। मैं देवताओं की महफिल में कब नहीं आता। जहां माल-ठाल 36 प्रकार के भोजन मिल सकते वहां मैं आता ही नहीं हूं। जहां रोटी भी नहीं मिलती,बच्चों को,उन्हों को आकर गोद लेकर बच्चा बनाकर गोद में लेता हूं। साहूकारों को गोद में नहीं लेता हूं। वह अपने ही तन में घर रहते हैं। खुद कहते हैं कि हमारे लिए तो स्वर्ग यहां ही है। फिर कोई मरता है तो कहते हैं कि स्वर्गवासी हुआ।तो जरूर यह नर्क हुआ ना। तुम क्यों नहीं समझाते हो।अभी अखबार में भी युक्तियुक्त कोई से छपवाते नहीं हैं। यह अक्षर ही सिद्ध करते हैं कि भारतवासी नर्कवासी हैं। परन्तु ऐसे युक्तियुक्त कोई नहीं अखबार में डालता है।बच्चे यह जानते हैं हमको ड्रामा पुरुषार्थ कराते हैं,हम जो पुरुषार्थ करते हैं वह ड्रामा में नूंध है। पुरुषार्थ करना भी जरूर है।ड्रामा पर बैठ नहीं जाना है। हर बात में पुरुषार्थ जरूर करना ही है। कर्मयोगी राजयोगी है ना। वह है कर्मसन्यासी हठयोगी। तुम तो सब कुछ कहते हो।घर में रहते बाल बच्चों को सम्भालते हो वह तो भाग जाते हैं। अच्छा नहीं लगता है, परन्तु वह पवित्रता भी भारत में चलिए ना। फिर भी अच्छा है। अभी तो पवित्र भी नहीं रहते हैं।ऐसे नहीं कि कोई पवित्र दुनिया में जा सकते हैं। सिवाए बाप के कोई जा नहीं सकते हैं। अभी तुम जानते हो शान्तिधाम तो हमारा घर है।परन्तु जावें कैसे। बहुत पाप किये हुए हैं। ईश्वर सर्वव्यापी कहना यह बड़ा पाप है। ईश्वर की हानी करते हैं। अब यह किसकी इज्जत गंवाते हैं? शिवबाबा की। कहते-दिल्ली कलकत्ता में कह देते हैं। बाप रिपोर्ट क्किसको करें। बाप कहते हैं मैं ही समर्थ हूं। मेरे साथ फिर धर्मराज भी है।यह सबके लिए कयामत का समय है। सब सजायें आदि भोगकर फिर वापिस चले जायेंगे। ड्रामा की बनावट ही ऐसी है।सजाये खानी ही है।जरूर।यह तो सा0भी होते हैं। गर्भजेल में भी सा0होता है।तुमने यह2कान किये हैं फिर उनकी सजा मिलती है तब तो कहते हैं कि अब इस जेल से निकालो ।हम फिर ऐसे पाप नहीं करेंगे।बाप यहां सम्मुख आकर यह सब बातें सम्मुख समझाते हैं।गर्भ में सजायें खाते हैं,वो ही जेल है। दस फील होता है।वहां सतयुग में दोनों जेल नहीं होती।यहां तो दोनों हैं।वो यह भी कहते हैं कि यह राइट है,वहां कोई पाप होता नहीं जो गर्भ में सजा खायें।अब बाप समझाते हैं बच्चे मुझे याद करो तो याद चिकल जायेगी।यह तुम्हारे अक्षर बहुत मानेंगे। भगवान का नाम तो है,सिर्फ भूल की है जो कृष्ण का नाम डाल दिया है। अब बाप भी बच्चों को बैठ समझाते हैं।यह जो सुनते हो सुनकर अखबार में डालो। शिवबाबा इस समय सबको कहते हैं तुम 84जन्म भोग तमोप्रधान बने हो। अभी फिर मैं राय देता हूं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। फिर तुम मुक्ति जीवनमुक्ति धाम में चले जायेंगे। बाप का यह फरमान है मुझे याद करो तो याद चिकल जायेगी। अच्छा- बच्चे कितना समझाकर कितना समझाये.....

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

सूचना:- आप सबको ज्ञात हो कि मीठे बाबुल को अति स्नेही,सदा बापदादा के संग-संग रहने वाली,आदि रतन,त्याग-तपस्या की मूर्त- मोठो "ववोन मदर" 2 सितम्बर बुधवार के दिन दोपहर 3 बजे के करीब मधुबन में अपना यह पुराना शरीर छोड़ 87 वर्ष की आयु पूरी कर पल भर में बाबुल की गोद में चली गई। उनके निमित्त यज्ञ की तरफ से सर्व सेवाकेन्द्रों पर 10सितम्बर गुरुवार के दिन - मीठा चावल,पूड़ी और जीरे वाले आलू की सब्जी का भोग लगाया जाए-यही भोग सर्व ब्राह्मणों को स्वीकार कराना है। (विस्तार में दिनचर्या अलग से भेजी जायेगी) ओमशान्ति।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

का भोजन है। बोल भी मुख का भोजन ही है। कर्म हाथों का, पांव का भोजन है। तो सब चेक करना चाहिए ना। पहले करके पीछे सोचना, उसको क्या कहा जायेगा? अबल समझदार।

सिर्फ यह एक बात सदा अपना निजी संस्कार बना दो। जैसे स्थूल में भी कई आत्माओं के संस्कार होते हैं ऐसे वैसे कोई चीज़ कब स्वीकार नहीं करेंगे। पहले चेक करेंगे देखेंगे, फिर स्वीकार करेंगे। बाप तो सब महान पवित्र आत्मायें हो, सर्व श्रेष्ठ आत्मायें हो। तो ऐसी आत्मायें बिना चेकिंग के संकल्प को स्वीकार कर लें, वाणी से बोल दें, कर्म को कर लें यह महानता नहीं लगेगी। तो मधुबन निवासियों के लिए सिर्फ एक ही बात है। चेकिंग की मशीनरी तो है ना। अभ्यास ही मशीनरी है।

मधुबन वालों की महिमा भी बहुत गाते हैं। अथक पन की सुगन्ध तो बहुत काल से आती है। जैसे अथक पन की सुगन्ध आती है यह सर्टीफिकेट तो मिला है, इसके साथ और क्या पढ़ करेंगे? जैसे अथक हो वैसे ही सदा एकरस। जब भी रिजल्ट देखें तो सबकी रिजल्ट एकरस अवस्था में एक नम्बर हो। दूसरा तीसरा नम्बर भी नहीं। क्योंकि मधुबन है सबको लाइट और माइट देने वाला। अगर लाइट हाउस, माइट हाउस ही हिलता रहेगा तो दूसरों का क्या हाल होगा। मधुबन निवासियों का सब वायुमण्डल बहुत जल्दी चारों ओर फैलता है। यहां की छोटी बात भी बाहर बड़े रूप में पहुंचती है। क्योंकि बड़े आदमी हो ना। सदा छत्रछाया में रहने वाले। स्वर्ग में तो प्राप्त मिलेगी लेकिन यहां भी काफी प्राप्त है। मधुबन निवासियों को सब बना बनाया मिलता है। एक ड्यूटी बजाई बाकी सब बना बनाया। कहां से आता है, कितना आता है कोई संकल्प की जरूरत ही नहीं। सिर्फ सेवा करो और मेवा खाओ। 36 प्रकार के भोजन भी मधुबन वालों को बार2 मिलते हैं। तो 36 गुण भी तो धारण करने पड़ेंगे। हरेक मधुबन निवासी पवित्रता की लाइट के ताजधारी तो होना ही है लेकिन उबल ताज। एक गुणों का ताज दूसरा पवित्रता का ताज। जिस ताज में कम से कम 36 हीरे तो होने ही चाहिए।

आज बापदादा मधुबन निवासियों को खास और सभी को आम गुणों के ताज की क्राउन पेरीमनी करा रहे हैं। हरेक को जो भी देखे तो ताजधारी देखे। हरेक गुण रूपी रत्न चमकता हुआ औरों को भी चमकाने वाला हो। (बापदादा ने ड्रिल कराई)

सभी लवलीन स्टेज पर स्थित हो ना। एक बाप दूसरा न कोई। इसी अनुभूति में कितना अतिइन्द्रिय सुख है। सर्व गुणों से सम्पन्न श्रेष्ठ स्थिति अच्छी लगती है ना। इसी स्थिति में दिन और रात भी बीत जाए फिर भी सदा इसी में रहने का संकल्प रहेगा। सदा इसी स्मृति में समर्थ आत्मा रहो। अच्छा-

बापदादा निरन्तर बच्चों से मिलन मनाते रहते हैं और मनाते रहेंगे। अनेक बच्चे होते भी हरेक बच्चे के साथ बाप मिलन मनाते ही हैं। क्योंकि शरीर के बन्धन से मुक्त बाप और दादा दोनों एक सेकेण्ड के अन्दर अनेकों को भासना दे सकते हैं। अच्छा-

दीदी जी के साथ:- रायल फैमली बन चुकी है या अभी बन रही है? राज्य कारोबार चलाने वाले निकल चुके हैं या अभी निकलने हैं? एक हैं चलाने वाले एक हैं कारोबार में आने वाले। जो तख्तनशीन होंगे वह राज्य चलाने वाले। और जो सम्बन्ध में होंगे वह हैं राज्य कारोबार में आने वाले। तो राज्य कारोबार चलाने वाले भी अभी बन रहे हैं ना। राज्य कारोबार चलाने वालों की विशेषता क्या होगी? तख्त पर तो सब नहीं बैठेंगे। तख्त वालों के सम्बन्धी तो बनेंगे लेकिन तख्त पर बैठने वालों की तो लिमिट है ना। रायल फैमली में आने वाले और राज्य सिंहासन पर बैठने वाले उन्हों में भी अन्तर होगा। कहलायेंगे तो वह भी नम्बर वन नम्बर टू विश्व महाराजन की रायल फैमली। लेकिन अन्तर क्या होगा? तख्त नशीन कौन होंगे, उसके भी कोई कायदे होंगे ना। इस पर सोचना।

संगमयुग पर तो दिलतख्त के अधिकारी सबको बाप बनाते हैं। भविष्य में राजे-महाराजे तो बनेंगे लेकिन फर्स्ट नम्बर वाला तख्त जो फर्स्ट लo नाo वाला होगा उस तख्तनशीन कौन होंगे? छोटे 2 तख्त और राज्य दरबार तो लगेंगे लेकिन विश्व महाराजन

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

1-5-74. 2

तुम आयु कम होने का ब्रेक देते हो और योग से आयु को बढ़ाते हो। अब तुम बच्चों को अपनी
ो बड़ा बनना है=योग बल से। योग के लिए बाबा बहुत जोर देते रहते हैं। परन्तु कई समझते ही
। कहते हैं बाबा हम भूल जाते हैं। तब बाबा कहते हैं योग कोई और बात नहीं। यह है याद की
त्रा। बाप को याद करते2पाप कट जावेंगे। अन्त मती सो गति हो जावेगी। इस पर एक मिसाल भी
कोई ने किसको कहा तुम तो भैंस हो। तो वह समझने लगा कि मैं तो भैंस हूँ। बोला इस दरवाजे
ल्ली। बोले मैं भैंस हूँ2कैसे निकलूं। सचमुच भैंस बन गये। यह एक मिसाल बैठ बनाया है। बाकी ऐसे को
ा। यह कोई यथार्थ मिसाल नहीं है। हमेशा रियल बात पर मिसाल बनाया जाता है। परन्तु यह यथार्थ
है नहीं। इस समय तुमको बाप जो समझाते हैं उनके फिर सोहार भक्ति मार्ग में बनाये जाते हैं।
मेले मलाखड़े होते हैं। बाकी इस समय जो कुछ होता है उनके सोहार बन जाते हैं। तुम यहाँ कितने
बैठे हो। मेले मलाखड़े में कितने पैसे हो जाते हैं। मिट्टी बैठ कर जोर से हिलते हैं समझते हैं पाप
मिट जावेंगे। बाबा का खुद यह सब किया हुआ है। नासिक में पानी बहुत गंदा होता है वहाँ जाकर
मलते थे। समझते थे पाप विनाश हो जावेंगे। फिर उस मिट्टी में साफ करने लिए पानी ले आते थे
य करते थे। अभी तो समझते हैं कितने बड़े मूर्ख थे। पण्डे लोग कि[illegible]

3

ाती हो। यह वेहद का बाप है उनका नाम है शिव। वह कल्याणकारी है। इक्ठा कर स्व र्ग की
करते हैं। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। यह सारा ज्ञान तुम बच्चों को मिला है फिर भूलना क्यों चाहिए
बिल्कुल सहज है। चलते फिरते बाप को और वर्से को याद करना है। शान्तिधाम और सुखधाम। तुम
ा आते हो मुरली सुन कर जाते हो फिर सुनानी भी चाहिए। ऐसे नहीं सिर्फ एक ब्राह्मणी ही मुरली
ाह्मणी को आपसमान बनाकर उन्हें तैयार करने चाहिए। तब बहुतों का कल्याण कर सकेंगी। अगर एक
कहीं चली जाती तो दूसरे क्यों नहीं सेन्टर चला सकते। क्या धारणा नहीं की है। स्टूडेन्टस को पढ़ना
ना है। मुरली तो बहुत सहज है। कोई भी धारण कर आप समान बना सकते हैं। यहाँ तो बाप बैठे हैं।
बों को कहते हैं कोई भी बात में संशय न होना चाहिए। एक बाप ही है जो सब कुछ जानते हैं।
ों में तो अनेक पढ़ाने वाले और अलग2पढ़ाते हैं। यहाँ तो एक ही पढ़ाते हैं। एक ही एमआब्जेक्ट
कोई प्रश्न पूछने का भी रहता नहीं। सुबह में बैठ बच्चों को योग की यात्रा में मदद करता हूँ।
द के कुछ याद रहते हैं। तुम सर्व बच्चों की इस याद की मदद से सारे विश्व को पावन बनाना
में ही तुम अंगुली देते हो। पवित्र तो सारी दुनिया को बनना है। तो बाप सभी बच्चों पर नजर
शान्तिधाम में चले जावें। सभी का अटेन्शन खिचवाते हैं। बाप तो वेहद में ही बैठेंगे। मैं आया
[illegible] दुनिया को करेन्ट दे रहा हूँ तो पवित्र हो जायें। खुद का पूरा

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

a

ओम् शान्ति। पिताश्री शिवबाबा याद है।
मीठे बच्चे- पढ़ाई सबसे बड़ा हुनर है इसी पढ़ाई से तुम्हें मनुष्य से देवता बनना है। इसके लिए सच्ची कमाई करनी है।

प्रश्नः बाप जो मीठी2 बातें सुनाते हैं वह धारण कब होगी? उत्तरः- जब बुद्धि पर परमत वा मनमत का बोझ नहीं होगा। जो बच्चे सुनी सुनाई बातों पर चलते हैं उनकी बुद्धि में धारणा हो नहीं सकती। सिवाए ज्ञान के और कुछ भी कोई सुनाता है तो वह जैसे दुश्मन है। झूठी बातें सुनाने वाले बहुत हैं इसलिए दिव्य नयन, सी जो इविल मनुष्य से देवता बनने के लिए एक बाप की श्रीमत पर ही चलना है।

गीतः- हमारे तीर्थ न्यारे हैं.. ओम शान्ति। इस गीत में जैसे कि अपनी महिमा करते हैं। अपनी महिमा वास्तव में की नहीं जाती है यह तो सब समझाने की बातें हैं। जो भारतवासी बहुत समझदार थे वह अभी बेसमझ बने हैं। अब प्रश्न उठता है समझदार कौन थे? यह कहीं भी लिखा हुआ नहीं है। तुम हो गुप्त। कितनी वन्डरफुल बात है। एक तो बाप कहते हैं मेरे द्वारा ही बच्चे पढ़े जा सकते हैं। फिर मेरे द्वारा सब कुछ जान जाते हैं। सृष्टि के आदि मध्य अन्त का जो खेल है उनको समझ जाते हैं और कोई भी नहीं जानते। और
b एक मुख्य भूल की है जो कृष्ण का नाम डाल दिया है। जिसने गीता भूकर यह पद पाया उसका नाम डाल बहुत बड़ी भूल कर दी है। तो समझाना है कि भगवान सबका एक है। अब प्रश्न उठता है गीता का भगवान कौन? मनुष्य शास्त्रों को कितना मान देते हैं गाड़ी में रख परिक्रमा देते हैं। वेद उपनिषद को भी उठाते हैं। उनके साथ गीता को भी उठाने होंगे। पहले2 तो सिद्ध करना है कि भगवान एक है। फिर पूछना है गीता का भगवान कौन। पहले बाप का परिचय दो फिर भगवान सिद्ध हो जायेगा। भारत का आदि सनातन देवी देवता धर्म है। अगर नया धर्म कहें तो ब्राह्मण धर्म ही कहेंगे। पहले चोटी है ब्राह्मण। फिर देवतायें। ऊंच ते ऊंच है ब्राह्मण धर्म। जो ब्राह्मण धर्म ब्रह्मा द्वारा परमपिता परमात्मा रचते हैं। जो ब्राह्मण फिर देवता बनते हैं। मुख्य बात है भगवान को सर्वव्यापी कह दिया है। वह बाप है नई दुनिया का रचयिता। जरूर नई दुनिया ही रचेंगे ना। नई दुनिया में नया भारत होता है। जन्म भी भारत में लिया है। भारत को ही स्वर्ग बना रहे हैं। ब्रह्मा द्वारा तुमको अपना बनाकर फिर तुमको पढ़ाते हैं मनुष्य से देवता बनाने। पहले तुम शूद्र धर्म के थे। फिर आये ब्राह्मण वर्ण, देवी वर्ण में। भारत में वर्ण है। पीछे तो वृद्धि होती रहती है। एक धर्म से अनेक धर्म हो जाते हैं। डाल टैलियां यह सब धर्मों की ही बन जाती है। हरेक से फिर अपनी2 शाखायें निकलती हैं। मुख्य है फाउन्डेशन। फिर तीन। दयूबस मुख्यापुर, है आदि सनातन देवी देवता धर्म का। जो अभी सभी राजयोग सीख रहे हैं। देलवाड़ा मन्दिर बड़ा अच्छा बना हुआ है। उनमें सारी समझानी है। बच्चे यहाँ बैठे हैं कल्प पहले भी तुमने राजयोग की तपस्या की थी। जैसे कुरुक्षेत्र का यादगार क्रिश्चियन देश में है। वैसे तुम बच्चों ने यहाँ तपस्या की है तब तुम्हारा यादगार भी यहाँ है। है बड़ा सहज। परन्तु कोई भी जानते नहीं हैं। सन्यासी लोग तो कह देते यह सब कल्पना है। तुम्हारे लिए भी कहते हैं यह चित्र आदि सब कल्पना से बनाया है। जैसे कहते हैं व्यास ने कल्पना से शास्त्र बनाये हैं। जब तक बाप को जाने कल्पना ही समझते हैं। नालेजफुल तो एक बाप है ना। तो मुख्य है बाप का परिचय। वह बाप स्वर्ग का वर्सा देते हैं। कल्प पहले दिया था। फिर 84 जन्म लेना पड़े। भारतवासियों के ही 84 जन्म होते हैं। फिर संगमयुग पर बाप आकर राजधानी की स्थापना करते हैं। तुम बच्चों ने बाप द्वारा समझा है। जब अच्छी रीति तुम्हें बुद्धि में बैठे तब खुशी भी रहे। यह पढ़ाई बड़ी सोर्स आफ इनकम है। पढ़ाई से ही मनुष्य बैरिस्टर आदि बनते हैं। लेकिन यह पढ़ाई मनुष्य से देवता बनने की है। प्राप्ति कितनी भारी है। उन जैसी प्राप्ति कोई करा ही नहीं सकते। ग्रंथ में गाया हुआ है मनुष्य से देवता किये करत न लागी वार। परन्तु उनकी बुद्धि कब चलती नहीं। जरूर वह देवी देवता धर्म प्रायःलोप हो गया है। तब तो लिखते हैं मनुष्य से देवता बने। देवता सतोप्रधान थे फिर त्रेता में सतो फिर द्वापर में रजो फिर कलियुग में तमो। अब तुम बच्चों को बाप ने समझाया है। तुम्हारी बुद्धि में है हम सो ब्राह्मण फिर देवता बनते हैं। ब्राह्मण बनना है बाप को याद करने से। देवता बनना है पवित्र बनने से। तो बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। देह सहित देह के सब धर्मों को छोड़ो। मैं आत्मा हूँ। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। यह है योग अग्नि। इसमें ही तुम्हारे विकर्म भस्म होंगे। तो बाप कहते हैं मुझे याद करो। मैं तुम्हें पढ़ाता हूँ। तुम्हें पढ़ाई से ही ऊंच पद मिलता है। पढ़ाई से ही मनुष्य बैरिस्टर आदि बनते हैं। यह पढ़ाई मनुष्य से देवता बनने की है। प्राप्ति कितनी भारी है। उन जैसी प्राप्ति कोई करा ही नहीं सकते। ग्रंथ में गाया हुआ है मनुष्य से देवता किये करत न लागी वार। परन्तु उनकी बुद्धि कब चलती नहीं। जरूर वह देवी देवता धर्म प्रायःलोप हो गया है। तब तो लिखते हैं मनुष्य से देवता बने। देवता सतोप्रधान थे फिर त्रेता में सतो फिर द्वापर में रजो फिर कलियुग में तमो। अब तुम बच्चों को बाप ने समझाया है। तुम्हारी बुद्धि में है हम सो ब्राह्मण फिर देवता बनते हैं। ब्राह्मण बनना है बाप को याद करने से। देवता बनना है पवित्र बनने से। तो बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। देह सहित देह के सब धर्मों को छोड़ो। मैं आत्मा हूँ। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। यह है योग अग्नि। इसमें ही तुम्हारे विकर्म भस्म होंगे। तो बाप कहते हैं मुझे याद करो। मैं तुम्हें पढ़ाता हूँ। तुम्हें पढ़ाई से ही ऊंच पद मिलता है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

है संगम पर रचा होगा। कैसे रचा यह नहीं जानते। गुरुनानक ने भी परमात्मा की महिमा गाई है। इन जैसी महिमा कोई ने गाई नहीं है। इसलिए ग्रंथ को भारत में पढ़ते हैं। गुरु नानक का कलियुग में अवतार हुआ है। वह था धर्म स्थापक। राजाई तो पीछे हुई है। यह है छोटी 2 बिरादरियां। सबसे बड़ी बिरादरी ब्राह्मणों की है। ऊंच ते ऊंच उन्हों की देवी देवता धर्म स्थापन किया है। वास्तव में नई दुनिया ब्राह्मणों की ही कहेंगे। चोटी भल ब्राह्मणों की है परन्तु राजधानी देवी देवता से शुरू होती है। तुम ब्राह्मण रचे हुए हो तुम्हारी राजधानी नहीं है। तुम अपने लिए राजधानी स्थापन करते हो। बड़ी वन्डरफुल बातें हैं। मनुष्य तो कुछ नहीं जानते हैं। पहले 2 अपने को मालूम हुआ तो अपने द्वारा दूसरों
c को मालूम होता है। तुम शूद्र से ब्राह्मण बने हो। ब्रह्मा को भी अभी बाप द्वारा मालूम पड़ता है। एक को बताया तो बच्चों को भी बताना होता है। उनके तन द्वारा तुम बच्चों
d को बैठ समझाते हैं। यह है अनुभव की बातें। बाप कहते हैं सारे कल्प में एक ही बार मैं ऐसे आकर समझाता हूं। और अनेक धर्मों का विनाश एक धर्म की स्थापना कराता हूं। यह 5 हजार वर्ष का खेल है। तुम बच्चे जानते हो हमने 84 जन्म लिए हैं। विष्णु की नाभी से ब्रह्मा दिखाते हैं। ब्रह्मा और विष्णु फिर भी बच्चे किसके? दोनों बच्चे ठहरे शिव के। वह है रचयिता, यह रचना। इन बातों को कोई मनुष्य समझते नहीं। बिल्कुल नई बात है। बाबा भी कहते यह नई बातें हैं। कोई शास्त्रों में यह बातें हो न सकें। ज्ञान का सागर बाप है वही गीता का भगवान है। भक्तिमार्ग में शिवजयन्ति भी मनाते हैं। सतयुग त्रेता में नहीं मनाते। तो जरूर संगम पर ही आते होंगे। यह बातें तुम समझते जाते हो और समझाते रहते हो। जो समझाने वाले बाप की महिमा है वह बच्चों को होनी चाहिए। तुमको भी मास्टर ज्ञान का सागर बनना है। प्रेम का सागर, सुख का सागर बनने से तुम सो देवता बनते हो। तुम्हारे में वह देवोगुण यहाँ आते हैं। सुख का सागर प्रेम का सागर यहाँ बनना ही है। किसको दुख नहीं देना है। सबसे बहुत मीठा बनना है। तुम जो कड़वे एकदम जहर मिसल थे सो अब तुम वाइसलेस ब्राह्मण बन रहे हो। ईश्वर की सन्तान बन रहे हो। विषय से वाइसलेस देवता बन रहे हो। आधाकल्प तुम पतित सर्प थे अब समझाया जाता है विष छोड़ो। प्रेमा 1 लं० नं० पवित्र बनो। परन्तु बुद्धि में बैठता नहीं है। अब मनुष्यों को कैसे समझायें। हम तो समझ गये
e हैं मनुष्य तो बिल्कुल ही जड़जड़ीभूत अवस्था को पाये हुए हैं। सड़े हुए कपड़ों को सटका लगाने से फट जाते हैं। यहाँ भी ज्ञान की सोटी लगाओ तो पूंजा 2 टुकड़ा 2 हो जाते हैं कोई कपड़ा ऐसा मैला है जो साफ करने में बहुत टाइम लगता है। फिर वह भी हल्का पड़ मिल जाता है। बाबा धोबी है। तुम भी साथ में मददगार हो। धोबी भी नम्बरवार होते हैं। यहाँ भी नम्बरवार हैं। धोबी अच्छे कपड़े साफ न करें तो कहेंगे न कि यह तो जैसे हजाम है। आजकल कपड़े साफ धुलाई करने सीखे हैं। वारे गांव में तो बहुत मैले कपड़े धुलाई होते थे। यह हुनर भी बाहर वालों में आया है। बाहर वाले कुछ इज्जत देते हैं। पैसे आदि की मदद करते हैं। जानते हैं यह बहुत बड़ी बिरादरी वाले हैं। अब नीचे गिरे हैं। गिरने वाले पर तरस पड़ता है ना। बाप कहते हैं तुमको कितना धनवान बनाया था। माया ने क्या हालत कर दी है। तुम अभी समझते हो हम विजय माला के थे। फिर 84 जन्म ले क्या जाकर बने हैं। सुन्दर हैं ना। तुम समझा सकते हो। तुम भारतवासी तो स्वर्गवासी थे। भारत ही स्वर्ग था। फिर नीचे गिरते 2 नर्कवासी बने हैं। अब फिर बाप कहते हैं पवित्र बन स्वर्गवासी बनो। मन्मनाभव। शिव भगवानुवाच मामेकम याद करो। याद की यात्रा से ही तुम्हारे सब पाप कट हो जायेंगे। शास्त्रों में लिखा है कृष्ण ने भगाया, पटरानी बनाने। यह सब पढ़ रहे हैं पटरानी बन रहे हैं ना। परन्तु इन बातों को कोई समझ न सके। अब बाप ने आकर बच्चों को समझाया है। बाप कहते हैं मैं कल्प 2 तुमको समझाने आता हूं। तो पहले भगवान एक है। यह सिद्ध कर फिर बतलाओ गीता का भगवान कौन है। राजयोग किसने सिखाया था। भगवान ही ब्रह्मा द्वारा स्थापना कराते हैं और विनाश पालना कराते हैं। यह जो ब्राह्मण हैं वही फिर देवता बनते हैं। ब्राह्मण हैं जो मेहनत करते हैं अपनी राजाई के लिए। ब्राह्मण [illegible]

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सेकण्ड बाई सेकण्ड जो हुआ इस समय तक समझते ड्रामा। आगे बहुत पुरुषार्थ करना है। यह तो अच्छे समझते हैं। अभी हमारी वह अवस्था नहीं हुई है। टाइम लगेगा। कमातीत अवस्था हो जाए तो फिर सभी नम्बरवन पास हो जाएं। फिर तो लड़ाई भी लग जाए। विचार पड़ता है, अभी रिहर्सल हो रही है। दिनप्रतिदिन हंगामे रहते ही जाते हैं। आपस में खिटपिट चलती ही रहेगी। तुम जानते हो जहां तहां देखो लड़ने की तैयारियां कर रहे हैं। सब तरफ तैयारियां हो रही हैं। तुमने जो कुछ दिव्य दृष्टि से देखा है वह इन आंखों से देखना है। किनाए साक्षात्कार किया है। फिर वे आंखों से देखेंगे। स्थापना का भी साक्षात्कार किया है। फिर पिक्चर में राजाई भी देखेंगे। तुम बच्चों को तो बहुत खुशी होनी चाहिए। यह तो पुराना तन है। योग से आत्मा पवित्र बन जायेगी। फिर यह पुराना शरीर छोड़ना है। 84 जन्मों का चक्र पूरा होता है। फिर जरूर सभी को नया शरीर मिलेगा। यह भी समझने की बहुत सहज बातें हैं। समझ भी सकते हो-कलियुग के बाद सतयुग जरूर होगा। अनेक धर्मों का विनाश जरूर होगा फिर आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना। अर्थ बाप को आना पड़े। अभी तुम ब्राह्मण बने हो। देवता बनने के लिए दूसरे कोई हो न सके। तुम जानते हो हम शिवबाबा के बने हैं। शिवबाबा हमको वर्सा दे रहे हैं। शिवजयन्ती माना हो भारत को वर्सा मिला। शिवबाबा आया क्या आकर किया। इस्लामी, बौद्धी आदि ने तो आकर अपना धर्मस्थापन किया। बाप ने आकर क्या किया? जरूर स्वर्ग की स्थापना की। कैसे स्थापना होती है सो तुम अभी जानते हो फिर सतयुग में यह सब भूल जायेंगे। यह सब समझते हो 2। जन्मों का वर्सा अभी हम ले लेते हैं। यह ड्रामा में नूंध है। भल वहां समझेंगे यह बाप है यह बच्चा है। बच्चे को वर्सा मिलता है। परन्तु वह पालब्ध है। अभी की। सच्ची कमाई कर 2। जन्मों के लिए तुम वर्सा अभी पा रहे हो। 84 जन्म तो लेने ही हैं। सतोप्रधान से फिर सतो रजा तमो में आयेंगे। यह अच्छी रीति याद करने से फिर खुशी में भी रहेंगे। समझाने में बड़ी मेहनत लगती है। जब समझ जाते हैं तो उनको बड़ी खुशी होती है। जो अच्छी रीति समझते हैं वह बहुतों को अच्छी रीति समझाते रहते हैं। काटों को फूल बनाते रहते हैं। यह है पढ़ाई बेहद की। वर्सा भी बेहद का मिलता है। फिर इसमें त्याग भी बेहद का है। गृहस्थ व्यवहार में रहते सारी दुनिया का त्याग करना है। क्योंकि तुम जानते हो - यह पुरानी दुनिया खत्म होनी है। अब नई दुनिया में जाना है इसलिए बेहद का सन्यास कराते हैं। सन्यासियों का है हद का सन्यास और उनका है ह्ठयोग। इसमें हठ की तो बात नहीं रहती। यह तो पढ़ाई है। पाठशाला में पढ़ना है। मनुष्य से देवता बनने के लिए शिव भगवानुवाच। कृष्ण को न सके। कृष्ण को हेविनली गाड फादर नहीं कहेंगे। हेविनली प्रिन्स कहेंगे। तो कितनी मोटी 2 बातें समझने की है। और धारणकरने की है। देवी लक्षण चाहिए। कभी भी सुनी सुनाई बातों पर न लगना चाहिए। सिवाए ज्ञान के और कुछ सुनाते हैं तो समझो यह हमारा दुश्मन है। दुर्गति में ले जाते हैं। कब भी परमत पर नहीं लगना चाहिए परमत पर चला तो यह मरा। बाप समझाते रहते हैं झूठी बातें बोलने वाले तो बहुत हैं। तुमको बाप से ही सुनना है। हियर नो इविल, सी नो इविल। बापदादा आये ही हैं मनुष्य से देवता बनाने तो उनकी श्रीमत पर चलना चाहिए। अच्छा -

मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

स्वउन्नति के लिए दृढ़ संकल्प:- (1) यहां बापसमान सुख का सागर, प्रेम का सागर बनना है। सर्व दैवीगुण धारण करने हैं। किसी को भी दुख नहीं देना है।

(2) सुनी सुनाई बातों पर कभी विश्वास नहीं करना है। परमत पर नहीं चलना है। हियर नो इविल, सी नो इविल...

सूचना:- जूनागढ़ सेवाकेन्द्र का फोन नम्बर बदला हुआ है नया नम्बर 21728 है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मेन प्वाइन्ट्स - पार्ट IV

एडवान्स कोर्स - चित्र

a) बच्चों को समझाया है - यह चित्र सब दिव्य दृष्टि से बाप ने बनवाये हैं। करेक्ट भी कराये हैं। -मु.नं. 68e, 16e, 61b

b) यहाँ तुम जानते हो चित्र तो बदलते जाते हैं - नाम, रुप, देश, काल सब बदल जाता है। -मु.नं. 32g

c) यह त्रिमूर्ति, गोला, झाड और सीढ़ी का चित्र भी काफी है। उनके साथ गीता का भगवान कृष्ण नहीं - वह भी चित्र अच्छा है। -मु.नं. 71a, 6a

d) यह 30"x 40" का झाड, त्रिमूर्ति भी सबको अपने2 घर में रखना पड़े। -मु.नं. 70e

e) पहले2 शिव का चित्र दिखाना चाहिए, फिर है लिखत।... चित्र सहित सारी लिखते होनी चाहिए। -मु.नं. 69b, 85g

f) दिन प्रतिदिन लिखत चेन्ज होती रहेगी। ऐसे नहीं पहले क्यों नहीं ऐसा बनाया। - मु.नं. 73f

g) यह शिव का भी जो चित्र है उनका भी ध्यान नहीं करना है, क्योंकि शिव ऐसा तो है नहीं ना। -मु.नं. 20e

त्रिमूर्ति

a) त्रिमूर्ति की महिमा को कोई जान नहीं सकते हैं। जो अनन्य बच्चे हैं वे समझते हैं हमारी मनोकामना पूरी हो रही है। -मु.नं. 40g

b) उन्होंने त्रिमूर्ति से शिव को निकाल चित्र खण्डित कर दिया है। अब तुम जानते हो इस त्रिमुर्ति के चित्र में कितना राज़ है। -मु.नं. 72a, 54f, 23g

c) यह त्रिमूर्ति जो दिखाया है उसमें होना चाहिए ब्रह्मा, विष्णु और शिव, न कि शंकर। परन्तु बाजु में शिव को कैसे रखें ? तो फिर शंकर को रख दिया है। -मु.नं. 75a

d) चित्र भी बनाया है - एक तरफ कृष्ण का चित्र, दूसरे तरफ शिव का। पूछना है - अब बताओ गीता का भगवान कौन ? -मु.नं. 77d, 73b

e) त्रिमूर्ति के नीचे लिखत भी जरुर देनी है। -मु.नं. 73c

f) कृष्ण (उर्फ ब्रह्मा) को निराकार तो नहीं कहेंगे। साकार में ही उनको पहचाना जाता है। -मु.नं. 32a

g) न समझने कारण त्रिमूर्ति में शिव को रखते ही नहीं। ब्रह्मा को रखते हैं जिसको प्र० ब्रह्मा कहते हैं। -मु.नं. 74d, 79c

h) कहते हैं त्रिमूर्ति ब्रह्मा। त्रि० शंकर वा विष्णु नहीं कहेंगे। महादेव शंकर को कहते हैं, फिर त्रि० ब्रह्मा क्यों कहते हैं ? -मु.नं. 60g, 25c

i) त्रिमूर्ति शिव की स्टेम्प बनानी चीहिए। -मु.नं. 79j

j) बाप फाउन्डेशन लगाने आया है। 1937 में फाउन्डेशन लगाया। -मु.नं. 77a

1. त्रिमूर्ति शिवजयन्ती

a) शिव के आगे त्रिमूर्ति जरुर चाहिए। ... तो समझते हैं सिर्फ कृष्ण (उर्फ दादा लेखराज ब्रह्मा) और शिव का चित्र डालें, परन्तु नहीं, शिव जरुर कोई के मुख से ज्ञान देंगे ना। -मु.नं. 73a, 35f

b) तुम बच्चे जानते हो - बाप जब आते हैं तो ब्र०वि०श० भी जरुर चाहिए। कहते ही हैं त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। -मु.नं. 76a, 78a

c) ब्र०वि०श० तीनों का जन्म इकट्ठा है। सिर्फ शिवजयन्ती नहीं है, परन्तु त्रिमूर्ति शिवजयन्ती है। -मु.नं. 81c, 79h

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

2. स्थापना, विनाश, पालना

a) त्रिमूर्ति का अर्थ ही यह है - स्थापना, विनाश, पालना । -मु.नं. 103f, 23b, 27c

b) ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश, विष्णु द्वारा पालना - यह भी लिखते हैं, यहाँ (साकार सृष्टि) के लिए है । -मु.नं. 17i

3. रथ - टैम्प्रेरी और मुकर्रर

a) बाप कहते हैं मैं यह टैम्प्रेरी लोन लेता हूँ, सो भी कितना थोड़ा समय लेता हूँ । -मु.नं. 8b, 17c

b) एक ओर कहते यह सोने की डिब्बी है, तो दूसरी ओर कहते यह पुराने ते पुराने लांग बूट है जिसमें बाप ने प्रवेश किया है । -मु.नं. 65a, 106d

c) यह मेरा शरीर मुकर्रर है । यह बदली हो नहीं सकता । -मु.नं. 43g, 27d, 118f

d) उनका वह रथ तो बहुत बड़ा है, आने से ही ज्ञान सुनाना शुरु कर दिया है । यह (ब्रह्मा) तो कुछ नहीं जानते थे । -मु.नं. 82d, 14g

e) यह रथ जो है बहुत जन्मों के अंत में वर्थ नाट अपेनी बन गया है । फिर इनको पहले नम्बर में जाना है, इसलिए इसमें ही प्रवेश करना है । -मु.नं. 1e

f) शिवबाबा और ब्रह्माबाबा का रथ एक ही है । ऐसे भी नहीं कहेंगे कृष्ण (उर्फ ब्रह्मा) में शिवबाबा बैठ ज्ञान देते हैं । -मु.नं. 74g

g) यह मेरा रथ है, शंकर से अगर पूछेंगे... । -मु.नं. 36a

h) कृष्ण (उर्फ ब्रह्मा) गाली खा न सके । जरुर दूसरा है जिसको गालियाँ मिली थी । -मु.नं. 88d

i) जैसे यह बाबा जवाहरात का धन्धा करते थे, फिर बड़े बाबा ने कहा यह अविनाशी ज्ञान रत्नों का धन्धा करना है । - मु.नं. 105d

j) साकार तन को ढूँढा भी यहाँ से (पूर्वी बंगाल से) ही है, तो स्थान की विशेषता रही ना । -अ.वा.नं. 83i

k) शरीर छूटेगा तब जब बाप का रथ आकर लेंगे । -मु.नं. 76h

4. बाप, टीचर, सतगुरु

a) हम आत्माओं को बाप इस शरीर द्वारा पढ़ाते हैं । घड़ी2 याद रखो यह एक ही समय है जब आत्माओं का बाप परमपिता पढ़ाते हैं । -मु.नं. 11e, 113a

b) (बाबा) टीचर के रुप में बैठ तुमको समझाते हैं । सच्चा सतगुरु भी है - साथ में ले जाते हैं । -मु.नं. 79g, 106b, 28c, 32i

c) यह बाप भी है, टीचर भी है । टीचर को तो रोज पढ़ाना है । -मु.नं. 15d, 37f, 109a

d) इस एक आत्मा की ही तीनों सर्विस इकट्ठी है । -मु.नं. 52c, 112h, 69k

e) मुख्य प्रिन्सिपल वह है । तुम आते भी उनके पास हो । -मु.नं. 90c

f) कृष्ण (उर्फ ब्रह्मा) किसीका बाप हो नहीं सकता । वह तो छोटा बच्चा, सतयुग का प्रिन्स है । वह टीचर भी नहीं हो सकता, खुद ही बैठकर टीचर से पढ़ते हैं । -मु.नं. 49a, 52b

5. माता-पिता साकार में

a) (बाबा) सद्गति भी सबकी कर देते हैं प्रैक्टिकल में । ऐसे नहीं (ब्रह्मा बाबा का शरीर छोडने बाद) शिवबाबा चला जायेगा और हम यहाँ ही बैठे रहेंगे फिर दूसरा गुरु करना पड़ेगा, नहीं । -मु.नं. 97d, 17d

b) जिसके लिए तुम गाते थे - तुम मात-पिता, उनके सम्मुख तुम बैठे हो और बेहद का वर्सा पाने का पुरुषार्थ कर रहे हो । -मु.नं. 84a

c) पुकारते भी हैं - तुम मात-पिता, परन्तु इसका अर्थ तो कोई भी नहीं समझते । निराकार बाप के लिए समझ लेते हैं । -मु.नं. 76b, 92d+92e

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

d) सब अपने रचता को जानते हैं परन्तु उनके आक्यूपेशन को नहीं जानते । -मु.नं. 70b
e) मुझे प्र० ब्रह्मा जरुर चाहिए । ब्रह्मा के बाप कौन हैं ? -मु.नं. 108f

6. विनाश ज्वाला

a) जितनी2 स्थापना होती जा रही है तो विनाश ज्वाला भी धीरे2 बढ़ती जा रही है । -मु.नं. 69h, 29e, 2j
b) दुश्मन भी तुम्हारे बहुत हैं, क्योंकि तुम खुद कहते हो कि इस रुद्र ज्ञान यज्ञ से विनाश ज्वाला प्रज्वलित हुई है । -मु.नं. 84e, 85b, 34b
c) रुद्र ज्ञान यज्ञं रचा तो उससे विनाश ज्वाला निकली, भारत स्वर्ग बना और यह फिर यज्ञ रचते हैं विनाश न हो अर्थात् स्वर्ग स्थापन न हो । -मु.नं. 112i+c+d 100d

7. एसे2 बच्चे

a) अच्छे2 बच्चे 5-10 बर्ष रहकर अच्छे2 पार्ट बजाते हैं, फिर हार खा लेते हैं । अच्छे2 फर्स्ट क्लास ध्यान में जाने वाले जिनके डायरेक्शन पर माँ-बाप भी पार्ट बजाते थे, आज वह हैं नहीं । -मु.नं. 84b, 85e
b) पुराने2 बच्चे कितने अच्छे थे, उनको माया ने हप कर लिया । ... उनसे कुछ फिर आयेंगे जरुर पढ़ने, बाबा आने देंगे । -मु.नं. 17e
c) बाप आत्मा को बुलाते हैं - उनको समझाने के लिए तुम आते थे, तुमको कितना समझाते थे कि बाप को याद करो, पवित्र बनो, फिर भी न माना । -मु.नं. 99d
d) तुम बच्चों को मालूम है कि बाबा एक दो बजे उठकर मुरली लिखते थे, जो तुम पढ़कर और चलाते थे । फिर बाबा बैठ सुनते थे कि देखें कैसे चलाते हैं । कितने अच्छे 2 बच्चे थे, चले गये । -मु.नं. 85f
e) तुम ही पहले2 आये थे, अभी लास्ट में भी तुम हो । -मु.नं. 3f, 100g
f) तुम बच्चे अनुभवी हो बाबा ने सा० किया । - मु.नं. 31h
g) आगे माला बनती थी, फिर 3-4 नम्बर में आने वाले आज हैं नहीं । -गु.नं. 121i
h) तुम तो जानते हो यह दुनियाँ कभी खाली नहीं हो सकती है । राम सम्प्रदाय तो बहुत थोड़ी हैं । -मु.नं. 17h, 37e
i) सेवकराम और उनकी यूगल (कलकत्ता) का परिचय । -प्रूफ नं. 131a, मु.नं. 78f
j) वेदान्ती बहन (छोटी माता) का परिचय । -प्रूफ नं. 134a

8. साक्षात्कार - ब्रह्माबाबा

a) विष्णु का सा० हुआ और दिल में बहुत खुशी हुई । फिर विनाश का सा० भी हुआ । -मु.नं. 82h, 86h
b) शुरु में बनारस गये तो दीवारों पर गोले आदि निकालते रहते थे । समझ में कुछ भी नहीं आता था - यह क्या है, क्योंकि यह तो जैसे बेबी (बेबी बुद्धि) बन गये । -गु.नं. 82e, 68f

9. ज्ञान, भक्ति

a) बाबा ने समझाया है भक्ति का भी पार्ट है, ज्ञान का भी पार्ट है । —मु.नं. 87a, 109e
b) ज्ञान है ही समझ, वह है भक्ति । -मु.नं. 63a
c) भक्ति का कनेक्शन रावण के साथ है, ज्ञान का कनेक्शन राम के साथ है । -मु.नं. 103a
d) अभी तुम आत्मायें जानती हो - हमारा बाबा हमको इस शरीर द्वारा सब राज समझाते हैं । -मु.नं. 93e,112a, 8g

10. भट्ठी

a) इसलिए ही तुम्हारा भागना हुआ । तुम आकर भट्ठी में पड़े जो कोई देख न सके, मिल न सके ।-मु.नं. 54d
b) अब प्रैक्टिकल में पार्ट चल रहा है । यह भी एक परीक्षा थी, जिनको डर लगा वह सब चले गये । -मु.नं. 53b

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

11. ब्रह्मा की आयु

a) ब्रह्मा की आयु मृत्युलोक में खत्म होगी। -**मु.नं.** 8e, 120b

b) कहते हैं - ब्रह्मा की आयु शास्त्रों में 100 वर्ष है। यह जो ब्रह्मा है जिसमें बाप बैठ वर्सा दिलाते हैं, इनका भी शरीर छूट जाएगा। -**मु.नं.** 93d, 94a

12. अल्फ और बे

a) समझाना बहुत थोड़ा है - अल्फ बाबा, बे-बादशाही। -**मु.नं.** 93c, 117b

b) अल्फ और बे - इन्हीं दो शब्दों में तुम्हारी सारी पढ़ाई आ जाती है। -**मु.नं.** 2a, 49i, 23e

13. घोषणा

a) ऐसा विनाश करते हैं जो बेहद में खत्म हो जाए। -**मु.नं.** 41d

b) अभी बाप वृद्धि को बन्द करते हैं। एक धर्म की स्थापना कर अनेक धर्मों का विनाश करा देते हैं। -**मु.नं.** 35c

c) आज से यानी 1966 से 10 वर्ष के अन्दर हम अपनी इस भारत भूमी को स्वर्ग बनाकर छोडेंगे। -**मु.नं.** 95b

d) 8 वर्ष कोई बड़ी बात थोड़ेही है। सारी दुनियाँ खत्म हो जानी है। -**मु.नं.** 95h, 111a, 55h

e) यहाँ बैठे सा० हो सकता है कि कैसे आग लगती है। टी० वी० में भी तुम देख सकते हो। -**मु.नं.** 126f

14. हार्ट फेल

a) बच्चे, हार्ट फेल का मौत बहुत मीठा मौत है। -**मु.नं.** 92f, 38h, 41f

b) बिच्छुणी भी 100 बच्चे पैदा करती है तो उसका पेट फट जाता, बच्चे निकल आते माँ मर जाती है। -**मु.नं.** 91c

c) बाप के मर जाने के बाद कोई2 तो ऐसे गन्दे बच्चे होते हैं - 12 मास में सारी मिलकियत उड़ा देते हैं। वह है हद की बातें, यह है बेहद की बातें। -**मु.नं.** 5h

d) बाम्बे पहले क्या थी ! (चैतन्य) समुद्र को सुखाया है। -**मु.नं.** 45f

e) ऐसा दृश्य देखकर डाक्टर ने तुरन्त मेरे से (दादा विश्व रतन से) कोरामिन इन्जेक्शन लेकर बाबा को इन्जेक्शन लगाई (यह इन्जेक्शन हार्ट सम्बन्धित बिमारी के लिए युज़ करते है)। -**प्रू.नं.** 133a

15. दो तीन जन्म

a) कुछ हिसाब-किताब है तो दो तीन जन्म भी ले सकते हैं। ब्राह्मण कुल में भी जन्म ले सकते हैं। -**मु.नं.** 109d, 7e

b) आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरे में जाकर प्रवेश करती है। - **मु.नं.** 23a

16. वानप्रस्थी

a) वानप्रस्थी बनना अर्थात् गुरु द्वारा वाणी से परे जाने का पुरुषार्थ करना। - **मु.नं.** 104c, 45b, 55d

17. बाप की प्रवेशता

a) शिवबाबा के अवतरण में बिल्कुल फर्क नहीं पड़ सकता। ऐसे भी नहीं सा० हुआ तब आया। नहीं, अन्दाज से कह देते हैं। बाकी ऐसे नहीं उस समय प्रवेश हुआ। -**मु.नं.** 80h, 82a

b) जानता हुँ हमारे लिए बहुत सहज है, क्योंकि बाबा की प्रवेशता है (ब्रह्माबाबा-**शिवोऽहम**)। -**मु.नं.** 29d

c) बाप कहते हैं मैं यह ट्रैम्प्रेरी लोन लेता हुँ, सो भी कितना थोड़ा समय लेता हुँ - 60 वर्ष में वानप्रस्थ अवस्था होती है। -**मु.नं.** 8b, 10d

d) दादा लेखराज को सन् 1936 में जबकी उनकी 50 वर्ष की आयु थी, उनको दिव्य सा० हुए। -**प्रूफ नं.** 132a

e) ब्र०वि०श० का नाम तो लेते हैं, परन्तु इन तीनों में से भगवान किसमें प्रवेश करते हैं - अर्थ नहीं जानते। -**मु.नं.** 90d

f) बाबा तब कराची में गये थे, बाबा में शिवबाबा की प्रवेशता हुई। -**प्रूफ नं.** 131b

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

g) कराची से लेकर मुरली निकलती आई है। पहले बाबा मुरली चलाते नहीं थे। रात को 2 बजे उठकर 10-15 पेज लिखते थे, बाबा लिखवाते थे। -**मु.नं.** 89b, 85f

18. बाप की पहचान

a) मैं जो हुँ जैसा हुँ - तुम बच्चों में भी विरले कोई एक्युरेट जानते हैं। -**मु.नं.** 74f, 13f, 40c

b) मालूम कैसे पड़ता है कि इनमें बाप भगवान है ? जब नालेज देते हैं। -**मु.नं.** 8c, 56f

19. बाप का परिचय

a) बाप कहते हैं मैं ही तुमको अपना परिचय देता हूँ। मेरा परिचय कोई को है नहीं। -**मु.नं.** 56d, 52e

b) पहले2 बाप का परिचय देना है। परन्तु पहले2 तो बाप के चित्र पर समझाना मुख्य है। -**मु.नं.** 39f, 80f, 22f

c) पहले2 तो बाप का परिचय देना है। इनमें ही सब मूँझ पड़े हैं। कृष्ण तो देहधारी है। इनको (ब्रह्मा को) दादा कहेंगे। -**मु.नं.** 80f, 18a

d) आगे थोड़ेही दो बाप का राज़ समझाते थे। -**मु.नं.** 7f, 116a, 62a

e) वह है निराकार आत्माओं का बाप और फिर साकार में सभी का बाप प्र० ब्रह्मा है जो फिर वृद्धि को पाते रहते हैं। -**मु.नं.** 101b, 51a, 31e

20. नाम, रुप, देश, काल

a) यहाँ तुम जानते हो (चैतन्य) चित्र तो बदलते जाते हैं। नाम, रुप, देश, काल - सब बदल जाता है। -**मु.नं.** 32g, 70c, 122a

b) बाप है निराकार। मनुष्य तो उसे नाम-रुप से न्यारा कह देते हैं; लेकिन नाम-रुप से न्यारी कोई चीज़ थोड़ेही होती है। -**मु.नं.** 2h

i. **नाम** : उनका नाम शिव ही है, उनका नाम कब नहीं बदलता। -**मु.नं.** 35a, 26b, 33a, 82c

b) अमरनाथ है वो शिवबाबा।... अमरनाथ अथवा शंकर-पार्वती वहाँ कहाँ से आया? -**मु.नं.** 127a, 50a, 24g, 96h, 62g

c) राम भी निराकार भगवान को ही कहते हैं। -**मु.नं.** 39b, 18b, 33d

d) शिव की पूजा जो की जाती है उनको राम नहीं कहेंगे, शिवबाबा कहना शोभता है। -**मु.नं.** 37c, 43e

ii. **लौकिक नाम** : एक दक्ष प्रजापति का भी यज्ञ रचते हैं। यह नाम कहाँ से आया? शायद लखीराज के बदले दक्ष लिख दिया है। -**मु.नं.** 100e, 112b, 121a

b) बाबा वीरेन्द्र देव दीक्षितजी के प्रति दीदी-दादियों द्वारा सूचना। -**मु.नं.** 127f

iii. **अलौकिक नाम** : असली नाम है शिव, फिर सोमनाथ रखा है।... सोमनाथ के साथ सोमनाथिनी भी होगी। -**मु.नं.** 98c

b) तुम हो महावीर-महावीरनी। आदि देव को भी महावीर कहते हैं जिससे ही यह महावीर पैदा होते हैं जो विश्व पर राज्य करते हैं। -**मु.नं.** 101h

c) अब बाप समझाते हैं मैं कृष्ण नहीं हूँ, मुझे रुद्र वा सोमनाथ कह सकते हैं। -**मु.नं.** 60e, 112d, 7f

iv. **लौकिक जन्म स्थली** : बाप आते भी हैं मगध देश में जो कि बहुत गिरा हुआ देश है, खान-पान भी गन्दा है। -**मु.नं.** 101f

b) मैं आता भी भारत में हुँ, उसमें से भी यह आबू सबसे बड़ा तीर्थ है जहाँ बाप आकर सारे विश्व की सद्गति करते हैं। -**मु.नं.** 28f

c) फर्रुखाबाद में बच्चियाँ तो हैं, वहाँ जो मालिक को मानने वाले हैं उनको समझाना है। तुम कहते हो वह मालिक है, बाप कहते तुम मालिक हो, हम विश्व का मालिक नहीं बनते। -**मु.नं.** 96i, 96a, 12d

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

v. **अलौकिक जन्म स्थली** : सोमनाथ सोमरस पिलाते हैं, ज्ञान धन देते हैं। फिर जब पुजारी बनते हैं तो कितना खर्चा करते हैं उनके मन्दिर बनाने पर, क्योंकि सोमरस दिया है ना। -**मु.नं.** 98c

b) देखो, अहमदाबाद में एक साधु है, कहते हैं - वह कुछ खाता-पीता नहीं है। -**मु.नं.** 104b, 76e, 97e

vi. **लौकिक आयु** : आगे जो मरे हैं फिर भी बड़े होकर 20-25 वर्ष के हुए होंगे, तो कोई2 आकर फिर से ज्ञान ले सकते हैं। -**मु.नं.** 99e

vii. **अलौकिक आयु** : जबकी गाया हुआ है प्रॅा ब्रह्मा भी 100 वर्ष के बाद चले जाते हैं। बाप आते ही है 60 वर्ष के बांद। ब्रह्मा चला जावेगा तो बाप भी चला जावेगा, तो 40 वर्ष बैठ समझाते हैं। -**मु.नं.** 94a, 111a

b) जयन्ती कब मनाई जाती है ? जब गर्भ से बाहर आता है। -**मु.नं.** 7a+b

c) शिव जयन्ती भी मनाते हैं ना, परन्तु वह भारत में कैसे आते हैं - यह किसको पता नहीं हैं। कृष्ण (उर्फ दादा लेखराज ब्रह्मा) के तन में तो नहीं आते। -**मु.नं.** 24d

viii. **रुप** : बाबा को भी कहते हैं ना - आप भी रुप बदल साकार में आओ। -**मु.नं.** 79i, 14e

b) बहुत बच्चे साधारण रुप देख मूँझते हैं, उल्टा बोलने लग पड़ते हैं। -**मु.नं.** 4d

c) बाबा फील करता है - हम भी गॉवड़े के थे, न टोपी न जूत्ती। -**मु.नं.** 7g, 14f, 123f

d) सुदामा का भी मिसाल गाया हुआ है - चावल मुट्ठी में ले आया। -**मु.नं.** 44c

ix. **काम** :बाप कहते हैं मैं पहले छोटा ब्राह्मण धर्म स्थापन करता हूँ, फिर साथ2 ब्राह्मणों को देवी-देवता बनाता हूँ। -**मु.नं.** 84f, 90a

x. **काल** : बाप कहते हैं मैं हर कल्प के पु० संगमयुग पर आता हुँ। -**मु.नं.** 26i, 94b, 130f

xi. **भाषा** : जो भाषा इनकी होगी उसमें ही समझायेंगे ना - हिन्दी ही होनी चाहिए। -**मु.नं.** 28b

21. जगदम्बा

a) बाप पहले स्त्री को एडाप्ट करते हैं, फिर उन द्वारा बच्चों को रचते हैं। -**मु.नं.** 86i, 16b

b) शिव के साथ गीता (माता) का भी जन्म होता है। -**मु.नं.** 86g, 84d

c) शिवजयन्ती के बाद फिर चाहिए गीता जयन्ती, फिर साथ2 होनी चाहिए कृष्ण जयन्ती। -**मु.नं.** 102a, 86g

d) जगत अम्बा की महिमा है, एक तो नहीं है। -**मु.नं.** 42a

e) यहाँ तुम जगत अम्बा से (ज्ञान धन) पा रहे हो परमपिता परमात्मा शिव द्वारा। -**मु.नं.** 103g

f) जगदम्बा है तो बच्चे भी साथ में होंगे। - **मु.नं.** 42g

g) सतयुग में रामराज्य स्थापन होना है। कैपिटल देहली (दिल्ली) ही रहती है जहाँ ल० ना० का राज्य होता है। -**मु.नं.** 93b, 8a

22. गॉड का बच्चा बन

a) बाप एक है फिर उनका बच्चा भी एक है - प्र० ब्रह्मा। - **मु.नं.** 91e, 102c,

b) लास्ट सो फिर फर्स्ट, फर्स्ट सो लास्ट - मिसाल तो एक का बतायेंगे ना। - **मु.नं.** 101g

c) बाप रचते हैं वारिसों अर्थात् बच्चों को। फिर उनको अपना मालिक बना देते हैं, बच्चे फिर बाप के मालिक बन जाते हैं। - **मु.नं.** 96b

d) बच्चे ही बाप को शो करेंगे (सन शोज़ फादर), सन का फिर फादर शो करेंगे (फादर शोज़ सन)। -**मु.नं.** 52f

23. शिव-शंकर भोला भाला

a) शंकर के लिए समझाया है कि उनका कोई पार्ट नहीं है। इसका मतलब यह नहीं कि उनको उड़ा देना चाहिए। एक तरफ गाते भी हैं - देव2 महादेव...। -**मु.नं.** 104d, 65b, 104e, 58a

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

b) शंकर द्वारा अनेक धर्मों का विनाश कराते हैं। -मु.नं. 57a
c) शंकर द्वारा विनाश होना है। वह भी अपना कर्तव्य कर रहे हैं। जरुर शंकर भी है तब तो सा० होता है। -मु.नं. 105c, 126b, 110e
d) शंकर भी मेरी प्रेरणा से सर्विस पर हाजिर है, ब्रह्मा भी सर्विस पर हाजिर है। -मु.नं. 111h, 2e
e) शंकर तो जन्म-मरण से न्यारा है, इसलिए शिव और शंकर को फिर मिला दिया है। -मु.नं. 103b, 121h, 95e, 49h
f) बाप तो कभी पूजारी नहीं बनते। अच्छा, फिर सेकण्ड नम्बर में कहेंगे शंकर भी एवर पूज्य है। -मु.नं. 5d
g) अब सू० वासी शंकर डमरु कैसे बजाएगा ? तुम्हारे आगे बाबा (शंकर / राम के तन में प्रवेश करके) ज्ञान का डमरु बजा रहे हैं। -मु.नं. 18g, 35e, 36a, 108h
h) शिव-शंकर महादेव कहते हैं। अब कृष्ण कहाँ से आया ? उनको रुद्र वा शंकर नहीं कहेंगे। -मु.नं. 60b, 108e
i) गाते हैं - बम2 महादेव... भर दे मेरी झोली। झोली भरी थी तो जरुर चैतन्य में थे। -मु.नं. 68b
j) कहते हैं त्रिमूर्ति ब्रह्मा। त्रि० शंकर वा विष्णु नहीं कहेंगे। महादेव शंकर को कहते हैं, फिर त्रि० ब्रह्मा क्यों कहते हैं ? -मु.नं. 60g
k) (वह लोग) शंकर को भोलानाथ समझ लेते हैं। वास्तव में भोलानाथ शंकर तो नहीं लगता। -मु.नं. 7c
l) शंकर का तो फिर भी आकार रुप है ना। -मु.नं. 31g
m) कुमारका बताओ बाबा के कितने बच्चे हैं ? त्रिमूर्ति कहलाया जाता है, परन्तु राइटियस बच्चे दो हुए - ब्रह्मा और शंकर। -मु.नं. 105e

24. राम बाप और कृष्ण बच्चा

a) राम को परमात्मा कहते हैं। -मु.नं. 71c, 79d
b) इस समय तुम आत्मायें राम शिवबाबा श्री श्री की मत पर चलते हो। -मु.नं. 20c, 18d
c) शिवबाबा बाबा भी है, साजन भी है, सभी सीताओं का राम है। वही पतित पावन है। -मु.नं. 36e, 33d, 116e, 81b, 96f
d) रावण द्वारा विकारी दुनियाँ होती है, राम बाप आकर पावन बनाते हैं। -मु.नं. 94f
e) भक्ति का कनेक्शन रावण के साथ है, ज्ञान का कनेक्शन राम के साथ है। -मु.नं. 103a, 87c,105f
f) राम के बच्चे कोई दो नहीं है, यहाँ तो ढेर बच्चे हैं। -मु.नं. 95c, 42e
g) तुम जानते हो कि श्रीराम की आत्मा तो जरुर पुनर्जन्म लेती रहती होगी। यहाँ ही पुरुषार्थ करते रहते हैं। -मु.नं. 17a, 7h
h) राम का कितना छोटा परिवार होगा सतयुग में। -मु.नं. 78g, 17h, 95i
i) शिवजयन्ती फिर राम जयन्ती, कृष्ण जयन्ती। -मु.नं. 54h
j) राम को भी काला बनाया है, शिव का लिंग भी काला बनाया है। -मु.नं. 43j
k) जानते हैं भगवती सीता, भगवान राम भी बनने का है। -मु.नं. 78b
l) पहली2 मुख्य बात समझानी है कि पतित पावन, ज्ञान का सागर श्री कृष्ण नहीं है। -मु.नं. 36b
m) कृष्ण किसी का बाप हो नहीं सकता। वह तो छोटा बच्चा, सतयुग का प्रिन्स है। -मु.नं. 49a, 79e, 8d
n) यह मूरब्बी बच्चा (ब्रह्मा) भी ग्लानी करता था। -मु.नं. 83b

25. राम फेल

a) राम फेल हुआ तो 33 से कम मार्क्स मिली, तो चन्द्रवंशी में चले गये। -मु.नं. 106e, 91f, 107e
b) बाप समझाते हैं, ऐसा नहीं कहेंगे रामचन्द्र फेल हुआ, नहीं। -मु.नं. 106a

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

26. विष्णु

a) भारत में शुरु से ही प्रवृत्ति मार्ग चला आता है। इसलिए विष्णु को 4 भुजाएं दी है। -मु.नं. 36c
b) यूगल तो वास्तव में बस विष्णु ही है। -मु.नं. 49g
c) विष्णु के दो रुप ल० ना० अलग2 बनेंगे ना। -मु.नं. 98d, 130d, 18e
d) वही ब्रह्मा फिर विष्णु के दो रुप बनते हैं। -मु.नं. 83e
e) ब्रह्मा से विष्णु निकलने में एक सेकण्ड। -मु.नं. 27f

सृष्टि-चक्र

1) सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पन्न यहाँ बनना है। रिहर्सल यहाँ होगी फिर वहाँ प्रैक्टिकल पार्ट बजाना है। -मु.नं. 111i, 86a
2) इस समय जो एक्ट चली, शूट हुआ। -मु.नं. 16d, 123g
3) बाप कहते हैं मैं हर कल्प के पु० संगमयुग पर आता हुँ। 50-60 वर्ष में बाप आकर तुमको पढ़ाते हैं। -मु.नं. 26i
4) बच्चे जानते हैं पु० संगमयुग की आयु बहुत थोड़ी है। 40 वर्ष से अभी बाकी 8 वर्ष रही है। -मु.नं. 111a, 94a
5) जैसे वह इम्तिहान 12 मास का होता है ना, यह भी ऐसे हैं - 9 मास पढ़े हैं बाकी 3 मास स्थापना में है। -मु.नं. 109b
6) तुम हो अभी पु० संगमयुगी, संगमयुग पर। पु० युग जरुर लिखना चाहिए। -मु.नं. 104a, 32e, 15e
7) पु० संगमयुग पर ही बाप आकर रुहों से बात करते हैं। -मु.नं. 90h, 94b, 22b, 130f
8) समझते हैं पु० युग, परन्तु कैसे, कब, क्यों पु० युग है - यह किसको भी पता नहीं। -मु.नं. 54g
9) मनष्यों को देवता बनाया इस संगमयुग पर। -मु.नं. 90a
10) कुम्भ के मेले पर कितने लाखों जाते हैं। -मु.नं. 2k
11) कृष्ण को द्वापर में ठोक दिया है। यह भी अभी तुम समझते हो। -मु.नं. 100b
12) शिवबाबा भी प्रभात के समय आते हैं, आधी रात नहीं कहेंगे। -मु.नं. 7d
13) ऐसा बाबा कल्प2 कल्प के संगमयुगे एक ही बार आते हैं। -मु.नं. 89i, 129e, 100a, 1b
14) उन्होंने फिर कल्प अक्षर निकाल सिर्फ संगमयुगे लिख दिया है। -मु.नं. 100a
15) ब्रह्मा की रात सो ब्राह्मणों की रात है, ब्रह्मा का दिन सो ब्राह्मणों का दिन है। -मु.नं. 13a, 41c
16) सू० वासी ब्रह्मा का थोडे ही दिन और रात बनायेंगे। दिन और रात का प्रश्न यहाँ का है। -मु.नं. 112g
17) बाबा तो सारी आत्माओं के झुण्ड को वापस ले जाते हैं। बाकी थोडे रहते हैं। रहते भी वही हैं जिनको पिछाड़ी में आना हैं। -मु.नं. 37e

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

होकर बैठ जाएं परन्तु कब तक? कर्म तो करना है ना। वह समझते हैं गृहस्थ धर्म में रहना, यह कर्म नहीं करना है। इन हठयोग सन्यासियों का भी पार्ट है। उनका भी एक यह निवृति मार्ग वालों का धर्म है। और कोई धर्म में घर घाट छोड़ जंगल में नहीं जाते। अगर कोई ने छोड़ा भी है तो भी सन्यासियों को देखकर। बाबा कोई घर से वैराग नहीं दिलाते। बाप कहते हैं भल घर में रहो परन्तु पवित्र बनो। पुरानी दुनिया को भूलते जाओ। तुम्हारे लिए नई दुनिया बना रहा हूं। शंकराचार्य सन्यासियों को ऐसे नहीं कहते कि तुम्हारे लिए नई दुनिया बनाता हूं उनका है हट का सन्यास, जिससे अल्पकाल का सुख मिलता है। अपवित्र लोग जाकर माथा टेकते हैं। पवित्रता का देखो कितना मान है। अभी तो देखो कितने बड़े2 फ्लैट आदि बनाते हैं। मनुष्य दान करते हैं अब इसमें पुण्य तो कुछ हुआ नहीं। पुण्य कहते हैं हम जो सब कुछ ईश्वर अर्थ करते हैं। बाप कहते हैं मेरे अर्थ तुम किस किस कार्य में लगाते रहो। दान उनको देना चाहिए जो पाप न करें। अगर पाप किया तो तुम्हारे ऊपर उनका असर पड़ जायेगा। क्योंकि तुमने पैसे दिये। पतितों को देते2 तुम कंगाल हो गये हो। पैसे ही सब बरबाद हो गये हैं। करके अल्पकाल का सुख मिल जाता है। यह भी ड्रामा का खेल बना हुआ है। अभी तुम पावन बन रहे हो। पैसे भी तुम्हारे पास वहाँ ढेर होंगे। वहाँ कोई पतित होते नहीं हैं। यह बड़ी समझने की बातें हैं। तुम हो ईश्वरीय औलाद। तुम्हारे में बड़ी रॉयल्टी होनी चाहिए। राजे लोग बड़े रॉयल होते हैं। बहुत कम बोलते हैं। तुम ईश्वरीय औलाद की चलन बड़ी रॉयल होनी चाहिए। कहते हैं गुरू के निंदक ठौर न पायें। उन्हों में बाप टीचर गुरू अलग है। यहाँ तो बाप टीचर सतगुरू एक ही है। अगर तुम कोई उल्टी चलन चले तो तीनों के निंदक बन पड़ेंगे। सत बाप, सत टीचर सतगुरू की मत पर चलने से ही तुम श्रेष्ठ बन जाते हो। शरीर तो छोड़ना ही है तो क्यों न बाप से वर्सा ले लेवें। बाप कहते हैं इस ईश्वरीय अलौकिक सेवा में लगाओ। मैं क्या करूंगा। मैं तुमको स्वर्ग की बादशाही देता हूं। वहाँ भी मैं महलों में नहीं रहता। यहाँ भी मैं महलों में नहीं रहता हूँ। गाते हैं डम डम महादेव.. भर दे मेरी झोली। परन्तु वह कब और कैसे झोली भरते यह कोई भी नहीं जानते हैं। झोली भरी भी तो जरूर चैतन्य में थे2। जन्म के लिए तुम बड़े सही साहूकार बन जाते हो। ऐसे बाप की मत पर कदम2 चलना चाहिए। बड़ी मंजिल है। अगर कोई कहे मैं नहीं चल सकता। बाबा कहेंगे - तुम फिर बाबा क्यों कहते हो। श्रीमत पर नहीं चलेंगे तो बहुत डन्डे खायेंगे। पद भी भ्रष्ट होगा। गीत में भी सुना - कहते हैं मुझे ऐसी दुनिया में ले चलो जहाँ सुख और शान्ति हो। सो तो बाप ही दे सकता है। बाप की मत पर नहीं चलेंगे तो अपने को ही घाटा डालेंगे। यहाँ कोई खर्चे आदि की बात नहीं है। ऐसे थोड़ेही कहते गुरू के आगे नारियल बताशे ले आओ। वा स्कूल में फी भरो। कुछ भी नहीं। पैसे भल अपने पास रखो। तुम सिर्फ नॉलेज पढ़ो। भविष्य सुधार करने में कोई नुकसान तो नहीं है। यहाँ कोई माथा भी नहीं टेकना सिखाया जाता। आधाकल्प तो तुम पैसा रखते, माथा झुकाते2 कंगाल बन पड़े हो। अब बाप फिर तुमको ले जाते हैं शान्तिधाम। वहाँ से सुखधाम में भेज देंगे। अब नवयुग, नई दुनिया आने वाली है। नवयुग सतयुग को कहेंगे फिर कलायें कमती होती जाती हैं। अभी बाप तुमको लायक बना रहे हैं। नारद का मिसाल। अगर कोई भी भूल होगा तो तुम लक्ष्मी को वर नहीं सकेंगे। यहाँ तो बच्चे तुम्हें अपना घरबार भी सम्भालना है और सर्विस भी करनी है। पहले यह भागे इसीलिए - क्योंकि इन्हों पर बहुत मार पड़ी। बहुत अत्याचार हुए। मार की भी इन्हों को परवाह नहीं थी। भट्ठी में कोई पक्के, कोई कच्चे निकल गये। बहुत टूट भी गये। ड्रामा की भावी ऐसी थी। जो हुआ सो हुआ फिर भी होगा। गालियां भी देंगे। तुमसे बड़े ते बड़ी गाली खाते हैं परमपिता परमात्मा शिव। कह देते हैं परमात्मा सर्वव्यापी हैं, कुत्ते बिल्ली कच्छ मच्छ सबमें हैं। बाप कहते हैं मैं तो पर-उपकारी हूँ। तुमको विश्व का मालिक बनाता हूं। श्रीकृष्ण स्वर्ग का प्रिन्स है ना। उनके लिए फिर कहते हैं सर्प ने डसा। काला हो गया। अब वहाँ सर्प कैसे डसेगा। कृष्णपुरी में भला कंस कहाँ से आया? यह सब हैं दन्त कथायें। भक्ति मार्ग की यह सामग्री है। जिससे तुम नीचे उतरते आये हो। बाबा तो तुमको गुल2 फूल बनाते हैं। कोई2 तो बहुत बड़े कांटे हैं। ओ गॉड फादर कहते हैं, परन्तु जानते कुछ भी नहीं हैं। फादर तो है परन्तु फादर से क्या वर्सा मिलेगा।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

एक ही परमपिता परमात्मा है वह सब आत्माओं का एक ही माशूक है।वह जिस्मानी आशिक माशूक एक दो को याद करते है,बुद्धि में चित्र आ जाता है,फिर एक दो को याद करते रहेंगे।खाना खाते रहेंगे,याद करते रहेंगे,वह तो है एक जन्म के आशिक माशूक तुम जन्म जन्मान्तर के आशिक हो।एक माशूक के।तुमको और कुछ भी नहीं करना है-सिर्फ एक बाप को याद करना है।उन आशिक माशूक को चित्र सामने आ जाता है,बस उनको देखते2काम भी ठहर जाता,फिर उनका चेहरा गुम हो जाता और काम करने लग पड़ते,इसमें तो ऐसे नहीं है।आत्मा भी बिन्दी,परमात्मा भी बिन्दी है।अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है,इसमें ही मेहनत है,कोई भी ऐसी प्रैक्टिस करते नहीं हैं। आत्मा का ज्ञान मिला अर्थात् आत्मा को रियलाइज किया,बाकी रहा परमात्मा। वह भी तुम जानते हो।बाबा आकर यहाँ भ्रकुटी में बैठते है।इनकी जगह भी यहाँ है। आत्मा कहाँ से भी चली जाती है,मालूम नहीं पड़ता है।उनका मुख्य स्थान भ्रकुटी है।

c बाप कहते हैं मैं भी बिन्दी हूँ,इसमें आकर बैठा हूँ,तुमको पता भी नहीं पड़ता है।बाप

d तुम बच्चों को बैठ सुनाते है।तुमको जो सुनाते है वह हम भी सुनते है।समझानी तो बिल्कुल राइट है।मनुष्यों के तो कितने गप्पे है।देवी धर्म वाले जो होंगे वह झट समझ जायेंगे।यह राजधानी स्थापन हो रही है।स्थापना भी और फिर विनाश भी होगा। और कोई धर्म स्थापक ऐसे नहीं करते हैं।वह सिर्फ अपना धर्म स्थापन करते है फिर वृद्धि को पाते है।यहाँ तो जो जितना2पुरुषार्थ करते है उतना भविष्य में ऊँच पद पाते हैं।तुम भविष्य 21जन्मों के लिए प्रालब्ध बनाते हो तो कितना पुरुषार्थ करना चाहिए।और है बहुत सहज।ज्ञान भी सहज,योग भी सहज,जिससे तुम्हारे विकर्म विनाश होते हैं।बाप कहते है मैं गैरन्टी करता हूँ,कल्प2हम ही आकर तुम बच्चों को पावन बनाता हूँ।वहाँ पतित एक भी होता नहीं।ज्ञान भी कितना सहज है। 84जन्मों का चक्र कैसे लगाते हैं वह भी बुद्धि में नालेज है। हमने 84जन्मों का चक्र लगाया है यह निश्चय रखना है।निश्चय में ही विजय है।ऐसे नहीं पता नहीं हम 84जन्म लेते हैं वा कुछ कम।जबकि तुम ब्राह्मण हो तो तुमको निश्चय होना चाहिए बराबर हम ने 84का चक्र पूरा भोगा है। यह तो बहुत

e सहज समझानी है।बच्चों को समझाया है-यह चित्र सब दिव्य दृष्टि से बाप ने बनवायेहैं।

f करेक्ट भी कराये हैं।शुरू में जब बनारस में बाबा एकान्त में रहते थे तो ऐसे चक्र दीवारों पर बैठ निकालते थे।समझते कुछ नहीं थे कि यह क्या है।खुशी होती थी।सतोप्रधान होने से जैसे उड़ जाते थे,यह क्या होता है समझ में नहीं आता था।तुम जानते हो जो चित्र पहले बने थे वह फिर बदलकर नये2बनाते गये हैं।अभी नये2चित्र कल्प पहले माफिक बनते जाते हैं।सीढ़ी का चित्र देखो कितना अच्छा है।इस पर समझाना सहज है।देरी से आने वालों

g को और ही सहज समझानी मिलती है।अभी नये2जो आते है 7दिन में सारा नालेज समझ लेते हैं।पुरानों से भी आगे जा रहे हैं।कोई कहते हैं पहले आते थे तो अच्छा था,अरे यह भी फिकर मत करो।आगे आते थे और भाग्यशाली हो जाते तो?देरी से आने वालों को तो सहज तख्त मिलता है।पहले वालों ने जो देखा वे फिर अब हैं भी नहीं।खत्म हो गये। पिछाड़ी में रिजल्ट का मालूम पड़ता है,कौन पास हुआ।नये2बढ़ते हैं और झट सर्विस पर लग पड़ते हैं।पुराने इतना नहीं लगते।नई2बच्चियाँ सर्विस से दिल पर चढ़ी रहती हैं। पुराने कितने तो खत्म हो गये।इसलिए बाबा कहते है जिनको सर्वोत्तम ब्राह्मण कुल भूषण कहा जाता है उनमें ही कोई आश्चर्यवत सुनन्ती..भागन्ती भी हो जाते हैं।जो गाया हुआ है वह अब प्रैक्टिकल हो रहा है। अच्छा- मीठे2स्किलधे बच्चों प्रति मात पिता दादादादा का यादप्यार और गुडमार्निंग।रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।।

स्वउन्नति के लिए दृढ़ संकल्प:- अपनी जाँच आपेही करनी है-देखना है मैं बहुत2मीठा बनी हूँ।हमारे में क्या2कमी है।सब देवीगुण धारण हुए हैं? सहनशील बना हूँ। अपनी चलन देवताओं जैसी बनानी है,आसुरी खान पान त्याग देना है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

12-10-02 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे–तुम्हें रूहानी कमाई में बहुत-बहुत ध्यान देना है, सिर पर विकर्मों का बोझा बहुत है, इसलिए समय वेस्ट नहीं करना है"

प्रश्नः- जिन बच्चों का ध्यान रूहानी कमाई में होगा, उनकी निशानी क्या होगी?

उत्तरः- वह कभी भी झरमुई झगमुई में अपना समय बरबाद नहीं करेंगे। शरीर निर्वाह करते हुए भी रूहानी कमाई में समय लगायेंगे। सुबह उठकर बहुत-बहुत प्यार से बाप को याद करेंगे। याद से आत्मा उड़ती रहेगी।

2. वह बाप समान रहमदिल बन अपने ऊपर और सर्व के ऊपर रहम करेंगे। सबको बाप का परिचय देंगे।

गीतः- तुम्हीं हो माता पिता तुम्हीं हो.....

ओम् शान्ति। बच्चों ने गीत में मात-पिता की महिमा सुनी, जैसे कोई घर में बच्चे रहते हैं तो मात-पिता, दादा होता है ना। दादे से वर्सा मिलता है – बाप द्वारा, क्योंकि दादे की मिलकियत बड़ों की मिलकियत होती है। तो यह भी सबसे बड़ा है। दुनिया वालों को तो पता ही नहीं। बच्चों को पता है। तुम्हीं हो माता पिता ... तो यह दादे के लिए शब्द हैं। तो उनका परिचय देना पड़े। चाहे सम्मुख हो, चाहे चित्रों द्वारा, चाहे प्रोजेक्टर द्वारा तो दादे का परिचय देना बहुत जरूरी है। जिस्मानी दादा साकार होता है। अब तुम्हारी बुद्धि में पहले कौन आया? दादा। भल प्रोजेक्टर द्वारा समझाओ, वह भी नम्बरवार चित्र दिखाना है। पहले-पहले परमपिता परमात्मा की समझानी देनी है। तो परमपिता परमात्मा से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है? और फिर प्रजापिता ब्रह्मा से क्या सम्बन्ध है? तो पहले-पहले शिव का चित्र दिखाना चाहिए फिर है लिखत, जो प्रदर्शनी पर समझाते हैं वा मैगजीन भी बनाते हैं तो पहले-पहले परिचय देना है। गीता में लिखा हुआ है भगवानुवाच। तो पहले भगवान का परिचय देना चाहिए। तुम सबकी बुद्धि चली गई है ऊपर। सबसे ऊंचा है परमपिता परमात्मा निराकार शिवबाबा। फिर ब्रह्मा, विष्णु, शंकर फिर यहाँ आओ तो जैसे घर में मात-पिता और दादा बैठे होते हैं। वह है हद का, यह है बेहद का। चित्र सहित सारी लिखते होनी चाहिए। फर्क भी बताना चाहिए कि अनेक मनुष्य हठयोग सिखाते आये हैं और एक परमात्मा राजयोग सिखाते हैं, जिससे मुक्ति जीवनमुक्ति मिल रही है। यहाँ है ही एक निराकार परमपिता परमात्मा शिव भगवानुवाच की बात। जैसे लौकिक माँ-बाप, दादा बच्चों की बुद्धि में याद पड़ते हैं। हूबहू तुम्हारी बुद्धि में भी ऐसे है। यह सिर्फ पारलौकिक है, वह है लौकिक। तुमको निश्चय है कि यह है शिवबाबा। हमारा बाप है तो उनको याद करना चाहिए। परन्तु बच्चे भूल जाते हैं। टाइम बहुत वेस्ट करते हैं। वेस्ट टाइम नहीं करना चाहिए क्योंकि विकर्मों का बोझा सिर पर बहुत है। आत्मा में खाद पड़ गई है। तो लिखना चाहिए परमात्मा कौन है? परमात्मा के चित्र और कृष्ण के चित्र पर घड़ी-घड़ी समझाना चाहिए। स्वर्ग और नर्क के गोले बड़े अच्छे मशहूर हैं। नर्क के गोले पर लिख देना चाहिए कि यह है रावण राज्य, भ्रष्टाचारी दुनिया और स्वर्ग के गोले पर

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

लिखो कि यह है श्रेष्ठाचारी दुनिया, तो टाइम लिखना चाहिए स्वर्ग इतना समय, नर्क इतना समय। देखो चढ़ती कला, उतरती कला का भी चित्र है क्योंकि उतरती कला में 5 हजार वर्ष और चढ़ती कला एक सेकेण्ड में, तो यह जम्प हो गया। यह मुख्य बात समझाने की है, फिर है विराट रूप, जिसमें ब्राह्मण चोटी ईश्वरीय सम्प्रदाय हैं। ब्रह्मा मुख द्वारा रचा हुआ तुम्हारा ब्राह्मण कुल मशहूर है, सर्वोत्तम है। तो सबको समझाने के लिए यह चित्र बहुत जरूरी हैं। वैरायटी धर्मों का झाड है, वह भी अच्छा है। बच्चों को स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। तो चक्र का भी ज्ञान देना है कि चक्र कैसे फिरता है। ब्रह्मा-सरस्वती का हीरो हीरोइन का पार्ट कैसे है। तो गोले का भी चित्र बड़ा होना चाहिए। बहुत में बहुत डेढ़ घण्टा प्रोजेक्टर दिखाना चाहिए क्योंकि मनुष्य इन बातों में थक जाते हैं। स्टोरी तो कोई नहीं – यह तो ज्ञान की बात है। पहले जब लिखे तब अन्दर में आ सके। तो दिखाने के लिए टिकट रखना चाहिए। पैसे वाली टिकेट नहीं, परन्तु बड़े-बड़े आदमियों को निमन्त्रण दे बुलाना चाहिए क्योंकि बड़ों-बड़ों से ओपीनियन लिखाना है। झुण्ड के झुण्ड में कैसे लिखायेंगे और कैसे दिखायेंगे क्योंकि समझाना भी है। इसलिए पहले-पहले बड़े आदमियों को बुलाकर लिखाना है फिर जनरल कर देना चाहिए। प्रदर्शनी में भी ऐसे, तो प्रोजेक्टर में भी ऐसे, मैगजीन में भी इन अच्छे-अच्छे चित्रों को बनाकर साथ-साथ समझानी लिखो फिर किसको प्रेजेन्ट दे

c देना चाहिए। हठयोग और राजयोग का कान्ट्रास्ट भी अच्छी तरह लिखना चाहिए। हठयोग भी एक प्रकार की हिंसा है क्योंकि शरीर को कष्ट देते हैं, तकलीफ देते हैं। तुम्हारा यह है अहिंसक योग जो अति सहज है। चलते-फिरते बाप को याद करते रहो। हिंसक और अहिंसक को भी सिद्ध करना है। कई तो शरीर की तन्दरूस्ती के लिए क्रिया करते हैं। वह कोई फिर परमात्मा से नहीं मिलते, उनको भी यह योग कह देते हैं। योगाश्रम है ना। यह है फिर सहज राजयोग। ईश्वर का सिखाया हुआ योग। तो यह बहुत अच्छी तरह से समझाना चाहिए। जिनका बुद्धियोग सारा दिन झरमुई, झगमुई में होगा वह क्या समझा सकेंगे। जिनकी बुद्धि में होगा कि सर्विस करनी है, वह करेंगे। 8 घण्टा धन्धा किया फिर यह कमाई करनी चाहिए। वह है जिस्मानी कमाई, यह है रूहानी कमाई। तो इस कमाई में बहुत ध्यान देना चाहिए। योग में बहुत प्रैक्टिस करनी चाहिए। सुबह उठ बाप को बड़े प्यार से याद करना चाहिए। जिनको बाप एक दो नम्बर में रखते, वह भी याद नहीं करते हैं। भाषण तो बहुत अच्छा कर लेते हैं परन्तु याद में नहीं रहते। आत्मा तो याद से ही उड़ेगी, ज्ञान से थोड़ेही

d उड़ेगी। ध्यान में भी याद से ही जाते हैं। ज्ञान की तो इसमें कोई बात ही नहीं। ध्यान तो एक पाई पैसे की बात हो जाती है। कईयों को तो फट से कृष्ण का साक्षात्कार हो जाता है। कई बच्चियां लिखती हैं कि बाबा हमने आपको पहचाना है। वह ध्यान में ब्रह्मा को भी देखती हैं और प्रेरणा भी मिलती है। तो फिर उनको निश्चय हो जाता है। जिसने बाबा को कभी देखा भी नहीं है वह भी लिखती हैं हम बाबा को बहुत याद करते हैं। हम आपसे वर्सा लेकर ही छोड़ेंगे। आप तो जानते हैं हम याद करते हैं। जब कहती हैं आप... तो शिवबाबा ही याद आता है। तो बांधेली बच्चियां बहुत याद करती हैं, उतना सामने वाले भी याद नहीं करते।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

एक बात है याद की। फिर गांधी जी कहते थे कि रामराज्य हो। अभी तो रावणराज्य है। इस पर तुम समझा सकते हो। चढ़ती कला तो परमात्मा ही करा सकते हैं। बाकी तो सब एक दो को गिराते ही रहते हैं। देवतायें भी गिरते जाते हैं। भल सुख में ही हैं परन्तु कला तो कम होती जाती है ना। जूँ की तरह गिरते जाते हैं क्योंकि ड्रामा भी जूँ के मिसल चलता ही रहता है। तो चढ़ती कला एक के ही द्वारा होती है। समझाने के लिए प्रोजेक्टर बहुत अच्छा है। सेन्टर भी बहुत बढ़ते जायेंगे। बाबा कहते हैं कि हर एक भाषा में स्लाईडस बनाते जाओ। परन्तु काम करने वाला ऐसा कोई है नहीं। बाबा युक्ति तो बता देते हैं। परन्तु काम करने वाला चाहिए तो सर्विस बहुत बढ़ सकती है।

बच्चों को अपने भाई-बहिनों पर बहुत रहम करना चाहिए। बाबा रहमदिल है ना। मेरा आना भी भारत में ही होता है, और जगह आना मेरा नहीं होता। शिवजयन्ती भी भारत में मनाई जाती है। परन्तु जानते नहीं हैं, समझो क्राइस्ट की जयन्ती मनाते हैं तो उनके कर्तव्य को जानते हैं। परन्तु शिव का कर्तव्य नहीं जानते। वही पतित-पावन है। भारत बड़े ते बड़ा तीर्थ है। गीता में कृष्ण का नाम डालने से इतने बड़े तीर्थ भारत की महिमा गुम हो गई है।

e देखो, मुहम्मद गजनवी ने मन्दिर लूटा था, अगर उनको यह मालूम होता कि यह हमारे बाबा का मन्दिर है तो लूटते थोड़ेही। अल्लाह के मन्दिर को कौन लूटेगा, जिसने स्वर्ग की

f स्थापना की। अगर शिवबाबा को जाने तो कभी मन्दिर को हाथ न लगायें। भल वह शिव को माथा टेकते हैं परन्तु जान गये तो कभी न लूटें। सिर्फ गीता में कृष्ण का नाम डालने से यह सब कुछ हुआ है। गीता खण्डन होने से देखो क्या हाल हुआ है। अगर शिव का नाम होता कि वही गति सद्गति दाता है। यह एक की ही महिमा है। अगर वह न आता तो पावन कैसे बनते? भारत को कैसे स्वर्ग बना सकते। यह गुप्त बात है ना। जानते हैं हम दुर्गति में थे। अब यहाँ बैठे हैं परन्तु जा रहे हैं। बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए कि हम अपने लिए राजाई स्थापन कर रहे हैं, तो औरों को भी रास्ता दिखाकर प्रजा बनानी चाहिए।

g बड़ी मेहनत करनी चाहिए। है तो बहुत सहज। सिर्फ बाप और वर्से को याद करो। स्वर्ग को याद करो, यह तो नर्क है। हम सो का अर्थ भी बाबा ने समझाया है, हम सो देवता, हम सो क्षत्रिय..... और कोई तो इन सब बातों को समझते नहीं। तो विराट रूप में यह समझाना है कि हम सो देवता.... बनते हैं। अभी हम स्वर्ग में गये कि गये। बहुत लोग पूछते हैं कितनी देरी है? बाबा कहते हैं तुम अब तैयार कहाँ हुए हो जो स्वर्ग में जा सको। ड्रामा तो बना

h हुआ है। जितनी-जितनी स्थापना होती जा रही है तो विनाश ज्वाला भी धीरे-धीरे बढ़ती जा रही है। धर्मों में झगड़ा शुरू होता जा रहा है। पहले पार्टीशन थोड़ेही था। तुम जानते हो पहले एक देवता धर्म था। गीत है ना – आप मिले तो हम स्वर्ग का राज्य, योग बल से ले

i रहे हैं। बाहुबल से कोई ले नहीं सकता। उनके पास बाहुबल है। रशिया, अमेरिका आपस में मिल जाएं तो सारा राज्य ले सकते हैं। परन्तु ऐसा होता नहीं है। हमको राज्य मिलना है। जब देवताओं का राज्य है तो वहाँ क्रिश्चियन, बौद्धी नहीं होते। अब देवता धर्म की स्थापना हो रही है। भारत अविनाशी खण्ड है। बाप भी यहाँ आये हैं ना। ड्रामा में ऐसे ही है कि

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

योगबल से राजाई मिलती है। भारत का योग मशहूर नहीं है। ज्ञान का नाम मशहूर है। परन्तु योग कैसे सिखाया, वह नहीं जानते। कृष्ण ने तो योग नहीं सिखाया। परमपिता परमात्मा ही योग सिखला रहे हैं। यह कितनी अटपटी बात है जो बुद्धि से खिसक जाती है। कई तो जानते भी छोड़ देते हैं। तब बाप कहते हैं समझदार देखना हो तो यहाँ देखो... समझदार वर्सा लेते हैं। बेसमझ छोड़ देते हैं। स्वर्ग का वर्सा गँवा देते हैं। महान मूर्ख, महान सुजान देखना हो तो यहाँ देखो। स्वर्ग में वह भी जायेंगे परन्तु प्रजा में जायेंगे। तुम जानते हो सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी प्रजा कैसे बनती है। बाप की गोद यहाँ मिलती है। मूलवतन में गोद का हिसाब नहीं है। बच्चा जब पैदा होता है तो गुरू की गोद में देते हैं। समझते हैं गुरू की गोद में नहीं गया तो दुर्गति को पायेगा। छोटे बच्चे को भी गुरू करा देते हैं। गुरू बिगर गति नहीं, यह गुरूओं ने समझाया है। पता नहीं कब शरीर छूट जाए। वहाँ तो जन्म ले फिर गुरू के पास जाते हैं। यहाँ तीनों कम्बाइन्ड हैं। यह कोई शास्त्रों में लिखा नहीं है कि वही बाप टीचर गुरू की गोद है। बाप ने पूछा शिवबाबा को बाप है? कहते हैं हाँ। अच्छा शिवबाबा को टीचर है? गुरु है? नहीं। सिर्फ माँ बाप मिलते हैं। यह गुह्य हिसाब है। बाप बच्चों पर बच्चे बाप पर बलिहार जाते हैं। लौकिक में बच्चे बाप पर बलिहार नहीं जाते हैं, बाप जाते हैं। तो यह समझने की बात है कि बरोबर परमात्मा बाप, टीचर, सतगुरु है, उनसे ही वर्सा मिलता है। अच्छा-

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। हम ब्राह्मण चोटी हैं, ईश्वरीय सम्प्रदाय के हैं, इस नशे में रहना है।

२- अपना समय बाप की याद में सफल करना है। रूहानी सर्विस में विजी रहना है। बाप पर पूरा-पूरा बलिहार जाना है।

वरदान:- बहानेबाज़ी के खेल को समाप्त करने वाले मास्टर दातापन के स्वमानधारी भव

जिन बच्चों को बहानेबाजी का खेल आता है वह कहेंगे—ऐसे नहीं होता तो वैसा नहीं होता। इसने ऐसे किया, सरकमस्टांश वा बात ही ऐसी थी....अब इस बहानेबाजी की भाषा को समाप्त कर दृढ़ प्रतिज्ञा करो कि ऐसा हो या वैसा लेकिन मुझे तो बाप जैसा बनना है। दूसरा सहयोग दे तो मैं सम्पन्न बनूं, नहीं। इस लेने के बजाए मास्टर दाता बन सहयोग, स्नेह, सहानुभूति देना ही लेना है। इस भावना से मास्टर दातापन के स्वमानधारी बन जायेंगे।

स्लोगन:-

जब मैं और मेरे पन के भावों से वैराग्य हो तब कहेंगे बेहद के वैरागी।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

15-10-98 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – प्रभात के समय मन-बुद्धि से मुझ बाप को याद करो, साथ-साथ भारत को दैवी राजस्थान बनाने की सेवा करो"

प्रश्नः- सूर्यवंशी राजधानी की प्राइज़ किस आधार पर मिलती है?

उत्तरः- सूर्यवंशी राजधानी की प्राइज़ लेना है तो बाप का पूरा मददगार बनो, श्रीमत पर चलते रहो। आशीर्वाद नहीं मांगनी है लेकिन योगबल से आत्मा को पावन बनाने का पुरुषार्थ करना है। देह सहित देह के सब सम्बन्धों को त्याग एक मोस्ट बिलवेड बाप को याद करो तो तुम्हें सूर्यवंशी राजधानी की प्राइज़ मिल जायेगी। उसमें पीस, प्योरिटी, प्रासपर्टी सब कुछ होगा।

गीतः- आखिर वह दिन आया आज.....

ओम् शान्ति। ओम् शान्ति का अर्थ तो तुम बच्चों की बुद्धि में रहता ही है। बाप जो समझाते हैं वह इस दुनिया में सिवाए तुम्हारे और किसको समझ में नहीं आयेगा। वह ऐसे समझेंगे जैसे कोई मेडिकल कॉलेज में नया जाकर बैठे तो कुछ समझ न सके। ऐसे कोई सतसंग होता नहीं, जहाँ मनुष्य जाये और कुछ न समझे। वहाँ तो है ही शास्त्र आदि सुनाने की बातें। यह है बड़े ते बडी कॉलेज। नई बात नहीं है। फिर से वह दिन आया आज, जबकि बाप बैठ बच्चों को राजयोग सिखलाते हैं। इस समय भारत में राजाई तो है नहीं। तुम इस राजयोग से राजाओं का राजा बनते हो अर्थात् तुम जानते हो कि जो विकारी राजायें हैं उनके भी हम राजा बन रहे हैं। बुद्धि मिली है। जो कोई कर्म करते हैं वह बुद्धि में रहता है ना। तुम वारियर्स हो, जानते हो हम आत्मायें अब बाप के साथ योग रखने से भारत को पवित्र बनाते हैं और चक्र के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज धारण कर हम चक्रवर्ती राजा बन रहे हैं। यह बुद्धि में रहना चाहिए। हम युद्ध के मैदान में हैं। विजय तो हमारी है ही। यह तो सर्टेन है। बरोबर हम अब इस भारत को फिर से दैवी डबल सिरताज राजस्थान बना रहे हैं। बाबा चित्रों के लिए बहुत अच्छी रीति समझाते रहते हैं। हम 84 जन्म पूरे कर अब वापिस जाते हैं। फिर आकर राज्य करेंगे। यह सब ब्रह्माकुमार-कुमारियां क्या कर रहे हैं, ब्रह्माकुमारियों की यह संस्था क्या है? पूछते हैं ना। बी.के. फट से कहती हैं कि हम इस भारत को फिर से दैवी राजस्थान बना रहे हैं, श्रीमत पर। मनुष्य 'श्री' का अर्थ भी नहीं जानते हैं। तुम जानते हो श्री श्री शिवबाबा हैं, उनकी ही माला बनती है। यह सारी रचना किसकी है? क्रियेटर तो बाप हुआ ना। सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी जो भी हैं, यह सारी माला है रुद्र शिवबाबा की। सब अपने रचता को जानते हैं परन्तु उनके आक्यूपेशन को नहीं जानते। वह कब और कैसे आकर पुरानी दुनिया को नया बनाते हैं – यह किसकी बुद्धि में भी नहीं है। वह तो समझते हैं – कलियुग अभी बहुत वर्ष चलना है।

अभी तुम जानते हो हम दैवी राजस्थान स्थापन करने के निमित्त बने हुए हैं। बरोबर दैवी राजस्थान होगा फिर क्षत्रिय राजस्थान होगा। पहले सूर्यवंशी कुल फिर क्षत्रिय कुल का राज्य होगा। तुमको चक्रवर्ती राजा रानी बनना है तो बुद्धि में चक्र फिरना चाहिए ना। तुम किसको भी इन चित्रों पर बहुत अच्छी रीति समझा सकते हो। यह लक्ष्मी-नारायण सूर्यवंशी कुल और यह

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

राम-सीता हैं क्षत्रिय कुल। फिर वैश्य, शूद्र वंशी पतित कुल बन जाते हैं। पूज्य फिर पुजारी बनते हैं। सिंगल ताज वाले राजाओं का चित्र भी बनाना चाहिए। यह एग्जीवीशन बड़ी वन्डरफुल हो जायेगी। तुम जानते हो ड्रामा अनुसार सर्विस अर्थ यह एग्जीवीशन बहुत जरूरी है। तब तो बच्चों की बुद्धि में बैठेगा। नई दुनिया कैसे स्थापन हो रही है -- वह चित्रों द्वारा समझाया जाता है। बच्चों की बुद्धि में खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। यह तो समझाया है सतयुग में आत्मा का ज्ञान है सो भी जब बूढ़े होते हैं तब अनायास ख्याल आता है कि यह पुराना शरीर छोड़ फिर दूसरा नया शरीर लेना है। यह ख्यालात पिछाड़ी के टाइम में आता है।

c बाकी सारा टाइम खुशी-मौज में रहते हैं। पहले यह ज्ञान नहीं रहता है। बच्चों को समझाया है यह परमपिता परमात्मा का नाम, रूप, देश, काल कोई भी नहीं जानते, जब तक कि बाप आकर अपना परिचय दे। और परिचय भी बहुत गम्भीर है। उनका रूप तो पहले लिंग ही कहना पड़ता। रुद्र यज्ञ रचते हैं तो मिट्टी के लिंग बनाते हैं, जिनकी पूजा होती आई है। बाप ने पहले यह नहीं बताया कि बिन्दी रूप है। बिन्दी रूप कहते तो तुम समझ नहीं सकते। जो बात जब समझानी है तब समझाते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे पहले क्यों नहीं बताया जो आज समझाते हो। नहीं, ड्रामा में नूँध ही ऐसी है। इस एग्जीवीशन से बहुत सर्विस की वृद्धि होती है। इन्वेन्शन निकलती है तो फिर वृद्धि होती जाती है। जैसे बाबा मोटर का मिसाल देते हैं। पहले इन्वेन्शन करने में मेहनत लगी होगी फिर तो देखो बड़े बड़े कारखानों में एक मिनट में मोटर तैयार हो जाती है। कितनी साइन्स निकली है।

तुम जानते हो कितना बड़ा भारत है। कितनी बड़ी दुनिया है। फिर कितनी छोटी हो जायेगी। यह बुद्धि में अच्छी रीति बिठाना है। जो सर्विसएबुल बच्चे हैं, उन्हों की ही बुद्धि में रहेगा। बाकी का तो खान-पान, झगमुई-झगमुई में ही टाइम वेस्ट होता है। यह तुम जानते हो भारत में फिर से दैवी राजस्थान स्थापन हो रहा है। वास्तव में किंगडम अक्षर भी रांग है। भारत दैवी राजस्थान बन रहा है। इस समय आसुरी राजस्थान है, रावण का राज्य है। हरेक में 5 विकार प्रवेश हैं। कितनी करोड़ आत्मायें हैं, सब एक्टर्स हैं। अपने-अपने समय पर आकर और फिर चले जाते हैं। फिर हरेक को अपना पार्ट रिपीट करना होता है। सेकेण्ड बाई सेकेण्ड ड्रामा हूबहू रिपीट होता है। जो कल्प पहले पार्ट बजाया था, वही अब बजता है, इतना सब बुद्धि में रखना है। धन्धोधोरी में रहने से तो फिर मुश्किल हो जाता है परन्तु बाप कहते हैं प्रभात का तो गायन है। गाते हैं राम सिमर प्रभात मोरे मन..... बाप कहते हैं अभी और कुछ भी नहीं सिमरो, प्रभात के समय मुझे याद करो। बाप अभी सम्मुख कहते हैं, भक्ति मार्ग में फिर गायन चलता है। सतयुग-त्रेता में तो गायन होता नहीं। बाप समझाते हैं -- हे आत्मा,

d अपने मन-बुद्धि से प्रभात के समय मुझ बाप को याद करो। भक्त लोग अक्सर करके रात को जागते हैं, कुछ न कुछ याद करते हैं। यहाँ की रस्म-रिवाज फिर भक्ति मार्ग में चली आई है। तुम बच्चों को समझाने की भिन्न-भिन्न युक्तियां मिलती रहती हैं। भारत इतना समय पहले दैवी राजस्थान था फिर क्षत्रिय राजस्थान हुआ फिर वैश्य राजस्थान बना। दिन-प्रतिदिन तमोप्रधान बनते जाते हैं, गिरना जरूर है। मुख्य है यह चक्र, चक्र को जानने से तुम चक्रवर्ती राजा बनते हो। अभी तुम कलियुग में बैठे हो। सामने सतयुग है। यह चक्र कैसे फिरता है, इसका

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

तुमको ज्ञान है। जानते हो कल हम सतयुगी राजधानी में होंगे। कितना सहज है। ऊपर में त्रिमूर्ति शिव भी है। चक्र भी है। लक्ष्मी-नारायण भी इसमें आ जाते हैं। यह चित्र सामने रखा हुआ हो तो कोई को भी सहज रीति समझा सकते हो। भारत दैवी राजस्थान था, अभी नहीं है। सिंगल ताज वाले भी नहीं हैं। चित्रों पर ही तुम बच्चों को समझाना है। यह चित्र बहुत वैल्युबुल हैं। कितनी वन्डरफुल चीज है तो वन्डरफुल रीति समझाना भी पड़े। यह 30``x40" का झाड़ त्रिमूर्ति भी सबको अपने-अपने घर में रखना पड़े। कोई भी मित्र-सम्बन्धी आदि आये तो इन चित्रों पर ही समझाना चाहिए। यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी है। हरेक बच्चे के पास यह चित्र जरूर होने चाहिए। साथ में अच्छे-अच्छे गीत भी हों। आखिर वह दिन आया आज — बरोबर बाबा आया हुआ है। हमको राजयोग सिखलाते हैं। चित्र तो कोई भी मांगे मिल सकते हैं। गरीबों को फ्री मिल सकते हैं। परन्तु समझाने की भी ताकत चाहिए। यह है अविनाशी ज्ञान रत्नों का खजाना। तुम दानी हो, तुम्हारे जैसा अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान कोई कर नहीं सकता। ऐसा दान कोई होता नहीं। तो दान करना चाहिए, जो आये उनको समझाना चाहिए। फिर एक-दो को देख बहुत आयेंगे। यह चित्र मोस्ट वैल्युबुल चीज हैं, अमूल्य हैं। जैसे तुम भी अमूल्य कहलाते हो। तुम कौड़ी से हीरे जैसा बनते हो। यह चित्र विलायत में ले जाकर कोई समझाये तो कमाल हो जाए। इतना समय यह सन्यासी लोग कहते आये कि हम भारत का योग सिखलाते हैं। हर एक अपने धर्म की महिमा करते हैं। बौद्ध धर्म वाले कितने को बौद्धी बना देते हैं, परन्तु उससे फायदा तो कुछ भी नहीं। तुम तो यहाँ मनुष्य को बन्दर से मन्दिर लायक बनाते हो। भारत में ही सम्पूर्ण निर्विकारी थे। भारत गोरा था, अभी भारत काला है। कितने मनुष्य हैं! सतयुग में तो बहुत थोड़े होंगे ना। संगम पर ही बाप आकर स्थापना करते हैं। राजयोग सिखलाते हैं। उन बच्चों को ही सिखलाते हैं, जिन्होंने कल्प पहले भी सीखा था। स्थापना तो होनी ही है। बच्चे रावण से हार खाते हैं फिर रावण पर जीत पाते हैं। कितना सहज है। तो बच्चों को बड़े चित्र बनवाकर उस पर सर्विस करनी चाहिए। बड़े-बड़े अक्षर होने चाहिए। लिखना चाहिए — यहाँ से भक्ति मार्ग शुरु होता है। जरूर जब दुर्गति पूरी होगी तब तो बाप सदगति करने आयेंगे ना।

बाबा ने समझाया है ऐसे कभी भी किसको नहीं कहना कि भक्ति न करो। नहीं, बाप का परिचय दे समझाना है तब तीर लगेगा। तुम जानते हो महाभारत लड़ाई क्यों कहा जाता है? क्योंकि यह बड़ा भारी यज्ञ है, इस यज्ञ से ही यह लड़ाई प्रज्वलित हुई है। यह पुरानी दुनिया खत्म होनी है। यह बातें तुम्हारी बुद्धि में हैं। मनुष्यों को पीस प्राइज़ मिलती रहती है। परन्तु पीस तो होती नहीं। वास्तव में पीस स्थापन करने वाला तो एक ही बाप है। उनके साथ तुम मददगार हो। प्राइज भी तुमको मिलनी है। बाप को थोड़ेही प्राइज़ मिलती है। बाप तो है देने वाला। तुमको नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार प्राइज मिलती है। बेशुमार बच्चे होंगे। तुम अभी प्योरिटी, पीस, प्रासपर्टी स्थापन कर रहे हो। कितनी भारी प्राइज़ है! जानते हो जितना जो मेहनत करेंगे उनको सूर्यवंशी राजधानी की प्राइज़ मिलेगी। बाप है श्रीमत देने वाला। ऐसे नहीं, बाबा आशीर्वाद करो। स्टूडेन्ट को राय दी जाती है कि बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। योगबल से ही तुम्हारी आत्मा पवित्र बनेगी। तुम सब सीतायें हो, आग से पार

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

होती हो। या तो योगबल से पार होना है या तो आग में जलना पड़ेगा। देह सहित सब सम्बन्धों को त्याग एक मोस्ट बिलवेड बाप को याद करना है। परन्तु यह याद निरन्तर रहने में बड़ी मुश्किलात है। टाइम लगता है। गाया भी हुआ है योग अग्नि। भारत का प्राचीन योग और ज्ञान मशहूर है क्योंकि गीता है सर्व शास्त्रमई शिरोमणी। उसमें राजयोग अक्षर है, परन्तु राज़ अक्षर गुम कर सिर्फ योग अक्षर पकड़ लिया है। बाप बिगर कोई कह न सके कि इस राजयोग से मैं तुमको राजाओं का राजा बनाऊंगा। अभी तुम शिवबाबा के सम्मुख बैठे हो। जानते हो हम सब आत्मायें वहाँ परमधाम में निवास करने वाली हैं फिर शरीर धारण कर पार्ट बजाती हैं। पुनर्जन्म शिवबाबा तो नहीं लेते। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को भी पुनर्जन्म नहीं लेना है। बाप कहते हैं मैं आता ही हूँ पतित से पावन बनाने। इसलिए ही सब याद करते हैं पतित-पावन आओ, यह एक्यूरेट अक्षर है। बाप कहते हैं हम तुमको पावन सो देवी-देवता बना रहे हैं तो इतना नशा भी चढ़ना चाहिए। बाबा इनमें आकर हमको शिक्षा दे रहे हैं। इस फलों के बगीचे का बागवान बाबा है, बाबा का हमने हाथ पकड़ा है। इसमें सारी बुद्धि की बात है। बाबा हमको उस पार, विषय सागर से क्षीर सागर में ले जाते हैं। वहाँ विष होता नहीं, इसलिए उनको वाइसलेस वर्ल्ड कहा जाता है। निर्विकारी भारत था, अब वह विकारी बना हुआ है। यह चक्र भारत के लिए ही है। भारतवासी ही चक्र लगाते हैं। और धर्म वाले पूरा चक्र नहीं लगाते। वह तो पिछाड़ी में आते हैं। यह बड़ा वन्डरफुल चक्र है। बुद्धि में नशा रहना चाहिए। इन चित्रों पर बड़ा अटेन्शन रहना चाहिए। सर्विस करके दिखाओ। विलायत में भी चित्र जायें तो नाम बाला होगा। विहंग मार्ग की सर्विस हो जाए।

अच्छा, मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- अविनाशी ज्ञान रत्नों का खजाना जो मिला है उसे दान करना है। अपना समय खाने-पीने, झरमुई-झगमुई में व्यर्थ नहीं गँवाना है।

२- कौड़ी जैसे मनुष्यों को हीरे जैसा बनाने की सेवा करनी है। बाप से आशीर्वाद या कृपा मांगनी नहीं है। उनकी राय पर चलते रहना है।

वरदान:- हिम्मत के संकल्प द्वारा माया को हिम्मतहीन बनाने वाले हिम्मतवान आत्मा भव

जो बच्चे एक बल एक भरोसे में रहते हैं, हिम्मत का संकल्प करते हैं कि हमें विजयी बनना ही है तो हिम्मते बच्चे मददे बाप का सदा अनुभव होता है। हिम्मत से मदद के पात्र बन जाते हैं। हिम्मत के संकल्प के आगे माया हिम्मतहीन बन जाती है। जो कमजोर संकल्प करते कि पता नहीं होगा या नहीं, मैं कर सकूंगा या नहीं, ऐसे संकल्प ही माया का आह्वान करते हैं। इसलिए सदा उमंग-उत्साह सम्पन्न हिम्मत के संकल्प करो तब कहेंगे हिम्मतवान आत्मा।

स्लोगन:-

निर्माणचित के तख्त पर बैठ, जिम्मेवारी का ताज धारण करना ही श्रेष्ठता है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

14-10-99 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – बाप आया है तुम्हें गुल-गुल (फूल) बनाने, तुम फूल बच्चे कभी किसी को दु:ख नहीं दे सकते, सदा सुख देते रहो"

प्रश्न :- किस एक बात में तुम बच्चों को बहुत-बहुत खबरदारी रखनी है?

उत्तर:- मन्सा-वाचा-कर्मणा अपनी जबान पर बड़ी खबरदारी रखनी है। बुद्धि से विकारी दुनिया की सब लोकलाज कुल की मर्यादायें भूलनी है। अपनी जांच करनी है कि हमने कितने दिव्यगुण धारण किये हैं? लक्ष्मी-नारायण जैसे सिविलाइज्ड बने हैं? कहाँ तक गुल-गुल (फूल) बने हैं?

ओम शान्ति। शिवबाबा जानते हैं यह हमारे बच्चे आत्मायें है। तुम बच्चों को आत्मा समझ शरीर को भूल शिवबाबा को याद करना है। शिवबाबा कहते हैं मैं तुम बच्चों को पढ़ाता हूँ। शिवबाबा भी निराकार है, तुम आत्मायें भी निराकार हो। यहाँ आकर पार्ट बजाते हो। बाप भी आकर पार्ट बजाते हैं। यह भी तुम जानते हो ड्रामा प्लैन अनुसार बाप हमको आकर गुल-गुल बनाते है। तो सब अवगुणों को छोड़ गुणवान बनना चाहिए। गुणवान कभी किसको दु:ख नहीं देते। सुना-अन-सुना नहीं करते। कोई दु:खी है तो उसका दु:ख दूर करते हैं। बाप भी आते हैं तो सारी दुनिया के दु:ख जरूर दूर होने हैं। बाप तो श्रीमत देते हैं, जितना हो सके पुरूषार्थ कर सभी के दु:ख दूर करते रहो। पुरूषार्थ से ही अच्छा पद मिलेगा। पुरूषार्थ न करने से पद कम हो जायेगा। वह फिर कल्प-कल्पान्तर का घाटा पड़ जाता है। बाप बच्चों को हर बात समझाते हैं। बच्चे अपने को घाटा डालें—यह बाप नहीं चाहता। दुनिया वाले फायदे और घाटे को नहीं जानते इसलिए बच्चों को अपने पर रहम करना है। श्रीमत पर चलते रहना है। भल बुद्धि इधर-उधर भागती है तो भी कोशिश करो हम ऐसे बेहद के बाप को क्यों नहीं याद करते हैं। जिस याद से ही ऊंच पद मिलता है। कम से कम स्वर्ग में तो जाते हैं। परन्तु स्वर्ग में ऊंच पद पाना है। बच्चों के माँ-बाप कहते हैं ना—हमारा बच्चा स्कूल में पढ़कर ऊंच पद पाये। यहाँ तो किसको भी पता नहीं पड़ता। तुम्हारे सम्बन्धी यह नहीं जानते कि तुम क्या पढ़ाई पढ़ते हो। उस पढ़ाई में तो मित्र-सम्बन्धी सब जानते हैं, इसमें कोई जानते हैं, कोई नहीं जानते हैं। कोई का बाप जानता है तो भाई-बहन नहीं जानते। कोई की माँ जानती है तो बाप नहीं जानता क्योंकि यह विचित्र पढ़ाई और विचित्र पढ़ाने वाला है। नम्बरवार समझते हैं, बाप समझाते हैं भक्ति तो तुमने बहुत की है। सो भी नम्बरवार, जिन्होंने बहुत भक्ति की है वही फिर यह ज्ञान भी लेते हैं। अब भक्ति की रस्म-रिवाज पूरी होती है। आगे मीरा के लिए कहा जाता था उसने लोकलाज कुल की मर्यादा छोड़ी। यहाँ तो तुमको सारे विकारी कुल की मर्यादा छोड़नी है। बुद्धि से सबका सन्यास करना है। इस विकारी दुनिया का कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। विकर्म करने वाले बिल्कुल अच्छे नहीं लगते हैं। वह अपनी ही तकदीर को खराब करते हैं। ऐसा कोई बाप थोड़ेही होगा जो बच्चों को किसको तंग करता हुआ पसन्द करेगा वा न पढ़ता पसन्द करेगा। तुम बच्चे जानते हो वहाँ ऐसे कोई बच्चे होते नहीं। नाम ही है देवी-देवता। कितना पवित्र नाम है। अपनी जांच करनी है—हमारे में दैवीगुण हैं? सहनशील भी बनना होता है। बुद्धियोग की बात है। यह लड़ाई तो बहुत मीठी है। बाप को याद करने में कोई लड़ाई की बात नहीं है। बाकी हाँ, इसमें माया विघ्न डालती है। उनसे सम्भाल करनी होती है। माया पर विजय तो तुमको ही पानी है। तुम जानते हो कल्प-कल्प

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

हम जो कुछ करते आये हैं, बिल्कुल एक्यूरेट वही पुरूषार्थ चलता है जो कल्प-कल्प चलता आया है। तुम जानते हो अभी हम पदमापदम भाग्यशाली बनते हैं फिर सतयुग में अथाह सुखी रहते हैं।

कल्प-कल्प बाप ऐसे ही समझाते हैं। यह कोई नई बात नहीं, यह बहुत पुरानी बात है। बाप तो चाहते हैं बच्चे पूरा गुल-गुल बनें। लौकिक बाप की भी दिल होगी ना—हमारे बच्चे गुल-गुल बनें। पारलौकिक बाप तो आते ही हैं कांटों को फूल बनाने। तो ऐसा बनना चाहिए ना। मन्सा-वाचा-कर्मणा जबान पर भी बहुत खबरदारी चाहिए। हर एक कर्मेन्द्रिय पर बड़ी खबरदारी चाहिए। माया बहुत धोखा देने वाली है। उनसे पूरी सम्भाल रखनी है, बड़ी मंजिल है। आधाकल्प से क्रिमिनल दृष्टि बनी है। उनको एक जन्म में सिविल बनाना है। जैसे इन लक्ष्मी-नारायण की है। यह सर्वगुण सम्पन्न हैं ना। वहाँ क्रिमिनल दृष्टि होती नहीं। रावण ही नहीं। यह कोई नई बात नहीं। तुमने अनेक बार यह पद पाया है। दुनिया को तो बिल्कुल पता नहीं है कि यह क्या पढ़ते हैं। बाप तुम्हारी सब आशायें पूर्ण करने आते हैं। अशुभ आशायें रावण की होती हैं। तुम्हारी हैं शुभ आशायें। क्रिमिनल कोई भी आश नहीं होनी चाहिए। बच्चों को सुख की लहरों में लहराना है। तुम्हारे अथाह सुखों का वर्णन नहीं कर सकते, दु:खों का वर्णन होता है, सुख का वर्णन थोड़ेही होता है। तुम सब बच्चों की एक ही आशा है कि हम पावन बनें। कैसे पावन बनेंगे? सो तो तुम जानते हो—फर्स्ट नम्बर नई दुनिया में पावन यह देवी-देवता ही हैं। पावन बनने में देखो ताकत कितनी है। तुम पावन बन पावन दुनिया का राज्य पाते हो। इसलिए कहा जाता है इस देवता धर्म में ताकत बहुत है। यह ताकत कहाँ से मिलती है? सर्वशक्तिमान् बाप से। घर-घर में तुम मुख्य दो-चार चित्र रख बहुत सर्विस कर सकते हो। वह समय आयेगा, करफ्यू आदि ऐसे लग जायेगा, जो तुम कहाँ आ जा भी नहीं सकेंगे।

a तुम हो ब्राह्मण सच्ची गीता सुनाने वाले। नालेज तो बड़ी सहज है, जिनके घर वाले सब आते हैं, शान्ति लगी पड़ी है, उन्हों के लिए तो बहुत सहज है। दो-चार मुख्य चित्र घर में रखे हो। यह त्रिमूर्ति, गोला, झाड़ और सीढ़ी का चित्र भी काफी है। उनके साथ गीता का भगवान कृष्ण नहीं, वह भी चित्र अच्छा है। कितना सहज है, इनमें कोई पैसा खर्च नहीं होता। चित्र तो रखे हैं। चित्रों को देखने से ही ज्ञान स्मृति में आता रहेगा। कोठरी बनी पड़ी हो, उसमें भल तुम सो भी जाओ। अगर श्रीमत पर चलते रहो तो तुम बहुतों का कल्याण कर सकते हो। कल्याण करते भी होंगे फिर भी बाप रिमाइन्ड कराते हैं — ऐसे-ऐसे तुम कर सकते हो। ठाकुरजी की मूर्ति रखते हैं ना। इसमें तो फिर है समझाने की बातें। जन्म-जन्मान्तर तुम भक्ति मार्ग में मन्दिरों में भटकते रहते हो परन्तु यह पता नहीं है कि यह हैं कौन? मन्दिरों में देवियों की पूजा करते हैं, उनको ही फिर पानी में जाकर डुबोते हैं। कितना अज्ञान है! पूज्य की, पूजा कर फिर उनको उठाकर समुद्र में डाल देते हैं। गणेश को, माँ को, सरस्वती को भी डुबोते हैं। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं, कल्प-कल्प यह बातें समझाते हैं। रिमलाइज़ कराते हैं—तुम यह क्या कर रहे हो! बच्चों को तो नफ़रत आनी चाहिए जबकि बाप इतना समझाते रहते हैं—मीठे-मीठे बच्चों, तुम यह क्या करते हो! इनको कहते ही हैं विषय वैतरणी नदी। ऐसे नहीं, वहाँ कोई क्षीर का सागर है परन्तु हर चीज वहाँ ढेर होती है। कोई चीज पर पैसे नहीं लगते। पैसे तो वहाँ होते ही नहीं हैं। सोने के ही सिक्के देखने में आते हैं जबकि मकानों में ही सोना लगता है, सोने की इंटें लगती हैं। तो सिद्ध होता है वहाँ सोने-चांदी का मूल्य ही नहीं। यहाँ तो देखो कितना मूल्य है। तुम जानते हो एक-एक बात में वन्डर है। मनुष्य तो मनुष्य ही हैं, यह देवता भी मनुष्य हैं परन्तु इनका नाम देवता है। इन्हों के आगे मनुष्य अपनी गंदगी जाहिर करते हैं—हम

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

पापी नींच हैं, हमारे में कोई गुण नहीं हैं। तुम बच्चों की बुद्धि में एम आब्जेक्ट है, हम यह मनुष्य से देवता बनते हैं। देवताओं में दैवीगुण हैं। यह तो समझते हैं मन्दिरों में जाते हैं परन्तु यह नहीं समझते कि यह भी मनुष्य ही हैं। हम भी मनुष्य हैं परन्तु यह दैवीगुण वाले हैं, हम आसुरी गुणों वाले हैं। अभी तुम्हारी बुद्धि में आता है हम कितने ना-लायक थे। इन्हों के आगे जाकर गाते थे आप सर्वगुण सम्पन्न..... अभी बाप समझाते हैं यह तो पास्ट होकर गये हैं। इनमें दैवीगुण थे, अथाह सुख थे। वही फिर अथाह दु:खी बने हैं। इस समय सभी में 5 विकारों की प्रवेशता है। अभी तुम विचार करते हो, कैसे हम ऊपर से गिरते-गिरते एकदम पट आकर पड़े हैं। भारतवासी कितने साहूकार थे। अभी तो देखो कर्जा उठाते रहते हैं। तो यह सब बातें बाप ही बैठ समझाते हैं और कोई बता न सके। ऋषि-मुनि भी नेती-नेती कहते थे अर्थात् हम नहीं जानते। अभी तुम समझते हो वह तो सच कहते थे। न बाप को, न रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते थे। अभी भी कोई नहीं जानते हैं, सिवाए तुम बच्चों के। बड़े-बड़े सन्यासी, महात्मायें कोई नहीं जानते। वास्तव में महान आत्मा तो यह लक्ष्मी-नारायण हैं ना। एवर प्योर हैं। यह भी नहीं जानते थे तो और कोई कैसे जान सकते, कितनी सिम्पल बातें बाप समझाते हैं परन्तु कई बच्चे भूल जाते हैं। कई अच्छी रीति गुण धारण करते हैं तो मीठे लगते हैं। जितना बच्चों में मीठा गुण देखते हैं तो दिल खुश होती है। कोई तो नाम बदनाम कर देते हैं। यहाँ तो फिर बाप टीचर सतगुरू है—तीनों की निंदा कराते हैं। सत बाप, सत टीचर और सतगुरू की निंदा कराने से फिर ट्रिबल दण्ड पड़ जाता है। परन्तु कई बच्चों में कुछ भी समझ नहीं है। बाप समझाते हैं ऐसे भी होंगे जरूर। माया भी कोई कम नहीं है। आधाकल्प पाप आत्मा बनाती है। बाप फिर आधाकल्प के लिए पुण्य आत्मा बनाते हैं। वह भी नम्बरवार बनते हैं। बनाने वाले भी दो हैं—राम और रावण। राम को परमात्मा कहते हैं। राम-राम कह फिर पिछाड़ी में शिव को नमस्कार करते हैं। वही परमात्मा है। परमात्मा के नाम गिनते हैं। तुमको तो गिनती की दरकार नहीं। यह लक्ष्मी-नारायण पवित्र थे ना। इन्हों की दुनिया थी, जो पास्ट हो गयी है। उसको स्वर्ग नई दुनिया कहा जाता है। फिर जैसे पुराना मकान होता है तो टूटने लायक बन जाता है। यह दुनिया भी ऐसे है। अभी है कलियुग की पिछाड़ी। कितनी सहज बातें हैं समझने की। धारण करनी और करानी है। बाप तो सबको समझाने के लिए नहीं जायेंगे। तुम बच्चे आन गॉडली सर्विस हो। बाप जो सर्विस सिखलाते हैं, वही सर्विस करनी है। तुम्हारी है गॉडली सर्विस ओनली। तुम्हारा नाम ऊंच करने लिए बाबा ने कलष तुम माताओं को दिया है। ऐसे नहीं कि पुरूषों को नहीं मिलता है। मिलता तो सबको है। अभी तुम बच्चे जानते हो हम कितने सुखी स्वर्गवासी थे, वहाँ कोई दु:खी नहीं थे। अभी है संगमयुग फिर हम उस नई दुनिया के मालिक बन रहे हैं। अभी है कलियुग पुरानी पतित दुनिया। बिल्कुल ही जैसे भैंस बुद्धि मनुष्य हैं। अभी तो इन सब बातों को भूलना पड़ता है। देह सहित देह के सब सम्बन्धों को छोड़ अपने को आत्मा समझना है। शरीर में आत्मा नहीं है तो शरीर कुछ भी कर न सके। उस शरीर पर कितना मोह रखते हैं, शरीर जल गया, आत्मा ने जाकर दूसरा शरीर लिया तो भी 12 मास जैसे हाय हुसेन मचाते रहते हैं। अभी तुम्हारी आत्मा शरीर छोड़ेगी तो जरूर ऊंच घर में जन्म लेगी नम्बरवार। थोड़े ज्ञान वाला साधारण कुल में जन्म लेगा, ऊंच ज्ञान वाला ऊंच कुल में जन्म लेगा। वहाँ सुख भी बहुत होता है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

20-11-96 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - स्वीट फादर और स्वीट राजधानी को याद करो तो बहुत-बहुत स्वीट बन जायेंगे"

प्रश्नः- तुम बच्चे कौन सा पुरुषार्थ कर मनुष्य से देवता बनते हो?

उत्तरः- तुम अभी ज्ञान मानसरोवर में डुबकी मार ज्ञान परी बनते हो, ज्ञान स्नान से तुम्हारी सीरत बदलती जाती है। जो भी अवगुण हैं, निकलते जाते हैं। बाप और विष्णुपुरी को याद कर तुम पावन देवता बन जाते हो। देवताओं में पवित्रता की ही आकर्षण है। इसी कारण मनुष्य देवताओं के मन्दिरों में दूर-दूर से खींचकर जाते हैं।

गीतः- हमारे तीर्थ न्यारे हैं... ओम् शान्ति।

मीठे-मीठे रूहानी बच्चों ने यह गीत सुना। बच्चे ही लकी सितारे गाये जाते हैं। ज्ञान सूर्य ज्ञान चन्द्रमा, ज्ञान लकी सितारे। वह सूर्य चन्द्रमा तो माण्डवे को रोशनी करते हैं, इसलिए तुम्हारी महिमा गाई हुई है। तुम हो ज्ञान सितारे, उनको ज्ञान सितारे नहीं कहा जाता। ज्ञान सूर्य नाम सुनकर समझते हैं कि शायद वह सूर्य ज्ञान स्वरूप है क्योंकि समझते हैं पत्थर-भित्तर में भगवान है तो सूर्य को बहुत मानते हैं। अपने को सूर्यवंशी कहलाते हैं। सूर्य की पूजा करते हैं, झण्डा भी सूर्य का है। तुम्हारा है त्रिमूर्ति का झण्डा। कितना वन्डरफुल है। इसमें लिखा हुआ भी है सत्य मेव जयते। सचमुच विश्व पर विजय तो वही प्राप्त कराते हैं। तुम हो शिव शक्ति पाण्डव सेना। उन्होंने नाम रख दिया है — त्रिमूर्ति मार्ग, त्रिमूर्ति हाउस। इनका अर्थ भी बाप समझाते हैं कि इन त्रिमूर्ति से मैं क्या कर्तव्य कराता हूँ। ब्रह्मा द्वारा स्थापना....। उन्होंने त्रिमूर्ति से शिव को निकाल चित्र खण्डित कर दिया है। अब तुम जानते हो इस त्रिमूर्ति के चित्र में कितना राज़ है। सत्य शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा राजाई देते हैं। हम बच्चे शिवबाबा द्वारा कल्प पहले मिसल फिर से पवित्रता, सुख-शान्ति और सम्पत्ति का राज्य ले रहे हैं। पढ़ाई हमेशा ब्रह्मचर्य में ही पढ़ी जाती है। अभी तो कोई-कोई शादी के बाद भी कोर्स उठा लेते हैं क्योंकि आमदनी जास्ती हो जाती है। यहाँ तुम्हारी आमदनी अनगिनत है। बच्चे जानते हैं कि शिवबाबा हमको विश्व का मालिक बनाने आया है। श्रीमत श्रेष्ठ गाई हुई है। बाबा का बच्चा बना तो जरूर बाप की मत पर चलेगा। भाई-भाई की मत पर नहीं। वह तो अनेक जन्म चले, उनसे कुछ फायदा नहीं हुआ। अब बाबा की मत पर चलना है। साधू-सन्त आदि सब भाई-भाई हैं। अब बाप आया है ऊंची मत देने। नेचर-क्योर की भी बहुत दवाइयाँ करते हैं। वह हैं सब अल्पकाल के लिए। यह है 21 जन्मों के लिए नेचर-क्योर। वह कहेंगे ठण्डे पानी में स्नान करो। यह करो, खान-पान की परहेज करो। यहाँ वह खान-पान की बात नहीं। यहाँ तो स्वीट फादर बच्चों को कहते हैं अब मुझे याद करो तो तुम बहुत स्वीट बन जायेंगे। देवतायें स्वीट हैं ना, उनमें कितनी आकर्षण रहती है। आगे शिव के मन्दिर भी ऊंची-ऊंची पहाड़ियों पर बनते थे। मनुष्य पैदल कर दीदार करने जाते थे क्योंकि प्योरिटी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

खीचती थी। देवतायें जब पवित्र थे तो विश्व पर राज्य करते थे। अब उनके चित्रों के आगे जाकर वन्दना नमन करते हैं। अब उस स्वीट फादर को याद तो सब करते हैं। उनको आना भी यहाँ ही है। स्वर्ग, कृष्णपुरी बाबा से बैकुण्ठ के सुख घनेरे मिलते हैं तब तो उनको याद करते हैं। जब रावण राज्य का अन्त होगा तब तो बाप आकर स्वर्ग की राजाई देंगे। बाबा आते भी भारत में हैं। शिव जयन्ती भी भारत में मनाते हैं परन्तु उनसे क्या मिलता है, किसको पता नहीं। बाप कहते हैं मैं आया हूँ तुम बच्चों को स्वीट बनाने। तुम कितने छी-छी बन गये थे। बाबा नॉलेजफुल है, अब तुमको सब नॉलेज मिल रही है। बीज को ही सारी नॉलेज होगी ना। वह है बीज, सत है, चैतन्य है और फिर ज्ञान का सागर है, सत्य बोलते हैं। वह भी आत्मा है, परन्तु परम है। परम आत्मा माना परमात्मा। वह सदैव परमधाम में रहते हैं, ऊंचे ते ऊंचा है। बहुत कहते हैं नाम-रूप से न्यारा है। परन्तु नाम-रूप से न्यारी कोई भी वस्तु होती नहीं है। उनका नाम शिव है। सभी उनकी पूजा करते हैं, वह निराकार है। अब आया हुआ है। आगे हम देह-अभिमानी थे। अब बाप कहते हैं बच्चे, आत्म-अभिमानी भव। गीता में भी है मन्मनाभव। सिर्फ उसमें शिव के बदले कृष्ण का नाम डालने से खण्डन हो गई है। फिर भी किताब पढ़ने से थोड़ेही राजाई मिलेगी। राजाई होती है सतयुग में। जरूर बाप संगम पर आयेगा। अभी ड्रामा अनुसार भक्ति पूरी होती है। भक्ति के बाद है ज्ञान। यह है पुरानी दुनिया, सतयुग है नई दुनिया। सतयुग में सूर्यवंशी राज्य करते थे। यह है राजयोग। नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनने का। सतयुग में इन्हों का राज्य था। अब कलियुग में देखो क्या है! अब तुम सतयुग में जाने के लिए फिर पढ़ रहे हो। भक्ति मार्ग के जो भी इतने वेद-शास्त्र आदि हैं उनको छोड़ना पड़ता है। ज्ञान मिल गया फिर भक्ति की दरकार नहीं। ज्ञान से हम विश्व के मालिक बनते हैं।

बाबा आया है – भक्ति का फल देने। ज्ञान सुना रहे हैं। अब हमको पतित से पावन भी जरूर बनना ही है क्योंकि पतित तो वापिस जा नहीं सकते। मुक्तिधाम में भी सब पतित आत्मायें रहती हैं। सुखधाम में भी सब पवित्र रहती हैं। अभी कलियुग में सब पतित हैं। अब उनको पावन कौन बनायेगा? पतित-पावन है एक बाप। अब बाप कहते हैं मैं इनके बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में आता हूँ। सबसे जास्ती नम्बरवन भगत यह दादा था। फिर ब्रह्मा कहो या लक्ष्मी-नारायण की आत्मा कहो। यह बड़ी गूढ़ बात है समझने की। विष्णु की नाभी से ब्रह्मा और ब्रह्मा की नाभी से विष्णु निकला..... विष्णु 84 जन्मों के बाद ब्रह्मा बनते हैं। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं हैं। बाप भी गीता पाठी था। जब ज्ञान आया, देखा बाबा तो विश्व की बादशाही देते हैं। विष्णु का भी साक्षात्कार हुआ फिर फट से गीता आदि छूट गई। बाबा की प्रवेशता थी ना। फिर कभी हाथ भी नहीं लगाया। एक बाप को ही याद करने लगा। यह कहते हैं मैं भी उस बाप से सुनने लगा। शिवबाबा कहते हैं - हम जब बच्चों को सुनाते थे तो यह भी सुनते थे। इनके तन में मैं प्रवेश कर आया हूँ, इसलिए इनका नाम रखा है अर्जुन। शास्त्रों में घोड़े का

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

रथ दिखाते हैं। कितना फर्क है। घोड़े गॉड़ी में एक को बैठ ज्ञान दिया क्या? अभी तुम समझते हो यह कैसे हो सकता है। तुम प्रैक्टिकल देख रहे हो - बाबा कैसे पढ़ाते हैं। कितने सेन्टर्स हैं। तो पढ़ाने के लिए जरूर पाठशाला चाहिए न कि युद्ध का मैदान। बाबा राजयोग सिखाता है। सतयुग में कोई शास्त्र होता नहीं। मैंने अब ज्ञान सुनाया। बस सतयुग में दरकार ही नहीं। पुरानी दुनिया का जो कुछ है यह सब खाक में मिल जायेगा। यह राजस्व अश्वमेध यज्ञ है। अश्व इस रथ को कहा जाता है, इनको भी स्वाहा करना है। आत्मा बाप की बनी फिर यह पुराना शरीर भी खत्म हो जायेगा। कृष्णपुरी में यह छी-छी शरीर थोड़ेही ले जायेंगे। आत्मा अमर है। होली में दिखाते हैं — कोकी जल जाती, धागा नहीं जलता। बाबा फिर बेहद की बात समझाते हैं - अब तक जो सुना है वह भूल जाओ। अब भारत झूठ खण्ड बन गया है, कल सचखण्ठ था। सचखण्ड बाप ने बनाया फिर रावण ने झूठ खण्ड बनाया। यह रावण सबका पुराना दुश्मन है। बस कोई ने जो बोला उस पर चल पड़ते हैं। जैसे देलवाड़ा मन्दिर में आदि देव का नाम महावीर रख दिया है। महावीर हनूमान को कहा जाता है। अब कहाँ वह, कहाँ यह। इस मन्दिर में हूबहू तुम्हारा यादगार है। ऊपर स्वर्ग, नीचे तपस्या। आदिनाथ की मूर्ति गोल्डन बनाई है। कहत हैं ना-भारत सोने की चिड़िया थी। भारत जितना सोना और कोई जगह नहीं। सोने के महल बने थे। छतों में दीवारों में हीरे जवाहर लगे हुए थे। मन्दिरों में कितने हीरे-जवाहर थे जो फिर लूट गये। मस्जिदों में जाकर लगाये। तो उस समय क्या वैल्यु होगी। अकीचार धन था तब तो लूटकर ले गये। यह सब जानते हैं कि प्राचीन भारत बहुत साहूकार था। अब कितना गरीब बन गया है। गरीब पर तरस पड़ता है। रावण ने कितना इनसालवेन्ट बनाया है। बाप फिर सालवेन्ट बनाते हैं। यह बेहद का नाटक है, इसके आदि-मध्य-अन्त को कोई भी नहीं जानते। बाप नॉलेजफुल है। ऐसे नहीं कि सबके अन्दर को बैठ देखता हूँ। यह सब ड्रामा में नूँध है। पाप जो करते हैं उनकी सज़ा तो मिलती ही है। मेरे को तो कहते ही हैं नॉलेजफुल, पतित-पावन। पुकारते हैं हे बाबा आओ, आकर हमको नॉलेज दो। पावन बनाओ। तो मैं यह कार्य आकर करता हूँ। बाकी शास्त्रों की जो बातें हैं। वह बाप कहते हैं भूल जाओ और जो मैं सुनाता हूँ वह सुनो। अब बाप द्वारा राजयोग सीख रहे हो। फिर सूर्यवंशी बनेंगे। फिर चन्द्रवंशी, वैश्यवंशी, शूद्रवंशी बनेंगे। यह ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में है। सतयुग में सब भूल जायेगा। वहाँ बाप को कोई याद नहीं करते हैं। वर्सा मिल गया फिर याद किसलिए करेंगे। कितना अच्छी रीति समझाया जाता है। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं हैं। वृक्षपति है ही बाप। वह कहते हैं मुझे याद करो। क्रियेटर एक होता है कि पत्थर-ठिक्कर भी क्रियेटर होंगे।

बाप कहते हैं कि रावण ने तुम्हारी बुद्धि कितनी खराब कर दी है। बड़े-बड़े विद्वानों को अहंकार कितना है। बाप को जानते ही नहीं। न रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं। बाप कहते हैं- मैंने तुमको राजाई दे दी। तुमने सब धन-दौलत खत्म कर दिया, अब भीख मांग रहे हो, इसलिए आसुरी सम्प्रदाय कहा गया है। देवताओं की कितनी महिमा

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

गाई है। फिर कहते हम निर्गुण हारे में कोई गुण नाही। अब तुम बच्चों को गुण धारण करने हैं, अवगुणों को निकाल दो। रावण ने तुमको बन्दर मिसल बना दिया है। अब बाप तुमको देवता बनाते हैं। जिसमें 5 विकार हैं उनको बन्दर कहा जाता है। (नारद का मिसाल) अभी तुम्हारी सीरत बदलती जाती है फिर हम देवता बन जायेंगे। इस ज्ञान सरोवर में डुबकी मार हम ज्ञान परी बन जाते हैं। उन्होंने फिर पानी को मान-सरोवर समझ लिया है। यह है ज्ञान स्नान की बात। यहाँ तो बच्चे जानते हैं बाबा हूबहू 5 हजार वर्ष पहले मिसल हमको समझा रहे हैं, इसमें कोई संशय पड़ नहीं सकता। पतित-पावन बाप को और विष्णुपुरी को याद करो तो तुम पावन बन जायेंगे। मनुष्य मुक्ति के लिए कितना माथा मारते हैं परन्तु घर का किसको भी पता नहीं है। कोई समझते हैं आत्मा लीन हो जायेगी। कोई समझते हैं आत्मा दूसरा शरीर लेती नहीं। अनेक मत हैं, बाप को कोई जानता ही नहीं। सारी दुनिया समझती है कृष्ण भगवानुवाच। यहाँ बाप कहते हैं शिव भगवानुवाच। कितना रात-दिन का फर्क है। नाम ही एकदम बदल दिया है। अच्छा-

मीठे-मीठे बापदादा दोनों कहते है। दोनों के बच्चे हैं ना। यह भी स्टूडेन्ट तुम भी स्टूडेन्ट। यह भी पढ़ रहे हैं। जो भारत को पावन बनाने की सर्विस में हैं, वही बच्चे ठहरे। जो पावन नहीं बनते उनको देखते भी बाबा नहीं देखते। समझते हैं सजायें खाकर फिर आकर बबोरची बनेंगे। जो पावन बनते हैं, वह विश्व के मालिक बनेंगे। अच्छा-

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा की याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

(१) स्वीट बनने के लिए स्वीट बाप को बड़े प्यार से याद करना है। सच्चे बाप से सच्चा रहना है। एक बाप की श्रेष्ठ मत पर चलना है।

(२) पुरुषार्थ कर सम्पूर्ण बनना है। भारत को पावन बनाने की सर्विस करनी है। किसी भी बात में संशय नहीं उठाना है।

वरदान:- संशय के संकल्पों को समाप्त कर मायाजीत बनने वाले विजयी रत्न भव

कभी भी पहले से यह संशय का संकल्प उत्पन्न न हो कि ना मालूम हम फेल हो जायें, संशयबुद्धि होने से ही हार होती है। इसलिए सदा यही संकल्प हो कि हम विजय प्राप्त करके ही दिखायेंगे। विजय तो हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, ऐसे अधिकारी बनकर कर्म करने से विजय अर्थात् सफलता का अधिकार अवश्य प्राप्त होता है, इसी से विजयी रत्न बन जायेंगे। इसलिए मास्टर नॉलेजफुल के मुख से नामालूम शब्द कभी नहीं निकलना चाहिए।

स्लोगन:-

जो सदा प्रसन्नचित हैं वह कभी प्रश्नचित नहीं हो सकता।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

2-9-85 प्रातः क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?
"तुम बच्चों की प्रतिज्ञा है कि जब तक हम पावन नहीं बने हैं, तबतक बाप को
याद करते रहेंगे, प्यार करते रहेंगे"

प्रश्नः- स्याने बच्चे समय को देखते हुए कौन सा पुरुषार्थ करेंगे? उत्तरः- अन्त में जब शरीर छूटे तो बस एक बाबा ही याद रहे, ऐसा पुरुषार्थ स्याने बच्चे ही करेंगे, क्योंकि सद्गतिदाता बनना है। इसके लिए इस पुरानी दुनिया से ममत्व निकालते जाओ, अब हम जा रहे हैं बाबा के पास...।

गीत:- वह हमसे जुदा होंगे.....। ओमशान्ति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं, बच्चे प्रतिज्ञा करते हैं ब्रेहद के बाप से। बाबा हम आपके बने हैं, अन्त तक, जबतक हम शान्तिधाम पहुँचे, आपको याद करते रहेंगे। बाबको प्यार करते रहेंगे। क्योंकि आत्मायें समझती हैं परमात्मा बाप को याद करने से हमारे जन्म जन्मान्तर के पाप जो सिर पर हैं वह जल जायेंगे। इसको ही योग अग्नि कहा जाता है। और कोई उपाय नहीं। पतित पावन भी एक को, श्री श्री 108 जगतगुरू भी एक को ही कहा जाता है। और कोई को कहना नहीं चाहिए। परन्तु यहाँ तो अनेक मनुष्य हैं जो अपने को श्री2 108 जगतगुरू कहलाते हैं। जगत अर्थात् विश्व का। यह पत्थरबुद्धि मनुष्य बिल्कुल समझ नहीं सकते। अभी तुम जो पारसबुद्धि बन रहे हो, समझते हो यह तो बिल्कुल सच है। एक ही बाप सर्व का सद्गतिदाता, पतितपावन है। जगत का बाप, जगत का शिक्षक जगत का गुरू तो एक ही है। उन्हों को शिक्षा है शास्त्रों को। इनको शिक्षा ही अलग है। जो भी मूर्ज मूर्ति आदि होकर गये हैं उन्हों को इस नालेज का पता नहीं है। रचना के आदि मध्य अन्त का ज्ञान बाप ही देते हैं। मनुष्य जो अपने को जगतगुरू कहलाते हैं वह यह ज्ञान दे न सकें। मनुष्य जगत के शिक्षक हैं नहीं। इसलिए बाबा ने एक लिखत बनाई है। उसका भी बोर्ड होना चाहिए। विश्व का सद्गतिदाता श्री2 108 जगतगुरू कौन? एक परमपिता परमात्मा त्रिमूर्ति शिव वा अनेक कलियुगी पतित पुजारी मनुष्य? यह है दो पतित दुनिया। इनमें एक भी पावन होना असम्भव है। पतित पावन बाप ही सर्व को सद्गति करते हैं। तुम अभी उनके बच्चे बने हो। तुम

a जानते हो कि जगत को पावन कैसे बनाये। शिव के आगे त्रिमूर्ति जरूर चाहिए। बच्चों को इनको समझाना देने में कठिनाई होती है। ना समझते हैं निर्मल कृष्ण और शिव का चित्र डालेंगे। कृष्ण नहीं शिव जरूर कोई के समझ जाने देना। और एम आब्जेक्ट क्या है वह भी

b समझाने के लिए त्रिमूर्ति शिव में सब आ जाता है। ब्रह्मा भी जरूर पुरुषार्थ करता होगा ना। ब्रह्मा को तो नॉलेज है। इसलिए त्रिमूर्ति का चित्र देना है। निर्मल नारायण सीखेगा नहीं। तो

c एक तरफ कृष्ण का चित्र फिर दूसरी तरफ त्रिमूर्ति शिव जरूर देना है। और त्रिमूर्ति के नीचे लिखना भी जरूर देनी है। यह भी लिखना है ओटोसावरन्टी जन्मसिद्ध अधिकार है। सो नई कल्प के संगमयुगे। क्लियर लिखत बिगर पत्थरबुद्धि मनुष्य कुछ समझ नहीं सकते और

d दूसरी बात सिर्फ ब्र०कु०नाम जो पड़ता है उसमें प्रजापिता शब्द जरूर चाहिए। क्योंकि ब्रह्मा नाम भी बहुतों के है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय लिखना है। कुमार शब्द न डालो तो इज्जत नहीं। उसके नीचे फिर लिखो गॉडफादरली वर्ल्ड युनिवर्सिटी। पत्थरबुद्धियों को क्लियर कर देना होता है। पारसबुद्धि बनाने वाला है ही एक बाप। मनुष्य, मनुष्य को पारसबुद्धि बना न सकें। पत्थर जैसे विश्व को पावन पारस तो एक बाप ही बनायेंगे। इस समय एक भी पावन नहीं है। एक दो में लड़ते गालियां देते रहते हैं। गालियां देना तो आसुरी मनुष्यों का पक्का धर्म है। बाप कहते हैं बच्चे2 मुझे गाली देते हैं। कच्छ मच्छ अवतार, अवतार। किसका कहा जाता है यह भी समझते नहीं हैं। अवतार तो होता ही एक का है। वह भी अलौकिक रीति शरीर में प्रवेश कर विश्व को पावन बनाते हैं। और आत्मायें तो अपना2 शरीर लेती हैं। उनका अपना शरीर तो है नहीं। परन्तु ज्ञान को मांगकर है तो ज्ञान को देंगे शरीर थोड़िए ना। इन बातों को तुम्हारे सिवाए और कोई नहीं जानते। जो इस ब्राह्मण कुल के हैं वह समझते हैं और अच्छा2 भी कहते हैं। परन्तु फिर भी गोया है गृहस्थ व्यवहार में रह पवित्र बनना। यह बेहद्दी का काम है। गऊमुख कहते हैं ना। गऊमुख अर्थात् तोरसा दिखाई। यह भी

e तोरसा है जो काम सन्यासी नहीं कर सकते वह तुम कर सकते हो। बाप श्रीमत देते हैं तुम ऐसे गृहस्थ व्यवहार में कमल फूल समान पवित्र रह सकते हो, तब ही ऊंच पद पा सकेंगे। नहीं तो विश्व की बादशाही को मिसेगी। पढ़ना है। यह है हो नर से नारायण बनने की पढ़ाई। यह

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

पाठशाला है। बहुत पढ़ते हैं इसलिए लिखो गॉड फादरली वर्ल्ड यूनिवर्सिटी। ईश्वरीय विश्व विद्यालय। यह तो बिल्कुल रांग है। भारतवासी जानते हैं हम विश्व के मालिक थे। कल की बात है। अभी तक राधे कृष्ण अथवा ल0ना0 के मन्दिर बनते रहते हैं। कई तो फिर पतित मनुष्यों के भी बनाते हैं। द्वापर से लेकर तो हैं ही पतित मनुष्य। कहाँ शिव का, कहाँ देवताओं का मन्दिर बनाना। कहाँ यह पतित मनुष्यों का। यह कोई देवता थोड़ेही हैं। तो बाप समझाते हैं। इन बातों पर ठीक रीति विचार सागर मंथन करना है। बाबा तो समझाते रहते हैं। दिन प्रतिदिन लिखने वेन्ज होती रहेगी। ऐसे नहीं पहले क्यों नहीं ऐसा बनाया। ऐसे नहीं कहेंगे कि पहले क्यों नहीं मन्मनाभव का अर्थ ऐसे समझाया। अरे पहले हो थोड़ेही ऐसे याद में ठहर सकेंगे। बहुत थोड़े बच्चे हैं जो हरेक बात का रेस्पान पूरी रीति कर सकते हैं। तकदीर में ऊँच पद न है तो टीचर भी क्या करेंगी। ऐसे तो नहीं आशीर्वाद से ऊँच बना देंगे। अपने को देखना है हम कैसे सर्विस करते हैं। विचार सागर मंथन चलना चाहिए। गीता का भगवान कौन? यह चित्र बहुत मूल्य है। क्योंकि यह है बड़े से बड़ी भूल। सन्यासी लोग तो शास्त्रों से पढ़ा हुआ ज्ञान ही सुनाते हैं। अपनी बुद्धि तो है नहीं। गीतायें बहुत बनाते हैं। समझते कुछ भी नहीं। बाप कहते हैं न ऐसे2 श्लोक हैं न उनका यह अर्थ है। न गीता का भगवान कृष्ण है। यह मनुष्यों ने बड़ाई कर दी है कहते हैं व्यास भगवान ने बनाये। अब भगवान तो है निराकार। वह ब्रह्मा के शरीर बिगर तो कब बना न सकें। वह आते ही हैं ब्रह्मा तन में संगमयुग पर। नहीं तो ब्र0वि0ना0 किसलिए है। वायरोग्राफी चाहिए ना। कोई भी जानते नहीं। ब्रह्मा के लिए कहते हैं 100 भुजा वाले ब्रह्मा के पास जाओ, 1000 भुजा वाले ब्रह्मा के पास जाओ। इस पर भी एक कहानी बनाई हुई है। बाप कहते हैं यहाँ गप्पे आदि की बात नहीं। पूज्यपिता ब्रह्मा के इतने ढेर बच्चे हैं ना। यहाँ आते ही हैं पवित्र बनने। जन्म जन्मान्तर अपवित्र बनते आये हैं। अब पूरा पवित्र बनना है। श्रीमत मिलती है मामेक याद करो। कोई2 को तो अभी तक भी समझ में नहीं आता कि हम याद कैसे करें। भूल पड़ते हैं। बाप का बनकर और विकर्माजीत न बने, पग पग न कटे, चक्र में न रहे तो वह क्या पद पायेंगे। भल सरेण्डर है, परन्तु उनसे क्या फायदा। जब तक पुण्य आत्मा बन औरों को न बनायें। तबतक ऊँच पद पा न सकें। जितना औरों को याद करेंगे, उतना कम पद पायेंगे। ऊंचन तख्तधारी कैसे बनेंगे। फिर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार दासों से आयेंगे। ऐसे नहीं कि इसने सर्वस्व सरेण्डर किया है इसलिए ऊंचन सिरताज बनेंगे। नहीं। पहले दास दासियां बनते 2 फिर पिछाड़ी में थोड़ा मिल जायेगा। बहुतों को यह अहंकार रहता है हम तो सरेण्डर हैं। अरे याद बिगर क्या बन सकेंगे। दास दासी बनने से तो साहूकार पूजा बनना अच्छा है। दास दासी भी कोई कृष्ण के साथ थोड़ेही चल सकेंगी। यह बहुत समझने की बातें हैं। इसमें बड़ी मेहनत करनी पड़े। थोड़े में जा नहीं होना है। हम भी राजा बनेंगे। ऐसे तो ढेर राजायें बन जायें। बाप कहते हैं पहले मुख्य है याद की यात्रा। जो अच्छी रीति याद में रहते हैं उनकी खुशी बहुत रहती है। बाप समझाते हैं आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। कितना वार लिया होगा। सतयुग में झट से एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। यहाँ तो रोने लग पड़ते हैं। सतयुग को बातें हो भूल गये हैं। वहाँ तो शरीर ऐसे छोड़ते हैं जैसे सर्प का मिसाल है ना। यह पुराना शरीर अब छोड़ना है। तुम जानते हो हम आत्मा हैं। यह तो पुराना शरीर है अब छोड़ना है। स्याने बच्चे जो बाप को याद में रहते हैं वह तो कहते हैं बाप की याद में ही शरीर छोड़ें, फिर जाकर बाप से मिलें। कोई भी मनुष्यमात्र को यह पता नहीं है कि मुक्ति कैसे मिल सकती है। तुम बच्चों को रास्ता मिला है। अब पुरुषार्थ कर रहे हो। जीते जी मरे तो है परन्तु जब आत्मा पवित्र भी बने ना। पवित्र बन फिर यह पुराना शरीर छोड़ जाना है। समझते हैं कहा कर्मातीत अवस्था हो जाए तो यह शरीर छूटे। कर्मातीत अवस्था होगी तो आपेही शरीर छूट जायेगा। बस हम बाबा के पास जा रहे हैं। इस पुराने शरीर से ऐसे नफरत आती है। सर्प को पुरानी खाल से नफरत आती है ना। तुम्हारी नई खाल तैयार हो रही है। परन्तु जब कर्मातीत अवस्था हो। पिछाड़ी को तुम्हारी ऐसी अवस्था होगी। बस अभी हम जा रहे हैं। लड़ाई की भी पूरी तैयारी होगी। विनाश का मदार सारा तुम्हारी कर्मातीत अवस्था होने पर है। अन्त में कर्मातीत अवस्था को नम्बरवार सब पहुंच जायेंगे। कितना फायदा है। तुम विश्व के मालिक बनते हो तो कितना बाप को याद करना चाहिए। तुम देखेंगे कई ऐसे भी निकलेंगे जो बस उठते बैठते बाप को याद करते रहेंगे। मौत सामने खड़ा है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अखबारों में ऐसा दिखाते हैं जैसे कि अभी 2 लड़ाई छिड़ते हैं। बड़ी लड़ाई छिड़ेगी तो वाम्बस चल पड़ेंगे। अचानक हो फटाफट होगी। देरी नहीं लगेगी। यह बातें स्याने बच्चे ही समझ सकते हैं बेसमझ जो हैं वह कुछ नहीं समझते हैं। जरा भी धारणा नहीं होती। हां 2 भल करते रहते हैं, समझते कुछ भी नहीं।

प्रश्न:- पुरानी दुनिया किनको याद आती रहती है?

उत्तर:- जो बच्चे याद में नहीं रहते, देह अभिमान में रहते हैं उन्हें यह दुनिया याद आती रहती है। वह क्या समझ सकेंगे। देह अभिमानी को ही फिर साढ़े कहा जाता है। अब बाप कहते हैं देही अभिमानी बनो। देह को भूल जाना है। पिछाड़ी में तुम बहुत कोशिश करने लग पड़ेंगे। अभी तुम समझते नहीं हो। पिछाड़ी में बहुत2 पछतायेंगे। बाबा सा० भी करायेंगे। यह2 पाप किये हैं। अब लो सजा। पद भी देखो। शुरू में भी ऐसे सा० करते थे। फिर पिछाड़ी में भी सा० करेंगे। बाप कहते हैं अल्पकाल पद मत गंवाओ। बद्दाई में लग जाने का पुरुषार्थ करो। अपने को आत्मा समझ मामेकं याद करो। वही पतितपावन है। दुनिया में कोई पतित पावन है नहीं। शिव भगवानुवाच जबकि कहते हैं सर्व की सद्गतिदाता पतितपावन एक, उनको ही सब याद करते रहते हैं। फिर यह अपने को श्री 2 108 जगतगुरू कैसे कहते हैं। उन्हों को मनुष्य जाकर पूजा करते रहते। अपने को आत्मा बिन्दी समझो। हमारी आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट नूंधा हुआ है। इस कब विनाश होने का नहीं है। यह समझना कोई मासी का घर नहीं है। भूल जाते हैं। इसलिए कोई को समझा नहीं सकते। देह अभिमान ने बिल्कुल राख को मार डाला है। यह मृत्युलोक बन पड़ा है। सब अकाले मरते रहते हैं। जो जानवर पक्षी आदि मर जाते वैसे मनुष्य भी मर जाते कर्म कुछ नहीं। लo नाo तो अमरलोक के मालिक हैं नहीं। अकाले मृत्यु वहां होती नहीं। दुख ही नहीं वहां तो दुख होता है तो जाकर मरते हैं। अकाले मृत्यु आपेही ले आती है। यह गिनती बड़ी ऊंची है। कब भी किसको आई न देनी। इसमें मेहनत है। इतना ऊंच पद पाना कोई मासी का घर नहीं। बहादुरी चाहिए। नहीं तो थोड़ी बात में ही डर जाते हैं। बेदमाशी कोई अन्दर घुस आये, हाथ लगाये तो डण्डा मारकर भगा देना चाहिए। डरपोक थोड़ेही बनना है। शिवशक्ति पाण्डव सेना गाई हुई है ना। जो स्वर्ग के द्वार खोलती है। नाम वाला है तो फिर ऐसी बहादुरी भी चाहिए। जब सर्वशक्तिवान बाप को याद में रहेंगे तब वह शक्ति प्रवेश करेगी। पाप भस्म हो जायेंगे। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है इस योग अग्नि से ही विकर्म विनाश होंगे। फिर विकर्माजीत राजा बन जायेंगे। मेहनत है याद की। जो करेगा सो पायेंगे। दूसरे को भी सावधान करना है। याद की यात्रा से ही बेड़ा पार होगा। पढ़ाई से नहीं। पढ़ाई को यात्रा नहीं कहा जाता है। वह है जिस्मानी यात्रा। यह है रूहानी यात्रा। सोधा शान्तिधाम अपने घर में चले जायेंगे। यह मनुष्य सृष्टि है। यहां सबको पार्ट बजाना है। बाप भी घर में रहते हैं कहते हैं मुझे याद करते2 तुम घर में पहुंच जायेंगे। घर है मुक्तिधाम। ड्रामा तो अविनाशी है ना। चलता ही रहता है। सेकेण्ड 2 का पार्ट नूंधा हुआ है। जरूर यहां ही पार्ट बजाना पड़े। एक सेकेण्ड न मिले दूसरे से। इस ड्रामा के राज को भी अच्छी रीति समझना है। बच्चों को समझाते रहते हैं एक तो बाप को याद में रहो और पवित्र बनो। दैवी गुण धारण करो। और जितनी सर्विस करेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। कल्याणकारी जरूर बनना है। बच्चों।

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मातपिता बापदादा का याद प्यार और गुडमार्निंग।
रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

स्व उन्नति के लिए पद बिन्दु

1- बाप जो शिक्षायें देते हैं उस पर विचार सागर मंथन करना चाहिए क्योंकि बाप दिनप्रति दिन नई2 बातें सिखाते हैं। विचार सागर मंथन कर धारण करना है।

2- लक्ष्य यह दृढ़ संकल्प रखना है कि हमें देवी सर्वगुण बनना है और पढ़ाई पढ़कर ऊंच पद जरूर पाना है।

3- यह स्मृति रखना है कि हमें शिव शक्ति पाण्डव सेना गर्भशक्तिवान बाप हमारे साथ है। इस स्मृति से ही शक्ति भरेंगी।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

18-9-04 प्रातः मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – अन्दर में दिन रात बाबा-बाबा चलता रहे तो अपार खुशी रहेगी, बुद्धि में रहेगा बाबा हमें कुबेर का खजाना देने आये हैं"

प्रश्नः- बाबा किन बच्चों को ऑनेस्ट (ईमानदार) फूल कहते हैं? उनकी निशानी सुनाओ?

उत्तरः- ऑनेस्ट फूल वह है जो कभी भी माया के वश नहीं होते हैं। माया की खिटपिट में नहीं आते हैं। ऐसे ऑनेस्ट फूल लास्ट में आते भी फास्ट जाने का पुरुषार्थ करते हैं। वह पुरानों से भी आगे जाने का लक्ष्य रखते हैं। अपने अवगुणों को निकालने के पुरुषार्थ में रहते हैं। दूसरों के अवगुणों को नहीं देखते।

ओम् शान्ति। शिव भगवानुवाच। वह हुआ रूहानी बाप क्योंकि शिव तो सुप्रीम रूह है ना,
a आत्मा है ना। बाप तो रोज़-रोज़ नई-नई बातें समझाते रहते हैं। गीता सुनाने वाले सन्यासी आदि बहुत हैं। वह बाप को याद कर न सकें। 'बाबा' अक्षर कभी उनके मुख से निकल न सके। यह अक्षर है ही गृहस्थ मार्ग वालों के लिए। वह तो हैं निवृत्ति मार्ग वाले। वह ब्रह्म को ही याद करते हैं। मुख से कभी शिवबाबा नहीं कहेंगे। भल तुम जांच करो। समझो बड़े-बड़े विद्वान सन्यासी चिन्मियानंद आदि गीता सुनाते हैं, ऐसे नहीं कि वह गीता का भगवान कृष्ण को समझ उनसे योग लगा सकते हैं। नहीं। वह तो फिर भी ब्रह्म के साथ योग लगाने वाले ब्रह्म ज्ञानी वा तत्व ज्ञानी हैं। कृष्ण को कभी कोई बाबा कहे, यह हो नहीं सकता। तो कृष्ण गीता सुनाने वाला बाबा तो नहीं ठहरा ना। शिव को सब बाबा कहते हैं क्योंकि वह सब आत्माओं का बाप है। सब आत्मायें उनको पुकारती हैं – परमपिता परमात्मा। वह है सुप्रीम, परम है क्योंकि परमधाम में रहने वाला है। तुम भी सब परमधाम में रहते हो परन्तु उनको परम आत्मा कहते हैं। वह कभी पुनर्जन्म में नहीं आते हैं। खुद कहते हैं मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है। ऐसे कोई रथ में प्रवेश कर तुमको विश्व का मालिक बनने की युक्ति बताये, यह और कोई हो नहीं सकता। तब बाप कहते हैं–मैं जो हूँ, जैसा हूँ, मुझे कोई भी नहीं जानते। मैं जब अपना परिचय दूँ तब जान सकते हैं। यह ब्रह्म को अथवा तत्वों को मानने वाले, कृष्ण को फिर अपना बाप कैसे मानेंगे। आत्मायें तो सब बच्चे ठहरे ना।
b कृष्ण को सब पिता कैसे कहेंगे। ऐसे थोड़ेही कहेंगे कि कृष्ण सबका बाप है। हम सब ब्रदर्स हैं। ऐसे भी नहीं कृष्ण सर्वव्यापी है। सब कृष्ण थोड़ेही हो सकते हैं। अगर सब कृष्ण हों तो उनका बाप भी चाहिए। मनुष्य बहुत भूले हुए हैं। नहीं जानते हैं तब तो कहते हैं मुझे कोटों में कोई जानते हैं। कृष्ण को तो कोई भी जान लेंगे। सब विलायत वाले भी उनको जानते हैं। लॉर्ड कृष्णा कहते हैं ना। चित्र भी हैं, असली चित्र तो हैं नहीं। भारतवासियों से सुनते हैं, इनकी पूजा बहुत होती है तो फिर गीता में यह लिख दिया है–कृष्ण भगवान। अब भगवान को भला लॉर्ड कहा जाता है क्या। लॉर्ड कृष्णा कहते हैं ना। लॉर्ड का टाइटिल वास्तव में बड़े आदमी को मिलता है। वह तो सबको देते रहते हैं, इसको कहा जाता है अन्धेर नगरी. . . .। कोई भी पतित मनुष्य को लॉर्ड कह देते हैं। कहाँ यह आज के पतित मनुष्य, कहाँ शिव वा श्रीकृष्ण! बाप कहते हैं जो तुमको
c ज्ञान देता हूँ वह फिर गुम हो जाता है। मैं ही आकर नई दुनिया स्थापन करता हूँ। ज्ञान भी मैं अभी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ही देता हूँ। मैं जब ज्ञान दूँ तब ही बच्चे सुनें। मेरे बिगर कोई सुना न सके। जानते ही नहीं। क्या सन्यासी शिवबाबा को याद कर सकते हैं? वह कह भी नहीं सकते कि निराकार गॉड को याद करो। कब सुना है? बहुत पढे-लिखे मनुष्य भी समझते नहीं हैं। अब बाप समझाते हैं कृष्ण भगवान नहीं। मनुष्य तो उनको ही भगवान कहते रहते हैं। कितना फ़र्क हो गया है। बाप तो बच्चों को बैठ पढ़ाते हैं। वह बाप, टीचर, गुरू भी है। शिवबाबा सबको बैठ समझाते हैं। न समझने कारण त्रिमूर्ति में शिव रखते ही नहीं। ब्रह्मा को रखते हैं, जिसको प्रजापिता ब्रह्मा कहते हैं। प्रजा को रचने वाला। परन्तु उनको भगवान नहीं कहेंगे। भगवान प्रजा नहीं रचते हैं। भगवान के तो सब आत्मायें बच्चे हैं। फिर कोई द्वारा प्रजा रचते हैं। तुमको किसने एडाप्ट किया? ब्रह्मा द्वारा बाप ने एडाप्ट किया। ब्राह्मण जब बनेंगे तब ही तो देवता बनेंगे। यह बात तो तुमने कभी सुनी नहीं है। प्रजापिता का भी जरूर पार्ट है। एक्ट चाहिए ना। इतनी प्रजा कहाँ से आयेगी। कुख वंशावली भी तो हो न सके। वह कुख वंशावली ब्राह्मण कहेंगे—हमारा सरनेम है ब्राह्मण। नाम तो सबका अलग-अलग है। प्रजापिता ब्रह्मा तो कहते ही तब हैं जब शिवबाबा इनमें प्रवेश करें। यह नई बातें हैं। बाप खुद कहते हैं—मुझे कोई जानते नहीं, सृष्टि चक्र को भी नहीं जानते। तब तो ऋषि-मुनि सब नेती-नेती कह गये हैं। न परमात्मा को, न परमात्मा की रचना को जानते हैं। बाप कहते हैं जब मैं आकर अपना परिचय दूँ तब ही जानें। इन देवताओं को वहाँ यह पता थोड़ेही पड़ता है—हमने यह राज्य कैसे पाया? इनमें ज्ञान होता ही नहीं। पद पा लिया फिर ज्ञान की दरकार नहीं। ज्ञान चाहिए ही सद्गति के लिए। यह तो सद्गति को पाये हुए हैं। यह बड़ी समझने की गुह्य बातें हैं। समझदार ही समझें। बाकी जो बूढ़ी-बूढ़ी मातायें हैं, उनमें इतनी बुद्धि तो है नहीं, वह भी ड्रामा प्लैन अनुसार हर एक का अपना पार्ट है। ऐसे तो नहीं कहेंगे—हे ईश्वर बुद्धि दो। सबको एक जैसी बुद्धि हम दें तो सब नारायण बन जायेंगे। सब एक-दो के ऊपर गद्दी पर बैठेंगे क्या! हाँ, एम ऑब्जेक्ट है यह बनने की। सब पुरूषार्थ कर रहे हैं नर से नारायण बनने का। बनेंगे तो पुरूषार्थ अनुसार ना। अगर सब हाथ उठायें—हम नारायण बनेंगे तो बाप को अन्दर में हंसी आयेगी ना। सब एक जैसे बन कैसे सकते! नम्बरवार तो होते हैं ना। नारायण दी फर्स्ट, सेकण्ड, थर्ड। जैसे एडवर्ड दी फर्स्ट, सेकण्ड, थर्ड..... होते हैं ना। भल एम ऑब्जेक्ट यह है, परन्तु खुद समझ सकते हैं ना—चलन ऐसी है तो क्या पद पायेंगे? पुरुषार्थ तो जरूर करना है। बाबा नम्बरवार फूल ले आते हैं, नम्बरवार फूल दे भी सकते हैं परन्तु ऐसे करते नहीं। फंक हो जायेंगे। बाबा जानते हैं, देखेंगे कौन जास्ती सर्विस कर रहे हैं, यह अच्छा फूल है। पीछे नम्बरवार तो होते ही हैं। बहुत पुराने भी बैठे हैं परन्तु उनमें नये-नये, बड़े-बड़े अच्छे फूल हैं। कहेंगे यह नम्बरवन ऑनेस्ट फूल है, कोई खिटपिट, ईर्ष्या आदि इनमें नहीं हैं। बहुतों में कुछ न कुछ खामियां जरूर हैं। सम्पूर्ण तो कोई को कह नहीं सकते। सोलह कला सम्पूर्ण बनने के लिए बहुत मेहनत चाहिए। अभी कोई सम्पूर्ण बन न सके। अभी तो अच्छे-अच्छे बच्चों में भी ईर्ष्या बहुत है। खामियां तो हैं ना। बाप जानते हैं सब किस-किस प्रकार का पुरूषार्थ कर रहे हैं। दुनिया वाले क्या जानें। वह तो कुछ समझते नहीं। बहुत थोड़े समझते हैं। गरीब झट समझ जाते हैं। बेहद का बाप आया हुआ है पढ़ाने। उस बाप को याद करने से हमारे पाप कट जायेंगे। हम बाप के पास आये हैं, बाबा से नई दुनिया का वर्सा जरूर मिलेगा।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

नम्बरवार तो होते ही हैं–100 से लेकर एक नम्बर तक परन्तु बाप को जान लिया, थोड़ा भी सुना तो स्वर्ग में जरूर आयेंगे। 21 जन्मों के लिए स्वर्ग में आना कोई कम है क्या! ऐसे तो नहीं, कोई मरता है तो कहेंगे 21 जन्म के लिए स्वर्ग में गया। स्वर्ग है ही कहाँ। कितनी मिसअन्डरस्टैंडिंग कर दी है। बड़े-बड़े अच्छे लोग भी कहते हैं फलाना स्वर्ग पधारा। स्वर्ग कहते किसको हैं? अर्थ कुछ भी नहीं समझते। यह सिर्फ तुम ही जानते हो। हो तुम भी मनुष्य, परन्तु तुम ब्राह्मण बने हो। अपने को ब्राह्मण ही कहलाते हो। तुम ब्राह्मणों का एक बापदादा है। तो सन्यासियों से भी तुम पूछ सकते हो कि यह जो महावाक्य वा भगवानुवाच है कि देह सहित देह के सब धर्म छोड़ मामेकम् याद करो–क्या यह कृष्ण कहते हैं मामेकम् याद करो? तुम कृष्ण को याद करते हो क्या? कभी नहीं हाँ कहेंगे। वहाँ ही प्रसिद्ध हो जाए। परन्तु बिचारी अबलायें जाती हैं, वह क्या जानें। वह अपने फालोअर्स के आगे क्रोधित हो जाते हैं। दुर्वाषा का नाम भी है ना। उनमें अहंकार बहुत रहता है। फालोआर्स हैं ढेर। भक्ति का राज्य है ना। उनसे पूछने की कोई में ताकत नहीं रहती है। नहीं तो उनको कह सकते हैं तुम तो शिवबाबा की पूजा करते हो। अब भगवान किसको कहेंगे? क्या ठिक्कर भित्तर में भगवान है? आगे चल इन सब बातों को समझेंगे। अभी नशा कितना है। हैं सभी पुजारी। पूज्य नहीं कहेंगे।

f बाप कहते हैं मेरे को विरला कोई जानते हैं। मैं जो हूँ, जैसा हूँ–तुम बच्चों में भी विरले कोई एक्युरेट जानते हैं। उनको अन्दर में बहुत खुशी रहती है। यह तो समझते हैं ना–बाबा ही हमको स्वर्ग की बादशाही देते हैं। कुबेर के खजाने मिलते हैं। अल्लाह अवलदीन का भी खेल दिखाते हैं ना। ठका करने से खजाना निकल आया। बहुत खेल दिखाते हैं–खुदा दोस्त बादशाह क्या करते थे, उस पर भी कहानी है। पुल पर जो आता था उनको एक दिन की राजाई दे रवाना कर देता था। यह सब हैं कहानियां। अभी बाप समझाते हैं खुदा तुम बच्चों का दोस्त है, इनमें प्रवेश कर

g तुम्हारे साथ खाते पीते हैं, खेलते भी हैं। शिवबाबा का और ब्रह्मा बाबा का रथ एक ही है, तो जरूर शिवबाबा भी खेल तो सकते होंगे ना। बाप को याद कर खेलते हैं तो दोनों इसमें हैं। है तो दो ना–बाप और दादा। परन्तु कोई भी समझते नहीं हैं, कहते हैं रथ पर आये, तो वह फिर घोड़े-गाड़ी का रथ बना दिया है। ऐसे भी नहीं कहेंगे कृष्ण में शिवबाबा बैठ ज्ञान देते हैं। वह फिर कह देते हैं कृष्ण भगवानुवाच। ऐसे तो नहीं कहते ब्रह्मा भगवानुवाच। नहीं। यह है रथ। शिव भगवानुवाच। बाप बैठ तुम बच्चों को अपना और रचना के आदि-मध्य-अन्त का परिचय, ड्युरेशन बताते हैं। जो बात कोई भी नहीं जानते। सेन्सीबुल जो होंगे वह बुद्धि से काम लेंगे। सन्यासियों को तो सन्यास करना है। तुम भी शरीर सहित सब कुछ सन्यास करते हो, जानते हो यह पुरानी खल है, हमको तो अब नई दुनिया में जाना है। हम आत्मा यहाँ की रहने वाली नहीं हैं। यहाँ पार्ट बजाने आये हैं। हम रहवासी परमधाम के हैं। यह भी तुम बच्चे जानते हो वहाँ निराकारी झाड़ कैसा है। सभी आत्मायें वहाँ रहती हैं, यह अनादि ड्रामा बना हुआ है। कितनी करोड़ों जीव आत्मायें हैं। इतने सब कहाँ रहते हैं? निराकारी दुनिया में। बाकी यह सितारे तो आत्मा नहीं हैं। मनुष्यों ने तो इन सितारों को भी देवता कह दिया है। परन्तु वह कोई देवता है नहीं। ज्ञान सूर्य तो हम शिवबाबा को कहेंगे। तो उनको फिर देवता थोड़ेही कहेंगे। शास्त्रों में तो क्या-क्या बातें लिख दी हैं। यह है

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सब भक्ति मार्ग की सामग्री। जिससे तुम नीचे ही गिरते आये हो। 84 जन्म लेंगे तो जरूर नीचे उतरेंगे ना। अभी यह है आइरन एजड दुनिया। सतयुग को कहा जाता है गोल्डन एजड दुनिया। वहाँ कौन रहते थे? देवतायें। वह कहाँ गये—यह किसको भी पता नहीं है। समझते भी हैं पुनर्जन्म लेते हैं। बाप ने समझाया है पुनर्जन्म लेते-लेते देवता से बदल हिन्दू बन गये हैं। पतित बने हैं ना। और किसका भी धर्म बदली नहीं होता। इन्हों का धर्म क्यों बदली होता है—किसको पता नहीं। बाप कहते हैं धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट हो गये हैं। देवी-देवता थे तो पवित्र जोड़े थे। फिर रावण राज्य में तुम अपवित्र बन गये हो। तो देवी-देवता कहला न सके। इसलिए नाम पड़ गया है हिन्दू। देवी-देवता धर्म कृष्ण भगवान ने नहीं स्थापन किया। जरूर शिवबाबा ने ही आकर किया होगा। शिव जयन्ती शिवरात्रि भी मनाई जाती है परन्तु उसने क्या आकर किया, यह किसको भी पता नहीं है। एक शिव पुराण भी है। वास्तव में शिव की एक गीता ही है, जो शिवबाबा ने सुनाई है, और कोई शास्त्र है नहीं। तुम कोई भी हिंसा नहीं करते हो। तुम्हारा कोई शास्त्र तो बनता नहीं। तुम नई दुनिया में चले जाते हो। सतयुग में कोई भी शास्त्र गीता आदि होता नहीं। वहाँ कौन पढ़ेंगे। वह तो कह देते यह वेद-शास्त्र आदि परम्परा से चले आते हैं। उन्हों को कुछ भी पता नहीं है। स्वर्ग में कोई शास्त्र आदि होता नहीं। बाप ने तो देवता बना दिया, सबकी सद्गति हो गई फिर शास्त्र पढ़ने की क्या दरकार है। वहाँ शास्त्र होते नहीं। अभी बाप ने तुम्हें ज्ञान की चाबी दी है, जिससे बुद्धि का ताला खुल गया है। पहले ताला एकदम बन्द था, कुछ भी समझते नहीं थे। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार :-

१. किसी से भी ईर्ष्या आदि नहीं करनी है। खामियां निकाल सम्पूर्ण बनने का पुरूषार्थ करना है। पढ़ाई से ऊंच पद पाना है।

२. शरीर सहित सब कुछ सन्यास करना है। किसी भी प्रकार की हिंसा नहीं करनी है। अहंकार नहीं रखना है।

वरदान:- कर्मबन्धन को सेवा के बन्धन में परिवर्तन कर सर्व से न्यारे और परमात्म प्यारे भव

परमात्म प्यार ब्राह्मण जीवन का आधार है लेकिन वह तब मिलेगा जब न्यारे बनेंगे। अगर प्रवृत्ति में रहते हो तो सेवा के लिए रहते हो। कभी भी यह नहीं समझो कि हिसाब-किताब है, कर्मबन्धन है.. लेकिन सेवा है। सेवा के बन्धन में बंधने से कर्मबन्धन खत्म हो जाता है। सेवाभाव नहीं तो कर्मबन्धन खींचता है। जहाँ कर्मबन्धन है वहाँ दु:ख की लहर है, सेवा के बंधन में खुशी है। इसलिए कर्मबन्धन को सेवा के बन्धन में परिवर्तन कर न्यारे प्यारे रहो तो परमात्म प्यारे बन जायेंगे।

स्लोगन:-

श्रेष्ठ आत्मा वह है जो स्वस्थिति द्वारा हर परिस्थिति को पार कर ले।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

20/4/69 प्रात:क्लास ओम्शान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?
"मीठे बच्चे- अपना पोतामेल चैक करो कि सारे दिन में बाप को कितना समय याद किया, कोई भूल तो नहीं की.. क्योंकि तुम हर एक व्यापारी हो"

प्रश्न:-कौन सी एक मेहनत अन्तर्मुखी बन करते रहो तो अपार खुशी रहेगी?
उत्तर:-जन्म जन्मान्तर जो कुछ किया है, जो सामने आता रहता है, उन सबसे बुद्धियोग निकाल सतोप्रधान बनने के लिए बाप को याद करने की मेहनत करते रहो। चारों तरफ से बुद्धि हटाए अन्तर्मुखी बन बाप को याद करो। सर्विस का सबूत दो तो अपार खुशी रहेगी।

ओम्शान्ति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं, यह तो बच्चे जानते हैं कि रूहानी बाप रूहानी बच्चों को बैठ समझाते हैं। रूहानी बाप हुआ बेहद का बाप। रूहानी बच्चे भी हुए बेहद के बच्चे। बाप को तो सब बच्चों की सद्गति करनी है। किस द्वारा? इन बच्चों द्वारा। विश्व की सद्गति करनी है। सारे विश्व के बच्चे तो यहाँ आकर नहीं पढ़ते हैं। नाम ही है ईश्वरीय विश्व विद्यालय। मुक्ति तो सबकी होती ही है। मुक्ति कहो जीवनमुक्ति कहो। मुक्ति में जाकर फिर भी सबको जीवनमुक्ति में आना ही है। तो ऐसे कहेंगे सभी जीवनमुक्ति में आते वाया मुक्तिधाम। एक दो के पीछे आना ही है पार्ट बजाने। तब तक मुक्तिधाम में ठहरना पड़ता है। बच्चों को अब रचयिता और रचना का मालूम पड़ गया है। यह सारी रचना अनादि है। रचयिता तो एक ही बाप है। यह जो भी सभी आत्मायें हैं, सब बेहद के बाप के बच्चे हैं। जब बच्चों को मालूम पड़ता है- तो वही आकर योग सीखते हैं। यह भारत के लिए ही योग है। बाप आते भी भारत में हैं। भारतवासियों को ही याद की यात्रा सिखलाकर पावन बनाते हैं। और नालेज भी देते हैं कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। यह भी बच्चे जानते हैं रूद्र माला भी है जो गाई और पूजी जाती है। सिमरनी की माला है। भक्त माला भी है। ऊँचे ते ऊँचे भक्तों की माला है। है तो सारी भक्त माला, सारी माला। इस कल्प के तो शुरू में पहले जो भी हैं सब हैं रावण माला। उसमें फिर भक्त माला भी है। भक्त माला के बाद होनी चाहिए ज्ञान माला। भक्ति और ज्ञान है ना। भक्त माला भी है तो रूद्र माला भी है। पीछे फिर रूण्ड माला कहा जाता है। क्योंकि ऊँचे ते ऊँचे मनुष्य सृष्टि में है विष्णु। जिसको सूक्ष्मवतन में दिखाते हैं। लक्ष्मी नारायण राज्य तो यहाँ करते हैं तो कहेंगे विष्णु की रूण्ड माला भी है। प्रजापिता ब्रह्मा तो यह है। उनकी माला जरूर है। आखरीन यह माला बन जायेगी तब ही वह रूद्र माला और विष्णु की रूण्ड माला बनेगी।
a ऊँचे ते ऊँचा है शिवबाबा फिर ऊँचे ते ऊँचे है विष्णु का राज्य। यह त्रिमूर्ति जो दिखाया है- उसमें होना चाहिए ब्रह्मा विष्णु और शिव न कि शंकर। परन्तु बाजू में शिव को कैसे रखें। तो फिर शंकर को रख दिया है और शिव को ऊपर में रखा है। उसमें शोभा अच्छी होती है। सिर्फ तो शोभा नहीं देते। शंकर की माला नहीं कहेंगे। ब्रह्मा विष्णु और रूद्र माला बस। शोभा के लिए भक्ति में कितने चित्र बनाये हैं। परन्तु ज्ञान कुछ भी नहीं है। तुम जो चित्र बनाते हो उनकी पहचान देनी है तो मनुष्य समझ जाएं। नहीं तो शिव शंकर को मिला देते हैं।
b बाबा ने समझाया है सूक्ष्मवतन में भी सारी सा० की बात है। हड्डी मास वहाँ होता नहीं। सा० करते हैं। सम्पूर्ण ब्रह्मा भी है, परन्तु वह है सम्पूर्ण अव्यक्ति। अभी व्यक्त ब्रह्मा जो है, उनको अव्यक्त बनना है। व्यक्त ही अव्यक्त होता है। जिसको फरिश्ता भी कहते हैं। उनका सूक्ष्म वतन में चित्र रख दिया है। सूक्ष्मवतन में जाते हैं, कहते हैं बाबा ने बूटी रस पिलाया। अब वहाँ झाड़ आदि तो होता नहीं। वैकुण्ठ में है, लेकिन ऐसे नहीं कि वैकुण्ठ से ले आकर पिलाते होंगे। यह सब सूक्ष्मवतन में सा० की बात है। अब बच्चे जानते हैं अब वापिस घर जाना है। और आत्म-अभिमानी बनना है। मैं आत्मा-अविनाशी हूँ यह शरीर विनाशी है। आत्मा का ज्ञान भी तुम बच्चों में है। वे तो आत्मा क्या है, यह नहीं जानते। उन लोगों को यह भी मालूम नहीं कि कैसे उनमें 8 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। वह नालेज सिर्फ बाप ही देते हैं। अपनी भी नालेज देते हैं। तपोप्रधान से सतोप्रधान भी बनाते हैं। अब यही पुरूषार्थ करते रहो। हम आत्मा को, अब परमात्मा के साथ योग लगाना है। सर्वशक्तिवान पतित पावन एक बाप को ही कहते हैं। सन्यासी कहते हैं पतित पावन आओ। कोई तो ब्रह्म को पतित पावन कह देते हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अब तुम बच्चों को भक्ति का भी ज्ञान मिलता है कि भक्ति कितना समय चलती है। ज्ञान कितना समय चलता है। यह बाप बैठ समझाते हैं। पहले कुछ नहीं जानते थे। गोया तुच्छ बुद्धि थे। जानवरों में भी कुछ बुद्धि है, परन्तु मनुष्य होकर तुच्छ बुद्धि बन पड़े है। सतयुग में बिल्कुल स्वच्छ बुद्धि थे। कितने उन्हों में दैवी गुण थे। तुम बच्चों को दैवी गुण भी जरूर धारण करने है। कहते है ना-यह तो जैसे देवता है। भल साधू सन्त महात्मा को लोग मानते है परन्तु वह दैवी बुद्धि तो नहीं है। रजोगुणी बुद्धि हो जाते है। राजा रानी प्रजा है ना। राजधानी कब और कैसे स्थापन होती है यह दुनिया नहीं जानती। यहाँ तुम सब नई बातें सुनते हो। तो माला का भी राज समझाया। ऊँचे ते ऊँचा है बाप। उनकी माला ऊपर में है, रूद्र वह है निराकार फिर साकार लक्ष्मी नारायण उनकी भी माला है। ब्राह्मणों की माला अभी नहीं बनती। अन्त में तुम ब्राह्मणों की माला भी बन जाती है। जो ही रूद्र माला और रूण्ड माला बनती है। इन बातों में जास्ती प्रश्न-उत्तर करने की जरूरत नहीं। मूल बात है-अपने को आत्मा समझ पारमपिता परमात्मा को याद करो। यह निश्चय पक्का चाहिए। मूल बात है-पतितों को पावन बनाना। सारी दुनिया पतित है फिर पावन बनना है। मूलवतन में भी सभी पावन है तो सुखधाम में भी सब पावन है। तुम पावन बनकर पावन दुनिया में जाते हो। गोया अब पावन दुनिया स्थापन हो रही है। यह सब ड्रामा में नूँध है। तुम बच्चों को क्रिश्चियन वा बौद्धियों की नालेज नहीं चाहिए। उनकी नालेज से कोई इतना सुख वा ऊँच पद तो नहीं मिलता है। इसलिए बाप कहते है और सब धर्मों की बातों को छोड़ दो। मुख्य बात है यह, जिसे मालूम होता है। जो जितना पढ़ते है उतना ऊँच पद पाते है। बाप कहते है, सारे दिन का पोतामेल देखो - कोई भूल तो नहीं हुई। व्यापारी लोग मुरोटी सम्भालते है। यह भी कमाई है। तुम हर एक व्यापारी हो। बाबा से व्यापार करते हो। अपनी जाँच करनी है। हमारे में कितने दैवी गुण हैं। कितना बाप को याद करते है। कितना हम औरों को बनाते जाते है। इन नंगे आर्यों को फिर नंगा जाना है। अभी तक सब बातें ही रहते है। बीच में जाना तो एक को भी नहीं है। ज्ञानी तो सबको इकट्ठा है। भल सृष्टि खाली नहीं रहती गायन है राम गयो रावण गयो.. परन्तु रहते दोनो हैं। रावण सम्प्रदाय जाती है तो फिर लौटकर नहीं आती है। बाकी यह बच जाते है। यह भी आगे चलकर सब सा० होना है। यह जानना है, कि नई दुनिया की कैसे स्थापना हो रही है। पिछाड़ी में क्या होगा। फिर सिर्फ हमारा ही धर्म रह जायेगा। सतयुग में तुम राज्य करेंगे। कलियुग खत्म हो जायेगा। फिर सतयुग को आना है। अभी रावण सम्प्रदाय और राम सम्प्रदाय दोनो है। संगमयुग पर ही यह सब होता है। अभी तुम यह सब कुछ जानते हो। बाप कहते है बाकी जो कुछ राज है-वह आगे चलकर धीरे2 समझाते रहेंगे। जो रिकार्ड में नूँध है, वह खुलते जायेंगे। तुम समझाते जायेंगे। इन एडवान्स कुछ भी नहीं बतायेंगे। यह भी ड्रामा का प्लैन है। रिकार्ड खुलता जाता है। बाबा बोलता जाता है। तुम्हारी बुद्धि में यह सब बातों की समझ बढ़ती जाती है। जैसे2 रिकार्ड बजता जायेगा वैसे2 बाबा की मुरली चलती जायेगी। ड्रामा का राज़ सारा भरा पड़ा है। ऐसे नहीं रिकार्ड से सुई उठाकर बीच में रख सकते है तो वह रिपीट हो। नहीं। वह भी फिर वही रिपीट होगा। नई बात नहीं। बाप के पास जो नई बात होगी वह रिपीट होगी। तुम सुनते और सुनाते जायेंगे। बाकी सब गुप्त है। यह राजधानी स्थापन हो रही है। सारी माला बन रही है। अलग2 जाकर राजाई में तुम जन्म लेंगे। राजा रानी प्रजा सब चाहिए। यह सब बुद्धि से काम लेना पड़ता है। प्रैक्टिकल में जो होगा सो देखा जायेगा। जो यहाँ से जाते है वह अच्छे साहूकार के घर में जाकर जन्म लेते हैं। अभी भी तुम्हारी वहाँ बहुत खातिरी होती है। इस समय भी रत्नजड़ित चीजें सबके पास होती है। परन्तु उन्हों में इतनी पावर नहीं है। पावर तुम्हारे में है। तुम जहाँ जायेंगे वहाँ अपना शो करेंगे। तुम तो ऊँच बनते हो तो तुम जाकर वहाँ दैवी चरित्र दिखायेंगे। आसुरी बच्चे जन्मते ही रोते रहेंगे। गन्दे भी होते है। तुम तो बड़े कायदेसिर पलेंगे। गंद आदि की बात नहीं। आजकल के बच्चे तो गन्दे हो पड़ते है। सतयुग में ऐसी बात हो न सके। फिर भी हेविन है ना। वहाँ बातें थोड़ी नहीं होंगी। वहाँ के बच्चे। इनमें बहुत मुश्किल एक होते, सब कै

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

फूलों में इतनी खुशबू नहीं। वहाँ तो हर एक चीज में 100% खुशबू रहती है। यहाँ तो 1% भी नहीं है। वहाँ तो फूल भी फर्स्टक्लास होंगे। यहाँ भल कोई कितना भी साहूकार हो तो भी इतना नहीं। वहाँ तो किसम2 की चीजें होंगी। बर्तन आदि सब सोने के होंगे। जैसे यहाँ के पत्थर, वहाँ फिर सोना ही सोना। रेती में भी सोना होता है। विचार करो कितना सोना होगा। जितने मकान आदि बनेंगे। ऐसी मौसम होगी-वहाँ न सर्दी न गर्मी। वहाँ गर्मी का दुख नहीं जो पंखे चलाने पड़े। उसका नाम ही है स्वर्ग। वहाँ अपार सुख होता है। तुम्हारे जैसा पदमापदम भाग्यशाली कोई बनते ही नहीं। लक्ष्मी नारायण की कितनी महिमा गाते है। उनको जो ऐसा बनाते है, उनकी कितनी महिमा चाहिए। पहले होती है अव्यभिचारी भक्ति, फिर देवताओं की भक्ति शुरू होती है। वह भी भूल पूजा कहेंगे। शरीर तो यह है नहीं। 5तत्त्वों की पूजा होती है। शिवबाबा के लिए तो ऐसे नहीं कहेंगे। पूजा करने के लिए कोई चीज का वा सोने आदि का बनाते है। आत्मा को थोड़ेही सोना कहेंगे। आत्मा किस चीज की बनी हुई है। शिव का चित्र किस चीज का बनाया हुआ है, यह झट बतायेंगे। परन्तु आत्मा परमात्मा किस चीज का बना हुआ है वह कोई बता न सके। सतयुग में 5तत्त्व भी शुद्ध होते है। यहा है अशुद्ध, तो पुरुषार्थी बच्चे ऐसी2 ख्यालात करते रहेंगे। बाप कहते है इन सब बातों को भी छोड़ दो, जो होना है वह होगा। पहले बाप को याद करो। चारों तरफ से बुद्धि हटाकर मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। जो कुछ सुनते हो उन सबको छोड़ एक बात पक्की करो- कि हमको सतोप्रधान बनना है। फिर सतयुग में जो कल्प2 हुआ होगा, वही होगा। उसमें फर्क नहीं पड़ सकता। मूल बात है, बाप को याद करो। यह है मेहनत। वह पूरी करो। तूफान तो बहुत आते है। जन्म जन्मान्तर जो कुछ किया है वह सब सामने आता है। तो सब तरफ से बुद्धि को हटाकर मेरे को याद करने का पुरुषार्थ करो। अन्तर्मुखी होकर। स्मृति तो आई, तुम बच्चों को तो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सर्विस से भी मालूम पड़ जाता है। सर्विस करने वालों को सर्विस की खुशी रहती है। जो अच्छी सर्विस करते है, उनकी सर्विस का सबूत भी मिलता है। पण्डे बनकर आते है। कौन महारथी घोड़ेसवार प्यादे है वह झट पता पड़ जाता है। अच्छा-

मीठे2 लाडले बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:- 1। दूसरी सब बातों को छोड़, बुद्धि को चारों तरफ से हटाकर सतोप्रधान बनने के लिए अशरीरी बनने का अभ्यास करना है। दैवीगुण धारण करनेहै।

2। बुद्धि में अच्छे2 ख्यालात लाने है, हमारे राज्य(स्वर्ग) में क्या2 होगा, उस पर विचार कर अपने को उस जैसा लायक चरित्रवान बनाना है। यहाँ से बुद्धि निकाल देनी है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बच्चों ने अनुभव सुनाया। कोई को अनुभव होता है। अनुभव सुनाने को प्रैक्टीस अच्छी रहती है। पढ़े लिखे भी होते हैं। और यह हेमी का नया अनुभव। (भक्ति मार्ग तो आधा कल्प से चला आया है। उसको नया अनुभव नहीं कह सकते। वेद-शास्त्र महाभारत आदि यही चीजें हैं। यह नालेज तो है नहीं। जन्म-जन्मान्तर भक्ति मार्ग के शास्त्र तो पढ़े। यह है बिल्कुल नई बात। भक्ति से बिल्कुल न्यारी बातें हैं। बच्चों को सभी चित्रों आदि में मिल गया है। तुम्हारा युग ही अलग है। यह है पुरुषोत्तम संगम युग। और यह है ब्राह्मण कुल। आगे तो पता भी नहीं। वह ब्राह्मण भी नहीं जानते जो कुल वंशावली हैं। कुलवंशावली और मुखवंशावली का भी वर्णन है। परन्तु राईट बातें सुना न सकेंगे। यह सभी हैं इनराईटियस। यहां है सभी राईटियस। राईटियस राज्य राईटियस धर्म भी कहेंगे। सभी राईटस ही चलते हैं। राईटस और अनराईटस आधा आधा है। राईटस सतयुग से शुरू होकर है। अन्त तक चलता है। फिर अनराईटस हो पड़ते। तुम अभी दोनों के फाउन्डेशन को जान गये हो। इन बातों को न कोलयुगी, मनुष्य न सतयुगी जा सकते हैं। पुरुषोत्तम संगम युगी ही कांट्रास्ट कर सकते हैं। यह पढ़ाई है ना। परन्तु आदत पड़ी हुई है तो मुरली2 कहते रहते हो। तुमको मुरली आई है। मुरली पढ़ी है। मुरली नाम कृष्ण का उठा लिया है। अभी इनको क्या कहें। पन्द्रह दिन की वाणी आई है। वाणी अक्षर ठीक है। मुरली अक्षर निकल जाना चाहिए। नहीं तो फिर कृष्ण की मुरली याद आयेगा। वाणी इस पोलार से निकलती है। इसलिए इसे आकाशवाणी कहते हैं। आकाश तत्व है ना। आकाश तत्व से वाणी निकलती है। पोलार है ना। (मुरली शब्द मीठा है) आगे चल कर चेन्ज भी हो सकता है। अभी तो बच्चे समझते हैं जो कुछ सुनते समझते हैं ड्रामा। वह हद का यह बेहद का। बाप को कहा जाता है नालेज फुल। जानी-जाननहार नाम सुना है तो समझते हैं सभी के दिलों को जानने वाला है। अच्छा उसमें क्या-क्या बातें सोचते हैं। वो पेपे भिन्न-भिन्न होती है। कमाई का रस्ता है। अभी तुम जो बाप से पढ़ते हो यह कमाई इस दुनिया के नहीं है। यह राज्यों के लिए भविष्य के लिए। नये2 सुन कर मुंह जाते हैं। कैसे हो सकता। पुरुषोत्तम संगम युग का किसको भी पता नहीं है। भक्ति मार्ग में बताते हैं सभी परन्तु अर्थ रहित। अभी तुमको यथार्थ अर्थ समझाया जाता है। न यथार्थ और अयथार्थ सभी तुमको पता पड़ता है जब कि यथार्थ बातें बताई जाती है। यह है भक्ति। बाप आकर समझाते हैं ज्ञान से दिन भक्ति से रात। फिर वैराग्य किसका? रात का। फिर दिन आता है। भक्ति का वैराग्य। स्कूल में बच्चे पढ़ते हैं तो कोई बहुत बुद्धिवान होते हैं। उत्तम मध्यम कनिष्ट होते हैं ना। किसको बहुत थोड़ा समझ में आता किसको कुछ भी नहीं। आवाज मीठा लगता है। अक्षर अक्षर सुनते हैं फिर भूल जाते हैं। रिपीट नहीं कर सकते हैं। फिर कहते हैं पढ़ें लिखे नहीं हैं। बाप कहते हैं पढ़ा हुआ तो सभी भूल जाना है। यह नई पढ़ाई है। आत्मा को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाना है। बाप कहते हैं तूफान आते हैं डरो मत। कहते हैं बाबा स्वप्न बहुत आते हैं। बाप कहते हैं सभी से जाती स्वप्न हमारे पास आते हैं। फन्ट में हूं ना। यह सभी माया के तूफान हैं। स्वप्न तो अज्ञान काल में भी बहुत आते हैं। अभी तुम सच्च-मुच देवता बनते हो। जानते हो हम स्वर्ग वासी थे। भारत स्वर्ग था। सिर्फ नाम बदल दिया है। बाप कहते हैं 5000 वर्ष की बात है। भारत स्वर्ग था। भारत की महिमा अपरमअपार है। तुम सुना सकते हो यह भारत 5000 वर्ष पहले स्वर्ग था। देवीन था। वह भी समझते हो अवश्य गाड गाडेस का राज्य था। भारत के लिए सभी को इज्जत है। जानते हैं, देवीन था। अभी गरीब बन हैं तो मदद देते हैं। वह भी अपनी कमाई के लिए मदद देते हैं। तुम बच्चे अच्छी रीत जानते हो। फिर से प्रशंसा कर रहे हो* यही स्वर्ग की। श्रीमत पर तुम श्रेष्ठ बनते हो। श्रीमत परमात्मा सृष्टि श्रेष्ट बना है। तुम भी बनते हो। इसलिए स्वर्ग को श्रेष्ठ कहा जाता है। इनकी यह निशानी। तद् ही बाबा कहते हैं प्रभात टेरो में भी यह दिखाओ। विश्व में शान्ति थी। एक ही राज्य एक धर्म था। तुम जो स्टेट करते वह नहीं बात नहीं। अच्छा ओम बच्चों को गुडनाईट। सलानी बच्चों को सलानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

*:***:*

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

5.2.95 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम्हें बाप द्वारा जो अद्वैत मत मिल रही है, उस मत पर चलकर कलियुगी मनुष्यों को सतयुगी देवता बनाने का श्रेष्ठ कर्तव्य करना है"

प्रश्नः- सभी मनुष्य मात्र दुःखी क्यों बने हैं, उसका मूल कारण क्या है?

उत्तरः- रावण ने सभी को श्रापित कर दिया है, इसलिए सभी दुःखी बने हैं। बाप वर्सा देता, रावण श्राप देता – यह भी दुनिया नहीं जानती। बाप ने वर्सा दिया तब तो भारतवासी इतने सुखी स्वर्ग के मालिक बनें, पूज्य बनें। श्रापित होने से पुजारी बन जाते हैं।

ओम् शान्ति। बच्चे यहाँ मधुबन में आते हैं बापदादा के पास। हाल में जब आते हो, देखते हो पहले बहन-भाई बैठते हैं फिर पीछे देखते हो बापदादा आया हुआ है तो बाप की याद आती है। तुम हो
a प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे, ब्राह्मण और ब्राह्मणियाँ। वह ब्राह्मण तो ब्रह्मा बाप को जानते हीनहीं हैं। तुम बच्चे जानते हो – बाप जब आते हैं तो ब्रह्मा-विष्ण-शंकर भी जरूर चाहिए। कहते ही हैं त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। अब तीनों द्वारा तो नहीं बोलेंगे ना। यह बातें अच्छी रीति बुद्धि में धारण करनी है। बेहद के बाप से जरूर स्वर्ग का वर्सा मिलता है। इसलिए सभी भक्त भगवान से क्या चाहते हैं? जीवनमुक्ति।
b अभी है जीवनबन्ध। सभी बाप को याद करते हैं कि आकर इस बंधन से मुक्त करो। अभी तुम बच्चे हो जानते हो कि बाबा आया हुआ है। कल्प-कल्प बाप आते हैं। पुकारते भी हैं – तुम मात पिता.... परन्तु इसका अर्थ तो कोई भी नहीं समझते। निराकार बाप के लिए समझ लेते हैं। गाते हैं परन्तु मिलता कुछ भी नहीं है। अभी तुम बच्चों को उनसे वर्सा मिलता है फिर कल्प बाद मिलेगा। बच्चे जानते हैं बाप आधाकल्प के लिए आकर वर्सा देते हैं और रावण फिर श्राप देते हैं। यह भी दुनिया नहीं जानती कि हम सभी श्रापित हैं। रावण का श्राप लगा हुआ है इसलिए सभी दुःखी हैं। भारतवासी सुखी थे। कल इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य भारत में था। देवताओं के आगे माथा टेकते हैं, पूजा करते हैं परन्तु सतयुग कब था, यह किसको पता नहीं। अब देखो लाखों वर्ष की आयु सिर्फ सतयुग की फिर त्रेता की, द्वापर-कलियुग की, उस हिसाब से मनुष्य कितने ढेर हो जाएं। सिर्फ सतयुग में ही ढेर मनुष्य हो जाएं। कोई भी मनुष्य की बुद्धि में नहीं बैठता है। बाप बैठ समझाते हैं कि देखो गाया भी जाता है 33 करोड़ देवतायें होते हैं। ऐसे थोड़ेही वह कोई लाखों वर्ष में हो सकते हैं। तो यह भी मनुष्यों को समझाना पड़े।

अभी तुम समझते हो कि बाबा हमको स्वच्छ बुद्धि बनाते हैं। रावण मलेच्छ बुद्धि बनाते हैं। मुख्य बात तो यह है। सतयुग में हैं पवित्र। यहाँ हैं अपवित्र। यह भी किसको पता नहीं है कि रामराज्य कब
c से कब तक? रावण राज्य कब से कब तक होता है? समझते हैं यहाँ ही राम राज्य भी है, रावण राज्य भी है। अनेक मत-मतान्तर हैं ना। जितने हैं मनुष्य, उतनी हैं मतें। अभी यहाँ तुम बच्चों को एक अद्वैत मत मिलती है जो बाप ही देते हैं। तुम अभी ब्रह्मा द्वारा देवता बन रहे हो। देवताओं की महिमा गाई जाती है – सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण.... हैं तो वह भी मनुष्य, मनुष्य की महिमा गाते हैं क्यों?

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जरूर फर्क होगा ना । अभी तुम बच्चे भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार मनुष्य को देवता बनाने का कर्तव्य सीखते हो । कलियुगी मनुष्य को तुम सतयुगी देवता बनाते हो अर्थात् शान्तिधाम, ब्रह्माण्ड का और विश्व का मालिक बनाते हो, यह तो शान्तिधाम नहीं है ना । यहाँ तो कर्म जरूर करना पड़े । वह है स्वीट साइलेन्स होम । अभी तुम समझते हो हम आत्मायें स्वीट होम, ब्रह्माण्ड के मालिक हैं । वहाँ दुःख-सुख से न्यारे रहते हैं । फिर सतयुग में विश्व के मालिक बनते हैं । अभी तुम बच्चे लायक बन रहे हो । एम ऑब्जेक्ट एक्यूरेट सामने खड़ी है । तुम बच्चे हो योगबल वाले । वह हैं बाहुबल वाले । तुम भी हो युद्ध के मैदान पर, परन्तु तुम हो डबल अहिंसक । वह है हिंसक । हिंसा काम कटारी को कहा जाता है । सन्यासी भी समझते हैं यह हिंसा है इसलिए पवित्र बनते हैं । परन्तु तुम्हारे सिवाए बाप के साथ प्रीत कोई की है नहीं । आशिक माशूक की प्रीत होती है ना । वह आशिक माशूक तो एक जन्म के गाये जाते हैं । तुम सभी हो मुझ माशूक के आशिक । भक्तिमार्ग में मुझ एक माशूक को याद करते आये हो । अब मैं कहता हूँ यह अन्तिम जन्म सिर्फ पवित्र बनो और यथार्थ रीति याद करो तो फिर याद करने से ही तुम छूट जायेंगे । सतयुग में याद करने की दरकार ही नहीं रहेगी । दुःख में सिमरण सब करते हैं । भक्ति मार्ग दुःख का मार्ग है ना । यह है नर्क । इनको स्वर्ग तो नहीं कहेंगे ना । बड़े आदमी जो धनवान हैं वह समझते हैं हमारे लिए तो यहाँ ही स्वर्ग है । विमान आदि सब कुछ वैभव हैं, कितना अन्धश्रद्धा में रहते हैं । गाते भी हैं तुम मात पिता... परन्तु समझते कुछ नहीं । कौन से सुख घनेरे मिले — यह कोई भी नहीं जानते हैं । बोलती तो आत्मा है ना । तुम आत्मायें समझती हो हमको सुख घनेरे मिलने हैं । उसका नाम ही है — स्वर्ग, सुखधाम । स्वर्ग सभी को बहुत मीठा भी लगता है । तुम अभी जानते हो स्वर्ग में हीरे जवाहरों के कितने महल थे । भक्ति मार्ग में भी कितना अनगिनत धन था । जो सोमनाथ का मन्दिर बनाया है । एक-एक चित्र लाखों की कीमत वाले थे । वह सब कहाँ चले गये ? कितना लूटकर ले गये ! मुसलमानों ने जाए मस्जिद आदि में लगाया । इतना अथाह धन था । अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है हम बाप द्वारा फिर से स्वर्ग के मालिक बनते हैं । हमारे महल सोने के होंगे । दरवाजों पर भी जड़ित लगी हुई होगी । जैनियों के मन्दिर भी ऐसे बने हुए होते हैं । अब हीरे आदि तो नहीं हैं ना जो पहले थे । अभी तुम जानते हो हम बाप से स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं । शिवबाबा आते भी भारत में ही हैं । भारत को ही शिव भगवान से स्वर्ग का वर्सा मिलता है । क्रिश्चियन भी कहते हैं क्राइस्ट से 3 हज़ार वर्ष पहले भारत हेवन था । राज्य कौन करते थे ? यह किसको पता नहीं हैं । बाकी यह समझते हैं भारत बहुत पुराना है । तो यही स्वर्ग था ना । बाप को कहते भी हैं हेवनली गॉड फादर अर्थात् हेवन स्थापन करने वाला फादर । जरूर फादर आये होंगे, तब तुम स्वर्ग के मालिक बने होंगे । हर 5 हज़ार वर्ष बाद स्वर्ग के मालिक बनते हो फिर आधाकल्प बाद रावण राज्य शुरू होता है । चित्रों में ऐसा क्लीयर कर दिखाओ जो लाखों वर्ष की बात बुद्धि से ही निकल जाए । लक्ष्मी-नारायण कोई एक नहीं, इन्हों की डिनायस्टी होगी ना फिर उन्हों के बच्चे राजा बनते होंगे । राजायें तो बहुत बनते हैं ना । सारी माला बनी हुई है । माला को ही सिमरण करते हैं ना । जो बाप के मददगार बन बाप की सर्विस करते हैं उन्हों की ही माला बनती है । जो पूरा चक्र

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

में आते, पूज्य पुजारी बनते हैं उन्हों का यह यादगार है। तुम पूज्य से पुजारी बनते हो तो फिर अपनी माला को बैठ पूजते हो। पहले माला पर हाथ लगाकर फिर माथा टेकेंगे। पीछे माला को फेरना शुरू करते हैं। तुम भी सारा चक्र लगाते हो फिर शिवबाबा से वर्सा पाते हो। यह राज़ तुम ही जानते हो। मनुष्य तो कोई किसके नाम पर, कोई किसके नाम पर माला फेरते हैं। जानते कुछ भी नहीं। अभी तुमको माला का सारा ज्ञान है, और कोई को यह ज्ञान नहीं। क्रिश्चियन थोड़ेही समझते हैं। तुम्हारी माला फेरते हैं। यह माला है ही उन्हों की जो बाप के मददगार बन सर्विस करते हैं। इस समय सब पतित हैं, जो पावन थे वह सब यहाँ आते-आते अब पतित बने हैं। फिर नम्बरवार सब जायेंगे। नम्बरवार आते हैं, नम्बरवार जाते हैं। कितनी समझने की बातें हैं। यह झाड़ है। कितने टाल-टालियां मठ पंथ हैं। अभी यह सारा झाड़ खलास होना है, फिर तुम्हारा फाउन्डेशन लगेगा। तुम हो इस झाड़ के फाउन्डेशन। उसमें सूर्यवंशी चन्द्रवंशी दोनों हैं। सतयुग-त्रेता में जो राज्य करने वाले थे, उन्हों का अभी धर्म ही नहीं हैं, सिर्फ चित्र हैं। जिनके चित्र हैं उन्हों की बायोग्राफी को तो जानना चाहिए ना। कह देते फलानी चीज लाखों वर्ष पुरानी है। अब वास्तव में पुराने ते पुराना है आदि सनातन देवी-देवता धर्म। उनके आगे तो कोई चीज़ हो नहीं सकती। बाकी सब 2500 वर्ष की पुरानी चीजें होंगी, नीचे से खोदकर निकालते हैं ना। भक्ति मार्ग में जो पूजा करते हैं वह पुराने चित्र निकालते हैं। क्योंकि अर्थक्वेक में सब मन्दिर आदि गिर पड़ते हैं फिर नये बनते हैं। हीरे सोने आदि की खानियां जो अभी खाली हो गई हैं वह फिर वहाँ भरतू हो जायेंगी। यह सब बातें अभी तुम्हारी बुद्धि में हैं ना। बाप ने वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी समझाई है। सतयुग में कितने थोड़े मनुष्य होते हैं फिर वृद्धि को पाते हैं। आत्मायें सब परमधाम से आती रहती हैं। आते-आते झाड़ बढ़ता है। फिर जब झाड़ जड़जड़ीभूत अवस्था को पाता है तो कहा जाता है राम गयो रावण गयो, जिनका बहु परिवार है। अनेक धर्म हैं ना। हमारा परिवार कितना छोटा है। यह सिर्फ ब्राह्मणों का ही परिवार है। वह कितने अनेक धर्म हैं, जनसंख्या बतलाते हैं ना। वह सब हैं रावण सम्प्रदाय। यह सब जायेंगे। बाकी थोड़े ही रहेंगे। रावण सम्प्रदाय फिर आयेंगे नहीं, सब मुक्तिधाम में चले जायेंगे। बाकी तुम जो पढ़ते हो वह नम्बरवार आयेंगे स्वर्ग में।

अभी तुम बच्चों ने समझा है कैसे वह निराकारी झाड़ है, यह मनुष्य सृष्टि का झाड़ है। यह तुम्हारी बुद्धि में है। पढ़ाई पर ध्यान नहीं देंगे तो इम्तहान में नापास हो जायेंगे। पढ़ते और पढ़ाते रहेंगे तो खुशी भी रहेगी। अगर विकार में गिरा तो बाकी यह सब भूल जायेगा। आत्मा जब पवित्र सोना हो तब उसमें धारणा अच्छी हो। सोने का बर्तन होता है पवित्र गोल्डन। अगर कोई पतित बना तो ज्ञान सुना नहीं सकता। अभी तुम सामने बैठे हो, जानते हो गॉड फादर शिवबाबा हम आत्माओं को पढ़ा रहे हैं। हम आत्मायें इन आरगन्स द्वारा सुन रही हैं। पढ़ाने वाला बाप है, ऐसी पाठशाला सारी दुनिया में कहाँ होगी। वह गॉड फादर है, टीचर भी है, सतगुरु भी है, सबको वापिस ले जायेंगे। अभी तुम बाप के सम्मुख बैठे हो। सम्मुख मुरली सुनने में कितना फर्क है। जैसे यह टेप मशीन निकली है, सबके पास एक दिन आ जायेगी। बच्चों के सुख के लिए बाप ऐसी चीज़ें बनवाते हैं। कोई बड़ी बात नहीं है ना। यह सांवल

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

शाह है ना। पहले गोरा था अभी सांवरा बना है तब तो श्याम सुन्दर कहते हैं। तुम जानते हो हम सुन्दर थे अब श्याम बने हैं फिर सुन्दर बनेंगे। सिर्फ एक क्यों बनेगा? एक को सर्प ने डसा क्या? सर्प तो माया को कहा जाता है ना। विकार में जाने से सांवरा बन जाते हैं। कितनी समझने की बातें हैं। बेहद का बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते यह अन्तिम जन्म फार माई सेक (मेरे सदके) पवित्र बनो। बच्चों से यह भीख मांगते हैं। कमल फूल समान पवित्र बनो और मुझे याद करो तो यह जन्म भी पवित्र बनेंगे। और याद में रहने से पास्ट के विकर्म भी विनाश होंगे। यह है योग अग्नि, जिससे जन्म जन्मान्तर के पाप दग्ध होते हैं। सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो में आते हैं तो कला कम हो जाती है। खाद पड़ती जाती है। अब बाप कहते हैं सिर्फ मामेकम् याद करो। बाकी पानी की नदियों में स्नान करने से थोड़ेही पावन बनेंगे। पानी भी तत्व है ना। 5 तत्व कहे जाते हैं। यह नदियाँ कैसे पतित पावनी हो सकती हैं। नदियाँ तो सागर से निकलती हैं। पहले तो सागर पतित-पावन होना चाहिए ना। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1. विजय माला में आने के लिए बाप का मददगार बन सर्विस करनी है। एक माशूक के साथ सच्ची प्रीत रखनी है। एक को ही याद करना है।

2. अपनी एक्यूरेट एम ऑबजेक्ट को सामने रख पूरा पुरूषार्थ करना है। डबल अहिंसक बन मनुष्य को देवता बनाने का श्रेष्ठ कर्तव्य करते रहना है।

वरदानः- सर्वगुण सम्पन्न बनने के साथ-साथ किसी एक विशेषता में विशेष प्रभावशाली भव

जैसे डॉक्टर्स जनरल बीमारियों की नॉलेज तो रखते ही हैं लेकिन साथ-साथ किसी बात की विशेष नॉलेज में नामीग्रामी हो जाते हैं, ऐसे आप बच्चों को सर्वगुण सम्पन्न तो बनना ही है फिर भी एक विशेषता को विशेष रूप से अनुभव में लाते, सेवा में लाते आगे बढ़ते चलो। जैसे सरस्वती को विद्या की देवी, लक्ष्मी को धन की देवी कहकर पूजते हैं, ऐसे अपने में सर्वगुण, सर्वशक्तियाँ होते भी एक विशेषता में विशेष रिसर्च कर स्वयं को प्रभावशाली बनाओ।

सलोगनः-

विकारों रूपी सांपों को सहजयोग की शैया बना दो तो सदा निश्चिंत रहेंगे।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

e आज दादी नहीं है। कहांगई यह तो बताया होगा कि अहमदाबाद में माकन देखने गई है। जितना बड़ा शो होता है उतनी कशिश करता है। जहां बड़ा गांव शहर होता है, तो देखने लिए जाते हैंना, छोटा शो भी किय जाता है। बड़ा शो भी किया जाता है। गली2 में ... किया जाता है। क्योंकि बाप से वर्सा लेना है। वहां एक बच्चा एक बापसे वर्सा लेते हैं। यहां फिर एक बाप से अनेक बच्चे वर्सा लेते हैं। बच्चे जानते हैं कि बच्चों को यह निश्चय है कि देहद बाप आते हैं वेहद का वर्सा देने। बापऐसा वर्सा देते हैं जो कोई भी छीन न सके। यहां तो टुकड़2 पर झगड़ा चलता रहता है। वहां अशान्ति का नाम-निशान नहीं। और बच्चों को भी यह समझना चाहिए कि बाप स्थापना जरूर करेंगे। कल्प2 स्थापना जरूर होनी है। जब बाप को स्थापना ही करनी है तो रांधू रमजवाज़ बच्चों साथ होगा। यहां कोई को गलत बात, टेचुल, कुर्सी गाना वेगरह दिया जाता है। जैसे बनारस का एक सेठ कहता है कि हम बाबा के पास जावें। तो अभी वह आदे तो खातरी जरूर करेंगे। अभी उस में भी नहीं हैं। भक्त है। परन्तु पवित्रता अच्छी लगती है। पवित्रता पर ही तो सभी माया झुकाते हैं। बाप सुनाते हैं नई दुनिया में पवित्रता है शान्ति सुख भी है। जो कि अभी नहीं हैं। अभी बच्चों को अपन कोवेलना और गुण ग्राहक होना है। समझाते भी हैं सहज, रास्ता भी सहज बताते हैं। इसका नाम ही है सहजराजयोग। बाप कहते हैंयाद की यात्रा पर रहो। यह याद के लिए वक्रे× श्रीमत मिलती है। बच्चे याद की यात्रा पर ही पाप कटेंगे। फिर ज्ञान देते हैं 84 चक्र का। अच्छा कोई आते हैंकहते हैं...कुमारियां कितनी माता ज्ञान देती हैं। अभी भक्तों की भी बड़ी म सम्भाल करनी पड़ती है। तो कहती हैं सतयुग में भक्ति नहीं। त्रेता में भक्ति है। ज्ञान नहीं। ज्ञान सिर्फ संगम पर ही होता है। बच्चे जो आये हैं समझते हैं भक्ति तो जन्म-जन्मान्तर करते आये। यह एक ही बार हम ज्ञान लेते हैं। यह पढ़ाई एक ही बार मिलती है। जैसे बार०सी०एस० बन गया फिर क्या पढ़े। तो यह भी दर्दे ते बड़ा इम्तहान है और पढ़ाने भी है बड़ा। जितना पढ़ेंगे उतना ही अपन को फायदा पहुंचायेंगे। रेगुलर पढ़ना पड़े। कोई भी बात समझ में न आये तो दूसरे को न सुनाना चाहिए। जिससे संशय बुधि बन जावे। यह डबल बाप है। अपना भीनुकसान तो दूसरों का भी नुकसान। तो फायदा पहुंचाते हैं। तो बच्चों को भी कहते हैंएक दो को फायदा दियो। परन्तु माया के वस नुकसान देते हैं। रावण तोबाप नहीं है। बाप से वर्सा मिलेगा। रावण से वर्सा नहीं मिलता। वर्सा मिलता है खुशी का। भक्ति में कोई खुशी की चीज नहीं मिलती है। बाप आते हैं सर्व का भला करने। सारी दुनिया का भी कल्याण होता है। इसमें संशय वा मूंझने की दरकार नहीं है। हर 5000वर्ष बाद यह चक्र फिरता रहता है। जो एक्टर हैं वही फिर होंगे। यह चित्र है ब्रो× जोतुम्हारा ब्रो वचाव करते हैं। यह चित्र तुम्हारी समझानी बताते हैं। सुख-दुःख का खेल है। आधा सुख आधादुःख नहीं है। सुख तुमको थोना हिस्सा मिलता है। जो देवी देवता विचार क्षसमुद्र= सागर मथन करते हैं। ब्र... विष्णु शंकर को पतित पावन नहीं कहेंगे। क्योंकि यह सभी आत्माओं के हैं। यह खुद आकर कहते हैं मैं इस में प्रवेश करता हूं। मैं आकर आत्माओं को पढ़ाता हूं। सतयुग में मैं नहीं आता हूं। फिर 5000वर्ष बाद आऊंगा। बाप ही एक बार आकर इस भारत को स्वर्ग बनाते हैं। कई कहते हैं क्या आत्मा हमा सिर्फ भारत में ही आता है। बस और कहां नहीं जायेंगे। हंसी खुड़ी भी कई करते हैं। जब भारत में तो और कोई धर्म नहींतुम्हारे पास गीत है गाता आप ने जो दिया हैवह और कोई छीनन सके। वह है हद का बाप। यह है देहद का बाप। मां बाप कैसे बच्चों को सम्भालते हैं। यह ज्ञान में है। इसमें हमकिसका कैसे निकाल सकते हैं। बच्चों को बहुत सयाणा होना चाहिए। ऐसे नहीं अपना भी नुकसान तो औरों का भी नुकसान कर दो। यह समझानी कब कोई दे न सके। कईकहते हैं ऐसा ज्ञान तो कब हमकेा मिला नहीं है। 5000 वर्ष पहले मिला था। फिर अभी मिलता है। बाकी भक्ति तो जन्म-जन्मान्तर करते आये हो। शास्त्र पढ़ते आये हो। तो बाबा आज हमको वेहद की नलिज सुनाते हैं। बाबा ने ... पढ़ाया है आई एम आत्मा। अहं ब्रह्मास्मि

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

यह कोई मंत्र नहीं। यहां ओम का भी अर्थ बाप समझाते हैं। हम आत्मा हमारा बाप परमपिता परमात्मा है। ब्राह्मण
ऐसे नहीं कि हम आत्मा सो परमात्मा। लेकिन तुम जो चक्र लगाते हो। हम सो देवता फिर हम सो क्षत्री फिर वैश्य शुद्र फिर हम सो ब्राह्मण। सुखधाम और शान्तिधाम में जाते हैं। वह तो हम सो परमात्मा कहते हैं। हरेक बात में निश्चयबुद्धि होना चाहिए। गंगा का तट हो, गंगा का जल हो, यह असत्य है। बाकी सत्य क्या है, शिव बाबा को याद हो, शिव बाबा का तट हो, तब प्राण तन से निकले। यह समझना चाहिए कि स्वर्ग की स्थापना बाप ही करते हैं। कितना मीठा बाबा है। प्रवाह थी पार ब्रह्म में रहने वाले परमात्मा आ गये, जब वह मिल गया तो बाकी क्या। भक्ति मार्ग में सभी आदमी को परमात्मा की प्रवाह थी वह वेहद का सो वर्सा मिलता है बाकी क्या। ऐसी बातों से अपने को बहलाते रहो। अन्दर याद भी करते रहो। इस ज्ञान योग से ही सारी सृष्टि बदलती है। तुम समझते हो हम सभी बदल जावेंगे। फिर तो देवता बन जावेंगे। सृष्टि भी ऐसी बन जावेगी। अभी अन्त को याद करो। जैसे बच्चा पैदा होता है तो उसे छोटा होता है उनको मालूम नहीं पड़ता, दूसरे तो समझते हैं पलाने को भी बच्चा पैदा हुआ। मिलकीयत का वास आया। वहां संशय नहीं होता। यहां माया संशय बुद्धि बना देती है। इसीलिए ब्रह्म माया को सम्भाल करनी है। सागर बिटो, लाला बिटो, घर को सम्भाल करना। कहां तुम थे। कहां तुम ऐसे बने हो। यह बातें ही दूसरे लोग नहीं जानते
f थे। साधु सन्त महात्मा सभी साधना करने वाले हैं इनका अर्थ कुछ भी नहीं जानते। यह मुफ्त में अपनी साधना खत्म कर देते हैं। जैसे मकर टिड्डी आये सब फसल को खा चले जाते हैं। यह साधु सन्त भी मच्छर हैं। जो खा पीकर खत्म कर देते हैं। बाबा निन्दा नहीं करते हैं, समझाते हैं। यह भी ड्रामा में नूंध पड़ी है। बाप समझाते हैं कि यह भक्ति मार्ग के अनेक गुरु हैं। कहते हैं चढ़ाई है जहां से भी जाओ रास्ता मिलेगा।
g मिल जायेगा। परन्तु यह कोई हिमालय पहाड़ चढ़ाई नहीं है। बाप कहते हैं आई एम युअर ओबीडियन्ट सर्वेन्ट। इनको बुलाते हो कि आकर पतित से पावन बनाओ। इनको सोनार गोबी आदमी कहते हैं। यह ज्ञान कुछ नहीं। जो यह साधु सन्त को कमाई है। यह तो बच्चों से 2। जन्मों लिए कमाई कराते हैं। यहां महात्मा ही बनाते हैं। तुम शिव बाबा लेलेते हो, देने की बात नहीं करनी चाहिए। अच्छा रूहानी बच्चों को यादप्यार गुडनाईट
पायन्टस :- तुम बच्चों ने यह नालेज कितनी बार ली होंगी? बाप कितना बार आया होंगे?

बाप कहते हैं अनेक बार सृष्टि को पलटाया है। याद को मुख्य है। दोनों इकट्ठे ह. बैठे हैं तब याद ठहरती। कायदे मुजीब जैसे तुम याद करते हो वैसे दावानही कर सकते। घड़ी2 खयालात आ जाती है। भूल भी हैं मैं लिए सहज है। परन्तु फिर भी भूल जाता हूं। मैं न मरूं तब ×× तो अभी हो कर्मातीत अवस्था जाये। शरीर छूट जाये। कारण है नाकोर्ड। कर्मभोग भी होताहता है। रोज इन्जेक्शन लगाता। कहते हैं कर्मातीत अवस्था पाना कोई मासी का घर थोड़ी ही है। जानते हैं हम दोनों ही साथ हैं तो कर्मातीत अवस्था अभी नहीं होसकती। याद की बात ही और है। भल मैं थोड़ी पर बैठा हूं तो भी तुमको मेहनत करनी है। तुम ने ही ऐसे कर्म किये हैं ना। फर्स्ट क्लास नम्बर सतोप्रधान तुम थे फिर तमोप्रधान भी तुम ही बनते हो तब से जाना। तो मेहनत करनी पड़े। नम्बरवन सो नम्बर लास्ट बना है। फिर मेहनत से नम्बर वनेंगे ना। कर्मातीत अवस्था को पाने मेहनत करनी पड़े। कर्मातीत अवस्था बिगर यह पर्दा खुल नहीं सकते हैं।
h शरीर छूटेगा तब जब बाप का रथ आकर लेंगे। अच्छा ओम्

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

27-10-02 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - तुम्हें इस रुद्र ज्ञान यज्ञ का बड़ा कदर होना चाहिए क्योंकि इस यज्ञ से ही भारत स्वर्ग बनता है, तुम इस यज्ञ के रक्षक हो"

प्रश्न:- बच्चे, बाप वा टीचर को तलाक अथवा फारकती कैसे और कब देते हैं?
उत्तर:- जब बाप अथवा टीचर को भूल जाते हैं, मुरली मिस करते हैं, पढ़ते वा सुनते नहीं हैं तो गोया बाप को फारकती वा तलाक दे देते हैं। बाबा कहते बच्चे तुम मुझे तलाक कभी नहीं देना।

प्रश्न:- तुम्हारा सत्य ज्ञान मनुष्यों को मुश्किल समझ में आता है, क्यों?
उत्तर:- क्योंकि यह ज्ञान परम्परा नहीं चलता है। अभी ही प्राय:लोप हो जाता है। इस ज्ञान का किसको पता ही नहीं है। यह नया ज्ञान है इसलिए उन्हें समझने में मुश्किल लगता है।

गीत:- पितु मात सहायक .....

ओम् शान्ति। जिसके साथ बच्चों का अभी योग है उनकी बाहर मनुष्य महिमा गाते रहते हैं। तुम उनकी याद में बैठे हो। अपने को आत्मा समझ देह का अभिमान छोड़ एक की ही याद में रहना है। अभी तुम आत्म-अभिमानी बने हो। पहले थे देह-अभिमानी। सतयुग में तुम बाप को नहीं जानते क्योंकि सुख में होते हो तो बाप याद नहीं रहता। यहाँ दु:खों में हो तब पुकारते हो। गायन भी है दु:ख हर्ता - सुखकर्ता। वास्तव में सच्चा-सच्चा हरिद्वार यह है। मनुष्य हरी कहते हैं कृष्ण को, बैकुण्ठ को कृष्ण का हरी द्वार कहते हैं। तुम जानते हो वास्तव में हरी कृष्ण को नहीं कहेंगे। दु:ख हरने वाले को हरी कहेंगे। तुम जानते हो शिवबाबा कृष्ण का द्वार अथवा बैकुण्ठ, सतयुग का द्वार खोलने आया है। कोई मकान बनाते हैं तो कोई ओपनिंग सेरीमनी करते हैं ना। तो बाबा आया है हरी द्वार की सेरीमनी करने। कृष्ण की राजधानी में कंस तो होता नहीं है। बाप द्वारा हम स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। बाप ही आकर स्वर्ग के स्थापना की सेरीमनी कर रहे हैं। स्थापना को सेरीमनी कहा जाता है। मकान का पहला फाउन्डेशन लगाया जाता है फिर मकान बनकर पूरा होता है फिर सेरीमनी की जाती है। तो बाप फाउन्डेशन लगाने आया है। 1937 में फाउन्डेशन लगाया, अब फिर तुम स्थापना कर रहे हो। तुमको खुशी है कि बाबा आया है नई दुनिया स्थापन करने और हम नई दुनिया में जा रहे हैं। इस पृथ्वी पर स्वर्ग था, अब फिर स्थापन कर रहे हैं। हर एक को पैगाम दे रहे हैं। धर्म स्थापक को पैगम्बर कहा जाता है ना। सच्चा-सच्चा पैगाम मैं ही देता हूँ। मैं ही राजयोग सिखला कर स्वर्ग की स्थापना करा रहा हूँ। बाप समझाते हैं कि मैं वेद-शास्त्रों से नहीं मिलता हूँ। यह सब भक्ति मार्ग के शास्त्र हैं। भक्तिमार्ग की बहुत सामग्री है। जन्म-जन्मान्तर से तुम भक्ति करते आये हो। अब ज्ञान सुनो फिर सतयुग में ज्ञान नहीं सुनेंगे। कहा जाता है ज्ञान अंजन सतगुरु दिया। सतयुग में अंधकार है नहीं जो भक्ति करें। अब ज्ञान जिन्दाबाद, भक्ति मुर्दाबाद होती है। बाप से ज्ञान लो फिर भक्ति नहीं रहेगी।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

तुम जानते हो रावण राज्य किसको कहा जाता है, रामराज्य किसको कहा जाता है। तुमको सारी रोशनी मिली है क्योंकि बाप जगाते हैं। अब देखो दीवाली आ रही है तो दीपक कोई छोटे, कोई बड़े बनाते हैं। अब यह छोटे बड़े दीपक जग रहे हैं, ज्ञान का घृत मिल रहा है। मनुष्य मरते हैं तो दीपक में घृत डालते रहते हैं कि प्राणी अन्धियारे में ठोकरे न खाये। वह हैं हद की बातें, तुम्हारी हैं बेहद की बातें। जब रावणराज्य शुरु होता है तो ठोकरें खाना शुरु होती हैं। अभी दिन प्रतिदिन अधिक ही ठोकरें खाते रहते हैं। पहले एक की भक्ति करते अब तो मनुष्यों की, टिवाटे की भक्ति करते हैं। भक्ति की बहुत सामग्री है, जितनी वृक्ष की सामग्री है। बीज से कितना बड़ा वृक्ष निकलता है, भक्ति भी इतनी है। ज्ञान है बीज, यह सृष्टि तो अनादि अविनाशी है। इनका कब विनाश नहीं होता। यह सृष्टि चक्र लगाती रहती है। बीज भी एक है तो झाड़ भी एक है। ऐसे नहीं आकाश में, पाताल में, सूर्य में, चांद में दुनिया है। यह तो साइंस वाले चन्द्रमा में जाकर रहने की कोशिश करते हैं। परन्तु यह नहीं जानते कि साइंस से सारी दुनिया का विनाश होना है और राज्य तुम ले लेंगे। तुम कहेंगे यह भी ड्रामा में नूंध है। दूसरे इन
b बातों को समझेंगे नहीं। राजाई तुमको मिलनी है क्योंकि कनेक्शन है कृष्णपुरी और क्रिश्चियनपुरी का। इन्होंने भारतवासियों को आपस में लड़ाकर कृष्णपुरी को क्रिश्चियनपुरी बनाया। अब बाप कहते हैं हिसाब लेना है। इनको आपस में लड़ाकर माखन तुमको देते हैं अथवा तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं। यह आपस में लड़ेंगे जरूर। वह समझते हैं हम पहलवान, वह कहते हैं हम पहलवान, हम जीतेंगे लेकिन सबसे पहलवान तो तुम निकल पड़े हो। जीत तुम्हारी होनी है। महावीर और महावीरनी कहा जाता है। बाप कहते हैं माया के तूफान तो आयेंगे परन्तु कर्म में नहीं आना। योगबल से स्थापना हो रही है और बाहुबल से विनाश हो रहा है। उठते-बैठते, चलते-फिरते बाप को याद करना है, इसको कहा जाता है योगबल। फिर ज्ञान बल कहा जाता है। ज्ञान बल क्यों कहा जाता है? क्योंकि शास्त्रों में बल नहीं है। उनसे कोई को मुक्ति-जीवनमुक्ति नहीं मिल सकती, इसलिए उनको ज्ञान नहीं कहा जाता। भक्ति के शास्त्र कहेंगे। ज्ञान का कोई शास्त्र होता नहीं। अब जो राम के पुस्तक बने हैं वा जो भी शास्त्र आदि हैं, सब लड़ाई में खत्म हो जायेंगे। झूठी गीता, सच्ची गीता सब खत्म हो जायेगी क्योंकि सद्गति मिल जाती है। सब कामनायें पूरी हो जाती हैं। कोई कामना रहेगी नहीं। अब तुम 84 के चक्र को जानते हो। तुम अभी बेअन्त नहीं कहेंगे। बेअन्त कहते हैं नास्तिक। कहते हैं गॉड फादर परन्तु नाम रूप देश काल कर्तव्य को नहीं जानते। तुम उनके नई दुनिया की स्थापना, पतितों को पावन करने के कर्तव्य को जान गये हो। मनुष्य तो रावण को जलाते हैं। तुमको तो अब हंसी आती है। जन्म-जन्मान्तर तुम भी रावण को जलाते थे। अभी तो रावणराज्य का विनाश होना है फिर आती है दीपावली। वहाँ घोर सोझरा है, उसको समसज्य कहते हैं। कहते तो सब हैं कि रामराज्य चाहिए। परन्तु रामराज्य को जानते नहीं। अभी तुमको ज्ञान मिल रहा है और रावणराज्य ट्रांसफर होना है रामराज्य में। उससे पहले तुम जायेंगे

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

रूद्रमाला में। और यह जो इस्लामी, बौद्धियों की आत्मायें हैं, वह आधाकल्प मुक्ति में रहेंगी। जब हमारी सतयुग की प्रालब्ध पूरी होगी तब भक्ति शुरू होगी। फिर द्वापर को रावणराज्य कहा जाता है क्योंकि अपने देवता धर्म को भूल गये हैं। यह होना है जरूर।

c मिसाल बड़ के झाड़ का देते हैं। बच्चे जानते हैं कि आदि सनातन देवी-देवता धर्म का फाउन्डेशन प्रायःलोप हो चुका है। सब धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट हो गये हैं। जब देवी देवता धर्म स्थापन हो तब यह सब धर्म विनाश हो जाएं। कहते भी हैं अनेक अधर्म विनाश, एक सत धर्म की स्थापना हो। यहाँ वर्सा पाने का तुम पुरूषार्थ कर रहे हो। जो धारणा करेंगे करायेंगे, वह ऊंच पद पायेंगे। बाप कहते हैं मुख्य बात जरूर धारण करो कि

d हमको निराकार बाप पढ़ाते हैं। कृष्ण नहीं पढ़ाते हैं। चित्र भी बनाया है — एक तरफ कृष्ण का चित्र, दूसरे तरफ शिव का। पूछना है अब बताओ गीता का भगवान कौन? जज करो तुमको समझाने में बहुत सहज होगा कि गीता का भगवान कृष्ण नहीं शिव है। तुमको मालूम है गीता का ज्ञान फिर से बाप दे रहे हैं। गीत में भी है गीता का ज्ञान फिर से सुनाना पड़े। गीत तो तुमने नहीं बनाये हैं। बनाने वाले तो मनुष्य ही हैं, परन्तु अर्थ को नहीं जानते। कहते हैं गीता के भगवान ने ज्ञान घोड़े गाड़ी में बैठकर दिया। कृष्ण के लिए कोई घोड़े गाड़ी थोड़ेही आयेगी। अगर कृष्ण होता तो उनके लिए अच्छे से अच्छी गाड़ी ले आयें। बड़े-बड़े धनवान आ जायें। यहाँ तो देखो अपनी मोटर (शरीर) भी नहीं है। आता ही हूँ पतित शरीर में। तो गुप्त है ना। कृष्ण की तो बात नहीं। फिर तुम भक्ति मार्ग

e में मेरा कितना मान रखते हो। सोमनाथ का मन्दिर बनाते हो। कोई एक मन्दिर थोड़ेही होगा, अनेक होंगे फिर उन्हें लूटा भी होगा। तो सारी बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी को तुम जान गये हो। बाप को कहते हैं नॉलेजफुल। तो यहाँ ज्ञान भी दिया जाता है। पढ़ाई भी पढ़ाई जाती है। ज्ञान है मनमनाभव, इससे सद्गति होती है। फिर मध्याजीभव की पढ़ाई पढ़ाते हैं। टीचर और गुरु का पार्ट इकट्ठा चलता है। सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी तुमको पढ़ाते हैं।

सच्ची-सच्ची नन्स तुम हो क्योंकि तुम एक को याद करती हो। नन्स को गले में क्रास पड़ा रहता है। क्राइस्ट को याद करती हैं, समझती हैं क्राइस्ट गॉड का बच्चा था। तुम जानते हो कि क्राइस्ट कोई गॉड का बच्चा नहीं था, क्राइस्ट की आत्मा गॉड का बच्चा थी। ऐसे तो हम सभी हैं। बाप आकर 3 धर्म स्थापन करते हैं। तुम ऊंचे ते ऊंची चोटी ब्राह्मण हो क्योंकि तुम ऊंच ते ऊंच विश्व की सेवा करते हो। मनुष्य को आत्मा का ज्ञान देते हो। तुम आत्मा को बाप से वर्सा मिलता है। बरोबर बाप कल्प-कल्प के संगमयुगे वर्सा देने आते हैं। शास्त्रों में तो युगे-युगे लिख दिया है। कल्प अक्षर बीच से निकाल

f दिया है। उनका नाम ही है पतित-पावन। तो युगे-युगे आकर क्या करेंगे। कल्प में एक बार आकर पावन बनाकर चले जाते हैं। तो बाप कहते हैं मुझे तलाक मत देना। आजकल स्त्रियाँ पति को तलाक दे देती हैं वैसे हिन्दू नारी पति को कभी तलाक नहीं देती थी। तुमको मुरली सुननी है जरूर। मुरली नहीं सुनते हो तो गोया बाप टीचर को भूल जाते

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

हो, यह भी जैसे तलाक हो गया। तुमको भी कितना अटेन्शन देना है। अब नापास होंगे तो कल्प-कल्पान्तर नापास होंगे। अन्त में सबको मालूम पड़ जायेगा कि किस-किस ने कितनी पढ़ाई पढ़ी थी। सब कहते हैं कि शान्ति चाहिए। गोया मुक्ति चाहते हैं। कहते हैं कि दुःख में सिमरण सब करें... तो आधाकल्प सुख और आधाकल्प दुःख है। सुख दुःख का खेल भारत पर ही है। तुम तो कहेंगे हम ही देवता, हम ही क्षत्रिय..... तो हम सो का अर्थ भी तो कोई नहीं जानते हैं। तो बाप कहते हैं मनमनाभव, मध्याजीभव। खुद धारण कर औरों को धारण करायें तो अहो सौभाग्य। याद से ही विकर्म विनाश होंगे। कहाँ गंगा में स्नान करना, कहाँ योग में रह पावन बनना।

बच्चों को यज्ञ के पैसे की बहुत कदर होनी चाहिए क्योंकि इससे भारत स्वर्ग बनता है। बाप है गरीब निवाजा गरीबों की पाई-पाई पड़ेगी तब वह साहूकार बनेंगे। स्वर्ग में हेल्थ, वेल्थ, हैपीनेस है। अगर हेल्थ वेल्थ है तो हैपीनेस भी है। अगर हेल्थ हो वेल्थ न हो तो हैपीनेस हो नहीं सकती। सतयुग में हेल्थ वेल्थ है तो सदैव हैपी रहते हैं। वहाँ कभी रोते नहीं हैं। तो तुमको भी यहाँ रोना नहीं है। परन्तु माया के तूफान मुरझा देते हैं। हेल्थ मिलती है हॉस्पिटल से और वेल्थ मिलती है पढ़ाई से। तो देखो मेरे बच्चे कितने गरीब हैं। तीन पैर पृथ्वी में हॉस्पिटल खोल देते हैं। जहाँ से ही सबको हेल्थ वेल्थ मिलती है। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- माया के तूफानों में कभी मुरझाना नहीं है। सदैव खुशी में रहना है।

२- हमको निराकार बाप पढ़ाते हैं, इस नशे में रहना है। इस झूठी दुनिया में कोई भी कामना नहीं रखनी है।

वरदान:- दाता बन अखुट खजानों का दान करने वाले महादानी सो विश्व सेवाधारी भव

सदा याद रखो कि बाप द्वारा जो भी अखुट खजाने मिले हैं, वह देने ही हैं। खजानों को कार्य में लगाओ। चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में सफल करते चलो, दाता के बच्चे एक दिन भी देने के बिना रह नहीं सकते। विश्व सेवाधारी को हर दिन सेवा करनी ही है। अगर वाचा का चांस नहीं मिलता तो मन्सा करो, मन्सा नहीं कर सकते तो अपने कर्म वा प्रैक्टिकल लाइफ द्वारा करो। जितना आप मन्सा से, वाणी से, स्वयं सैम्पल बनेंगे तो सैम्पल को देखकरके स्वतः सब आकर्षित होंगे।

स्लोगन:-

जिसके पास दृढ़ता की शक्ति है उसके लिए
असम्भव भी सम्भव हो जाता है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

30-6-01 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करने के लिए सदा इसी स्मृति में रहो कि हम किसके बच्चे हैं, अगर बाप को भूले तो सुख गुम हो जायेगा"

प्रश्नः- बाप के मिलने की स्थाई खुशी किन बच्चों को रहती है?

उत्तरः- जिन बच्चों ने एक से अपने सर्व सम्बन्ध जोड़े हैं, जो एक बाप की याद में रहने की ही मेहनत करते हैं, किसी देहधारी को याद नहीं करते उन्हें ही स्थाई खुशी रहती है। अगर देहधारी की याद है तो बहुत रोना पड़ेगा। विश्व का मालिक बनने वाले कभी रोते नहीं।

गीतः- *बचपन के दिन भुला न देना.....*

ओम् शान्ति। बाप कहते हैं मीठे बच्चों – हम बेहद के बाप के बच्चे हैं, यह भूलो मत। यह भूले तो अपने को रुला देंगे। छी-छी दुनिया में बुद्धि चली जायेगी। बाप की याद रहने से अतीन्द्रिय सुख भासता है। वह सुख, बाप को भूल जाने से गुम हो जायेगा। हरदम याद रहना चाहिये कि हम बाबा के बच्चे हैं। नहीं तो अपने को रुला देंगे। सब भगवान के बच्चे हैं, सब कहते हैं हे बाबा, हे परम पिता परमात्मा रक्षा करो। परन्तु बाप से रक्षा कब होती है – यह किसको भी पता नहीं है। साधू-सन्त आदि कोई भी नहीं जानते कि बाप से हमको मुक्ति-जीवनमुक्ति कब मिलनी है क्योंकि भगवान को ही कण-कण में कह दिया है। अब तुम बच्चे बेहद के बाप को जान गये हो। मोस्ट बिलवेड बाप है, उससे प्यारी वस्तु और कोई होती नहीं। ऐसे बाप को न जानना बड़ी भारी भूल है। शिव जयन्ती क्यों मनाते हैं, वह कौन है? यह भी कोई नहीं जानते। बाप कहते हैं तुम कितने बेसमझ बन गये हो। माया रावण ने तुमको क्या बना दिया है! अभी तुम बच्चे जानते हो यह हमारी जन्म भूमि है। मैं हर 5 हज़ार वर्ष के बाद आता हूँ। वह फिर कह देते 40 हज़ार वर्ष बाद जब यह कलियुग पूरा होगा तब आयेंगे। चित्र भी दिखाया जाता है त्रिमूर्ति का। त्रिमूर्ति मार्ग नाम भी रखा है परन्तु तीन मूर्ति ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को कोई नहीं जानते। ब्रह्मा क्या करके गया? विष्णु और शंकर क्या करते हैं, कहा रहते हैं, कुछ भी नहीं जानते। बिल्कुल ही घोर अन्धियारे में हैं। बाप है रचयिता। उनकी यह कितनी बड़ी रचना है। कितना बेहद का नाटक है। इसमें बेहद के मनुष्य रहते हैं। आज से 5 हज़ार वर्ष पहले जब सतयुग था, भारत में जब इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था तो और कोई राज्य नहीं था। भगवती श्री लक्ष्मी, भगवान श्री नारायण को कहा जाता है। राम-सीता को भी भगवान राम, भगवती सीता कहते हैं। अब यह भगवान नारायण, भगवती लक्ष्मी कहाँ से आये? राज्य करके गये हैं। परन्तु उनकी जीवन कहानी तो एक भी नहीं जानते। सिर्फ गाते रहते हैं हे भगवान दु:ख हर्ता सुख कर्ता। परन्तु यह किसकी बुद्धि में नहीं आता - वह दु:ख हर्ता, सुख कर्ता कैसे है। कौन-सा सुख सबको दिया? और कब सबका दु:ख हरा? कुछ भी नहीं जानते।

a

b

तुम बच्चे अभी यहाँ राजयोग सीख रहे हो – भगवती लक्ष्मी, भगवान नारायण बनने के लिए। जानते हैं भगवती सीता, भगवान राम भी बनने का है। 8 जन्म सतयुग में पूरे

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

करके फिर राम सीता के राज्य में आने वाले हैं। 21 जन्म के लिए बेहद की गजाई तुम यहाँ स्थापन कर रहे हो। तुम भगवती भगवान स्वर्ग के मालिक बन रहे हो। स्वर्ग कोई आसमान में नहीं है। यह भी किसको पता नहीं है। बिल्कुल ही तुच्छ बुद्धि हैं। कहते हैं फलाना स्वर्ग पधारा परन्तु समझते कुछ भी नहीं हैं। अच्छा क्या क्रिश्चियन बौद्धी सब हेविन में जायेंगे? वह बाद में आकर अपना धर्म स्थापन करते हैं। तो फिर वह स्वर्ग में कैसे आ सकते? स्वर्ग किसको कहा जाता, यह भी उनको पता नहीं है। सन्यासी लोग कहते ज्योति ज्योत समाया। कोई फिर कहते निर्वाणधाम गया। निर्वाण में भी तो लोक है ना। वह तो निवास स्थान है। ज्योति ज्योत में लीन होने की बात ही नहीं। ज्योति में मिल जाए तो फिर तो आत्मा ही खत्म हो जाए। खेल ही खत्म हो जाता है। इस ड्रामा से कोई भी आत्मा छूट नहीं सकती। कोई भी मोक्ष को पा नहीं सकते। गीत का अर्थ भी कोई समझते नहीं हैं। न जीवनमुक्ति का अर्थ समझते हैं, न आत्मा-परमात्मा का अर्थ समझते हैं। बाप कहते हैं– तुम्हारी शक्ल तो मनुष्य की है, जो इन देवताओं की भी थी। सतयुग आदि में देवतायें थे। उन्हों का 2500 वर्ष राज्य चला। बाकी 2500 वर्ष की बात है, जिसमें और सब धर्म आते हैं। 5 हज़ार वर्ष के बदले मनुष्य कह देते लाखों वर्ष कल्प वृक्ष की आयु है। परन्तु तुम्हारी बात समझने के लिए भी नहीं आयेंगे। हाँ, आयेंगे भी वही, जिन्होंने कल्प पहले आकर समझा होगा। पहले तो समझाना है – एक है हद का सन्यास, जो सन्यासी लोग घरबार छोड़ जाए जंगल में रहते हैं, पहले-पहले वह सतोप्रधान थे। फिर अब तमोप्रधान बने हैं तो जंगलों से लौटकर आए बड़े-बड़े महल बनाये हैं। इन सन्यासियों ने भी पवित्रता के आधार पर भारत को थमाया जरूर है। भारत की सेवा की है। यह सन्यास धर्म नहीं होता तो भारत एकदम विकारों में जल मरता, पतित बन जाता। यह भी ड्रामा बना हुआ है। उन्हों में पहले पवित्रता की ताकत थी, जिससे भारत को थमाया है। इन देवताओं का जब राज्य था तो भारत कितना साहूकार था। इन्हों के इतने बड़े-बड़े हीरे-जवाहरों के महल थे। वह सब कहाँ गये? सब नीचे चले गये। लंका और द्वारिका के लिए कहते हैं – समुद्र के नीचे चली गई। अभी तो है नहीं। सोने के महल आदि सब थे ना। जब मन्दिरों आदि में हीरे-जवाहरात लगा सकते हैं, तो वहाँ क्या नहीं होगा! कितनी तुम बच्चों को खुशी होनी चाहिए। बाबा फिर से आया हुआ है। कहते हैं बाप को याद करो। याद एक को ही करना है, जिससे विकर्म विनाश होते हैं। परन्तु वह भूल जाते हैं और देहधारी की याद आ जाती है। देहधारी की याद से तो कुछ भी फायदा नहीं। बाप कहते हैं– मामेकम् याद करो। किसी भी देहधारी को याद नहीं करो। अम्मा मरे तो भी हलुआ खाना.... एक बाप की याद से ही कमाई है। हम शिवबाबा के बच्चे हैं, उनसे वर्सा लेना है। इस समय बाप को याद नहीं किया तो फिर बहुत पछताना पड़ेगा, रोना पड़ेगा। विश्व के मालिक बनने वालों को रोने की क्या दरकार है। तुम बाप को भूलते हो तब ही माया थप्पड़ लगाती है। इसलिए बाबा बार-बार समझाते हैं कि बाप को और वर्से को याद करो। अमरनाथ ने अमरपुरी में एक पार्वती को तो बैठ अमरकथा नहीं सुनाई होगी। जरूर बहुत होंगे। जो भी मनुष्य मात्र हैं सबको बाप समझाते हैं कि अब पतित मत बनो, यह अन्तिम जन्म पवित्र बनो।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

वहाँ स्वर्ग में कोई विकार नहीं होते। अगर वहाँ भी विकार होता तो फिर स्वर्ग और नर्क में फर्क क्या हुआ? देवी-देवताओं की महिमा गाते हैं – सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण... हैं। भगवान आकर भगवान-भगवती ही बनायेंगे। सिवाए भगवान के कोई बना न सके। भगवान तो एक ही है। गाया भी जाता है– भगवान-भगवती की राजधानी। यथा राजा-रानी तथा प्रजा भी वही होगी। परन्तु भगवान-भगवती कहा नहीं जाता। इसलिए कहा जाता है आदि सनातन देवी-देवता धर्म। यह किसको पता नहीं है। इनकी (ब्रह्मा की) आत्मा को भी बाप समझाते हैं। एक बाप की, एक दादा की–दो आत्मायें हैं ना। एक 84 जन्म लेती है, दूसरी आत्मा पुनर्जन्म रहित है। बाप कभी पुनर्जन्म नहीं लेते हैं। एक ही बार आकर सारे विश्व को पवित्र बनाने के लिए हमको राजयोग सिखाते हैं। बाप तुमको समझाते हैं– मैंने इनमें प्रवेश किया है। यह 84 जन्म भोग आये हैं। अब इनके बहुत जन्मों का यह अन्तिम जन्म है। अब मैं निराकार हूँ तो कैसे आकर बच्चों को राजयोग सिखलाऊं? प्रेरणा से तो कुछ हो न सके। कृष्ण भगवानुवाच तो हो न सके। वह कैसे आ सकता है? वह तो है ही सतयुग का प्रिन्स, 16 कला सम्पूर्ण... फिर त्रेता में होते हैं 14 कला सम्पूर्ण, फिर द्वापर में कृष्ण को क्यों ले बैठे हैं? उनको तो पहले आना चाहिए। बाप समझाते हैं– पहले, बाप को याद करो। नहीं तो माया एकदम थप्पड मार देगी। छुईमुई का एक झाड़ होता है। हाथ लगाओ तो मुरझा जाये। तुम्हारा भी ऐसा ही हाल होता है, बाप को याद नहीं किया और खलास। गीत में भी सुना – बचपन के दिन भुला नहीं देना। बाप को भूले तो कहाँ न कहाँ चोट लग जयेगी। बाप कहते हैं– तुम हमारे बच्चे हो ना। यह शरीर तो विष से पैदा हुआ है। वह इनके लौकिक माँ-बाप हैं। यह तो है पारलौकिक बाप और इनको फिर अलौकिक बाप कहा जाता है। यह हद का था, फिर बेहद का बन गया। अभी देखो यह लौकिक बच्ची (निर्मलशान्ता) बैठी हैं। यह लौकिक भी है, अलौकिक भी है, पारलौकिक भी है। बाकी शिवबाबा के तो भाई-बहिन है नहीं। न लौकिक, न अलौकिक, न पारलौकिक। कितना फर्क है। एक बाप का बनना मासी का घर नहीं है। ऐसे बाप से सम्बन्ध जोड़ना है, टाइम लगता है। शिवबाबा का याद में रहना बड़ा मेहनत का काम है। घर में रहते हुए सारा दिन शिवबाबा को याद भी नहीं करते, ऐसे भी हैं। और सबका भूल एक को याद करना बहुत-बहुत मेहनत है। कोई 1 परसेन्ट याद करते हैं, कोई 2 परसेन्ट, कोई 1/2 परसेन्ट भी मुश्किल याद करते हैं। यह बड़ी भारी मंजिल है। तो बाप समझाते हैं–बचपन को नहीं भूलना। बाप से स्वर्ग का वर्सा मिलता है। तुम जानते हो हम जीते जी मरकर बाप के आकर बने हैं – नई दुनिया में जाने के लिए। तो तुम्हें स्थाई खुशी रहनी चाहिए, ओहो! हम डबल सिरताज बनेंगे! मनुष्य थोड़ेही जानते हैं कि सतयुग में इन देवताओं को 16 कला सम्पूर्ण और 14 कला सम्पूर्ण क्यों कहते हैं? कुछ भी नहीं जानते हैं। यह भक्ति मार्ग के शास्त्र आदि फिर भी बनेंगे। यह हठयोग, तीर्थ यात्रा आदि सब फिर भी होंगे। परन्तु इससे क्या होगा? क्या हेविन में जायेंगे? नहीं, बहुत रिद्धि-सिद्धि से काम करते हैं। रिद्धि-सिद्धि वाले बहुत हैं। हज़ारों मनुष्य उनके पिछाड़ी पड़ते रहते हैं। रिद्धि-सिद्धि से बहुत घड़ियाँ आदि चीजें निकालते हैं। यह थोड़ेही समझते कि यह अल्पकाल के लिए सब हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

इसमें बहुत मेहनत करनी पड़ती है। यह रिद्धि-सिद्धि आदि सीखने की भी किताब होती है। कितने लाखों मनुष्य उनके पिछाड़ी पड़ते हैं। तुम बच्चे जानते हो हमको बाबा से स्वर्ग का वर्सा मिलता है। इन आंखों से जो कुछ देखते हो वह नहीं रहेगा। बाप समझाते हैं—तुम अशरीरी आये थे फिर शरीर साथ पार्ट बजाया। अगर 84 लाख का हिसाब-किताब बतायें तो 12 मास लग जायें। हो ही नहीं सकता। 84 जन्मों का हिसाब-किताब बताना तो बिल्कुल सहज है। तुम 84 का चक्र लगाते रहते हो। सूर्यवंशी हैं तो चन्द्रवंशी नहीं। सूर्यवंशी घराना पूरा हुआ फिर चन्द्रवंशी.... बनें।

अभी तुम जानते हो हम हैं ब्राह्मण वंशी फिर देवता वंशी बनना है, इसलिए हम पढ़ाई पढ़ रहे हैं। फिर सीढ़ी नीचे उतरते-उतरते वैश्य, शूद्र वंशी बनेंगे। अभी अपने 84 जन्मों की स्मृति आई है। यह चक्र भी याद करना पड़े। बाप को याद करने से एवर हेल्दी, एवर वेल्दी बनेंगे। पाप कट जायेंगे। चक्र को जानने से चक्रवर्ती बन जायेंगे। तुम जानते हो यह पुरानी दुनिया कब्रिस्तान बननी है। कुछ भी नहीं रहेगा। खत्म हो जायेगा। राम गयो, रावण गयो.... राम का कितना छोटा परिवार होगा सतयुग में। अभी रावण का कितना बड़ा परिवार है। बच्चे जानते हैं कि यह राजधानी स्थापन हो रही है। हर बात में पुरुषार्थ फर्स्ट है। बाप पुरुषार्थ कराते हैं — बच्चे मुझे याद करो। जिस बाप से अथाह स्वर्ग की बादशाही मिलती है, क्या उनको याद नहीं करेंगे? बाप स्मृति दिलाते हैं कि तुम स्वर्ग के मालिक थे। अब फिर से पुरुषार्थ कर स्वर्ग के मालिक बनो। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. कमी भी किसी बात में छुई-मुई नहीं बनना है। ईश्वरीय बचपन को भूत मुरझाना नहीं है। इन आंखों से जो कुछ दिखाई देता है, उसे देखते भी नहीं देखना है।

२. एक बाप की याद में ही कमाई है इसलिए देहधारियों को याद कर रोना नहीं है। बाप और वर्से को याद कर विश्व की बादशाही लेनी है।

वरदान:- एक बाप के लव में लवलीन रह सदा [illegible] का अनुभव करने वाले सफलतामूर्त भव

सेवा में वा स्वयं की चढ़ती कला में सफलता का मुख्य आधार है — एक बाप से अटूट प्यार। बाप के सिवाए और कुछ दिखाई न दे। संकल्प में भी बाबा, बोल में भी बाबा, कर्म में भी बाप का साथ। ऐसी लवलीन आत्मा एक शब्द भी बोलती है तो उसके स्नेह के बोल दूसरी आत्मा को भी स्नेह में बांध देते हैं। ऐसी लवलीन आत्मा का एक बाबा शब्द ही जादू का काम करता है। वह रूहानी जादूगर बन जाती है।

स्लोगन:-

योगी तू आत्मा वह है जो अन्तर्मुखी बन लाइट माइट रूप में स्थित रहता है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

17-1-2000 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – ज्ञान की धारणा के साथ-साथ सतयुगी राजाई के लिए याद और पवित्रता का बल भी जमा करो"

प्रश्न :- अभी तुम बच्चों के पुरूषार्थ का क्या लक्ष्य होना चाहिए?
उत्तर:- सदा खुशी में रहना, बहुत-बहुत मीठा बनना, सबको प्रेम से चलाना.... यही तुम्हारे पुरूषार्थ का लक्ष्य हो। इसी से तुम सर्वगुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण बनेंगे।

प्रश्न :- जिनके कर्म श्रेष्ठ हैं, उनकी निशानी क्या होगी?
उत्तर:- उनके द्वारा किसी को भी दु:ख नहीं पहुँचेगा। जैसे बाप दु:ख हर्ता सुख कर्ता है, ऐसे श्रेष्ठ कर्म करने वाले भी दु:ख हर्ता सुख कर्ता होंगे।

गीत:- छोड़ भी दे आकाश सिंहासन. . . . . .

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों ने गीत सुना। यह मीठे-मीठे रूहानी बच्चे किसने कहा? दोनों बाप ने कहा। निराकार ने भी कहा तो साकार ने भी कहा। इसलिए इनको कहा जाता है बाप व दादा। दादा है साकारी। अभी यह गीत तो भक्तिमार्ग के हैं। बच्चे जानते हैं बाप आया हुआ है और बाप ने सारे सृष्टि चक्र का ज्ञान बुद्धि में बिठाया। तुम बच्चों की भी बुद्धि में है–कि हमने 84 जन्म पूरे किये, अब नाटक पूरा होता है। अब हमको पावन बनना है, योग वा याद से। याद और नॉलेज यह तो हर दास में चलता है। बैरिस्टर को जरूर याद करेंगे और उनसे नॉलेज लेंगे। इसको भी योग और नॉलेज का बल कहा जाता है। यहाँ तो यह है नई बात। इस योग और ज्ञान से बल मिलता है हद का। यहाँ इस योग और ज्ञान से बल मिलता है बेहद का क्योंकि सर्वशक्तिमान् अथॉरिटी हैं। बाप कहते हैं मैं ज्ञान का सागर भी हूँ। तुम बच्चे अब सृष्टि चक्र को जान गये हो। मूल-वतन, सूक्ष्मवतन... सब याद है। जो नॉलेज बाप में है, वह भी मिली है। तो नॉलेज को भी धारण करना है और राजाई के लिए बाप बच्चों को योग और पवित्रता भी सिखलाते हैं। तुम पवित्र भी बनते हो। बाप से राजाई भी लेते हो। बाप अपने से भी ज्यादा मर्तबा देते हैं। तुम 84 जन्म लेते-लेते मर्तबा गँवा देते हो। यह नॉलेज तुम बच्चों को अभी मिली है। ऊंच ते ऊंच बनने की नॉलेज ऊंच ते ऊंच बाप द्वारा मिलती है। बच्चे जानते हैं अभी हम जैसेकि बापदादा के घर में बैठे हैं। यह दादा - माँ भी है। वह बाप तो अलग है, बाकी दादा - माँ भी है। परन्तु यह मेल का चोला होने कारण फिर माता मुकरर की जाती है, इनको भी एडाप्ट किया जाता है। उनसे फिर रचना हुई है। रचना भी है एडाप्टेड। बाप बच्चों को एडाप्ट करते हैं, वर्सा देने के लिए। ब्रह्मा को भी एडाप्ट किया है। प्रवेश करना वा एडाप्ट करना बात एक ही है। बच्चे समझते हैं और समझाते भी हैं - नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार सबको यही समझाना है कि हम अपने परमपिता परमात्मा की श्रीमत पर इस भारत को फिर से श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बनाते हैं, तो खुद को भी बनना पड़े। अपने को देखना है कि हम श्रेष्ठ बने हैं? कोई भ्रष्टाचार का काम कर किसको दु:ख तो नहीं देते हैं? बाप कहते हैं मैं तो आया हूँ बच्चों को सुखी बनाने तो तुमको भी सबको सुख देना है। बाप कभी किसको दु:ख नहीं दे सकता। उनका नाम ही है दु:ख हर्ता सुख कर्ता। बच्चों को अपनी जांच करनी है–मन्सा, वाचा, कर्मणा हम किसको दु:ख

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

तो नही देते है? शिवबाबा कभी किसको दुःख नहीं देते। बाप कहते हैं मैं कल्प-कल्प तुम बच्चों को यह बेहद की कहानी सुनाता हूँ। अब तुम्हारी बुद्धि में है कि हम अपने घर जायेंगे फिर नई दुनिया में आयेंगे। अब की पढ़ाई अनुसार अन्त में तुम ट्रांसफर हो जायेंगे। वापिस घर जाकर फिर नम्बरवार पार्ट बजाने आयेंगे। यह राजधानी स्थापन हो रही है।

बच्चे जानते हैं अभी जो पुरूषार्थ करेंगे वही पुरूषार्थ तुम्हारा कल्प-कल्प का सिद्ध होगा। पहले-पहले तो सभी को बुद्धि में बिठाना चाहिए कि रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज को बाप के सिवाए कोई नहीं जानते हैं। ऊंच ते ऊंच बाप का नाम ही गुम कर दिया
c है। त्रिमूर्ति नाम तो है, त्रिमूर्ति रास्ता भी है, त्रिमूर्ति हाउस भी है। त्रिमूर्ति कहा जाता है ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को। इन तीनों का रचयिता जो शिवबाबा है उस मूल का नाम ही गुम कर दिया है। अभी तुम बच्चे जानते हो ऊंच ते ऊंच है शिवबाबा, फिर है त्रिमूर्ति। बापू से हम बच्चे यह वर्सा लेते है। बाप की नॉलेज और वर्सा यह दोनों स्मृति में रहें तो सदैव हर्षित रहेंगे। बाप की याद में रहें फिर तुम किसको भी ज्ञान का तीर लगायेंगे तो अच्छा असर होगा। उसमें शक्ति आती जायेगी। याद की यात्रा से ही शक्ति मिलती है। अभी शक्ति गुम हो गई है क्योंकि आत्मा पतित तमोप्रधान हो गई है। अब मूल फिकरात यह रखनी है कि हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनें। मन्मनाभव का अर्थ भी यह है। गीता जो पढ़ते हैं उनसे पूछना चाहिए - मन्मनाभव का अर्थ क्या है? यह किसने कहा मुझे याद करो तो वर्सा मिलेगा? नई दुनिया स्थापन करने वाला कोई कृष्ण तो नहीं है। वह प्रिन्स है। यह तो गाया हुआ है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। अब करनकरावनहार कौन? भूल गये हैं। उनके लिए सर्वव्यापी कह देते हैं। कह देते हैं ब्रह्मा, विष्णु, शंकर आदि सबमें वही है। इसको कहा जाता है अज्ञान। बाप कहते हैं तुमको 5 विकारों रूपी रावण ने कितना बेसमझ बनाया है। तुम जानते हो बरोबर हम भी पहले ऐसे थे। हाँ, पहले उत्तम से उत्तम भी हम ही थे फिर
d नीचे गिरते महान् पतित बनें। शास्त्रों में दिखाया है राम भगवान ने बन्दर सेना ली, यह भी ठीक है। तुम जानते हो हम बरोबर बन्दर मिसल थे। अभी महसूसता आती है यह है ही भ्रष्टाचारी दुनिया। एक-दो को गाली देते कांटा लगाते रहते हैं। यह है कांटों का जंगल। वह है फूलों का बगीचा। जंगल बहुत बड़ा होता है। गार्डन बहुत छोटा होता है। गार्डन बड़ा नहीं होता है। बच्चे समझते हैं बरोबर इस समय यह बड़ा भारी कांटों का जंगल है। सतयुग में फूलों का बगीचा कितना छोटा होगा। यह बातें तुम बच्चों में भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार समझते हैं। जिनमें ज्ञान और योग नहीं है, सर्विस में तत्पर नहीं हैं तो फिर अन्दर में इतनी खुशी भी नहीं रहती। दान करने से मनुष्य को खुशी होती है। समझते हैं इसने आगे जन्म में दान-पुण्य किया है तब अच्छा जन्म मिला है। कोई भक्त होते हैं, समझेंगे हम भक्त अच्छे भक्त के घर में जाकर जन्म लेंगे। अच्छे कर्मों का फल भी अच्छा मिलता है। बाप बैठ कर्म-अकर्म-विकर्म की गति बच्चों को समझाते हैं। दुनिया इन बातों को नहीं जानती। तुम जानते हो अभी रावण राज्य होने कारण मनुष्यों के कर्म सब विकर्म बन जाते हैं। पतित तो बनना ही है। 5 विकारों की सबमें प्रवेशता है। भल दान-पुण्य आदि करते हैं, अल्पकाल के लिए उसका फल मिल जाता है। फिर भी पाप तो करते ही हैं। रावण राज्य में जो भी लेन-देन होती है वह है ही पाप की। देवताओं के आगे कितना स्वच्छता से भोग लगाते हैं। स्वच्छ बनकर आते हैं परन्तु जानते कुछ भी नहीं। बेहद के बाप को भी कितनी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ग्लानि कर दी है। वह समझते हैं कि यह हम महिमा करते हैं कि ईश्वर सर्वव्यापी है, सर्वशक्तिमान है, परन्तु बाप कहते हैं यह इन्हों की उल्टी मत है।

e तुम पहले-पहले बाप की महिमा सुनाते हो कि ऊंच ते ऊंच भगवान एक है, हम उनको ही याद करते हैं। राजयोग की एम ऑब्जेक्ट भी सामने खड़ी है। यह राजयोग बाप ही सिखलाते है। कृष्ण को बाप नहीं कहेंगे, वह तो बच्चा है, शिव को बाबा कहेंगे। उनको अपनी देह नहीं। यह मैं लोन पर लेता हूँ इसलिए इनको बापदादा कहते हैं। वह है ऊंच ते ऊंच निराकार बाप। रचना को रचना से वर्सा मिल न सके। लौकिक सम्बन्ध में बच्चे को बाप से वर्सा मिलता है। बच्ची को तो मिल न सके।

f अब बाप ने समझाया है तुम आत्मायें हमारे बच्चे हो। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे-बच्चियाँ हो। ब्रह्मा से वर्सा नहीं मिलना है। बाप का बनने से ही वर्सा मिल सकता है। यह बाप तुम बच्चों

g को सम्मुख बैठ समझाते हैं। इनके कोई शास्त्र तो बन नहीं सकते। भल तुम लिखते हो, लिटरेचर छपाते हो फिर भी टीचर के सिवाए तो कोई समझा न सके। बिना टीचर किताब से कोई समझ न सके। अब तुम हो रूहानी टीचर्स। बाप है बीजरूप, उनके पास सारे झाड के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज है। टीचर के रूप में बैठ तुमको समझाते हैं। तुम बच्चों को तो सदैव खुशी रहनी चाहिए कि हमको सुप्रीम बाप ने अपना बच्चा बनाया है, वही हमको टीचर बनकर पढ़ाते हैं। सच्चा सतगुरु भी है, साथ में ले जाते हैं। सर्व का सद्गति दाता एक है। ऊंच ते ऊंच बाप

h ही है जो भारत को हर 5 हज़ार वर्ष बाद वर्सा देते हैं। उनकी शिव जयन्ती मनाते हैं। वास्तव में शिव के साथ त्रिमूर्ति भी होना चाहिए। तुम त्रिमूर्ति शिव जयन्ती मनाते हो। सिर्फ शिवजयन्ती मनाने से कोई बात सिद्ध नहीं होगी। बाप आते हैं और ब्रह्मा का जन्म होता है। बच्चे बने, ब्राह्मण बने और एम ऑब्जेक्ट सामने खड़ी है। बाप खुद आकर स्थापना करते हैं। एम आब्जेक्ट भी बिल्कुल क्लीयर है सिर्फ कृष्ण का नाम डालने से सारी गीता का महत्व चला गया है। यह भी ड्रामा में नूँध है। यह भूल फिर भी होने वाली ही है। खेल ही सारा ज्ञान और भक्ति का है। बाप कहते हैं लाडले बच्चे, सुखधाम, शान्तिधाम को याद करो। अलफ और बे, कितना सहज है। तुम किसी से भी पूछो मन्मनाभव का अर्थ क्या है? देखो क्या कहते हैं? बोलो भगवान किसको कहा जाए? ऊंच ते ऊंच भगवान है ना। उनको सर्वव्यापी थोड़ेही कहेंगे। वह तो सबका बाप है। अभी त्रिमूर्ति शिवजयन्ती आती है। तुमको त्रिमूर्ति शिव का चित्र निकालना चाहिए। ऊंच ते ऊंच है शिव, फिर सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर। ऊंच ते ऊंच है शिवबाबा। वह भारत को स्वर्ग बनाते हैं। उनकी जयन्ती तुम क्यों नहीं मनाते हो? जरूर भारत को वर्सा दिया था। उनका राज्य था। इसमें तो तुमको आर्य समाजी भी मदद देंगे क्योंकि वह भी शिव को मानते हैं। तुम अपना झण्डा चढ़ाओ। एक तरफ त्रिमूर्ति गोला, दूसरे तरफ झाड़। तुम्हारा झण्डा वास्तव में यह होना चाहिए। बन तो सकता है ना। झण्डा चढ़ा दो जो सब देखें। सारी समझानी इसमें है। कल्प वृक्ष और ड्रामा इनमें तो बिल्कुल क्लीयर है। सबको मालूम पड़ जायेगा कि हमारा धर्म फिर कब होगा। आपही अपना-अपना हिसाब निकालेंगे। सबको इस चक्र और झाड़ पर समझाना है। क्राइस्ट कब आया? इतना समय वह आत्मायें कहाँ रहती हैं? जरूर कहेंगे निराकारी दुनिया में है। हम आत्मायें रूप बदलकर यहाँ आकर साकार बनते हैं। बाप को भी कहते है ना—आप

i

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

भी रूप बदल साकार में आओ। आयेंगे तो यहाँ ना। सूक्ष्मवतन में तो नहीं आयेंगे। जैसे हम रूप बदलकर पार्ट बजाते हैं, आप भी आओ फिर से आकर राजयोग सिखलाओ। राजयोग है ही भारत को स्वर्ग बनाने का। यह तो बड़ी सहज बातें हैं। बच्चों को शौक चाहिए। धारणा कर औरों को करानी चाहिए। उसके लिए लिखापढ़ी करनी चाहिए। बाप भारत को आकर हेविन बनाते हैं। कहते भी हैं बरोबर क्राइस्ट से 3 हज़ार वर्ष पहले भारत पैराडाइज़ था इसलिए त्रिमूर्ति शिव का चित्र सबको भेज देना चाहिए। त्रिमूर्ति शिव की स्टैम्प बनानी चाहिए। इन स्टैम्प बनाने वालों की भी डिपार्टमेंट होगी। देहली में तो बहुत पढ़े लिखे हैं यह काम कर सकते हैं। तुम्हारी कैपीटल भी देहली होनी है। पहले देहली को परिस्तान कहते थे। अब तो कब्रिस्तान है। तो यह सब बातें बच्चों की बुद्धि में आनी चाहिए।

अभी तुम्हें सदा खुशी में रहना है, बहुत-बहुत मीठा बनना है। सबको प्रेम से चलाना है। सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण बनने का पुरूषार्थ करना है। तुम्हारे पुरुषार्थ का यही लक्ष्य है परन्तु अभी तक कोई बना नहीं है। अभी तुम्हारी चढ़ती कला होती जाती है। धीरे-धीरे चढ़ते हो ना। तो बाबा हर प्रकार से शिव जयन्ती पर सेवा करने का इशारा देते रहते हैं। जिससे मनुष्य समझेंगे कि बरोबर इन्हों की नॉलेज तो बड़ी है। मनुष्यों को समझाने में कितनी मेहनत लगती है। मेहनत बिगर राजधानी थोड़ेही स्थापन होगी। चढ़ते हैं, गिरते हैं फिर चढ़ते हैं। बच्चों को भी कोई न कोई तूफान आता है। मूल बात है ही याद की। याद से ही सतोप्रधान बनना है। नॉलेज तो सहज है। बच्चों को बहुत मीठे ते मीठा बनना है। एम आब्जेक्ट तो सामने खड़ी है। यह (लक्ष्मी-नारायण) कितने मीठे हैं। इन्हों को देख कितनी खुशी होती है। हम स्टूडेन्ट की यह एम ऑब्जेक्ट है। पढ़ाने वाला है भगवान। अच्छा!

मीठे-मीठे रूहानी बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. बाप द्वारा मिली हुई नॉलेज और वर्से को स्मृति में रख सदैव हर्षित रहना है। ज्ञान और योग है तो सर्विस में तत्पर रहना है।

२. सुखधाम और शान्तिधाम को याद करना है। इन देवताओं जैसा मीठा बनना है। अपार खुशी में रहना है। रूहानी टीचर बन ज्ञान का दान करना है।

वरदान:- संगमयुग पर प्रत्यक्षफल द्वारा शक्तिशाली बनने वाली सदा समर्थ आत्मा भव

संगमयुग पर जो आत्मायें बेहद सेवा के निमित्त बनती हैं - उन्हें निमित्त बनने का प्रत्यक्ष फल शक्ति की प्राप्ति होती है। यह प्रत्यक्षफल ही श्रेष्ठ युग का फल है। ऐसा फल खाने वाली शक्तिशाली आत्मा किसी भी परिस्थिति के ऊपर सहज ही विजय पा लेती है। वह समर्थ बाप के साथ होने के कारण व्यर्थ से सहज मुक्त हो जाती है। जहरीले सांप समान परिस्थिति पर भी उनकी विजय हो जाती है इसलिए यादगार में दिखाते हैं कि श्रीकृष्ण ने सर्प के सिर पर डांस किया।

स्लोगन:-

आप सम्पन्न बनो तो समय का पर्दा हट जायेगा।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

19-1-01 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – अपने स्वीट बाप को याद करो तो तुम सतोप्रधान देवता बन जायेंगे, सारा मदार याद की यात्रा पर है"

प्रश्न:- जैसे बाप की कशिश बच्चों को होती है वैसे किन बच्चों की कशिश सबको होगी?
उत्तर:- जो फूल बने हैं। जैसे छोटे बच्चे फूल होते हैं, उन्हें विकारों का पता भी नहीं तो वह सबको कशिश करते हैं ना। ऐसे तुम बच्चे भी जब फूल अर्थात् पवित्र बन जायेंगे तो सबको कशिश होगी। तुम्हारे में विकारों का कोई भी कांटा नहीं होना चाहिए।

ओम् शान्ति। रूहानी बच्चे जानते हैं कि यह पुरूषोत्तम संगमयुग है। अपना भविष्य का पुरूषोत्तम मुख देखते हो? पुरूषोत्तम चोला देखते हो? फील करते हो कि हम फिर नई दुनिया सतयुग में इनकी (लक्ष्मी-नारायण की) वंशावली में जायेंगे अर्थात् सुखधाम में जायेंगे अथवा पुरूषोत्तम बनेंगे। बैठे-बैठे यह विचार आते हैं! स्टूडेन्ट जो पढ़ते हैं तो जो दर्जा पढ़ते हैं, वह जरूर बुद्धि में होगा ना–मैं बैरिस्टर या फलाना बनूँगा। वैसे तुम भी
a जब यहाँ बैठते हो तो यह जानते हो हम विष्णु डिनायस्टी में जायेंगे। विष्णु के दो रूप हैं–लक्ष्मी-नारायण, देवी-देवता। तुम्हारी बुद्धि अभी अलौकिक है। और कोई मनुष्य की बुद्धि
b में यह बातें रमण नहीं करती होंगी। तुम बच्चों की बुद्धि में यह सब बातें हैं। यह कोई कॉमन सतसंग नहीं है। यहाँ बैठे हो समझते हो सत बाबा जिसको शिव कहा जाता है, उनके संग में बैठे हैं। शिवबाबा ही रचता है, वही रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते
c हैं और वह नॉलेज देते हैं। जैसेकि कल की बात सुनाते हैं। यहाँ बैठे हो तो यह तो याद होगा ना कि हम आये हैं–रिज्युवनेट होने अर्थात् यह शरीर बदल देवता शरीर लेने। आत्मा कहती है हमारा यह तमोप्रधान पुराना शरीर है उनको बदलकर ऐसा लक्ष्मी-नारायण बनने का है। एम ऑब्जेक्ट कितनी श्रेष्ठ है। पढ़ाने वाला टीचर जरूर पढ़ने वाले स्टूडेन्ट से होशियार होगा ना। पढ़ाते हैं, अच्छे कर्म सिखलाते हैं तो जरूर ऊंच होगा ना। तुम जानते हो हमको सबसे ऊंच ते ऊंच भगवान पढ़ाते हैं। भविष्य में हम सो देवता बनेंगे। हम जो पढ़ते हैं सो भविष्य नई दुनिया के लिए। और कोई को नई दुनिया का पता भी नहीं है। तुम्हारी बुद्धि में अब आता है यह लक्ष्मी-नारायण नई दुनिया के मालिक थे। तो जरूर फिर रिपीट होगा। तो बाप समझाते हैं तुमको पढ़ाकर मनुष्य से देवता बनाता हूँ। देवताओं में भी जरूर नम्बरवार होंगे। दैवी राजधानी होती है ना। तुम्हारा सारा दिन यही ख्यालात चलता होगा कि हम आत्मा हैं। हमारी आत्मा जो बहुत पतित थी, सो अब पावन बनने के लिए पावन बाप को याद करती है। याद का अर्थ भी समझना है। आत्मा याद करती है अपने स्वीट बाप को। बाप खुद कहते हैं–बच्चे, मुझे याद करने से तुम सतोप्रधान देवता बन जायेंगे। सारा मदार याद की यात्रा पर है। बाप जरूर पूछेंगे ना–बच्चे कितना समय याद करते हो? याद करने में ही माया की लड़ाई होती है। तुम खुद समझते हो यह यात्रा नहीं परन्तु जैसेकि लड़ाई है, इसमें विघ्न बहुत पड़ते हैं। याद की यात्रा में रहने में ही माया विघ्न डालती है अर्थात् याद भुला देती है। कहते भी हैं बाबा हमको आपकी याद में रहने में माया के तूफान बहुत लगते हैं। नम्बरवन तूफान है देह-अभिमान का। फिर है काम, क्रोध, लोभ, मोह.....। बच्चे कहते हैं बाबा हम बहुत कोशिश करते

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

हैं याद में रहने में कोई विघ्न न आये परन्तु फिर भी तूफान लगते हैं। आज क्रोध का तूफान, आज लोभ का तूफान आया। आज हमारी अवस्था अच्छी रही, कोई भी तूफान नहीं आया। याद की यात्रा में सारा दिन रहे, बड़ी खुशी थी। बाबा को बहुत याद किया। याद में प्रेम के आंसू बहते रहते हैं। बाप की याद में रहने से तुम मीठे बन जायेंगे।

तुम बच्चे यह भी समझते हो कि हम माया से हार खाते-खाते कहाँ तक आकर पहुँचे हैं। बच्चे हिसाब निकालते हैं। कल्प में कितने मास, कितने दिन.. हैं। बुद्धि में आता है ना। अगर कोई कहे लाखों वर्ष आयु है तो फिर कोई हिसाब थोड़ेही कर सके। बाप समझाते हैं--यह सृष्टि का चक्र फिरता रहता है। इस सारे चक्र में हम कितने जन्म लेते हैं। कैसे डिनायस्टी में जाते हैं। यह तो जानते हो ना। यह बिल्कुल नई बातें, नई नॉलेज है नई दुनिया के लिए। नई दुनिया स्वर्ग को कहा जाता है। तुम कहेंगे हम अभी मनुष्य हैं, देवता बन रहे हैं। देवता पद है ऊंचा। तुम बच्चे जानते हो हम सबसे न्यारी नॉलेज ले रहे हैं। (हमको पढ़ाने वाला बिल्कुल न्यारा विचित्र है। उनको यह साकार चित्र नहीं है। वह है ही निराकार। तो ड्रामा में देखो कैसा अच्छा पार्ट रखा हुआ है। बाप पढ़ाये कैसे? तो खुद बतलाते हैं--मैं फलाने तन में आता हूँ। किस तन में आता हूँ, वह भी बताते हैं। मनुष्य मूँझते हैं--क्या एक ही तन में आयेगा! परन्तु यह तो ड्रामा है ना। इसमें चेंज हो नहीं सकती। यह बातें तुम ही सुनते हो और धारण करते हो और सुनाते हो--कैसे हमको शिवबाबा पढ़ाते हैं?) हम फिर और आत्माओं को पढ़ाते हैं। पढ़ती आत्मा है। आत्मा ही सीखती, सिखलाती है। आत्मा मोस्ट वैल्युबुल है। आत्मा अविनाशी, अमर है। सिर्फ शरीर खत्म होता है। हम आत्मायें अपने परमपिता परमात्मा से नॉलेज ले रही हैं। (रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त, 84 जन्मों की नॉलेज ले रहे हैं। नॉलेज कौन लेते हैं? आत्मा। आत्मा अविनाशी है। मोह भी रखना चाहिए अविनाशी चीज में, न कि विनाशी चीज़ में। इतना समय तुम विनाशी शरीर में मोह रखते आये हो। अभी समझते हो--हम आत्मा हैं, शरीर का भान छोड़ना है।) कोई-कोई बच्चे लिखते भी है मुझ आत्मा ने यह काम किया। मुझ आत्मा ने आज यह भाषण किया। मुझ आत्मा ने आज बहुत बाबा को याद किया। वह है सुप्रीम आत्मा, नॉलेजफुल। तुम बच्चों को कितनी नॉलेज देते है। मूलवतन, सूक्ष्मवतन को तुम जानते हो। मनुष्यों की बुद्धि में तो कुछ भी नहीं है। तुम्हारी बुद्धि में है रचता कौन है? इस मनुष्य सृष्टि का क्रियेटर गाया जाता है, तो जरूर कर्तव्य में आते हैं।

तुम जानते हो और कोई मनुष्य नहीं जिसको आत्मा और परमात्मा बाप याद हो। बाप ही नॉलेज देते हैं कि अपने को आत्मा समझो। तुम अपने को शरीर समझ उल्टे लटक पड़े हो। आत्मा सत् चित आनन्द स्वरूप है। आत्मा की सबसे जास्ती महिमा है। एक बाप के आत्मा की कितनी महिमा है। वही दुःख हर्ता सुख कर्ता है। मच्छर आदि की तो महिमा नहीं करेंगे कि वह दुःख हर्ता सुख कर्ता है, ज्ञान का सागर है। नहीं, यह बाप की महिमा है। तुम भी हर एक खुद दुःख हर्ता सुख कर्ता हो क्योंकि उस बाप के बच्चे हो ना, जो सबका दुःख हरकर और सुख देते हैं। सो भी आधाकल्प के लिए। यह नॉलेज और कोई में है नहीं। नॉलेजफुल एक ही बाप है। हमारे में नो नॉलेज। एक बाप को ही नहीं जानते हैं तो बाकी फिर क्या नॉलेज होगी। अभी तुम फील करते हो

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

हम पहले नॉलेज लेते थे, कुछ भी नहीं जानते थे। बेबी में (छोटे बच्चे में) नॉलेज नहीं होती है और कोई अवगुण भी नहीं होता है, इसलिए उनको महात्मा कहा जाता है क्योंकि पवित्र है। जितना छोटा बच्चा उतना नम्बरवन फूल। बिल्कुल ही जैसे कर्मातीत अवस्था है। कर्म विकर्म को कुछ नहीं जानते। सिर्फ अपने को ही जानते हैं। वह फूल हैं इसलिए सबको कशिश करते हैं। जैसे अब बाबा कशिश करते हैं। (बाप आये ही हैं तुम सबको फूल बनाने। तुम्हारे में कई बहुत खराब कांटे भी हैं।) 5 विकार रूपी कांटे हैं ना। इस समय तुमको फूलों और कांटों का ज्ञान है। कांटों का जंगल भी होता है। बबूल का कांटा सबसे बड़ा होता है। उन कांटों से भी बहुत चीजें बनती हैं। भेंट की जाती है मनुष्यों की। बाप समझाते हैं, इस समय बहुत दु:ख देने वाले मनुष्य कांटे हैं इसलिए इनको दु:ख की दुनिया कहा जाता है। कहते भी हैं बाप सुखदाता है। माया रावण दु:ख दाता है। फिर सतयुग में माया नहीं होगी तो यह कुछ भी बातें नहीं होंगी। ड्रामा में एक पार्ट दो वारी नहीं हो सकता। बुद्धि में है सारी दुनिया में जो पार्ट बजता है, वह सब नया। तुम विचार करो—सतयुग से लेकर यहाँ तक के दिन ही बदल जाते, एक्टिविटी बदल जाती। 5 हज़ार वर्ष की पूरी एक्टिविटी का रिकार्ड आत्मा में भरा हुआ है, वह बदल नहीं सकता। हर आत्मा में अपना पार्ट भरा हुआ है। यह एक बात भी कोई समझ नहीं सकते। अभी आदि-मध्य-अन्त को तुम जानते हो। यह स्कूल है ना। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानना है और फिर बाप को याद कर पवित्र बनने की पढ़ाई है। इनके पहले जानते थे क्या—हमको यह बनना है। बाप कितना क्लीयर कर समझाते हैं। तुम पहले नम्बर में यह थे फिर तुम नीचे उतरते-उतरते अब क्या बन गये हो। दुनिया को तो देखो क्या बन गई है! कितने ढेर मनुष्य हैं। इन लक्ष्मी-नारायण की राजधानी का विचार करो - क्या होगा! यह जहाँ रहते होंगे कैसे हीरे-जवाहरातों के महल होंगे। बुद्धि में आता है—अभी हम स्वर्गवासी बन रहे हैं। वहाँ हम अपने मकान आदि बनायेंगे। ऐसे नहीं कि नीचे से द्वारिका निकल आयेगी। जैसे शास्त्रों में दिखाया है। शास्त्र नाम ही चला आता है, और तो कोई नाम रख नहीं सकते। और किताब होते हैं पढ़ाई के। दूसरे नाविल्स होते हैं। बाकी इनको पुस्तक अथवा शास्त्र कहते हैं। वह है पढ़ाई के किताब। शास्त्र पढ़ने वालों को भक्त कहा जाता है। भक्ति और ज्ञान दो चीजें हैं। अब वैराग्य किसका? भक्ति का या ज्ञान का? जरूर कहेंगे भक्ति का। अब तुमको ज्ञान मिल रहा है, जिससे तुम इतना ऊंच बनते हो। अब बाप तुमको सुखदाई बनाते हैं। सुखधाम को ही स्वर्ग कहा जाता है। सुखधाम में तुम चलने वाले हो तो तुमको ही पढ़ाते हैं। यह ज्ञान भी तुम्हारी आत्मा लेती है। आत्मा का कोई धर्म नहीं है। वह तो आत्मा है। फिर आत्मा जब शरीर में आती है तो शरीर के धर्म अलग होते हैं। आत्मा का धर्म क्या है? एक तो आत्मा बिन्दु मिसल है और शान्त स्वरूप है। शान्तिधाम, मुक्तिधाम में रहती है। (अब बाप समझाते हैं—सब बच्चों का हक है। बहुत बच्चे हैं जो और और धर्मों में कनवर्ट हो गये हैं। वह फिर निकलकर अपने असली धर्म में आ जायेंगे। जो देवी-देवता धर्म छोड़ दूसरे धर्म में गये हैं, वह सब पत्ते लौटकर आ जायेंगे, अपनी जगह पर। जो हिन्दू से मुसलमान बनते हैं उनको शेख कहते हैं। जैसे शेख मुहम्मद।) इन सब बातों को और कोई समझ नहीं सकेंगे। पहले-पहले तो बाप का परिचय देना है। इनमें ही सब मूँझ पड़े हैं। तुम बच्चे जानते हो

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अभी हमको कौन पढ़ाते हैं? बाप पढ़ाते हैं। कृष्ण तो देहधारी है। इनको (ब्रह्मा को) दादा कहेंगे। सब भाई-भाई हैं ना। फिर है मर्तबे के ऊपर। यह भाई का शरीर है, यह बहन का शरीर है। यह भी अब तुम जानते हो। आत्मा तो एक छोटा सा सितारा है। इतनी सब नॉलेज छोटे सितारे में है। सितारा शरीर के सिवाए बात भी नहीं कर सकता। (सितारे को पार्ट बजाने के लिए अंग भी चाहिए।) सितारों की दुनिया ही अलग है। फिर यहाँ आकर आत्मा शरीर धारण करती है। वह है आत्माओं का घर। आत्मा छोटी बिन्दी है। शरीर बड़ी चीज है। तो उनको कितना याद करते हैं! अभी तुमको याद करना है—एक परमपिता परमात्मा को। यही सत्य है जबकि आत्माओं और परमात्मा का मेला होता है। गायन भी है आत्मायें परमात्मा अलग रहे बहुकाल.. हम बाबा से अलग हुए हैं ना। याद आता है कितना समय अलग हुए हैं! बाप जो कल्प-कल्प सुनाते आये हैं, वही आकर सुनाते हैं। इसमें ज़रा भी फर्क नहीं हो सकता। सेकण्ड बाई सेकण्ड जो एक्ट चलती है वह नई। एक सेकण्ड पास होता है, मिनट पास होता है, उनको जैसे छोड़ते जाते हैं। पास होता जाता है ताकि कहेंगे—इतने वर्ष, इतने दिन, मिनट, इतने सेकण्ड पास कर आये हैं। (पूरा 5 हज़ार वर्ष होगा फिर एक नम्बर से शुरू होगा।) एक्यूरेट हिसाब है ना। मिनट सेकण्ड सब नोट करते हैं। अभी तुमसे कोई पूछे—इसने कब जन्म लिया था? तुम गिनती कर बताते हो। (कृष्ण ने पहले नम्बर में जन्म लिया है। शिव का तो मिनट, सेकण्ड कुछ भी नहीं निकाल सकते हो। कृष्ण की तिथि-तारीख पूरा लिखा हुआ है। मनुष्यों की घड़ी में फर्क पड़ सकता है—मिनट सेकण्ड का। शिवबाबा के अवतरण में तो बिल्कुल फर्क नहीं पड़ सकता। पता भी नहीं पड़ता है कि कब आया! ऐसे भी नहीं साक्षात्कार हुआ तब आया। नहीं, अन्दाज से कह देते हैं। बाकी ऐसे नहीं उस समय प्रवेश हुआ। साक्षात्कार हुआ कि हम फलाना बनेंगे। अच्छा!)

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. सुखधाम में चलने के लिए सुखदाई बनना है। सबके दुःख हरकर सुख देना है। कभी भी दुःखदाई कांटा नहीं बनना है।

२. इस विनाशी शरीर में आत्मा ही मोस्ट वैल्युबुल है, वही अमर अविनाशी है। इसलिए अविनाशी चीज से प्यार रखना है। देह का भान मिटा देना है।

वरदान:- ड्रामा की ढाल को सामने रख खुशी की खुराक खाने वाले सदा शक्तिशाली भव

खुशी रूपी भोजन आत्मा को शक्तिशाली बना देता है, कहते भी हैं - खुशी जैसी खुराक नहीं। इसके लिए ड्रामा की ढाल को अच्छी तरह से कार्य में लगाओ। यदि सदा ड्रामा की स्मृति रहे तो कभी भी मुरझा नहीं सकते, खुशी गायब हो नहीं सकती क्योंकि यह ड्रामा कल्याणकारी है इसलिए अकल्याणकारी दृश्य में भी कल्याण समाया हुआ है, ऐसा समझ सदा खुश रहेंगे।

स्लोगन:-

परचिंतन और प्रदर्शन की धूल से दूर रहने वाले ही सच्चे अमूल्य हीरे हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

15-10-95 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – आत्म अभिमानी होकर बैठो, अन्दर घोटते रहो – मैं आत्मा हूँ.... देही अभिमानी बनो, सच्चा चार्ट रखो तो समझदार बनते जायेंगे, बहुत फायदा होगा"

प्रश्नः- बेहद के नाटक को समझने वाले बच्चे किस एक लॉ (नियम) को अच्छी रीति समझते हैं?

उत्तरः- यह अविनाशी नाटक हैं, इसमें हर एक पार्टधारी को पार्ट बजाने अपने समय पर आना ही है। कोई कहे हम सदा शान्तिधाम में ही बैठ जाएं – तो यह लॉ नहीं है। उसे तो पार्टधारी ही नहीं कहेंगे। यह बेहद की बातें बेहद का बाप ही तुम्हें सुनाते हैं।

ओम् शान्ति। अपने की आत्मा समझकर बैठो। देह अभिमान छोड़कर बैठो। बेहद का बाप बच्चों को समझा रहे हैं। समझाया उनको जाता है जो बेसमझ होते हैं। आत्मा समझती है कि बाप सच कहते हैं – हम आत्मा बेसमझ बन गई हैं। मैं आत्मा अविनाशी हूँ, शरीर विनाशी है। मैं आत्म अभिमान छोड़ देह अभिमान में फँस पड़ा हूँ। तो बेसमझ ठहरे ना। बाप कहते हैं सब बच्चे बेसमझ हो पड़े हैं, देह अभिमान में आकर। फिर तुम बाप द्वारा देही अभिमानी बनते हो। तो बिल्कुल समझदार बन जाते हो। कोई तो बन गये हैं, कोई पुरूषार्थ करते रहते हैं। आधाकल्प लगा है बेसमझ बनने में। इस अन्तिम जन्म में फिर समझदार बनना है। आधाकल्प से बेसमझ होते-होते 100 प्रतिशत बेसमझ बन जाते हैं। देह अभिमान में आकर ड्रामा प्लैन अनुसार तुम गिरते आये हो। अभी तुमको समझ मिली है फिर भी पुरूषार्थ बहुत करना है। क्योंकि बच्चों में दैवीगुण भी चाहिए। बच्चे जानते हैं हम सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण..... थे। फिर इस समय निर्गुण बन पड़े हैं। कोई भी गुण नहीं रहा है। तुम बच्चों में भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार इस खेल को समझते हैं। समझते-समझते भी कितने वर्ष हो गये हैं। फिर भी जो नये हैं वह अच्छे समझदार बनते जाते हैं। औरों को भी बनाने का पुरूषार्थ करते हैं। कोई ने तो बिल्कुल नहीं समझा है। बेसमझ के बेसमझ ही हैं। बाप आये ही हैं समझदार बनाने। बच्चे समझते हैं माया के कारण हम बेसमझ बने हैं। हम पूज्य थे – तो समझदार थे फिर हम ही पुजारी बन बेसमझ बने हैं। आदि सनातन देवी-देवता धर्म प्रायः लोप हो गया है। इनका दुनिया में किसको पता नहीं है। यह लक्ष्मी-नारायण कितने समझदार थे, राज्य करते थे। बाप कहते हैं तत् त्वम्। तुम भी अपने लिए ऐसे समझो। यह बहुत-बहुत समझने की बातें हैं। सिवाए बाप के कोई समझा न सके। अभी महसूस होता है – बाप ही ऊंच ते ऊंच समझदार ते समझदार होगा ना। एक तो ज्ञान का सागर भी है। सर्व का सद्गति दाता भी है। पतित पावन भी है। एक की ही महिमा है। इतना ऊंच ते ऊंच बाप आकरके बच्चे-बच्चे कह कैसे अच्छी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

रीति समझाते हैं। बच्चे अब पावन बनना है। उसके लिए बाप एक ही दवाई देते हैं। कहते हैं — योग से तुम भविष्य 21 जन्म निरोगी बन जायेंगे। तुम्हारे सब रोग, दु:ख खत्म हो जायेंगे। तुम मुक्तिधाम में चले जायेंगे। अविनाशी सर्जन के पास एक ही दवाई है। एक ही इन्जेक्शन आत्मा को आए लगाते हैं। ऐसे नहीं कोई मनुष्य बैरिस्टरी भी करेंगे, इन्जीनियरी भी करेंगे। नहीं। हर एक आदमी अपने धन्धे से ही लग जाते हैं। बाप को कहते हैं आकर पतित से पावन बनाओ। क्योंकि पतितपने में दु:ख है। शान्तिधाम को पावन दुनिया नहीं कहेंगे। स्वर्ग को ही पावन दुनिया कहेंगे। यह भी समझाया है मनुष्य शान्ति और सुख चाहते हैं। सच्ची-सच्ची शान्ति तो वहाँ है जहाँ शरीर नहीं, उसको कहा जाता है शान्तिधाम। बहुत कहते हैं शान्तिधाम में रहें, परन्तु लॉ नहीं है। वह तो पार्टधारी हुआ नहीं। बच्चे नाटक को भी समझ गये हैं। जब एक्टर्स का पार्ट होगा तब बाहर स्टेज पर आकर पार्ट बजायेंगे। यह बेहद की बातें बेहद का बाप ही समझाते हैं। ज्ञान सागर भी उनको कहा जाता है। सर्व के सद्गति दाता पतित पावन हैं। सर्व को पावन बनाने वाले तत्व नहीं हो सकते। पानी आदि सब तत्व हैं, वह कैसे सद्गति करेंगे। आत्मा ही पार्ट बजाती है। हठयोग का भी पार्ट आत्मा बजाती है। यह बातें भी जो समझदार हैं वही समझ सकते हैं। बाप ने कितना समझाया है — कोई ऐसी युक्ति रचो जो मनुष्य समझें — कैसे पूज्य से फिर पुजारी बनते हैं। पूज्य हैं नई दुनिया में, पुजारी हैं पुरानी दुनिया में। पावन को पूज्य, पतित को पुजारी कहा जाता है। यहाँ तो सब पतित हैं क्योंकि विकार से पैदा होते हैं। वहाँ है श्रेष्ठ। गाते भी हैं सम्पूर्ण श्रेष्ठाचारी। अभी तुम बच्चों को ऐसा बनना है। मेहनत है। मुख्य बात है याद की। सभी कहते हैं याद में रहना बड़ा मुश्किल है। हम जितना चाहते हैं, याद में रह नहीं सकते हैं। कोई सच्चाई से अगर चार्ट लिखें तो बहुत फायदा हो सकता है। बाप बच्चों को यह ज्ञान देते हैं कि मनमनाभव। तुम अर्थ सहित कहते हो, तुम्हें बाप हर बात यथार्थ रीति अर्थ सहित समझाते हैं। बाप से बच्चे कई प्रकार के प्रश्न पूछते हैं, बाप करके दिल लेने लिए कुछ कह देते हैं। परन्तु बाप कहते हैं मेरा काम ही है पतित से पावन बनाना। मुझे तो बुलाते ही इसलिए हो। तुम जानते हो हम आत्मा शरीर सहित पावन थी। अभी वही आत्मा शरीर सहित पतित बनी है। 84 जन्मों का हिसाब है ना।

तुम जानते हो — अभी यह दुनिया कांटों का जंगल बन गई है। यह लक्ष्मी-नारायण तो फूल हैं ना। उन्हों के आगे कांटे जाकर कहते हैं आप सर्वगुण सम्पन्न..... हम पापी कपटी हैं। सबसे बड़ा कांटा है — काम विकार का। बाप कहते हैं इस पर जीत पहन जगतजीत बनो। मनुष्य कहते हैं भगवान को कोई न कोई रूप में आना है, भागीरथ पर विराजमान हो आना है। भगवान को आना ही है पुरानी दुनिया को नया बनाने। नई दुनिया को सतोप्रधान, पुरानी को तमोप्रधान कहा जाता है। जबकि अभी पुरानी दुनिया है तो जरूर बाप को आना ही पड़े। बाप को ही रचयिता कहा जाता है। तुम बच्चों को कितना सहज समझाते हैं। कितनी खुशी होनी चाहिए। बाकी किसका

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कर्मभोग का हिसाब-किताब है, कुछ भी है, वह तो भोगना है। इसमें बाबा आशीर्वाद नहीं करते हैं। हमको बुलाते ही हो – बाबा आकर हमको वर्सा दो। बाबा से क्या वर्सा पाने चाहते हो? मुक्ति-जीवनमुक्ति का। मुक्ति-जीवनमुक्ति का दाता एक ही ज्ञान सागर बाप है। इसलिए उनको ज्ञान दाता कहा जाता है। भगवान ने ज्ञान दिया था परन्तु कब दिया, किसने दिया, यह किसको पता नहीं है। सारा मुँझारा इसमें है। किसको ज्ञान दिया यह भी किसको पता नहीं है। अभी यह ब्रह्मा बैठे हैं – इनको मालूम पड़ा है कि हम सो नारायण था फिर 84 जन्म भोगे। यह है नम्बरवन में। बाबा बतलाते हैं मेरी तो आंख ही खुल गई। तुम भी कहेंगे हमारी तो आंखें ही खुल गई। तीसरा नेत्र तो खुलता है ना। तुम कहेंगे हमको बाम का, सृष्टि चक्र का पूरा ज्ञान मिल गया है। मैं जो हूँ, जैसा हूँ – मेरी आंखें खुल गई हैं। कितना वन्डर है। हम आत्मा फर्स्ट हैं और फिर हम अपने को देह समझ बैठे। आत्मा कहती है हम एक शरीर छोड़ दूसरा लेता हूँ। फिर भी हम अपने को आत्मा भूल देह अभिमानी बन जाते हैं। इसलिए अब तुमको पहले-पहले यह समझ देता हूँ कि अपने को आत्मा समझ बैठो। अन्दर में यह बैठकर घोटो कि मैं आत्मा हूँ। आत्मा न समझने से बाप को भूल जाते हो। फील करते हो बरोबर हम घड़ी-घड़ी देह अभिमान में आ जाते हैं। मेहनत करनी है। यहाँ बैठो तो भी आत्म अभिमानी होकर बैठो। बाप कहते हैं हम तुम बच्चों को राजाई
b देने आये हैं। आधाकल्प तुमने हमको याद किया है। कोई भी बात सामने आती है तो कहते हैं
c हाय राम, परन्तु ईश्वर वा राम कौन है, यह किसको पता नहीं। तुमको सिद्ध करना है – ज्ञान का सागर, पतित पावन, सर्व का सद्गति दाता, त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव है। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर तीनों का जन्म इकट्ठा है। सिर्फ शिवजयन्ती नहीं है परन्तु त्रिमूर्ति शिव जयन्ती है। जरूर जब शिव की जयन्ती होगी तो ब्रह्मा की भी जयन्ती होगी। शिव की जयन्ती मनाते हैं परन्तु ब्रह्मा ने क्या किया। लौकिक, पारलौकिक और यह है अलौकिक बाप। यह है प्रजापिता ब्रह्मा। बाप कहते हैं नई दुनिया के लिए यह नया ज्ञान अभी तुमको मिलता है फिर प्रायः लोप हो जाता है। जिसको बाप रचता और रचना का ज्ञान नहीं तो अज्ञानी ठहरे ना। अज्ञान नींद में सोये पड़े हैं। ज्ञान से है दिन, भक्ति से है रात। शिवरात्रि का अर्थ भी नहीं जानते इसलिए उनकी हॉली डे भी उड़ा दी है।

अभी तुम जानते है बाप आते ही हैं – सबकी ज्योत जगाने। तुम यह बत्तियां आदि जगायेंगे तो समझेंगे इनका कोई बड़ा दिन है। अब तुम जगाते हो अर्थ सहित। वो लोग थोड़ेही समझेंगे। तुम्हारे भाषण से पूरा समझ नहीं सकते। अभी सारे विश्व पर रावण का राज्य है, यहाँ तो मनुष्य कितने दुःखी हैं। सिद्धि-सिद्धि वाले भी बहुत तंग करते हैं। अखबारों में भी पड़ता है, इनमें ईविल सोल है। बहुत दुःख देते हैं। बाबा कहते हैं इन बातों से तुम्हारा कोई कनेक्शन नहीं। बाप तो सीधी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

शास्त्र है।जिसकी महिमा बहुत है। भारत में ही बाप आकर सुनाते हैं और सबकी सदगति करते हैं। वो धर्मस्थापक जो आते हैं।जब मरते हैं तो बड़े2 तीर्थ बना देते हैं।वास्तव में सबका तीर्थ यह भारत ही है। जहाँ बेहद का बाप आते हैं। बाप ने भारत में आकर ही सर्व की सदगति की है। बाप कहते हैं तुम मुझे लिबरेटर गाइड कहते हो ना। हम तुमको इस पुरानी दुनिया से लिबरेट कर सुखधाम, शान्तिधाम ले जाता हूं। बच्चे जानते हैं हम बाबा शान्तिधाम सुखधाम जायेंगे।बाकी सब शान्तिधाम जायेंगे। बाप आकर सबकी सदगति करते हैं। उनका जन्म मरण तो है नहीं।बाप आया फिर चला जायेगा। उनके लिए ऐसे थोड़े ही कहेंगे कि मर गया। जैसे शिवानंद के लिए कहेंगे कि शरीर छोड़दिया फिर क्रियाकरम आदि बहुत कुछ करते हैं।वह बाप चला जायेगा उनका क्रियाकरम सेरेमनीआदि कुछ नहीं करना होता। उनके तो आने का भी पता नहीं पड़ता। क्रियाकरम आदि की तो बात ही नहीं। और सब मनुष्यों को क्रियाकरम करते हैं। बाप की क्रियाकरम होती नहीं। उनको शरीर ही नहीं।सभी मनुष्य सरसों मिसल पीस कर खलास हो जाते हैं। सतयुग में यह ज्ञान भक्ति की बातें होती नहीं। ये अभी ही चलती हैं। और सब भक्ति ही सिखलाते हैं। आधाकल्प है भक्ति फिर आधाकल्प के बाद बाप आकर ज्ञान का वर्सा देते हैं। ज्ञान कोई वहां साथ नहीं चलता।वहां बाप को याद करने की दरकार नहीं रहती।मुक्ति में है वहां याद करना होता है क्या?नहीं। दुख का फरयाद वहां होता ही नहीं। भक्ति भी पहले अव्यभिचारी फिर व्यभिचारी। इस समय तो अति व्यभिचारी भक्ति है। इसको रौरव नर्क कहा जाता है। एकदम तीसे में तीखा नर्क है। फिर बाप आकर तीसे में तीखा स्वर्ग बनाते हैं।इस समय है 100% दुख।फिर 100% सुख शान्ति होगा।आत्मा जाकर अपने घर में विश्राम पायेगी। समझाने में बड़ा सहज है। बाप कहते हैं मैं आता ही तब हूं जब नईदुनिया की स्थापना पुरानी दुनिया का विनाश करना होता है। इतना कार्य सब एक हो नहीं करेंगे। खिदमतगार तो बहुत चाहिये। इस समय तुम बाप के खिदमतगार बच्चे बनते हो।भारत की बड़ी अच्छी सेवा तुम करते हो।अच्छा बाप अच्छी सेवा सिखलाते हैं। अपना भी भारत को भी विश्व का भी कल्याण करते हैं।तो कितना रूचि से करना चाहिए।बाप कितनी रूचि से सर्व की सदगति करते हैं।अब भी सर्व की सदगति होनी है जरूर यह शुभभावना। तुम बच्चे सच्ची2 सेवा करते होपरन्तु गुप्त। आत्मा कहती है शरीर द्वारा। तुमसे बहुत पूछते हैं ब्र0कु0 का उद्देश्य क्या है। बोलो ब्र0कु0 काउद्देश्य है विश्व में सुख और शान्ति का स्वराज्य स्थापन करना। हम हर 5000 वर्ष के बाद श्रीमत पर विश्व में शान्ति स्थापन कर विश्व शान्ति को प्राइज लेते हैं।यथा राजारानी तथा प्रजा प्राइज लेते हैं। नर्कवासी से स्वर्गवासी बनना।कम प्राइज है क्या।वह पोप प्राइज लेकर खुश होते रहते हैं मिलता कुछ भी नहीं। सच्ची2 पोप प्राइज तो हम बाप से ले रहे हैं। विश्व की बादशाही को। कहते हैं ना भारत हमारा ऊंचा देश है। कितना महिमा करते हैं।सब समझते हैं हम भारत के मालिक हैं। परन्तु मालिक है क्या। अभी तुम श्रीमत से राज्य स्थापन करते हो।हथियार पवार तो कुछ है नहीं। देवी गुण धारण करते हो इसलिए तुम्हारा गायन है। अम्बा को देखो कितनी पूजा करते हैं। परन्तु अम्बा कौन है ब्राह्मण है या देवता यह भी पता नहीं। अम्बा भगवती तो नहीं है। अम्बा तो ब्राह्मणी है। तुम उनकी औलाद हो। ब्रह्मा आदि देव की बेटी है अम्बा, काली, दुर्गा, सरस्वती आदि2 बहुत नाम हैं। यहां भीनीवे अम्बा का छोटा सा मन्दिर है। अम्बा को बहुत भुजायें दे देते हैं। ऐसे तो है नहीं। तो इसको कहा जाता है ब्लाइंडफेथ।क्राइस्ट बुद्ध आदि आये उन्होंने अपना2 धर्म स्थापन किया। तिथि तारीखसे सब बताते हैं वहां ब्लाइंड फेथ की बात ही नहीं। यहां भारत वासियों को कुछ पता ही नहीं है हमारा धर्म कब और किसने स्थापन किया। इसलिए कहा जाता है ब्लाइंडफेथ अभी तुम पुजारी हो फिर पूज्य बनते हो। तुम्हारी आत्मा भी पूज्य तो शरीरभीपूज्य बनता है। तुम्हारी आत्मा की भीपूजा होती है। फिर देवता बनते हो तो भी पूजा होती है। बाप तो है ही निराकार वो सदैव पूज्य है। वो कब पुजारी नहीं बनते। तुम बच्चों के लिए कहा जाता है आप ही पूज्य और आप ही पुजारी।बाप जो एवर पूज्य है यहां आकर बाप सच्ची सेवा करते हैं। सबकी सदगति देते हैं। बाप कहते हैं मामेकम याद करो। दूसरे कोई देहधारी को याद नहीं करना है। यहां तो बहुत हिन्दू हैं जो मुसलमान को जाय पूजा करते हैं।उनके पांव पड़ते हैं। बड़े2 लक्षपति करोड़पति

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

3-7-99 प्रातः मुरली ओम् शान्ति बापदादा मधुबन

"मीठे बच्चे–विचार सागर मंथन कर श्रीकृष्ण और परमात्मा शिव के महान् अन्तर को स्पष्ट करो"

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी से सम्बन्धित)

प्रश्न :- ब्रह्मा बाबा अपने आपसे क्या बातें करते हैं? उन्हें वन्डर क्या लगता है?

उत्तर:- ब्रह्मा बाबा अपने आपसे बातें करते–पता नहीं क्या होता जो शिवबाबा घड़ी-घड़ी भूल जाता है। ऐसे तो नहीं, बाप जब प्रवेश करते हैं तब याद रहती है, बाबा चले जाते हैं तो याद भूल जाती है। परन्तु मैं तो उनका बच्चा हूँ, याद भूल क्यों जाती? क्या मेरी याद से ही बाबा आते हैं? ऐसे-ऐसे बाबा अपने आपसे बात करके वन्डर खाते रहते हैं।

गीत:- तू प्यार का सागर है.....

ओम् शान्ति। शिवबाबा बैठ करके अपने सिकीलधे बच्चों को समझाते हैं कि गीता का भगवान् कौन है? क्योंकि इस समय भारत में है अज्ञान अन्धियारा। इसको कहा जाता है घोर अन्धियारा, अज्ञान अन्धियारा। फिर सोझरा चाहिए ज्ञान का। परमपिता परमात्मा को ही मनुष्य मानते हैं कि वह ज्ञान का सागर है, नॉलेजफुल है। अच्छा, वह ज्ञान का सागर है, उनसे क्या मिलना है? नदियों से पानी मिलता है तो भर-भर कर स्नान भी करते हैं। तुमको ज्ञान सागर से क्या मिलता है? एक बूंद। बाप आकर बच्चों को समझाते हैं–मैं ज्ञान का सागर हूँ, तुमको बूँद देता हूँ। कौन सी बूँद? सिर्फ कहता हूँ–मैं तुम्हारा बाप हूँ। तुम मुझे याद करो। समझा कि हम अपने शान्तिधाम-सुखधाम जाते हैं।

ज्ञान सागर एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति वैकुण्ठ में भेज देते हैं। घर बैठे भी दिव्य दृष्टि दे देते हैं। मनुष्य तो एक-दो को सामने दृष्टि देते हैं। बाबा घर बैठे साक्षात्कार करा लेते हैं। एक बूँद मिलने से तुम यहाँ से चले जाते हो। यहाँ बैठे-बैठे तुम वैकुण्ठ में चले जाते हो। अब बाप बैठ समझाते हैं। गीता का भगवान कौन है? वह है ज्ञान का सागर निराकार। मनुष्य तो गाते हैं श्रीकृष्ण के लिए। अब तुमको समझाना है श्रीकृष्ण ने ज्ञान नहीं सुनाया। पहले-पहले तो कहते हैं कृष्ण ने माता के गर्भ से जन्म लिया। कंसपुरी थी। फिर आवाज हुआ–हे कृष्ण, तुमको मारने वाला आया है। यह तो जानते हो सब असुर हैं। कंस, जरासन्धी, अकासुर बकासुर पाप आत्मायें सबका विनाश करने लिए उनका जन्म दिखाते हैं। तो श्रीकृष्ण ने जन्म लिया। वह तो छोटा था। फिर ज्ञान कब दिया? वह तो युद्ध के मैदान में कृष्ण का बड़ा रूप दिखाते हैं, छोटा तो नहीं दिखाते हैं। वैसे ही कृष्ण जयन्ती के बाद फिर गीता जयन्ती दिखाते हैं। कुछ समय के बाद जब वह बड़ा हुआ तब ज्ञान दिया होगा। यह भी दिखाते हैं–जन्म लिया है। टाइम भी लिखाते हैं रात्रि के समय। यहाँ तुम देखते हो शिवबाबा की पधरामनी हुई है। कोई को पता नहीं कि कब प्रवेशता हुई। शिवबाबा तो बच्चा बनता नहीं है। वह तो बड़े वानप्रस्थ अवस्था में आया है। कब आया–उसको डेट है नहीं। कृष्ण को तो तिथि-तारीख है और वह गर्भ से पैदा हुआ है। यहाँ शिवबाबा तो ज्ञान का सागर है। उनको छोटा होना नहीं है, जो फिर बड़ा होकर ज्ञान सुनाये। कृष्ण तो मनुष्य था। मनुष्य को ज्ञान सागर नहीं कहा जाता है। उनका तो जन्म ही स्वर्ग में हुआ। वह किसको राजयोग सिखला न सके, क्योंकि

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

खुद ही गजा है। बरोबर तुम जानते हो निराकार बाप ही आकर राजयोग सिखलाते हैं। पतितों को पावन, राजाओं का राजा बनाते हैं।

इस हद के रात और दिन तथा इस बेहद के रात और दिन के अर्थ में भी फर्क है। यह है संगम जबकि ब्रह्मा की रात पूरी हो ब्रह्मा का दिन शुरु होता है। यह है बेहद की रात्रि, अज्ञान अन्धियारा। सतयुग में है सोझरा। उस रात की बात नहीं। वह तो कृष्ण का जन्म रात में मनाते हैं। वह हुई हद की बात, यह है बेहद की। बाप कहते हैं मैं आता हूँ, मेरी कोई तिथि-तारीख नहीं। कृष्ण-राम आदि की तो तिथि-तारीख है। मुख्य है ही दो।

(अभी कृष्ण जयन्ती आती है ना। उन्हों को समझाना है कृष्ण तो छोटा बच्चा है। रात और दिन तो ब्रह्मा का गाया जाता है। ब्रह्मा का दिन कृष्ण है और ब्रह्मा की रात ब्रह्मा है। ब्रह्मा ही
b फिर सो कृष्ण बनता है, कृष्ण की रात वा कृष्ण का दिन नहीं कहेंगे। वह तो समझते हैं कृष्ण भगवान् है, वह हाजिराहजूर है। सो इस पर भी समझाना है। तुम्हारे है शिवजयन्ती वा शिव रात्रि कहो। शिव जयन्ती कहना ठीक है। यह भी समझाना होता है। वह गर्भ में तो आते नहीं हैं। साधारण तन में आते हैं। कृष्ण की तो 8 पीढ़ी चलती है। छोटेपन में उनको मोहन अथवा कृष्ण कहते हैं। जैसे प्रिन्स ऑफ वेल्स है वैसे पहले-पहले गद्दी इन्द्रप्रस्थ की—प्रिन्स आफ इन्द्रप्रस्थ। फिर वह प्रिन्स से किंग होगा। कृष्ण अक्षर नहीं, महाराजा नाम ही गाया जाता है।
श्री लक्ष्मी-नारायण को महाराजा-महारानी कहते हैं। किंग अक्षर अंग्रेजों का है, असुल नाम
c महाराजा-महारानी है। ऐसे नहीं कि नारायण ने ज्ञान दिया था। (स्वयंवर द्वारा कृष्ण फिर श्री नारायण बनता है। अब इस ज्ञान सागर शिव का नाम तो बदलता नहीं। एक ही नाम है।
d उनका वह रथ तो बड़ा है। आने से ही ज्ञान सुनाना शुरु कर दिया है। यह (ब्रह्मा) तो कुछ नहीं जानते थे। समझ में आता है इनमें आया हुआ है, जो साक्षात्कार कराते हैं। नॉलेज दे रहे
e हैं। यह साक्षात्कार का राज अथवा यह नॉलेज शुरु में पहले समझ में नहीं आती थी। बाबा अपना अनुभव बतलाते हैं—शुरु में बनारस गये तो दीवारों पर गोले आदि निकालते रहते थे। समझ में कुछ भी नहीं आता था—यह क्या है? क्योंकि यह तो जैसे बेबी बन गये। नया जन्म लिया ना। कहते हैं ना—बाबा, हम 8-10 मास का आपका बच्चा हूँ तो मैं भी बच्चा हो गया। तो पहले कुछ समझ में नहीं आता था। वह ज्ञान की बात ही और थी। अगड़म-बगड़म क्या-क्या बैठ निकालते थे। अभी तो सीखते-सीखते कितने वर्ष हो गये हैं! अभी बाप की बात समझ में आती है। बच्चों को कृष्ण जयन्ती पर समझाना है। चित्र तो बरोबर हैं। झाड़ में ब्रह्मा का चित्र भी है। मक्खन तो यह हप कर लेते हैं। विश्व के मालिकपने का माखन है। कृष्ण सतयुग की प्रालब्ध लेकर के आया है। श्रीकृष्ण है सतयुग का पहला प्रिन्स फिर उनके बच्चे भी प्रिन्स बनेंगे। यह है उनकी प्रालब्ध जो कलियुग में तो थी नहीं। तो यह सूर्यवंशी की प्रालब्ध किसने बनाई? गाया जाता है—ज्ञान सूर्य प्रगटा, अज्ञान अन्धेर विनाश। ज्ञान सागर तो शिवबाबा है। वह आये हैं और स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। कान्ट्रास्ट बतलाना है। कृष्ण कैसे गीता सुना सकता, वह तो बच्चा है। गर्भ में आया है। दिखाते हैं—वहां कंस, जरासन्धी आदि थे। परन्तु वहां असुर तो हो न सके। असुरों और देवताओं की लड़ाई दिखाते हैं। तो जरूर असुर कलियुग अन्त में होंगे, देवतायें सतयुग आदि में होंगे। दोनों की लड़ाई तो लगी नहीं है। महाभारत लड़ाई बरोबर है। देवतायें तो यहाँ हो न सके। असुरों की असुरों में लड़ाई चली

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

है। मुसलमानों का राज्य भी देखते हो। यादव, कौरव, पाण्डव भी हैं।
पाण्डव है मोहजीतलेन्स, [illegible] खून की नदियाँ बहती रहती है। दुश्मनी तो है ना। पार्टीशन में रक्त की नदी अच्छी ही बही थी ना। भाई-भाई की युद्ध हुई, भाई-भाई तो है ना। लड़ाई उन्हों की लगती है, [illegible] कैसे बने? यह तो एक दो का खून करते हैं। लाखों चलाने है नव रक्त की नदी बहती है। और है यह संगम का समय। रक्त की नदियों बाद फिर दूध की नदियां बहती है। कृष्ण तो छोटा प्रिन्स है। फिर उनकी भी बैठ ग्लानी की है। उनकी तो ज्ञान सागर कह नहीं सकते। देवताओं की महिमा तो गाई जाती है—सर्वगुण सम्पन्न, मर्यादा पुरुषोत्तम ... यह महिमा बच्चे की नहीं हो सकती। महिमा हमेशा राजा-रानी की चलती है। वह फिर लक्ष्मी-नारायण को सतयुग में और कृष्ण को द्वापर में ले गये हैं। कितनी बड़ी भूल कर दी है! लक्ष्मी-नारायण की छोटेपन की कहानी भी कोई बता नहीं सकते। राम-सीता की भी कुछ न कुछ बतलाते हैं। कृष्ण की भी उल्टी-सुल्टी बातें बतलाते हैं। कुछ तो सुल्टी कहानी भी बताओ। लक्ष्मी-नारायण की तो महिमा गाई जाती है—सर्वगुण सम्पन्न, मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसा परमो धर्म.....। अच्छा, उन्हों को राज्य
f किसने दिया? मनुष्य का नाम सुन सूझ जाते हैं। लक्ष्मी-नारायण कहने से तुम चले जाते हो सतयुग में। यह है नर से नारायण बनने की कथा। कृष्ण बनने की कथा नहीं कहते, इसको सत्य नारायण की कथा कहेंगे। सत्य कृष्ण की कथा नहीं कहा जाता। सच्चा बाबा ज्ञान सागर यह कथा सुनाते हैं। सारे सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की कथा है। उसमें श्री लक्ष्मी-नारायण की कथा भी आ जाती है। उनके 84 जन्मों की कथा दिखलाते हैं। श्री नारायण की कथा से बेड़ा पार हुआ। बरोबर बाप बेठ बच्चों को नर से नारायण बनने की सच्ची-कथा सुनाते हैं। श्री नारायण तो बड़ा है ना। स्वयंवर से पहले कौन थे? क्या लक्ष्मी-नारायण ही नाम था। या दूसरा और कोई नाम था? है राधे-कृष्ण, जिनका स्वयंवर बाद लक्ष्मी-नारायण नाम रखा है। बाबा एसे (Essay-निबन्ध) देते हैं फिर तुमको विचार सागर मंथन करना चाहिए। पहले नम्बर की भूल है यह। तुम जानते हो अभी है कलियुग। यादव, कौरव, पाण्डव भी हैं। कलियुग का समय भी है। कलियुग के बाद जरूर सतयुग होगा। बाप कहते हैं—मैं गाइड बन आया हूँ, रावण के चम्बे से छुड़ाए वापिस ले जाने। आत्माओं को ही ले जाऊंगा।)

गाया जाता है आत्मा-परमात्मा अलग रहे बहुकाल..... ऐसे नहीं कि कृष्ण अलग रहे बहुकाल। महिमा ही उस निराकार की है—सुन्दर मिला कर दिया जब वह सतगुरु मिला दलाल। यहाँ तो सब गुरु ही हैं। गाया हुआ है—सतगुरु मिला दलाल..... सत परमपिता परमात्मा दलाल के रूप में मिलते हैं। सौदा दलाल द्वारा होता है। यह भी सगाई होती है।
g आत्मा और परमात्मा अलग हैं। परमात्मा है निराकार वह आकर इसमें प्रवेश कर तुम्हारी सगाई करते हैं। खुद दलाल बनते हैं। कहते है मुझ परमपिता परमात्मा को याद करो। इस शरीर में बैठ कहते है मामेकम् याद करो। मैं तुमको माया रावण से लिबरेट कर साथ ले जाऊंगा, तुमको फिर राजाई देकर मैं निर्वाणधाम में बैठ जाऊंगा। कृष्ण थोड़ेही ऐसे कहेंगे। यह है ही आत्मा और परमात्मा। कृष्ण तो छोटा बच्चा है। बातें तो बहुत हैं समझाने की। तो
h बाबा ने समझाया है कैसे इसमें प्रवेशता हुई? फिर समझने लगा—मैं राजाओं का राजा बनता हूँ। विष्णु का साक्षात्कार हुआ और दिल में बहुत खुशी हुई। फिर विनाश का साक्षात्कार भी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

हुआ। परन्तु इतना समझ में नहीं आया। अगर समझते हैं बाबा ने यह साक्षात्कार कराया—तुम नर से नारायण बनेंगे। परन्तु उस समय इतनी समझ नहीं थी। जैसे बाबा रात को बतला रहे थे—पता नहीं क्या होता है जो शिवबाबा को याद करना भूल जाता हूँ। ऐसे तो नहीं बाप जब प्रवेश करते हैं तब समझता हूँ बाबा आया है, याद रहता है, बाबा चला जाता है तो भूल जाता हूँ। प्वाइन्ट सुनाते हैं तो फील होता है—बेहद का बाप आकर सुनाते हैं। परन्तु मैं खुद ही भूल जाता हूँ। क्या मेरी याद से हो आता है? ऐसा कहें—मैं घड़ी-घड़ी याद करता हूँ। भल आवे इसमें तो सदका कल्याण है। याद ही मुख्य हो जाती है। आये, न आये, बाप को याद जरूर करना है। बाबा ने समझाया है कि गीता जयन्ती के बाद होती है कृष्ण जयन्ती। पहले है शिवजयन्ती फिर गीता जयन्ती फिर कृष्ण जयन्ती। शिव तो बड़ा है। फट से आया और गीता सुनाई। छोटा तो नहीं है। इन बातों पर विचार सागर मंथन करना चाहिए—कैसे हम समझायें? पहले ख्याल करो—शिव किसका कहते हैं, जिसकी रात्रि मनाई जाती है। सतयुग है श्रीकृष्ण की राजधानी। नर से नारायण बनने की नॉलेज तो जरूर फादर ही देंगे, वह नॉलेजफुल है। और किसको नॉलजफुल नहीं कहा जाता। गॉड इज नॉलेजफुल, रचयिता, बीजरूप है। वही ड्रामा की नॉलेज सुनायेंगे। ड्रामा कब शुरू होता है और फिर कब पूरा होता है, किसको पता ही नहीं है। सतयुग से कलियुग अन्त तक वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है—यह कोई समझा नहीं सकते। सुनावे वह जो त्रिकालदर्शी हो। त्रिकालदर्शी तो कोई है नहीं, सिवाए एक के। वही तुमको त्रिकालदर्शी बनाते हैं।

अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार :-

१- मास्टर नॉलेजफुल और त्रिकालदर्शी बन, श्रीकृष्ण और परमात्मा शिव के महान् अन्तर को स्पष्ट कर घोर अन्धियारे से निकालने की सेवा करनी है।

२- बाबा जो एसे (Essay; निबन्ध) देते हैं उस पर विचार सागर मंथन करना है। ख्याल करना है—कैसे किसको समझायें।

वरदान :- अपने मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य की लकीर देखते हुए सर्व चिंताओं से मुक्त बेफिक्र बादशाह भव

बेफिक्र रहने की बादशाही सब बादशाहियों से श्रेष्ठ है। अगर कोई ताज पहनकर तख्त पर बैठ जाए और फिक्र करता रहे तो यह तख्त हुआ या चिंता? भाग्य विधाता भगवान ने आपके मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खींच दी, बेफिक्र बादशाह हो गये। तो सदा अपने मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य की लकीर देखते रहो - वाह मेरा श्रेष्ठ ईश्वरीय भाग्य, इसी फ़खुर में रहो तो सब फिकरातें (चिंतायें) समाप्त हो जायेंगी।

स्लोगन :-

एकाग्रता की शक्ति द्वारा रूहों का आवाहन कर रूहानी सेवा करना ही सच्ची सेवा है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

5-2-97 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - माया की बीमारी से छूटने के लिए ज्ञान और योग का एपिल (सेब) रोज़ खाते रहो।"

प्रश्न:- कर्मातीत अवस्था में जाने का पुरूषार्थ क्या है?

उत्तर:- ऐसा अभ्यास करो जो बुद्धि में सिवाए बाप के और कोई की याद न रहे। अन्त मती सो गति... जब ऐसी अवस्था हो जो बुद्धि में कोई भी याद न रहे तब सदा हर्षित भी रहेंगे और कर्मातीत अवस्था को भी पा लेंगे। तुम्हारा पुरूषार्थ ही है आत्म-अभिमानी बनने का। आत्मा, आत्मा को देखे, आत्मा से बात करे तो खुशी होती रहेगी। स्थिति अचल हो जायेगी।

गीत:- तुम्ही हो माता...ओम् शान्ति।

(गायन तो यर्थाथ है क्योंकि सारी सृष्टि का रचयिता और फिर जिन द्वारा रचना करते हैं उसको ही कहा जाता है मात-पिता। रचता कोई भी साकार व आकार को नहीं कहा जाता। रचता एक निराकार को ही कहा जाता है। अभी यह समझ तुम बच्चों को आई है वह तो सिर्फ गाते हैं। भक्तों की बुद्धि में सिर्फ यही रहता कि बस भक्ति करनी है, परन्तु किसकी भक्ति करनी है, कुछ भी पता नहीं। भक्ति करनी चाहिए एक भगवान की, जिसे मात-पिता कहते हैं, न कि सैकड़ों की) कहते हैं भगवान आकर भक्तों को भक्ति का फल देंगे। फल अथवा वर्सा एक ही बात है। बच्चा पैदा होता है तो मात-पिता के वर्से का फल मिलता है। बाकी यह गायन तो है भक्ति मार्ग का। याद करते हैं कि आकरके हमको भक्ति का फल दो। ज्ञान और भक्ति भी कहते हैं। भक्ति का फल है ज्ञान। बरोबर तुम अब जानते हो भक्ति कब से शुरू हुई है। यह कोई को पता नहीं, ज्ञान का समय है दिन। भक्ति का समय है रात। दिन और रात सो तो जरूर आधा-आधा होगा, शास्त्रों में कल्प की आयु लम्बी लिख दी है। ज्ञान को बहुत समय दे दिया है और भक्ति को थोड़ा समय दिया है। द्वापर कलियुग की आयु कम दिखाई है। यह रात और दिन का पूरा हिसाब तो ठहरा नहीं। कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष भी कहते हैं। (शास्त्रों में यह अक्षर हैं। कहते हैं तुम लोग शास्त्रों को नहीं मानते हो फिर शास्त्रों के अक्षर क्यों लेते हो। तो तुमको समझाना है – शास्त्रों का सार तो बाबा ही बताते है। फलाने शास्त्र में यह राइट नहीं है, यह राइट है। रिफरेन्स तो जरूर देना पड़े। जैसे अब प्रदर्शनी में चित्र दिखाते हैं हनुमान, गणेश, वामन अवतार आदि आदि... समझाने लिए दिखाना तो पड़े ना। जो बातें रांग हैं वह वर्णन कर फिर राइट क्या है, वह समझाते हैं।)

अब बाबा की महिमा गाते हैं शिवाए नम: फिर लिखा है त्वमेव माताश्च पिता..नाम तो देना पड़े ना। मनुष्यों को यह पता नहीं कि हमारा बाप कौन है। कहते भी हैं ओ गॉड फादर। बुद्धि उधर जाती है। मनुष्य प्रार्थना आदि करते हैं तो जानते हैं परमपिता परमात्मा परलोक में निवास करते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को याद करेंगे तो बुद्धि सूक्ष्मवतन

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

में जायेगी। फर्स्ट, सेकेण्ड फिर थर्ड फ्लोर है। अब मुख्य बात है बाप को भूले हैं। बाप आकर उल्हना देते हैं। तुमने हमारी कितनी ग्लानी की है। बाप जो सर्व को सद्गति देने वाला है, उनकी फिर सर्व ने बैठ ग्लानी की है। भगवानुवाच है ना यदा यदाहि...भारतवासी अपने धर्म की ग्लानी करते हैं। कहते हैं ईश्वर सर्वव्यापी है। क्या सबमें ईश्वर है? तो
b कह देते है कच्छ अवतार, मच्छ अवतार, वाराह अवतार... बाप तो भारतवासी बच्चों को ही कहते हैं क्योंकि बच्चे ही ग्लानी करते हैं। यह मुरब्बी बच्चा (ब्रह्मा) भी ग्लानी करता था। यह ग्लानी भी ड्रामा में नूंधी हुई थी।) तब तो पाप आत्मा बनते हैं। बाप ने तो सबको पावन बनाया था क्योंकि पतित-पावन है। पावन बनाकर विश्व का मालिक बनाते हैं। बनाने वाले बाप को कितनी गाली देते हैं। जब समझाते हैं तो उस समय मान लेते हैं, समाचार भी आता है, इतनों ने सही की कि बरोबर आपकी बात राइट है। अब कहते हैं श्रीमत भगवत गीता, तो भगवान की है श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मत,... ऊंचे ते ऊंचे की मत भी ऊंची होगी ना। वह आकर पतित भ्रष्टाचारी को श्रेष्ठाचारी बनाते हैं। तो पहले-पहले एक का परिचय देना पड़ता है। तुम बच्चों में भी नम्बरवार तो हैं ही। बहुत बच्चे लिखते हैं बाबा क्या करें, माया का तूफान हमको ठहरने नहीं देता है। हमको यह-यह विकार तंग करते हैं। बाप कहते हैं तुमको इन पर विजय पानी है। नहीं तो पद भ्रष्ट हो जायेगा। शिक्षक ही अगर ऐसा कुछ काम करेंगे तो जरूर औरों को संशय पड़ेगा कि खुद की चलन तो ऐसी है, और दूसरों को ऐसे समझाते हैं। विकार भी कोई सेमी होता है, सतो रजो तमो हर बात में होता है। सतयुग को सतो ऊंच कहा जाता है, कलियुग को तमो नीच कहा जाता है। दुनिया भ्रष्टाचारी कहते हैं। परन्तु अपने को कोई भ्रष्टाचारी समझते नहीं हैं। बाप समझाते हैं इस रावण राज्य में एक भी श्रेष्ठाचारी नहीं है। समझो कोई से पूछा जाता है ऊंचे ते ऊंचा कौन? तो कहेंगे भगवान है। उनका आक्यूपेशन जानते हो? नहीं। या तो कहेंगे सन्यासी ही ऊंच हैं क्योंकि पवित्र रहते हैं। खुद भी सन्यासियों को फालो करते हैं। नमस्ते करते हैं तो उन्हों से पूछना चाहिए, सन्यासियों से भी जरूर कोई ऊंचा होगा! सन्यासी भी भगवान की साधना करते हैं। आजकल तो चित्र भी बहुत बनाये हैं। सबसे ऊंचा परमात्मा को ही रखते हैं। अब राम वा कृष्ण के आगे शिवलिंग रखना यह भी बड़ाई है। नहीं तो वह कोई शिव की पूजा थोड़ेही करते हैं। वह तो खुद
c ही राज्य करते हैं। जब वह पतित बनते हैं तब पूजने लगते हैं। ऊंचे ते ऊंच निराकार परमात्मा को ही कहा जाता है — पतित-पावन सर्व का सद्गति दाता, सबका लिबरेटर। अपने साथ सबको ले जायेंगे। तुम जानते हो वह हमारा बाप है। हम सब इस समय बीमार हैं, जिससे एवरहेल्दी और एवरवेल्दी बन जाते हैं। कहते भी हैं रोज़ एपिल खाओ तो एवरहेल्दी बन जायेंगे। यह तो तुम प्रैक्टिकल देख रहे हो। माया ने सबको बीमार बना दिया है। अब सबको हेल्दी, वेल्दी बनाने वाला एक बाप ही है। सूक्ष्मवतन में भी आत्मायें हेल्दी हैं। यहाँ अनहेल्दी आत्मायें हैं फिर मूलवतन से पहले जब आत्मायें आयेंगी तो सुख ही देखेंगी। (तो बाप ब्रह्मा द्वारा हमको बहुत सुख देते हैं। अब विनाश तो होना

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompresso

ही है। इस यज्ञ से ही विनाश ज्वाला निकली है। वो लोग राय कर रहे हैं शान्ति कैसे हो, परन्तु यह भी गाया जाता है नर चाहत कुछ और... शान्ति भी तब होगी जब विनाश होगा। फिर सभी आत्मायें मुक्तिधाम में चली जायेंगी। विनाश होने का और कोई उपाय तो हो ही नहीं सकता। यह भी उन्हों को बतावे कौन। इन भीष्म-पितामह आदि को तो पिछाड़ी में ज्ञान मिलना है।

मनुष्य शान्ति के लिए उपाय ढूंढते हैं कि आपस में मिलकर एक हो जाएं। परन्तु ऐसा तो होना ही नहीं है। आगे भी विनाश हुआ था। यादव और कौरव भी थे। गीता का भगवान भी आया था। अब पतित दुनिया है, इसमें श्रेष्ठाचारी कोई हो न सके। सबसे श्रेष्ठ हैं लक्ष्मी-नारायण, यही सतयुग में राज्य करते थे। अब तो भ्रष्टाचार की वृद्धि होती गई है, तो जरूर विनाश होना ही है। विनाश के बाद ही सब सुख शान्ति को पा सकेंगे। सबको समझाना है कि हम आदि सनातन देवी-देवता धर्म के हैं। पहले वही धर्म था, अब नहीं है। फिर से उसकी स्थापना हो रही है। इस समय हम ब्राह्मण हैं न कि देवता। जब कोई भाषण करने के लिए स्टेज पर आते हैं तो कुछ न कुछ ख्याल करके, विचार करके आते हैं, तो यह-यह बोलेंगे। हमारे बच्चे तो समझते हैं क्या बोलना है। शान्ति स्थापन करने वाला तो एक ही सर्व का सद्गति दाता बाप है, वही लिबरेटर है। यह समय ही है - सबको वापिस ले जाने का।

बाबा बच्चों से पूछते हो बच्चे तुम अपने को सतयुग में चलने के लायक समझते हो? रावण पर विजय पाई है? कहते हैं बाबा विजय पाने के लिए पुरूषार्थ कर रहे हैं। हाथ तो सब उठाते हैं क्योंकि लज्जा आती है। बाबा कहते हैं अपनी शक्ल तो देखो कितना समय बाप को याद करते हो? अन्त मती सो गति चाहिए तब ही कर्मातीत अवस्था में जा सकेंगे। ऐसी अवस्था हो जो अन्त में कोई भी याद न आये। सदा हर्षित भी तब रह सकेंगे जब दूसरों की सेवा करेंगे। तुम रूहानी सोशल वर्कर हो। तुम्हारे बिगर रूह को इन्जेक्शन कोई भी लगा न सके। गाया भी जाता है ज्ञान अंजन सतगुरू दिया... आत्मा को अब मालूम पड़ा है कि मुझे सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान मिल गया है। यह आत्मा ने कहा शरीर द्वारा – ज्ञान सागर को। अब हमको वापस जाना है - यह बहुत खुशी की बात है। पुराना चोला छोड़कर नया चोला लेना है। इस कारण नाम ही है श्याम सुन्दर।

तुम जानते हो हम सुन्दर थे, अब श्याम बने हैं फिर सुन्दर बनेंगे। बाबा सुन्दर बनाते हैं, माया रावण श्याम बनाता है। काम चिता पर बैठने से श्याम बन जाते हैं। यह बड़ी समझने की सहज बातें हैं। नॉलेज तो स्टूडेन्ट की बुद्धि में नम्बरवार ही धारण होती है। कोई तो बहुत डलहेड हैं। टीचर कहते हैं पढ़ने वाले बहुत डल हैं। देह-अभिमान बहुत है। आत्म-अभिमानी रहें तो सदा हर्षित रहें। आत्मा, आत्मा को देखे अर्थात् अपने भाई को देखकर खुश होती रहे। बाबा बच्चों को देख खुश होते हैं।

बाबा कहते हैं बच्चे मैं आया हूँ तुमको माया से लिबरेट कर वापिस साथ ले जाने।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

नंदीगण था, उनमें भी जरूर अपनी आत्मा होगी। शिवबाबा की प्रवेशता होती है; वह भी जरूर भ्रकुटी के बीच में ही आयेगा। ऐसे थोड़ेही ऊपर से गंगा बहेगी। शिव की सवारी बैल पर दिखाते हैं। बैल की भ्रकुटी में शिव का चित्र दिखाया है। आत्मा तो जरूर भ्रकुटी में ही रहेगी। जो आत्मा का स्थान है जरूर वहाँ ही बैठेगी। गुरू लोग अपने चेले को बाजू में बिठाते हैं। तो वह सतगुरू भी आकर बाजू में बैठते हैं। गुरू ब्रह्मा कहते हैं, विष्णु को वा शंकर को गुरू नहीं कहेंगे। वही ब्रह्मा फिर विष्णु के दो रूप बनते हैं। गुरू तो शिव को कह सकते हैं क्योंकि सबकी सदगति करते हैं। ऊंचे ते ऊंच फिर भी भगवान है। कितना अच्छी रीति समझाया जाता है। अच्छा-

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- सदा हर्षित रहने के लिए आत्म-अभिमानी बनना है। हम आत्मा भाई-भाई हैं, यह दृष्टि पक्की करनी है।

२- रूहानी सोशल वर्कर बन आत्मा को ज्ञान का इन्जेक्शन लगाना है। सबकी रूहानी सेवा करनी है।

वरदान: मन-बुद्धि से किसी भी बुराई को टच न करने वाले सम्पूर्ण वैष्णव व सफल तपस्वी भव

पवित्रता की पर्सनैलिटी व रायॅल्टी वाले मन-बुद्धि से किसी भी बुराई को टच नहीं कर सकते। जैसे ब्राह्मण जीवन में शारीरिक आकर्षण व शारीरिक टचिंग अपवित्रता है, ऐसे मन-बुद्धि में किसी विकार के संकल्प मात्र की आकर्षण व टचिंग अपवित्रता है। तो किसी भी बुराई को संकल्प में भी टच न करना — यही सम्पूर्ण वैष्णव व सफल तपस्वी की निशानी है।

स्लोगन:-

मन की उलझनों को समाप्त कर वर्तमान और भविष्य को उज्जवल बनाओ।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

१-२-७९ अव्यक्त वाणी नं. - 83

मनन-शक्ति ही माया जीत बनने का साधन

मनन द्वारा मग्न रहने वाले मास्टर भगवान् बच्चों प्रति बाप दादा बोले—

आज बापदादा बच्चों के अनेक प्रकार के पुरुषार्थ की विधि को देखते हुए बच्चों के उमंग, उत्साह, मिलन की लगन, स्नेह का संकल्प सदा सहयोगी बनने के कार्य में तत्पर रहना, सब संग तोड़ एक संग जोड़ने की मेहनत को देख बापदादा हर्षित भी हो रहे थे और साथ-साथ स्नेह के कारण तरस भी पड़ रहा था — हरेक अपने-अपने यथाशक्ति लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए तीव्र-गति से लगे हुए हैं। सबकी एक ही इच्छा है कि फास्ट जावें फर्स्ट आवें। दिन रात इसी लगन में चल रहे हैं—लेकिन लक्ष्य एक है, लगन भी एक से ही है। साथ भी एक का ही है फिर भी कोई महावीर हैं और कोई बहुत मेहनत अनुभव करते हैं—कोई सहज-योगी हैं—कोई पुरुषार्थी योगी हैं, कोई सर्व प्राप्ति स्वरूप हैं—कोई सर्व प्राप्ति करने में खूब लगे हुए हैं। कोई मायाजीत हैं—और कोई माया के विघ्नों से युद्ध करने में लगे हुए हैं—कोई के मन का आवाज है जो पाना था पा लिया—और कोई का आवाज है अभी पा रहे हैं। कोई सदा साथ का अनुभव करते

और कोई सदा साथी बनाने के प्रयत्न में रहते। ऐसा देख बाप-दादा को मेहनत करने वालों के ऊपर तरस पड़ता है—एक बाप के बच्चे दो प्रकार के क्यों? और यह मेहनत भी कब तक? यह अलौकिक जन्म जिस जन्म को वरदान है क्योंकि वरदाता द्वारा यह जन्म है—ऐसा वरदानी जन्म प्राप्त होते हुए भी यह जन्म भी मनाने के बजाए मेहनत में ही जाए तो ऐसा वरदानी जन्म फिर कब मिलेगा! इसलिए इस वरदानी जन्म का हर सेकेण्ड और सर्व प्राप्ति करने का सुहावना सैकेण्ड है। ऐसे समय को पाने के बजाए मेहनत में लगाना क्या अच्छा लगता है! चाहते भी नहीं हैं फिर भी कर लेते हैं—क्यों? आज बापदादा ने विशेष कारण देखे। मूल कारण है जो चाहते नहीं हो लेकिन परवश हो जाते। किसके वश हो जाते हो—उसको भी अच्छी तरह से जानते हो। जानते हुए बचने का प्रयत्न करते हुए भी फिर चक्कर में आ जाते हो—क्योंकि माया भी जानी जाननहार रूप में आती है—वह भी जानती है कि इन ब्राह्मण आत्माओं का मुख्य आधार बुद्धि योग है—दिव्यबुद्धि द्वारा ही बाप से मिलन मना सकते तो माया भी पहले-पहले बुद्धि में वार करती है। कमजोर बना देती है। किस द्वारा? माया का विशेष बाण व्यर्थ संकल्पों के रूप में होता है। इस बाण द्वारा दिव्यबुद्धि को कमजोर बना देती है और कमजोर बनने के कारण परवश हो जाते हैं। कमजोर व्यक्ति जो चाहे वह नहीं कर पाते इसलिए चाहते हो लेकिन कर नहीं पाते हो। इस कारण का निवारण सर्वशक्तिवान बाप द्वारा जो प्राप्त हुआ है उस शक्ति को कार्य में नहीं लगाते हो। वह विशेष शक्ति है मनन शक्ति। मनन शक्ति को यूज करना नहीं आता। मनन शक्ति ही दिव्यबुद्धि की खुराक है। खुराक को न खाने से कमजोर बन जाते। और कमजोर होने के कारण परवश हो जाते। मनन शक्ति का विस्तार बहुत बड़ा है। लेकिन विधि नहीं आती। जब

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

से ब्राह्मण जन्म हुआ तब से अभी तक डायरेक्टर बाप द्वारा ब्राह्मण जीवन के कितने टाइटिल्स सुने हैं —अगर वर्णन करो तो पूरी लम्बी माला बन जाए—भक्ति मार्ग में भी सुमिरण करने के अभ्यासी हैं—एक-एक मणके पर सुमिरण करते हैं। भक्ति में सुमिरण शक्ति है और ज्ञान में स्मृति की शक्ति है। जब भक्त आत्मायें अपनी शक्ति को नहीं भूलतीं। अल्पकाल की विधि से अल्पकाल की सिद्धि को पाती रहती हैं—तो आप ज्ञानी तू आत्मायें स्मृति की शक्ति की विधि को क्यों भूल जाते हो। अगर रोज़ अमृतवेले अपने एक टाइटिल को भी स्मृति में लाओ और मनन करते रहो तो मनन शक्ति से सदा बुद्धि शक्तिशाली रहेगी। शक्तिशाली बुद्धि के ऊपर माया का वार नहीं हो सकता अर्थात् परवश नहीं हो सकती। तो मूल कारण है बुद्धि की कमज़ोरी और कमज़ोरी का निवारण है मनन शक्ति।

जैसे आजकल की विशेष आत्मायें अर्थात् पढ़े लिखे लोग जैसा कार्य होगा जैसा स्थान होगा वैसी अपनी ड्रैस चेन्ज करते हैं—आपके जड़ चित्रों का भी हर समय ड्रैस चेन्ज करते हैं। भविष्य देवताई रूप में भी हर कार्य की ड्रैस अलग-अलग होगी। यह संस्कार भविष्य का वर्तमान के आधार पर है—इस समय का फैशन वा रीति रसम सतयुग में तो चलेगी लेकिन आपके जड़ चित्रों में भी रसम चली आ रही है—तो संगमयुग की रीति रसम कौन सी है? जैसा कार्य करते हो वैसे टाइटिल प्रमाण अपना स्वरूप याद रखो—सबसे ज्यादा फैशनबुल संगमयुगी ब्राह्मण हैं। जैसा समय वैसा स्वरूप—यह स्वरूप भी आपकी ड्रैस है। जैसी स्मृति वैसी वृति वैसी दृष्टि और वैसी स्थिति अर्थात् स्वरूप। जैसे आजकल का फैशन है ना जैसा शृंगार—वस्त्र भी वैसे, तिलक भी वैसे लगावेंगे तो आँखों का शृंगार भी वैसा करेंगे। तो सबसे फैशनबुल आप ब्राह्मण हो। ऐसी स्मृति वृति और दृष्टि बनाओ।

स्मृति है तिलक और दृष्टि है आँखों का शृंगार—और वृत्ति है मेकप करना। वृति से जैसा परिवर्तन चाहो वैसे कर सकते हो। तो सदैव रुहानी सजी सजाई मूर्त हो विश्व को परिवर्तन करने वाले!

मनन शक्ति अर्थात् अपने अनेक टाइटिलज़ अर्थात् स्वरूप स्मृति में रखो। अनेक गुणों के शृंगार को स्मृति में रखो—अनेक प्रकार के खुशी की प्वाईन्टस स्मृति में रखो, रुहानी नशे के प्वाईन्टस स्मृति में रखो, रचता बाप के परिचय की प्वाइन्टस बुद्धि में रखो, रचना के विस्तार की प्वाईन्टस स्मृति में रखो। याद द्वारा अनेक प्रकार के अनुभव और प्राप्तियों की प्वाईन्टस को स्मृति में रखो तो मनन शक्ति का साधन कितना बड़ा है! जो चाहे वह मनन करो। जो आपको पसन्दो हो वह पसन्द करो—तो मनन करते मगन अवस्था भी सहज प्राप्त हो जावेगी। परवश के बजाए मायाजीत बनने का वशीकरण मन्त्र सदा साथ रहेगा और माया सदा के लिए नमस्कार करेगी। संगमयुग का पहला भक्त आपका माया बनेगी। मास्टर भगवान बनो तो भक्त भी बने ना। अगर खुद ही भगत होंगे तो वह किसका भक्त बने। तो भक्त बनेंगे वा मास्टर भगवान बनेंगे—इसका सहज साधन सुनाया। मनन शक्ति को बढ़ाओ। समझा।

बंगाल बिहार का ज़ोन तो शृंगार करना जानता है, जैसे देवियों को बहुत सजाते है, अपने जड़ चित्रों को सजाने आता है ना। ऐसे स्वयं को सजाना है। इस ज़ोन की भी विशेषता है—जो बाप को अति प्रिय है। ऐसे बच्चे बहुत हैं—वह कौन? गरीब भी हैं और भोलेनाथ के भोले भी हैं—दोनों ही बाप को अति प्रिय हैं। इसलिए इस ज़ोन का ग्रुप देखो बड़ा है ना—इस ज़ोन की विशेषता है—इस ज़ोन में कितने अलग-अलग प्रदेश हैं—नेपाल भी है तो आसाम भी है, चैरायटी फूलों का गुलदस्ता है—

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सेवा भी अब विस्तार को पाती जा रही है। साकार तन को ढंढा भी यहाँ से ही है। तो स्थान की विशेषता रही ना। जैसे गवर्मेन्ट को किस स्थान से कोई विशेष अमूल्य वस्तु मिलती है तो उस स्थान का महत्व रहता है—नामीग्रामी रहती है—हिस्ट्री में आ जाती है। ऐसे यह स्थान भी बाप की हिस्ट्री में विशेष स्थान है। आगे चलकर इस स्थान का महत्व विश्व में महत्वपूर्ण होगा—जैसे देहली की विशेषता अपनी है, बाम्बे की अपनी है। इस स्थान का महत्व भी बहुत बड़ा अपना है, इसलिए आगे चलकर और भी इस स्थान को विशेष भूमि को रीति से देखेंगे और सुनेंगे। ऐसे विशेष भूमि के निवासी भी विशेष आत्मायें हो। भूमि के साथ आप लोग के भाग्य का भी सब वर्णन करेंगे। अच्छा—

सदा शक्तिशाली स्वरूप में स्थिति रह माया दुश्मन को भी अपना भक्त बनाने वाले, सदा सजे सजाये स्वरूप में स्थित रहने वाले, वशीकरण मन्त्र द्वारा माया को वश करने वाले, सदा स्मृति द्वारा समर्थ रहने वाले, सर्वशक्तिवान आत्माओं को बापदादा का याद प्यार और नमस्ते।

पार्टियों से मुलाकात—

१. हर संकल्प वा कर्म बाप समान करने से—निरन्तर सहजयोगी की स्टेज का अनुभव—संगमयुग का श्रेष्ठ स्थान है बाप का दिल-तख्त, जो इस तख्त पर बैठते हैं वही विश्व के तख्त के अधिकारी बनते हैं, और जैसे बाप परमपूज्य है वैसे बच्चे भी पूज्य बन जाते हैं, क्योंकि दिल में वही समाये जाते हैं जो समान होते हैं, तो बाप समान फ़ालो फादर करने वाली आत्मायें हो ना—ऐसे अनुभव होता है जो बाप की स्मृति वह बच्चों की स्मृति, जो बाप के गुण वह बच्चों के गुण, जो बाप का कर्त्तव्य वह बच्चे का। इसको कहा जाता है फालोफादर। जो भी संकल्प वा कर्म करो तो पहले चेक करो कि बाप समान है, अगर बाप समान है तो

सहजयोगी की स्टेज का अनुभव होगा। मेहनत नहीं लगेगी। और कोई भी परिस्थिति में बाप को सामने लाने से, स्वस्थिति के आधार से परिवर्तन हो जायेगी। चाहे कितने भी देश के हालात नाजुक हों लेकिन आप सदा कमलपुष्प के समान बाप की छत्रछाया में न्यारे और प्यारे रहेंगे। सदा छत्रछाया में हो ना? बाप सेवाधारी बन करके आते हैं तो छत्रछाया के रूप में बच्चों को सदा सेवा करते हैं। बाप को याद किया और साथ अनुभव किया, वैसे कोई भी शरीरधारी का साथ लेने में समय लग जाता है लेकिन बाप तो सैकेण्ड में हाजिर होगा—तो दूर रहते भी सदा समीप आत्मा हो ऐसा अनुभव होता है? जो जितना प्यारा होगा उतना समीप होगा—तो कितने समीप हो? अभी भी समीप हो और परमधाम में भी समीप होंगे फिर भविष्य में भी समीप—तो तीनों ही स्थानों के समीप हो ना। जहां भी ब्राह्मण बच्चों के पांव पड़ते हैं वहां कोई न कोई आत्मायें हैं तब जाना होता है। जो बच्चे बाप की याद में रहते हैं, याद में रहने वाले बच्चों को बाप सदा रेसपान्ड देते भी रहते हैं और सदा देते रहेंगे, क्योंकि याद द्वारा ही अनुभवों का अधिकार प्राप्त होता है।

भाषण ही सिर्फ सेवा का साधन नहीं है, अनुभव द्वारा भी प्रभावित कर सकते हो, अनुभव की टापिक सबसे ज्यादा अट्रैक्ट करने वाली होती है। सेवा जरूर करनी है, जैसे भी करो। सब सबजैक्ट में मार्क्स लेनी हैं, अगर एक भी कम रह गई तो पास विद आनर कैसे होंगे, इसलिए सब सबजैक्ट को कवर करो।

२. सारे कल्प में संगमयुग ही बहारी मौसम है—सदा बहार के समान खिले हुए पुष्प खुशबूदार रहे गुलाब अपने को समझते हो? जब बहार का मौसम आता है तो सब फूलों में रगत आ जाती है, खिल जाते हैं, सुन्दर लगते हैं, संगमयुग भी सारे कल्प के अन्दर बहारी मौसम है, जिसमें हरेक आत्मा रूपी पुष्प खिला

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

हुआ रहता है। तो ऐसे अपने को सदा खिला हुआ अर्थात् सदा रुहानी याद में रहने वाला रुहे गुलाब समझते हो ? कि कभी फूल से मुखड़ी भी बन जाते हो? जो पहले छोटी कली होती है वह बन्द होती है, फिर खिल जाती है तो फूल कहा जाता। तो सदा खिले हुए हो या कभी फूल या कभी कली। सदा खिला हुआ पुष्प वह है जो दूर से ही सबको आकर्षित करे। ऐसी रुहानियत है ? जो भी सम्पर्क में आए उसको यह रुहानी खुशबू आकर्षित करे—खिले हुए फूल ही किसी को भेंट किये जाते। बापदादा के ऊपर भी खिले हुए फुल ही बलिहार होते हैं। जो सच्चे भक्त होते हैं वह कभी देवताओं पर सड़े हुए फूल नहीं चढ़ायेंगे, अच्छे खिले हुए देवताओं पर भेंट करेंगे। तो ऐसे खिले हुए रुहानी गुलाब हो जो बाप के ऊपर बलिहार हो सकें। सदा यह याद है कि हम किस बागबान के बगीचे के फूल हैं। डायरेक्ट बाप फूलों को अपने स्नेह का पानी दे रहे हैं, तो कितने लकी हो गये !

बापदादा सदा हर बच्चे को देख क्या सोचते ? कि हर बच्चा विश्व के मालिक बने, हद के नहीं, स्टेट के नहीं लेकिन विश्व के। विश्व का मालिक कौन बनेंगे ? जो विश्वकल्याणकारी होंगे ? तो आप सब कौन हो विश्व पर राज्य करने वाले या स्टेट पर ? जो विश्व पर राज्य करने वाले होंगे वह सदा बेहद की स्थिति में स्थित होंगे---सम्बन्ध, संस्कार, स्वभाव सब बेहद में होंगे, हद नहीं होगी। हद की प्रवृत्ति में अपना ज्यादा समय देते हो या बेहद में ? बनना है बेहद का मालिक और समय देते हद में—तो क्या होगा ? बेहद के मालिक बनने वाले बेहद की सेवा में जरूर लगेंगे। हद निमित्तमात्र, सारा अटेन्शन बेहद की सेवा में। बेहद में जाकर सेवा करो, सर्विस में नया मोड़ लाओ। बहुत समय से दिल में जो प्लैन हैं वह प्रैक्टीकल में लाओ। इस वर्ष की योजना बनाओ—कि इतने सेन्टर खोलने हैं—हैन्डस भी आटोमैटिकली निकल आते हैं। वहाँ के ही हैन्डस तैयार करो। अच्छा—ओमशान्ति

३-२-७६

सर्व पर रहम करो, 'वहम' और 'अहम' भाव को मिटाओ

विश्व कल्याणकारी, राज्य भाग्य प्राप्त करने वाली, देव पद प्राप्त करने वाली आत्माओं प्रति बाबा बोले—

बापदादा सभी बच्चों को सम्पन्न स्वरूप, विश्व कल्याणकारी रूप में देख रहे हैं। वर्तमान समय अन्तिम स्वरूप वा अन्तिम कर्त्तव्य विश्व कल्याण का ही है। इस अन्तिम स्वरूप में स्थित रहने के लिए हरेक ब्राह्मण यथाशक्ति पुरुषार्थ कर रहे हैं। लक्ष्य सबका एक ही विश्व कल्याण करने का है लेकिन कोई अभी तक स्व कल्याण में ही लगे हुए हैं, और कोई स्वदेश के कल्याण करने में लगे हुए हैं। बहुत थोड़े देहद के बाप समान बेहद अर्थात् विश्व की सेवा में अथवा विश्व कल्याणकारी स्वरूप में स्थित रहते हैं। विश्व कल्याणकारी श्रेष्ठ आत्मा की निशानी क्या होगी ?

१. विश्व कल्याणकारी जानते हैं कि समय कम है और कार्य महान है इसलिए विश्व कल्याणकारी हर सैकेण्ड वा संकल्प विश्व कल्याण के प्रति ही लगायेंगे।

२. तन मन और प्राप्त धन सदा विश्व सेवा में अर्पण करेंगे।

३. उनके मस्तक और नयनों में सदा विश्व की सर्व आत्मायें स्मृति वा दृष्टि में होंगी कि इन अप्राप्त आत्माओं भी तृप्त आत्मा कैसे बनायें। भिखारी आत्माओं को सम्पन्न बनायें। वंचित हुई आत्माओं को सम्पर्क और सम्बन्ध में कैसे लायें। दिन-रात

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

27.6.93 प्रात:क्लास ओम् शान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे–प्रतिज्ञा करो हम पास विद ऑनर बनकर दिखायेंगे, कभी भी माँ-बाप में संशयबुद्धि नहीं बनेंगे, सदा सपूत बन श्रीमत पर चलेंगे"

प्रश्न:- माया की बॉक्सिंग में तुम बच्चों को किस बात की बहुत सम्भाल करनी है?

उत्तर:- बॉक्सिंग करते कभी भी मात-पिता में संशय न आ जाये, इसकी बहुत सम्भाल करना। अशुद्ध अहंकार वा अशुद्ध लोभ व मोह आया तो पद भ्रष्ट हो जायेगा। तुम्हें बेहद के बाप से स्वर्ग का वर्सा लेने का शुद्ध लोभ और एक बाप में ही पूरा मोह रखना है। जीते जी मरना है। बस, हम एक बाप के हैं, बाप से ही वर्सा लेंगे, कुछ भी हो जाये–अपने आपसे प्रतिज्ञा करो। मातेले बनो तो बेहद की प्राप्ति होगी। संशय आया तो पद गँवा देंगे।

गीत :- तुम्हारे बुलाने को जी चाहता है— ओम् शान्ति। ओम् का अर्थ तो बिल्कुल ही सहज है—आई एम आत्मा, आई एम साइलेन्स। जरूर आत्मा तो इमार्टल है। यह कौन समझाते हैं? बेहद का बाप।

a बच्चे तो बहुत हैं। उनमें से भी कोटों में कोई, कोई में भी कोई समझते हैं। बच्चे जानते हैं कि बेहद का बाप, बेहद सुख का वर्सा देते हमको लायक बना रहे हैं। हम सो पूज्य देवी-देवता, लायक विश्व के मालिक थे। भारत सोने की चिड़िया था। उस समय का भारत हाईटयस, हॉ-फन 100% सालवेन्ट था—यह बाप समझाते हैं। बरोबर हम कितने लायक थे। विश्व के मालिक थे। अब फिर बाप सारे विश्व पर राज्य करने का अधिकारी बनाते हैं। माया ने इतना तो कंगाल बना दिया है जो कौड़ी की भी कीमत नहीं रही है, अनराइटियस काम ही करते हैं। राइटियस सिखलाने वाला एक बाप है, जिसको ट्रुथ भी कहते हैं। जिसके लिए तुम गाते थे—तुम मात पिता— उनके सम्मुख तुम बैठे हो और बेहद का वर्सा पाने का पुरुषार्थ कर रहे हो। तुम जानते हो हम उनके बने हैं। बाप भी कहते हैं—तुम हमारे बने हो। इस समय कोई भी मुझ बाप को नहीं जानते। कभी तो कहते हैं नाम-रूप से न्यारा है। कभी फिर सभी नाम रूपों में ले आते कि पत्थर-भित्तर सबमें परमात्मा है। अनेक धर्म, अनेक मतें हो गई हैं। इसलिए बाबा कहते हैं—इन सब देह के धर्मों को छोड़ो। आत्मा कहती है—मैं क्रिश्चियन हूँ, मुसलमान हूँ, इन देह के धर्मों को भूल जाना है। अब बाप कहते हैं—लाडले बच्चे। जब मम्मा-बाबा कहा जाता है तो मम्मा-बाबा को कभी कोई भूल नहीं सकते। यहाँ यह वन्डर है जो बच्चे ऐसे माँ-बाप, जिससे 21 जन्म का वर्सा मिलता है, उनको भूल जाते हैं। लौकिक माँ-बाप को तो जन्म बाई जन्म याद किया। अभी यह है तुम्हारा अन्तिम जन्म। तुम निश्चय करते हो—बरोबर वही बाप कल्प-कल्प आकर हमको देवता बनाते हैं। फिर भी ऐसे बाप को भूल क्यों जाते हो? बच्चे कहते हैं ड्रामा अनुसार कल्प पहले भी भूले थे। बाप के बन फिर छोड़ देते हैं। आश्चर्यवत् ईश्वर का बनन्ती, ज्ञान सुनन्ती, सुनावन्ती— फिर भी अहो मम् माया भागन्ती हो जाते हैं। लौकिक बाप से माया नहीं छुड़ाती है। हाँ, कोई-कोई बच्चे होते हैं जो बाप को फारकती दे देते हैं। पारलौकिक बाप तो तुम्हें स्वर्ग के लिए लायक बनाकर कितना भारी वर्सा देते हैं। वह हैं हद के मात-पिता, यह है बेहद का मात-पिता, जो तुमको स्वर्ग की बादशाही देते हैं। निश्चय होते

b हुए भी ऐसे बाप को फारकती क्यों देते हो? अच्छे-अच्छे बच्चे 5-10 वर्ष रहकर अच्छे-अच्छे पार्ट

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बजाते हैं, फिर हार खा लेते हैं । यह है युद्ध स्थल । बाप की याद तो कभी भी नहीं छोड़नी चाहिए । याद कम होने से बड़ा भारी नुकसान हो जाता है । बहुत बच्चों को माया ने जीत लिया । एकदम कच्चा खा गई । बड़े-बड़े अजगर जैसे को हप कर लिया । तुम महारथी बनते हो फिर माया गिराकर एकदम हप कर लेती है । अच्छे-अच्छे फर्स्ट क्लास ध्यान में जाने वाले, जिनके डायरेक्शन पर माँ-बाप भी पार्ट बजाते थे, आज वह हैं नहीं । क्या हुआ ? कोई बात में संशय आ गया ।

बाबा समझाते हैं निश्चयबुद्धि विजयन्ती, संशय बुद्धि विनशयन्ति । ऐसे फिर कितनी अधम-गति को पायेंगे । तुम यहाँ आते हो बाप से पूरा-पूरा वर्सा प्रिन्स-प्रिन्सेज का लेने । अगर आश्चर्यवत् भागन्ती हो गये तो फिर क्या पद रहेगा । प्रजा में भी जाकर कम पद पायेंगे । सजायें भी बहुत खानी होंगी । जैसे उस गवर्मेन्ट में भी चीफ जज आदि होते है ना । यहाँ तो सब एक ही हैं । बाप कहते हैं हम आते हैं तुमको पतित से पावन बनाने । अगर पूरा न बनें तो फिर पतित से भी पतित बन पड़ेंगे । सर्वशक्तिवान बाप का डिसरिगॉर्ड किया तो धर्मराज की फिर बहुत कड़ी सजा हो जायेगी । यह समझने की बातें है ना । तुम मात-पिता— कह फिर उनकी मत पर चलना है । श्री श्री की मत पर चलते योग में पूरा रहना है । तुम श्रेष्ठ थे । श्रेष्ठ सूर्यवंशी चन्द्रवंशी 21 जन्मों लिए महाराजा-महारानी बन जायेंगे । श्रेष्ठ बनने लिए श्री श्री की मत चाहिए । श्री श्री एक को ही कहा जाता है । देवताओं को भी सिर्फ श्री कहते हैं । इस समय तो आसुरी सम्प्रदाय हैं अर्थात् असुर ५ विकारों की मत पर चलने वाले । अब तुम बच्चों को मिलती है श्री श्री की मत । जिससे तुम श्री लक्ष्मी, श्री नारायण बनते हो । यह टाइटिल मिलते हैं । तुमको राज्य-भाग्य मिलता है ना । सतयुग-त्रेता में पवित्रता का ताज और रत्न जड़ित ताज रहता है । सूर्यवंशी चन्द्रवंशी को भी ताज दिखाते हैं । महाराजा-महारानी को ही ताज दिखाते हैं । प्रजा को तो नहीं दिखायेंगे । फिर द्वापर में जब पतित बनते हैं तो लाइट का ताज नहीं दिखायेंगे । पतित राजा-रानी पावन रानी-राजा की पूजा करते हैं । अभी तो दोनों ताज नहीं रहे हैं । ताज-लेस बन गये हैं । यह है प्रजा का प्रजा पर राज्य, जिसको पंचायती राज्य कहा जाता है । तुम पाण्डव हो, तुम्हें भी कोई ताज नहीं है । तुम कितना बुद्धिवान बन गये हो । मूल वतन, सूक्ष्म वतन, स्थूल वतन तथा सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को तुम जान गये हो । तुम जानते हो हम फिर से डबल सिरताज बन रहे हैं । हेल्थ-वेल्थ—दोनों मिल जाती
c हैं । बेहद का बाप हमको पढ़ा रहे हैं तो तुम हो गये पाण्डव गवर्मेन्ट के स्टूडेन्ट । भगवानुवाच—मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ । गीता में सिर्फ नाम बदल लिया है । संगम होने कारण यह भूल कर दी है ।

अभी तुमको बेहद के बाप से वर्सा मिलता है । सतयुग-त्रेता में तुम सुख पाते हो फिर तुम्हारे यादगार द्वापर से लेकर बनने शुरु होते हैं । यहाँ जो मरते हैं तो उनका यहाँ मृत्युलोक में ही यादगार बनाते हैं । जैसे नेहरु गया तो उनका यहाँ ही यादगार बनाते हैं । तुम्हारा यादगार अमरलोक में नहीं रहेगा । तुम्हारा
d यादगार पीछे द्वापर में चाहिए । तो द्वापर से यह सब बनने शुरु होते हैं जो तुम देखते हो । जगत अम्बा आदि देवी कौन है—कोई भी नहीं जानते । मालूम तो होना चाहिए ना । ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का मनुष्यों को पता होना चाहिए ना । लक्ष्मी-नारायण को भी पता नहीं रहता । बाप है नॉलेजफुल, हम उनके बच्चे मास्टर नॉलेजफुल बने हैं । सम्बरबार पुरुषार्थ अनुसार । बाप पवित्रता का सागर है, तुम भी बनते

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

हैं। आत्मा जो अपवित्र बन पड़ी है, सो पवित्र बनती हैं। बाकी गंगा स्नान से कोई पवित्र नहीं बन सकते। पतित-पावन एक ही बाप को कहा जाता है। तुम उनके सम्मुख बैठे हो। एक बार निश्चय हुआ सो हुआ। बाप को बच्चे थोड़ेही भूलते हैं। मर जाते हैं तो भी उनकी आत्मा को बुलाते हैं। फिर वह आकर बोलती है। यह ड्रामा अनुसार पार्ट होता है। तो वह आकर बातचीत भी करती है। ड्रामा में जो पास्ट हुआ वह नूँध है। ड्रामा को राइट-वे में जानना चाहिए। ऐसे नहीं, तकदीर में होगा तो पुरुषार्थ कर लेंगे। हम बैठे हैं तो पानी आपे-ही मुख में आकर पड़ेगा नहीं। हर एक बात में पुरुषार्थ फर्स्ट है। ऐसे ही तो कोई बैठ न सके। चुप हो बैठ जाए तो मर जाए। सन्यासियों का कर्म सन्यास है परन्तु जब तक कर्मेन्द्रियां हैं तब तक कर्म का सन्यास नहीं कर सकते। उठेंगे-बैठेंगे कैसे? आत्मा शरीर को चलाने वाली है। आत्मा में संस्कार रहते हैं। रात को अशरीरी बन जाती है। आत्मा कहती है मैं कर्म करते-करते थक जाती हूँ। इसलिए रात को रेस्ट लेते अशरीरी बन जाती हूँ। आत्मा ही खाती-पीती है। आत्मा इन आरगन्स से कहती है मैं—बैरिस्टर हूँ, फलाना हूँ। आत्मा बाप को बुलाती है। याद करती है—ओ गॉड फादर रहम करो। वह नॉलेजफुल, ब्लिसफुल है। उनके पास फुल नॉलेज है। यहाँ तो तुमको अधूरी नॉलेज है। ब्रह्माण्ड, सूक्ष्मवतन क्या है, ड्रामा कैसे रिपीट होता है, कहाँ जाते हैं, कैसे पुनर्जन्म लेते हैं, कितने जन्म लेते हैं—यह कोई नहीं जानते। तुम बच्चे पुरुषार्थ अनुसार जानते जाते हो। औरों को भी इस ज्ञान चिता पर बिठाकर वैकुण्ठ का रास्ता बताना है। और तो कोई जानते नहीं हैं। बाप समझाते हैं—बच्चे, बाप का हाथ नहीं छोड़ना। बाप को याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे। बाप को बच्चों को याद नहीं करना है। वह तो जानते हैं सब मेरे बच्चे हैं। सब मुझे याद करते हैं। निर्वाणधाम में मेरे साथ रहने वाले हैं। इसलिए भूले चूके भी बाप को भूलना नहीं है। कोई संशय नहीं लाना चाहिए।

अब तो बाप फरमान करते हैं—मामेकम् याद करो और वर्से को याद करो। कोई भी खिटपिट हो
e तो भी बाप को नहीं भूलना है। बाप को भूले तो बेड़ा गर्क हो जायेगा। दुश्मन भी तुम्हारे बहुत हैं। क्योंकि तुम खुद कहते हो कि इस रुद्र ज्ञान यज्ञ से विनाश ज्वाला प्रज्वलित हुई है। तुम तो साफ समझाते हो इस लड़ाई के बाद ही मुक्ति-जीवन्मुक्ति के गेट्स खुले थे। बहुत आत्मायें मुक्तिधाम में जाती हैं फिर आती हैं जीवन्मुक्ति में। पहले-पहले देवी-देवता धर्म वाले आते हैं और सभी अपना-अपना एक
f धर्म स्थापन करते हैं। बाप कहते हैं मैं पहले छोटा ब्राह्मण धर्म स्थापन करता हूँ। फिर साथ-साथ ब्राह्मणों को देवी-देवता बनाता हूँ। शूद्र जब तक ब्राह्मण न बनें तो दादे से वर्सा कैसे ले सकते। वर्णों में आना जरूर है। समझा जायेगा यह देवी-देवता कुल का दिखाई पड़ता है। जो इस कुल के हैं उनसे ही सैपलिंग लग रही है। तो बाप समझाते हैं—ऐसे मीठे बापदादा को कभी भूलना नहीं, जिसके लिए कहते हो तुम मात-पिता— तुम्हारी शिक्षा से हम बेहद 21 जन्म का सुख लेंगे। पुरुषार्थ कर ऊंच ते ऊंच पद पाना है। सपूत बच्चे प्रतिज्ञा करते हैं। बाबा हम पास विद आनर होकर दिखायेंगे। हम सूर्यवंशी राज्य-भाग्य जरूर लेंगे। बाप कहते हैं—अच्छी रीति सम्भालना। माया भी कम नहीं है। हर एक इतना पुरुषार्थ करो, जो स्वर्ग में सूर्यवंशी पद पाओ। अब पुरुषार्थ करेंगे तो कल्प-कल्प तुम्हारा ऐसा पुरुषार्थ चलेगा। तो बाबा कहते हैं—मीठे-मीठे बच्चे, जरा सम्भाल करो। संशय-बुद्धि कभी नहीं होना। लौकिक संबंध में

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

भी बच्चा कभी माँ-बाप में संशय ला नहीं सकता । इम्पासिबुल है । यहाँ भी बाबा बुद्धि में याद रहना चाहिए । यह है बेहद का सुख देने वाला बाबा । फिर भी माया तुम बच्चों को बॉक्सिंग में हरा देती है । बाप कहते हैं कभी अशुद्ध अहंकार में वा अशुद्ध लोभ में नहीं आना है । वास्तव में तुम बहुत लोभी हो । परन्तु शुद्ध लोभ है कि बेहद के बाप से हम स्वर्ग का वर्सा लेंगे । मोह भी शुद्ध है । एक बाप में पूरा मोह रखो । जीते जी मरना है । बस, हम तो एक बाप के हैं, बाप से ही वर्सा लेंगे, कुछ भी हो जाये—अपने से प्रतिज्ञा की जाती है । बेहद की प्राप्ति है । और जगह तो कुछ भी प्राप्ति होती नहीं । तो इसमें संशय नहीं आना चाहिए और बातों में संशय भले पड़ जाये परन्तु बाप के तो हो ना । बाप में संशय नहीं आना चाहिए । सौतेला उसे कहा जाता है जो पूरा पवित्र है । पतित को सौतेला कहेंगे । आगे चलकर तुम समझते जायेंगे—यह अगर इस समय शरीर छोड़े तो क्या पद पायेंगे । अच्छा !

मात-पिता बापदादा का मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति याद, प्यार और गुडमार्निंग । रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते ।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1- ड्रामा को अच्छी रीति समझकर चलना है । पुरुषार्थ करके प्रालब्ध बनानी है । ड्रामा कहकर बैठ नहीं जाना है ।

2- कभी भी बाप का डिसरिगॉर्ड नहीं करना है । कदमे-कदम उनकी श्रीमत पर चलना है । बाप में कभी संशय नहीं लाना है ।

विशेषता :- विश्व सेवाधारी-परोपकारी

ब्राह्मण जीवन में एक पवित्रता का और दूसरा विश्व सेवाधारी बनने का ताज धारण करने से ही विश्व महाराजन का ताज प्राप्त होता है । विश्व सेवाधारी आत्मायें तन-मन-धन-जन से सदा सेवा पर तत्पर रहने के उत्साह और उमंग में रहती हैं । अभी का उत्साह ही भविष्य का उत्सव बन जाता है । तो चेक करो—आदि से अब तक वा अब से अन्त तक अपने तन को कितना समय सेवा में समर्पण किया ? मन को कितना समय याद और मन्सा सेवा में लगाया ? धन को सर्व प्रति सेवा में निःस्वार्थ भाव से लगाते हैं या स्वार्थ से लगाते हैं ? जो हद के बजाए सदा बेहद में लगाते हैं वही विश्व सेवाधारी सो राज्य अधिकारी बनते हैं ।

अव्यक्त स्थिति बनाने के लिए हर दृश्य साक्षी होकर देखो और हर्षित रहो

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

27-9-97 प्रात मुरली ओम् शान्ति "दादादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - मतभेद में आकर आपस में रूठकर पढ़ाई मत छोड़ो, पढ़ाई छोड़ने से माया अजगर के पेट में चले जायेंगे"

प्रश्नः- यह कॉमन सतसंग न होने के कारण बाप को किन बातों में बच्चों को बार-बार सावधान करना पड़ता है?

उत्तरः- यह दुनिया के सतसंगों की तरह सतसंग नहीं, यहाँ तो पावन बनने की शिक्षा मिलती है। पावन बनने में माया के विघ्न पड़ते हैं। इसलिए बाप को बार-बार सावधान करना पड़ता हैं। बच्चे कभी, कुछ भी हो-तुम सुख-दुःख, निंदा-स्तुति सुनते पढ़ाई को कभी नहीं छोड़ना। २- अपने को मिया मिट्ठू समझ किसी को रूलाना मत करना। माया बड़ी चंचल है। अगर बाप से रूठकर पढ़ाई छोड़ी तो माया माथा मूढ़ लेगी। गृहचारी बैठ जायेगी, इसलिए श्रीमत लेते रहना। बापदादा की कभी टीका-टिप्पणी नहीं करना।

गीतः- मरना तेरी गली में... ओम् शान्ति।

यह तो बच्चे जानते हैं, कहते हैं जब हम आपके बने हैं यह पुरानी दुनिया तो खत्म होनी ही है। यह बेहद के रावण की लंका है जो विनाश होनी है। वह जो सीलोन में लंका दिखाते हैं वह तो बात ही बिल्कुल झूठी है। सीलान एक टापू (बेट) है — समुद्र के बीच में। बेहद का बाप समझाते हैं कि यह सारी दुनिया है समुद्र के ऊपर, आलराउन्ड समुद्र है। दिखाते हैं ना — वास्कोडिगामा ने आलराउन्ड चक्र लगाया तो गोया धरती पानी के ऊपर
a उहरी हुई है। बेट हो गया ना। यह बेहद की खाड़ी है। रावण का राज्य सारे बेहद के आइलैण्ड पर है। यह बेहद की लंका है। सिर्फ सिलान नहीं है। वह समय तो अब है ना। वह शास्त्रों में कितने गपोड़े लगाये हैं। हम भी समझते थे, शायद ऐसा हुआ होगा। कुछ भी ख्याल नहीं चलता था। विचार करें तब तो ख्याल चले ना। बुद्धि बिल्कुल लॉकप थी। अब बुद्धि का ताला खुला है। मनुष्य तो समझते हैं बन्दर सेना ली, उन्होंने पत्थर उठाये, पुल बनाई, आग लगाई..... क्या-क्या बातें बैठ बनाई हैं। आग तो इस समय सारी दुनिया को लगती है। यह अविनाशी बाप की अविनाशी जन्म भूमि है, इसलिए इसको अविनाशी खण्ड कहा जाता है।
b बराबर भारत प्राचीन था, अब तुम्हारी बुद्धि में बैठा है। बराबर भारत अविनाशी खण्ड है, बाकी जो इस समय खण्ड हैं वह सब खत्म हो जायेंगे, विनाश ज्वाला में। यह विनाश ज्वाला इस यज्ञ से प्रज्वलित हुई है। लड़ाई शुरू यहाँ से ही हुई है। अभी तो यह छोटी-छोटी रिहर्सल है। तुम्हारी बुद्धि में है कि सारी दुनिया में ही रावणराज्य है। इसका अब अन्त है और राम राज्य की आदि है। यह बातें और किसकी बुद्धि में आ न सकें। तुम थोड़े से ही ब्राह्मण जानते हो। समझते भी हैं कि अभी यह सारी दुनिया खत्म हो जायेगी। हम तुम्हारे गले का हार बन जायेंगे, फिर नई दुनिया में आयेंगे। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जाग्रॉफी हूबहू रिपीट होती है। कितना अच्छा यह चक्र है। कलियुग अन्त और सतयुग आदि, इस समय सभी धर्म भी जरूर हैं। हिस्ट्री मस्ट रिपीट, यानी कलियुग के बाद सतयुग जरूर होना है। जैसे दिन के बाद रात, रात के बाद दिन जरूर आता है। ऐसे हो न सके कि रात न आये। बाप सब राज आकरके

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

समझाते है। हम एक्टर 84 जन्म कैसे लेते हैं वह भी तो जानना चाहिए। 84 लाख जन्म की तो बात ही नही है। कल्प की आयु तो 5 हजार वर्ष है। वो लोग तो तुमको कहते है कि शास्त्रों मे तो ऐसा है नही, यह तो तुम्हारी कल्पना है। न जानने के कारण तो ऐसे ही कहेंगे ना। शास्त्र तो पढ़ते रहते हैं, उनका कोई तोड़ तो है नहीं। बाबा कहते है सतयुग मे यह शास्त्र, कहानियाँ, नॉवल्स आदि तो होंगी नही। वहाँ तो भारत बिल्कुल सचखण्ड बन जाता है। भारत खण्ड सबसे बड़े ते बड़ा तीर्थ है। यहाँ सोमनाथ का मन्दिर कितना भारी है। ऐसा मन्दिर कब, कहाँ भी बन नही सकता। फिर भी यह मन्दिर आदि बनेंगे। जब भक्तिमार्ग शुरू होगा तब बनाते हैं और कोई दे बना न सके। तुम संवत भी बता सकते हो। आज से फलाने टाइम से भक्ति शुरू होगी। पहले लक्ष्मी-नारायण ही पुजारी बनेंगे, सिंगल ताज होगा। शिवबाबा का सोमनाथ मन्दिर बनायेंगे। फिर से मुहम्मद गजनवी आदि आकर लूटेंगे। यह बातें तुम बच्चों को बाप ही बैठ समझाते हैं। कहते भी हैं भगवान आया—गीता का ज्ञान इसने सुनाया जो सारा सागर स्याही बनाओ, सारा जंगल कलम बनाओ तो भी लिख न सके और उन्होंने सीक फिर कितनी छोटी बना दी है। गीता लाकेट में भी होती है। वैल्युबुल चीज है ना। इतना लव गीता पर रहता है। बाबा ने इतनी छोटी सोनी डिब्बी में डाल प्रेजन्ट भी दी है। अब तुम बच्चे समझते हो कि ज्ञान का सागर अथाह ज्ञान देते हैं और अन्त तक देते ही रहेंगे। हम यह मुरली इक्ट्ठी कर सकेंगे क्या? यह रखने की चीज़ ही नहीं है। शास्त्र आदि तो फिर भी भक्ति मार्ग के काम में आते हैं। हम जो लिखते हैं वह फिर क्या काम में आयेंगे। कहाँ तो हमारी 2-4 हजार मुरलियां, कहाँ उन्हों की करोड़ों के अन्दाज में गीतायें बनती हैं सब भाषाओं में। सर्वशास्त्र मई शिरोमणी गीता का बहुत मान है। गीता शास्त्र आदि कितने पढ़ते होंगे। बाप समझाते हैं — यह ज्ञान जो तुमको मिलता है यह बिल्कुल ही नया है। इसका पुस्तक तो है नहीं। भगवान राजयोग कैसे सिखाते है। यह अब तुम ब्राह्मण ही जानते हो। तुम्हारे में भी इस ज्ञान के नशे में रहने वाले बहुत थोड़े हैं। आज इस नशे में रहते हैं, कल भूल जाते हैं। बाप को भूल जाते है तो ज्ञान को भी भूल जाते हैं। बाप को फारकती दी तो खलास। बाप का बनकर अगर विकर्म में गये तो गला घुट जायेगा, कुछ भी बोल नही सकेंगे। जो बहुत अच्छा-अच्छा प्रचार करते थे वह आज है नहीं। कोई ब्रह्माकुमार कुमारी का आपस में मतभेद हुआ तो बाप पर गुस्से हो जाते हैं कि बाबा इनको समझाते नहीं। आखरीन पढ़ाई ही छोड़ देते है। इसलिए बाप कहते है कि महामखे देखना हो तो यहाँ देखो। लिखकर भी देते है कि बाबा मैं आपका हूँ। आप से हम सदा सुख का वर्सा अविनाशी लेंगे। फिर फारकती दे देते। डायआर्स ट दते हैं। अच्छी-अच्छी बच्चियां थी आज वह है नहीं, तो वन्डर है ना, माया ऐसा डसती है जो बड़े-बड़े महारथी जिनको हनुमान कहते थे परन्तु वह आज है नहीं। अजगर के पेट में चले गये। मुख से कुछ कह न सके। यह अविनाशी ज्ञान सुना न सके। बापदादा की राय पर टीका-टिप्पणी करने लग पड़ते है। बहुत समझाया जाता है कि कुछ सुधर जाओ, इसमें ही कल्याण है। परन्तु सुधरते नहीं। बहुत अच्छे-अच्छे बच्चे चले गये। आज भी बहुत ऐसे बच्चे है जो किनारे पर खड़े है। ब्लड से प्रतिज्ञा लिखकर भी छोड़ देते हैं। बच्चों को तो बाप की एक श्रीमत पर चल बाप से पूरा वर्सा लेना चाहिए।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बाप समझाते रहते है--कुछ भी हो दु:ख-सुख, स्तुति-निंदा आदि कोई करे तुम पढ़ाई को तो ना छोड़ो। कोई किसकी निंदा भी करते हैं क्योंकि बुद्धि में तो ज्ञान है नहीं। जानते नही हैं कि यह छोटा भाई है वा बड़ा। यह तो बाप ही जाने। अपने मुँह मिया मिट्ठू नहीं बनना है। माया बड़ी चंचल है। देह-अभिमान वालों का माथा ही एकदम मूड लेती है। बाबा बच्चों को खबरदार करते रहते हैं। कहाँ न कहाँ माया वार करती रहेगी - अगर श्रीमत पर नहीं चलेंगे तो। यह कोई कॉमन सतसंग थोड़ही है।

तुम कितना धीर्य से बैठ समझाते हो। यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। कैसे तुम स्वदर्शन चक्रधारी बने हो। बाप कहते हैं ब्राह्मण कुल भूषण स्वदर्शन चक्रधारी। शंख, चक्र, गदा, पदमधारी - तुमको कहते हैं। वह कहेंगे क्या देवताओं की महिमा अपने बच्चों को दे रखी है। बाप कहते हैं हे स्वदर्शन चक्रधारी, हे कमल फूल समान पवित्र बनने वाले, हे गदाधारी--यह बाप ही समझाते हैं। दुनिया क्या जाने। कहते भी है सर्व का सद्गति दाता एक है। गाते भी हैं ज्ञान अंजन सतगुरू दिया...अर्थात् ब्रह्मा की रात खत्म होती है। ज्ञान सूर्य प्रगटा, ब्रह्मा की रात पूरी होती फिर दिन शुरू हो जाता है। परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा नया ज्ञान देते है। आगे तो तुम कुछ भी नहीं जानते थे। न आत्मा को, न परमात्मा को, न रचता को और न रचना को जानते थे। बिल्कुल ही तुच्छबुद्धि बन पड़े थे। तुमको क्या बनाया था! तुम स्वर्ग के मालिक थे ना। फिर 84 जन्म लेते-लेते अन्त तो आयेगा ना। अब तुम्हारी चढ़ती कला है। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम विश्व के मालिक बन जायेंगे। विवेक भी कहता है कि परमपिता परमात्मा है स्वर्ग का रचयिता, तो हम स्वर्ग में क्यों नहीं है! मनुष्यों की बुद्धि में नही आता कि भगवान ने तो नई सृष्टि स्वर्ग रचा, जहाँ देवी-देवता राज्य करते थे। 5 हजार वर्ष पहले स्वर्ग था। अब फिर भगवान आये हैं स्वर्ग की स्थापना करने। यह बातें बुद्धि में अच्छी रीति बैठ जाएं तो भी अहो सौभाग्य। माया ऐसी है जो बिल्कुल ही पुरूषार्थ करने नही देती। नाक से पकड़ घूंसा मार एकदम बेहोश कर देती है। बॉक्सिंग है ना। बाबा कहते हैं माया एक सेकेण्ड में गिरा देती है। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति से सेकेण्ड में जीवनबंध बन पड़ते है। फारकती दे देते है, खत्मा। निश्चय हुआ --यह बादशाही लो। संशय हुआ खलास। बड़ा वन्डरफुल खेल है। बाबा कहते हैं अमृतवेले उठ विचार सागर मंथन करो और तो टाइम सारे दिन में मिलता नहीं है। रात को तो वायुमण्डल खराब रहता है। भक्ति भी सवेरे उठकर करते हैं। तुम बच्चों को मालूम है कि बाबा एक दो बजे उठकर मुरली लिखते थे, जो तुम पढ़कर और चलाते थे। फिर बाबा बैठ सुनते थे कि देखें कैसे चलाते हैं। यह सब तो शिवबाबा का ही कमाल था। कितने अच्छे-अच्छे बच्चे थे, चले गये। आज है नहीं। माया ने एकदम गिरपित कर दिया। बाप ना वर्सा दे रहे हैं। तो बच्चों को पूरा पुरूषार्थ कर वर्सा लेना चाहिए। अच्छी रीति खुद भी समझते है। बाप भी समझते है। बाप का हाथ छोड़ देते हैं। सब कहेंगे तुमने बी.के.को छोड़ दिया है। तुमको तो निश्चय था ना कि हम बेहद का वर्सा पा रहे हैं फिर क्या हुआ जो मुरली भी नही सुनते हो। फिर तो बाप को भी नहीं याद करने होंगे। फिर वह याद आदि सब उड़ जाती है। ऐसी दुर्गति शल किसी बच्चे की न हो। बाप तो समझ सकते है ना -- यह बच्चा बड़ा खराब हो गया है। अच्छे-अच्छे बच्चे

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

भी संगदोष में खराब हो पड़ते हैं। बाबा कहते है कि फर्स्टक्लास बच्चे ही विजय माला के मणके बन सकते हैं। कई बच्चे लिखते है कि बाबा हम आपकी माला का मणका जरूर बनेंगे। बाबा तो कहते है तुम बनो – अहो सौभाग्य। बाप भी चलन से समझ जायेंगे। सर्विस से ही बच्चों की वफादारी, फरमानबरदारी सिद्ध होती है। अति मीठा बनना चाहिए। सम्मुख सुनने से वैराग्य आता है। ऐसा फिर कभी नहीं करेंगे, यह करेंगे। यहाँ से बाहर निकला बस खलास। सब भूल जाते हैं। कितनी वन्डरफुल बातें है।

बाबा के तो दिन-रात ख्यालात चलते रहते हैं। प्रोजेक्टर में गोला इतना बडा दिखाई पडना चाहिए जो मनुष्य दूर से ही एकदम अच्छी रीति पढ़ सकें। बड़ी दीवारों पर इतना बड़ा दिखाई पड़े। क्लीयर हो। एक-एक चित्र स्लाइड से इतना बड़ा दिखाई पड़े जो सामने कोई भी पढ सके। दो गोले भी इतने बडे दिखाई पडे। यहाँ से भक्ति मार्ग शुरू होता है। पहले होती है—अव्यभिचारी भक्ति, फिर है व्यभिचारी भक्ति। रात को यही ख्यालात बाबा को चलते रहते हैं। हम तो यहाँ बैठे है, चित्र वहाँ बन रहे है। त्रिमूर्ति भी बहुत बड़ा होना चाहिए—जो कोई भी दूर से पढ सके। बाबा डायरेक्शन तो देते रहते हैं। लिखत भी इनमें क्लीयर हो। ब्रह्मा है सपूत बच्चा। ब्रह्मा से कोई सवाल पूछे तो जवाब नहीं दे सकते है क्या? भल शिवबाबा तो जानते हैं परन्तु मैं भी तो समझा सकता हूँ ना। बाबा ने राइटहैण्ड बनाया है। कुछ तो समझा होगा ना।

अच्छा—मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1- अमृतवेले उठ विचार सागर मंथन करना है। कभी भी संशयबुद्धि बन, संगदोष में आकर पढाई नहीं छोड़नी है।

2- माला का मणका बनने के लिए वफादार, फरमानबरदार बनना है। अपनी चलन रॉयल रखनी है। बहुत-बहुत मीठा बनना है।

वरदान:- अपने भाग्य की स्मृति से सदा खुशी में डांस करने वाले खुशनसीब भव

अमृतवेले से रात तक आप ब्राह्मण बच्चों को जो श्रेष्ठ भाग्य मिला है, उस भाग्य की लिस्ट सदा सामने रखो और यही गीत गाते रहो – वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य, जो भाग्य-विधाता ही अपना हो गया। इसी नशे में सदा खुशी की डांस करते रहो। कुछ भी हो जाए, मरने तक की बात भी आ जाए लेकिन खुशी नहीं जाए। शरीर चला जाए कोई हर्जा नहीं लेकिन खुशी नहीं जाए।

स्लोगन:-

हर्षितमुख रहना है तो साक्षीपन की सीट पर बैठ, दृष्टा बनकर हर खेल को देखते चलो।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

11.8.91 प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे-रोज अपने आपसे पूछो कि मैं आत्मा कितना शुद्ध बनी हूँ, जितना शुद्ध बनेंगे उतना खुशी रहेगी, सेवा करने का उमंग आयेगा"

प्रश्न:-हीरे जैसा श्रेष्ठ बनने का पुरुषार्थ क्या है?

उत्तर:-देही अभिमानी बनो, शरीर में जरा भी मोह न रहे। फिकर से फारिग हो एक बाबा को याद में रहो यही श्रेष्ठ पुरुषार्थ हीरे जैसा बना देगा। अगर शरीर में मोह है तो समझो अवस्था कच्ची है। बाबा से दूर हैं। (तुम्हें इस शरीर को सम्भाल भी करनी है क्योंकि इस शरीर में रहते कर्मातीत अवस्था को पाना है।)

गीत:-मुखड़ा देख ले.. ओमशान्ति। बाप बच्चों को समझाते हैं कि जिसके योगबल से पाप कटते हैं, उनको खुशी का पारा चढ़ जाता है। अपनी अवस्था को आपेही बच्चे जान सकते हैं। जब अवस्था अच्छी होती है तो सर्विस का शौक बहुत अच्छा होता है। जितना2 शुद्ध होते जायेंगे उतना औरों को भी शुद्ध अथवा योगी बनाने का उमंग आयेगा। क्योंकि तुम राजयोगी वा राजऋषि हो। हठयोगी ऋषि-तत्व को भगवान मानते हैं। राजयोग ऋषि भगवान को बाप मानते हैं। तत्व को याद करने से उन्हों के कोई पाप नहीं कटते हैं। तत्व के साथ योग लगाने से कोई बल नहीं मिलता है। कोई भी धर्म वाले योग को जानते नहीं हैं। इसलिए कोई भी सच्चा योगी बन वापिस नहीं जा सकते। अभी तुम बच्चे अपनी अवस्था खुद भी जान सकते हो। आत्मा जितना बाप को याद करेगी उतना खुशी होगी। अपनी जांच रखनी है। बच्चे भी एक दो की अवस्था को, अपनी अवस्था को जान सकते हैं। देखना है हमारा कोई शरीर में भान तो नहीं है। देहअभिमान है तो समझें हम बहुत कच्चे हैं। बहुत दूर हैं। बाप फरमान करते हैं बच्चे तुम्हें अब हीरे जैसा बनना है। बाप देही अभिमानी बनाते हैं। बाप को देह अभिमान होता नहीं। देह अभिमान होता है बच्चों को। बाप को याद से तुम देही अभिमानी होंगे। अपनी जांच करते रहो, हम कितना समय याद करते हैं। जितना याद करेंगे उतना खुशी का पारा चढ़ेगा और अपने को लायक बनायेंगे। ऐसे भी मत समझना कि कोई बच्चे कर्मातीत अवस्था को पहुँच गये हैं। नहीं, रेस चल रही है। रेस जब पूरी होगी तब फाइनल रिजल्ट होगी। फिर विनाश भी शुरू हो जायेगा। तब तक यह रिहर्सल होती रहेगी जब तक कर्मातीत अवस्था आ जाए। अपन किसी को बुराई नहीं कर सकते। अन्त में ही सबका पता पड़ेगा। अभी तो थोड़ा टाइम पड़ा है। यह दादा भी कहते हैं मीठे बच्चे अब थोड़ा समय पड़ा है। इस समय एक भी कर्मातीत अवस्था को पा न सकें। बीमारी आदि होती है- इसको कर्मभोग कहा जाता है। भोगना का और किसको पता नहीं पड़ता है। वह अन्दर की थोड़ा होती है। अभी एकरस अवस्था किसी की बनी नहीं है। जितनी कोशिश करते हैं उतना विकल्प तूफान बहुत आते हैं। तो बच्चों को कितनी खुशी रहनी चाहिए। विश्व का मालिक बनना कोई कम बात है क्या? मनुष्य साहूकार हैं बड़े2 बंगले हैं, तो खुशी रहती है क्योंकि सुख बहुत है। अभी भी तुम बाप से अथाह सुख लेते हो। जानते हो बाबा से हम राजाई लेंगे। शान्ति में इतना खुशी नहीं होती, जितनी धन में खुशी होती है। (सन्यासी घरबार छोड़ जाए जंगल में रहते थे। कभी पैसा हाथ में नहीं रखते थे। सिर्फ रोटी लेते थे। अभी तो कितने धनवान हो गये हैं। सबको पैसे की चिंता बहुत है।) वास्तव में राजा को प्रजा का सोना रहता है इसलिए लड़ाई का सामान रखते हैं। सतयुग में तो लड़ाई आदि की बात होती नहीं। अभी तुम बच्चों को खुशी होती है- हम अपनी राजाई में जाते हैं। वहाँ इस की को ? बात नहीं होती। टैक्स आदि की बात नहीं। यह फिकरात यहाँ रहती है। करोड़पतियों को भी फिकरात रहती है। धनवानों को धन की फिकरात, शरीर की फिकरात रहती है। गाया जाता है फिकर से फारिग स्वामी.. तुम जानते हो फिकर से फारिग होने के लिए अभी हम इतना पुरुषार्थ करते हैं। 21 जन्म लिए कोई फिर फिकरात नहीं रहेगी। बाबा को याद करने से तुम बहुत अडोल रहेंगे। (रामायण की कथा भी तुम्हारे पर है। तुम ही महावीर बनते हो) आत्मा ही बनती है। आत्मा कहती है हमको रावण हिला नहीं सकता। यह अवस्था बिछड़ी को आयेगी। अभी तो कोई भी हिल जायेंगे। फिकरात रहेगी। जब विश्व में लड़ाई लगेगी तब जानेंगे अब टाइम आ गया है। जितना बाप को याद करने का पुरुषार्थ करेंगे उतना फायदा होगा।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

पुरुषार्थ करने का अभी ही समय है। फिर तो विनाश को धूमधाम होगी। अब तो शरीर में भी मोह रहता है ना। बाबा खुद कहते हैं शरीर को सम्भाल रखो। अन्तिम शरीर है, इसमें ही पुरुषार्थ कर कर्मातीत अवस्था को पाना है। जीते रहेंगे, बाप को याद करते रहेंगे। बाप समझाते हैं बच्चे जीते रहो। जितना जियेंगे उतना बाप को याद कर ऊँच वर्सा लेंगे। अभी तुम्हारी कमाई होती रहती है। शरीर को निरोगी तन्दुरुस्त रखो। गफलत नहीं करनी है। खान-पान को सम्भाल रखेंगे तो कुछ नहीं होगा। एकरस चलन से शरीर भी तन्दुरुस्त रहेगा। यह अमूल्य तन है। इसमें पुरुषार्थ कर देवी देवता बनते हो तो बलिहारी इस समय की है। खुशी रहनी चाहिए। जितना बाप और वर्से को याद करेंगे उतना नारायणी नशा चढ़ा रहेगा। बाप को याद से ही तुम ऊँच ते ऊँच पद पायेंगे। देखना है हम कितना खुशी में कितना फख्र में रहते हैं। गरीबों को तो और ही खुशी रहनी चाहिए। साहूकारों को तो धन का फिकर रहता है। तुम्हारे में कुमारियों को तो कोई फिकर नहीं है। हाँ कोई के मित्र सम्बन्धी गरीब हैं, तो सम्भाल रखनी पड़ती है। जगाते भी रहना है। अगर नहीं जगाते हैं तो फिर कहाँ तक मदद करते रहेंगे। बाबा कहते हैं ना- तुम सर्विसएबुल खुद बनो वा स्त्री को रूहानी सर्विस में दो तो बच्चों की सर्विस में बाबा मदद कर सकते हैं। तुम हो बाबा के मददगार। मदद तो सबको चाहिए ना। अकेला बाप भी क्या करेगा। कितने को मन्त्र दे कितने को देंगे। हम तुमको देते हैं- तुमको फिर औरों को कलम लगाना है। बच्चों को कहते रहते हैं जितना हो सके मददगार बनो। मन्त्र देते जाओ। तुम्हारे शास्त्रों में भी है कि सबको पैगाम दिया था कि बाप आये है वर्सा लेना है तो बाप को याद करो। देहधारियों को याद नहीं करो। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करेंगे तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और वर्सा मिल जायेगा। गीता तो बहुत सुनते सुनाते हैं। उसमें प्रसिद्ध अक्षर है मनमनाभव। बाप को याद करो तो मुक्ति को पायेंगे। सन्यासी भी यह पसन्द करेंगे। मध्याजी भव अर्थात् जीवनमुक्ति। बच्चे बाप के बनते हैं तो बाप कहते हैं -बच्चे तुम्हारी आत्मा पतित है, पतित चल नहीं सकेंगे। यह समझने की बातें हैं। तुम भारतवासी ततोप्रधान थे, तमोप्रधान बने अब फिर ततोप्रधान बनना है तो बाप कहते हैं पुरुषार्थ करो तो ऊँच पद मिलेगा। भक्ति तो जन्म जन्मान्तर करते आये हो। तुम जानते हो- पहले2 अव्यभिचारी भक्ति शुरू हुई। अभी जितनी व्यभिचारी भक्ति है। शरीरों की भी पूजा करते हैं। उनको भूत पूजा कहा जाता है। शरीर 5 भूतों का बना हुआ है। तो जिनकी पूजा होती है वह है भूत पूजा। देवतायें फिर भी पवित्र हैं। परन्तु इस समय तो सब तमोप्रधान हैं। तो पूजा भी तमोप्रधान होती जाती है। अभी बाप को याद करना है। भक्ति का अक्षर कोई नहीं बोलना है। हाय राम यह भी भक्ति का अक्षर है। ऐसे कोई प्रकार नहीं करनी है। इसमें कुछ भी उच्चारण करने की बात नहीं। ओमशान्ति भी घड़ी2 नहीं कहना है। शान्ति माना अहम् आत्मा शान्ति रूप हैं। सो तो है ही। इसमें बोलने की बात नहीं रहती। दूसरे कोई मनुष्य को कहेंगे ओमशान्ति। वह तो अर्थ जरा भी नहीं समझेंगे। वो लोग तो ओम् को बड़ी2 महिमा करते हैं। तुम तो अर्थ समझते हो फिर ओमशान्ति कहना भी फालतू है। हाँ एक दो से ऐसे पूछ सकते हो शिवबाबा को याद में हो? जैसे हम भी बच्चों से पूछता हूँ यह किसको शृंगार करती हो? बोलती है शिवबाबा के रथ को। यह शिवबाबा का रथ है ना। जैसे हुसैन का रथ होता है ना। घोड़े को शृंगार करते हैं। घोड़े का अर्थ नहीं समझते हैं। धर्म स्थापन करने वाले जो आते हैं उनकी आत्मायें पवित्र होती हैं। पुरानी पतित आत्मा धर्म स्थापन कर न सके। तुम धर्म स्थापन नहीं करते हो। शिवबाबा तुम्हारे द्वारा करते हैं। तुमको पवित्र बनाते हैं। वो लोग भक्ति मार्ग में बहुत शृंगार आदि करते हैं। यहाँ शृंगार पसन्द नहीं करते। बाप कितना निरहंकारी है। खुद कहते हैं हम बहुत जन्मों के अन्त के भी अन्त में आता हूँ। पहले सतयुग में होगा श्री नारायण। श्री लक्ष्मी से भी पहले श्री नारायण आयेगा। वह तो बड़ा होगा ना। इसलिए कृष्ण का नाम गाया हुआ है। नारायण से भी कृष्ण की महिमा ज्यादा करते हैं। कृष्ण की ही जन्माष्टमी मनाते हैं। नारायण का बर्थ डे नहीं मनाते। यह कोई नहीं जानते कि कृष्ण सो नारायण। नाम तो बचपन का ही चलेगा ना। फलाने ने जन्म लिया, उनका बर्थ डे मनाते हैं। इसलिए कृष्ण की ही मनाते हैं। नारायण का किसको पता नहीं। पहले2 शिवजयन्ती

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

फिर है कृष्ण जयन्ती फिर राम को , शिव के साथ गीता का भी जन्म होता है। शिवबाबा आते ही हैं बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में। बुजर्ग अनुभवी रथ में ही आते हैं। कितना अच्छा समझाया हुआ है। तो भी किसको बुद्धि में नहीं आता। बाप कहते यह ज्ञान प्राय: लोप हो जाता है। जब मैं आकर सुनाऊँ तब सुना सकते हो। अभी तुम बच्चे जानते हो हम भविष्य में एक्यूरेट पद पायेंगे। बाबा ने 2-3 प्रकार के सा० किये थे। यह बनूँगा, ताज वाला बनूँगा, पगड़ी वाला बनूँगा। 2-4 राजाई के जन्मों का सा० किया था। अभी तुम समझ सकते हो- इन बातों को दुनिया में और कोई समझ नहीं सकते। हाँ, इतना समझते हैं अच्छा कर्म करेंगे तो अच्छा जन्म मिलेगा। अभी तुम पुरुषार्थ ही भविष्य के लिए कर रहे हो। नर से नारायण बनने का। तुम जानते हो- हम यह पद पायेंगे। यह खुशी जास्ती उनको रहेगी जो कर्मातीत अवस्था को पाने का पुरुषार्थ करते रहते होंगे। कहते हैं बाबा हम तो ममा बाबा को फालो करेंगे तब तो तख्त पर बैठ सकेंगे। यह भी समझ चाहिए कितनी हम सर्विस करते हैं और कितना खुशी में रहते हैं। खुद खुशी में रहेंगे तो दूसरों को भी खुशी में लायेंगे। अन्दर कोई खराबी होगी तो दिल खाती रहेगी। कोई2 आकर कहते हैं- बाबा हमारे में क्रोध है। यह भूत है हमारे में। फिकर की बात हुई ना। भूत को नहीं देना चाहिए। क्रोध क्यों करें। प्यार से समझाना होता है। बाबा कोई पर क्रोध थोड़ेही करेंगे। शिवबाबा की महिमा है ना। बहुत फालतू झूठी महिमा भी करते हैं। मैं करता ही क्या हूँ। मुझे कहते हैं आकर पतित से पावन बनाओ। जैसे डॉक्टर को कहते हैं हमारी बीमारी दूर करो, वह दवाई दे इन्जेक्शन लगाते हैं। सो तो उनका काम ही है। बड़ी बात थोड़ेही है। पढ़ते ही हैं सर्विस के लिए। जास्ती पढ़ते हैं तो जास्ती कमाई करते हैं। बाप को तो कोई कमाई नहीं करनी है। उनको तो कमाई कराना है। बच्चों के आगे बाप कहते हैं सर्जन भी हूँ। अविनाशी सर्जन मुझे कहते हैं, यह जास्ती महिमा कर दी है। पतित पावन को कोई सर्जन नहीं कहा जाता। यह सिर्फ महिमा है। बाप तो सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। बस। मेरा पार्ट ही है तुमको यह समझाने का कि मामेकम् याद करो। जितना याद करेंगे उतना ऊँच पद पायेंगे। यह है हठ योग का ज्ञान। गीता जिन्होंने पढ़ी है, उनको सहज होता है- समझना। तुम पूज्य राजाओं का राजा बनते हो। फिर पुजारी बनेंगे। तुमको मेहनत करनी है। तुम विश्व को पवित्र बनाते हो। कितना भारी मर्तबा है। तुम सब अंगुली देते। कलियुगी पहाड़ को पलटाने। बाकी पहाड़ आदि कुछ भी है नहीं। अब तुम जानते हो- नई दुनिया आनी है। इसलिए राजयोग जरूर सीखना है। बाप ही आकर सिखलाते हैं। सतोप्रधान बनना है। जो कल्प पहले बने होंगे उनको समझाने से जायेगा। बात तो ठीक कहते हैं। बरोबर बाप ने कहा था- मनमनाभव। अक्षर संस्कृत है। बाप तो हिन्दी में कहते हैं मुझे याद करो। अभी तुम साक्षात हो हम कितने ऊँच धर्म ऊँच कर्म वाले थे तब तो गायन है 16 कला.. अब फिर ऐसा बनना है। अपने को देखना है कहाँ तक हम सतोप्रधान बने हैं। पावन बने हैं। कहाँ तक नर्कवासियों को स्वर्गवासी बनाने की सेवा करते हैं। अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:- (1) बाप समान निरहंकारी बनना है। इस शरीर को सम्भाल करते हुए शिवबाबा को याद करना है। रूहानी सर्विस में बाप का मददगार बनना है। (2) अन्दर में कोई भी भूत को रहने नहीं देना है। कभी किसी पर क्रोध नहीं करना है। सबसे बहुत प्यार से चलना है। मात पिता को फालो कर तख्तनशीन बनना है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मीठे बच्चे- तुमने बाप का हाथ पकड़ा है, तुम गृहस्थ व्यवहार में रहते भी बाप को याद करते2 तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे

प्रश्न :-तुम बच्चों के अन्दर में कौन सा हुल्लास रहना चाहिए? तख्तनशीन बनने की विधि क्या है? उत्तर:-सदा हुल्लास रहे कि ज्ञान सागर बाप हमें रोज़ ज्ञान रत्नों की थालियां भर2 कर देते हैं। जितना योग में रहेंगे उतना बुद्धि कंचन होती जायेगी। यह अविनाशी ज्ञान रत्न ही तुम साथ में ले जाते हो। तख्तनशीन बनना है तो मात पिता को पूरा2 पालो करो। उनकी श्रीमत अनुसार चलो। औरों को भी आप समान बनाओ।

ओमशान्ति। रूहानी बच्चे इस समय कहां बैठे हैं। कहेंगे रूहानी बाप की युनिवर्सिटी अथवा पाठशाला में बैठे हैं। बुद्धि में यह है हम रूहानी बाप के आगे बैठे हैं, वह बाप हमको सृष्टि के आदि मध्य अन्त का राज समझाते हैं अथवा भारत का राइज़ और फाल कैसे होता है, यह भी जानते हैं भारत जो पावन था वह अब पतित है। भारत सिरताज था फिर किसने जीत पाई है? रावण ने। राजाई गंवा दी तो फाल हुआ ना। कोई राजा तो है नहीं। अगर होगा भी तो पतित ही होगा। इस समय भारत में सूर्यवंशी महाराजा महारानी थे। सूर्यवंशी महाराजायें और चन्द्रवंशी महारायें थे। यह बातें अब तुम्हारी बुद्धि में हैं, दुनिया में यह बातें कोई नहीं जानते। तुम बच्चे जानते हो हमारा रूहानी बाप हमको पढ़ा रहे हैं। रूहानी बाप का हमने हाथ पकड़ा है। अब हम रहते गृहस्थ व्यवहार में हैं परन्तु बुद्धि में है कि अभी हम संगमयुग पर खड़े हैं। पतित दुनिया से हम पावन दुनिया में जाते हैं। कलियुग है पतित युग, सतयुग है पावन युग। पतित मनुष्य पावन मनुष्यों के आगे जाकर नमस्ते करते हैं। हैं तो वह भी भारत के मनुष्य परन्तु वह दैवीगुण वाले हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो हम भी बाप द्वारा ऐसे दैवीगुण धारण कर रहे हैं। सतयुग में यह पुरुषार्थ नहीं करेंगे। वहां तो है प्रालब्ध। यहाँ पुरुषार्थ कर दैवीगुण धारण करते हैं। सदैव अपनी अवस्था रखनी है हम बाबा को कहाँ तक याद कर तमोप्रधान से सतोप्रधान बन रहे हैं। जितना बाप को याद करेंगे उतना सतोप्रधान बनेंगे। बाप तो सदैव सतोप्रधान हैं। अभी भी पतित दुनिया पतित शरीर है। पावन दुनिया में पावन भारत था। तुम्हारे पास प्रदर्शनी आदि में भिन्न2 प्रकार के मनुष्य आते हैं। कोई कहते हैं हमें भोजन जहर है तैसे यह विकार भी जहर है। इन विषय भोग से मर जायेंगे। अब ऐसी बात तो है नहीं। सन्यासी पवित्र बनते हैं फिर मर जाते हैं क्या। ऐसे2 बोलने वाले के लिए समझा जाता है, कोई बहुत अजामिल जैसे पापी होंगे। जो ऐसे2 कहते हैं बोलना चाहिए क्या इस विषय तुम मर जायेंगे जो भोजन से इनकी भेंट करते हो। स्वर्ग में आने वाले जो होंगे वह होंगे सतोप्रधान। फिर पीछे सतो रजो तमो में आते हैं ना। जो पीछे आते हैं उन मनुष्यों ने विकारी दुनिया तो देखी ही नहीं है। तो वह भाषा में ऐसे2 कहेंगी। वारी जाऊं कि इन बिगर हम रह नहीं सकते। सूर्यवंशी जो होंगे उनको तो फारन बुद्धि में आयेगा, यह तो सत्य बात है। बरोबर स्वर्ग में विकार का नाम निशान नहीं था। भिन्न2 प्रकार के मनुष्य भिन्न2 प्रकार की बातें करते हैं। तो समझते हो कौन2 फूल बनने वाले हैं। कौन कांटे ही रह जाते हैं। स्वर्ग का नाम है फूलों का बगीचा। यह है कांटों का जंगल। कांटे भी अनेक प्रकार के होते हैं ना। अभी तुम जानते हो हम फूल बन रहे हैं। बरोबर यह लक्ष्मी नारायण सदा गुलाब के फूल हैं। इनको कहेंगे किंग ऑफ फलावर्स। देवी फूलावर्स का राज्य है ना। जरूर उन्होंने भी पुरुषार्थ किया होगा। पढ़ाई से बने हैं ना। अभी तुम जानते हो हम आसुरी फेमिली के थे। इस ईश्वरीय फेमिली को कोई जानते नहीं। ईश्वर को ही नहीं जानते। बाप ने आकरके यह फेमिली बनाई है। बाप पहले स्वयं को एडाप्ट करते हैं फिर उन द्वारा बच्चों को रचते हैं। बाबा ने भी इनको एडाप्ट किया फिर इन द्वारा बच्चों को रचा है। यह ब्रह्माकुमार कुमारियां हैं ना। यह माता प्रवृत्ति मार्ग का हो जाता है सन्यासियों का है निवृत्ति मार्ग का। वह कोई ब्रह्माकुमार कुमारी नहीं कहते। वहाँ तुम ममा बाबा कहते हो और जो भी सन्यासी हैं वह सब निवृत्ति मार्ग के हैं, यह एक ही बाप है जिनको मात पिता कह पुकारते हैं बाप बैठ समझाते हैं भारत में पवित्र प्रवृत्ति मार्ग था अब अपवित्र हो गया है। मैं फिर से पवित्र प्रवृत्ति मार्ग स्थापन करता हूँ। तुम जानते हो यह पुराना धर्म खत्म हो जाने वाला है। फिर हम और घराने धर्म स्थापन कर-

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

4-11-99 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – बाप आया है तुम बच्चों को भक्ति तू ज्ञात्मा से ज्ञानी तू आत्मा बनाने, पतित से पावन बनाने"

प्रश्न:- ज्ञानवान बच्चे किस चिन्तन में सदा रहते हैं?

उत्तर:- मैं अविनाशी आत्मा हूँ, यह शरीर विनाशी है। मैंने 84 शरीर धारण किये हैं। अब यह अन्तिम जन्म है। आत्मा कभी छोटी-बड़ी नहीं होती है। शरीर ही छोटा बड़ा होता है। यह आंखें शरीर में हैं लेकिन इनसे देखने वाली मैं आत्मा हूँ। बाबा आत्माओं को ही ज्ञान का तीसरा नेत्र देते हैं। वह भी जब तक शरीर का आधार न लें तब तक पढ़ा नहीं सकते। ऐसा चिन्तन ज्ञानवान बच्चे सदा करते हैं।

ओम् शान्ति। यह किसने कहा? आत्मा ने। अविनाशी आत्मा ने कहा शरीर द्वारा। शरीर और आत्मा में कितना फर्क है। शरीर 5 तत्व का इतना बड़ा पुतला बन जाता है। भल छोटा भी है तो भी आत्मा से तो जरूर बड़ा है। पहले तो एकदम छोटा पिण्ड होता है, जब थोड़ा बड़ा होता है तब आत्मा प्रवेश करती है। बड़ा होते-होते फिर इतना बड़ा हो जाता है। आत्मा तो चैतन्य है ना। जब तक आत्मा प्रवेश न करे तब तक पुतला कोई काम का नहीं रहता है। कितना फर्क है। बोलने, चालने वाली भी आत्मा ही है। वह इतनी छोटी-सी बिन्दी ही है। वह कभी छोटी-बड़ी नहीं होती। विनाश को नहीं पाती। अब यह परम आत्मा बाप ने समझाया है कि मैं अविनाशी हूँ और यह शरीर विनाशी है। इनमें मैं प्रवेश कर पार्ट बजाता हूं। यह बातें तुम अभी चिन्तन में लाते हो। आगे तो न आत्मा को जानते थे, न परमात्मा को जानते थे सिर्फ कहने मात्र कहते थे हे परमपिता परमात्मा। आत्मा भी समझते थे परन्तु फिर कोई ने कहा तुम परमात्मा हो। यह किसने बतलाया? इन भक्ति मार्ग के गुरुओं और शास्त्रों ने। सतयुग में तो कोई बतलायेंगे नहीं। अभी बाप ने समझाया है तुम मेरे बच्चे हो। आत्मा नैचुरल है शरीर अननैचुरल मिट्टी का बना हुआ है। जब आत्मा है तो बोलती चालती है। अभी तुम बच्चे जानते हो हम आत्माओं को बाप आकर समझाते हैं। निराकार शिवबाबा इस संगमयुग पर ही इस शरीर द्वारा आकर सुनाते हैं। यह आंखे तो शरीर में रहती ही हैं। अभी बाप ज्ञान चक्षु देते हैं। आत्मा में ज्ञान नहीं है तो अज्ञान चक्षु है। बाप आते हैं तो आत्मा को ज्ञान चक्षु मिलते हैं। आत्मा ही सब कुछ करती है। आत्मा कर्म करती है शरीर द्वारा। अभी तुम समझते हो बाप ने यह शरीर धारण किया है। अपना भी राज़ बताते हैं। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ भी बताते हैं। सारे नाटक का भी नॉलेज देते हैं। आगे तुमको कुछ भी पता नहीं था। हाँ, नाटक जरूर है। सृष्टि का चक्र फिरता है। परन्तु कैसे फिरता है, यह कोई नहीं जानते हैं। रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान अभी तुमको मिलता है। बाकी तो सब है भक्ति। बाप ही आकर तुमको ज्ञानी तू आत्मा बनाते हैं। आगे तुम भक्ति तू आत्मा थे। तू आत्मा भक्ति करते थे। अभी तुम आत्मा ज्ञान सुनते हो। भक्ति को कहा जाता है अन्धियारा। ऐसे नहीं कहेंगे भक्ति से भगवान मिलता है। बाप ने समझाया है भक्ति का भी पार्ट है, ज्ञान का भी पार्ट है। तुम जानते हो हम भक्ति करते थे तो कोई सुख नहीं था। भक्ति करते धक्का खाते रहते थे। बाप को ढूँढते थे। अभी समझते हो यज्ञ, तप, दान, पुण्य आदि जो कुछ करते

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

थे, ढूँढ़ते-ढूँढ़ते धक्का खाते-खाते तंग हो जाते हैं। तमोप्रधान बन जाते हैं क्योंकि गिरना होता है ना। झूठे काम करना छी-छी होना होता है। पतित भी बन गये। ऐसे नहीं कि पावन होने के लिए भक्ति करते थे। भगवान से पावन बनने बिगर हम पावन दुनिया में जा नहीं सकेंगे। ऐसे नहीं कि पावन बनने बिगर, भगवान से नहीं मिल सकते। भगवान को तो कहते हैं आकर पावन बनाओ। पतित ही भगवान से मिलते हैं पावन होने के लिए। पावन से तो भगवान मिलता नहीं। सतयुग में थोड़ेही इन लक्ष्मी-नारायण से भगवान मिलता है। भगवान आकरके तुम पतितों को पावन बनाते हैं और तुम यह शरीर छोड़ देते हो। पावन तो इस तमोप्रधान पतित सृष्टि में रह नहीं सकते। बाप तुमको पावन बनाकर गुम हो जाते हैं, उनका पार्ट ही ड्रामा में वन्डरफुल है। जैसे आत्मा देखने में आती नहीं है। भल साक्षात्कार होता है तो भी समझ न सकें। और तो सबको समझ सकते हैं यह फलाना है, यह फलाना है। याद करते हैं। चाहते हैं फलाने का चैतन्य में साक्षात्कार हो और तो कोई मतलब नहीं। अच्छा, चैतन्य में
b देखते हो फिर क्या? साक्षात्कार हुआ फिर तो गुम हो जायेगा। अल्पकाल क्षण भंगुर सुख की आश पूरी होगी। उसको कहा जायेगा अल्पकाल क्षण भंगुर सुख। साक्षात्कार की चाहना थी वह मिला। बस यहाँ तो मूल बात है पतित से पावन बनने की। पावन बनेंगे तो देवता बन जायेंगे अर्थात् स्वर्ग में चले जायेंगे।

शास्त्रों में तो कल्प की आयु लाखों वर्ष लिख दी है। समझते हैं कलियुग में अजुन 40 हज़ार वर्ष पड़े हैं। बाबा तो समझाते हैं सारा कल्प ही 5 हज़ार वर्ष का है। तो मनुष्य अन्धियारे में हैं ना। उसको कहा जाता है घोर अन्धियारा। ज्ञान कोई में है नहीं। वह सब है
c भक्ति। रावण जब से आता है तो भक्ति भी उनके साथ है और जब बाप आते हैं तो उनके साथ ज्ञान है। बाप से एक ही बार ज्ञान का वर्सा मिलता है। घडी-घड़ी नहीं मिल सकता। वहाँ तो तुम कोई को ज्ञान देते नहीं। दरकार ही नहीं। ज्ञान उनको मिलता है जो अज्ञान में हैं। बाप को कोई भी जानते ही नहीं। बाप को गाली देने बिगर कोई बात ही नहीं करते। यह भी तुम बच्चे अभी समझते हो। तुम कहते हो ईश्वर सर्वव्यापी नहीं है, वह हम आत्माओं का बाप है और वह कहते कि नहीं परमात्मा ठिक्कर-भित्तर में है। तुम बच्चों ने अच्छी तरह समझा है - भक्ति बिल्कुल अलग चीज है, उनमें जरा भी ज्ञान नहीं होता। समय ही सारा बदल जाता है। भगवान का भी नाम बदल जाता है फिर मनुष्यों का भी नाम बदल जाता है। पहले कहा जाता है देवता फिर क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। वह दैवी गुणों वाले मनुष्य हैं। और यह हैं आसुरी गुणों वाले मनुष्य। बिल्कुल छी-छी हैं। गुरु नानक ने भी कहा है अशंख चोर..... मनुष्य कोई ऐसा कहे तो उनको झट कहेंगे तुम यह क्या गाली देते हो। परन्तु बाप कहते हैं यह सब आसुरी सम्प्रदाय हैं। तुमको क्लीयर कर समझाते हैं। वह रावण सम्प्रदाय वह राम सम्प्रदाय। गांधी जी भी कहते थे हमको रामराज्य चाहिए। यह नहीं समझते थे हम पतित हैं, कुछ भी नहीं। अभी तुम देखते हो रावण राज्य में क्या-क्या है। रावण राज्य में हैं सब विकारी। रामराज्य में हैं निर्विकारी इनका नाम ही है वेश्यालय। रौरव नर्क है ना। इस समय के मनुष्य विषय वैतरणी नदी में पड़े हैं। मनुष्य जानवर आदि सब एक समान हैं। मनुष्य की कोई भी महिमा नहीं है। 5 विकारों पर तुम बच्चे जीत पहन मनुष्य से देवता पद पाते हो बाकी सब खत्म हो जाते हैं। देवतायें सतयुग में रहते थे। अभी इस कलियुग में असुर रहते हैं। असुरों की निशानी क्या है?

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

5 विकार। देवताओं को कहा जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी और असुरों को कहा जाता है सम्पूर्ण विकारी। वह हैं 16 कला सम्पूर्ण और यहाँ नो कला। सबकी कला काया चट हो गई है। अब यह बाप बच्चों को बैठ समझाते हैं। बाप आते भी हैं पुरानी आसुरी दुनिया को चेन्ज करने। रावण राज्य वेश्यालय को शिवालय बनाते हैं। उन्हों ने तो यहाँ ही नाम रख दिये त्रिमूर्ति हाउस, त्रिमूर्ति रोड... आगे थोड़ेही यह नाम थे। अब होना क्या चाहिए? यह सारी दुनिया किसकी है? परमात्मा की है ना। परमात्मा की दुनिया है जो आधाकल्प पवित्र, आधाकल्प अपवित्र रहती है। क्रियेटर तो बाप को कहा जाता है ना। तो उनकी ही यह दुनिया हुई ना। बाप समझाते हैं मैं ही मालिक हूँ। मैं बीजरुप, चैतन्य, ज्ञान का सागर हूँ। मेरे में सारा ज्ञान है और कोई में नहीं। तुम समझ सकते हो इस सृष्टि चक्र के आदि, मध्य, अन्त का नॉलेज बाप में ही है। बाकी तो सब हैं गपोड़े। मुख्य गपोड़ा बहुत खराब है, जिसके लिए बाप उल्हना देते हैं। तुम मुझे ठिक्कर-भित्तर कुत्ते बिल्ली में समझ बैठे हो। तुम्हारी क्या दुर्दशा हो गई है।

नई दुनिया के मनुष्यों और पुरानी दुनिया के मनुष्यों में रात दिन का फर्क है। आधाकल्प से लेकर अपवित्र मनुष्य, पवित्र देवताओं को माथा टेकते हैं। यह भी बच्चों को समझाया है पहले-पहले पूजा होती हैं शिवबाबा की। जो शिवबाबा ही तुमको पुजारी से पूज्य बनाते हैं। रावण तुमको पूज्य से पुजारी बनाते हैं। फिर बाप ड्रामा प्लैन अनुसार तुमको पूज्य बनाते हैं। रावण आदि यह सब नाम तो हैं ना। रावण जब बनाते हैं तो कितने मनुष्यों को बाहर से बुलाते हैं। परन्तु अर्थ कुछ नहीं समझते। देवताओं की कितनी निंदा करते है। ऐसी बातें तो बिल्कुल हैं नहीं। जैसे कहते हैं ईश्वर नाम-रुप से न्यारा है अर्थात् नहीं है। वैसे यह जो कुछ खेल आदि बनाते हैं वह कुछ भी है नहीं। यह सब हैं मनुष्यों की बुद्धि। मनुष्य मत को आसुरी मत कहा जाता है। यथा राजा-रानी तथा प्रजा। सब ऐसे बन जाते हैं। उनको कहा ही जाता है डेविल वर्ल्ड। सब एक-दो को गाली देते रहते हैं। तो बाप समझाते हैं--बच्चे, जब बैठते हो
d तो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। तुम अज्ञान में थे तो परमात्मा को ऊपर में समझते थे। अभी तो जानते हो बाप यहाँ आया हुआ है तो तुम ऊपर में नहीं समझते हो। तुमने बाप को यहां बुलाया है, इस तन में। तुम जब अपने-अपने सेन्टर्स पर बैठते हो तो समझेंगे शिवबाबा मधुबन में इनके तन में है। भक्ति मार्ग में तो परमात्मा को ऊपर में मानते थे। हे भगवान..... अभी तुम बाप को कहाँ याद करते हो? क्या बैठकर करते हो? तुम जानते हो ब्रह्मा के तन में है तो जरुर यहां याद करना पड़ेगा। ऊपर में तो है नहीं। यहाँ आया हुआ
e है। पुरुषोत्तम संगमयुग पर। बाप कहते हैं तुमको इतना ऊंच बनाने में यहां आया हूँ। तुम बच्चे यहाँ याद करेंगे। भक्त ऊपर में याद करेंगे। तुम भल विलायत में होंगे तो भी कहेंगे ब्रह्मा के तन में शिवबाबा है। तन तो जरुर चाहिए ना। कहाँ भी तुम बैठे होंगे तो जरुर यहाँ याद करेंगे। ब्रह्मा के तन में ही याद करना पड़े। कई बुद्धिहीन ब्रह्मा को नहीं मानते हैं। बाबा ऐसे नहीं कहते ब्रह्मा को याद न करो। ब्रह्मा बिगर शिवबाबा कैसे याद पड़ेगा। बाप कहते हैं मैं इस तन में हूँ। इसमें मुझे याद करो इसलिए तुम बाप और दादा दोनों को याद करते हो। बुद्धि में यह ज्ञान है, इनकी अपनी आत्मा है। शिवबाबा को तो अपना शरीर नहीं है। बाप ने कहा है मैं इस प्रकृति का आधार लेता हूँ। बाप बैठ सारे ब्रह्माण्ड और सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त का राज़ समझाते हैं और कोई ब्रह्माण्ड को जानते ही नहीं। ब्रह्म जिसमें हम और तुम रहते हो,

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सुप्रीम बाप, नानसुप्रीम आत्मायें रहने वाली उस ब्रह्म लोक शान्तिधाम की हैं। शान्तिधाम बहुत मीठा नाम है। यह सब बातें तुम्हारी बुद्धि में हैं। हम असुल के रहवासी ब्रह्म महतत्व के हैं। जिसको निर्वाणधाम, वानप्रस्थ कहा जाता है। यह बातें अभी तुम्हारी बुद्धि में है। जब भक्ति है तो ज्ञान का अक्षर नहीं। इनको कहा जाता है पुरुषोत्तम संगमयुग जबकि चेन्ज होती है। पुरानी दुनिया में असुर रहते हैं, नई दुनिया में देवतायें रहते हैं तो उनको चेन्ज करने लिए बाप को आना पड़ता है। सतयुग मे तुमको कुछ भी पता नहीं रहेगा। अभी तुम कलियुग में हो तो भी कुछ पता नहीं है। जब नई दुनिया में होंगे तो भी इस पुरानी दुनिया का कुछ पता नहीं होगा। अभी पुरानी दुनिया में हो तो नई का मालूम नहीं है। नई दुनिया कब थी, पता नहीं। वह तो लाखों वर्ष कह देते हैं। तुम बच्चे जानते हो बाप इस संगमयुग पर ही कल्प-कल्प आते हैं, आकर इस वैराइटी झाड़ का राज़ समझाते हैं और यह चक्र कैसे फिरता है वह भी तुम बच्चों को समझाते हैं। तुम्हारा धन्धा ही है यह समझाने का। अब एक-एक को समझाने से तो बहुत टाइम लग जाए। इसलिए अभी तुम बहुतों को समझाते हो। बहुत समझते हैं। यह मीठी-मीठी बातें फिर बहुतों को समझानी हैं। तुम प्रदर्शनी आदि में समझाते हो ना अब शिव जयन्ती पर और भी अच्छी रीति बहुतों को बुलाकर समझाना है। खेल की ड्युरेशन कितनी है। तुम तो एक्यूरेट बतायेंगे। यह टॉपिक्स हुई। हम भी यह समझायेंगे। तुमको बाप समझाते हैं ना—जिससे तुम देवता बन जाते हो। जैसे तुम समझकर देवता बनते हो वैसे औरों को भी बनाते हो। बाप ने हमको यह समझाया है। हम किसकी ग्लानि आदि नहीं करते हैं। हम बतलाते हैं ज्ञान को सद्गति मार्ग कहा जाता है, एक सतगुरु ही है पार करने वाला। ऐसी-ऐसी मुख्य प्वाइन्ट्स निकालकर समझाओ। यह सारा ज्ञान बाप के सिवाए कोई दे नहीं सकता है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. पुजारी से पूज्य बनने के लिए सम्पूर्ण निर्विकारी बनना है। ज्ञानवान बन स्वयं को स्वयं ही चेंज करना है। अल्पकाल सुख के पीछे नहीं जाना है।

२. बाप और दादा दोनों को ही याद करना है। ब्रह्मा बिगर शिवबाबा याद आ नहीं सकता। भक्ति में ऊपर याद किया, अभी ब्रह्मा तन में आया है तो दोनों ही याद आने चाहिए।

वरदान:- दीपमाला पर यथार्थ विधि से अपने दैवी पद का आह्वान करने वाले पूज्य आत्मा भव

दीपमाला पर पहले लोग विधिपूर्वक दीपक जगाते थे, दीपक बुझे नहीं यह ध्यान रखते थे, घृत डालते थे, विधिपूर्वक आह्वान के अभ्यास में रहते थे। अभी तो दीपक के बजाए बल्ब जगा देते हैं। दीपमाला नहीं मनाते अब तो मनोरंजन हो गया है। आह्वान की विधि अथवा साधना समाप्त हो गई है। स्नेह समाप्त हो सिर्फ स्वार्थ रह गया है इसलिए यथार्थ दाता रूपधारी लक्ष्मी किसी के पास आती नहीं। लेकिन आप सभी यथार्थ विधि से अपने दैवी पद का आह्वान करते हो इसलिए स्वयं पूज्य देवी-देवता बन जाते हो।

स्लोगन:-

सदा बेहद की वृत्ति, दृष्टि और स्थिति हो तब विश्व कल्याण का कार्य सम्पन्न होगा।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

14.5.86 प्रात: क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है ?

"बाप - टीचर और सतगुरू तीनों को यही फिकरात है कि मेरे बच्चे लायक बने, पढ़ाई पूरी करें तो मैं साथ में ले जाऊं" ।

प्रश्नः-तुम बच्चे याद की यात्रा में रहने की रेस क्यों करते हो? उत्तरः-क्योंकि तुम जानते हो हम याद की रेस करते2 कर्मातीत बन अपने घर में जायेंगे, हमें निशान तक हाथ लगाकर फिर वापिस आना है।तुम बाबा के पास पहुंचने के लिये दौड़ी लगा रहे हो।जितना2 याद में रहते उतना घर समीप दिखाई देता ।

गीत: तू प्यार का सागर है...ओमशान्ति।बच्चों ने गीत सुना।जन्म जन्मान्तर से गीत गाते आते है,महिमा करते आते है।अभी सिर्फ तुम बच्चों ने जाना है कि वह ज्ञान का सागर है, वर्सा दे रहे है।उनकी श्रीमत पर चलना है।उनकी श्रीमत तो बहुत नामीग्रामी है।श्री श्री से तुम श्री अर्थात श्रेष्ठ बनते हो।वह है श्रेष्ठ, क्योंकि ऊंच ते ऊंच भगवान हो गाया हुआ है।ऊंच ते ऊंच कहें वा श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ कहें बात एक ही है।श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ एक ही बाप है, तुम बच्चे उन द्वारा श्रेष्ठ बनते हो।तुम कितने श्रेष्ठ बनते हो।बाप से वर्सा पाने लायक बने हो।श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बाप वर्सा देते हैं।जब हरेक श्रेष्ठ बनने लिये पुरूषार्थ करते हैं।सो भी एम-आबजेक्ट प्राप्तो का मालूम है।वह भी बाप ने समझाया है कि यह है पुरानी दुनिया।यह अब जो कुछ देखने में आता है यह फिर होगा ही नहीं।फिर नई दुनिया में होगी।यह कुछ भी होगा नहीं।यह सब खत्म होना है।नया मकान मिलता है तो पुराने के लिये समझा जाता है यह रहेगा नहीं।खत्म हो जायेगा।बच्चे भी जानते हैं नई दुनिया बन रही है।हम नई दुनिया में जायेंगे फिर इस पुरानी दुनिया का विनाश हो जायेगा।

a बाप नई दुनिया रच रहे है जिसके लिये तैयारी हो रही है।बेहद का बाबा बाप भी है। टीचर भी है तो सतगुरू भी है।तीनों ही सेवा करने वाले है।बाप भी ओबीडियन्ट सर्वेन्ट है।टीचर व सतगुरू भी ओबीडियन्ट सर्वेन्ट है।तीनों ही इकट्ठे है।इनको फुरना रहता है, बच्चों का। एक ही बाप को दोनों फुरने है।समझते है हम इन्हों को पढ़ाकर फिर सद्गति

b दूंगा।सबको ले जाऊंगा साथ में।मोठे2 सिकीलधे बच्चों को अपना बनाकर फिर साथ ले जाऊंगा।अभी तुम मात-पिता के डायरेक्ट बच्चे बने हो।बाप है ज्ञान का सागर, सुख का सागर.....यह महिमा और कोई की हो नहीं सकती।बाप की महिमा दिल में धारण करने से नशा भी चढ़ेगा।ऐसा श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बाबा हमको कितना ऊंच बना रहे है।अभी तो हम कंगाल हैं।बाबा आया हुआ है ऊंच ते ऊंच पद देने।यह बात ही बिल्कुल न्यारी है। कोई भी शास्त्र में यह बातें है नहीं।बाबा ही आकर बच्चों को अपना बनाते हैं।बाबा कहते है मैं कल्प2 तुम बच्चों को यह नालेज देने आता हूं।नालेज देने वाला एक ही बाप है।तो बच्चों को।।कितना खुशी का पारा चढ़ना चाहिये।परन्तु स्थाई चढ़ता नहीं है। आहस्ते2 वृद्धि को पाते रहेंगे।खाद निकालने में टाइम लगता है।आधाकल्प लग गया है खाद पड़ने में।पहले2 गोल्डन एज में थे फिर गोल्डन एज से सिलवर एज में आते है तो चांदी पड़ जाती है।अभी तो पुरूषार्थ करना है हम एकदम सतोप्रधान बनें, सूर्यवंशी पद पावें। जितना याद करेंगे उतना पद पायेंगे।दौड़ी लगानी है।दौड़ी की भी रेस होती है ना। निशान तक हाथ लगाकर फिर लौट आते है।यहां लौटने की तो बात ही नहीं।तुम जानते हो हमको बाबा को याद करते2 पहुंच जाना है फिर हम उतरना शुरू करते हैं। वह तो दो चार घण्टे की रेस होती है।यह तो तुम्हारी रेस देखो कैसी है।चलती ही रहती है।तुमको पहुंचने में यह थोड़ा सा समय लगता है।फिर लौट आने में 5 हजार वर्ष लगते है।खाद पड़ते2 आखरीन नाम ही बदल कर आइरन एज हो जाता है।अभी हमको गोल्डन एज में आने लिये प्योर बनना है।मेहनत करनी पड़ती है।बाबा योग के लिये बहुत पुरूषार्थ कराते हैं।मेहनत सारी इसमें है।ज्ञान तो लाखों को सुनाते है।पर्दानशी में कितने ढेर गये होंगे।अभी और भी ज्यादा बढ़ाये तो बहुत लोग आवें।गरीब लोग तो आधा से भी ज्यादा होंगे।नाम सुनते ही [illegible]

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कोर्स उठायेंगे। मेहनत जितनी होती है वह शास्त्र आदि पढ़ना तो सहज है। आजकल तो बहुत है जो गीता सारी कण्ठ कर लेते हैं। बहुत शास्त्र भी कण्ठ कर लेते हैं। श्लोक बैठ सुनाते हैं तो समझते हैं यह तो बड़ा विद्वान है। मेहनत करते हैं ना। मेहनत करते कण्ठ भी करते हैं। फिर उनको शास्त्रों की अथॉरिटी कहते। बहुत पढ़ते हैं ना। बाबा तो बिल्कुल थोड़ी बात ही सुनाते हैं। अब सब तमोप्रधान पतित बन गये हैं। इनको कोई वाइसलेस दुनिया नहीं कहेगी। सब तो पतित पावन बाप को बुलाते हैं कि बाबा हमको आकर फिर से पावन बनाओ। मुक्ति जीवनमुक्ति दो। मुक्ति में जाकर फिर जीवनमुक्ति में आना है। बाबा ने समझाया है सभी थोड़े ही सतयुग में आयेंगे। एक जैसा पुरुषार्थ हो न सके। तो बाप कितनी बातें समझाते हैं। यहां तो कोई शास्त्र पढ़कर नहीं सुनाते हैं। यह तो सिर्फ नॉलेज बुद्धि में रखनी है। और सृष्टि चक्र समझाना है। सृष्टि का चक्र किसको समझाना कोई डिफीकल्ट बात नहीं है। है बहुत सहज। सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी फिर वैश्यवंशी, शूद्र वंशी। यह चक्र लगाते आते हैं। बाकी रही याद की यात्रा। बाप को याद जरूर करना पड़े। पति को सारी उम्र याद करते हैं ना। स्त्री को बच्चों से भी जास्ती प्यार पति से होता है। अभी यह तो है पतियों का पति साजन। वह पति तो तुमको दुर्गति में ले जाते हैं। ये तो 2। जन्म के लिये सद्गति में ले जाते हैं। ऐसे साजन को क्यों नहीं याद करना चाहिए। परन्तु माया याद करने नहीं देती। जितना तुम याद करेंगे उतना खुशी का पारा चढ़ेगा। दो बाप पर भी समझाना है। लौकिक बाप होते भी पारलौकिक बाप को याद करते हैं दुःख के समय। जब सुख में है तो कोई भी याद नहीं करते। वह बाप है ही दुःख हर्ता सुख कर्ता। वह हमको इतना तो सुख देते हैं जो 2। जन्म कब हम इनको याद नहीं करते। सावन भी है दुःख में सिमरण सब करें... यह बुद्धि में आना चाहिए। दुःख खत्म कर हमको सुख ऐसे देते हैं जो कब याद करने की भी दरकार नहीं रहती। फिर भक्ति मार्ग में दो बाप होते हैं। दुःख में भगवान को याद करते हैं। भगवान हमको धन दो यह करो। हमारे दुःख दूर करो। इस समय तुम भी सबके दुःख हरते हो ज्ञान देते हो ना। देवियों के पास भी जाते हैं ना। हमारी यह आशा पूर्ण करो। तुम हो देवियां। बहुत करके देवियों पास जाते हैं देवों पास भी जाते हैं। महावीर भैरव हैं। भैरव को भी सभी पूजा करते हैं। कुछ न कुछ जाकर मांगते रहते हैं। अभी समझ में आता है आगे थोड़े ही मालूम था कि हम ही पूज्य थे अब हम पूज्य से पुजारी बने हैं। आत्मा ही शूद्र बनती है। फिर आत्मा ही शूद्र बनती है। आत्मा ही पवित्र बन देवता बनती है फिर वही आत्मा पुनर्जन्म लेते2 नीचे उतरती है। पूज्य से पुजारी बन अपने ही जड़ चित्रों को बैठ पूजते हैं। आपेही पूज्य आपेही पुजारी। हम खुद ही अपने को पूजने लगे हैं। वन्डर है ना। तुम जानते हो त्रेता अन्त तक हम पूज्य रहेंगे। फिर हम ही पुजारी बनेंगे। हम 2। जन्म बराबर पूज्य थे। फिर नीचे उतरते आये हैं। भक्ति भी पहले सतोप्रधान होती है फिर रजो तमोप्रधान हो जाती है। तो यह तो तुम बच्चों की बुद्धि में आया है। हम हैं 84 जन्म लेते हैं। पावन थे फिर 84 जन्म लेते2 जाकर पतित बने हैं। 84 जन्मों की कहानी है ना। बाप कहते हैं तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। अभी बाप ने समझाया है 2। जन्म तुम पूज्य देवता बनते हो। फिर पुजारी बनते हो इस समय बाप हमारी मांगें पूरी करते हैं जो 2। जन्म लिये फिर कुछ कभी भी मांगना ही न पड़े। कहते भी हैं भगवान को वस्तु दी हुई है। भगवान ने ले ली फिर उसमें दुःख की बात ही नहीं। इस समय बच्चों को मस्त हो चलना चाहिए। कोई मर गया तो भी सूक्ष्मवतन होकर देखा जाता है। कल्प पहले भी ऐसा हुआ था। खुद अपनी अवस्था में पक्का रहना चाहिए। बाप की याद में रहने से विकर्म विनाश होंगे। बच्चे जानते हैं हमको शिवबाबा पढ़ाते हैं। हम आत्माओं को धारणा करना है। फिर दूसरों को सुनाना है। जो नजदीक वाले सम्बन्धी आदि हैं उन पर कोशिश करनी चाहिए। अगर स्त्री आती है पति नहीं आता है तो भी घर में झगड़ा चल पड़ता है। पहले तो उनको मिटाना है। यह भी ड्रामा में सब नूंध है। कल्प पहले भी ऐसे बना होगा। फिर भी प्रेम से बैठ समझाने से कोई सुजाग भी हो जाते हैं। कृष्ण के लिये भी खानी लाते हैं। ऐसे ना यह करता

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

था। भगाता था। (पिन्न कृष्ण को तो ऐसी जानो हो न सके। कृष्ण होता तो उनके d पास सब भाग आ जाते दे2 से। पिन्न कृष्ण की बात है नहीं। कृष्ण गाली खा न सके। और दूसरा है जिसको गालियां किसी को। बच्चों पर अत्याचार हो कैसे सकते। कृष्ण तो रहा जा भी नहीं सकता। बच्चे जब याद की यात्रा पर रहें, याद निकले तब है बात। आगे चल जब विनाश का समय आयेगा, अर्थक्वेक्स आदि होगी फिर जायेंगे। जब किसको चोट लगेगी तब तुमको बुलायेंगे। आजकल कोई मरता है तो ब्रह्मा कुमारियों को बुलाते हैं कि आकर शान्ति दो। आगे भक्तों को बुलाते थे या ग्रंथ आदि रखते थे। अब कहते हैं ब्रह्मा कुमारियों को बुलाओ तो मन को शान्ति देवें। तुम्हारे जैसा और कोई हो नहीं सकता। तुम्हारे में कोई हेंगामा नहीं है। सिर्फ बाप का परिचय देते हो। तुम्हारे में भी नम्बरवार है। कोई पूरे गृहचारी बैठते हैं तो राहू को दशा बैठ जाती है। फिर ट्रेटर बन पड़ते वे ही बहुत नुकसान कर देते हैं। वैसे इन बातों में कभी भी अफसोस नहीं करना चाहिये। कल्प पहले भी हुआ था कोई नई बात नहीं है। अफसोस की बात नहीं। अपने नशे में मजबूत रहना चाहिये। राजधानी स्थापन करने में कुछ तो सहन करना पड़ता है। बिगर मेहनत बाबा सिर पर ताज थोड़े ही रख देंगे। फिर तो सब पर रख देते। बाप समझाते रहते हैं सबको पुरुषार्थ करना है। (बच्चे भी समझते हैं बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। उनको श्रीमत पर चलना है। धन मिलने से झगड़ों का पारा चढ़ता है। बाबा से हम अपना वर्सा ले रहे हैं। बाबा का फरमान है मुझे याद करो। तो विकर्म विनाश होंगे फिर तुम पवित्र दुनिया के मालिक बन जायेंगे। परन्तु जब देही अभिमानी बनें ना। इसमें बड़ी मेहनत है। कहते भी है हम तो आप को याद करेंगे। मेरा तो गिरधर गोपाल... परन्तु फिर भूल जाते हैं। बाप कहते है तुमको अब ले जाता हूं नई दुनिया में। नई दुनिया थी अब नर्क बन पड़ा है फिर स्वर्ग बनना है। स्वर्ग बनाने वाले का नाम ही है हेविनली गाड फादर। बाप खुद कहते हैं मैं आया ही - हूं तुमको स्वर्गवासी बनाने। तुमको ज्ञान और योग सिखाता हूं। मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और सृष्टि चक्र को समझ लो। दुनिया में तो कोई नहीं जानते। ऋषि मुनि भी नहीं जानते थे तो और फिर e उनको जो दीवाली चली आई है वह कैसे जानेंगे। इन ल०ना० को भी सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान नहीं है। अच्छा -

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मातपिता बाप दादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप को रूहानी बच्चों को नमस्ते।

स्वउन्नति के लिए दृढ़ संकल्प :- ----------

1-कल्प पहले की स्मृति में रहकर किसीभी बात का अफसोस नहीं करना है। अपने नशे में मजबूत रहना है। सब कुछ सहन कर अपनी राजधानी बनानी है।

2-साक्षी होकर हरेक के पार्ट को देखना है। अपने नजदीक के संबंधी को सुजाग करने के लिए प्रेम से समझाना है। घर के झगड़े को पहले मिटाना है।

① चंडीगढ़ सेवा केन्द्र का फोन No. बदली हुआ है नया No. 41339 है।
② बिलासपुर (M.P.) सेवा केन्द्र का फोन No. बदली हुआ है नया No. 4000 है।
③ मिश्र सेवाकेन्द्रों पर फोन लगा है No. इस प्रकार है।

PETLAD - 524, BAREILLY - 75864,
AMBALACANTT SUBJI MANDI - 21202
" " DAYALBAGH - 24202

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

"मीठे बच्चे – शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा दोनों की मत मशहूर है, तुम्हें दोनों की मत पर चलकर अपना कल्याण करना है"

प्रश्नः- नम्बरवन ट्रस्टी कौन है और कैसे?

उत्तरः- शिवबाबा है नम्बरवन ट्रस्टी, उसमें बिल्कुल आसक्ति नहीं। भक्ति मार्ग में भी तुम उनके अर्थ जो भी दान-पुण्य आदि करते हो, वह सब इनश्योर हो जाता है, जिसका फल दूसरे जन्म में मिलता है। अभी भी जो बाप के अर्थ अपना सब कुछ इनश्योर करते उनका पूरा रिटर्न बाप देता हैं क्योंकि बाबा कहते– मैं खुद तो सुख भोगता नहीं। मैं तुम्हारा लेकर क्या करूँगा।

गीतः- दर पर आये हैं कसम लेके....

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों ने गीत सुना। बच्चे उनको कहा जाता है जो बाप के बनते हैं। बाप ने समझाया है यह है अन्तिम मरजीवा जन्म। जीते जी बाप का बनना है। यह तो बच्चे जानते हैं, श्रीमत गाई हुई है। श्रीमत भगवानुवाच। गीता में कृष्ण का नाम डाल दिया है परन्तु है शिवबाबा। उनके बाद ब्रह्मा फिर कृष्ण। श्रीमत कृष्ण की नहीं कहेंगे। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ हमारा बाप है। पतित-पावन कृष्ण अथवा राधे आदि को नहीं कहेंगे। वह दैवीगुण वाले मनुष्य हैं। मनुष्य को पतित-पावन नहीं कहा जाता। सतयुग में
a ऐसे नहीं कहेंगे पतित-पावन आओ। पतितों को पावन बनाने वाला एक ही बाप है, जिसकी श्रीमत पर तुम चल रहे हो। प्रजापिता ब्रह्मा की मत मशहूर है। श्रीमत भी मशहूर है। परन्तु उनमें भूल कर देते हैं जो बाप के बदले कृष्ण का नाम डाल दिया है। सब धर्म वालों का तो एक ही बाप है। कृष्ण को तो सब नहीं मानेंगे। क्रिश्चियन लोग क्राइस्ट को फादर मानते हैं, न कि कृष्ण को क्योंकि क्रिश्चियन हैं क्राइस्ट की मुखवंशावली। शिवबाबा आकर तुमको अपना बनाते हैं। कहते हैं, सिर हथेली पर रख बाप के बने हैं। उनके डायरेक्शन पर चलना पड़े। तुम्हें बाप को अपनी मत देने की दरकार नहीं रहती। वह खुद मत देने वाला है। यह तो सब बच्चे हैं। शिवबाबा नामीग्रामी है। वह जो मत देंगे, जो कुछ करेंगे राइट। इस ब्रह्मा को भी मत देते हैं कि यह करो। तुम्हारा कनेक्शन ही शिवबाबा से है। कोई का भी अवगुण नहीं देखना है, श्रीमत पर चलना है। शिवबाबा तो है निराकार। उनका यह घर तो है नहीं। तुम यहाँ पुराने घर में रहते हो फिर स्वर्ग में जाकर अपने घर में रहेंगे। शिवबाबा कहते हैं मैं तो नहीं रहूँगा। मैं तो इस समय थोड़े टाइम के लिए आता हूँ।

तुम हो सच्चे-सच्चे रूहानी सैलवेशन आर्मी। सुप्रीम रूह (बाप) डायरेक्शन दे रहे हैं, हूबहू ड्रामा प्लैन अनुसार कल्प पहले मुआफ़िक। कल्प-कल्प जो डायरेक्शन देते होंगे वही देते हैं। रात-दिन गुह्य सुनाते रहते हैं। नया कोई यह समझ न सके। भल कोई 35-40 वर्ष से रहते हैं परन्तु बहुत हैं जो इन गम्भीर बातों को समझते नहीं हैं। बाबा तो रोज़
b नया सुनाते रहते हैं। कराची से लेकर मुरली निकलती आई है। पहले बाबा मुरली चलाते

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

नहीं थे। रात को 2 बजे उठकर 10-15 पेज लिखते थे। बाबा लिखवाते थे फिर उनकी
c कापियाँ निकलती थी। भक्तिमार्ग में तो शास्त्र आदि के कागज सम्भालते हैं। दिन-प्रतिदिन बड़ी-बड़ी किताबें बनाते आते हैं। कितनी बायोग्राफी बनाते जाते हैं। वह फिर पढ़कर रखते
d हैं। तुम तो मुरली पढ़कर फेंक देते हो। नहीं तो यह वर्शन्स रखने चाहिए हमेशा के लिए। परन्तु नहीं, जानते हैं कि यह सब विनाश हो जायेंगे। चित्र आदि जो भी तुम बनाते हो थोड़े समय के लिए हैं। फिर यह दब जायेंगे फिर वहाँ न शास्त्र, न चित्र आदि कुछ भी नहीं रहते हैं फिर यह जो कुछ चल रहा है, कल्प बाद भी होगा। शास्त्र आदि फिर द्वापर से शुरू होंगे। ग्रंथ भी आगे तो हाथ से लिखा हुआ बहुत छोटा था। अब बड़ा बनाया है। दिन-प्रतिदिन बड़ा बनाते जायेंगे। नहीं तो शिवबाबा की जीवन कहानी कितनी लिखनी चाहिए। अभी तुम बच्चे कहते हो— परमपिता परमात्मा की जीवन कहानी हम जानते हैं। बाप बैठ समझाते हैं— मैं भक्तिमार्ग में क्या करता हूँ। भक्ति मार्ग में भी इन्श्योरेन्स करता हूँ। ईश्वर अर्थ मनुष्य दान-पुण्य करते हैं ना। कहते हैं इसने दान पुण्य किया है ईश्वर अर्थ। ईश्वर ने बड़े घर में जन्म दिया है। भक्तिमार्ग में धर्मात्मा बहुत होते हैं। ईश्वर अर्थ, श्रीकृष्ण अर्थ दान पुण्य करते हैं। तो फिर बाप समझाते हैं— मैं बच्चों को दूसरे जन्म में अल्पकाल के लिए फल देता आया हूँ। अच्छा वा बुरा फल मिलता तो है ना। कितना इन्श्योरेन्स हुआ। जो जैसे कर्म करते हैं, उस अनुसार फल मिलता है। माया उल्टा काम कराती है, जिससे तुम दुःख को पाते हो। अब मैं तुमको ऐसे कर्म सिखाता हूँ जो कभी दुःख नहीं होगा और माया भी वहाँ नहीं होती। बाकी है मर्तबा। जो जितना इन्श्योर करे। शिवबाबा भी ट्रस्टी है ना। नम्बरवन ट्रस्टी है। दूसरे की आसक्ति जायेगी, कोई ट्रस्टी तो किसका खाना ही खराब कर देते हैं। बाप तो देखो कैसा ट्रस्टी है, कहते हैं यह सब कुछ बच्चों के लिए है। तुम्हारा सारा कनेक्शन शिवबाबा से है। बाप कहते हैं मैं सच्चा ट्रस्टी हूँ। मैं खुद सुख नहीं लेता हूँ, बच्चों को सारी राजधानी देता हूँ। लौकिक बाप भी बच्चों को सब कुछ वर्से में दे जाते हैं। मैं तो स्वर्ग में कुछ भी लेता नहीं हूँ। तुमको ही सब देता हूँ। तो तुम्हारा कनेक्शन सारा शिवबाबा से है। यह बाबा कहते हैं मैंने भी फुल इनश्योर कर लिया। तन-मन-धन सब बाप की सर्विस में है। सिन्धी में एक कहावत है— हाथ जिसका ऐसे (दाता रूप में) पहला पूर वह पहुँचेंगे। बाप को सब इनश्योर करना है। दो मुट्ठी चावल दिये तो महल मिल गये। अभी देखो मकान बना है, कोई ने एक रूपया भेजा, हमारी ईट भी लग जाए। बाप ने लिखा तुमको
e तो सबसे अच्छे महल मिलेंगे क्योंकि तुम गरीब हो। मैं हूँ ही गरीब निवाज। गरीब का एक रूपया तो साहूकार का 10 हजारा। दोनों को एक ही मर्तबा मिल जाता है। साहूकार
f बहुत मुश्किल आते हैं। सबसे कन्यायें तो बिल्कुल फ्री हैं। नम्बरवन देखो मम्मा गई। उनके पास तो कुछ भी नहीं था। गरीब के घर की थी फिर भी नम्बरवन चली गई। इसने सब कुछ दिया फिर भी पहले लक्ष्मी फिर नारायण। कितना वन्डरफुल खेल है। तो कभी किसी बात में संशय नहीं होना चाहिए। बापदादा कोई कम थोड़ेही है। जरा भी संशय इसमें नहीं लाना चाहिए। बहुत मीठा भी बनना है। कदम-कदम पर श्रीमत लेनी है। नहीं तो माया

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बहुत नुकसान करा देती है। बच्चों को कितने डायरेक्शन देने पड़ते हैं। बाबा कहते हैं– पूरा समाचार लिखो। बाबा हर प्रकार की सम्भाल करेंगे। बाबा को बहुत ख्याल रहता है। कहाँ यह बच्चा चढ़ जाए। पढ़ाई पर पूरा अटेन्शन चाहिए। हम हैं मोस्ट बिलवेड गॉड फादरली स्टूडेन्ट। भगवानुवाच भी लिखा हुआ है परन्तु कृष्ण का नाम डाल दिया है। कृष्ण भी सभी मनुष्यों से ऊंच ते ऊंच ठहरा ना। फर्स्ट प्रिन्स है। कृष्ण का नाम देते हैं, नारायण का क्यों नहीं! कृष्ण है बालक। छोटेपन से बालक सतोप्रधान होता है। फिर बचपन से युवा, फिर वृद्ध अवस्था आती है। बच्चों की ही महिमा करते हैं क्योंकि पवित्र हैं ना। बालक ब्रह्मज्ञानी समान कहते हैं। बच्चे से कोई पाप नहीं होता है। तो कृष्ण भी छोटा बच्चा होने के कारण उनका बर्थ डे मनाते हैं। फिर भी कृष्ण को द्वापर में दिखा दिया है। यह सब बाप बैठ समझाते हैं। सिवाए तुम ब्राह्मणों के दुनिया में ऐसा कोई नहीं होगा जिसे यह सब बातें पता हों। ब्राह्मण हैं उत्तम। तुम ब्राह्मण हो ईश्वरीय सन्तान। सतयुग में ईश्वरीय सन्तान नहीं कहेंगे। ईश्वर से जरूर स्वर्ग की प्राप्ति होगी। यह है तुम्हारा अति दुर्लभ अमूल्य जीवन। सबका तो हो नहीं सकता। यह ड्रामा ऐसा बना हुआ है। कल्प पहले जिन्होंने पढ़ा, वह पढ़ रहे हैं। भगवान ने जरूर भगवान-भगवती पैदा किये। परन्तु भगवान-भगवती कह नहीं सकते। गॉड इज वन। निराकार की महिमा है। साकार की थोड़ेही महिमा होती है। इन लक्ष्मी-नारायण को निराकार ने ऐसा बनाया। अब राजयोग सीख रहे हैं। राजाई स्थापन हुई, तो उस समय विनाश भी हुआ। बाप जरूर स्वर्ग का वर्सा देंगे। अब तो है संगम की बात। शिवबाबा आते हैं, तब खेल पूरा होता है, फिर कृष्ण का जन्म होता है। मनुष्य तो बिचारे मूँझ गये हैं, तब तो बाप आकर समझाते हैं। परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा सब शास्त्रों का सार बताते हैं। अभी तुम जैसे मास्टर नॉलेजफुल हो गये हो। आत्मा की ही महिमा है। ज्ञान का सागर, आनंद का सागर, ब्लिसफुल, यह बाप की महिमा है। बाप कहते हैं– यह भारत तो सबसे बड़ा तीर्थ स्थान है। परन्तु कृष्ण का नाम डालने से सारी महिमा गुम कर दी है। नहीं तो सभी शिव के मन्दिर में फूल चढ़ाते, सबका सद्गति दाता वह एक है। आधाकल्प तुम प्रालब्ध भोग फिर नीचे आते हो। सबको तमोप्रधान बनना ही है। अब बाप कहते हैं– तुम बच्चों के लिए नई दुनिया स्थापन कर रहा हूँ। उसमें खुद नहीं आता, सब कुछ तुम बच्चों के लिए है। साफ बात है। मनुष्य तो अपने लिए करते हैं फिर कहते हैं कि हम निष्काम करते हैं। परन्तु निष्काम तो कोई कर न सके। हर चीज़ का फल जरूर मिलता है। मैं तो तुम बच्चों को अविनाशी ज्ञान रत्न देता हूँ। तुम्हारे लिए ही वैकुण्ठ लाया हूँ। बच्चों को सावरन्टी का सोवीनियर देते हैं। तो वह लेने लिए ऐसा लायक बनना चाहिए। स्वर्ग का मालिक बनना है। हथेली पर बहिश्त मिलता है। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति अथवा सेकेण्ड में बादशाही। दिव्य दृष्टि दाता शिवबाबा है। सेकेण्ड में बैकुण्ठ में ले जाते हैं, इसमें बाबा के हाथ में कुछ भी चाबी नहीं है। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों को राजाई देता हूँ। मैं नहीं करता हूँ। फिर जब तुम भक्ति मार्ग में जायेंगे तब तुमको दिव्य दृष्टि से बहलाना पड़ेगा। कितना अच्छी रीति समझाते हैं। ऐसा बाबा कल्प-कल्प, कल्प के संगमयुगे एक ही बार आते हैं। बनी बनाई

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बन रही अब कुछ बननी नाहि... जो कुछ होता है, ड्रामा में नूँध है। उसको साक्षी हो देखो। बाबा बहुत अच्छी रीति समझाते हैं। बच्चे मैं तुम्हारा इन्श्योरेन्श मैगनेट हूँ। तुम्हारी एक पाई भी नहीं गँवाता हूँ। कौड़ी से तुमको हीरे तुल्य बनाता हूँ। यह सब शिवबाबा करते हैं इनके द्वारा, करनकरावनहार हैं। निराकार, निरहंकारी वह है। गॉड फादर कैसे बैठ पढ़ाते हैं। ऐसे नहीं कहते चरणों में पड़ो। बाप ओबीडियन्ट सर्वेन्ट है। बाप कहते हैं— जिनको मालिक बनाया, वह सुख भोग-भोग कर अभी दु:खी हुए हैं। सुख भी बहुत मिलता है। इतना सुख कोई धर्म को नहीं मिलता है। ऐसे नहीं कह सकते कि भारतवासियों को क्यों, औरों ने क्या किया? अरे इतने ढेर मनुष्य हैं, सब तो नहीं आ सकते हैं। यह ड्रामा बना हुआ है। भारत में ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म था। भगवान ने आकर सहज राजयोग सिखाया था। बाप कहते हैं— मैं फिर से आया हुआ हूँ। तुम भी जानते हो 84 जन्मों का पार्ट बजाया अब फिर से हम घर जाते हैं। यह बहुत पुराना चोला हो गया है (सर्प का मिसाल)। सन्यासी लोग फिर कहते हैं आत्मा सो परमात्मा में लीन हो जाती है। ऐसी अवस्था में रहते-रहते फिर शरीर छोड़ देते हैं। परन्तु ब्रह्म में लीन तो कोई होता नही है। उनमें भी कोई-कोई बहुत तीखे होते हैं। शान्ति में बैठकर शरीर छोड़ चले जाते हैं। तो उनका वायुमण्डल में 2-3 दिन तक सन्नाटा हो जाता है। तो तुम जानते हो कि यह पुराना शरीर छोड़ बाबा के पास जाते हैं। ब्रह्म तो बाबा नहीं, यह उन बिचारों का भ्रम है। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- इस ड्रामा की हर सीन साक्षी होकर देखना है क्योंकि बनी बनाई बन रही। कभी किसी बात में संशय नहीं उठाना है।

२- बाप इन्श्योरेन्स मैगनेट है, इसलिए तन-मन-धन बाप की सर्विस में सफल कर अपना भविष्य बनाना है। बाप से पूरा-पूरा कनेक्शन रखना है। पूरा समाचार देना है।

वरदान:- अपने अनादि आदि स्वरूप की स्मृति से निर्बन्धन बनने और बनाने वाले मरजीवा भव

जैसे बाप लोन लेता है, बंधन में नहीं आता, ऐसे आप मरजीवा जन्म वाले बच्चे शरीर के, संस्कारों के, स्वभाव के बंधनों से मुक्त बनो, जब चाहें जैसे चाहें वैसे संस्कार अपने बना लो। जैसे बाप निर्बन्धन है ऐसे निर्बन्धन बनो। मूलवतन की स्थिति में स्थित होकर फिर नीचे आओ। अपने अनादि आदि स्वरूप की स्मृति में रहो, अवतरित हुई आत्मा समझकर कर्म करो तो और भी आपको फालो करेंगे।

स्लोगन:-

याद की वृत्ति से वायुमण्डल को पावरफुल बनाना—यही मन्सा सेवा है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

16-4-99 प्रात: मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – यह पुरूषोत्तम युग ही गीता एपीसोड है, इसमें ही तुम्हें पुरूषार्थ कर उत्तम पुरूष अर्थात् देवता बनना है"

प्रश्न :- किस एक बात का सदा ध्यान रहे तो बेड़ा पार हो जायेगा?

उत्तर:- सदा ध्यान रहे कि हमें ईश्वरीय संग में रहना है तो भी बेड़ा पार हो जायेगा। अगर संगदोष में आये, संशय आया तो बेड़ा विषय सागर में डूब जायेगा। बाप जो समझाते हैं उसमें बच्चों को जरा भी संशय नहीं आना चाहिए। बाप तुम बच्चों को आप समान पवित्र और नॉलेजफुल बनाने आये हैं। बाप के संग में ही रहना है।

ओम शान्ति। भगवानुवाच–बच्चे जानते हैं कि बाप वही राजयोग सिखला रहे हैं जो 5 हज़ार वर्ष पहले समझाया था। बच्चों को मालूम है, दुनिया को तो मालूम नहीं है तो फिर पूछना चाहिए गीता का भगवान् कब आया? भगवान् जो कहते हैं मैं राजयोग सिखलाकर तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। वह गीता एपीसोड कब हुआ था? पूछना चाहिए। यह बात कोई भी नहीं जानते हैं। तुम अब प्रैक्टिकल सुन रहे हो। गीता का एपीसोड होना भी चाहिए कलियुग अन्त और सतयुग आदि के बीच में। आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं तो जरूर संगम पर ही आयेंगे। पुरूषोत्तम संगमयुग है जरूर। भल पुरूषोत्तम वर्ष गाते हैं परन्तु बिचारों को पता नहीं है। तुम मीठे-मीठे बच्चों को मालूम है, उत्तम पुरूष बनने के लिए अर्थात् मनुष्य को उत्तम देवता बनाने के लिए बाप आकर पढ़ाते हैं। मनुष्यों में उत्तम पुरूष ये देवतायें (लक्ष्मी-नारायण) हैं। मनुष्यों को देवता बनाया इस संगमयुग पर। देवतायें जरूर सतयुग में ही होते हैं। बाकी सब है कलियुग में। तुम बच्चे जानते हो हम हैं संगमयुगी ब्राह्मण। यह पक्का-पक्का याद करना है। नहीं तो अपना कुल कभी किसको भूलता नहीं है। परन्तु यहाँ माया भुला देती है। हम ब्राह्मण कुल के हैं फिर देवता कुल के बनते हैं। अगर यह याद रहे तो बहुत खुशी रहे। तुम पढ़ते हो राजयोग। समझाते हो अब फिर भगवान् गीता का ज्ञान, जिसको भारत का प्रचीन योग कहा जाता है, वह सुना रहे हैं। हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं। बाप ने कहा है काम महाशत्रु है। इन पर जीत पाने से तुम जगतजीत बनते हो। पवित्रता की बात पर कितनी आरग्यु करते हैं। मनुष्यों के लिए विकार तो जैसे एक खज़ाना है। लौकिक बाप से यह वर्सा मिला हुआ है। बालक बनते हैं तो पहले-पहले बाप का यह वर्सा मिलता है। शादी बरबादी कराते हैं। और बेहद का बाप कहते हैं काम महाशत्रु है, तो जरूर काम को जीतने से ही जगत जीत बनेंगे। बाप जरूर संगम पर ही आये होंगे। महाभारी महाभारत लड़ाई भी है। हम भी यहाँ जरूर हैं। ऐसे भी नहीं, सब फट से काम पर जीत पाते हैं। हर बात में टाइम लगता है। मुख्य बात बच्चे यही लिखते हैं कि बाबा हम विषय वैतरणी नदी में गिर गये। तो जरूर कोई ऑर्डीनेन्स है। बाप का फ़रमान है–काम को जीतने से तुम जगतजीत बनेंगे। ऐसे नहीं, जगत जीत बन कर फिर विकार में जाते होंगे। जगतजीत

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

यह लक्ष्मी-नारायण हैं। इनको कहा जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। देवताओं को सब निर्विकारी कहते हैं, जिसको तुम राम राज्य कहते हो। वह है वाइसलेस वर्ल्ड। यह है विशश वर्ल्ड, अर्थात् गृहस्थ आश्रम। बाबा ने समझाया है तुम पवित्र गृहस्थ आश्रम के थे। अब 84 जन्म लेते-लेते अपवित्र बने हो। 84 जन्मों की ही कहानी है। नई दुनिया जरूर ऐसी वाइसलेस होनी चाहिए। भगवान्, जो पवित्रता का सागर है, वही स्थापना करते हैं फिर रावण राज्य भी जरूर आना होता है। नाम ही है राम राज्य और रावण राज्य। रावण राज्य माना ही आसुरी राज्य। अभी तुम आसुरी राज्य में बैठे हो। यह लक्ष्मी-नारायण हैं दैवी राज्य की निशानी।

तुम बच्चे प्रभात फेरी आदि निकालते हो। प्रभात सवेरे को कहा जाता है, उस समय मनुष्य सोये रहते हैं इसलिए देरी से निकलते हैं। प्रदर्शनी भी अच्छी तब हो जब सेन्टर भी हो। जहाँ आकर समझें कि काम महाशत्रु है। उन पर जीत पाने से जगत जीत बनेंगे। लक्ष्मी-नारायण का चित्र साथ में जरूर होना चाहिए—टार्चलाइट का। इनको कभी भूलना नहीं चाहिए। एक यह चित्र और सीढ़ी। टूक में जैसे देवियों को निकालते हैं ऐसे तुम यह दो-तीन टूक सजाकर उसमें मुख्य चित्र निकालते हो तो अच्छा लगता है। दिन-प्रतिदिन चित्रों की वृद्धि भी होती जाती है। तुम्हारा ज्ञान वृद्धि को पाता रहता है। बच्चों की भी वृद्धि होती जाती है। उसमें गरीब साहूकार सब आ जाते हैं। शिवबाबा का भण्डारा भरता जाता है। जो भण्डारा भरते हैं, उनको वहाँ रिटर्न में कई गुणा मिल जाता है। तब बाप कहते हैं—मीठे-मीठे बच्चों, तुम हो पद्मापद्म पति बनने वाले सो भी 21 जन्मों के लिए।

b बाबा खुद कहते हैं तुम जगत का मालिक बन जायेंगे 21 पीढ़ी। मैं खुद डायरेक्ट आया हूँ। तुम्हारे लिए हथेली पर बहिश्त लाया हूँ। जैसे जब बच्चा पैदा होता है तो बाप का वर्सा उनकी हथेली पर ही है। बाप कहेंगे यह घर-बार आदि सब कुछ तुम्हारा है। बेहद का बाप भी कहते हैं तुम जो मेरे बनते हो तो स्वर्ग की बादशाही तुम्हारे लिए है—21 पीढ़ी क्योंकि तुम काल पर जीत पा लेते हो। इसलिए बाप को महाकाल कहते हैं। महाकाल कोई मारने वाला नहीं है। उनकी तो महिमा की जाती है, समझते हैं भगवान् ने यमदूत भेज मंगा लिया। ऐसी कोई बात है नहीं। यह सब हैं भक्ति मार्ग की बातें। बाप कहते हैं मैं प्कालों का काल हूँ। पहाड़ी लोग महाकाल को भी बहुत मानते हैं। महाकाल के मन्दिर भी हैं। ऐसे झण्डियां लगा देते हैं। तो बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। यह भी समझते हो कि राइट बात है। बाप को याद करने से ही जन्म-जन्मान्तर के विकर्म भस्म होते हैं। तो उसका प्रचार करना चाहिए। कुम्भ के मेले आदि बहुत लगते हैं। स्नान करने का भी बहुत महत्व बताया है। अब तुम बच्चों को यह ज्ञान अमृत 5 हज़ार वर्ष के बाद मिलता है। वास्तव में इसका अमृत नाम है नहीं। यह तो पढ़ाई है। यह सब हैं भक्ति मार्ग के नाम। अमृत नाम सुनकर चित्रों में पानी दिखाया है। बाप कहते हैं मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ। पढ़ाई से ही ऊंच पद मिलता है। सो भी मैं पढ़ाता हूँ। भगवान् का कोई ऐसा सजा हुआ रूप तो है नहीं। यह तो बाप इसमें आकर पढ़ाते हैं। पढ़ाकर आत्माओं

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

को आप समान बनाते हैं। खुद लक्ष्मी-नारायण थोड़ेही हैं जो आप समान बनायेंगे। आत्मा पढ़ती है, उनको आप समान नॉलेजफुल बनाते हैं। ऐसे नहीं, भगवान् भगवती बनाते हैं। उन्हों ने कृष्ण को दिखाया है। वह कैसे पढ़ायेंगे? सतयुग में पतित थोड़ेही होते हैं। कृष्ण तो होता ही है सतयुग में। फिर कभी भी कृष्ण को तुम नहीं देखेंगे। ड्रामा में हर एक के पुनर्जन्म का चित्र बिल्कुल न्यारा होता है। कुदरत का ड्रामा है। बनी बनाई.... बाप भी कहते हैं तुम हूबहू इस फीचर से इसी कपड़े में कल्प-कल्प तुम ही पढ़ते आयेंगे। हूबहू रिपीट होता है ना। आत्मा एक शरीर छोड़ फिर दूसरा वही लेती है, जो कल्प पहले लिया था। ड्रामा में कुछ फ़र्क नहीं पड़ सकता है। वह होती हैं हद की बातें, यह हैं बेहद की बातें। जो बेहद के बाप सिवाए कोई समझा नहीं सकते हैं। इसमें कोई संशय नहीं हो सकता है। निश्चयबुद्धि हो फिर कोई न कोई संशय में आ जाते हैं। संग लग जाता है। ईश्वरीय संग चलता चले तो पार हो जायें। संग छोड़ा तो विषय सागर में डूब पड़ेंगे। एक तरफ है क्षीरसागर, दूसरे तरफ है विषय सागर। ज्ञान अमृत भी कहते हैं। बाप है ज्ञान सागर, उनकी महिमा भी है। जो उनकी महिमा है वह लक्ष्मी-नारायण को नहीं दे सकते हैं। कृष्ण कोई ज्ञान का सागर नहीं है। बाप है पवित्रता का सागर। भल वह देवतायें सतयुग-त्रेता में पवित्र हैं परन्तु सदैव के लिए तो नहीं रहते हैं। फिर भी आधाकल्प के बाद गिरते हैं। बाप कहते हैं मैं आकर सबकी सद्गति करता हूँ। सद्गति दाता मैं एक हूँ। तुम सद्गति में जाते हो फिर यह बातें ही नहीं होती। अब तुम बच्चे सम्मुख बैठे हो। तुम भी शिवबाबा से पढ़कर टीचर बने हो। मुख्य प्रिंसीपल वह है। तुम आते भी उनके पास हो। कहते हैं हम शिवबाबा के पास आये हैं। अरे, वह तो निराकार है। हाँ, वह आते हैं, इनके तन में। इसलिए कहते हैं बापदादा के पास जाते हैं। यह बाबा है उनका रथ, जिस पर उनकी सवारी है। उनको रथ, घोड़ा, अश्व भी कहते हैं। इस पर भी एक कथा है—दक्ष प्रजापिता ने यज्ञ रचा। कहानी लिख दी है। परन्तु ऐसे तो है नहीं।

शिवभगवानुवाच—मैं तब आता हूँ जब भारत पर अति धर्म ग्लानि होती है। गीतावादी भल कहते हैं—यदा यदाहि.... परन्तु अर्थ नहीं समझते हैं। तुम्हारा बहुत छोटा झाड़ है। उनको तूफ़ान भी लगते हैं। नया झाड़ है ना। फाउन्डेशन तो है यह। इतने अनेक धर्मों के बीच में एक सनातन धर्म का सैपलिंग लगाते हैं। कितनी मेहनत है। औरों को मेहनत नहीं लगती है। वह ऊपर से आते रहते हैं। यहां तो जो सतयुग-त्रेता में आने वाले हैं, उन्हों की आत्मायें बैठ पढ़ती है। जो पतित हैं, उनको पावन देवता बनाने लिए बाप बैठ पढ़ाते हैं। गीता तो यह भी बहुत पढ़ते थे। जैसे अब आत्माओं को याद कर दृष्टि दी जाती है तो पाप कट जायें। भक्ति मार्ग में फिर गीता के आगे जल रखकर बैठ पढ़ते हैं। समझते हैं पित्रों का उद्धार होगा। इसलिए पित्रों को याद करते हैं। भक्ति में गीता का बहुत मान रखते थे। अरे, बाबा कोई कम भक्त था क्या! रामायण आदि सब पढ़ते थे। बहुत खुशी होती थी। वह सब पास्ट हो गया।

अब बाप कहते हैं बीती को चितवों नहीं। बुद्धि से सब निकाल दो। बाबा ने स्थापना,

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

विनाश और राजधानी का साक्षात्कार कराया तो वह पक्का हो गया। यह सब खलास होना है—यह पता नहीं था। बाबा ने समझा—यह सब होगा। देरी थोड़ेही है। हम जाकर फलाना राजा बनूँगा। पता नहीं, बाबा क्या-क्या समझते रहते थे। तुम बच्चे जानते हो बाबा की प्रवेशता कैसे हुई। यह बातें मनुष्य नहीं जानते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का नाम तो लेते हैं परन्तु इन तीनों में से भगवान किसमें प्रवेश करते हैं, अर्थ नहीं जानते। वो लोग विष्णु का नाम लेते हैं। अब वह तो हैं देवता। वह कैसे पढ़ायेंगे। बाबा खुद बतलाते हैं मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। इसलिए दिखाया है - ब्रह्मा द्वारा स्थापना। वह पालना और वह विनाश। यह बड़ी समझने की बातें हैं। भगवानुवाच—मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ। वह भगवान कब आया जो राजयोग सिखलाया और राजाई पद दिलाया। यह अभी तुम समझते हो। 84 जन्मों का राज़ भी समझाया है। पूज्य-पुजारी का भी समझाया है। विश्व में शान्ति का राज्य इन लक्ष्मी-नारायण का था ना, जो सारी दुनिया चाहती है। जब लक्ष्मी-नारायण का राज्य था तो उस समय सब शान्तिधाम में थे। अब हम श्रीमत पर यह कार्य कर रहे हैं। अनेक बार किया है और करते रहेंगे। यह तो आप जानते हैं, कोटों में कोई निकलेगा। देवी-देवता धर्म वालों को ही टच होगा। भारत की ही बात है। जो इस कुल के होंगे वह निकल रहे हैं और निकलते रहेंगे। जैसे तुम निकले हो, वैसे और प्रजा भी बनती रहेगी। जो अच्छा पढ़ते वह अच्छा पद पाते हैं। मुख्य है ज्ञान-योग। योग बिगर ज्ञान कैसे मिलेगा? पावर हाउस के साथ योग भी चाहिए। योग से विकर्म विनाश होंगे और हेल्दी-वेल्दी बनेंगे। पास विद् ऑनर भी होंगे। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. जो बात बीत गई, उसका चिंतन नहीं करना है। अब तक जो कुछ पढ़ा उसे भूलना है, एक बाप से सुनना है और अपने ब्राह्मण कुल को सदा याद रखना है।

२. पूरा निश्चयबुद्धि होकर रहना है। किसी भी बात में संशय नहीं उठाना है। ईश्वरीय संग और पढ़ाई कभी भी नहीं छोड़ना है।

वरदान:- अकाल तख्त और दिलतख्त पर बैठ सदा श्रेष्ठ कर्म करने वाले कर्मयोगी भव

इस समय आप सभी बच्चों को दो तख्त मिलते हैं - एक अकाल तख्त, दूसरा दिल तख्त। लेकिन तख्त पर वही बैठता है जिसका राज्य होता है। जब अकाल तख्तनशीन हैं तो स्वराज्य अधिकारी हैं और बाप के दिल तख्तनशीन हैं तो बाप के वर्से के अधिकारी हैं, जिसमें राज्य भाग्य सब आ जाता है। कर्मयोगी अर्थात् दोनों तख्तनशीन। ऐसी तख्तनशीन आत्मा का हर कर्म श्रेष्ठ होता है क्योंकि सब कर्मेन्द्रियां लॉ और ऑर्डर पर रहती हैं।

स्लोगन:-

विशेष आत्मा वह है जो अपनी चलन द्वारा रूहानी रायॅल्टी की झलक और फलक का अनुभव कराये।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बच्चे अनुभव सुनाते हैं ना। यह भी बच्चा अनुभव सुनाते हैं। क्यों कि बाप भी दादा भी है। कहते हैं स्वप्न में भी ऐसे ख्याल न था अ बाप आकर कर के हमको विश्व का मालिक बनायेंगे। कबभी किसको e ख्यात नहीं आ सकता। इस जन्म की बात है ना। भल पूजा भी करते हैं पे परन्तु वह आकर हमको पढ़ाते हैं विश्व के मालिक यह बनते हैं यहख्यात में न था। ओ हो बेहद का बाप2 मत कर्म तब नाऽ पी पूजा सुनने पे परन्तु जैसे कामम। यहां तो बच्चों को निश्चय है हम बेहद के बाप से सारे विश्व का राज प्रेम आप से हैं। सब से प्यारा ते प्यारा है। उनके वह कर्तव्य मनुष्यों से सुनो। यहतो स्वयं बाप है। उनके सिवाय कब भी मनुष्य नर से नारायण बन नहीं सकता। जब तक वह आये सऽऽची2युक्ति बतावे मीठे2 रूहानी बच्चों को डायरेक्शन मिलती है मुझे निरन्तर याद करने का पुरुषार्थ करो। तो योग अग्नि से पाप भस्म हो जावेंगे। फिर तुम मनुष्य से नर नर से नारायण बन जावेंगे। कितना अच्छी तरह से तुम बच्चों को समझाता हूं। तुम अमरलोक के मालिक बन रहे हो। निर्वाणधाम कोअमर लोक नहीं कहा जा सकता। कहती है घर। अमरलोक भी है मृत्यु लोक भी है। बच्चों को यह मालूम है तुम ड्रामा के सभी एक्टर्स के पार्ट को जान गये हो। बाप से पूछ भी नहीं सकते। बाप आपे ही अपना परिचय देते हैं। सारी रचना का राज समझते हैं। भक्ति एकदम दुर्गति में ले जाती है। बाप आकर सदगति में ले जाते हैं। फर्क का तुमको मालूम पड़ा है। सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। तुम बच्चे सुमिरण करते हो तब ही अथाहसुख की मीटिंग आती है। यह है सारी बुधि की बात। स्वदर्शनचक्रधारी कहने से ही बुधि में सारा आ जाता है× सेकण्ड में। हम स्वदर्शनचक्रधारी हैं। औरों को भी समझाते रहते हैं। तुम बच्चे हाइएस्ट नालेज प्राप्त कर रहे हो। आगे नालेज नहीं थी। अभी बाप कहते हैं बच्चे धीर्य धरो। बाकी थोड़ा समय है। माया के तूफान है। छोटी दीवे हैं उनको बुझाने की कोशिश करती है। तुम बाप को याद करो तो पाँ अऽ बारह है। हम फुल पास हो जावेंगे। परन्तु माया ऐसे चित्ती पड़ी2भुला देती है। बाप को भूले और लगी माया की चट। माया है एक क्षण। सेकण्ड में जीवन मुक्ति। फिर एक सेकण्ड में दुर्गति पड़ी जाती। ऐसी माया चमाट मारती है। जो बिलकुल ही दुर्गति में ले जाती है। फी कामर चट हो जावेंगी।परम पिता परमात्मा से प्रतिज्ञा भी करते हैं कोर्ट में झूठा कसम उठाते हैं ना। ईश्वर को जानते ही नहीं फिर कसम उठाने से क्या हुआ। यहां तो बाप का परिचय मिलता है कसम उठाने की बात ही नहीं। बाप टीचर है पढ़ा ते हैं। टीचर का कसम उठाया जाता है क्या। भगवान का कसम कहते हैं। तो तुम मीठे2 बच्चे आधा कल्प भक्ति करते हो। भक्ति करते2 जैसेहार जाते हो। भक्ति से ही दुर्गति। कहते हैं भगवान कोई न कोई वेष में आकर वर्सा देंगे। अभी तुमको यह पता पड़ता है। लाखों को बात नहीं। लाखों वर्ष समझ मनुष्य घोर अन्धियारे× अंधियारे में पड़े गये हैं। यह गाया हुआ है अति इन्द्रिय सुख गोपी गोपियों से पूछो। परन्तु वह है पिछाड़ी की फर्स्टनल स्टेज। अभी मुसाफिरी कर रहे हो। अमेरिका से अमेरिका जाते हो। काली दुनिया से गोरी दुनिया में जाते हो। अमेरिकन काले होते हैं ना। तुम समझते हो हम सोट रहे हैं। बाप को याद हम पवित्र बन जावेंगे। नहीं तो हो पापी वापिस जावेंगे हमको f पता नहीं मिलता। इसलिए कहा जाता है प्रेम एरोप्लेन से यह पर्चा गिराओ। तुम बच्चों को बहुत भारी जिम्मेवारी है। बाबा बैठ थोड़े ही सभी को इतलाह देंगे। प्रेरणा आदि की बात नहीं। कैसे भी कर सभी को पैगाम पहुंचाना है। तुम बच्चों के आगे बड़े महारथी महर्षि हो, बड़े ते बड़ा ऊंचे पदवान हो, पढ़ा हुआ हो तुम्हारे कुछ भी नहीं। तुम से ऊंच कोई हो न सके। सभी गरीब के मारे पड़े हैं। बाबा जन्म जन्मान्तर के लिए ही जोयदान दे रहे हैं। बाप यहां समझाते हैं तो प्रेशनेस रहती है। अपने गांव में जाते ही फिर ठंडे हो जाते हो। गाय भूरी भैंसी बनने हो परन्तु मंग कहां। यहां तो मंग में हो ना। कई अल्पत कोई कैम पूछते हैं यहां फालतू ससारी आदि की बातें न सुनना चाहिए। जो बहुत ज्ञानविस करते हैं उनका संग करना चाहिए।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जो बैठ कर सिखाते करे। अच्छे2 बच्चों को बादशाह कहते हैं जाकर क्लास कराओ। महारथी, घोड़ेसवार, प्यादे तो है ना अर्थात् महारथियों का काम है सिखाना करना। न चलते हैं तो गोया आज्ञा का उल्लंघन करते हैं। नाफरमानबरदार
g कहे जाते हैं। तो कितनाडल्ह हल्ह पड़ता होगा। क्योंकि राईट हैंड में धर्मराज भी है ना। (अहमा भी और माया भी कनचन बने इसलिए सैवेरे होत होतो है।) अब स्टुडन्ट लाईफ है सीर्स आफ इनकम। इन में भी तुम्हारे स्टुडन्ट लाईफ है डी बेस्ट लाईफ। यह है दो बेस्ट पढ़ाई और जो तुम पढ़ते हो। दोतो हम राजयोग पढ़ते हैं। यह है डी बेस्ट। भगवान आकर राजयोग सीखाते हैं। इस कुल के जो होंगे बहुत होंगे। बापको कोई समझ न सके। तुम डी बेस्ट टीचर हो। जिनको डी बेस्ट पढ़ाई पढ़ा कर डी बेस्ट बनाते हो। तुम स्थापना कर रहे हो बिगर कोई प्रैक्टिकल पक्षम के। सिर्फ याद की यात्रा से पढ़ाई तो कायम हो जाती है। बाप से टीचर सतगुरु से याद करना होता है। स्वर डेस्टी बनती है ना। जैसे कन्या को वरदेज दिया जाता है। बेटी में अभी दिया जाता है। तुम बच्चों को तो बाप 21 जन्मों के लिए वरदेज देते हैं। विश्व का मालिक बनने का। तो कितनी खुशी होनी चाहिए। किसको देते हैं। बच्चों को। आत्माओं को। ब्रह्मे दुनिया की रसम रिवाज और है। तुम संगम युगी ब्राह्मणों की रसम और। सभी को खुशी के वरदेज से सकते हैं। सारा पढ़ाई पर मदार है जितनापुरुषार्थ करेंगे उतना मिलेगा। पुरुषार्थ तुमको करना है। अकर्मीबाद तो नहीं करेंगा। सभी ऐसे बन जावेंगे पुरुषार्थ अपना करना है। अच्छा।

तुम अनागनत बार बाप से मिले हो बादशाही ली है और गवांई है। अनागनत बार गंवाते और लेते रहेंगे। यह भी अभी तुम समझते हो। .प्र बाप कहते हैं मीठे2 रूहानी सिकीलधे बच्चों पुरुषार्थ करो। गफलत मत करो। माया बहुत गफलत में डालती है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। ज्ञान युक्त याद चाहिए। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यारगुडनाईट और नमस्ते।

पश्चितम 1-5-68 :- दुनिया तो दुनियावी बातों से बहलाते हैं। यह है ईश्वरीय बातों से
h बहलाना। यह है रूह-रूहान। (रूह-रूहान सिर्फ इस समय होती है। पुरुषोत्तम संगम युग पर ही जो बाप आकर रूहों से बात करते हैं।) समझाते भी हैं बच्चों को कि अपने को आत्मा समझो। शिव को शीचुअल रूहानीफादर कहा जाता है। सौफिक बाप को कब ऐसे नहीं कहेंगे। रूहानी बाप है। तो जब रूहानी बाप आकर रूहानी बच्चों को बहलावेंगे। समझाते रहेंगे हे रूहानी बच्चों। रूहानी बाप और क्या कहेंगे। पढ़ाई2 कहेंगे रूहानी बच्चे। प्रेक्टीस हो जाती है। कल्प2 की आमाअनुसार प्रेक्टीस करते हैं। समझाते हैं मैं तुम्हारा बाप हूं। तुम मेरे बच्चे
i हो। यहां आत्मा पवित्र नहीं है आत्मा तो पवित्र है। तो अपने को आत्मा समझ मुझे याद करते रहो। (आत्मा और परमात्मा का मेला भी एक ही बार होता है। हर एक बातबेहद की है। तुमसतोप्रधान थे बेहद में थे अभी तमोप्रधान बन गये हो। बेहद में थे तो बेहद का राज-भाग था। पतित आर्य में बेहद के बाप को ही याद करते हैं। सबों पर भीड़ तबप तो है जब विनाश का समय होता है। सब बहुत दुःखी होते हैं। सभी दुःखी होने का है। बच्चे जानते हैं न अन्न मिलेगा न जल मिलेगा। गैस के पाईप फटने से पानी में भी जहर हो जाता। दुःखों का पहाड़ गिरना है। यह तो बच्चों को मालूम है पुरानी दुनिया खत्म होनी है। क्या2 बनता रहता है। कहते हैं हम ऐसा बनाते हैं जो इस बोम दुनिया भी खलास हो जावेगी। यह तो खेल लिए नहीं है। बड़ा खर्चा होता है। तुम जानते हो पुरानी दुनिया का विनाश होना है नई दुनिया का स्थापना लिए हम पढ़ते हैं। तुम बच्चे जानते हो हम नई दुनिया के लिए पढ़ते हैं। उसको अमरलोक भी कह सकते हैं। मृत्युलोक में पढ़ते हो अमरलोक के लिए। तुम यहां नई बातें सुनते हो। बाप आकर नई दुनिया स्थापन करते हैं। यह तो बाप जाने और बच्चे जिनके आत्मा साथ रूह-रूहान करते हैं, वह जाने। और कोई नहीं जानते। मुख कहते भी हैं नई बात है। पिन भी कहेंगे। वेदों में यह है इन में यह है। यह सभी है जिस्मानी बातें। यह तो बाप

2.6.81 प्रात: क्लास ओम शान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे बाप ही सतगुरू के रूप में तुम बच्चों से गैरन्टी करते हैं बच्चे मैं तुम्हे अपने साथ वापस घर ले जाऊँगा, यह गैरन्टी कोई देहधारी कर न सके"

प्रश्न:-तुम बच्चे यह कथा जो सुन रहे हो यह पूरी कब होगी? उत्तर:-जब तुम फरिश्ते बन जायेंगे। कथा सुनाई जाती है पतित को। जब पावन बन गये तो कथा की दरकार नहीं। इसलिए सूक्ष्मवतन में पार्वती को शंकर ने कथा सुनाई यह कहना ही रांग है।

प्रश्न:-शिवबाबा की महिमा में कौन से शब्द राइट है कौन से नहीं?

उत्तर:-शिवबाबा को अभोक्ता, अकोचता करनकरावनहार कहना राइट है। बाकी अकर्ता कहना राइट नहीं क्योंकि वह पतितो को पावन बनाते हैं।

गीत:-छोड़ भी दे आकाश सिंहासन... ओम शान्ति। यह है बच्चों की पुकार कि बाबा अभी आ जाओ। क्यों हम फिर से रावण राज्य में दुखी है। फिर से माया का परछाया पड़ गया है। अर्थात 5 विकार रूपी रावण से हमको बहुत दुखी किया है। रेसपान्ड में बाबा कहतेहै हाँ बच्चे यह तो मेरा नियम है। यह भी जरूर आकरके ही कहेंगे ना। हाँ बच्चे जब2 धरती पर भारतवासी बिल्कुल ही अष्टाचारी दुखी बन जाते हैं, कितने गुरू करते हैं सदगति के लिए, परन्तु वह और ही उनको दुर्गति में ले जाते हैं। सभी अन्धों की लाठी तो प्रभू है। पहले2 बाप जन्म देते हैं अर्थात एडाप्ट करते हैं, गुरू सदगति करते हैं। अभी न कोई सदगति करते हैं न कोई बाबा है। अभी तुम कहते हो परमपिता परमात्मा हमारा बाबा भी है, गुरू भी है। उस एक को ही सतगुरू, सत बाबा कह सकते हैं। वह है सत बाबा, उनको सुप्रीम कहा जाता है। सतगुरू भी है। साथ में ले जाते हैं। गैरन्टी है और कोई गुरू गैरन्टी कभी नहीं करेंगे कि हम तुम आत्माओं को वापिस ले जाऊंगा। वह जानते ही नहीं। यह है सब नई बातें। तुम जब इनको देखते हो तो बुद्धि में याद शिव को करना है। वही बाप टीचर गुरू है। मनुष्य कोई गुरू करते हैं वा टीचर करते हैं तो उनके शरीर को ही देखते हैं, आत्मा ही भिन्न शरीर धारण कर,
a भिन्न2 नाम रूप देश काल में आती है। अच्छा बाबा तो एक है और एक बार आते हैं। वह तो पुनर्जन्म नहीं लेते [illegible] ना। तुम बच्चे बाप की महिमा गाते हो-वह निराकार है, कब साकार शरीर में [illegible] शिव का अपना शरीर तो होता नहीं। परन्तु ज्ञान का सागर पतित पावन है, सतगुरू है। बाबा भी है, राजयोग भी सिखाते हैं। जो ब्रह्माण्ड का, सारे विश्व का मालिक है। वो ही स्वर्ग का मालिक बनायेंगे ना। शरीरधारी तो बना न सके। सिवाए बच्चे के बाप को कोई जानते नहीं। तुम कहेंगे परमात्मा हमको पढ़ाते हैं। तो कहेंगे यह तो कोई शास्त्रों में नहीं है कि निराकार परमपिता परमात्मा शरीर में आते हैं। अरे शिव जयन्ती गाई जाती है। गीत में भी कहा रूप बदलकर आओ। तो वह किस शरीर किस रूप में आया? तुम्हारा तो यह है कर्मबन्धन का शरीर। अच्छे कर्म से अच्छा पद बुरे कर्म से बुरा पद मिलता है। इनके लिए तो ऐसा नहीं कहेंगे। मनुष्य तो पुनर्जन्म जरूर लेते हैं। बाप नहीं लेते। उसने इस शरीर में प्रवेश
b किया है। बताते भी हैं शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं। शिव तो निराकार हुआ ब्रह्मा द्वारा कैसे करते हैं। क्या ऊपर से प्रेरणा देते हैं? पतित दुनिया में आते हैं तो किस शरीर में आवे। जो राजयोग सिखावे। तुम बच्चे अब जानते हो बाबा आया हुआ है। हम उनसे सुनते हैं। वह इस ब्रह्मा मुख से सुनाते हैं और सबके देहधारी गुरू होते हैं। इष्ट गुरू का नाम बतायेंगे। तुम जानते हो निराकार शिव हमारा बाबा है। पहले तो बाबा जन्म देने वाला चाहिए ना। शिवबाबा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट करते हैं। प्रजापिता को मुख से तो इतने
c बच्चे हो न सकें। बिच्छणी भी 100 बच्चे पैदा करती है तो उसका पेट फट जाता, बच्चे निकल आते माँ मर जाती है। प्रजापिता ब्रह्मा के तो अथाह बच्चे हैं। ब्राह्मण कुल बहुत बड़ा है। जो ब्राह्मण फिर देवता बनेंगे। जब देवता बनेंगे तो एडाप्शन नहीं होगी। एडाप्शन अभी है। कितने ब्राह्मण हैं। बच्चे जानते हैं हम शिवबाबा के पास आये हैं। वही नालेजफुल है। कहते हैं मैं तुम बच्चों को ही यह नालेज सुनाता हूँ। मेरा अपना शरीर तो है नहीं। शिव जयन्ती मनाते हैं परन्तु कैसे शिवबाबा आया यह कोई नहीं जानते। कहते भी हैं शिवरात्रि। रात्रि

में कृष्ण का भी जन्म दिखाते हैं। शिव जयन्ती के बाद फिर से श्रीकृष्ण का जन्म होता है। शिव का जन्म तो है संगम पर। ब्रह्मा की रात पूरी हो फिर दिन शुरू होता है। उसी संगम पर बाप आते हैं। यह है बेहद की रात्रि। वह है हद की आधाकल्प दिन आधाकल्प रात। भक्ति मार्ग में धक्के खाते ही रहते हैं। भगवान मिलता नहीं तो अन्धियारा ठहरेगा। बिल्कुल ही बुद्धिहीन है। गाते हैं परमपिता परमात्मा ऊपर है.. फिर कहते हैं तीर्थ यात्रा पर भी भगवान मिलेगा। दानपुण्य से भी मिलेगा। कितना समय तुमने धक्के खाये हैं। गुरुओं की मत पर। अनेक मत हैं। इसलिए कहा जाता है भक्ति मार्ग है ब्रह्मा की रात। धक्के खाते2 दुर्गति को पाकर पापआत्मा बन पड़ते हैं। नम्बरवन पापआत्मा हैं जो विकार से पैदा होते हैं। तुम ऐसे तो नहीं कहेंगे श्रीकृष्ण कोई विकार से पैदा हुए, नहीं वह तो योगबल से पैदा होते हैं। इन बातों को तुम भारतवासी गृहस्थ धर्म वाले जानते हो। सन्यासी नहीं जानते, न मानते हैं। बाप कहते हैं लाडले बच्चे सतयुग में तुम प्रवृति मार्ग में थे तो जरूर फिर पतित भी बनते हो ना। भारत पवित्र था, देवताओं का राज्य था। वहाँ शान्ति भी थी, यूँ शान्तिधाम निर्वाणधाम है परन्तु सतयुग में भी तुमको वर्सा मिला हुआ है, इसलिए कब वहाँ अशान्त होते नहीं। एक दो को गाली देना, विष पिलाना होता नहीं। एक दो को दुख दे कब अशान्त नहीं करते। कोई भी किसको दुख नहीं देते। यहाँ तो बच्चे माँ बाप को दुख दे अशान्त कर देते हैं। अभी तुम शान्ति के सागर से वर्सा ले रहे हो। वहाँ कोई लड़ाई झगड़ा नहीं होता है। यहाँ भी तुम्हारी वह अवस्था चाहिए। आपस में नूनपानी नहीं होना चाहिए पहले2 तो यह निश्चय चाहिए। बेहद का बाप आया हुआ है। हमको दुख की दुनिया से ले जायेंगे घर। सतयुग में तो बाप आते नहीं। यहाँ आकर इन (नयनों) खिड़कियों से तुमको देखते हैं। इनकी आत्मा भी देखती है। शिवबाबा भी देखते हैं। एक शरीर में दो आत्मायें कैसे हो सकती, मनुष्य नहीं मानेंगे। अरे तुम ब्राह्मण खिलाते हो, पति की अथवा बाप की आत्मा को बुलाते हो, वह आकर बोलती है। उनसे पूछते हैं तो दो आत्मायें हुई ना। बाबा कहते हैं वह आत्मायें आकर बैठती नहीं हैं। यह सारा की बात में नूंध है। ऐसे नहीं कि आत्मा अपना शरीर छोड़ दूसरे शरीर में आती है। यह तो हो न सके। बाप को तो अपना शरीर है नहीं। वह तो आ सकता है ना। 5हजार वर्ष पहले भी हमने ऐसे कहा था कि साधारण बूढ़े तन में भागीरथ अर्थात् भाग्यशाली रथ में आता हूँ। फिर मनुष्य के तन में आयेगा कि बैल पर2 बैल पर तो मनुष्य सवारी करते हैं। सूक्ष्मवतन में शंकर के आगे बैल कहाँ से आया। अगर शंकर की मूर्ति शंकर पार्वती की पूजा करते हैं तो मैं साक्षात्कार करा देता हूँ। बाकी यह जो दिखाया है शंकर ने पार्वती को कथा सुनाई वह है झूठ। शंकर क्यों कथा सुनायेंगे। सूक्ष्मवतन में तो दरकार ही नहीं। तुम फरिश्ते बन जायेंगे तो कथा पूरी होगी। कथा सुनाई जाती है पतित को पावन बनाने। बाबा अमर कथा सुनाते हैं अमरलोक में ले जाने लायक बनाते हैं। अमरलोक सतयुग को कहा जाता है। यह है मृत्युलोक। आज बाबा ने पूछा शिवबाबा स्नान करते है? ब्रह्मा बापदादा करते हैं। हमने कहा स्नान तो दादा करते हैं ना। शिव क्यों करेगा। उनको थोड़ेही पाखाने में जाना है जो स्नान करे। शिव तो अभोक्ता है ना। यह समझ की बात है ना। वह थोड़ेही अपवित्र बनते हैं जो स्नान करेंगे। वह तो आते ही पतितों को पावन बनाने। करनकरावनहार, अभोक्ता, अजोक्ता है। अकर्ता कहना रांग हो जाता है पतितों को पावन करते हैं ना। करनकरावनहार है। (खोसी हुई) इनकी आत्मा का यह शरीर रूपी बाजा डिफेक्टेड हो गया तो शिवबाबा क्या करेगा। यह तो इनका कर्मभोग है ना। तुम ऐसे नहीं कहेंगे कि शिवबाबा के बाजे में डिफेक्ट हुआ। नहीं। यह शरीर उनका नहीं, लोन लिया हुआ है। लोन ली हुई ट्रट जाती है तो धनी की टूटेगी ना। बाबा इस शरीर का धनी नहीं। धनी तो यह (ब्रह्मा) है। उसने यह किराये पर लिया है। यह भाग्यशाली रथ है। बैल एक ही है। फिर गऊ मुख भी कहते हैं। बाबा कहते हैं बरोबर कोई2 बच्चियां इतनी होशियार नहीं हैं। किसको उठाना है तो मैं बच्चों में भी जाकर उठाता हूँ। पतित दुनिया में पतित शरीर में तो आना ही होता है। तो किसका कल्याण करने लिए भी बच्चों में प्रवेश करता हूँ। बच्चे नहीं समझेंगे। उनसे भी वह सुनने वाले बड़े तीखे

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

तीखे हो जाते हैं। यह बाप की मदद मिलती है। एक तो निश्चयबुद्धि हैं दूसरा दिव्य दृष्टि मिलती है। बाबा कहते हैं मैं प्रवेश कर सकता हूँ, ऐसे नहीं मैं सर्वव्यापी हूँ। मुझे बहुरूपी क्यों कहते हैं। जो जिसकी पूजा करते हैं उनका सा० कराता हूँ। सा० में ऐसे देखते हैं कि जैसे सामने आ रहे हैं। कृष्ण का सा० होता है, विष्णु चैतन्य हो जाता है। माथे पर हाथ रखते हैं। कहते हैं मुझे चतुर्भुज का सा० हुआ। परन्तु उनसे फायदा क्या? कुछ भी नहीं। सिर्फ दिल खुश हुई-मुझे भगवान का दीदार हुआ। भक्ति में दीदार बहुत होते हैं, परन्तु इससे सद्गति को नहीं पाते हैं। जबकि गाते हैं सद्गतिदाता पतित पावन एक है। विष्णु नहीं हो सकता। वह बाप भी ही होंगे। बाप एक है फिर उनका बच्चा भी एक है प्रजापिता ब्रह्मा। ऐसे कब नहीं कहेंगे प्रजापति विष्णु वा शंकर प्रजापिता एक फिर उनसे ब्राह्मण एडाप्ट होती है। बच्चे जानते हैं ब्राह्मण बनते हैं वह फिर देवता बनते हैं। ब्राह्मण बनते हैं चित्र द्वारा, फिर वह रुद्रमाला में पिराते हैं। ब्राह्मणों की माला एक्यूरेट बन न सके। क्योंकि अदल बदल होती रहती है। कोई गिरते, कोई मरते रहते हैं। फिर क्या करेंगे। उनको निकाल देंगे? रुद्रमाला अन्त में ही एक्यूरेट बनेगी। यह मीठी२ बातें बाप ही सुनाते हैं और कोई को पता ही नहीं है। कितने हैं जो कहते हैं राम जी संवार कला ही नहीं है... अब रामचन्द्र तो यहाँ से प्रालब्ध ले जाते हैं, त्रेता में जाकर राजा बनते, उनको फिर अज्ञान कहाँ से आया। जो वशिष्ट उनको ज्ञान दे कि संवार कला ही नहीं है, यह सृष्टि का चक्र है। सभी बातों में मूँझे हुए हैं। कोई भी नहीं जानते हैं न समझ सकते हैं। शिवबाबा को ही गुम कर दिया है। शिवजयन्ती मनाते भी हैं, परन्तु समझते नहीं। श्रीकृष्ण ही सांवरा बनता है। बाबा आते भी हैं तब जब इनको सांवरे से गोरा बनाना है। शिव जयन्ती के बाद झट श्रीकृष्ण का जन्म होता है। शिवबाबा आकर राजयोग सिखाते हैं, किसको? ब्राह्मणों को। प्रजापिता ब्रह्मा के मुखवंशावली को। वही फिर राजा रानी बनते हैं। शिवबाबा चले जायेंगे फिर लक्ष्मी नारायण का राज्य होगा तो बाप ने कृष्ण को ऐसा बनाया है। उन्होंने फिर बाप के बदले कृष्ण बच्चे का नाम गुम दिया है। कृष्ण को द्वापर में ले गये हैं। अब शिवबाबा राजयोग सिखाते हैं। तुम जानते हो हम स्वर्ग की राजधानी स्थापन कर रहे हैं। और भी बहुत प्रिन्स प्रिन्सेज बनते हैं। संगम और सतयुग का किसको पता ही नहीं। मैं आता ही हूँ कल्प के संगम पर। उन्होंने फिर युगे२ कह दिया है। सो भी 4 युग होते हैं। द्वापर के बाद कलियुग होता है फिर उस द्वापर युग में जाकर क्या करेंगे? उतरती कला में सबको जाना ही है। मेरा पार्ट ही तब है जब चढ़ती कला होती है। अब इनको तो नीचे उतरना ही है। तुम बच्चों के 84 जन्म पूरे करने हैं। ऊँच ते ऊँच है ब्राह्मण वर्ण। ब्राह्मण फिर देवता, क्षत्रिय, यह वर्ण भी भारत में गाये जाते हैं। विराट रूप का चित्र बनाते हैं, उनमें ब्राह्मणों को और शिव को गुम कर दिया है। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं हैं। शिवबाबा आकर एडाप्ट करते हैं ब्रह्मा द्वारा। शूद्र से ब्राह्मण बनाते हैं। बाकी सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा वह कैसे प्रजापिता बन सकते। पहले यह निश्चय चाहिए-बरोबर वह बाप भी है, टीचर भी है सतगुरु भी है। कहते भी हैं सद्गति दाता एक है परन्तु उनका नाम रूप देश काल नहीं जानते। लव्वा 1

ओ२ निकलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का याद प्यार और गुडमार्निंग। दूसरी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

इस उन्नति के लिए दो सूत्र :- 1- शान्ति के सागर बाप से शान्ति-सुख का कार्ड में शान्तिचित रखना है। जब किसी को दुख दे अशान्त नहीं करना है। खुशफहमी नहीं होना है।

2- बाप समान दुखियों की लाठी बनना है। बाप की मदद लेने के लिए निश्चय बुद्धि बन

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

14-10-02 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - तुम रूहानी ब्राह्मणों का आपस में बहुत-बहुत प्यार होना चाहिए। आपस में मिलकर राय निकालो कि कैसे सभी को सत्य बाप का परिचय दें"

प्रश्न :- बच्चे किस निश्चय के आधार पर अपना भाग्य ऊंचा बना सकते हैं?

उत्तर :- पहले जब बुद्धि में यह निश्चय बैठे कि यहाँ पढ़ाने वाला स्वयं परमात्मा है, उनसे ही हमें सौभाग्य लेना है तब पढ़ाई रोज़ पढ़े और अपना सौभाग्य ऊंचा बना सकें। बाप की श्रीमत है कि बच्चे तुम्हें किसी भी हालत में रोज़ पढ़ना है। अगर क्लास में नहीं आ सकते हो तो भी घर में मुरली पढ़ो।

गीत:- तू प्यार का सागर है....

ओम् शान्ति। आत्मायें अर्थात् बच्चे जान गये हैं कि हम आत्मा बिन्दी मिसल हैं। एक स्टार मुआफ़िक हैं। लेकिन जो आत्मा है वह सेल्फ के बाप को कैसे रियलाइज़ करे। दुनिया में कोई भी न अपने को, न बाप को जानते हैं। तुम जानते हो हम आत्मा बिन्दी हैं। कितनी छोटी हैं, बाप भी इतना छोटा है। आत्मा से परमात्मा बाप कोई बड़ा नहीं है। शरीर तो छोटा बड़ा होता है। अब तुम शिवबाबा की याद में बैठे हो। भल कोई यह जान भी जाये कि आत्मा छोटी बिन्दी है, परन्तु उसमें 84 जन्मों का पार्ट है, वन्डर है ना। जब तक आत्मा शरीर का आधार न लेवे तब तक पार्ट बजा न सके। वैसे परमात्मा भी हम आत्मा के मुआफ़िक छोटा है। परन्तु बाप क्यों कहा जाता है? क्योंकि वह सदा पावन है। वह परमात्मा को न जानते भी उनको बाप कहते हैं। जैसे तुम समझ से याद करते हो वैसे वह भी याद करते हैं। इतने जो भगत हैं, सबका भगवान एक है, जिसको पतित-पावन कहा जाता है। तो पतित हैं अनेक और पतित-पावन है एक। साधू सन्त महात्मा भी बुलाते हैं, उनको गॉड फादर कहते हैं। तो सबका फादर ठहरा ना। फादर को पतित से पावन बनाने आना पड़ता है। पावन बनने का उपाय वही बताते हैं क्योंकि आत्मा पर पापों का बोझा चढ़ा हुआ है। a हम सिर्फ लिख दें कि बी होली, परन्तु ऐसे स्लोगन लगाने से कोई फायदा नहीं क्योंकि बाहर वाले तो समझ न सकें। बाकी तुमको तो समझाया हुआ है, तुमको स्लोगन की क्या दरकार है। इसका अर्थ है पवित्र बनो, बाबा को याद करो। जब तक किसको समझाया नहीं जाये तब तक कुछ समझ न सकें। योग में रहने से पवित्र बन सकते हैं। कहते हैं हिज-होलीनेस। यह पवित्रता का टाइटिल है। सन्यासियों को होली कहते हैं क्योंकि विकार में नहीं जाते हैं। भल वह पवित्र रहते हैं, ब्रह्म को याद करते हैं परन्तु जन्म विकारियों के पास लेना पड़ता है। तुमको तो कहा जाता है पवित्र रहो और शिवबाबा को याद करो। सन्यासी अपने को कर्म सन्यासी कहलाते हैं। परन्तु कर्म का सन्यास होता नहीं। कर्म सन्यास तब हो जब देह न हो। देह बिगर तो घर में (परमधाम में) रहते हैं। यहाँ कर्म का सन्यास कैसे हो सकता है? यह कहना भी झूठ है। वह कहते जो गृहस्थी कर्म करते वह हम नहीं करते। b गृहस्थियों का कर्म तो बहुत है - यज्ञ, तप, तीर्थ आदि करते हैं। वह सन्यासी भी करते हैं। बाकी फर्क सिर्फ यह है कि वह कमाई कर खाना घर में पकाते हैं, सन्यासी यह नहीं करते हैं। वह मांगकर खाते हैं क्योंकि उनका हठयोग है। हठयोग से परमात्मा से मिल नहीं सकते। जब बाप आये तब तो उनसे कोई मिल सके और जब तक बाप न आये तब तक पावन दुनिया की स्थापना भी हो न सके। कितना समझाते हैं फिर भी समझते नहीं हैं। बच्चे समाचार लिखते हैं। इतने-इतने आये। अब देखें कौन-कौन अपना सौभाग्य लेते हैं। आते बहुत हैं परन्तु बुद्धि में यह

PDF compression, OCR, web optimization using CVISION PDFCompressor

नहीं बैठता कि इन्हें पढ़ाने वाला परमपिता परमात्मा है, हमको उनसे सौभाग्य लेना है। बाप रजिस्टर भी देखते हैं। कोई मास में 8-10 दिन भी आते हैं, कोई नहीं भी आते हैं तो वह नहीं लिखते। अगर कोई नहीं आता है तो वह मुरली पढ़ता है वा नहीं। किसी भी हालत में रोज़ पढ़ना पड़े। जैसे जप साहेब, सुखमनी छोटे-छोटे बनाते हैं, समझते हैं कैसे भी पढ सकें। तुम समझते हो, उस पढ़ने से क्या प्राप्ति होगी। कुछ नहीं। करके थोड़े समय के लिए बुद्धि ठीक होगी। परन्तु बाप से कोई मिल न सके। और फिर विकारों में फँस जाते हैं तो फिर उनसे कोई प्राप्ति नहीं। कहते हैं विनाश काले विपरीत बुद्धि, बरोबर अब विनाश का समय है और कोई भी परमात्मा को नहीं जानते। कहते भी हैं हम रचता और रचना के आदि मध्य अन्त को नहीं जानते हैं। परन्तु ड्रामा के आदि मध्य अन्त को जानना चाहिए ना। बाप समझाते हैं सतयुग है आदि, कलियुग है अन्त। तो तीनों काल, तीनों लोकों को समझना है। तीन लोक हैं स्थूल वतन, सूक्ष्म वतन... कहते हैं - शास्त्र अनादि हैं परन्तु बाप समझाते हैं जब से रावण राज्य शुरु होता है तब से शास्त्र भी शुरु होते हैं, तो द्वापर युग मध्य हो गया। आधाकल्प सतयुग, आधाकल्प कलियुग। आधा का हिसाब है। वह मध्य को नहीं जान सकते क्योंकि कल्प की आयु लाखों वर्ष कह देते हैं। कहना चाहिए कि बाप को जानो, ब्रह्माकुमार कुमारी बनो तब वर्सा मिलेगा।

c पहले कोई आते हैं तो पूछो - कहाँ आये हो? कहते हैं बी.के. के पास। तुम कहो विचार करो - इतने ब्रह्माकुमार कुमारियां हैं, तो ब्रह्मा बाप भी होगा! कितने सेन्टर्स हैं, ढेरों के ढेर ब्रह्माकुमार कुमारियां हैं। भला इतने बच्चे एक बाप को कैसे हो सकते! लिखा है प्रजापिता तो इतने ब्रह्माकुमार

d कुमारियां हैं। ऐसे-ऐसे समझाकर खड़ा करना चाहिए। फिर भला ख्याल करो प्रजापिता ब्रह्मा किसका बच्चा? इतने बच्चे रचना तो परमात्मा का काम है ना। तो परमात्मा आता होगा ना। गाया हुआ है तुम मात-पिता... तो बाप ब्रह्मा हो गया ना। तो परमात्मा ब्रह्मा द्वारा रचते हैं, कनवर्ट करते हैं। एडाप्ट करते हैं, वर्सा देने। पावन बनाते हैं कैसे? याद से। कहते हैं सब धर्मों को भूल मामेकम् याद करो। सभी बुलाते हैं मैं नॉलेजफुल, ब्लिसफुल, लिबरेटर, गाइड हूँ। तो सुखधाम में ले जाता हूँ। सुख कहाँ है? सुखधाम में। अभी बाप ले जाता है शान्तिधाम में, फिर आते हैं सुखधाम में। यह बातें कैसे याद करें। रोज़-रोज़ बोलते रहें, औरों को समझाते रहें तो प्वाइंट्स बुद्धि में आती रहती हैं। जब किसको समझाओ तो उनसे लिखा लेना चाहिए। परमात्मा जो आत्माओं का पिता है - उनकी एड्रेस लिखानी चाहिए कि बाप शिव है तो बाप से वर्सा लेंगे। तो मेहनत करनी चाहिए। परन्तु मेहनत करे कौन? इसलिए बच्चों को खुद खड़ा होकर फिर औरों को भी खड़ा करना चाहिए और सर्विस के लिए प्लैन्स बना देने चाहिए। जैसे मिलेट्री के बड़े कमान्डर्स आपस में मिलते हैं ना तो यहाँ भी बच्चों को मिलना चाहिए। परन्तु क्या करें आपस में मिलते नहीं हैं। वास्तव में तुम ब्राह्मणों को आपस में बहुत प्यार होना चाहिए। कोई राय निकालनी चाहिए – कैसे किसको समझायें।

देखो, लक्ष्मी-नारायण के कितने मन्दिर हैं। तो मन्दिर बनाने वालों को मिलना चाहिए कि आपने यह मन्दिर बनाया है परन्तु जानते हो कि इन्होंने राज्य कैसे पाया? फिर राज्य कैसे गंवाया? श्रीकृष्ण का चित्र बहुत अच्छा है, इसमें 84 जन्मों की कहानी बड़ी अच्छी है। सिर्फ यह चित्र बड़ा बनाना चाहिए। बाबा कहते हैं कोई आये तो युक्ति से पूछना चाहिए कि आपने गीता पढ़ी

e है? फिर भला बताओ गीता का भगवान कौन है? तो ऐसे युक्ति से समझाना चाहिए। कहते हैं ना तुम मात-पिता... तो यह ब्रह्मा माता हो गई तो उनके साथ सम्बन्ध रखना चाहिए। अगर

PDF compression, OCR, web-optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

उनसे प्यार गया तो खेल खलास, बाप से वर्सा कैसे पायेंगे। तुम्हारी लड़ाई पुराने दुश्मन से है। कोई को मालूम नहीं है कि रावण से भी कोई युद्ध होती है। कहते हैं सच की नांव डोलेगी लेकिन डूबेगी नहीं। तो हिलती कितनी है। दूसरे सतसंगों में तो हिलने की बात ही नहीं है। यहाँ तो माया से युद्ध है। जब तक बाप को नहीं समझा है तब तक भल लिखकर दें, परन्तु तोता कण्ठी वाला नहीं बना है। जंगली तोता आया और गया। अल्फ को समझना है। ऐसे प्रजा तो ढेर है, बाकी राजाई के लिए कोई खड़ा नहीं होता है। बत्ती पर फिदा हो जाए सो बड़ा मुश्किल होता है।)

अच्छा - मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- आपस में बहुत प्यार से रहना है, मिलकर राय निकालनी है कि किस युक्ति से हर एक तक बाप का सन्देश पहुंचायें।

२- यह विनाश का समय है इसलिए एक बाप से सच्ची प्रीत रखनी है। योग से आत्मा को पावन बनाना है।

(प्यारे साकार बापदादा ने अव्यक्त होने के पूरा एक मास पहले, रात्रि क्लास में शरीर छोड़ने की सहज विधि और कर्मातीत स्थिति की निशानियां सुनाई हैं, वह 17 दिसम्बर 1968 का रात्रि क्लास भेज रहे हैं।)

तुम बच्चों को बाप का डायरेक्शन मिला हुआ है कि बच्चे बाप को याद करो। बच्चे कहते हैं बाबा फुर्सत नहीं मिलती है। अब फुर्सत कहाँ चली जाती है? जरूर माया तुम्हारा समय ले लेती है। माया भी जबरदस्त तीखी है, जो तुमको बाप को याद करने की फुर्सत नहीं देती, तब तो कहते हो बाबा सारे दिन में आधा घण्टा, 20 मिनट याद में रहे, कोई मुश्किल ही सारे दिन में दो घण्टा बाप को याद करते होंगे। जो समझते हैं हम 2 घण्टा याद करते हैं, वह हाथ उठाओ। वह स्थूल याद, पुरानी याद तो चलती आती है। यह तो है इनकारपोरियल, इनको अपना आँख, कान तो है नहीं। बच्चों को कहते हैं मामेकम् याद करो। अपने को आत्मा समझो। तो बाबा पूछ रहे हैं कि कितना घण्टा याद में रहते हो? बच्चे खेलने जाते हैं तो टीचर को याद करते हैं। घर में पढ़ते हैं तो भी टीचर याद रहता है। तो वह है स्थूल याद। इसमें है थोड़ी डिफीकल्टी, तो बाबा पूछते हैं कि अपने को आत्मा समझ बाप को 2 घण्टा जो याद कर सकते हैं, वह हाथ उठाओ। लज्जा नहीं करो, एक्यूरेट बताओ।

तुम यहाँ बैठते हो, बाबा मुरली चलाते हैं तो बुद्धि दूसरे तरफ चली जाती है ना! इतना बुद्धि में धारण भी नहीं होता है। जैसे यहाँ सुबह में एक घण्टा बाबा समझाते हैं, तो क्या वह एक घण्टा बाबा को याद करते हो या बुद्धि बाहर में चली जाती है? बरोबर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बुद्धि कहाँ न कहाँ चली जाती है। सारा नहीं सुनते हैं। अगर सारा बैठ करके सुनें और नोट करते रहें तो बाबा कहेगा हाँ, इनका योग ठीक है। तो सुनते समय अटेन्शन देना है और प्वाइन्टस पूरा लिखना है। अगर लिंक टूटेगी तो प्वाइन्ट भूल जायेगी।

बाप समझाते हैं बच्चे, हार्ट फेल का मौत बहुत मीठा मौत है। इसमें तेरा मेरा फेरा कुछ भी नहीं है। बैठे-बैठे यह गिरा, बेहोश हुआ, खलास। बस। फिर होश में आये ही नहीं। यह बहुत

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अच्छा मौत है। बाकी मनुष्य तो रोते पीटते हैं और तुम तो खुश होंगे अरे वाह! इनका मौत बड़ा सहज हुआ, इनको कोई दुःख नहीं हुआ। अगर मौत हो तो ऐसा हो, नहीं तो दवा, नर्स यह वह बहुत होते हैं ना। इसलिए जो बैठे-बैठे अपनी इस पुरानी जुत्ती को छोड़ दे, कर्मातीत अवस्था हो, ऐसे ही शरीर छोड़े, तो वो सबसे अच्छा है। तुम आगे चल करके देखेंगे, अनायास बम्बिस छूटेंगे और सब बैठे-बैठे चले जायेंगे। चेहरा भी हर्षित होगा। जैसे कभी-कभी अच्छे मौत होते हैं तो देखने वाले कहते हैं कि यह तो जैसे जागता है, यह तो हर्षित है, ऐसे तो कोई कह नहीं सकेंगे कि यह मर गया है। आत्मा हर्षित होके जाती है ना, तो आत्मा में अगर हर्षितपना होगा तो चेहरे पर बाहर से दिखाई तो पड़ेगा ना! आत्मा कोई खत्म तो नहीं होती हैं, आत्मा शरीर छोड़ती है। तो बड़ी खुशी से यह शरीर हंसते हुए छोड़ देगी, इसको कहा जाता है — कर्मातीत अवस्था। वही इतना ऊंच गाये जाते हैं। तुम बच्चों को ऐसे ही जाना है, शरीर की कोई परवाह ही नहीं है, और दूसरी कोई चीज याद नहीं आवे, इसको कहेंगे सबसे मीठा, ओपेहो शरीर छोड़ना। इसलिए सर्प का मिसाल भी देते हैं। सतयुग में ऐसे होता है जो खुशी से शरीर छोड़ते हैं। तो प्रैक्टिस यहाँ से होगी, पीछे वह प्रैक्टिस चलती रहेगी।

तुम बच्चे बाप को कितना प्यार से याद करते हो। अंग्रेजी में कहा जाता है मोस्ट बिलवेड, परम प्रिय, बहुत मीठा। लोगों को तो परमप्रिय, मोस्ट बिलवेड कह नहीं सकते। बाप कहते हैं बच्चे मैं तुम्हारा बाप भी हूँ, टीचर भी हूँ, गुरु भी हूँ। तुम कभी टीचर को भूलो तो बाप को याद कर सकते हो। बाबा गाइड है, गाइड को पण्डा भी कहा जाता है। वह दुःख से लिबरेट करने वाला, शान्तिधाम में ले जाने वाला है, उसके पीछे है सुखधाम। तो तुमको यह ज्ञान घास मिलता है फिर इसको विचार सागर मंथन करते रहो। जैसे गाय का मुख चलता रहता है। तुम्हारा मुख तो चलने की दरकार नहीं है, बाकी अन्दर में सबकुछ याद करना है। जैसे तुम हो, ऐसे हम हैं। हमको तो और भी कम घण्टे मिलते हैं, क्योंकि हमारा बुद्धियोग बाहर में बहुत जाता है, कभी कोई की चिट्ठी आई, फलाने की खिटपिट है, यह है, वह है.. तो सारा दिन उस तरफ बुद्धि जाती है। परन्तु शायद बच्चों से जास्ती बाबा को सहज है क्योंकि बगल में (साथ में) रहता है। जब बाबा भोजन खाने के लिए बैठते हैं तो सोचते हैं, अच्छा मैं बाबा को याद करता हूँ, 2-3 मिनट याद रहती है फिर भूल जाता हूँ। याद हवा मुआफिक उड़ जाती है, बच्चे ट्राय करके देखो। सहज होते भी याद में टाइम तो लगता है ना। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का दिल व जान, सिक व प्रेम से यादप्यार और गुडनाइट। मीठे मीठे सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप की नमस्ते।

वरदान:- अपने आक्यूपेशन की स्मृति से सेवा का फल और बल प्राप्त करने वाले विश्व कल्याणकारी भव

कोई भी काम करते अपना आक्यूपेशन कभी नहीं भूलो। जैसे पाण्डवों ने गुप्त वेष में नौकरी की लेकिन नशा विजय का था। ऐसे आप भल गवर्मेन्ट सर्वेन्ट हो, नौकरी करते हो लेकिन नशा रहे मैं विश्व कल्याणकारी हूँ तो इस स्मृति से स्वतः समर्थ रहेंगे और सदा सेवा भाव होने के कारण सेवा का फल और बल मिलता रहेगा। गाया हुआ है भावना का फल मिलता है तो आपकी सेवा-भावना अनेक आत्माओं को शान्ति, शक्ति का फल देगी।

स्लोगन:-

गॉडली स्टूडेण्ट स्वरूप सदा स्मृति में रहे तो माया आ नहीं सकती।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

13-2-86 प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"तुम बच्चों का खुदा है दोस्त, रावण है दुश्मन, इसलिए दुश्मन को हर वर्ष जलाते हैं"

प्रश्न-किन बच्चों को अनेकों को आशीर्वाद स्वत: मिलती जाती है? उत्तर-जो बच्चे याद में रह स्वयं भी पवित्र रहते और दूसरों को भी आप समान बनाते हैं, उन्हें अनेकों को आशीर्व मिल जाती है। वे बहुत ऊँच पद पाते हैं। बाप तुम बच्चों को श्रेष्ठ बनने की एक ही श्रीमत देते-बच्चे किसी भी देहधारी को याद न कर मुझे याद करो, बहुतों को सुख का रास्ता बता

गीत:-आखिर वह दिन आया आज... ओमशान्ति। ओमशान्ति का अर्थ तो रूहानी बाप ने रूहानी बच्चों को समझाया है ओम माना अहम आत्मा है। और मेरा शरीर है। आत्मा तो देखने में नहीं आती है। आत्मा में ही संस्कार अच्छे वा बुरे रहते हैं। आत्मा में ही मन-बुद्धि है। शरीर में बुद्धि नहीं है, मुख्य है आत्मा। शरीर तो मेरा है। आत्मा को कोई देख नहीं सकते हैं। शरीर को आत्मा देखती है। आत्मा को शरीर नहीं देख सकता। जान सकते हैं। आत्मा निकल जाती है तो शरीर जड़ बन जाता है। आत्मा देखी नहीं जा सकती। शरीर देखा जाता है। वैसे ही आत्मा का जो बाप है जिसको ओ गॉड फादर कहते हैं वह भी देह में नहीं आते हैं। उनको समझा जाता है, जाना जा सकता है, हम आत्मायें सभी ब्रदर्स हैं। शरीर में आते हैं तो कहेंगे यह भाई2 हैं। आत्मायें तो सब भाई2 हैं। आत्माओं का बाप है परमपिता परमात्मा। जिस्मानी भाई बहन एक दो को देख सकते हैं। आत्माओं का बाप एक है उनको देख नहीं सकते। तो अब बाप आये हैं पुरानी दुनिया को नया बनाने। नई दुनिया सतयुग थी। अब पुरानी दुनिया कलियुग है। इनको अब बदलना है। पुरानी दुनिया तो खत्म होनी चाहिए। पुराना घर खत्म हो नया घर बनता है ना। वैसे यह पुरानी दुनिया भी खलास होनी है। सतयुग के बाद फिर त्रेता, द्वापर कलियुग फिर सतयुग आना जरूर है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जोग्राफ रिपीट होनी है, सतयुग में होता ही है देवी देवताओं का राज्य। आधाकल्प चलता है सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी। उनको कहा जाता है ल०ना० की डिनायस्टी। राम सीता की डिनायस्टी, यह तो सहज है ना। फिर द्वापर कलियुग में और धर्म आते हैं। फिर देवी देवतायें जो पवित्र थे वह अपवित्र बन जाते हैं। इनको कहा जाता है रावणराज्य। रावण को हर वर्ष ब वर्ष जलाते आते हैं। परन्तु जलता ही नहीं है। फिर2 जलाते रहते हैं। यह है सबका बड़ा दुश्मन। इसलिए उनको जलाने की रसम पड़ गई है। भारत का नम्बरवन दुश्मन है कौन? और फिर नम्बरवन दोस्त, सुख देने वाला है खुदा। खुदा को दोस्त कहते हैं ना। इस पर एक कहानी भी है। खुदा है दोस्त, रावण है दुश्मन। खुदा जो दोस्त है उनको कब जलायेंगे नहीं। वह है दुश्मन, इसलिए 10 शीश वाला रावण बनाकर उनको वर्ष2 जलाते हैं। गांधी जी भी कहते थे हमको रामराज्य चाहिए। रामराज्य में सुख है। रावणराज्य में दुख है। अब यह कौन बैठ समझाते हैं? पतित पावन बाप। शिवबाबा, ब्रह्मा है दादा। बाबा हमेशा सही भी करते हैं बापदादा। प्रजापिता ब्रह्मा भी तो सबका हो गया। प्रजापिता ब्रह्मा जिसको एडम कहा जाता है, उनको ग्रेट2 ग्रेन्डफादर कहा जाता है। मनुष्य सृष्टि में प्रजापिता हुआ। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण, फिर ब्राह्मण से देवी देवता बनते हैं। देवता फिर क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बन जाते हैं। इनको कहा जाता है प्रजापिता ब्रह्मा मनुष्य सृष्टि का। प्रजापिता ब्रह्मा के कितने ढेर बच्चे हैं। बाबा, बाबा कहते रहते हैं। यह है साकार बाबा। शिवबाबा है निराकार बाबा। गाया भी जाता है प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा नई सृष्टि रचते हैं। अब तुम्हारी यह पुरानी खल है। यह है ही पतित दुनिया रावणराज्य। अब रावण राज्य अथवा रावण की आसुरी दुनिया खत्म हो जायेगी। उसके लिए ही यह महाभारत लड़ाई है। फिर सतयुग में इन रावण दुश्मन की कोई जायेगी ही नहीं। रावण होगा ही नहीं। रावण ने ही दुख की दुनिया बनाई है। ऐसे नहीं जिनके पास पैसे बहुत हैं बड़े2 महल आदि हैं वह स्वर्ग में हैं। बाप समझाते हैं भल किसके पास करोड़ हैं, परन्तु यह तो सब मिट्टी में मिल जाने वाला है। नई दुनिया में फिर2 सोना निकलता है। जिससे नई दुनिया के महल आदि सारे बनाये जाते हैं। यह पुरानी दुनिया अब खत्म होनी है। मनुष्य भक्ति करते ही सद्गति के लिए हैं। हमको पावन बनाओ। हम विश्व के बन गये हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

विशव को विकारी पतित कहा जाता है।सतयुग है ही सम्पूर्ण वाइसलेस वहाँ बच्चें योगबल से पैदा होते हैं।विकार वहाँ होता ही नहीं। न देहअभिमान,न काम,क्रोध,लविकार होते नहीं।इसलिए वहाँ कब रावण को जलाते ही नहीं।यहाँ तो रावणराज्य है।इसलिए सब पुकारते हैं हे पतित पावन आओ ।वह लिबेटर भी है।सबका दुखहर्ता सुखकर्ता भी है।अभी सब रावण-राज्य में हैं।बाप आकर छुड़ाते हैं।अब बाप कहते हैं तुम पवित्र बनो।यह पतित दुनिया खत्म होनी है।जो श्रीमत पर चलेंगे,वह देवता बनेंगे।विनाश होगा ही,सभी खत्म हो जायेंगे।बाकी कौन बचेंगे,जो श्रीमत पर पवित्र रहते हैं।वही बाप को मत पर चल विश्व को बादशाही का वर्सा पाते हैं।इन ल०ना०क का राज्य था ना।अभी तो रावणराज्य है।जो खत्म होना है।सतयुग रामराज्य स्थापन होना है।कैपीटल देहली ही रहती है।जहाँ ल०ना०का राज्य होता है। देहली सतयुग में परिस्तान थी।देहली ही गद्दी थी।रावणराज्य में भी देहली कैपीटल है। रामराज्य में भी देहली कैपीटल रहती है।परन्तु रामराज्य में तो हीरे जवाहरों के महल थे। अथाह सुख था।अभी बाप कहते हैं तुमने विश्व का राज्य गंवाया है मैं फिर तुमको देता हूं। तुम मेरी मत पर चलो।श्रेष्ठ बनना है तो सिर्फ मुझे याद करो और किसी देहधारी को याद न करो।अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे।तुम मेरे पास चले आयेंगे।मेरे गले की माला बनकर फिर विष्णु की माला बन जायेंगे। मालां में ऊपर में हूं मैं।फिर दो युगल हैं।ब्रह्मा सरस्वती।वही सतयुग के महाराजा महारानी बनते हैं।उन्हीं की फिर सारी माला है।जो नम्बरवार गद्दी पर बैठते हैं।मैं इस भारत को इन ब्रह्मा सरस्वती और ब्राह्मणों द्वारा स्वर्ग बनाता हूं।जो मेहनत करते हैं उन्हीं को ही फिर यादगार बनती है।वह है रुद्रमाला और वह विष्णु की माला।रुद्र माला है आत्माओं की और विष्णु की माला है मनुष्यों की।आत्माओं के रहने का स्थान वह निराकार परमधाम है।जिसको ब्रह्माण्ड भी कहते हैं।आत्मा कोई अण्डे मिसल नहीं है।आत्मा तो बिन्दी मिसल है।हम सब आत्मायें वहाँ स्वीटहोम में रहने वाली हैं।बाप के साथ हम आत्मायें रहती हैं। वह है मुक्तिधाम,शान्तिधाम।मनुष्य सब चाहते हैं मुक्तिधाम जावें।परन्तु वापिस कोई एक भी जा नहीं सकते।सबको पार्ट में आना ही है।तब तक बाप तुमको तैयार कराते रहते हैं। तुम तैयार हो जायेंगे फिर जो भी आत्मायें हैं वह सब आ जायेंगी।फिर खलास।तुम जाकर नईदुनिया में राज्य करेंगे।फिर नम्बरवार चक्र चलेगा। गीत में सुना ना आखिर वह दिन आया आज...।अभी तुम्हारी बुद्धि में सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान है।जानते हो भारतवासी अब नर्कवासी हैं।वह फिर स्वर्गवासी कैसे बनेंगे।बाकी इतनी सब आत्मायें शान्ति-धाम चली जायेंगी।समझना बहुत थोड़ा है।अल्फ बाबा,बे बादशाही।अल्फ को बादशाही मिल जाती है फिर गद्दी खत्म हो जाती है।उसको कहानी बाप बैठ समझाते हैं।यह है सच्ची सत्य नारायण की कथा।बाकी सब हैं दन्त कथा।बाप ही सत्य नर से नारायण बनाने लिए ही तुमको यह ज्ञान सुनाते हैं।हिस्ट्री जोग्राफी है ना।ल०ना०का राज्य कब शुरू हुआ,कितना समय चला तो कथा भी हुई ना।जो विश्व पर राज्य करते थे वह 84जन्म ले पूरे बिल्कुल ही कंगाल तमोप्रधान बन गये हैं।अभी बाप कहते हैं मैं वही राज्य फिर से स्थापन करता हूं। तुम 84जन्म भोग अब पतित बन गये हो।पतित बनाया है रावण ने।फिर पावन कौन बनाते हैं भगवान।जिसको पतित पावन कहते हैं तुम पतित से पावन,पावन से पतित कैसे बनते हो वह सारी हिस्ट्री जोग्राफी सुनाई है।पहले2 सूर्यवंशी ल०ना०का राज्य था।फिर चन्द्रवंशी राज्य हुआ है फिर वैश्यवंशी,शूद्रवंशी हुए,उनके बीच दूसरे भी इस्लामी बौद्धी,क्रिश्चन आये फिर वह देवी देवता धर्म जो था सो गुम हो गया। फिर वर्ल्ड की हिस्ट्री जोग्राफी रिपीट होगी।यह विनाश है ही इसके लिए कहते हैं ब्रह्मा की आयु शास्त्रों में 100 वर्ष है।यह जो ब्रह्मा है जिसमें बाप बैठ वर्सा दिलाते हैं।इनका भी शरीर छूट जायेगा।आत्माओं को बैठ आत्माओं का जो बाप है वह समझाते हैं वही पतित पावन है।मनुष्य मनुष्य को पावन बना न सकेंगे।बाप आते ही हैं मनुष्य मात्र की तकदीर जगाने।सब पतित दुखी हैं ना।त्राहि2कर विनाश हो जायेगा ।इसलिए बाप कहते हैं त्राहि2करने पहले मुझ बेहद के बाप से वर्सा ले लो

जो कुछ दुनिया में देखते हो यह सब खत्म हो जाना है। फाल आफ भारत। राइज आफ भारत का ही खेल है। राइज आफ वर्ल्ड। स्वर्ग में कौन2 राज्य करते हैं। यह बाप ही बैठ समझाते हैं। राइज आफ भारत देवताओं का राज्य। फाल आफ भारत रावण का राज्य। अभी दुनिया बन रही है। पुरानी दुनिया खत्म होने पड़ी, तुम बाप से पढ़ रहे हो। नई दुनिया का वर्सा लेने लिए। कितना सहज है। द्वापर के बाद ही और2 धर्म आते हैं। पहले सुख भोगते हैं फिर दुख। यह सबको मिलता है। यह सारा एक बुद्धि में बिठाना होता है जिससे तुम चक्रवर्ती महाराजा महारानी बनते हो। सिर्फ अल्फ और बे को समझना है।

अब विनाश तो होना ही है। हंगामा इतना हो जायेगा जो विलायत से फिर आ भी न सकेंगे। जबरदस्त लड़ाई लगेगी। फिर वहाँ के वहाँ पर रह जायेंगे। 50-60 लाख देंगे भी तो भी पुश्किल आ सकेंगे। इसलिए बाप समझाते हैं भारत भूमि सबसे उत्तम है। जहाँ बाप आकर अवतार लेते हैं। शिव जयन्ती भी यहाँ मनाई जाती है। सिर्फ कृष्ण का नाम डालने के कारण सारी महिमा खत्म हो जाती है। सर्व मनुष्य मात्र का क्रियेटर यहाँ ही आकर अवतार लेते हैं। गाडफादर ही है जो आकर क्रियेट करते हैं तो ऐसे बाप को ही नमन करना चाहिए ना। जयन्ती भी उनकी ही मनानी चाहिए परन्तु कृष्ण का नाम डालने से वह वैल्यू सारी गुम कर दी है। नही तो भारत सबसे ऊँच तीर्थ है। वह बाप यहाँ भारत में ही आकर सबको पावन बनाते हैं। तो यह सबसे बड़ा तीर्थ ठहरा। सबको दुर्गति से छुड़ाकर सद्गति देते हैं। यह ड्रामा बना हुआ है। अभी तुम आत्मायें जानती हो। हमारा बाबा हमको इस शरीर द्वारा सब राज समझाते हैं। इस आत्मा इस शरीर द्वारा सुनती आत्मा अभिमानी बनना है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो कट निकलती जायेगी। और प्योर बन तुम बाप के पास आ जायेंगे। जितना याद करेंगे उतना पवित्र बनेंगे औरों को भी आप समान बनायेंगे तो बहुतों को आशीर्वाद मिलेगी। ऊँच पद पा लेंगे। इसलिए गाया जाता है सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मातपिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

-:-स्व उन्नति के लिए दृढ़ संकल्प-:-

1- श्रीमत पर पवित्र बन हर कदम बाप की मत पर चल विश्व की बादशाही लेनी है। बाप समान दुखहर्ता सुखकर्ता बनना है।

2- मनुष्य से देवता बनाने वाली यह पढ़ाई सदा पढ़ते रहना है। सबको आपसमान बनाने की सेवा करके आशीर्वाद प्राप्त करना है।

सूचना- सुरेन्द्र नगर तथा बिलीमोरा में सेवा केन्द्र खुला है, जिसके ऐड्रेस लिख रहे हैं।

BRAHMA KUMARIS
OPP. HATKESHWAR TEMPLE
NEAR- TOWER
SURENDRANAGAR-
PIN- 363001 Guj.

BRAHMA KUMARIS
B/38, ANANDBAGH SOCIETY
OPP. POWER-HOUSE,
BILIMORA-396321-Guj.

प्रातः क्लास 17-9-68 ओमशान्ति पितश्री, शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बैठे? बच्चों को बाप ने अभी घर याद दिलाया है। भल भक्ति मार्ग में भी घर की याद करते हैं परन्तु वहाँ कब जाना है, कैसे जाना है वह कुछ भी नहीं जानते। कल्प की आयु लाखों वर्ष कह देते हैं उनमें भी भूल गया है। समझते हैं लाखों वर्ष यहां ही पार्ट बजाते हैं। तो घर भूल जाते हैं। अभी बाप याद दिलाते हैं बच्चे घर तो बहुत नजदीक है। अभी चलेंगे अपने घर? हम तुम बच्चों के बुलावे पर आया हूं। चलेंगे? कितनी सहज बात है। भक्ति मार्ग में तो पता भी नहीं पड़ता कि कब मुक्तिधाम जावेंगे। मुक्ति को ही घर कहा जाता है। लाखों वर्ष कह देने काल सभी भूल जाते हैं। बाप को भी तो घर को भी भूल जाते हैं। लाखों वर्ष हारने से बहुत फर्क पड़ जाता है। अन्धे बन अज्ञान नींद में जैसे सो जाते हैं। किसको भी समझ में नहीं आता। भक्ति मार्ग में घर कितना दूर बताते हैं। बाप कहते हैं वाह। मुक्तिधाम तो अभी जाना है। थोड़ेही है तुम कोई लाखों वर्ष भक्ति करते हो। तुमको भी पता नहीं है भक्ति कब से शुरू होती है। लाखों वर्ष की हिसाब करने की तो दरकार ही नहीं। बाप को और घर को भूल जाते हैं। यह भी ड्रामा में नूंध है। परन्तु नाहक इतना दूर कर देते हैं। अभी बाप कहते हैं बच्चे घर तो बिल्कुल नजदीक है। अभी मैं आया हूं तुमको ले चलने। पर चलना है परन्तु पवित्र भी जरूर बनना है। गंगा स्नान तो तुम करते आये हो परन्तु पवित्र ×××× तो नहीं बने हो ना। अगर पवित्र बनते तो वो चले जाते। परन्तु तुमको घर का भी पता नहीं है। तो पवित्रता का भी पता नहीं है। आधा कल्प से भक्ति की है तो भक्ति को छोड़ते हो नहीं। अब बाप कहते हैं भक्ति पूरी होती है। भक्ति में तो अपरम अपार दुःख रहता है। ऐसे नहीं कि तुम बच्चों ने लाखों वर्ष दुःख देखा है। लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं। सच्चा2 दुःख तो तुम ने 1500 वर्ष भोगा है। जब कि ज विकारों में गंदे बने हो। पहले जब रजो में थे कुछ समझ थी। मास में मीरक्व वार मुश्किल जाते होंगे। और फिर जल्ती टाईम लगता होगा। अभी तो बहुत जल्ती हो गया है। तो बाप बच्चों को कहते हैं सुखधाम चलना है। जन्म-जन्मान्तर के पाप सिर पर हैं। अभी मुझे याद करो तो पाप कट जायें। याद से ही बड़ी खुशी रहेगी। ज बाप तुमको आधा कल्प सुखधाम ले जाते हैं उनको याद करना है। बाप कहते हैं तुमको ऐसा बनना है। १ एक तो पवित्र बनो और चरित्र सुधारो। विकारों को कहा जाता है भूत। लोभ का, मोह का भी भूत होता है यह भूत बहुत खराब है। मनुष्यों को एकदम गंदा बना देती है। लोभ भी बहुत पाप कराते हैं। यह 5 विकार बहुत बड़े भूत हैं। इन सभी को छोड़ना भी बड़ा मुश्किल हो जाता है। लोभ को छोड़ना भी ऐसा मुश्किल जितना काम को छोड़ना मुश्किल होता है। छोड़ते ही नहीं। सारी आयु बाप समझाते हैं तो भी मोह की रग टूटती ही नहीं। क्रोध भी मुश्किल छूटता है। कहते हैं बच्चों पर क्रोध आया। नाम तो क्रोध का लेते हैं ना। कोई भी भूत न आये। अभी उन पर विजय पानी है। बाप कहते हैं जब तक में हूं पुरुषार्थ करते रहो। बाप कितना वर्ष रहेंगे? जब कि गाया हुआ है प्रजापिता ब्रह्मा भी 100 वर्ष बाद चले जाते हैं। बाप आते हैं 60 वर्ष के बाद। ब्रह्मा चला जावेगा तो बाप भी चला जावेगा। तो 40 वर्ष तक बैठ समझाते हैं। अ ही टाईम देते हैं। 40 वर्ष कोई कम नहीं है। सृष्टि चक्र को जानना तो बहुत ही सहज है। सात दिन सारा ज्ञान बुद्धि में आ जाता है बाकी जन्म-जन्मान्तर के पाप कटने में देरी लगती है। यह ही मुँह मीठा है। इसके लिये बाबा टाईम देते हैं। माया का आपोजीशन बहुत होनाहै। एकदम भुला देती है। यहां बैठते तो भी सारा समय याद में थोड़ेही बैठते हैं। बहुततरफ बुद्धि चली जाती है। इसलिये ही 40 वर्ष का टा देते हैं। मेहनत कर कर्मातीत अवस्था को पाना है। पढ़ाई तो सहज है। सेन्सीबुल बच्चा हो तो 7 दिन में नालेज समझ सकते हैं। यह 84 का चक्र कैसे फिरता है। बाकी पवित्र बनने में है मेहनत। इस पर ही लड़ाई होते हैं। समझ में बात तो राईट है। पहले इस ग्लानी करते थे कि यह

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri Restricted Distribution copy of CVISION PDFCompressor

रह सकेंगे। फिर नया आई सिवील आई कैसे बन सकती। यह युक्ति बड़ी अच्छी है। हम ब्रह्माकुमार-कुमारियां तो
b बहन भाई हो गये ना। इसमें बड़ी मदद मिलती है। सिवील आई बनाने में ब्रह्मा का कर्त्तव्य भी है ना
मदद। ब्रह्मा देवी देवता धर्म स्थापना अर्थात मनुष्य को देवता बनाना। बाप आते ही हैं पुरुषोत्तम
संगम युग पर। तो समझाने की कितनी मेहनत करनी पड़ती है। बाप का परिचय देने लिये ही सिन्टरस खोले
जाते हैं। वेहद के बाप से वेहद का वरसा लेना है। भगवान तो निराकार है। कृष्ण तो देहधारी है। उनको
भगवान कह नहीं सकते। कहते भी हैं भगवान आकर भक्ति का फल देंगे। परन्तु भगवान का परिचय ही नहीं
है। भगवान के बदली पूरे 84 जन्म वाले का नाम ठोक बैठा दिया है। कितना तुम समझाते हो फिर भी
समझते नहीं हैं। समझाया जाता है देहधारी तो पुनर्जन्म में जरूर आते हैं। उन से तो वरसा मिल न सके। आत्मा
को एक ही परम पिता परमात्मा से वरसा मिलता है। मनुष्य मनुष्य को मुक्ति-जीवनमुक्ति दे न सके। यह वरसा
c पाने लिये तुम बच्चे पुरुषार्थ कर रहे हो। इस बाप को पाने लिये तुम कितना भटकते थे। पहले तो सिर्फ एक
शिव की पूजा करते थे, और कोई तरफ जाते नहीं थे। वह थी अव्यभिचारी भक्ति। औरों के मंदिर आदि इतने थे
ही नहीं। अभी तो देखो देवताओं के चित्र कितने जगह रख दिये हैं। ढेर के ढेर चित्र, मंदिर आदि बनाते हैं।
d भक्ति मार्ग में तुमको कितना मेहनत करनी पड़ती है। मनुष्यों की बुद्धि में भक्ति मार्ग के शास्त्रों की बातें ही
भर गई है। शास्त्र ही बैठ पढ़ा करसुनाते हैं। शास्त्र ऐसे कहते हैं। ढेर शास्त्र हैं। वास्तव में भारत के इतने
शास्त्र होनी न चाहिए। हरेक धर्म का एक शास्त्र होनी चाहिए। एक धर्म का एक स्थापना करने वाला उनका एक
शास्त्र। क्रिश्चन का एक शास्त्र। बौद्धियों का एक शास्त्र है ना। धर्म शास्त्र अर्थात धर्म स्थापन करने का एक शास्त्र। ढ
उनमें कोई रास्ता नहीं। गीता सद्गति का रास्ता तो एक बाप ही बताते हैं। शास्त्रों में है नहीं। क्यों कि वह
है भक्ति। कितने ढेर शास्त्र, मंदिर आदि बनाते हैं। वास्तव में मंदिर सिर्फ होते हैं देवी देवताओं के जो सतयुग
में रहते हैं। और कोई मनुष्य का मंदिर बनता ही नहीं। क्योंकि मनुष्य तो हैं ही पतित। वह हैं पावन देवतायें
उनको तुम मनुष्य नहीं कहेंगे। पतित मनुष्य पावन देवताओं की पूजा करते हैं। भूल है वह सभी मनुष्यपरन्तु
उन में देवीगुण हैं। जिनमें देवीगुण न हैं, वह उनकी पूजा करते हैं। तुम खुद ही पूज्य थे। फिर पुजारी बने
हैं। सर्वोत्तम पूज्य। पहले थे अव्यभिचारी भक्ति फिर व्यभिचारी भक्ति हो गई। मनुष्य की भक्ति करना यह
तो 5 तत्वों की भक्ति करना है। शरीर 5 तत्वों का बना हुआ है ना। अभी बच्चों को अपने मुक्तिधाम चलना है।
जिसके लिये इतनी भक्ति की है। अभी तुमको अपने बाप से चलना है तुम सतयुग में चले जावेंगे। बाप आये
ही हैं पतित दुनिया से पावन दुनिया में ले जाने। पावन दुनिया है ही दो। मुक्ति और जीवनमुक्ति। बाप
e कहते हैं मीठे-2 बच्चों मैं कल्प-2 संगम युग आता हूं। तुम भक्ति मार्ग में कितने दुःख उठाते आये हो। पहले
जब शिव की भक्ति करते थे तो इतना पैसे खाते नहीं थे जितना अभी पका जाते हो। गीत भी है ना चारों
तरफ हाथ लगाये फिरे फिर भी हरदम दूर रहे न किससे? बाप से। बाप को छूने लिये जन्म व जन्मभूमि पहने।
परन्तु फिर भी बाप से दूर रहे। इसीलिये बुलाते हैं हे पतित-पावन आओ आकर पावन बनाओ। बाप के सिवाय
तो ऐसा कोई बना न सके। तो यह खेल हो 5000 वर्ष का है। लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं।

यह भी जानते हैं ड्रामा अनुसार सभी पुरुषार्थ करने ही रहते हैं। किस प्रकार कल्प पहले किया है।
उसी अनुसार ही राजधानी स्थापन हो रही है। सभी एक जैसा तो नहीं पढ़ेंगे। यह पाठशाला है ना। राजयोग की
पढ़ाई है। जो देवी देवता धर्म के होंगे वह निकल आवेंगे। मूल वतन में भी जो संख्या है वह भी स्पष्ट
होगी ना। कम ज्यादी नहीं हो सकती। परन्तु गिनती हो नहीं सकती। नाटक में एक्टर्स का अन्दाज बिल्कुल
पूरा है परन्तु समझ नहीं सकते हैं। जितने भी हैं उतने एक्युरेट हैं। फिर भी वहीं आकर पार्ट बजावेंगे। फिर मूल
वतन में भी अपने-2 स्थान में चले जावेंगे। बिल्कुल अटे

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

हो तो और [illegible] स्मृति न आये। हमारे पास है क्या। हस्त खाली आये है न। कुछ ले नहीं। शरीर ले नहीं जाना है। इस शरीर से यहाँ भूलना है। अनासक्त। अतीत बन जाना है। एक्टो बनो। बाप कहते है मत सभी के आगे गलत खर्चा न करो। मनुष्य दान बहुत करते है। अखबार में पढ़ता है फलाना बहुत दानी था। डोनेशन्स आदि [illegible] जो दान करते है उनको फिर गवर्मेन्ट से टाइटिल आदि मिलते है। तुम को भी बहुत बड़ा टाइटिल मिलता है। बनते2 टाइटिल होता है जिज होलीनेस। हर होलीनेस। होली पवित्र को कहा जाता है। जैसे पवित्र वैसा बनना है। फिर आधा कल्प पवित्र रहेगी। तुमको बहुत खुशी यह कभी हो सकता। वहाँ भी तो [illegible] होती है। तुम पट से बोलो वहा भी रावण छोड़ई है। रावण द्वारा ही बिगरी दुनिया होती है। राम बाप आ कर पावन बनाते है। यहा पतित कोई हो ऐसे कहता। वह तो समझते है पवित्रता की बात भी नहीं सुननी चाहिए। सृष्टि कैसे चल सकेगी। क्या पता ही नहीं है कि पवित्र दुनिया थी। अभी विषय वैतरणी है। यह खेल शिवालय, वेश्यालय, पतित दुनिया पावन दुनिया। पहले है सुख फिर दुख। आखानो हो [illegible] ऐसे राजाई ली फिर ऐसी गवाई। अब इसको अच्छी रीति समझना है। हमने हार खाई है फिर जीत पानी बहादुर बनना चाहिए। अपनी अवस्था को जमाना चाहिए। घर बार होते, उनको भी सम्भाल करते पवित्र रहना है। कोई अपवित्र काम न हो। मोह [illegible] होता है। यात्रा पर भी बहुत जाते है। वह 4 है जिस्मानी यात्राये। यह है रूहानी। इससे तुम विश्व के मालिक बनते हो। जिस्मानी यात्रा से तो एक खाते रहते है। सो भी चित्र भी साथ में हो। कुछ अच्छे में तुमको यह हो रहना है और क्या। जब रहती है फिर उनको भोजन आदि भी वो प्रवाह नहीं रहेगी। खुशी में भोजन भी अच्छा नहीं लगेगा। खा जाता है न खुशी जैसी खुराक नहीं। धन नहीं होगा तो उनको घड़ी2 भूख लगती रहेगी। धनवान राजाओं गोपी को जैसे पेट भरा रहता है। बड़ी रायल चलन होती है। बात चीत भी फर्स्ट क्लास। तुम समझते [illegible] क्या बन रहे है। खाना खान पान आदि बड़ा रायल्टी से होता है। वे टाइम पर खाते नहीं। [illegible] से शान्ति से खाते है। सब गुण सीखने चाहिए न। निराकार की महिमा देवताओं की महिमा अलग [illegible] महिमा तीनों की जाच करो। अभी तुम बाबा के गुणों वाले बन रहे हो। फिर बनेंगे देवताओं के [illegible] तो वह गुण धारण करने चाहिए न। अभी तुम [illegible] सीखते हो। ऐसे गुण भी होने है। [illegible] खाते है न सुख के सागर, शान्ति के सागर— जैसे बाप पूजा जाता है तुम भी पूजे जायेंगे। बाप तुम [illegible] ते करते है न। तुम्हारी तो पूजा भी इनल होती है। आत्माओं के लिंग रूप में भी पूजा होती है। [illegible] देवताओं बनते हो। उस रूप में भी पूजा होती है। यह सब बातें बाप ही बैठ समझाते है तुम्हारा [illegible] भी समझाई। अब पुरुषार्थ कर ऐसा बनो। दिल से पूछना चाहिए हम ऐसे बने है। जैसे हम नये [illegible] फर नये हो जाना है। शास्त्रों में भी है उनको बोला यह लाठी भी छोड़ो। यह बातें शास्त्रों में बैठ [illegible] ऐसा कोई हुआ नहीं है। इसमें लाठी की तो बात ही नहीं। शरीर से भी भुलना होता है। बाप्ने [illegible] सभी है भक्तिमार्ग की बातें। यहा तो सिर्फ याद से याद रहना है। बाप बिगर दूसरा न कोई। तुम [illegible] ज्ञान मिला है। तुम समझ सकते हो भक्तिमार्ग में वह लोग क्या2 सिखाते है। किसने इन गुरुओं [illegible] में पड़े है। उनसे छुड़ाना है। अनेक पुरुषार्थ के गुरु है न। न कुछ पढ़ना है। बाबा ने एक ही [illegible] क्या हमको याद करो। अवर्सी को याद करो। और दैवीगुण धारण करो। गृहस्त व्यवहार में रहते [illegible] बनना है। यहा दौड़ते बैठ जाना है। मधुबन में तो आते हो है रिफ्रेश होने। यहा तुम समझते हो [illegible] के सम्मुख बैठे देखते हमारे सामने है। जो हमारी

PDF Compressor Free Version, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

a ओमशान्ति। कहानी बच्चों को याद है श्री मत देने वाला कौन है। ड्रामा पनेड्यूसर सदा कार्य होता है। बाकी 10 वंश रहे हैं। इस रावण राज्य का ये विष्णु पुरी बनाना गुप्त भी है, पढ़ाई भी गुप्त है। सैन्टर्स तो बहुत हैं। छोटे बड़े गावं में छोटे बड़े सैन्टर्स हैं। बहुत हैं। अब बच्चों ने चैलेंज दी है। और लिखना भी है जब कोई लिटरेचर बनाना है तो उसमें तारीख है। आज से थानी। 966 से 10 वंश के अन्दर हम अपनी इस भारत भी को स्वर्ग बना रहे हैं। उनको भारतभी बहुत प्रिय है। क्योंकि तुम जानते हो यह भारत ही स्वर्ग था उनको 5000 वर्ष पूर्व। भारत बहुत ऊंचे को स्वर्ग कहा जाता था। तुम महान पुरुष बच्चों को ही यह नालेज है। इस भारत को श्री मत पर ऊंच बनाना है। सब को रास्ता बताना है। और कोई स्प्रिट पिट की बात नहीं। आपस में बैठ-बात करनी है। बेन प्रदर्शनी के लिये दफा हम ऐसे क्या ऐडवरटाईजमेन्ट करें जो अखबार में फोटो चित्र देखें। उसके ऊपर रीसीनार करना चाहिए। जैसे कछोलोग आपस में मिलते हैं तय करते हैं कि भारत को ऊंचे पुंचे। एक जो इतने कृष्णपन आदि हो गए हैं उनको आपस में मिल कर ठीक करें और भारत में सुख शांति स्थापन करें। कांग्रेस गवर्नमेन्ट का भी यह पुरुषार्थ चलता है। तुम भी पाण्डव गवर्नमेन्ट गाई हुई हो। बड़ी बड़ी गवर्नमेन्ट है। पतित रावण राज्य ही पतित बच्चों को बैठ पावन दुनिया का मालिक बनाते हैं। यह बच्चे जानते हैं। मुख्य है ही भारत का आदी सनातन देवी देवता धर्म। यह सभी बच्चे जानते हैं यह है ऊंच से ऊंच कहा जाता है ईश्वर बाबा को। गाया हुआ है ईश्वर ज्ञान यज्ञ रचा था। वो लोग नहीं जानते कि यज्ञ रचा था। उन्होंने तो टाईम लम्बा चौड़ा लगा दिया है। अज्ञान नींद घोर अन्धियारे में सब हैं। आप बाप ही जगाता है। तुम तो औरों को जगाना है। इसीलिए फलेतुसार तुम जगाते रहते हो। इस समय तक जो पुरुषार्थ किया है उतना ही कल्प पहले किया था। हां युद्ध के मैदान में नाही चादी तो होती है। ~~जैसे जो कल्प पहले किसी धर्मों का जोर हो गया है। क्या 2 तो लड़ाई नहीं होती~~ चलती है कई कहीं 2 बच्चों में माया के विघन पड़ जाते हैं। माया एकदम बेहोश कर देती है। लड़ाई

c का मैदान तो है नहीं। रावण माया सब को सन्तान को बेहोश कर देते हैं। तब कृष्ण के लिए भी कहानी है न लड़ाई के मैदान में राम के बच्चे बेहोश हो गए। राम के बच्चे कोई को नहीं हैं। यह तो देह सम्बन्ध है। तुम कृष्ण कृष्ण की गोद में सोए हुए हैं। तुम ईश्वरीय सम्प्रदाय हो देते कह सकते हो। जिनको ज्ञान है और धारणा करते हैं वही समझेंगे। बच्चे एक दो को कहने की भी कोई बात नहीं है। तुम जानते हो ईश्वरीय सम्प्रदाय आते हैं। बाकी देवता सोए हुए हैं। वो तो नहीं जानते कि परम पिता परमात्मा शिव को कैसे देने। एक बिल्कुल भूल पर हैं। फिर भारत में ही आते हैं आकी भारत को स्वर्ग बनाने। असल स्वर्ग का मालिक था अब इसमें कोई सभ्य नहीं है। परन्तु शिव परमात्मा का जन्म है। शिव जयन्ती भी मनाते हैं। कुछ उल्टे अक्षर कुछ तो मिथ्या होगा ही। पुनि कहती है कुछ आप ही होगी। देखा है थोड़ा सुना होगा। कहीं तो तुम बच्चों को राजयोग सिखाया जाता है

d याद की यात्रा समझाई जाती है। प्रेरणा से कोई आवाज नहीं होता। समझते हैं शंकर की भी प्रेरणा होती है तो वो यादव मूसल आदि बनाते हैं। परन्तु इनको प्रेरणा की बात ही नहीं। तुम सर्वज्ञ सर हो उन के का पार्ट बजाना। यह मूसल बनाना प्रेरणा से नहीं बात नहीं। यह शास्त्रों के आधार है। शंकर द्वारा विनाश। शंकर को ऐसे रचना है जैसे रावण को रचा है। रावण को चित्रों में कहा जाता है। उनकी कोई मूर्ति तो है नहीं। तो कोई रचना की बात है। जैसे शंकर द्वारा विनाश रच दिया है। अब शंकर तो सूक्ष्म वतन में है। वहां से प्रेरणा तो देते नहीं। हां विनाश तो जरूर होना ही है। माया तुम्हें महाभारत लड़ाई। मूसल आदि का ~~जो~~ ने तो ऐसे हो गया है तो फिर रिपीट होगा। तुम रिपीट करते हो कि 10 वंश के अन्दर स्वर्ग

...नारायण, जहां एक धर्म होगा। तुम ऐसे नहीं लिख सकते कि ...
...ना है। स्वर्ग की स्थापना होती है तो दूसरा धर्म होता ही नहीं। तो जरूर वो सब विनाश हो जायेंगे। ...
...कोई इतने बात नहीं है। परन्तु चित्र बनाया हुआ देखो समझाया जाता है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना
e ...विष्णु द्वारा पालना तो ठीक है शंकर को बीच में शिव बाबा मिला दिया है। शिव शंकर कह देते हैं। क्योंकि शंकर ...
...कोई काम नहीं करते हैं ना। तो शिव से मिला दिया है। परन्तु शिव बाबा कहते हैं मुझे तो बहुत कहना पड़ता है। ये शंकर की तो मेरे साथ कोई बात ही नहीं। वो तो सूक्ष्म वतन वासी आकारी है। मैं तो ...
...द्वारे आकर इन द्वारा स्थापना का कार्य करता हूं। शंकर का तो इतना पार्ट बनही। शंकर की पूजा को मनुष्य ...
...करेंगे। शिव की पूजा कोई है। शिव परमात्मा नम: कहते हैं। ब्रह्मा भी तो पूजा योग्य ठहरा ना। बाकी ...
...सिर्फ कहते यह बताने के लिये कि दक्ष का पार्ट कोई स्पेशल पार्ट नहीं है। यज्ञ रचना भंग होने की ...
...सब बातों की रचना बनाई है। अब तुमको समझ में आता है। शंकर का इतना पार्ट नहीं है। सब से बड़ा ...
...है शिव का। ब्रह्मा का और विष्णु का। ब्रह्मा सो विष्णु विष्णु सो ब्रह्मा। यह तो बड़ी गुह्य बातें हैं ...
...से ब्रह्मा कैसे बनते हैं, ब्रह्मा से फिर विष्णु कैसे बनते कैसे यह भी गुह्य बातें हैं। सेन्टीमेन्ट बच्चों की ...
...में झट आ जाता है। दैवी राज्यवंश तो बनती ही है। एक की बात नहीं है। इन बातों को तुम बच्चे ...
...ही हो। दुनिया में एक भी मनुष्य नहीं समझते। सब लक्ष्मी नारायण वा विष्णु की पूजा भी करते हैं। परन्तु
f ...कुछ पता नहीं है कि विष्णु की फिर लक्ष्मी नारायण बनते हैं। विष्णु के दो रूप लक्ष्मी नारायण हैं। जो नर ...
...से नारी बने थे। वापदादा। पूजा जाता कोई मनुष्य नहीं होता। यह सूक्ष्म वतन में रथ आकारी विराजते ...
...हैं। सारी। यह सारे कल्प की हिस्ट्री जागरफी को चक्कर लगाती है यह कोई नहीं जानते। बाप को ही ...
...जानते तो बाप की रचना को कैसे जान सकते। बाप ही रचना की आदि मध्य अन्त का नालेज बताते हैं ...
...कोई यह नहीं जानते। बाप को जान जाए तो रचना के आदि मध्य अन्त को भी जान जाए।
g कहते हैं मैं एक ही बार आकर तुम बच्चों को यह सारा नालेज समझाता हूं। फिर आता ही नहीं हूं तो ...
...के आदि मध्य अन्त को जाने कैसे। बाप स्वयं कहते हैं मैं सिवाए संगमयुग के कब आता नहीं हूं। मुझे ...
...तो संगम पर है। पावन सतयुग को पतित कलयुग को कहा जाता है। अब तो मैं जरूर आऊंगा। पतित दुनिया ...
...में तो बुलाते भी हैं आकर हमको पावन बनाओ। तो अन्त में ही आकर पावन बनाऊंगा। कलयुग अन्त ...
...में ही पावन बनाते हैं। सतयुग आदि में पावन है। यह तो सहज बात है। मनुष्य कुछ भी समझ ...
...सकते। पतित पावन बाप कब आयेंगे। अब तो कलयुग का अन्त कहेंगे। अगर कहें कलयुग के अन्त में ...
...आकर करेंगे तो अभी कितना पतित बनेंगे कितना दुख होगा। सुख तो होगा ही नहीं। कुछ भी ...
...याद नहीं बिल्कुल ही घोर अन्धियारे में है। तुम बच्चे समझ सकते हो। तो बच्चों को आपस में ...
...कितना अच्छी रीति समझाना चाहिये। बाप समझाते तो रहते हैं फिर बच्चों को आपस में ...
...बैठकर बड़ी प्रीत समझाना होता है। यह भी ड्रामानुसार चित्र निकले हैं। ये समझते हैं नीचे ...
...जाना है तो यह ड्रामा चलता रहता है। बच्चों की अवस्था कब ऊंच कब नीचे होती रहेगी। यह ...
...भी समझते हैं। कब2 माताएं आ बैठती हैं तो उनको निकालने लिए कितने प्रयत्न करते हैं। माताओं ...
...को कहते हैं बच्चे तुम देह अभिमान में आ जाते हो तो एकदम टपक पड़ते हो। इसमें देही अभिमानी बनना ...
...है। बच्चों में देह अभिमान बहुत है। तुम देही अभिमानी बनो तो बाप की याद रहे। और सर्विस में उन्नति ...
...होगी। ऊंच पद जिनको पाना है वो सर्वस सर्विस में लगे रहेंगे। तकदीर में नहीं है तो तदबीर भी नहीं होती ...
...कहते हैं बाबा हमको चलना नहीं होता। बुद्धि तो नहीं चलता। जिनको चलना होती है तो खुशी बहुत ...
...होती है। समझते हैं शिव बाबा आया हुआ है। अब बाप कहते हैं बच्चे तुम अच्छी रीत समझ कर सिरो ...
...करो तो सर्विस में तत्पर रहो। पुरुषार्थ करते रहो। बाप भी बच्चे समझते हैं जो ...

याद करो आदि और अन्त याद है?

भारत का उत्थान और पतन। तुम बच्चे हो उत्थान तरफ। तुम्हारी बुद्धि में सिवाय विश्व की बादशाही के और कुछ नहीं होगा। रूमजाव-जेक्ट ही है विश्व की बादशाही पाना। और तुम्हें हैं पतन तरफ। तुम्हारी बुद्धि में नई दुनिया ही बसती है। बाप रोज लिखते हैं पदम-पदमभाग्यशाली बच्चों। तुम डेढ़ दिन के मालिक थे ले हो। ड्रामा पर्वतिक का है उस दुनिया तरफ। तुम्हारा है नई दुनिया तरफ। तो बच्चों का पुरुषार्थ ही है हम सब विश्व का फिर से मालिक बनने लिये। जहां धन की कमी नहीं। पुरुषार्थ कर हम इनके विजय माला में पिरोवें। विश्व का तख्त नशीन बनें। जितना रात दिन का फर्क है। तुम दिन तरफ वाली सारी दुनिया है रात तरफ। तुम जानते हो हम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। अभी पुराने छोटी राज्य में हैं। विषय सागर में है सारी दुनिया। तुम निकल पड़े हो। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तुम बहुत दूर चले गये हो। यह बागवान बेहद्दी पिता है ना। उन पार ले जाने। वह है फूलों का बगीचा। वही तुमको याद है। अभी थोड़ा टाईम है। रस हो तारीफ। हमको मंजिल पर पहुंचना है। (2) जन्म स्वधाम की बादशाही। अभी स्वर्ग ही तुमको याद है। याद भी यही रखना है। मल शरीर निर्वाह लिये भी करना है। 84वर्ष कोई बड़ी बात थोड़ी ही है। सारी दुनिया चक्र हो जाती है। नई दुनिया के लिये हम पुरुषार्थ कर रहे हैं। यह सिवाय तुम ब्राह्मण के और कोई भी नहीं होगा। ब्राह्मणों की है चोटी फिर देवता बनते हो। फिर वैश्य शूद्र। अभी शूद्रों का अन्त तुम ब्राह्मण का शुरू है। नई दुनिया कहा जाये तो यह है चोटी ब्राह्मणों की। पहले ब्राह्मण फिर देवता बनते हैं। बाप ब्राह्मण बनाकर फिर हमको देवता बनाते हैं। 84 का राज भी अच्छा समझाया है। यह चक्र है। तुम हो ब्रह्मा बाबा ऊपर में। तुमको ऐसे फिराते हैं। तुम जानते हो हम सो ब्राह्मण हैं। फिर हम सो देवता फिर हम क्षत्री हम सो वैश्य फिर हम सो शूद्र बने। यहां तुम वे हो स्वदर्शनचक्रधारी तुम हो। यह ज्ञान न शूद्रों को है न देवताओं को। तो यह ज्ञान तुम ब्राह्मणों को ही है। तो तुम ऊंच ठहरे ना। सिर्फ स्मृति चाहिए अभी हम ब्राह्मण हैं फिर कल हम नई दुनिया के मालिक बनेंगे। 84 का चक्र पूरा हुआ हम जाते हैं घर। यह पुराना चोला है। तुम्हारी बुद्धि सारी दुनिया है निराली है। स्वदर्शनचक्रधारी कौन बनाते हैं। तुम्हारी कितनी ऊंच कमाई इतनी कमाई और कोई कर न सके। बाप ऊंच ते ऊंच भगवान पढ़ाते हैं। तो जरूर हम ऊंच ते ऊंच बनेंगे। इसमें भूलने की दरकार नहीं। सिर्फ स्मृति लाकर याद करना है। स्वदर्शनचक्र फिरना है। योग आदि के मले करो। सिर्फ मकसद नहीं। लाखों को कोड़ बनाना है फस्ट वो सभी कम हो। रूहानी है। दुनिया ही पुरानी है। पुरानी वस्तु बड़े ही शौक से रखते हैं। तुम जानते हो सबसे पुराना शिव का लिंग है। उन से पुराना क्या होगा। नई दुनिया में यह 1000 ना० में 5000 वर्ष हुये। इन से पुरानी चीज तो कोई हो न सके। ड्रामा को लाखों वर्ष देते तो चीजें भी लाखों वर्ष की होनी चाहिए। फिर जो देखते हैं कह देते हैं लाखों वर्ष की पुरानी है। जानते हो 5000 वर्ष से पुरानी चीज कोई है नहीं। पुराने ते पुराने फिर रामचन्द्र के मिलेंगे। 1000 ना० के राज में सिक्का मिल नहीं सकता। समझा जाता है फिर आदि का क्या दाम होगा। पाई से भी कम दाम होगा। अच्छा देखो कितना है मनुष्यों की बुद्धि में क्या रहता है तुम्हारी बुद्धि में क्या रहता है। अभी टाईम है बहुत योग। उस में कर्मातीत अवस्था को पाना है। तो फिर सभी कर्म इन्द्रियां बस हो जावेंगी। सतयुग में कोई किसमत आई नहीं होती। हैरानी की बात नहीं। रावण राज्य में किसमत दृष्ट हो जाती है। यहां तो दृष्टि बराबर हो ही नहीं सकता। सारी दुनिया से तुम्हारी पढ़ाई न्यारी है। भगवानुवाच: मैं राजयोग सिखाये राजाओं का राजा बनाता हूं। तुमको अविनाशी राजाई मिलती है जो चलती रहेगी। फिर दान-पुण्य अनुसार पतित राज बनेंगे। बच्चों को सारी हिस्ट्री का मालूम है। तुम्हारी बुद्धि में क्या है मनुष्यों की बुद्धि में देखो क्या है। तुम जानते हो सभी चक्र फिरता है जरूर। कलियुग से फिर सतयुग होगा। अभी होती है चढ़ाई। इसका नाम रखा है पुरुषोत्तम संगम युग। जिसको तुम्हारे करते थे। फल वह हमको बनना है। कल हम इसके मालिक थे

हो। आप कहते हो हम यह बनने लिये पुरुषार्थ कर रहे हैं। ऐसी2 बातें सुमिरण करने वाली होगी। यहां तो तुम खाते ही रहते हो। तो अभी हीरे जैसा जीवन तुम बना रहे हो। और मनुष्य तो कौड़ियों भी नहीं कमाते सभी का पैसा मिट्टी में मिल जावेगा। इसलिये कहा जाता है वर्थ नाट अपेनी। तुम वर्थ पाउन्ड बनते हो। वह भारत पाउन्ड था ना। अभी वर्थ अपेनी बना है। तुम कितने सालवेन्ट बनते हो। यह स्मृति में हो तो भी कितनी खुशी रहे। अति इन्द्रिय सुख में कई बिमारियां आदि भी छूटती जाती है। समझाते हैं पुराने राज्य में कितने दुःखी हैं। फिर हम अपने राज्य में जावेंगे। बाप आये हैं हमको रामराज्य में ले जाने। तुम पूरे 84 जन्म लेते हो। यही सिमरण करो। अभी तुम पढ़ाई पढ़ रहे हो। वह भगवान पढ़ाते हैं। भगवानुवाच एक गीता में ही है। और कोई शास्त्रों में है नहीं। तुम सुनते आये हो झूठ2 अभी बाप सच्च2 कहते हैं मैं तुमको पढ़ा रहा हूं। वह सभी शास्त्र जन्म-जन्मान्तर सुनते आये हो। वही गीता भगवान ने गाई थी। उनको लाखों वर्ष देते। अभी तुम समझते हो भगवान तो कर 5000 वर्ष बाद हमको पढ़ाते हैं। वर्ल्ड आलमाईटी अथार्टी पढ़ाते हैं। तुम भी बनते हो। यह सारी दुनिया के गाल्फ थे। अभी तो देखो टुकड़े लिये, पानी लिये, अनाज लिये लड़ते रहते हैं। अलग2 टुकड़े हो जाने से दुश्मन भी बन गये हैं। लड़ाई लगती भी है। रक्त की नदियां भी बहती है। पिछाड़ी में सब में इन्हीं की लगती ही है। दोनों को हथियार मिलते रहते हैं। अथक तो अपना धंधा करते रहते हैं। इन से आखरीन में क्या होगा। सो तुम जानते हो। कोई लड़ाई लगती न है। भगवान पढ़ाते हैं तो पढ़ना चाहिए ना। शैतान से तो नहीं पढ़ना चाहिए। भगवान और शैतान के पढ़ाने में कितना फर्क है। अच्छा फिर भी बाप कहते हैं मनमनाभव। अच्छा मीठे2 लाडले बच्चों को लाडले बाप व दादा का याद प्यार गुडनाईट। लाडली बच्चों को लाडले बाप का नमस्ते।

रात्रि क्लास 16-9-68 :- बाप आकर सभी को बहुत मीठा बनाते हैं क्योंकि बाप प्यार का सागर है तो मीठे2 प्यारे से प्यारे बातें सुनाते हैं। जैसे कहा जाता है नारायण राजा-रानी .... सतयुग में तो बहुत मीठे होते हैं। इतने मीठे हो गये हैं अभी तक उन्हों को प्यार से पूजते हैं। गोद में लेते हैं। राजकुमार सो फिर महाराजा बनते होंगे। वहां कब भी देहाभिमान आदि नहीं होता। कोई भी ध्यान में नहीं। मूल कारण है ही पवित्रता। वहां रावण ही नहीं तो देहाभिमान वहां होते ही नहीं। अभी तुम बच्चों को मालूम पड़ा सतयुग त्रेता में रावण होता ही नहीं। अभी तुम बच्चे समझदार बन रहे हो। पुरुषार्थ कर रहे हो। पवित्रता के सायक बनो। और कोई चीज़ ही नहीं सकती। हर प्रकार की खुशी एक दौलत पूरी वहां होती है। और बहुत कल्प के लिये है। इसलिये वहां के लिये कहते हैं काग विष्टा समान सुख है। बच्चों की भेंट में यहां अल्प काल क्षणभंगुर सुख है। कोई माता के तो कितने बच्चे तक उन्हों के याद गद्दी होते हैं। वहां तो दुःख की बात ही नहीं। बच्चे समझते हैं इनका राज्य बाप ही स्थापन करते हैं। सो अब कर रहे हैं। बच्चे जानते हैं राज्य स्थापन हो रहा है। यह है आसुरी दुनिया। देवतायें कब लड़ते नहीं। अभी तुम ब्राह्मणों को है माया के साथ लड़ाई। वहां तो होना आदि होता नहीं। जो रोयेंगे वह कम पद पायेंगे। जिन रोया तिन खोया=खोया। यानि ऊंच पद खोया। बेहद के बाप से इतना वर्सा लेते हो। जब कि बेहद के बाप के बने हैं तो उनको बाप कर अगर ठीक से चलेंगे तो ऊंच पद पावेंगे। अज्ञान काल में बहुत धन दान करते हैं तो राजा के घर जन्म लेते हैं। वह तो अल्पकाल का सुख होता है। इसलिये इस समय के लिये कहते हैं काग विष्टा समान सुख है। बहुत दुःख है तो उनमें सुख थोड़ा है। काग विष्टा समान। इसलिये खबरदार रहना पड़ता है। हम से कोई उल्टा काम तो नहीं होता। बाप बच्चों को सुख का वरसा देते हैं तो बच्चों को भी कहेंगे तुम अपने भाई-बहनों को स्वर्ग का वरसा दो। सिर्फ कल्प की आयु लम्बी कर देने से मनुष्यों को सुख होता है। यह भी

PDF processed with CutePDF evaluation edition www.CutePDF.com

22·1·87· प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" ईश्वरबाबा याद है ?

"मीठे बच्चे-श्रीमत पर न चलना, यह नंबर वन डामी है, श्रेष्ठ बनना है तो श्रीमत पर चलो।"

प्रश्न:- जिन बच्चोंकी बुद्दी से ज्ञान निकल जाता, गला ही घुट जाता है ?

उत्तर- जो पवित्र बन जाते। पढाई छोड बाप को फारकती देते, उनकी बुद्दी से ज्ञान निकल जाता है। जबतक निर्विकारी न बने तबतक अतिनाशी ज्ञान बुद्दी मे बैठ नही सकता। बुद्दी का ताला खुलता ही है पवित्र बनने से। अपवित्र बने तो ज्ञान बुद्दी से निकल जायेगा। कह किसको सुना भी नही सकेंगे। पतित बने तो ज्ञान पान भी गन्दा, मायावी मनुष्यों से जाकर मिल जाते। फिर गला ही घुट जाता। किसको सुना नही सकते।

गीत:- तुम्हे पाके·· ओमशान्ति। यह गीत कौन गा रहे है ? जिन्होने बाप से तीनो जहान की बादशाही लेली है। आपसे जो कुछ भी मिला, उनको कोई मिटा न सके। हमको कोई हटा न सके। काल आ न सके और न हमारी राजाई को कोई ले सके। (बच्चे जानते है हम उस मालिक से वर्सा ले रहे है। बाप को मालिक कहा जाता है। जैसे फर्रुखाबाद के रहवासी मालिक को मानते है। अनेक मत तो है ना। अच्छा उस मालिक से फिर क्या मिलेगा ? कुछ भी पता नही। मालिक को याद करो उसका नाम रूप क्या है कुछ पता नही है। मालिक तो सृष्टी का मालिक ठहरा ना। वह हुआ रचयिता। हम हुये रचना।) बाप रचते है सारी सृष्टि अर्थात बच्चों को, फिर उनको अपना मालिक बना देते है। बच्चे फिर बाप के मालिक बन जाते है। बच्चे कहते है, मेरे बाप की जो जयदाद है उनका मै मालिक हूँ। बाप तो ऐसे ही कहेगा की बच्चे की जायदाद का मै मालिक हूँ। यह बडी समझने की बाते है। तेन्सीबुल ही समझ सकते है। बुद्दी साफ नही है तो उसमे रतन ठहर न सके। देहीअभीमानी हो तब रतन ठहर सके। देही अभिमानी होकर रहना है। और बाप से वर्सा लेना है। उस बाप को याद करना है। जैसे लौकिक बाप बच्चों को पैदा करते है तो बच्चे मालिक बन जाते है। बच्चे कहेंगे मेरा बाप। बाप कहेगा मेरा बच्चा। परंतु बच्चे के पास तो कुछ है नही। उनको तो बाप की मिल्कियत मिलती है। बाप तो ऐसे नही कहेंगे कि बच्चेकी मिल्कीयत मेरी है। बाप समझते है मेरी मिल्कियत का बच्चा वारीस है। हा फिर जब यह बाप बनेंगा अपने बच्चों का तब कहेंगे यह बच्चे मेरी मिल्कियत के मालिक है। यह बडी धारणा युक्त बाते है। धारणा नही होती, क्योंकी जामियां है। समझना चाहिये मेरे मे बहुत खामियां है। नंबर वन डामी है श्रीमत पर नही चलते है जो हम श्रेष्ठ बन सकें। श्रीमत से ही श्रेष्ठ बनना है। श्रीमत राजयोग सिखलाती है। श्री माना निराकार भगवानुवाच्। इसलिये हम प्रश्न पुछते है ज्ञानसागर परमपिता परमात्मा से आपका क्या संबंध है। यह बहुत बडे2 बोर्ड पर लिख देना चाहिए। परमात्मा से जिसका संबंध होगा, वह है स्वर्ग का रचयिता, तो वह भी जरूर स्वर्ग का मालिक बन ही जायेगा। बाप आकर बच्चों को सलाम करते है। सलाम मालेकुम बच्चे कहते मालेकुम सलाम। हम तो सिर्फ ब्रह्माण्ड के मालिक है। तुम ब्रह्माण्ड विश्व दोनो के मालिक बनते हो। इसलिए बाप बच्चोंको खास सलाम करते है। एक ही बेहद का बाप तुम्हारी कितनी निष्काम सेवा करते है। लौकिक बाप भी निष्कामी नही होते। उनको आश रहती है हम वानप्रस्थ मे जायेंगे तो बच्चे हमारी सेवा करेंगे। आगे यह कायदा था बच्चे बाप की सेवा करते थे। आजकल तो पैसा ही उडा देते है। तो तुम बच्चे जानते हो हमको ऐसी बादशाही मिलती है बाप से। ल·ना· बोलिये भी लिखा हुआ है कि इन्हों को जानते हो, इन्हों को यह स्वर्ग की बादशाही किसने दी ? जरूर स्वर्ग स्थापन करने वाला ही देगा। पुरानी दुनिया हो तब तो नई दुनिया स्थापन करेगा। तो ल·ना· ने यह वर्सा पाया श्रीमत पर। श्रीमत यह राजयोग और ज्ञान सिखलाती है। जिनको समझाते है वह राजा बनते है

PDF compression, OCR

मना कर देते थे किसको सुनायेंगे तो गला घुट जायेगा। है यह ज्ञान की बात। अमर कार कथा दे जाकर निंदा करते हैं तो गला घुट जाता है। कहते हैं ना सतगुरु का निंदक ठौर न पाये। बाप कहते हैं सृष्टि जब पुरानी पतित हो जाती है तब मैं आता हूँ मनुष्यों को तमोप्रधान बनना ही है जो कर्तव्य करेंगे वो उल्टा ही करेंगे। क्योंकि उल्टी मत मिल रही है श्रीमत है नहीं, उल्टी मत से पतित भ्रष्टाचारी बन जाते हैं। आगे भ्रष्टाचारी अक्षर नहीं था। तमोप्रधान लोग भी गाते हैं पतित पावन सीताराम। वह यह नहीं समझते कि हम भी अपने को पतित कहते हैं उनको भी समझाना है। देखो तुम गंगा पर जाते हो, वह गंगा तो चलती ही आई है सतयुग त्रेता में भी थी गंगा अमृत बिन्दु होते भी सब पतित क्यों? यह गंगा सतयुग में भी थी वहाँ सब पावन थे अब पतित क्यों? नदियां तो जहाँ तहाँ बहुत हैं तो क्या सब नदियां पतित पावनी हैं? यह कैसे हो सकता? सन्यासी विकारों का सन्यास करते हैं पावन बनने के लिए। बाप समझाते हैं बच्चे तुम मेरी बहुत ग्लानी करते हो, देवताओं की भी ग्लानी करते हो। पहली-२ बात यह समझानी है कि परमपिता परमात्मा से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है सब भगवान को याद करते हैं भगवान कहते हैं मुझे सब भक्त प्रिय हैं क्योंकि उन सबको मुझे ही गति सद्गति देनी है। वह समझते हैं भगवान आकर भक्तों को भक्ति का फल देते हैं। इसलिए भक्त भगवान को प्रिय है। बाबा समझाते हैं तुमने दुर्गति को पाया है भक्ति के बाद भगवान को आना है जरूर है सब मेरे बच्चे परन्तु अभी भक्ति मार्ग का पार्ट बजा रहे हैं। शुरू से भक्ति करने वाले हो तुम तो जरूर मुझे तुमको ही पहले भक्ति का फल देना पड़ता है। और तो शुरू से लेकर मेरे भक्त नहीं हैं। वह तो अनेकों की भक्ति करते हैं। तुम मेरे प्यारे बच्चे हो। तुम मालिक थे फिर माया रावण ने तुम पर जीत पा ली। और फिर भक्ति शुरू हो गई। यह भी ड्रामा है। मैं ही सबकी सद्गति करता हूँ। अब तुम मेरी मत पर चलते हो ना। मत देने लिए जरूर मुझे आना पड़ता है। नहीं तो कैसे सद्गति का रास्ता बताऊँगा मैं इस प्रहलें नम्बर के भक्त के तन में आता हूँ। यह है नंदीगण शिव के मन्दिर में सामने नंदीगण रखते हैं। अर्थ विचार करो परमपिता परमात्मा बैल के तन में तो नहीं आयेगा। राजयोग बैल द्वारा कैसे सिखायेगा। ज्ञान सागर बैल में प्रवेश करेगा क्या। अभी तुम भगवान बनते हो। ओ शिवबाबा की मत पर हम चलकर लक्ष्मी नारायण सूर्यवंशी राजा रानी बन रहे हैं। उस राजधानी को कोई हमसे छीन न सके। न कोई तूफान लग सके। हम अमरपुरी के मालिक बनते हैं। यह मृत्युलोक है। अमरनाथ बाबा ही काल पर जीत पहनाने वाला है। उनका पार्ट अलग। शंकर को विनाश के निमित्त दिखाया है। तुम सब पार्वतियां हो। मैं अमरनाथ हूँ। हम कब जन्म मरण में नहीं आते। अमरपुरी स्वर्ग का मालिक तुमको बनाता हूँ। भक्तमालायों को वैकुण्ठ बहुत प्यारा लगता है। कहते हैं फलाना वैकुण्ठवासी हुआ। बहुत सुख मीठा कर दिया। अब वैकुण्ठ सचमुच तो सतयुग में होगा। जब सतयुग है तो पुनर्जन्म भी सतयुग में लेते हैं। फिर त्रेता में आते हैं तो पुनर्जन्म भी त्रेता में लेते हैं। फिर द्वापर में आते हैं तो पुनर्जन्म भी द्वापर में लेते हैं। परन्तु ऐसे थोड़ेही हो सकता है जो कलियुग में मरेंगे वह पुनर्जन्म सतयुग में लेंगे। स्वर्ग में जन्म लेने का मदार है पढ़ाई पर। अनेक बार इस सृष्टि चक्र में हमने पार्ट बजाया है। फस्ट्बाद में बच्चियां तो हैं वहाँ जो मालिक को मानने वाले हैं उनको समझाना है। तुम कहते हो वह मालिक है, बाप कहते बच्चे तुम मालिक हो। मैं तुमको सृष्टि का भी मालिक बनाता हूँ। मैं तो निष्कामी हूँ। हमें विश्व का मालिक नहीं बनते। तुम स्वर्ग में जाते हो तो मैं विश्रामी हो जाता हूँ। मैं जन्म मरण के चक्कर में नहीं आता हूँ। इस ईश्वरीय जन्म के बाद तुम दैवी गोद में जन्म लेंगे। अब तुम जन्म जन्मान्तर आसुरी गोद में जन्म लेते हो। भ्रष्टाचारी बन पड़े हो। सतयुग में सब श्रेष्ठाचारी होते हैं। अब तुम श्रीमत से श्रेष्ठाचारी बन रहे हो। वहाँ विश होता नहीं। यहाँ भले सन्यासी हैं परन्तु जन्म तो विकार से ही लेते हैं। सतयुग में विकार से जन्म नहीं होता। नहीं तो उन्हों को सम्पूर्ण निर्विकारी कह नहीं सकते। वहाँ माया होती नहीं। परन्तु यह बातें भी जब किसकी बुद्धि में बैठे। अब बाबा कहते हैं बच्चे तुमको नंगे जाना है। फिर स्वर्ग में आकर राज्य करना है। आत्मायें परमधाम से आती हैं पार्ट बजाने। फिर जब तक पतित पावन आकर लिबरेट [illegible] सकते। [illegible]

तब बात अच्छी रीति समझाते हैं। पहले2 तो समझाओ परमपिता परमात्मा से क्या संबंध है। दूसरा किसको यह प्रश्न पूछने आयेगा ही नहीं। मनुष्य तो बिल्कुल ही पत्थरबुद्धि हैं। पारसबुद्धि बनाना होता है। कोई पारसबुद्धि बनते ही नहीं तो बुद्धि में क्या बैठेगा। तुम कल्प2 पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि, पारसबुद्धि से पत्थरबुद्धि बनते ही आये हो। यह तो अच्छी रीति समझाया जाता है। परन्तु जबकि निश्चय बैठे। बरोबर शिवबाबा के हम बच्चे हैं। बाबा कहते हैं मैं अब आया हूँ तुमको सुखधाम में ले चलने। चलेंगे? वहाँ यह विष नहीं मिलेगा। मूल बात ही पवित्रता की है। जो कल्प पहले रहे थे वही अब भी रह सकते हैं। बहुत बच्चियां लिखती हैं बाबा पता नहीं कब बन्धन टूटेगा। युक्ति बताओ। बाबा कहते हैं बच्ची बन्धन टूटेगा अपने टाइम पर, बाबा क्या करेंगे। एक बन्धन भल छूट भी जावे फिर बच्चों आदि में मोह पड़ जाता है। इन सबसे बुद्धि निकालने में बड़ी मेहनत लगती है। कई तो और ही जास्ती मोह में आ जाते हैं। बहुत मोह में लटक पड़ते हैं। बाबा कहते हैं मोह एक में रखना है। तब तो धारणा होगी। कोई ज्ञान नहीं उठा सकते हैं तो भागन्ती हो जाते हैं। फिर नाम बदनाम होता है। ड्रामा में कल्प पहले भी यह हुआ था। जो सेकेण्ड पास हुआ वह ड्रामा। अम्मा मरे तो भी हलुआ खाना। बीबी मरे तो भी हलुआ खाना। कच्चे को थोड़ा लोडा। झटका। आता है। बहुत सन्यासी भी ऐसे होते हैं। नहीं ठहर सकते हैं तो गृहस्थी में चले जाते हैं। चलन ही ऐसी होती है। फिर समझते हैं यह भ्रष्ट सन्यासी हैं। यहाँ तो एक ही मुख्य बात है। हम भी उस बाप से वर्सा ले रहे हैं। तुम भी उनको पिता समझते हो तो आकर स्वर्ग का वर्सा ले लो। एक ही बात है- सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। पिछाड़ी में थोड़ा ही समझाने से मनुष्य झट समझ जायेंगे। अनेक मत हैं जिससे भारत भ्रष्ट बन गया है। फिर एकको मत से आधाकल्प के लिए भारत श्रेष्ठाचारी बनता है। श्रेष्ठ जरूर बाप ही बनायेंगे। पार करने वाला एक बाप है। तो जरूर कोई डूबने वाले भी होंगे। गुरू ही परमपिता परमात्मा से विमुख करते हैं। दलोअर्स को ऐसे नहीं कहते हैं कि तुम भी सन्यास करो। बाप तो सबको कहते हैं विकारों का सन्यास करना ही पड़ेगा। तब ही तुम पवित्र दुनिया के मालिक बन जायेंगे। बाप वर्सा दे रहे हैं। ढेर ब्रह्माकुमार कु० हैं। तुम भी ब्रह्माकुमार हो वर्सा रूहानी बाप से मिलता है। फिरना सहज है। परन्तु कोई की सिर्फ कथनी है करनी नहीं तो कोई को तीर नहीं लगता। कथनी में भल और शिक्षा भला हो जायेगा परन्तु खुद की करनी नहीं है तो गिर पड़ेगा। जिनको ज्ञान देंगे वह पढ़ जायेगा। खुद गिर पड़ेगा। ऐसे भी बहुत हैं। बाबा बच्चों के लिए दिल करते हैं कि तुम लायक बन स्वर्ग के मालिक बनो। अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

स्वउन्नति के लिए दृढ़ संकल्प:-

।।। अपनी कथनी और करनी एक करनी है। ज्ञान की धारणा के लिए तपसे में हड़ निकाल एक बाप में ही मोह रखना है।

।2। श्रेष्ठाचारी बनने के लिए सदा श्रीमत पर चलते रहना है। बुद्धि में ज्ञान रत्नों की धारणा देही-अभिमानी बन करनी है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

a बेहद के बाप की याद में रहो और बेहद वर्से की याद में रहो (याद की यात्रा) यह है एक्टिव में

b आत्माओं और परमात्मा का मेला। जब तुम अपने डान्टर्स पर रहते हो तो यह मेला नहीं है। पर बैठे हो ना। यही तो तुम बाप के सन्मुख हो। आत्मायें और परमात्मा सन्मुख है। यानि यहां परम पिता परमात्मा आत्माओं को पढ़ाते हैं। वहां आत्मायें आत्माओं को पढ़ती हैं। यहां बाप बैठ पढ़ाते हैं। बहुत फर्क है। वहां तुम राजाओं के परिवार में हो। यहां बाप और बच्चे हैं। इसलिए मधुवन का गायन है। मधुवन में मुरली बाजे। बच्चे भी जानते हैं कि मुरली कहां से बजती है इसलिए गलत्मत पर आते व्याख्या करते। काठ की मुरली नहीं बजती है। वह तो कोई भी बजा सकते हैं। छोटे बच्चे भी बजाते हैं। यह तो है ज्ञानमुरली, ज्ञान से सद्गति होती है। बाकी जो मनुष्यों की पढ़ी गीता सुनी है उनसे दुर्गति ही होती है। और परमपिता परमात्मा ज्ञान सागर से सुनाई हुई गीता से सद्गति होती है। आधाकल्प सद्गति अर्धाकल्प दुर्गति यह गीता के कारण ही होती है। तभी बताना भी है गीत का कारण। बहुत बच्चे चल चलके भी करते हैं। लिखकर नहीं दिखाते हैं। डरते हैं पता नहीं मनुष्य हंसा न करें। यानि मनुष्य जानवर फर्क है ना। तो गुरु-2 करेंगे। हर एक बच्चे जानते हैं हम स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। स्वर्ग कैसा होगा वह ही दृष्टि में होना चाहिए। वही कितनी शान्ति होगी। कोई दुःख-अशान्ति आदि भारत में नहीं होगी। सब कंचन ही कंचन होंगे। आत्मा भी कंचन और शरीर भी कंचन रहते हैं। वह है ही कंचन काया जिसको पारस दुनिया भी कहते हैं। मनुष्यों को पारस भी कंचन बन जाती है। महल आदि कितने रौनकदार होंगे। नया-नया मेवा खाने को मिलेगा। दिव्य मन्दिर भी कितने शोभनीक बनते होंगे। हम तो वह बना न सकें। माडल भी नहीं बना सकते। विवेक कहता है कितनी वहां शान्ति होगी। सागर भी बहुत शान्त रहता है। इतनी लहरें नहीं होती। सब शीतल रहते हैं। यह तुम बच्चों की दृष्टि में होना चाहिए। हम अपना पैराडाइज बना रहे हैं। यह ही बाप ने समझाया है कि तुमने अपना राजभाग गंवाया फिर अब लेते हो। रावण 5 विकारों ने तुम्हारा राज्य लिया है। इसमें लड़ाई आदि की कोई बात नहीं उठती। राज्य हराया भी बिगर लड़ाई के है फिर जीत भी बिगर लड़ाई रहती है। यह बेहद की बात है ना। 5 विकारों के कारण ही तुमने हार खाई है। फिर उन पर तुम जीत पाते हो। इसमें लड़ाई-अर्धि का फर्क नहीं उठता। अभी तुम हो स्वराज्य अर्थात् 5 विकारों पर जीत पाने से फिर से तुम स्वराज्य के मालिक बनते हो। बिगर कोई लड़ाई आदि के। दुनिया के लिए में भी कोई लड़ाई करता है नहीं। जीत में फिर लड़ाई का मैदान दिखा दिया है। यह तो है नहीं। राज्य ही तुम पढ़कर ले लेते हो। यह पाठशाला है ना। इसमें स्थूल मेहनत किछ नहीं है। बाप कहते हैं हर बाप तुम बच्चों को यह विनाश होने की बात है। अभी तुमको त्रिनेत्री बनाया जाता है। त्रिनेत्री बनने से तुम त्रिकालदर्शी बनते हो त्रिकालदर्शी बनने से त्रिलोकीनाथ बनते हो। कृष्ण को भी त्रिलोकीनाथ कहते हैं। शिव को त्रिलोकीनाथ नहीं कहेंगे। हां वह नालेज देते हैं। त्रिलोकीनाथ बनने की। त्रिलोकीनाथ वैकुण्ठ नाथ यह सब टाइटिल उनके हैं। अमरनाथ भी है। अमरपुरी में तुम जाते हो। वहां काल खाता नहीं। यह सारी नालेज तुम्हारे अन्दर मन्थन होनी चाहिए। स्टूडेन्ट्स की बुद्धि में सारा दिन पढ़ाई रहती है ना। तुम्हारी बुद्धि में भी सारी पढ़ाई है। उन्की है देह की। तुम्हारी है बेहद की पढ़ाई। वह भी स्टूडेन्ट्स हैं तुम भी स्टूडेन्ट हो। वहां तो छोटे बच्चे, जवान बूढ़े आदि सब इकट्ठे पढ़ते हैं। उन यूनिवर्सिटी आदि में तो सिर्फ जवान ही पढ़ते हैं। डिमान्ड आदि रहती है। तुमको जो ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता है वह है सिविलाइज। हम आत्मायें

d पढ़ते हैं। हम आत्माओं को बाप पढ़ा रहे हैं। यह हैयर काया, ऐसा भी है नालेजफुल। ज्ञानेश्वर पैदा होते ही हैं, इन्हें भी समझ कर देते हैं स्टूडेन्ट में। इस नहीं बोध कैसा चला जाता और हम बड़े हो बैठ उठना फिर दूसरा गर्भ लेना पड़ेगा नहीं। गर्भ के बच्चे होते नहीं। पैदा भी अरतआई कर है तो जन्म लेते ही बोध आ जाता है। यह Vedantization of the Western World नहीं। हम तो बाप से पढ़

जायेंगे। नहीं तो फिर सजाएं खानी पड़ेंगी। वेहद के बाप से वेहद सुख शांति का वर्सा मिलता है। लौकिक बाप से तो मिल न सके। यह है ही वेहद की बात। तुम बच्चे वेहद के बाप से पूरा वर्सा लेते हो। सुख और शान्ति वेहद की मिलती है। फिर उसमें कितनी लिमिट है 2। पीढ़ी। 2। जन्म नहीं- 2। पीढ़ी अर्थात् वहां के वहां। बड़ी अकाले मृत्यु होती ही नहीं। यहां तो अचानक कोई मरता है, कुटुम्ब का कुटुम्ब भी सारा मर पड़ता है। एक्सीडेन्ट होता है तो सारा कुटुम्ब मर पड़ता है। वहां यह बातें होती नहीं। सागर भी इतना तड़फड़ाता नहीं जितना यहां तड़फड़ाते हैं। तुम्हारी प्रकृति दासी बनती है। अभी तो प्रकृति के दास हैं। यहां तुम डायरेक्ट सुनते हो तो तुमको ठहरा भी होता है। पारणा भी अच्छा होता है परन्तु माया के कई सैकेण्ड में जीवनमुक्ति की उड़ा देती है। सैकेण्ड में पूरी से जीवनमुक्ति मिलती है फिर माया की भी कुदृष्टि ऐसी लगती है जो पट से जीवनमुक्ति उड़ा देती है। निश्चय होने में भी देरी नहीं लगती तो संशय होने में भी देरी नहीं लगती। कोई न कोई संशय में आकर पढ़ाई छोड़ देते हैं। स्कूल में न आये पढ़ाई छोड़ी तो मरे। यहां है छड़भई (छड़भई) पौधा का हाथ लगने से झट मुरझा जाते हैं। एक छुईमुई पौधा भी होता है ना। इनको शर्म घुटी जाते हैं। हाथ लगाने से मुरझा जाते हैं। बाप भी कहते हैं शर्म नहीं आती है बाबा के बन कर और फिर माया के बन जाते हो। ऐसे बाप को पारपती का डायवोर्स दे देते हो। शर्म नहीं आता। जबकि दैवी की सगाई बाप से हुई है तो उनको याद करना। फिर दूसरे को क्यों याद करते हो। शर्म नहीं आती क्रिमिनल आई हो जाती है। सगाई अर्थात् बुद्धि में शिववाबा की याद। स्त्री पुरुष की भी ऐसी सगाई हो जाती है ना। याद ठहर जाती है। स्कूल में बच्चे बैरिस्टरी पढ़ते हैं गोया कोई बैरिस्टर साथ सगाई हो जाती है। वह सभी हैं एक की सगाई। यह है वेहद की सगाई। वेहद के बाप से ही वर्सा लेना है। उन स्टूडेन्ट्स को है जिम्मानी पढ़ाई। उनमें ही उन्हों का विचारसागर मंथन चलता रहता है। तुम्हारी है रूहानी पढ़ाई। अच्छे स्टूडेन्ट्स जो होते हैं वह सदैव एकान्त में जाकर पढ़ते हैं। तुम्हारी यो पढ़ाई ऐसी है। स्टूडेन्ट, स्टूडेन्ट में शोकते हैं। आपस में मिलते जुलते हैं। पढ़ाई पर ही वार्तालाप करते हैं। इस वेहद की पढ़ाई में तो और ही खुशी से नाच जाना चाहिए। और एमआब्जेक्ट भी सामने खड़ा है। कोई का बाप नया महल बनाता है तो दिल खुश होती है। सब बच्चे दिखलाते हैं हमारा कैसा महल बनता है। मनुष्य भी समझते हैं यह मेहनत कर बहुत अच्छा महल बनाता है। तुम बच्चे भी जानते हो हमारे महल आदि बहुत अच्छे बनेंगे। अभी तो सिर्फ उनका सा० होता है जो स्वर्ग के मालिक हैं। अभी चल तुमको स्वर्ग भी देखने में आयेगा। आडर्डिया मिलेगी ऐसा हम ऐसा महल बनायेंगे। परन्तु यह डीपरनल सा० आदि उनको होगा जो विजय माला के दाने होंगे। महार होंगे। बाकी सजा के दिल पर चढ़ हुए होंगे। बाबा यहां बैठता है तो डौन2 याद आते हैं। जो बे सर्विसएबल बच्चे हैं। कब अहमदाबाद, कब चम्बे, कब कलकत्ता चला जाता है। यह बच्चे बहुत अच्छी सर्विस करते हैं। लौकिक बाप को भी फर्स्ट क्लास बच्चे याद पड़ते ना। जो पहचान ही नहीं जानते होंगे उनको थोड़ी याद करेंगे। बेहद का बाप भी अच्छे2 पूतों को ही देखेंगे यह बड़ा अच्छा फूल है। बहुत अच्छी सर्विस करते हैं। बाप के दिल पर चढ़ा रहता है। बेहदनिमानी यहां शान्त रहते हैं। देहअभिमान नहीं रहता। यहां सब कुछ देने की तालत न रहती। सब की परवाह नहीं रखती कोई आरामकुर्सी है यहां, ही वहां आराम से रहेंगे। बाप हाजिरी रहती है। किसको क्लास, पढ़ाओ तो अच्छी यह करो। उनको बड़ा देहअभिमानी समझते हैं। बाप कितना निरहंकारी है। कहां को कहां म्यूजियम मिल जाता है तो बस हम चलाते गए, कर देखो। बाप तो कहते हैं हम तुम्हारा इमीडियेट आडीडियेट बनते हैं। तब हमको प्रतिज्ञा करनी पड़ती है, फिर कुछ पावन बनियां में चलाते हो। जो में जाकर बैठे, कैसे2 अच्छे महलों में रहते हैं। सजे सजाये बैठे हैं। पुरानी बनियां में से तुम्हारा दादा रहते हैं ना। उनको सदा बहुत उमंग उत्साह मक्खनीन रहते हैं। बिछाने से हल्का करने से कांटे छोटे निकल आये। एक कहानी है। तुमको भी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बाबा सभा में पधारते ही प्रश्न पूछा कि तुम हरेक जितना समय यहाँ बैठे थे तो किसको याद से बैठे थे। कितना मिनट शिव बाबा की याद में बैठे थे? सिर्फ शिवबाबा की ही याद में बैठे थे या और कोई बात बुद्धि थी? पोतामेल बताओ। (बाबा दो चार से बाबा ने पोतामेल पूछा)

स्लोगन:- तू प्यार का सागर है ---ओमशान्ति। यह भिन्न2 महिमा के गीत है। यह हुई शिवबाबा की महिमा आगे भक्तिमार्ग में भी हम शिवबाबा के मन्दिर में जाते थे। परन्तु ऐसी महिमा नहीं गाते थे कि तू प्यार का सागर है। वा सदगति दाता है। वहाँ जाकर सिर्फ शिव की स्तुति करते हैं। फूल दूध आदि चढ़ावेंगे। या किसको कोई गुप्त आश होती है तो अन्दर में यह ख्याल आता है शिवबाबा हमारे यह आश पूरे करे। बाकी उनका अक्युपेशन कि क्या जानते नहीं हैं। किसके भी मन्दिर में जावेंगे। अक्युपेशन को नहीं जानते। जगदम्बा के मन्दिर में भी जाते हैं तुम अब जानते हो जगदम्बा होकर गई है। कालो को भी महिमा गाते हैं असुरों के संहार करने वाले हैं। कालो का रूप ही ऐसा भयानक दिखाते हैं। कालो की माता कहते हैं। अब असुर कह किसको कहा जाये यह भी समझ में आना चाहिए। ऐसे नहीं कहेंगे जगदम्बा कोई असुरों का संहार करते हैं। नहीं। जगदम्बा के पास अन्दर की आश ले जाते हैं। असुरों के संहार करने वाली कालो दिखाते हैं। जगदम्बा का कोई भयानक रूप नहीं हैं। ऐसे कई देवियों के बहुत शान्त रूप दिखाये हैं। अम्बा तो अम्बा ठहरी। अम्बा और बाबा परन्तु उस समय बुद्धि में सिर्फ भी नहीं आता है कि यह हमारे अम्बा है। जिसने जन्म दिया है। कैसे जन्म देती है यह ध्यान में नहीं आता है। सिर्फ एडाप्ट ही किया होगा। कोई ख्याल नहीं आता। ऐसे ही सिर्फ जगदम्बा कह सागर है ना। कहते हैं आप सागर हो। एक लोटा भी देते हो तो हम पार हो जाते हैं। शिवबाबा की याद ऐसा करना है जो दूसरे सब भूल जाये। जैसे कन्या का पहले तो माँ बाप भाई बहन आदि से प्यार होता है। पति को देखा सगाई हुई, तो झट से पति साथ प्यार हो जाता और सब से निकल जाता है। अजन सुख भी कुछ न मिला है। कन्या पति को देखा और उनसे दिल लग जाती है। अब तुमको तो मिलता है शिवबाबा। तुम जानते हो हमने बाप की गोद ली है। बाप से वर्सा लेने। बाप ने हमको एडाप्ट किया है। मुख सन्तान और कुख सन्तान अक्षर है ना। जैसे सन्यासियों के चेले बनते हैं। उनको सन्तान नहीं कहेंगे। वह हुये मुख के चेले। वह कहता है यह हमारे गुरू है। चेले को फालोअर कहेंगे। फालोअर का अर्थ है जहाँ वह जाये उनके पीछे करना। उनके पीछे जाना। अगर गुरु की आत्मा निवृत्तिधाम जाती है तो फालोअर भी उनके पिछाड़ी चला जाये परन्तु एक भी फालो करते नहीं हैं। फालो माना शरीर छोड़ उनके पिछाड़ी चले जाये। परन्तु एक=ब ऐसे तो होत नहीं हैं। कोई पतिव्रता स्त्री होती है पति मर जाता है तो उनके पीछे चिखा पर चढ़ती है। परन्तु पति की आत्मा तो झट भागी। एक शरीर छोड़ दूसरे में जाकर प्रवेश किया। स्त्री कहती हैं मैं उनके पिछाड़ी मरूँगी। वह तो आत्मा चली गई। परन्तु स्त्री के दिल में कामना है जहाँ भी पति जाये पतिलोक में जाऊँ। पति का लोक कोई और नहीं। जन्म तो यहाँ ही लेगा। अच्छा स्त्री जोते जी चिखा पर चढ़ती है पति भाव रखता है ऐसे नहीं

16.3.80 .. प्रात: क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे-तुम्हें इस पुरानी दुनिया, पुराने शरीर से जीते जी मरकर घर जाना है, इसलिए देह अभिमान छोड़ देही अभिमानी बनो"

प्रश्न:-अच्छे2 पुरुषार्थी बच्चों की निशानी क्या होगी? उत्तर:-जो अच्छे2 पुरुषार्थी हैं वह सवेरे2 उठकर देहीअभिमानी रहने की प्रैक्टिस करेंगे। वह एक बाप को याद करने का पुरुषार्थ करेंगे, और कोई देहधारी याद न आये- यह लक्ष्य रहता है। निरन्तर बाप और 84 के चक्र की याद रहे तो अहो सौभाग्य।

ओमशान्ति। अभी तुम बच्चे जीते जी मरे हुए हो। कैसे मरे हो? देह के अभिमान को छोड़ दिया तो बाकी रही आत्मा। शरीर तो खत्म हो जाता है। आत्मा नहीं मरती। बाप कहते हैं जीते जी अपने को आत्मा समझो और परमपिता परमात्मा के साथ योग लगाने से आत्मा पवित्र हो जायेगी। जब तक आत्मा बिल्कुल पवित्र नहीं बनी है तब तक पवित्र शरीर मिल न सके। आत्मा पवित्र बन गई तो फिर यह पुराना शरीर आपेही छूट जायेगा। जैसे सर्प की खल आटोमेटिकली छूट जाती है। उनसे ममत्व मिट जाता है, वह जानता है हमको नई खल मिलती है पुरानी उतर जायेगी। हर एक को अपनी2 बुद्धि तो होती है ना। अभी तुम बच्चे समझते हो हम जीते जी इस पुरानी दुनिया से पुराने शरीर से मर चुके हैं फिर तुम आत्मायें भी शरीर छोड़ कहां जायेंगी। अपने घर। पहले2 तो यह पक्का याद करना है- हम आत्मा हैं, शरीर नहीं। आत्मा कहती है- बाबा हम आपके हो चुके, जीते जी मर चुके हैं। अब आत्मा को फरमान मिला हुआ है कि मुझ बाप को याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। यह याद का अभ्यास पक्का चाहिए। आत्मा कहती है- बाबा आप आये हैं तो हम आपके ही बनेंगे। आत्मा मेल है न कि फीमेल। हमेशा कहते हैं हम भाई2 हैं, ऐसे थोड़े ही कहते हम सब सिस्टर्स हैं, सब बच्चे हैं। सब बच्चों को वर्सा मिलना है। अगर अपने को बच्ची कहेंगे तो वर्सा कैसे मिलेगा। आत्मायें सब भाई2 हैं। बाप सबको कहते हैं- रूहानी बच्चों मुझे याद करो। आत्मा कितनी छोटी है। यह है बहुत महीन समझने की बातें। बच्चों की याद ठहरती नहीं है। संन्यासी लोग दृष्टान्त देते हैं- मैं ब्रह्म हूं..2.. ऐसे कहने से फिर ब्रह्म बन जाते हैं। अब वास्तव में ब्रह्म कोई होंगे थोड़ेही। बाप तो कहते हैं अपने को आत्मा समझो। यह आत्मा और परमात्मा का ज्ञान तो कोई को है नहीं। इसलिए ऐसी2 बातें कह देते हैं। अब तुमको देही अभिमानी बनना है, हम आत्मा हैं यह पुराना शरीर छोड़ हमको जाए नया लेना है। मनुष्य मुख से कहते भी हैं कि आत्मा स्टार है प्रकृटी के बीच में रहती है फिर कह देते अंगूठे मिसल है। अब सितारा कहाँ, अंगूठा कहाँ। और फिर मिट्टी के तालिग्राम बैठ बनाते हैं, इतनी बड़ी आत्मा तो हो नहीं सकती। मनुष्य देह अभिमानी हैं ना। तो बनाते भी मोटे रूप में हैं। यह तो बड़ी सूक्ष्म महीनता की बातें हैं। भक्ति भी मनुष्य एकान्त में, कोठी में बैठ करते हैं। तुमको तो गृहस्थ व्यवहार में धन्धे जाटि में रहते हुए बुद्धि में यह पक्का करना है- हम आत्मा हैं। बाप कहते हैं- मैं तुम्हारा बाप भी इतनी छोटी बिन्दु हूं। ऐसे नहीं कि मैं बड़ा हूं। मेरे में सारा ज्ञान है। आत्मा और परमात्मा दोनो एक जैसे ही हैं। सिर्फ उनको सुप्रीम कहा जाता है। यह ड्रामा में नूंध है। बाप कहते हैं- मैं तो अमर हूं। मैं अमर न होता तो तुमको पावन कैसे बनाऊँ। तुमको स्वीट चिल्ड्रेन कैसे कहूँ। आत्मा ही सब कुछ करती है। बाप आकर देही अभिमानी बनाते हैं। इसमें ही मेहनत है। बाप कहते हैं मुझे याद करो और कोई को याद न करो। योगी तो दुनिया में बहुत हैं। कन्या की सगाई होती है तो फिर पति के साथ योग लग जाता है ना। पहले थोड़ेही था। पति को देखा फिर उनकी याद में रहती है। अब बाप कहते हैं- मामेकम् याद करो और कोई देहधारी को याद नहीं करना है। यह बहुत अच्छी प्रैक्टिस चाहिए। जो अच्छे2 पुरुषार्थी बच्चे हैं वह सवेरे2 उठकर देही अभिमानी रहने की प्रैक्टिस करेंगे। भक्ति भी सवेरे करते हैं ना। अपने2 ईष्ट देव को याद करते हैं। हनुमान की भी कितनी पूजा करते हैं। इन बातों पर अभी तुमको हंसी आती है। बन्दर कैसे पुल बांधेंगे। मनुष्यों की बुद्धि बिल्कुल चलती नहीं है। ऐसी2 बातें सुनकर मनुष्य खुश होते हैं। वाह2 करते हैं। ड्रामहरा बनाते हैं। समझते कुछ नहीं। क्रिश्चियन लोग जब कनवर्ट करते हैं तो बहुत ग्लानों की बातें तुरन्त अपने धर्म में कनवर्ट कर देते। यह बाप ही आकर समझाते हैं। तुम्हारी बुद्धि बन्दर मिसल हो गई है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अब फिर तुम देवता बनते हो। अब यह है पतित तमोप्रधान दुनिया। (अभी तुम आये हो बेहद के बाप पास। मैं तो पुनर्जन्म रहित हूँ। यह शरीर इस दादा का है। मेरा कोई शरीर का नाम नहीं। मेरा नाम ही है कल्याणकारी शिव। तुम बच्चे जानते हो शिवबाबा कल्याणकारी आकर
b नर्क को स्वर्ग बनाते हैं।) कितना कल्याण करते हैं। नर्क का एकदम विनाश करा देते हैं। प्रजा पिता ब्रह्मा द्वारा अभी स्थापना हो रही है। यह है प्रजा पिता ब्रह्मा मुख वंशावली। चलते फिरते एक दो को सावधान करना है। मनमनाभव। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। पतित पावन तो बाप हैं ना। उन्होंने भूल से भगवानुवाच के बदले कृष्ण भगवानुवाच लिख दिया है। वास्तव में देहधारी को भगवान नहीं कहा जाता है। सूक्ष्मवतन वासी को भी भगवान नहीं कहा जाता। भगवान निराकार है, उनको परमपिता परमात्मा कहा जाता है। उनका नाम है शिव। शिव की पूजा भी बहुत होती है। शिव काशी..2 कहते रहते हैं। भक्ति मार्ग में अनेक प्रकार के नाम रख दिये हैं। कमाई के लिए अनेक मन्दिर बनाये हैं। (असली नाम है शिव। फिर
c सोमनाथ रखा है, सोमनाथ-सोमरस पिलाते हैं। ज्ञान धन देते हैं। फिर जब पुजारी बनते हैं तो कितना खर्चा करते हैं। उनके मन्दिर बनाने पर। क्योंकि सोमरस दिया है ना। सोमनाथ के साथ सोमनाथिनी भी होगी। यथा राजा रानी तथा प्रजा सब सोमनाथ सोमनाथिनी हैं। तुम सोनी दुनिया में जाते हो। वहाँ सोने की ईंटें होती हैं। नहीं तो दीवारें आदि कैसे बनें। बहुत सोना होता है। इसलिए उसको सोने की दुनिया कहा जाता है। यह है लोहे, पत्थरों की दुनिया।
d स्वर्ग का नाम सुनकर ही मुख पानी हो जाता है। (विष्णु के दो रूप लक्ष्मी नारायण अलग2 बनेंगे ना। तुम विष्णुपुरी के मालिक बनते हो।) अभी तुम हो रावण पुरी में। तो अब बाप कहते हैं सिर्फ अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। बाप भी परमधाम में रहते हैं। तुम आत्मायें भी परमधाम में रहती हो। बाप कहते हैं तुमको कोई तकलीफ नहीं देता हूँ। बहुत सहज है। बाकी हाँ रावण सामने दुश्मन खड़ा है। यह विघ्न डालते हैं। ज्ञान में विघ्न नहीं पड़ते। विघ्न पड़ते हैं याद में। घड़ी2 माया याद भुला देती है। देह अभिमान में ले आती है। बाप को याद करने नहीं देता। यह पुट चलती है। बाप कहते हैं तुम कर्मयोगी तो हो ही। अच्छा दिन में याद नहीं कर सकते हो तो रात को याद करो। रात का अभ्यास दिन में काम आयेगा।

निरन्तर स्मृति रहे- जो बाप हमको विश्व का मालिक बनाते हैं, हम उसे याद करते हैं। बाप की याद और 84 जन्मों के चक्र की याद रहे तो बड़ा सौभाग्य। औरों को भी सुनाना है- बहनों और भाईयों अब कलियुग पूरा हो सतयुग आता है। बाप आये हैं ततयुग के लिए राजयोग सिखला रहे हैं। कलियुग के बाद सतयुग आना है। एक बाप के सिवाए और कोई को याद नहीं करना है। वानप्रस्थी जो होते हैं वह सन्यासियों का जोर संग करते हैं। वानप्रस्थ वहाँ वाणी की गम नहीं है। आत्मा शान्त रहती है। तीन तो हो नहीं सकती। ड्रामा से कोई भी एक्टर निकल नहीं सकता। यह भी बाप ने समझाया है एक बाप के सिवाए और कोई को याद नहीं करना है। देखते हुए भी याद न करो। यह पुरानी दुनिया तो विनाश हो जानी है, कब्रिस्तान हैं ना। मुर्दों को कभी याद किया जाता है क्या। (बाप कहते हैं बड़ सब मरे पड़े हैं। मैं आया हूँ पतितों को पावन बनाए ले जाता हूँ। यहाँ यह सब खत्म हो जायेंगे।) आजकल बाम्ब्स आदि जो भी बनाते हैं, बहुत तीखे2 बनाते रहते हैं। कहते हैं यहाँ बैठे जिस पर निशान छोड़ेंगे उस पर ही गिरेंगे। यह नूँध है फिर से विनाश होना है। भगवान आते हैं नई दुनिया के लिए राजयोग सिखला रहे हैं। यह महाभारत लड़ाई है, जो शास्त्रों में गाई हुई है। हरोबर भगवान आये हैं। स्थापना और विनाश करने। चित्र भी क्लीयर है। तुम सा० कर रहे हो- हम पढ़ बनेंगे। यहाँ की यह पढ़ाई खत्म हो जायेगी। वहाँ तो बैरिस्टर डाक्टर आदि की दरकार नहीं होती। तुम तो यहाँ का वर्सा ले जाते हो। हुनर भी सब यहाँ से ले जायेंगे। फर्स्टक्लास बनाने वाले होंगे। तो वहाँ भी बनायेंगे। बाजार आदि तो होगी ना। काम तो चलेगा। यहाँ से सीखा हुआ अक्ल ले जाते हैं। साइन्स से भी अच्छे हुनर सीखते हैं। यह सब वहाँ काम आयेंगे। प्रजा में जायेंगे। तुम बच्चों को तो प्रजा में नहीं आना है। तुम आये ही हो आकर जगत के मालिक बनने। बाप जो श्रीमत देते हैं, उस पर चलना है। फर्स्टक्लास श्रीमत तो एक ही देते हैं कि मुझे याद करो। तुम्हारे पाप कट जायें। अपने ऊपर ध्यान रखो। कोई का भाग्य

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अनायास भी खुल जाता है। कोई कारण निमित्त बन पड़ता है। कोई का पति मर जाता है तो बाबा कहते हैं यह पतियों का पति तो तुमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। अगर वह होता तो तुम यह ज्ञान थोड़ेही पाती। यह भी अच्छा ही हुआ ना। इसमें तो खुश होना चाहिए। विकार के लिए भी कितनी मारें खाती हैं। अच्छा वह बहुत सताते हैं तब तो नफरत आती है। कुमारियों को भी बाबा कहते हैं शादी तो बरबादी हो जायेगी। इस गटर में मत गिरो। क्या तुम बाप का नहीं मानेंगी। स्वर्ग की महारानी नहीं बनेंगी। अपने साथ प्रण करना चाहिए कि हम उस दुनिया में कभी नहीं जायेंगे। उस दुनिया को याद भी नहीं करेंगी। भगवान को कभी याद करते हैं क्या। यहाँ तो तुम कहते हो कि कहाँ यह शरीर छूटे तो हम अपने स्वर्ग में जायें। अब 84 जन्म पूरे हुए। अब हम अपने घर जाते हैं, औरों को भी यही सुनाना है। e यह भी समझते हो बाबा बिगर सतयुग की राजाई कोई दे नहीं सकते। इस रथ को भी कर्मयोग तो होता है ना। बापदादा की भी आपस में कभी खटपट चलती है- यह बाबा कहते हैं बाबा आशीर्वाद कर दो। बीमारी के लिए कोई दवाई करो या फूंक मन्त्र से उड़ा दो। कहते हैं-नहीं, यह तो भोगना ही है। यह तुम्हारा रथ लेता हूँ, उसके बदले में तो देता ही हूँ, बाकी यह तो तुम्हारा हिसाब किताब है। अन्त तक कुछ न कुछ होता रहेगा। तुम्हें आशीर्वाद करूँ तो सब पर करनी पड़े। आज यह बच्ची यहाँ बैठी है, कल ट्रेन में एक्सीडेंट हो जाता है, मर पड़ती है, बाबा कहेंगे- ड्रामा। ऐसे थोड़ेही कह सकते कि बाबा ने पहले क्यों नहीं बताया। ऐसा कायदा नहीं है। मैं तो आता हूँ पतित से पावन बनाने। यह बतलाने थोड़ेही आया हूँ। यह हिसाब किताब तो तुमको अपना चुक्तू करना है। इसमें आशीर्वाद की बात नहीं। इसके लिए f जाओ सन्यासियों के पास। बाबा तो बात ही एक बताते हैं। मुझे बुलाया ही इसलिए है कि हमको आकर नर्क से स्वर्ग में ले जाओ। गाते भी हैं पतित पावन सीताराम। परन्तु अर्थ उल्टा निकाल दिया है। फिर राम की बैठ महिमा करते रघुपति राघो राजा राम..) वह पहले अपने ऊपर तो आशीर्वाद कर अपनी स्त्री को तो रावण से छुड़ाये। यह सब भक्ति मार्ग के शास्त्र हैं। बाप कहते हैं इन भक्ति मार्ग में तुमने कितने पैसे गंवाये हैं। एक गीत भी है ना- क्या कौतुक देखा.. देवियों की मूर्तियां बनाए पूजा कर फिर समुद्र में डुबो देते हैं। अब समझ में आता है- कितने बेअक्ल हैं। कितने पैसे बरबाद करते हैं। फिर भी यह होगा। सतयुग में तो ऐसा काम होता ही नहीं। ड्रामा को बड़ा अच्छी रीति समझना है। सेकेण्ड बाई सेकेण्ड की g नूँध है। कल्प बाद फिर यही बात रिपीट होगी। ड्रामा को बड़ा अच्छी रीति समझना चाहिए। अच्छा कोई जास्ती नहीं याद कर सकते हैं तो बाप कहते हैं सिर्फ अलफ और बे बादशाही को याद करो। अन्दर में यही धुन लगा दो कि हम आत्मा कैसे 84 का चक्र लगाकर आई हैं। चित्र पर बैठ समझाओ, बहुत सहज है। यह है रूहानी बच्चों से रूहरिहान। बाप रूहरिहान करते ही हैं बच्चों से। और कोई से तो कर न सकें। बाप कहते हैं- अपने को आत्मा समझो। आत्मा ही सब कुछ करती है। बाप याद दिलाते हैं, तुमने 84 जन्म लिये हैं। मनुष्य ही बने हैं। जैसे बाप आर्डीनेन्स निकालते हैं कि विकार में नहीं जाना है। यह भी आर्डीनेन्स निकालते हैं कि किसको रोना नहीं है। सतयुग त्रेता में कभी कोई रोते नहीं। छोटे बच्चे भी नहीं रोते। रोने की हुक्म नहीं। वह है ही हर्षित रहने की दुनिया। उसकी प्रैक्टिस सारी यहाँ करनी है। अच्छा- मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:- ।।। बाप से आशीर्वाद मांगने के बजाए याद की यात्रा से अपना सब हिसाब चुक्तू करना है। पावन बनने का पुरुषार्थ करना है। इस ड्रामा को यथार्थ रीति समझना है। 2। इस पुरानी दुनिया को देखते हुए भी याद नहीं करना है। कर्मयोगी बनना है। सदा हर्षित रहने का अभ्यास करना है। कभी भी रोना नहीं है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

16-2-80 प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है

"बच्चों का फर्ज है बाप को याद करना, इसमें ज्ञान की दरकार नहीं"

a प्रश्न:-बाप का कार्य प्रेरणा से नहीं चल सकता-उनको यहाँ आना ही पड़े-क्यों? उत्तर:-क्योंकि मनुष्यों की बुद्धि बिल्कुल तमोप्रधान है,तमोप्रधान बुद्धि प्रेरणा को केच नहीं कर सकते।बाप आते है तब तो गाया है छोड़ भी दे आकाश सिंहासन···

प्रश्न:-किस बात में मस्त रहो तो तुम्हारी कर्मइन्द्रियां शीतल हो जायेंगी?उत्तर:-याद की यात्रा में मस्त रहो तो कर्मइन्द्रियों की चंचलता शान्त हो जायेगी।देह का भान तोड़ने के लिए एक अव्यभिचारी याद में रहने की प्रैक्टिस चाहिए।

गीत:-छोड़ भी दे आकाश सिंहासन···ओमशान्ति।भक्तों ने गीत बनाया है।अब उनका गीत कैसा अच्छा है।कहते हैं आकाश सिंहासन छोड़कर आओ।भक्तों को तो कहा जाता है दुनिया को पवित्र हुए।अब आकाश तो है यह।यह है रहने का स्थान।अब आकाश से तो कोई चीज आती नहीं है।आकाश सिंहासन कहते है,आकाश तत्व में तो तुम रहते हो और आत्मा रहती है महतत्व में।उसे ब्रह्म या महतत्व कहते है ।आवेंगी भी जरूर वहां से। कोई तो आवेगा ना।कहते है आकर हमारी ज्योति जगाओ। गायन भी है एक है अन्धे की औलाद अन्धे और दूसरे है सज्जे की औलाद सज्जे। धृतराष्ट्र और युधिष्ठर नाम दिखाते हैं।अभी यह तो औलाद है रावण की।माया रूपी रावण है ना। सबकी रावण बुद्धि है।अब तुम हो ईश्वरीय बुद्धि -के बाप तुम्हारी बुद्धि का अब ताला खोल रहे है।रावण ताला बन्द कर देते है कोई किसी बात को न समझते है तो कहते है यह तो पत्थरबुद्धि है।बाप आकर यहां ज्योति जगायेंगे ना। प्रेरणा से थोड़ेही काम होता है।आत्मा जो सतोप्रधान थी उनकी ताकत कम हो गई है।तमोप्रधान बन गई है।एकदम झुंझार बन पड़ी है।मनुष्य कोई मरते है तो उनका दीवा जलाते है अब दीवा क्यों जलाते है? समझते है ज्योति बुझ जाने से अन्धियारा हो इसलिए ज्योति जगाते है।अब यहां की ज्योति जगाने से वहां कैसे सोझरा होगा। इसको कहा जाता है नानसेंस बुद्धि अभी तुम सेन्सीबुल बुद्धिबनते हो।माया ने नानसेन्स बनाया है।तुम जानते हो हम मूर्ख तुच्छ बुद्धि थे।रावण ने बिल्कुल तुच्छ बुद्धि बनाया अब बाप कहते है तुमको स्वच्छ बुद्धि बनाता हूं।ज्ञान का घृत डालता हूं।है यह भी समझने की बात।ज्ञान योग दोनो अलग चीज है।योग को ज्ञान नहीं कहेंगे। कोई समझते है भगवान् ने अर्जुन को ये भी ज्ञान दिया ना कि मुझे याद करो।परन्तु यह ज्ञान नहीं कहेंगे।यह तो बाप ओर है।बच्चे जानते है कि यह हमारा बाबा है।इसमें ज्ञान की बात नहीं। ज्ञान का तो विषय है।यह तो सिर्फ याद है।बाप कहते है मुझे याद करो बस यह तो कामन बात है।इनको ज्ञान नहीं कहा जाता।बच्चे ने जन्म लिया सो तो जरूर बाप को याद करेगा ना। ज्ञान का कितना विस्तार है। बाप कहते है मुझे याद करो यह ज्ञान नहीं हुआ। तुम खुद जानते हो हम आत्मा है हमारा बाप परमपिता परमात्मा है.इनको ज्ञान कहेंगे क्या। बाप को कहते है जैसे बच्चे पुकारते है। ज्ञान तो है नालेज। जैसे कोई एम०ए०पढ़ते है कोई बी०ए०पढ़ते है कितनी टेर किताबें पढ़नी होती है।अब बाप तो कहते है तुम हमारे बच्चे हो ना।तुम्हारा बाप मैं हूं।मेरे से हो योग लगाओ अर्थात् याद करो इसको ज्ञान नहीं कहेंगे।तुम बच्चे तो हो। तुम आत्मायें कब विनाश को नहीं पाती हो।कोई मर जाते हैं तो उनकी आत्मा को मंगाते हैं अब वह शरीर तो खत्म हो गया आत्मा भोजन कैसे खायेगी भोजन तो फिर भी ब्राह्मण खायेंगे परन्तु यह सच है भक्ति मार्ग की रसम। ऐसे नहीं कि हमारे कहने से यह भक्तिमार्ग बन्द हो जायेगा। वह तो चलता ही आता है।आत्मा तो एक शरीर छोड़ जाकर दूसरा लेती है।परन्तु यह रसमरिवाज चली आती है।अब यह रसमरिवाज आई कहां वास्तव में यह रोयल बात यहां है।तुम आत्माओं को बुलाते है ना। बाप आत्मा को ही बुलाते हैं उनको समझाने लिए कि तुम आते थे तुमको कितना समझाते थे कि बाप को याद करो पवित्र बनो फिर भी न माना अब तुम पद भ्रष्ट हो गये।आगे जो मरे है फिर भी बूढ़े होकर 20-25 वर्ष के हुए तो कोई2आकर फिर से ज्ञान ले सकते है।अभी जो मरेंगे तो ज्ञान ले न सकें। व्यभिचारी होने से बाप को याद भी नहीं कर सकेंगे।करके इतना कहेंगे शिव

याद करो। या कोई पूर्व बच्चा होगा तो 84का चक्र समझ जायेगा। नये बच्चे पूछते हैं हम बाप को याद करने से तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। बाप कहते हैं मुझे याद करो। यह ज्ञान नहीं, यह तो बाप डायरेक्शन देते हैं। इनको योग कहा जाता है, ज्ञान है सृष्टि चक्र कैसे फिरता है उसकी नालेज। योग अर्थात् याद बच्चे का फर्ज है। बाप को याद करना। वह है लौकिक यह है पारलौकिक। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो ज्ञान अलगदोज हो गई। बच्चे को कहना पड़ता है क्या बाप को याद करो। लौकिक बाप तो जन्मते ही याद रहता है। यहाँ बाप की याद दिलानी पड़ती है। इसमें मेहनत लगती है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह बहुत मेहनत का काम है। तब बाबा कहते हैं योग में ठहर नहीं सकते हैं। बच्चे लिखते हैं बाबा याद भूल जाती है। ऐसे नहीं कहते ज्ञान भूल जाता है। ज्ञान तो बहुत सहज है। याद को ज्ञान नहीं कहा जाता है। इसमें माया के तूफान बहुत आते हैं। भल ज्ञान में कोई बहुत तीखे हैं मुरली बहुत अच्छी चलाते हैं परन्तु बाबा पूछते हैं याद का चार्ट निकालो। कितना समय याद करते हो बाबा को याद का चार्ट यथार्थ रीति बनाकर दिखाओ। याद ही मुख्य बात है। पतित ही पुकारते हैं कि आकर पावन बनाओ। पावन बनने लिए याद ही है। राजाई पाने लिए तो ज्ञान है। मुख्य है पावन बनने की बात, इसमें ही माया के विघ्न पड़ते हैं। शिव भगवानुवाच- याद में बच्चे बहुत कच्चे हैं। अच्छे2बच्चे जो मुरली तो बहुत अच्छी चलाते हैं परन्तु याद में बिल्कुल कमजोर हैं। योग से ही विकर्म विनाश होते हैं। कर्मइन्द्रियों की जो चंचलता होती है वह भी योग से ही शान्त हो सकती है। एक बाप के सिवाए और कोई याद न रहे। कोई की देह भी याद न रहे। आत्मा जानती है यह सारी दुनिया खलास होनी है। अब हम जाते हैं अपने घर। फिर आयेंगे अपनी राजधानी में। यह सदैव बुद्धि में रहना चाहिए। ज्ञान जो मिलता है वह आत्मा में रहना चाहिए। बाबा तो है योगेश्वर जो याद सिखलाते हैं। ये याद सिखलाने वाला ईश्वर बाप है। वह निराकार बाप शरीर द्वारा सुनाते हैं। बच्चे भी शरीर द्वारा सुनते हैं। कई तो योग में बहुत कच्चे हैं। बिल्कुल याद करते ही नहीं जो भी जन्म जन्मान्तर के पाप हैं सबकी सजा खायेंगे। यहाँ आकर जो पाप करते हैं वह तो और ही सौगुणी सजायें खायेंगे। शास्त्रों में भी तामरधुज मौरधुज की कथा है ना। बाप के पास आकर फिर जो पाप आत्मा बनते हैं यह उनके लिए है। ज्ञान की बिल्कुल तो बहुत करते हैं योग बिल्कुल है नहीं। जिस कारण पाप भस्म न होते। कच्चे ही रह जाते हैं। इसलिए सच्ची2माला 8 की ही बनी है। 9 रत्न गाये जाते हैं। 108रत्न कब सुने हैं? 108रत्नों की कोई चीज नहीं बनाते हैं। 9रत्न कहते हैं।

तो बच्चों को फिर भी पुरुषार्थ करना है। बहुत हैं जो इन बातों को पूरा समझते नहीं हैं। याद को ज्ञान नहीं कहा जाता। ज्ञान सृष्टि चक्र को कहा जाता है। शास्त्रों में जो नहीं कहेंगे वह सब शास्त्र है भक्ति मार्ग के। बाप खुद कहते हैं मैं इनसे नहीं मिलता हूँ। इन साधुओं आदि सबका उद्धार करने मैं आता हूँ। वो समझते हैं ब्रह्म में लीन होना है। मिसाल फिर देते हैं पानी के बुदबुदे का। अभी तुम ऐसे नहीं कह सकते। तुम तो जानते हो हम आत्मायें बाप के बच्चे हैं। मामेकम् याद करो यह अक्षर भी कहते हैं परन्तु अर्थ कोई समझते नहीं। भल कह देते हैं हम आत्मा हैं परन्तु आत्मा क्या है परमात्मा क्या है यह ज्ञान बिल्कुल नहीं। यह बाप ही आकर सुनाते हैं। अभी तुम जानते हो हम आत्माओं का घर वह है। वहाँ सारा सिजरा है। हरेक आत्मा को अपना2पार्ट मिला हुआ है। बाकी भक्तिमार्ग तो कोई काम का न है। बाप कहते हैं यह सब फालतू बातें हैं। भक्ति है अन्धियारा मार्ग, आधाकल्प ठोकरें खाते दुर्गति को पाते हैं। नहीं तो भगवान को क्यों याद करते। सतयुग में सुख है तो वहाँ कोई याद नहीं करते। सुख कौन देते हैं। दुख कौन देते हैं यह भी किसको पता नहीं है। भक्ति है ही रात ज्ञान है दिन। 63जन्म तुम धक्के खाते हो फिर ज्ञान देता हूँ तो कितना समय लगता है? सेकेण्ड। यह तो गाया हुआ है सेकेण्ड में जीवनमुक्ति याद तुम्हारा गाया हुआ है ना। सबको पतित पावन है उनको याद करने से तुम पावन बन जायेंगे। सतयुग त्रेता द्वापर को युग यह कहा है। नाम भी जानते हैं परन्तु पत्थर बुद्धि ऐसे हैं टाइम का किसको भी पता नहीं। समझते भी हैं घोर कलियुग है अगर कलियुग अभी भी चलेगा तो क्या और

PDF compressed

15-7-84 प्रात: क्लास ओमशान्ति पितामी शिवबाबा याद है।
बृहस्पति बाप ने तुम बच्चों पर बृहस्पति की दशा बिठाई है अभी तुम अविनाशी सुख की दुनिया में जा रहे हो।

प्रश्न:- अविनाशी बृहस्पति की दशा किन बच्चों पर बैठती, उनकी निशानी क्या होगी?
उत्तर:- जो बच्चे जीते जी देह सहित देह के सब सम्बंधों को त्याग अपने को आत्मा निश्चय करते ऐसे निश्चय-आत्मिक बुद्धि वाले बच्चों पर बृहस्पति की दशा बैठती है। उनके ही सुख का गायन है- कि अतिइन्द्रिय सुख गोपिकाओं से पूछो। उनकी खुशी कभी भी गुम नहीं हो सकती। खुशी गुम होना माना राहु का ग्रहण।

गीत:- ओम् नमो शिवाए ओमशान्ति। बच्चों ने बाप की महिमा सुनी। आज के दिन को कहा ही जाता है वृहस्पति से जिसको मिलाकर कहा है बृहस्पति। उनको ही गुरुवार भी कहा जाता है। न सिर्फ गुरुवार पर्यन्त सतगुरुवार। बाप मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है इसलिए उनको वृक्षपति कहते हैं। वृक्ष के बीज को बाप भी कहेंगे उनसे वृक्ष उत्पन्न होता है। यह है मनुष्य सृष्टि रूपी झाड। इनका बीज ऊपर में है। तुम जानते हो हम बच्चों पर अब अविनाशी वृहस्पति की दशा है क्योंकि अविनाशी स्वराज्य मिल रहा है। सतयुग को कहा ही जाता है अविनाशी सुखधाम। कलियुग को कहा जाता है विनाशी दुखधाम। अभी दुखधाम का विनाश होना है। सुखधाम अविनाशी है। आधाकल्प चलता है। अविनाशी वृक्षपति स्थापन कर रहे हैं। बच्चों को इस सीक्रेट के लिए प्वाइंट्स नोट करनी है। प्रदर्शनी में यह 2 प्वाइंट्स मुख्य समझाने की है। क्योंकि मनुष्य तो कुछ भी जानते ही नहीं। बरोबर यह है ज्ञान। अब बाप यह ज्ञान देते हैं फिर प्राय: लोप हो जाता है। जैसे पुरानी दुनिया भी लोप हो जायेगी। बाप कहते हैं हम यह ज्ञान देते ही हैं नई दुनिया के ब्रेक में। फिर यह प्राय: लोप हो जाता है। देवताओं को यह ज्ञान नहीं होता है। अगर यह चक्र का ज्ञान हो तो फिर राजाई में मजा ही न आवे। अभी भी तुमको ख्याल होता है ना। क्या राज्य लेकर फिर भी हमारी यह हालत होगी। परन्तु यह तो ड्रामा बना हुआ है। चक्र फिरना ही है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जोग्राफी रिपीट हो रही है। ऐसे रिपीट हो रही है। यह तुम बच्चे ही जानते हो। यह है मनुष्य सृष्टि। मूलवतन की दुनिया को भी कोई नहीं जानते हैं। तुम्हारी बुद्धि में मूलवतन का भी झाड है। सेक्शन सबका अलग2 है। यह आते कोई की भी बुद्धि में कब न होगी। कोई शास्त्रों में तो यह लिखी हुई नहीं है। हम आत्मा अजर शान्तिधाम के रहवासी हैं। आत्मा अविनाशी है। कब विनाश को नहीं पाते। वो समझते हैं बुलबुला पानी से निकल फिर उसमें मिल जाता है। तुम्हारी बुद्धि में सारा राज है। आत्मा अविनाशी है जिसमें सारा पार्ट नूंधा हुआ है। यह चक्र का नालेज कोई शास्त्र में नहीं है। भल कहते स्वास्तिका भी दिखाते हैं। चक्र की सिर्फ ऐसी2 लकीर लगा देते हैं। जिससे कुछ होता है अनेक धर्म थे। बाप ने समझाया है मुख्य धर्म और शास्त्र हैं 4। सतयुग त्रेता में तो कोई धर्म स्थापन नहीं होता। न वहां कोई धर्म शास्त्र होता है। यह सब द्वापर से शुरु होते हैं। फिर देखो कितनी वृद्धि होती है। अच्छा गीता कब सुनाई गई? कल्प2 कल्प कहते हैं कल्प के संगमयुग पर आता है। उन्होंने फिर कल्प अंदर निकाल दिया संगमयुग 2 लाख दिया है। वास्तव में संगमयुग और कोई धर्म स्थापन नहीं करते हैं। ऐसे नहीं कि त्रेता के अन्त द्वापर के आदि के संगम पर इस्लामी धर्म स्थापन हुआ। नहीं। कलियुग द्वापर में स्थापन हुआ। यह संगम का सुहावना समय है जिसको कुम्भ कहते हैं। कुम्भ संगम को कहा जाता है। यह है आत्मा और परमात्मा के मिलन का संगम। यह कहानी त्रेता संगम पर ही होता है। यह पानी के सागर से निकली हुई गोपियों ज्ञान सागर से निकली हुई ज्ञान गोपियां। उन्हों ने ज्ञान सागर से निकली हुई का नाम गुप्त कर दिया है। उनके को गंगा का नाम वाला कर दिया है। ज्ञान सागर पतित पावन को जानते ही नहीं। उसने कैसे पतित दुनिया को पावन बनाया कोई शास्त्रों में है नहीं। भल गीता है परन्तु अर्थ बदल दिया है। कृष्ण को द्वापर में ठोक दिया है। यह भी अभी तुम समझते हो। मनमनाभव अक्षर तो बड़ा क्लीयर है। परन्तु अर्थ कौन समझाये। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। देह के सब धर्म त्यागो। किसको कहते हैं? आत्माओं को। इसको कहा जाता है जीते जी मरना। मनुष्य शरीर छोड़ते हैं तो देह के सब सम्बंध टूट जाते हैं। बाप कहते हैं जो

भी देह के सम्बध है वो सब छोड़ = अपनेको आत्मा निश्चय करो। निश्चय आत्मिक बुद्धि बनो। जितना जास्ती याद करेंगे तो बृहस्पति की दशा होगी। जांच करो हम शिवबाबा को कितना याद करते है। याद से ही कट निकलती जायेगी और तुमको खुशी होगी। तुम महसूस कर सकते हो। हम आत्मा कितना बाप को याद करती है। अगर कम याद करेंगे तो कट भी कम निकलेगी। खुशी भी कम रहेगी। पद भी कम पायेंगे। आत्मा ही सतो, रजो तमो बनती है।
c इस समय का ही गायन है गोप गोपियों के अतिइन्द्रिय सुख का। और कुछ भी याद नहीं पड़ता है सिवाए बाप के। तब ही खुशी का पारा चढ़ेगा। हमारे ऊपर बृहस्पति की अथवा सतयुग की दशा है फिर जब खुशी गुम हो जाती है तो कहते हैं बृहस्पति की दशा बदल राहु की बैठी है। कोई बहुत साक्षात्कार होते है। कोई सट्टा लगाया यह देवाला निकला। भारत को ही जब ग्रहण लगता है तो कहते हैं दे दान तो छूटे ग्रहण। तुम्हारा देवी देवता धर्म भी। कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी था। उनको ग्रहण लगा है। राहु की दशा बैठी है। इसलिए पूज्य देवी देवताओं के आगे जाकर गाते है आप सर्वगुण सम्पन्न हम पापी कपटी है। अभी तुम समझते हो राहु का ग्रहण लगने से तुम काले बन गये हो। चन्द्रमा के पिछाड़ी में लकीर जाकर रही है।

बाप भी समझाते हैं तुम देवी देवताओं के भी चित्र है। गीता ही आदि सनातन देवी देवता धर्म का शास्त्र है। परन्तु यह अपने धर्म को ही नहीं जानते हैं। रिलीजस हेडस की कान्फ्रेंस करते है। तुम वहां भी समझा सकती हो। ईश्वर सर्वव्यापी तो है नहीं। वह तो बेहद का बाप है। बच्चों को आकर वर्सा देते है। साधु सन्त आदि को तो वर्सा मिलता ही नहीं। तो मानेंगे कैसे। वो तो वहां आते ही नहीं। तुम बच्चों को ही वर्सा मिलता है। मुख्य बात है ही यह सिद
d करने की कि ईश्वर सर्वव्यापी नहीं है। शिव जयन्ती होती है शिवजयन्ती कहो अथवा रुद्र जयन्ती कहो। रुद्र यह ज्ञान यज्ञ रचते हैं। है तो शिव ना। यह वही गीता ज्ञान यज्ञ है जिससे विनाश ज्वाला प्रज्वलित हुई है। प्रैक्टिकल में तुम देखते हो कैसे निराकार बाबा ने रुद्र ज्ञान यज्ञ रचा है। साकार तो कुछ कर न सके। यह बेहद का यज्ञ है। इनमें सारी पुरानी दुनिया स्वाहा होनी है। बाकी तो वह सब है जिस्मानी यज्ञ। कितना रात दिन का फर्क है। बाप कहते हैं यह है रुद्र ज्ञान यज्ञ। विनाश भी होना है। तुम जब पास हो जायेंगे पूरा योगी और ज्ञानी बन जायेंगे तो फिर तुम्हारे लिए नई दुनिया स्वर्ग चाहिए। नर्क का जरूर विनाश चाहिए। राजस्व अश्वमेध अश्व भी ठीक है। घोड़े को स्वाहा करते है। वास्तव में है तुम्हारा यह रथ
e एक दक्ष प्रजापति का भी यज्ञ रचते हैं। उनकी भी बड़ी कहानी है। बड़ी गन्दी बातें है। अब दक्ष प्रजापति तो है नहीं। यह नाम कहां से आया। शायद लक्ष्मी राज के बदले दक्ष लिख दिया है। है। तो तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। हमको दक्षपति बाप पढ़ा रहे है। हमारे ऊपर अब वृहस्पति की दशा है। अवस्था बहुत अच्छी चलती है फिर चलते2 लिख देते बाबा हमतो मुझ में पड़ गये है। पहले हम बहुत खुशी में थे। अब पता नहीं क्या हुआ है। यहां आकर बाप का
f बनना यह तो बहुत बड़ी यात्रा है। वहां तीर्थ यात्राओं पर जाते है तो कितने पैसे खर्च करते है। सब तीर्थों पर बहुत खर्चा होता है। बड़े2 आदमी राजायें जाकर दान पुण्य करते है। अब यहां तो दान करने की बात नहीं। इनमें कुछ भी पैसा खर्च नहीं करना है। वह है जिस्मानी यात्रायें तुम्हारी है रूहानी यात्रा। जिस्मानी यात्रा से फायदा कुछ भी नहीं। गीत भी है ना चारों ओर लगाये फेरे फिर भी जन्म जन्मान्तर दूर रहे। किससे दूर रहे? भगवान बाप से। अभी तुम समझते हो कितने ढेर तीर्थ यात्रायें की होंगी। कहां न कहां मनुष्य जाते जरूर है। हरिद्वार गंगाजी पर जरूर जाते है। पतित पावनी गंगा समझते है ना। अब वास्तव में तुम हो सच्ची2 ज्ञान गंगायें। तुम्हारे पास भी बहुत आकर ज्ञान स्नान करेंगे।

g तुम बच्चे अभी समझ रहे हो कि आत्मायें और परमात्मा अलग रहे बहुकाल। तुम्हीं
hr जो पहले अलग हुए हो फिर तुम ही आकर पहले मिलते हो। फर्स्ट प्रिन्स है श्रीकृष्ण। कृष्ण का बाप भी तो होगा ना। कृष्ण के मां बाप का इतना कुछ दिखाते नहीं है। सिर्फ दिखाते है माथे पर रखकर नदी से उस पार ले गया। राजाई आदि कुछ नहीं दिखाते है। उनके बाप की महिमा क्यों नहीं है। अभी तुम जानते हो इस समय कृष्ण की आत्मा ने अच्छी रीति पढ़ाई पढ़ी है। जिस कारण मां बाप से भी उँच पद पाया है। यह अभी तुम्हारी समझ में

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

आता है। मनुष्य तो कुछ नहीं जानते। तुम समझते हो हम तो श्रीकृष्ण की राजधानी में थे। स्वर्ग में तो थे ना। फिर हम चन्द्रवंशी, वैश्य वंशी, शूद्र वंशी बने। फिर अब सूर्यवंशी बनने लिए बाप की श्रीमत पर चल, पावन बन पावन दुनिया का मालिक बनेंगे। हरेक अपनी अवस्था को देख सकते हैं। अगर हम इस समय शरीर छोड़ दें तो किस गति को पायेंगे। हरेक समझ सकते है जितना बाप को याद करेंगे उतने विकर्म विनाश होंगे। मनुष्य के ऊपर कोई आफते वा दुख आदि आता है वा देवाला निकालते हैं तो साधुओं का जाकर सत्संग करते हैं। फिर मनुष्य समझते है यह तो भक्त आदमी है। ठगी थोड़ेही करेंगे। ऐसे2 भी दो चार वर्ष में बहुत धनवान हो जाते हैं। उन्हों के बहुत छिपे हुए पैसे होते है। ठगी ही ठगी है। हरेक अपनी बुद्धि से समझ सकते हैं। तुम्हारे में भी बहुत है जो बहुत कम याद करते हैं। इसलिए बाप कहते है अपना कल्याण चाहते हो तो अपने पास नोट-बुक रखो। चार्ट नोट करो हम सारे दिन में कितना समय याद में रहे। मनुष्य तो सारी जीवन की भी हिस्ट्री बैठ लिखते हैं। तुमको तो सिर्फ याद का चार्ट लिखना है। अपनी ही उन्नति है। बाबा को याद न करेंगे तो उच्च पद पा न सकेंगे। विकर्म विनाश हो नहीं होंगे तो उच्च पद कैसे पायेंगे। फिर सजायें खानी पड़ेंगी। मोचरा जो न खायेंगे तो पद अच्छा मिलेगा। मोचरा खाकर फिर कुछ थोड़ा बहुत पद पाना वह क्या काम का। धर्मराज भी है। तुमको ला0कराते हैं तुमने यह2 किया था- याद है? अब खाओ सजा फिर उसी समय सजायें उतनी ही खाते है जितनी जन्म-जन्मान्तर खाते है। पिछाड़ी में थोड़ा रोटी टुकड़ मिले उससे क्या फायदा। मोचरा तो न खाना चाहिए। अपनी अवस्था की जांच करनी है। जैसे पोतामेल निकालते है ना कोई 6 मास का निकालते हैं कोई 12मास का निकालते है। कोई तो रोज़ का भी निकालते हैं। आज इतना माला बेचा इतना फायदा हुआ। रोज का हिसाब निकालते हैं। बाप कहते है तुम भी व्यापारी तो हो ही। कोई विरला व्यापारी वेहद के बाप से व्यापार करे। धन नहीं तो तन-मन तो है ना। उनको शरीफ भी कहते है, मदद सदद करते है ना। तुम तन-मन-धन देते हो ना। रिटर्न में 21 जन्म लिए कितना बड़ा मोती को दे बाबा हम आपका दो। ऐसी युक्ति बताओ जो हमारी आत्मा और शरीर इन (ला0ना0) जैसा बन जाए। बाप कहते हैं मैं तुमको कितना गोरा बनाता हूं। एकदम रूप ही बदल देता हूं। दूसरे जन्म में तुमको कितना फर्स्टक्लास शरीर मिलेगा। यहभी समझते हो हमारी आत्मा प्योर होगी तो शरीर भी प्योर फर्स्टक्लास मिलेगा। तुम देखते भी हो मम्मा बाबा सूक्ष्मवतन में भी देखते हो, वैकुण्ठ में भी देखते हो। तुम जानते हो यह मम्मा बाबा फिर ला0ना0 बनेंगे। एमआबजेक्ट भी दिखाते है। हम तुमको ऐसा बनाते है। अब जो जितना पुरुषार्थ करे। अगर पुरुषार्थ पूरा न करेंगे धमकें मवायेंगे तो अपना ही पद भ्रष्ट करेंगे। अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग।

रूहानी बाप का रूहानी बच्चों को नमस्ते।

विशेष सूचना :- सर्व सेवाकेन्द्रों पर निमित्त इन्चार्ज बहनों व भाईयों को ईश्वरीय मधुर याद के साथ सूचित किया जाता है कि रक्षाबन्धन तथा पहली सितम्बर 1981 की [illegible] प्रैस कान्फ्रेंस के लिए दिल्ली कृष्णानगर स्थित भ्राता आत्म प्रकाश जी हिन्दी तथा अंग्रेजी फोल्डर (आबू महायज्ञ-1983 से सम्बन्धित) छपवा रहे है, वह छपवाकर हर जोन को 100, [illegible] केन्द्रों को 25 तथा छोटे सेवाकेन्द्रों को 10 फोल्डर भेजेंगे। इसके अतिरिक्त जिनको [illegible] आपको आवश्यकता हो आप तुरन्त भ्राता आत्मप्रकाश जी को सूचित करें ता [illegible] फोल्डर भेज दें।

2-बरसात की मौसम के कारण फोल्ड पार्सल अगर समय पर न पहुंच सके तो आप रक्षाबंधन पर फोल्डर मेटर आवश्यकता अनुसार साइक्लोस्टाइल करवा सकते हैं, इसलिए फोल्डर मेटर अलग पोस्ट द्वारा आपको भेजा गया है। 3-रक्षाबंधन तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्वों की सर्व को बहुत2 बधाई। ओमशान्ति।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

4-9-99 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – यह वन्डरफुल सतसंग है जहाँ तुम्हें जीते जी मरना सिखलाया जाता है, जीते जी मरने वाले ही हंस बनते हैं"

प्रश्नः- तुम बच्चों को अभी कौन-सी एक फिकरात है?

उत्तरः- हमें विनाश के पहले सम्पन्न बनना है। जो बच्चे ज्ञान और योग में मजबूत होते जाते हैं, उन्हें मनुष्य को देवता बनाने की हॉबी (आदत) होती जाती है। वह सर्विस के बिना रह नहीं सकते हैं। जिन की तरह भागते रहेंगे। सर्विस के साथ-साथ स्वयं को भी सम्पन्न बनाने की चिंता होगी।

ओम् शान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं – रूह अब साकार में है और फिर प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान है क्योंकि एडाप्ट किये हुए हैं। तुम्हारे लिए सब कहते हैं यह भाई-बहन बनाती हैं। बच्चों को बाप ने समझाया है असुल में तुम आत्मायें भाई-भाई हो। अब नई सृष्टि होती है तो पहले-पहले ब्राह्मण चोटी चाहिए। तुम शूद्र थे, अभी ट्रांसफर हुए हो। ब्राह्मण भी तो चाहिए जरूर। प्रजापिता ब्रह्मा का नाम तो बाला है। इस हिसाब से तुम समझते हो हम सब बच्चे - भाई बहिन ठहरे। जो भी अपने को ब्रह्माकुमार-कुमारी कहलाते हैं वह जरूर भाई-बहन ठहरे। सभी प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान हैं तो भाई-बहिन जरूर होना चाहिए। यह समझाना है बेसमझों को। बेसमझ भी हैं और फिर ब्लाइन्ड फेथ भी है। जिनकी
a पूजा करते हैं, फेथ रखते हैं यह फलाना है, परन्तु उसे जानते कुछ भी नहीं। लक्ष्मी-नारायण की पूजा करते हैं परन्तु वह कब आये, कैसे बनें, फिर कहाँ गये? कोई भी नहीं जानते। कोई भी मनुष्य नेहरू आदि को जानते हैं, तो उन्हों की हिस्ट्री-जॉग्राफी का भी सब पता है। अगर बायोग्राफी को नहीं जानते तो वह क्या काम का। पूजा करते हैं, परन्तु उनकी जीवन कहानी को नहीं जानते। मनुष्यों की जीवन कहानी को तो जानते हैं परन्तु जो बड़े पास्ट हो गये हैं, उनकी एक की भी जीवन कहानी को नहीं जानते। शिव के कितने ढेर पुजारी हैं। पूजा करते हैं, फिर मुख से कह देते वह तो पत्थर-भित्तर में है, कण-कण में है। क्या यह जीवन कहानी ठहरी? कच्छ-मच्छ अवतार लेते हैं, 84 लाख योनियों में ले जाते हैं। यह तो अक्ल की बात नहीं हुई। अपने को भी पतित कहते हैं। पतित अक्षर कितना फिट है। पतित माना विकारी। तुम समझा सकते हो कि हम ब्रह्माकुमार-कुमारी क्यों कहलाते हैं? क्योंकि ब्रह्मा की औलाद हैं और एडाप्टेड हैं। हम कुख वंशावली नहीं, मुख वंशावली हैं। ब्राह्मण-ब्राह्मणियां तो भाई-बहिन ठहरे ना। तो उनकी आपस में क्रिमिनल आई हो न सके। खराब ख्यालात मुख्य है ही काम के। तुम कहते हो हम प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान भाई-बहिन बनते हैं। तुम समझते हो हम सब हैं शिवबाबा की सन्तान भाई-भाई। यह भी पक्का है। दुनिया को कुछ भी पता नहीं है। ऐसे ही सिर्फ कह देते हैं। तुम समझा सकते हो सभी आत्माओं का बाप वह एक है। उनको सब पुकारते हैं। तुमने चित्र भी दिखाया है। बड़े-बड़े धर्म वाले भी इस निराकार बाप को मानते हैं।
b वह है निराकार आत्माओं का बाप और फिर साकार में सभी का बाप प्रजापिता ब्रह्मा है जो फिर वृद्धि को पाते रहते हैं। भिन्न-भिन्न धर्मों में आते जाते हैं। आत्मा तो इस शरीर से न्यारी है। शरीर को देखकर कहते हैं—यह अमेरिकन है, यह फलाना है। आत्मा को तो नहीं कहते।

PDF conversion, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

आत्मायें सब शान्तिधाम में रहती हैं। वहाँ से आती हैं पार्ट बजाने। तुम कोई भी धर्म वाले को सुनाओ, पुनर्जन्म तो सब लेते हैं और ऊपर से भी नई आत्मायें आती रहती हैं। तो बाप समझाते हैं—तुम भी मनुष्य हो, मनुष्य को ही तो सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का मालूम होना चाहिए कि यह सृष्टि चक्र कैसे घूमता है, इनका रचयिता कौन है, कितना समय इनके फिरने में लगता है? यह तुम ही जानते हो, देवतायें तो नहीं जानते हैं। मनुष्य ही जानकर फिर देवता बनते हैं। मनुष्य को देवता बनाने वाला है बाप। बाप अपना और रचना का भी परिचय देते हैं। तुम जानते हो हम बीजरूप बाप के बीजरूप बच्चे हैं। जैसे बाप इस उल्टे वृक्ष को जानते हैं, वैसे हम भी जान गये हैं। मनुष्य, मनुष्य को कभी यह समझा न सके। परन्तु तुमको बाप ने समझाया है।

c जब तक तुम ब्रह्मा के बच्चे नहीं बने हो तब तक यहाँ आ नहीं सकते। जब तक पूरा कोर्स लेकर समझते नहीं हो तब तक तुम ब्राह्मणों की सभा में बैठ कैसे सकते। इसको इन्द्र सभा भी कहते हैं। इन्द्र कोई वह पानी की बरसात नहीं बरसाते हैं। 'इन्द्र सभा' कहा जाता है। परियां भी तुमको बनना है। अनेक प्रकार की परियां गाई हुई हैं। कोई बच्चे अच्छे शोभावान होते हैं तो कहते हैं ना यह तो जैसे परी है। पाउडर आदि लगाकर सुन्दर बन जाते हैं। सतयुग में तुम बनते हो परियां, परीजादे। अभी तुम ज्ञान सागर में ज्ञान स्नान करने से परियां (देवी-देवता) बन जाते हो। तुम जानते हो हम क्या से क्या बन रहे हैं। जो सदा प्योर बाप है, सदा खूबसूरत है, वह मुसाफ़िर तुमको ऐसा बनाते हैं तो सांवरे तन में प्रवेश करते हैं। अब गोरा कौन बनावे? बाबा को बनाना पड़े ना। सृष्टि का चक्र तो फिरना है। अब तुमको गोरा बनना है। पढ़ाने वाला ज्ञान सागर एक ही बाप है। ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर है। उस बाप की जो महिमा गाई जाती है, वह लौकिक बाप की थोड़ेही हो सकती है। बेहद के बाप की ही महिमा है। उनको ही सब पुकारते हैं कि हमको ऐसी महिमा वाला आकर बनाओ। अभी तुम बन रहे हो ना, नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। पढ़ाई में सब एकरस नहीं होते हैं। रात-दिन का फर्क रहता है ना। तुम्हारे पास भी बहुत आयेंगे। ब्राह्मण जरूर बनना है। फिर कोई अच्छी रीति पढ़ते हैं, कोई कम। जो पढ़ाई में सबसे अच्छा होगा तो दूसरों को भी पढ़ा सकेंगे। तुम समझ

d सकते हो, इतने कॉलेज निकलते रहते हैं। बाबा भी कहते हैं कॉलेज ऐसा बनाओ जो कोई भी समझ सके कि इस कॉलेज में रचता और रचना के आदि, मध्य, अन्त का नॉलेज मिलता है। बाप भारत में ही आते हैं तो भारत में ही कॉलेज खुलते रहते हैं। आगे चल विदेश में भी खुलते जायेंगे। बहुत कॉलेज, युनिवर्सिटीज़ चाहिए ना। जहाँ बहुत आकर पढ़ेंगे फिर जब पढ़ाई पूरी होगी तो देवी-देवता धर्म में सब ट्रांसफर हो जायेंगे अर्थात मनुष्य से देवता बन जायेंगे। तुम मनुष्य से देवता बनते हो ना। गायन भी है—मनुष्य से देवता किये.....। यहाँ यह है मनुष्यों की दुनिया, वह है देवताओं की दुनिया। देवताओं और मनुष्यों में रात-दिन का फर्क है! दिन में हैं देवतायें, रात में हैं मनुष्य। सब भक्त ही भक्त हैं, पुजारी हैं। अभी तुम पुजारी से पूज्य बनते हो। सतयुग में शास्त्र, भक्ति आदि का नाम नहीं होता है। वहाँ हैं सब देवता। मनुष्य होते हैं भक्त। मनुष्य ही फिर देवता बनते हैं। वह है दैवी दुनिया। इसको कहा जाता है आसुरी दुनिया। राम राज्य और रावण राज्य। आगे तुम्हारी बुद्धि में यह थोड़ेही था कि रावण

PDF compression, OCR, web optimization using a trial version of DVISION PDF Compressor

राज्य किसको कहा जाता है? रावण कब आया? कुछ भी पता नहीं था। कहते हैं लंका समुद्र में डूब गई। ऐसे ही फिर द्वारिका के लिए भी कहते हैं। अभी तुम जानते हो यह सारी लंका डूबने की है, सारी दुनिया भी बेहद की लंका है। यह सब डूब जायेगी, पानी आ जायेगा। e बाकी स्वर्ग कोई डूबता थोड़ेही है। कितना अथाह धन था। बाप ने समझाया है एक ही सोमनाथ मन्दिर को मुसलमानों ने कितना लूटा। अभी देखो कुछ नहीं रहा है। भारत में कितना अथाह धन था। भारत को ही स्वर्ग कहा जाता है। अभी स्वर्ग कहेंगे? अभी तो नर्क है, फिर स्वर्ग बनेगा। स्वर्ग कौन, नर्क कौन बनाते हैं? यह अभी तुम जान गये हो। रावण राज्य कितना समय चलता है, वह भी बताया है। रावण राज्य में कितने अथाह धर्म हो जाते हैं। रामराज्य में तो सिर्फ सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी रहते हैं। अभी तुम पढ़ रहे हो। यह पढ़ाई और कोई की बुद्धि में नहीं है। वह तो है ही रावण राज्य में। रामराज्य होता है सतयुग में। बाप कहते हैं हम तुमको लायक बनाते हैं। फिर तुम न लायक बन जाते हो। न लायक क्यों कहते हैं? क्योंकि पतित बन जाते हो। देवताओं के लायकी की महिमा और अपनी न लायकी की महिमा गाते हैं।

बाप समझाते हैं – तुम जब पूज्य थे तो नई दुनिया थी। बहुत थोड़े मनुष्य थे। सारे विश्व के तुम ही मालिक थे। अभी तुमको खुशी बहुत होनी चाहिए। भाई-बहिन तो बनते हो ना। वह कहते यह घर फिटाते हैं। वही फिर आकर शिक्षा लेते हैं। यहाँ आने से समझते हैं कि नालेज तो बहुत अच्छी है। अर्थ समझते हैं ना। भाई-बहिन बिगर पवित्रता कहाँ से आये। सारा मदार f पवित्रता पर ही है। बाप आते भी हैं मगध-देश में, जो कि बहुत गिरा हुआ देश है, बहुत पतित है, खान-पान भी गन्दा है। बाप कहते हैं मैं बहुत जन्मों के अन्त वाले शरीर में ही g प्रवेश करता हूँ। यही 84 जन्म लेते हैं। लास्ट सो फिर फर्स्ट, फर्स्ट सो लास्ट। मिसाल तो एक का बतायेंगे ना। तुम्हारी डिनायस्टी बनने वाली है। जितना अच्छी रीति समझते जायेंगे, फिर तो तुम्हारे पास बहुत आयेंगे। अभी यह बहुत छोटा झाड़ है। तूफान भी बहुत लगते हैं। सतयुग में तूफानों की बात ही नहीं। ऊपर से नई-नई आत्मायें आती रहती हैं। यहाँ तूफान लगते ही गिर पड़ते हैं। वहाँ तो माया का तूफान होता ही नहीं। यहाँ तूफान में छन जाते हैं। वहाँ ऐसी कोई बात नहीं। यहाँ तो बैठे-बैठे मर जाते हैं और फिर तुम्हारी माया के साथ भी युद्ध है, तो वह भी हैरान करती है। सतयुग में यह नहीं होगा। दूसरे कोई धर्म में ऐसी बात होती नहीं। रावण राज्य और राम राज्य को और कोई समझते ही नहीं हैं। भल सतसंग में जाते हैं, वहाँ मरने-जीने की बात नहीं होती। यहाँ तो बच्चे एडाप्ट होते हैं। कहते हैं हम शिवबाबा के बच्चे हैं, उनसे वर्सा लेते हैं। लेते-लेते फिर गिर पड़ते हैं तो वर्सा भी खलास। हंस से बदलकर बगुला बन जाते हैं। फिर भी बाप रहमदिल है तो समझाते रहते हैं। कोई फिर h से चढ़ जाते हैं। जो थमे (स्थिर) रहते हैं, उनको कहेंगे महावीर, हनुमान। तुम हो महावीर-महावीरनी। नम्बरवार तो हैं ही। सबसे पहलवान को महावीर कहा जाता है। आदि देव को भी महावीर कहते हैं, जिससे ही यह महावीर पैदा होते हैं जो विश्व पर राज्य करते हैं। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार रावण पर विजय पाने के लिए पुरूषार्थ करते रहते हैं। रावण है 5 विकार। यह तो समझ की बात है। अभी तुम्हारी बुद्धि का ताला बाप खोलते हैं। फिर ताला एकदम

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बन्द हो जाता है। यहाँ भी ऐसे हैं जिनका ताला खुलता है तो वह जाकर सर्विस करते हैं। बाप कहते हैं जाकर सर्विस करो, गटर में जो पड़े हैं उनको निकालो। ऐसे नहीं कि तुम भी गटर में गिरो। तुम बाहर निकल औरों को भी निकालो। विषय वैतरणी नदी में अपरम्पार दु:ख हैं। अभी अपरम्पार सुखों में चलना है। जो अपरम्पार सुख देते हैं, उनकी महिमा गाई जाती है। रावण जो दु:ख देते हैं, उनकी महिमा होगी क्या? रावण को कहा जाता है असुर। बाप कहते हैं तुम रावण राज्य में थे, अभी अपार सुख पाने के लिए तुम यहाँ आये हो। तुमको कितने अपार सुख मिलते हैं। खुशी कितनी रहनी चाहिए और खबरदार भी रहना चाहिए। पोजीशन तो नम्बरवार होती है। हर एक एक्टर का पोजीशन अलग है। सबमें तो ईश्वर हो न सके। बाप हर बात बैठ समझाते हैं। तुम बाप को और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जान जाते हो नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। नम्बरवार पढ़ाई पर ही मार्क्स होती हैं। यह है बेहद की पढ़ाई, इसमें बच्चों का बहुत अटेन्शन होना चाहिए। पढ़ाई एक रोज़ भी मिस न हो। हम हैं स्टूडेन्ट, गॉड फादर पढ़ाते हैं--वह नशा बच्चों को चढ़ा रहना चाहिए। भगवानुवाच, सिर्फ उन्हों ने नाम बदलकर कृष्ण का नाम डाल दिया है। भूल से कृष्ण भगवानुवाच समझ लिया है क्योंकि कृष्ण हुआ नेक्स्ट टू गॉड। स्वर्ग जो बाप स्थापन करते हैं उनमें नम्बरवन यह है ना। यह ज्ञान अभी तुमको मिला है। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार अपना भी कल्याण करते हैं और दूसरों का भी कल्याण करते रहते हैं, उनको सर्विस बिगर कभी सुख नहीं आयेगा।

तुम बच्चे योग और ज्ञान में मजबूत हो जायेंगे तो काम ऐसे करेंगे जैसे जिन्न। मनुष्य को देवता बनाने की हॉबी (आदत) लग जायेगी। मौत के पहले ही पास होना है। सर्विस बहुत करनी है। पीछे तो लड़ाई लगेगी। नेचुरल कैलेमिटीज भी आयेंगी। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुड़मॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. लास्ट सो फर्स्ट जाने के लिए महावीर बन पुरूषार्थ करना है। माया के तूफानों में हिलना नहीं है। बाप समान रहमदिल बन मनुष्यों के बुद्धि का ताला खोलने की सेवा करनी है।

२. ज्ञान सागर में रोज ज्ञान स्नान कर परीज़ादा बनना है। एक दिन भी पढ़ाई मिस नहीं करनी है। भगवान के हम स्टूडेन्ट हैं--इस नशे में रहना है।

वरदान:- सेवा में विघ्नों को उन्नति की सीढ़ी समझ आगे बढ़ने वाले निर्विघ्न, सच्चे सेवाधारी भव

सेवा ब्राह्मण जीवन को सदा निर्विघ्न बनाने का साधन भी है और फिर सेवा में ही विघ्नों का पेपर भी ज्यादा आता है। निर्विघ्न सेवाधारी को सच्चा सेवाधारी कहा जाता है। विघ्न आना यह भी ड्रामा में नूंध है। आने ही हैं और आते ही रहेंगे क्योंकि यह विघ्न वा पेपर अनुभवी बनाते हैं। इसको विघ्न न समझ, अनुभव की उन्नति हो रही है - इस भाव से देखो तो उन्नति की सीढ़ी अनुभव होगी और आगे बढ़ते रहेंगे।

स्लोगन:-

विघ्न रूप नहीं, विघ्न-विनाशक बनो।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

9-4-01 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - योग से ही आत्मा की खाद निकलेगी, बाप से पूरा वर्सा मिलेगा, इसलिए जितना हो सके योगबल बढ़ाओ"

प्रश्नः- देवी देवताओं के कर्म श्रेष्ठ थे, अभी सबके कर्म भ्रष्ट क्यों बने हैं?
उत्तरः- क्योंकि अपने असली धर्म को भूल गये हैं। धर्म भूलने के कारण ही जो कर्म करते हैं वह भ्रष्ट होते हैं। बाप तुम्हें अपने सत धर्म की पहचान देते हैं, साथ-साथ सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनाते हैं, जो सबको सुनानी है, बाप का सत्य परिचय देना है।

गीतः- मुखड़ा देख ले प्राणी....

ओम् शान्ति। यह किसने कहा और किसको? बाप ने कहा बच्चों को। जिन बच्चों को पतित से पावन बना रहे हैं। बच्चे जान गये हैं हम भारतवासी जो देवी देवता थे, वह अब 84 जन्मों का चक्र लगाए सतोप्रधान से पास कर अब सतो, रजो, तमो और अब तमोप्रधान बन गये हैं। अब फिर पतितों को पावन बनाने वाला बाप कहते हैं, अपने दिल से पूछो कि कहाँ तक हम पुण्य आत्मा बने हैं? तुम सतोप्रधान पवित्र आत्मा थे, जब यहाँ पहले-पहले तुम देवी-देवता कहलाते थे, जिसको आदि सनातन देवी देवता धर्म कहा जाता था। अभी कोई भारतवासी अपने को देवी देवता धर्म के नहीं कहलाते। हिन्दू तो कोई धर्म है नहीं। परन्तु पतित होने के कारण अपने को देवता कहला नहीं सकते। सतयुग में देवतायें पवित्र थे। पवित्र प्रवृति मार्ग था, यथा राजा-रानी तथा प्रजा पवित्र थे। भारतवासियों को बाप याद दिलाते हैं कि तुम पवित्र प्रवृति मार्ग वाले आदि सनातन देवी देवता धर्म वाले थे, उसको स्वर्ग कहा जाता था। वहाँ एक ही धर्म था। पहला नम्बर महाराजा-महारानी, लक्ष्मी-नारायण थे। उनकी भी डिनायस्टी थी और भारत बहुत धनवान था, वह सतयुग था। फिर आये त्रेता में तब भी पूज्य देवी-देवता वा क्षत्रिय कहलाते थे। वह लक्ष्मी-नारायण का राज्य, वह सीता-राम का राज्य, वह भी डिनायस्टी चली। जैसे क्रिश्चियन में एडवर्ड दी फर्स्ट, सेकेण्ड..... ऐसे चलता है। वैसे भारत में भी ऐसे था। 5 हजार वर्ष की बात है अर्थात् 5 हजार वर्ष पहले भारत पर इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। परन्तु उन्होंने यह राज्य कब और कैसे पाया—यह कोई नहीं जानते। वही सूर्यवंशी राज्य फिर चन्द्रवंशी में आया क्योंकि पुनर्जन्म लेते-लेते सीढ़ी उतरनी है। यह भारत की हिस्ट्री-जॉग्राफी कोई नहीं जानते। रचता है बाप, तो जरूर सतयुगी नई दुनिया का रचता ठहरा। (बाप कहते हैं बच्चे, तुम आज से 5 हजार वर्ष पहले स्वर्ग में थे।) यह भारत स्वर्ग था फिर नर्क में आये हैं। दुनिया तो इस वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी को नहीं जानती। वह तो अधूरी सिर्फ पिछाड़ी की हिस्ट्री जानते हैं। सतयुग-त्रेता की हिस्ट्री-जॉग्राफी को कोई नहीं जानते। ऋषि-मुनि भी कहते गये हम रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को नहीं जानते हैं। जाने भी कोई कैसे, बाप तुमको ही बैठ समझाते हैं। (शिवबाबा भारत में ही दिव्य जन्म लेते हैं, जिसकी शिव जयन्ती भी होती है। शिवजयन्ती के बाद फिर चाहिए गीता जयन्ती। फिर साथ-साथ होनी चाहिए कृष्ण जयन्ती। परन्तु इस जयन्ती का राज़ भारतवासी जानते नहीं हैं कि शिव जयन्ती कब हुई!

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

और धर्म वाले तो झट बतायेंगे – बुद्ध जयन्ती, क्राइस्ट जयन्ती कब हुई। भारतवासियों से पूछो शिवजयन्ती कब हुई? कोई नहीं बतायेंगे। शिव भारत में आया, आकर क्या किया? कोई नहीं जानते। शिव ठहरा सब आत्माओं का बाप। आत्मा है अविनाशी। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। यह 84 का चक्र है। शास्त्रों में तो 84 लाख जन्म का गपोड़ा लगा दिया है। बाप आकर राइट बात बताते हैं। बाप के सिवाए बाकी सब रचता और रचना के लिए झूठ ही बोलते हैं क्योंकि यह है ही माया का राज्य। पहले तुम पारसबुद्धि थे, भारत पारसपुरी था। सोने, हीरे, जवाहरों के महल थे। बाप बैठ रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ अर्थात् दुनिया की हिस्ट्री-जॉग्राफी बताते हैं। भारतवासी यह नहीं जानते कि हम सो पहले-पहले देवी-देवता थे, अभी पतित, कंगाल, इरिलीजस बन गये हैं, अपने धर्म को भूल गये हैं। यह भी ड्रामा अनुसार होना है। तो यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी बुद्धि में आनी चाहिए ना। ऊंच ते ऊंच बाप है - सब आत्माओं का बाप। फिर है सूक्ष्मवतन। यह है स्थूलवतन। सूक्ष्मवतन में सिर्फ ब्रह्मा-विष्णु-शंकर रहते हैं। उनकी दूसरी कोई हिस्ट्री-जॉग्राफी नहीं है। यह तीन तबके हैं। गॉड इज वन। उनकी रचना भी एक है। जो चक्र फिरता रहता है। सतयुग से त्रेता फिर द्वापर, कलियुग में आना पड़े। 84 जन्मों का हिसाब चाहिए ना, जो कोई भी नहीं जानते हैं। न कोई शास्त्र में है। 84 जन्मों का पार्ट तुम बच्चे ही बजाते हो। बाप तो इस चक्र में नहीं आते हैं। बच्चे ही पावन से पतित बन जाते हैं इसलिए चिल्लाते हैं - बाबा आकर हमको फिर से पावन बनाओ। एक को ही सब पुकारते हैं। रावण राज्य में जो सब दुःखी हो पड़े हैं, उनको आकर लिबरेट करो फिर रामराज्य में ले जाओ। आधाकल्प है रामराज्य। आधाकल्प है रावण राज्य। भारतवासी जो पवित्र थे वही पतित बनते हैं। नाम मार्ग में जाने से पतित होना शुरू होते हैं। भक्ति मार्ग शुरू होता है। अभी तुम बच्चों को ज्ञान सुनाया जाता है, जिससे आधाकल्प, 21 जन्म के लिए तुम सुख का वर्सा पाते हो। आधाकल्प ज्ञान की प्रालब्ध चलती है, फिर रावण राज्य होता है। गिरने लग पड़ते हैं। तुम दैवी राज्य में थे फिर आसुरी राज्य में आ गये हो, इसको हेल भी कहते हैं। तुम हेविन में थे फिर 84 जन्म पास कर हेल में आकर पड़े हो। वह था सुखधाम। यह है दुःखधाम, 100 परसेन्ट इनसालवेन्ट। 84 जन्मों का चक्र लगाते, वही भारतवासी पूज्य से पुजारी बन गये हैं। इसको ही वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कहा जाता है। यह है सारा तुम भारतवासियों का चक्र, और धर्म वाले तो 84 जन्म नहीं लेते हैं। वह सतयुग में होते ही नहीं। सतयुग त्रेता में सिर्फ भारत ही था। सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी फिर वैश्य वंशी, शूद्रवंशी....अभी फिर तुम आकर ब्राह्मण वंशी बने हो, देवता वंशी बनने के लिए। यह है भारत के वर्ण। अभी तुम ब्राह्मण बनने से शिवबाबा से वर्सा ले रहे हो। बाप तुमको पढ़ा रहे हैं, 5 हजार वर्ष पहले मुआफ़िक। कल्प-कल्प तुम पावन बन फिर पतित बनते हो। सुखधाम में जाकर फिर दुःखधाम में आते हो। फिर शान्तिधाम में जाना है, जिसको निराकारी दुनिया कहा जाता है। आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है, यह कोई भी मनुष्य नहीं जानते हैं। आत्मा भी एक स्टार बिन्दी है। कहते हैं – भ्रकुटी के बीच में सितारा चमकता है, छोटी सी बिन्दी है, जिसको दिव्य दृष्टि से देखा जा सकता है। वास्तव में स्टार भी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

नहीं कहा जायेगा। स्टार तो बहुत बड़ा है - सिर्फ दूर होने के कारण छोटा दिखाई पड़ता है। यह सिर्फ एक मिसाल दिया जाता है। आत्मा इतनी छोटी है जैसे ऊपर में स्टार छोटा
d दिखाई पड़ता है। बाप की आत्मा भी एक बिन्दी मिसल है। उनको सुप्रीम आत्मा कहा जाता है। उनकी महिमा अलग है। मनुष्य सृष्टि का चैतन्य बीज रूप होने के कारण उनमें सारा ज्ञान है। तुम्हारी आत्मा को भी अभी नॉलेज मिल रही है। आत्मा ही नॉलेज ग्रहण कर रही है, इतनी छोटी बिन्दी में 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है। सो भी अविनाशी, 84 जन्मों का चक्र लगाते आये हो। इसकी इन्ड हो नहीं सकती। देवता थे, दैत्य बने फिर सो देवता बनना है। यह चक्र चलता आया है। बाकी तो सब हैं बाईप्लाटा इस्लामी, बौद्धी आदि कोई 84 जन्म नहीं लेते हैं। यही सतयुग भारत में राइटियस सालवेन्ट था फिर 84 जन्म ले विशश बने हैं। यह विशश वर्ल्ड है। 5 हजार वर्ष पहले प्योरिटी थी, पीस भी थी, प्रासपर्टी भी थी। बाप बच्चों को याद दिलाते हैं। मुख्य है - प्योरिटी। इसलिए कहते हैं विशश को वाइसलेस बनाने वाले आओ। वही सद्गति देने वाला है, इसलिए वही सतगुरू
e है। अभी तुम बाप द्वारा बेगर टू प्रिन्स बन रहे हो अथवा नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनते हो। तुम्हारा यह राजयोग है। भारत को ही अब बाप द्वारा राजाई मिलती है। आत्मा ही 84 जन्म लेती है। आत्मा ही पढ़ती है, शरीर द्वारा। शरीर नहीं पढ़ता। आत्मा संस्कार ले जाती है। मैं आत्मा इस शरीर द्वारा पढ़ती हूँ - इसको देही-अभिमानी कहा जाता है। आत्मा अलग हो जाती है तो शरीर कोई काम का नहीं रहता है। आत्मा कहती है, अब मैं पुण्य आत्मा बन रही हूँ। मनुष्य देह-अभिमान में आकर कह देते हैं यह करता हूँ....तुम अभी समझते हो हम आत्मा हैं, यह हमारा शरीर बड़ा है। परमात्मा बाप द्वारा मैं आत्मा पढ़ रही हूँ। बाप कहते हैं, मामेकम् याद करो। तुम गोल्डन एज में सतोप्रधान थे फिर तुम्हारे में अलाए पड़ी है। खाद पड़ते-पड़ते तुम पावन से पतित बन पड़े हो। अब फिर पावन बनना है। इसलिए कहते हैं – हे पतित-पावन आओ, आकर हमको पावन बनाओ, तो बाप राय देते हैं हे पतित आत्मा मुझ बाप को याद करो तो तुम्हारे से खाद निकलेगी और तुम पावन बन जायेंगे। उनको प्राचीन योग कहा जाता है। इस याद अर्थात् योग अग्नि से खाद भस्म होगी। मूल बात है - पतित से पावन बनना। साधू-सन्त आदि सब पतित हैं। पावन बनने का उपाय बाप ही बताते हैं – मामेकम् याद करो। यह अन्तिम जन्म पवित्र बनो। खाते-पीते, चलते-फिरते मामेकम् याद करो क्योंकि तुम सब आत्माओं का (आशिकों का) माशूक, मैं हूँ। तुमको हमने पावन बनाया था फिर पतित बने हो। सभी भक्तियां आशिक हैं। माशूक कहते हैं कर्म भी भल करो। बुद्धि से मुझे याद करते रहो तो विकर्म विनाश होंगे। यह मेहनत है। तो बाप को याद करना चाहिए ना, वर्सा पाने के लिए। जो जास्ती याद करेंगे उनको वर्सा भी जास्ती मिलेगा। यह है याद की यात्रा। जो जास्ती याद करेंगे वही पावन बन आकर मेरे गले का हार बनेंगे। सभी आत्माओं का निराकारी दुनिया में एक सिजरा बना हुआ है। उनको इनकारपोरियल ट्री कहा जाता है। यह है कारपोरियल ट्री, निराकारी दुनिया से सबको नम्बरवार आना है, आते ही रहना है। झाड़ कितना बड़ा है। आत्मा यहाँ आती है पार्ट बजाने। जो भी सब आत्मायें हैं, सभी इस ड्रामा के एक्टर्स हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

आत्मा अविनाशी है, उसमें पार्ट भी अविनाशी है। ड्रामा कब बना, यह कह नहीं सकते। यह चलता ही रहता है। भारतवासी पहले-पहले सुख में थे फिर दुःख में आये, फिर शान्तिधाम में जाना है। फिर बाप सुखधाम में भेज देंगे। उसमें जो जितना पुरूषार्थ कर ऊंच पद पाये, बाप किंगडम स्थापन करते हैं। उसमें पुरूषार्थ अनुसार राजाई में पद पायेंगे। सतयुग में तो जरूर थोड़े मनुष्य होंगे। आदि सनातन देवी देवता धर्म का झाड़ छोटा है, बाकी सब विनाश हो जायेंगे। यह आदि सनातन देवी देवता धर्म स्थापन हो रहा है अर्थात् स्वर्ग के गेट खुल रहे हैं। 5 हजार वर्ष पहले भी इस लड़ाई के बाद स्वर्ग की स्थापना हुई थी। अनेक धर्म विनाश हो गये थे। इस लड़ाई को कहा जाता है, कल्याणकारी लड़ाई। अब नर्क के गेट खुले हैं, फिर स्वर्ग के गेट खुलेंगे। (स्वर्ग के द्वार बाप खोलते हैं, नर्क के द्वार रावण खोलते हैं। बाप वर्सा देते हैं, रावण श्राप देते हैं। यह बातें दुनिया नहीं जानती, तुम बच्चों को समझाता हूँ।) एज्यूकेशन मिनिस्टर भी बेहद की नॉलेज चाहते हैं। सो तो तुम ही दे सकते हो। (परन्तु तुम हो गुप्त। तुमको पहचानते ही नहीं है। तुम योगबल से अपनी राजाई ले रहे हो। लक्ष्मी-नारायण ने यह राज्य कैसे पाया सो तुम जानते हो। इसको कहा जाता है आस्पीशियस कल्याणकारी युग। जबकि बाप आकर पावन बनाते हैं। कृष्ण को तो सभी बाप नहीं कहेंगे। बाप निराकार को कहा जाता है, उस बाप को याद करना है, पावन भी बनना है।) विकारों को जरूर छोड़ना पड़े। भारत वाइसलेस सुखधाम था अब विशश, दुःखधाम है। वर्थ नॉट ए पेनी है। यह ड्रामा का खेल है, जिसको बुद्धि में धारण करके औरों को भी कराना है। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- याद से पावन बन बाप के गले का हार बनना है। कर्म करते भी बाप की याद में रह विकर्माजीत बनना है।

२- पुण्य आत्मा बनने का पूरा-पूरा पुरूषार्थ करना है। देह-अभिमान छोड़ देही-अभिमानी बनना है।

वरदान:- सदा साथीपन की स्मृति और साक्षी स्टेज का अनुभव करने वाले शिवमई शक्ति स्वरूप कम्बाइन्ड भव

जैसे आत्मा और शरीर दोनों का साथ है, जब तक इस सृष्टि पर पार्ट है तब तक अलग नहीं हो सकते, ऐसे ही शिव और शक्ति दोनों का इतना ही गहरा सम्बन्ध है। जो सदा शिव मई शक्ति स्वरूप में स्थित होकर चलते हैं तो उनकी लगन में माया विघ्न डाल नहीं सकती। वे सदा साथीपन का और साक्षी स्टेज का अनुभव करते हैं। ऐसे अनुभव होता है जैसे कोई साकार में साथ हो।

स्लोगन:-

निर्विघ्न और एकरस स्थिति का अनुभव करने के लिए एकाग्रता का अभ्यास करो।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

4-5-2000 प्रात: मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – अभी ड्रामा का चक्र पूरा होता है, तुम्हें क्षीरखण्ड बनकर नई दुनिया में जाना है अब यह क्षीरखण्ड है, यहाँ लूनपानी है"

प्रश्नः- तुम त्रिनेत्री बच्चे किस नॉलेज को जान कर त्रिकालदर्शी बन गये हो?

उत्तरः- तुम्हें अभी सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी की नॉलेज मिली है, सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक की हिस्ट्री-जॉग्राफी तुम जानते हो। तुम्हें ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला कि आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। संस्कार आत्मा में हैं। अब बाप कहते हैं–बच्चे, नाम-रूप से न्यारा बनो। अपने को आत्मा अशरीरी समझो।

गीत:- धीरज धर मनुवा .....

ओम् शान्ति। कल्प-कल्प बच्चों को कहा जाता है और बच्चे जानते हैं, दिल होती है कि जल्दी सतयुग हो जाए तो इस दु:ख से छूट जायें। परन्तु ड्रामा बहुत धीरे-धीरे चलने वाला है। बाप धीरज देते हैं बाकी थोड़े रोज़ हैं। बड़ो-बड़ों द्वारा भी आवाज़ सुनते रहेंगे। दुनिया बदलनी है। जो भी बड़े-बड़े हैं पोप जैसे वह भी कहते हैं दुनिया बदलने वाली है। अच्छा फिर पास कैसे होगी? इस समय सब लूनपानी हैं। अभी हम क्षीरखण्ड हो रहे हैं। उस तरफ दिन-प्रतिदिन लूनपानी होते जाते हैं। आपस में लड़ झगड़ कर खत्म होने वाले हैं, तैयारियाँ हो रही हैं। यह ड्रामा का चक्र अब पूरा होना है। पुरानी दुनिया पूरी होती है। नई दुनिया की स्थापना हो रही है। नई दुनिया सो पुरानी, पुरानी सो नई दुनिया फिर बनेगी। इसको दुनिया का चक्र कहा जाता है जो फिरता रहता है। ऐसे नहीं, लाखों वर्ष बाद पुरानी दुनिया नई होगी। नहीं। a तुम बच्चे अच्छी रीति जान चुके हो, भक्ति बिल्कुल ही अलग है। भक्ति का कनेक्शन रावण के साथ है। ज्ञान का कनेक्शन राम के साथ है। यह तुम अभी समझ रहे हो। अभी बाप को बुलाते भी हैं–हे पातत-पावन आओ, आकर नई दुनियाँ स्थापन करो। नई दुनिया में जरूर सुख होता है। अब बच्चे छोटे अथवा बड़े सब जान गये हैं कि अभी घर चलना है। यह नाटक पूरा होता है। हम फिर से सतयुग में जायेंगे फिर 84 जन्मों का चक्र लगाना है। स्व आत्मा को दर्शन होता है–सृष्टि चक्र का अर्थात् आत्मा को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है, उसको कहा जाता है त्रिनेत्री। अभी तुम त्रिनेत्री हो और सभी मनुष्यों को वह स्थूल नेत्र हैं। ज्ञान का नेत्र कोई को नहीं है। त्रिनेत्री बनें तब त्रिकालदर्शी बनें क्योंकि आत्मा को ज्ञान मिलता है ना। आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। संस्कार आत्मा में रहते हैं। आत्मा अविनाशी है। अब बाप कहते हैं नाम-रूप से न्यारा बनो। अपने को अशरीरी समझो। देह नहीं समझो। यह भी जानते हो हम आधाकल्प से परमात्मा को याद करते आये हैं। इसमें जब जास्ती दु:ख होता है तब जास्ती याद करते हैं, अभी कितना दु:ख है। आगे इतना दु:ख नहीं था। जबसे बाहर वाले आये हैं तब से यह राजायें लोग भी आपस में लड़े हैं। जुदा-जुदा हुए हैं। सतयुग में तो एक ही राज्य था।

अभी हम सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक हिस्ट्री-जॉग्राफी समझ रहे हैं। सतयुग-त्रेता में एक ही राज्य था। ऐसे एक ही डिनायस्टी कोई की होती नहीं। क्रिश्चियन में भी देखो फूट

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

है, वहाँ तो सारा विश्व एक के हाथ में रहता है। वह सिर्फ सतयुग-त्रेता में ही होता है। यह बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी अभी तुम्हारी बुद्धि में है। और कोई सतसंग में हिस्ट्री-जॉग्राफी अक्षर नहीं सुनते ही सुनते हैं। यहाँ वह बातें है नहीं। यहाँ है तुम्हारे की हिस्ट्री-जॉग्राफी। तुम्हारी बुद्धि में है ऊंच ते ऊंच हमारा बाप है। बाप का शुक्रिया है सारा ज्ञान सुनाया है। एक आत्माओं का झाड़ है, दूसरा है मनुष्यों का झाड़। मनुष्यों के झाड़ में ऊपर में कौन है? ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर ब्रह्मा को ही कहेंगे। यह जानते हैं ब्रह्मा मुख्य है परन्तु ब्रह्मा के पीछे क्या हिस्ट्री-जॉग्राफी है, यह कोई नहीं जानते। अभी तुम्हारी बुद्धि में है – ऊंच ते ऊंच बाप रहते भी हैं परमधाम में। फिर सूक्ष्मवतन का भी तुमको मालूम है। मनुष्य ही फरिश्ता बनते हैं, इसलिए सूक्ष्मवतन दिखाया है। तुम आत्मायें जाती हो, शरीर तो सूक्ष्मवतन में नहीं जायेगा। जाते कैसे हैं, उनको कहा जाता है तीसरा नेत्र। दिव्य-दृष्टि अथवा ध्यान भी कहते हैं। तुम ध्यान में ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को देखते हो। लोग दिखलाते हैं – शंकर के आंख खोलने से विनाश हो जाता है। अब इनसे तो कोई समझ न सके। अभी तुम जानते हो विनाश तो ड्रामा अनुसार होना ही है। आपस में लड़कर विनाश हो जायेंगे। बाकी शंकर क्या करते हैं! यह ड्रामा अनुसार नाम रख दिया है। तो समझाना पड़ता है। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर तीन हैं। स्थापना के लिए ब्रह्मा को रखा है। पालना के लिए विष्णु को, विनाश के लिए शंकर को रख दिया है। वास्तव में यह बना बनाया ड्रामा है। शंकर का पार्ट कुछ भी है नहीं। ब्रह्मा और विष्णु का पार्ट तो सारे कल्प में है। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा। ब्रह्मा के भी 84 जन्म पूरे हुए तो विष्णु के भी पूरे हुए। शंकर तो जन्म-मरण से न्यारा है। इसलिए शिव और शंकर को फिर मिला दिया है। वास्तव में शिव का तो बहुत पार्ट है, पढ़ाते हैं।

b

c

भगवान को कहा जाता है नॉलेजफुल। अगर वह प्रेरणा से कार्य करता तो सृष्टि चक्र का ज्ञान कैसे देता! इसलिए बाप समझाते हैं—बच्चे, प्रेरणा की तो कोई बात ही नहीं। बाप को तो आना पड़ता है। बाप कहते—बच्चे, मेरे में सृष्टि चक्र का ज्ञान है। मेरे को यह सारा मिला हुआ है। इसलिए मुझे ही ज्ञान सागर नॉलेजफुल कहते हैं। नॉलेज किसको कहा जाता है, वह तो जब मिले तब पता पड़े। मिला ही नहीं है तो अर्थ का कैसे मालूम पड़े। आगे तुम भी कहते थे ईश्वर प्रेरणा करते हैं। वह सब कुछ जानते हैं। हम जो पाप करते हैं, ईश्वर देखते हैं। बाबा कहते हैं यह धन्धा मैं नहीं करता हूँ। यह तो जैसा कर्म करते हैं उसकी खुद ही सजा भोगते हैं, मैं किसको नहीं देता हूँ। न कोई प्रेरणा से सजा दूँगा। मैं प्रेरणा से करूँ तो जैसे मैंने सजा दी। कोई को कहना कि इनको मारो, यह भी दोष है। कहने वाला भी फँस पड़े। शंकर प्रेरणा दे तो वह भी फँस जाए। बाप कहते हैं मैं तो तुम बच्चों को सुख देने वाला हूँ। तुम मेरी महिमा करते हो - बाबा आकर दु:ख हरो। मैं थोड़ेही दु:ख देता हूँ।

d

अब तुम बच्चे बाप के सम्मुख बैठे हो तो कितनी खुशी होनी चाहिए। यहाँ डायरेक्ट भासना आती है। बाबा हमको पढ़ाते हैं। इनको मेला कहा जाता है। सेन्टर्स पर तुम जाते हो वहाँ कोई आत्माओं, परमात्मा का मेला नहीं कहेंगे। आत्माओं परमात्मा का मेला यहाँ लगता है। यह भी तुम जानते हो मेला लगा हुआ है। बाप बच्चों के बीच में आये हैं। आत्मायें सब यहाँ हैं। आत्मा ही याद करती है कि बाप आये। यह सबसे अच्छा मेला है। बाप आकर सब

आत्माओं को रावण राज्य से छुड़ा देते हैं। ये मेला अच्छा हुआ ना, जिससे मनुष्य पारसबुद्धि
e बनते हैं। उन मेलों पर तो मनुष्य मैले हो जाते हैं। पैसे बरबाद करते रहते हैं, मिलता कुछ भी
नहीं। उनको मायावी असुरी मेला कहा जायेगा। यह है ईश्वरीय मेला। रात-दिन का फर्क है।
तुम भी आसुरी मेले में थे। अभी हैं ईश्वरीय मेले में। तुम ही जानते हो बाबा आया है।
सब जान जाएं तो पता नहीं कितनी भीड़ हो जाए। इतने मकान आदि रहने के लिए कहाँ से
लायेंगे। पिछाड़ी में गाते हैं ना — अहो प्रभू तेरी लीला। कौन-सी लीला? सृष्टि के बदलने की
लीला। यह है सबसे बड़ी लीला। पुरानी दुनिया खत्म होने से पहले नई दुनिया की स्थापना
f होती है। इसलिए हमेशा किसको भी समझाओ तो पहले स्थापना, विनाश फिर पालना कहना
है। जब स्थापना पूरी होती है तब फिर विनाश शुरू होता है, फिर पालना होगी। तो तुम बच्चों
को यह खुशी रहती है — हम स्वदर्शन चक्रधारी ब्राह्मण हैं। फिर हम चक्रवर्ती राजा बनते हैं।
यह कोई को पता नहीं, इन देवताओं का राज्य कहाँ गया। नाम-निशान गुम हो गया है। देवता
के बदले अपने को हिन्दू कह देते हैं। हिन्दुस्तान में रहने वाले हिन्दू हैं। लक्ष्मी-नारायण को
तो ऐसे कभी नहीं कहेंगे। उन्हों को तो देवता कहा जाता है। तो अब इस मेले में ड्रामा अनुसार
तुम आये हो। यह ड्रामा में नूँध है। धीरे-धीरे वृद्धि होती रहेगी। तुम्हारा जो कुछ पार्ट चल रहा
है फिर कल्प बाद चलेगा। यह चक्र फिरता रहता है। फिर रावण राज्य में आसुरी पालना होगी।
तुम अभी ईश्वरीय बच्चे हो फिर दैवी बच्चे फिर क्षत्रिय बनेंगे। तुम जो अपवित्र प्रवृत्ति वाले
बन गये थे सो फिर पवित्र प्रवृत्ति वाले बनते हो। हैं तो यह भी दैवी गुण वाले मनुष्य ना। बाकी
इतनी भुजायें आदि दे दी हैं, विष्णु कौन हैं, यह कोई बता न सके। महालक्ष्मी की भी पूजा
करते हैं। जगत अम्बा से कभी धन नहीं मांगते हैं। धन जास्ती मिल गया तो कहेंगे लक्ष्मी की
g पूजा की इसलिए उसने भण्डारा भर दिया। यहाँ तो तुम जगत अम्बा से पा रहे हो परमपिता
परमात्मा शिव द्वारा, देने वाला वह है। तुम बच्चे बापदादा से भी लक्की हो। देखो, जगदम्बा
का कितना मेला लगता है, ब्रह्मा का इतना नहीं। ब्रह्मा को तो एक ही जगह बिठा दिया है,
अजमेर में बड़ा मन्दिर है। देवियों के मन्दिर बहुत हैं क्योंकि इस समय तुम्हारी बहुत महिमा
है। तुम भारत की सेवा करते हो। पूजा भी तुम्हारी जास्ती होती है। तुम लकी हो। जगत अम्बा
के लिए ऐसे कभी नहीं कहेंगे कि वह सर्वव्यापी है। तुम्हारी महिमा होती रहती है। ब्रह्मा,
विष्णु, शंकर को भी सर्वव्यापी नहीं कहते, मुझे कह देते कण-कण में है, कितनी ग्लानि करते
हैं।

तुम्हारी मैं कितनी महिमा बढ़ाता हूँ। भारत माता की जय कहते हैं ना। भारत माता तो तुम
हो ना। धरनी नहीं। धरनी आदि जो अब तमोप्रधान है, सतयुग में सतोप्रधान हो जाती है
इसलिए कहते हैं देवताओं के पैर पतित दुनिया में नहीं आते। जब सतोप्रधान धरनी होती है
तब आते हैं। अभी तुमको सतोप्रधान बनना है। श्रीमत पर चलते बाप को याद करते रहेंगे तो
ऊंच पद पायेंगे। यह ख्याल रखना है। याद करेंगे तो विकर्म विनाश होंगे। श्रीमत मिलती रहती
है। सतयुग में तो तुम्हारी आत्मा पवित्र कंचन हो जाती है तो शरीर भी कंचन मिलता है। सोने
में खाट पड़ती है तो फिर जेवर भी ऐसा बनता है। आत्मा झूठी तो शरीर भी झूठा। खाद पड़ने
से सोने का मूल्य भी कम हो जाता है। तुम्हारा मूल्य अब कुछ भी नहीं है। पहले तुम विश्व

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

के मालिक 24 कैरेट थे। अभी 9 कैरेट कहेंगे। यह बाप बच्चों से रूहरिहान करते हैं। बच्चों को बैठ बहलाते हैं। जो तुम सुनते-सुनते चेंज हो जाते हो। मनुष्य से देवता बन जाते हो। वहाँ हीरे-जवाहरातों के महल होंगे, स्वर्ग तो फिर क्या! वहाँ के शूबीरस आदि भी तुम पी कर [illegible] है नहीं। अभी तुम प्रैक्टिकल में जाते हो। यह है आत्म और परमात्मा का मेला, इनसे तुम उज्जवल बनते हो।

तुम बच्चे जब यहाँ आते हो तो फ्री हो, घर-बार धन्धे आदि का कोई फुरना नहीं है। तो यहाँ तुमको याद की यात्रा में रहने का चांस अच्छा है। वहाँ तो घर-घाट आदि याद आता रहेगा। यहाँ तो कुछ है नहीं। रात को दो बजे उठकर यहाँ बैठ जाओ। सेन्टर्स पर तो रात को तुम जा नहीं सकते। यहाँ तो सहज है। शिवबाबा की याद में आकर बैठो, और कोई याद न आये। यहाँ तुमको मदद भी मिलेगी। सवेरे सो जाओ फिर सवेरे उठो। 3 से 5 बजे तक आकर बैठो। बाबा भी आ जायेंगे, बच्चे खुश होंगे। बाबा है योग सिखलाने वाला। यह भी सीखने वाला है तो दोनों बाप और दादा आ जायेंगे फिर यहाँ और वहाँ योग में बैठने के फर्क का भी पता पड़ेगा। यहाँ कुछ भी याद नहीं पड़ेगा, इसमें फायदा बहुत है। बाबा राय देते हैं — यह बहुत अच्छा हो सकता है। अब देखें बच्चे उठ सकते हैं? कइयों को सवेरे उठने का अभ्यास है। तुम्हारा सन्यास है 5 विकारों का और वैराग्य है सारी पुरानी दुनिया से। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. अभी सृष्टि बदलने की लीला चल रही है इसलिए स्वयं को बदलना है। क्षीरखण्ड होकर रहना है।

२. सवेरे उठकर एक बाप की याद में बैठना है, उस समय और कोई भी याद न आये। 5 विकारों तथा पुरानी दुनिया से बेहद का वैरागी बनना है।

वरदान:- रहमदिल बन बीती हुई बातों को स्वयं में समाने वाले शुभ चिंतक भव

यदि किसी की बीती हुई कमजोरी की बातें कोई सुनाये तो शुभ भावना से किनारा कर लो। व्यर्थ चिंतन या कमजोरी की बातें आपस में नहीं चलनी चाहिए। बीती हुई बातों को रहमदिल बनकर समा लो। समाकर शुभ भावना से उस आत्मा के प्रति मन्सा सेवा करते रहो। भले संस्कारों के वश कोई उल्टा कहता, करता या सुनता है तो भी उसे परिवर्तन करो। एक से दो तक, दो से तीन तक ऐसे व्यर्थ बातों की माला न हो जाए। ऐसा अटेन्शन रखना अर्थात् शुभ चिंतक बनना।

स्लोगन:-

कर्म करते करन-करावनहार बाप की स्मृति रहे तो स्व-पुरुषार्थ और योग का बैलेन्स ठीक रहेगा।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

8-10-85 प्रातः मुरली ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"संगमयुग है कल्याणकारी पुरुषोत्तम युग, जिसमें ही सब परिवर्तन होता है"

प्रश्न:-इस ज्ञान में कौन सी बात सोचने व बोलने से कभी भी उन्नति नहीं हो सकती?

उत्तर:-ड्रामा में होगा तो पुरुषार्थ कर लेंगे, ड्रामा करायेगा तो कर लेंगे। यह सोचने व बोलने वालों की उन्नति कभी हो नहीं सकती। यह कहना ही रांग है। बाबा ने तुम्हें यह ज्ञान दिया है कि यह अनादि बण्डरफुल पुराने से पुराना ड्रामा है परन्तु नित नया है। यह मेहद का अविनाशी ड्रामा कब विनाश नहीं होता।

गीत-यह कहानी है दीये और तूफान की... ओमशान्ति वह है कलियुगी मनुष्यों का गीत। a परन्तु इनका अर्थ वह नहीं जानते। यह तुम जानते हो। तुम हो अभी पुरुषोत्तम संगमयुगी। मेरा गाया पुरुषोत्तमयुग जरूर लिखना चाहिए। बच्चों को ज्ञान की प्वाइंटस याद न होने कारण फिर ऐसे2 अक्षर लिखते भूल जाते हैं। यह मान्य अक्षर हैं "पुरुषोत्तम संगमयुग" यह सब चित्रों में लिखना चाहिए। इनका अर्थ भी तुम ही समझ सकते हो। पुरुषोत्तम मास भी होता है। यह फिर है पुरुषोत्तम संगमयुग। यह संगम का भी एक त्योहार है। यह त्योहार सबसे ऊंच है। तुम जानते हो अभी हम पुरुषोत्तम संगमयुग पर उत्तम पुरुष बन रहे हैं। ऊंच ते ऊंच, साहूकार से साहूकार नम्बरवन ऊंच पुरुष इस म०ना० को कहेंगे। शास्त्रों में दिखाते हैं बड़ी प्रलय हुई। फिर नम्बरवन श्रीकृष्ण पीपल के पत्ते पर सागर में आया। अभी तुम क्या कहेंगे। नम्बरवन है यह श्रीकृष्ण। जिसको ही श्याम सुन्दर कहते हैं। दिखाते हैं अंगूठा चूसता हुआ आया। बच्चा तो गर्भ में ही रहता है। तो पहले2 ज्ञान सागर से निकला हुआ उत्तम ते उत्तम पुरुष श्रीकृष्ण है। ज्ञान सागर से स्वर्ग की स्थापना होती है। उनमें नम्बरवन पुरुषोत्तम यह। और है भी ज्ञान का सागर, पानी का नहीं। प्रलय भी होती नहीं। कई बच्चे नये2 आते हैं तो बाप को फिर पुरानी प्वाइंटस रिपीट करनी पड़ती है। पुरुषोत्तम संगमयुग भी जरूर होता है। सतयुग त्रेता यह सब युग हैं। इनमें एक पुरुषोत्तम युग भी है। अभी यह तो है तमोप्रधान युग। यह भी समझना चाहिए। पुरुषोत्तम युग में मनुष्य चेंज होते हैं। कनिष्ठ से सर्वोत्तम बनते हैं। जैसे शिवबाबा को भी पुरुषोत्तम वा सर्वोत्तम कहते हैं ना। वह है ही परम आत्मा माना परमात्मा फिर पुरुषो- में भी उत्तम यह न०ना० उन्हों को ऐसा किसने बनाया। यह तो बच्चे ही समझते हो। बच्चों को समझा में आया है। इस समय हम पुरुषार्थ करते हैं ऐसा बनने लिये। पुरुषार्थ कोई बड़ा नहीं, मोस्ट सिम्पल है सोचने वाली भी है अक्षरायें, कम्बाइंड। जो कुछ भी पढ़ी लिखी नहीं है उन्हों b के लिये कितना सहज समझाया जाता है। दिखो, अहमदाबाद वाला साधु है, कहते हैं वह कुछ खाता पीता नहीं है। फिर क्या खाता पीता होगा तो कुछ नहीं है। झाड़ को भी खाना तो मिलता है ना। खाद पानी आदि नेचुरल उनको मिलता है। जिससे झाड़ वृद्धि को पाता है। उसने भी कोई सिद्धि-सिद्धी पाई होगी। ऐसे बहुत हैं जो आग से पानी से चले जाते हैं। इनसे भला फायदा क्या। तुम्हारा तो इस राजयोग से जन्म जन्मान्तर का फायदा है। बाप तुमको जन्म जन्मान्तर के लिये दुखी से सुखी बनाते हैं। बाप कहते हैं बच्चे ड्रामा अनुसार हम तुमको गुप्त गुप्त बातें सुनाते हैं। जैसे बाबा ने समझाया था शिव और शंकर को दिखाना उसमें कोई का तो इस शब्द में पार्ट ही नहीं। शिव का शंकर का विष्णु का पार्ट है। ब्रह्मा और विष्णु का आलराउण्ड पार्ट है। शिवबाबा का भी इस समय पार्ट है जो आकर ज्ञान देते हैं। c निर्वाणधाम में चले जाते हैं। बच्चों को जायदाद देकर वानप्रस्थ में चले जाते हैं। वानप्रस्थी अपना आपको गृह कारोबार वाणी से परे जाने का पुरुषार्थ करना। परन्तु वापिस तो कोई जा नहीं सकते। क्योंकि विकारी अपवित्र हैं। विकारों से जन्म तो उनका होता है। उनको निर्विकारी कहा जाता। जो विकारों से जन्म नहीं लेते उनको निर्विकारी कहा जाता है। यह कल्प० निर्विकारी हैं। उन्हों का विकारों से जन्म नहीं होता। इसलिये श्रेष्ठाचारी कहलाये जाते हैं। विकार में जाने वाले को भ्रष्टाचारी कहा जाता है। यम है विषय वह है वाइसलेस। आधाकल्प राम राज्य आधाकल्प रावण राज्य। वहाँ विकारों से कुल जन्म नहीं होता। विकार होता ही नहीं। इसलिये उनको निर्विकारी श्रेष्ठाचारी कहा जाता है। यह है ही विकारों की बातें। अभी विकार बन्द कैसे हों। गवर्मेन्ट कहती है सन्यासी श्रेष्ठाचारी बनाते हैं। बाप आकर समझाते

है ड्रामा अनुसार भल पधारते हैं परन्तु जन्म तो भ्रष्टाचार से होता है ना। ध
जोड़ जाते हैं। एक :हद हो जाता है। पवित्र के आगे मनुष्य जाकर माथा टेकते हैं। कपड़े
भी निर्विकारी हैं इसलिए उनके आगे माथा टेकते हैं। है तो सब भ्रष्टाचारी ना। तो
d शंकर के लिए भी समझाया है कि उनका कोई पार्ट नहीं है। इसका मतलब यह नहीं कि
उन को उड़ा देना चाहिए। त्रिमूर्ति चित्र तो है ना। एक तरफ गाते भी हैं देव देव महादेव।
महादेव शंकर को कहा जाता है। महादेव तो बड़ा हो गया ना। फिर कह देते त्रिमूर्ति
ब्रह्मा त्रिमूर्ति महादेव शंकर का नाम क्यों नहीं रखा है। यह भी गुप्तज्ञान की बातें हैं। त्रिमू
ब्रह्मा क्यों कहते हैं। पूजा पिता ब्रह्मा कितो जरूर पूजा का पिता हुआ ना। शिवबाबा को
तो आत्माओं का पिता कहेंगे वह है अविनाशी पिता। यह गुप्त2 बातों को अच्छी रीति
धारणकरनी है बाकी शास्त्र तो है भक्तिमार्ग के। बड़े2 पिताओं फर जो होते हैं उनको बहुत
टाइटिल मिलते हैं श्रीश्री 108 की टाइटिल भी विद्वानों को मिलते हैं ना। आफीशल बनारस
कालेज से पास कर के आते हैं। बाबा ने गुप्ता को इसलिए बनारस भेजा था कि उन्हों को जा
कर समझाओ। इतने बड़े2 टाइटिल बाप का भी टाइटिल अपने उमर रख बैठे हैं। बाप से
जा करो। रखते। बाप को था श्री108 जगतगुरु कहा जाता। माला हो 108 की होती है।
8 रत्न भी गाये जाते हैं। वह पास विद आनर होते हैं इसलिए उनको जपते हैं। फिर उन
से कम 108 की पूजा करते हैं। जब यज्ञ रचते हैं तो कोई 1000 सालिग्राम बनाते हैं कोई 10
हजार कोई 50 हजार कोई लाख भी बनाते हैं। मिट्टी के बनाकर फिर यज्ञ रचते हैं जैसा
सेठ अच्छे से अच्छा बड़ा सेठ होगा तो लाख बनवाते हैं। बाप ने समझाया है माला तो
है ना। 16108 की भी माला है। तुम बच्चों को यह बाप बैठ समझाते हैं। तुम सभी
भारत की सेवा कर रहे हो बाप के साथ। बाप की पूजा होती है तो बच्चों की भी पूजा होनी
चाहिए। मनुष्य यह सब नहीं जानते कि रुद्र पूजा क्यों होती है। बच्चे तो सब शिवबाबा
के हैं। 500 करोड़ मनुष्य यह सब बाप के बच्चे ठहरे ना। पूजन लायक बनते हैं। ऐसे कोई
किसी की ताकत नहीं जो यह बातें समझावे। इसलिए यह कह देते ईश्वर का अन्त कोई नहीं
जानते बाप ही आकर समझाते हैं। बाप को ज्ञान का सागर कहा जाता है। तो जरूर ज्ञान
देंगे ना। प्रेरणा की तो कोई बात नहीं होती। भगवान कोई प्रेरणा से समझाते हैं क्या। तुम जानते
हो इनके पास सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान है। वह फिर तुम बच्चों को सुनाते हैं। यह
तो निश्चय है। निश्चय होते हुए भी बाप को भूल जाते हैं। बाप की याद, यह पढ़ाई का
तीसरा याद की यात्रा से कर्मातीत अवस्था को पाना है। इसमें मेहनत लगती है। इसमें ही माया
विघ्न डालती है। पढ़ाई में इतने विघ्न नहीं आते। अब शंकर के लिये कहते हैं शंकर आंख खोलने
से तो विनाश होता है। यह कहना भी ठीक नहीं। शिवबाबा कहते हैं न कि विनाश कराना
e मैं न वह करते हैं। यह कहना भी ठीक नहीं। शिवबाबा कहते हैं शंकर के भी बहुत पूजा
होते हैं। जो भेंट आदि चढ़ाते हैं यह सब रांग है। बाप कहते हैं अब जब करो विचार करो इन
का भी पार्ट हो सकता है? दिखाते हैं सर्प गले में फिर भी भवतन में बैल कहां से आया। जो
शंकर उस पर सवारी करते। सवारी है शिव की। बैल कोई जानवर नहीं। उन पर बैठ ज्ञान देते
समझाते। उनको तो रथ चाहिए ना। आत्मा का यह शरीर है रथ। हरेक आत्मा को अपने रथ
पर सवार होते हैं। बाप कहते हैं मैं इनका तन लेता हूं। इसलिए मेरा अलौकिक दिव्य जन्म है
कहा जाता है। अभी तुम्हारे आदि में 04 का धर्म है जानते हो अभी हम घर जाते हैं। फिर
f स्वर्ग में आयेंगे। बाबा बहुत नम्र हो समझाते हैं। इसमें हाटमेल न होना है। कहते हैं बाबा
हमसे लिखे नहीं है। मुख से कुछ निकलता नहीं है। परन्तु ऐसा तो होता नहीं। मुख
से कुछ निकलता नहीं। परन्तु ऐसा तो होता नहीं। मुख तो जरूर चलता ही है। खाना खाते
हैं, कुछ चलता है ना। वाणी न निकले यह तो हो नहीं सकता। बाबा ने बहुत सिम्पल समझाया
कोन में कोई होनी होकर रहती है। तो भी उमर में उशारा देते हैं कि उनको याद करो।
इतनी मुश्किल वह एक ही दाता है। भक्तिमार्ग में भी दाता है तो इस समय भी दाता है।
फिर वानप्रस्थ में तो है ही शान्ति। बच्चे भी शान्तिधाम में रहते हैं। पार्ट नहीं बजाते।
बाप भी कहते हैं ड्रामा में मेरा भी पार्ट है

प्रातः मुरली 26-2-73 ओमशान्ति "पितादादे" शिव बाबा याद है?

शिवबाबा :- ओम नमो शिवाये — ओमशान्ति। आज भारत में होली का उत्सव मनाते हैं। अब होली हर क्या करते हैं, आग जलाते हैं। उसमें रोटियाँ पकाते हैं। है तो ज्ञान की बात। देहअभिमान सारा जल जाता है। बाकी देहोअभिमानी बाकुल रह जाते हैं। अब यह उत्सव एक ही बार हुआ है संगम पर। जो [illegible] होकर गये हैं उनका उत्सव भक्तिमार्ग में वे मनाते हैं। मतलब तो कुछ भी समझते नहीं हैं। सिर्फ [illegible] हैं; तुम बच्चों को तो भट्ठीनिटो होनी है पिछाड़ी में। अभी तो तुम [illegible] जाती है। यह तो जानते हो अभी सभी आत्माएँ [illegible] है। अभी जागृत होते जाते हैं। जब बैटरी में ताकत कम होजाने से अनरैट लाईट [illegible] हो जाती है। तो इस समय सभी आत्माओं की बैटरी बिल्कुल ही ढीली हो गई है। अब योगबल से फिर आत्मा में ताकत भरती जाती है। बैटरी तेज होती जाती है। बाप ही आकर बच्चों को देहोअभिमानी बनाने का पुरुषार्थ कराते हैं। साधु सन्यासी आदि जो [illegible] समझते हैं आत्मा सो परमात्मा है। फिर यह कौन बताये कि मेरे साथ योग लगाओ। गीता में भगवान का नाम न होने कारण कितनी बड़ी भूल हो गई है। फिर बाप आकर आत्म अभिमानी बनाते हैं। आत्मअभिमानी न होने कारण और को परमात्मा अभिमानी हो पड़े हैं। सभी परमात्मा के रूप मान लेते हैं। बाप आकर समझाते हैं बच्चे देहोअभिमानी भव। अन्तकाल समय तुम बाडीकनशस में रहे हो। यह बिल्कुल रांग है। परमआत्माभिमानी हो फिर योग किसके साथ रखे। यह बड़ी भूल है। बाप कहते हैं बच्चे इस समय तुम्हारा देह का अभिमान निकलता है। देह तो जल ही जानी है ना। पुरुषार्थ करते करते आत्माभिमानी बन जाते हैं। बाकी देह खत्म हो जाते हैं। बाप आकर देहोअभिमानी बनाते हैं। मनुष्यों को परमआत्माभिमानी बनाया। ऐसी योग ही नहीं है। गीता में भी कहते हैं बच्चे अपने को आत्मा निश्चय करो। जो भी कर्म करो समझो मैं आत्मा हूँ। आत्मा ही करती है। आत्म ही कर्म करती है। आत्मअभिमानी बदलो मनुष्यों को परमात्माभिमानी बना दिया है। बिल्कुल ही वर्ल्ड नाट [illegible] गया है। अब तुम बच्चों को याद करना है। हौलिवा तो अन्त में होनी है। अभी तुम परमात्म [illegible] हो ही। अब मैं आकर तुम बच्चों को कहता हूँ मेरे साथ योग [illegible] फिर देहअभिमान टूट जायेगा। बाप कहते हैं मैं आता ही हूँ जब नाटक पूरा होता है। डिरेक्टर डायरेक्टर मुख्य एक्टर सभी हैं ना। शिव बाबा भी है ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी है। ल०ना० भी बाकायदे में है तुम बच्चों के ज्ञान है। ल०ना० की आत्मा अभी अन्तिम जन्म में है। यह पहले नम्बर के एक्टर्स हैं। नाटक पूरा होना है। इसलिये डिरेक्टर डायरेक्टर मुख्य एक्टर्स सभी इस सृष्टि पर हैं। हम भी एक्टर्स हैं ना। तुम बच्चों को सभी के आत्माओं का मालूम है। तुम जानते हो ल०ना० की आत्माएँ भी इस समय हाजिर नाजिर है। आत्मा पुनर्जन्म लेती आती है। आत्मा तो कभी मरती नहीं। तो जरूर ल०ना० की आत्माएँ कहीं तो होगी ना। परन्तु वह फिर उल्टा समझ बैठे हैं। कृष्ण भी यहाँ ही है। एक एक आर्टिस्ट के लिये भी कहते हैं कि यहाँ ही है। कहते हैं ठीक। परन्तु ऐसे है भी तो समझते नहीं। सभी की आत्माएँ तो यहाँ ही है। सभी पुनर्जन्म लेते लेते यहाँ ही आकर पड़े हैं। बाप समझाते हैं अभी तुम सभी को वापस जाना है। तुम बच्चे अब स्वदर्शन चक्र धारी बन रहे हो ना। फिर तुम्हारा विनाश होना है। यह भी अपना कर्तव्य कर रहे हैं। फिर भी है तब तो आ० होता है। इन सभी के आवश्यकता के तुम जानते हो। मनुष्यों के नवधा भक्ति में बहुत आ० होता है। परन्तु उनको नालेज कुछ भी नहीं है। गीत अथवा [illegible] जैसे कृष्ण की पूजा करते हैं उनका साक्षात्कार हो जाता है। ड्रामा में यह आ० का [illegible] पार्ट है। जो पास हो जाता है उसको कहते हैं ड्रामा। मीरा ने

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

होशियार बच्ची हो तो मैं उनके मित्र सम्बन्धियों को भी दे सकता हूँ। जिससे उनका भी शरीर निर्वाह चलता रहे। परन्तु बच्चे अच्छे हो, सर्विसएबुल हों, अन्दर बाहर साफ हो, बोली के बड़े मीठे हों। वास्तव में कुमारी की कमाई माँ बाप खा नहीं सकते। बाबा का बनकर फिर भी उस जिस्मानी सर्विस में ध्यान बहुत टूटा- यह तो डिसलिगाई हो गया। बाप कहते हैं मनुष्य गात्र को हेल्थ का मालिक बनाओ। बच्चा फिर जिस्मानी सर्विस में माथा मारे। स्कूल खोलना तो गवर्मेन्ट का काम है अब बच्चियों को बुद्धि से काम लेना है। कौन सी सर्विस करें? ईश्वरीय गवर्मेन्ट की या उस गवर्मेन्ट की। जैसे यह बाबा जवाहरात का धन्धा करते थे फिर बड़े बाबा ने कहा यह अविनाशी ज्ञान रत्नों का धन्धा करना है। इससे तुम यह बनेंगे। वतन का भी साक्षात्कार करा दिया। अब वह विश्व की बादशाही लेवें या यह करें। सबसे अच्छा धन्धा यह है। भल कमाई अच्छी थी परन्तु बाबा ने इसमें प्रवेश होकर मत दी कि अल्फ और बे को याद करो। कितना सहज है। छोटे बच्चे भी पढ़ सकते हैं। शिवबाबा तो हर एक बच्चे को समझ सकते हैं। यह भी सीख सकते हैं। यह है अन्तर्यामी, शिवबाबा है अन्तर्यामी। यह बाबा भी हर एक की शक्ल से, बोल से, एक्ट से सब कुछ समझ सकते हैं। बच्चियों को यह रूहानी सर्विस का चांस एक ही बार मिलता है। अब दिल में आना चाहिए हम मनुष्य को देवता बनायें या काँटों को काँटा बनायें? सोचो क्या करना चाहिए? निराकार प्रजापिता- देह सहित देह के सब सम्बन्ध तोड़ो। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते रहो। ब्रह्मा के तन से बाप ब्राह्मणों से ही बात करते हैं। वह ब्राह्मण लोग भी कहते हैं- ब्राह्मण देवी देवताए नम: किसको नम: कहते। वह कुल वंशावली, तुम हो मुख वंशावली। बाबा को जरूर ब्रह्मा बच्चा चाहिए? कुमारका बताओ बाबा को कितने बच्चे हैं? कोई कहते 550 करोड़ कोई कहते एक ब्रह्मा.. भल तुम त्रिमूर्ति कहते हो परन्तु आक्यूपेशन तो अलग2 है ना। विष्णु की नाभी से ब्रह्मा निकला। ब्रह्मा की नाभी से विष्णु, तो एक हो गये। विष्णु 84 जन्म लेते हैं या ब्रह्मा - बात तो एक ही है। बाकी रहा शंकर। ऐसे तो नहीं शंकर सांयुक्त व्यापार है। नहीं, त्रिमूर्ति कहलाया जाता है। परन्तु राउन्डियस बच्चे तो हुए। यह सब ज्ञान की बातें हैं। ब्रह्मा और शंकर।

तो बच्चियों के लिए यह सर्विस करना अच्छा है ना। या मैट्रिक आदि पढ़ना अच्छा है। वहाँ तो अल्पकाल का सुख मिलेगा। थोड़ी तनख्वाह मिलेगी। यहाँ तो तुम 21 जन्मों के लिए मालामाल हो सकते हो। तो क्या करना चाहिए? कन्या तो निरबन्धन है। अथवा कन्या से कुवांरी कन्या तीखी जा सकती है। क्योंकि पवित्र हैं। मम्मा भी कुमारी थी ना। पैसे की तो बात ही नहीं। जितनी तीखी गई तो फालो करना चाहिए ज्ञात कन्याओं को। काँटों को फूल बनायें। ईश्वरीय पढ़ाई का एडवान्स लें या उस पढ़ाई का। कन्याओं का सेमीनार करना चाहिए। माताओं को तो पति आदि याद पड़ता है। सन्यासियों को भी याद बहुत पड़ता रहता है। कन्याओं को तो शादी करनी नहीं चाहिए। रंग बहुत लग जाता है। कोई बड़े आदमी का बच्चा देखा दिल लग गई शादी हो गई। खेल खत्म। माया एकदम गिरा देती है। अब बच्चे यहाँ सम्मुख आते हैं। सुनते हैं तो नशा चढ़ जाता है। सेन्टर में सुनकर बाहर जाते हैं तो सब खत्म हो जाता है। यह है मधुबन। ऐसे भी बहुत आते हैं कहते हैं हम जाकर सेन्टर खोलेंगे। फिर लापता ही गुम। यहाँ ज्ञान का गर्भ धारण करो, बाहर जाने से नशा गुम हो जाता है। माया हप्पड़ कर देती है। आपोजीशन बहुत करती है। माया भी कहती है बाबा जो बाबा को भी पहचानता है फिर भी बाप को याद नहीं करते तो हम भी घूंसा मारेंगी। ऐसे नहीं कहो कि बाबा अब माया को कहो हमको घूंसा न मारे। युद्ध का मैदान है ना। एक तरफ है रावण की सेना, दूसरे तरफ है राम की सेना। बहादुर बन राम की तरफ जाना चाहिए। आसुरी सम्प्रदाय को ही दैवी सम्प्रदाय बनाने का धन्धा करना है। जिस्मानी विद्या तुम जिन्दा छोड़ेंगे, जब तक वह पढ़कर बड़े हों तब तक विनाश भी सामने आ जायेगा। आसार भी तुम देख रहे हो। बाबा ने समझाया है दोनों क्रिश्चियन भाई2 आपस में मिल जाएं तो लड़ाई हो न सके। परन्तु भावी ऐसी नहीं है। उन्हों को समझ ही नहीं आता है। अब तुम बच्चे योगबल से राजधानी स्थापन कर रहे हो। यह है शिव शक्ति सेना। जो शिवबाबा से

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

6.7.82 प्रात: क्लास ओम्शान्ति "मनमनाभव" मधुबन पेज 69

मीठे बच्चे- सर्विस समाचार सुनने, पढ़ने का भी तुम्हें शौक चाहिए, क्योंकि इससे उमंग-उत्साह बढ़ता है, सर्विस करने का संकल्प उठता है"

प्रश्नः -संगमयुग पर बाप तुम्हें सुख नहीं देते हैं लेकिन सुख का रास्ता बताते हैं, क्यों?

उत्तर:- क्योंकि बाप के सब बच्चे हैं, अगर एक बच्चे को सुख दें, दूसरे को न दें तो यह भी ठीक नहीं। लौकिक बाप से बच्चों को बराबर हिस्सा मिलता है, वह दु:ख का बाप हिस्सा नहीं बाँटते सुख का रास्ता बताते हैं जो उस रास्ते पर चलते हैं, पुरुषार्थ करते हैं उन्हें ऊँच पद मिलता है। बच्चों को पुरुषार्थ करना है, सारा मदार पुरुषार्थ पर है। रावण भी दु:ख नहीं देता लेकिन दु:ख का रास्ता बताता है।

ओमशान्ति। बच्चे जानते हैं बाप मुरली चलाते हैं सबके पास जाती है, और जो मुरली पढ़कर सर्विस करते हैं उन्हों का समाचार मैगजीन में आता है। अब बच्चे मैगजीन पढ़ते हैं वा नहीं, पढ़ेंगे तो सेन्टर्स के सर्विस समाचार का मालूम पड़ेगा, फलानी2 जगह ऐसी सर्विस हो रही है। जो पढ़ेंगे नहीं तो उनको कुछ भी समाचार का मालूम नहीं पड़ेगा और पुरुषार्थ भी नहीं करेंगे। सर्विस का समाचार सुनकर दिल में आता है मैं भी ऐसी सर्विस करूँ। मैगजीन से मालूम पड़ता है, हमारे भाई बहिन कितनी सर्विस करते हैं। यह तो बच्चे समझते हैं, जितनी सर्विस उतना ऊँच पद मिलेगा। इसलिए मैगजीन भी उत्साह दिलाती है सर्विस के लिए। यह कोई फालतू नहीं बनती है। फालतू यह समझते हैं जो खुद पढ़ते नहीं हैं। कोई कहते हम ऊपर नहीं जानते, अरे रामायण, भागवत, गीता आदि सुनने के लिए जाते हैं, यह भी सुननी चाहिए। नहीं तो सर्विस का उमंग नहीं बढ़ेगा। देहली में समाचार जाता है जो फिर मैगजीन में समाचार लिखते हैं, फलानी जगह यह सर्विस हुई। शौक हो तो किसको कहे वह पढ़कर सुनाये। बहुत सेन्टर्स पर ऐसे भी होगा जो मैगजीन नहीं पढ़ते होंगे। बहुत हैं जिनके पास तो सर्विस का नाम निशान नहीं रहता। तो पद भी ऐसा पायेंगे। यह तो समझते हैं राजधानी स्थापन हो रही है, उसमें जो जितनी मेहनत करते हैं, उतना ऊँच पद पाते हैं। पढ़ाई में अटेन्शन नहीं देंगे तो फेल हो जायेंगे। बाप समझाते हैं ऐसा नहीं कहेंगे- रामचन्द्र फेल हुआ, नहीं। कोई बच्चे फेल हुए जो जाकर रामचन्द्र भविष्य में बनते हैं। राम सीता वाला भी कोई पढ़ते हैं जो कहे फेल हुए। यह भी समझ की बात है ना। कोई भले रामचन्द्र कुल में तो कहीं वहाँ पढ़ते थे? आगे जन्म में ऐसा पढ़कर यह पद पाया है। तो मदार है उस समय की पढ़ाई पर। जितना पढ़ेंगे और पढ़ायेंगे उतना अपना ही फायदा है। बहुत बच्चे हैं जिनको मैगजीन पढ़ने का ख्याल भी नहीं आता है। पाई पैसे का पद पा लेंगे। वहाँ यह ख्यालात नहीं रहती कि इतने पुरुषार्थ नहीं किया है, तो यह पद मिला है। नहीं। कर्म-विकर्म की बातें सब यहाँ बुद्धि में हैं। कल्प के संगमयुग पर ही बाप समझाते हैं। जो नहीं समझते हैं- वह तो जैसे पत्थरबुद्धि हैं। तुम भी समझते हो हम तुच्छ बुद्धि थे फिर उसमें भी परसेन्टेज होती है। बाबा बच्चों को समझाते रहते हैं, अभी कलियुग है, इनमें दु:ख अपार होते हैं। यह2 दु:ख हैं। जो सेन्सीबुल होंगे वह झट समझ जायेंगे कि यह तो ठीक बोलते हैं। तुम भी जानते हो कल हम कितने दु:खी थे, अपार दु:खों के बीच थे। अभी फिर अपार दु:खों के बीच में जा रहे हैं, यह है ही रावण राज्य कलियुग। यह भी तुम जानते हो, जो जानते हैं लेकिन औरों को नहीं समझाते हैं तो समझा जायेगा कुछ नहीं जानते हैं। जानते हैं तब कहें जब सर्विस करें। समाचार मैगजीन में आये। जिन्हें प्रतिदिन बाबा बहुत सहज पाइंट्स भी सुनाते रहते हैं। वो लोग तो समझते कलियुग अजुन बच्चा, जब संगम समीप तब भेद कह सबे- सतयुग और कलियुग में। कलियुग में अपार दु:ख है। सतयुग में अपार सुख है। सोचते अपार दु:ख हम बच्चों को बाप दे रहे हैं। जो हम वर्णन कर रहे हैं। कोई भी ऐसे समझ न सके। तुम नई बातें सुनाते हो और कोई तो यह पूछ न सके कि तुम देहअभिमानी हो या नम्बरवार हो। तुम बच्चों में भी नम्बरवार है। इतनी पाइंट्स याद नहीं कर सकते हो। धारणा के समय देह अभिमान आ जाता है। आत्मा ही सुनती है, धारण करती है। परन्तु आत्मा रूपी सीट यह भूल जाते हैं। देह अभिमान में आकर बोलने लग पड़ते हैं, ऐसे लगता होता है कि यह तो बड़े ही तीव्र पुरुषार्थी हैं। ऐसे नहीं कि आत्मा समझ बात करते हैं नहीं। बाप समझाते हैं बाकी जो भी कर्म करते हैं, यह पुरुषार्थ कर रहे हैं- ऐसी अवस्था में ठहरने का

b ब्यूटर होगा। बाबा टिचर के बनि से तुमको सोने का बनि बनाते हैं। बाप तुम्हारी पूरी सद्गति कर बच्चे से क्या बना देते हैं। बाप की भी सद्गति का पार्ट बजाते तो टीचर का भी पार्ट बजाते तो सतगुरु का भी पार्ट बजाते हैं। उनका कोई बाप टीचर गुरु नहीं है। तुम्हारे लौकिक बाप का तो बाप टीचर, गुरु जरूर होगा। शिवबाबा कहते हैं मेरा कोई नहीं है। परन्तु उनका कोई आदिअनादि नहीं जानते हैं। जब तक किसको स्वर्ग का मालूम न पड़े तब तक कोई यह जान नहीं सकते कि हम नर्क में हैं। ग्रंथ में पढ़ते हैं गुरु पतीजो कपड़ा धोए.... परन्तु अपने को कोई भी पतीत-पतिता नहीं समझते हैं। जब कुमार कुमारी हैं तो उनको रावण राक्षणी नहीं कहेंगे। जब काला मुँह करते हैं तो एक दो का रावण बन जाते हैं। बाप आया है- ज्ञान का हनीमून कराके काले को गोरा बनाने लिए। इस समय तुम ज्ञान तूर्य ज्ञान चन्द्रमा बन

c रहे हो। सन्यासी पवित्र प्रवृत्ति मार्ग नहीं बना सकते हैं। वह यह नहीं कह सकते कि हम तुमको राजाओं का राजा बनाते हैं। वह निवृत्ति मार्ग के हैं। घरबार छोड़कर चले जाते हैं। यहाँ कोई डर नहीं है। बाप के पास बच्चे आये हैं, कहते हैं बाबा हमारे में ताकत है। इकट्ठे रहकर पवित्र रह सकते हैं। अगर कोई कन्या पर मार पड़ती है तो कन्या को बन्धन से छुड़ाने के लिए हम गन्धर्वी विवाह कर सकते हैं। हम जल नहीं मरेंगे। ज्ञान तलवार बीच में रहेगी। दोनों ब्राह्मण ब्राह्मणी भाई बहन बिल्कुल ही रह सकते हैं। शास्त्रों में भी गन्धर्वी विवाह के लिए लिखा हुआ है। परन्तु इनका अर्थ नहीं समझते हैं। सन्यासी तो कह देते हैं नारी नर्क का द्वार है, उन्हों के पास ज्ञान तलवार तो है नहीं। जो इकट्ठे रहकर पवित्र रह सकें। तुम उनसे बहादुर हो। काम चिता से उतर ज्ञान चिता पर बैठते हो। तो काले से गोरे बन जाते हो।

सन्यासी तो आजकल शादी भी करते हैं। नर्क में भी शादियाँ होती हैं। नहीं तो क्राइस्ट को क्यों क्रास पर चढ़ाया? इसी पवित्रता के कारण, कहा यह कौन है जो कहते हैं

d अपवित्र बनो। आफतें तो आती हैं। यहाँ भी शिवबाबा पर नहीं आती है, परन्तु जिसमें प्रवेश किया है, लोन बूट में, उस पर आती है। घाट वेन्दे... पुरानी जुत्ती है ना। यह थोड़ेही कहते कि मैं श्रीकृष्ण हूँ। हाँ कहते राजयोग सीखूँगा तो नर से नारायण बनूँगा। परन्तु अभी नहीं हूँ। वैसे बच्चों को भी निश्चय है कि हम नर से नारायण नारी से लक्ष्मी बनेंगे।

e पर्सनहीं होंगे जो क्षत्रिय बनें। राम फेल हुआ तो 33 से कम भाई निकले। तो चन्द्रवंशी में चले गये। ऐसे तो सूर्यवंशी भी चन्द्रवंशी घराने में आते हैं। उस समय। सतयुग के अन्त में। लक्ष्मी नारायण सीता राम को राज्य देते हैं। लक्ष्मी नारायण भी त्रेता में आते हैं। रघुवंशी कुल में जन्म लेते रहते हैं। फिर सीता राम का नाम चला आता है, लक्ष्मी नारायण का नाम खत्म हो जाता है। अब पूरन पूछता है- स्पदर्मन चक्र कौन सा है? ....एक दो से पूछा।

हाँ यह है चक्र- जैसे देवता से क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र अब ब्राह्मण वर्ण में आते हैं। यह चक्र जितना फिरायेंगे उतना विकर्म विनाश होंगे। जैसे रावण का गला कटता है। यह भी बेल्ट का बाप होते हैं। जिसके लिए बच्चियाँ गाती हैं कि पिछड़ना सहन नहीं कर सकते। ऐसी बच्चियाँ भी हैं जो बन्धन में हैं। तड़पती हैं। क्योंकि यह है मात पिता। एक तो माता जगत अम्बा है, जिसको सब याद करते हैं। परन्तु जगत अम्बा का पिता कौन है, जो जिसको पता नहीं है कि ब्रह्मा, सरस्वती का बाप है। है तो एक ही के नाम। परन्तु पुजारी थोड़ेही जानते हैं कि पहले फिर सरस्वती बनती है। फिर 84 जन्म ले फिर यही सरस्वती बनती है। यह ज्ञान बाबा के पास थोड़ेही था। उसमें ज्ञान होता तो जरूर किसी गुरु से मिला हुआ होता। फिर उस गुरु की महिमा भी करते। फिर उस गुरु के और भी शिष्य होते, यह भी बताते। परन्तु बाबा का

f कोई साकार गुरु नहीं है। बाप कहते हैं मैं तुम्हारा बाप टीचर सतगुरु हूँ। मैं इस पुरानी जुत्ती में आकर पढ़ाता हूँ। तो यह फिर माता हो गई इसलिए उनको मात पिता कहते हैं। तुम मात पिता तो गाते हैं यह ब्रह्मा सरस्वती को नहीं कह सकते। ब्रह्मा थोड़ही वैकुण्ठ का स्थापना है। बाप तो आपे है और यह (ब्रह्मा) तुम्हारी गद्दी है। कलष पहने इनको ब्रह्मा को। मिलता है। परन्तु सरस्वती की महिमा बढ़ाने के लिए उनको आगे रखा है। सरस्वती का क्यों गाडेज ऑफ नालेज नाम मशहूर है। बिजुत मण्डली वाले भी सरस्वती का लक्ष्य रख लेते हैं। वह तो झूठी नालेज देते हैं। अच्छा- बाबा कहते हैं कितना समझाए कितना समझाऊँ, मनमनाभव, बस तिर्फ मुझे याद करो और मेरे वर्से को याद करो तो तुम स्वर्ग में चले

29.5.83 प्रात:क्लास . ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद ऐ?
"मीठे बच्चे- बाप की मदद या पूरा वर्सा लेने के लिए सगे बच्चे बनो
सगे अर्थात् पूरा सन्यास कर पवित्रता की प्रतिज्ञा करने वाले"

प्रश्नः- बाप फल रहमदिल है-कैसे? कौन सा रहम बच्चों पर सदा ही करते हैं? उत्तर:- रहमदिल बच्चों पर कितना भी विघ्न डालता, माया के वश हो उल्टा कर्म कर लेता लेकिन फिर भी अगर कोई भूल मिस्पस करता तो बाप उसे शरण ले कहते हैं अच्छा फिर से ट्रायल करो। अनगिनतों को माफ करते माफ करो। बाप फल रहमदिल है, क्योंकि जानते हैं बच्चे और कहां जायेंगे। सदा तुमें रहम की आस रखती है।

गीत:- तुम्हारे बुलाने को जी चाहता है।.. ओमशान्ति मीठे2 बच्चे जिन्हों को गोप गोपियां कहा जाता है। सतयुग में गोप गोपियां नहीं होते हैं। वहां तो राजधानी चलती है। गोप गोपियां संगमयुग पर हैं जबकि गोपी वल्लभ भी आते हैं। वल्लभ बाप को कहा जाता है। बच्चे यादि करते हैं कि बाबा फिर से आओ। सभी सेन्टर्स के बच्चे होंगे। सबको पता है कि बाबा इस समय मुरली चलाता होगा। वह मुरली टेप में भरती होगी। लिखते होंगे, लिखो होगी फिर हमारे पास आयेगी। हम धारणा करेंगे फिर हम धारणा करायेंगे। यह सब समझते होंगे कि मधुबन में तो गोप गोपियां, गोपी वल्लभ से सम्मुख सुनते होंगे। वो ही मुरली फिर हम 4-5 दिन के बाद सुनेंगे। ऐसे ख्यालात चलते होंगे ना। कहते हैं बाबा बाप आओ तो हम सदैव सुखधाम में चले जावें। जैसे देवतायें सदैव हर्षित रहते हैं। वहां क्या राजा रानी तथा प्रजा सभी एक जैसे रहते हैं। दुःख का नाम निशान नहीं रहता। यहां तो है ही प्रजा का राज्य। तो बच्चे जानते हैं बाबा आकर ककहरा पढ़ाते हैं। यहां गरीब की अच्छी रीति पढ़ते हैं। जो वे गरीब को कोई एम०एल०ए० एम०पी० बना जाते हैं ना। यहां गरीब ही पढ़ सकते हैं। धारिस भी गरीब ही बनते हैं। साहूकारों का झमेला बहुत रहता है। एक तो धन का नशा, दूसरा फिर मुश्किल नदी मिलती। बलि भी नहीं चढ़ सकते। यहां बलि चढ़ना पड़ता है। तन, मन, धन सहित। साहूकारों का हृदय विदीरण होता है, फरमा बहुत रहता है- इसलिए गरीब चढ़ सकते हैं। जिसमें भी पहले नम्बर में कन्यायें जाती हैं। मम्मा भी कन्या है ना। बाप की बनी और चढ़ गई। मेरा तो शिवबाबा दूसरा न कोई। इसको बलि चढ़ना कहा जाता है। गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए जैसे कि वहां नहीं है। बुद्धि में शान्तिधाम सुखधाम ही चलता है। जब जाते हैं स्वीट होम फिर स्वीट राजाई में। गृहस्थ व्यवहार में रहते रहना की भी कला आनी है। परन्तु श्रीमत से श्रीमत तब मिले जब बलि चढ़े। सर्वशक्तिवान के साथ योग लगाने से ही शक्ति मिलती है। बाप का नहीं बनते हैं तो शक्ति नहीं मिलेगी। सगे और लगे होते हैं ना। उन सन्यासियों में भी सगे और लगे होते हैं। कोई तो परिवार छोड़ जाए अपनी पहचान देते हैं। वह ठहरे सगे। कोई फिर फालोअर्स होते हैं, वह रहते हैं गृहस्थ में। उनको कहते हैं तोतले। सगे नहीं कहेंगे। वह है उसी कम्पनी वाले। वर्सा मिल न सके। क्योंकि अपवित्र रहते हैं। वहां भी कोई तो सगे बनते हैं। जो पवित्रता की राखी बांधते हैं। बाकी जो मिलते नहीं रहते हैं उनको लगे कह न सकेंगे। राजयोग से सन्यास तक हैं। हठयोग से सन्यास। बाबा समझाया है जिसे अपने को सन्यासियों के फालोअर्स कहलाते हैं। परन्तु रहते हैं घर गृहस्थ में। उनको वास्तव में फालोअर्स वा सन्यासी कह न सकें। सन्यास करने का पुरुषार्थ करते वाले परन्तु बन्धन है। जिन्होंने कल्प पहले सन्यास किया है वही छोड़ते हैं। वह सगे जाते हैं सगे। वह लगे यहां जो भी बाप के बनते हैं वही सगे ठहरे। मदद और वर्सा भी सगे को ही मिलता। लगे को मदद मिल न सके। बाबा ने समझाया है फल है ज्ञान रत्नों का। यह सब ज्ञान रत्नों की माला परी, नौ रत्नों की भी बहुत महिमा है। नौ रत्न की अंगूठी भी पहनते हैं। ब्राह्मण कहते हैं यह पहनो तो तुम्हारी दशा बदलेगी। पत्थरों की भी महिमा कर दी है। वे सभी बच्चे हैं। जितने जो सिद्ध किये हैं वे विजय माला में आते हैं। ऊंच से ऊंच पारस बनाने वाला बाबा। उनको बाप से दूर रखते हैं। मनुष्य तो इन बातों को जानते नहीं। रत्न कोई पीपल पत्थर से भेंट क्यों करते हैं। जैसे नदियों से भी भेंट करते हैं, तुम तो ज्ञान

...ला।वह है पानी की।तो कहते है बाबा आओ तो हम सदैव हर्षित रहेंगे।आपकी मुरली ...कर औरों ने सुनायेंगे।फिर वहां प्रिन्स प्रिन्सेज बन रत्न जड़ित मुरली भी बजाते हैं। ...ली बजाने का शौक रहता है कृष्ण को भी मुरली थी जरूर।जबकि वह प्रिन्स था। ...ा करता था।बाकी ज्ञान मुरली सुनाना या बजाना तो ज्ञान सागर का ही काम है।वह ...मुरली बाप आकर बजाते है।ज्ञान की बात यहाँ ही है।वहाँ ज्ञान की बात नहीं होती ...। मुरली बजाने वाली तुम बच्चियां हो।सतयुग में त्रिकालदर्शी पने का ज्ञान नहीं होता। ...यह नालेज प्राय:लोप हो जाती है परम्परा नहीं चल सकती।पीछे तो होती है प्रालब्ध। d आप: एक ही बार मिलता है। अभी तुम 21 जन्मों के लिए प्रालब्ध पा रहे हो।प्रालब्ध ...मिलेगी फिर तो बाबा भी परमधाम में जाकर बैठ जाते हैं।तुमको ज्ञान योगबल से विश्व ...का मालिक बनाए।तुम वाणी से परे हो बैठ जाते हैं।फिर वहां मेरे को कोई नहीं जानते ...।वहां और मेरी रचना को कोई जान नहीं सकते।न बाप को जानते न सृष्टि के ...आदि मध्य अन्त को जानते हैं।यहाँ यह ज्ञान नहीं रहता है। राधे कृष्ण को यहां यह ...ज्ञान कि फिर 14 कला बनना है तो राज,ताज की खुशी गुम हो जाए।यह ज्ञान वहां ...है ही नहीं।बाप एक बात क्लीयर समझाते है।तुम भी सन्यासी हो,वे भी सन्यासी है। ...उपयोग का सन्यास। सन्यासी हद का घर बार छोड़ जाते हैं।वह है शंकराचार्य ...शिवाचार्य। शिवबाबा ज्ञान सागर है ना।उनको आचार्य कहा जाता है।कृष्ण आचार्य ...नहीं। भगवान शिवाचार्य बैठ तुम बच्चों को समझाते हैं राजयोग सिखलाते हैं।वह हठयोग है ...योग सिखला न सकें।यह बेहद का बाप ही सतयुग का राज्य प्राप्त कराने राजयोग ...सिखाते हैं।तुम अब बाप के पास आये हो।वे जन्म बाई जन्म सन्यास लेते हैं।तुम 21जन्म ...सन्यास नहीं लेते होतुम जानते हो यह पुरानी दुनिया है।हम इसको ठोकर मारते हैं। ...शास्त्र ने दो प्रकार की यात्रा समझाई है।एक रूहानी यात्रा दूसरी जिस्मानी।सुप्रीम ...सबसे है मैं तुमको यात्रा पर ले जाता हूं।फिर तुम मृत्युलोक में चले आयेंगे।बाप है ...घण्डा।उनके बच्चे भी पण्डे ठहरे।तुम हो रूहानी पण्डे रूहानी यात्रा कराने वाले। ...यात्रा करने की बातें हैं।बच्चे अच्छी रीति धारणा कर समझाते हैं।कोई फिर ऐसे भी हैं ...योग पूरा नहीं रहता है।भल ज्ञान को धारणा अच्छी रहती है,योग नहीं ठहरता है। ...में माया इन्टरफेयर नहीं करती है।योग में माया इन्टरफेयर करती है।जैसे रेडियो में ...। करते है तो लड़ाई जब लगती है तो एक दो का आवाज सुनने नहीं देते हैं। फिट2 ...होता तो योग में भी माया इन्टरफेयर करती है।भारत में योग का नाम मशहूर है। ...योग किसने सिखाया? उन्हों ने कृष्ण भगवानुवाच कह दिया है।कृष्ण तो है सतयुग में। ...उनका नाम रूप देश काल बदलते2आए है अब अन्तिम जन्म।फिर इसमें बाप प्रवेश कर उनको ...बना रहे हैं।तुम जानते हो ब्राह्मण सो देवता बने फिर क्षत्रिय सो वैश्य सो शूद्र बने। ...यह समझाते हैं मैं जो भी तुमको नालेज देता हूं।वह पुनर्जन्म लोप हो जाती है।इस ...को सुनाता हूं।तो पहला नम्बर नदी भी ब्रह्मा।मेला लगता है ना।ब्रह्मपुत्रा और सागर ...ब्रह्म पुत्रा है बड़ी नदी। जो धारणा कर कराते हैं।बराबर भगवान भी बदलकर ...आते हैं। जो निराकार रूप है वह बदलकर साकार में आते है।ब्राह्मणों का सबसे ऊंच कुल है। ...उनका मुख वंशावली द्वारा ब्राह्मणों को ज्ञान दे देवी धर्म और क्षत्रिय धर्म की स्थापना ...।सतयुग त्रेता में और कोई धर्म होता नहीं।अब स्थापना हो रही है।रामचन्द्र को ...धनुष की निशानी दे दी है।बराबर युद्ध के मैदान में था।परन्तु पूरी जीत न पाने कारण e ...रह गया।इस कारण सर्ववंशी नहीं बन सका।प्रश्न उठता है राम सीता सतयुग में आते हैं? ...आते हैं परन्तु ना पास होते हैं,इसलिए जो पास हुए उनके आगे भरी ढोते हैं।राधे कृष्ण ...को भी नापास कहते हैं। जिन्होंने भी पढ़ाई पढ़ी वह सतयुग में तो जरूर आते हैं। ...यह लाखों मान का चिन्ता नहीं होता है। प्रजा तो बहुत बनती है ना।कोई ...भी हैं फिर चक्र लगाकर आ जाते हैं।जायेंगे कहां सभी एक ही है।परधाने अनेक है।तो ...आते रहेंगे। भागन्ती हो जाने वाले भी आयेंगे।सतगुरू की निंदा कराई है फिर भी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

2-10-98 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे-बच्चे – तुम आत्माओं को अपना-अपना रथ है, मैं हूँ निराकार, मुझे भी कल्प में एक ही बार रथ चाहिए, मैं ब्रह्मा का अनुभवी वृद्ध रथ उधार लेता हूँ"

प्रश्न:- किस निश्चय के आधार पर शरीर का भान भूलना अति सहज है?

उत्तर:- तुम बच्चों में निश्चय से कहा – बाबा, हम आपके बन गये, तो बाप का बनना माना ही शरीर का भान भूलना। जैसे शिवबाबा इस रथ पर आता और चला जाता, ऐसे तुम बच्चे भी प्रैक्टिस करो इस रथ पर आने-जाने की। अशरीरी बनने का अभ्यास करो। इसमें मुश्किल का अनुभव नहीं होना चाहिए। अपने को निराकारी आत्मा समझ बाप को याद करो।

गीत:- ओम् नमो शिवाए.....

ओम् शान्ति। शिवबाबा बच्चों को इस ब्रह्मा के रथ द्वारा समझाते हैं क्योंकि बाप बच्चों से ही पूछते हैं मुझे अपना रथ तो है नहीं। मुझे रथ तो जरूर चाहिए। जैसे तुम हर एक आत्मा को अपना-अपना रथ है ना। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को भी सूक्ष्म शरीर है ना। लक्ष्मी-नारायण आदि सब आत्माओं को शरीर रूपी रथ है जरूर, जिसको अश्व कहते हैं। हैं तो मनुष्य ना। मनुष्यों की ही बात समझाई जाती है, जानवरों की बातें जानवर जानें। यहाँ तो मनुष्य सृष्टि है तो बाप भी मनुष्यों को बैठ समझाते हैं। मनुष्य में भी जो आत्मा है, उनको बैठ समझाते हैं। डायरेक्ट पूछते हैं तुम हर एक को अपना-अपना शरीर है ना। हर एक आत्मा शरीर लेती और छोड़ती है। मनुष्य तो कह देते कि आत्मा 84 लाख जन्म लेती है। यह भूल है जबकि तुम 84 जन्म लेकर ही बिल्कुल फाँ हो गये हो (थक गये हो), कितने तंग हो गये हो। तो 84 लाख जन्मों की तो बात ही नहीं। यह हैं मनुष्यों के गपोड़े। तो बाप समझाते हैं तुम आत्माओं का भी अपना-अपना रथ है। मुझे भी तो रथ चाहिए ना। मैं तुम्हारा बेहद का बाप हूँ। गाते भी हैं पतित-पावन, ज्ञान का सागर..... तुम और कोई को पतित-पावन नहीं कहेंगे। लक्ष्मी-नारायण आदि को भी नहीं कहेंगे। पतित सृष्टि को पावन बनाने वाला अर्थात् पावन सृष्टि स्वर्ग का रचयिता, परमपिता परमात्मा बिगर कोई हो नहीं सकता। सुप्रीम फादर वही है। बाप जानते हैं तुम नम्बरवार पत्थरबुद्धि से पारस बुद्धि बन रहे हो। बाहर वाले मनुष्य यह नहीं जानते। तो बाप समझाते हैं मुझे भी जरूर रथ तो चाहिए ना। मुझ पतित-पावन को जरूर पतित दुनिया में आना पड़े ना। प्लेग की बीमारी होती है तो डॉक्टर को प्लेगियों के पास आना पड़ेगा। बाप कहते हैं तुम्हारे में 5 विकारों की बीमारी आधाकल्प की है। मनुष्य तो दु:ख देने वाले हैं। इन 5 विकारों से तुम बिल्कुल ही पतित बन गये हो। तो बाप समझाते हैं मुझे पतित दुनिया में ही आना पड़े ना। पतित को ही भ्रष्टाचारी कहा जाता है, पावन को श्रेष्ठाचारी कहेंगे। बरोबर तुम्हारा भारत पावन श्रेष्ठाचारी था, लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। जिसकी ही महिमा गाते हो सर्वगुण सम्पन्न..... वहाँ सब सुखी थे। यह तो कल की बात है। तो बाप कहते हैं मैं आऊं तो कैसे आऊं, किसके शरीर

b में आऊं? पहले तो मुझे प्रजापिता चाहिए। सूक्ष्म वतनवासी को यहाँ कैसे ले आ सकता? वह तो फरिश्ता है ना। उनको पतित दुनिया में ले आऊं — यह तो दोष हो जाए। कहेंगे मैंने क्या गुनाह किया? बाप बड़ी रमणीक बातें समझाते हैं। समझेगा वही जो बाप का बना होगा। घड़ी-घड़ी बाप को याद करता रहेगा।

बाप कहते हैं मैं आता ही तब हूँ जब धरती पर पाप बढ़ जाता है। कलियुग में मनुष्य कितने पाप करते हैं। तो बाप पूछते हैं — बच्चे, बताओ मैं आऊं तो किस तन में आऊं? मुझे चाहिए भी जरूर वृद्ध अनुभवी रथ। यह जो मैंने रथ लिया है, बरोबर इनके बहुत गुरु किये हुए हैं। शास्त्र आदि पढ़ा हुआ है। यह भी लिखा हुआ है ना कि बहुत पढ़ा हुआ था। अर्जुन की बात नहीं। मुझे कोई अर्जुन वा कृष्ण का रथ थोड़ेही

c चाहिए। मुझे तो चाहिए ब्रह्मा का रथ, उनको ही प्रजापिता कहेंगे। कृष्ण को तो प्रजापिता नहीं कहेंगे। बाप को तो ब्रह्मा का ही रथ चाहिए जिससे ब्राह्मणों की प्रजा रचे। ब्राह्मणों का है सर्वोत्तम कुल। विराट रूप दिखाते हैं ना। देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, बाकी ब्राह्मण कहाँ गये? यह किसको भी पता नहीं। ऊंच ते ऊंच है ब्राह्मणों की चोटी। चोटी हो तब ही समझा जाता है कि यह ब्राह्मण है। सच्ची-सच्ची चोटी तो तुम्हारी है। तुम राजऋषि हो, बड़ी चोटी वाले। ऋषि उनको कहा जाता जो पवित्र रहते हैं। तुम हो राजयोगी,

d राजऋषि। राजाई के लिए तपस्या कर रहे हो। वह मुक्ति के लिए हठयोग की तपस्या करते हैं, तुम जीवनमुक्ति, राजाई के लिए राजयोग की तपस्या कर रहे हो। तुम्हारा नाम ही है शिव शक्ति। शिवबाबा तुम्हें रीइनकारनेट करते हैं। तो तुम फिर से भारत में जन्म लेते हो। जन्म लिया है ना। कोई-कोई ने भल जन्म लिया है परन्तु समझते नहीं कि हम शिवबाबा के बने हैं, उनके पास जन्म लिया है। अगर ऐसा समझें तो शरीर का भान बिल्कुल ही निकल जाना चाहिए। जैसे शिवबाबा निराकार इस रथ में है, तुम भी अपने को निराकार आत्मा समझो। बाप कहते हैं — बच्चे, मुझे याद करो। अब वापिस घर चलना है। तुम तो पहले नंगे थे फिर देवी-देवता शरीर लिया, फिर क्षत्रिय शरीर, फिर वैश्य शरीर, फिर शूद्र शरीर लिया। अभी फिर तुम अशरीरी बनो। तुम मुझ निराकार को ही कहते हो — बाबा, अभी हम आपके बने हैं, हमको वापिस जाना है। देह को तो ले नहीं चलना है। हे आत्मायें, अब मुझ बाप को और स्वीट होम को याद करो। मनुष्य जब विलायत से लौटते हैं तो कहते हैं — चलो, अपने स्वीट होम भारत में चलें। जहाँ जन्म लिया था वहाँ लौटें। मनुष्य मरते हैं तो जहाँ जन्म लिया था उनको वहाँ ले जाते हैं। समझते हैं भारत की मिट्टी का बना हुआ है तो वह मिट्टी भारत में ही छोड़ें।

बाप कहते हैं मेरा जन्म भी भारत में है। शिव जयन्ती भी मनाते हो। मेरे नाम तो

e ढेर रख दिये हैं। कहते हैं हर-हर महादेव, सबके दुःख काटने वाला, वह भी मैं ही हूँ, शंकर नहीं है। ब्रह्मा सर्विस पर हाजिर है। और फिर जो स्थापना करते हैं वही विष्णु

f के दो रूप से पालना करेंगे। मुझे प्रजापिता ब्रह्मा जरूर चाहिए। आदि देव का बरोबर मन्दिर भी है। आदि देव किसका बच्चा है? कोई बताये। इस देलवाडा मन्दिर के जो ट्रस्टी लोग हैं वह भी यह नहीं जानते कि आदि देव है कौन? उनका बाप कौन था?

PDF copyright OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

आदि देव प्रजापिता ब्रह्मा है, उनका बाप है शिव। अब जिनका मन्दिर है उनके आक्यूपेशन को नहीं जानते और बने हैं ट्रस्टी। जगतपिता, जगत अम्बा का यह यादगार मन्दिर है। इस आदि देव ब्रह्मा के रथ में बाप ने बैठ ज्ञान सुनाया है। कोठरी में सब बच्चे बैठे हैं। सभी का मन्दिर तो नहीं बनायेंगे। मुख्य है 108 की माला, तो 108 कोठरियां बना दी हैं। 108 की ही पूजा होती है। मुख्य है शिवबाबा फिर ब्रह्मा-सरस्वती युगल। वह शिवबाबा है फूल। उनको अपना शरीर नहीं है। ब्रह्मा-सरस्वती को अपना शरीर है। माला शरीरधारियों की बनी हुई है। सब माला को पूजते हैं। पूजकर पूरा करेंगे फिर शिवबाबा को नमस्कार करेंगे, माथा झुकायेंगे क्योंकि उसने इन सबको पतित से पावन बनाया है इसलिए पूजी जाती है। माला हाथ में ले बैठ राम-राम कहते हैं। परमपिता परमात्मा के नाम का किसको पता नहीं है। शिवबाबा है मुख्य फिर प्रजापिता ब्रह्मा और सरस्वती भी मुख्य हैं। बाकी ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ जो-जो पुरुषार्थ करते रहते हैं उन्हों के नाम होंगे। आगे चल तुम सब देखते रहेंगे। जब पिछाड़ी होगी तब तुम यहाँ आकर रहेंगे। जो पक्के योगी होंगे वही रह सकेंगे। भोगी तो थोड़ा ठका सुनने से ख़त्म हो जायेंगे। कोई का आपरेशन देखने से भी मनुष्य अनकॉन्शस हो जाते हैं। अभी पार्टीशन में कितने मनुष्य मरे। वो लोग तो गपोड़े मारते रहते हैं कि हमने बिगर कोई लड़ाई राज्य ले लिया। परन्तु मरे इतने जो बात मत पूछो। यह है ही झूठी माया..... अभी सच्चा बाप बैठ तुमको सच सुनाते हैं। बाप कहते हैं मुझे रथ तो जरूर चाहिए। मैं साजन बड़ा हूँ तो सजनी भी
g बड़ी चाहिए। सरस्वती है ब्रह्मा मुख वंशावली। वह कोई ब्रह्मा की युगल नहीं है, ब्रह्मा की बेटी है। उनको फिर जगत अम्बा क्यों कहते हैं? क्योंकि यह मेल है ना, तो माताओं की सम्भाल के लिए उनको रखा है। ब्रह्मा मुख वंशावली सरस्वती तो ब्रह्मा की बेटी हो गई। मम्मा तो जवान है, ब्रह्मा तो बूढ़ा है। सरस्वती जवान, ब्रह्मा की स्त्री शोभती भी नहीं। हाफ पार्टनर कहला न सके। अभी तुम समझ गये हो। तो बाप कहते हैं मुझे इस ब्रह्मा का शरीर लोन लेना पड़ता है। उधार पर तो बहुत लेते हैं। ब्राह्मण को खिलाते
h हैं तो वह आत्मा आकर ब्राह्मण के शरीर का आधार लेगी। आत्मा वह शरीर छोड़कर आती है क्या? नहीं, यह तो बच्चों को समझाया गया है कि ड्रामा में साक्षात्कार की रस्म-रिवाज पहले से नूँध है। यहाँ भी बुलाते हैं। ऐसे नहीं कि आत्मा शरीर छोड़कर आयेगी। नहीं, यह ड्रामा में नूँध है। बाप के लिए तो यह रथ नंदीगण है। नहीं तो शिव के मन्दिर में बैल क्यों दिखाते? सूक्ष्म वतन में शंकर के पास बैल कहाँ से आया? वहाँ तो है ही ब्रह्मा, विष्णु, शंकर और वह युगल दिखाते हैं। प्रवृत्ति मार्ग दिखाते हैं। बाकी वहाँ जानवर कहाँ से आया? मनुष्यों की बुद्धि कुछ भी काम नहीं करती, जो आता है सो कहते रहते। जिससे वेस्ट ऑफ टाइम, वेस्ट ऑफ एनर्जी होती है।

तुम कहते हो हम सो पावन देवता थे फिर पुनर्जन्म लेते-लेते हम पतित पुजारी बने हैं। आपे ही पूज्य, आपेही पुजारी। पूज्य और पुजारी कोई भगवान् नहीं बनता। उनको थोड़ेही 84 जन्म लेने पड़ते। माया मनुष्यों को बिल्कुल पत्थरबुद्धि बना देती है। हम सो का अर्थ यह नहीं कि हम आत्मा सो परमात्मा हैं, नहीं। हम सो ब्राह्मण, सो देवता बनेंगे।

PDF compressed with OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

पुनर्जन्म लेते आयेंगे। कितनी अच्छी समझानी है। बाप कहते हैं मैंने जिसमें प्रवेश किया है, इसने बहुत गुरु किये, शास्त्र पढ़े हैं, जन्म भी पूरे 84 लिए हुए हैं। यह नहीं जानता, हम तुमको इन सहित बताता हूँ। ब्रह्मा को भी बतलाता हूँ। सदैव भी तो सवारी नहीं कर सकता हूँ। ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मणों को बतलाता हूँ। मुझे रथ भी चाहिए ना। तुम बच्चे याद करते हो और मैं आ जाता हूँ। मुझे तो सर्विस करनी है तो श्री श्री शिव की मत से भारत पावन बनता है। नर्कवासियों को श्री श्री का टाइटिल देना रांग है। आगे श्री नाम नहीं था। अभी तो सबको श्री अर्थात् श्रेष्ठ बना दिया है। श्री श्री तो है शिवबाबा। फिर सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर फिर श्री लक्ष्मी-नारायण। यह समझने की बातें हैं। नॉलेज बड़ी मज़े की है। परन्तु कोई-कोई पढ़ते-पढ़ते रफू-चक्कर हो जाते हैं। माया हाथ छुड़ा देती है। दुकान भी नम्बरवार हैं। बड़ी दुकान में जरूर अच्छे सेल्स मैन होंगे। छोटे-छोटे में कम होंगे। तो बड़ी दुकान पर जाना चाहिए जहाँ महारथी हों। माताओं को तो टाइम बहुत रहता है। पुरुषों को धंधा आदि करना है तो बिज़ी रहते हैं। माताएं तो फ्री हैं। खाना पकाया बस। वह तुम पर फिर रंग डालते हैं। सुनते हैं ब्रह्माकुमारियों पास जाने से विष बंद हो जायेगा तो रोकते हैं।

शिवबाबा ऐसी तिरकनी (फिसलने वाली) चीज़ है जो घड़ी-घड़ी भूल जाती है। बाप बिल्कुल सहज रास्ता बताते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप भी कट जायेंगे और मेरे पास भी आ जायेंगे। याद नहीं करेंगे तो पाप भी नहीं कटेंगे और साथ भी नहीं ले जाऊंगा। फिर सजा खानी पड़ेगी। भक्ति मार्ग में छांछ पीते आये। मक्खन तो तुमने सतयुग-त्रेता में खाकर पूरा कर दिया। बाकी पीछे छांछ रह जाती है। छांछ भी पहले अच्छी मिलती फिर पानी मिलता है। सतयुग-त्रेता में घी दूध की नदी बहती है। अभी तो घी कितना महंगा हो गया है। अच्छा!

मात-पिता बापदादा का मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- राजऋषि बन तपस्या करनी है। पूज्यनीय माला में आने के लिए बाप समान सर्विस करनी है। पक्का योगी बनना है।

२- नॉलेज बड़ी मज़े की है, इसलिए रमणीकता से पढ़ना है, मूँझना नहीं है।

वरदान:- अपने मस्तक बीच सदा बाप की स्मृति इमर्ज रखने वाले मस्तकमणि भव

मस्तकमणि अर्थात् जिसके मस्तक में सदा बाप की यादें रहे, इसी को ही ऊंची स्टेज कहा जाता है। अपने को सदा ऐसी ऊंची स्टेज पर स्थित रहने वाली श्रेष्ठ आत्मा समझ आगे बढ़ते रहो। जो इस ऊंची स्टेज पर रहते हैं वह नीचे की अनेक प्रकार की बातों को सहज पार कर लेते हैं। समस्यायें नीचे रह जाती हैं और स्वयं ऊपर हो जाते। मस्तकमणि का स्थान ही ऊंचा मस्तक है इसलिए नीचे नहीं आना, सदा ऊपर रहो।

स्लोगन:-

आज्ञाकारी बनो तो बापदादा के दिल की दुआयें प्राप्त होती रहेंगी।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

27-2-74 प्रातःमुरली ओमशान्ति "पिता श्री" मिलें बाबा याद करें

बैठे2मीठे2बच्चों को रूहानी बाप समझाते हैं।पढ़ते भी हैं।समझाते भी हैं।पढ़ाने के रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त का राज़।और समझाते हैं कि सर्वगुण सम्पन्न बनो।देवी गुण धारण करो।याद करते2तुम सतोप्रधान बन जावेंगी।तुम जानते हो इस समय यह तमोप्रधान सृष्टि है।सतोप्रधान थी सो 5000वर्ष बाद फिर अब तमोप्रधान बनी है।यह है पुरानी दुनिया सब के लिए कहेंगे न।वा तो नई दुनिया में थे या शान्तिधाम में थे।तो बाप रूहों को ही बैठ समझाते हैं कि रूहानी बच्ची अब अपने को आत्मा से भी बाप को याद करो।सतोप्रधान जरूर बनना है।बाप को याद करना है।बाप से वर्सा लेना है।लौकिक बच्चे भी याद करते हैं न।जितना बड़े होते जाते हैं हद का वर्सा पाने के हकदार होते रहते। तुम हो बेहद बाप के बच्चे।बाप से बेहद का बहद वर्सा लेना है।अभी अन्तिम जन्म है नहीं।यह तो तुम्हें समझ गये हैं यह विश्व की यूनिवर्सिटी है।सब मनुष्य मात्र को पार पहुंचना है बेहद के सुख धारण करने हैं।अभी यह पुरानी दुनिया चेन्ज होनी है।जो अब तमोप्रधान है वह फिर सतोप्रधान होगी।पक्के जानते भी हैं इस समय हम बेहद बाप से बेहद सुख का वर्सा ले रहे हैं।लौकिक सम्बन्धियों से न कुछ पढ़ना है न उनके मत पर चलना है।एक को ही मत पर चलना है।रूहानी बाप की मत पर चलना है।इस याद की यात्रा से ही तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान होती जाती है।सतोप्रधान बनना है जरूर। फिर सतोप्रधान दुनिया में भी जाना है।तुम्हारी समझ में आता है हम ब्राह्मण हैं।हम बाप के बने हैं पढ़ रहे हैं।अब मिक्स नहीं करनी है।पढ़ना है।बच्चे पढ़ने से ज्ञान कहा जाता है।मीत अलग है।बेहद के बाप ज्ञान सुनाते भी हैं तुम ब्राह्मणों को।और कोई को पता भी नहीं कि ज्ञान सागर बाप जो टीचर भी है वह कैसे पढ़ाते हैं।बाबा टाण्डिस तो बहुत समझाते रहते हैं।नम्बरवन बात है बाप को बनाकर बाप का नाम बाला करो।सम्पूर्ण पवित्र भी बनना है।सम्पूर्ण योगी भी बनना है।यह है ही ईश्वरीय विद्यार्थी। भगवान बाप बैठ पढ़ाते हैं।उस ऊंच ते ऊंच बाप को याद करना है।है तो सैम्पल की बात।अपने को आत्मा समझो।जानते भी हम आत्मायें शान्तिधाम में निवास करती हैं।फिर यहां आती हैं पार्ट बजाने।पार्ट तो बुद्धि में बैठ गया।पुनर्जन्म में आते भी रहते हैं।नम्बरवार 84जन्म का पार्ट हमने पूरा किया है। इस पढ़ाई को भी समझना है।पार्ट को भी समझना है।मूला को राज़ भी बुद्धि में है।जानते हो हर कल्प अविनाशी जन्म है।इसमें बाप मिला है।जब 84जन्म पूरे करते हैं तो फिर पुरानी दुनिया बदलती है तुम आओ इस वेश्य के द्वारा से, 84जन्मों की, इस पढ़ाई को जानते हो! 84जन्म लेते2अभी पिछाड़ी के जन्म में आकर ठहरे हैं।अभी हम पढ़ रहे हैं।फिर नई दुनिया में जावेंगे।नये2भी आते रहते हैं कुछ न कुछ निश्चय होता रहता है।कोई तो इस पढ़ाई में लग न जाते हैं।बुद्धि में है हम याद की यात्रा से सतोप्रधान बन रहे हैं।हम पवित्र बनते2उन्हीं के पास रहेंगे।बाप ने समझाया है तुम जितना याद करते हो तुम्हारी आत्मा [illegible] जाती है।बच्चों के हृदय में बाप बैठा है।पढ़ाते भी हैं।पढ़ने वाले भी यह भी जानते हैं इस दुनिया के सब कुछ छोड़ कर आये जो हम आत्मा से देखते भी हैं वह फिर देखने का है नहीं।यह सब खत्म हो जाने वाले हैं।बाप कहते हैं तुम पार्ट बजाते2पुनर्जन्म लेते आये हो।अब तुम्हारा यह अन्तिम जन्म है।और कोई भी इस वेश्य के द्वारा को नहीं जानते।तुम जानते हो रचता रचना, 84जन्मों का सारा चक्र बुद्धि में है। 84जन्म लेते2अभी न हम तमोप्रधान बने हैं।फिर बाप आ के सतोप्रधान बनाते।जैसे यह ईश्वरज्ञान।2मास का होता है नया हो फिर है 9मास हम पढ़ते हैं तुम्हें 3मास लगते भी हैं।याद से यात्रा अच्छी तरह पूरी नहीं हुई है।कुछ चीजें याद न आती रहती।फिर पुनर्जन्म [illegible] आत्मायें नयी2 आती रहीं।गरीब थे।मित्र सम्बन्धी आदि कुछ भी नहीं थे।अभी गरीब से अमीर हो जाते हैं तो फिर कोई सम्बन्ध नहीं रहता है।गर्भ में जाते हैं तो वो पता नहीं रहता।दूसरा जानते हैं इनके पेट में गर्भ है।अब आत्मा में [illegible] 46

आती जाती है। अभी तुम सारी दुनिया के मनुष्य मात्र के इस पार्ट बजाने को जानते हो कितने टेर मनुष्य हैं। बहुत बढ़ते जाते हैं। करोड़ मनुष्य हो गये हैं। सतयुग में तो कम बहुत थोड़े होते हैं। पुनर्जन्म लो। और धर्मों के मठ पन्थ डाल टालियां बढ़ते2 बहुत बड़ा हो गया है। आदि सनातन देवी देवता धर्म ही प्रायः लोप हो गया है। कम देवी देवता धर्म के थे तो सतोप्रधान थे। अब यह धर्म तमोप्रधान हो गया है। अब फिर कम से कम सतोप्रधान बनना है। कम से कम यह देवता थे। अब फिर हम यह बनने लिए पढ़ रहे हैं। जितना पढ़ेंगे पढ़ायेंगे उतना बहुतों का कल्याण होगा। बहुत प्यार से समझाना है। एरोप्लेन से पत्रे गिराते हैं। उसमें भी यही समझाते हैं। तुम जन्म जन्मान्तर गीता पढ़ते आये हो। गीता पढ़ना तो मीठा है न। ऐसे नहीं कि गीता पढ़ने से कोई मनुष्य से देवता बनते हैं। जब ड्रामा अनुसार बाप आते हैं वही आकर युक्ति बताते हैं सतोप्रधान बनने की। फिर सतोप्रधान पद मिल जाता है। तुम जानते हो इस पढ़ाई से हम यह बनने वाले हैं। यह है ईश्वरीय पाठशाला। भगवान् पढ़ाकर हमको नर से नारायण बनाते हैं। हम सतोप्रधान थे तो स्वर्ग था। अब तमोप्रधान बने हैं। यह नर्क है फिर चक्र फिरना है। बाप ही आकर मनुष्य से देवता विश्व का मालिक बनाने पुरुषार्थ कराते हैं। बाप को याद करना है और दैवी गुण धारण करने हैं। लड़ना झगड़ना नहीं है देवतायें कब लड़ते झगड़ते नहीं। तुमको भी यही बनना है। तुम तो ऐसे सतगुण सम्पन्न थे न। अब तमोप्रधान बने फिर ऐसा बनना है श्रीमत पर। जितना सतोप्रधान बनेंगे दैवी गुण भी अच्छे होते जावेंगे। अपने से पूछना है हममें कहां तक खूबी है। कहां तक निर्विघ्न है। यह तो सारा दिन याद रहना चाहिए न। परन्तु माया भुला देती है। तुम जानते हो बाप के साथ हम सारे विश्व के निजमत करते हैं। तुम सभी विश्व के निजमतगार हो। तुम्हारी बुद्धि में है। आगे तुम इन को पढ़ाई पढ़ते थे। अभी फिर से पढ़ाई बेहद के बाप द्वारा पढ़ते हो यह पुराना शरीर है जो अपने समय पर है छूटने का है। आप तो न छूटे, हम अपनी खुशी से इस शरीर को छोड़ें। हम इस में ही तो शरीर को छोड़, पुरानी दुनिया को भी छोड़, खुशी से जाते हैं। कोई बड़ा दिन होता है तो खुशी में बहुत नये कपड़े आदि पहनते हैं न। यहां तुम जानते हो हमको नई दुनिया में नया फर्स्ट क्लास शरीर मिलेगा। अभी हमको एक ही पुराने से पावन बनने का और सभी फिक्रातों से फारिग हो जाते हैं। यह सब खलासी हो जाना है फिर फिक्र काहे का रही। आधा कल्प मीठा मार्ग में हम फिक्र में रहे हैं। फिर आधा कल्प कोई फिक्रात नहीं रहेगी। बाकी थोड़ा सा समय है फिर एक भी फिक्र में न रहेंगे। यह सुख और दुख का खेल है न। सतयुग में है सुख कलयुग में है दुख। बाबा ने कल्पे रोज़ने में समझाया था तुम पूछ सकते हो सतयुग सुखधाम के वासी होंगे या कलयुगी दुखधाम के वासी हो। यह तुम नई बातें सुनाते हो। जरूर कहेंगे अभी तो दुखधाम के वासी हैं। बहुत प्यार से पूछा जाता है जो मनुष्य आपको समझें हम कहां के निवासी हैं। कहेंगे इनको ये प्रश्न पूछने की युक्ति तो बहुत अच्छी है। अल्लाह तो बड़ा आदमी है धनवान है मकान परन्तु है तो नर्कवासी न। स्वर्ग तो नई दुनिया को कहा जाता है। अभी कहेंगे पुरानी दुनिया है। यह प्रश्न बहुत अच्छे हैं पूछने के। छोटे में भी कितना है। तुम सुखधाम में हो या दुखधाम में हो। यह रौरव है या डेविल है। छोटा हो या डेविल हो? यह जरूर पूछना है। जरूर सतयुग को स्वर्ग छोटा बच्चा कहेंगे। कलयुग को नर्क डेविल बच्चा कहेंगे। तो पूछना है तुम सतयुगी छोटे बच्चे के वासी हो या कलयुगी डेविल बच्चे के वासी हो। अल्लाह तो धनवान है परन्तु नर्कवासी के कहने के हैं। अभी तुम्हारे में यह ज्ञान आया है। पहले यह बातें ख्याल में भी नहीं थीं। अभी तुम समझते हो हम संगमयुग पर हैं। जो कलियुग में हैं वह हैं पतित नर्कवासी। फिर पावन बनना है तब तो पुकारते हैं हे हे पतित पावन आओ। आकर हमको पावन बनाओ। यह भी समझाना है। तुम्हारे पास कितने टेर मनुष्य आते हैं। फिर भी छोटे में कोई हो पढ़ते हैं। जो है जैसा है मैं जो सिखलाता हूं : पर कोई विरला चलते हैं। प्रभातफेरी में भी सब नहीं

बच्चो इस सम्बन्ध को इस पढ़ाई से बन रहे हैं। सतयुग त्रेता..... यह है चक्र फिरता है न। तुम्हारी बुद्धि में सारा चक्र है। फिर से तुम सुखधाम नष्टोमोहा के मालिक बनते हो। सुखधाम में दुख की बात ही नहीं। अगर पूरा पढ़ेंगे नहीं तो पद भी कम पावेंगी। यह तो समझ की बात है। बेहद को पढ़ाई पढ़ कर बेहद का वर्सा ले लो। सिर्फ याद से आत्मा सतो प्रधान बन जाती है। बहुत मीठा बाप है उनसे सच्ची प्रीत रखो है कि नहीं, अच्छी तरह देखो। देह के सर्वसम्बन्ध छोड़ो। अरे बाबा तो अनेकबार मिल चुके हैं, अभी नहीं मिलेंगे। मेरे तो बहुत जन्मों के बाद समय तो फिर पुनर्जन्म लेते जाते हैं जब हम सतोप्रधान थे तब हम बड़ी आयु वाले थे। और बहुत थोड़े थे। दूसरा कोई धर्म ही नहीं था। हम ही थे। तुम्हारी आयु इस पुरुषार्थ से बढ़ती है। जितना याद करेंगे उतना आयु बढ़े गी। तुम्हारी आयु बहुत बड़ी थी, जब सतोप्रधान थे। फिर जितना2 नीचे उतरते आये आयु कम होती गई। रजो में उतरे आयु कम। फिर तमोप्र में आये तो और घोड़ा। जैसे नार होता है न। उसमें किटाणु कुछ से भरती पड़ते हैं फिर ऐसी चक्र लगाती है खाली होती जाती है। उतरते2 खाली हो जाती है। फिर नये सिर भरती हो। हमारा भी ऐसे होता है। ज्ञान चलाने से तुम भरते हो फिर पूरे खाली हो जाते हैं। अभी तुम पर रहे हो। भरते2 पूरे भर हो जावेंगे। यह देवता एक नार है। शुरू से पहले2 हम आते हैं फिर ज्ञान खत्म हो जाता है। उनको वैटरी से हो पैट हो जाती है। अभी हम सतोप्रधान बन कर जाते हैं फिर 84 जन्म लेते हैं। आधा कलप के बाद रावण राज्य शुरू होता है। रावण राज्य में सबसे पहले नम्बरवन। पीछे जो आयेंगी नम्बर में ही आयेंगी। पहले2 तुम स्वर्ग में जाते हो यह बाप से भक्ति का फल मिलता है। समझ जाता है इसने बहुत2 भक्ति की है तब ज्ञान भी लेते हैं। यह सब राज़ तुमको बाप ने समझाये हैं। तुमको फिर दूसरों को समझाना है। मनुष्यों को निन्दो गालियां देते रहते हैं। बाप कहते हैं आधा कल्प तुमने गालियां खाई हैं। अनेक प्रकार के पाप हो पाप किये हैं। अब बाप आया है। तुमको ज्ञान दे रहे हैं। तुम जानते हो हम फिर सुखधाम में जावेंगे। बाप जब आते हैं तब ही आकर पढ़ाते हैं। इतना समय तो पता नहीं था। पाप आत्मा बनते, हो गये हैं। पुण्य आत्मा भी बनते फिर पाप आत्मा कैसे बनते हैं। कोई सतयुग के निवासी होते, कोई कलयुग के निवासी होते कुछ भी पता नहीं था। अभी बाप ने समझाया है। शरीर को बाप से शक्ति भी कहा जाता है। उनमें लाइट हो है माइट भी है। लाइट में आते हो अर्थात जागते हो तो माइट आ जाती है। लाइट भी बड़ी हो जाती है। तुमको कहा जाता भी न मरो। कुछ भी हो एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। दुख की कोई बात ही नहीं। जैसा एक खेल हो जाता है। (सर्प का मिसाल) तो तुमने सतयुग से लेकर कलयुग तक पार्ट कैसे बजाया है यह रील में देख गया है। बाबा बाप भी है, शिक्षक भी है, गुरु भी है। यह सिर्फ तुम बच्चे ही समझते पुरुषार्थ अनुसार जानते हो। पुनर्जन्म का गोल समझाया है तुम किसने जन्म लेते हो। ब्राह्मण धर्म में तुम कितने जन्म लेते हो? (दो जन्म)। कोई को तीन जन्म भी तो लेते हैं न। समझो कोई शरीर छोड़ते हैं वह अक्षर तो ब्राह्मण बने के ले जाते हैं न। संस्कार ब्राह्मण के होने कारण फिर भी ब्राह्मण कुल में ही आ जावेंगे न। सच्चे2 ब्राह्मण कुल में आवेंगे। अब छोटे बच्चे होंगे तो भी वह आत्मा तो ब्राह्मण कुल की है न। थोड़ेफिर ब्राह्मण कुल में ही आ जावेंगे। ब्राह्मण कुल से शूद्र कुल में चौड़ेही जावेंगे। अभी तुम ब्राह्मण कुल की आत्मायें हो। ब्राह्मण कुल की आत्मायें तो पृथ्वी पर थोड़ी रहेंगी। नीचे फिर कैसे जायेंगे। ब्राह्मणपन के संस्कार तो ले जाते हैं न। कुछ हिसाब किताब है तो दो तीन जन्म भी ले सकते हैं। ब्राह्मण कुल में भी जन्म ले सकते हैं। लेना ही है। ब्राह्मण से फिर शूद्र थोड़ेही बनेंगे। संस्कार ज्ञान के ले जावेंगे तो वह पक्के होंगे। आत्मा तो फिर भी ब्राह्मण कुल की है न। ब्राह्मण कुल से तुमको ब्राह्मण कुल में ही जन्म लेना है या फिर देवता कुल में। हिसाब किताब सब चुक्तू होना है न। दो तीन जन्म लेना होगा तो एक शरीर छोड़ दूसरा लेंगी। ब्राह्मण कुल में जरूर जावेंगी। आत्मा तो ब्राह्मण कुल की फिर देवी कुल में फिर क्षत्रिय

कुल में आवेगी। बेरोर की बात नहीं तुम सभी बाप के बन गये, अहमा के बाप को पहचान लिया तो बेरोर सन्तान हो न। फिर प्रजापिता ब्रह्मा के भी सन्तान हो। दूसरा तो कोई से सम्बन्ध है नहीं। तुम यह निश्चय हो गया हम शिव बाबा की सन्तान हैं फिर नई दुनिया में आने वाले हैं। देहद के बाप को इतना कोई क्या बात कोहेर्ड है। सुखधाम के मालिक तो बन जाते ही न। बड़े बाप को पहचान लिया तो बेड़ा पार है। अब नर्क से स्वर्ग तो जाना ही है। सदाय बेड़ा पार होना है। यह दुनिया ही बदलनी है। तुम सिर्फ ऊँच पद पाने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। यहां तुम बच्चे आते हो रिफ्रेश होने लिए। यह सुनकर फिर एकान्त में घूमने चले जाना चाहिए। विचार सागर मन्थन करो और बाप को याद करो। 84 के चक्र को भी याद करते रहो। यहां तो कोई गोरखधन्धा आदि है नहीं। इसलिए मधुबन का नाम मशहूर है। पवित्र बनने लिए चला जाना चाहिए एकान्त में। इस दुनिया का जैसे पता ही नहीं लगाता। जैसे वानप्रस्थी लोग होते हैं तुम भी वानप्रस्थी हो। वाणी से परे जाने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। इस समय सभी मनुष्य मात्र जो भी हैं सब को वापिस जाना है मूलवतन। हम हैं ही मूलवतन निवासी। फिर यहां पार्टधारी हम बनते हैं। सारा खेल तुम्हारी बुद्धि में है। और कोई को भी यह ज्ञान है नहीं। यह तो सब है भक्ति। यह है ज्ञान। अब अविनाशी होना है। हमको वापिस जाना है खुशी से। सतोप्रधान बनना है। फिर हम सतोप्रधान दुनिया का मालिक बन जायेंगे। याद अल्फ की यात्रा ही है मुख्य जिससे ही सतोप्रधान बनेंगी। यहां तो तुम्हारी अवस्था बहुत अच्छी हो सकती है। यहां तुम बहुत कमाई ले सकते हो। कितनी रुकावट है। तुम्हारा परिवार कितना छोटा है। फिर बुद्धि को पता रहता है। खुशी उनको होती जो कमातीस अवस्था पाने का पुरुषार्थ करते हैं। और फिर बाप से ज्ञान धनाते रहते हैं। तुम सबको यह पता रहता है। परमपिता परमात्मा हमारा बाप e है, टीचर भी है, सतगुरु भी है। सुप्रीम बनाते हैं न। मनुष्य मात्र में तो ज्ञान धारण ही नहीं है। सभी अनुसार भक्ति और ज्ञान का पार्ट चलता है। भक्ति में कितना उतरना। ज्ञान से है चढ़ना। तुम्हारी बुद्धि में इस सारे सृष्टि चक्र की नालेज विस्तार सहित है। रचता और रचना के आदि मध्य अन्त को तुम जानते हो। औरों को समझाने लिए तुम कितना माथा मारते हो। कितना खर्चा होता है। ब्राह्मणों का ही खर्चा है। ब्राह्मण ही समझते हैं ब्राह्मण ही खर्चा करते हैं। आपस में मिल जुल कितना खर्चा करते हैं। सभी मनुष्यों को यह ज्ञान समझावें। f एक गोला ऊपर उठने से सब शास्त्र छूटे हो गये। बाप कितना देते हैं तुम हमारी निन्दा करते। निन्दक बन पड़े हो। सतगुरु के निन्दक ठौर न पा सभी। ब्रेक्टिस गुरु लोग तो नीचे उतारते हैं। यहां ठौर की कोई बात है नहीं। सतगुरु ऊपर ठौर है ऊपर चढ़ने की। सद्गति दाता एक ही बाप है। बाकी सब हैं भक्ति मार्ग के। सभी शास्त्र आदि कितनेप हुये थे। अब समझते हैं यह तो भक्ति मार्ग के हैं। सभी तो हम बाप से यह पढ़ते हैं। सारा दिन यही सुमिरण करते रहो। यहां तुम जितना रिफ्रेश होंगी उतना घर में नहीं। बाप की याद में रह 'एक दो' को सावधान करना है। वाणी हम सभी आपको याद करते निकलो। यही श्रम करते रहो। यहां तुम बहुत अभ्यास कर सकते हो परन्तु माया करने नहीं देती। सारा दिन यही तात लगी रहे। बाप कहते हैं अब तो मत करो। यहां अच्छी रीति पक्के होकर फिर पुरुषार्थ करो और करावो। यह पढ़ाई है न। पहले नम्बर को हटाओ है अपने को अहमा सभी बाप को याद करना। यही मेहनत करनी चाहिए। ऐसे बात नहीं कर सकते हो। हल्का कर हटाना यह मेहनत करो। तो बहुत फायदा है। और है बहुत सहज। दिन में दो तीन बारी यह क्लास बसो। बाप को याद में बैठ जाओ। 84 के चक्र को फिरत करो। बाप और वर्से को याद करो। चित्र को देखते रहो हमको सभी को यह देवता बनना है। बाप हमको पढ़ाते हैं। जरूर देवता ये बनना है। मुक्तिधाम ब्रह्मलोक में जाना है। मुक्तिधाम ब्रह्मलोक में अब वैकुण्ठ जन्म है। यह अन्त है। इस लड़ाई के बाद फिर अमरलोक होगा। इगजेट (विशेष) तुम बतावो नहीं। समझाते रहते हैं। जल्दी भी हो सकता है। अच्छा रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बापदादा का याद प्यार और गुडमार्निंग। रुहानी बाप को रुहानी बच्चों के नमस्ते।

Scanned with CamScanner

8-8-93 प्रातःक्लास ओम् शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे – 21 जन्मों के लिए पुण्य का खाता जमा करना है, योगबल से पापों के खाते को भस्म करना है इसलिए अन्तर्मुखी बनो"

प्रश्नः- किस श्रीमत का पालन करने से वाणी से परे जाने का पुरुषार्थ सहज हो जायेगा ?

उत्तरः- श्रीमत कहती है – बच्चे, अन्तर्मुखी हो जाओ, बाहर से कुछ भी न बोलो । इस श्रीमत को पालन करेंगे तो सहज ही वाणी से परे जा सकेंगे । जितना याद करेंगे, स्वदर्शन चक्र फिरायेंगे उतना कमाई जमा होती जायेगी । याद के लिए अमृतवेले का समय बहुत अच्छा है । उस समय उठकर अन्तर्मुखी बन आत्म स्वरूप में स्थित होकर बैठ जाओ ।

गीतः- तूने रात गँवाई..... ओम् शान्ति ।

यह कौन समझाते हैं कि अन्तर्मुखी हो जाओ, बाहर से कुछ भी न बोलो, अपनी आत्मा के स्वरूप में स्थित होकर बैठो ? बाप बच्चों से कहते हैं मुख से कुछ भी बोलो नहीं । राम-राम आदि तो बहुत कहते आये परन्तु उस कहने से भी मनुष्य पावन नहीं बन सकते । मनुष्य पतित से पावन तब बन सकते जब पतित-पावन बाप की श्रीमत पर चलें । पतित-पावन कहने से बाप याद आता है । बाप कहते है कि तुम बरोबर पतित थे ना । अब तुम पावन बन रहे हो । सतयुग में कोई पतित होता नहीं । पांच हजार वर्ष पहले जब भारत पावन था तो एक ही धर्म था । बाप तो सुख की ही सृष्टि रचेंगे ना । भारत सुखधाम था । लक्ष्मी-नारायण, राम-सीता आदि के मन्दिर सतयुग-त्रेता की निशानी हैं । सतयुग में बरोबर लक्ष्मी-नारायण की डिनायस्टी थी । यही भारत था जिसमें सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी का राज्य चलता था । जो अब फिर से स्थापन हो रहा है । इसको कहा जाता है वर्ल्ड की हिस्ट्री-जाग्राफी । यह मनुष्य ही तो जानेंगे । मनुष्य नहीं जानते तो जानवर से भी बदतर कहा जाता है । बाप को जानने लिए कितने धक्के खाते हैं, परन्तु जान नहीं सकते । तुम बाप के बच्चे बने हो तो बाप अपना परिचय देते हैं । पहले परिचय नहीं था तो इसका परिणाम क्या हुआ ? आरफन, नास्तिक, निधन के बन जाते हैं । अभी तुम बाप के बने हो, बाप से वर्सा ले रहे हो । बड़ा भारी वर्सा है, 21 जन्म स्वर्ग की राजधानी मिलती है, कोई कम बात है क्या ! लक्ष्मी-नारायण को पांच हजार वर्ष हुआ राज्य करते । फिर से हिस्ट्री रिपीट होती है ।

बाप समझाते हैं – मेरी श्रीमत पर चलो, अन्तर्मुखी बनो, बाहरमुखी मत बनो । अब इस समय है घोर अन्धियारा । इनको रात कहा जाता है । अभी सवेरा आ रहा है । कलियुग अन्त को घोर अन्धियारा, सतयुग आदि को घोर सोझरा कहा जाता है । बाप कहते हैं मैं आता ही हूँ संगम पर जबकि सभी मनुष्य पतित हैं । अभी तुम बच्चों को सदा सुख का वर्सा देने आया हूँ । विनाश सामने खड़ा है । बहुत गई थोड़ी रही..... इसलिए अब जल्दी-जल्दी पुरुषार्थ कर बेहद के बाप से वर्सा लो, जैसे सब ले रहे हैं । सब पुरुषार्थी हैं । अब सबको स्वीट होम, वाणी से परे जाना है । वह है हम आत्माओं का घर, निर्वाणधाम । धाम में कोई एक नहीं रहते । जितनी अभी जीव आत्मायें हैं 550 करोड़, वह सभी शरीर छोड़ जायेंगे, अपने घर बाबा के पास । वह है निराकारी झाड़ । जैसे चित्र में भी झाड़ दिखाया जाता है । वह है हम आत्माओं का घर – शान्तिधाम । फिर हम आयेंगे सुखधाम । अभी 84 जन्मों का चक्र पूरा होता है,

b कलियुग के बाद सतयुग जरूर आयेगा ना । द्वापर के बाद कलियुग जरूर आयेगा । बाप कहते हैं — मैं कल्प-कल्प, कल्प के संगमयुगे आता हूँ, पुरानी दुनिया का विनाश कराता हूँ । जब तक नई दुनिया स्थापन हो जाए तब तक इस पुरानी दुनिया में रहना पड़े । जब तक नया मकान बन जाये तब तक पुराने मकान में बैठे रहते हैं ना । फिर जब नया बन जाये फिर पुराने को तोड़ा जाता है । यह भी पुरानी चीज हैं ना । इसके विनाश के लिए यह है महाभारत लड़ाई । बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं । आत्मा ही समझती है — जिस्मानी नॉलेज भी आत्मा सीखती है ना । आत्मा कहती है मैं प्रिन्सीपाल हूँ, सर्जन हूँ । आत्मा की नॉलेज न होने कारण देह अभिमानी हो जाते हैं । आत्मा ही संस्कार ले जाती है । तुम बच्चे समझते हो शिवबाबा हम आत्माओं को समझा रहे हैं । हम आत्मा यह पुराना शरीर छोड़ फिर नया जाकर लेंगी । अभी हम श्याम हैं फिर सुन्दर बनेंगे । सुन्दर से श्याम बनते हैं । 84 जन्म लग जाते हैं । फिर बाबा काम चिता से उतार ज्ञान चिता पर बिठाए गोल्डन एज का मालिक बना देते हैं । बेहद का बाप जरूर बेहद का वर्सा देगा ना । बाप तो ऊंच ते ऊंच हैं । कहते हैं बच्चों के लिए वैकुण्ठ की सौगात लाये है । हथेली पर बहिश्त लाया हूँ । सेकेण्ड में तुम साक्षात्कार कर लेते हो । कितने ढेर

c ब्रह्माकुमार-कुमारियां हैं । जरूर ब्रह्मा के बच्चे हैंऔर शिवबाबा के पोत्रे हैं । तुम कहते हो हम शिवबाबा से वर्सा लेते हैं । वही सर्व का सद्गति दाता है । राजयोग सिखलाते हैं । निराकार कैसे सिखलायें, इसलिए आरगन्स द्वारा पढ़ाते हैं । सृष्टि चक्र की नॉलेज देते हैं । जिसको परम आत्मा, सुप्रीम सोल कहते हैं उसकी ही सारी महिमा है । ज्ञान का सागर, पतित-पावन वह है तो जरूर आना पड़े । तुमको भी मास्टर सुप्रीम अथवा पावन बनाते हैं । वह है बेहद का बाप जिसको सभी भक्त बुलाते हैं । सभी भक्तों का बाप वह भगवान है — परमपिता परमात्मा । अगर उनको सर्वव्यापी कह देते तो फिर वर्सा कैसे मिलेगा ? मनुष्य को भगवान नहीं कह सकते । कृष्ण को भी दैवीगुणधारी मनुष्य कहा जाता है, वह है फर्स्ट प्रिन्स । सभी उनको झूले में झुलाते हैं । शिवबाबा को कभी झुलाते नहीं होंगे । क्योंकि वह कभी बच्चा बनता ही नहीं । यह तो साक्षात्कार कराते हैं समझाने के लिए — हम तुम्हारा बच्चा हूँ, तुम हमको अपना वारिस बनायेंगे, बलिहार जायेंगे तो मैं भी बलिहार जाऊंगा । बलिहार जाते हो तो जैसे मैं तुम्हारा बालक हो गया ।

मनुष्यों में कितनी अन्धश्रद्धा है जहाँ तहाँ माथा टेकते रहते हैं इसको कहा जाता है गुड़ियों की पूजा । नवरात्रि में बहुत गुड़ियां बनायेंगे । उनके आक्यूपेशन का किसको पता नहीं है । 4-6 भुजा वाली देवी थोड़ेही होती है और फिर तलवार आदि दे देते हैं । देवतायें हिंसक थोड़ेही होते हैं । शास्त्रवादियों ने उन्हें भी हिंसक बना दिया है । नेपाल में भी काली को पूजते हैं फिर ऐसे है थोड़ेही । मम्मा ऐसी काली जीभ

d वाली है थोड़ेही । मनुष्य तो मनुष्य ही होता है । ब्रह्मा, विष्णु, शंकर हैं सूक्ष्मवतनवासी । बस, और कोई चीज ही नहीं है फिर 8-10 भुजा वाले कहाँ से आये ! यह सब भक्ति मार्ग के अलंकार बनाते हैं । पैसा कमाने के लिए कुछ तो चाहिए ना । फिर किस्म-किस्म के चित्र बैठ बना देते हैं । वहाँ ही देखो सुन्दर कृष्ण का मन्दिर, वहाँ ही सांवरे कृष्ण का मन्दिर । कारण तो चाहिए ना । कितनी अन्धश्रद्धा है ! अब भक्ति मार्ग खत्म हो ज्ञान मार्ग जिंदाबाद होता है । बाकी समय तो थोड़ा है, सबको मरना तो जरूर है । पुत्र-पोत्रे वारिस बनने नहीं हैं । वहाँ तुमको यह ज्ञान ही नहीं रहेगा कि संगम पर हमने राजाई के लिए

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

यह पुरुषार्थ किया था । वहाँ तो पवित्र सृष्टि चल पड़ती है । यहाँ तुम जानते हो कि बरोबर हम बाबा की राजधानी के हकदार हैं । वहाँ यह पता नहीं रहेगा कि कौन-से कर्म किये थे, कैसे बनें – यह सब भूल जाता है । वहाँ पतित होते ही नहीं, जो पावन बनने के लिए गुरु की दरकार पड़े । बाप पैर धोकर बच्चों को तख्त पर बिठाते हैं । गुरु चाहिए सद्गति के लिए । वहाँ तो है ही सद्गति । गुरु की दरकार ही नहीं । बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो, देह अभिमान में न रहो । मैं आत्मा अभी डॉक्टर के रूप में हूँ, मैं आत्मा मजिस्ट्रेट हूँ फिर यह शरीर छोड़ने के बाद पता नहीं क्या बनूँगा ? हम इस शरीर द्वारा पढ़ते हैं । आत्मा ही इन आरगन्स द्वारा पढ़ती है, आत्मा ही सुनती है – यह समझने की बातें हैं, न कि दन्त कथायें हैं ।

बाप कहते हैं यह सारी दुनिया कब्रिस्तान होनी है । अब जागो, नहीं तो भंभोर को आग लगने के समय हाय-हाय करेंगे । परन्तु कुछ भी कर नहीं सकेंगे, काल खा जायेगा, त्राहि-त्राहि करके रह जायेंगे । सजायें भी बहुत खायेंगे । अभी हमें पापों का खाता ख़लास कर पुण्य के खाते को जमा करना है । नयेसिर 21 जन्मों के लिए जमा करना है । जमा होगा बाप को याद करने से । पुराना खाता चुक्तू हो जाना चाहिए । ज्ञान कितना सहज है ! तुम्हारी रोज कितनी कमाई होती है ! जितना जो याद करते हैं, e स्वदर्शन चक्र फिराते हैं तो अथाह कमाई करते हैं, अनगिनत । वहाँ कोई गिनती थोड़ेही होती है । अभी झोपड़ियों में बैठे हैं फिर महलों में बैठेंगे । फ़र्क तो रहता है ना – झोपड़ी और महल में । ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया स्थापन हो जायेगी तो पुरानी दुनिया का विनाश हो जायेगा । अभी की बात है ना । राजधानी की स्थापना हो जायेगी फिर जिसने जितना पुरुषार्थ किया सो किया फिर विनाश हो जायेगा । इसलिए अब गफ़लत नहीं करनी चाहिए । सवेरे उठकर याद में बैठ जाना चाहिए । जितना याद का चार्ट रखो उतना अच्छा है और फिर उतना ही ऊंच पद पायेंगे । शिवबाबा के गले का हार बनेंगे । दिल दर्पण में देखना है कि मैं लायक बना हूँ – लक्ष्मी-नारायण को वरने ? हम बाबा-मम्मा जैसी सर्विस करते हैं ? किस्म-किस्म के फूल हैं । यह बागवान बाबा का ह्यूमन गुलशन है । कहेंगे – देखो, कुमारका, मनोहर कितने अच्छे-अच्छे फूल हैं ! यह रतन ज्योत है । बाबा इस बगीचे को देखते फिर उस बगीचे में जाकर फूलों को देखते हैं । बागवान जांच करते हैं फूलों की, तो बच्चों को फालो करना चाहिए – नम्बर वन टू फूल कौन-कौन है ? ऐसा बनना चाहिए । 21 जन्मों के लिए राजाई पद पाना कोई कम बात थोड़ेही है ! अथाह सुख है । विश्व का मालिक बनना है । यह स्कूल है । उस जिस्मानी पढ़ाई के साथ यह रूहानी पढ़ाई करो । टीचर्स के हमेशा अच्छे मैनर्स होते हैं । ऑनेस्ट होते हैं । स्कूल मे अन्धश्रद्धा की बात नहीं । वहाँ बैरिस्टरी पढ़ते, इन्जीनियरिंग पढ़ते । यहाँ तुम राजाओं का राजा बनने के लिए पढ़ते हो । सन्यासी तो कह देते ईश्वर सर्वव्यापी है । बस, खेल ही खत्म । बेहद का बाप बच्चों को समझाते हैं – बच्चे, यह अन्तिम जन्म पवित्र रहो । तुम बहुत सर्विस कर सकते हो ।

वहाँ भी एज्युकेशन डिपार्टमेन्ट है । यह भी गॉडली एज्युकेशन डिपार्टमेन्ट है । तुम बच्चे हो f राजऋषि । वह तो घरबार छोड़ देते हैं । तुम घर में रहते सारी दुनिया का त्याग करते हो । तुम्हारी बुद्धि में अब नई दुनिया है, जो बाप ही बनाते हैं । इसलिए बाप कहते हैं तुम मुझे याद करो, यह पुरानी दुनिया g ख़लास हो जायेगी । यह रूहानी कॉलेज अथवा हॉस्पीटल भी बहुत बड़ा है, जिससे तुम एवरहेल्दी,

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

एवरवेल्दी बनते हो। घर-घर में तुम यह हॉस्पीटल अथवा कॉलेज खोल सकते हो। इसमें खर्चा कुछ भी नहीं। सिर्फ तीन पैर पृथ्वी के चाहिए। अच्छा !

मात-पिता बापदादा का मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार :-

1. *सवेरे-सवेरे उठकर याद में जरूर बैठना है, इसमें गफ़लत नहीं करनी है। पुण्य का खाता जमा करना है।*

2. *एम ऑब्जेक्ट को बुद्धि में रख अच्छे मैनर्स धारण करने हैं। रूहानी पढ़ाई जरूर करनी है। अन्तर्मुखी होकर रहना है।*

विशेषता:- प्योरिटी की पर्सनैलिटी और अथॉर्टी

पवित्रता का सम्पूर्ण रूप है – ब्रह्मचारी के साथ-साथ ब्रह्माचारी बनना। ब्रह्माचारी अर्थात् ब्रह्मा बाप के आचरण पर चलने वाले, जिसे ही फालो फादर कहा जाता है। क्योंकि स्थिति में शिव बाप के समान बनना है लेकिन आचरण वा कर्म में फालो ब्रह्मा बाप को करना है। पवित्रता का अर्थ है – सदा बाप को कम्पैनियन बनाना और बाप की कम्पनी में ही रहना। संगठन की कम्पनी, परिवार के स्नेह की मर्यादा, वह अलग चीज़ है। वह भी आवश्यक है। लेकिन आत्माओं की कम्पनी में रहते बाप की कम्पनी नहीं भूलना, तब पवित्रता की पर्सनैलिटी और अथॉर्टी वाले बन सकेंगे। नहीं तो समय पर बाप भूल जायेगा और शरीरधारी की याद आने से धोखा खा लेंगे।

निर्विघ्न रहना और निर्विघ्न बनाना ही यथार्थ सेवा है।

नोटः- जो भाई बहिन मधुबन में पत्र, ड्राफ्ट, चेक वा मनी आर्डर जो भी भेजते हैं तो साथ में अपनी पूरी एड्रेस क्लीयर अंग्रेजी अक्षरों में पिन कोड नम्बर सहित जरूर लिखकर भेजें। कईयों की एड्रेस क्लीयर लिखी हुई न होने के कारण जवाब देने में मुश्किल होता है। कोई तो एड्रेस लिखते ही नहीं हैं। कोई की अधूरी इनकम्पलीट एड्रेस होती है। कोई की राइटिंग बिल्कुल पढ़ने में नहीं आती। सो इस बात का ध्यान जरूर दें। हर बार पत्र में अपनी एड्रेस जरूर भेजें।

नोट :- सेवाकेन्द्र पर रहने वाले सभी समर्पित भाई-बहनों के लिये 5 पेज़ का एक चार्ट दो मास लिखने के लिये अलग पोस्ट से भेजा गया है। कृपया वह चार्ट दो मास भरने के बाद मधुबन में भेज दें। दादी जी उसे देखेंगी।

PDF Compressed with COPY with optimize for ebook. Visit http://www.ilovepdf.com/pdf_compressor

प्रन्त० क्लास।। 18-9-68 ओमशान्ति पितश्री शिव बाबा याद ६?

a ओमशान्ति। याद की यात्रा का कदम बढ़ाते रहो। बच्चे जानते हैं पुरुषोत्तम संगम युग की आयु बहुत थोड़ी है। 40वर्ष से अभी बाकी 8वर्ष रही है। आयु घटती जा रही है। हमको पहुंचना है बहुत दूर। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। 32वर्ष तो चला गया। यह पुरुषोत्तम संगम युग सब से हीरे जैसा है। मोस्ट वैल्युएबुल है। यह भूल न जाना है। बाकी समय है थोड़ा घर पहुंचने में। सतोप्रधान बन घर जाना है। और

b कोई सजा आदि न खावें। पास विथ आनर हो जाना है। बाप कोई जबरती मेहनत नहीं देते हैं, न कोई खर्चा है। न कोई मंदिर-मस्जिद वा पर्वशाला आदि बनानी है। यह भी समझते हो शिव बाबा तो है ही निराकार। उनको शरीर है नहीं। जो कुछ शिव बाबाके नाम पर देते हैं शिव बाबा फिर स्वयं बच्चों के ही काम में लगाते हैं। वह कोई अपने शान्तिधाम में महल-माड़ियां तो नहीं बनावेंगे। और तो सभी हैं देह-धारी मनुष्य पैसे इकट्ठे करने वाले। यह कहां इकट्ठा करेंगे। अभी देहली में डायरेक्शन देते रहते हैं सर्विस के लिये बड़े2 म्यूजियम बनाओ तो शिव बाबा के नाम पर बनाते रहते हैं। ऐसे नहीं कि शिव बाबा को हाथ में देते हैं। जैसे मनुष्य ईश्वर अर्थ धर्मशाला वा हास्पीटल आदि बनाते हैं तो ईश्वर को कोई हाथ में थोड़ेही देते हैं। उनके नाम पर बनाते हैं। ईश्वर अर्थ दान-पुण्य करते हैं तो फिर दूसरे जन्म में अल्प काल क्षणभंगुर सुख मिलता है। क्योंकि यह दुनिया

c ही अल्प काल क्षण-भंगुर सुख की है। तो सुख भी अल्प काल का मिलेगा ना। यहां तो शिव बाबा डायरेक्ट है। बाप ने तुमको अपना परिचय भी दिया है जिसको कोई को भी पता नहीं। नई बात है ना। अभी याद की यात्रा तो कल्प पहले भी बाप ने समझाई थी। यह पुरुषोत्तम संगम युग तो जरूर होना चाहिए। यह शास्त्रों में तो लिखा नहीं है। पुरुषोत्तम संगम युग पर ही कनिष्ट पुरुष पुरुषोत्तम बनते हैं। यह लिखा न है। और जो भी धर्म स्थापक हैं सभी हैं शरीरधारी। बाकी यह धर्म स्थापन करने वाला है अशरीरी। इसीलिये फिर इनके बदली कृष्ण

d का नाम डाल दिया है। अभी कृष्ण कैसे नई दुनिया की स्थापना करेंगे। जब कि खुद ही नई दुनिया का प्रिन्स है। तो नई दुनिया कैसे स्थापन हुई सो बाप बताते हैं मैं स्थापना करता हूं। यह कृष्ण का अन्तिम 84वां जन्म है। जिसमें यह अच्छे कर्म कर यह (ल०ना०) बनते हैं। बाप तुमको भी अच्छे कर्म सिखलाते हैं। यह है ही विकारी दुनिया। नई दुनिया है निर्विकारी दुनिया। यह पुरानी दुनिया है विकारी। बाप कहते हैं अब दिन बाकी थोड़े हैं। संगम युग काफिलता समय बीत गया। अभी तो बच्चों को पुरुषार्थ करना बहुत है। बच्चे जानते हैं समय कैसे जा रहता है। इतने वर्ष, इतने मास, इतने घंटा, इतने मिनट सेकण्ड बीत गये। बाकी है 8वर्ष। लाखों वर्ष का तो कोई हिसाब निकाल न सके। लाखों वर्ष कह देने से मनुष्य घोर-अंधियारे में पड़े हैं। बाप कहते हैं बच्चे यह पुरुषोत्तम संगम युग का समय बीतता जा रहा है। कलियुग तो गया। मनुष्यों की बुद्धि में है कलियुग अजन 40 हजार वर्ष पड़े हैं। वह अपनी विकारी चाल ही चलते रहते। अभी तुमको विकारी से निर्विकारी, पतित से पावन जरूर बनना है। अभी इस पतित दुनिया का विनाश सामने खड़ा है। अभी सभी से बुद्धि का योग हटाते जाओ। इन सभी को छोड़ अपने घर जाना है। बाप को याद करना है और पवित्र भी बनना है। टाईम बहुत थोड़ा है इसलिए गफलत छोड़ो। गफलत करने वाले ईश्वरीय सर्विस कर नहीं सकते। जब खुद अच्छे बने और को अच्छा बनावे। वरे तो जरूर बुरा ही बनावेंगे। कोई भी छी छी काम वा भूल आदि न होनी चाहिए। इसलिये कचहरी भी होती है। तुम अभी ऐसी दुनिया में जाते हो वहां कोई भूल आदि होती ही नहीं। क्योंकि रावण-राज्य ही नहीं। कराती है रावण। याद में न रहते हैं तब माया भूल कराती है। कितनी भूलें मनुष्यों से होती रहती हैं। देवताओं के आगे भी जाकर कहते हम जन्म-जन्मान्तर के पापी हैं। अथाह पाप किये हैं। उनको यह पता नहीं रहता कि कितने जन्म लिये हैं। सिर्फ कहते हैं मैं जन्म-जन्मान्तर के पापिन हूं। जहां भी जावेंगे, गंगा पर जावेंगे तो भी कहेंगे हमारे पाप काटना। जन्म-जन्मान्तर के पापिन हूं। देवताओं के मंदिर में जावेंगे, शिव के मंदिर में जावेंगे यह जरूर कहेंगे। तुमको तो बाप ने बताया है कि पहले-पहले [illegible]

PDF Generated on [illegible]

कोई ने 10 जन्म पाप तो जरूर किये हैं ना। रावण के राज्य में पाप जरूर होते हैं। जन्म ही पाप से होते। सन्यासियों का भी भ्रष्टाचार से जन्म होता है। भ्रष्टाचारी, बेठाचारी, किसको कहा जाता है यह भी वह समझती नहीं। समझते हैं सन्यासी पवित्र हैं, बड़ी बेठाचारी होंगे। बाप समझाते हैं उन्होंने तो घर बार छोड़ा, स्त्री को विषया और बच्चों को निर्धनका बनाकर जाते हैं। वह धर्म ही ऐसा है। यह भी न होते तो और ही गंदा बन जाते। फिर भी पवित्र तो रहते हैं ना। भारत के ही पवित्रता पर जमा हुआ। भारत जैसा पवित्र खण्ड और कोई होता ही नहीं। आया कल्प के पवित्र दुनिया उसमें भी सतयुग तो पूरा पवित्र कहेंगे। त्रेता में दो कला कम हो जाती है। सतयुग को कहेंगे फूलों का बगीचा। सतयुग से फिर कैसे त्रेता, द्वापर, कलियुग में आ किसने धर्म, कितने भ्रष्ट पास हुये। बच्चों ने हिसाब तो निकाला है ना। अभी संगम युग का हिसाब रहा हिसाब करेंगे तो बाकी पूंजी है 40 वर्ष की। वह भी समझ पास करेंगा जो रहा है। बच्चों के बड़ पुरुषार्थ में भी कितना रात-दिन का फर्क रहता है। मर्तबे भी नम्बरवार होते हैं ना। तुम संगम युग के ब्राह्मण हो। तुम में भी नम्बरवार हैं कोई कुछ भी सर्विस नहीं करते। कोई तो बहुत सर्विस कर रहे हैं। तन मन धन सेवा पर रहे हैं। औरों का मन भी लगा हुआ है, धन भी लगा देते हैं। बाबा से पूछते हैं बाबा कहेंगे जाये म्यूजियम आदि बनाओ। मैं क्या करूंगा। मुझे कोई घर आदि थोड़ेही बनाना है। मैं तो चला जाऊंगा। इनको भी यहां घर नहीं बनाना है जिसमें ममत्व रखे। ममत्व तो पट से मिटा दिया। अभी बच्चों का काम है बाप को पालना करना। यहां तो कुछ भी रहना न है। इसलिए गरीब अपना जमा करते रहते हैं। शिव बाबा हमें यह कहते हैं नई दुनिया के लिये। यह तो मृत्युलोक, पापात्माओं की दुनिया है। जो कुछ करते हैं उनका स्वर्ग तो है मिलता ही है। कल्प पहले जिसने जो किया है वह करते रहते हैं। कितना धन किया होगा। देहली में भी म्युजि बना रहे हैं। बापदादा में मिल-जुल कर सर्विस को बढ़ा रहे हैं। हिम्मते मर्दा मददे शिव बाबा। तुम शिव बाबा पास लेन देने हो। बाप बाबा फिर तुमको देते हैं। हिम्मते बच्चे ... तुम हिम्मत करो। बाकी जो मदद चाहे बाप से मंगा लो। तन मन धन सर्विस करते रहते हैं। पुरुषार्थ से समझा जाता है यह बेशक लायक हैं पास विथ आनर होने का। यह तो बिल्कुल नालायक है। भेजा खाकर थोड़ी टुकड़े ले लेंगे। पास विथ आनर जरा बिल्कुल नहीं कहेंगे। अपने को देखता है कमी में कोई खामी तो नहीं। बगुलों साथ कौवे लायक तो नहीं हैं जो पास कर सकेंगे। कौवे तो बहुत जमा करते हैं, कोई तो कुछ भी नहीं। मत सतयुग में कम तो जरूर होगा। भी विमान आदि तो होंगे। परन्तु मर्तबे में फर्क तो होता है ना। दुःख की दुनिया में भी गरीब साहूकार का फर्क है तो सुख की दुनिया में भी गरीब साहूकार का फर्क होगा। आगे अन्दर देखो हमारे बाबा की कितनी सर्विस है। बाप तो कहते हैं म्यूजियम अच्छा खासी यूनिवर्सिटी कम नहीं है। मकान आदि खड़ी भी तो करना है। पर बाबा कहते हमको क्या पड़ी है जो मकान आदि लेवें फिर इतना भरकर देना पड़े। फिर पड़ी रहती फिर मकान जरूरियत है से काम में आ जाये। रह न जाये। ऐसा छोड़ ही क्यों जो माया कर ले। कितना युक्ति से काम चलता रहता है कल्प2 के मिसल बच्चे कितना विजी रहते हैं। ख्याल होता है जल्दी तैयार हो जाये बहुतों का कल्याण करें। बाबा भी दिन प्रति दिन मल्टीप्लाई सहजदेते रहते हैं। बाकी और तो दुनिया में देख रहे हो। अभी ऐसा (नथिंग) कुछ नहीं है। बाप तो ऐसा बनाने आये हैं। बाप के भी कितना ख्याल करेंगे। देवीगुण धारण करनी है। किसको दुःख न देना है। छि छि। अक्षर मुख से न निकले। सतयुग में ऐसा होते ही नहीं। अभी बाप स्वर्ग में ले जाते हैं तो किचड़ा सब छोड़ दो। नहीं तो बहुत सजा खानी पड़ेगी। आत्मा को किचड़ा साथ तो स्वर्ग में जाना न है। या तो योगबल से खलास करना है या भोग भुगतनी है। बच्चों को समझानी मिलती रहती है। बाबा समझाते हैं यह कल्प पहले मिसल तुम्हारी चलन चलनी है। किसको भी दुःख न देना है। मुख्य है अक्षर। तिजरी के नयन भी है ना। वास्तव में है कर्म का तीसरा नेत्र। बाकी वह कथायें आदि तो सभी सुने हैं, कोई जानते तो नहीं। अभी सहज बाबा तुमको

सच्चे बातें सुनाते हैं। यह सत्य नारा की क्या कितनी बारी सुनी होगी। प्रेक्टीकल हो जाता है बाप में सारे के ज्ञान। यह सुनाते हैं। अभी सच्च2 बात तुम प्रेक्टीकल में सुन रहे हो। आपा कल्प तुम झूठी कथायें सुनते आये हो। अब सच्चे पर से नारा बनने की युक्ति बाप बताते हैं। यह नारा की जो सतोप्रधान थे यह फिर जन्म-मरण में आते2 तमोप्रधान बने हैं। फिर सतोप्रधान बनना है। शरीर तो हर जन्म में बदलते जाते हैं। कृष्ण नवेच कृष्ण की थोड़ेही हो सकता है। नाम रूप देश काल सो तभी बदलता है जो 5000वर्ष में फिर वर्ष, दिन मिनट सेकण्ड बदलते गये। अभी पुरुषोत्तम संगम युग के भी दिन बीतते जा रहे हैं। इसलिये अपना सुधार करते जाओ। यह तो बाबा जानते हैं जिन्हों ने कल्प पहले जितना सुधारा किया है उतना ही कर रहे हैं सर्विस करते रहते हैं तो सर्विस नहीं तो डिस सर्विस ही करते रहते हैं। फिर डिस सर्विस से भी ऊंच पद में आते। सर्विस क्या करनी है। किसको सुखधाम का मालिक बनाना। बेहद का बाप बैठ पढ़ाते हैं। उनको आप कोई तोल नहीं है। जैसे सन्यासियों को होता है। महल बनावे यह करें। शिव बाबा का तो यह एक ही देह पलट (रथ) मिल गया है। खुद कहते हैं मैं सबसे पुराना शरीर लेता हूं क्योंकि इनको ही फिर पहले नम्बर में जाना है। मैं इस रथ तन में प्रवेश करता हूं। पहले नम्बर में भी यह देह== था। फिर गिर कर यह बना है। फिर मैं ने ही इनका नाम अहमा रखा है। इनको मैं ने शूद्र से ब्राह्मण बनाया। यही जो नम्बरवन में था यह अभी लास्ट में है। 84 जन्म लेते आये। फिर इनके वानप्रस्थ अवस्था में आकर मैं प्रवेश करता हूं। यहां शरीर तो कोई मिल न सके। आना भी भारत में ही है। कृष्ण की गोरा और फिर सांवरा बनता है। जो चिड़ा पर बैठ गोरा बनते, काम चिता पर सांवरा बनते हैं। तो फिर इनको ही बैठ पहले नम्बर में जाना है कितना सहज रीति समझाते हैं। समझने वाले झट समझ जाते हैं। आगे चल फिर भी जल्दी2 समझते जायेंगे। मीठे पिता पर आवेगा। अभी तो अज्ञान नींद में है। फिर जब== जागेंगे। तो बाप समझाते हैं मीठे2 बच्चों अपने को आत्मा समझो। पुराने की निशानी है सर्विस कर आप समान बनाना। अपनी उन्नति करनी चाहिए। कई बच्चे हैं जिनको उन्नति का तो ख्याल ही नहीं आता। बुद्धि बाप तरफ ठहरती ही नहीं। बेहद का बाप आकर बेहद का नालेज देते हैं। यह अनादि बना बनाया ही रहता है। 5000वर्ष के बदली फिर लाखों वर्ष कह देते हैं। बाप कहते हैं तुमने मेरा कितना अपकार किया। फिर भी मैं आकर तुमसे उपकार करता हूं। तुमने बहुत आ किया है। कल तो गली देते थे कच्छमच्छ अन्धार, कुत्ते बिल्ली, पत्थर पित्थर सब मैंकह देते थे। अभीतो तुम ने यह कह देवो, कहेंगे? नहीं। कितना रंग तुम समझते थे। यह है ही अनसर्टियस दुनिया। वह सर्टियस दुनिया है। वहां सर्टियस न बोलने वाले हैं। अभी बाप कहते हैं मैं तुमको सच्च बताता हूं। या भक्ति मार्ग में तुम ने कुछ सुना है? बाप जो सुनाते हैं वह उल्टा कुछ ही होगा। भक्ति मार्ग में तो रावणकी आसुरीबुद्धि बन है फिर ईश्वरीय बुद्धि तुम ने कैसे बनते हैं। आसुरी बुद्धि से तुम वाम मार्ग में चले गये। देवताओं से पतित होगिराया है वाममार्ग में गये। फिर उनको देवता नहीं कहा जाता। अभी यह है मनुष्यों की दुनिया। वो देवताओं की दुनिया अर्थात् देवी गुण वाले। यहां हैं आसुरी गुण वाले। यह ईश्वर बाप बैठ पढ़ाते हैं। कृष्ण को ईश्वर थोड़ेही कहेंगे। यह भी भूल है। भक्ति मार्ग में मनुष्य कितने भूलें करते हैं। बाप कहते हैं पास हुआ यह तो फिर भी होगा ही ऐसे नहीं सोचा करनीहै। तोबा की तो बात ही नहीं। बाप ने सन्यासियों के 63 जन्म भक्ति के हैं। यहां तो जन्म ही थोड़े होते हैं। क्योंकि योगी है। अभी मैं तुमको इस रथ द्वारा पढ़ा रहा गायन भी है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। किसकी? नई दुनिया, स्वर्ग की। तुमकोरेगा बनना है। काम थोड़ा टाईम नये2 को इतनी मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। तुमको जितनी करनी पड़ती है। क्योंकि इस दिन प्रति दिन पाप खाते निकलते रहते हैं। दो चार दिन में ही एकदम बुद्धि में बैठ जाता है। आदि आ जाते हैं। इतना समय गंवाये दिया। अभी तो फिर बहुत पुरुषार्थ करना है। याद की यात्रा का ही मेहनत करना है। नोट आने आ जाता है तो तुम बहुत तीखी मेहनत करने लग पड़ेंगे। जितना जोमेहनत करेंगे अच्छा पद

PDF compressor Free Version Purchase from www.pdfcompressor.com to remove this message. Copyright © CVISION PDFCompressor

तुम जीवनमुक्ति राजाई ले प्राप्ती के लिए है राजयोग तपस्या कर रहे हो। इसको कहा राजयोग तपस्या कहा जाता है। सन्यासी हठयोगी यह राजयोग सिखा न सके। राजयोग में दोनों चाहिए यह है तो निवृत्ति मार्ग वाले। इनको ले विश्व बना सकेंगे फिर चले जाते हैं। तुम्हारा नाम ही है शिव शक्ति पिरनलरनेन शिव शक्ति पिरनलरनेट कहते हैं। तो तुम भी फिर से भारत में जन्म लेते हो। जन्म लिया है न। लेई2ने भी जन्म लिया है परन्तु समझते नहीं कम शिव बाबा के बने हैं। उनके पास जन्म लिया और क्या समझते तो शरीर का भान बिल्कुल ही निकल जाना चाहिए। जैसे शिव बाबा निराकार इस रथ में है तुम भी अपने को निराकार आत्मा समझो। बाप कहते हैं बच्चे मुझे याद करो। अब तुमने वापिस चलना है। तुमतो पहले नंबर में थे फिर तुमने देवी देवता शरीर लिया। फिर क्षत्रिय शरीर, फिर वैश्य शरीर फिर शूद्र शरीर लिया। अभी फिर तुम शूद्रशरीरी बनो। तुम मुक्त निराकार से हो कहते हो बाबा हम आपके बने हैं। हमने वापिस जाना है। देह को तो ले नहीं जाना है। हे आत्मायें अब मुक्त बाप के और स्वीट होम को याद करो। मनुष्य जब विलायत से लौटते हैं तो कहते हैं चलो अपने स्वीट होम भारत में चले जहां जन्म लिया था वहां लौटें। मनुष्य मरते हैं तो वहां जन्म लिया था यहां उनको ले जाते हैं। समझते हैं भारत तो मिट्टी का बना हुआ है। तो वह मिट्टी भारत में ही छोड़ें। अब बाप कहते हैं मेरा जन्म तो भारत में है। शिव जयन्ती को मनाते हो। मेरे नाम तो बैठ रख दिये हैं। जो2 मैंने नाम लिये हैं वह नाम रख दिये हैं। कहते हैं ब्रह्मा बैठ विष्णु शंकर देव महादेव। सभी के दस हाथ दिखाते हैं। वह भी मैं ही हूँ। मैं ही सभी को बैठ मेरा मनुष्य सृष्टि रूपी बगीचा है। ब्रह्मा को सर्विस पर डालिए है। ब्रह्मा को सर्विस पर डालिए है। और फिर जो स्थापना करते हैं। यह फिर विष्णु के दो रूप से पालना करेंगे। मुझे पूजापिता ब्रह्मा जरूर चाहिए। आदि देव न होवर मन्दिर भी तो है न। आदि देव जिसका बच्चा है जरूर यह ब्रह्मा बाबा का बच्चा होगा। ब्रह्मा विष्णु शंकर तीनों के बच्चे। ब्रह्मा का बाप कौन है? कोई बताये इस दिलवाला मन्दिर में जो दूसरी लेन है वह भी यह नहीं जानते कि आदि देव है कौन? उनका बाप कौन था? आदि देव पूजापिता ब्रह्मा है उनका बाप है शिव। अब जिनका मन्दिर है उनके आक्यूपेशन को नहीं जानते। और बने हैं दूसरी। जगतपिता जगदम्बा का यह यादगार मन्दिर है। इसमें आदि देव ब्रह्मा के रथ में बाप ने बैठ ज्ञान सुनाया। नंबरवार सब बच्चे बैठे हैं। सभी का मन्दिर तो नहीं बनायेंगे। मुख्य है 108 ने माला। तो 108 लक्ष्मियां बना दी हैं। 108 ने ही पूजा होती है। मुख्य है शिव बाबा फिर ब्रह्मा सरस्वती दुर्गा। वह शिव बाबा के पास उनने अपना शरीर नहीं है। ब्रह्मा सरस्वती ने अपना शरीर है। माला शरीर धारियों ने बनी हुई है। पत्थरों की तो नहीं है। सब मात्र ले पूजते हैं। पूजा कर पूरा करेंगे फिर शिव को भी नमस्कार करेंगे। माया ही भुलवाती। क्यों कि उसने उन सभी को पतित से पावन बनाया है। इसलिए पूजे गाये जाते हैं। मात्र कोख में ले बैठ राम राम कहते हैं। परमपिता परमात्मा के नाम का किसने पता नहीं। शिव बाबा के मुख्य। फिर ब्रह्मा सरस्वती भी मुख्य हैं। सभी ब्रह्मा कुमार कुमारियां जो जो पुरुषार्थ करती रहती हैं उन्हीं के नाम होंगे। आगे चल तुम सभी देखते रहेंगे। अब पिछाड़ी होगी तब तुम यहां आकर रहेंगे। जो पक्के योगी होंगे वही इस सृष्टि में होंगे तो थोड़ा ठण्ड सुनने से दंग हो जावेंगे। लेकिन आपरेशन देखने से कई मनुष्य अन्धश्रद्धा हो जाते हैं। अभी पार्टीशन में कितने मनुष्य मरे। वह तो लोग मारते रहते हैं। कि हमने विश्व में लेकर लड़ाई राज्य ले लिया। परन्तु मरे कितने जो बात मत पूछो। यह है ही झूठी माया। अभी सच्चा बाप बैठ तुमको सच सुनाते हैं। बाप कहते हैं मुझे रथ तो जरूर चाहिए। मैं साजन पढ़ा हूँ तो सजनी भी बड़ी चाहिए। इसलिए मैंने इनमें प्रवेश किया है। इनको पूजापिता ब्रह्मा कहते हैं। यह माता भी है। सरस्वती है ब्रह्मा मुख वंशावली वह कोई ब्रह्मा को युगत नहीं है। ब्रह्मा तो बेटा है। उनसे फिर जगदम्बा क्यों

करता हूँ। सद्गति के साथ गति आ ही जाती है। नई दुनिया में रहते ही थोड़े हैं। आगे हम कहते थे घट ही में सूर्य, घट ही में चांद, घट में ही 9 लख तारे.... घट में सूर्य इस समय है। घट में शिव है, जिसका ही इतना विस्तार है। फिर घट में मम्मा बाबा और लकी स्टार्स। विवेक भी कहता है सतयुग में जरूर थोड़ी संख्या होनी चाहिए। पीछे वृद्धि होती है। यह सब समझने की बातें हैं। जो जितना प्योर (पवित्र) होगा उतनी धारणा होगी। इमप्योरिटी से धारणा कम होगी। प्योरिटी फर्स्ट। क्रोध का भी भूत रह जाता है तो माया से हार खा लेते हैं। यह युद्ध है ना। उस्ताद को पूरा हाथ देना है। नहीं तो माया बड़ी प्रबल है। जिनका हाथ में हाथ है उनके लिए ही बरसात है। जैसे बाबा साक्षी हो पार्ट भी बजाते है, देखते भी हैं। यह तो समझ सकते हो कि माँ बाप और लकी स्टार्स जो अनन्य हैं उनको ही फालो करना है। यह तो समझाया है मुरली पढ़ना कभी नहीं छोड़ना। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

रात्रि क्लास 23-12-58

देखो आलमाइटी बाबा के यह सब कितने रूहानी कारखाने (सेन्टर्स) हैं। जहाँ से हर एक को रूहानी रत्न मिलते हैं। बाबा है सब कारखानों का सेठ। मैनेजर्स लोग सम्भाल रहे हैं, दुकानें चल रही हैं। दुकान कहो, हॉस्पिटल कहो.... यह तुम ब्राह्मणों की फैमिली भी है। तुम्हें अपना जीवन बनाना है एज्यूकेशन से। इसमें रूहानी और जिस्मानी दोनों इक्ट्ठा हैं। दोनों बेहद के हैं। और वह हैं रूहानी, जिस्मानी दोनों हद के। गुरू लोग जो भी शास्त्रों आदि की रूहानी शिक्षा देते हैं वह सब है हद की। हम किसी मनुष्य को गुरू नहीं मानते। हमारा है एक सतगुरू, जो एक ही रथ में आते हैं। घड़ी-घड़ी उनको याद करेंगे तब ही विकर्म विनाश होंगे। तुमको धन उस ग्रैन्ड फादर से मिलता है, इसलिए उनको याद करना है। कोई भी कर्म ऐसा नहीं करना है जो विकर्म बन जाए। सतयुग में कर्म, अकर्म होते हैं, यहाँ कर्म विकर्म होते हैं क्योंकि 5 भूत हैं। हम बिल्कुल सेफ हैं। बाबा कहते हैं विकार दान में दे दो फिर अगर वापिस लिया तो नुकसान हो जायेगा। ऐसे मत समझना छिपाकर करेंगे तो पता थोड़ेही पड़ेगा। धर्मराज को तो पता पड़ेगा ना। इस समय ही बाबा को अन्तर्यामी कहा जाता है, हर एक बच्चे का रजिस्टर वह देख सकते हैं। हम बच्चों के अन्दर को जानने वाला है इसलिए छिपाना नहीं चाहिए। ऐसे भी चिट्ठी लिखते हैं कि बाबा हमारे से भूल हुई है माफ करना। धर्मराज की दरबार में सजा नहीं देना। जैसेकि डायरेक्ट शिवबाबा को लिखते हैं। बाबा के नाम पर इस पोस्ट बाक्स में चिट्ठी डाल देते हैं। भूल बताने से आधी सजा कम हो जायेगी। यहाँ प्यूरिटी बहुत चाहिए। सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पन्न यहाँ बनना है। रिहर्सल यहाँ होगी फिर वहाँ प्रैक्टिकल पार्ट बजाना है। अपनी जांच करनी है - कोई विकर्म तो नहीं करते हैं? संकल्प तो बहुत आयेंगे, माया बहुत परीक्षा लेगी, डरना मत। बहुत नुकसान होंगे, धन्धा

Web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION

नहीं चलेगा, टांग टूट जायेगी, बीमार हो पड़ेंगे.... कुछ भी हो जाए बाबा का हाथ नहीं छोड़ना। अनेक प्रकार की परीक्षायें आयेंगी। पहले-पहले बाबा के सामने आती है, इसलिए बाबा बताते हैं खबरदार रहना। पहलवान बनना है।

देखो भारत में जितनी सबको छुट्टियाँ मिलती हैं इतनी और कहाँ नहीं मिलती, परन्तु यहाँ हमको एक सेकण्ड भी छुट्टी नहीं मिलती क्योंकि बाबा कहते हैं श्वांसों श्वांस याद में रहो। एक एक श्वांस अमोलक है। तो वेस्ट कैसे कर सकते। जो वेस्ट करते हैं वह पद भ्रष्ट करते हैं। इस जन्म का एक एक श्वांस मोस्ट वैल्युबुल है। रात दिन बाबा की सर्विस में रहना चाहिए। तुम आलमाइटी दाता के ऊपर आशिक हो या उनके रथ पर? या दोनों पर? जरूर दोनों का आशिक होना पड़े। बुद्धि में यह रहेगा कि वह इस रथ में है। उनके कारण तुम इस पर आशिक हुए हो। शिव के मन्दिर में भी बैल रखा हुआ है। वह भी पूजा जाता है। कितनी गुह्य बातें हैं जो रोज़ नहीं सुनते तो कोई कोई प्वाइंटस मिस कर देते हैं। रोज़ सुनने वाले कभी प्वाइंट्स में फेल नहीं होंगे। मैनर्स भी अच्छे रहेंगे। बाबा की याद में बहुत प्राफिट (फायदा) है। फिर है बाबा की नालेज को याद करना। योग में भी प्राफिट, ज्ञान में भी प्राफिट। बाबा को याद करना इसमें है मोस्ट प्राफिट क्योंकि विकर्म विनाश होते हैं और पद भी ऊंच मिलता है। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता दादा का यादप्यार और गुडनाइट, रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- श्वांसों श्वांस बाप को याद करना है, एक भी श्वांस व्यर्थ नहीं गवाना है। कोई भी कर्म ऐसा नहीं करना है जो विकर्म बन जाए।

२- उस्ताद के हाथ में हाथ दे सम्पूर्ण पावन बनना है। कभी क्रोध के वशीभूत होकर माया से हार नहीं खानी है। पहलवान बनना है।

वरदान:- मास्टर ज्ञान सूर्य बन सारे विश्व को सर्व शक्तियों की किरणें देने वाले विश्व कल्याणकारी भव

जैसे सूर्य अपनी किरणों द्वारा विश्व को रोशन करता है ऐसे आप सभी भी मास्टर ज्ञान सूर्य हो तो अपने सर्व शक्तियों की किरणें विश्व को देते रहो। यह ब्राह्मण जन्म मिला ही है विश्व कल्याण के लिए तो सदा इसी कर्तव्य में बिजी रहो। जो बिजी रहते हैं वो स्वयं भी निर्विघ्न रहते और सर्व के प्रति भी विघ्न-विनाशक बनते। उनके पास कोई भी विघ्न आ नहीं सकता।

स्लोगन:-

जिम्मेवारी सम्भालते हुए सब कुछ बाप को अर्पण कर डबल लाइट रहना ही फरिश्ता बनना है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

25-9-98 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम रुद्र ज्ञान यज्ञ में बैठे हो, रुद्र शिवबाबा तुम्हें जो सुनाते हैं वह सुनकर दूसरों को जरूर सुनाना है"

प्रश्नः- बाप ने भी यज्ञ रचा है और मनुष्य भी यज्ञ रचते हैं – दोनों में कौन सा मुख्य अन्तर है?

उत्तरः- मनुष्य रुद्र यज्ञ रचते हैं कि शान्ति हो अर्थात् विनाश न हो लेकिन बाप ने रुद्र यज्ञ रचा है कि इस यज्ञ से विनाश ज्वाला निकले और भारत स्वर्ग बनें। बाप के इस रुद्र ज्ञान यज्ञ से तुम नर से नारायण अर्थात् मनुष्य से देवता बन जाते हो। उस यज्ञ से तो कोई भी प्राप्ति नहीं होती है।

गीतः- तुम्हारे बुलाने को जी चाहता है.....

ओम् शान्ति। यह कितना मीठा गीत है और कितना अर्थ सहित है, जो विशाल बुद्धि वाले होंगे वह अच्छी रीति समझ सकेंगे। बुद्धि भी नम्बरवार है ना। उत्तम-मध्यम-कनिष्ट होते हैं। उत्तम बुद्धि वाले इसका अर्थ अच्छी रीति समझ सकते हैं। तुम्हारे बुलाने को जी चाहता है, यह कौन याद करते हैं? (बच्चे) कौन से बच्चे? बच्चे तो ढेर हैं। जो ब्राह्मण बने हैं, जो देवता थे, जिन्होंने ही पूरे 84 जन्म लिए हैं उन्होंने ही जास्ती बुलाया है। वही शिव अथवा सोमनाथ के मन्दिर की स्थापना करते हैं। सिद्ध होता है हम जो पूज्य देवी-देवता थे, अभी पुजारी बने हैं। बरोबर हम पूज्य थे फिर पुजारी बने तो सोमनाथ शिव की पूजा करते हैं। रुद्र यज्ञ बहुत रचते हैं, रुद्र ज्ञान यज्ञ कभी नहीं रचते। रुद्र यज्ञ नाम रखते हैं। अभी भी रुद्र यज्ञ रच रहे हैं। तुम बहुत अच्छा समझा सकते हो – रुद्र कौन है? क्या रुद्र ने कभी यज्ञ रचा था? कैसे रचा फिर क्या उसकी सिद्धि हुई? यह तो कोई नहीं जानते। तुमको अभी ज्ञान का
a तीसरा नेत्र मिला है। परमपिता परमात्मा के सिवाए ज्ञान का तीसरा नेत्र कोई दे नहीं सकता। ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा को ही गाया जाता है। मनुष्य को ज्ञान सागर नहीं कह सकते। अभी तुम जानते हो हमको दादे का वर्सा मिल रहा है जिसको ही याद करते हैं कि बाबा आकर अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान करो। फिर हम भी दान लेकर औरों को करेंगे। बहुत सहज है। सिर्फ याद दिलायेंगे कि तुम्हारे दो बाप हैं। भक्ति मार्ग में दो बाप हो जाते हैं। सतयुग-त्रेता में लौकिक बाप ही होता है। वहाँ वर्सा भी तुम इस समय के पुरुषार्थ अनुसार पाते हो। तो तुम बच्चों का माथा फिरना चाहिए। ऐसी-ऐसी जगह जाकर पूछना चाहिए कि रुद्र यज्ञ
b किसने रचा था? क्या रुद्र ज्ञान यज्ञ है या रुद्र यज्ञ है? असुल नाम है रुद्र ज्ञान यज्ञ। रुद्र तो है निराकार। वह कैसे यज्ञ रचेगा? जरूर शरीर धारण करना पड़े। दक्ष प्रजापति का यज्ञ भी मनाते आते हैं। दिखाते हैं दक्ष प्रजापति यज्ञ में अश्व को स्वाहा करते हैं। घोड़े को टुकड़े-टुकड़े कर जलाते हैं। उनको दक्ष प्रजापति यज्ञ कहते हैं। यह तुम अभी जानते हो तो वहाँ लिखना चाहिए यह कौन सा यज्ञ है? बड़ा भभके से यज्ञ करते हैं। बहुत पैसे इकट्ठे करते हैं। बड़े-बड़े आदमी दान करते हैं। कोई 100 निकालते, कोई 500 निकालते। इस रुद्र ज्ञान यज्ञ में

PDF compressed with CVISION's web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

तो तुम सारे स्वाहा होते हो। उसमें तो थोड़ा-थोड़ा पैसा निकाल इकट्ठा करते हैं फिर ब्राह्मण को दक्षिणा मिलती है। यहाँ तो तुमको स्वाहा होना पड़ता है। वहाँ स्वाहा होने की बात नहीं। यहाँ बच्चे कहते हैं बाबा तन-मन-धन सहित मैं आता हूँ, वहाँ ऐसे नहीं कहेंगे। आहुति में
c कभी ऐसे नहीं डालेंगे। आरती आदि होगी, चंदा चीरा होगा। बड़ों-बड़ों से लेते हैं। तुम बच्चे जानते हो इस रुद्र ज्ञान यज्ञ से ही विनाश ज्वाला प्रज्जवलित हुई है। वह यज्ञ रचते हैं शान्ति के लिए, विनाश के लिए नहीं। वहाँ शान्ति का बड़ा आवाज़ करते हैं। शान्ति तो सारी दुनिया में चाहिए ना। परमात्मा है शान्ति का सागर। तुम बच्चों को अर्थ समझाया जाता है। अख़बार पढ़ते हो तो ख्याल चलना चाहिए — कैसे हम सबको समझायें?

बाप जानते हैं कैसे बी.के. दुकान सम्भाल रहे हैं। सेठ का कौन सा दुकान अच्छा चलता है, कौन सा मैनेजर अच्छा है, वह तो गुड़ जाने गुड़ की गोथरी जाने। यह ब्रह्मा है गोथरी। यह
d बड़ी रमणीक बातें हैं। तो रुद्र ज्ञान यज्ञ के लिए तो लिखा हुआ है इससे विनाश ज्वाला निकली। वह यज्ञ करते हैं शान्ति के लिए। यह है सच्चा-सच्चा यज्ञ। उन ब्राह्मणों के तो अनेक सेठ होते हैं। यह तुम ब्राह्मणों का एक ही सेठ है। बाप है रुद्र। रुद्र बाप कहो, शिव कहो, सोमनाथ कहो, उसने ज्ञान यज्ञ रचा है, जिसमें तुम बैठे हो। वह यज्ञ तो दो-चार दिन चलेगा। तुम्हारा यह रुद्र ज्ञान यज्ञ तो बहुत बड़ा है। उसमें टाइम लगता है। यह है नर से नारायण अथवा मनुष्य से देवता बनने का यज्ञ। वह तो ऐसे नहीं कहेंगे। बाप बैठ समझाते हैं कैसे उन्हों को सावधान करो। बड़ों-बड़ों को बोलो — यह तुम जो यज्ञ रचते हो, उसमें भूल है। परमपिता परमात्मा कल्प-कल्प संगम पर आते हैं। शास्त्रों में युगे-युगे लिख दिया है। यह भूल कर दी है। वैसे ही रुद्र यज्ञ रचते हैं। वास्तव में रुद्र ज्ञान यज्ञ है। शिव का नाम है रुद्र, उसने ही ज्ञान यज्ञ रचा है। जैसे इब्राहम ने अपना इस्लाम धर्म स्थापन किया, बुद्ध ने बौद्धी धर्म स्थापन किया, वैसे रुद्र का है ज्ञान यज्ञ जिससे विनाश ज्वाला प्रज्जवलित होगी। तो गोया वो लोग शान्ति के लिए यज्ञ रचते हैं अर्थात् विनाश नहीं चाहते। स्वर्ग की स्थापना के लिए नर्क का विनाश हो, तो अच्छा ही है ना।

भारत है अविनाशी खण्ड। जरूर भारत के मनुष्य सम्प्रदाय बहुत ज्यादा होने चाहिए। आदि सनातन देवी-देवता धर्म था। उनको सारा कल्प हुआ है। शास्त्रों में 33 करोड़ लिख
e दिया है। परन्तु यह तो समझाना चाहिए — जरूर और धर्म वालों से देवता धर्म की आदमशुमारी जास्ती होगी, लेकिन वह कनवर्ट हो गये हैं तो कैसे निकलें। बौद्धी, क्रिश्चियन, मुसलमान आदि जाकर ढेर बने हैं, इसलिए थोड़ी संख्या हो जाती है। यह भी ड्रामा। इसमें
f समझने की बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए। जब तक बुद्धि में ज्ञान नहीं बैठा है तो सिर्फ अर्पणमय होने से क्या फायदा? अर्पणमय तो ढेर बनते हैं परन्तु जो अच्छी रीति धारणा कर और कराते हैं, प्रजा बनाते हैं वही अच्छा पद पा सकते हैं।

तो यह गीत एक्यूरेट है — बुलाने को जी चाहता है....। सबसे पहले 84 जन्म किसने लिए होंगे? जो पहले-पहले थे, वह थे ही देवी-देवतायें। सो भी भारत में थे। अभी तो कोई कहां, कोई कहां कनवर्ट हो गये हैं। कई तो भारत से बाहर चले गये हैं। नहीं तो वास्तव में

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

भारत जैसा बड़े ते बड़ा तीर्थ और कोई है नहीं। और सभी धर्म स्थापक जो हैं उन्हों को भी पावन बनाने के लिए भगवान् को भारत में आना पडता है क्योंकि सब पतित हैं, सबको पावन बनाने वाला एक है। यह तुम जानते हो। तुम्हारे में भी नम्बरवार यथार्थ रीति जान सकते हैं। तुम कहेंगे हम रुद्र ज्ञान यज्ञ में बैठे हैं कब से? ६२ वर्ष हुए हैं। ऐसा कोई यज्ञ होता है क्या, जिसमें इतना समय बैठे हों? क्या बैठ करते हो? रुद्र जो ज्ञान सुनाते हैं वह सुनते ही रहते हो। जहाँ तक रुद्र बाबा इस शरीर में है, सुनाते ही रहेंगे। प्रजापिता ब्रह्मा भी तो जरूर यहाँ होगा ना। ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात गाई हुई है। सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा का थोड़ेही दिन और रात बनायेंगे। वह तो सूक्ष्मवतनवासी देवता है। दिन और रात का प्रश्न यहाँ का है। ब्रह्मा की रात माना पतित। फिर वही पावन बनते हैं तो दिन होता है। ब्रह्मा को भी पावन बनाने वाला वह एक सतगुरु है। सत बाबा, सत टीचर, सतगुरु तीनों इकट्ठे हैं। पहले जरूर बाप के बच्चे होंगे फिर पद टीचर से पायेंगे। नम्बरवार हैं ना। यह भी बुद्धि में रहे तो कितनी खुशी रहे। तुम पहले बेहद के बाप के थे ना। यहाँ आये हो पार्ट बजाने। भक्ति मार्ग में बेहद के बाप को याद करते आये हो क्योंकि वह है स्वर्ग का रचयिता। जरूर स्वर्ग की राजाई देने वाला होगा। यह समझाना तो बड़ा सहज है। सेन्सीबुल ही समझा सकेंगे। वास्तव में सेन्सीबुल तुम ब्राह्मण हो। तुम्हारे में जो अक्लमंद हैं, उनमें भी नम्बरवार हैं। दुनिया के अक्लमंद भी नम्बरवार हैं ना। यहाँ भी जो सेन्सीबुल बनते जायेंगे वह जरूर अच्छा नम्बर पायेंगे। हर एक अपनी दिल से पूछे हम कहाँ तक सेन्सीबुल बना हूँ? जैसे बाबा मुरली चलाते हैं वैसे वहाँ भी तुम्हारी मुरली चल सकती है। तुम उन्हें समझाओ कि रुद्र यज्ञ और रुद्र ज्ञान यज्ञ में रात-दिन का फ़र्क है। रुद्र ज्ञान यज्ञ रचा तो उससे विनाश ज्वाला निकली, भारत स्वर्ग बना और यह फिर यज्ञ रचते हैं विनाश न हो अर्थात् स्वर्ग स्थापन न हो। यह तो उल्टी बात हो गई। तब तो बाबा कहते हैं मैं इन सबका उद्धार करने आता हूँ। रुद्र ज्ञान यज्ञ रचता हूँ। तो तुम प्रतिज्ञा करते हो — बाबा, हम आपसे सुनकर और सुनायेंगे। अच्छा, औरों को सुनाओ। पहले यहाँ तो रिपीट करो। घड़ी-घड़ी रिपीट करो जो फिर कहाँ समझा सको। फर्स्टक्लास प्वाइंट है। उस यज्ञ में तो जौ-तिल आदि डालते हैं, मेरे रुद्र ज्ञान यज्ञ में तो सारी पुरानी दुनिया की सामग्री स्वाहा हुई थी। परन्तु यह सब बातें कोई की बुद्धि में अच्छी रीति धारण नहीं होती। बाप को याद नहीं करते हैं तो बुद्धि का ताला नहीं खुलता। बाबा कहते हैं — हम भी क्या करें? इस समय सबकी बुद्धि पतित है, उनको पावन बनाता हूँ। जो मेरे को याद नहीं करते, उनमें धारणा नहीं हो सकती। बुद्धि का ताला कैसे खुले? याद से ही खुलेगा। मोस्ट बिलवेड बाप है, उनकी बड़ी महिमा करते हैं। शिवबाबा की कितनी महिमा है! शिव की पूजा भी होती है, तो जरूर आता होगा ना। बिगर आरगन्स क्या आकर करेंगे? तो अब ब्रह्मा में आया हुआ हूँ। तुम बच्चे बापदादा के सामने बैठे हुए हो परन्तु देह-अभिमान होने कारण इतना लॅव, बाप के लिए रिगार्ड नहीं रहता। डायरेक्शन पर मुश्किल चलते हैं। अहंकार में आ जाते हैं। बाप कहते हैं — मैं निरहंकारी हूँ, तुमको इतना अहंकार क्यों आता है? बस, समझते हैं मैं ही होशियार हूँ। इतना देह-अभिमान आ जाता है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अब कोई का पति मर जाता है तो उसकी देह ख़त्म हो गई। बाकी आत्मा निकल गई फिर ब्राह्मण में आत्मा को बुलाते हैं। देह को तो नहीं बुलाते। भावना रखते हैं तो भावना का भाड़ा मिलता है। पति को याद करते रहे तो पति का साक्षात्कार कर लेंगे। बाबा साक्षात्कार तो कराते हैं ना। ऐसे बहुतों का प्यार होता है। आयेगी तो आत्मा ना। कोई का स्त्री में प्यार है तो भावना का भाड़ा मिल जाता है। स्त्री को देख लेते हैं। चीज़ ले आते हैं, खुद उनको पहनाते हैं। ऐसे बहुत कुछ होता आया है। आगे बहुत विधि से खिलाते थे। जैसे गणेश को अथवा नानक आदि को याद करते हैं तो साक्षात्कार हो जाता है ऐसे बहुतों को हो सकता है। परन्तु वह चाबी एक ही बाप के हाथ में है। बाप कहते हैं यह साक्षात्कार की बातें भी ड्रामा में नूंधी हुई हैं। साक्षात्कार कराया, ड्रामा चला, ठहरता नहीं है। ड्रामा को भी अच्छी रीति जानना होता है। अरे, बाबा का तो अच्छी रीति रिगार्ड रखो। बाप में इतना रिगार्ड प्यार रखना बड़ा मुश्किल समझते हैं, समझते हैं वह तो निराकार है। कहते हैं यह तो उनका रथ है, इनको हम क्या करेंगे? हम तो निराकार को ही याद करेंगे। अच्छा, निराकार की गोद में जाकर दिखाओ? निराकार साथ खाओ, पियो। तुम इनके पास क्यों आते हो? कहते हैं – नहीं बाबा, आप इसमें हो, आपको ही इसमें विराजमान समझ चलते हैं। यह बड़ा मुश्किल किसकी बुद्धि में रहता है। ऐसे बहुत हैं जो गपोड़े लगाते हैं – हमारा बाबा में बहुत प्यार है, हम इतने घण्टे बाबा को याद करते हैं। बाबा कहते हैं मैं भी पूरा याद नहीं करता हूँ। मैं तो एक ही सिकीलधा बच्चा हूँ फिर भी मैं पुरुषार्थ बहुत करता हूं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- अर्पण होने के साथ-साथ अपनी बुद्धि को विशाल बनाना है। ऊंच पद के लिए अच्छी रीति धारणा करनी और करानी है।

२- बाप समान निरहंकारी बनना है। अहंकार छोड़ बाप से अति लॅव वा रिगार्ड रखना है। देह-अभिमान में नहीं आना है।

वरदान:-अपसेट होने के बजाए हिसाब-किताब को खुशी-खुशी से चुक्तू करने वाले निश्चिंत आत्मा भव

यदि कभी कोई बात कहता है तो उसमें फौरन अपसेट नहीं हो जाओ, पहले स्पष्ट करो या वेरीफाय कराओ कि किस भाव से कहा है, अगर आपकी गलती नहीं है तो निश्चिंत हो जाओ। यह बात स्मृति में रहे कि ब्राह्मण आत्माओं द्वारा यहाँ ही सब हिसाब-किताब चुक्तू होने हैं। धर्मराजपुरी से बचने के लिए ब्राह्मण कहाँ न कहाँ निमित्त बन जाते हैं। इसलिए घबराओ नहीं, निश्चिंत हो खुशी-खुशी से चुक्तू करो। इसमें तरक्की (उन्नति) ही होनी है।

स्लोगन:-

"बाप ही संसार है" सदा इस स्मृति में रहना - यही सहजयोग है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मेन प्वाइन्ट्स - पार्ट V

एडवान्स कोर्स - लक्ष्मी-नारायण

1) ल० ना० का चित्र बहुत अच्छा है। इसमें सारा सेट है - त्रिमूर्ति, ल० ना०, रा० कृ० भी हैं। -मु.नं. 113e, 31d
2) ल० ना० के चित्र साथ रा० कृ० का भी हो तो समझाने में सहज होगा। यह है करेक्ट चित्र, लिखत भी उनकी अच्छी है। -मु.नं. 114f, 60f
3) बाबा ने कहा था जब प्रभात फेरी निकालते हो तो साथ में ल० ना० का चित्र जरुर उठाओ। -मु.नं. 115a
4) तुम जानते हो ल० ना० की आत्मायें भी इस समय हाजिर-नाजिर हैं। कृष्ण भी यहाँ ही है। -मु.नं. 105b
5) भगवान ने जरुर भगवान-भगवती पैदा किये, परन्तु भगवान-भगवती कह नहीं सकते - गॉड इज वन। -मु.नं. 89h
6) यह ल० ना० भगवान-भगवती हैं ना, इन्हों की भी वंशावली है ना। -मु.नं. 52d, 78b
7) रा० कृ० साथ फिर ल० ना० का क्या सम्बन्ध है ? -मु.नं. 116b
8) त्रिमूर्ति के नीचे लिखत भी जरुर देनी है। यह भी लिखना है - डीटी सावरन्टी आपका जन्म सिद्ध अधिकार है, सो भी अभी कल्प के संगमयुगे। -मु.नं. 73c
9) तुम ब्राह्मण हो ईश्वरीय सन्तान। सतयुग में ईश्वरीय सन्तान नहीं कहेंगे। -मु.नं. 89g
10) यह भी बताया कि इन ल० ना० में यह ज्ञान नहीं है। वहाँ (सतयुग में) तो आस्तिक नास्तिक का पता ही नहीं रहता है। -मु.नं. 117f, 120a, 116h, 88e
11) यह ल० ना० समझदार है, तब तो विश्व के मालिक हैं। -मु.नं. 118e, 81a, 71b
12) सब विलायत वाले उनको जानते हैं - लार्ड कृष्ण कहते हैं ना। -मु.नं. 74b
13) वैल्यु तो उनकी है जो हीरो-हिरोइन का पार्ट बजाते हैं। -मु.नं. 5e, 64a
14) तुम अब समझते हैं कि यह ल० ना० विश्व के मालिक थे, कितने साहूकार थे। आधा कल्प (2500 वर्ष) विश्व के मालिक थे। -मु.नं. 43d
15) बाप आकर के हमको विश्व के मालिक बनावेंगे। इस जन्म की बात है ना। -मु.नं. 90e, 17b
16) कृष्ण को रिसीव करने वाले माँ-बाप भी पहले से चाहिए ना। तुम कृष्ण को रिसीव करने वाले होंगे। -मु.नं. 119e, 48l, 100h
17) राधे और कृष्ण दोनों के माँ-बाप अलग2 हैं। राधे और जगह की थी (चन्द्रवंशी), कृष्ण फिर और जगह का था (सूर्यवंशी)। -मु.नं. 121f, 26f
18) रा० कृ० कोई आपस में भाई-बहन नहीं थे। -मु.नं. 42f
19) कृष्ण की आत्मा भी भिन्न नाम रुप में इनसे समझ रही है। -मु.नं. 65i, 48e, 100h
20) सांवरा कृष्ण देखकर भी बहुत खुश होते हैं। उनको क्या पता कि गोरा कब था, क्या था। -मु.नं. 46e
21) ल० ना० कहने से तुम चले जाते हो सतयुग में। यह है नर से नारायण बनने की कथा, कृष्ण बनने की कथा नहीं कहते। -मु.नं. 82f, 2d, 26g
22) रा० कृ० ही स्वयंवर के बाद फिर ल० ना० बनते हैं। -मु.नं. 26f
23) जैसे बैरिस्टर कहेंगे हम बैरिस्टर बनायेंगे। श्री ल० ना० अथवा उसकी डिनायस्टी का वर्सा देने आया हुँ। -मु.नं. 53a
24) यहाँ बैठे हो तो यह तो याद होगा ना कि हम आये हैं रिज्युवनेट होने अर्थात् यह शरीर बदल देवता शरीर लेना। -मु.नं. 80c, 101d, 120b, 28e
25) आत्मा भी और काया भी कंचन बने, इसलिए सवेरे ड्रील होती है।-मु.नं. 90g, 97c, 86d

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

26) यह भी तो तुम्हारा अविनाशी ज्ञान सर्जन है। -मु.नं. 33g, 27e, 115c
27) बाप भी बागवान है, उनको खिवैया भी कहते हैं। नईया आत्मा और शरीर दो चीज़ की बनी हुई है। -मु.नं. 120c
28) कोई (शरीर रुपी) कपड़ा ऐसा मैला है जो साफ करने में बहुत टाइम लगता है। बाबा धोबी है। -मु.नं. 67e, 76g
29) आत्मा पवित्र बन गई तो फिर यह पुराना शरीर आपेही छूट जाएगा, जैसे सर्प की खल आटोमेटिकली छूट जाती है। -मु.नं. 98a, 92g, 73h
30) प्रश्न उठता है राम-सीता सतयुग में आते हैं। आते हैं, परन्तु नापास होते हैं इसलिए जो पास हुए उनके आगे भरी ढ़ोते हैं। -मु.नं. 107e
31) बाप भी ओबीडियन्ट सर्वेन्ट है, टीचर व सतगुरु भी ओबीडियन्ट सर्वेन्ट है। तीनों ही इकट्ठें हैं। -मु.नं. 88a, 97g, 76g
32) राधे तो कुमारी है, कृष्ण तो कुमार है। फिर कृष्ण को स्वामी कैसे कहेंगे ? -मु.नं. 121e
33) वहाँ एक2 को एक बच्चा, एक बच्ची हो तो त्रेता तक कितने हो जायेंगे ? ऐसे नहीं कि उस समय कोई 5-6 बच्चे पैदा करते हैं। सतयुग में इतने बच्चे होते नहीं। -मु.नं. 122b
34) मधुमक्खियाँ भी ऐसी होती हैं। रानी ने घर छोड़ा तो सब भागेंगी उनके पिछाड़ी। -मु.नं. 123e
35) तुम बच्चे समझा सकते हो कि यह रामायण की कथा आदि सारे भारत पर है। सिर्फ समझाने की अक्ल चाहिए। -मु.नं. 51e, 86c

कल्पवृक्ष

1) बाप है मनुष्य सृष्टि रुपी झाड़ का बीजरुप। सत्य है, वह कभी विनाश नहीं होता। -मु.नं. 117e, 102d, 3c
2) ज्ञान में तो सिर्फ बीज को जानना होता है। -मु.नं. 121g
3) यह भी जानते हो - सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी राजधानी यहाँ (संगमयुग में) स्थापन हो रही है। -मु.नं. 129d
4) गायन भी है - एक हैं अन्धे की औलाद अन्धे और दूसरे हैं - सज्जे की औलाद सजे। -मु.नं. 99b, 28g
5) कलकत्ते वाले बड़ कईयों ने देखा नहीं है, बहुत बड़ा झाड़ है। अब उनका फाउन्डेशन सारा सड़ गया है। -मु.नं. 125d
6) दैवी धर्म का फाउन्डेशन ही सड़ गया है। बाकी ऐसे नहीं कहेंगे कि फाउन्डेशन था ही नहीं, प्रायः गुम हो गया है। -मु.नं. 43f, 126a, 77c
7) रावण जब से आता है तो भक्ति भी उनके साथ है। -मु.नं. 87c
8) बेहद के बाप से बेहद का वर्सा मिलता है, अब वह रावण ने छीना हुआ है। -मु.नं. 31j
9) वह बाप चला जायेगा। उनका क्रियाकरम, सेरिमनी आदि कुछ नहीं करना होता। -मु.नं. 81d
10) बाहुबल से कब कोई विश्व के मालिक बन नहीं सकते। तुम योगबल से विश्व की बादशाही पाते हो। -मु.नं. 21b, 114c, 38g
11) बुद्ध की आत्मा ने प्रवेश किया, बुद्ध धर्म पहले तो होता नहीं। जरुर यहाँ के कोई मनुष्य में प्रवेश करेंगे। -मु.नं. 56c, 27a
12) राजाई तुमको मिलनी है क्योंकि कनेक्शन है कृष्णपुरी और क्रिश्चियनपुरी का। इन्होंने भारतवासियों को आपस में लड़ाकर कृष्णपुरी को क्रिश्चियनपुरी बनाया। -मु.नं. 77b
13) मनुष्य समझते हैं विमान है, बड़े2 महल बिजलियाँ हैं - यही स्वर्ग है। यह तो रावण का पाम्प है। -मु.नं. 130a, 44g
14) इन सन्यासियों ने भी पवित्रता के आधार पर भारत को थमाया जरुर है। -मु.नं. 78c

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

15) सन्यासियों को वास्तव में इतने पैसे इकट्ठे करने का लॉ नहीं। सब कुछ छोड़ा फिर इतने पैसे क्यों रखते ? -मु.नं. 127e

16) सोमनाथ का मन्दिर बनाते हो। कोई एक मन्दिर थोड़ेही होगा, अनेक होंगे फिर उन्हें लूटा भी होगा। तो सारी बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी का तुम जान गये हो। -मु.नं. 77e, 101e

17) देखो, मुहम्मद गजनवी ने मन्दिर लूटा था। अगर उनको यह मालूम होता कि यह हमारे बाबा का मन्दिर है तो लूटते थोड़ेही। -मु.नं. 69e

18) ...तब बाप कहते हैं कौरव काँग्रेस कुम्भकरण के नींद में सोये पड़े हैं। -मु.नं. 116j

19) बहुत (ब्राह्मण) बच्चे हैं जो और2 धर्मों में कनवर्ट हो गये हैं। -मु.नं. 80e, 49d

20) हिन्दु भी बहुत कम हैं, और2 धर्मों में मिक्स हो गये हैं। नहीं तो सबसे जास्ती आदि सनातन देवी-देवता होने चाहिए। -मु.नं. 122c, 81f, 112e

21) राजाई तो सब खत्म हो जानी है। प्रजा का प्रजा पर राज्य सारी दुनियाँ में हो जायेगा। -मु.नं. 39e

22) मनुष्य (आर्य समाजी) तो समझते हैं स्वर्ग-नर्क यहाँ ही है। -मु.नं. 3d

23) काँग्रेसियों ने फिरंगियों को निकाल राजाओं से राजाई छिन ली और राजा नाम ही गुम कर दिया। -मु.नं. 60d

24) यह क्रिश्चियन दोनों (नास्तिक) मिल जाएं तो विश्व के मालिक बन सकते हैं। इतनी ताकत इन्हों में है, परन्तु लॉ नहीं है। -मु.नं. 38g, 50d

25) रशिया, अमेरिका आपस में मिल जाएं तो सारा राज्य ले सकते हैं। -मु.नं. 69i

26) क्रिश्चियन लोग खुद समझते हैं - हमको कोई प्रेर रहा है, जो हम विनाश के लिए यह सब कुछ बनाते हैं। -मु.नं. 56g, 130b, 41g

27) समझते हैं कि शंकर की भी प्रेरणा होती है ... जो यादव मूसल आदि बनाते हैं। परन्तु इसमें प्रेरणा की बात ही नहीं। -मु.नं. 95d

सीढ़ी

1) बच्चे जो विचार सागर मंथन कर ऐसे2 चित्र बनाते हैं, तो बाबा भी उनकी शुक्रिया करते हैं या तो कहेंगे कि बाबा ने उस बच्चे को टच किया है। -मु.नं. 128b

2) सीढ़ी का चित्र तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है समझाने का। सब तुम्हारे (संगमयुगी ब्राह्मणों के) ऊपर ही बने हुए हैं। -मु.नं. 129c

3) भारत ही रेस्पान्सिबुल है अपने को गिराने और सबको गिराने। -मु.नं. 44a, 5f

4) मैं खुद कहता हुँ कि मैं बहुत जन्मों के अन्त में साधारण तन में प्रवेश करता हुँ जिसने पूरे 84 जन्म लिये हैं। -मु.नं. 5a

5) 84 जन्म सिर्फ वही लेते हैं जिनका आदि से अन्त तक पार्ट है, जो पहले इस सृष्टि पर थे। -मु.नं. 24f, 117a

6) पहले नम्बर में है श्री कृष्ण- फर्स्ट प्रिन्स, श्री नारायण तो बाद में बनता है जब बड़ा होता है। वह भी 20-25 वर्ष कम हो जाते हैं, उनके भी पूरे 84 जन्म नहीं कहेंगे। नम्बरवन है (संगमयुगी) श्री कृष्ण। -मु.नं. 5b

7) बच्चे जानते हैं पुरुषोत्तम संगमयुग की आयु बहुत थोड़ी है। 40 वर्ष से अभी बाकी 8 वर्ष रही है। -मु.नं. 111a, 26i, 130f

8) भगवानुवाच - तुम कितने महान भाग्यशाली हो, इसलिए तुम्हारा हीरे जैसा जन्म (21 वा ज...) अभी है। -मु.नं. 56b, 107d

9) वह कलियुगी सीढ़ी ऊपर नीचे उतरते जाते हैं और तुम पु० संगमयुगी सीढ़ी ऊपर चढ़ते जाते हो। -मु.नं. 15e

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

10) वहाँ राम को तो 4 भाई होते नहीं । वहाँ बच्चा भी तो एक होता है, 4 बच्चे कहाँ से आये ? -**मु.नं.** 121b
11) काली की भी महिमा गाते हैं असुरों के संधार करने वाली है । ऐसे नहीं कहेंगे जगदम्बा कोई असुरों का संघार करते हैं । -**मु.नं.** 97h
12) फिर भी तुम नाम बदनाम करते हो । तब तो कहा हुआ है - सतगुरु का निन्दक सुर्यवंशी घराने में ठौर न पाये। -**मु.नं.** 38j
13) (भक्ति मार्ग में) दिन प्रतिदिन बड़ी2 किताबें बनाते आते हैं । कितनी बायोग्राफी बनाते जाते हैं । -**मु.नं.** 89c, 40e
14) बाप की बायोग्राफी बाप से ही जानी जाती है । अब निराकार की बायोग्राफी कैसे हो सकती है ? जरुर जब साकार में आये तब बायोग्राफी हो । -**मु.नं.** 65e
15) अब मैं बाप, वह बच्चा । मेरे बायोग्राफी (एक अद्भूत जीवन कहानी - भागवत) में बच्चे (कृष्ण उर्फ ब्रह्मा) का नाम डाल दियां है । -**मु.नं.** 116i, 32c, 38c, 130c
16) गीता में सिर्फ नाम बदल दिया है । संगम होने के कारण यह भूल कर दी है । -**मु.नं.** 84c
[मुरली में 'पिताश्री' (ब्रह्मा) का नाम डाला गया है, मु. न. 67a देखिए]
17) व्यास भगवान ने तो वहाँ भी भ्रष्टाचार लिख दिया है । -**मु.नं.** 127c
18) पूजा भी पहले अव्यभिचारी एक शिव की करते हैं । उनके मन्दिर बनाते हैं फिर ल० ना० के बनायेंगे । फिर राम-सीता के मन्दिर बनाने लग पडेंगे, फिर कलियुग में देखो - गणेश, हनुमान, चण्डिका देवी आदि2 के अनेक देवियों के चित्र बनाते रहते हैं । -**मु.नं.** 59e, 94c, 114a
19) पहले2 एक शिवबाबा की भक्ति होती है, फिर देवताओं की । फिर 5 तत्वों की भक्ति (भूत पूजा) करते व्यभिचारी बन जाते हैं । -**मु.नं.** 117g, 75c
20) बाप ने समझाया है भक्ति वास्तव में प्रवृत्तिमार्ग वालों को ही करनी है । -**मु.नं.** 119f
21) तुम हो पाण्डव सम्प्रदाय । पाण्डवों का राज्य नहीं था, कौरवों का राज्य था । -**मु.नं.** 118c
22) विनाशी धन, महल आदि हम क्या करेंगे ? हमको तो सिर्फ 3 पैर पृथ्वी चाहिए। -**मु.नं.** 64c, 110g
23) अभी तुम बाप द्वारा बेगर टु प्रिन्स बन रहे हो अथवा नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनते हो । -**मु.नं.** 102e, 118b
24) तुमने सब धन-दौलत खत्म कर दिया, अब भींख माँग रहे हो । अब बाप तुमको देवता बनाते हैं (फुल बैगर टु फुल प्रिन्स) । -**मु.नं.** 72d
25) हाहाकार के बाद जयजयकार होना है । -**मु.नं.** 30e, 32d

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

24-8-02 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - तुम्हें पवित्र रहने का व्रत लेना है, बाकी निर्जल रखने, भूख-हड़ताल आदि करने की जरूरत नहीं, पवित्र बनो तो विश्व का मालिक बन जायेंगे"

प्रश्न:- इस समय दुनिया में सबसे अच्छे कौन हैं और कैसे?
उत्तर:- इस दुनिया में इस समय सबसे अच्छे गरीब हैं क्योंकि गरीबों को ही बाप आकर मिलते हैं। साहूकार तो इस ज्ञान को सुनेंगे ही नहीं। बाप है ही गरीब निवाज़। गरीबों को ही साहूकार बनाते हैं।

गीत:- आज के इंसान को....

ओम् शान्ति। बच्चों ने गीत सुना। वह दैवी प्यार जिसको ईश्वरीय प्यार कहें। अब ईश्वर प्यार सिखलाते हैं कि कैसे एक दो को प्यार करना चाहिए। भारत में कितना सच्चा प्यार था, जब सचखण्ड था। सचखण्ड किसने बनाया था? सतगुरू, सत बाबा, सत टीचर ने। अभी तुम किसके आगे बैठे हो? सच बाबा अर्थात् जो सच्चा सुख देने वाला है, सच्चा प्यार सिखाने वाला है। सच्चा ज्ञान देते हैं, उनके सम्मुख में बैठे हैं। झूठ खण्ड में तो सब झूठ हैं। गाया भी जाता है कि सत का संग करो। सत तो एक ही है। असत्य अनेक हैं। जो बाप भारत को स्वर्ग बनाते हैं, बेहद का वर्सा देते हैं, तुम उस बेहद बाप के सम्मुख बैठे हो। जो फिर से हमको बेहद की बादशाही देने आये हैं। सत बाबा एक ही है, जिसके संग से तुम विश्व के मालिक बनते हो। भक्ति में पहले-पहले एक ही शिवबाबा की सच्ची-सच्ची भक्ति होती है। उसको ही सच्ची अव्यभिचारी भक्ति कहा जाता है। बाबा बैठ तुम बच्चों को सारे चक्र का ज्ञान सुनाते हैं। पहले-पहले एक शिवबाबा की भक्ति थी जिसको अव्यभिचारी भक्ति कहते थे फिर अभी ज्ञान भी तुमको सच्चा सुनाते हैं। झूठी
a भक्ति से छुड़ाते हैं। सच्चे बाबा द्वारा तुम ज्ञान सुन रहे हो। तुम जानते हो यह सत का संग हमको स्वर्ग में ले जायेगा। सच्चे ज्ञान से ही बेड़ा पार होता है और जो झूठा ज्ञान सुनाते हैं उससे बेड़ा गर्क होता है। उसको अज्ञान कहा जाता है। सच्चा ज्ञान सिर्फ बाप ही सुनाते हैं। तुम बच्चे सारे चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी को समझ गये हो। तो यह सच्चा-सच्चा बाबा, सच्चा-सच्चा टीचर है। सतयुग में भी सच्चा बाप कहेंगे क्योंकि वहाँ झूठ होता ही नहीं। ईश्वर को सर्वव्यापी नहीं कहते। झूठ तो तब शुरू होता है जब झूठ बनाने वाले 5 विकार आते हैं।

b अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है कि हम बेहद के निराकार बाप के सम्मुख बैठे हैं। यह बाबा भी कहते हैं कि हम उस बाबा के सम्मुख बैठे हैं। उनको याद करता हूँ। घड़ी-घड़ी याद करता हूँ। बाबा का बच्चा हूँ ना। तुमको तो इस साकार को छोड़ उनको याद करना है। हमारे लिए तो एक ही बाबा है। तुम्हारे लिए थोड़ी अटक पड़ती है, मुझे क्यों अटक पड़ेगी। तुम्हारी नज़र इस पर जाती है, मेरी नज़र किस पर जायेगी? मेरा तो डायरक्ट शिवबाबा से कनेक्शन हो गया। तुमको शिवबाबा को याद करना पड़ता है। इस साकार

PDF compressed with OCR, web optimization using a trial version of iLovePDF Compress PDF

को क्लास करना पड़ता है कि यह याद न पड़े, मेरे लिए तो एक शिवबाबा ही है। तुम्हारे सामने दो बैठे हैं। हमारे सामने तो सिर्फ एक ही है। मैं उनका बच्चा हूँ। फिर भी निरन्तर याद नहीं कर सकता हूँ क्योंकि बाबा कहते हैं - तुम कर्मयोगी हो। तुम्हारी बुद्धि में सारा चक्र फिरता रहता है। सतयुग त्रेता में इतने जन्म पास किये फिर इतने जन्म लेते-लेते 84 जन्मों का चक्र पूरा किया। हिसाब है ना। अब कलियुग का अन्त आ गया फिर आगे नया चक्र फिरेगा। हिस्ट्री-जॉग्राफी फिर से रिपीट होती है। सतयुग में कौन थे, कहाँ पर राज्य करते थे। यह भी तुम जानते हो कि सारी विश्व पर देवतायें ही राज्य करते थे। अभी तो कहेंगे तुम हमारी हद में नहीं आओ, हमारा पानी न लो। बाबा तो बेहद का मालिक है। बाबा कहते हैं मुझे याद करो। यह बाबा नहीं कहते। इन द्वारा निराकार बाबा तुम आत्माओं को कहते हैं मुझे याद करो तो तुम कभी रोगी वा बीमार नहीं होंगे। यहाँ तो बाप बच्चों को पैदा कर खुद मर जाते हैं तो खुद कितने दु:खी हो पड़ते हैं। फिर तो शरीर निर्वाह अर्थ सर्विस करनी पड़े। यह तो है ही दु:खधाम। बाप तो तुम्हें कोई तकलीफ
c नहीं देते हैं। सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो जायेंगे। बाप और वर्से को याद करो। बच्चा जानता है कि बाप से हमको वर्सा मिलना है तो भी अपना धन्धाधोरी जरूर सीखते हैं। वर्से के लिए बैठ तो नहीं जायेंगे। बाकी सिर्फ जो राजाई में जन्म लेते हैं वह वर्से के लिए बैठते हैं। बहुत दान-पुण्य करने से राजाई घर में जन्म मिलता है। राजाई ही सम्भालनी पड़े। वह राजायें तो पतित हैं। अब तुम्हें पावन राजाओं के पास जन्म लेना है। लक्ष्मी-नारायण के घर में वा सूर्यवंशी की राजाई में जन्म लेना है, वहाँ कोई प्रकार का दु:ख होता नहीं। सभी दु:खों से छूट जाते हो। बाबा आकर धीरज देते हैं। अभी यह अन्तिम जन्म है। तुम्हारी तो जन्म जन्मान्तर से यह हालत होती आई है। बच्चे गिरते ही आये हैं दु:खधाम में, सुखधाम कहाँ से आये। यहाँ तो दु:ख बहुत है, सुख अल्पकाल
d का है। भल बड़े बड़े आदमी हैं, उन्हों को भी दु:ख ही दु:ख है। इस समय जो गरीब हैं वह सबसे अच्छे हैं। बाबा आये ही हैं गरीबों को साहूकार बनाने। दान भी गरीबों को करना होता है। सब साधारण हैं ना। बाकी जो लखपति हैं, जिनके पास करोड़ों रूपया है, कितना भी उन्हें समझाओ फिर भी अपने धन की कितनी मगरूरी रहती है। बाबा कहते हैं ऐसे को क्या धन देना है। मैं तो हूँ ही गरीब निवाज। ऐसी कन्यायें मातायें ही ज्ञान लेती हैं। कन्या का कितना मान है, सब उसे पूजते हैं फिर शादी करने से पुजारी बन जाती है। हम आधाकल्प पूज्य फिर आधाकल्प पुजारी बने हैं। कन्या तो इस जन्म में ही पुजारी बन जाती है। कितना पावन है, शादी करने से ही पुजारी पतित बन जाती है। पति को परमेश्वर समझ माथा टेकती रहती है। उनके आगे दासी बनकर रहती है। तो बाबा आकर दासीपने से छुड़ाते हैं। बच्चे वृद्धि को पाते जाते हैं। तुम समझा सकते हो हम प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे शिवबाबा के पोत्रे हैं। उनकी मिलकियत पर हमारा हक लगता है। उनकी मिलकियत है बेहद की। विश्व का मालिक बनाते हैं। उनका फरमान है बच्चे मामेकम् याद करो तो मैं सत्य कहता हूँ तुम नारी से लक्ष्मी बन जायेंगी। इसमें कोई व्रत नेम करना, भूखा रहना

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

नहीं है। आगे तुम बहुत प्रत-नेम रखते थे। 7 रोज़ खाना नहीं खाते थे। समझते थे प्रत रखने से कृष्णपुरी में चले जायेंगे। वास्तव में सच्चा व्रत है पवित्र रहने का। वह तो सब भूखे रहते हैं। तुम बच्चों को कुछ भी भूख हड़ताल आदि नहीं करना है। तुमको पावन बनने की ही हड़ताल करनी है। हम सबको पावन बनायेंगे। तुम्हारा धन्धा ही यह है। बाकी निर्जल रहना, खाना नहीं खाना इससे कुछ होता नहीं है। तुम सिर्फ पवित्रता की प्रतिज्ञा करो। माताओं को पति के मरने से बहुत दुःख होता है। उन्हों को जाकर समझाना चाहिए कि अब पतियों का पति आया हुआ है। वह कहते हैं सिर्फ मुझे याद करो तो स्वर्ग के मालिक बनेंगे। यह तो पतियों का पति, बापों का बाप है। पति मर जाए तो स्त्री को ज्ञान समझाए शिवबाबा से सगाई करानी चाहिए। समझाना है कि तुम रोती क्यों हो, सतयुग में कोई रोते नहीं हैं। यहाँ देखो सब रोते रहते हैं। भारत में सच्चा-सच्चा देवताओं का राज्य था। आज तो एक दो को मारते कूटते रहते हैं। आसुरी राज्य है ना। लक्ष्मी-नारायण का चित्र बहुत अच्छा है। इसमें सारा सेट है। त्रिमूर्ति, लक्ष्मी-नारायण, राधे कृष्ण भी हैं, यह चित्र भी अगर कोई रोज़ देखता रहे तो याद रहे कि शिवबाबा हमको ब्रह्मा द्वारा यह बना रहे हैं। घर में भी छोटे-छोटे बोर्ड बनाकर लिख दो। बेहद के बाप को जानने से तुम 21 जन्मों के लिए स्वराज्य पद पा सकते हो। धीरे-धीरे बहुत मनुष्य बोर्ड देखकर तुम्हारे पास आयेंगे।

तुम रूहानी अविनाशी सर्जन हो। रूहानी सर्जरी का कोर्स पास कर रहे हो, बोई लगाना पड़ेगा। बोलो, इस बाप को याद करने से तुमको बेहद की बादशाही मिलेगी। बाबा ने प्रश्न बहुत अच्छे लिखे हैं। बाबा के कितने रूहानी बच्चे हैं? बाल-बच्चे वाला है ना। इसमें भाई-बहन दोनों आ जाते हैं। बाबा के पास आते हैं तो समझाता हूँ - कितने बी.के. हैं। कितना बच्चे वाला हूँ। बच्चे वृद्धि को पाते जाते हैं। तुम समझा सकते हो हम भाई-बहन हैं - विकार की दृष्टि आ नहीं सकती है। बाप कहते हैं देह सहित देह का झूठा सम्बन्ध छोड़ मुझे याद करो तो तुम पावन बन जायेंगे। तुम अंजाम भी करते आये हो मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई। बुढ़ियाँ भी यह दो अक्षर याद कर लें तो बहुत कल्याण हो सकता है। हमने 84 जन्म लिये हैं। अभी हमें ब्राह्मण बने हैं फिर देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बनेंगे। ब्राह्मण जरूर बनना है और बनेंगे भी जरूर कल्प पहले मुआफ़िक। ढेर के ढेर बनेंगे। अभी ब्राह्मण बच्चे जो विलायत आदि तरफ हैं, वह भी निकल आयेंगे। याद तो करते रहते हैं। बाबा कहते हैं - अपने कुटुम्ब परिवार में रहते अपने को आत्मा समझो। शिवबाबा का पोत्रा अपने को समझो। हम ब्राह्मण से देवता बनेंगे। कलियुग में मनुष्य हैं, सतयुग में बनेंगे देवतायें। कलियुग में सब आसुरी मनुष्य हैं। अभी तुम दैवी सम्प्रदाय के बन रहे हो। यह बाप ही बतलाते हैं, दूसरा कोई बतला न सके। इन वर्णों को कोई जानते ही नहीं है। तुम ब्राह्मण ही नॉलेज समझा सकते हो। जब तक कोई तुम बी.के. द्वारा ज्ञान न लेवे तब तक समझ नहीं सकते। तुम ही दे सकते हो, इसमें दिल बड़ी साफ चाहिए, दिल साफ मुराद हांसिल। कोई-कोई की दिल साफ नहीं

Compression, OCR, PDF Optimization and Redaction tools are available in the unregistered evaluation copy of CVISION PDFCompressor

होती है, सच्ची दिल से सच्चे बाप की सेवा में लग जाना चाहिए। हॉबी होनी चाहिए। हमारा काम है समझाना। यह भी जानते हो 108 से माथा मारेंगे तो कहीं एक की बुद्धि में बैठेगा। एक दो निकल आयेंगे, जो कल्प पहले निकले होंगे। बी.के. बना होगा वही आवेगा। थकना नहीं है। तुम मेहनत करते रहो। कोई न कोई निकल ही पड़ेगा। कहाँ भी जाओ मित्र-सम्बन्धी के पास जाओ, शादी-मुरादी में जाओ - हर एक के कर्मों अनुसार राय दी जाती है। मुख्य है पवित्र रहने की बात। कहाँ बाहर खाना भी पड़ता है। अच्छा बच्चे, शिवबाबा की याद में रहेंगे तो माया का असर नहीं होगा। बाबा सबको छुट्टी नहीं देते हैं। लाचारी हालत में देखा जाता है। नहीं तो नौकरी छूट जायेगी। हर एक को अलग-अलग राय दी जाती है। दुनिया बहुत खराब है। कइयों के साथ रहना होता है। एक कहानी भी है। गुरू ने चेले को कहा शेर की गुफा में रहो। वेश्या के पास रहो... परीक्षा लेने भेजा। वास्तव में वह कोई परीक्षा नहीं। यह तुम बच्चों के लिए है। तुमको शेर के पास तो नहीं भेजेंगे। बाप तो समझाते हैं कोई भी हो उन्हों को बाप का परिचय दो। दिन-प्रतिदिन बुद्धि का ताला खुलता जायेगा। झाड़ बढ़ना तो है ना, तब तो विनाश भी शुरू हो इससे पहले विनाश तो हो न सके। यहाँ तो राजधानी स्थापन हो रही है। बाप तो कहते हैं सिर्फ मुझे याद करो। अच्छा-

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- नॉलेज को धारण करने के लिए दिल बड़ी साफ़ रखनी है। सच्ची दिल से बाप की सेवा में लगना है। सेवा में कभी भी थकना नहीं है।

२- वायदा करना है मेरा तो एक शिवबाबा, दूसरा न कोई। देह सहित देह के सब झूठे सम्बन्ध छोड़ एक से सर्व सम्बन्ध जोड़ने हैं। गरीबों को ज्ञान धन का दान देना है।

वरदान:- मास्टर सर्वशक्तिमान् की स्मृति द्वारा सर्व हलचलों को सर्ज करने वाले अचल-अडोल भव

जैसे शरीर का आक्यूपेशन इमर्ज रहता है, ऐसे ब्राह्मण जीवन का आक्यूपेशन इमर्ज रहे और उसका हर कर्म में नशा हो तो सर्व हलचलें मर्ज हो जायेंगी और आप सदा अचल-अडोल रहेंगे। मास्टर सर्व शक्तिमान् की स्मृति सदा इमर्ज है तो कोई भी कमजोरी हलचल में ला नहीं सकती क्योंकि वे हर शक्ति को समय पर कार्य में लगा सकते हैं, उनके पास कन्ट्रोलिंग पावर रहती है इसलिए संकल्प और कर्म दोनों समान होते हैं।

स्लोगन:-

नाजुक परिस्थितियों में घबराने के बजाए उनसे पाठ पढ़कर स्वयं को परिपक्व बना लो।

25-1-98 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – जितना-जितना दूसरों को ज्ञान सुनायेंगे उतना तुम्हारी बुद्धि में ज्ञान रिफाइन होता जायेगा, इसलिए सर्विस जरूर करनी है"

प्रश्न:- बाप के पास दो प्रकार के बच्चे कौन से हैं, उन दोनों में अन्तर क्या है?

उत्तर:- बाप के पास एक हैं लगे (सौतेले) बच्चे, दूसरे हैं सगे (मातेले) बच्चे। लगे बच्चे - मुख से सिर्फ बाबा मम्मा कहते लेकिन श्रीमत पर पूरा नहीं चल सकते। पूरा-पूरा बलिहार नहीं जाते। सगे बच्चे तो तन-मन धन से पूर्ण समर्पण अर्थात् ट्रस्टी होते हैं। कदम-कदम श्रीमत पर चलते हैं। लगे बच्चे सेवा न करने के कारण चलते-चलते गिर पड़ते हैं। संशय आ जाता है। सगे बच्चे पूरा निश्चयबुद्धि होते हैं।

प्रश्न:- फालो फादर कौन कर सकते हैं?

उत्तर:- जो हर बात में बाप से राय (श्रीमत) लेते रहते हैं, वही बाप को पूरा-पूरा फालो कर सकते हैं। ऐसे फालो फादर करने वाले बच्चे बाप की याद में मस्ताने हो जाते हैं। वह बुद्धिबल से बाप को सदा चटके हुए रहते हैं।

गीत:- बचपन के दिन भुला न देना...ओम् शान्ति।

बाप बच्चों को समझाते हैं। कौन सा बाप? वास्तव में दोनों बाप हैं। एक रूहानी, जिसको बाबा कहा जाता, दूसरा जिस्मानी जिसको दादा कहा जाता। यह तो सभी सेन्टर्स के बच्चे जानते हैं कि हम बापदादा के बच्चे हैं। रूहानी बाप शिव है। वह है सभी आत्माओं का बाप और ब्रह्मा दादा है सारे मनुष्य सिजरे का हेड। उनके तुम आकर बच्चे बने हो। उनमें भी कोई तो पक्के सगे हैं, कोई फिर लगे भी हैं। मम्मा बाबा तो दोनों ही कहते हैं परन्तु लगे बलि नहीं चढ़ सकते। बलि न चढ़ने वालों को इतनी ताकत नहीं मिल सकती अर्थात् अपने बाप को तन-मन-धन का ट्रस्टी नहीं बना सकते। श्रेष्ठ बनने के लिए उनकी श्रीमत पर नहीं चल सकते। सगे बच्चों को सूक्ष्म मदद मिलती है। परन्तु वह भी बहुत थोड़े हैं। भल सगे भी हैं परन्तु उनको भी अभी पक्के नहीं कहेंगे। जब तक रिजल्ट नहीं निकली है। भल यहाँ रहते भी हैं, बहुत अच्छे हैं, सर्विस भी करते हैं फिर गिर भी पड़ते हैं। यह है सारी बुद्धियोग की बात। बाबा को भूलना नहीं है। बाबा इस भारत को बच्चों की मदद से स्वर्ग बनाते हैं। गाया हुआ भी है शिव शक्ति सेना। हरेक को अपने से बात करनी है - बरोबर हम शिवबाबा के एडाप्टेड चिल्ड्रेन हैं। बाप से हम स्वर्ग का वर्सा पा रहे हैं। द्वापर से लेकर हमने जो लौकिक बाप का वर्सा पाया है वह नर्क का ही पाया है। दु:खी
a होते आये हैं। भक्तिमार्ग में तो है ही अन्धश्रद्धा। जब से भक्ति शुरु हुई है तब से जो-जो वर्ष बीता हम नीचे उतरते आये। भक्ति भी पहले अव्यभिचारी थी। एक की पूजा करते थे। उसके बदले अब अनेकों की पूजा करते आये हैं। अब यह सब बातें ऋषि, मुनि, साधु, सन्त आदि नहीं जानते कि भक्ति कब शुरु होती है। शास्त्रों में भी है ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात है भी बरोबर ब्रह्मा की ही और यह जानते भी ब्रह्मा और उनके बच्चे हैं। लक्ष्मी-नारायण तो नहीं जानेंगे कि दिन - रात कैसे होते हैं। भल ब्रह्मा-सरस्वती ही लक्ष्मी-नारायण बनते हैं परन्तु नाम ब्रह्मा का
b दिया है। ब्रह्मा के साथ बच्चे भी बहुत हैं। लक्ष्मी-नारायण के बच्चे तो बहुत नहीं होंगे। प्रजापिता भी उनको नहीं कहेंगे। अब नई प्रजा बन रही है। नई प्रजा होती ही है ब्राह्मणों की। ब्राह्मण ही

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अपने को ईश्वरीय सन्तान समझते हैं। देवता तो नहीं समझेंगे। उनको चक्र का ही पता नहीं।

अभी तुम जानते हो हम शिवबाबा के बच्चे बने हैं। उसने ही हमको 84 का चक्र समझाया है। उनकी मदद से हम भारत को फिर से दैवी पावन राजस्थान बना रहे हैं। यह बड़ी समझ की बात है। किसको समझाने की भी हिम्मत चाहिए। तुम हो शिव शक्ति पाण्डव सेना। पण्डे भी हो, सबको रास्ता बताते हो। तुम्हारे बिगर रूहानी स्वीट होम का रास्ता कोई बता न सके। वह पण्डे लोग तो करके अमरनाथ पर, कोई तीर्थ पर ले जाते हैं। तुम बी.के. तो एकदम सभी से दूर परमधाम ले जाते हो। वह जिस्मानी गाइड हैं - धक्के खिलाने वाले। तुम सभी को बाप के पास शान्तिधाम ले जाते हो। तो सदैव यह याद करना पड़े -- हम भारत को फिर से दैवी राजस्थान बना रहे हैं। यह तो कोई भी मानेंगे। भारत का आदि सनातन देवी-देवता धर्म था। भारत सतयुग में बेहद का दैवी पावन राजस्थान था, फिर पावन क्षत्रिय राजस्थान बना, फिर माया की प्रवेशता होने से आसुरी राजस्थान बन जाता है। यहाँ भी पहले राजा रानी राज्य करते थे, परन्तु बिगर लाइट के ताज राजाई चलती आ रही है। दैवी राजस्थान के बाद हुआ आसुरी पतित राजस्थान, अभी तो पतित प्रजा का स्थान है, पंचायती राजस्थान। वास्तव में इनको राजस्थान कह नहीं सकते। परन्तु नाम लगा दिया है। राजाई तो है नहीं। यह भी ड्रामा बना हुआ है। यह लक्ष्मी-नारायण के चित्र तुमको बहुत काम आयेंगे। इन पर समझाना है भारत ऐसा डबल सिरताज था। इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, छोटेपन में राधे कृष्ण थे, फिर त्रेता में रामराज्य हुआ। फिर द्वापर में माया आ गई। यह तो बिल्कुल सहज है ना। भारत की हिस्ट्री-जॉग्राफी नटशेल में समझाते हैं। द्वापर में ही फिर पावन राजा-रानी लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर बनें। देवतायें स्वयं तो वाममार्ग में चले गये। पतित होने लग पड़े। फिर जो पावन देवतायें होकर गये हैं उनके मन्दिर बनाकर पूजा शुरु की। पतित ही पावन को माथा टेकते है। जब तक ब्रिटिश गवर्मेन्ट का राज्य था तो राजा-रानी थे। जमींदार भी राजा रानी का लकब (टाइटल) ले लेते थे, इससे उनका दरबार में मान होता था। अभी तो कोई राजा नहीं है। पीछे जब आपस में लड़े हैं तब मुसलमान आदि आये हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो फिर से कलियुग का अन्त आ गया है। विनाश सामने खड़ा है। बाप फिर से राजयोग सिखला रहे हैं। कैसे स्थापना होती है, सो तो तुम जानते हो, फिर यह हिस्ट्री-जॉग्राफी मिट जाती है। फिर भक्ति में वो लोग अपनी गीता बना देते हैं, उसमें बहुत फर्क पड़ जाता है। भक्ति के लिए उन्हों को देवी-देवता धर्म का पुस्तक जरूर चाहिए। सो ड्रामा अनुसार गीता बना दी है। ऐसे नहीं भक्ति मार्ग में कोई भी गीता से राजस्थान व राजाई स्थापन करेंगे वा नर से नारायण बनेंगे। बिल्कुल नहीं। गीता पढ़ते-पढ़ते गिरते ही आये।

C अब बाप समझाते हैं तुम हो गुप्त सेना। बाबा भी गुप्त है। तुमको भी गुप्त योगबल से राजाई प्राप्त करा रहे हैं। बाहुबल से हद की राजाई मिलती है। योगबल से बेहद की राजाई मिलती है। तुम बच्चों को दिल अन्दर यह निश्चय है कि हम अभी भारत को वही दैवी राजस्थान बना रहे हैं। जो मेहनत करता है, उसकी मेहनत छिपी नहीं रह सकती। विनाश तो होना ही है। गीता में भी यह बात है। पूछते हैं, इस समय की मेहनत अनुसार हमको भविष्य में क्या पद मिलेगा? यहाँ भी कोई शरीर छोड़ता है तो संकल्प चलेगा कि यह किस पद को प्राप्त करेगा। सो तो बाप ही जाने। तो इसने किस प्रकार से तन-मन-धन की सेवा की है। यह बच्चे नहीं जान सकते। बापदादा जाने। बताया भी जा सकता है, इस प्रकार की सेवा तुमने की है। ज्ञान उठाया या नहीं, परन्तु मदद तो बहुत की है। जैसे मनुष्य दान करते हैं तो समझते हैं संस्था बहुत अच्छी है। अच्छा

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कार्य कर रही है। परन्तु मेरे में पावन रहने की ताकत नहीं है। मैं यज्ञ को मदद करता हूँ। तो उसका भी रिटर्न उनको मिल जाता है। जैसे मनुष्य कालेज बनाते हैं, हॉस्पिटल बनाते हैं औरों के लिए। ऐसे नहीं कहेंगे कि मैं बीमार पड़ूँ तो हॉस्पिटल में जाऊं। जो कुछ बनाते हैं दूसरों के लिए। तो उसका फल भी मिलता है। उसको दान कहा जाता है। यहाँ फिर क्या होता है। आशीर्वाद देते हैं तुम्हारा लोक परलोक सुहेला हो। सुखी हो। लोक और परलोक, सो तो इस संगमयुग की बात है। यह है मृत्युलोक का जन्म और अमरलोक का जन्म, दोनों सफल हों। बरोबर तुम्हारा अभी यह जन्म सफल हो रहा है, फिर कोई तन से कोई मन से कोई धन से सेवा करते हैं। बहुत हैं जो ज्ञान नहीं उठा सकते हैं, कहते हैं बाबा हमारे में हिम्मत नहीं है। बाकी
d मदद कर सकते हैं। तो बाप बतायेंगे कि तुम इतना धनवान बन सकते हो। कोई भी बात हो तो पूछ सकते हो। फालो फादर करना है तो पूछना भी उनसे है, इस हालत में हम क्या करें? श्रीमत देने वाला बाप बैठा है। उनसे पूछना है, छिपाना नहीं है। नहीं तो बीमारी बढ़ जायेगी। कदम-कदम श्रीमत पर न चले तो रोला पड़ जायेगा। बाबा कोई दूर थोड़ेही है। सम्मुख आकर पूछना चाहिए। ऐसे बापदादा के पास घड़ी-घड़ी आना चाहिए। वास्तव में ऐसे मोस्ट बिलवेड बाप के साथ तो इकट्ठा रहना चाहिए। साजन को चटक जाना चाहिए, वह है जिस्मानी, यह है रूहानी। इसमें चटकने की बात नहीं, यहाँ सबको बिठा नही देंगे। यह ऐसी चीज़ है, बस सामने बैठे ही रहें, सुनते ही रहें। उनकी मत पर चलते ही रहें। परंतु बाबा कहेंगे यहाँ बैठ नहीं जाना है। गंगा नदी बनो, जाओ सर्विस पर। बच्चों का लव ऐसा होना चाहिए - जैसे मस्ताना होता है। परन्तु
e फिर सर्विस भी तो करनी है। निश्चयबुद्धि तो एकदम लटक पड़ते हैं। बच्चे लिखते हैं फलाना बहुत अच्छा निश्चयबुद्धि है। मैं लिखता हूँ कुछ भी नहीं समझा है। अगर निश्चयबुद्धि है कि स्वर्ग का मालिक बनाने वाला बाप आ गया है तो एक सेकेण्ड भी मिलने बिगर रह न सके। बहुत ही बच्चियाँ हैं जो तड़पती हैं। फिर घर बैठे उनको साक्षात्कार होते हैं ब्रह्मा और कृष्ण का। निश्चय हो कि बाप परमधाम से हमें राजधानी देने आये हैं तो फिर आकर बाबा से मिलें। ऐसे भी आते हैं फिर समझाया जाता है कि ज्ञान गंगा बनो। प्रजा तो बहुत चाहिए। राजधानी स्थापन हो रही है। यह चित्र समझाने लिए बहुत अच्छा है। तुम किसको भी कह सकते हो कि हम फिर से राजधानी स्थापन कर रहे हैं। विनाश भी सामने खड़ा है। मरने से पहले बाप से वर्सा लेना है। सभी चाहते हैं वन आलमाइटी गवर्मन्ट हो। अब सब मिलकर एक थोड़ेही बन सकते हैं। एक राज्य था जरूर, जिसका गायन भी है। सतयुग का नाम बहुत बाला है। फिर से उसकी स्थापना हो रही है। कोई इन बातों को झट मानेंगे, कोई नहीं मानेंगे। पाँच हजार वर्ष पहले लक्ष्मी-नारायण का राज्य था फिर इन राजाओं का राज्य हो गया। राजायें भी अब पतित हो गये हैं। अब फिर पावन लक्ष्मी-नारायण का राज्य होगा। तुम्हारे लिए तो समझाना बहुत ही सहज है। हम दैवी राजधानी स्थापन कर रहे हैं, शिवबाबा की श्रीमत से और उनकी मदद से। शिवबाबा से शक्ति भी मिलती है। यह नशा रहना चाहिए। तुम वारियर्स हो। मन्दिरों में भी तुम जाकर समझा सकते हो तो स्वर्ग की स्थापना जरूर रचयिता द्वारा ही होगी ना। तुम जानते हो बेहद का बाप एक है। तुम्हारे सम्मुख तुमको ज्ञान श्रृंगार कर रहे हैं। राजयोग सिखला रहे हैं। वो गीता सुनाने वाले कभी राजयोग सिखला न सकें। यह अभी तुम बच्चों की बुद्धि में नशा चढ़ाया जाता है। बाबा आया है स्वर्ग की स्थापना करने। स्वर्ग में है ही पावन राजस्थान। मनुष्य तो लक्ष्मी-नारायण के राज्य को ही भूल गये हैं। अब बाप सम्मुख बैठ समझाते हैं, तुम कोई भी गीता पाठशाला आदि में चले जाओ। सारी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

f हिस्ट्री-जॉग्राफी अथवा 84 जन्मों का समाचार कोई सुना न सके। लक्ष्मी-नारायण के चित्र साथ राधे कृष्ण का भी हो तो समझाने में सहज होगा। यह है करेक्ट चित्र। लिखत भी उनकी अच्छी हो। तुम्हारी बुद्धि में सारा चक्र याद है। साथ में चक्र को समझाने वाला भी याद है। बाकी निरन्तर याद के अभ्यास में मेहनत बहुत है। निरन्तर याद ऐसी पक्की हो जो अन्त में कोई किचड़पट्टी याद न आये। बाप को कभी भूलना नहीं है। छोटे बच्चे बाप को बहुत याद करते हैं फिर बच्चा बड़ा होता है तो धन को याद करते हैं। तुमको भी धन मिलता है। जो अच्छी रीति धारण कर फिर दान करना चाहिए। पूरा फ्लेन्थोफिस्ट बनना है, मैं सम्मुख आकर राजयोग सिखाता हूँ। वह गीता तो जन्म जन्मान्तर पढ़ी। कुछ भी प्राप्ति नहीं हुई। यहाँ तो तुमको नर से नारायण बनाने लिए यह शिक्षा दे रहा हूँ। वह है भक्ति मार्ग। यहाँ भी कोटों में कोई निकलेगा जो तुम्हारे दैवी घराने का होगा। फिर ब्राह्मण बनने जरूर आयेंगे, फिर चाहे राजा रानी बनें, चाहे प्रजा। उसमें भी कई तो सुनन्ती, कथन्ती, भागन्ती हो जाते है। जो बच्चा बन फिर फारकती देते है, उन पर बहुत बड़ा दण्ड है। कड़ी सजा है। इस समय ऐसा कोई कह नहीं सकता कि हम निरन्तर याद करते हैं। अगर कोई कहे तो चार्ट लिखकर भेजे तो बाबा सब समझ जायेंगे। भारत की सेवा में ही तन-मन-धन लगा रहे हो। लक्ष्मी-नारायण का चित्र हमेशा पाकेट में पड़ा हो। बच्चों को बहुत नशा होना चाहिए।

सोशल वर्कर्स तुम्हारे से पूछते हैं तुम भारत की क्या सेवा कर रहे हो? बोलो, हम अपने तन-मन-धन से भारत को दैवी राजस्थान बना रहे हैं। ऐसी सेवा और कोई कर नहीं सकता। तुम जितनी सर्विस करेंगे उतनी बुद्धि रिफाइन होती जायेगी। ऐसे भी बहुत बच्चे हैं जो ठीक रीति नहीं समझा सकते हैं तो नाम बदनाम होता है। कोई-कोई में क्रोध का भूत भी है तो यह भी डिस्ट्रेक्टिव काम किया ना। उनको कहेंगे तुम अपना मुँह तो देखो। तुम लक्ष्मी या नारायण को वरने लायक बने हो? ऐसे जो आबरु (इज्जत) गँवाने वाले बच्चे हैं, वह क्या पद पायेंगे। वह प्यादों की लाइन में आ जाते हैं। तुम भी सेना हो ना। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- अविनाशी ज्ञान रत्नों का महादानी बनना है। तन-मन-धन से भारत को स्वर्ग बनाने की सेवा करनी है।

२- कोई भी डिस्ट्रेक्टिव (विनाशकारी) कार्य नहीं करना है। निरन्तर याद के अभ्यास में रहना है।

वरदान :- अपने अनादि संस्कारों को इमर्ज कर सर्व समस्याओं को पार करने वाले उड़ता पंछी भव

आप सब अनादि रूप में हो ही उड़ने वाले, लेकिन बोझ के कारण उड़ता पंछी के बजाए पिंजड़े के पंछी बन गये हो। अब फिर से अनादि संस्कार इमर्ज करो अर्थात् फरिश्ते रूप में स्थित रहो, इसी को ही सहज पुरुषार्थ कहा जाता है। उड़ता पंछी बनेंगे तो परिस्थितियां नीचे और आप ऊपर हो जायेंगे। यही सर्व समस्याओं का समाधान है।

स्लोगन:-

हर कदम में कल्याण समझ हर आत्मा को शान्ति की शक्ति का दान देना ही सच्ची सेवा है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

12-12-2000 प्रातः मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मीठे बच्चे – अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान ही महादान है, इस दान से ही राजाई प्राप्त होती है इसलिए महादानी बनो"

प्रश्नः जिन बच्चों को सर्विस का शौक होगा उनकी मुख्य निशानियाँ क्या होंगी?

उत्तरः 1. उन्हें पुरानी दुनिया का वातावरण बिल्कुल अच्छा नहीं लगेगा, 2. उन्हें बहुतों की सेवा कर आपसमान बनाने में ही खुशी होगी, 3. उन्हें पढ़ने और पढ़ाने में ही आराम आयेगा, 4. समझाते-समझाते गला भी खराब हो जाए तो भी खुशी में रहेंगे, 5. उन्हें किसी की मिलकियत नहीं चाहिए। वह किसी की प्रापर्टी के पीछे अपना समय नहीं गंवायेंगे। 6. उनकी रगें सब तरफ से टूटी हुई होंगी. 7. वह बाप समान उदारचित होंगे। उन्हें और कुछ भी मीठा नहीं लगेगा।

गीतः- ओम् नमो शिवाए.....

ओम् शान्ति। रूहानी बाप जिसकी महिमा सुनी वह बैठ बच्चों को पाठ पढ़ाते हैं, यह पाठशाला है ना। तुम सब यहाँ पाठ पढ रहे हो टीचर से। यह है सुप्रीम टीचर, जिसको परमपिता भी कहा जाता है। परमपिता रूहानी बाप को ही कहा जाता है। लौकिक बाप को कभी परमपिता नहीं कहेंगे। तुम कहेंगे अभी हम पारलौकिक बाप के पास बैठे हैं। कोई बैठे है, कोई मेहमान बन आते हैं। तुम समझते हो हम बेहद के बाप पास बैठे हैं, वर्सा लेने के लिए। तो अन्दर में कितनी खुशी होनी चाहिए। मनुष्य तो बिचारे चिल्लाते रहते हैं। इस समय दुनिया में सब कहते हैं दुनिया में शान्ति हो। यह तो बिचारों को पता नहीं, शान्ति क्या वस्तु है। ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर बाप ही शान्ति स्थापन करने वाला है। निराकारी दुनिया में तो शान्ति ही है। यहाँ चिल्लाते हैं कि दुनिया में शान्ति कैसे हो? अब नई दुनिया सतयुग में तो शान्ति थी जबकि एक धर्म था। नई दुनिया को कहते हैं पैराडाइज़, देवताओं की दुनिया। शास्त्रों में जहाँ-तहाँ अशान्ति की बातें लिख दी हैं। दिखाते है द्वापर में कंस था, फिर हिरण्यकश्यप को सतयुग में दिखाते है, त्रेता में रावण का हंगामा.....। सब जगह अशान्ति दिखा दी है। मनुष्य बिचारे कितना घोर अन्धियारे में हैं। पुकारते भी हैं बेहद के बाप को। जब गॉड फादर आये तब वही आकर शान्ति स्थापन करे। गॉड को बिचारे जानते ही नहीं। शान्ति होती ही है नई दुनिया में। पुरानी दुनिया में होती नहीं। नई दुनिया स्थापन करने वाला तो बाप ही है। उनको ही बुलाते हैं कि आकर पीस स्थापन करो। आर्य समाजी भी गाते हैं शान्ति देवा।

a बाप कहते है पहले है पवित्रता। अभी तुम पवित्र बन रहे हो। वहाँ पवित्रता भी है, पीस भी है, हेल्थ-वेल्थ सब है। धन बिगर तो मनुष्य उदास हो जाते है। तुम यहाँ आते हो इन लक्ष्मी-नारायण जैसा धनवान बनने। यह विश्व के मालिक थे ना। तुम आये हो विश्व का मालिक बनने। परन्तु वह दिमाग सबका नम्बरवार है। बाबा ने कहा था – जब प्रभातफेरी निकालते हो तो साथ में लक्ष्मी-नारायण का चित्र जरुर उठाओ। ऐसी युक्ति रचो। अभी बच्चों की बुद्धि पारसबुद्धि बनने की है। इस समय अजुन तमोप्रधान से रजो तक गये हैं। अभी सतो, सतोप्रधान तक जाना है। वह ताकत अभी नहीं है। याद में रहते नहीं हैं। योगबल

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

की बहुत कमी है। फट से सतोप्रधान नहीं बन सकते हैं। यह जो गायन है सेकण्ड में जीवनमुक्ति, वह तो ठीक है। तुम ब्राह्मण बने हो तो जीवनमुक्त बन ही गये, फिर जीवनमुक्ति में भी सर्वोत्तम, मध्यम, कनिष्ट होते हैं। जो बाप का बनते हैं तो जीवनमुक्ति मिलती जरूर है। भल बाप का बन फिर बाप को छोड़ देते हैं तो भी जीवनमुक्ति जरुर मिलेगी। स्वर्ग में झाड़ू लगाने वाला बन जायेंगे। स्वर्ग में तो जायेंगे। बाकी पद कम मिल जाता। बाप अविनाशी ज्ञान देते हैं, उसका कभी विनाश नहीं होता है। बच्चों के अन्दर में खुशी के ढोल बजने चाहिए। यह हाय-हाय होने के बाद फिर वाह-वाह होनी है।

तुम अभी ईश्वरीय सन्तान हो। फिर बनेंगे दैवी सन्तान। इस समय तुम्हारी यह जीवन हीरे तुल्य है। तुम भारत की सर्विस कर भारत को पीसफुल बनाते हो। वहाँ पवित्रता, सुख, शान्ति सब रहती है। यह जीवन तुम्हारा देवताओं से भी ऊंच है। अभी तुम रचता बाप को और सृष्टि चक्र को जानते हो। कहते है यह त्योहार आदि जो भी हैं परम्परा से चले आते हैं। परन्तु कब से? यह कोई नहीं जानते। समझते हैं जबसे सृष्टि शुरु हुई, रावण को जलाना आदि भी परम्परा से चला आता है। अब सतयुग में तो रावण होता नहीं। वहाँ कोई भी दुःखों नहीं है इसलिए गॉड को भी याद नहीं करते। यहाँ सब गॉड को याद करते रहते। समझते हैं गॉड ही विश्व में शान्ति करेंगे, इसलिए कहते हैं आकर रहम करो। हमको दुःख से लिबरेट करो। बच्चे ही बाप को बुलाते हैं क्योंकि बच्चों ने ही सुख देखा है। बाप कहते हैं—तुमको पवित्र बनाकर साथ ले चलेंगे। जो पवित्र नहीं बनेंगे वह तो सजा खायेंगे। इसमें मन्सा, वाचा, कर्मणा पवित्र रहना है। मन्सा भी बड़ी अच्छी चाहिए। इतनी मेहनत करनी है जो पिछाड़ी में मन्सा में कोई व्यर्थ ख्याल न आये। एक बाप के सिवाए कोई भी याद न आये। बाप समझाते हैं अभी मन्सा तक तो आयेंगे जब तक कर्मातीत अवस्था हो। हनुमान मिसल अडोल बनो, उसमें ही तो बड़ी मेहनत चाहिए। जो आज्ञाकारी, वफादार, सपूत बच्चे होते हैं बाप का प्यार भी उन पर जास्ती रहता है। 5 विकारों पर जीत न पाने वाले इतने प्यारे लग न सकें। तुम बच्चे जानते हो हम कल्प-कल्प बाप से यह वर्सा लेते हैं तो कितना खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। यह भी जानते हो स्थापना तो जरुर होनी है। यह पुरानी दुनिया कबदाखिल होनी है जरुर। हम परिस्तान में जाने लिए कल्प पहले मिसल पुरूषार्थ करते रहते हैं। यह तो क़ब्रिस्तान है ना। पुरानी दुनिया और नई दुनिया की समझानी सीढ़ी में है। यह सीढ़ी कितनी अच्छी है तो भी मनुष्य समझते नहीं है। यहाँ सागर के कण्ठे पर रहने वाले भी पूरा समझते नहीं। तुम्हें ज्ञान धन का दान तो जरुर करना चाहिए। धन दिये धन ना खुटे। दानी, महादानी कहते हैं ना। जो हॉस्पिटल, धर्मशाला आदि बनाते हैं, उनको महादानी कहते हैं। उसका फल फिर दूसरे जन्म में अल्पकाल के लिए मिलता है। समझो धर्मशाला बनाते हैं तो दूसरे जन्म में मकान का सुख मिलेगा। कोई बहुत-बहुत धन दान करते हैं तो राजा के घर में वा साहूकार के घर में जन्म लेते हैं। वह दान से बनते है। तुम पढ़ाई से राजाई पद पाते हो। पढ़ाई भी है, दान भी है। यहाँ है डायरेक्ट, भक्ति मार्ग में है इनडायरेक्ट। शिवबाबा तुमको पढाई से ऐसा बनाते हैं। शिवबाबा के पास तो हैं ही अविनाशी ज्ञान रत्न। एक-एक रत्न लाखों रुपयों के हैं। भक्ति के लिए ऐसे नहीं कहा जाता। ज्ञान इसको कहा जाता है। शास्त्रों में भक्ति का ज्ञान

b

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

है, भक्ति कैसे की जाए उसके लिए शिक्षा मिलती है। तुम बच्चों को है ज्ञान का कापारी नशा। तुम्हें भक्ति के बाद ज्ञान मिलता है। ज्ञान से विश्व की बादशाही का कापारी नशा चढ़ता है। जो जास्ती सर्विस करेंगे, उनको नशा चढ़ेगा। प्रदर्शनी अथवा म्युज़ियम में भी अच्छा भाषण करने वालों को बुलाते हैं ना। वहाँ भी जरुर नम्बरवार होंगे। महारथी, घोड़ेसवार, प्यादे होते हैं। देलवाड़ा मन्दिर में भी यादगार बना हुआ है। तुम कहेंगे यह है चैतन्य देलवाड़ा, वह है जड़। तुम हो गुप्त इसलिए तुमको जानते नहीं। तुमसे लड़ाई है।

तुम हो राजऋषि, वह हैं हठयोग ऋषि। अभी तुम ज्ञान ज्ञानेश्वरी हो। ज्ञान सागर तुमको ज्ञान देते हैं। तुम अविनाशी सर्जन के बच्चे हो। सर्जन ही नब्ज देखेगा। जो अपनी नब्ज को ही नहीं जानते तो दूसरे को फिर कैसे जानेंगे। तुम अविनाशी सर्जन के बच्चे हो ना। ज्ञान अंजन सतगुरु दिया... यह ज्ञान इन्जेक्शन है ना। आत्मा को इन्जेक्शन लगता है ना। यह महिमा भी अभी की है। सतगुरू की ही महिमा है। गुरूओं को भी ज्ञान इन्जेक्शन सतगुरू ही देंगे। तुम अविनाशी सर्जन के बच्चे हो तो तुम्हारा धन्धा ही है ज्ञान इन्जेक्शन लगाना। डॉक्टरों में भी कोई मास में लाख, कोई 500 भी मुश्किल कमायेंगे। नम्बरवार एक-दों के पास जाते हैं ना। हाईकोर्ट, सुप्रीमकोर्ट में जजमेंट मिलती है -- फाँसी पर चढ़ना है। फिर प्रेजीडेंट पास अपील करते हैं तो वह माफ कर देते हैं।

तुम बच्चों को तो नशा रहना चाहिए, उदारचित होना चाहिए। इस भागीरथ में बाप प्रवेश हुआ तो इनको बाप ने उदारचित बनाया ना। खुद तो कुछ भी कर सकते हैं ना। वह इसमें आकर मालिक बन बैठा। चलो यह सब भारत के कल्याण के लिए लगाना है। तुम धन लगाते हो, भारत के ही कल्याण के लिए। कोई पूछे खर्चा कहाँ से लाते हो? बोलो, हम अपने ही तन-मन-धन से सर्विस करते हैं। हम राज्य करेंगे तो पैसा भी हम लगायेंगे। हम अपना ही खर्चा करते हैं। हम ब्राह्मण श्रीमत पर राज्य स्थापन करते हैं। जो ब्राह्मण बनेंगे वही खर्चा करेंगे। शुद्र से ब्राह्मण बनें फिर देवता बनना है। बाबा तो कहते हैं सब चित्र ऐसे ट्रांसलाइट के बनाओ जो मनुष्यों को कशिश हो। कोई को झट से तीर लग जाए। कोई जादू के डर से आयेंगे नहीं। मनुष्य से देवता बनाना -- यह जादू है ना। भगवानुवाच, मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ। हठयोगी कभी राजयोग सिखला न सके। यह बातें अभी तुम समझते हो। तुम मन्दिर लायक बन रहे हो। इस समय यह सारी विश्व बेहद की लंका है। सारे विश्व में रावण का राज्य है। बाकी सतयुग-त्रेता में यह रावण आदि हो कैसे सकते।

बाप कहते हैं अभी मैं जो सुनाता हूँ, वह सुनो। इन आंखों से कुछ देखो नहीं। यह पुरानी दुनिया ही विनाश होनी है, इसलिए हम अपने शान्तिधाम-सुखधाम को ही याद करते हैं। अभी तुम पुजारी से पूज्य बन रहे हो। यह नम्बरवन पुजारी थे, नारायण की बहुत पूजा करते थे। अब फिर पूज्य नारायण बन रहे हैं। तुम भी पुरुषार्थ कर बन सकते हो। राजधानी तो चलती है ना। जैसे किंग एडवर्ड दी फर्स्ट, सेकेण्ड, थर्ड चलता है। बाप कहते हैं तुम सर्वव्यापी कहकर हमारा तिरस्कार करते आये हो। फिर भी हम तुम्हारा उपकार करता हूँ। यह खेल ही ऐसा वन्डरफुल बना हुआ है। पुरुषार्थ जरुर करना है। कल्प पहले जो पुरुषार्थ किया है, वही ड्रामा अनुसार करेंगे। जिस बच्चे को सर्विस का शौक रहता है, उसको रात-दिन यही चिंतन रहता है। तुम बच्चों को बाप से रास्ता मिला है, तो तुम बच्चों को सर्विस

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बिगर और कुछ अच्छा नहीं लगता है। दुनियावी वातावरण अच्छा नहीं लगता है। सर्विस वालों को तो सर्विस बिगर आराम नहीं। टीचर को पढ़ाने में मजा आता है। अब तुम बने हो बहुत ऊंच टीचर। तुम्हारा धंधा ही यह है, जितना अच्छा टीचर बहुतों को आपसमान बनायेंगे, उनको इतना इज़ाफा मिलता है। उनको पढ़ाने बिगर आराम नहीं आयेगा। प्रदर्शनी आदि में रात को 12 भी बज जाते हैं तो भी खुशी होती है। थकावट होती है, गला खराब हो जाता है तो भी खुशी में रहते हैं। ईश्वरीय सर्विस है ना। यह बहुत ऊंच सर्विस है, उनको फिर कुछ भी मीठा नहीं लगता है। कहेंगे हम यह मकान आदि लेकर भी क्या करेंगे, हमको तो पढ़ाना है। यही सर्विस करनी है। मिलकियत आदि में खिटपिट देखेंगे तो कहेंगे यह सोना ही किस काम का जो कान कटें। सर्विस से तो बेड़ा पार होना है। बाबा कह देते है, मकान भी भल उनके नाम पर हो। बी० के० को यह मकान आदि चाहिए नहीं। इस सर्विस में कोई बाहर का बंधन अच्छा नहीं लगता है। कोई की तो रग जाती है। कोई की रग टूटी हुई रहती है। बाबा कहते है मनमनाभव तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। बहुत मदद मिल जाती है। इस सर्विस में तो लग जाना चाहिए। इसमें आमदनी है बहुत। मकान आदि की बात नहीं। मकान दे और बन्धन डाले तो ऐसे लेंगे नहीं। जो सर्विस नहीं जानते वह तो अपन काम के नहीं। टीचर आपसमान बनायेंगे। नहीं बनते तो वह क्या काम के। हैण्ड्स की बहुत जरुरत रहती है ना। इसमें भी कन्याओं, माताओं की जास्ती जरूरत रहती है। बच्चे समझते हैं—बाप टीचर है, बच्चे भी टीचर चाहिए। ऐसे नहीं कि टीचर और कोई काम नहीं कर सकते हैं। सब काम करना चाहिए। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. दिन-रात सर्विस के चिंतन में रहना है। और सब रगें तोड़ देनी हैं, सर्विस के बिगर आराम नहीं, सर्विस कर आपसमान बनाना है।

२. बाप समान उदारचित बनना है। सबकी नब्ज देख सेवा करनी है। अपना तन-मन-धन भारत के कल्याण में लगाना है। अचल-अडोल बनने के लिए आज्ञाकारी वफ़ादार बनना है।

वरदान:- शुभ चिंतन द्वारा ज्ञान सागर में समाने वाले अतीन्द्रिय सुख के अनुभवी भव

जैसे सागर के अन्दर रहने वाले जीव जन्तु सागर में समाये हुए होते हैं, बाहर नहीं निकलना चाहते, मछली भी पानी के अन्दर रहती है, सागर व पानी ही उसका संसार है। ऐसे आप बच्चे भी शुभ चिंतन द्वारा ज्ञान सागर बाप में सदा समाये रहो, जब तक सागर में समाने का अनुभव नहीं किया तब तक अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलने का, सदा हर्षित रहने का अनुभव नहीं कर सकेंगे। इसके लिए स्वयं को एकान्तवासी बनाओ अर्थात् सर्व आकर्षण के वायब्रेशन से अन्तर्मुखी बनो।

स्लोगन:

दृष्टि का परिवर्तन करो तो स्थिति वा परिस्थिति स्वत: बदल जायेगी।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ता० 5·86, प्रात: क्लास ओम्शान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है ?

[illegible]

प्रश्नः- [illegible] जो [illegible] भी श्रीमत [illegible] ऐसे [illegible] बनते हैं ?

उत्तरः- [illegible] तो सबको कहना है शिवबाबा को याद करो। [illegible] तुम [illegible] शिवबाबा को याद [illegible] बैठ [illegible] बार2 भटकता रहेगा। इसलिये तुम्हारा [illegible] भाभी [illegible] बहन [illegible] बहन हो वह [illegible] बहन कह देते हैं लेकिन [illegible] बहन शरीर के नाते से। यहां वह बात नहीं है। यहां तो सबको समझाया जाता है कि अपने रचयिता बाप को याद करो। रचता [illegible] है ना। भाई बहन कहे तो कांटे हैं। यहां बाप बच्चों को कहते हैं मुझ बाप को याद करो। वह शिवबाबा है रहती बाप और पूजा मिलती ब्रह्मा की। जिस्मानी बाप तो बाप-दादा दोनों कहते हैं बच्चे बाप को याद करो। और कहां भी बुद्धियोग न जाये। बुद्धि बहुत भटकती है। भक्ति मार्ग में भी ऐसा होता है। कृष्ण के आगे या किसी भी देवता के आगे कहते हैं माला फेरते रहते हैं। बुद्धि कहां भागती रहती है। देवतायें कौन हैं ? उन्हों को यह राजाई कैसे मिली। कब मिली। यह तो किसको पता नहीं है। सिक्ख लोग जानते हैं गुरू नानक ने सिक्ख पंथ स्थापन किया। गुरू पीछे कहते हैं। ऐसे चलते आते हैं। बाकी वह पुनर्जन्म में तो आते रहते हैं। यह बातें कोई जानते नहीं। सदैव थोड़े ही गुरूनानक को याद करेंगे। अच्छा समझो गुरू नानक को वा बुद्ध को वा कोई भी अपने धर्म स्थापक को याद करते हैं परन्तु यह किसको थोड़े ही पता है कि अभी वह कहां है। वह तो कह देंगे ज्योति ज्योत समाया। वाणी से परे चले गये। या तो कह देते कृष्ण हाजिरा हजूर है। जिधर देखो कृष्ण ही कृष्ण है। राधे ही राधे है। ऐसे कहते रहते हैं। बाप बैठ समझाते हैं तुम भारतवासी देवतायें थे। तुम्हारी सूरते मनुष्य को सीरत देवताई थी। देवताओं के चित्र तो हैं ना।

b चित्र न होते तो यह भी समझते नहीं। राधे कृष्ण साथ फिर ल०ना० का क्या सम्बन्ध है। यह बाप ही आकर समझाते हैं तुम कोई को भी समझा सकते हो। यह तो निराकार बाबा हमको समझाते हैं। वास्तव में निराकार तो सभी है। आत्मा निराकार है फिर इस साकार द्वारा बोलती है। निराकार तो बोल न सके। तुम समझा सकते हो हमारा बाबा सो तुम्हारा बाबा है। शिवबाबा ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर है। बेहद का बाप है। उनको शरीर तो चाहिये ना। खुद कहते हैं हम इस ब्रह्मा तन में आता हूँ तब तो इस ब्राह्मण धर्म की स्थापना हो। ब्रह्मा द्वारा रचना होती ही है ब्राह्मणों की। तो बाप ब्राह्मण बच्चों को ही समझाते हैं। दूसरे किसको नहीं कहते हैं। बच्चों को ही समझाते हैं। शिवबाबा समझाते हैं ऐसे नहीं कि हम शिवबाबा के बच्चे हैं इसलिये भगवान है, नहीं। बाप बाप है, बच्चे बच्चे हैं। हां बच्चा जब बड़ा हो, बाप से बेहद वर्सा ले जब बाप बन जाए। उनके तो ढेर बच्चे हैं ना। बच्चों को ही समझाते हैं। जो जितना बुद्धि से बाप की आज्ञा पर चलेंगे। श्रीमत ही श्रेष्ठ बनाती है। बच्चे तुम जानते हो हम उन देवताओं जैसे बन रहे हैं। जन्म जन्मान्तर हम देवताओं की महिमा गाते आये हैं। अब हमको श्रीमत पर ऐसा बनना है। राजाई स्थापन होनी है। सब तो पूरी रीति श्रीमत पर नहीं चलेंगे। नम्बरवार [illegible] राजाई में [illegible]

नौकर चाकर, चण्डाल आदि सब चाहिये। ऐसी चलन वालों को भी सा० होगा। यह चण्ड की फैमली में जायेंगे। चण्डाल एक तो नहीं होगा। उनकी फैमेलि होगी। चण्डालों को भी युनियन होती है। सभी आपस में मिलते हैं। स्ट्राईक करें तो सब काम छोड़ देवें। सतयुग में तो ऐसी बातें होती नहीं। तुम्हारा एक चित्र भी है। जिस पर पूछते हो क्या बनने चाहते हो। बैरिस्टर बनेंगे, देवता बनेंगे, क्या बनेंगे। तुम्हारी सारी राजधानी स्थापन हो रही है। कम थोड़ेही है। वेहद का बाप वेहद को बातें बैठ समझाते हैं। यह बुद्धि में बैठ जाना चाहिए। हम भविष्य के लिये पुरुषार्थ कर ऊंच पद पायेंगे। श्रीमत पर हम श्रेष्ठ से श्रेष्ठ सजाई पद पायेंगे। और फिर दूसरों को भी आप समान बनायेंगे। और दूसरों को जब आप समान बनावें तब कहा जावे खुदाई खिजमतगार। किसका कुछ भी छिपा नहीं रह सकता। आगे चल सब मालूम पड़ेगा। इसको ही ज्ञान का प्रकाश कहा जाता है। रोशनी मिलती जाती है। मनुष्यों को कुछ भी पता थोड़ेही पड़ता है। बाम्ब्स भी अन्दर बनाते रहते हैं। चीज रखने लिये थोड़ेही बनाई जाती है। पहले2 तलवार से लड़ाई चलती है। फिर बन्दूक बनाते, काम में लाने लिये। रखने लिये नहीं। समझते भी हैं इसी से ही मौत होगा। ट्रायेल तो की है ना। हिरोशिमा की लड़ाई में। इतने समय में कितनी उन्नति की है। कितने ढेर मकान बनाये हैं। अब ऐसा विनाश नहीं होगा। जो हास्पिटल में पड़े रहें। हास्पिटल आदि तो रहेगा नहीं। इसलिये अर्थ क्वेक आदि इकट्ठी होगी। कुदरती आपदाओं को कोई रोक नहीं सकता। कहते भी हैं यह सब ईश्वर के हाथ में है। अब तुम बच्चे समझते हो विनाश तो होना ही है। अकाल पड़ेगा। पानी नहीं मिलेगा। सो तो तुम जानते हो। कोई नई बात नहीं। कल्प पहले भी ऐसे हुआ था। कल्प का ज्ञान तो कोई में है नहीं। कहते भी हैं क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले पैराडाइस था। फिर शास्त्रों में कल्प की आयु लाखों वर्ष लिख दी है। कोई का भी अटेन्शन नहीं जाता है। सुनकर भी अपने धन्धे आदि में लग जाते हैं। तो अब बाप बच्चों को समझाते हैं। अब जल्दी2 पुरुषार्थ करो, याद में रहो तो खाद निकलती जायेगी। तुमको यहाँ ही सतोप्रधान बनना c है। नहीं तो सजायें खाकर फिर अपने2 धर्म में चले जायेंगे। श्रीमत भगवान बाप की मिलती है। श्रीकृष्ण तो राजकुमार है। वह क्या किसको मत देंगे। इन बातों को दुनिया में कोई नहीं जानते। प्यार से समझाना है कि शिवबाबा को याद करो। शिवबाबा खुद कहते हैं कि मामेकम् याद करो। वह भी कल्याणकारी है। और संग तोड़ एक संग जोड़ना है। तुम हो भारत का बेड़ा पार करने वाले। सत्य नारायण की कथा भी भारत से ही चलती है। d और धर्म वाले कब सत्य नारायण की कथा नहीं सुनेंगे। यह सुनेंगे वह जो नर से नारायण बनने वाले आदि सनातन देवी देवता धर्म वाले होंगे। वही अमरकथा सुनेंगे। अमरलोक में देवी देवतायें थे तो जरूर अमरलोक में अमरकथा से यह पद पाया होगा। एक2 बात याद करने लायक है। एक बात भी बुद्धि में अच्छी रीति बैठ जावे तो सब आ जायेंगे। बाप को याद करना है और स्वदर्शन चक्र ध्यान में रखना है। शिवबाबा के साथ यहाँ पार्ट बजा रहे हैं। फिर जाना है। बाप ही समझाते हैं सच क्या है, झूठ क्या है। सत्य एक है, बाकी सब है झूठ। लंका में रावण था। एक की बात है क्या। सतयुग त्रेता में तो ऐसी बात होती नहीं है। यह सारी मनुष्यों की दुनिया लंका है। यह हैवी रावण e राज्य। सब सीतायें एक राम को याद करती हैं अथवा सभी भक्तियाँ सजनियाँ एक भगवान साजन को याद करती हैं। क्योंकि रावणराज्य है। सन्यासी इन बातों को समझ न सकें। सभी दुखी हैं। शोक वाटिका में हैं। शोकवाटिका है कलियुग। अशोक वाटिका है सतयुग। यहाँ तो कदम2 पर शोक, दुख है। तुमको बाबा अशोक स्वर्ग में लाते हैं। यहाँ तो मनुष्य कितना शोक करते हैं। कोई मर जाता है तो जैसे पागल हो जाते हैं। स्वर्ग में यह सब बातें होती नहीं। अकाले मृत्यु कब होता नहीं। जो स्त्री विधवा बने। वहाँ तो समय पर एक चोला छोड़ दूसरा जाकर लेते हैं। मेल वा फीमेल का लेंगे। तो भी सा० हो जायेगा। पिछाड़ी में सब मालूम पड़ जायेगा। कौन क्या2 बनेंगे। फिर उस समय कहेंगे-हल्का समय मेहनत नहीं की। परन्तु उस समय कहने से क्या होगा। समय तो बीत

क्या ना। इसलिये बाप कहते हैं - बच्चे मेहनत करो। सर्विस में बच्चे राइटहैण्ड बनो तो राजाई में आ जायेंगे। सर्विस में लगे रहो। मिसाल भी है ना- कई कुटुम्ब के कुटुम्ब सर्विस में लग पड़े है। कहेंगे इस कुटुम्ब के कर्म ऐसे अच्छे किये हुये है। जो सब ईश्वरीय सर्विस में लग गये हैं। मां बाप, बच्चे यह तो अच्छा है ना। सर्विस पिछाड़ी धक्कर लगाते ही रहते है। तुम बच्चों को बहुत हर्षित होना चाहिए। कैसे मनुष्यों को रास्ता बतावें जो उन्हों की आत्मा खुश हो। कितने को रास्ता बताते हो। यह तुमने प्रजा बनाई। जो बोया ना। जमदेजाम (जन्म से ही राजा) कोई थोड़ेही होता है। पहले तो प्रजा के अधिकारी होते हैं। फिर पुरुषार्थ करते2 क्या बन सकते है। तुमको सर्विस पर देख औरों को भी उमंग होगा। हम भी क्यों न ऐसा पुरुषार्थ करें। नहीं तो फिर कल्प2 ऐसा हाल होगा। बहुत आयेंगे पछतायेंगे। उस समय जैसा दुख मनुष्य सारी आयु में कब नहीं देखते। श्रीमत पर न चलने कारण पिछाड़ी में ऐसा दुख देखेंगे बात मत पूछो। क्योंकि अनेक विकर्म किये हैं। बाबा रास्ता भी बहुत सहज बताते है। सिर्फ बाप को याद करना है औरों को भी यह रास्ता बताओ। सर्वव्यापी कहने से तो कोई फायदा ही नहीं। यह सब ज्ञानी निकली है। कृष्ण साकार मनुष्य उनको भगवान कैसे कह सकते। मनुष्य को मनुष्य ही कहा जाता। कृष्ण मनुष्य है देवी गुण वाला। मनुष्य का देवी देवता धर्म है। बाकी उनको भगवान नहीं कह सकते। कहेंगे वह देवी देवता धर्म का मनुष्य है। जैसे क्रिश्चियन धर्म के मनुष्य, इस्लामी धर्म के मनुष्य हैं। वैसे यह। यह है सबसे पवित्र। इन जैसा कोई हो नहीं सकता। आधाकल्प तुम पवित्र रहते हो। स्वर्ग और नर्क गाया हुआ है। बेहिन किसको कहा जाता यह भी किसको पता नहीं है। बाप भारत में ही आकर बच्चों को जगाते है। 5 हजार वर्ष की बात है। जो स्वर्गवासी थे वही अब नर्कवासी बने हैं। फिर बाप आकर पावन स्वर्गवासी बनाते है। एक साजन आकर सभी सजनियों को अपनी अशोक वाटिका में ले जाते हैं। तो पहले पहले सबको यह कहो कि बाप को याद करो। नहीं तो यहां बैठे2 बुद्धि कहां कहां भटकती रहती है। भक्ति मार्ग में भी यही हाल होता है। बाबा अनुभवी तो है ना। सबसे अच्छा धन्धा नवाबात का होता है। उनमें सच और झूठ को बड़ा मुश्किल समझते है। यहां भी सच छिपा हुआ है। झूठ ही झूठ चलता रहता है। यह भी ड्रामा में नूंध है। तुम जानते हो सब ड्रामा के एक्टर्स हैं। इनसे कोई भी निकल नहीं सकता। कोई भी मोक्ष को नहीं पा सकता। विवेक से काम लेना होता है। पार्ट में चलते ही जाते हैं। फिर कल्प बाद वही पार्ट रिपीट करेंगे। तुम देखेंगे कैसे मनुष्य मरते है। विनाश होना है। सभी आत्मायें निर्वाणधाम में चली जायेंगी। यह बुद्धि में ज्ञान है, सर्विस पर लगे रहने से बहुतों का कल्याण होगा। सारा परिवार ही ज्ञान में लग जाये, बड़ा वन्डर हो जायेगा। अच्छा -

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मातपिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

स्वउन्नति के लिए दृढ़ संकल्प:-

(1) सर्विस में बाप का राइट हैण्ड बनना है। आत्मा को खुश करने का रास्ता बताना है। सबका कल्याण करना है।

(2) पिछाड़ी के दर्दनाक सीन को देखने के लिए, दुखों से छूटने के लिए अभी से बाप की श्रीमत पर चलना है। आप समान बनाने की सेवा श्रीमत पर करनी है।

PSCB Digitized by eGangotri

तुम शास्त्रों को नहीं मानते हो। बोलो और हम तो सब से ज्यादा शास्त्र पढ़े हैं। सब से ज्यादा भक्ति की है। पहले2 शिव की भक्ति की। फिर सभी को करते आये। जिसके गुरु में पूजा करते थे वही अभी आया है भक्ति का फल देने। जिन्होंने गुरु से लेकर पूरी भक्ति की है बड़ी फिर ज्ञान उठायेंगे। तो नब्ज देख सकते हो पुराने भक्त या बीच का है या लास्ट का भक्त है। पहले2 भक्ति तुमने शुरू की है। तो जरा ज्ञान भी पहले2 तुम को देंगे। जो सतयुग त्रेता में देवी देवताएं थे वही फिर अभी बनेंगे। तुमको स्वर्ग में थे। अभी नई दे रहे तुम ने भी बहुत जन्म लिये हैं। हजारवीं दोषी आदि कम जन्म लेंगे। किसान है ना। सभी तो 84 जन्म नहीं लेंगे। मनुष्य तो कितना झूठ बोलते हैं। यह झूठ कहां से आई? भक्ति मार्ग के शास्त्रों से। मेरे हाथों में तो कोई शास्त्र है नहीं। वह है ज्ञान सागर, मनुष्य सृष्टि का बीज रूप। वही सृष्टि को पाता रहता है। तुम जानते हो यह है वृक्षपति। यह तुमको पढ़ा रहे हैं। वह है ज्ञान का सागर शान्ति का सागर। सतो० को महिमा अलग है। इनमें सर्व गुण सम्पन्न ... कहा जाता है। इनमें कोई ज्ञान नहीं है। ज्ञान से यह बने हैं। फिर जब 84 का चक्र पूरा हो तब ज्ञान मिले। इस समय सभी काम चिता पर बैठ काले बन पड़े हैं। पावन बन फिर पतित बन पड़ते। गुरुनानक ने भी कहा है ना असंख्य चोर हरामखोर ... बाप कहते हैं सच्चे बाप को याद करो। जप साहब को तो तुम जपते। साहब तो सबके तुम्हारा मालिक बना देंगे। मामेकं याद करो तो विश्व का मालिक बनेंगे। दुःख कर्ता सुख कर्ता भी वह एक है ना। तुम जानते हो हम बेहद के सुख का वरसा लेते हैं फिर दुःख हरम हो जायेगा। बाकी थोड़ा समय है। यह वही समय है जिसका जिक्र शास्त्रों में भी है। (मुसलों की बात) बाप कहते हैं यह है झूठी दुनिया। सच्च की रती नहीं। गीता को भी झूठा कर दी। पहले2 झूठ बाप कहते हैं शिवभगवानुवाच, कब कहते कृष्ण भगवानुवाच। अब मैं बाप कह बच्चा। मैं बाबा बाप से बच्चे को वारसा ले रहा हूं। इस युक्ति के कारण ही नास्तिकपाल बन गया है। गीता पढ़ते2 ८ नीचे ही गिरते जाते हैं। फिर गालियां भी देते हैं कि ठिकाना नहीं है। कण2 में है। पहले तो कहते थे युगे2 अवतार लेते हैं। फिर 24 अवतार। फिर मच्छ अवतार कुछ पता नहीं। अभी तो कितने तमोप्रधान बन गये हैं। इसलिए बाप आकर दैवी राज्य देते हैं। तुम मुझे भी गालियां दे कितना अपकार करते हो। फिर तुम मुझे गालियां देंगे। मैं आकर उपकार करता हूं। यह ड्रामा बना हुआ है। उनको आना है। इनकी आयु ही 5000 वर्ष है। लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं। यह बेहद है ना। ड्रामा एक्यूरेट ही है यह बनना। सत्य नारायण की कथा सुनते हैं ना। यह है नर से नारायण बनने की कथा। तुम सच्च2 नर से नारायण बनते हो। बाकी वह तो है भक्ति मार्ग की झूठी कथायें। शास्त्र पढ़ते2 आखिर इस हालत में पहुंचे हैं। यहां तो शास्त्र होते ही नहीं। भक्ति का ज्ञान कितना है। आधा कल्प के ज्ञान दिन, आधा कल्प की भक्ति रात। पहुत कर के तुमको कहते हैं ब्रह्मा को क्यों बिठाया है। अव्यभिचारी याद में उन में प्रवेश करता है। वह बहुत जन्मों के अन्त वाला है। पूरे 84 जन्म लिये हैं। इनको ही पहले जन्म में जाना है। भगवान तो मनुष्य को क्या देवताओं को भी नहीं कहा जाता। घोर अंधियारे में मनुष्य कितना है। बाप आया हुआ है संगम पर और वह लोग समझते हैं कलियुग अभी 40 हजार वर्ष पड़े हैं। तमोप्रधान कहते हैं फिर कलियुग अन्त समय है घोर से घोर पड़े हैं। वही बाप आ गया है। कल्प पहले भी आया था। अज्ञान की कुम्भ करण की नींद से भी खत्म हो जायेंगे। बेहद के बाप का निश्चय हुआ तो वरसे के भी हकदार होंगे। परन्तु माया कर देती है। कुछ है ना, तुम याद करते हो माया भूला देती है। बाप को भूलने से ही पाप हो जाते हैं। नीचे ऊपर होते रहते हैं। निष्कलंक दृष्टि न रहे। एडीजस्ट रहे। भाई2 समझे। यह है मेहनत। कोई भी पढ़ाई न पढ़ना है। मेहनत बिगर विश्व की बादशाही मिलती थोड़े। यह गुप्त मेहनत है। मल गुह्य व्यवहार में रहो परन्तु कमल पुष्प समान पवित्र रहो। फिर मुझे याद करेंगे तो जन्म-जन्मान्तर के पाप कट जायेंगे। इसको योगबल कहा जाता है। योग से तुम विश्व के मालिक बनते हो। पवित्र हैं विश्व का मालिक बन न सके। बाकी सांय में आपना को चिनगारी कहते हैं। वह भी कहते हैं हमको कोई प्रेक्टिस देनी हम अपने मौत के लिए बनाते हैं। यह भी ड्रामा में पार्ट है। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग।

"मीठे बच्चे – सच्चे बाप के साथ अन्दर बाहर सच्चा बनो, तब ही देवता बन सकेंगे। तुम ब्राह्मण ही फ़रिश्ता सो देवता बनते हो"

प्रश्नः- इस ज्ञान को सुनने वा धारण करने का अधिकारी कौन हो सकता है?

उत्तरः- जिसने आलराउण्ड पार्ट बजाया है, जिसने सबसे जास्ती भक्ति की है, वही ज्ञान को धारण करने में बहुत तीखे जायेंगे। ऊंच पद भी वही पायेंगे। तुम बच्चों से कोई कोई पूछते हैं–तुम शास्त्रों को नहीं मानते हो? तो बोलो जितना हमने शास्त्र पढ़े हैं, भक्ति की है, उतना दुनिया में कोई नहीं करता। हमें अब भक्ति का फल मिला है, इसलिए अब भक्ति की दरकार नहीं।

ओम् शान्ति। बेहद का बाप बेहद के बच्चों को बैठ समझाते हैं, सभी आत्माओं का बाप सभी आत्माओं को समझाते हैं क्योंकि वह सर्व का सद्गति दाता है। जो भी आत्मायें हैं, जीव आत्मायें ही कहेंगे। शरीर नहीं तो आत्मा देख नहीं सकती। भल ड्रामा के प्लेन अनुसार स्वर्ग की स्थापना बाप कर रहे हैं परन्तु बाप कहते हैं मैं स्वर्ग को देखता नहीं हूँ। जिन्हों के लिए है वही देख सकते हैं। तुमको पढ़ाकर फिर मैं तो कोई शरीर धारण करता ही नहीं हूँ। तो बिगर शरीर देख कैसे सकूँगा। ऐसे नहीं, जहाँ-तहाँ मौजूद हूँ। सब कुछ देखते हैं। नहीं, बाप सिर्फ देखते हैं तुम बच्चों को, जिनको गुल-गुल (फूल) बनाकर याद की यात्रा सिखलाते हैं। 'योग' अक्षर भक्ति का है। ज्ञान देने वाला एक ज्ञान का सागर है, उनको ही सतगुरू कहा जाता है। बाकी सब हैं गुरू। सच बोलने वाला, सचखण्ड स्थापन करने वाला वही है। भारत **सचखण्ड** था, वहाँ सब देवी-देवता निवास करते थे। तुम अभी मनुष्य से देवता बन रहे हो। तो बच्चों को समझाते हैं–सच्चे बाप के साथ अन्दर-बाहर सच्चा बनना है। पहले तो कदम-कदम पर झूठ ही था, वह सब छोड़ना पड़ेगा, अगर स्वर्ग में ऊंच पद पाना चाहते हो तो। भल स्वर्ग में तो बहुत जायेंगे परन्तु बाप को जानकर भी विकर्मों को विनाश नहीं किया तो सजायें खाकर हिसाब-किताब चुक्तू करना पड़ेगा, फिर पद भी बहुत कम मिलेगा। राजधानी स्थापन हो रही है पुरूषोत्तम संगमयुग पर। राजधानी न तो सतयुग में स्थापन हो सकती, न कलियुग में क्योंकि बाप सतयुग या कलियुग में नहीं आते हैं। इस युग को कहा जाता है पुरूषोत्तम कल्याणकारी युग। इसमें ही बाप आकर सबका कल्याण करते हैं। कलियुग के बाद सतयुग आना है इसलिए संगमयुग भी जरूर चाहिए। बाप ने बताया है यह पतित पुरानी दुनिया है। गायन भी है दूर देश का रहने वाला..... तो पराये देश में अपने बच्चे कहाँ से मिलेंगे। पराये देश में फिर पराये बच्चे ही मिलते हैं। उन्हों को अच्छी रीति समझाते हैं - मैं किसमें प्रवेश करता हूँ। अपना भी परिचय देते हैं और जिसमें प्रवेश करता हूँ उनको भी समझाता हूँ कि यह तुम्हारा बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है। कितना क्लीयर है।

अभी तुम यहाँ पुरूषार्थी हो, सम्पूर्ण पवित्र नहीं। सम्पूर्ण पवित्र को फरिश्ता कहा जाता है। जो पवित्र नहीं उनको पतित ही कहेंगे। फरिश्ता बनने के बाद फिर देवता बनते हो। सूक्ष्मवतन

PDF compressed with DOCUPUB.com optimized using trial version www.docupub.com/pdfoptimizer

b में तुम सम्पूर्ण फरिश्ता देखते हो, उन्हों को फरिश्ता कहा जाता है। तो बाप समझाते हैं—बच्चे, एक अल्फ़ को ही याद करना है। अल्फ माना बाबा, उनको अल्लाह भी कहते हैं। बच्चे समझ गये हैं बाप से स्वर्ग का वर्सा मिलता है। स्वर्ग कैसे रचते हैं? याद की यात्रा और ज्ञान से। भक्ति में ज्ञान होता नहीं। ज्ञान सिर्फ एक ही बाप देते हैं ब्राह्मणों को। ब्राह्मण चोटी हैं ना। अभी तुम ब्राह्मण हो फिर बाजोली खेलेंगे। ब्राह्मण देवता क्षत्रिय.....इसको कहा जाता है विराट रूप। विराट रूप कोई ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का नहीं कहेंगे। उसमें चोटी ब्राह्मण तो

c हैं नहीं। बाप ब्रह्मा तन में आते हैं—यह तो कोई जानता नहीं। ब्राह्मण कुल ही सर्वोत्तम कुल है, जबकि बाप आकर पढ़ाते हैं। बाप शूद्रों को तो नहीं पढ़ायेंगे ना। ब्राह्मणों को ही पढ़ाते हैं। पढ़ाने में भी टाइम लगता है, राजधानी स्थापन होनी है। तुम ऊंच ते ऊंच पुरूषोत्तम बनो। नई दुनिया कौन रचेगा? बाप ही रचेगा। यह भूलो मत। माया तुमको भुलाती है, उनका तो

d धन्धा ही यह है। ज्ञान में इतना इन्टरफियर नहीं करती है, याद में ही करती है। आत्मा में बहुत किचड़ा भरा हुआ है, वह बाप की याद बिगर साफ हो न सके। योग अक्षर से बच्चे बहुत मूँझते हैं। कहते हैं बाबा हमारा योग नहीं लगता। वास्तव में योग अक्षर उन हठयोगियों का है। सन्यासी कहते हैं ब्रह्म से योग लगाना है। अब ब्रह्म तत्व तो बहुत बड़ा लम्बा-चौड़ा है, जैसे आकाश में स्टॉर्स देखने में आते हैं, वैसे वहाँ भी छोटे-छोटे स्टॉर मिसल आत्मायें हैं। वह है आसमान से पार। जहाँ सूर्य चांद की रोशनी नहीं। तो देखो कितने छोटे-छोटे रॉकेट तुम हो। तब बाबा कहते हैं—पहले-पहले आत्मा का ज्ञान देना चाहिए। वह तो एक भगवान् ही दे सकते हैं। ऐसे नहीं, सिर्फ भगवान् को नहीं जानते। परन्तु आत्मा को भी नहीं जानते। इतनी छोटी सी आत्मा में 84 के चक्र का अविनाशी पार्ट भरा हुआ है, इनको ही कुदरत कहा जाता है, और कुछ नहीं कह सकते। आत्मा 84 का चक्र लगाती ही रहती है। हर 5 हजार वर्ष बाद यह चक्र फिरता ही रहता है। यह ड्रामा में नूँध है। दुनिया अविनाशी है, कभी विनाश को नहीं पाती। वो लोग दिखाते हैं बड़ी प्रलय होती है फिर कृष्ण अंगूठा चूसता हुआ पीपल के पत्ते पर आता है। परन्तु ऐसे कोई होता थोड़ेही है। यह तो बेकायदे है। महाप्रलय कभी होती नहीं। एक धर्म की स्थापना और अनेक धर्मों का विनाश चलता ही रहता है। इस समय मुख्य 3 धर्म हैं। यह तो आस्पीशियस संगमयुग है। पुरानी दुनिया और नई दुनिया में रात-दिन का फ़र्क है। कल नई दुनिया थी, आज पुरानी है। कल की दुनिया में क्या था—यह तुम समझ सकते हो। जो जिस धर्म का है, उस धर्म की ही स्थापना करते हैं। वो तो सिर्फ एक आते हैं, बहुत नहीं होते। फिर धीरे-धीरे वृद्धि होती है।

बाप कहते हैं तुम बच्चों को कोई तकलीफ़ नहीं देता हूँ। बच्चों को तकलीफ़ कैसे देंगे! मोस्ट बिलवेड बाप है ना। कहते हैं मैं तुम्हारा सद्गति दाता, दु:ख हर्ता सुख कर्ता हूँ। याद भी मुझ एक को करते हैं। भक्ति मार्ग में क्या कर दिया है, कितनी गालियां मुझे देते हैं! कहते हैं गॉड इज वन। सृष्टि का चक्र भी एक ही है, ऐसे नहीं, आकाश में कोई दुनिया है। आकाश में स्टॉर्स हैं। मनुष्य तो समझते हैं एक-एक स्टॉर में सृष्टि है। नीचे भी दुनिया है। यह सब हैं भक्ति मार्ग की बातें। ऊंच ते ऊंच भगवान् एक है। श्लोक भी है—सगल समग्री

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

तुम्हारे..... सारे सृष्टि की आत्मायें तुम्हारे में पिरोई हुई हैं। यह जैसे माला है। इनको बेहद की रूद्र माला भी कह सकते हैं। सूत्र में बांधी हुई हैं। गाते हैं परन्तु समझते कुछ नहीं। बाप आकर समझाते हैं—बच्चे, मैं तुमको ज़रा भी तकलीफ़ नहीं देता हूँ। यह भी बताया है जिन्होंने पहले-पहले भक्ति की है, वही ज्ञान में तीखे जायेंगे। भक्ति जास्ती की है तो फल भी उनको जास्ती मिलना चाहिए। कहते हैं भक्ति का फल भगवान् देते हैं, वह है ज्ञान का सागर। तो जरूर ज्ञान से ही फल देंगे। भक्ति के फल का किसको भी पता नहीं है। भक्ति का फल है ज्ञान, जिससे स्वर्ग का वर्सा सुख मिलता है। तो फल देते हैं अर्थात् नर्कवासी से स्वर्गवासी बनाते हैं एक बाप। रावण का भी किसको पता नहीं है। कहते भी हैं यह पुरानी दुनिया है।

e कब से पुरानी है—वह हिसाब नहीं लगा सकते हैं। बाप है मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का बीजरूप। सत्य है। वह कभी विनाश नहीं होता, इनको उल्टा झाड कहते हैं। बाप ऊपर में है, आत्मायें बाप को ऊपर देख बुलाती हैं, शरीर तो नहीं बुला सकता। आत्मा तो एक शरीर से निकल दूसरे में चली जाती है। आत्मा न घटती, न बढ़ती, न कभी मृत्यु को पाती है। यह खेल बना हुआ है। सारे खेल के आदि-मध्य-अन्त का राज़ बाप ने बताया है। आस्तिक भी बनाया है।

f यह भी बताया कि इन लक्ष्मी-नारायण में यह ज्ञान नहीं है। वहाँ तो आस्तिक-नास्तिक का पता ही नहीं रहता है। इस समय बाप ही अर्थ समझाते हैं। नास्तिक उनको कहा जाता है जो न बाप को, न रचना के आदि-मध्य-अन्त को, न ड्युरेशन को जानते हैं। इस समय तुम आस्तिक बने हो। वहाँ यह बातें ही नहीं। खेल है ना। जो बात एक सेकण्ड में होती वह फिर दूसरे सेकण्ड में नहीं होती। ड्रामा में टिक-टिक होती रहती है। जो पास्ट हुआ चक्र फिरता जायेगा। जैसे बाइसकोप होता है, दो घण्टे या तीन घण्टे बाद फिर वही बाइसकोप हूबहू रिपीट होगा। मकान आदि तोड़ डालते हैं फिर देखेंगे बना हुआ है। वही हूबहू रिपीट होता है। इसमें मूँझने की बात ही नहीं। मुख्य बात है आत्माओं का बाप परमात्मा है। आत्मायें परमात्मा अलग रहे बहुकाल..... अलग होती हैं, यहाँ आती हैं पार्ट बजाने। तुम पूरे 5 हज़ार वर्ष अलग रहे हो। तुम मीठे बच्चों को आलराउण्ड पार्ट मिला है। इसलिए तुमको ही समझाते हैं। ज्ञान

g के भी तुम अधिकारी हो। सबसे जास्ती भक्ति जिसने की है, ज्ञान में भी वही तीखे जायेंगे, पद भी ऊंच पायेंगे। पहले-पहले एक शिवबाबा की भक्ति होती है फिर देवताओं की। फिर 5 तत्वों की भी भक्ति करते, व्यभिचारी बन जाते हैं। अभी बेहद का बाप तुमको बेहद में ले जाते हैं, वह फिर बेहद के भक्ति के अज्ञान में ले जाते हैं। अब बाप तुम बच्चों को समझाते हैं—अपने को आत्मा समझ मुझ एक बाप को याद करो। फिर भी यहाँ से बाहर जाने से माया भुला देती है। जैसे गर्भ में पश्चाताप करते हैं—हम ऐसे नहीं करेंगे, बाहर आने से भूल जाते हैं। यहाँ भी ऐसे है, बाहर जाने से ही भूल जाते हैं। यह भूल और अभुल का खेल है। अभी तुम बाप के एडाप्टेड बच्चे बने हो। शिवबाबा है ना। वह है सब आत्माओं का बेहद का बाप। बाप कितना दूर से आते हैं। उनका घर है परमधाम। परमधाम से आयेंगे तो जरूर बच्चों के लिए सौगात ले आयेंगे। हथेली पर बहिश्त सौगात में ले आते हैं। बाप कहते हैं सेकण्ड में स्वर्ग की बादशाही लो। सिर्फ बाप को जानो। सभी आत्माओं का बाप तो है ना।

PDF Compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

कहते हैं मैं तुम्हारा बाप हूँ। मैं कैसे आता हूँ—वह भी तुमको समझाता हूँ। मुझे रथ तो जरूर चाहिए। कौन-सा रथ? कोई महात्मा का तो नहीं ले सकते। मनुष्य कहते हैं तुम ब्रह्मा को भगवान, ब्रह्मा को देवता कहते हो। अरे, हम कहाँ कहते हैं! झाड़ के ऊपर एकदम अन्त में खड़े हैं। जबकि झाड़ सारा तमोप्रधान है। ब्रह्मा भी वहाँ खड़ा है तो बहुत जन्मों के अन्त का जन्म हुआ ना। बाबा खुद कहते हैं मेरे बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में जब वानप्रस्थ अवस्था होती है तब बाप आये हैं। जो आकर धन्धा आदि छुड़ाया। साठ वर्ष के बाद मनुष्य भक्ति करते हैं भगवान् से मिलने के लिए।

बाप कहते हैं तुम सब मनुष्य मत पर थे, अभी बाबा तुम्हें श्रीमत दे रहे हैं। शास्त्र लिखने वाले भी मनुष्य हैं। देवतायें तो लिखते नहीं, न पढ़ते हैं। सतयुग में शास्त्र होते नहीं। भक्ति ही नहीं। शास्त्रों में सब कर्मकाण्ड लिखा हुआ है। यहाँ वह बात है नहीं। तुम देखते हो बाबा ज्ञान देते हैं। भक्ति मार्ग में तो हमने शास्त्र बहुत पढ़े हैं। कोई पूछे तुम वेदों-शास्त्रों आदि को नहीं मानते हो? बोलो, जो भी मनुष्य मात्र हैं उनसे ज्यादा हम मानते हैं। शुरू से लेकर अव्यभिचारी भक्ति हमने शुरू की है। अभी हमको ज्ञान मिला है। ज्ञान से सद्गति होती है फिर हम भक्ति को क्या करेंगे। बाप कहते हैं—बच्चे, हियर नो ईविल, सी नो ईविल..... तो बाप कितना सिम्पल रीति समझाते हैं—मीठे-मीठे बच्चे, अपने को आत्मा निश्चय करो। मैं आत्मा हूँ, वह कह देते अल्लाह हूँ। तुमको शिक्षा मिलती है मैं आत्मा हूँ, बाप का बच्चा हूँ। यही माया घड़ी-घड़ी भुलाती है। देह-अभिमानी होने से ही उल्टा काम होता है। अब बाप कहते हैं—बच्चे, बाप को भूलो मत। टाइम वेस्ट मत करो। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. रचयिता और रचना के राज को यथार्थ समझ आस्तिक बनना है। ड्रामा के ज्ञान में मूँझना नहीं है। अपनी बुद्धि को हद से निकाल बेहद में ले जाना है।

२. सूक्ष्मवतनवासी फरिश्ता बनने के लिए सम्पूर्ण पवित्र बनना है। आत्मा में जो किचड़ा भरा है, उसे याद के बल से निकाल साफ करना है।

वरदान:- परमात्म दुआओं से अपनी झोली भरपूर कर माया को दूर भगाने वाले विजयी रत्न भव

संगमयुग के महत्व को जान हर सेकेण्ड परमात्म दुआयें जमा करते रहो। परमात्म दुआओं से झोली सदा भरपूर है तो माया दूर से ही भाग जायेगी। जैसे कितने भी खौफ़नाक जानवर होते हैं लेकिन आपके पास लाइट है तो वो आगे नहीं आते। ऐसे सर्वशक्तियों की लाइट आपके साथ है तो माया समीप नहीं आ सकती। तो माया से युद्ध करने वाले नहीं लेकिन बाप के साथ से, दुआओं से सदा मायाजीत बनने वाले विजयी रत्न बनो।

स्लोगन:-

अचानक के पेपर में पास होना है तो अलबेलेपन को छोड़ अलर्ट बनो।

Digitized by eGangotri, OCR, web optimization using AI tools. Unauthorized evaluation copy of GVSRI.

20-7-04 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – बाप से होलसेल व्यापार करना सीखो, होलसेल व्यापार है मन्मनाभव, अल्फ को याद करना और कराना, बाकी सब है रिटेल"

प्रश्न:- बाप अपने घर में किन बच्चों की वेलकम करेंगे?

उत्तर:- जो बच्चे अच्छी रीति बाप की मत पर चलते हैं और कोई को भी याद नहीं करते हैं, देह सहित देह के सभी सम्बन्धों से बुद्धियोग तोड़ एक की याद में रहते हैं, ऐसे बच्चों को बाप अपने घर में रिसीव करेंगे। बाप अभी बच्चों को गुल-गुल (फूल) बनाते, फिर फूल बच्चों की अपने घर में वेलकम करते हैं।

ओम् शान्ति। बच्चों को अपने बाप और शान्तिधाम, सुखधाम की याद में बैठना है। आत्मा को, बाप को ही याद करना है, इस दु:खधाम को भूल जाना है। बाप और बच्चों का यह है मीठा सम्बन्ध। इतना मीठा सम्बन्ध और कोई बाप का होता ही नहीं। सम्बन्ध एक होता है बाप से फिर टीचर और गुरु से होता है। अभी यहाँ यह तीनों ही एक हैं। यह भी बुद्धि में याद रहे, खुशी की बात है ना। एक ही बाप मिला हुआ है, जो बहुत सहज रास्ता बताते हैं। बाप को, शान्तिधाम और सुखधाम को याद करो, इस दु:खधाम को भूल जाओ। घूमो-फिरो लेकिन बुद्धि में यही याद रहे। यहाँ तो कोई गोरखधन्धा आदि नहीं है। घर में बैठे हैं। बाप सिर्फ 3 अक्षर याद करने को कहते हैं। वास्तव में है एक अक्षर–बाप को याद करो। बाप को याद करने से सुखधाम और शान्तिधाम दोनों वर्से याद आ जाते हैं। देने वाला तो बाप ही है। याद करने से खुशी का पारा चढ़ेगा। तुम बच्चों की खुशी तो नामीग्रामी है। बच्चों की बुद्धि में है–बाबा हमको घर में फिर वेलकम करेंगे, रिसीव करेंगे, परन्तु उनको, जो अच्छी रीति बाप की मत पर चलेंगे और कोई को याद नहीं करेंगे। देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों से बुद्धियोग तोड़ मामेकम् याद करना है। भक्तिमार्ग में तो तुमने बहुत सेवा की है परन्तु जाने का रास्ता मिलता ही नहीं। अभी बाप कितना सहज रास्ता बताते हैं, सिर्फ यह याद करो–बाप, बाप भी है, शिक्षक भी है, सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सुनाते हैं, जो और कोई समझा न सके। बाप कहते हैं अब घर चलना है। फिर पहले-पहले सतयुग में आयेंगे। इस छी-छी दुनिया से अब जाना है। भल यहाँ बैठे हैं परन्तु यहाँ से अब गये कि गये। बाप भी खुश होते हैं, तुम बच्चों ने बाप को इनवाइट किया है बहुत समय से। अब फिर बाप को रिसीव किया है। बाप कहते हैं मैं तुमको गुल-गुल बनाकर फिर शान्तिधाम में रिसीव करूँगा। फिर तुम नम्बरवार चले जायेंगे। कितना सहज है। ऐसे बाप को भूलना नहीं है। बात तो बहुत मीठी और सीधी है। एक बात अल्फ को याद करो। भल डिटेल में समझाते हैं फिर पिछाड़ी में कहते हैं अल्फ को याद करो, दूसरा न कोई। तुम जन्म-जन्मान्तर के आशिक हो एक माशूक के। तुम गाते आये हो–बाबा आप आयेंगे तो हम आपके ही बनेंगे। अब वह आये हैं तो एक का ही बनना चाहिए। निश्चयबुद्धि विजयन्ती। विजय पायेंगे रावण पर। फिर आना है रामराज्य में। कल्प-कल्प तुम रावण पर विजय पाते

a

PDF compression, OCR, web optimized using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

हो। ब्राह्मण बने और विजय पाई रावण पर। रामराज्य पर तुम्हारा हक है। बाप को पहचाना और रामराज्य पर हक हुआ। बाकी पुरूषार्थ करना है ऊंच पद पाने का। विजय माला में आना है। बड़ी विजय माला है। राजा बनेंगे तो सब कुछ मिलेगा। दास-दासियाँ सब नम्बरवार बनते हैं। सब एक जैसे नहीं होते। कोई तो बहुत नज़दीक रहते हैं, जो राजा-रानी खाते, जो कुछ भण्डारे में बनता वह सब दास-दासियों को मिलता है, जिसको 36 प्रकार का भोजन कहा जाता है। पद्मपति भी राजाओं को कहा जाता, प्रजा को पद्मपति नहीं कहेंगे। भल वहाँ धन की परवाह नहीं रहती। परन्तु यह निशानी देवताओं की होती है। जितना याद करेंगे उतना सूर्यवंशी में आयेंगे। नई दुनिया में आना है ना। महाराजा-महारानी बनना है। बाप नॉलेज देते हैं नर से नारायण बनने की, जिसको राजयोग कहा जाता है। बाकी भक्ति मार्ग के शास्त्र भी सबसे जास्ती तुमने पढ़े हैं। सबसे जास्ती भक्ति तुम बच्चों ने की है। अब बाप से आकर मिले हो। बाप रास्ता तो बहुत सहज और सीधा बताते हैं कि बाप को याद करो। बाबा बच्चे-बच्चे कह समझाते हैं। बाप बच्चों पर वारी जाते हैं। वारिस हैं तो वारी जाना पड़े। तुमने भी कहा था बाबा आप आयेंगे तो हम वारी जायेंगे। तन-मन-धन सहित कुर्बान जायेंगे। तुम एक बार कुर्बान जाते हो, बाबा 21 बार जायेंगे। बाप बच्चों को याद भी दिलाते हैं। समझ सकते हैं, सब बच्चे नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार अपना-अपना भाग्य लेने आये हैं। बाप कहते हैं मीठे बच्चों, विश्व की बादशाही हमारी जागीर है। अब जितना पुरूषार्थ तुम कर

b लो। जितना पुरूषार्थ करेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। नम्बरवन सो नम्बर लास्ट में है। नम्बरवन में फिर जरूर जायेंगे। सारा मदार पुरूषार्थ पर है। बाप बच्चों को घर ले जाने आये हैं। अब अपने को आत्मा समझ बाप को याद करेंगे तो पाप कटते जायेंगे। वह है काम अग्नि, यह है योग अग्नि। काम अग्नि में जलते-जलते तुम काले हो गये हो। बिल्कुल खाक हो पड़े हो। अब मैं आकर तुमको जगाता हूँ। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने की युक्ति बताता हूँ, बिल्कुल सिम्पुल। मैं आत्मा हूँ, इतना समय देह-अभिमान में रहने कारण तुम उल्टा लटक पड़े थे। अब देही-अभिमानी बन बाप को याद करो। घर जाना है, बाप लेने के लिए आया है। तुमने निमन्त्रण दिया और बाप आये हैं। पतितों को पावन बनाकर पण्डा बन ले जायेंगे सब आत्माओं को। आत्मा को ही यात्रा पर जाना है।

c तुम हो पाण्डव सम्प्रदाय। पाण्डवों का राज्य नहीं था। कौरवों का राज्य था। यहाँ तो अभी राजाई भी खत्म हो गई है। अभी भारत का कितना बुरा हाल हो गया है। तुम पूज्य विश्व के मालिक थे अब पुजारी बने हो। तो विश्व का मालिक कोई भी नहीं। विश्व के मालिक सिर्फ देवी-देवता ही बनते हैं। यह लोग कहते हैं विश्व में शान्ति हो। तुम पूछो विश्व में शान्ति किसको कहते हो? विश्व में शान्ति कब हुई है? वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती रहती है। चक्र फिरता रहता है। बताओ विश्व में शान्ति कब हुई थी? तुम कौन-सी शान्ति चाहते हो? कोई बता नहीं सकेंगे। बाप समझाते हैं विश्व में शान्ति तो स्वर्ग में थी, जिसको पैराडाइज़ कहते हैं। क्रिश्चियन लोग कहते हैं बरोबर क्राइस्ट से 3 हज़ार वर्ष पहले पैराडाइज़ था। उन्हों की न पारसबुद्धि बनती है, न फिर पत्थरबुद्धि बनती है। भारतवासी ही पारसबुद्धि

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

और पत्थरबुद्धि बनते हैं। न्यु वर्ल्ड को हेविन कहा जाता, पुरानी को तो हेविन नहीं कहेंगे। बच्चों को बाप ने हेल और हेविन का राज़ समझाया है। यह है रिटेल। होलसेल में तो सिर्फ एक अक्षर कहते हैं—मामेकम् याद करो। बाप से ही बेहद का वर्सा मिलता है। यह भी पुरानी बात है, पाँच हज़ार वर्ष पहले भारत में स्वर्ग था। बाप बच्चों को सच्ची-सच्ची कहानी बताते हैं। सत्य नारायण की कथा, तीजरी की कथा, अमरकथा मशहूर है। तुमको भी तीसरा नेत्र ज्ञान का मिलता है। उसको तीजरी की कथा कहा जाता है। वह तो भक्ति की पुस्तक बना दी है। अब तुम बच्चों को सब बातें अच्छी रीति समझाई जाती है। रिटेल और होलसेल होता है ना! इतना ज्ञान सुनाते हैं जो सागर को स्याही बनाओ तो भी अन्त न आये—यह हुआ रिटेल। होलसेल में सिर्फ कहते हैं मन्मनाभव। अक्षर ही एक है, उसका अर्थ भी तुम समझते हो और कोई बता न सके। बाप ने कोई संस्कृत में ज्ञान नहीं दिया है। वह तो जैसा राजा है वह अपनी भाषा चलाते हैं। अपनी भाषा तो एक हिन्दी ही होगी। फिर संस्कृत क्यों सीखनी चाहिए। कितना पैसा खर्च करते हैं।

तुम्हारे पास कोई भी आये उनको बोलो बाप कहते हैं मुझे याद करो तो शान्तिधाम-सुखधाम का वर्सा मिलेगा। यह समझना हो तो बैठकर समझो। बाकी हमारे पास और कोई बात नहीं है। बाप अल्फ़ ही समझाते हैं। अल्फ से ही वर्सा मिलता है। बाप को याद करो तो पाप नाश हों फिर पवित्र बन शान्तिधाम में चले जायेंगे। कहते भी हैं शान्ति देवा। बाप ही
d शान्ति के सागर हैं तो उनको ही याद करते हैं। बाप जो स्वर्ग स्थापन करते हैं वह तो यहाँ ही होता है। सूक्ष्मवतन में कुछ भी है नहीं। यह तो साक्षात्कार की बातें हैं। ऐसा फरिश्ता बनना है। बनना यहाँ ही है। फरिश्ता बनकर फिर घर चले जायेंगे। राजधानी का वर्सा बाप से मिलता है। शान्ति और सुख दोनों वर्से मिलते हैं। बाप के सिवाए और कोई को सागर कह नहीं सकते हैं। बाप जो ज्ञान का सागर है वही सर्व की सद्गति कर सकते हैं। बाप पूछते हैं, मैं तुम्हारा बाप, टीचर, गुरु हूँ, तुम्हारी सद्गति करता हूँ, फिर तुम्हारी दुर्गति कौन करते हैं? रावण। दुर्गति और सद्गति का यह खेल है। कोई मूँझते हैं तो पूछ सकते हैं। भक्ति मार्ग में प्रश्न ढेर उठते हैं, ज्ञान मार्ग में प्रश्न की बात नहीं। शास्त्रों में तो शिवबाबा से लेकर देवताओं की भी कितनी ग्लानि कर दी है, किसको भी छोड़ा नहीं है। यह भी ड्रामा बना हुआ है, फिर भी करेंगे। बाप कहते हैं यह देवी-देवता धर्म बहुत सुख देने वाला है।
e फिर यह दुःख नहीं रहेगा। बाप तुम्हें कितना समझदार बनाते हैं। यह लक्ष्मी-नारायण समझदार हैं, तब तो विश्व के मालिक हैं। बेसमझ तो विश्व के मालिक हो न सकें। पहले तो तुम काँटे थे, अब फूल बन रहे हो इसलिए बाबा भी गुलाब का फूल ले आते हैं—ऐसा फूल बनना है। खुद आकर फूलों का बगीचा बनाते हैं। फिर रावण आता है काँटों का जंगल बनाने। कितना क्लीयर है। यह सब सिमरण करना है। एक को याद करने से उसमें सब आ जाता है। बाप से वर्सा मिलता है। यह बहुत भारी दौलत है, शान्ति का भी वर्सा मिलता है क्योंकि शान्ति का सागर वही है। लौकिक बाप की ऐसी महिमा कभी नहीं करेंगे। श्रीकृष्ण है सबसे प्यारा। पहले-पहले जन्म ही उनका होता है इसलिए उनको सबसे जास्ती प्यार करते

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

हैं। बाप बच्चों को ही सारे घर का समाचार देते हैं। बाप भी पक्का व्यापारी है, कोई विरला ऐसा व्यापार करे। होलसेल व्यापारी कोई मुश्किल बनता है। तुम होलसेल व्यापारी हो ना! बाप को याद करते ही रहते हो। कई रिटेल में सौदा कर फिर भूल जाते हैं। बाप कहते हैं निरन्तर याद करते रहो। वर्सा मिल गया फिर याद करने की दरकार नहीं रहेगी। लौकिक सम्बन्ध में बाप बूढ़ा हो जाता है तो कोई-कोई बच्चे पिछाड़ी तक भी सहायक बनते हैं। कोई f तो मिलकियत मिली और उड़ाकर खलास कर देते हैं। बाबा सब बातों का अनुभवी है। तब तो बाप ने भी इनको अपना रथ बनाया है। गरीबी का, साहूकारी का सबमें अनुभवी है। ड्रामा अनुसार यह एक ही रथ है। यह कभी बदल नहीं सकता। ड्रामा बना हुआ है, इसमें कभी चेन्ज हो नहीं सकती है। सब बातें होलसेल और रिटेल में समझाकर फिर अन्त में कह g देते हैं मन्मनाभव, मध्याजी भव। मन्मनाभव में सब आ जाता है। यह बहुत भारी खजाना है, उनसे झोली भरते हैं। अविनाशी ज्ञान रत्न एक-एक लाख रूपये के हैं। तुम पद्मापद्म भाग्यशाली बनते हो। बाप तो खुशी, ना खुशी दोनों से न्यारा है। साक्षी हो ड्रामा देख रहे हैं। तुम पार्ट बजाते हो। मैं पार्ट बजाते भी साक्षी हूँ। जन्म-मरण में नहीं आता हूँ। और तो कोई इनसे छूट नहीं सकता, मोक्ष मिल न सके। यह अनादि बना-बनाया ड्रामा है। यह भी वण्डरफुल है। छोटी-सी आत्मा में सारा पार्ट भरा हुआ है। यह अविनाशी ड्रामा कभी विनाश को नहीं पाता। अच्छा

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का दिल व जान, सिक व प्रेम से, सर्विसएबुल बच्चों को नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. जैसे बाप बच्चों पर वारी जाते हैं, ऐसे तन-मन-धन सहित एक बार बाप पर पूरा कुर्बान जाकर 21 जन्मों का वर्सा लेना है।

२. बाप जो अविनाशी अनमोल खजाना देते हैं उससे अपनी झोली सदा भरपूर रखनी है। सदा इसी खुशी व नशे में रहना है कि हम पद्मापद्म भाग्यशाली हैं।

वरदान:- स्वयं में सर्व शक्तियों को इमर्ज रूप में अनुभव करने वाले सर्व सिद्धि स्वरूप भव

लौकिक में किसी के पास किसी बात की शक्ति होती है, चाहे धन की, बुद्धि की, सम्बन्ध-सम्पर्क की ... तो उसे निश्चय रहता है कि यह क्या बड़ी बात है। वह शक्ति के आधार से सिद्धि प्राप्त कर लेते हैं। आपके पास तो सभी शक्तियां हैं, अविनाशी धन की शक्ति सदा साथ है, बुद्धि की भी शक्ति है तो पोजीशन की भी शक्ति है, सर्व शक्तियां आपमें हैं, इन्हें सिर्फ इमर्ज रूप में अनुभव करो तो समय पर विधि द्वारा सिद्धि प्राप्त कर सिद्धि स्वरूप बन जायेंगे।

स्लोगन:-

मन को प्रभू की अमानत समझकर उसे सदा श्रेष्ठ कार्य में लगाओ।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

17-10-2000 · प्रातः मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – संगमयुग पर ही तुम्हें आत्म-अभिमानी बनने की मेहनत करनी पड़ती सतयुग अथवा कलियुग में यह मेहनत होती नहीं"

प्रश्न :- श्रीकृष्ण का नाम उनके माँ बाप से भी अधिक बाला है, क्यों?

उत्तर:- क्योंकि श्रीकृष्ण से पहले जिनका भी जन्म होता है वो जन्म योगबल से नहीं होता। कृष्ण के माँ बाप ने कोई योगबल से जन्म नहीं लिया है। 2. पूरी कर्मातीत अवस्था वाले राधे-कृष्ण ही हैं, वही सद्गति को पाते हैं। जब सब पाप आत्मायें खत्म हो जाती हैं तब गुलगुल (पावन) नई दुनिया में श्रीकृष्ण का जन्म होता है, उसे ही वैकुण्ठ कहा जाता है। 3. संगम पर श्रीकृष्ण की आत्मा ने, सबसे अधिक पुरुषार्थ किया है इसलिए उनका नाम बाला है।

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। 5 हज़ार वर्ष के बाद एक ही बार बच्चों को आकर पढ़ाते हैं, पुकारते भी हैं कि हम पतितों को आकर पावन बनाओ। तो सिद्ध होता है कि यह पतित दुनिया है। नई दुनिया, पावन दुनिया थी। नया मकान खूबसूरत होता है। पुराना जैसे टूटा फूटा हो जाता है। बरसात में गिर पड़ता है। अभी तुम बच्चे जानते हो बाप आया है नई दुनिया बनाने। अभी पढ़ा रहे हैं। फिर 5 हज़ार वर्ष के बाद पढ़ायेंगे। ऐसे कभी कोई साधू-सन्त आदि अपने फालोअर्स को नहीं पढ़ायेंगे। उनको यह पता ही नहीं है। न खेल का पता है क्योंकि निवृत्ति मार्ग वाले हैं। बाप बिगर कोई भी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझा न सके। आत्म-अभिमानी बनने में ही बच्चों को मेहनत होती है क्योंकि आधाकल्प में तुम कभी आत्म-अभिमानी बने नहीं हो। अब बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो। ऐसे नहीं कि आत्मा सो परमात्मा। नहीं, अपने को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा शिव को याद करना है। याद की यात्रा मुख्य है, जिससे ही तुम पतित से पावन बनते हो। इसमें कोई स्थूल बात नहीं। कोई नाक कान आदि नहीं बन्द करना है। मूल बात है – अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना। तुम आधाकल्प से हिरे हुए हो – देह-अभिमान में रहने के। पहले अपने को आत्मा समझेंगे तब बाप को याद कर सकेंगे। भक्ति मार्ग में भी बाबा-बाबा कहते आते हैं। बच्चे जानते हैं सतयुग में एक ही लौकिक बाप है। वहाँ पारलौकिक बाप को याद नहीं करते हैं क्योंकि सुख है। भक्ति मार्ग में फिर दो बाप बन जाते हैं। लौकिक और पारलौकिक। दुःख में सब पारलौकिक बाप को याद करते हैं। सतयुग में भक्ति होती नहीं। वहाँ तो है ही ज्ञान की प्रालब्ध। ऐसे नहीं कि ज्ञान रहता है। इस समय के ज्ञान की प्रालब्ध मिलती है। बाप तो एक ही बार आते हैं। आधाकल्प बेहद के बाप का, सुख का वर्सा रहता है। फिर लौकिक बाप से अल्पकाल का वर्सा मिलता है। यह मनुष्य नहीं समझा सकते। यह है नई बात,

a 5 हज़ार वर्ष में संगमयुग पर एक ही बार बाप आते हैं। जबकि कलियुग अन्त, सतयुग आदि का संगम होता है तब ही बाप आते हैं - नई दुनिया फिर से स्थापन करने। नई

b दुनिया में इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था फिर त्रेता में रामराज्य था। बाकी देवताओं आदि के जो इतने चित्र बनाये हैं वह सब हैं भक्ति मार्ग की सामग्री। बाप कहते हैं इन सबको

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

c भूल जाओ। अभी अपने घर को और नई दुनिया को याद करो।

ज्ञान मार्ग है समझ का मार्ग, जिससे तुम 21 जन्म समझदार बन जाते हो। कोई दुःख
d नहीं रहता। सतयुग में कभी कोई ऐसे नहीं कहेंगे कि हमको शान्ति चाहिए। कहा जाता है ना – मांगने से मरना भला। बाप तुमको ऐसा साहूकार बना देते हैं जो देवताओं को भगवान से कोई चीज़ मांगने की दरकार नहीं रहती। यहां तो दुआ मांगते हैं ना। पोप आदि आते हैं तो कितने दुआ लेने जाते हैं। पोप कितनों की शादियाँ कराते हैं। बाबा तो यह काम नहीं करते। भक्ति मार्ग में जो पास्ट हो गया है सो अब हो रहा है सो फिर रिपीट होगा। दिन-प्रतिदिन भारत कितना गिरता जाता है। अभी तुम हो संगम पर। बाकी सब हैं कलियुगी मनुष्य। जब तक यहाँ न आयें तब तक कुछ भी समझ न सकें कि अभी संगम है वा कलियुग है? एक ही घर में बच्चे समझते हैं संगम पर हैं, बाप कहेंगे हम कलियुग में हैं तो कितनी तकलीफ हो पड़ती है। खान-पान आदि का भी झंझट हो पड़ता है। तुम संगमयुगी हो शुद्ध पवित्र भोजन खाने वाले। देवतायें कभी प्याज़ आदि थोड़ेही खाते हैं। इन देवताओं को कहा ही जाता है निर्विकारी। भक्ति मार्ग में सब तमोप्रधान बन गये हैं। अब बाप कहते हैं सतोप्रधान बनो। कोई भी ऐसा नहीं है जो समझें कि आत्मा पहले सतोप्रधान थी फिर तमोप्रधान बनी है क्योंकि वह तो आत्मा को निर्लेप समझते हैं। आत्मा सो परमात्मा है, ऐसे-ऐसे कह देते हैं।

बाप कहते हैं ज्ञान सागर मैं ही हूँ, जो इस देवी-देवता धर्म के होंगे वह सब आकर फिर से अपना वर्सा लेंगे। अभी सैपलिंग लग रही है। तुम समझ जायेंगे – यह इतना ऊंच पद पाने लायक नहीं है। घर में जाकर शादियां आदि करते छी-छी होते रहते हैं। तो समझाया जाता है ऊंच पद पा नहीं सकते। यह राजाई स्थापन हो रही है। बाप कहते हैं – मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ तो प्रजा जरूर बनानी पड़े। नहीं तो राज्य कैसे पायेंगे। यह गीता के अक्षर हैं ना – इनको कहा ही जाता है गीता का युग। तुम राजयोग सीख रहे हो – जानते हो आदि सनातन देवी-देवता धर्म का फाउन्डेशन लग रहा है। सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी दोनों राजाई स्थापन हो रही हैं। ब्राह्मण कुल स्थापन हो चुका है। ब्राह्मण ही फिर सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी बनते हैं। जो अच्छी रीति मेहनत करेंगे वह सूर्यवंशी बनेंगे। और धर्म वाले जो आते हैं वह आते ही हैं अपने धर्म की स्थापना करने। पीछे उस धर्म की आत्मायें आती रहती हैं, धर्म की वृद्धि होती जाती है। समझो कोई क्रिश्चियन है तो उन्हों का बीजरूप क्राइस्ट ठहरा। तुम्हारा बीजरूप कौन है? बाप क्योंकि बाप ही आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं ब्रह्मा द्वारा। ब्रह्मा को ही प्रजापिता कहा जाता है। रचता नहीं कहेंगे। इन द्वारा बच्चे एडाप्ट किये जाते हैं। ब्रह्मा को भी तो क्रियेट करते हैं ना। बाप आकर प्रवेश कर यह रचते हैं। शिवबाबा कहते हैं तुम मेरे बच्चे हो। ब्रह्मा भी कहते हैं तुम मेरे साकारी बच्चे हो। अभी तुम काले छी-छी बन गये हो। अब फिर ब्राह्मण बने हो। इस संगम पर ही तुम पुरूषोत्तम देवी-देवता बनने की मेहनत करते हो। देवताओं को और शूद्रों को कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती, तुम ब्राह्मणों को मेहनत करनी पड़ती है देवता बनने के लिए। बाप आते ही हैं संगम पर। यह है बहुत छोटा युग। इसलिए इनको लीप युग कहा जाता है। इनको कोई जानते नहीं। बाप को भी मेहनत लगती है। ऐसे नहीं कि

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

झट से नई दुनिया बन जाती है। तुमको देवता बनने में टाइम लगता है। जो अच्छे कर्म करते हैं तो अच्छे कुल में जन्म लेते हैं। अभी तुम नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार गुल-गुल बन रहे हो। आत्मा ही बनती है। अभी तुम्हारी आत्मा अच्छे कर्म सीख रही है। आत्मा ही अच्छे वा बुरे संस्कार ले जाती है। अभी तुम गुल-गुल (फूल) बन अच्छे घर में जन्म लेते रहेंगे। यहाँ जो अच्छा पुरूषार्थ करते हैं, तो जरूर अच्छे कुल में जन्म लेते होंगे। नम्बरवार तो हैं ना। जैसे-जैसे कर्म करते हैं ऐसा जन्म लेते हैं। जब बुरे कर्म करने वाले बिल्कुल खत्म हो जाते हैं फिर स्वर्ग स्थापन हो जाता है, छांटछूट होकर। तमोप्रधान जो भी हैं वह खत्म हो जाते हैं। फिर नये देवताओं का आना शुरू होता है। जब भ्रष्टाचारी सब खत्म हो जाते हैं तब कृष्ण का जन्म होता है, तब तक बदली सदली होती रहती
e है। जब कोई छी-छी नहीं रहेगा तब कृष्ण आयेगा। तब तक तुम आते जाते रहेंगे। कृष्ण को रिसीव करने वाले माँ बाप भी पहले से चाहिए ना। फिर सब अच्छे-अच्छे रहेंगे। बाकी चले जायेंगे। तब ही उसको स्वर्ग कहा जायेगा। तुम कृष्ण को रिसीव करने वाले रहेंगे। भल तुम्हारा छी-छी जन्म होगा क्योंकि रावण राज्य है ना। शुद्ध जन्म तो हो न सके। गुल-गुल (पवित्र) जन्म कृष्ण का ही पहले-पहले होता है। उसके बाद नई दुनिया बैकुण्ठ कहा जाता है। कृष्ण बिल्कुल गुल-गुल नई दुनिया में आयेंगे। रावण सम्प्रदाय बिल्कुल खत्म हो जायेगी। कृष्ण का नाम उनके माँ-बाप से भी बहुत बाला है। कृष्ण के माँ-बाप का नाम इतना बाला नहीं है। कृष्ण से पहले जिनका जन्म होता है वो योगबल से जन्म नहीं कहेंगे। ऐसे नहीं कृष्ण के माँ-बाप ने योगबल से जन्म लिया है। नहीं, अगर ऐसा होता तो उन्हों का भी नाम बाला होता। तो सिद्ध होता है उनके माँ-बाप ने इतना पुरूषार्थ नहीं किया है जितना कृष्ण ने किया है। यह सब बातें आगे चल तुम समझते जायेंगे। पूरी कर्मातीत अवस्था वाले राधे-कृष्ण ही हैं। वही सद्गति में आते हैं। पाप आत्मायें सब खत्म हो जाती हैं तब उन्हों का जन्म होता है फिर कहेंगे पावन दुनिया। इसलिए कृष्ण का नाम बाला है। माँ-बाप का इतना नहीं। आगे चल तुमको बहुत साक्षात्कार होंगे। टाइम तो पड़ा है। तुम किसको भी समझा सकते हो – हम यह बनने के लिए पढ़ रहे हैं। विश्व में इनका राज्य अब स्थापन हो रहा है। हमारे लिए तो नई दुनिया चाहिए। अभी तुमको दैवी सम्प्रदाय नहीं कहेंगे। तुम हो ब्राह्मण सम्प्रदाय। देवता बनने वाले हो। दैवी सम्प्रदाय बन जायेंगे फिर तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों स्वच्छ होंगे। अभी तुम संगमयुगी पुरूषोत्तम बनने वाले हो। यह सारी मेहनत की बात है। याद से विकर्माजीत बनना है। तुम खुद कहते हो याद घड़ी-घड़ी भूल जाती है। बाबा पिकनिक पर बैठते हैं तो बाबा को ख्याल रहता है। हम याद में नहीं रहेंगे तो बाबा क्या कहेंगे इसलिए बाबा कहते हैं तुम याद में बैठ पिकनिक करो। कर्म करते माशूक को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। इसमें ही मेहनत है। याद से आत्मा पवित्र होगी, अविनाशी ज्ञान धन भी जमा होगा। फिर अगर अपवित्र बन जाते हैं तो सारा ज्ञान बह जाता है। पवित्रता ही मुख्य है। बाप तो अच्छी-अच्छी बात ही समझाते हैं। यह सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान और कोई में भी नहीं है। और जो भी सतसंग आदि हैं वह सब हैं भक्ति मार्ग के।

f बाबा ने समझाया है – भक्ति वास्तव में प्रवृत्ति मार्ग वालों को ही करनी है। तुम्हारे

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मे तो कितनी ताकत रहती है। घर बैठे तुमको सुख मिल जाता है। सर्वशक्तिमान् बाप से तुम इतनी ताकत लेते हो। सन्यासियों में भी पहले ताकत थी, जंगलों में रहते थे। अभी तो कितने बड़े-बड़े फ्लैट बनाकर रहते हैं। अभी वह ताकत नहीं है। जैसे तुम्हारे में भी पहले सुख की ताकत रहती है। फिर गुम हो जाती है। उन्हों में भी पहले शान्ति की ताकत थी, अब वह ताकत नहीं रही है। आगे तो सच कहते थे कि रचता और रचना को हम नहीं जानते। अभी तो अपने को भगवान शिवोहम् कह बैठते हैं। बाप समझाते हैं — इस समय सारा झाड़ तमोप्रधान है इसलिए साधुओं आदि का भी उद्धार करने मैं आता हूँ। यह दुनिया ही बदलनी है। सब आत्मायें वापिस चली जायेंगी। एक भी नहीं जिसको यह पता हो कि हमारी आत्मा में अविनाशी पार्ट भरा हुआ है जो फिर से रिपीट करेंगे। आत्मा इतनी छोटी है, इनमें अविनाशी पार्ट भरा है जो कभी विनाश नहीं होता। इसमें बुद्धि बड़ी अच्छी पवित्र चाहिए। वह तब होगी जब याद की यात्रा में मस्त रहेंगे। मेहनत सिवाए पद थोडेही मिलेगा। इसलिए गाया जाता है चढ़े तो चाखे..... कहाँ ऊंच ते ऊंच राजाओं का राजा डबल सिरताज, कहाँ प्रजा। पढ़ाने वाला तो एक ही है। इसमें समझ बड़ी अच्छी चाहिए। बाबा बार-बार समझाते हैं याद की यात्रा है मुख्य। मैं तुमको पढ़ाकर विश्व का मालिक बनाता हूँ। तो टीचर गुरु भी होगा। बाप तो है ही टीचरों का टीचर, बापों का बाप। यह तो तुम बच्चे जानते हो हमारा बाबा बहुत प्यारा है। ऐसे बाप को तो बहुत याद करना है। पढ़ना भी पूरा है। बाप को याद नहीं करेंगे तो पाप नष्ट नहीं होंगे। बाप सभी आत्माओं को साथ ले जायेंगे। बाकी शरीर सब खत्म हो जायेंगे। आत्मायें अपने-अपने धर्म के सेक्शन में जाकर निवास करती हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. बुद्धि को पवित्र बनाने के लिए याद की यात्रा में मस्त रहना है। कर्म करते भी एक माशूक याद रहे तब विकर्माजीत बनेंगे।

२. इस छोटे से युग में मनुष्य से देवता बनने की मेहनत करनी है। अच्छे कर्मों के अनुसार अच्छे संस्कारों को धारण कर अच्छे कुल में जाना है।

वरदान:- ब्राह्मण जीवन में एक बाप को अपना संसार बनाने वाले स्वत: और सहजयोगी भव

ब्राह्मण जीवन में सभी बच्चों का वायदा है - "एक बाप दूसरा न कोई"। जब संसार ही बाप है, दूसरा कोई है ही नहीं तो स्वत: और सहजयोगी स्थिति सदा रहेगी। अगर दूसरा कोई है तो मेहनत करनी पड़ती है। यहाँ बुद्धि न जाए, वहाँ जाए। लेकिन एक बाप ही सब कुछ है तो बुद्धि कहाँ जा नहीं सकती। ऐसे सहजयोगी, सहज स्वराज्य अधिकारी बन जाते हैं। उनके चेहरे पर रूहानियत की चमक एंकरस एक जैसी रहती है।

स्लोगन:-

सम्पन्नता की स्थिति में स्थित हो, प्रकृति की हलचल को चलते हुए बादलों के समान अनुभव करो।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

22-10-96 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – अपनी बुद्धि को ज्ञान मंथन में बिजी रखो तो सब फिकरातों से फारिग हो जायेंगे, सदा खुशी बनी रहेगी"

प्रश्न:- जो अपने को शिवबाबा के यज्ञ का सर्वेन्ट समझते हैं उनकी निशानी सुनाओ?

उत्तर:- शिवबाबा इस ब्रह्मा मुख से जो कुछ बोलेंगे, उसे वह फौरन मान लेंगे। जो कहे – उसे मानना, इसको ही श्रीमत कहा जाता है। श्री-श्री शिवबाबा की मत पर चलने से ही तुम श्रेष्ठ बनते हो। श्रेष्ठ बनना माना विजय माला का रत्न बनना।

गीत:- ओम् नमो शिवाए...ओम् शान्ति।

सालिग्रामों प्रति शिव भगवानुवाच। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप समझा रहे हैं। अभी तुम बच्चे जान गये हो कि हमको यहाँ आत्मा समझकर बैठना है। सारी दुनिया में एक भी ऐसा मनुष्य नहीं होगा जो अपने को आत्मा समझते हो। आत्मा क्या है, यही नहीं जानते तो परमात्मा को फिर कैसे जानेंगे? बाप द्वारा ही तुमको आत्मा की समझानी मिलती है कि मूल क्या चीज़ है। मनुष्यों को कुछ भी पता न होने के कारण कितना दु:खी हैं। तुम बच्चे जानते हो इस ड्रामा अथवा सृष्टि रूपी कल्प वृक्ष की आयु 5 हजार वर्ष है। जैसे आम का बीज है, वह चैतन्य होता तो समझाता कि हम बीज हैं, हमसे यह झाड़ ऐसे निकला। परन्तु वह है जड़। चैतन्य झाड़ एक ही है। शुरू से लेकर अन्त तक इस सारे झाड़ का तुमको ज्ञान मिला हुआ है। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार समझ सकते हो। बाप कहते हैं मैं इस मनुष्य सृष्टि का बीज सत चैतन्य आनंद स्वरूप हूँ। उनको ज्ञान का सागर कहा जाता है। परमपिता परमात्मा सत चित आनंद स्वरूप है। यह निराकार के लिए महिमा है। यह तुम जानते हो बाप की महिमा सबसे न्यारी है। मनुष्य तो बाप की महिमा को
a बिल्कुल ही नहीं जानते। भल यह लक्ष्मी-नारायण आदि देवतायें हैं। उन्हों को भी यह नॉलेज नहीं है। यह ड्रामा का ज्ञान तुमको मिला है। तुम जानते हो यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है फिर देवता बनेंगे तो यह ज्ञान रहेगा नहीं। वन्डर है ना। तुम इस ड्रामा के एक्टर्स हो ना। तुमको रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान है। बाकी न शूद्र वर्ण को, न देवता वर्ण को यह ज्ञान है। ऐसे नहीं कि ज्ञान परम्परा चलता है। जैसे त्योहारों के लिए कहते हैं परम्परा से चलते आये हैं। अभी तुम समझते हो सतयुग में तो इन त्योहारों को कोई जानते ही नहीं। वहाँ कुछ भी याद नहीं रहेगा। वहाँ तो राज्य करते हैं। तुम हर एक की बुद्धि का ताला खुला हुआ है। मुख्य क्रियेटर, डायरेक्टर, प्रिन्सीपल एक्टर को तुम जानते हो। तुमको कितनी अच्छी नॉलेज मिलती है, इस नॉलेज को जो नहीं जानते हैं, वह हैं बेसमझ। तुम भी बेसमझ थे। अब देवता बन रहे हो। यह नॉलेज जिसकी बुद्धि में टपकती रहेगी उनको अपार खुशी होगी। तुम्हारे सिवाए कोई नहीं जो यह नॉलेज समझ सकते। गॉड फादर को ही वर्ल्ड आलमाइटी अथॉरिटी, नॉलेजफुल कहा जाता है नॉलेज किसकी है? सभी वेदों शास्त्रों, सृष्टि के आदि मध्य अन्त की नॉलेज उसको है। शास्त्रों में भी रचता और रचना की नॉलेज नहीं है, तब तो ऋषि मुनि आदि कहते आये हैं हम रचता और रचना को नहीं जानते हैं। समझाने वाला एक ही है तो और कोई जानेंगे कैसे। यह नॉलेज

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सिवाए तुम बच्चों के कोई दे न सके। तुमको देने वाला फिर है बाप। वह कितना बड़ा नॉलेजफुल है। कितना तुम मर्तबा पाते हो। कितनी खुशी होनी चाहिए। हम बेहद के बाप की सन्तान हैं। ज्ञान से बुद्धि भरपूर होनी चाहिए। ऐसी कोई चीज़ नहीं जिसको तुम नहीं जानते हो। अभी तुम मास्टर नॉलेजफुल बन रहे हो। जो आत्मा तमोप्रधान बनी है वह बाप को याद करते-करते सतोप्रधान बन जायेगी। नम्बरवार तो होते हैं ना। कोई की तमो से रजो बुद्धि बनी होगी, कोई की रजो से सतो बनी होगी। अभी सतोप्रधान बुद्धि किसकी है नहीं। सतोप्रधान जब बन जायेगी तब तुम्हारी कर्मातीत अवस्था हो जायेगी। फिर तो नई दुनिया चाहिए – राज्य करने के लिए। यह यज्ञ जब पूरा होता है तब इसमें सारी पुरानी दुनिया की आहुति पड़ जाती है। फिर पढ़ाई भी पूरी हो जाती है – नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। जैसे स्कूल में स्टूडेन्ट समझते हैं हम यह इम्तहान पास कर फिर उस क्लास में ट्रांसफर होंगे। तुम्हारी भी जब कर्मातीत अवस्था होगी तो इस मृत्युलोक से ट्रांसफर हो अमरपुरी में चले जायेंगे। तुम जानते हो – अभी यहाँ से ट्रॉसफर होने का है। पवित्र होकर अमरलोक में चले जायेंगे। असुल हम शान्तिधाम के रहवासी थे फिर पार्ट बजाते-बजाते अमरलोक से मृत्युलोक में आकर पहुँचे हैं। तो यह सारी नॉलेज बुद्धि में रहने से खुशी रहेगी। सिवाए नॉलेज के और कुछ सूझेगा ही नहीं। अभी हम पढ़कर नई दुनिया के मालिक बनेंगे, यह भी समझाना चाहिए। यहाँ है ही पतित। देवता तो कोई है नहीं। मनुष्य से देवता कौन बनायेगा? बाप ही बना सकते हैं। अभी तुम समझा सकते हो बरोबर स्वर्ग था, जिसमें लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। उसकी स्थापना किसने की? हेविनली गॉड फादर ने पैराडाइज स्थापन किया। जहाँ देवी-देवता राज्य करेंगे तो और कोई धर्म नहीं होगा। यह बड़ा बेहद का नाटक है। तुम चैतन्य हो ना। जानते हो इस झाड़ का बीज ऊपर में है। बाप भी इम्प्रैसिबुल अविनाशी है। तुम भी इम्प्रैसिबुल हो। अभी सारा झाड़ जड़जड़ीभूत अवस्था को पाया है। इस समय सब मनुष्य काँटें मिसल बन गये हैं। काँटों का जंगल है ना। सब एक दो को दुःख देने वाले हैं। बाप ही बागवान है, उनको खिवैया भी कहते हैं। तुम भी बोट चलाने सीख रहे हो। हर एक की नईया पार कैसे हो, सो तुमको बैठ समझाते हैं। नईया कोई शरीर नहीं है। नईया आत्मा और शरीर दो चीज़ की बनी हुई है। गाते भी हैं नईया मेरी पार लगाओ। अभी आत्मा भी पतित है तो शरीर भी पतित है। अब पार कैसे हो, और कहाँ जाये? अभी तुम मूलवतन, सूक्ष्मवतन ...सतयुग से लेकर कलियुग तक सब राज़ों को जान गये हो। फिर भी बुद्धि में यह क्यों नहीं रहता! तुम भूल क्यों जाते हो? सदैव बुद्धि में यह टपकता रहे तो तुम खुशी में रहेंगे, फिकर से फारिग.....

तुम जानते हो बाबा आया हुआ है, हमको ले जाने। जो नॉलेज बाप में है वह हमको दे रहे हैं। यह हैं बिल्कुल नई बातें, जो बाप के सिवाए और कोई समझा नहीं सकते। निराकार बाप साकार द्वारा सुनाते हैं। तुम भी इस शरीर के द्वारा सुनते हो। तो बाप तुम बच्चों को भी आप समान बनाते हैं। जो बाप की महिमा वह तुम्हारी भी होनी चाहिए। कोई फर्क नहीं है। सिर्फ बाप कहते हैं – हम जन्म मरण में नहीं आता हूँ, तुम जन्म मरण में आते हो। तुम मुझे कहते हो ज्ञान का सागर, सुख का सागर तो जरूर मैं तुमको ज्ञान दूँगा, कल्प-कल्प देता हूँ। तुम समझ गये हो बरोबर 84 का चक्र खाए अभी हम अन्त में हैं। फिर बाप हमको पहला नम्बर में ले जाते हैं। यह

नॉलेज है ना। नॉलेज है सोर्स आफ इनकम। जो जितना-जितना पढ़ता है, उनकी इनकम वैसी होती है। यह नॉलेज भी है, धन्धा भी है। तुम कूड़ा-कचड़ा देते हो बाबा को। जब कोई मरता है
d तो करनीधोर को देते हैं ना। यहाँ तुमको जीते जी देना है। वास्तव में बात अभी की है। बाप कहते हैं– तुम्हारे पास जो कुछ है, मरने से पहले दे दो। तुम ट्रस्टी बन जाओ। नहीं तो तुम्हारे पास जो पड़ा होगा वह अन्त में याद आयेगा। जैसे बिड़ला आदि साहूकार आदमी हैं, वह ज्ञान नहीं लेंगे। उनकी साहूकारी भी एक जन्म के लिए है ना। शरीर तो छोड़ ही देंगे, पता नहीं कर्मो अनुसार कहाँ जाकर जन्म लेंगे। तुम तो जानते हो हम अपना जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना प्रालब्ध पायेंगे। इस समय हैं सब जिस्मानी सर्विस करने वाले। रूहानी सर्विस को कोई जानते ही नहीं। सुप्रीम रूह आकर तुमको नॉलेज समझाते हैं। वह है सुख क़ा सागर, दु:ख हर्ता सुख कर्ता। उनकी शिव जयन्ती भी मनाते हैं, परन्तु बुद्धि में नहीं आता है। अभी तुम्हारी बुद्धि में यह ज्ञान है कि बाबा हमको फिर 5 हजार वर्ष बाद आकर सुनायेंगे। सतयुग में यह ज्ञान नहीं होगा तो कलियुग में फिर कहाँ से आयेगा। दुनिया में यह कोई नहीं जानते कि लक्ष्मी-नारायण का मन्दिर हम क्यों बनाते हैं। यह कौन थे, इन्हें को यह राजय किसने दिया? यह कर्मो का फल है ना। बाप बैठ अभी तुमको कर्म, अकर्म, विकर्म की गति समझाते हैं। भगवानुवाच है ना। गीता से ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना होती है। वहाँ मनुष्य थोड़े होते हैं। बाकी सब जरूर मुक्ति को पाते होंगे। महाभारत लड़ाई भी लिखी हुई है, बहुत आफतें आयेंगी। नेचुरल कैलेमिटीज आयेगी। पुरानी दुनिया खत्म होगी। यह वही बाम्बस मिसाइल्स हैं, यह वही विनाश का समय है जब कि भगवान ने आकर रूद्र ज्ञान यज्ञ रचा था, जिससे विनाश ज्वाला निकली। भगवान यज्ञ रचते हैं सुख-शान्ति के लिए। बाकी दु:ख अशान्ति का जरूर विनाश होना चाहिए। इस ईश्वरीय ज्ञान यज्ञ में सारी सृष्टि स्वाहा हो जायेगी। यह बातें तुम्हारी बुद्धि में हैं।

e हम ब्राह्मण हैं। इस शिवबाबा के यज्ञ में हम ब्राह्मण सर्वेन्ट हैं। हम हैं सच्चे-सच्चे मुख वंशावली ब्राह्मण। तुम बच्चों को बाप जो मुख से कहे वह मानना चाहिए। श्रीमत पर ही हमको चलना है। यह भी तुम जानते हो श्री-श्री शिवबाबा की मत पर हम श्रेष्ठ बनकर माला के दाने बनेंगे। माला के दाने कहा जाता है सिजरे को। सिजरा होता है ना फिर वह बढ़ता जाता है। बाबा ने खुद सिजरा बनाया है, यह भी सिजरा है। ऊपर में है निराकारी शिवबाबा, फिर हैं आत्मायें। निराकारी सिजरा फिर साकारी होता है। पहले-पहले नम्बर में है प्रजापिता, वह जिस्मानी वह रुहानी। रूहानी बाप आकर प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा रचते हैं। कहते भी हैं पतित दुनिया को आकर पावन बनाओ। प्रलय तो कभी होती नहीं। वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉग्राफी रिपीट होती है। पुरानी दुनिया सो फिर नई बनती है। अभी तुम पुरूषार्थ कर रहे हो नई दुनिया के लिए। यह बेहद की नॉलेज बेहद का बाप ही देते हैं। हद का वर्सा होते भी बेहद के बाप को याद करते हैं। हे भगवान कहते हैं ना। जब कोई मरते हैं तो कहते हैं – गॉड फादर को याद करो तो दो फादर सिद्ध होते हैं ना। सभी आत्मायें बदर्स हैं। आत्मा ही पुकारती है हे दु:ख हर्ता, सुख कर्ता, हे लिबरेटर आओ, हमको घर जाने के लिए गाइड करो। हमको घर याद है परन्तु जा नहीं सकते क्योंकि माया ने पंख तोड़ डाले हैं। कोई घर वापिस जा नहीं सकते। अभी तुमको अपनी ज्योत को आपेही जगाना है।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बाप को याद करने से घृत पड़ जायेगा। ज्योत एकदम बुझ नहीं सकती। कोई मरता है तो दीवा जगाते हैं। खास वहाँ एक मुकरर रखते हैं कि इसमें घृत डालते जाओ, नहीं तो अन्धियारा हो जाए। अभी तो तुमको योगबल से घृत डालना है तो घोर अन्धियारे से सोझरा, दीप माला हो जायेगी। दीपमाला सतयुग में होगी। यहाँ नहीं। उत्सव जो भी मनाये जाते हैं, उनका भी रहस्य तुमने समझा है। वह तो कुछ भी समझते नहीं। फिर भी समझाया जाता है यह राखी आदि है पवित्रता में रहने के लिए। मनुष्यों को ज्ञान का इन्जेक्शन ऐसी युक्ति से लगाना चाहिए जो फील करें कि बरोबर हम तो भ्रष्टाचारी हैं। श्रेष्ठाचारी बाप ही बनाते हैं। बाप कहते हैं – मनमनाभव। तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। युक्ति से तीर लगाना चाहिए, बात करने की ताकत चाहिए। अभी तुम सर्वशक्तिमान बाप से शक्ति पाए माया पर जीत पाते हो। फिर तुम्हें राज्य-भाग्य मिल सकता है, सिवाए बाप के और कोई जीत पहना न सके। बाप कहते हैं देखो – बच्चे तुमको क्या से क्या बनाता हूँ। अब ऐसे बाप को निरन्तर याद जरूर करना है तो विकर्म विनाश होंगे। बाप कहते हैं– मामेकम् याद करो तो अन्त मती सो गति हो जायेगी। जैसा चिंतन किया जाता है वैसा बन जाते हैं, तो बाप कहते हैं मुझे याद करते-करते तुम भी बन जायेंगे। याद से विकर्म भी विनाश होंगे और अपने घर वापिस चले जायेंगे। यह नॉलेज सोर्स आफ इनकम है। हेल्थ वेल्थ है तो हैप्पी भी है। वहाँ कितनी बड़ी आयु होती है। योगेश्वर कृष्ण को नहीं कहेंगे। योगेश्वर तुम हो। ईश्वर तुमको योग सिखा रहे हैं। यह राजयोग है। योग लगाकर तुम राज्यभाग्य पाते हो। ईश्वर तुमको योग सिखाए राजाई का वर्सा देते हैं। तुमको राज्य किसने दिया? बाप ने। बाप कहते हैं– अल्फ को याद करो। बाप और वर्से को याद करो तो पाप कटते जायेंगे। यह तो बहुत सहज है। तुम्हारी बुद्धि में कितना ज्ञान है। भगवान के बच्चे मास्टर गॉड ठहरे। बाप के पास बैठ थोड़ेही जाना है। हमको तो पार्ट बजाना है, इसमें देही अभिमानी बनना है। अच्छा –

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों के नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

(१) बाप जो ज्ञान देते हैं, उसका ही सदैव मंथन करना है। युक्ति से बातें करनी है। बहुत प्यार से समझाना है।

(२) अपने पास जो कुछ है वह जीते जी बाप को देकर ट्रस्टी बन एक बाप को याद करना है।

वरदान:- अपनी सतोगुणी दृष्टि द्वारा अन्य आत्माओं की दृष्टि, वृत्ति का परिवर्तन करने वाले साक्षात्कार मूर्त भव

कहावत है दृष्टि से सृष्टि बदलती है। तो आपकी दृष्टि ऐसी सतोगुणी हो जो कैसी भी तमोगुणी वा रजोगुणी आत्मा की दृष्टि, वृत्ति और उनकी स्थिति बदल जाये। जो भी आपके सामने आये उन्हें दृष्टि द्वारा तीनों लोकों का, अपनी पूरी जीवन कहानी का मालूम पड़ जाये – यही है नज़र से निहाल करना। अन्त में जब ज्ञान की सर्विस नहीं होगी तब यह सर्विस चलेगी।

स्लोगन:-

सत्यवादी वह है जिसके चेहरे और चलन में दिव्यता हो।

5-9-02 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – रूहानी बाप ने यह रूद्र ज्ञान यज्ञ रचा है, इस यज्ञ के रक्षक तुम ब्राह्मण हो, तुम गायन लायक बनते हो, लेकिन अपनी पूजा नहीं करा सकते हो"

प्रश्न:- तुम बच्चों में जब ज्ञान की पराकाष्ठा हो जायेगी, तो उस समय की स्थिति क्या होगी?

उत्तर:- उस समय तुम्हारी स्थिति अचल, अडोल होगी। किसी भी प्रकार के माया के तूफान हिला नहीं सकेंगे। तुम्हारी कर्मातीत अवस्था हो जायेगी। अभी तक ज्ञान की पूरी पराकाष्ठा न होने के कारण माया के तूफान, स्वप्न आदि आते हैं। यह युद्ध का मैदान है, नई-नई आशायें प्रगट हो जायेंगी। परन्तु तुम्हें इनसे डरना नहीं है। बाप से श्रीमत लें आगे बढते रहना है।

गीत:- तुम्हें पाके हमने जहाँ .....

ओम् शान्ति। गीत तो बच्चों ने बहुत बार सुने हैं, अब उनके अर्थ में टिकना है। लक्ष्य को पकड़ लिया है कि अभी हम बेहद के बाप से बेहद का वर्सा ले रहे हैं, जिसको आधाकल्प से याद किया है। रावण वर्सा छीनते हैं। दुनिया वाले इस बात को नहीं जानते, तुम बच्चे जानते हो। यह रूद्र ज्ञान यज्ञ है, कोई मनुष्य का नहीं, प्रजापिता ने यह यज्ञ नहीं रचा है। यह रूद्र यज्ञ है। ज्ञान सागर अथवा शिव ने यह यज्ञ रचा है। यज्ञ तो अनेक प्रकार
a के रचते हैं ना। जैसे दक्ष प्रजापति कहते हैं। अब दक्ष प्रजापति तो है नहीं। ब्रह्मा है प्रजापिता, दक्ष प्रजापति अक्षर नाम कहाँ से आया? बाप बैठ समझाते हैं – यह रांग बनाया हुआ है। शास्त्रों में भी लम्बी चौड़ी कथायें लिख दी हैं। अब बाप कहते हैं जो भी सुनते आये हो–सब भूलो। मैं जो तुमको सुनाता हूँ वह सुनो। प्रजापिता तो एक ही होगा ना। जो भी यज्ञ रचते है वह सब हैं मटेरियल यज्ञ। यह है रूहानी बाप का रूहानी यज्ञ, इसमें भी ब्राह्मण चाहिए। वह ब्राह्मण तो हैं मुख वंशावली। तुम हो मुख वंशावली। मुख वंशावली कब पुजारी हो न सके। तुम पूज्य बनते हो, वह हैं पुजारी। तुम गायन लायक बनते हो। तुम्हारी पूजा अभी नहीं हो सकती। अगर देहधारी की पूजा करते हैं तो यह रांग है। पवित्र हैं ही सतयुग में देवतायें। हिन्दुओं की रसमरिवाज है जो स्त्री को कहा जाता है पति ही तुम्हारा गुरु ईश्वर सब कुछ है। तो पति के चरण धोकर पीती है। आजकल तो वह रिवाज नहीं है। सिविल मैरेज में यह अक्षर नहीं निकालते हैं कि पति तुम्हारा गुरु ईश्वर आदि है। यह सब है ठगी। इसलिए चित्र भी ऐसा बनाया है कि लक्ष्मी, नारायण के पाँव दबा रही है। समझते हैं वह भी यह सब करती थी। हिन्दू नारी को यह करना चाहिए। हाफ पार्टनर से यह धन्धा कराया जाता है क्या? किसम-किसम के होते हैं। तो जो रसम देखते हैं वह चित्र बना देते हैं। अब वहाँ ऐसे थोड़ेही हो सकता जो लक्ष्मी बैठ पांव दबाये। बाप कहते हैं–मैं द्रोपदी के आकर पांव दबाता
b हूँ। उन्होंने फिर कृष्ण का रूप दे दिया है। यह सब हैं व्यर्थ बातें। वहाँ राम को तो 4 भाई होते नहीं। वहाँ बच्चा भी तो एक होता है। चार बच्चे कहाँ से आये! बाप कहते हैं मैं तुमको इन सब शास्त्रों का सार बताता हूँ। यह बातें तुम बच्चों को समझाई जाती हैं। तुम समझा

सकते हो, बाप कहते हैं तुम जो यह कसम उठवाते हो वह झूठा उठवाते हो। अब कहते हैं गीता कृष्ण ने गाई। हाथ में गीता उठाते हैं फिर कहते ईश्वर को हाजिर नाजिर जान सच बोलना। कृष्ण भगवान को हाजिर-नाज़िर जान—यह नहीं कहते। ईश्वर के लिए ही कहते हैं। तो कृष्ण गीता का भगवान है—यह अभी बुद्धि से निकाल दो। झूठा कसम होने के कारण उनमें ताकत नहीं रही है। एक्यूरेट है एक धर्मराज। सुप्रीम जज वही सच्चा है। सतयुग में तो जज आदि होते नहीं क्योंकि वहाँ कोई ऐसी बात नहीं होती। सब हिसाब-किताब चुक्तू कर वहाँ चले जायेंगे। फिर नये सिर सतोप्रधान सतो रजो तमो में आयेंगे। हर एक वस्तु जो तुम देखते हो नई से पुरानी जरूर होती है। दुनिया भी नई से पुरानी होती है। यह पुरानी दुनिया है। परन्तु कितने तक पुरानी है यह किसको पता नहीं है। सदैव चार भागों में बांटा जाता है। यह भी 4 युग हैं। पहले नया फिर चौथा पुराना फिर आधा पुराना फिर सारा पुराना हो जाता है। बिल्कुल ही टूटने के लायक हो जाता है। इस कल्प की आयु 5 हजार वर्ष है। अभी तुम हो अन्त में। अन्तिम जन्म में तुम बाप से वर्सा पाते हो - 21 जन्मों के लिए। सतयुग त्रेता में 21 जन्म, द्वापर कलियुग में 63 जन्म क्यों होते हैं? क्योंकि पतित बनने से आयु कम
c हो जाती है। आधाकल्प आयु बड़ी होती है। अभी तुम योग सीखते हो। तुम बच्चे यहाँ योग वा याद सीखने के लिए नहीं आये हो। यहाँ तुम आते हो सम्मुख मुरली सुनने। मुरली तो बहुत प्यारी लगती है। योग तो तुम कहाँ भी बैठकर कर सकते हो। स्टूडेन्ट के इम्तहान का जब टाइम होता है तो कहाँ भी होंगे बुद्धि में इम्तहान की ही बातें घूमती रहेंगी। यहाँ तुम्हारी पढ़ाई और योग इक्ट्ठे हैं। पढ़ाने वाले को भी याद करना पड़े। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। भूल से कृष्ण का नाम डाल दिया है। सन्यासी आदि तो कृष्ण को याद करते नहीं हैं।
d बाकी किसने कहा मनमनाभव? तत्व वा ब्रह्म तो नहीं कह सकता। बाप इस मुख का आधार लेकर कहते हैं—बच्चे मामेकम् याद करो। कृष्ण कैसे कहेगा! कृष्ण की आत्मा किसमें प्रवेश हो कहे वह भी नहीं हो सकता। यह सब प्वाइंट्स बुद्धि में धारण करनी होती है, फिर समझाना होता है। कांग्रेसी लोग कितना आवाज से बोलते थे। उन्हों का लीडर था—बापू जी। वह था जिस्मानी बापू जी। यह है फिर रूहानी बाप। सभी का बाप तो गांधी जी हो न सके। शिवबाबा तो सबका बाप है ना। ब्रह्मा भी बाप है जरूर। परन्तु इस समय सिर्फ तुम जानते हो। सारी दुनिया तो नहीं मानेंगी क्योंकि समझते नहीं। यहाँ हम बापू निराकार शिवबाबा को कहते हैं। वह सभी का बाप है। बच्चों को कितनी प्वाइंट्स समझाते हैं। कभी आत्मा पर, कभी परमात्मा पर, कभी शास्त्रों पर। ढेर के ढेर भारत में शास्त्र हैं और धर्म वालों का तो एक ही शास्त्र होता है। यहाँ तो अनेक शास्त्र हैं। फालोअर्स भी जो कुछ सुनते सत-सत करते रहते हैं। एम-आबजेक्ट कुछ भी नहीं। जैसे राधा स्वामी पंथ है—अब नाम तो रखा है राधा-
e स्वामी। राधे का स्वामी तो कृष्ण है। वास्तव में जिस रूप से भारतवासी कृष्ण को समझते हैं, वैसे है नहीं। राधे तो कुमारी है, कृष्ण कुमार है। फिर कृष्ण को स्वामी कैसे कहेंगे? जब स्वयंवर बाद लक्ष्मी-नारायण बने तब स्वामी कहा जाए। छोटेपन में तो आपस में खेलपाल करते हैं। तो वह कोई पक्का स्वामी थोड़ेही हुआ। बहुत हैं जो सगाई को भी तोड़ देते हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अब लक्ष्मी-नारायण तो दिखाते हैं, परन्तु नारायण के बाप का नाम क्या है? कभी बता न सकें। अब कृष्ण के माँ बाप दिखाते हैं। राधे और कृष्ण दोनों के माँ बाप अलग-अलग हैं। राधे और जगह की थी कृष्ण फिर और जगह का था। सतयुग की बातों का सारा अगड़म-बगड़म कर दिया है। लक्ष्मी-नारायण के माँ बाप का नाम कहाँ? नारायण का बर्थ कहाँ? यह कोई भी नहीं जानते कि राधे कृष्ण ही फिर लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। बाप कहते हैं भक्ति मार्ग की कितनी बड़ी सामग्री है। ज्ञान में तो सिर्फ बीज को जानना होता है। बीज के ज्ञान से सारा झाड़ बुद्धि में आ जाता है। तुम जानते हो ऊंच ते ऊंच भगवान है जो परमधाम में रहते हैं। वहाँ तो सभी आत्मायें रहती हैं। सूक्ष्मवतन में तो हैं सिर्फ ब्रह्मा-विष्णु-शंकर। ब्रह्मा और विष्णु तो पुनर्जन्म में आते हैं, बाकी शंकर नहीं आता। जैसे शिवबाबा सूक्ष्म है वैसे शंकर भी सूक्ष्म है तो उन्होंने फिर शिव-शंकर को इकट्ठा कर दिया है। परन्तु हैं तो अलग-अलग ना। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा पालना फिर शंकर द्वारा विनाश कराते हैं। ब्रह्मा सो विष्णु हो जाता है। ब्रह्मा-सरस्वती सो लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। ततत्वम् तुम भी देवता घराने के हो ना। तो बाप तुम्हें सब राज समझाते रहते हैं। बाकी धारणा करने वाले नम्बरवार हैं, जिसने जो पद कल्प पहले पाया था—वही पुरुषार्थ चल रहा है। पुरूषार्थ बिगर प्रालब्ध बन न सके। पुरूषार्थ से समझा जाता है कल्प पहले भी इसने इतना किया था। अभी तुम्हारी पढ़ाई चल रही है। रुद्र माला विष्णु की माला गाई जाती है। बाकी ब्राह्मणों की माला है नहीं क्योंकि पुरुषार्थी हैं। आज अच्छा चलते हैं, कल माया का घूसा लग पड़ता है। रुद्र माला बनने से फिर ट्रांसफर हो जायेगी। ब्राह्मण तो पुरुषार्थी हैं। आज अच्छे चलते हैं तो कल गिर पड़ते हैं। तो माला बन न सके। आगे माला बनती थी फिर 3-4 नम्बर में आने वाले आज हैं नहीं। यह युद्ध का मैदान है ना। कुछ भी बात समझ में न आये तो पूछो क्योंकि तुमको औरों को भी समझाना है। कच्चे जो हैं वह मूँझ पड़ते हैं। ब्राह्मणों में भी नम्बरवार हैं। कोई-कोई तो पूछते भी हैं कि बाबा ने समझाया है—माया के तूफान बहुत आयेंगे, तो हम उन पर कैसे विजयी बनें? अनुभवी टीचर न हो तो कैसे समझा सकेगी?

बाप समझाते हैं यह माया के तूफान, स्वप्न आदि सब आयेंगे। जब तक ज्ञान की पूरी प्राकाष्ठा आ जाए, कर्मातीत अवस्था हो—इस समय तो बहुत आयेंगे। बूढ़ों को और ही जवान बना देंगे। नई-नई आशायें प्रगट करेंगे। तुम कहेंगे आगे तो कभी ऐसे ख्याल भी नहीं आते थे। अरे युद्ध के मैदान में तो तुम अभी आये हो। वैद्य लोग कहते हैं कि इस दवाई से बीमारी सारी बाहर निकलेगी। तो बाबा अनुभवी है। सब कुछ बतलाते रहते हैं, इससे जरा भी डरना नहीं है। कहते हैं ज्ञान में आने से तो पता नहीं क्या हो गया है, इससे तो भक्ति अच्छी। बाबा तो कहते हैं भल जाओ भक्ति में। वहाँ तुमको यह तूफान नहीं आयेंगे। बाबा तो सब बातें समझाते हैं। रोज़ सुनने वालों की बुद्धि में पूरी धारणा होगी। मुख्य है ही नॉलेज से काम, फिर भल कहाँ भी जाओ। मुरली तुमको मिलती रहेगी, मुरली पढ़ने की मिलेट्री में भी मना नहीं हो सकती। मिलेट्री को ऐसे थोड़ेही कहेंगे कि बाइबिल वा ग्रंथ आदि नहीं पढ़ो, सब पढ़ते हैं। उन्हों के मन्दिर भी होते हैं। तो मुरली कहाँ भी मिल सकती है। फिर भी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

तो लक्ष्य मिला हुआ है ना। मुख्य बात ही है बाप का परिचय देना। पहले तो निश्चय बैठे कि हमको पढ़ाने वाला नॉलेजफुल गॉड फादर है तब और बातों को समझ सकेंगे। गॉड फादर कैसे आकर पढ़ाते हैं? यह किसको पता नहीं है। लिखा हुआ भी है भगवानुवाच। उनका नाम शिव है। परम आत्मा है ना। परम अर्थात् सुप्रीम। परमधाम में तो सब रहते हैं। आत्माओं में भी सुप्रीम पार्ट तो किसका होगा ना। उनको क्रियेटर, डायरेक्टर, मुख्य एक्टर कहा जाता है। वह है रचयिता, करनकरावनहार, फिर पार्टधारी भी है। इसमें आकर कितना पार्ट बजाते हैं, जिससे भारत स्वर्ग बनता है। ऊंच ते ऊंच बाप शिवबाबा आया, क्या आकर किया? कुछ भी नहीं जानते। कल्प की आयु ही लम्बी कर दी है। बाप कहते हैं मुझे आना ही है कलियुग अन्त और सतयुग आदि में। सतयुग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, पावन दुनिया थी। हम सो पावन फिर हम सो पतित। चढ़ती कला उतरती कला कैसे होती है। अभी यह सब तुम्हारी बुद्धि में है।

बाप कहते हैं बच्चे, सबको बाप का परिचय देते रहो। बाप जब स्वर्ग का रचयिता है तो जरुर हमको स्वर्ग की बादशाही मिलनी चाहिए। भारत को थी, अब नहीं है, इसलिए भगवान को आना ही पड़ता है। भारत ही शिवबाबा का बर्थप्लेस है। आकर तुमको स्वर्गवासी बनाया था। अब तुम भूल गये हो। भूल और अभुल का यह खेल है। इस नॉलेज को भूलने से फिर उतरती कला होती है। एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति चढ़ती कला। जीवनबंध में कितना समय लगा, यह बातें शास्त्रों में थोड़ेही हैं। जनक की बात है ना। बाप कहते हैं जो भी कुछ पढ़ा है सब भूल जाओ। बाप, टीचर, सतगुरू मैं ही हूँ – 21 जन्मों का तुमको वर्सा देता हूँ। फिर भी अहो मम माया तुम कब्रिस्तानी बना देती हो। शिवबाबा परिस्तानी बनाते हैं, माया बहुत बच्चों को धोखा देती है क्योंकि श्रीमत पर ठीक रीति नहीं चलते हैं। अच्छा–

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- मुरली रोज जरुर पढ़नी है। माया के तूफानों से डरना नहीं है। किसी भी प्रकार के धोखे से बचने के लिए श्रीमत लेते रहना है।

२- पढ़ाई और योग दोनों इकट्ठा हैं इसलिए पढ़ाने वाले बाप को याद करना है। निश्चय बुद्धि बनना और बनाना है। बाप का ही परिचय सबको देना है।

वरदान:- मेरे-मेरे को तेरे में परिवर्तन कर श्रेष्ठ मंजिल को प्राप्त करने वाले नष्टोमोहा भव

जहाँ मेरापन होता है वहाँ हलचल होती है। मेरी रचना, मेरी दुकान, मेरा पैसा, मेरा घर...यह मेरा पन थोड़ा भी किनारे रखा है तो मंजिल का किनारा नहीं मिलेगा। श्रेष्ठ मंजिल को प्राप्त करने के लिए मेरे को तेरे में परिवर्तन करो। हद का मेरा नहीं, बेहद का मेरा। वह है मेरा बाबा। बाबा की स्मृति और ड्रामा के ज्ञान से नथिंगन्यु की अचल स्थिति रहेगी और नष्टोमोहा बन जायेंगे।

स्लोगन:-

सच्चे सेवाधारी बन निःस्वार्थ सेवा करते चलो तो सेवा का फल स्वतः मिलेगा।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

27-10-96 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – याद में रहने की ऐसी आदत डालो जो कभी भी याद भूले नहीं, कर्म करते भी याद में रहने का अभ्यास करो"

प्रश्न:- ज्ञान की ऊंची मंजिल पर सदा चलते रहो, थकावट न हो, उसकी युक्ति कौन सी है?
उत्तर:- बाबा जो फरमान करते हैं, उसको पालन करने से ऊंची मंजिल पर पहुँचने में थकावट नहीं होगी। अगर जरा भी किसी आज्ञा का उल्लंघन करते, भारत को पावन बनाने में मदद करने बदले विघ्न डालते तो बहुत कड़ी सज़ा मिलती है। इसलिए बाबा कहते मीठे बच्चे ज्ञान और योग से अपने भण्डारे भरपूर रखो।

ओम् शान्ति। अब रूहानी बाप इस जिस्म द्वारा बात करते हैं। बच्चे जिस्म द्वारा सुनते हैं। ऐसे कोई विद्वान आचार्य नहीं कहेंगे। बाप समझाते हैं बच्चे हम आये हैं – तुम बच्चों को पावन बनाए स्वर्ग का वर्सा देने। उनको कहा ही जाता है स्वर्ग अथवा नई दुनिया की राजधानी स्थापन करने वाला। जैसे इंगलैण्ड में किंग क्वीन का राज्य है वैसे सतयुग में इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। अभी तुम इस ईश्वरीय कॉलेज में बैठे हो। अभी तुम जानते हो हम बाबा के सामने बैठे हैं। बाबा पढ़ा रहे हैं। वही स्वर्ग का रचयिता है। दुनिया में यह कोई नहीं जानते कि रचता कौन है और रचना की आदि मध्य अन्त क्या है अथवा वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे चलती है, सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो। यह नई-नई बातें बाप बैठ सुनाते हैं। यह है बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी। अभी तुम्हारी बुद्धि में है कि हम सतयुग में राज्य करते थे फिर सीढ़ी उतरने लगे। है बहुत सहज। परन्तु वन्डर है। पत्थरबुद्धि ऐसे हैं जो इतनी सहज बात भी बुद्धि में नहीं बैठती है। सिर्फ समझाना है कि हम 84 जन्म कैसे लेते हैं। रचता बाप को कोई जानते ही नहीं। कह देते उनका नाम रुप देश काल है नहीं। परन्तु नाम रूप से न्यारी कोई वस्तु हो ही नहीं सकती। जो पतित-पावन, सर्व का सद्गति दाता बाप है वह फिर नाम रूप से न्यारा कैसे हो सकता। तुम भारतवासी जो देवी-देवता थे उनको ही बाप बैठकर समझाते हैं। तुमको ही रचता और रचना के आदि मध्य अन्त का ज्ञान समझाया था। गीता का ज्ञान मैंने सुनाया था। मनुष्यों ने फिर शास्त्रों में अगड़म बगड़म लिख दिया है। यह भी ड्रामा में नूँध है। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में बैठा है कि शिवबाबा कहाँ रहते हैं। उनका नाम है शिव, रूप बिन्दू है, देश परमधाम है। काल अर्थात् समय, मैं यहाँ कब आता हूँ? सतयुग त्रेता में हमको कोई बुलाते ही नहीं हैं। अभी ही बुलाते हैं। तो जरूर संगम पर ही आयेंगे। तुम जानते हो शिवबाबा आया हुआ है। यह तो बुद्धि में बैठता है ना। चित्र भी सामने हैं। शिवबाबा ब्रह्मा तन में आये हैं विष्णुपुरी की स्थापना करने। त्रिमूर्ति पर समझाना बहुत सहज है। ऊंच ते ऊंच है शिवबाबा। वह ब्रह्मा तन में आये हैं, आकर हमको राजयोग सिखलाते हैं। बाप कहते हैं- स्वर्ग में चलना है तो पावन जरूर बनना है। यह तो सब कहेंगे कि हम पतित हैं। गाते भी हैं पतित-पावन, सर्व का सद्गति दाता परमात्मा है। पावन दुनिया में एक भी पतित होता नहीं। पतित दुनिया में एक भी पावन हो न सके। ऊंच ते ऊंच शिवबाबा है, यह तो पक्का याद कर लो। विष्णुपुरी का हम मालिक बनते हैं। भारत विष्णुपुरी थी। विष्णुपुरी कहो अथवा लक्ष्मी-नारायण, देवता पुरी कहो। वही देवी-देवता अभी आकर शूद्र बने

हैं। हिसाब भी समझाना चाहिए ना। सतयुग में कहते हैं 9 लाख हैं। बुद्धि भी कहती है — वहाँ थोड़े मनुष्य होते हैं। राजधानी होगी ना, जहाँ तुम जन्म लेंगे। तुम राजधानी में रह जाते हो फिर अर्थक्वेक आदि होती है। उस तरफ तो प्रलय हो जानी है। बाकी तुम देहली तरफ रहते हो। पुरानी चीज़ टूटनी है फिर नयेसिर फर्स्टक्लास बनती है। तुम भी फिर से बैठ बनाते हो। तो 9 लाख सतयुग में कहते हैं। इस पर एक गीत भी है। विवेक भी कहता है इनसे जास्ती क्या होगा।

b अच्छा 9 लाख मनुष्य, वहाँ एक-एक को एक बच्चा एक बच्ची हो तो त्रेता तक कितने हो जायेंगे। फिर आते हैं वाम मार्ग में...ऐसे नहीं कि उस समय कोई 5-6 बच्चे पैदा करते हैं। सतयुग में इतने बच्चे होते नहीं। पीछे आहिस्ते-आहिस्ते जास्ती बच्चे होते हैं। भारतवासी अपने धर्म को न जानने के कारण हिसाब तो नहीं कर सकते। हिन्दू सम्प्रदाय वालों से और धर्म वाले तो कम होने चाहिए क्योंकि यह है प्राचीन धर्म। सेकेण्ड नम्बर है फिर इस्लामी, बौद्धी परन्तु इस

c समय क्रिश्चियन, बौद्धी बहुत हैं। भारत का आदि सनातन धर्म है नही। हिन्दू भी बहुत कम हैं और-और धर्मों में मिक्स हो गये हैं। नहीं तो सबसे जास्ती आदि सनातन देवी-देवता होने चाहिए। यह तुम पूछ सकते हो।

बाबा ने रात को बच्ची से कहा बाबा से पूछो वहाँ मूलवतन जो है, पिछाड़ी में झाड़ पूरा होगा तो उनकी संख्या का पता पड़ेगा? आगे चलकर यह समझेंगे। सतयुग त्रेता का आपेही हिसाब निकालो। अपनी बुद्धि भी चलाओ। इसमें मूँझना नहीं है। यह हिसाब निकालने में बैठ जायेंगे तो 2-4 दिन लग जायेंगे। टाइम वेस्ट हो जायेगा। इससे तो शिवबाबा को याद करो तो कमाई होगी। बाप से ही वर्सा लेना है। सतयुग त्रेता में जितने होंगे वही होंगे, हम क्यों न बाप की याद में रहें। वेस्ट टाइम क्यों करें! दुनिया में यह किसको पता नहीं है कि शिवबाबा ज्ञान का सागर है। वही आकर राजयोग सिखलाते हैं। शिवबाबा बीजरूप, सत चित आनंद स्वरूप है।

d आत्मा भी सत चैतन्य है ना। शरीर को तो नहीं कहेंगे। बाप है ज्ञान का सागर। तुम हो नदियाँ। कोई छोटी कोई बड़ी होती हैं। सागर तो एक ही है। नदियाँ कोई तो बाढ़ कर देती हैं। सबसे जास्ती फ्लड ब्रह्मपुत्रा नदी करती है। सबसे बड़ी नदी वह है। फिर है सिन्ध सरस्वती नदी। मम्मा का भी नाम है। जैसे नेहरू, गांधी पार्क आदि नाम लागते हैं ना। यह हैं नदियों के एक्यूरेट नाम। सिन्ध सरस्वती और ब्रह्मपुत्रा। तुम समझ सकते हो, कुमारका बड़ी नदी है। जगदीश भी बड़ी नदी है। ज्ञान की नदियाँ भी हैं, कोई फिर नाले भी हैं, टुबके भी हैं। जिनका मुख नहीं खुलता है तो टुबके होंगे। अब यह तो समझते हो ऊंच ते ऊंच है शिवबाबा। फिर ब्रह्मा विष्णु शंकर सूक्ष्मवतन वासी, फिर यहाँ आयेंगे तो पहले-पहले आदि सनातन देवी-देवता होते हैं। फिर आधाकल्प बाद और धर्म स्थापन होते हैं। 5 हजार वर्ष लगते हैं इस चक्र को फिरने में। हमने यह 84 जन्म लिए हैं। वह स्वदर्शन चक्र बुद्धि में फिरता रहे। सतयुग त्रेता में इतने जन्म, द्वापर में इतने जन्म...यह पक्का कर लो। दुनिया में यह बातें किसकी बुद्धि में होती नहीं। इस समय तो सारी दुनिया तमोप्रधान है। यह समझाना तो सहज है ना। गूँगों को, अंधों को गवर्मेन्ट बहुत सिखलाती है। यह तो अन्धे नहीं। सिर्फ बाप को याद करें। हम आत्मायें 84 जन्म ऐसे लेती हैं। इतना बुद्धि में रहे तो भी बड़ा सौभाग्य है। पवित्र तो जरूर रहना है। पवित्र नहीं रहेंगे तो भूल भी जायेंगे। बाप कहते हैं मुझे सब आत्माओं को वापिस ले ही जाना है। ज्ञान-योग से पवित्र नहीं

बनेंगे तो फिर सज़ायें खानी पड़ेंगी। सबका यह कयामत का समय है। अभी सभी कब्रदाखिल हैं। कब्र चिता पर बैठ काले कोयले बन गये हैं। अभी फिर आत्मा को योगबल से पवित्र बनना है। अच्छी रीति पढ़ेंगे नहीं, पवित्र नहीं बनेंगे तो सतयुग में आयेंगे नहीं। फिर त्रेता के भी पिछाड़ी में आयेंगे। यह भी समझाया है — पहले 9 लाख होते हैं फिर वृद्धि होती जाती है। रेजगारी हिसाब कौन बैठ निकाले। छोटी-छोटी टालियाँ, पत्ते आदि कौन गिनती कर सकते हैं। बच्चों की बुद्धि में रहना चाहिए। हम बाबा को याद करने से ही पावन बनेंगे। बाप के फरमान पर नहीं चलेंगे तो बड़ा धक्का आ जायेगा। बाप खुद कहते हैं जो मेरी आज्ञा नहीं मानेंगे, हमारे बच्चे बन भारत को पावन बनाने में मदद करने बदले विघ्न डालेंगे तो फिर बहुत-बहुत कड़ी सजा मिलेगी। मंजिल
e बड़ी भारी है। बाबा है भी गरीब निवाज़। बच्चे कहते हैं बाबा हम आपसे पूरा वर्सा लेकर विश्व का मालिक बनेंगे। वहाँ तो अनगिनत सब कुछ होता है। गिनती होती नहीं। भण्डारा सदैव भरपूर रहता है। अब जो पुरूषार्थ करे। ज्ञान और योग से भण्डारा भरपूर करना है। माया के तूफान तो बहुत हटाने की कोशिश करेंगे। परन्तु तुम छोड़ना नहीं। बहुत अच्छे-अच्छे बच्चे छोड़ देते हैं।
f माया की युद्ध चलती है ना। मनुष्य कहते हैं — परमपिता परमात्मा सर्वशक्तिमान् हैं। बाप कहते हैं— जितना मैं शक्तिवान हूँ उतनी माया भी शक्तिवान है। आधाकल्प है रामराज्य, आधाकल्प है रावणराज्य। तुम कहते हो बाबा हम आपको याद करते हैं। स्वदर्शन चक्रधारी बनने के लिए कोशिश करनी है। माया कहाँ-कहाँ ले जाती है, पता भी नहीं पड़ता है। ऐसे विकल्प लाती है जो याद ठहरने नहीं देती। हर एक अपनी दिल से पूछे बाप को याद करता हूँ! है बहुत सहज। तुम आत्मा बाप की सन्तान हो। यहाँ यह शरीर लेकर पार्ट बजाते हैं। सेकेण्ड-सेकेण्ड ड्रामा चलता रहता है। आत्मा पुरानी होती जाती है। सतो रजो तमो में आत्मा आती है ना। लक्ष्मी-नारायण ने एक जन्म लिया, थोड़े पुराने हुए स्टेजेस उतरती आती हैं। कितनी समझने की बातें हैं। अच्छा इन सभी बातों में भी नहीं जाओ। यह तो समझते हो कि 84 जन्म कैसे लिए हैं। यह तो याद करना सहज है ना। तुम कर्मयोगी भी हो, यह बाप ने समझाया है। 8 घण्टा इस याद में अन्त में रह सकेंगे, अभी नहीं। अभी एक घड़ी से लेकर आधी घड़ी से लेकर बढ़ाते जाओ। बाबा की याद ऐसी सहज हो जाए जो कब भूले नहीं। फिर तुम आपेही उड़ने लग पड़ेंगे। कहाँ यह शरीर हम छोड़ें और जायें। बाबा ऐसे भी नहीं कहते हैं कि गृहस्थ व्यवहार में नहीं रहना है। बच्चों आदि को भी सम्भालना है। साथ-साथ थोड़ा-थोड़ा चार्ट को भी बढ़ाते जाओ, प्रैक्टिस करो फिर आदत पड़ जायेगी। बाबा को याद कर क्लास में आ सकते हो। भक्त लोग ऑफिस में जाते हैं तो कृष्ण को याद करते जाते हैं। रास्ते में कोई मन्दिर आदि देखेंगे तो हाथ जोड़ेंगे। तुम बाप को याद क्यों नहीं करते हो। काली की भी पूजा होती है। उनको तो पता ही नहीं कि काली से क्या वर्सा मिलता है। तुमको मालूम है हमको काली से क्या वर्सा मिलता है। वह जगत अम्बा मम्मा है ना। उनसे तुम स्वर्ग का वर्सा लेते हो। देने वाला है शिवबाबा, जो ब्रह्मा सरस्वती द्वारा देते हैं। बाकी कोई को 8-10 भुजायें हैं नहीं। काली, दुर्गा, अम्बा अनेक नाम हैं। तो कलकत्ते में कोई ने काली का ऐसा चित्र बैठ बनाया है। यह सब हैं भक्ति के चित्र। पूजा कर फिर जाकर डुबो देते हैं। बाप कहते हैं— वेस्ट आफ मनी, वेस्ट आफ टाइम कर रहे हैं। जैसे बच्चे खेल करते हैं ना। गुड़ियों का खेल है। बाप आकर तुम बच्चों को आप समान बनाते हैं। रचता बाप ही रचना के आदि-

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मध्य-अन्त का ज्ञान सुनाते हैं। यहाँ तुम बच्चों को बड़ा नशा चढ़ा रहना चाहिए। पुकारते भी हैं हे पतित-पावन आओ, परन्तु समझते कुछ नहीं। यह सब है भक्ति मार्ग की रसम। दान पुण्य आदि करते रहते हैं। फिर भी पुकारते हैं हे पतित-पावन आओ। जन्म-जन्मान्तर शास्त्र आदि पढ़ते नीचे उतरते ही आते हैं। उतरना जरूर है। नदी का बहाव तो ऐसे नीचे जायेगा ना। अभी चक्र पूरा किया है। अभी तुम ऊपर जाते हो।

अब बाप कहते हैं मुझे याद करो। उठते-बैठते, चलते-फिरते देही-अभिमानी बनना है। हम आत्मा हैं, आत्मा ही सब कुछ करती है। यह बुद्धि में अच्छी रीति बिठाना है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह बातें और कोई समझा न सके। रचता के पास ही रचना की नॉलेज है। रचता बाप ही प्यार से समझाते हैं। मीठे-मीठे बच्चों, यह किसने कहा? बापदादा दोनों ने कहा। यह उनका साथी है। यह भी कहते हैं तुम बच्चे कल्प बाद हमारे आकर बने हो। 5 हजार वर्ष बाद आकर मिले हो। तुम भी कहते हो आप बापदादा, मम्मा 5 हजार वर्ष बाद आकर मिले हो। बड़ी मम्मा तो यह है ना, इनमें आकर तुमको अपना बनाता हूँ। यह तो अनुभव की, समझ की बातें हैं। यह समझ तुमको अभी मिली है। अभी तुमको पावन बनाते हैं। बाबा चला जायेगा बस, तुम 21 जन्मों का वर्सा ले लेते हो। यह बातें अच्छी रीति समझनी और समझानी है, सर्विसएबुल बनना है। सबको सुख देना है। भूत सम्प्रदाय नहीं बनना है। सच्चा फूल खुशबूदार बनना चाहिए। अच्छा –

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

(१) किसी भी बात में मूँझना वा टाइम वेस्ट नहीं करना है। ज्ञान-योग से अपने भण्डारे भरपूर करने हैं।

(२) कर्मयोगी बनने का पुरूषार्थ करना है। एक घड़ी आधी घड़ी यादं का चार्ट बढ़ाते रहना है। सुखदाई बनना है।

वरदान:- त्याग, तपस्या द्वारा सेवा में सफलता प्राप्त करने वाले सर्व के कल्याणकारी भव

जैसे स्थूल अग्नि दूर से ही अपना अनुभव कराती है, ऐसे आपकी तपस्या और त्याग की झलक दूर से ही सर्व को आकर्षित करे। सेवाधारी के साथ-साथ त्यागी, तपस्वीमूर्त बनो तब सेवा का प्रत्यक्षफल दिखाई देगा। त्यागी अर्थात् कोई भी पुराने संकल्प वा संस्कार दिखाई न दें। तपस्वी अर्थात् बुद्धि की स्मृति वा दृष्टि से सिवाए आत्मिक स्वरूप के और कुछ भी दिखाई न दे। जो भी संकल्प उठे उसमें हर आत्मा का कल्याण समाया हुआ हो तब कहेंगे सर्व के कल्याणकारी।

स्लोगन:-

सर्वशक्तिमान् को साथी बना लो तो सफलता आपके चरणों में आ जायेगी।

1.11.96 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मीठे बच्चे – तुम्हें साइलेन्स में रहकर एक बाप को याद करना है, इसमें घण्टे आदि बजाने की दरकार नहीं हैं

प्रश्नः- किस बात में बाप समान बनो तो सब काम सिद्ध हो जायेंगे?

उत्तरः- जैसे बाप प्यार का सागर हैं वैसे बहुत-बहुत प्यारे बनो। क्रोध से काम बिगड़ता है, बनता नहीं। इसलिए ऑख दिखाना, जोर से बोलना, गर्म होना, इसकी दरकार नहीं है। शान्त रहना बहुत-बहुत अच्छा है। प्यार से बहुत काम सिद्ध हो सकते हैं।

गीतः-तुम्ही हो माता पिता.. ओम् शान्ति।

a यह महिमा है एक की। परन्तु भक्तिमार्ग में सिर्फ एक की महिमा गाने से भक्ति का शो नहीं होता। इसलिए भक्ति में बहुतों की महिमा गाते हैं। वहाँ आवाज भी बहुत होता है। घण्टा-घड़ियाल, गीत-भजन, रोना-पीटना कितना भक्ति मार्ग में चलता है। किसम-किसम के आवाज मन्त्र-जन्त्र, स्तुति आदि होती है और ज्ञान मार्ग में है साइलेन्स। सिर्फ इशारा दिया जाता है आवाज कुछ नहीं। भक्ति में कितनी धूमधाम है। सबसे जस्ती घण्टे बजते हैं शिव के मन्दिर में, जहाँ तहाँ देखो घण्टे ही घण्टे हैं। किसको नींद से जगाने के लिए कोई घण्टे नहीं बजाये जाते हैं। शिवबाबा ने आकर मनुष्यों को कुम्भकरण की अज्ञान नींद से जगाया है।' परन्तु घण्टे नहीं बजाते। बिलकुल शान्ति से दो अक्षरों में ही समझाते हैं। बुद्धिवान जो होते हैं वह दो अक्षर में ही समझ जाते हैं। बाप कहते हैं बच्चे- मुझे याद करो। तुमने ही मुझे बुलाया है हे पतित-पावन आओ। अब मैं आया हूँ तुमको राह बताता हूँ। क्या अब तक तुमको पतित बनकर इस दुनिया में ही रहना है! तुम तो पावन दुनिया में रहने चाहते हो ना। पावन दुनिया स्वर्ग को कहा जाता है। कहते ही हैं पतित-पावन, तो समझना चाहिए कि पतित-पावन क्या आकर करेगा? जरूर नर्क से स्वर्ग में ले जायेगा। बिगर समझ ऐसे ही बुलाते रहते हैं, तालियाँ बजाते रहते

b हैं। परन्तु यह नहीं जानते कि बाप आयेगा तो क्या आकर करेगा? वास्तव में यह युनिवर्सिटी भी है मनुष्य से देवता बनने की। तब गाते हैं मनुष्य को देवता किये.. इसमें शास्त्र आदि कुछ भी पढ़ना नहीं है। भक्ति मार्ग में बहुत शास्त्र आदि पढ़ते है, ढेर लेक्चर आदि होते हैं। मास-मास मण्डप बनाकर बैठ आवाज़ करते हैं। यहाँ कितना शान्ति में बाप बैठ समझाते हैं। देखो तुमको बाबा आकर पावन बनाए, पावन दुनिया का मालिक बनाते हैं। पढ़ाई भी कितनी सहज है। तुम पहले-पहले पावन थे, गोल्डन एज में थे। फिर 84 जन्म लेते-लेते आइरन एज में तमोप्रधान बन गये हो। अब तुमको सतोप्रधान बनना है इसलिए मुझे याद करो। सो भी अजपा। जैसे कन्या की जब शादी होती है तो क्या जाप करती है? याद में रहती है। तुम भी सब पत्नियाँ हो, यह शिवबाबा पतियों का पति है। तुम्हारी सगाई हुई है परमात्मा के साथ। सगाई जब हो गई तो बस याद बुद्धि में बैठ गई। खातिरी हो गई कि हमने सगाई कर ली। फिर एक दो को याद करते रहते हैं। तुमको भी बाप कहते हैं निश्चय बुद्धि हो गये कि हम एक बाप के बच्चे आपस में भाई-भाई

हैं। भाइयों को वर्सा मिलता है — एक बाप से, इसलिए बाप को पुकारते हैं। भल मनुष्य तन में आकर भाई-बहन बन जाते हैं। परन्तु पुकारती आत्मा है ना। भाई-भाई पुकारते हैं हे पतित-पावन बाबा आओ। बाबा कहते हैं— मुझे याद करो तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। पावन को सतोप्रधान, पतित को तमोप्रधान कहा जाता है। यह बातें बाबा संगम
c पर ही समझाते हैं। यह है गीता पाठशाला। इस पाठशाला में बाप आकर राजयोग सिखलाते हैं, नर से नारायण बनाते हैं। वहाँ टीचर तो सामने बैठ पढ़ाते हैं, दिखाई पड़ता है। यह है गुप्त। तो इस टीचर को भी बुद्धियोग से समझना पड़ता है। वह निराकार पतित-पावन बाप है। वही स्मृति दिलाते हैं कि कल्प पहले भी मैंने तुमको राजयोग सिखाया था। तब कहा जाता है मनमनाभव, पवित्र बनो तो यह लक्ष्मी-नारायण बन जायेंगे। इसमें घण्टा-घड़ियाल आदि बजाने की दरकार ही नहीं। बाप खुद आकर जगाते हैं। मनमनाभव का अर्थ है साइलेन्स। अपने को आत्मा निश्चय करो। बस! अब हमको अपने घर जाना
d है। बाप को ही सब कहते हैं कि हमको दु:ख से छुड़ाए मुक्त करो। सन्यासी लोग सिर्फ ब्रह्म को याद करते हैं। अब ब्रह्म तत्व तो है घर। वह घर को याद करेंगे, यहाँ बाप को याद करना है। सिर्फ घर को याद करेंगे तो जैसे सन्यासी हो जायेंगे। ब्रह्म तो भगवान है नहीं।

बाप बैठ समझाते हैं - मुझे याद करो तो तुम निर्वाणधाम में चले जायेंगे। फिर वहाँ से आयेंगे स्वर्ग में। यहाँ से मैं तुम बच्चों को साथ ले जाऊंगा। तुमको मालूम है टिड्डियों का झुण्ड कितना बड़ा होता है। सबकी युनिटी होती है। पहले आगे वाला बैठा तो सब
e बैठ जायेंगे। मधुमक्खियाँ भी ऐसी होती हैं। रानी ने घर छोड़ा तो सब भागेंगी उनके पिछाड़ी। वह जैसे उन्हों का साज़न हुआ। उनमें फिर सजनी ही राज्य करती है हमजिन्स पर। शास्त्रों में भी है आत्मायें सब मच्छरों सदृश्य भागती हैं। अनगिनत आत्मायें हैं। वह मक्खियाँ हर सीज़न में अपनी रानी के पीछे भागती हैं। तुमको तो एक बार भागना है। अब सब आत्माओं को जाना है मूलवतन। तुम्हारा आवाज़ कुछ भी नहीं इसलिए बाबा मिसाल देते हैं। सरसों के दाने मिसल पीसते हैं। बाबा भी बिन्दी, सरसों के दाने मिसल है। खस-खस का दाना भी छोटा होता है। परमात्मा भी बिन्दी है। उनको देखा भी नहीं जाता — दिव्य दृष्टि बिगर। बिल्कुल छोटा स्टॉर मिसल है। गीता में दिखाया है अखण्ड जयोति का साक्षात्कार हुआ, तो यहाँ भी जब अखण्ड ज्योति का साक्षात्कार हो तो समझेंगे साक्षात्कार हुआ। अगर बिन्दी का हुआ तो समझेंगे यह परमात्मा थोड़ेही है। गीता में तो लिखा हुआ है - अर्जुन को बहुत तेजोमय साक्षात्कार हुआ। भकति की बातें बुद्धि में बैठी हुई हैं। भक्ति मार्ग और ज्ञान मार्ग में रात दिन का फर्क है। तुम जानते हो हम 63 जन्म शरीर द्वारा कितना डाँस करते हैं। 63 जन्म कितना भक्ति मार्ग का हंगामा देखते हैं। उसमें भी पहले जब सतोप्रधान भक्ति थी तो एक शिवबाबा की भक्ति करते थे। फिर यह गंगा स्नान आदि बाद में शुरु होते हैं। पहले अव्यभिचारी भक्ति होती है फिर वृद्धि को पाते हैं। यहाँ तो एकदम साइलेन्स लगी पड़ी है। बिगर कौड़ी तुम विश्व के मालिक
f बनते हो। मम्मा बिगर कौडी आई क्योंकि महारानी बनना है। यह साधारण था। एकदम

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

गरीब घर के बिगर कौड़ी खर्चा देखो क्या बनते हैं। मम्मा फिर सर्विस बहुत करती थी। जाकर औरों को समझाती थी कि बाबा कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और तुम सतोप्रधान बन जायेंगे। इसमें खर्चे की तो कोई बात ही नहीं। अगर कोई थोड़ा खर्चा भी करते हैं तो अपने लिए। जैसे खेती में दो मुट्ठी अन्न की डालने से कितना ढेर अन्न निकलता है। खेती बड़ी हो जाती है। यह भी 21 जन्मों के लिए तुम्हारी कितनी आमदनी होती है। मनुष्य से देवता बनना कितना सहज है। एक सेकेण्ड की बात है। बैठे भी कैसे साधारण हैं। अगर कोई बैठ नहीं सकता है तो बाबा कहते हैं सो जाओ। यह है धारणा की बात। अन्दर में बाबा और चक्र को याद करते रहो। याद करते-करते ही शरीर छोड़ना है। बाकी मुख में गंगा जल डालने की कोई बात नहीं है। गुरु गोसाई तो बहुत डर देते हैं कि तुम यह नियम तोड़ेंगे, भक्ति नहीं करेंगे तो यह होगा। समझो कोई की टांग टूट पड़ती है वा नुकसान हुआ तो कहेंगे तुमने भक्ति छोड़ी है तब यह नतीजा निकला। तो डर जाते हैं। यहाँ तो कुछ भी करना नहीं है। बाबा की याद दिलानी है, चक्र का राज़ समझाना है। अभी कलियुग के बाद सतयुग आना है, विनाश होना है ज़रूर। इसलिए यह महाभारी लड़ाई खड़ी है। भगवान आकर राजयोग सिखाए नर से नारायण बनाते हैं। यह राजयोग है, प्रजा योग नहीं। शुभ बोलना चाहिए। बच्चों को बहुत मीठा बनना है। बाबा मीठा है ना। क्रोध आदि सब दान में ले लेते हैं। बाप कहते हैं- मैं प्यार का सागर हूँ, तुम भी बनो। बड़ा प्यार से समझाते हैं। नहीं तो बच्चे बहुत हंगामा करते हैं क्योंकि माया माथा खराब कर देती है, इसलिए ख्याल आता है कभी भी किसको कुछ कहें नहीं। प्यार से समझायें। ऑख दिखाना, गर्म होना, जोर से बोलना, इसकी दरकार नहीं है, इससे काम बिगड़ता है। शान्त रहना अच्छा है। विकारों का दान देकर फिर लेते हैं तो अपना पद गंवाते हैं। बाबा का बने गोया 5 विकारों का दान दे दिया। कहते हैं दे दान तो छूटे ग्रहण। फिर भी बाप पण्डा है ना, पण्डे ब्राह्मण होते हैं। शिवबाबा भी रूहानी पण्डा है। तुम भी पण्डे हो। बाबा ब्रह्मा के तन में आते हैं तो यह भी ब्राह्मण ठहरा। बाबा इसमें बैठा है, उनकी महिमा गाते हैं तुम मात-पिता.. और किसकी यह महिमा नहीं। उनका कर्तव्य भी ऐसा है। यह पाठशाला है, बाप पढ़ाते हैं। यह बच्चों को याद रहना चाहिए। एम- आब्जेक्ट ही विश्व की बादशाही पाना है। तो ऐसे पढ़ाने वाले को पूरी तरह याद करना चाहिए। स्कूल से स्टूडेन्ट अच्छा पास होते हैं तो साल-साल टीचर को सौगात भेजते रहते हैं। यह त्योहार आदि सब इस समय के हैं, परन्तु इनके महत्व को कोई जानता नहीं।

बाबा है नॉलेजफुल। वह आते ही हैं रचना के आदि मध्य और अन्त की नॉलेज देने। ठिक्कर-भित्तर में कैसे आयेंगे? एक डॉक्टर ने सिद्ध किया था कि हर चीज़ में आत्मा है। परमात्मा नहीं कहा। फिर यह कह देते हैं - सर्वव्यापी। उन्होंने कहा सबमें आत्मा, तो सन्यासियों ने कहा सबमें परमात्मा। कितना रात-दिन का फर्क है। वह तो बेहद का बाप है। सबसे बुद्धियोग तुड़ाए अपने साथ जुड़ाते हैं। वह कहते आत्मा बुदबुदा सागर से निकला है, सागर में लीन हो जायेगा। ब्रह्म ज्ञानी समझते हैं - छोटी ज्योति बड़ी

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ज्योति में लीन हो जायेगी, फिर नई उत्पत्ति होती है। बाबा समझाते हैं यह भक्ति की भी ड्रामा में नूँध है। मैं भी ड्रामा की नूँध अनुसार तुम बच्चों को आकर समझाता हूँ। 84 जन्मों का जो चक्र लगाते हैं, यह भी ड्रामा में नूँध है। जो कुछ होता है सब नूँध है। कोई गायन भी करते हैं, कोई विघ्न भी डालते हैं।

तुम बच्चों को शिवबाबा से वर्सा लेना है। वह आते ही हैं सब आत्माओं को ले जाने के लिए। शरीर का नाम भी नहीं लेते। शरीर सहित थोड़ेही किसको भगाने आया हूँ। मुझे तो कहते हैं हे लिबरेटर आओ। हमको दु:ख से लिबरेट कर और जगह ले चलो। जहाँ चैन, सुख-शान्ति पायें। तो सबका शरीर यहाँ ही छुड़ाए आत्माओं को ले जाऊंगा। तो कालों का काल हुआ ना। मैं सबको इकट्ठा ले जाऊंगा। कितनी वन्डरफुल बातें बाप बैठ समझाते हैं। कहाँ कोई बात समझ में नहीं आती है तो बोलो यह बात बाबा ने अजुन समझाई नहीं है। जब समझायेंगे तब आपको सुनायेंगे। ऐसे अपने को छुड़ा देना चाहिए। बच्चे समझते हैं बाबा ज्ञान का सागर है। नई-नई बातें सुनाते रहते हैं। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनाने वाला रचयिता बाप है, जो आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सुनाते हैं। तुम लाइट हाउस भी हो तो स्वदर्शन चक्रधारी भी हो। परन्तु माया भुला देती है। घुटका खाते हैं। कुछ न कुछ लैस आ जाती है। कर्मो का हिसाब-किताब है ना। जब तक कर्मातीत अवस्था नहीं बनी है तो कुछ न कुछ होता रहता है। हिसाब-किताब चुक्तू हुआ और शरीर छोड़ देंगे, लड़ाई शुरू हो जायेगी। अच्छा

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

(१) विकारों का दान देकर वापिस नहीं लेना है। मुख से शुभ बोलना है, बहुत मीठा बनना है। बाप के समान प्यार का सागर बनकर रहना है।

(२) साइलेन्स में रह बिना कौड़ी खर्चा विश्व की बादशाही लेनी है। दो मुट्ठी बीज डाल २१ जन्मों की कमाई करनी है।

वरदान:- मन्मनाभव की स्थिति द्वारा मन के भावों को जानने वाले सफलता स्वरूप भव

जो बच्चे मन्मनाभव की स्थिति में स्थित रहते हैं वह औरों के मन के भाव को जान सकते हैं। बोल भल क्या भी हो लेकिन उसका भाव क्या है, उसे जानने का अभ्यास करते जाओ। हर एक के मन के भाव को समझने से उनकी जो चाहना वा प्राप्ति की इच्छा है, वह पूरी कर सकेंगे। इससे वे अविनाशी पुरूषार्थी बन जायेंगे फिर सर्विस की सफलता थोड़े समय में बहुत दिखाई देगी और आप पुरूषार्थी स्वरूप के बजाए सफलता स्वरूप बन जायेंगे।

स्लोगन:-

श्रीमत को यथार्थ समझकर उस पर कदम-कदम चलने में ही सफलता समाई हुई है।

8-6-99 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – अब इस छी-छी गंदी दुनिया को आग लगनी है इसलिए शरीर सहित जिसे तुम मेरा-मेरा कहते हो–इसे भूल जाना है, इससे दिल नहीं लगानी है"

प्रश्न:- बाप तुम्हें इस दु:खधाम से नफ़रत क्यों दिलाते हैं?

उत्तर:- क्योंकि तुम्हें शान्तिधाम-सुखधाम जाना है। इस गंदी दुनिया में अब रहना ही नहीं है। तुम जानते हो आत्मा शरीर से अलग होकर घर जायेगी, इसलिए इस शरीर को क्या देखना। किसी के नाम-रूप तरफ भी बुद्धि न जाये। गन्दे ख्यालात भी आते हैं तो पद भ्रष्ट हो जायेगा।

ओम् शान्ति। शिवबाबा अपने बच्चों, आत्माओं से बात करते है। आत्मा ही सुनती है। अपने को आत्मा निश्चय करना है। निश्चय करके फिर यह समझाना है कि बेहद का बाप आया हुआ है, सबको ले जाने लिए। दु:ख के बन्धन से छुड़ाए सुख के सम्बन्ध में ले जाते हैं। सम्बन्ध सुख को, बंधन दु:ख को कहा जाता है। अब यहाँ के कोई भी नाम-रूप आदि में दिल नहीं लगाओ। अपने घर जाने लिए तैयारी करनी है। बेहद का बाबा आया हुआ है, सभी आत्माओं को ले जाने। इसलिए यहाँ कोई से दिल नहीं लगानी है। यह सब यहाँ के छी-छी बंधन हैं। तुम समझते हो हम अब पवित्र बने हैं तो हमारे शरीर को कोई भी हाथ न लगाये, छी-छी ख्यालात से। वह ख्यालात ही निकल जाते हैं। पवित्र बनने सिवाए वापिस घर तो जा न सकें। फिर सजायें खानी पड़ेंगी, अगर न सुधरे तो। इस समय सभी आत्मायें अनसुधरेली हैं। शरीर के साथ छी-छी काम करती हैं। छी-छी देहधारियों से दिल लगी हुई है। बाप आकर कहते हैं–यह सब गन्दे ख्यालात छोड़ो। आत्मा को शरीर से अलग होकर घर जाना है। यह तो बहुत छी-छी गन्दी दुनिया है, इसमें तो अब हमको रहना नहीं है। कोई को देखने की भी दिल नहीं होती। अभी तो बाप आये हैं स्वर्ग में ले जाने। बाप कहते हैं–बच्चे, अपने को आत्मा समझो। पवित्र बनने लिए बाप को याद करो। कोई भी देहधारी से दिल नहीं लगाओ। बिल्कुल ममत्व मिट जाना चाहिए। स्त्री-पुरूष का बहुत प्यार होता है। एक-दो से अलग हो नहीं सकते। अब तो अपने को आत्मा भाई-भाई समझना है। गन्दे ख्याल नहीं रहने चाहिए। बाप समझाते हैं–अभी यह वेश्यालय है। विकारों के कारण ही तुमने आदि, मध्य, अन्त दु:ख को पाया है। बाप बहुत ही नफ़रत दिलाते हैं। अभी तुम स्टीमर पर बैठे हो जाने के लिए। आत्मा समझती है अभी हम जा रहे हैं बाप के पास। इस सारी पुरानी दुनिया से वैराग्य है। इस छी-छी दुनिया, नर्क वेश्यालय में हमको रहना नहीं है। तो फिर विष के लिए गन्दे ख्यालात आना बहुत खराब है। पद भी भ्रष्ट हो जायेगा। बाप कहते हैं मैं तुमको गुल-गुल दुनिया में, सुखधाम में ले जाने आया हूँ। मैं तुमको इस वेश्यालय से निकाल शिवालय में ले जाऊंगा तो अब बुद्धि का योग रहना चाहिए नई दुनिया में। कितनी खुशी होनी चाहिए। बेहद का बाबा हमको पढ़ाते हैं, यह बेहद सृष्टि चक्र कैसे फिरता है, वह तो बुद्धि में है। सृष्टि चक्र को जानने से अर्थात् स्वदर्शन चक्रधारी होने से तुम चक्रवर्ती राजा बनेंगे। अगर देहधारी से बुद्धियोग लगाया तो पद भ्रष्ट हो पड़ेगा। कोई भी देह के सम्बन्ध याद न आयें। यह तो दु:ख की दुनिया है, इसमें सब दु:ख ही देने वाले हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

बाप डर्टी दुनिया से सबको ले जाते हैं, इसलिए अब बुद्धियोग अपने घर से लगाना है। मनुष्य भक्ति करते हैं—मुक्ति में जाने लिए। तुम भी कहते हो—हम आत्माओं को यहाँ रहना नहीं है। हम यह छी-छी शरीर छोड़कर अपने घर जायेंगे , यह तो पुरानी जुत्ती है। बाप को याद करते-करते फिर यह शरीर छूट जायेगा। अन्तकाल बाप के सिवाए और कोई दूसरी चीज़ याद न रहे। यह शरीर भी यहाँ ही छोड़ना है। शरीर गया तो सब कुछ गया। देह सहित जो कुछ भी है, तुम जो मेरा-मेरा कहते हो यह सब भूल जाना है। इस छी-छी दुनिया का आग लगनी है, इसलिए इनसे अब दिल नहीं लगानी है। बाप कहते हैं मीठे-मीठे बच्चों, मैं तुम्हारे लिए स्वर्ग की स्थापना कर रहा हूँ। वहाँ तुम ही जाकर रहेंगे। अभी तुम्हारा मुंह उस तरफ है। बाप को, घर को, स्वर्ग को याद करना है। दु:खधाम से नफ़रत आती है। इन शरीरों से नफ़रत आती है। शादी करने की भी क्या दरकार है। शादी करने से फिर दिल लग जाती है शरीर से। बाप कहते हैं इस पुरानी जुत्तियों से कुछ भी स्नेह नहीं रखो। यह है ही वेश्यालय। सब पतित हैं पतित हैं। रावण राज्य है। यहाँ कोई से भी दिल नहीं लगानी है, सिवाए बाप के। बाप को याद नहीं करेंगे तो जन्म-जन्मान्तर के पाप कटेंगे नहीं। फिर सजायें भी बहुत कड़ी हैं। पद भी भ्रष्ट हो जायेगा। तो क्यों न इस कलियुगी बन्धन को छोड़ दें। बाबा सबके लिए यह बेहद की बात समझाते हैं। ज़ब रजोप्रधान सन्यासी थे तो दुनिया गंदी नहीं थी। जंगल में रहते थे। सबको आकर्षण होती थी। मनुष्य वहाँ जाकर उन्हों को खाना पहुँचा आते थे। निडर हो रहते थे। तुमको भी निडर बनना है, इसमें बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए। बाप के पास आते हैं, तो बच्चों को खुशी रहती है। हम बेहद बाप से सुखधाम का वर्सा लेते हैं। यहाँ तो कितना दु:ख है। कई गन्दी-गन्दी बीमारियां आदि होती हैं। बाप तो गैरन्टी करते हैं—तुमको वहाँ ले जाते हैं, जहाँ दु:ख, बीमारी आदि का नाम नहीं। आधाकल्प के लिए तुमको हेल्दी बनाते हैं। यहाँ कोई से भी दिल लगाई तो बहुत सजायें खानी पड़ेगी।

तुम समझा सकते हो, वो लोग कहते हैं 3 मिनट साइलेन्स। बोलो, सिर्फ साइलेन्स से क्या होगा। यह तो बाप को याद करना है, जिससे विकर्म विनाश हों। साइलेन्स का वर देने वाला बाप है। उनको याद करने बिगर शान्ति मिलेगी कैसे? उनको याद करेंगे तब ही वर्सा मिलेगा। टीचर्स को भी बहुत शब्क (पाठ) पढ़ाना है। खड़ा हो जाना चाहिए, कोई कुछ भी कहेगा नहीं। बाप के बने हो तो पेट के लिए तो मिलेगा ही, शरीर निर्वाह के लिए बहुत
b मिलेगा। (जैसे वेदान्ती बच्ची है, उसने इम्तहान दिया, उसमें एक प्वाइंट थी—गीता का भगवान् कौन? उसने परमपिता परमात्मा शिव लिख दिया तो उनको नापास कर दिया। और जिन्होंने कृष्ण का नाम लिखा था, उनको पास कर दिया। बच्ची ने सच बताया तो उसको न जानने कारण नापास कर दिया। फिर लड़ना पड़े मैंने तो यह सच-सच लिखा। गीता का भगवान् है ही निराकार परमपिता परमात्मा। कृष्ण देहधारी तो हो न सके। परन्तु बच्ची की दिल थी इस रूहानी सर्विस करने की तो छोड़ दिया।)

तुम जानते हो अब बाप को याद करते-करते अपने इस शरीर को भी छोड़ साइलेन्स दुनिया में जाना है। याद करने से हेल्थ-वेल्थ दोनों ही मिलती हैं। भारत में पीस प्रासपर्टी थी ना। ऐसी-ऐसी बातें तुम कुमारियां बैठ समझाओ तो तुम्हारा कोई भी नाम नहीं लेंगे। अगर

PDF compression, OCR, web optimization using www.ilovepdf.com

कोई सामना करे तो तुम कायदेसिर लड़ो, बड़े-बड़े ऑफीसर्स के पास जाओ। क्या करेंगे? ऐसे नहीं कि तुम भूख मरेंगी। केले से, दही से भी रोटी खा सकते हो। मनुष्य पेट के लिए कितने पाप करते हैं। बाप आकर सबको पाप आत्मा से पुण्य आत्मा बनाते हैं। इसमें पाप करने, झूठ बोलने की कोई दरकार नहीं है। तुमको तो 3/4 सुख मिलता है, बाकी 1/4 दुःख भोगते हो। अब बाप कहते हैं—मीठे बच्चों, मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म हो जायेंगे। और कोई उपाय नहीं। भक्ति मार्ग में तो बहुत धक्के खाते हो। शिव की
c पूजा तो घर में भी कर सकते हैं परन्तु फिर भी बाहर मन्दिर में जरूर जाते हैं। यहाँ तो तुमको बाप मिला है। तुमको चित्र रखने की दरकार नहीं है। बाप को तुम जानते हो। वह हमारा बेहद का बाप है, बच्चों को स्वर्ग की बादशाही का वर्सा दे रहे हैं। तुम आत्म बाप से वर्सा लेने। यहाँ कोई शास्त्र आदि पढ़ने की बात नहीं। सिर्फ बाप को याद करना है। बाबा बस हम आये कि आये। तुमको घर छोड़े कितना समय हुआ है? सुखधाम को छोड़े 63 जन्म हुए हैं। अब बाप कहते हैं शान्तिधाम, सुखधाम में चलो। इस दुःखधाम को भूल जाओ। शान्तिधाम,
d सुखधाम को याद करो और कोई डिफीकल्ट बात नहीं है। शिवबाबा को कोई शास्त्र आदि पढ़ने की दरकार नहीं है। यह ब्रह्मा पढ़ा हुआ है। तुमको तो अभी शिवबाबा पढ़ाते हैं। यह ब्रह्मा भी पढ़ा सकते हैं। परन्तु तुम सदैव समझो शिवबाबा के लिए। उनको याद करने से विकर्म विनाश होंगे। बीच में यह भी है।

अब बाप कहते हैं टाइम थोड़ा है, जास्ती नहीं है। ऐसा ख्याल मत करो कि जो नसीब में होगा, वह मिलेगा। स्कूल में पढ़ाई का पुरूषार्थ करते है ना। ऐसे थोड़ेही कहेंगे जो नसीब में होगा..... यहाँ नहीं पढ़ते हैं तो वहाँ जन्म-जन्मान्तर नौकरी चाकरी करते रहेंगे। राजाई मिल न सके। करके पिछाड़ी में ताज रख देंगे, वह भी त्रेता में। मूल बात है—पवित्र बन औरों को बनाना। सत्य नारायण की सच्ची कथा सुनाना है। बहुत सहज, दो बाप हैं। हद के बाप से हद का वर्सा मिलता है, बेहद के बाप से बेहद का। बेहद बाप को याद करो तो यह देवता बनेंगे। परन्तु फिर उसमें भी ऊंच पद पाना है। पद पाने के लिए ही कितना मारामारी करते हैं। पिछाड़ी में बॉम्बस की भी एक-दो को मदद देंगे। यह इतने सब धर्म थे थोड़ेही। फिर नहीं रहेंगे। तुम राज्य करने वाले हो तो अपने ऊपर रहम करो ना—कम से कम ऊंच पद तो पायें। बच्चियां 8 आना भी देती हैं—हमारी एक ईट लगा देना। सुदामा का मिसाल सुना है ना। चावल मुट्ठी बदले महल मिल गया। गरीब के पास हैं ही 8 आने तो वही देंगे ना। कहते हैं बाबा हम गरीब हैं। अभी तुम बच्चे सच्ची कमाई करते हो। यहाँ सबकी है झूठी कमाई। दान-पुण्य आदि जो करते हैं, वह पाप आत्माओं को ही करते हैं। तो पुण्य के बदले पाप हो जाता है। पैसा देने वाले पर ही पाप हो जाता है। ऐसे-ऐसे करते सब पाप आत्मा बन जाते हैं। पुण्य आत्मा होते ही हैं सतयुग में। वह है पुण्य आत्माओं की दुनिया। वह तो आप ही बनायेंगे। पाप आत्मा रावण बनाते, गन्दे बन पड़ते हैं। अब बाप कहते हैं गन्द कर्म नहीं करो। नई दुनिया में गंद होता नहीं। नाम ही है स्वर्ग तो फिर क्या, स्वर्ग कहने से ही मुख में पानी आ जाता है। देवता होकर गये है तब तो यादगार हैं। आत्मा अविनाशी है। कितने ढेर एक्टर्स हैं। कहाँ तो बैठे होंगे, जहाँ से पार्ट बजाने आते हैं। अभी कलियुग में कितने ढेर मनुष्य हैं। देवी-देवताओं

का राज्य है नहीं। कोई को समझाना तो बहुत सहज है। एक धर्म की अभी फिर स्थापना हो रही है, बाकी सब खत्म हो जायेंगे। तुम जब स्वर्ग में थे तो और कोई धर्म नहीं था। चित्र में राम को बाण दे दिया है। वहाँ बाण आदि की तो बात नहीं। यह भी समझते हैं। जिसने जो सर्विस की है कल्प पहले, वही अभी करते हैं। जो बहुत सर्विस करते हैं, बाप को भी बहुत प्यारे लगते हैं। लौकिक बाप के बच्चे भी जो अच्छी रीति पढ़ते हैं, उन पर बाप का प्यार जास्ती रहता है। जो लड़ते खाते रहेंगे तो उनको थोड़ेही प्यार करेंगे, सर्विस करने वाले बहुत प्यारे लगते हैं।

एक कहानी है — दो बिल्ले लड़े, माखन कृष्ण खा गया। सारे विश्व की बादशाही रूपी माखन तुमको मिलता है। तो अब गफ़लत नहीं करनी है। छी-छी नहीं बनना है। इसके पीछे राजाई मत गंवाओ। बाप के डायरेक्शन मिलते हैं, याद नहीं करेंगे तो पाप का बोझ चढ़ता जायेगा। फिर बहुत सजायें खानी पड़ेंगी। ज़ार-ज़ार रोयेंगे। 21 जन्म की बादशाही मिलती है। इसमें फेल हुए तो बहुत रोयेंगे। बाप कहते हैं न पियरघर, न ससुरघर को याद करना है। भविष्य नये घर को ही याद करना है।

बाप समझाते हैं कोई को देख लट्टू नहीं बन जाना है। फूल बनना है। देवतायें फूल थे। कलियुग में कांटे थे। अभी तुम संगम पर फूल बन रहे हो। किसको दुःख नहीं देना है। यहाँ ऐसे बनेंगे तब सतयुग में जायेंगे। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. अन्तकाल में एक बाप के सिवाए दूसरा कोई याद न आये उसके लिए इस दुनिया में किसी से भी दिल नहीं लगानी है। छी-छी शरीरों से प्यार नहीं करना है। कलियुगी बन्धन तोड़ देने हैं।

२. विशाल बुद्धि बन निडर बनना है। पुण्य आत्मा बनने के लिए कोई भी पाप अब नहीं करना है। पेट के लिए झूठ नहीं बोलना है। चावल मुट्ठी सफल कर सच्ची-सच्ची कमाई *जमा करनी है, अपने ऊपर रहम करना है।*

वरदान:- बाप की आज्ञा समझ मोहब्बत से हर बात को सहन करने वाले सहनशील भव

कई बच्चे कहते हैं कि हम राइट हैं फिर भी हमें ही सहन करना पड़ता है, मरना पड़ता है लेकिन यह सहन करना वा मरना ही धारणा की सबजेक्ट में नम्बर लेना है, इसलिए सहन करने में घबराओ नहीं। कई बच्चे सहन करते हैं लेकिन मजबूरी से सहन करना और मोहब्बत में सहन करना - इसमें अन्तर है। बातों के कारण सहन नहीं करते हो लेकिन बाप की आज्ञा है सहनशील बनो। तो आज्ञा समझ मोहब्बत में सहन करना अर्थात् स्वयं को परिवर्तन कर लेना इसकी ही मार्क्स हैं।

स्लोगन:-

खुशी के खजाने से सम्पन्न और खुशी की खुराक से तन्दरूस्त बनो।

मु० नं०-125

27.7.91 प्रातःक्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?
"मीठे बच्चे- तुम्हें अपना चिंतन करना है, दूसरे का नहीं, क्योंकि ड्रामा अनुसार जो करेगा वह पायेगा"

प्रश्नः-त्रिकालदर्शी बनने से आत्मा को कौन सी स्मृति आई है?
उत्तरः-आत्मा को स्मृति आई-हम अतुल मूलवतन के निवासी इस ड्रामा में पार्ट बजाने आये हैं, हमने मुख्य एक्टर बन 84 जन्मों का पार्ट बजाया। अभी बाप के सम्मुख हैं फिर साथ में घर जायेंगे। पावन बनकर घर जाना है फिर सुखधाम में आना है। यह सारा खेल भारत पर ही बना हुआ है। यह सारी स्मृति त्रिकालदर्शी बनने से आ गई।

गीतः-भरना तेरी गली में..ओमशान्ति। यह गीत किसने गाया? बच्चों ने। क्या कहते हैं बच्चे। बाबा अभी तो आपके गले का ही हार बनना है। यह शरीर तो यहाँ ही छोड़ देना है। बच्चे जानते हैं शान्तिधाम वा निर्वाणधाम में बाप और हम बच्चे आत्मायें रहते हैं। अब बाप घड़ी2 कहते हैं अपने को आत्मा निश्चय करो। तुम जानते हो हम आत्मायें बाप के साथ निर्वाणधाम में रहने वाली थी फिर तुमने ही यह शरीर धारण कर 84जन्मों का चक्र लगाया है। बच्चे जानते हैं हम बरोबर परमधाम के निवासी हैं। अब फिर बाबा आये हैं। तुम बैठे हो, देखते हो बाबा सामने बैठे हैं। यहाँ है लौकिक शरीर के संबंध। हम अतुल आत्मायें थी फिर लौकिक सम्बन्ध में तुम का और दुख का जीवन बिताया। अभी तुम आत्मायें त्रिकालदर्शी बनी हो। बाप भी तीनों कालों तीनों लोकों को जानने वाला है। तुम भी जानते हो नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। पढ़ाई की याद तो रहनी चाहिए ना। अभी स्मृति आई है। बाबा ने समझाया है-हम भी मूलवतन में रहने वाले हैं और अब हम त्रिकालदर्शी बने हैं। तुम जानते हो इस ड्रामा के हम मुख्य एक्टर्स हैं। सारे ड्रामा का नालेज तुम्हारी बुद्धि में अब है। स्मृति आई है-हम आधाकल्प सुखधाम में रहते हैं। वहाँ रावण होता नहीं। हम आत्मायें पूरे 84जन्मों का चक्र लगाती हैं। अभी बाप सम्मुख बैठे हैं। आपकी श्रीमत पर चल हम आपके साथ चलेंगे। जितना हो सके आपको याद करेंगे। तुम बच्चों को सारा दिन यही ख्याल में रहना चाहिए। जबकि त्रिकालदर्शी बने हो। ऊँच ते ऊँच है भगवान। उनके साथ तुम बच्चे भी ऊँच ते ऊँच रहने वाले हो। अभी तुम बच्चों को घर की याद आई है। हम पवित्र बन अपने परमधाम घर जायेंगे। बाप शिव की पूजा होती है तो सालिग्रामों की भी पूजा होती है। बाप ही आकर आत्माओं को पावन बनाते हैं। आत्माओं को पवित्र बनाने वाला एक ही बाप है और कोई बना न सके। अभी तुम सारे ड्रामा के खेल को जान चुके हो। समझते हो भारत पर ही खेल बना हुआ है। तो अब तुम बच्चों को बाप सम्मुख बैठ समझाते हैं। हर एक जीव की आत्मा जानती है बाबा ज्ञान का सागर है। उसको भक्तिमार्ग में बुलाते आये हैं और प्रतिज्ञा करते आये हैं। बाबा आप आयेंगे तो जरूर हम आपकी मत पर चलेंगे। यह कोई लौकिक सम्बन्ध की बात नहीं। तुमको देही अभिमानी बन और यह ख्याल रखना है, हमको एक बेहद के बाप की श्रीमत पर चलना है। उनका ही मानना है। वह तो बहुत सहज समझाते हैं। तुम्हारा अब तीसरा नेत्र ज्ञान का खुल गया है। यह ज्ञान तुमको यहाँ है। मूलवतन में बाप और बच्चे रहते हैं। वहाँ यह किसको पता नहीं रहता। अभी तुम बच्चों को बाप अपना अन्त देते हैं। वही ज्ञान का सागर है और कोई सतसंगों में ऐसे नहीं कहेंगे कि बाबा हम आत्माओं को पढ़ाते हैं। यह तुम जानते हो। घड़ी2 तुमको कहना पड़ता है, देही अभिमानी बनो। आत्मा इस ड्रामा में एक्टर है। पार्ट बजाती है। हम आत्मा ने चोला लिया है। वह एक्टर्स कपड़े बदलते हैं। तुम आत्मायें निराकारी दुनिया से यहाँ आकर यह शरीर रूपी चोला लेती हो। वह सिर्फ अपने कपड़े बदलते हैं। हम आत्माओं को बाबा फिर से आकर राजयोग सिखा रहे हैं। अब तुम बच्चे समझते हो-बाबा आया हुआ है तो जरूर हम बाबा के मददगार बनेंगे। पवित्र बन और सारे भारत को पवित्र बनायेंगे। हमको श्रीमत पर ही चलना है। श्रीमत कहती है-बाप को याद करना है। जो करेंगे वह पायेंगे। सब तो नहीं आकर पुरूषार्थ करेंगे। जिन्होंने कल्प पहले पुरूषार्थ किया है वही करेंगे। अभी वापिस जाना है। इसलिए पुरूषार्थ कर पवित्र जरूर बनना है। हम ऊपर मूलवतन में रहने वाले हैं। पहले2 हम स्वर्ग में आये थे फिर सीढ़ी नीचे उतरते आये। बाप समझाते भी भारतवासियों को हैं। भारत में ही आते हैं याद भी भारत में करते हैं कि आकर हमें पावन

जाओ।शरीर धारण कर हमको श्रेष्ठ कर्म सिखाओ। शरीर का नाम भी गाया हुआ है।
a यह भाग्यशाली रथ है। बाप भी कहते हैं मैं साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। आगे भी कहा था तुम बच्चों को स्मृति आई है-बरोबर 5हजार वर्ष पहले भी बाबा ने यही कहा था और कोई भी यह बात बता नहीं सकते हैं।बाप ही कहते हैं 5हजार वर्ष पहले भी मैं इस शरीर में आकर तुमको समझाया था। अब फिर तुम बच्चों को कहता हूँ-आत्म अभिमानी बनो। जैसे नाटक वालों को मालूम रहता है ना। हम कौनसा वस्त्र पहन और क्या2 पार्ट बजाते हैं। प्रश्न यह हो है देह अभिमानी। यह है बेहद की बात। देही अभिमानी बनना है।हम अतुल
b बार आये हैं।अभी तुम्हारा पार्ट पूरा होता है। बाप सम्मुख बैठ सब कुछ तुमको समझाते हैं। यह याद नहीं आता है।माया कितने विघ्न डालती है। बाप समझाते हैं बच्चे तुमको कोई भी विकर्म नहीं करना है।मन्सा तूफान भी बहुत आयेंगे।अपनी परीक्षा लेनी है।हमारी कर्मइन्द्रियां धोखा तो नहीं खाती हैं। इस काम को जीत सकते हैं? तुम्हारे लिए तो बहुत सहज है। हम आत्मा हैं।एक बाप के बच्चे हैं।बाप से ही योग लगाना है।बहुत बच्चे कहते हैं स्त्री को देखने से फालमानी होती हैं। देह अभिमान हुआ ना। तुमको कोई से भी डरना नहीं है। निर्भय बनना है। कभी भी कहीं जाओ तो साक्षी हो देखना है।हम तो आत्मा हैं। इस खेल को तुम पूरा जान गये हो। ऊँच ते ऊँच बाप हैं ,यह बुद्धि में आया है।उनको बिन्दी कहा जाता है।निराकारी दुनिया में आत्माओं का झाड है।बीज से झाड निकलता है।तो नम्बरवार पत्ते आते हैं।यह भी ऐसे है।ऊपर से नम्बरवार आत्मायें आती हैं। आत्मा प्रवेश कैसे करती है, निकलती कैसे है।यह कोई देख न सके। अब बाप समझाते हैं तुम्हारी आत्मा पतित हो गई है। उनको पावन बनाओ। इन द्वारा बाप बैठ समझाते हैं।बात तो कर्मइन्द्रियों से करते हैं ना। आत्मा बिन्दी इसमें नहीं होती तो कर्मइन्द्रियां कुछ कर नहीं सकती। इतनी छोटी बिन्दी
c कितनी अतपरमल है।उनमें सारी नालेज है।बाप ज्ञान का सागर है जो तुमको बैठ समझाते हैं। उनमें सुदर्शन चक्र है।यह भी उनका पार्ट नूँधा हुआ है।तुम्हारी आत्मा में भी 84जन्मों का पार्ट है।तुम दुख सुख का पार्ट बजाते हो। दुख में बहुत तकलीफ लेते हैं। बाप कहते हैं-मैं तो पुनर्जन्म में आता नहीं हूँ। तुम 84जन्म लेते हो। मैं तो नहीं लेता हूँ। मैं आकर तुम बच्चों को सहज युक्ति बताता हूँ कि मुझे याद करो तो पावन बनेंगे। आधाकल्प तुम काम चिता पर, बैठ क्रोधमुख बने हो। आत्माओं से ही बाप बात करते हैं। आत्मा के आरगन्स पहले छोटे होते, फिर बड़े होते हैं। आत्मा तो छोटी बड़ी होती नहीं। आत्मा ही कहती है हे परमपिता पावन आओ। आत्मा बाप को पुकारती है।बाप कहते हैं मैं कल्प2 आता हूँ तुम पतितों को पावन बनाने। अभी तुम जानते हो आत्मा क्या है। आत्मा कैसे आती जाती है।
मनुष्य बहुत माथा मारते हैं। देखें आत्मा कैसे निकलती है। परन्तु किसको पता नहीं पड़ता। क्योंकि यह है अति सूक्ष्म। छोटी सी आत्मा में कितना पार्ट है। जैसे बीज में सारा ज्ञान है, यह तो बीज है बड़ा बड़ का झाड होता है उसका बीज कितना छोटा, उनमें झाड कितना बड़ा
d समझ सकते हैं। कलकत्ते वाली बड़ कहियों ने देखा नहीं होगा। बहुत बड़ा झाड है।अब उनका भी उल्टा झाड बड़ गया है। बड़ी झाड खड़ा है।यह भी ऐसे है।देवता धर्म का झाड नहीं। झाड की भी अब जड़ जड़ीभूत अवस्था है। यह भी तुम जानते हो तब तो गवर्नमेन्ट को भी कहते हो कि हम इतने समय में दुनिया को पावन बनाकर दिखायेंगे।मनुष्य इन बातों को समझते नहीं।तुमको तो निश्चय है हम इस भारत को श्रेष्ठाचारी जरूर बनायेंगे।तब तो भ्रष्टाचारी दुनिया का विनाश होगा।यह जो चाहते हैं शान्ति हो जाए। आत्मा पार्ट बजाते2 थक गई है इसलिए पुकारती है- हे शान्ति देवा। यह थोड़ेही समझते हैं आत्मा शान्त स्वरूप है। मगर तू यहाँ आत्मा को कर्मइन्द्रियों द्वारा कर्म तो जरूर करना ही है।शान्ति दो- कहते हैं, यह किसको पता नहीं है कि शान्तिधाम अलग है। सुखधाम अलग है।सुखधाम में बहुत थोड़े मनुष्य होते हैं।वह है ही पवित्र दुनिया। वहाँ शान्ति तो कोई मांगते नहीं। कर्म तो वहाँ भी करते हैं। परन्तु वहाँ अशान्ति नहीं होती। जीवनमुक्ति धाम अथवा शान्तिधाम दोनों अलग हैं। सतयुग में जीव आत्माओं को सुख भी है तो शान्ति भी है। स्वरहेल्दी वेल्दी रहते हैं। अभी तुम जानते हैं स्वर्ग किसको कहते हैं। दुनिया में यह भी किसको पता नहीं है-

कि स्वर्ग क्या है। ह §लव्ना0§ बच्चे हैं ना। इन बच्चों को भी सुख किसने दिया। कोई तो सुख देने वाला है ना। क्या इन्हों का फिर राज्य आने वाला है? स्वर्ग जरूर फिर रिपीट होगा। स्वर्ग में जब होंगे तो वहाँ ऐसे नहीं कहेंगे कि नर्क फिर से रिपीट करेंगे। अभी कहते हैं पवित्रता सुख शान्ति की नई दुनिया फिर से रिपीट होगी। यह तेरा पुरानी दुनिया दुखधाम है। इनको आइरन एज कहा जाता है। नई दुनिया भी - तो थी ना। उनको स्वर्ग कहते हैं। यह ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में ठहरा हुआ है। बरोबर हम फिर से देवी देवता बन रहे हैं। तुम्हारी एम आब्जेक्ट ही यह है। हम फिर से स्वर्ग की बादशाही लेते हैं। ब्रह्म के बाप से वर्सा जरूर पायेंगे। यह अच्छी रीति याद करना है। हम आत्मायें यहाँ रहती हैं। फिर हम यहाँ आये हैं पार्ट बजाने। अब स्मृति मिली है 84जन्म कैसे लेते हैं। बाप समझाते भी तुम ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मणों को हैं। ब्राह्मण बनने बिगर प्रजापिता ब्रह्मा का बच्चा बनने बिगर सिवलाक में वर्सा कैसे लेंगे। प्रजापिता ब्रह्मा तो मशहूर है ना। ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया की स्थापना करते हैं। तो नई दुनिया का राज्य भी जरूर उन्हों को मिला होगा। 5हजार वर्ष पहले भी ब्रह्मा द्वारा विष्णुपुरी की स्थापना की थी। अब फिर रिपीट होगा। उसके लिए तुम तैयारियाँ कर रहे हो। कई बच्चे पूछते हैं- ड्रामा को बड़ा माने वा पुरूषार्थ को बड़ा माने? समझाया जाता है पुरूषार्थ तो जरूर करना ही है। पुरूषार्थ बिगर प्रालब्ध कैसे मिलेगी। पूरा पुरूषार्थ करना है। कोई अच्छी रीति पुरूषार्थ करते हैं तो समझाया जाता है ड्रामा अनुसार इनका पुरूषार्थ अच्छा चलता है। पद भी अच्छा पायेंगे। उनका पुरूषार्थ बहुत तीव्र चलता है। फिर चलते2 कोई का अल्प पद भी हो जाता है। ब्राह्मणियाँ जानती हैं ब्राह्मणियों के पास आने वाले भी जानते हैं। ज्ञानामृत बहुत अच्छा चलता था। आजकल आते नहीं हैं। कहते हैं हमारी बुद्धि में पता नहीं क्यों नहीं बैठता है। बाबा को हम याद ही नहीं कर सकते हैं। बस हम नहीं कर सकेंगे। बड़ी मंजिल है। रेस2 लिख देते हैं। मूल बात है ही निर्विकारी बनना। विकारों को छोड़ना बड़ा मुश्किल है। तुम जानते हो ड्रामा अनुसार कल्प पहले मिसल इनकी ऐसी अवस्था चली आ रही है। अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:- §1§ इस बेहद के खेल को साक्षी हो देखना है। कोई से भी डरना नहीं है। निर्भय बनने के लिए "मैं आत्मा हूँ" यह पाठ पक्का करना है।

§2§ अपनी जांच करके स्वयं की परीक्षा लेनी है कि कोई भी कर्मइन्द्रिय चलायमान तो नहीं होती है? काम विकार पर विजय पाई है? देहीअभिमानी कहाँ तक बने हैं?

25-12-01 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - देह-अभिमान में आने से पाप होते हैं, इसलिए देही-अभिमानी बनो, तुम्हारे मैनर्स बहुत अच्छे होने चाहिए, किसी को भी दु:ख नहीं देना है"

प्रश्न:- 21 जन्मों की प्रालब्ध बनाने के लिए बाप कौन सी सहज युक्ति बताते हैं?

उत्तर:- बच्चे, यह ईश्वरीय बैंक है, इसमें जितना जमा करेंगे उतना 21 जन्म प्रालब्ध पायेंगे। ईश्वरीय स्थापना के कार्य में सफल करने से ही जमा होगा। बाकी तो सबका देवाला निकलना ही है। यह है ही दु:खधाम। अर्थक्वेक होगी, आग लगेगी... सबको घाटा पड़ना है इसलिए कहते हैं – किनकी दबी रहेगी धूल में, किनकी राजा खाए...

ओम् शान्ति। बच्चों को अभी रचता और रचना के आदि मध्य अन्त का नॉलेज तो बुद्धि में है, यह भी समझते हैं कि हम भारतवासी पहले-पहले सतयुग में सतोप्रधान थे। यह याद बच्चों के लिए बहुत जरूरी है हरदम याद की यात्रा में रहना, इसमें तो बड़ी मेहनत चाहिए। परन्तु रचता और रचना का ज्ञान तो बुद्धि में होना चाहिए ना। हम सतयुग में देवी-देवता थे, उसको स्वर्ग कहा जाता है। देवी-देवतायें विश्व के मालिक थे। एक ही धर्म था। अक्षरों को भी पूरा समझना चाहिए। तुम बच्चे जानते हो सतयुग आदि में ही हम सूर्यवंशी घराने में थे। रचता बाबा ने जो आदि मध्य अन्त का ज्ञान सुनाया है वह तो हर एक की बुद्धि में रहना चाहिए। यह कभी भूलना नहीं चाहिए। यह भी तुम जानते हो। हम पुनर्जन्म लेते-लेते फिर त्रेता में आये हैं तो दो कला कम हो गई। सृष्टि भी पुरानी होती जाती है। यह अच्छी रीति बुद्धि में रखना है। जितना तुम याद करते रहेंगे उतना खुशी का पारा चढ़ा रहेगा फिर त्रेता के अन्त बाद आता है द्वापर। द्वापर शुरू होने से दूसरे धर्म स्थापन होते हैं और हम उतरते-उतरते भक्ति मार्ग में आते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे कि उस समय और धर्म भी भक्ति मार्ग में हैं, नहीं। यह कहानी सारी तुम भारतवासियों के लिए है। भल गवर्ण गज्य है परन्तु उन्हों के लिए राजा राज्य नहीं कहेंगे। वह अपने समय पर सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो में आते हैं। धर्मों का स्थापना होती है। फिर वृद्धि को पाते जाते हैं फिर गिरते भी रहते हैं। चक्र तो फिरना ही है। इस समय तुम जानते हो द्वापर के बाद भक्ति मार्ग शुरू हुआ है और भी धर्म स्थापन हुए हैं। अभी तो है कलियुग तमोप्रधान दुनिया। सृष्टि पुरानी होने के कारण सब तमोप्रधान हो गये हैं। अब यह ज्ञान तुम बच्चों ही जानते हो। यह है सहज ते सहज बात, जो बच्चा भी याद कर ले। परन्तु वह याद करेंगे तोते मुआफ़िक। तुम बच्चों को तो भासना आती है, उस अनुसार तुम समझायेंगे। तुम जानते हो सारा झाड़ जड़जड़ीभूत अवस्था को पाया हुआ है। पहले-पहले जो आदि सनातन देवी-देवता धर्म था उनका फाउन्डेशन अब है नहीं। भल है भी तो वह अपने को हिन्दू कहलाते हैं। इसलिए कहा जाता है देवी-देवता धर्म है नहीं, प्राय:लोप है। सब पतित बन गये हैं। इसलिए अपने को देवता कोई कहलाता नहीं। न वह धर्म है, न कर्म है। सतयुग में तो सबका कर्म अकर्म हो जाता है। यहाँ मनुष्य जो कर्म करते हैं, वह विकर्म बन जाता है। तमोप्रधान होने के कारण अपने को देवता कोई कहला नहीं सकते हैं। ड्रामा प्लैन अनुसार यह भी नूँध है, जब धर्म प्राय:लोप हो तब तो बाबा आकर सत

धर्म की स्थापना करे और अनेक धर्मों का विनाश कराये। नई दुनिया में एक ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म था, अब शिवबाबा आकर फिर से ब्रह्मा द्वारा देवी-देवता धर्म की स्थपना करते हैं। तुम हो मुख वंशावली ब्राह्मण। क्राइस्ट द्वारा जो क्रिश्चियन बने, उन्हें भी मुख वंशावली कहेंगे। बच्चे तो नहीं थे ना। वैसे तुम भी ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण बने हो। असुल में तुम हो शिवबाबा के
b बच्चे। इस समय तुम ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण बने हो। शिवबाबा खुद इस द्वारा देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं क्योंकि उनको ही सारी पुरानी दुनिया का विनाश भी कराना है। वह विनाश का कार्य और कोई करते नहीं। वह तो आकर अपना-अपना धर्म स्थापन करते हैं फिर वह धर्म वृद्धि को पाता है। अभी है ही तमोप्रधान दुनिया, कलियुग का अन्त। शास्त्रों में तो कल्प की आयु लाखों वर्ष लिख दी है। तुम जानते हो यह शास्त्र आदि सब भक्तिमार्ग की सामग्री है, जो वहाँ सतयुग में नहीं होगी। वहाँ यह अनेक धर्म नहीं होंगे। यह इस्लामी, क्रिश्चियन आदि सब धर्म द्वापर में स्थापन होते हैं। फिर हर एक ने अपना-अपना शास्त्र बैठ बनाया है। अभी सारी सृष्टि है पतित, इसलिए पतित-पावन बाप को सब बुलाते हैं कि आकर हमारा दुःख हरो और सुख दो। वह भी कहते हैं हमारा गाइड बन हमको घर ले चलो। गाइड तो सबका होता है ना। तुम अभी कान्ट्रास्ट को समझ गये हो। वह पण्डे तीर्थ यात्रा पर धक्के खिलाते हैं। तुम हो रूहानी पण्डे। पाण्डव सम्प्रदाय, शिवबाबा के बच्चे भी पण्डे। बाप रूहानी यात्रा सिखलाते हैं। हे आत्मा तुम अपने बाप को याद करो और घर को याद करो। बाबा को याद करने से घर पहुँच जायेंगे। याद नहीं करेंगे तो पाप कटेंगे नहीं। भल ले तो सबको जायेंगे परन्तु सजा खाकर हिसाब-किताब चुक्तू करेंगे अथवा योगबल से, चुक्तू तो जरूर करना है।

तुम जानते हो अभी हम जमा कर रहे हैं। जितना पवित्र बन अस्ती कमाई करेंगे उतना जमा होता है। पुरूषार्थ नहीं करेंगे तो कुछ भी जमा नहीं होगा। घाटा पड़ जायेगा। तुम जानते हो आधाकल्प हम घाटा पाते ही आये हैं। अभी बिल्कुल देवाला हो गया है। हर बात में देवाला। अभी बच्चों को 21 जन्मों के लिए जमा करना है, उसके लिए मुख्य है याद की यात्रा। यह तो सदैव स्मृति में रखो। जब भी फुर्सत मिले तो इस स्मृति में रहो। बाबा ज्ञान का सागर है तो तुमको भी रचना के आदि मध्य अन्त का नॉलेज है। आप समान बनाते हैं। जैसे बैरिस्टर, इंजीनियर आदि पढ़ाकर आप समान बनाते हैं ना। ऐसे बाप भी बच्चों को आप समान देही-अभिमानी बनाते हैं। बाप देह-अभिमान नहीं रखते, यह तो पढ़ाई है ना। जो ज्ञान बाप में है वह तुमको देते हैं। बाप पवित्रता का सागर है तो तुमको भी आप समान पवित्र बनाते हैं। जो नहीं बनेंगे वह
c सजायें खायेंगे। फिर पद भी कम हो जायेगा। इस समय ऐसे नहीं कि धन से तुमको साहूकार बनना है। नहीं, बाबा ने समझाया है गरीब की एक पाई, साहूकार का एक रूपया समान। दोनों को वर्सा इतना ही मिलता है। बाप है ही गरीब निवाज। इसलिए गायन भी है अजामिल जैसे पापी, अहिल्या.. साहूकार का नाम नहीं गाया जाता है। यह भी समझने की बात है। तुम कहेंगे हम पहले-पहले सबसे साहूकार थे। फिर यहाँ ज्ञान भी नम्बरवार उठायेंगे, तो वहाँ पद भी नम्बरवार पायेंगे। माँ-बाप को पूरा फालो करना है। जैसे बाबा पुरुषार्थ कर ऊंच पद पाते हैं। मम्मा बाबा भी सर्विस करते हैं ना। तुम्हारी यह है रूहानी सेवा। घर-घर में सन्देश पहुँचाना है। जो कोई

PDF Compression, OCR, Web Optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

ऐसा न कहे कि हमको तो बाप के आने का सन्देश ही नहीं मिला तो याद कैसे करें। ऐसे कुछ कहानियां भी शास्त्रों में हैं कि भगवान को भी उल्हना दिया। इसलिए सबको मालूम पड़ना चाहिए। टाइम थोड़ा है। दिन-प्रतिदिन प्रदर्शनी, मेले आदि की धूम मचती जाती है। अब विलायत के अखबारों में पड़ता है। शुरू में जब भट्ठी बनी थी तो विलायत तक अखबार में नाम गया। अब फिर वह भी पड़ेगा कि खुद गॉड फादर आकर सबको लिबरेट कर रहे हैं। कहते हैं और सब तरफ से बुद्धियोग तोड़ो। मुझ एक बाप को याद करो तो तुम पावन बन मुक्तिधाम में चले जायेंगे। कोई तो अच्छी रीति समझ कर याद करने लग पड़ेंगे। धर्म के बड़े जो होंगे वह फिर नम्बरवार आते हैं। सभी धर्मों का झाड़ निराकारी दुनिया से यहाँ आकर वृद्धि को पाता है। फिर पतित दुनिया से चले जायेंगे निराकारी पावन दुनिया में। फिर हर एक अपने-अपने समय पर धर्म स्थापन करने आयेंगे। यह बुद्धि में रहना चाहिए। सतयुग में एक ही धर्म था। फिर वृद्धि होते-होते अनेक धर्म अनेक मत हो जाती हैं। तुम जानते हो यह भारत अविनाशी खण्ड है, इसमें प्रलय कब होगा नहीं। इन बातों को सिमरण करते रहो।

d

यह तुम्हारी ईश्वरीय मिशन है। सेन्टर्स खुलते जाते हैं। अब विनाश भी सामने खड़ा है। इन आंखों से जो कुछ देखते हो वह सतयुग में कुछ भी नहीं रहेगा, जंगल हो जायेगा। आबू थोड़ेही सतयुग में होगा, दरकार ही नहीं। यह मन्दिर आदि सब बाद में भक्ति मार्ग में बनेंगे। कितनी ऊंची पहाड़ी पर मन्दिर बनाते हैं। फिर ठण्डी में बन्द कर नीचे उतर आते हैं। तुम तो पहाड़ी पर बैठे हो। अन्त में सब पहाड़ी पर ही साक्षात्कार होंगे। बाबा बतलाते हैं - मुझे भी जब साक्षात्कार हुआ था तो मैं पहाड़ी पर था। अब भी पहाड़ी पर आकर अनायास ही बैठे हैं। यहाँ बैठे-बैठे तुम सब कुछ सुनेंगे और देखेंगे। यहाँ बैठे साक्षात्कार हो सकता है कि कैसे आग लगती है।

e

क्या-क्या होता है। रेडियो से, अखबारों से सब कुछ तुम सुनेंगे। टी.वी. में भी तुम देख सकते हो। आगे चलकर ऐसी-ऐसी चीजें निकलेंगी जो घर बैठे सब दिखाई पड़ेगा। रेडियो में कहाँ-कहाँ का आवाज सुनाई पड़ता है। यह सब है माया का शम्प, तब मनुष्य समझते हैं यह तो स्वर्ग है। स्वर्ग तो तब हो सकता है जब विनाश हो। वहाँ मीठे पानी पर महल होंगे। कहाँ पहाड़ियों पर जाने की दरकार नहीं। वहाँ सदैव बहारी मौसम रहती है। आज गर्मी है, ठण्डी है... सबमें दुःख है। स्वर्ग में दुःख का नाम नहीं होगा। तुम ऐसी जगह चलते हो। यह बुद्धि में है कि हमको यह शरीर छोड़ जाना है बाबा के पास। अब हम बाबा द्वारा राजयोग सीख रहे हैं। 5 हजार वर्ष पहले भी सीखा था। कहते हैं बाबा आप तो वही हो। बाबा जानते हैं जिन्होंने कल्प पहले राज्य भाग्य पाया होगा, वह अब भी लेंगे। यह चक्र बुद्धि में होना चाहिए। बराबर 5 हजार वर्ष पहले भारत में देवी-देवताओं का राज्य था फिर आधा समय के बाद माया की प्रवेशता हुई फिर और धर्म आये फिर भक्तिमार्ग शुरू हुआ अर्थात् रावण राज्य शुरू हुआ। यह चित्रों पर साफ समझा सकते हो। यह भारत की ही कहानी है कि सतोप्रधान से तमोप्रधान कैसे बनते हैं। फिर जब विनाश का समय होता है तो सब विनाशकाले विपरीत बुद्धि हो जाते हैं। मेले, प्रदर्शनी में

f

बड़ी युक्ति से चित्र रखने चाहिए। तुम्हारा यह ज्ञान है गुप्त, यहाँ हथियार आदि की कोई बात नहीं। तुम बहुत साधारण हो। तुम चलते फिरते घूमते बाप की याद में रहते हो। कोई तुम्हारे से

g

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

पहले तुम वेदो शास्त्रों को मानते हो। बोलो हाँ जी, हम उन्हों को अच्छी रीति जानते हैं कि इससे भगवान की प्राप्ति नहीं हो सकती है। यह सब भक्ति मार्ग की सामग्री है। सतयुग में सब पावन आत्मायें थीं। गीत भी है ना - जाग सजनियां जाग। नई दुनिया में सब कुछ नया होगा। बाबा आकर नई दुनिया के लिए नई कहानियां सुनाते हैं। सीन सीनरियां सब नई होंगी। प्रदर्शनी में आते बहुत हैं, ओपीनियन भी लिखते हैं। बहुत अच्छा है यह सबको समझना चाहिए परन्तु खुद कुछ भी समझते नहीं हैं। कोटों में कोई मुश्किल ही निकलते हैं। परन्तु सर्विस तो होनी है। ढेर प्रजा बनेगी। तुम बच्चे इस ज्ञान का सिमरण करते रहो तो बहुत खुशी रहेगी। यह दुनिया ही दुःख की है। घाटा पड़ा, दिवाला निकला, अर्थक्वेक हुई, सबके पैसे खत्म हो जायेंगे। तब कहते हैं किनकी दबी रही धूल में... सफल किसकी होगी? जो ईश्वरीय स्थापना के कार्य में लगा रहे हैं। यह है ईश्वरीय बैंक। जो इसमें जितना डाले उतना जमा होता है। जितना जिसने कल्प पहले डाला होगा वह इतना ही शिवबाबा की गोलक में डालेंगे। इसका रिटर्न फिर नई दुनिया में 21 जन्मों के लिए मिलेगा। भक्ति मार्ग में शिवबाबा की गोलक में डालते हैं तो अल्पकाल क्षणभंगुर सुख मिलता है। यहाँ तो डायरेक्ट शिवबाबा स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं, तो 21 जन्मों के लिए मिलेगा। भक्ति मार्ग में अल्पकाल का सुख नर्क में मिलता है। फिर मैनर्स भी अच्छे चाहिए, किसको भी दुःख नहीं देना चाहिए। नहीं तो नाम बदनाम कर देंगे। कभी क्रोध नहीं करना चाहिए। देह-अभिमान में आने से पाप तो होते हैं। बाबा के बने हो तो कहते हो बाबा यह सब कुछ आपका है। सच्ची दिल पर साहेब सजी होगा। दिल में कोई खोट नहीं होना चाहिए। नहीं तो और ही गिरते रहेंगे। तुम हो पैगम्बर के बच्चे, तुम सबको पैगाम देते हो कि बाप आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं, उसका सन्देश सबको देना है। नई दुनिया स्थापन हो रही है। उसके लिए जिनको राजयोग सीखना हो वह आकर सीखे। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- अन्दर में कोई भी खोट (कमी) हो तो उसे निकाल देना है। सच्ची दिल रखनी है। देह-अभिमान में आकर कभी क्रोध नहीं करना है।

२- जब भी फुर्सत मिले तो याद की यात्रा में रह कमाई जमा करनी है।

वरदान:- तोड़ना, मोड़ना और जोड़ना—इन तीन शब्दों की स्मृति द्वारा सदा विजयी भव

सारी पढ़ाई और शिक्षाओं का सार यह तीन शब्द हैं:- 1-कर्मबन्धन तोड़ने हैं। 2- अपने संस्कार-स्वभाव को मोड़ना है और 3- एक बाप से सर्व सम्बन्ध जोड़ने हैं—यही तीन शब्द सम्पूर्ण विजयी बना देंगे। इसके लिए सदा यही स्मृति रहे कि जो भी इन नयनों से विनाशी चीज़े देखते हैं वह सब विनाश हुई पड़ी हैं। उन्हें देखते भी अपने नये सम्बन्ध, नई सृष्टि को देखते रहो तो कभी हार हो नहीं सकती।

स्लोगन:-

योगी की निशानी है—सदा क्लीन और क्लीयर।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अव्यक्त- 5-1-77 प्रातः क्लास ओमशान्ति [illegible] मीठा बाबा आये है?

रूने रात गंभीर सोके ··· ओमशान्ति। गीत तो सुना हुआ है। जो अच्छे2 गाने है वो जब सैन्टर्स में होने चाहिए। यह तो बाबा ने बनवाये है ना। तुम्हारी पुथि में और कोई शास्त्र आदि नहीं है। तुम सब कुछ पढ़े हुए हो। जानते हो परन्तु अभी वो कुछ भी पुथि में न है। बाप कहते है पढ़ा हुआ सब भूलो। सारे आधे कल्प के जो भी शास्त्र आदि पढ़े है वो भूल जाने है। आप मुये घर गई दुनिया। सपना है अब आता है। अभी बन जाते है अपने घर। फिर इस शास्त्रों की पढ़ाई आदि से क्या करेंगे। यह वेद शास्त्र तो आधा नहीं चलने है तो यह आधा चलते है अज्ञान काल में। यह

a [illegible] अविनाशी, कर्मकान्ड के, मत्युलोक के शास्त्र है। अमरलोक के लिए तो है अमरकथा। बाबा है अमरनाथ। तुम सब पुरुषोत्तमी हो। अमरकथा सुन रही हो। शिवबाबा द्वारा। वो है ऊँच ते ऊँच अमरनाथ। है वो शिवबाबा। अमरनाथ पर वर्ष में लिंग बनाते है। नीचे जो साधू सन्त आदि रहते है वहाँ फिर शिव की प्रतिमा होती है जिसकी पूजा आदि करते है। वो तो वर्ष में बनाते है। निराकार की थोड़ेही पूजा हो सकेगी। ऐसे नहीं कि अपने आप बन पड़ता है। नहीं। बनाते है। झूठे गपोड़े तो बहुत सुनाते है। अमरनाथ अथवा शंकर पार्वती वहाँ कहीं से आये। हो तो कोई साक्षात्कार नहीं। सच्चा2 मानसरोवर यह (ब्रह्मा) है। निराकार शिवबाबा है ज्ञानसागर। वो जब तक इनमें न आये तब तक बाप ज्ञानसरोवर कैसे हो। आत्मा में ज्ञान है परन्तु सुनाये कैसे? जब तक मनुष्य तन न ले तो सुन सब ही सकते। परन्तु नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। कोई बड़ी नदी है, कोई नाला है। कोई डुबकी है। यह बाप ही समझाते है। सभी जानते है कि है ब्रह्माकुमार कुमारियाँ। ब्रह्मा का बाप है शिव। यह तो पुथि में है ना। इन [illegible] के भाई बहिनी है। यूँ तो शिवबाबा के बच्चे है। लेकिन अभी शरीर में आये है तो है निराकार। शरीर के बच्चे बहिनी है। तो इस भाई बहिन ठहरे। सभी को यही सिखाना है। [illegible] है। [illegible] आता [illegible] बाबा तो है बोलने वाले है वो है बापदादा। एक साथ कहते है। इस रथ के द्वारा शिवबाबा [illegible] दूसरा कहे मैं भगाने की बात कहता हूँ तो गोया एक तीर चलता ही नहीं। बापदादा [illegible] सुन जाते हो। यह रथ है, [illegible] है। इस [illegible] है। [illegible] बाबा [illegible] इस विचार में आ नहीं सकते। नहीं तो वो [illegible] हो जाए। इसमें बहुत [illegible] है। तो इसलिए बाबा कहते है अपरकार [illegible] भाई बहिन कहता फिर अपर विचार में गये तो [illegible] गुप्त पोपने पड़ेगी। सतगुरु पाप का निन्दक ठौर न पावे। यो गुरु लोग तो बहुत है। यह तो एक ही [illegible] है। यह है पेड़ का पाप। सतयुग में फिर ऐसी बातें मिलेंगी। इस समय है आसुरी बातें। [illegible] बाबा बाप। तुम जानते हो इस शिवबाबा के पोते पोतियाँ ब्रह्मा के [illegible] है। ब्रह्मा [illegible] है। ब्रह्मा भी पढ़ा रहे है। कहते है हमको गाड ने नालेज दी। ब्रह्मा है गाडेज बाय नालेज [illegible] कोई इस है गाड गाडेज आफ नालेज। मात पिता नालेज दे रहे है। फादर यह है। गाड ब्रह्मा [illegible] है। गाड तो एक है। बाकी रहे उनके पत्थे। ब्रह्मा और प्र०ब्र०। अब ब्रह्मा गाडेज की गुप्त है और मम्मा [illegible] नालेज तो प्रत्यक्ष है। बाजवर में बच्चे तो तुम ब्रह्मा के ठहरे ना। उनको कहते है गाड आफ नालेज। उसको [illegible] मिली शिव से। फिर भी ब्रह्मा से गाड नहीं कह सकते। गाड एक है। तुम जानते हो कल्प पहले भी जरूर [illegible] परलय ने ब्रह्मा द्वारा फीदरची होगी। तो जरूर पहले2 ब्राह्मण होंगे। फिर ब्राह्मण देवता, ही राजयोग [illegible] शिक्षा से देवता बनेंगे। यह ज्ञान यज्ञ है तो जरूर ब्राह्मण ही होंगे। दूसरे तो यह होते है उनमें कोई [illegible] होता है तो वहाँ तक यह चले। अक्सर करके 7 रोज ही यह चलता है। इस यज्ञ को कहा जाता है [illegible] यज्ञ। अग्नि पहुत समय चलने वाला ज्ञान यज्ञ। कितना समय चलने वाला। यह कोई नहीं जानते। अन्त तक [illegible] ही है। वहाँ जाना लीला को साक्षी [illegible] है। और कोई ऐसे यह ज्ञान यज्ञ रच नहीं सकते।

PDF compressor

प्रवेश मार्ग से फिर इस नया पर छोटे2बच्चे आते रहते हैं। कह अब रखते हैं कोई कह ज्ञान यज्ञ में रहते हैं। कह ज्ञान यज्ञ रचेंगे तो गीता सुनायेंगे। सिर्फ यज्ञ होगा तो वेद आदि सुनायेंगे। कह ने तो गीता सुनाई है। परन्तु फिर भूल जाते हैं। कृष्ण का नाम कह देते। यह नहीं समझते कह ज्ञान यज्ञ से सूर्यवंशी चन्द्रवंशी डिनायस्टी बनी। अभी तुम सामने बैठे हो। जरूर शिवबाबा पुनरावृत्ति आना पड़ेगा। तो ब्राह्मण लोग तो लिख कह देते हम ब्रह्म के औलाद हैं देवताओं के औलाद देवतायें होंगे। क्षत्रियों के औलाद क्षत्रिय होंगे। वर्ण तो है ना। इनको कोई जानते नहीं। जब भी कोई को समझाओ तो बोलो तुम ब्रह्मा हो। प्रजापिता नाम तो है ना। जो पास हुआ है तो फिर जरूर प्रेजेन्ट होगा ना। गाया हुआ है परमपिता परमात्मा ब्रह्मा तन द्वारे से ब्राह्मण और सूर्यवंशी चन्द्रवंशी धर्म की स्थापना करते हैं। नहीं तो पूछना चाहिए प्रजापिता ब्रह्मण जो थे कहाँ गये सृष्टि रची होगी तो पहले2 ब्रह्मा के मुख वंशावली ब्राह्मण थे। तुम जानते हो इस ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण हैं। ब्रह्मा बाबा कहते हैं पत्र लिखते हैं। गोड भी लगा हुआ है। तुम समझा सकते हो यह शिवबाबा तुम्हारा क्या लगता है। सर्वव्यापी तो कह न सके। पिता के सर्वव्यापी तो कहेंगे। अच्छा ब्रह्मा तुम्हारा क्या लगता है। यह जरूर छोकरे गये हैं तब तो यादगार बना हुआ है। अब फिर रचना रच रहे हैं। तो इसका बाप ब्रह्मा है। परमपिता परमात्मा ब्रह्मा मुख कमल द्वारा पढ़ा रहे हैं। इस द्वारा राजयोग सीखते हैं। तुम भी सीखो तो 2। जन्म सिर बाप से वर्सा पावेंगे। नहीं तो नहीं पावेंगे [illegible] जरूर बनेंगे। जो ब्रह्मा के औलाद 5000 वर्ष पहले बने होंगे। सूर्यवंशी चन्द्रवंशी घर पाया होगा तो पावेंगे। नहीं तो नहीं है ना। फिर से बनेंगे। बाप आये हैं पतित से पावन, मनुष्य से देवता बनाने। फिर भी [illegible] 8 कुमारियाँ सब ईश्वरीय औलाद हैं। यह रचा है तो ब्राह्मण जरूर पहले2 बनें बनेंगे। [illegible] परन्तु तुमने गायक उपर मुख का वर्सा नहीं लिया होगा तब जानते नहीं हो। इतनी सब [illegible] कुमारियाँ हैं। कोई होती हो रहेंगी। अभी तुम बैठे हो जानते हो शिवबाबा की याद में बैठे हैं। परमपिता [illegible] के सामने बैठे हैं। उसको कहा जाता है ओमनीप्रेजन्ट। हाजिरनाजर तो सभी है ना। क्या करते हैं। जरूर कर्म करते होंगे। कर्म अकर्म और विकर्म का राज समझ रहे हैं मनुष्य। परमात्मा ही मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है। जिसको सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान है। तो नालेजफुल है। ऐसे नहीं कि मनुष्यों के बुद्धि में क्या है वो जानेंगे। [illegible] कहते हैं हे भगवान तुम बच्चों को राजयोग और ज्ञान सिखलाता है। जिस योग लगाने से तुम पावन बन [illegible] और इस छोटे बच्चे को बनने से प्यूरिटी का ताज और रतन जड़ित ताज आ जावेगा। इसको अविनाशी ज्ञान [illegible] कहते हैं। योग से हेल्थ ज्ञान से वेल्थ। हेल्थ पैसा है तो हेपीनेस भी है। तुमको हेल्थ वेल्थ हेपी सब मिलती है। योग से विक्ट्री विश्व की और लाईट का ताज आ जावेगा। देवतायें एवर हेल्दी वेल्दी रहते हैं। सुदर्शनचक्रधारी जरूर हैं। ज्ञान रतन धारण करने से तुम वेल्दी बन जावेंगे। इसको ही नेचरकोर कहा जाता है। आत्मा प्योर हो गई तो फिर शरीर भी प्योर मिलेगा। उसको कहा जाता है देवता। प्यूरिटी भी है तो हेल्दी वेल्दी भी है। सतयुग में भारतवासियों की आयु 150 वर्ष थी। अभी तो विष पीते2 योगी बन पड़े हैं तो शुरुआती मृत्यु हो जाता है। वो थी अविनाशी दुनिया। यह है अपवित्र दुनिया। वो है श्रेष्टाचारी दुनिया। भ्रष्टाचार कोई हो न सके। व्यास भगवान ने तो यही भी भ्रष्टाचार लिख दिया है। कृष्ण यह करता था। राम यह करता था। शिव यह करता था। सबमें ग्लानी लिख दी है। बाबा कहते हैं जब ऐसा पर्त ग्लानी होती है तो मैं आता हूँ। अपने पर्दों में गालियाँ देना यह भारत में ही होता है। यदा यदाहि ... यह पर्दों की बात है। बाप कहते हैं माया ने बिल्कुल ही भूत बना दिया है। भूत भ्रष्टाचारी को कहा जाता है। फिर श्रेष्टाचारी कौन बनावेगा। नई दुनिया श्रेष्टाचारी है। नये से फिर पुराने जरूर बनते हैं। पुराने जड़जड़ीभूत जरूर होते हैं। हर चीज ऐसी होती है। तो यह सब खत्म हो जाना है।

PDF copyright [illegible] www.BRAHMAKUMARIS.com

रहते नौकरी आदि भी करते और ऊँचे पद पाने लिए ग्रहों पर भी चलते हैं। पादा को पालूम होगा तो राय देंगे इस हालत में ऐसे करो। बतावेंगे। पादा हमारे पास यह कह है। पापा कहेंगे अच्छा मत मकान बनाओ। पैसा आदि कुछ नहीं है तो फिर मकान किसके लिए? कहेंगे अच्छा सेन्टर खोल दो। बहुतों का कल्याण हो जावेगा। एक कमरा दान के लिए रखो। प्रापर्टी तुम्हारी ही रहेगी। सिर्फ सर्विस अर्थ इन्हीं को दे दो। मत किराया भी लो। यह किराया देने के किरायेदार को कुछ पता नहीं चलने वाली नहीं करते। ऐसे2 सेन्टर खोलते जाओ। पहले तो सेन्टर के पूरा ज्ञान करो फिर कुछ बचत है। बाप को सर्वस देने वालों को भी मत दे सकते हो। सेन्टर पर सर्वस देने से ही तुम्हारा भविष्य बनता है। स्वदा है तो उनकी सर्वस करना है। नहीं तो वो खत्म हो जावेगा। मनुष्य दान करते हैं तो दूसरे जन्म में उसका फल मिलता है। यह भी करते हैं। ईश्वर अर्थ तो इनका भविष्य 2 जन्म का मिलता है। और ऊँचा भी कभी न रखना है। कभी को गर्व नहीं होता है। कभी को घमंड नहीं रहता है।

d कभी न है तो उसको इज्जत नहीं जाए। बच्चों को कर्ज भी कभी न उठाना है। मनुष्य तो बहुत कर्ज उठाते हैं। सीढ़ियों पर चढ़ो, सीढ़ी पर चढ़ो पहुंच करते हैं। नहीं तो पेट फाड़ते हैं तो रोटी। बाकी सारा ऊपर का चढ़ा ही चला है। कुछ चढ़ें बहुत करते हैं। शादी तो घरबारी हो जाती है। बाप के मत पर राय लेते चलो। बच्चों 10-15 हजारी बाप पिया, सिगरेट आदि दिया, यह खराब आदतें सब छोड़ देनी है। तो मीठे2 बच्चों को लोभ पर चलना है। मनुष्य पैसा इकट्ठा भी करते हैं तुम्हारी यह देन है बेफिकरपने। इसमें चार आना डालो तो सौ रुपये में हीरे बन जाते। पत्थर से सोना बन जाता। तुम्हारी हर चीज को पारस बना देते हैं। शिववादा

e का खजाना तो भरपूर अपरंपार ही है। देर चढ़ने से अधिकारी कैसे छूटेंगे। रूपोसंपुत है। पहले तो कोई के दिल में है। सहज पोइंटस बनाने हैं। पापा है देने वाला। काम में आना होगा तो तभी नहीं तो खो देंगे। फिर देना पड़े। अन्यात्मियों को वास्तव में इतने पैसे इकट्ठे करने का तो नहीं। अर्थ कुछ छोड़ा फिर इतने पैसे को रखना अच्छा।

मीठे2 निश्चयबुद्धि बच्चों प्रति मातपिता दादादादी का धावव्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप की नमस्ते।

---

f **अव्यक्त सूचना:-** सर्व ब्राह्मण कुल भूषणों को सूचित किया जाता है कि बापदादा के महावाक्यों प्रमाण अनेक तूफानों में स्वयं सामने आते चलते हैं जिससे निश्चयबुद्धि रत्न तो सदा विजयी है ही है। अलबत्त देहली में एक तूफान भी पड़ेगा, अहमदाबाद में था अब देहली में है तो आत्मा अपना-अपना पार्ट बजा रही है। बाहर से तो आत्मा को गुह्यपना में जाने का रूप कहती, हरेक के पर जाकर खेल कराती है, मुरली का आधार लेकर हैड गाइन्स निकल सुनाती लेकिन अर्थ अपना मनमत का निकालती है। और यह भी कहती है कि अलक्ष वीरेन्द्र द्वारा बापदादा का पार्ट चलना है। इस मुरली मुताबिक भी साक्षात्कार कर कहीं2 भेजे हैं। जिसमें मुख्य से लिख का डमड याने अगम निगम के भेद खोले लिखा हुआ है, नीचे नाम एड्रेस रखेंगे की है। यह सब मनमत में जाते हैं न कि श्रीमत। इसलिए आप सब अपने सेन्टर्स के भाई बहनों को ध्यान देना कि कहीं कोमल कमजोरी, मनमत में आया वश न हो जाए। कहीं2 तो अपना नाम भी उनकी कर सुनाता है। उनके साथ देहली के कुछ भाई बहनें भी कहीं2 जाकर गलत प्रोपेगण्डा करते हैं इसलिए उनसे ध्यान रखना। डियर नो दिल का पक्ष पक्का रखना है।

मीठे2 बाबा ने वीरेन्द्र दत्त दूसरा भी है जिसका चिन्तारी नाम का पुस्तक था तो रामायण गुरुद्वारा आदर वाला [illegible] है पर दूसरा है।

26-3-01 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – याद में रहकर दूसरों को याद का अभ्यास कराओ, योग कराने वाले का बुद्धि योग इधर-उधर नहीं भटकना चाहिए"

प्रश्न:- किन बच्चों के ऊपर बहुत बड़ी रेसपॉन्सिबिल्टी है? उन्हें कौन सा ध्यान जरूर देना चाहिए?

उत्तर:- जो बच्चे निमित्त टीचर बनकर दूसरों को योग कराते हैं, उन पर बहुत बड़ी रेसपॉन्सिबिल्टी है। अगर योग कराते समय बुद्धि बाहर भटकती है तो सर्विस के बजाए डिससर्विस करते हैं। इसलिए यह ध्यान रखना है कि मेरे द्वारा पुण्य का काम होता रहे।

गीत:- ओम् नमो शिवाए.....

ओम् शान्ति। बाप सभी बच्चों को पहले-पहले तो यहाँ बैठ करके लक्ष्य में टिकने के लिए दृष्टि देते हैं कि जैसे मैं शिवबाबा की याद में बैठा हूँ, तुम भी शिवबाबा की याद में बैठो। प्रश्न उठता है कि जो सामने बैठे हैं नेष्ठा कराने के लिए, वह सारा समय शिवबाबा की याद में रहते हैं? जो औरों को भी कशिश हो। याद में रहने से बहुत शान्ति में रहेंगे। अशरीरी हो शिवबाबा की याद में रहेंगे तो औरों को भी शान्ति में ले जायेंगे क्योंकि टीचर होकर बैठते हो ना। अगर टीचर ही ठीक रीति याद में नहीं होंगे तो दूसरे रह नहीं सकेंगे। पहले तो यह ख्याल करना है कि मैं जो उस माशूक बाबा का आशिक हूँ, उसकी याद में बैठा हूँ? हर एक ऐसे अपने से पूछो। अगर बुद्धि और तरफ चली जाती है। देह-अभिमान में आ जाते हैं तो गोया वह सर्विस नहीं, डिससर्विस करने बैठे हैं। यह बात समझ की है ना। कुछ सर्विस तो की नहीं। ऐसे ही बैठे हैं तो नुकसान ही करेंगे। टीचर का ही बुद्धियोग भटकता होगा तो वह मदद क्या करेंगे? जो टीचर हो बैठते हैं वह अपने से पूछें कि मैं पुण्य का काम कर रहा/रही हूँ? अगर पाप का काम करेंगे तो दुर्गति को पायेंगे। पद भ्रष्ट हो जायेगा। अगर ऐसे को गद्दी पर बिठाते हो तो तुम भी रेसपान्सिबुल हो। शिवबाबा तो सबको जानते हैं। यह बाबा भी सबकी अवस्था को जानते हैं। शिवबाबा कहेंगे यह टीचर बन बैठे हैं और इनका बुद्धियोग तो भटकता रहता है। यह क्या औरों को मदद करेंगे। तुम ब्राह्मण बच्चे निमित्त बने हो, शिवबाबा का बनकर उनसे वर्सा लेने। बाबा कहते हैं हे आत्मायें मामेकम् याद करो। टीचर बन बैठते हो तो और ही अच्छी तरह उस अवस्था में बैठो। यूँ तो हर एक को बाप को याद करना है। स्टूडेन्ट अपनी अवस्था को समझ सकते हैं। जानते हैं कि हम पास होंगे वा नहीं। टीचर भी जानते हैं। अगर प्राइवेट टीचर रखते हैं, वह भी जानते हैं। इस पढ़ाई में कोई खास टीचर रखने चाहें तो रख सकते हैं। कोई कहते हमको निष्ठा (योग) में बिठाओ तो बाप की याद में बैठना है। बाप का फरमान ही है मामेकम् याद करो। तुम आशिक हो, चलते-फिरते अपने माशूक को याद करो। सन्यासी ब्रह्म को याद करते हैं। समझते हैं कि हम जाकर ब्रह्म में लीन होंगे। जो अधिक याद करते होंगे उनकी अवस्था अच्छी होगी। हर एक में कोई न कोई खूबी तो रहती है ना। कहते हैं कि याद की यात्रा में रहो। खुद को भी याद में रहना है। बाबा के पास कोई तो सच्चे भी हैं, कोई

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

झूठे भी हैं। खुद निरन्तर याद में रहें, बड़ा मुश्किल है। कोई तो बाप से बिल्कुल सच्चे
a रहते हैं। यह बाबा भी अपना अनुभव तुम बच्चों को बताते हैं कि थोड़ा समय याद में रहता हूँ फिर भूल जाता हूँ क्योंकि इसके ऊपर तो बहुत बोझ है। कितने ढेर बच्चे हैं। तुम बच्चों को यह भी पता नहीं पड़ता है कि यह मुरली शिवबाबा ने चलाई वा ब्रह्मा चलाते हैं क्योंकि दोनों इकट्ठे हैं ना। यह कहते हैं कि मैं भी शिवबाबा को याद करता हूँ। यह बाबा भी बच्चों को नेष्ठा कराते हैं। यह बैठते हैं तो देखते हो सन्नाटा अच्छा हो जाता है। बहुतों को खींचते हैं। बाप है ना। कहते हैं बच्चे याद की यात्रा में रहो। खुद को भी रहना है, सिर्फ पण्डित नहीं बनना है। याद में नहीं रहेंगे तो अन्त में फेल हो पड़ेंगे। बाबा मम्मा का तो ऊंच पद है, बाकी तो अभी माला बनी नहीं है। एक भी दाना बना हुआ कम्पलीट नहीं है। आगे माला बनाते थे बच्चों को लिफ्ट देने लिए। परन्तु देखा गया कि माया ने बहुतों को खत्म कर दिया। सारा मदार सर्विस पर है। तो जो सामने नेष्ठा कराने बैठते हैं उनको समझना है कि मैं सच्चा टीचर होकर बैठूँ। नहीं तो बोलना चाहिए कि हमारी बुद्धि यहाँ-वहाँ चली जाती है। मैं यहाँ बैठने के लायक नहीं हूँ। स्वयं बताना चाहिए। ऐसे नहीं कि आपेही कोई भी आकर बैठे। कोई हैं जो मुख से मुरली नहीं चलाते, परन्तु याद में रहते हैं। लेकिन यहाँ तो दोनों में तीखा जाना चाहिए। साजन बहुत लवली है, उनको तो बहुत याद करना चाहिए। मेहनत है इसमें। बाकी प्रजा बनना तो सहज है। दास दासियाँ बनना बड़ी बात नहीं है। ज्ञान नहीं उठा सकते हैं। जैसे देखो यज्ञ की भण्डारी है, सबको बहुत खुश करती है, किसको दुःख नहीं देती, सब महिमा करते हैं। तो वाह, शिवबाबा की भण्डारी तो नम्बरवन है। बहुतों की दिल को खुश करती है। बाबा भी बच्चों की दिल को खुश करते आये हैं। बाप कहते हैं कि मुझे याद करो और यह चक्र बुद्धि में रखो। अब हर एक को अपना कल्याण करना है। हड्डी सर्विस करनी चाहिए। तुमको बहुत रहमदिल बनना चाहिए। मनुष्य मुक्ति जीवनमुक्ति के लिए बहुत धक्के खाते हैं। किसको भी सद्गति का मालूम ही नहीं है। समझते हैं कि जहाँ से आया वहाँ वापिस जाना है। नाटक भी समझते हैं परन्तु उस पर चलते नहीं हैं। देखो क्लास में कहाँ-कहाँ मुसलमान भी आते हैं। कहते हैं कि हम असुल देवी देवता धर्म के हैं फिर जाकर हम मुसलमान धर्म में कनवर्ट हो गये हैं। हमने 84 जन्म भोगे हैं। सिन्ध में भी 5-6 मुसलमान आते थे। अभी भी आते हैं, अब आगे चल सकते हैं वा नहीं, वह तो देख लेंगे क्योंकि माया भी तो परीक्षा लेती है। कोई तो पक्के ठहर जाते हैं, कोई ठहर नहीं सकते। जो असुल ब्राह्मण धर्म के होंगे, जिन्होंने 84 जन्म लिए होंगे वे तो कभी हिलेंगे नहीं। बाकी कोई न कोई कारणे, अकारणे चले जायेंगे। देह-अभिमान भी बहुत आ जाता है। तुम बच्चों को तो बहुतों का कल्याण करना है। नहीं तो क्या पद पायेंगे। घरबार छोड़ा है, अपने कल्याण के लिए। कोई बाप के ऊपर मेहरबानी नहीं करते हैं। बाप के बने हो तो फिर सर्विस भी ऐसी करनी चाहिए। तुमको तो राजाई का मैडल मिलता है, 21 जन्म सदा सुख की राजाई मिलती है। माया पर सिर्फ जीत पानी है और औरों को भी सिखाना है। कई फेल भी हो जाते हैं। समझते हैं कि बादशाही लेनी तो मुश्किल है। बाप कहते हैं कि ऐसा समझना कमजोरी है। बाप और वर्से को याद करना तो बहुत

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

सहज है। बच्चों में हिम्मत नहीं आती है राजाई लेने की, तो कायर हो बैठ जाते हैं। न खुद लेते, न औरों को लेने देते। तो परिणाम क्या होगा? बाप समझाते हैं कि रात-दिन सर्विस करो। कांग्रेसियों ने भी मेहनत की। कितनी जफाकसी की तब तो फॉरेनर्स से राज्य लिया। तुमको रावण से राज्य लेना है। वह तो सबका दुश्मन है। दुनिया को पता नहीं कि हम रावण की मत पर चल रहे हैं तब दु:खी हैं। किसको भी सच्चा स्थाई दिल का सुख थोड़ेही है। शिवबाबा कहते हैं मैं तुम बच्चों को सदा सुखी बनाने आया हूँ। अब श्रीमत पर चल श्रेष्ठ बनना है। जो भी भारतवासी हैं, वे अपने धर्म को भूल गये हैं। यथा राजा रानी तथा प्रजा। अब तुम बच्चों को समझ मिलती है — सृष्टि का चक्र कैसे चलता है। सो भी घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। बुद्धि में ठहरता ही नहीं है। भल ब्राह्मण तो बहुत बनते हैं परन्तु कई कच्चे होने के कारण विकार में भी जाते रहते हैं। कहते हैं कि हम बी.के. हैं, परन्तु हैं नहीं। बाकी जो पूरी रीति डायरेक्शन पर चलते हैं, आप समान बनाते रहते हैं, वे ही ऊंच पद पा सकेंगे। विघ्न तो पड़ेंगे। अमृत पीते-पीते फिर जाकर विघ्न डालते हैं, यह भी गायन है। उनका पद क्या होगा? कई बच्चियां तो विकार के कारण मार भी खाती हैं, कहती हैं कि बाबा यह दु:ख थोड़ा सहन कर लेंगे। हमारा माशूक तो बाबा है ना। मार खाते भी हम शिवबाबा को याद करती हूँ। वह खुशी में बहुत रहती हैं। इस कापारी खुशी में रहना चाहिए। बाप से हम वर्सा ले रहे हैं औरों को भी हम आप समान बनाते रहते हैं।

b बाबा की बुद्धि में तो यह सीढ़ी का चित्र बहुत रहता है। इसको बड़ा महत्व देते हैं। बच्चे जो विचार सागर मंथन कर ऐसे-ऐसे चित्र बनाते हैं, तो बाबा भी उनकी शुक्रिया करते हैं या तो ऐसे कहेंगे कि बाबा ने उस बच्चे को टच किया है। सीढ़ी बड़ी अच्छी बनाई है। 84 जन्मों को जानने से सारे सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो। यह फर्स्टक्लास चित्र है। त्रिमूर्ति गोले के चित्र से भी इसमें नॉलेज अच्छी है। अभी हम चढ़ रहे हैं। कितना सहज है। बाप आकर लिफ्ट देते हैं। शान्ति से बाप से वर्सा ले रहे हैं। सीढ़ी का ज्ञान बहुत अच्छा है। समझाना है कि तुम हिन्दू थोड़ेही हो, तुम तो देवी देवता धर्म के हो। अगर कहें कि हमने 84 जन्म थोड़ेही लिए हैं। अरे क्यों नहीं समझते हो कि हमने 84 जन्म लिए हैं। फिर याद करो तो तुम फिर से पहले नम्बर में आ जायेंगे। अपने कुल का होगा तो ऐसा प्रश्न करेगा नहीं कि सब थोड़ेही 84 जन्म लेंगे। अरे तुम क्यों समझते हो कि हम देरी से आये हैं। बाप सब बच्चों को कहते हैं तुम भारतवासियों ने 84 जन्म लिए हैं। अब फिर से अपना वर्सा लो, स्वर्ग में चलो। तुम बच्चे योग में बैठते हो। सीढ़ी को याद करो तो बहुत मौज में रहेंगे। हमने 84 जन्म पूरे किये हैं। अब हम वापिस जाते हैं। कितनी खुशी होती है। सर्विस करने का भी उल्लास रहना चाहिए। समझाने के तरीके भी बहुत मिल रहे हैं। सीढ़ी के ऊपर समझाओ। चित्र तो सब चाहिए ना। त्रिमूर्ति भी चाहिए। बाबा कहते भी हैं कि तुम जाओ ही मेरे भक्तों के पास, उनको यह ज्ञान सुनाओ। वह मिलेंगे ही मन्दिरों में। मन्दिरों में भी इस सीढ़ी के चित्र पर समझा सकते हो। सारा दिन बुद्धि में यह रहे कि हम बाबा का परिचय दे, किसका कल्याण करें। दिन-प्रतिदिन बुद्धि का ताला खुलता जायेगा। जिनको वर्सा पाना होगा — वह आयेंगे।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

दिन-प्रतिदिन सीखते भी रहते हैं। कईयों पर ग्रहचारी बैठती है तो बाबा को समझाना पड़ता है। वह नहीं समझते कि हमारे ऊपर ग्रहचारी है। इसलिए हमसे सर्विस नहीं होती। सारी रेसपॉन्सिबिल्टी तुम बच्चों पर है। आप समान ब्राह्मण बनाते रहो। सर्विस पर रहने से बहुत खुशी होती है। बहुतों का कल्याण होता है। बाबा को बम्बई में सर्विस करने का बहुत मजा आता था। बहुत नये-नये आते थे। बाबा की तो बहुत दिल होती है कि सर्विस करें। बच्चों को भी ऐसा रहमदिल बनना चाहिए। सर्विस पर लग जाना चाहिए। दिल में यह रहना चाहिए कि जब तक हमने किसी को आप समान नहीं बनाया है तब तक भोजन नहीं खाना है। पहले पुण्य तो करूँ। पाप आत्मा को पुण्य आत्मा बनायें फिर रोटी खायें। तो सर्विस में जुटा रहना चाहिए। किसका जीवन सफल बनायें तब रोटी खायें। आप समान ब्राह्मण बनाने की कोशिश करनी चाहिए।

C बच्चों के लिए मैगज़ीन निकलती है लेकिन बी.के. इतना पढ़ते नहीं हैं। समझते हैं कि हमको थोड़ेही पढ़ना है। यह बाहर वालों के लिए है। बाबा कहते हैं बाहर वाले तो कुछ समझते नहीं हैं, बिगर टीचर के। यह है ब्रह्माकुमार कुमारियों के लिए तो पढ़कर रिफ्रेश हों। परन्तु वे पढते नहीं हैं। सभी सेन्टर्स वालों से पूछते हैं कि सारी मैगज़ीन कौन पढ़ते हैं? मैगज़ीन से क्या समझते हैं? कहाँ तक ठीक है? मैगज़ीन निकालने वाले को भी आफ़रीन देनी चाहिए कि आपने बहुत अच्छी मैगजीन लिखी है, आपको धन्यवाद करते हैं। मेहनत करनी है, मैगज़ीन पढ़नी है। यह है बच्चों के रिफ्रेश होने के लिए। लेकिन बच्चे पढ़ते नहीं। जिनका नाम बाला है उन्हों को सब बुलाते हैं कि बाबा भाषण करने लिए हमारे पास फलाने को भेजो। बाबा फिर समझते हैं कि खुद भाषण करना नहीं जानते हैं तब तो मांगनी करते हैं। तो सर्विसएबुल को कितना रिगार्ड देना चाहिए। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- राजाई का मैड़ल लेने के लिए सबकी दिल को खुश करना है। बहुत-बहुत रहमदिल बन अपना और सर्व का कल्याण करना है। हद्दी सेवा करनी है।

२- देह-अभिमान में आकर डिससर्विस नहीं करनी है। सदा पुण्य का काम करना है। आप समान ब्राह्मण बनाने की सेवा करनी है। सर्विसएबुल का रिगार्ड रखना है।

वरदान:- अपने प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करने वाले श्रेष्ठ तकदीरवान भव

कोई भी बात को स्पष्ट करने के लिए अनेक प्रकार के प्रमाण दिये जाते हैं। लेकिन सबसे श्रेष्ठ प्रमाण प्रत्यक्ष प्रमाण है। प्रत्यक्ष प्रमाण अर्थात् जो हो, जिसके हो उसकी स्मृति में रहना। जो बच्चे अपने यथार्थ वा अनादि स्वरूप में स्थित रहते हैं वही बाप को प्रत्यक्ष करने के निमित्त हैं। उनके भाग्य को देखकर भाग्य बनाने वाले की याद स्वत: आती है।

स्लोगन:-

अपने रहम की दृष्टि से हर आत्मा को परिवर्तन करने वाले ही पुण्य आत्मा हैं।

Processing, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

2-10-99 प्रात: मुरली ओम् शान्ति "दादादादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – बाप की याद के साथ-साथ ज्ञान धन से सम्पन्न बनो, बुद्धि में सारा ज्ञान घूमता रहे तब अपार खुशी रहेगी, सृष्टि चक्र के ज्ञान से तुम चक्रवर्ती राजा बनेंगे"

प्रश्न :- किन बच्चों (मनुष्यों) की प्रीत बाप से नहीं हो सकती है?
उत्तर:- जो रौरव नर्क में रहने वाले विकारों से प्रीत करते हैं, ऐसे मनुष्यों की प्रीत बाप से नहीं हो सकती। तुम बच्चों ने बाप को पहचाना है इसलिए तुम्हारी बाप से प्रीत है।

प्रश्न :- किसे सतयुग में आने का हुक्म ही नहीं है?
उत्तर:- बाप को भी सतयुग में आना नहीं है तो वहाँ काल भी नहीं आ सकता है। जैसे रावण को सतयुग में आने का हुक्म नहीं, ऐसे बाबा कहते बच्चे मुझे भी सतयुग में आने का हुक्म नहीं। बाबा तो तुम्हें सुखधाम का लायक बनाकर घर चले जाते हैं, उन्हें भी लिमिट मिली हुई है।

ओम् शान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। रूहानी बच्चे याद की यात्रा में बैठे हुए हो? अन्दर में यह ज्ञान है ना कि हम आत्मायें याद की यात्रा पर हैं। यात्रा अक्षर तो जरूर दिल में आना चाहिए। जैसे वह यात्रा करते हैं हरिद्वार, अमरनाथ जाने की। यात्रा पूरी की फिर लौट आते हैं। यहाँ फिर तुम बच्चों की बुद्धि में है कि हम जाते हैं शान्तिधाम। बाप ने आकर हाथ पकड़ा है। हाथ पकड़कर पार ले जाना होता है ना। कहते भी हैं हाथ पकड़ लो क्योंकि विषय सागर में पड़े हैं। अब तुम शिवबाबा को याद करो और घर को याद करो। अन्दर में यह आना चाहिए कि हम जा रहे हैं। इसमें मुख से कुछ बोलना भी नहीं है। अन्दर में सिर्फ याद रहे – बाबा आया हुआ है लेने लिए। याद की यात्रा पर जरूर रहना है। इस याद की यात्रा से ही तुम्हारे पाप कटने हैं, तब ही फिर उस मंजिल पर पहुँचेंगे। कितना क्लीयर बाप समझाते हैं। जैसे छोटे बच्चों को पढ़ाया जाता है ना। सदैव बुद्धि में हो कि हम बाबा को याद करते जा रहे हैं। बाप का काम ही है पावन बनाकर पावन दुनिया में ले जाना। बच्चों को ले जाते हैं। आत्मा को ही यात्रा करनी है। हम आत्माओं को बाप को याद कर घर जाना है। घर पहुँचेंगे फिर बाप का काम पूरा हुआ। बाप आते ही हैं पतित से पावन बनाकर घर ले जाने। पढ़ाई तो यहाँ ही पढ़ते हैं। भल घूमो फिरो, कोई भी काम-काज करो, बुद्धि में यह याद रहे। योग अक्षर में यात्रा सिद्ध नहीं होती है। योग सन्यासियों का है। वह तो सब हैं मनुष्यों की मत। आधाकल्प तुम मनुष्य मत पर चले हो। आधाकल्प दैवी मत पर चले थे। अभी तुमको मिलती है ईश्वरीय मत।

योग अक्षर नहीं कहो, याद की यात्रा कहो। आत्मा को यह यात्रा करनी है। वह होती है जिस्मानी यात्रा, शरीर के साथ जाते हैं। इसमें तो शरीर का काम ही नहीं। आत्मा जानती है, हम आत्माओं का वह स्वीट घर है। बाप हमको शिक्षा दे रहे हैं जिससे हम पावन बनेंगे। याद करते-करते तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। यह है यात्रा। हम बाप की याद में बैठते हैं क्योंकि बाबा के पास ही घर जाना है। बाप आते ही हैं पावन बनाने। सो तो पावन दुनिया में जाना ही है। बाप पावन बनाते हैं फिर नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार तुम पावन दुनिया में जायेंगे। यह ज्ञान बुद्धि में रहना चाहिए। हम याद की यात्रा पर हैं। हमको इस मृत्युलोक में लौटकर नहीं आना है। बाबा का काम है हमको घर तक पहुँचाना। बाबा रास्ता बता देते हैं अभी तुम तो मृत्युलोक में हो फिर अमरलोक नई दुनिया में होंगे। बाप लायक बनाकर ही छोड़ते हैं। सुखधाम में बाप नहीं ले जायेंगे। इनकी लिमिट

PDF Conversion OCR Web Editing Service Evaluation Only. No Commercial Use Permission

हो जाती है घर तक पहुँचाना। यह सारा ज्ञान बुद्धि में रहना चाहिए। सिर्फ बाप को याद नहीं करना चाहिए, साथ में ज्ञान भी चाहिए। ज्ञान से तुम धन कमाते हो ना। इस सृष्टि चक्र की नॉलेज से तुम चक्रवर्ती राजा बनते हो। बुद्धि में यह ज्ञान है, इसमें चक्र लगाया है। फिर हम घर जायेंगे फिर नयेसिर चक्र शुरू होगा। यह सारा ज्ञान बुद्धि में रहे तब खुशी का पारा चढ़े। बाप को भी याद करना है, शान्तिधाम, सुखधाम को भी याद करना है। 84 का चक्र अगर याद नहीं करेंगे तो चक्रवर्ती राजा कैसे बनेंगे। सिर्फ एक को याद करना तो सन्यासियों का काम है क्योंकि वह इनको जानते नहीं है। ब्रह्म को ही याद करते हैं। बाप तो अच्छी रीति बच्चों को समझाते हैं। याद करते-करते ही तुम्हारे पाप कट जाने हैं। पहले तो घर जाना है, यह है रूहानी यात्रा। गायन भी है चारों तरफ लगाये फेरे फिर भी हरदम दूर रहे अर्थात् बाप से दूर रहे। जिस बाप से बेहद का वर्सा मिलना है उनको तो जानते ही नहीं। कितने चक्र लगाये हैं। हर वर्ष भी कई यात्रा करते हैं। पैसे बहुत होते हैं तो यात्रा का शौक रहता है। यह तो तुम्हारी है रूहानी यात्रा। तुम्हारे लिए नई दुनिया बन जायेगी फिर तो नई दुनिया में ही आने वाले हो। जिसको अमरलोक कहा जाता है। वहाँ काल होता नहीं जो किसको ले जाये। काल को हुक्म ही नहीं है नई दुनिया में आने का। रावण की तो यह पुरानी दुनिया है ना। तुम बुलाते भी यहाँ हो। बाप कहते हैं मैं पुरानी दुनिया में पुराने शरीर में आता हूँ। मुझे भी नई दुनिया में आने का हुक्म नहीं। मैं तो पतितों को ही पावन बनाने आता हूँ। तुम पावन बन फिर औरों को भी पावन बनाते हो। सन्यासी तो भाग जाते हैं। एकदम गुम हो जाते हैं। पता ही नहीं पड़ता है कहां चला गया क्योंकि वह ड्रेस ही बदल लेते हैं। जैसे एक्टर्स रूप बदलते हैं। कभी मेल से फीमेल बन जाते हैं, कभी फीमेल से मेल बन जाते हैं। यह भी रूप बदलते हैं। सतयुग में थोडेही ऐसी बातें होंगी।

b

बाप कहते हैं हम आते हैं नई दुनिया बनाने। आधाकल्प तुम बच्चे राज्य करते हो फिर ड्रामा प्लैन अनुसार द्वापर शुरू होता है, देवतायें वाम मार्ग में चले जाते हैं, उन्हों के बहुत गन्दे चित्र भी जगन्नाथपुरी में हैं। जगन्नाथ का मन्दिर है। यूँ तो उनकी राजधानी थी जो खुद विश्व के मालिक थे। वह फिर मन्दिर में जाकर बन्द हुआ, उनको काला दिखाते हैं। इस जगत नाथ के मन्दिर पर तुम बहुत समझा सकते हो। और कोई इनका अर्थ समझा नहीं सकते। देवता ही पूज्य से पुजारी बनते हैं। वह लोग तो हर बात में भगवान के लिए कह देते आपेही पूज्य, आपेही पुजारी। आप ही सुख देते हो, आप ही दुःख देते हो। बाप कहते हैं मैं तो किसको दुःख देता ही नहीं हूँ। यह तो समझ की बात है। बच्चा जन्मा तो खुशी होगी, बच्चा मरा तो रोने लग पड़ेंगे। कहेंगे भगवान ने दुःख दिया। अरे, यह अल्पकाल का सुख-दुःख तुमको रावण राज्य में ही मिलता है। मेरे राज्य में दुःख की बात नहीं होती। सतयुग को कहा जाता है अमरलोक। इनका नाम ही है मृत्युलोक। अकाले मर पड़ते हैं। वहाँ तो बहुत खुशियाँ मनाते हैं, आयु भी बड़ी रहती है। बड़ी में बड़ी आयु 150 वर्ष की होती है। यहाँ भी कभी-कभी ऐसे कोई की होती है परन्तु यहाँ तो स्वर्ग नहीं है ना। कोई शरीर को बहुत सम्भाल से रखते हैं तो आयु बड़ी भी हो जाती है फिर बच्चे भी कितने हो जाते हैं। परिवार बढ़ता जाता है, वृद्धि जल्दी होती है। जैसे झाड़ से टाल-टालियां निकलती हैं—50 टालियां और उनसे और 50 निकलेंगी, कितना वृद्धि को पाते हैं। यहाँ भी ऐसे है। इसलिए इनका मिसाल बड़ के झाड़ से देते हैं। सारा झाड़ खड़ा है, फाउण्डेशन है नहीं। यहाँ भी आदि सनातन देवी-देवता धर्म का फाउन्डेशन है नहीं। कोई को पता ही नहीं देवतायें कब थे, वह तो लाखों

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

वर्ष कह देते हैं। आगे तुम कभी ख्याल भी नहीं करते थे। बाप ही आकर यह सब बातें समझाते हैं। तुम अभी बाप को भी जान गये हो और सारे ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त, डयुरेशन आदि सबको जान गये हो। नई दुनिया से पुरानी, पुरानी से नई कैसे बनती है, यह कोई नहीं जानते। अभी तुम बच्चे याद की यात्रा में बैठते हो। यह यात्रा तो तुम्हारी नित्य चलनी है। घूमो फिरो परन्तु इस याद की यात्रा में रहो। यह है रूहानी यात्रा। तुम जानते हो भक्ति मार्ग में हम भी उन यात्राओं पर जाते थे। बहुत बार यात्रा की होगी जो पक्के भक्त होंगे। बाबा ने समझाया है एक शिव की भक्ति करना, वह है अव्यभिचारी भक्ति। फिर देवताओं की होती है, फिर 5 तत्वों की भक्ति करते हैं। देवताओं की भक्ति फिर भी अच्छी है क्योंकि उन्हों का शरीर फिर भी सतोप्रधान है, मनुष्यों का शरीर तो पतित है ना। वह तो पावन है फिर द्वापर से लेकर सब पतित बन पड़े
c है। नीचे गिरते आते हैं। सीढी का चित्र तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है समझाने का। जिन्न की भी कहानी बताते है ना। यह सब दृष्टान्त आदि इस समय के ही हैं। सब तुम्हारे ऊपर ही बने हुए हैं। भ्रमरी का मिसाल भी तुम्हारा है जो कीड़ों को आपसमान ब्राह्मण बनाते हो। यहां के ही सब दृष्टान्त हैं।

तुम बच्चे पहले जिस्मानी यात्रा करते थे। अभी फिर बाप द्वारा रूहानी यात्रा सीखते हो। यह तो पढ़ाई है ना। भक्ति से देखो क्या-क्या हो गया है। दिमाग ही नहीं रहा है, जिसके आगे जाते हैं माथा टेकते ही रहते हैं। एक के भी आक्यूपेशन को नहीं जानते। हिसाब किया जाता है ना। सबसे जास्ती जन्म कौन लेते हैं फिर कम होते जाते हैं। यह ज्ञान भी अभी तुमको मिलता है। तुम समझते हो बरोबर स्वर्ग था। भारतवासी तो इतने पत्थर बुद्धि बने हैं, उनसे पूछो स्वर्ग कब था तो लाखों वर्ष कह देंगे। अभी तुम बच्चे जानते हो हम विश्व के मालिक थे, कितने सुखी थे अब फिर हमको बेगर टू प्रिन्स बनना है। दुनिया नई से पुरानी होती है ना। तो बाप कहते हैं - मेहनत करो। यह भी जानते हैं माया घड़ी-घड़ी भुला देती है।

बाप समझाते हैं बुद्धि में सदैव यह याद रखो हम जा रहे हैं, हमारा इस पुरानी दुनिया से लंगर उठा हुआ है। नईया उस पार जानी है। गाते हैं ना नईया हमारी पार ले जाओ। कब पार जानी है, वह जानते नहीं हैं। तो मुख्य है याद की यात्रा। बाप के साथ वर्सा भी याद आना चाहिए। बच्चे बालिग होते हैं तो बाप का वर्सा ही बुद्धि में रहता है। तुम तो बड़े हो ही। आत्मा झट जान लेती है, यह बात तो बरोबर है। बेहद के बाप का वर्सा है ही स्वर्ग। बाबा स्वर्ग की स्थापना करते हैं तो बाप की श्रीमत पर चलना पड़े। बाप कहते हैं पवित्र जरूर बनना है। पवित्रता के कारण ही झगड़े होते हैं। वह तो बिल्कुल ही जैसे रौरव नर्क में पड़े हैं। और ही जास्ती विकारों में गिरने लग पड़ते हैं। इसलिए बाप से प्रीत रख नहीं सकते हैं। विनाश काले विपरीत बुद्धि है ना। बाप आते ही हैं प्रीत बुद्धि बनाने। बहुत हैं जिनकी रिंचक भी प्रीत बुद्धि नहीं है। कभी बाप को याद भी नहीं करते हैं। शिवबाबा को जानते ही नहीं हैं, मानते ही नहीं हैं। माया का पूरा ग्रहण लगा हुआ
d है। याद की यात्रा बिल्कुल ही नहीं। बाप मेहनत तो कराते हैं, यह भी जानते हो सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी राजधानी यहाँ स्थापन हो रही है। सतयुग-त्रेता में कोई भी धर्म स्थापन होते नहीं। राम कोई धर्म स्थापन नहीं करते। यह तो स्थापना करने वाले बाप द्वारा यह बनते हैं। और धर्म स्थापक और बाप के धर्म स्थापना में रात-दिन का फर्क है। बाप आते ही हैं संगम पर जबकि दुनिया को बदलना
e है। बाप कहते हैं कल्प-कल्प, कल्प के संगमयुगे आता हूँ, उन्होंने फिर युगे-युगे अक्षर रांग लिख

PDF compressor Free Version

दिया है। आधाकल्प भक्तिमार्ग भी चलना ही है। तो बाप कहते हैं बच्चे इन बातों को भूलो मत। यह कहते हैं बाबा हम आपको भूल जाते हैं। अरे, बाप को तो जानवर भी नहीं भूलते हैं। तुम क्यों भूलते हो? अपने को आत्मा नहीं समझते हो! देह-अभिमानी बनने से ही तुम बाप को भूलते हो। अब जैसे बाप समझाते हैं, वैसे तुम बच्चों को भी टेव (आदत) रखनी चाहिए। भभके से बात करनी चाहिए। ऐसे नहीं, बड़े आदमी के आगे तुम फंक हो जाओ। तुम कुमारियाँ ही बड़े-बड़े विद्वान, पण्डितों के आगे जाती हो तो तुम्हें निडर हो समझाना है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. बुद्धि में सदैव याद रहे कि हम जा रहे हैं, हमारी नईया का लंगर इस पुरानी दुनिया से उठ चुका है। हम हैं रूहानी यात्रा पर। यही यात्रा करनी और करानी है।

२. किसी भी बड़े आदमी के सामने निर्भयता (भभके) से बात करनी है, फंक नहीं होना है। देही-अभिमानी बनकर समझाने की आदत डालनी है।

वरदान:- विश्व में ईश्वरीय परिवार के स्नेह का बीज बोने वाले विश्व सेवाधारी भव

आप विश्व सेवाधारी बच्चे विश्व में ईश्वरीय परिवार के स्नेह का बीज बो रहे हो। चाहे कोई नास्तिक हो या आस्तिक.....सबको अलौकिक वा ईश्वरीय स्नेह की, निःस्वार्थ स्नेह की अनुभूति कराना ही बीज बोना है। यह बीज सहयोगी बनने का वृक्ष स्वतः ही पैदा करता है और समय पर सहजयोगी बनने का फल दिखाई देता है। सिर्फ कोई फल जल्दी निकलता है और कोई फल समय पर निकलता है।

स्लोगन:-

भाग्यविधाता बाप को जानना, पहचानना और उनके डायरेक्ट बच्चे बन जाना यह सबसे बड़ा भाग्य है।

सूचना - 1

निम्नलिखित सेवा केन्द्रों पर नये फोन लगे हैं या परिवर्तन हुए हैं सो इस प्रकार हैं।

1. अमराईवाड़ी, अहमदाबाद (Amraiwadi, Abad), गुजरात का परि॰फोन नम्बर --2772659.
2. सेक्टर-७, भिलाई (Sector-7, Bhilai), मध्य प्रदेश के परि॰फोन नम्बर - 223553, 899268.
3. सरजापुरा, बैंगलोर (Sarjapura, Blore), कर्नाटक का नया फोन नम्बर - 080-5536865.
4. ब्रोड-वे, चेन्नई (Broadway, Chennai), तमिलनाडु का परिवर्तित फोन नम्बर - 5362636.
5. बांगुर-एवेन्यू, कलकता (Bangur Avenue, Calcutta), पश्चिम बंगाल के परिवर्तित फोन व फेक्स नम्बर ----------Ph.-- 5747863 2. Fax No.-- 5740955.
6. तिलक पथ, इन्दौर (TilakPath, Indore), मध्य प्रदेश के वर्तमान फोन, फेक्स नम्बर व ई-मेल पता -- Ph. - 433999, Fax - 430410, E-mail - *indoryog@bom4.vsnl.net.in*
7. महकल (Mehkal), महाराष्ट्र का नया फोन नम्बर - 07268-24880.
8. नीसिंग (Nissing), हरियाणा का नया फोन नम्बर - 01745-71231.
9. पुरी (Puri), उड़ीसा का दूसरा फोन नम्बर -- 28456.
10. सतारा (Satara), महाराष्ट्र का दूसरा फोन नम्बर - 84301.
11. सिंगरौली (Singrauli), मध्य प्रदेश के वर्तमान फोन नम्बर - 33339, 33631.

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

23-7-94 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – दुःख हर्ता सुख कर्ता एक बाप है, वही तुम्हारे सब दुःख दूर करते हैं, मनुष्य किसी के दुःख दूर कर नहीं सकते"

प्रश्नः- विश्व में अशान्ति का कारण क्या है ? शान्ति स्थापन कैसे होगी ?

उत्तरः- विश्व में अशान्ति का कारण है अनेकानेक धर्म । कलियुग के अन्त में जब अनेकता है, तब अशान्ति है । बाप आकर एक सत धर्म की स्थापना करते हैं । वहाँ शान्ति हो जाती है । तुम समझ सकते हो कि इन लक्ष्मी-नारायण के राज्य में शान्ति थी । पवित्र धर्म, पवित्र कर्म था । कल्याणकारी बाप फिर से वह नई दुनिया बना रहे हैं । उसमें अशान्ति का नाम नहीं ।

ओम् शान्ति । रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं, रूहानी बाप को ही ज्ञान का सागर कहा जाता है । यह तो बच्चों को समझाया है । बाम्बे में भी बहुत सोशल वर्कर्स हैं, उनकी मीटिंग होती रहती हैं । बाम्बे में खास जहाँ मीटिंग करते हैं उसका नाम है भारतीय विद्या भवन । अब विद्या होती है दो प्रकार की । एक है जिस्मानी विद्या, जो स्कूलों-कॉलेजों में दी जाती है । अब उसको विद्या भवन कहते हैं । जरूर वहाँ कोई दूसरी चीज है । अब विद्या किसको कहा जाता है, यह तो मनुष्य जानते ही नहीं । यह तो रूहानी विद्या भवन होना चाहिए । रूहानी विद्या अथवा मार्ग एक ही होता है । विद्या ज्ञान को कहा जाता है । परमपिता परमात्मा को ही नॉलेजफुल कहा जाता है । कृष्ण को नॉलेजफुल नहीं कहेंगे । शिवबाबा की महिमा अलग, कृष्ण की महिमा अलग है । भारतवासी मूँझ पड़े हैं । गीता का भगवान् कृष्ण को समझ बैठे हैं तो विद्या भवन आदि खोलते रहते हैं । समझते कुछ भी नहीं । विद्या है गीता का ज्ञान । वह ज्ञान तो है ही एक बाप में । जिसको ज्ञान का सागर कहा जाता है । जिसे मनुष्यमात्र जानते नहीं हैं । भारतवासियों का धर्म शास्त्र तो वास्तव में है ही एक – सर्व शास्त्रमई शिरोमणी भगवत गीता । अब भगवान् किसको कहा जाए ? वह भी इस समय भारतवासी समझते नहीं । या तो कृष्ण को कह देते हैं या राम को या अपने को ही परमात्मा कह देते । अब तो समय भी तमोप्रधान है, रावण राज्य है ना ।)

तुम बच्चे जब किसको समझाते हो तो बोलो शिव भगवानुवाच । पहले तो यह समझें कि ज्ञान सागर एक ही परमपिता परमात्मा है, जिसका नाम है शिव । शिवरात्रि भी मनाते हैं, परन्तु किसको भी समझ में नहीं आता है । जरूर शिव आया हुआ है तब तो रात्रि मनाते हैं । शिव कौन है ? यह भी नहीं जानते । बाप कहते हैं भगवान् तो सबका एक ही है । सब आत्मायें भाई-भाई हैं । आत्माओं का बाप एक ही परमपिता परमात्मा है, उनको ही ज्ञान सागर कहेंगे । देवताओं में यह ज्ञान है नहीं । कौन-सा ज्ञान ? रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान कोई मनुष्य मात्र में नहीं है । कहते भी हैं प्राचीन ऋषि-मुनि नहीं जानते थे । प्राचीन का भी अर्थ नहीं जानते । सतयुग-त्रेता हुआ प्राचीन । सतयुग है नई दुनिया । वहाँ तो ऋषि-मुनि थे ही नहीं । यह ऋषि-मुनि आदि सब बाद में आये हैं । वह भी इस ज्ञान

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

को नहीं जानते । नेती-नेती कह देते हैं । वही जानते नहीं तो भारतवासी जो अभी तमोगुणी हो गये हैं, वह कैसे जान सकते ?

(इस समय साइन्स का घमण्ड भी कितना है । इस साइन्स द्वारा समझते हैं भारत स्वर्ग बन गया है । इसको माया का पाम्प कहा जाता है । फॉल ऑफ पाम्प का एक नाटक भी है । कहते भी हैं कि इस समय भारत का पतन है । सतयुग में उत्थान है, अब पतन है । यह कोई स्वर्ग थोड़ेही है । यह तो माया का पाम्प
a है, इनको खत्म होना ही है । मनुष्य समझते हैं विमान हैं, बड़े-बड़े महल, बिजलियां हैं — यही स्वर्ग है । कोई मरता है तो भी कहते स्वर्गवासी हुआ । इससे भी समझते नहीं कि स्वर्ग गया तो जरूर स्वर्ग कोई और है ना । यह तो रावण का पाम्प है, बेहद का बाप स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं । इस समय है चटाबेटी माया और ईश्वर की, आसुरी दुनिया और ईश्वरीय दुनिया की । यह भी भारतवासियों को समझाना पड़े ।) दुःख तो अजुन बहुत आने वाले हैं । अथाह दुःख आना है । स्वर्ग तो होता ही सतयुग में हैं । कलियुग में हो न सके । यह भी किसको पता नहीं पुरूषोत्तम संगमयुग किसको कहा जाता है । यह भी बाप समझाते हैं ज्ञान है दिन, भक्ति है रात । अन्धियारे में धक्के खाते रहते हैं । भगवान् से मिलने के लिए कितने वेद-शास्त्र आदि पढ़ते हैं । ब्रह्मा का दिन और रात सो ब्राह्मणों का दिन और रात । सच्चे मुख वंशावली ब्राह्मण तुम हो । वह तो हैं कलियुगी कुख वंशावली ब्राहमण । तुम हो पुरूषोत्तम संगमयुगी ब्राह्मण । यह बातें और कोई नहीं जानते । यह बातें जब समझें तब बुद्धि में आये कि हम यह क्या कर रहे हैं । भारत सतोप्रधान था, जिसको ही स्वर्ग कहा जाता है । तो जरूर यह नर्क है, तब तो नर्क से स्वर्ग में जाते हैं । वहां शान्ति भी है, सुख भी है । लक्ष्मी-नारायण का राज्य है ना । तुम समझा सकते हो मनुष्यों की वृद्धि कैसे कम हो सकती है ? अशान्ति कैसे कम हो सकती है ? अशान्ति है ही पुरानी दुनिया कलियुग में । नई दुनिया में ही शान्ति होती है । स्वर्ग में शान्ति है ना । उनको ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म कहा जाता है । हिन्दू धर्म तो अभी का है । इनको आदि सनातन धर्म नहीं कह सकते । यह तो हिन्दुस्तान के नाम पर हिन्दू कह देते हैं । आदि सनातन देवी-देवता धर्म था । वहां कम्पलीट पवित्रता, सुख, शान्ति, हेल्थ, वेल्थ आदि सब था । अभी पुकारते हैं हम पतित हैं, हे पतित पावन आओ । अब प्रश्न है पतित-पावन कौन ? कृष्ण को तो नहीं कहेंगे । पतित पावन परमपिता परमात्मा ही ज्ञान का सागर है । वही आकर पढ़ाते हैं । ज्ञान को पढ़ाई कहा जाता है । सारा मदार है गीता पर । अभी तुम प्रदर्शनी, म्युजियम आदि बनाते हो लेकिन अभी तक बी.के.का अर्थ नहीं समझते । समझते हैं यह कोई नया धर्म है । सुनते हैं, समझते कुछ नहीं । बाप ने कहा है बिल्कुल ही तमोप्रधान पत्थरबुद्धि है । इस समय साइंस घमण्डी भी बहुत बन गये हैं, साइन्स से ही अपना विनाश कर लेते हैं तो पत्थरबुद्धि कहेंगे
b ना । पारसबुद्धि थोड़ेही कहेंगे । (बाम्ब्स आदि बनाते हैं अपने विनाश के लिये । ऐसे नहीं, शंकर कोई विनाश करता है । नहीं, इन्होंने अपने विनाश के लिये सब बनाया है । परन्तु तमोप्रधान पत्थरबुद्धि समझते नहीं हैं ।) जो कुछ बनाते हैं इस पुरानी सृष्टि के विनाश के लिये । विनाश हो तब फिर नई दुनिया की जयजयकार हो । वह तो समझते हैं स्त्रियों का दुःख कैसे दूर करें ? परन्तु मनुष्य थोड़ेही किसका दुःख

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

दूर कर सकते हैं। दुःख हर्ता, सुख कर्ता तो एक ही बाप है। देवताओं को भी नहीं कहेंगे। कृष्ण भी देवता हो गया। भगवान् नहीं कह सकते। यह भी समझते नहीं। जो समझते हैं वह ब्राह्मण बन औरों को भी समझाते रहते हैं। जो राज्य पद के अथवा आदि सनातन देवता धर्म के हैं वह निकल आते हैं। लक्ष्मी-नारायण स्वर्ग के मालिक कैसे बनें, क्या कर्म किया जो विश्व के मालिक बनें? इस समय कलियुग अन्त में तो अनेकानेक धर्म हैं तो अशान्ति है। नई दुनिया में ऐसे थोड़ेही होता है। अभी यह है संगमयुग, जबकि बाप आकर राजयोग सिखलाते हैं। बाप ही कर्म-अकर्म-विकर्म की नॉलेज सुनाते हैं। आत्मा शरीर लेकर कर्म करने आती है। सतयुग में जो कर्म करते वह अकर्म हो जाते हैं। वहां विकर्म होता नहीं। दुःख होता ही नहीं। कर्म, अकर्म, विकर्म की गति बाप ही आकर अन्त में सुनाते हैं। मैं इनके बहुत जन्मों के अन्त के भी अन्त में आता हूँ। इस रथ में प्रवेश करता हूँ। अकाल मूर्त आत्मा का यह रथ है। सिर्फ एक अमृतसर में नहीं, सभी मनुष्यों का अकालतख्त है। आत्मा अकाल मूर्त है। यह शरीर बोलता चलता है। अकाल आत्मा का यह चैतन्य तख्त है। अकाल मूर्त तो सभी हैं बाकी शरीर को काल खा जाता है। आत्मा तो अकाल है। तख्त तो खलास कर देते हैं। सतयुग में तख्त कोई बहुत थोड़ेही होते हैं। इस समय करोड़ों आत्माओं के तख्त हैं। अकाल आत्मा को कहा जाता है। आत्मा ही
c तमोप्रधान से सतोप्रधान बनती है। मैं तो एवर सतोप्रधान पवित्र हूँ। भल कहते हैं प्राचीन भारत का योग, परन्तु वह भी समझते हैं कृष्ण ने सिखाया था। गीता को ही खण्डन कर दिया है। जीवन कहानी में नाम बदल दिया है। बाप के बदले बच्चे का नाम डाल दिया है। शिवरात्रि मनाते हैं परन्तु वह कैसे आते हैं, यह जानते नहीं हैं। शिव है ही परम आत्मा। उनकी महिमा बिल्कुल अलग है, आत्माओं की
d महिमा अलग है। बच्चों को यह पता है राधे-कृष्ण ही लक्ष्मी-नारायण हैं। लक्ष्मी-नारायण के दो रूप को ही विष्णु कहा जाता है। फ़र्क तो है नहीं। बाकी 4 भुजा वाला, 8 भुजा वाला कोई मनुष्य होता नहीं है। देवियों आदि को कितनी भुजायें दे दी है। समझने में समय लगता है।

e बाप कहते हैं मैं हूँ ही गरीब निवाज़। मैं आता भी तब हूँ जब भारत गरीब बन जाता है। राहू का ग्रहण बैठ जाता है। बृहस्पति की दशा थी, अब राहू का ग्रहण भारत में तो क्या सारे वर्ल्ड पर है। इसलिये बाप फिर भारत में आते हैं, आकर नई दुनिया स्थापन करते हैं। जिसको स्वर्ग कहा जाता है। भगवानुवाच — मैं तुमको राजाओं का राजा, डबल सिरताज स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ। पांच हज़ार वर्ष हुआ जबकि आदि सनातन देवी-देवता धर्म था। अभी वह है नहीं। तमोप्रधान हो गये हैं। बाप खुद ही अपना अर्थात् रचयिता और रचना का परिचय देते हैं। तुम्हारे पास प्रदर्शनी, म्युज़ियम में इतने आते हैं, समझते थोड़ेही हैं। कोई बिरले समझकर और कोर्स करते हैं। रचयिता और रचना को जानते हैं। रचता है बेहद का बाप। उनसे बेहद का वर्सा मिलता है। यह नॉलेज बाप ही देते हैं। फिर राजाई मिल जाती है तो वहां नॉलेज की दरकार नहीं। सद्गति कहा जाता है नई दुनिया स्वर्ग को, दुर्गति कहा जाता है पुरानी दुनिया नर्क को। बाप समझाते तो बहुत अच्छी तरह से हैं। बच्चों को भी ऐसे समझाना है। लक्ष्मी-नारायण का चित्र दिखाना है। यह विश्व में शान्ति स्थापन हो रही है। आदि सनातन

PDF Compression, OCR, Web Optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

देवी-देवता धर्म का फाउन्डेशन है नहीं जो बाप स्थापन कर रहे हैं। देवताओं का पवित्र धर्म, पवित्र कर्म था। अभी यह है ही विशश वर्ल्ड। नई दुनिया को कहा जाता है वाइसलेस वर्ल्ड, शिवालय। अब समझाना पड़े तो बिचारों का कुछ कल्याण हो। कल्याणकारी बाप को ही कहा जाता है। वह आते ही हैं पुरूषोत्तम संगमयुग पर। कल्याणकारी युग में कल्याणकारी बाप आकर सबका कल्याण करते हैं। पुरानी दुनिया को बदल नई दुनिया स्थापन कर देते हैं। ज्ञान से सद्गति होती है। इस पर रोज़ टाइम लेकर समझा सकते हो। बोलो, रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को हम ही जानते हैं। यह गीता का एपीसोड चल रहा है जिसमें भगवान् ने आकर राजयोग सिखाया है। डबल सिरताज बनाया है। यह लक्ष्मी-नारायण भी राजयोग से यह बने हैं। इस पुरूषोत्तम संगमयुग पर श्रीमत से राजयोग सीखते हैं। कितना सहज समझाते हैं। अच्छा !

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1. *राजयोग की पढ़ाई सोर्स ऑफ इनकम है क्योंकि इससे ही हम राजाओं का राजा बनते हैं। यह रूहानी पढ़ाई रोज पढ़नी और पढ़ानी है।*

2. *सदा नशा रहे कि हम ब्राह्मण सच्चे मुख वंशावली हैं, हम कलियुगी रात से निकल दिन में आये हैं, यह है कल्याणकारी पुरूषोत्तम युग। इसमें अपना और सर्व का कल्याण करना है।*

वरदानः- संकल्प शक्ति द्वारा हर कार्य में सफलता प्राप्त करने वाले सिद्धि स्वरूप भव

जिन आत्माओं को, जिन स्थूल कार्यों को वा सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्माओं के संस्कारों को, मुख द्वारा वा अन्य साधनों द्वारा परिवर्तन करते हुए भी सम्पूर्ण सफलता नहीं अनुभव करते, वे सब उम्मीदें संकल्प शक्ति द्वारा सम्पूर्ण सफल हो जायेंगी। क्योंकि मुख के आवाज़ की गति से भी तेज़ गति से संकल्प शक्ति काम करती है। इसे सिर्फ स्वच्छ बनाओ। ज़रा भी व्यर्थ की अस्वच्छता न हो तो सिद्धि स्वरूप बन जायेंगे।

स्लोगनः-

ब्राह्मण जीवन का सुख प्राप्त करने के लिए पवित्रता के फाउण्डेशन को मजबूत बनाओ।

PDF compression, OCR, web-optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

एक में तीन

"थ्री-इन-वन" (Three-in-one)

□ बी.के. निर्मल शान्ता, कलकत्ता

इस जगत् में एक ही माध्यम में लौकिक पिता (दादा लेखराज), अलौकिक पिता (ब्रह्मा बाबा) और पारलौकिक पिता (निराकार परमात्मा शिव) को पाने का परम सौभाग्य दादी निर्मल शान्ता जी को मिला है। आपको अति समीपता से भगवान की लीलाएं भी साकार ब्रह्मा द्वारा देखने को मिलीं। आपको ब्रह्मा बाप से रूप और अनेक दिव्य गुण विरासत में मिले हैं जिससे आप एकदम ब्रह्मा बाबा की फोटोस्टेट कॉपी लगती हैं। दादी जी के व्यक्तित्व में एक अवर्णनीय मनमोहकता और व्यवहार में विशेष मधुरता और मृदुता है। आपका हृदय एकदम निर्मल और शान्त है। आप वर्तमान समय इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के जो पूर्व भारत में सेवाकेंद्र हैं, उनका संचालन करती हैं। तो दादी जी के दिव्य अनुभव पाठकों के लाभार्थ उन्हीं के भावों में यहां प्रस्तुत हैं–

सम्पादक

मेरा लौकिक जन्म सन् १९१७ में सिंध के कृपलानी कुल में दादा लेखराज जी के यहां हुआ था। मेरे लौकिक पिता एक प्रसिद्ध जौहरी थे, उन्हें हीरे-जवाहरों की अचूक परख थी। उनका भक्ति-भाव इतना परिपक्व था कि व्यापार या घर की कैसी भी परिस्थिति हो, वे एक दिन भी भक्ति और पाठ के नित्य-नियम से नहीं चूकते थे। पिताजी की एक बड़ी बहन थी, उसे कोई बच्चा नहीं था। जन्मते ही उसने मुझे गोद लेकर पालना दी। मुझे के पति का तथा बाबा (दादा लेखराज) का जवाहरों का बिजनैस कलकत्ता में था। जब मैं थोड़ी बड़ी हुई तो पता चला कि बाबा मेरे बाबा हैं और यशोदा उनकी धर्मपत्नी मेरी मां है। मैं दोनों के घर में आना-जाना करती थी। इस तरह मुझे दो माता-पिता थे। जब मैं बड़ी हुई तो बाबा के पास रहने लगी थी।

बाबा शुरू से ही सतोगुणी वृत्ति के थे। वे घूमने जाते समय मुझे साथ ले जाते थे। बाबा कहते थे कि कन्या सौ ब्राह्मण से भी उत्तम होती है, पवित्र होती है। इसलिए बिजनैस वाले भी उनको छुआ के व्यापार करते हैं ताकि सफलता मिले।

बाबा ने मुझे निर्मोही बनाया–बाबा अपनी ही सूझ से ज़ेवरों के नए-नए डिज़ाइन बनाते थे। वे इस कार्य में किसी की नकल न करते थे। बाबा मुझे फर्स्ट क्लास चूड़ी, कंगन, कुंडल, नैकलेस बनाकर पहनाते थे और व्यापारियों के पास जाते समय मुझे साथ ले जाते थे। ग्राहकों को सैंपल दिखाते थे तो वे मुझे पहनी हुई ज्वैलरी देखकर बाबा को कहते थे, जैसे आपकी बच्ची ने पहनी है ऐसे ही हमें बनाकर दीजिए। मैं में आने के बाद सोते समय ज्वैलरी उतारकर सोती थी तो बाबा उसे उठाकर बेच देते थे।

एक बार बाबा ने बहुत अच्छा ट्यून वाला बकल बनाकर मुझे पहनाया था। तब लंदन की रानी एलिज़ाबेथ बाबा के पास ज्वैलरी खरीदने आई थी। बाबा ने उसे विभिन्न प्रकार के सैंपल दिखाए। अचानक उसकी नज़र मेरे पहने हुए बकल पर गई। तो कहा मुझे आपकी बेबी ने जैसा बकल पहना हुआ है, ऐसा ही चाहिए। बाबा ने कहा ठीक है बनाकर देंगे। रात को सोते समय लेकर अपने पास बकल रख दिया, बाद में रानी को दिया। तीन दिन के बाद बाबा को मैंने जिद्द से कहा कि मुझे वही बाजे वाला बकल चाहिए। तो बाबा ने मैया को बुलाया और कहा कि बच्ची को आज, कल की बासी पूरी खिलानी। मैंने चौंककर कहा–नहीं, मैं बासी पूरी नहीं खाऊंगी। तो बड़े प्यार से कहा कि बच्ची अगर बासी पूरी नहीं खाएगी तो कल के पुराने मॉडल का बकल कैसे पहनेगी? वो तो पुराने फैशन का हो गया। हम भोले-भाले बच्चे बाबा की मान लेते थे और बाबा का व्यापार चलता था। बाबा ने हमें कभी भी डांटा नहीं या मारा नहीं, लेकिन युक्ति से समझाकर खुश रखा।

बड़ी धूमधाम से मेरी शादी की–बाबा ने मेरा विवाह बहुत ही धूमधाम से सिंध के मुखिया के घर कराया। मेरे ससुराल में सांसारिक सुखों की कोई कमी नहीं थी। मैं उन्हीं सुखों में मस्त रहती थी। मैं वहां चार-पांच वर्ष रही। मैंने एक बेबी को जन्म दिया। बाबा तब कराची में गए थे, बाबा में शिवबाबा की प्रवेशता हुई थी। मैंने बाबा से मिलने जाना

PDF compressed with CVISION PdfCompressor 5.1 trial version. Full version copy at CVISION PDFCompressor

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

विश्व के मानव इतिहास की एक आश्चर्यकारक घटना। कलियुगी सृष्टि के महा विनाश का साक्षात्कार।

अल्लिफ़: आत्मा, ब: भाखीदार

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय
(१९३६--८६)

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय वर्ष १९८६-८७ को 'स्वर्णिम जयन्ती वर्ष' के रूप में मना रहा है। इस शुभ अवसर पर इस महान् संस्था की उपलब्धियों और सफलपूर्ण कार्यों का अवलोकन और लेखा-जोखा करना यथार्थ होगा। साथ ही इसके प्रगति के मार्ग में पिछले ५० वर्षों में जो बाधाएँ आई हैं तथा जिनका यह संस्था सफलतापूर्वक सामना करते हुए निरन्तर प्रगति की ओर बढ़ती रही है उन पर भी विचार करना आवश्यक हो जाता है। यह एक ऐसा अवसर है जबकि यह संस्था जन-जन की आध्यात्मिक जाग्रति के लिये तथा विश्व में स्थाई सुख-शान्ति की स्थापना के कार्य में तीव्रगति लाने के लिये अनेकानेक कार्यक्रम बनायेगी और भविष्य में भी इस संघर्ष-ग्रस्त विश्व में पवित्रता, शान्ति, प्रेम, न्याय, एकता आदि मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिये उत्साह-पूर्वक कार्य करती रहेगी।

इसकी प्रगति के ६ चरण

इन ५० वर्षों में इस संस्था ने जो महान् प्रगति की है उसे ६ प्रमुख भागों में बाँटा जा सकता है।

प्रथम चरण एक पारिवारिक (घरेलू) आध्यात्मिक सत्संग (१९३६--३७)

यह संस्था आरम्भ में एक छोटे से सत्संग के रूप में शुरू हुई जो कि दादा लेखराज के घर पर होता था। दादा ही ब्रह्मा बाबा के एक प्रसिद्ध व्यापारी थे। ये अपनी ईमानदारी और श्रेष्ठ व्यवहार के कारण समाज में प्रतिष्ठा पूर्वक अनेक राज-घरानों में आते-जाते रहते थे। विशेष तौर से उनका नेपाल और उदयपुर के राजघरानों से घनिष्ठ सम्बन्ध था। दादा श्री नारायण के भी परम भक्त थे। बचपन से ही वे उदारचित्त और महादानी थे। जैसे ये बड़े होते गये उनकी रुचि श्रीमद्भगवत गीता और अन्य धार्मिक ग्रंथों में बढ़ती गई। वे अपने व्यवहारिक जीवन में धार्मिक विधियों को धारण करते हुए सात्विक भोजन का सेवन करते थे तथा आध्यात्मिक उन्नति पर विशेष ध्यान रखते थे। इन सभी नियमों का पालन करने से वे अन्तर्मुखी होते गये और स्वयं का आत्म-निरीक्षण करने लगे।

(आखिरकार वह समय भी आ गया जब उन्हें सत्यता का बोध हुआ। उन्हें सन् १९३६ में, जबकि उनकी ६० वर्ष की आयु थी, अनेक दिव्य साक्षात्कार हुए जिनमें उन्होंने देखा कि इस शताब्दी के अंत तक स्वर्णिम युग की स्थापना होगी तथा इससे पहले इस तमोप्रधान कलियुगी सृष्टि का महाविनाश होगा। इससे वर्तमान शासन का भ्रष्ट ढाँचा ध्वस्त हो जाएगा जो कि अत्यधिक तरीके से खोखला भ्रष्टाचारी बन गया है और इसकी जड़ों में दीमक लग चुकी है और अब इसका खड़ा रहना असम्भव हो गया है। दादा ने परमात्मा की 'दिव्य ज्योति' भी देखी और आश्चर्य की एक आवाज सुनी कि जिस दिव्य ज्योति का साक्षात्कार हुआ है वह आनन्द के सागर 'ज्योति बिन्दु परमात्मा शिव है।' उन्हें अन्य भी अनेक साक्षात्कार हुए। वास्तव में उनके जीवन में मोड़ लाने वाली यह एक बहुत महत्त्वपूर्ण घटना थी। इनसे दादा के जीवन में महान् आध्यात्मिक परिवर्तन आया और उनके सम्पर्क या संबंध में आने वाले व्यक्तियों पर भी बहुत प्रभाव पड़ा। यद्यपि उन्हें दादा के चेहरे पर तेज, आँखों में चमक और मस्तक पर पवित्रता का दिव्य प्रभा मण्डल स्पष्ट नजर आता था।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

PDF compressor Free Version
http://www.pdfcompressor.com/buy.php

एक अनोखा अनुभव

Auto-biography
of
Dada Vishwa Ratan

चैप्टर 6

मातेश्वरी जी का देह-त्याग

24 जून 1965 में प्यारी मम्मा ने अपनी पुरानी देह का त्याग किया और उसके बाद 12 फरवरी 1968 को बम्बई में भाऊ विश्वकिशोर ने देह का त्याग किया और उनका अन्तिम संस्कार वहाँ बम्बई में हुआ।

बाबा अव्यक्त हुए

18 जनवरी 1969 को प्यारे ब्रह्मा बाबा सवेरे क्लास में नहीं आये। वैसे तो रोज़ सवेरे क्लास में आकर स्वयं ही मुरली सुनाते थे लेकिन उस दिन थोड़ी तबियत ठीक न होने के कारण क्लास में नहीं आये। रोज़ शाम को भी रात्रि क्लास में आते थे। उस दिन दादी कुमारका (दादी प्रकाशमणी) भी मधुबन में थी। वैसे दादी जी गॉमदेवी बम्बई में रहती थीं। लेकिन कुछ दिन पहले बाबा से मिलने के लिए आई थी। बड़ी दीदी (दीदी मनमोहिनी जी) कुछ दिन पहले कानपुर, इलाहाबाद आदि की तरफ सर्विस पर गई हुई थी। दादी प्रकाशमणी को 16-17 जनवरी को ही बम्बई जाना था परन्तु बाबा ने उनको रोका और कहा 2-4 दिन ठहर कर जाना। 18 जनवरी को जैसे ही बाबा तैयार होकर रात्रि क्लास में जाने लगे, तो दादी जी ने बाबा को कहा कि बाबा, आज आपकी तबियत ठीक नहीं है इसलिए आज आप आराम करो, हम क्लास करा लेंगे। बाबा ने कहा "नहीं बच्ची, मैं सवेरे भी क्लास में नहीं गया और अगर अभी भी नहीं जाऊंगा तो बच्चों को बहुत चिन्ता होगी और सोचते रहेंगे बाबा को क्या हुआ है! इसलिए मैं क्लास में चलता हूँ।" बाबा ने आधा घण्टा बहुत अच्छी मुरली चलाई और फिर अन्त में याद-प्यार नमस्ते कहने के बाद कहा "अच्छा अब छुट्टी।" ये "छुट्टी" पहले बाबा कभी नहीं कहते थे। उस दिन ये "छुट्टी" अक्षर बोल कर क्लास के बाहर आया। उस समय लगभग रात्रि के नौ बजे थे। मैं भी

क्लास से उठकर बाहर आया। बाबा ने मुझे देखकर कहा "बच्चू, डाक्टर को बुलाओ और मुझे चेक कर के जाये।" मैंने उसी समय जमुनाप्रसाद भाई को साइकिल पर भेजा (उन दिनों हमारे पास एक भी कार नहीं थी) और उसको कहा कि जल्दी ही अभी-अभी डाक्टर को यहाँ ले आओ, बाबा को चेक करके जाये। जमुनाप्रसाद भाई उसी समय साइकिल पर गया और डाक्टर को चलने के लिए कहा। उन दिनों में डाक्टर अरोड़ा सिविल हास्पिटल में था। वे घर में ही थे। डाक्टर ने कहा हाँ, बस सिर्फ चाय पीकर चलता हूँ। इधर बाबा आकर अपने पलंग पर लेट गया। बाबा के कमरे में दादी प्रकाशमणि और अन्य थोड़ी बहनें और मै खड़े थे। मैं बाबा को देखता रहा था। मैंने देखा कि बाबा अपना एक हाथ हार्ट पर रखकर कभी लेट जाता था और कभी बैठ जाता था। मैंने ऐसे अनुभव किया कि बाबा को बहुत दर्द है और रेस्टलेस फील कर रहा है। मैं जल्दी-जल्दी कमरे से बाहर आया कि जमुनाप्रसाद को फोन करूँ कि जल्दी डाक्टर को ले आओ। मैंने हास्पिटल में फोन किया परन्तु वहाँ किसी ने फोन नहीं उठाया। उस समय डाक्टर के घर में फोन नहीं था। फिर मैंने सरदार नेहाल सिंह की दुकान पर फोन किया, जो हास्पिटल के सामने ही थी। वहाँ सरदार जी का बच्चा दयाल सिंह बैठा था, उसको कहा कि आप जाकर जल्दी ही डाक्टर को भेजो, बाबा को अधिक तकलीफ है। वह तुरन्त ही डाक्टर के पास गया। उस समय डाक्टर चाय पी चुके थे और तुरन्त अपने स्कूटर पर यहाँ आया। वे इससे बीच ही कोरामिन की इन्जेक्शन निकाल कर रुई और सिरिन्ज भी उबाल कर रखी थी। मैंने सोचा कि शायद डाक्टर को इस इन्जेक्शन की आवश्यकता हो। फिर आकर बाहर गेट पर खड़ा था, उसी समय डाक्टर भी आ गया। मैंने डाक्टर को कहा आप जल्दी ही अन्दर चलिये, बाबा को बहुत दर्द हो रहा है। डाक्टर अन्दर आया, कमरे में अन्दर आते ही बाबा की तकलीफ को देखकर डाक्टर डर गया। डाक्टर

सवेरे भी बाबा को चेक करके गया था, उस समय ऐसा कुछ नहीं था। लेकिन इतने में बाबा की ऐसी हालत देखकर हैरान हो गया। मैं भी डॉक्टर के साथ ही था तो क्या देखा कि बाबा का बाया हाथ अपने हार्ट पर है और दायां हाथ दादी प्रकाशमणी के हाथों में है, आँखें बन्द हैं। दादी किशनी (दादी प्रकाशमणि की बहन, जो पटना में रहती है) बाबा के पलंग पर पीछे से बैठकर बाबा को पकड़कर बैठी है क्योंकि लेटे हुए बाबा को अधिक दर्द होता था। ऐसा दृश्य देखकर डाक्टर ने तुरन्त मेरे से कोरामिन इन्जेक्शन लेकर बाबा को इन्जेक्शन लगाई। लेकिन इतने में बाबा तो पहले से ही देह का त्याग कर ऊपर सूक्ष्म वतन में चला गया। फिर तो बाबा को पलंग पर लिटा दिया। डाक्टर को भी बड़ा दुख हो रहा था कि मैंने आने में देरी की। अगर थोड़ा जल्दी आ जाता तो ऐसा नहीं होता। तो "सॉरी" बोल कर चला गया। डाक्टर अरोड़ा के पहले इस हॉस्पिटल में लेडी डाक्टर थी, जिसने रिटायर होकर अपनी प्राइवेट हास्पिटल खोली थी। फिर उस लेडी डाक्टर को बुलाया गया, जिससे वह भी आकर चेक करे कि सचमुच बाबा ने देह का त्याग किया है या श्वांस कहीं रुका हुआ है। वह भी आई और उसने भी कन्फर्म किया कि बाबा ने शरीर छोड़ दिया है।

फिर तो सारे बंगले में ये सूचना फैल गई और सभी के चेहरे और दिलों में दुख की लहर आने लगी। बाबा की अच्छे भक्तगण भी आकर आये और सभी ने अच्छे शरीर छोड़ दिया। आधा घण्टे में ही बाबा जैसे आँख मिचौली का खेल करके सभी बच्चों से ज्यादा लोकल वतन में चले गये। सभी कहते थे कि बाबा तो बिल्कुल ठीक था, तबियत भी अच्छी थी, फिर इतने में क्या हो गया? ऐसे किसी के ख्याल में भी नहीं था कि बाबा ऐसे ही इतने में चले जायेंगे। लेकिन बाबा तो डाक्टर के आने तक भी नहीं रुका। पहले ही न्यारा हो गया।

फिर तो दादी प्रकाशमणि जी सभी सेन्टर्स पर ये सूचना देने के लिए

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

"मुझे सच्चा साथी मिल गया"

□ बी.के. वेदान्ती, अफ्रीका

इस साकार दुनिया में गीता ज्ञान दाता निराकार परमात्मा शिव से प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सभी वेदों-शास्त्रों का सार सुनने का परम सौभाग्य वेदान्ती बहन जी को प्राप्त हुआ है। आप करुणा तथा दया की साक्षात् मूर्ति हैं। आपके खिले हुए चेहरे से, नयनों से प्यार छलकता रहता है। आपका त्यागी और योगी जीवन प्रेरणास्पद रहा है। आपने हज़ारों मनुष्यात्माओं का प्रभु से मिलन कराकर उनके जीवन को श्रेष्ठ बनाया है। वर्तमान समय आप ईश्वरीय विश्वविद्यालय के अफ्रीका खण्ड में स्थित शाखाओं का संचालन करती हैं। इस प्रकार सर्वोत्तम ईश्वरीय सेवा व तपस्या में रत वेदान्ती बहन जी के अनुभव उन्हीं के भावों में प्रस्तुत हैं--

--सम्पादक

मेरा जन्म सन् १९४५ में गुजरात के एक सम्पन्न ब्राह्मण-परिवार में हुआ। माता-पिता धार्मिक वृत्ति के होने के कारण, मेरी बचपन से ही रुचि धार्मिक पुस्तकें पढ़ने, सत्संग करने तथा मंदिरों में जाने और साधु-महात्माओं की संगत करने में अधिक थी। अनन्य भक्तों की जीवन-गाथा पढ़ने पर मन में तीव्र लालसा रहती थी कि मैं भी प्रभु-मिलन का अनुभव करूं और उनका साक्षात्कार करूं। उसके लिए मैं देवी-देवताओं की पूजा करना, ईश्वर-प्राप्ति के लिए आवश्यक समझती थी। सदा मन में प्रभु-मिलन की अभिलाषा बनी रहती थी और उसे पाने के लिए कठिन से कठिन त्याग-तपस्या करने को तैयार थी।

बस एक ही धुन थी। मुझे संसार की बातों में थोड़ी भी दिलचस्पी नहीं थी। स्कूल की पढ़ाई शुरू की। एम.ए. में मैंने फिलॉसफी (Philosophy) का विषय इसी लक्ष्य से लिया कि मुझे कुछ सत्य मिले। लेकिन आशा निराशा में ही बदलती गई। सदा एक ही धुन रहती थी कि एक बार मुझे भगवान के दर्शन हों। इसी चिंतन से मैं बीमार पड़ी। मुझे अस्पताल में दाखिल किया गया। डॉक्टर भी मेरी बीमारी परख न सके क्योंकि मेरी बीमारी का कारण था भगवान को पाने की चिंता। बीमारी से थककर वापस घर लौटी। घर में भी बिस्तर पर लेटे-लेटे भगवान को उलहने देती रही कि हे भगवान, आखिर तू है कहां? अब नहीं मिलोगे तो मैं मर जाऊंगी। कुछेक मास तक इस स्थिति में तड़पती रही।

साक्षात्कार से दिव्य जन्म--एक दिन मैंने अपनी छोटी बहन चंद्रिका से कहा कि अब मैं अपने जीवन से थक चुकी हूं। वो स्वयं भगवान की खोज में थी। हम दोनों ने सवेरे ३ बजे उठकर भगवान की आराधना शुरू की। अचानक एक दिन वह ध्यान (Trans) में चली गई और ध्यान में एक लाइट और एक अपरिचित बूढ़े बाबा को देखा। उतने में एक आवाज आई कि अब तुम्हें भगवान शीघ्र मिलेगा। जब वह ध्यान से वापस आई तो उसने मुझे धीरज दिया कि लगता है अब शीघ्र ही हमें भगवान दर्शन देंगे। फिर हम उस बूढ़े बाबा को ढूंढ़ते रहे। कुछ दिन के बाद हमारे पड़ोस में श्वेत वस्त्रधारी बहनें आईं। आमंत्रण के बाद हम उनसे मिलने गए। उन्होंने हमें चित्रों द्वारा ज्ञान सुनाया। तो उसमें हमने उस बूढ़े बाबा को देखा जिसे साक्षात्कार में देखा था। हमें पता चला कि भगवान एक निराकार परमात्मा शिव हैं, जो बूढ़े बाबा अर्थात् ब्रह्मा के साकार माध्यम से ब्रह्मा-वत्सों को पढ़ाते हैं, आबू पर्वत पर उनका अवतरण हो चुका है।

आबू पर्वत की ओर--उस दिन से यही लगन थी कि शीघ्रातिशीघ्र आबू जाकर परमात्मा से मिलें। उन दिनों में दादी जानकी जी अहमदाबाद-सेवाकेंद्र की संचालिका थीं। दादी जी हमें आबू ले चलीं, जब पांडव भवन में पहुंचे तो वहां का शान्त और पवित्र वातावरण मन को भाने लगा। दो घंटे के बाद हम कमरे में बाबा से मिलने गये। पहली मुलाकात में बाबा ने शक्तिशाली दृष्टि दी और कहा कि "मीठी बच्ची, पहुंच गई हो न बाप के पास"। बाबा के इन स्नेह-भरे बोल ने मेरे जीवन पर एक दिव्य प्रकाश डाला। मेरी बीमारी गायब हो गई और मैं रूहानी शक्ति पाने से नए जीवन का अनुभव कर रही थी।

बाबा ने मेरी नाम वेदान्ती रखा--दूसरे दिन सुबह विशाल क्लास में सभा के बीच बाबा ने कहा-बच्ची ने लौकिक पढ़ाई में भी शास्त्र पढ़े, अभी वेदों का अंत अर्थात् वेदों का सार बाबा का ज्ञान मिल गया तो आज से बच्ची का नाम रंजन के बजाय वेदान्ती होगा।

PDF compressed with CVISION's PdfCompressor 4.0 for optimization using a non-commercial evaluation copy of CVISION PDFCompressor

आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय

मुख्यालय :–

○ 5/26A, सिकत्तरबाग, जि. फर्रुखाबाद– 209 625 (यू.पी.)
✆ (05692) 228930

शाखाएं :–

○ ग्रा.पो. कम्पिला, जि. फर्रुखाबाद– 207 505 (यू.पी.)
✆ ~~(05690) 271202~~ 09839071989

○ Á–1, 351–352, विजयविहार, पो. रिठाला, दिल्ली– 110 085
✆ (011) 27044227

○ हाउस नं. 634, केशोराम काम्पलेक्स, सेक्टर 45C, सुख गैस के बाजू में, पो. बुड़ैल, चण्डीगढ़– 160 106 ✆ (0172) 2622829

○ C.L 249, सेक्टर 2, साल्ट लेक सिटी, कोलकाता– 700 091
✆ (033) 23378007

○ पाटील हाउस, आजाद चौक, खारीगॉव, ता. कलवा, जि. ठाणे, मुम्बई– 400 605 ✆ (022) 25396765

○ 29/3 R.T, प्रकाशनगर, बेगमपेट, हैदराबाद– 500 016
✆ (040) ~~55316710~~ 27765871

○ साई दुर्गा लोरी वॉटर सर्विस, तणुकू रोड, ताडेपल्लीगुडम, जि.वेस्ट गोदावरी– 534 102 (आन्ध्रा प्रदेश) ✆ (08818) 227029

○ शिवज्योति निलयम, 138 फर्स्ट मेन, उदय नगर, पो. दूरवाणीनगर, बैंगलूर– 560 016 ✆ (080) 28518330